Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, H

SARITA

1988

Jan-Apr

G. K. V.
Hardwar

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

112348

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ोरो कैलेन्डूला*

ऐन्टिसेप्टिक क्रीम

Boro calendula*
ANTISEPTIC CREAM

ली और फटी त्वचा का इलाज

DUPLICATE 1988

112798

कैलेन्डूला ऐन्टिसेप्टिक क्रीम।
ा असरदार बनाती है कुदरत की
नी खास औषधियां यानी
और हाईड्रास्टिस के गुणभरे अर्क।
खरोंच लगने पर आपकी त्वचा की
सुरक्षा करती है। फटे होंठों, फटी एड़ियों और
जलने के छोटे-मोटे घावों का इलाज भी करती है।

बोरो कैलेन्डूला की सुरक्षा
बारहो महीना त्वचा की रक्षा।

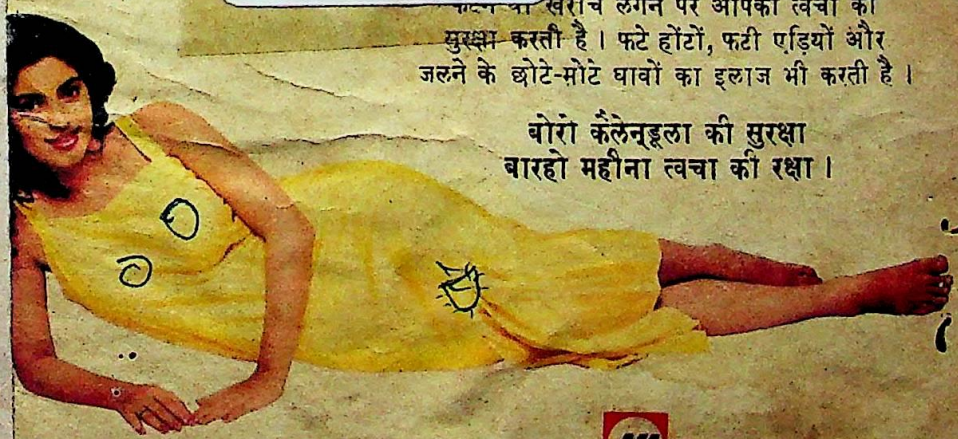

and proprietary homoeopathic medicine of Hahnemann Laboratory

HL का उत्कृष्ट उत्पादन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरिता

सामाजिक व पारिवारिक पुनर्निर्माण की पाक्षिक पत्रिका

RT-0632

संपादक व प्रकाशक : विश्वनाथ

अंक : 786 जनवरी (द्वितीय) 1988

कथा साहित्य

122 **पड़ोसी का धर्म**
ऊपर के फ्लैट में रहने वाला झगड़ालू पड़ोसी

132 **उठ बांध कमर**
राजनीति में भ्रष्टाचार खत्म करने का संकल्प

140 **पिंडदान**
परंपराओं का पालन न करने वाली गरीब विधवा

156 **बोझ**
बहन के लिए अच्छे घरवर की तलाश

ी उपेक्षा

ूसीयत

ने वाला पुरोहित

में सब की उपेक्षा करने वाली युवती

पत्रों का जाल
पत्रमित्रता के नाम पर छिछोरी हरकत

लेख

22 **लोकतंत्र**
लोगों को बहलाने का झुनझुना तो नहीं

52 **कराची**
जो बारबार याद आता है

69 **काम कीजिए किंतु तरीके से**
संस्थान के प्रति दायित्व या लगाव का अभाव

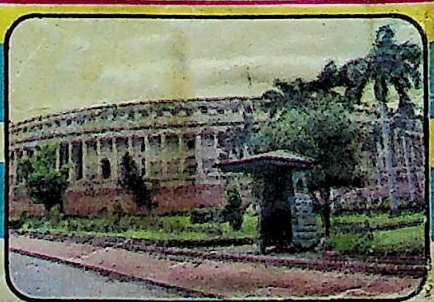

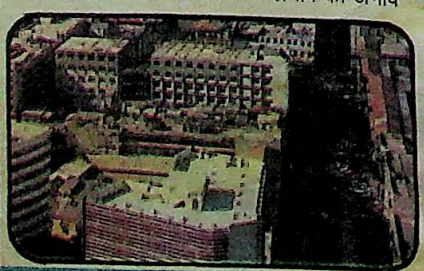

101 **आप की पत्नी चिड़चिड़ी क्यों है?**
सुखी दांपत्य जीवन पर लेख

107 **खुशियों के क्षण मातम में न बदल जाएं**
बच्चों के प्रति लापरवाही का नतीजा

112 **बेकार चीजें भी उपयोगी हो सकती हैं**
कबाड़ से घर सजाने का नायाब तरीका

115 **दूसरों की बातों में अनावश्यक रुचि**
बात का बतंगड़ बनाने का दुष्परिणाम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

119 छोटी माता से घबराइए नहीं
एक भयंकर छूत की बीमारी से बचाव के उपाय
147 क्रोशिए से बुना बाबा सूट
बच्चों के लिए एक आकर्षक परिधान
166 प्राचीन भारत में आयुर्विज्ञान
पुराने जमाने में चिकित्सा प्रणाली
179 बिहार में डायन बना कर हत्या
जायदाद हड़पने और बदला लेने का क्रूर तरीका

स्तंभ

6 आप के पत्र
11 जीवन की मुसकान
17 सरित प्रवाह
35 शून्यकाल का शून्यालाप
62 नए फैशन
67 बात ऐसे बनी
98 ननमुन
100 ये पति
111 बच्चों के मुख से
146 हमारी बेड़ियां
150 नए पकवान
153 चंचल छाया

कविताएं

34 परछाईं
37 नार्यस्तु यत्र पूज्यंते
51 मौसम ठगा रह जाएगा
99 मन में खोट
139 कितनी बार पूछा है

संपादकीय, विज्ञापन व प्रकाशन कार्यालय :
दिल्ली प्रेस भवन, ई-3 झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली – 110055.
दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन प्रा.लि. के लिए विश्वनाथ द्वारा प्रकाशित तथा दिल्ली प्रेस समाचार पत्र प्रा.लि. साहिबाबाद/गाजियाबाद में मुद्रित.
अन्य कार्यालय: अहमदाबाद : 503. नारायणा चैंबर्स, आश्रम रोड़, अहमदाबाद–380009., बंगलौर : 302-बी. 'ए' क्वींस कारनर एपार्टमेंट्स, 3, क्वींस रोड, बंगलौर–560001. बंबई : 79-ए मित्तल चैंबर्स, नरीमन पाइंट, बंबई-400021. कलकत्ता : तीसरी मंजिल, पोद्दार पाइंट, 113, पार्क स्ट्रीट, कलकत्ता-700016. मद्रास : 14, पहली मंजिल, सीसंस कांप्लेक्स, 150/82 मांटीअथ रोड, मद्रास-600008. लखनऊ : 9, दुर्गा भवन, कपूर लेन, महात्मा गांधी रोड, लखनऊ-226001. सिकंदराबाद : 122, पहली मंजिल, चिनाय ट्रेड सेंटर, 116, पार्क लेन, सिकंदराबाद-500003.

©दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन प्रा.लि. बिना आज्ञा कोई रचना किसी प्रकार उद्धृत नहीं की जानी चाहिए.

सरिता में प्रकाशित कथा साहित्य में नाम, स्थान, घटनाएं व संस्थाएं काल्पनिक हैं और वास्तविक व्यक्तियों, स्थानों, घटनाओं या संस्थाओं से उन की किसी भी प्रकार की समानता संयोग मात्र है.

वैवाहिक विज्ञापन विभाग : एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001.
वार्षिक मूल्य केवल ड्राफ्ट/मनी आर्डर द्वारा 'सरिता' के नाम से ई-3, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-110055 को ही भेजें. चैक व वी.पी.पी. स्वीकार नहीं किए जाते.
मूल्य : विदेशों में (समुद्री डाक से) 240 रु., (हवाई डाक से)636 रु.

मूल्य : एक प्रति 5.00 रुपए. वार्षिक : 120 रुपए.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरित प्रवाह/नवंबर/द्वितीय

अब समय आ गया है कि तिब्बत के मामले में हमें अपनी विदेश नीति की फिर से समीक्षा करनी चाहिए.

रूस देरसेवर चीन को गले लगाएगा. 1962 का कटु अनुभव हमारे सामने है.

दरअसल हमारा चीन से कोई सीमा विवाद नहीं है. चीन ने ही हमारी भूमि पर अवैध कब्जा कर रखा है. चीन से सीमा वार्त्ता करना उस के अवैध कब्जे को मान्यता देना है. —रजतकुमार

*

सरित प्रवाह/दिसंबर/प्रथम

रिलायंस विश्व कप मैचों के संबंध में आप ने सही लिखा है कि भारत व पाकिस्तान दोनों की अंत में हार भारत के लिए वरदान साबित हुई.

यहां तो जराजरा सी बात पर धार्मिक दंगे हो जाते हैं. धर्म के नाम पर यह जहर लोगों को इतना अधिक पिला दिया गया है कि कहीं भी यह जहर अपना असर दिखा सकता है, चाहे वह खेल का मैदान ही क्यों न हो. —विवेककुमार

अंधविश्वासपूर्ण धारावाहिक

लेख 'रामानंद सागर की रामायण : आलोचनाओं और आपत्तियों के उत्तर' (दिसंबर/प्रथम/द्वितीय) से मैं काफी हद तक सहमत हूं.

दूरदर्शन के धारावाहिक 'रामायण' को पसंद करने वाले अधिकतर लोग हिंदू हैं. किंतु भारत के धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र होने के कारण दूरदर्शन को ऐसा कोई कार्यक्रम नहीं दिखाना चाहिए, जिस से किसी विशेष धर्म का प्रचारप्रसार हो. —उमाकांत तिवारी

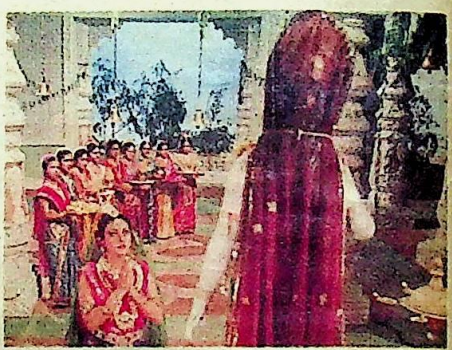

काश! दूरदर्शन पर रामायण एवं अन्य अंधविश्वासपूर्ण धारावाहिकों की जगह निष्पक्ष एवं ज्ञानवर्धक कार्यक्रम प्रदर्शित करने की व्यवस्था की जाती.

सांप्रदायिकता की आग को भड़काने में धर्म के धंधेबाज तो सब से आगे हैं ही, नेता लोग भी पीछे नहीं हैं. —निरंजनसिंह भारती

*

यह ठीक है कि रामानंद सागर एक अच्छे कलाकार हैं, लेकिन 'रामायण' के साथ उन का बाजीगराना तरीका ठीक नहीं लगता. उन्होंने शोध के नाम पर वास्तविक तथ्यों को मोम की नाक समझ कर कदमकदम पर अपनी इच्छानुसार प्रस्तुत किया है.

अब तक ऐसी अनेक घटनाएं दिखाई जा चुकी हैं, जिन का वास्तविकता से कोई मेल नहीं है.

—सूर्यकांत शर्मा

*

हिंदी के साथ छल

लेख 'केंद्रीय हिंदी निदेशालय' (दिसंबर/प्रथम) की आरंभिक पंक्तियां "हिंदी का अंतर्राष्ट्रीय भाषा बनना तो दूर, उसे राष्ट्रभाषा कहते हुए भी मंत्रियों और अफसरों को संकोच होता है," हमारी सरकार के मुंह पर करारा तमाचा है.

हमें स्वतंत्र हुए 40 वर्ष हो गए, फिर भी हमारे दिलोदिमाग में भाषा की गुलामी भरी पड़ी है.

—महेशबी. शर्मा

*

मेरा सुझाव है कि प्रारंभिक कक्षाओं से ही प्रादेशिक भाषा के साथसाथ हिंदी में बातचीत तथा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुफ़्त!

सिरैमिक कटोरी आपके शिशु को फ़ैरेक्स के प्यार की निशानी

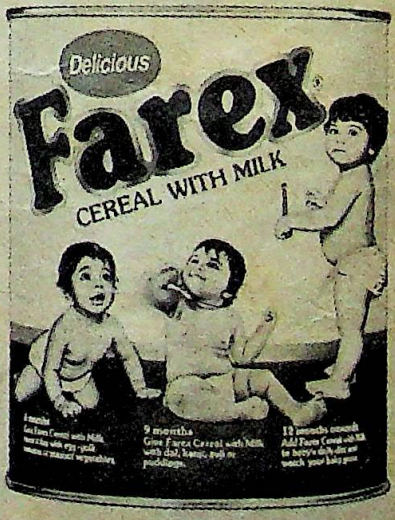

पौष्टिक, स्वादिष्ट, फ़ैरेक्स के हर टिन के साथ.
सिरैमिक कटोरी. कितनी सुन्दर.
कितने काम की.
शिशु इसमें जब-जब खाये
जी भरके मुस्काये.

फ़िलहाल यह भेंट कुछ चुने हुए बाज़ारों में ही उपलब्ध है.

GX/25/173 HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बढ़ाई अनिवार्य कर दी जाए, ताकि आगे चल कर उस के पठनपाठन में कठिनाई न हो.

गुजरात में पहले हिंदी 10वीं कक्षा में अनिवार्य थी, लेकिन अब उसे ऐच्छिक बना दिया गया है. इस से निश्चय ही हिंदी के राष्ट्रभाषा रूप पर कुठाराघात हुआ है. —मनसुख पटेल

*

सही बात तो यह है कि राजभाषा के मुद्दे पर हमारी स्थिति 'सांपछछूंदर' की तरह है. न तो हम अंगरेजी को पूरी तरह से छोड़ने को तैयार हैं और न ही हिंदी को राजकाज की भाषा के रूप में पूरी तरह अपनाने के लिए. —छोगालाल परमार

*

मेरे कुछ सहकर्मियों को 'सरिता' में 'काररवाई' शब्द के प्रयोग पर आपत्ति है. उन का कथन है कि यह शब्द सर्वथा गलत है. सही शब्द है 'कार्यवाही.'

—कामेशकुमार सिंह राजपूत

*

'काररवाई' शब्द का अर्थ है किसी काम को करना, जारी रखना आदि, जबकि 'कार्यवाही' का अर्थ है कार्य का भार उठाने वाला.

अब आप स्वयं ही देख लें कि कौन सा प्रयोग सही है और कौन सा गलत. —संपादक

*

फिल्मों में सेक्स

लेख 'उत्तेजक विदेशी फिल्में: दर्शकों की रुचि को बिगाड़ रहीं हैं' (दिसंबर/प्रथम) से मैं सहमत नहीं.

आज हमारे समाज में पगपग पर विदेशों की

नकल की जा रही है, भले ही वह परदे के भीतर की बात हो. भारतीय फिल्मों में भी दृश्य, भाव, अदाकारी, संगीत आदि सभी कुछ तो विदेशों से लिए जा रहे हैं, फिर सेक्स से ही परहेज क्यों जबकि सेक्स ही एक ऐसी चीज है, जिस की ओर सभी आकर्षित होते हैं? यही कारण है कि विदेशी फिल्मों के लिए टिकट खिड़की पर भीड़ लगी रहती है.

—जंगबहादुर सिंह 'जमशेदपुरी'

*

खुशी के आंसू

लेख 'बाबुल से विदा हों लेकिन हंस कर' (दिसंबर/प्रथम) में विदाई के अवसर पर कन्या व उस के परिवार के लोगों के रोने को अर्थहीन परंपरा, नाटक, दिखावा, निरर्थक रीतिरिवाज आदि बताना ठीक नहीं है.

—संतोषकुमार माथुर

*

उद्योगपतियों के मंदिर

विश्वनाथ बिड़ला के पत्र 'उद्योगपतियों के मंदिर' (आप के पत्र/दिसंबर/प्रथम) से मैं सहमत नहीं हूं.

रुपयों का सदुपयोग गरीबों को सिर्फ रुपए बांट कर नहीं, बल्कि उन्हें काम में लगा कर किया जा सकता है.

रही बात आत्मा की शांति की तो वह तो भव्य मंदिरों में तथाकथित भगवान की मूर्ति स्थापित कर के नहीं, बल्कि अपने मन रूपी मंदिर में भगवान की आराधना कर के मिलती है. —किरन बोथरा

*

अव्यवस्थित घर का कारण लापरवाही

लेख 'घर को सुव्यवस्थित कैसे बनाएं?' (दिसंबर/प्रथम) अच्छा लगा.

प्रायः लोग आलस्य एवं लापरवाही के कारण अपने अच्छेखासे घर को भी कचराघर बना देते हैं. इस से अतिथियों तथा अन्य देखने वालों पर अच्छा प्रभाव नहीं पड़ता. अतः लोगों को चाहिए कि वे इस लेख को पढ़ कर अपना घर सुव्यवस्थित बनाए रखने का प्रयास करें.

—चंदननाथ गोस्वामी

*

भोपाल गैस कांड

लेख 'भोपाल गैस कांड: राहत के नाम पर आहत' (दिसंबर/प्रथम) पढ़ कर वास्तविकता का पता चला है.

भोपाल गैस कांड को तीन वर्ष हो गए, पर गैस पीड़ितों को राहत के नाम पर आज भी आहत किया जा रहा है. शासन तंत्र मात्र मुखौटा बन कर रह गया है. गैस पीड़ितों को दी गई राहत तो गैस की विभीषिका को देखते हुए ऊंट के मुंह में जीरा है. इस में भी बंदरबांट और अपनीअपनी ढपली. अपनाअपना राग वाली बात अधिक लागू है. —गुरुदेवसिंह भाटिया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

ACIL/SWCPD/3-87/HINR

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

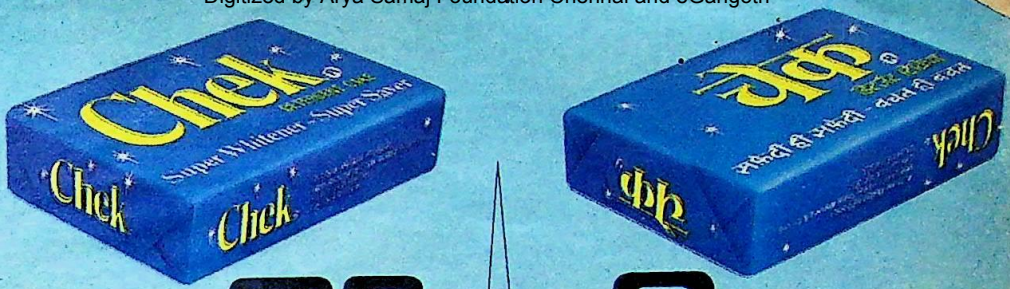

क्वालिटी और कीमत का पक्का हिसाब

चेक डिटर्जेन्ट टिकिया की भरोसेमन्द कीमत,
सुरक्षित धुलाई। चाहे रंगीन कपड़े हो या सफेद।

खुद ही चेक कर लीजिये ना!

Shaw Wallace

शॉ वॉलेस का क्वालिटी उत्पादन।

ACIL/SWCPD/3-87/HINR

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निराशाजनक कहानी

कहानी 'सुबह के बाद' (दिसंबर/प्रथम) पढ़ कर बहुत निराशा हुई.

आज जब समाज में विधवा विवाह की जरूरत है, तब लेखिका विवाह का इतना क्रूर अंत दिखा कर क्या समझाना चाहती है? अपवादों को यदि छोड़ दिया जाए तो सामान्य विवाहित स्त्रीपुरुष भी कई बार आपस में समझौता नहीं कर पाते. —ज्योत्स्ना तनेजा

*

इसलाम की कुरीतियां

हिंदूधर्म की कुरीतियों की तरह यदि 'सरिता' में इसलाम धर्म की कुरीतियों को भी उजागर किया जाए तो अच्छा रहेगा क्योंकि इसलाम धर्म में भी अनेक कुरीतियां व्याप्त हैं. —ए.एन. सिद्दीकी

*

हिंदी के प्रचारप्रसार के लिए कुछ सुझाव

हिंदी के प्रचारप्रसार में 'सरिता' का सराहनीय योगदान रहा है. इस संदर्भ में मेरा एक सुझाव है कि 'सरिता' के प्रत्येक अंक में एक पूरे पृष्ठ पर निम्नलिखित सूचनाएं प्रकाशित की जानी चाहिए ताकि लाखों पाठक उन्हें पढ़ कर तथा अपना कर हिंदी के प्रचारप्रसार में योगदान कर सकें.

- सभी दुकानों के पट्ट हिंदी में ही लिखे जाएं.
- घरों पर नाम पट्टिकाएं हिंदी में हों.
- सभी प्रकार के निमंत्रणपत्र हिंदी में हों.
- अंगरेजी में लिखित निमंत्रणपत्र को अस्वीकार कर उस समारोह का भी बहिष्कार किया जाए. इस बहिष्कार का कारण भी आयोजक को सूचिक कर दिया जाए. —विशन स्वरूप गोयल

राधिका की दूसरी नहीं दूसरी फिल्म

फिल्म समीक्षा 'कुदरत का कानून' (चंचल छाया/नवंबर/द्वितीय) में कहा गया है कि यह राधिका की दूसरी फिल्म है. जबकि वस्तुस्थिति यह है कि फिल्म 'नसीब अपनाअपना' और 'असलीनकली' में भी राधिका काम कर चुकी है. —सूरज प्रताप

*

पुरी के मंदिर में प्रवेश

स्तंभ 'बात ऐसे बनी' (नवंबर/प्रथम) में प्रकाशित तुषार टेंभुर्णीकर का अनुभव तथ्यहीन है कि वह स्वयं को ईसाई बता कर पुरी के मंदिर में प्रवेश पा सके.

सचाई यह है कि पुरी के मंदिर में गैर हिंदुओं का प्रवेश निषेध है.

इस संदर्भ में उल्लेखनीय है कि एक समय पुरी के मंदिर के पंडों ने भूतपूर्व प्रधान मंत्री इंदिरा गांधी को मंदिर में प्रवेश करने से रोक दिया था क्योंकि वे उन्हें हिंदू नहीं मानते थे. —मोहन

*

लेखक का उत्तर

पाठक की आपत्ति के संदर्भ में निवेदन है कि पंडे मंदिर के प्रांगण के बाहर से ही लोगों को बेवकूफ बनाने लगते हैं और उन से बच पाना मुशकिल हो जाता है. इन्हीं पंडों से बचने के लिए मैं ने वहां अपनेआप को ईसाई बताया था.

ईसाई जान कर ही उन्होंने हमें अपने जाल में नहीं फंसाया था. फिर हम भीड़ का लाभ उठा कर आराम से मंदिर के प्रांगण में पहुंच गए थे.

—तुषार टेंभुर्णीकर●

सरिता के लेखक

पूणिमा गुप्ता

इस अंक में प्रकाशित कहानी 'घर और घाट' की लेखिका पूर्णिमा गुप्ता नार्थ कैरोलिना स्टेट यूनिवर्सिटी के व्यावसायिक शिक्षा विभाग में असिस्टेंट प्रोफेसर हैं. वह सामाजिक, पारिवारिक विषयों पर लेखकहानियां लिखती हैं. उन्हें अब तक कई पुरस्कार भी प्राप्त हो चुके हैं.

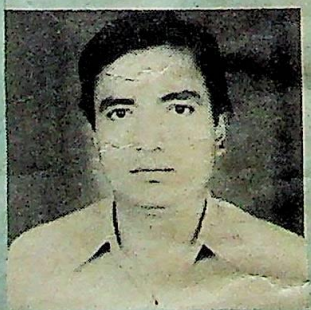

मोहम्मद इसराईल शेख

इस अंक में प्रकाशित कहानी 'बोझ' के लेखक मोहम्मद इसराईल शेख 'वेतन व भविष्य निर्वाह निधि पथक,' शिक्षा विभाग, भंडारा (महाराष्ट्र) में प्रमुख लेखापाल के पद पर कार्यरत हैं. वह पारिवारिक, सामाजिक एवं राजनीतिक विषयों पर कहानी लिखते हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवन की मुसकान

यह घटना उन दिनों की है जब मैं 6ठी कक्षा में पढ़ता था. हमारी कक्षा की छात्राएं हमारे साथ पढ़ने वाले एक हरिजन छात्र को बहुत हीन दृष्टि से देखती थीं.

एक बार हम लोग अपने अध्यापक के साथ नर्मदा तट पर स्थित एक पर्यटक स्थल पर पिकनिक मनाने गए हुए थे. नर्मदा के किनारे हम सब खेल रहे थे कि अचानक हमारी कक्षा की एक छात्रा नदी के गहरे जल में गिर पड़ी. हमारे अध्यापक और हम छात्रों में से किसी को भी तैरना नहीं आता था.

तभी वह हरिजन लड़का गहरे जल में अपनी जान की परवाह किए बिना कूद पड़ा. उसे तैरना भी कम आता था. लेकिन अपने अद्‌भुत साहस के कारण वह उस छात्रा को बाहर निकाल लाया.

उस के उस साहसपूर्ण कार्य से हम सब गदगद हो गए. आज सभी छात्राएं उसे आदर की दृष्टि से देखती हैं.

—जगदीश जायसवाल

*

मेरे मामाजी का लड़का 8वीं कक्षा में फेल हो गया. मामाजी ने उसे बहुत मारा. वह गुस्से में घर छोड़ कर कहीं चला गया. हम सारे दिन उसे ढूंढ़ते रहे लेकिन उस का कहीं पता नहीं चला.

अगले दिन जब सब लोग उसे ढूंढ़ने जा रहे थे तो एक व्यक्ति उसे ले कर हमारे घर पहुंच गया.

उस ने हमें बताया कि वह लड़का रेवाड़ी जाने वाली गाड़ी में बिना टिकट ही बैठ गया था. शाम को भूख के कारण जब वह रोने लगा तो उस व्यक्ति ने उस से सारी बातें पूछीं.

रात को उन्होंने उसे अपने घर रखा और सुबह दिल्ली के लिए चल पड़े.

उस व्यक्ति ने आगे बताया कि उस के 3 लड़कियां हैं और कोई लड़का नहीं है. वह चाहता तो उसे बेटा बना कर रख लेता. फिर भी वह उसे अपने घर न रख सका.

आज भी वह व्यक्ति मामाजी के यहां आता रहता है. हम उस की सज्जनता के आगे नतमस्तक हो जाते हैं. —रमेशचंद्र

*

एक बार मैं नागालैंड में मारियानी से तुंगस्थान बस से जा रहा था. अभी हम जंगल के बीच में से गुजर ही रहे थे कि अचानक तूफान आ गया. उस से सारा मार्ग रुक गया. बसचालक ने बस आगे ले जाने से इनकार कर दिया.

सभी यात्री उतर कर पैदल चलने लगे. मैं भी उन के साथ हो लिया. कुछ दूर चलने पर मैं अकेला रह गया. शाम ढलने पर लुटेरों और जंगली जानवरों के खौफ ने मुझे दहलाना शुरू कर दिया.

तभी जंगल में एक झोंपड़ी दिखाई दी जिस में एक वृद्ध सज्जन मौजूद थे. उन्होंने मेरी व्यथा सुन कर मुझे रात में वहीं रोक लिया. अगले दिन मैं सकुशल घर पहुंच गया. आज भी मैं उन वृद्ध सज्जन को नहीं भूला हूं, जिन्होंने तूफान में तिनके की तरह मुझे सहारा दे कर संकटों से उबारा था. —श्री निवास भुवानियां●

इस स्तंभ के लिए अपने तथा अपने संबंधियों के अनुभव भेजिए. प्रत्येक प्रकाशित अनुभव पर 30 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. अपने अनुभव इस पते पर भेजें : संपादकीय विभाग, सरिता, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोलॅक गाइड से घरों की बेहतर सजावट – जगहों में खुलेपन की योजना

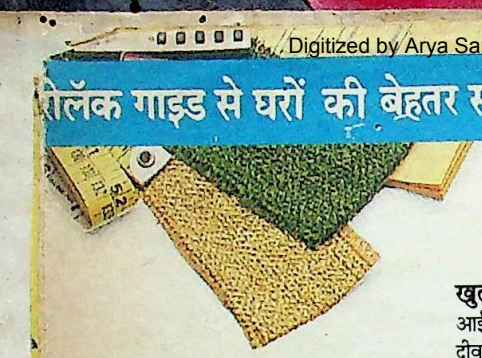

ब तंग और नपी-तुली जगहों में ासमानी खुलापन छा जाए. कैसे?

घरों के लिए बढ़ती जरूरतों के हिसाब से प्लानिंग करना मुश्किल होता है. माना, छोटे घर सुखद, घरेलू और चलाने विधाजनक होते हैं, फिर भी वे तंग और नपे-तुले नहीं नजर ने चाहिए. छोटे घरों को किस तरह आसमानी खुलापन दिया , इसके लिए नेरोलॅक के ब्योरेवार सुझाव प्रस्तुत हैं.

ारें सरकती चली जाएं...

ले यह जानिए कि,किस तरह उपलब्ध जगह और जीवन ी में तालमेल बिठाया जाए. तंग और नपी-तुली जगहों में ापन लाने के लिए सबसे पहले सही रंग-योजना बेहद जरूरी घुंधले हल्के या कुदरती शेड छोटी जगहों को खुलापन देते और कमरा चौड़ा नजर आता है. हल्के रंगों के इस्तेमाल से ी छतें ऊंची दिखाई पड़ती हैं. भड़कीले दूधिया, गुलाबी या े रंग, भले कितनी ही हल्की छटा में इस्तेमाल किए जाएं, सुहाने भूरे और नीले रंग के इस्तेमाल से ही ऊंची दिखाई देती हैं. घर में एक ही रंग का प्रयोग करने से घर ठंडा और ना-चौड़ा नजर आता है.

के रंगोंवाली दीवारों का एक अतिरिक्त फायदा होता है - ऐसा कमरा जिसे दोबारा सजाने की सुविधा बनी रहे! स्वागत, जगमगाती चादरों, गद्दियों और दरियों को हल्की र सूझबूझ से चुनी गई फ़र्निशिंग से अदल-बदल करने पर ी कमरे में एक नई रौनक आ जाएगी. अनोखे अंदाज के लिए नाफ़ों और चादरों में तालमेल रखें. छोटी खिड़कियों में पर्दों बजाए मिलते-जुलते कपड़े से सजे रोलर ब्लाइंड लगाएं. पूरी लम्बाई के पर्दे इस्तेमाल करें, इससे कमरे की ऊंचाई ी हुई दिखाई देगी.

गह हो कम पर इस्तेमाल हो भरपूर...

हद रंग से रंगा फ़र्नीचर बड़ी और रोशनीदार जगह का हसास देता है. बेत, शीशे के टॉप वाला या हल्का-फुल्का र्नीचर खुली जगह का एहसास देता है. हमेशा एक से ज्यादा म आने वाला फ़र्नीचर खरीदें, जैसे डाइनिंग टेबल का मेाल बीच में रोशनी लगा देने से वर्क टेबल - लिखने के ए किया जा सकता है. बैठक में सोफा-कम-बेड या दीवान प्रयोग करने से उसी बैठक को मेहमानों के शयनकक्ष के में बदला जा सकता है. अगर कमरे की छत बहुत ऊंची हो बीच में अटारी बना दें,चाहे फिर उसे शयनकक्ष के रूप में मेाल करें या कामकाजी कमरे के रूप में.

खुलेपन का आभास...

आईनों से जगह दुगनी बड़ी दिखाई देती हैं. हो सके तो पूरी दीवार या आलमारियों के दरवाजों पर आईने जड़वा दें, इससे जगह बड़ी और चौड़ी नजर आएगी. छोटे कमरों में भरपूर रोशनी आने दें. सफेद से परावर्तित हो रोशनीदार कमरे और भी बड़े और खुले दिखाई देते हैं. और आखिरी निखार के लिए कमरे में पौधे सजा दें. खिड़कियों और अनचाहे कोनों को पौधों से सजा दें. इससे उनमें नया निखार आ जाएगा. ऊंचे पौधों के इस्तेमाल से कमरे को दो हिस्सों में बांटा जा सकता है. साथ ही यह रोशनी और जगह के फैलाव में कोई बाधा भी नहीं डालेंगे.

नेरोलॅक पेण्ट्स हर रूप, हर रंग में बेहतर!

एक बार आपने अपनी जरूरतों में तालमेल बिठा लिया तो बाकि-सब आसान. नेरोलॅक पेण्ट्स की विस्तृत श्रेणियों में से धुंधले, पेस्टल, कुदरती, हल्के और सौम्य रंग चुनिए. हमने हर जरूरत के अनुसार पेंट बनाए हैं—नेरोलॅक एक्रिलिक इमल्शन: दीवारों पर मख्मली एहसास के लिए, नेरोलॅक पर्ल लस्टर: लाजवाब मोतिया चमक के लिए और नेरोलॅक वॉशेबल ऑइलबाउंड डिस्टेंपर: कम बजट में जगमगाहट और बढ़िया मैट फ़िनिश के लिए. लकड़ी और धातु की सतहों को जगमग सफेद की तह से ढकने के लिए नेरोलॅक अल्ट्रा व्हाइट, यानी सबसे सफेद जो रहे सफेद. नेरोलॅक पेण्ट्स हर श्रेणी में लाजवाब हैं. नेरोलॅक सम्पूर्ण पेंटिंग सिस्टम प्रदान करते हैं. हर सतह के लिए प्राइमर और अंदर के लिए फ़्लैट ऑइल पेण्ट्स से ले कर आखिरी चमक-दमक के लिए वार्निशों तक. सैकड़ों रंगों और छटाओं में से चुनिए, क्योंकि नेरोलॅक हाई-पावर यूनिवर्सल स्टेनर्स से बनते हैं अनोखे, मनपसंद डिज़ाइनर शेड.

हमारी अगली नेरोलॅक गाइड का इंतजार कीजिए.

सम्पूर्ण 'नेरोलॅक गाइड से घरों की बेहतर सजावट' रंगीन पुस्तिका, जिसमें ' अपने आप करें' के आसान तरीकों की तालिकाएं, 'सजावट के सुझाव' के साथ और भी कितना कुछ शामिल है, की अपनी मुफ्त प्रति मंगवाने के लिए आज ही लिखें.

पता :
नेरोलॅक सुंदर-घर गाइड
पो.बॉ. नं. 9954 बम्बई 400 021

नाम : _____
पता : _____
_____
_____
_____ पिन : _____
भाषा : ☐ अंग्रेजी ☐ हिंदी

जवाब के लिए कृपया 50 पैसे के डाक टिकिट साथ भेजिए.

नेरोलॅक पेण्ट्स

र रूप, हर रंग में बेहतर!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुमीत SP-16: पहली किचन मशीन, जिसके बारे में आप दोनों की अपनी अपनी राय है

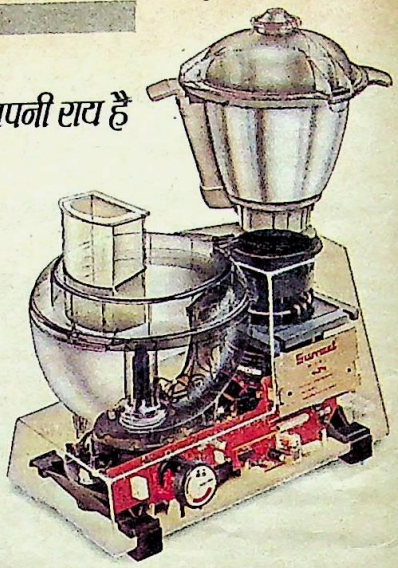

श्रीमान की

"इसकी इंजीनियरिंग बहुत बढ़िया है"

कारीगरी साफ़ दिखाई पड़ती है.

इसका हर हिस्सा दूसरे हिस्सों से पूरी तरह मेल खाने के लिए डिज़ाइन किया गया है. ४२६ हिस्से, बड़ी सावधानी से काटछांटकर बनाए गए हैं, ताकि बिल्कुल सही ढग से एक दूसरे को सहें और साथ मिल कर मज़बूती से काम करें.

इलेक्ट्रानिक्स का यहां नाज़ुक खिलवाड़ के तौर पर नहीं, बल्कि इस मशीन के दिल की तरह काम करने के लिए इस्तेमाल किया गया है. इससे एस पी –१६ वज़न की परवा किए बिना एक जैसा बढ़िया काम करता है. यह सिस्टम पूरी तरह से बेहिसाब बदलने वाली रफ़्तारों के योग्य है.

मज़बूत चैसिस बनावट, रबर शाक डैम्पनर्स और प्रोसेसर बोल के लिए निचले गियर का ड्राइव शोर इतना नीचे रखते हैं कि सिर्फ़ मशीन का गुनगुनाना भर सुनाई पड़े.

और सुमीत के साथ तो यह हमेशा सच रहा है कि इसकी मोटर लगातार आधा घंटे से ज़्यादा देर तक चलती रह सकती है–पूरे वज़न के होते हुए.

सुमीत एसपी–१६. ४२६ साज़, लेकिन सुर एक–ऐसा है इसका काम.

OBM/2019/HN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्राइन्डर कप अटैचमेंट

आपकी

"इतना ज़्यादा काम, इतनी आसानी से"

इसकी खूबी इस बात में इतनी नहीं है कि ये कितने काम करता है बल्कि इसमें है कि इसकी रफ़्तार कितनी अच्छी है और इसे इस्तेमाल करना कितना आसान है.

फूड प्रोसेसर वर्क बोल, स्टेनलेस स्टील जार और एक सामान्य कण्ट्रोल. इन सबके तालमेल से मिनटों में इससे और भी ज़्यादा काम ले लेना कितना आसान है.

आप इससे सूखी पिसाई, गीली पिसाई कर सकती हैं, आटा गूंथ सकती हैं, मिला सकती हैं, स्लाइस, तरछे या चिप्स बना सकती हैं.

और तो और गोश्त का कीमा बनाइए, काटिए, मिलाइए, फेंटिए, घिसिए या और भी कुछ कीजिए. कुल मिलाकर १६ काम. और इन कामों के साथ कम मात्रा वाला छोटा ग्राइन्डर और नीबू, मोसम्मी, संतरे वगैरह का रस निकालने के लिए सिट्रस प्रेस जूसर.

अब हर तरह का भोजन बनाना आपकी आसान पहुंच के अंदर.

सुमीत एसपी–१६ लोड या वज़न के साथ अपने आप ही खुद को ठीक कर लेता है और अगर कहीं भूल से इस पर वज़न ज़्यादा हो जाय तो भी इसकी रफ़्तार में फ़र्क नहीं पड़ता. सुमीत एसपी–१६ पूरी तरह सुरक्षित भी हैं, क्योंकि अगर चालू रहते इसे कोई खोल दे तो यह अपने आप एकदम बंद हो जाता है.

वास्तव में यह हमेशा ही एक जैसा बढ़िया बारीक काम करता है. और यहीं ये बाज़ी मार ले जाता है. अधिक फुलफुली इडलियां और आमलेट, वेफर जितनी बारीक ककड़ी की स्लाइसें, खूब अच्छी तरह पिसे मसाले.

बस आप काम सोचिए, सुमीत तैय्यार है आपको खुश करने के लिए. सुमीत एसपी–१६. तरह तरह के साज़, लेकिन सभी आपकी ही धुन बजाएं

सुमीत एसपी–१६ के अलावा सुमीत डोमेस्टिक भी उपलब्ध है, जो वैसी ही सावधानी से बना है और कुल मिलाकर ८ काम कर सकता है. अगर आपकी ज़रूरतें कम हों तो इसे लीजिए.

सुमीत® SP-16 इलेक्ट्रानिक

काम में कमाल, मज़बूती बेमिसाल.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

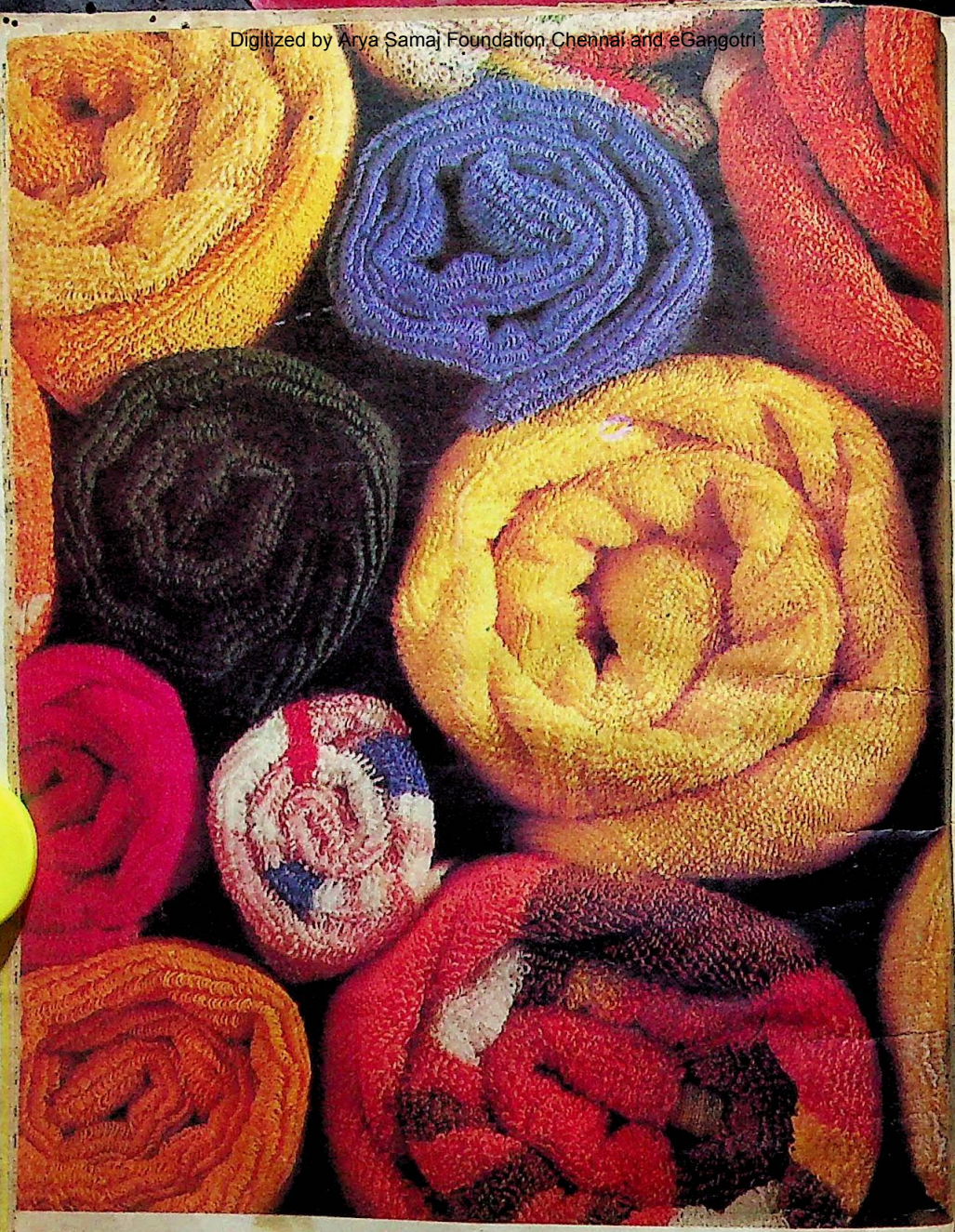

उमंग जलतरंग. विशिष्ट तौलिये, नॅपकिन और बाथ मॅट–राष्ट्रीय संग्रह से.

हैन्डलूम हाउस

जहाँ आप करते हैं भारत दर्शन

ऑल इंडिया हैन्डलूम हैन्डिक्राफ्ट्स मार्केटिंग को-ऑपरेटिव सोसायटी लि. (भारत सरकार द्वारा प्रायोजित)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत प्रवाह

दिल्ली की महानगर परिषद और स्थानीय नगर निगम के चुनाव, जो फरवरी 1988 में होने थे, राजीव सरकार ने स्थगित कर दिए हैं. फिलहाल केवल एक वर्ष के लिए, पर आशंका यही है कि ये चुनाव लोकसभा के चुनावों के साथ ही होंगे.

अब तक स्थानीय कांग्रेसी बड़े जोरशोर से परिषद व निगम दोनों के चुनावों की तैयारी कर रहे थे. पर अंदर से वे डरे हुए थे. राजीव गांधी की छवि अनेक घोटालों

और असफल समझौतों के कारण बहुत धूमिल हो रही है. आम जनता पर अब राजीव कांग्रेस का कोई विशेष प्रभाव नहीं रहा है, चाहे किसी अन्य विकल्प के अभाव में केंद्र में बहुमत उसे दोबारा भी मिल जाए.

पर राजधानी होने के कारण यदि दिल्ली में कांग्रेस की हार हो जाती है तो राजीव कांग्रेस को बड़ा धक्का लगना अवश्यंभावी है. चुनाव न कराने से तो कुछ बिगड़ता नहीं, दोचार दिन विपक्ष के दल चीखपुकार कर चुप हो जाएंगे. पर यदि विपक्ष चुनाव जीत जाता है तो राजधानी में हर रोज हंगामा रहेगा. ठीक राजीव गांधी की नाक के नीचे विपक्ष अपनी जीत का डंका बजाता रहता और जीना दूभर कर देता. सारे देश में इस का प्रभाव पड़ता सो अलग. चुनाव स्थगित तो सिर्फ दो पंक्तियों का आदेश निकाल कर कर दिया और छुट्टी हो गई.

चुनाव स्थगित करने का जो बहाना ढूंढ़ा गया है वह बिलकुल लचर है. कहा गया है कि दिल्ली में इतने प्रशासनिक संस्थान हैं कि इस भूलभुलैया में शासन बिखरता जा रहा है, और इस को सुधारने के लिए एक आयोग बैठाया जा रहा है जो अपनी रिपोर्ट छः महीनों में देगा कि क्या किया जाए.

यह आयोग महज एक छलावा है क्योंकि दिल्ली में प्रशासनिक सुधारों की बात दशकों से हो रही है: क्या करना चाहिए, सरकार की फाइलों में पहले ही से मौजूद है. पर जिस चीज की कमी है वह कुछ करने की, कुछ जोखिम उठाने की हिम्मत और इच्छा. इस का यहां सर्वथा अभाव है.

प्रथम तो रिपोर्ट छः महीने में मिल ही नहीं सकती. जिस प्रकार ऐसे आयोग काम करते हैं, उस लिहाज से इस के लिए कम से कम 2 वर्ष चाहिए. फिर यह क्या गारंटी है कि इस आयोग की रिपोर्ट प्रकाशित हो ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाएगी? राजीव सरकार का रिकॉर्ड इस मामले में बहुत कलुषित है. वह वही रिपोर्ट प्रकाशित करती है जो उस के पक्ष में होती है. बाकी को सचिवालय की अलमारियों में दबा देती है. अब तो उस ने इस विषय पर कानून भी बना दिया है जिस से इस जनअधिकार पर कालिख पोत दी गई है कि जांच आयोग ने जांच में क्या पाया, यह सर्वविदित हो.

स्थानीय संस्थाओं, नगरपालिकाओं, जिला परिषदों के चुनाव नहीं कराने में देश की सारी राज्य सरकारें दोषी हैं (दिल्ली के लिए केंद्रीय सरकार ही राज्य सरकार है.) वे बरसों तक चुनाव टाले रहती हैं क्योंकि उन्हें अंदेशा होता है कि उन का दल यदि चुनाव में हार जाएगा तो उन की छवि मिट्टी में मिल जाएगी. वैसे भी वे डरती हैं कि स्थानीय संस्थाओं में अगर विपक्ष आ गया तो रोज तूतू मैंमैं होगी.

तीसरे, स्थानीय निकायों को बिना चुनाव कराए रखने में राज्य के मंत्रियों को रिश्वत व अधिकार दुरुपयोग करने, मनमानी करने का भी मौका मिलता है.

जनता को इस बेईमानी के विरुद्ध जोरदार आवाज उठानी चाहिए. जनतंत्र जब तक नीचे से न हो, तब तक ऊपर का भी ठीक नहीं रह सकता.

*

हरियाणा के मुख्य मंत्री देवीलाल ने अपने दो पुत्रों से उन के राजनीतिक पदों से त्यागपत्र दिलवा दिए हैं. बड़े बेटे ओमप्रकाश से हरियाणा लोकदल के अध्यक्ष

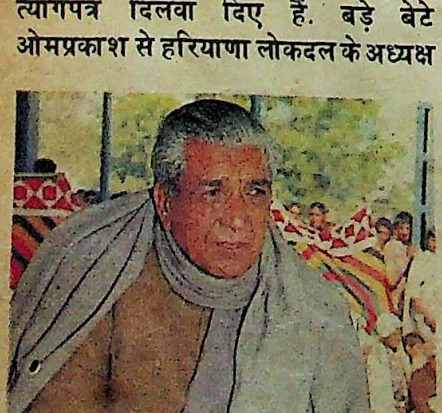

पद से और दूसरे बेटे रणजीत सिंह से विधान सभा की सदस्यता से. यह उन्होंने बहुत अच्छा और समयानुकूल काम किया है. जैसा उन्होंने महसूस किया, दोनों बेटों के सरकारी कामकाज में हस्तक्षेप से जन असंतोष बढ़ रहा था, और विरोधी राजनीतिबाजों की आलोचना, नुक्ताचीनी भी.

उधर आंध्र प्रदेश के मुख्य मंत्री रामाराव ने भी अपने उच्चपदासीन दामाद से तेलगुदेशम दल के मुख्य सचिव पद से इस्तीफा दिलवा दिया है. वहां भी रामाराव और चंद्रमणि की आलोचना हो रही थी, विशेषतः राजीव कांग्रेस द्वारा जिस को रामाराव ने सत्ता से दो बार खदेड़ दिया था.

इन दोनों से अन्य मुख्य मंत्रियों को भी सबक लेना चाहिए. अपने संबंधियों द्वारा सरकारी कामकाज में दखल दिलवाना बहुत जोखिम भरा काम है. इस से लंबाचौड़ा फायदा भी नहीं होता और बदनामी ज्यादा होती है.

काश मोरारजी देसाई ने भी केंद्र में जनता सरकार के प्रधान मंत्री रहते हुए अपने पुत्र कांति देसाई को अपने दिल्ली के मकान से बंबई जाने और सरकारी कामकाज में हाथ बंटाने से रोकना स्वीकार कर लिया होता. अपने पुत्र के मोह में उन जैसे ईमानदार, कर्मठ और दृढ़ व्यक्ति को न केवल स्वयं गद्दी छोड़नी पड़ी, जनता सरकार के गिरने में भी सहायक होना पड़ा.

*

एक चिकित्सा अधिकारी ने एक सर्वेक्षण के अनुसार कहा है कि भारत में इस समय लगभग 10 लाख लोग फेफड़े के कैंसर से पीड़ित हैं और यह संख्या लगातार बढ़ रही है. कारण – सिगरेट, बीड़ी, तंबाकू सेवन.

भारत इस बीमारी से पीड़ित देशों में अकेला ही नहीं है. सारे विश्व में सिगरेट का यह 'वरदान' अपार संख्या में लोगों को खाए जा रहा है. हर देश में तंबाकू सेवन पर प्रतिबंध लग रहे हैं. इस की बिक्री पर रोक लगाई जा रही है. भारत सरकार भी सिगरेट

सरिता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

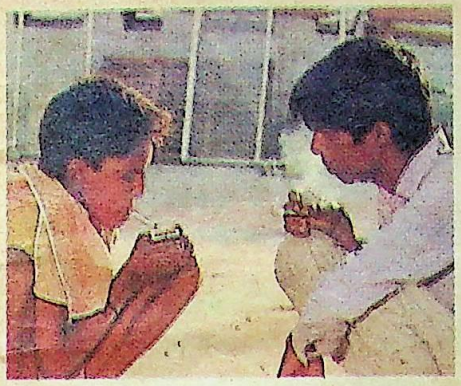

की डब्बियों पर चेतावनी छापती है: सिगरेट पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है.

पर इस चेतावनी को सिगरेट पीने वाले एक बेवकूफी और छलावा ही मानते हैं. यदि सिगरेट पीना एक स्वास्थ्य विरोधी काम है तो आप सिगरेट न केवल बननेबिकने ही क्यों देते हैं, बल्कि उस की बिक्री के लिए करोड़ों रुपए सिगरेट कंपनियों को खर्च भी क्यों करने देते हैं? टी.वी. पर सिगरेट का विज्ञापन सीधे तो नहीं प्रसारित किया जाता, पर जब खेलों का सीधा प्रसारण होता है तो खेल मैदानों में लगे सिगरेट के विज्ञापन तो बड़े जोरशोर से दिखाए ही जाते हैं. इन का असर तो होता ही है. अन्यथा सिगरेट कंपनियां क्यों इस मद पर इतना रुपया खर्च करें?

अब सुना है कि भारत सरकार का स्वास्थ्य मंत्रालय कानून द्वारा सिगरेट के विज्ञापनों, बिक्री वृद्धि प्रयासों पर प्रतिबंध के पक्ष में है और इस के लिए कानून बनाना चाहता है. पर वित्त मंत्रालय और उद्योग मंत्रालय इस का विरोध कर रहे हैं क्योंकि इस से सरकारी आमदनी में कटौती होगी, जो सिगरेट कंपनियों से उत्पादन कर व आयकर से होती है.

एक बात जो कही नहीं गई वह यह है कि सरकारी अमले के अलावा इन मंत्रालयों के अधिकारियों व राजनीतिबाजों की उस ऊपर की मोटी आमदनी में भी कमी आएगी जो सिगरेट कंपनियां इन्हें नजराने के रूप में मेज के नीचे से देती हैं.

अगर वित्त मंत्रालय को किसी भी प्रकार से सरकार के लिए धन इकट्ठा ही करना है और ज्यादा से ज्यादा करना है तो वह स्मैक, कोकीन, ब्राउन शूगर, अफीम की बिक्री भी मोटे मुनाफे पर खुले आम सरकारी दुकानों पर शुरू कर दे और समाचारपत्रों, रेडियो, टी.वी. पर इन के विज्ञापन भी देना शुरू कर दे? निश्चित ही इस से अरबों रुपए की नई आमदनी सरकारी खजाने में (और कुछ लोगों की जेबों में) पहुंच जाएगी.

*

एक विचित्र दलील एक मंत्रालय ने सिगरेट विज्ञापनों पर प्रतिबंध के विरुद्ध यह दी है कि इस से उन छोटे समाचार पत्र-पत्रिकाओं की आमदनी पर असर पड़ेगा, जो आजकल बड़े जोरशोर से सिगरेट, बीड़ी व तंबाकू के विज्ञापन छापते हैं. पर सरकारी अधिकारियों को समाचारपत्रपत्रिकाओं की आमदनी बढ़ाने की फिक्र कब से पैदा हो गई? वे तो हमेशा इन पर नए भार डालते रहते हैं. इन की स्वतंत्रता के हनन, इन को आर्थिक हानि पहुंचाने के नएनए तरीकों पर ही गौर करते रहते हैं. अगर इन की आय बढ़ानी है तो अखबारी कागज के दाम कम करें, मशीनों और सामान पर जो आजकल 100 से 200% का आयात कर लगा रखा है, उसे कम करें. डाक व रेल व्यय में बढ़ोतरी न करें.

क्या इन सरकारी अधिकारियों को उन दस लाख फेफड़ों के कैंसर से पीड़ित लोगों की संख्या में बढ़ोतरी से कोई दुख या संताप नहीं होता है, जो सरकारी (और अपनी) आय बढ़ाने के लिए लोगों को जहर पिला कर, उन्हें जिंदा तिलतिल मरने के लिए उकसाने के लिए दिए गए विज्ञापनों पर प्रतिबंध लगाने का विरोध कर रहे हैं?

सरकार जनता के हितों के लिए बनती है या जनता सरकार के हितों के लिए है?

*

भारत सरकार खेतिहर मजदूरों के लिए कानून बना रही है ताकि वे भी शहरी, औद्योगिक संगठित मजदूरों की तरह यूनियनें बना कर अपने अधिकार के लिए लड़ सकें और अपनी आमदनी बढ़ा सकें.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्रामीण मजदूरों की आय बढ़नी चाहिए, इस से तो किसी को मतभेद नहीं हो सकता. पर प्रश्न यह है कि क्या उन्हें यूनियन दादाओं, सरकारी श्रम इंस्पेक्टरों और श्रम अदालतों के चक्कर में डाल कर आप उन की आदमनी बढ़ा सकेंगे?

सीधीसादी मूल बात यह है कि खेतिहर मजदूर की आमदनी तभी बढ़ सकती है जब खेती की, किसान की, खेत वाले की आमदनी बढ़े. आज थोड़े से बड़ी खेती वाले किसानों की आय का अंदाजा लगा कर सरकारी अर्थशास्त्री और कुछ शहरी उद्योग संचालक भी अपने वातानुकूलित सजेसजाए कक्षों में बैठ कर यह फैसला कर रहे हैं कि खेती में बड़ी आमदनी है, इसे किस तरह खींचा जाए.

कुछ कहते हैं कि किसानों पर आय व संपत्ति कर लगाओ. कुछ कहते हैं खेती की उपज का सरकारी मूल्य घटाओ. अन्य कहते हैं खाद, पानी, बिजली, बीज इत्यादि के मूल्य बढ़ाओ. परंतु इन सब महाशयों में से एक भी खेती नहीं करता, न उन्हें उस की ऊंचनीच का पता है.

खेती ऐसा जोखिम भरा व्यवसाय है जिस में छः महीने का खूनपसीना, पूंजी, जो अधिकांश कर्ज ली गई होती है, एक दिन में बिना किसी पूर्वाभास के नष्ट हो जाती है. बारिश अधिक हो तो मटियामेट, कम हो तो सत्यानास. कीड़े, पक्षी, आवारा पशु, आग, बाढ़ सब किसान की फसल की ओर मुंह बाए बैठे रहते हैं कि वह कब उगे और कब वे उसे हड़प करें.

फिर जब फसल तैयार भी हो जाए, उपर्युक्त व्याधियों से बच भी जाए, तो क्योंकि सारे देश में वह लगभग एक ही समय तैयार होती है (और खपत अगले छः महीने में, धीरेधीरे) इसलिए जब एकदम बाजार में आती है तो उस का भाव गिर जाता है. किसान अपनी उपज एक बार मंडी में ले आए तो उसे वापस नहीं ले जा सकता. जो भाव मिले, बेचना ही पड़ता है. उपज को अधिक समय के लिए जमा कर के रखना संभव नहीं होता क्योंकि खेती के लिए लिया हुआ कर्ज वापस करना होता है. छः महीनों से रुकी हुई आवश्यकताएं पूरी करनी होती हैं.

पहले थोक व्यापारी फसल खरीद कर धीरेधीरे बेच सकते थे. अब सरकार ने फसल जमा कर के रखना गैरकानूनी कर दिया है, इसलिए या तो फसल सरकारी खाद्य निगम को बेचो या बाजार में जो भाव भी मिले, निबटाओ.

ऐसी स्थिति में खेतिहर मजदूरों का संगठित किया जाना कागजी तौर पर तो जन कल्याण लगता है, पर वास्तविक रूप में किसान के लिए एक नई व्याधि पैदा करना ही है. खेती के लिए मजदूर केवल फसल कटाई पर ही चाहिए बाकी दिन तो किसान अपने परिवार को काम पर लगाता है. फिर जोतें छोटीछोटी हैं, काम मौसम के अनुसार अनिश्चित है, फसली है. ऐसे में मजदूर दादा और सरकारी इंस्पेक्टर सिवाए किसान का खून चूसने के और कुछ नहीं करेंगे.

जहां तक बड़े किसानों का प्रश्न है, जो थोड़े से ही हैं, यदि उन्हें मजबूर किया गया तो वे खेती का और तेजी से मशीनीकरण करेंगे और जो मजदूर आज काम पा जाते हैं वे भी बेकार हो जाएंगे.

श्रम मंत्रालय के छोटेबड़े, सूटधारी बाबू यदि यह समझते हैं कि खेती में बहुत आमदनी है, और मजदूरों का शोषण होता है तो वे स्वयं कुछ बड़े खेत ले कर, खेती कर के दिखाएं जिस में मजदूरों को नए प्रस्तावित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कानूनों की पूरी सुविधा दे कर सरकार को कुछ कमा कर दें.

इस सिलसिले में उदाहरणस्वरूप, बड़ी सरकारी पूंजी लगा कर स्थापित किए गए सूरतगढ़ फार्म का इतिहास कुछ सबक दे सकता है.

*

भारत सरकार ने 500 रुपए का नोट प्रचलित किया है. यह अच्छा किया.

आज भारतीय रुपए की कीमत यानी इस की माल व सेवाएं खरीदने की शक्ति, दूसरे महायुद्ध के समय 1939 के मुकाबले 100 में से केवल 2½ पैसे रह गई है. 1947 की आजादी के बाद से हिसाब लगाएं तो लगभग 3 पैसे.

रुपए के मूल्य में यह गिरावट किसी प्रकार रुकी नहीं है. समाजवाद के तथाकथित जनकल्याण के उद्देश्य से सरकार निरंतर अपना खर्च बढ़ाती जाती है. कर्मचारियों, अफसरों और ठेकेदारों की फौज में बराबर वृद्धि हो रही है. राजनीतिबाज खुल कर खेल रहे हैं और सरकारी खर्च में से अपनी निजी आमदनी बढ़ा रहे हैं. सरकारी कारखाने व उत्पादन संगठन, जिन्हें मुनाफा कमाना चाहिए था, उलटा घाटा दे रहे हैं, जिस से खर्च और बढ़ जाता है.

इस खर्च की पूर्ति के लिए नित नए टैक्स लगाए जा रहे हैं और धड़ाधड़ नोट छापे जा रहे हैं. बाजार में कागज के नोट ज्यादा हैं, उसी अनुपात से सामान और सेवाएं उपलब्ध नहीं हैं. नतीजा: रुपए के मूल्य में तीव्र ह्रास.

एक जमाना था जब साधारण व्यक्ति एक या दो पैसे से एक समय का खाना खा सकता था. सरकार द्वारा चलाए गए एक और दो पैसे के सिक्के खूब चलते थे.आज 25 पैसे की चवन्नी को भी कोई पूछता नहीं. सड़क पर भीख मांगने वाला भी 50 पैसे से कम स्वीकार नहीं करता. इसी कारण 1, 2, 5, 10 और 20 पैसे के सिक्के बाजार से गायब हो गए हैं. 25 पैसे की चवन्नी भी बहुत नहीं चलती. कम से कम 50 पैसे का सिक्का ही कुछ काम देता है.

जो हाल सिक्कों का है, वही नोटों का भी है. थोड़े से लेनदेन के लिए भी 50 और 100 के नोटों की गड्डी उठाए फिरनी पड़ती है.

इसलिए जनसुविधा, और नोट छापने के खर्च को बचाने के लिए यह आवश्यक है कि बड़ी रकम के नोट छापे जाएं. 500 के नोट के साथ 1,000 के नोट की भी बहुत

आवश्यकता है जो शीघ्र निकलने चाहिए.

कुछ लोगों का कहना है कि बड़ी रकम के नोटों से कालाधन रखने में सुविधा होती है इसलिए ये नहीं छपने चाहिए. पर यह तर्क गलत है आजकल जब रुपए का मूल्य लगभग 10% हर वर्ष घट रहा है और अगले वर्ष इस से भी तेजी से घटने के आसार हैं, तो कोई बेवकूफ ही होगा जो अपना धन नोटों के रूप में रखेगा. उस से अधिक तो सरकार के इंदिरा विकास पत्र रखना सुविधाजनक है. उन पर 10% का ब्याज तो मिलता है जो कुछ हद तक रुपए के मूल्य छीजन को कम कर देता है.

वैसे कालाधन तो सब से ज्यादा सत्तारूढ कांग्रेस इकट्ठा और खर्च करती है. उसे हर जगह अपने कार्यकर्ताओं, नेताओं और विधायकों को देने के लिए, जलूस, जलसे, रैलियां करने के लिए, चुनाव लड़ने के लिए अपार धन चाहिए—500 से 1,000 करोड़ वार्षिक. यह खर्च चैक से हो नहीं सकता. इसे विशाल लेनदेन के लिए भी बड़े नोटों की आवश्यकता है. सरकार औरों का नहीं तो कम से कम अपना तो खयाल रखे.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोकतंत्र : लोगों को बहलाने क

दिल्ली का राजपथ यों कहने को तो मात्र एक सड़क का नाम है, पर यहां हर साल 26 जनवरी को हरे रंग के खूबसूरत सीढ़ीदार मंचों पर बैठ कर राजधानी का आभिजात्य वर्ग देश की सैनिक व सांस्कृतिक उन्नति का जायजा लेता है. इसी दिन यहां पहले प्रधान मंत्री इंडिया गेट पर जा कर शहीदों को श्रद्धांजलि देते हैं और बाद में राष्ट्रपति अपने सामने से गुजरती सेना की टुकड़ियों व झांकियों की सलामी लेने की रस्म अदा करते हैं.

गणतंत्र दिवस से महीना भर पहले यहां इन हरे रंग के मंचों को खड़ा करने वाले मजदूरों की जो खेप उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश व बिहार आदि राज्यों से आती है, वह इस ऐतिहासिक दिन के बारे में कितना जानती है, जरा इस की एक बानगी देखिए:

कुछ समय पहले यहां पूर्णिया से आए एक मजदूर मटरू ने बताया, "मैं तो साहब, यहां पर डंडे रंगता हूं, और 100 डंडे रंगने पर मुझे 15 रुपए मिलते है जिन में से 2 रुपए तो ठेकेदार बिना रंगे ही ले जाता है. वैसे यह कुल महीने भर का काम है. और 26 जनवरी का महत्त्व हम अनपढ़ लोग क्या समझें? होता होगा सरकार को कुछ फायदा,तभी तो वह इतना पैसा खर्च करती है."

"साहब, यहां डंडे, बल्लियां लगाने

लेख • जगदीश चावला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमरीका को छोड़ कर आज विश्व के सब से बड़े लोकतांत्रिक देश भारत में लोकतंत्र लोगों को बहलाने का एक ऐसा झुनझुना रह गया है, जिसे राजनेता मनचाहे ढंग से बजाते रहते हैं. आखिर कब समझेंगे हम लोकतंत्र का सही अर्थ ?

का झुनझुनातो नहीं

गरीब लोकतंत्र के 'शहंशाह' प्रधान मंत्री राजीव गांधी : यारदोस्तों के साथ पिकनिक में दोचार करोड़ रुपए आननफानन में खर्च करना मामूली बात है.

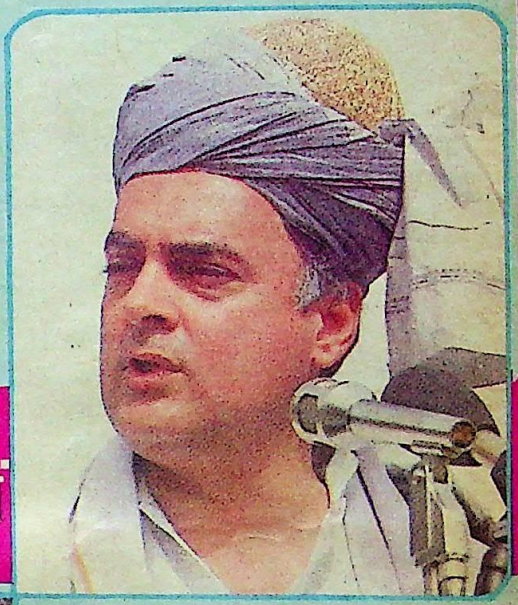

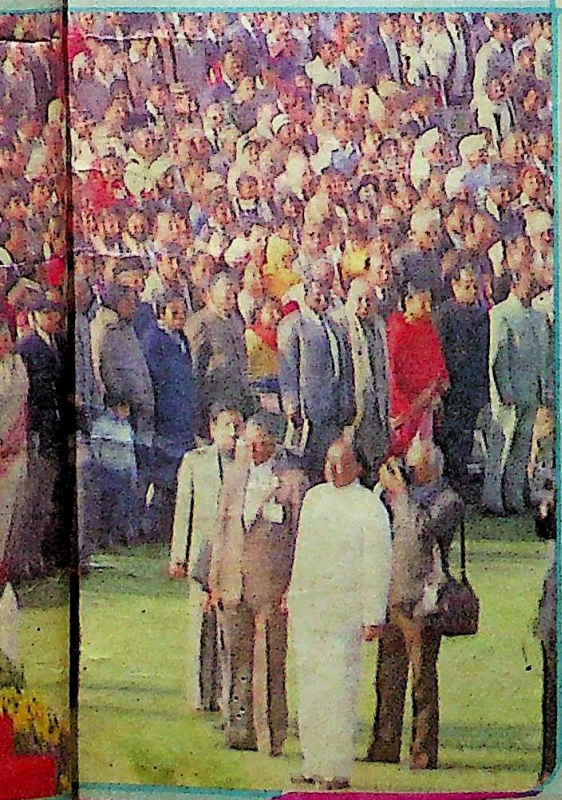

और उखाड़ने का काम यदि हमें पूरे साल मिलता रहे तो हमारे लिए यही लोकतंत्र है. बाकी हमें पता है कि यहां ऐसा होता नहीं." मटरू के साथी मोती के ये निश्छल शब्द सचमुच गरीबी की सीमारेखा से नीचे जीने वालों का ही नहीं, बल्कि समूचे गणतंत्र का दर्द व्यक्त करते हैं. गणतंत्र की सलामी लेने वाले अपने नागरिकों को गणतंत्र का सही अर्थ भी नहीं समझा सके, यह भी एक विडंबना है.

अमरीका को छोड़ कर भारत संसार का सब से बड़ा लोकतांत्रिक देश है. हमारे यहां लोकतंत्र को स्थापित हुए 40 से भी अधिक वर्ष हो गए. मगर यह कहना कठिन है कि गणतंत्र दिवस यानी 26 जनवरी का दिन कितने लोगों में उत्साह और उमंग पैदा करता है या कितने लोग 40 साल पहले प्राप्त

राष्ट्रपति को सेना की सलामी : केवल रस्म अदायगी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की गई आजादी को ऐतिहासिक उपलब्धि मान कर हर्षित होते हैं. सच तो यह है कि 26 जनवरी के दिन भी कइयों को एक निठल्ली छुट्टी के अलावा, कोई भाव ही पैदा नहीं होता. और यदि सरकारी झांकियों की परेड का आकर्षण न हो तो आम आदमी 'गणतंत्र दिवस' को अपना पर्व समझ कर नहीं मनाता.

हमारे संविधान ने, जो 22 विभागों, 395 अनुच्छेदों और 9 अनुसूचियों वाला एक विस्तृत प्रलेख है, हमारे देश को 'स्वायत्तशासी राज्यों का संघ' घोषित किया है. संविधान में न केवल केंद्रीय शासन प्रणाली की, बल्कि राज्यों की शासन व्यवस्था की भी व्याख्या की गई है. संसद, विधान मंडल, मंत्रि परिषद, राज्यपाल, उच्चतम न्यायालय, चुनाव आयोग, योजना आयोग, संघ लोक सेवा आयोग, राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति इत्यादि के विषय में भी प्रावधान दिए गए हैं. और यदि संसदीय लोकतंत्र के ढांचे में देखें तो वयस्क मताधिकार, संसदीय कार्यपालिका, स्वतंत्र न्यायालय, न्यायिक समीक्षा, संपत्ति और स्वतंत्रता के मूल अधिकार, धर्मनिरपेक्षता, सामाजिक न्याय और आर्थिक समानता, राजनीतिक दलों की खुली प्रतियोगिता, तटस्थ नौकरशाही इत्यादि के सिद्धांतों को लोकतंत्र का आधार बनाया गया है.

संविधान ने वैधानिक रूप से कार्यपालक शक्तियां राष्ट्रपति में निहित की हैं, पर संसदीय लोकतंत्र की परिपाटी के अनुसार इन सभी शक्तियों का प्रयोग प्रधान मंत्री करता है. प्रधान मंत्री व उस का मंत्रि मंडल ही अपने कार्यों के लिए लोकसभा के

वर्तमान राष्ट्रपति रामास्वामी वेंकटरमन : कांग्रेसी शासन में राष्ट्रपति का दरजा मात्र रबड़ की मुहर जैसा रह गया है.

50 हजार रुपए प्रतिमिनट के खर्च से चलने वाली संसद : जहां धन और समय का अपव्यय ही उस की सामर्थ्य और सार्थकता रह गई है (नीचे).

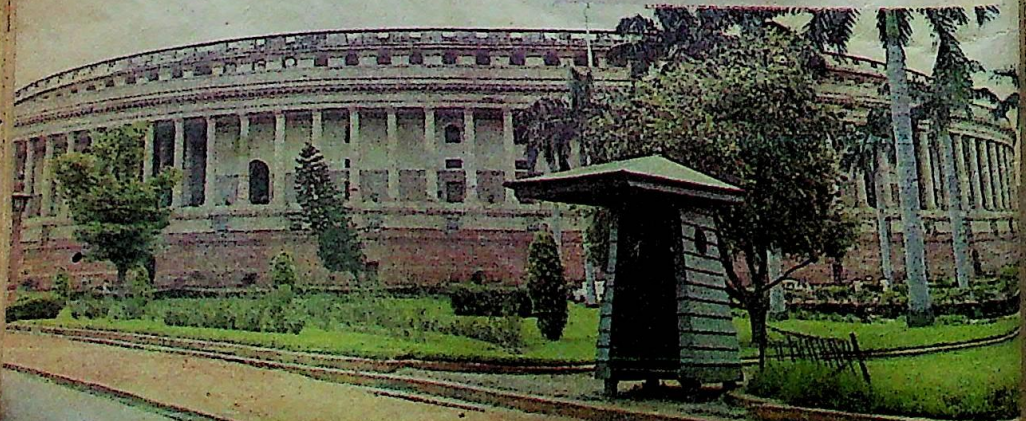

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

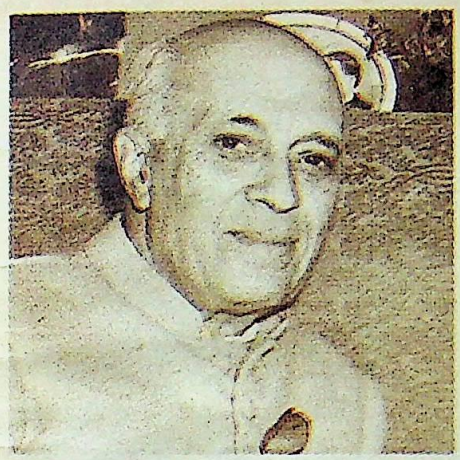

जवाहरलाल नेहरू : लोकतंत्र की जड़ें खोदने वाले पहले प्रधान मंत्री (बाएं). इंदिरा गांधी : आपातकाल के दौरान आतरिक सुरक्षा कानून का दुरुपयोग भी क्या लोकतंत्र को दृढ़ बना सका? (दाएं).

प्रति उत्तरदायी माना गया है.

देखा जाए तो सन 1947 से आज तक केंद्र में कायम हुई कांग्रेस सरकारों ने पिछले 40 सालों में लगातार इस संविधान की हत्या की है. परिणामस्वरूप राष्ट्रपति का दर्जा रबड़ की मुहर जैसा और प्रधान मंत्री का रुतबा एक निरंकुश शासक जैसा हो गया लगता है. प्रधान मंत्री चाहे जवाहरलाल नेहरू या इंदिरा गांधी रहे हों या राजीव गांधी हों, सभी ने अपनेअपने तरीके से लोकतंत्र की तमाम शक्तियों को अपने में समेटने की पूरी कोशिश की है और इसी लिए कहा जाता है कि सत्ता का जितना दुरूपयोग, ज्यादतियां, भ्रष्टाचार कांग्रेस सरकारों के कार्यकाल में हुआ है उतना तो ढाई साल की अन्य अवधि तक सत्ता में रही जनता पार्टी की सरकार के समय भी नहीं हुआ था. इस बात का अनुभव भी देश की जनता पिछले कई सालों से कर रही है कि न्यायपालिका, प्रेस और नौकरशाही पर सत्तापक्ष का दबाव किस सीमा तक बढ़ता गया है. आज प्रधान मंत्री जब यह कहते हैं कि राष्ट्रविरोधी काररवाइयों में लिप्त किसी भी राज्य सरकार को बरखास्त करने में केंद्र हिचकिचाएगा नहीं तो लोग, और राज्यों की गैरकांग्रेसी सरकारें समझती हैं कि इस वक्तव्य के पीछे उन का असली इरादा क्या हो सकता है.

इस में कोई दो राय नहीं है कि संविधान में राज्यों के मुकाबले केंद्र को अधिक शक्तिसंपन्न बनाया गया है. मिजाज से एकात्मक (यूनिटरी) लेकिन शक्ल से संघीय (फेडरल) होने के कारण संदेह की दीवारें तब और भी ऊंची उठ जाती हैं जब कोई प्रधान मंत्री यह कहता है, "जब तक केंद्र मजबूत नहीं होगा, तब तक राज्य मजबूत नहीं होंगे." इसी लिए राज्यों की अधिक स्वायत्तता की मांग भी कांग्रेस सरकारों को स्वच्छंदता ही दिखाई पड़ती है.

जवाहरलाल नेहरू के समय में हमारे संबंध अपने पड़ोसी देशों के साथ इस हद तक बिगड़े कि वे व्यावहारिक भी नहीं रहे. यह भी नेहरू की विदेश नीति की विफलता ही थी. उन के समय की कांग्रेस भले ही समाजवाद के नारे उछालती रही हो, लेकिन वह हमेशा बड़े पूंजीपतियों की पक्षधर बन कर ही काम करती रही है, यह देश का बच्चाबच्चा जानता है.

इंदिरा गांधी के समय में अच्छेभले चल रहे लाभकारी उद्योगों व बैंकों का जब सरकारीकरण हुआ तो आम जनता के हिस्से में बढ़ती कीमतों, भुखमरी, बेरोजगारी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और भारी करों की सौगात आई. इंदिरा गांधी के जमाने में ही देश का औद्योगिक विकास पंगु हुआ और नैतिक मूल्यों तथा चरित्र में गिरावट आनी शुरू हो गई. 'भूमि सुधार' के नारे और 20 सूत्रीय कार्यक्रम का लाभ यह हुआ कि खेतिहर मजदूर और गरीब किसान पहले से ज्यादा कंगाल हो गए और बड़े भूस्वामियों की मूंछें तन गईं.

हरिजनों, आदिवासियों, अल्पसंख्यकों तथा महिलाओं के हितों की रक्षा करने से संबंधित इंदिरा कांग्रेस के नारों के बावजूद, देश में पिपरा, बेलछी, मुरादाबाद और बागपत जैसे स्थानों पर नरसंहार व अत्याचार हुए और वह सिलसिला अब भी नहीं रुका है. 1978 में अलीगढ़, 1979 में जमशेदपुर, 1980 में मुरादाबाद, 1981 में हैदराबाद, 1982 में मेरठ, 1984 में भिवंडी, 1985 में अहमदाबाद और अब फिर मेरठ व अन्य कई जगहों पर होने वाले दंगों ने सांप्रदायिक ताकतों को उभरने का जो अवसर दिया वह भी तो कांग्रेस की ही नीतियों का नतीजा है.

आजादी से पहले तो तर्क सीधा था कि दंगे अंगरेजों की 'फूट डालो व राज करो' की नीति के कारण होते हैं, लेकिन आज राजनीति का चरित्र यदि सांप्रदायिक हुआ है तो क्या इस के लिए भी अंगरेजों को ही दोषी ठहराया जाएगा? नहीं, देश को फिरकों में बांटने वाली भी ये कांग्रेस सरकारें हैं जो एक तरफ तो मुसलमानों को खुश करने के लिए मुसलिम महिला बिल पारित करती हैं और दूसरी तरफ हिंदुओं को खुश करने के लिए अयोध्या का झगड़ा शुरू करवाती हैं.

राजनीतिक नफेनुकसान के हिसाब से भी देश ने बहुत कुछ खोया है. पूछा जा सकता है कि विदेशों की सैर और विदेशी समझौतों के अलावा मौजूदा प्रधान मंत्री की और क्या बड़ी उपलब्धि है?

तीन साल पहले राजीव गांधी इस भूखे-नंगे देश में प्रधान मंत्री के पद पर आसीन हुए. उन का शाही तेवर भी कितना लोकतांत्रिक है, इस की मिसाल तो इसी बात से मिल जाती है जब हमारे यह 'शहंशाह' अपने यारदोस्तों के साथ दोचार दिन की पिकनिक मनाने जाते हैं (याद कीजिए रणथंभौर की यात्रा, नए वर्ष की पूर्वसंध्या पर पिछली बार अंडमाननिकोबार में तथा इस बार लक्षद्वीप में गुजारा गया समय और सरिसका में मंत्रिमंडलीय बैठक के बहाने सैरसपाटे का कार्यक्रम) तो दोचार करोड़ रुपए आननफानन में खर्च हो जाते हैं.

कहने को तो हमारे यह नए प्रधान मंत्री राजीव गांधी फुजूलखर्ची के एकदम खिलाफ हैं, लेकिन अब उन की विदेश यात्राओं के लिए विशेष रूप से सजाए गए बोइंग 747 जहाज के जो विवरण सामने आए हैं, वे बड़ेबड़े महाराजाओं की शानशौकत को भी मात कर देने वाले हैं. इस विमान में खास तौर पर विदेश में बनवाए गए दो ऐसे पलंग लगवाए गए हैं जिन की कीमत करीब ढाई लाख रुपए है. दोनों पलंग लगवाने के लिए यह विमान खाली उड़ कर लंदन गया था और 10 दिनों तक इस ने कोई व्यावसायिक काम नहीं किया.

इस विमान के लिए तौलिए सिंगापुर से, तकिए व चादरें इटली से मंगवाई गईं. विमान में तरहतरह के शीतल पेय तो हैं ही,

राम जन्मभूमि : सांप्रदायिकता का अखाड़ा, कांग्रेसी सरकार की देन

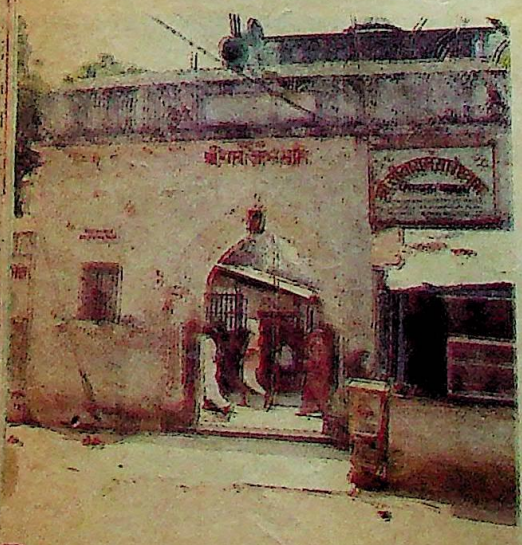

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत के प्रधान मंत्री राजीव गांधी और श्रीलंका के राष्ट्रपति जयवर्धन : असफल समझौतों की अटूट श्रृंखला में एक और बढ़ोतरी—श्रीलंका समझौता

दुनिया की सब से कीमती शराबें भी रखी गई हैं. कीमती सिगारों व सिगरटों के डिब्बे भी इस विमान में रखे गए हैं.

विमान के अति महत्त्वपूर्ण कक्ष में परोसा जाने वाला भोजन किसी भी शाही भोजन को मात देता है. पर जिस क्राकरी में यह भोजन परोसा जाता है, वह दुनिया की सब से महंगी बोन चाइनाक्राकरी है. पिछले दिनों राष्ट्रमंडलीय शिखर सम्मेलन में ब्रिटेन, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड आदि अनेक देशों के प्रधान मंत्री सामान्य व्यावसायिक विमानों द्वारा वेंकूवर गए. सिर्फ दो देशों के मुखिया अपना खुद का बोइंग 747 ले कर पहुंचे. एक थे दुनिया के सब से अमीर आदमी माने जाने वाले ब्रूनेई के सुलतान और दूसरे, दुनिया के सब से गरीब देश भारत के प्रधान मंत्री श्रीमान राजीव गांधी.

राजीव गांधी की इस शाही जिंदगी को ध्यान में रख कर बंबई के एक दैनिक अखबार ने उन्हें 'महाराजीव' की उपाधि से विभूषित किया है. पूछा जा सकता है कि दुनिया के सब से गरीब लोकतंत्र के प्रधान मंत्री का यह आचरण क्या उन्हें रंगीनमिजाजों व ऐशपरस्तों की श्रेणी में नहीं पहुंचाता?

एक तरफ सूखे से पीड़ित देश की गरीब जनता पानी के लिए प्यासी हो और दूसरी तरफ शासकों की आंख भी गीली न हो तो यह लोकतंत्र कैसा?.

लोकतंत्र की जितनी व जैसी मिट्टी-पलीद कांग्रेस के कार्यकाल में हुई है, वह दुखद तो है ही, शर्मनाक भी है. यहां एक बार चुने जाने के बाद प्रधान मंत्री ही देश का सर्वेसर्वा है. वह जो चाहे कानून बना सकता है. उसे किसी और को उत्तर देना जरूरी नहीं है. वह सिर्फ संसद के प्रति उत्तरदायी है, जहां उसी के दल का बहुमत है. यहां तक कि यदि किसी राष्ट्रपति को प्रधान मंत्री वांछित जानकारी नहीं देता तो प्रधान मंत्री के समर्थन में जुटी किराए की भीड़ यह समझ लेती है कि देश को न राष्ट्रपति की जरूरत है, न उच्चतम न्यायालय की. संसद ने जो

(शेष पृष्ठ 182 पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंखा चल रहा था. बाल बारबार हटाने पर भी उड़ कर आंखों पर आ जाते थे. लगता था कि वे नीना की आंखों से ढलकते आंसुओं को छिपाने का प्रयत्न कर रहे थे. नीना पलंग पर दीवार का सहारा ले कर अधलेटी बैठी हुई थी. आज फिर सास ने उसे ताना दिया था और वह सब्र खो बैठी थी. सब्र की भी कोई हद होती है. उस की शादी को छः साल से ऊपर हो रहे थे. पर अब तक न तो उसे बहू का स्थान मिला था और न ही बेटी का. लगता था जैसे कोई बंधुआ मजदूर पकड़ लाए हों. मरना है तो यहां और जीना है तो यहां.

परख

नीना को वह दिन याद आ रहा था, जब मुसकराते हुए गणेशन ने वरमाला के लिए उस के सामने सिर झुका दिया था. देवर बैंडबाजे की धुन पर नाच रहा था. उन्मुक्त हंसी के फौवारे छूट रहे थे. फोटो पर फोटो खिंच रहे थे. वरमाला के बाद सास ने उस का माथा चूम लिया था. वह प्रेम से गदगद हो रही थी. ससुर ने न्योछावर कर के मुट्ठी भरभर के रुपए सड़क पर लुटा दिए थे. उसे लग रहा था कि वह इतना सारा प्यार क्या कभी समेट पाएगी?

सुहागरात के समय नीना ने गणेशन से प्रश्न किया था, "आप ने अपना नाम गणेशन क्यों रखा? अच्छाखासा गणेश भी तो हो सकता था."

कहानी • अश्विनीकुमार भटनागर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पति ने ठठा कर हंसते हुए कहा था, "मेरे पिताजी राष्ट्रीय एकता में विश्वास रखते हैं. छोटे भाई का नाम रामेश्वरम है तो बहन का नाम गोदावरी है."

नीना ने लजा कर हंसते हुए अगला प्रश्न किया था, "तो फिर उस का नाम क्या होगा?"

गणेशन ने चकित हो कर पूछा, "किसका?"

"इतना भी नहीं समझते?"

"ओह, उस का," गणेशन खिलखिला कर बोला, "ऐसा ही कुछ रख देंगे – जैसे लक्ष्मणस्वामी या कृष्णस्वामी."

"यह स्वामी की क्या तुक रही?"

"स्वामी नहीं तो रामकृष्णन सही."

"और अगर लड़की हुई तो?" नीना ने पूछा.

"मैं कोई टैक्सी नहीं हूं जो किसी दूसरे के बच्चे का भार ढोती फिरूं," नीना भड़क कर बोली.

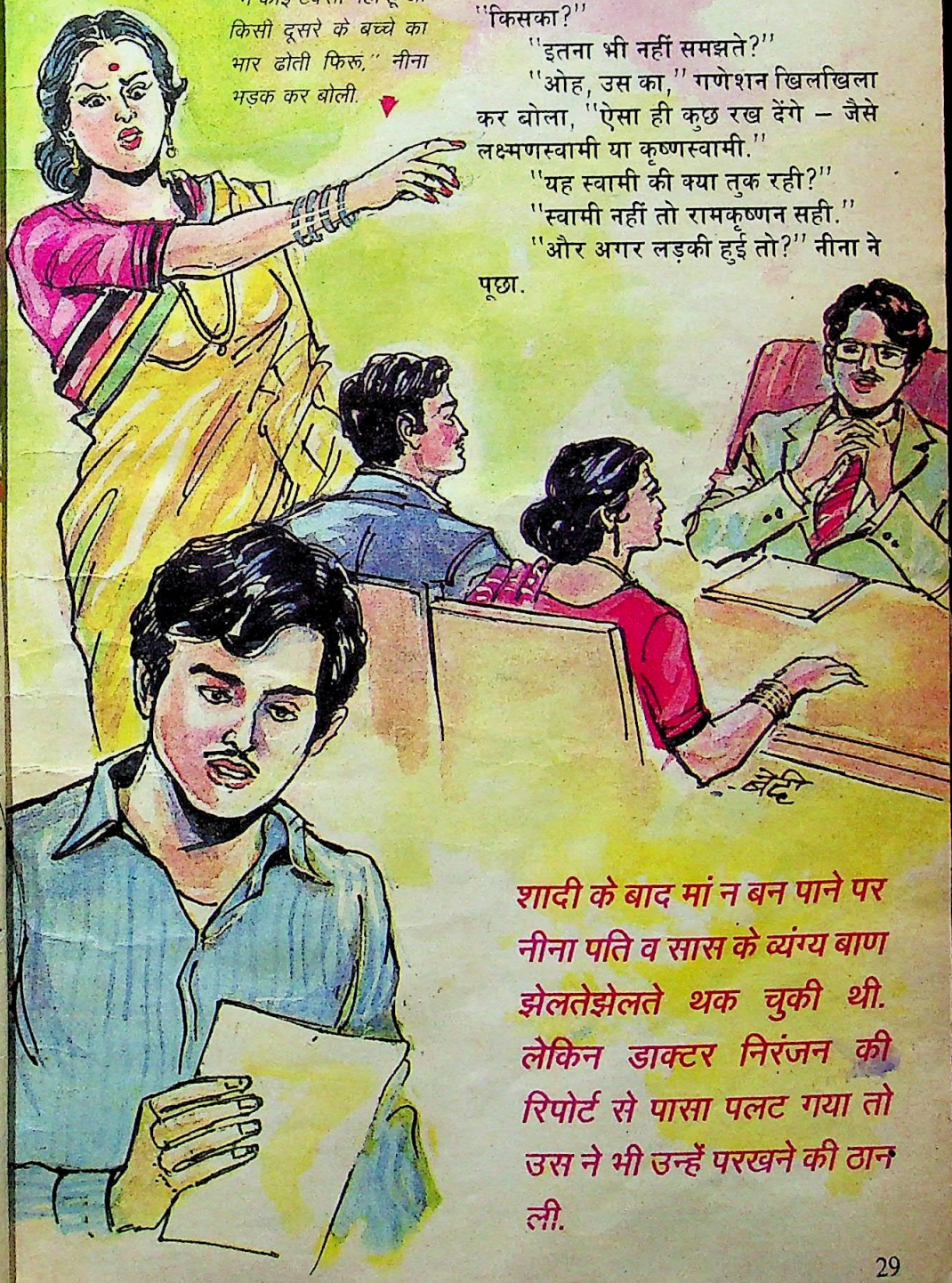

शादी के बाद मां न बन पाने पर नीना पति व सास के व्यंग्य बाण झेलतेझेलते थक चुकी थी. लेकिन डाक्टर निरंजन की रिपोर्ट से पासा पलट गया तो उस ने भी उन्हें परखने की ठान ली.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह तो बड़ा मुशकिल सवाल है. फिर भी ये नाम चलेंगे–जैसे वैजयंती माला, जयप्रदा, श्रीदेवी..."

पति के मुंह पर हाथ रखते हुए नीना ने कहा, "बस,बस, सारी फिल्मी नायिकाओं के नाम गिना रहे हो तो बताओ सिनेमा दिखाने कब ले चलोगे?"

फिर जो हंसी का दौर चला तो बस चलता ही रहा, कब सुबह हो गई पता ही नहीं चला.

मधुरात्रि के बाद मधुमास शुरू हुआ. अचानक गणेशन के पिता की तबीयत बिगड़ गई थी. इस कारण उन्हें पहाड़ों की सैर का कार्यक्रम रद्द करना पड़ा था. परंतु पिता ने इसरार किया था कि वे अवश्य घूमने जाएं. ये समय और अवसर जीवन में दोबारा नहीं आते. तब नीना का हृदय ससुर के प्रति आदर और सम्मान से भर गया था. सास ने विदा करते हुए अपनत्व से इतनी हिदायतें दी थीं कि नीना ने बरबस झुक कर उन के पैर छू लिए थे.

दो वर्ष निकल गए थे. नीना सारे परिवार के आकर्षण का केंद्र बनी रही थी. फिर धीरेधीरे उसे लगा था कि माहौल में कुछकुछ परिवर्तन आ रहा है. एक दिन स्पष्ट हो गया था कि इतना समय बीतने पर भी वह बच्चे की मां नहीं बन सकी थी. पहले तो इसलिए भी किसी ने ध्यान नहीं दिया था कि आजकल के नौजवान परिवार नियोजन के प्रति अधिक सतर्क हो गए हैं, परंतु नियोजन की भी एक सीमा होती है. पहले हिदायत, फिर आज्ञा के सिलसिले शुरू हुए, जो बाद में व्यंग्य व तानों के रूप में सामने आने लगे. अब तो इतने वर्ष हो गए थे और किसी के मन में यह संदेह नहीं रहा था कि नीना एक बांझ औरत है जो उन्हें पोता देने में असमर्थ है.

सास के लगातार बकझक करने से गणेशन भी नीना के प्रति न केवल उदासीन रहने लगा, बल्कि उन के बीच कलह अधिक बढ़ने लगा. वह छोटीछोटी बातों पर बिगड़ उठता था और घर सिर पर उठा लेता था. ऐसे समय में सास गणेशन को समझाना तो अलग रहा, और भड़काने लगती थी. इन्हीं झगड़ों के बीच तलाक और दूसरे विवाह की भी चर्चा होने लगी थी. नीना का मन डूबने लगा था. कभीकभी उसे लगता था कि अपने जीवन का ही अंत कर डाले.

नीना भी चाहती थी कि वह बच्चे की मां बने. गणेशन भी चाहता था कि वह पिता कहलाए. फिर सास तो मानो केवल पोते का मुंह देखने को ही जी रही थी.

पड़ोस में एक बच्चे की वर्षगांठ मनाई जा रही थी. खूब शोर मच रहा था, गानाबजाना हो रहा था और बधाइयों के नारे लग रहे थे. नीना और गणेशन चुपचाप पलंग पर लेटे हुए सब सुन रहे थे. यदि उन के बच्चा होता तो शायद वे भी आमंत्रित होते. वे भी उस की धूमधाम से वर्षगांठ मना कर चिल्लाचिल्ला कर सारे महल्ले को बता देते कि उन के भी बच्चा है.

अचानक गणेशन ने कहा, "नीना."

नीना ने कोई उत्तर नहीं दिया.

गणेशन ने उस का मुंह अपनी ओर मोड़ कर कहा, "एक विचार मन में आ रहा है."

"क्या?" नीना ने उदास स्वर में पूछा. उस की हंसी और मादक मुसकान तो कभी की खो गई थी.

"हमारे घर में भी बच्चा आ सकता है."

"मुझे गोद नहीं लेना. अगर मैं गोद लिए बच्चे को पूरा प्यार नहीं दे सकती तो उस के प्रति यह अन्याय होगा," घर में अकसर गोद लेने की बात होती थी, पर सास भी इस के विरुद्ध थी और वह स्वयं भी.

"मैं कुछ और कह रहा था."

"दूसरी शादी,ठीक है मुझे तलाक दे दो, "नीना के स्वर में कटुता थी, "कई बार सुन चुकी हूं."

गणेशन कुढ़ उठा. इस औरत से तो बात करना एकदम व्यर्थ है. मन चाहा कि कुछ बुराभला कह कर बात समाप्त कर दे, पर इधर कई दिनों से वह एक योजना बना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

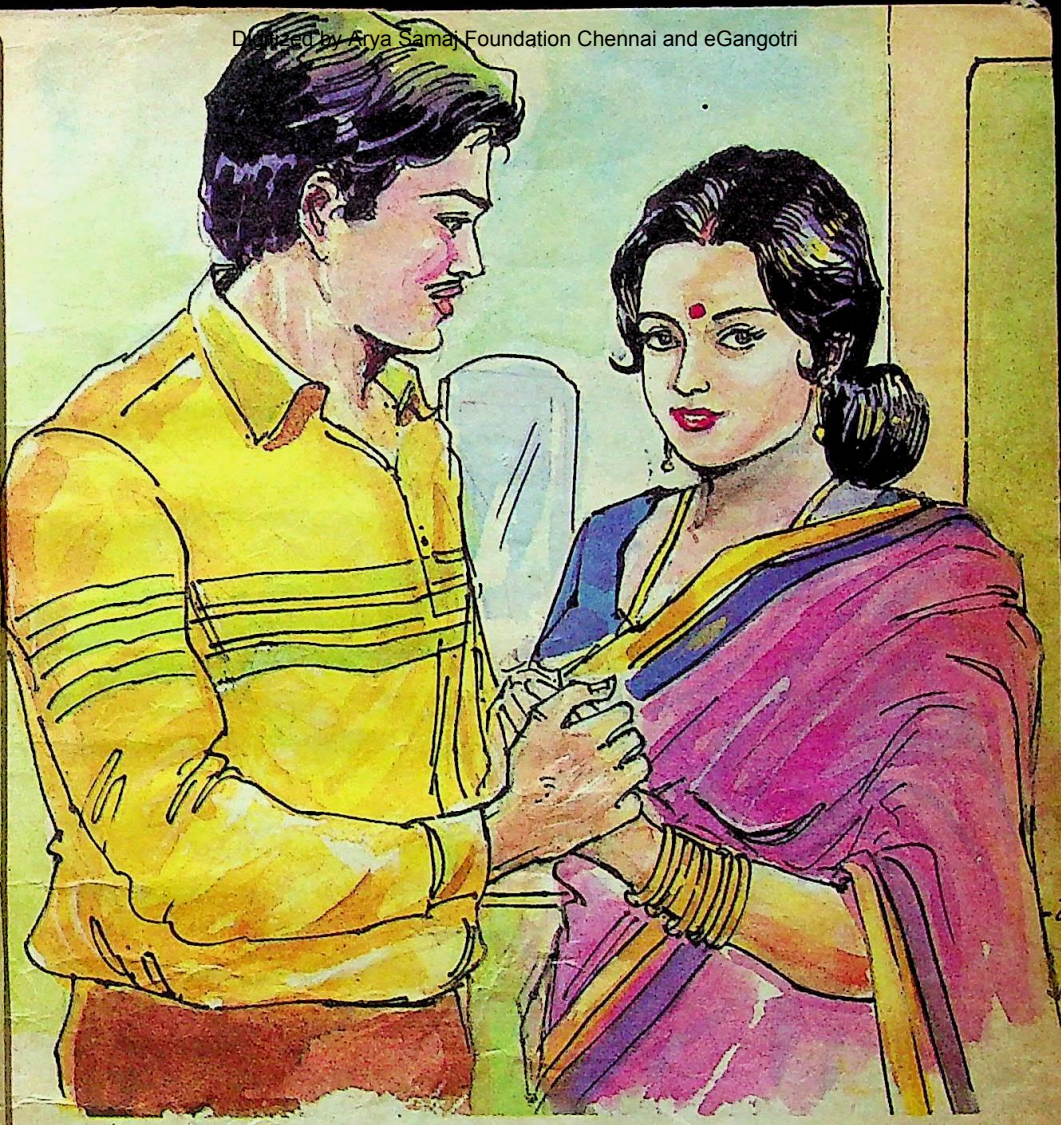

रहा था, जिस में नीना का समर्थन आवश्यक था. इस समय वह गंभीर था. इस कारण उस ने अपने को नियंत्रण में रखा.

"तुम्हें मालूम है न, निरंजन अमरीका से लौट आया है?"

"मालूम है."

"वह बहुत अच्छा चिकित्सक बन गया है. अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान में नौकरी भी मिल गई है. बड़ीबड़ी आकांक्षाएं हैं उस की."

"उस की आकांक्षाओं से हमें क्या लेनादेना?" नीना ने रूखे स्वर में कहा.

"मेरी उस से बात हुई थी. उस ने मुझे एक सुझाव दिया है."

नीना ने उत्तर नहीं दिया, चुप रही.

"परख नली से हमारी संतान हो सकती है."

नीना परखनली शिशु के बारे में बहुत कुछ पढ़ चुकी थी. वह चिढ़ कर बोली, "मैं कोई टैक्सी नहीं हूं जो किसी दूसरे के बच्चे का भार ढोती फिरूं." नीना ने मुंह फेर लिया.

गणेशन ने फिर से प्रयत्न किया, "उस

"क्या हम सामान्य हो सकेंगे? मैं ने तुम्हें बहुत मानसिक कष्ट पहुंचाया है," गणेशन ने अपराधबोध से भर कर कहा. ▲

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से मिलने तो चल सकती हो? शायद उस के समझाने से, बात तुम्हारी समझ में आ जाए."

बहुत कहने से नीना ने हां कर दी. एक दिन वे दोनों निरंजन से मिलने गए. निरंजन ने परखनली शिशु के बारे में बहुत कुछ बताया और कहा, "इस विषय में विज्ञान व तकनीक काफी उन्नति कर चुके हैं. अमरीका में बहुत प्रयोग हो रहे हैं. भारत में भी कुछ डाक्टर प्रयोग कर रहे हैं. यद्यपि सफलता का अंश कम है," कुछ सोच कर अचानक निरंजन ने पूछा, "पहले यह बताइए कि आप दोनों ने अपनी जांच भी करवाई है?"

गणेशन चुप हो गया. उस ने तो यह मान लिया था कि नीना बांझ है.

निरंजन ने आश्चर्य से कहा, "विवाह को इतने वर्ष हो गए और आप लोगों ने कभी अपनी जांच भी नहीं करवाई? अरे, हो सकता है कि मामूली इलाज या शल्य क्रिया से संतान हो जाए."

"यह भूल हो गई," गणेशन ने कहा.

"कोई बात नहीं," निरंजन ने कहा, कल फिर आप दोनों आइए, मैं जांच करवा दूंगा. कोई परेशानी नहीं होगी."

इस बात को दो सप्ताह हो चुके थे. नीना बारबार रिपोर्ट के बारे में पूछती और निरंजन कुछ न कुछ कह कर टाल देता था. कभी कहता, "अभी रिपोर्ट में देर है." कभी कहता, "निरंजन व्यस्त है या छुट्टी पर है." कभी कहता, "अभी और जांच होगी." ज्यादा दिन बीतने से नीना के दिल में संदेह उठने लगे थे.

एक दिन गणेशन के दफ्तर जाने के बाद वह स्वयं साहस कर के निरंजन से मिलने पहुंच गई थी.

"अरे आप?" निरंजन ने आश्चर्य से पूछा, "क्यों, क्या हुआ? क्या रिपोर्ट से आप संतुष्ट नहीं हुईं? आप को तो प्रसन्न होना चाहिए था."

"समझी नहीं," नीना उलझन में इस से ज्यादा कुछ कह न सकी.

"क्या आप ने रिपोर्ट नहीं देखी?"

"नहीं, क्या आप ने रिपोर्ट दे दी थी?"

"कभी की. आजकल ऐसी जांच में कोई ज्यादा समय थोड़े ही लगता है."

"क्या रिपोर्ट थी?"

"भई, आप में तो कोई कमी नहीं है. अरे एकदूसरे के सुखदुख में हाथ बंटाइए. इस से बढ़िया जीवन और क्या हो सकता है."

नीना ने मुसकराने का प्रयत्न करते हुए कहा, "क्या आप मुझे रिपोर्ट की प्रतिलिपि दे सकते हैं?"

"क्यों नहीं? बस दो मिनट रुकना होगा."

गणेशन दफ्तर से आ गया था, उस ने कपड़े बदल कर अभी चाय का प्याला पी कर रखा ही था कि नीना ने पूछा, "क्या हुआ रिपोर्ट का?"

गणेशन ने खीज कर कहा, "अरे, आ जाएगी, जल्दी क्या है?"

नीना ने कहा, "मुझे परखनली शिशु का प्रयत्न स्वीकार है. कब चलोगे हस्पताल?"

गणेशन के दिल पर सांप लोट गया. चिढ़ कर बोला, "क्यों, अब तुम टैक्सी बनने के लिए तैयार हो?"

नीना ने व्यंग्य से हंस कर रिपोर्ट दिखाते हुए कहा, "मुझे यह प्रतिलिपि मिल गई है. कम से कम मैं अब स्वतंत्रता से तो जी सकूंगी, रोजरोज के तानों से छुटकारा तो मिलेगा."

एक हीन भावना का गणेशन पहले से ही शिकार था, पर अब इस तरह से पोल खुल जाने से उस का जी भाग जाने को हुआ. कटुता से बोला, "बहुत प्रसन्न हो. लगता है कि मैदान मार लिया. निरंजन के पास जा कर भूल हो गई."

"इसी लिए न कि अब मुझे उलटासीधा कहने की किसी की हिम्मत नहीं होगी. मैं ने

समानता

आर्थिक समानता अहिंसापूर्ण स्वराज्य की मुख्य चाबी है.

—महात्मा गांधी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहुत दुख उठा लिए इस घर में. अब मैं शान से सिर उठा कर जी सकती हूं. मैं चिल्लाचिल्ला कर कहना चाहती हूं कि मुझे बच्चे की मां बनना है. मुझे बच्चा चाहिए."

"तो क्या तलाक देने की इच्छा है?"

"क्यों नहीं, तुम लोग भी तो तलाक दे कर दूसरे विवाह की धमकियां दे रहे थे? दुनिया को तो सचाई मालूम होनी चाहिए. मैं भी देखना चाहती हूं कि अब उन लोगों का मेरे प्रति क्या व्यवहार होगा?"

क्रोध में आ कर गणेशन ने कहा, "ठीक है, अगर जगहंसाई कराने पर ही तुली हो तो जाओ, ले लो तलाक. मुझे कोई आपत्ति नहीं है."

नीना ने व्यंग्य से कहा, "तुम आपत्ति करने वाले कौन होते हो?"

क्रोध से गणेशन का मुंह लाल हो उठा. वह झटके से उठ खड़ा हुआ. लगता था कि आवेश में हाथ उठा देगा. मगर फिर चुपचाप बाहर चला गया.

अब नीना की बन आई.वह पिछले वर्षों के दुर्व्यवहार का पूरा बदला लेने लगी. उस की हर बात में व्यंग्य था, हर बात में कटुता थी. सास की तो बोलती ही बंद हो गई थी. गणेशन ने नीना से बात करना बंद कर दिया था.

एक दिन तंग आ कर गणेशन ने कहा, "इस तरह साथ रहना नहीं हो सकेगा. अब तो हद हो गई है. तलाक लेना ही ठीक रहेगा. जो होगा देखा जाएगा."

"मुझे अपने मायके जाना होगा. कुछ तो प्रबंध करना ही पड़ेगा. मुझे अपना पूरा खर्च चाहिए. मैं बाप के ऊपर बोझ बन कर नहीं रहूंगी," नीना ने उद्दंडता से कहा.

"ठीक है, ठीक है. जाने की तैयारी करो."

"चली जाऊंगी, धौंस दिखाने की जरूरत नहीं है," नीना ने चिल्ला कर कहा.

इस बात को भी 15 दिन हो गए थे. गणेशन ने देखा कि नीना ने जाने की कोई तैयारी नहीं की थी.

"क्यों, जाना नहीं है क्या?"

"नहीं, क्या इस घर में बुरी लगती हूं"

"नहीं तो," गणेशन ने चिढ़ कर कहा" "बहुत अच्छी लग रही हो."

अचानक नीना ने हंस का कहा, "मैं तुम्हारी परख कर रही थी. तुम कितनी जल्दी संबंध विच्छेद करने को तैयार हो गए. शादी क्या हंसीखेल है? क्या हम दोनों ने एकदूसरे के सुखदुख को बांटने का वादा नहीं किया था? अगर मुझे एक इनसान का दरजा मिलेगा तो मैं अब भी तुम्हारे साथ रह सकती हूं."

गणेशन ने आश्चर्य से पूछा, "क्यों, क्या तुम्हें तलाक नहीं चाहिए?"

मैं ने पति की कामना की थी, सो मिल गया. तुम ने एक पत्नी की कामना की थी तो वह तुम्हें मिल गई. अगर हम एकदूसरे में विश्वास और सहानुभूति की खोज कर लें तो शायद बच्चे की कमी भूल जाएंगे. क्या बच्चा पति से बढ़ कर होता है?"

"तो क्या मैं ने तुम्हें समझने में भूल की?"

"बिलकुल भूल की."

"क्या हम सामान्य हो सकेंगे? क्या तुम अतीत को भूल सकोगी? हम लोगों ने तुम्हें मानसिक कष्ट तो पहुंचाया ही है न?"

"जिस से प्यार हो, उस के अतीत में नहीं झांकना चाहिए. जो बीत गया उसे भूलना ही ठीक होगा."

"तो अब क्या करना होगा?" गणेशन ने नीना का हाथ पकड़ कर अपनी ओर खींचते हुए पूछा.

"अब?" नीना ने एक दार्शनिक की तरह छत की ओर ताकते हुए कहा, "हमें एक नया जीवन आरंभ करना होगा – एक नए मधुमास से."

"क्या मतलब?"

"एक महीने की छुट्टी लो. कुछ दिन मेरे साथ अपनी सुसराल में रहना. ज्यादा से ज्यादा दो दिन. और फिर हम लोग पहाड़ों की सैर करने चलेंगे. सुनते हैं, पहाड़ों की स्वच्छंद मधुर हवा में मन का मैल धुल जाता है." ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परछाईं

नदी में
परछाईं दिखलाई
पड़ी थी.

किसी का प्रतिबिंब
नजर आया था.

परछाईं की भी
चितवन
हिली थी.

पानी पर कोई
भाव तैर
आया था.

चेहरे की रंगत
भी खिली
थी.

मुसकान पर
बोल कोई
चिपक आया था.

सपनों में
पलकें भी
अधखुली थीं.

ख्वाब ही
सशरीर
उतर आया था.

-गुलाब खेतान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शून्यकाल का शून्यालाप

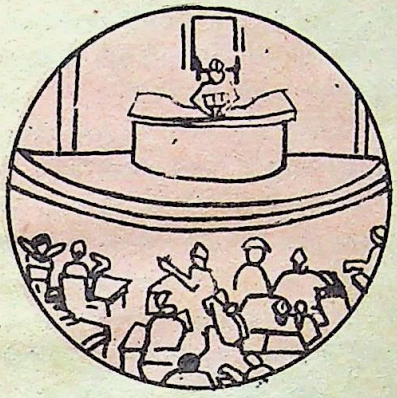

इस स्तंभ में कुछ ऐसे प्रश्न पूछे जाते हैं जो संसद में पूछे नहीं जाते, पर पूछे जाने चाहिए. यहां प्रस्तुत हैं इस प्रकार के कुछ महत्त्वपूर्ण प्रश्न और उन के संभावित उत्तर.

रूस और अमरीका के समझौते से आप क्या महसूस करते हैं? श्रीलंका में क्या हो रहा है?

तथा अन्य प्रश्न....

सदस्य: मध्यम दरजे के प्रक्षेपास्त्र कम करने के महाशक्तियों के समझौते से आप क्या महसूस करते हैं?

मंत्री: जब कोई समझौता करता है तो हमें खुशी होती है क्योंकि हमें समझौते करने की आदत है. हां, हम तो मुशकिल में तब पड़ते हैं, जब उसे लागू करना होता है. हम तो रूसअमरीका के इस समझौते की तारीफ ही करेंगे क्योंकि हमें इसे लागू करने की चिंता नहीं है.

सदस्य: क्या अब दुनिया में युद्ध का खतरा टल गया है?

मंत्री: हथियार कभी अपनेआप नहीं लड़ते हैं. लड़ते तो आदमी हैं, उन की नीतियां लड़ती हैं. पर खुद को भला कहलवाने के लिए हम हथियारों को बुरा बताते रहे हैं, बताते रहेंगे. बड़ा धमाका तलवारों के आपस में टकराने से नहीं, स्वार्थों के टकराने से होता है. असल स्वागत उस दिन होना चाहिए, जब दोनों महाशक्तियां लड़ने या दूसरों को आपस में लड़वाने की मानसिकता त्याग दें.

सदस्य: श्रीलंका में क्या हो रहा है?

मंत्री: वही जो पहले हो रहा था. कभी तमिल उग्रवादी तो कभी सिंहली उग्रवादी हत्याएं कर रहे हैं. पहले हम भारतीय शांति सेना की बहादुरी की खबरें खूब दिया करते थे. हमारे और तमिलनाडु के राजनीतिबाजों के संबंध सामान्य बनाने के लिए अब हम सफाई अभियान की खबरें संकोच के साथ जारी करते हैं.

सदस्य: वहां हमारे जवान मारे जा रहे हैं, आप की इस पर क्या टिप्पणी है?

मंत्री: मियां की जूती मियां के सिर पर ही पड़ रही है. मुक्ति चीते हमारे ही पैदा किए हुए हैं और उन के नखदंत भी हम ने ही तेज किए थे. अब हम उन से अपनी खाल खिंचवा रहे हैं.

सदस्य: सुना है आप के और अन्ना द्रमुक के बीच तनाव पैदा हो गया है?

मंत्री: हमें इस से कोई फर्क नहीं पड़ने वाला. जैसी हमारी परंपरा रही है, वहां जो भी द्रमुक सत्तारूढ होगा, अपना गठबंधन उस से कर लेंगे. पराजित के खिलाफ जांच आदि का नाटक शुरू कर देंगे तो विजयी द्रमुक खुद ब खुद हमारी अपनी हो जाएगी.

सदस्य: कांग्रेस में फरजी सदस्यता का मामला क्या कभी सुलझेगा?

मंत्री: उस का इतिहास तो यह कहता है कि प्रधान मंत्री और कुछेक नेताओं को छोड़ कर बाकी सब फरजी सदस्य ही हैं. उन में से जब कोई पार्टी छोड़ जाता है तो बचे हुए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोग यही कहते हैं कि वह तो हमारी पार्टी का कभी सदस्य ही नहीं था.

इस मसले का तो एक ही हल है कि अकेले प्रधान मंत्री को ही पार्टी का एकमात्र सदस्य माना जाए और शेष सारे देशवासियों को कांग्रेस के सदस्य मान कर उन में से कुछ का विशेष सदस्य के रूप में चयन प्रधान मंत्री द्वारा कर लिया जाए. फिर यह उन्हें सत्ता के मैदान में कुरसी रूपी फुटबाल के पीछे दौड़ाने के लिए सीटी बजाते रहें.

सदस्य: इतना सरल हल, वैसे अब क्या हो रहा है?

मंत्री: अब भी लगभग यही हो रहा है. पार्टी में जो दौड़ना चाहते हैं, उन की टांगों में बेड़ियां पहनाई जा रही हैं और जो सुस्त पड़े हैं उन के लिए ताकत के इंजेक्शन ढूंढ़े जा रहे हैं. नागालैंड के चुनाव परिणाम और फेयरफैक्स के मामले में आयोग के फैसले से पार्टी के चेहरे पर कुछ रौनक दिखाई दे रही है.

सदस्य: पंजाब समस्या को हल करने के लिए आप क्या कर रहे हैं?

मंत्री: पंजाब समस्या? जहां तक हमारी जानकारी है, पिछले एक सप्ताह में न तो कहीं हत्याकांड हुआ (अब दो चार मर जाएं तो वह कोई हत्या होती है, 10-50 मरें तो हत्याकांड होता है) और न हमारे दल के किसी नेता के मुंह में कुरसी के लिए पानी आया. अब आप को पंजाब समस्या की याद कैसे आ गई?

सदस्य: इस बार सती प्रथा के खिलाफ आप इतने चैतन्य कैसे हो गए?

मंत्री: आप की बात ठीक है. हमारे राज में भी अनेक सतियां हुई हैं, पर हम ने कभी परवाह नहीं की. इस बार हमें लगा कि रूपकंवर के सती होने से एक जाति विशेष के लोग संगठित हो रहे हैं और नया लोक दल उभरने वाला है. तब हम ने जरा विरोध किया. बाद में हमें लगा कि हमारे विरोध करने का भी वे लाभ उठा रहे हैं तो हम चुप हो गए.

बाद में ऐसे महिला संगठन आगे आ गए, जिन की जड़ें देश की महिलाओं में नहीं हैं. वे सिर्फ पार्टी की नेता और हमारी पार्टी के बड़े नेताओं की पत्नी होने के कारण महिला नेता बन गईं. इन महिला संगठनों को श्रेय देने के लिए हम सती होने के खिलाफ नया कानून बनाने जा रहे हैं.

सदस्य: कुछ नेता पुराने सती मंदिरों में पूजा पर रोक के खिलाफ क्यों हैं?

मंत्री: इस से यही साबित होता है कि भगवान और धर्म अंधेरे में ही फलतेफूलते हैं. शायद वे नेता यह मानते हैं कि अब जो लोग किसी महिला को सती करते हैं, वे तो जलाते हैं लेकिन पूर्वकाल में जो सतियां हो गईं, वे धर्म और पुण्य के काम कर गईं जबकि हर युग में पति के शव के साथ जल कर मरने वाली स्त्री यह काम मजबूर हो कर ही करती थी.

अब सती होने वाली और सती की पूजा करने वालों को सतियों के ये पुराने मंदिर, उन में प्राप्त होने वाला चढ़ावा ही इस कुकर्म की प्रेरणा देते हैं. सती का मंदिर नया हो या पुराना, पूजा बंद होनी चाहिए.

सदस्य: रामानंद सागर रामायण के साथ क्या कर रहे हैं?

मंत्री: वही जो पंडेपुजारी इस के साथ करते रहे हैं. रामायण की कथा सुना कर बरसों से लोग अपनी रोजीरोटी चला रहे हैं. कुछ इस के सहारे भोलीभाली जनता को ठगते भी रहे हैं. रामानंद सागर ने भी चींटी चाल से रामायण की फिल्म चला कर दूरदर्शन को मजबूर कर दिया है कि वह 2 और कड़ियों के लिए स्वीकृति दे. राम की महिमा कि वह दूरदर्शन को ठगने में कामयाब हो गए.

सदस्य: देशवासियों को सूखे से बचाने के लिए आप क्या कर रहे हैं?

मंत्री: विश्व कप क्रिकेट दिखा चुके, सोवियत महोत्सव दिखा दिया है. फिक्र न करें, आप के लिए शीघ्र ही नएनए खेल तमाशे ले कर हाजिर होंगे.

—गोविंद शर्मा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नारी
महान है
दहेज की
तस्करी के लिए
निजी
वायुयान है
नारी
घर की
रानी है
खाने कपड़े पर
नौकरानी है
नारी गजलों की
गुल्फाम है
जरखरीद
गुलाम है
नारी धन है
ईंधन है
पति के साथ
जला दो तो
सती है
सती मंदिर
बना दो
खानदान लखपती है.

—मिश्रीलाल जायसवाल

नार्यस्तु यत्र पूज्यंते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कौन अपना कौन पराया

कहानी • जया टंडन

"साहब, देखिए, छोटे भैया की चिट्ठी आई है. चिड़िया वाला नीला लिफाफा उन का ही आता है न?"

कर्नल कुंदन ने रामू काका के हाथ में पकड़े विदेशी हवाई पत्र पर एक नजर डाली. उन के चेहरे पर आशा की एक हलकी सी चमक उभरी. उन्होंने हाथ बढ़ा कर पत्र ले लिया.

कांपती उंगलियों से उन्होंने पत्र खोला. अंदर चार ही पंक्तियां लिखी थीं. वह एक ही सांस में पत्र पढ़ गए. लेकिन पत्र पढ़ते ही उन की आंखों की चमक बुझ गई. निढाल सा हाथ नीचे लटक गया और पत्र उंगलियों से फिसल कर जमीन पर जा गिरा.

"क्या हुआ, साहब?" रामू काका उन के

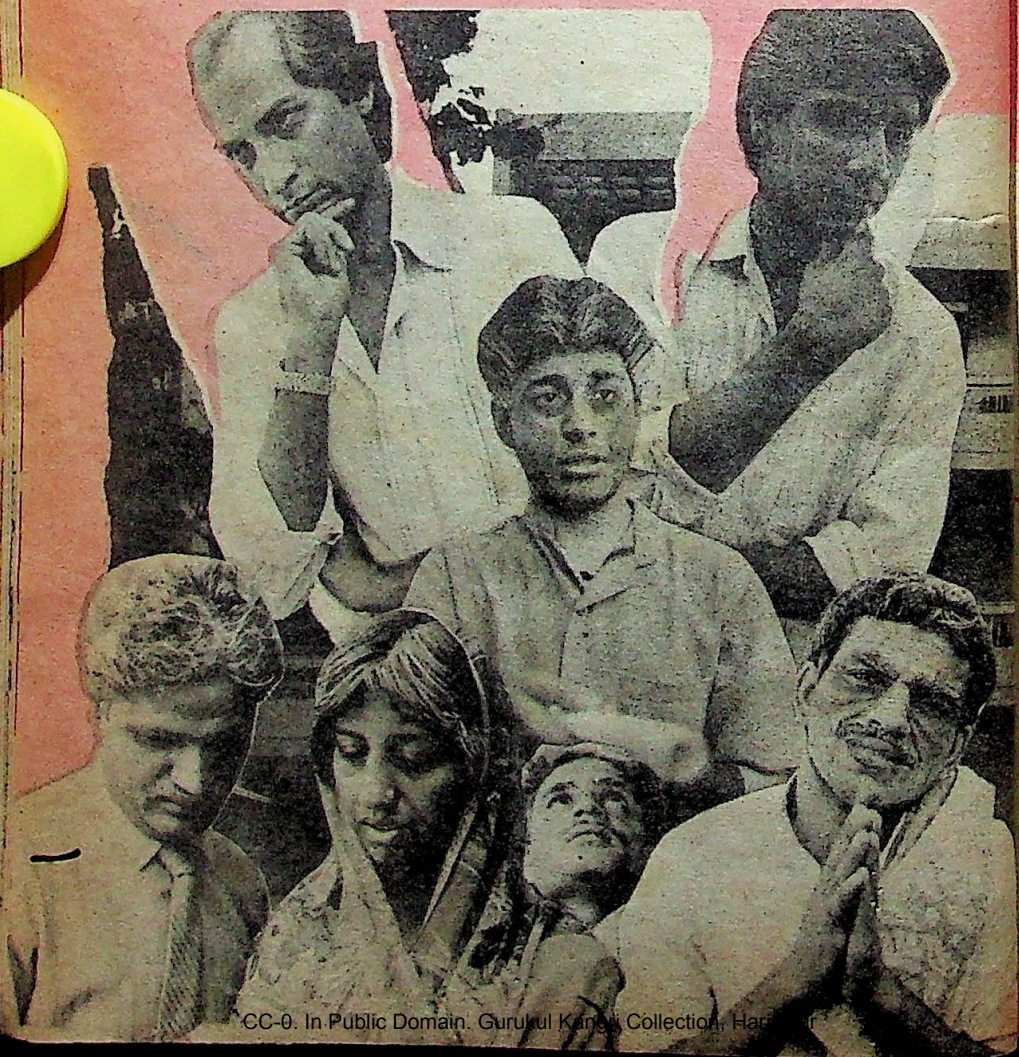

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

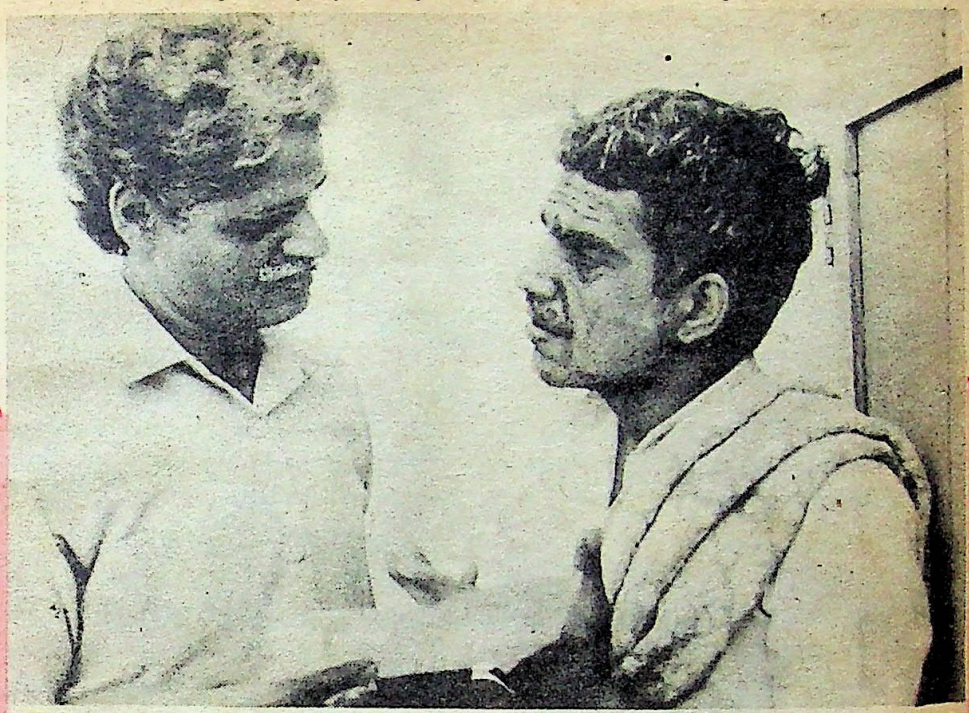

चेहरे पर आतेजाते उतारचढ़ाव को गौर से देख रहे थे. उन्होंने सोचा, शायद छोटे भैया नहीं आ रहे हैं.

रामू काका अपने मन में उठे संशय को और नहीं दबा पाए. आखिर पूछ ही लिया, "कब आ रहे हैं छोटे भैया, साहब?"

"वह नहीं आ रहा, काका. वह भी नहीं आ रहा है. बूढ़े बाप के लिए उस के पास भी समय नहीं है. लिखा है कि कहो तो और पैसे भेज देता हूं, पर आ नहीं सकता. कारोबार से फुरसत ही नहीं मिलती," कह कर कुंदन चुप हो गए और सूनी आंखों से बाहर शून्य में ताकने लगे.

कब उन की आंखों से आंसू बह कर उन के हाथों पर टपकने लगे, उन्हें पता नहीं चला. रामू काका का मन हाहाकार कर उठा.

"नहीं, साहब, आप रोते क्यों हैं? आप का और कोई न सही, पर हम हैं न आप की सेवा करने के लिए. जब तक हमारे तन में जान है, हम आप को तकलीफ नहीं होने देंगे." और रामू काका कुंदन के पास बैठ कर उन के पांव दबाने लगे.

"साहब, कब आ रहे हैं छोटे भैयाजी" रामू काका मन में उठते संशय को दबा नहीं पाए तो पूछ ही लिया.

उस रात कर्नल कुंदन ने खाना नहीं खाया. बस, गुमसुम से बैठे रहे.

कुंदन रात को अपने बिस्तर पर लेटे तो नींद आंखों से कोसों दूर थी. मन बारबार अतीत की ओर भाग रहा था. वह सोच रहे थे, आखिर उन से क्या भूल हो गई, जो दोदो

कर्नल साहब की एक भूल के कारण पराए बन चुके उन के जिन स्वार्थी बेटों ने कभी उन के दुख और अकेलेपन को बांटने का प्रयास नहीं किया वही उन के द्वारा एक पराए को अपना सब कुछ सौंप देने पर भड़क क्यों उठे?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बेटों के बावजूद वह अब अनाथों जैसा जीवन व्यतीत कर रहे हैं, वह भी घर के पुराने नौकर के सहारे.

विगत के बारे में सोचतेसोचते कुंदन की आंखों के सामने अपने जीवन के पिछले 30-31 वर्ष चलचित्र की तरह आने लगे.

तब के लेफ्टिनेंट कुंदन और आज के कर्नल कुंदन में कितना अंतर था. शारीरिक ही नहीं, मानसिक भी.

तब बहुत कुछ न होते हुए भी उन्हें किसी चीज की कमी खलती न थी. लेफ्टिनेंट की थोड़ी सी तनख्वाह ने ही उन में इतना आत्मविश्वास भर दिया था कि वह दुनिया से टक्कर लेने के लिए तैयार थे.

मेजर बनतेबनते उन के जीवन के कुछ सिद्धांत बन गए थे. स्वभाव में गंभीरता आ गई थी. जीवन के प्रति उन की विचार-धारा में भारी परिवर्तन आ गया था और विवाह जैसे महत्त्वपूर्ण निर्णय ने उन्हें अपनी जिम्मेदारियों और लक्ष्यों के प्रति सजग व सतर्क कर दिया था. सच पूछो तो उन की महत्त्वाकांक्षाएं आकाश को छूने लगी थीं.

शादी से उन्हें दो बेटे मिले थे– मुकेश और नितिन. वह अपने दोनों बेटों के जरिए अपने अधूरे अरमानों और सपनों को पूरा करने में जुट गए थे.

अभावों में पले अपने बचपन ने उन के दृष्टिकोण को बहुत संकीर्ण बना दिया था. जीवन में सफलता और अधिक से अधिक पैसा कमाना ही उन का एकमात्र ध्येय बन गया था. उन के बेटे पढ़लिख कर अच्छी और ऊंची नौकरियों पर लगें, यही उन की दिली तमन्ना थी.

इसी लिए उन्होंने दोनों बेटों को आरंभ से ही अपने कड़े अनुशासन में पाला था. पर वह अनुशासन सिखातेसिखाते यह भूल गए थे कि उन के बेटों को प्यार भी चाहिए. उन का भी अपना मन है, कुछ आकांक्षाएं हैं, कुछ इच्छाएं हैं जिन्हें वे अपने ढंग से पूरा करना चाहते हैं. बस, शायद यही उन की पहली भूल थी. पर तब उन्हें अपनी यह भूल समझ में नहीं आई थी.

इस भूल का नतीजा वही हुआ, जो

"जरा हिसाब तो लगा कर देखो कितना पैसा तुम पर अब तक खर्च हो चुका है और आने वाले दो सालों में कितना खर्च होगा?" कर्नल साहब बोले.

Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

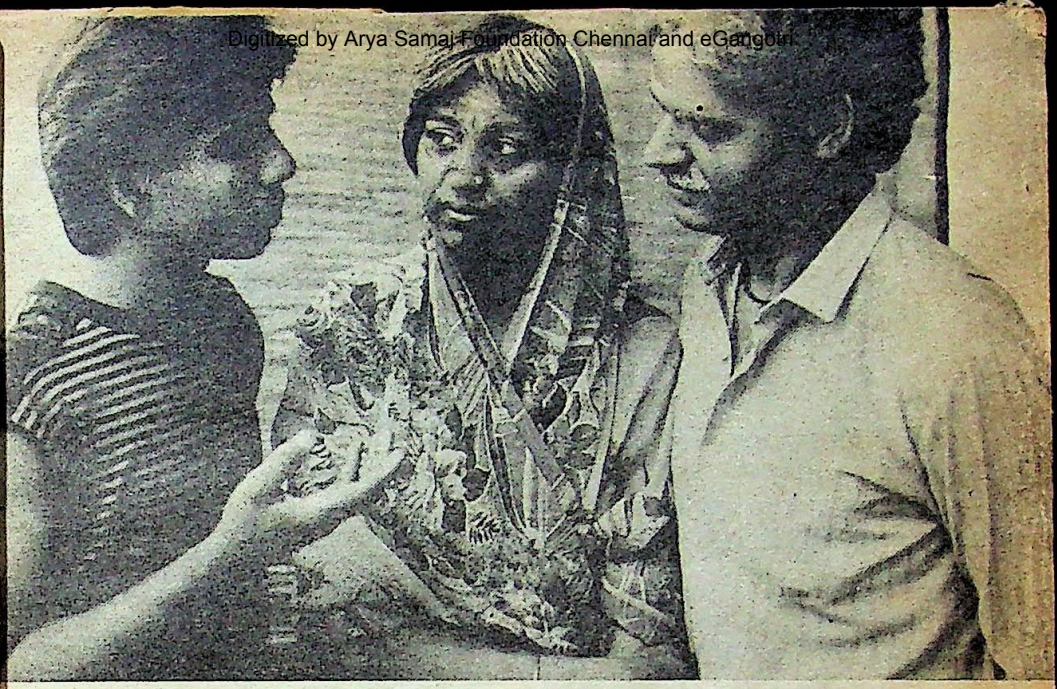

अकसर ऐसे मामलों में होता है. थोड़ी समझ आते ही दोनों बेटे पिता से कतराने लगे थे. बहुत दिनों बाद उन्हें पता लगा था कि वे उन्हें 'बी.डी.' (बुलडाग) के उपनाम से बुलाते थे. जब उन का दफ्तर से घर आने का समय होता था तो दोनों ही जानबूझ कर इधरउधर खिसक जाते थे या फिर अपने कमरे में किताबें खोल कर सामने रख लेते थे और पढ़ने का नाटक करते रहते थे.

इस नाटक का ही परिणाम था कि उनका बड़ा लड़का मुकेश आठवीं कक्षा में बुरी तरह फेल हुआ था. उस का परीक्षा परिणाम देख कर वह भौचक्के रह गए थे.

उन्होंने अपने मन में घुमड़ती हताशा को बेटे को बुरी तरह मार कर निकाला था.

शायद मुकेश के मन में घृणा की दरार तभी से पैदा होनी शुरू हुई होगी. उस दिन के बाद से मुकेश ने कभी खुल कर उन से बात नहीं की. उन दोनों के बीच मां ही माध्यम बनी रही थी. एक ही घर में बापबेटा अजनबी बने रहते थे.

पर तब पिता के पास ये सब बातें समझने का समय नहीं था. वह मुकेश को समय और पैसे की कीमत समझाने के लिए

"कैसी जिम्मेदारी की बातें कर रहे हैं आप? जिम्मेदारी समझ कर ही यह कदम उठाया है मैं ने." नितिन बोला.

अकसर बड़बड़े भाषण देने लगे थे. उन्होंने फिल्म देखने, घूमनेफिरने सब पर सख्त रोक लगानी शुरू कर दी थी. बेटा मन ही मन घुट रहा था, इस की उन्होंने कभी परवाह नहीं की थी.

गेहूं के साथ घुन की तरह पिस रहा था छोटा लड़का नितिन भी. वह बड़े भाई को डांट पड़ती देख कर सहमासहमा सा रहता था और वह पिता की आंखों से दूर मां की ओट में ही रहने की भरसक कोशिश करता था. पर तब पिता ने छोटे बेटे पर ध्यान ही नहीं दिया था. सारा ध्यान बड़े लड़के मुकेश पर ही केंद्रित था.

उस के बाद मुकेश फिर कभी फेल नहीं हुआ था. वह पहले स्कूल और फिर कालिज में भी प्रथम श्रेणी में ही पास होता रहा था. तब यह देख कर उन का सीना गर्व से फूल जाता था. और जब मुकेश ने अपनी मां के माध्यम से कहलवाया था कि वह उच्च

CC-0, In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिक्षा के लिए अमरीका जाना चाहता है तो वह बड़े खुश हुए थे. उन्होंने सहर्ष अनुमति दे दी थी. तब उन्हें अपने सपने साकार होते दिखाई दिए थे.

दौड़धूप तो सब मुकेश ने ही की थी, पर पैसा पिता ने ही लगाया था. उन्होंने विदेश जाने से पहले मुकेश से कहा था, "बेटा, बैठ कर हिसाब लगाओ कि अब तक तुम पर कितना पैसा खर्च हो चुका है और आने वाले दो सालों में कितना होगा."

यह कहने के पीछे पिता का उद्देश्य यही था कि बेटा यह समझ सके कि पैसे की कीमत क्या है. पर मुकेश ने इस बात को दूसरे ही रूप में लिया था. इस का उन्हें बहुत बाद में एहसास हुआ था.

मुकेश ने सोचा था कि पिताजी पैसे को ले कर उस पर अपनी धौंस जमा रहे हैं. इसी लिए वह भिचे होंठों और जलती आंखों से उन्हें कुछ देर देखता रहा था.

मुकेश ने अमरीका जाने के छः महीने के भीतर ही उन्हें लिख भेजा था कि उसे और पैसा न भेजा जाए. उस ने विदेशी छात्रों को अंशकालिक नौकरी करने के बारे में दी गई सुविधा का लाभ उठाते हुए अपना खर्च आप उठाने का इंतजाम कर लिया है. मुकेश ने दो साल के बाद पढ़ाई पूरी होते ही अमरीका ही में नौकरी भी कर ली थी और फिर उन्हें भारत पैसा भेजना भी शुरू कर दिया था.

जब पहलेपहल पिता या मां के नाम ड्राफ्ट आए थे तो उन्हें कितनी खुशी हुई थी. उन्होंने सोचा था कि कितना सफल है हमारा जीवन, हमारा बेटा विदेश में बैठा भी हमारी चिंता करता रहता है.

पर यह खुशी उस दिन गायब हो गई, जिस दिन मुकेश ने अपने चैक के साथ एक छोटी सी चिट्ठी भी उन के नाम लिख कर भेजी थी. लिखा था :

"पिताजी,

मेरे खयाल से इस चैक के भुगतान के साथ आप का और मेरा हिसाब साफ हो गया. मेरा मतलब है कि आप ने अब तक जितना पैसा मेरी पढ़ाई पर व्यय किया, वह आज ब्याज के साथ मैं ने आप को वापस कर दिया है. मैं अब भविष्य में आप के एक पैसे का भी देनदार नहीं हूं."

मुकेश का यह पत्र उन को अपने चेहरे पर एक थप्पड़ की तरह लगा था. यह क्या? बेटे और बाप का रिश्ता क्या पैसों तक ही सीमित होता है? उन्होंने बेटों को बड़ा करने में जो तकलीफें सहीं, उन का मूल्य क्या कभी पैसों द्वारा आंका जा सकता है? मांबाप की इच्छाएं व आकांक्षाएं क्या कभी पैसों की तराजू में तोली जा सकती हैं?

पर वह यह सब मुकेश को नहीं लिख पाए थे. उस दिन उन्हें लगा था कि उन के और उन के बेटे के बीच एक न पटने वाली खाई खुद गई है और वे दोनों दूरदूर दो किनारों पर खड़े हैं.

वह स्वयं हाथ बढ़ा कर मुकेश को अपनी ओर बुलाना तो चाहते थे, पर क्षणक्षण खाई की बढ़ती चौड़ाई उन्हें ऐसा करने से रोक रही थी और वह निस्सहाय से खड़े महज ताके जा रहे थे अपने बेटे को खुद से दूर और दूर होते.

उस दिन उन की पत्नी तो बड़े बेटे की हृदयहीनता देख कर फूटफूट कर रोई थी. पर वह अपने मन में घुमड़ती पीड़ा पी गए थे. वह मन ही मन घुटने लगे थे और अब अपना ध्यान छोटे बेटे नितिन की ओर देने लगे थे. पर शायद वहां भी देर हो चुकी थी.

नितिन तो आरंभ से ही अपनी मां का लाड़ला रहा था. वह अपना दुखदर्द सब मां से ही कहता था. पिता को तो वह एक हौआ समझता था. वह पिता को घर में घुसते देख कर चुपचाप दूसरे दरवाजे से घर से बाहर हो जाता था. वह अपने दोस्तों में ही मस्त रहता था. अगर कभी पिता उसे पास बैठा कर कुछ बातचीत करने की कोशिश भी करते थे तो वह "हूंहां" या दोचार शब्दों में ही उत्तर दे कर बात को जल्दी से जल्दी निबटाने की कोशिश करता था.

कर्नल कुंदन ने नितिन का रूखा रवैया देख कर अपनेआप को अपने दफ्तर के कामों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

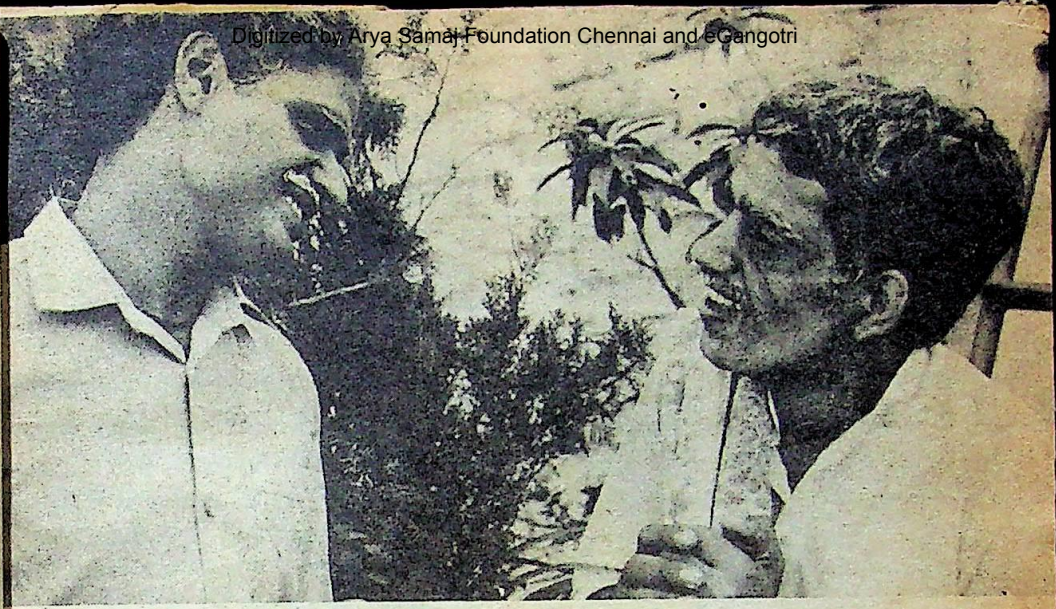

"मैं ने एक अधूरा काम आज पूरा कर दिया, इसी खुशी में कुछ मीठा खिलाओ, रामू काका" कर्नल साहब ने मुसकरा कर कहा.

में और ज्यादा व्यस्त कर लिया था.

इसी लिए उन को पता भी नहीं चला कि कब नितिन ने अमरीका जा कर कंप्यूटर तकनीक में डिप्लोमा करने का इंतजाम कर लिया था. उन्हें नितिन ने यह खबर एक धमाके की तरह विदेश जाने के एक सप्ताह पहले दी थी.

उन्होंने प्रश्नसूचक निगाहों से पत्नी को ताका था, जैसे पूछ रहे हों कि यह सब क्या है. पत्नी ने आंखें फेर ली थीं और धीमे से कहा था, "जाने दीजिए इसे भी. अगर हम इसे रोकेंगे तो अब यह रुकने वाला तो है नहीं, बल्कि उलटा यह महसूस करेगा कि हम रोड़े अटका रहे हैं इस की उन्नति की राह में."

"पर क्या उसे हमें पहले से कुछ नहीं बताना चाहिए था? क्या हम गैर हैं इस के लिए? आखिर वह इस घर में रहता है, किसी होटल में तो नहीं. क्या हमारे प्रति इस की कोई जिम्मेदारी नहीं है?"

"कैसी जिम्मेदारी की बातें कर रहे हैं आप, पिताजी? अपनी जिम्मेदारी को समझ रहा हूं तभी तो अपने भविष्य को देखते हुए यह कदम उठाया है मैं ने. मैं अपनेआप को जीवन में सफल बनाना चाहता हूं. आगे पढ़ना चाहता हूं. क्या इसे जिम्मेदारी समझना नहीं कहते? बड़े भैया से तो आप हमेशा यही कहते थे." नितिन ने पहली बार बाप के सामने मुंह खोला था और वह बोलता ही चला गया था.

तब वह अपने मन में आई यह बात नहीं कह पाए थे कि बड़ा बेटा विदेश गया तो कभी लौटा ही नहीं और अब तुम भी जाने की तैयारी कर रहे हो. क्या पता तुम भी लौटोगे या नहीं? तब हम दोनों पतिपत्नी का क्या होगा?

पर वह चुप रहे थे. उदास निगाहों से पत्नी की आंखों में आंसुओं को तैरते देख कर मेज पर से उठ गए थे.

यों नितिन भी चला गया था. रह गए थे वे दोनों पतिपत्नी यहां. बस वे दोनों अपने बेटों के पत्रों की बाट जोहते रहते थे. मुकेश तो आरंभ से ही कम पत्र लिखता था. शुरूशुरू में नितिन के पत्र अपनी मां के नाम जल्दी जल्दी आते रहे. फिर धीरेधीरे चुप्पी का अंतराल बढ़ने लगा था.

वे दोनों तब इसी आस में जी रहे थे कि एक ही साल की तो बात है. फिर नितिन वापस भारत आ जाएगा. पर एक साल की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जगह दो साल बीत गए. वह वापस नहीं आया. फिर पता लगा कि उस ने वहीं किसी दोस्त के साथ मिल कर अपना छोटामोटा कारोबार कर लिया है और विदेश में ही रह रहे एक भारतीय परिवार की लड़की से शादी भी कर ली है. इस खबर के बाद नितिन के लौट आने की सारी आशाएं धूल में मिल गईं.

कुंदन को नितिन से ही पता लगा था कि शायद मुकेश भारत वापस आ जाए. उस की कंपनी भारत में अपनी शाखा खोल रही थी. वह उस का प्रबंधक बन कर आएगा. यह सुन कर उन के दिल में फिर से आशा की एक किरण जागी थी.

पर मुकेश का आना भी एक धमाके से कम न हुआ था. दोनों बेटों में से किसी ने भी उन्हें यह नहीं बताया था कि मुकेश ने वहीं किसी अमरीकी लड़की से विवाह कर लिया था.

इसी लिए जब वह अपनी विदेशी बीवी को ले कर घर पहुंचा तो वे दोनों हतप्रभ से रह गए थे.

"मांपिताजी, मेरी पत्नी लूसी से मिलिए."

अनचाहे धक्के से उबरने के साधारण शिष्टाचार निभाने में भी उन्हें काफी समय लगा था.

आने के एक महीने बाद तक मुकेश और उस की पत्नी उन के साथ ही रहे थे. पर वे दिन बड़े तनाव में कटे थे.

लूसी कभी उन लोगों से खुल कर बोलती ही नहीं थी. बस, मियांबीवी अपनेअपने कमरे में घुसे न जाने क्या खुसरफुसर करते रहते थे.

हालांकि कर्नल कुंदन और उन की पत्नी ने काफी कोशिशें की थीं कि पुत्रवधू खुश रहे, उन्होंने उसे ढेर सारी चीजें भी खरीद कर दी थीं, क्लब व पार्टियों में भी उसे साथ ले जाते थे, लेकिन फिर भी वह उन के साथ सहजसरल बरताव नहीं करती थी. वह ऐसे रहती थी जैसे उसे जबरदस्ती रखा गया हो घर में.

इसी लिए जब एक महीने बाद मुकेश ने अपने फ्लैट में चले जाने की बात कही थी तो उन्होंने राहत ही महसूस की थी. चलो, दूर रहेंगे तो क्या, आपस का प्यार तो बना रहेगा.

पर ऐसा भी कहां हुआ? इस के बाद तो यही कहावत लागू हुई कि आंखों से दूर तो दिल से भी दूर.

मुकेश अपनी पत्नी और उस के विदेशी मित्रों की भीड़ में ही दब कर रह गया था. महीने दो महीने बाद कभी आध घंटे के लिए आ जाता था या फिर फोन पर ही हालचाल पूछ कर अपने कर्तव्य की इति समझ लेता था.

जब मुकेश की मां का देहांत हुआ था, तब भी वह ऐसे ही आया था जैसे जानपहचान के दूसरे लोग आए थे.

बूढ़ा बाप अकेला कैसे रहेगा? इस उम्र में मुकेश या उस की पत्नी ने एक बार भी नहीं पूछा था. शायद वे मन ही मन डर रहे होंगे कि कहीं पूछने की भूल कर बैठे तो बाप कहीं साथ ही रहने की बात न कह दे.

मुकेश संस्कार पूरे होते ही ऐसे हवा हुआ था कि दोबारा लौटा ही नहीं था. तेरहवीं पर उस की पत्नी लूसी कुछ देर के लिए आई थी, इस खबर के साथ कि मुकेश कंपनी के काम से सिंगापुर गया हुआ है. इसलिए उस दिन हाजिर नहीं हो सका.

नितिन को भी अमरीका में मां के देहांत की खबर तो पहुंच गई थी, पर उस की भी बाप के नाम एक रस्मी सी चिट्ठी ही आई थी. हां, हर छः महीने बाद उस का बाप के नाम एक हजार डालर का ड्राफ्ट जरूर आने लगा था. पर पिता ने कभी उस के पैसे को हाथ तक नहीं लगाया था.

मुकेश के लिखे शब्द ही अभी तक उन के मनमस्तिष्क से नहीं मिटे थे. वह नितिन के ड्राफ्ट को देख कर यही सोचते रहते थे कि क्या औलाद अपने पालनेपोसने की यही कीमत चुका रही है. ड्राफ्ट जैसे ही आते वह उन्हें उस के नाम से बैंक में जमा करा देते.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पैसे की तो उन को भी कमी नहीं थी. उन का अपना ही कमाया हुआ पैसा इतना था कि कभी खतम न हो. पेंशन आती थी. फिर दोदो मकानों का किराया भी आता था. अकेले अब खर्च ही कितना था उन का.

अब घर में दो ही आदमी थे. एक वह स्वयं और दूसरे रामू काका. चौकाबरतन और कपड़ों की धुलाई के लिए माई आती थी. रसोई और बाजार का काम रामू काका कर लेते थे. सो उन दोनों की जिंदगी मजे में कट रही थी.

पर तभी कर्नल कुंदन को एक और झटका लगा था. उन्हें मधुमेह की शिकायत तो पहले से थी ही, अब दिल का दौरा भी पड़ने लगा था. यह तो रामू काका ही की हिम्मत थी, जो उन्होंने अपने मालिक को संभाल लिया था. वह 'नर्सिंग होम' के कमरे में दिनरात कर्नल साहब के पास मौजूद रहे थे.

मुकेश को खबर करने रामू काका उन के घर गए थे पर चौकीदार से पता लगा था कि साहब और मेम साहब एक महीने के लिए कशमीर गए हुए हैं.

कुल 15 दिन नर्सिंग होम में रह कर लौटे तो वह चलनेफिरने से भी लाचार हो गए थे. तब रामू काका ही उन्हें सहारा दे कर स्नानघर तक ले जाते थे. वह उन को नहलानाधुलाना सब अपने हाथों से करते थे. रात को जमीन पर अपने साहब के पलंग के पास ही बिस्तर बिछा कर लेट जाते थे.

समय बीतने के साथ धीरेधीरे कर्नल कुंदन फिर स्वस्थ हो गए थे. पर जैसे उन की जीने की लालसा एकदम समाप्त हो गई थी. बस, चुपचाप बैठे वह सूने आकाश को घूरते रहते थे. रामू काका उन्हें बातों में बहला कर उन का ध्यान बंटाना भी चाहते तो वह 'हांहूं' कर के फिर गुमसुम से हो जाते.

यह बात नहीं थी कि रामू काका उन के मन का दर्द न समझते हों. वह सब समझते थे. बेटा पास होते हुए भी बाप की बात न पूछे ऐसे में बाप को कैसा महसूस होता होगा, वह अच्छी तरह जानते थे. जब पूत ही कपूत हो

गजल

होंठ ये सुर्ख कोई कमल तो नहीं.
हाय, आंखें तुम्हारी गजल तो नहीं,
कलकल ओ छमछम सी आवाज यह,
कंठ में बहता झरने का जल तो नहीं.
—जितेंद्रशंकर बजाड़

जाए तो उस से बड़ा दुख बाप के लिए और क्या होगा?

और अब पांच साल बाद उन्हें दिल का दूसरा दौरा पड़ा था. इस दौरे के साथ ही उन्हें पक्षाघात भी हो गया था. वह अब कुरसी के मुहताज हो गए थे. उन का बायां पांव और बायां हाथ ठीक से काम नहीं करते थे. उन्हें पांव घसीट कर चलना पड़ता था और बाएं हाथ को दाहिने हाथ के सहारे से ही उठा पाते थे. कुछ बोलते थे तो जबान बुरी तरह लड़खड़ाती थी.

उन्होंने मुकेश को खबर करने के लिए स्वयं ही रामू काका को भेजा था. वह आया भी था. पर वह जो जवाब दे गया था, वह कई दिनों तक पिता के साथ रामू काका के मन को भी सालता रहा था.

मुकेश ने कहा था, "पिताजी, बेहतर होगा अब आप मेडिकल इंस्टीट्यूट में भरती हो जाएं."

इस पर डरते और हिचकते हुए रामू काका ने मुकेश से कहा था, "भैयाजी, अब साहब को सेवा और प्यार की जरूरत है. वह आप के सिवा और कौन दे सकता है उन्हें?"

मुकेश ने झट मुंह बना कर जवाब दिया था, "क्यों, तुम हो न, काका, इन की देखभाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करने के लिए? अगर जरूरत समझो तो एक नर्स और रख लो. पिताजी, आप के लिए यह पांच हजार का चैक छोड़े जा रहा हूं. अगर कम पड़े तो फोन करा देना, और पैसे भेज दूंगा. अच्छा चलता हूं अब."

वे दोनों स्तब्ध से मेज पर पड़े चैक को पंखे की हवा में फड़फड़ाता हुआ देखते रहे थे. उस के बाद फिर कभी उन्होंने बेटे का नाम भी नहीं लिया था रामू काका के सामने.

उन्होंने छोटे बेटे नितिन को तार दिलवाया था कि हालत गंभीर है, एक बार आ कर मिल जाओ. उसी तार के जवाब में नितिन का पत्र आया था. उस के पास बीमार बाप को देखने आने की फुरसत तक नहीं थी. हां, पैसे भेजने की पेशकश उस ने भी की थी.

पैसा...पैसा...पैसा. क्या दुनिया के सारे रिश्ते इसी मुकाम पर आ कर ठहर जाते हैं? किसी के पास पैसा नहीं है तो वह पैसे के लिए रोता है. किसी के पास अधिक पैसा है तो वह भी रोता है. क्यों उस के सुखदुख, हंसीखुशी, नफरत, प्यार सब को पैसे की तराजू में ही तोला जाता है? कितने खोखले हो जाते हैं ऐसे रिश्ते, जो केवल पैसे के धरातल पर खड़े किए जाते हैं. केवल पैसे को ही सफलता की कुंजी मानना और अपने बच्चों के मन में भी इसी धारणा को रोपने का परिणाम कितना घातक हुआ है, उन्हें आज पता लगा. पर अब क्या हो सकता था?

कुंदन मन ही मन अपनी असहाय अवस्था के बारे में सोचते रहे और आंसू उन की आंखों से बहबह कर तकिया भिगोते रहे.

अचानक एक विचार उन के मन में कौंधा. उन के पैसों की उन के बेटों को तो जरूरत नहीं है. उन के पास तो पहले ही बहुत साधन हैं. तब क्यों न वह अपने पैसे को किसी ऐसे व्यक्ति या संस्थान को दे डालें, जिसे इस की जरूरत हो. उन के पैसे का सदुपयोग भी हो और किसी का भला भी हो जाएगा.

अगले दिन कर्नल कुंदन ने सुबहसुबह ही अपने वकील को फोन किया. वकील साहब आए तो वह उन के साथ एक कमरे में काफी देर तक बात करते रहे. उन्होंने रामू काका को भी अंदर आने से मना कर दिया था.

वकील साहब के जाने के बाद रामू काका ने बड़े दिनों बाद कर्नल कुंदन को खुश देखा था. उन्हें ऐसा ही लगा जैसे उन के साहब के मन पर रखा टनों बोझ एकाएक हट गया हो.

"क्या बात है, साहब?" आज बड़े खुश नजर आ रहे हैं आप?" आखिर रामू काका ने पूछ ही लिया.

"मैं ने एक अधूरा पड़ा काम आज पूरा कर दिया. उसी की खुशी में रामू काका आज कुछ मीठा खिलाओ. जाओ, बाजार से बरफी ले आओ," कर्नल कुंदन ने मुसकरा कर कहा.

"नहीं, साहब, आप मीठा नहीं खाएंगे. शुगर बढ़ जाएगी तो आप को और परेशानी होगी."

"अरे, नहीं, आज मुझे कुछ नहीं होगा. तुम जाओ, बरफी ले आओ."

रामू काका बरफी ले आए. उन्होंने प्लेट में सजा कर मालिक के आगे की तो उन्होंने बस एक ही टुकड़ा उठाया. बाकी की प्लेट रामू काका के आगे सरका दी, "यह तुम खा लेना, काका."

उस दिन रामू काका रसोई में रोटी खातेखाते सोच रहे थे कि आज ऐसी क्या बात हो गई, जो साहब इतने खुश हैं. कल तो वह रो रहे थे कि नितिन भी नहीं आ रहा. इस एक ही रात में ऐसा क्या हो गया कि आज बरफी खा कर खुशी मना रहे हैं.

रामू काका की समझ में यह गुत्थी नहीं आई. वह कंधे झटक कर पूरी तरह खाने में जुट गए.

इस घटना के 15 दिन बाद रामू काका सुबह कर्नल साहब को उठाने गए तो उन के मुंह से चीख निकल गई. कर्नल साहब की निर्जीव देह बर्फ की तरह ठंडी पड़ी थी. रात में ही किसी समय उन की मृत्यु हो गई थी.

रामू काका ने रोते हुए कांपते हाथों से मुकेश को फोन मिलाया, "साहब, जल्दी आइए. कर्नल साहब नहीं रहे."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खास चीज़ आपके लिए!

मिल्क क्रीम
लेमन कोकोनट
फ्रूटी · चाकोमिंट

जवाब नई बॉन बॉन
न्यूट्रीन की ही स्वाभाविक रूप से!

न्यूट्रीन
बॉन बॉन

nutrine भारत में सबसे ज़्यादा बिकनेवाली चॉकलेट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोरा ज्ञान

बिना आचार के कोरा बौद्धिक ज्ञान वैसा ही है जैसा कि खुशबूदार मसाला लगाया हुआ मुर्दा. —महात्मा गांधी

और दिनों के विपरीत मुकेश तुरंत पहुंच गया. उस ने आते ही सब से पहले नितिन को अमरीका फोन किया. उस ने भी कहा कि वह भी पहली उड़ान से पहुंच रहा है. उस के आने तक अंतिम संस्कार न किए जाएं.

बर्फ की बड़ीबड़ी सिल्लियों में कर्नल साहब की लाश तीन दिनों तक पड़ी रही. नितिन आया तभी पिता की देह का अंतिम संस्कार हो सका.

दोनों बेटों को बड़ी मुस्तैदी से बाप के अंतिम संस्कारों की तैयारियों में जुटे देख कर रामू काका मन ही मन सोचते रहे, 'काश, इन्होंने इतनी मुस्तैदी से जीवित बाप की देखभाल की होती तो शायद आज यह दिन न देखना पड़ता. जीते जी बाप बेटों के हाथों सेवा कराने को तरस कर रह गया. पर किसी बेटे के पास उस के लिए दो घड़ी का समय भी नहीं था. और अब दोनों बाप से विछोह का एक से बढ़ कर एक नाटक कर रहे हैं. वाह री दुनिया, तेरे भी रंग निराले हैं.'

चौथे के साथ ही उठावनी की रस्म भी पूरी कर दी गई क्योंकि नितिन को हफ्ते भर में ही अमरीका वापस जाना था.

क्रिया के अगले दिन ही वकील साहब को बुलाया गया. अब जायदाद संबंधी सभी काम हाथोंहाथ ही निबट जाएं तो बेहतर होगा. शायद यही सोचा था दोनों भाइयों ने.

वकील साहब के साथ दोनों भाई काफी देर तक कमरे में बैठे रहे थे. अंदर खूब जोरों से बहस करने की आवाजें बाहर बरामदे में बैठे रामू काका को भी सुनाई दे रही थीं. पर वह अपनी ही सोच में डूबे थे, "अब यह ठिकाना भी छूट जाएगा. इस बुढ़ापे में कोई और घर ढूंढ़ना पड़ेगा. क्या पता दूसरा मालिक इतना अच्छा हो या न हो." वह चुपचाप बैठे आंसू बहाते कर्नल साहब की याद में खोए हुए थे.

तभी बंद कमरे का दरवाजा खुला. रामू काका आंसू पोंछ कर उठ खड़े हुए.

मुकेश और नितिन दोनों भाई उन के सामने आ कर खड़े हो गए. दोनों के चेहरे क्रोध से आगभभूका हो रहे थे.

"पिताजी को तुम ने उस रात खाने में क्या दिया था, काका?" मुकेश ने पूछा.

"सूप, ब्रेड और दाल. रात सोते समय आधा गिलास दूध दिया था, बस. क्यों साहब, क्यों पूछ रहे हैं यह सब?"

"तुम ने पिताजी को जानबूझ कर मारा है. उन्हें खाने में जहर दिया था," यह नितिन की आवाज थी.

"क्या?" रामू काका जैसे आसमान से धरती पर आ गिरे, "जहर दिया मैंने? मैं क्यों उन्हें जहर देने लगा? वह तो मेरे मालिक थे," रामू काका की आवाज भर्रा गई.

"बूढ़े, बन मत. पैसे की खातिर इनसान सब कुछ कर बैठता है," मुकेश ने जोड़ा.

"पर साहब, मुझे साहब के पैसे से क्या मतलब? उन के बेटे तो आप हैं. मैं तो नौकर हूं. फिर पैसे और जायदाद से मुझे क्या वास्ता?"

"तो क्या तुझे मालूम नहीं कि पिताजी क्या वसीयत कर गए हैं?" नितिन ने पूछा.

"कैसी वसीयत, साहब? आप लोग कैसी बातें कर रहे हैं, सरकार? मेरी तो कुछ भी समझ में नहीं आ रहा है."

दोनों भाइयों ने एकदूसरे की ओर सवालिया नजरों से देखा, "तो क्या वाकई इस बूढ़े को कुछ नहीं पता? वकील साहब क्या सही कह रहे हैं?"

पर इस से पहले कि वे कुछ कहते, वकील साहब आगे बढ़ आए. वह चुपचाप पीछे खड़े सारी बातचीत सुन रहे थे. वह बोले, "रामू काका, नितिन बाबू के नाम से बैंक में जमा रकम को छोड़ कर कर्नल साहब अपनी सारी जायदाद और बैंक बैलेंस तुम्हारे नाम कर गए हैं. तुम्हारे बाद यह सब कुछ बूढ़े व बेसहारा लोगों की देखभाल करने वाली एक संस्था को चला जाएगा. याद है दूसरा दौरा पड़ने के बाद

अरिता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस पल जब आप इसे पढ़ रही हैं... त्वचा को नर्म बनाने वाली ज़रूरी नमी आपके चेहरे से गायब होती जा रही है !

इस नमी को बचाने के लिए आप कुछ कर रही हैं?

यदि नहीं, तो शायद आप इस बात से पूरी तरह अनजान हैं कि त्वचा को सजीव बनाने, इसमें कोमलता जगाने के लिए नमी कितनी ज़रूरी है. या फिर... आपकी त्वचा थकी, रूखी और बेजान ही क्यों न नज़र आए... आपको इसकी कोई चिन्ता ही नहीं!

किशोरावस्था में आपकी त्वचा में नमी खुद-ब-खुद पैदा होती है. लेकिन जैसे-जैसे उम्र बढ़ती है, ऐसा नहीं होता. यानी आपकी त्वचा से धूप, धूल, आदि के कारण नमी गायब तो बड़ी तेज़ी से होती है, लेकिन उतनी ही तेज़ी से पैदा नहीं हो पाती... और तभी आपको चाहिए एक ऐसी चीज़ जो आपकी त्वचा की नमी भी बरक़रार रखे और इसे नर्म व कोमल बनाए.

यानी आपको चाहिए लॅक्मे मैक्ज़ीमम मॉइस्चराइज़िंग लोशन. पानी और त्वचा को मुलायम बनाने वाले विशेष तत्त्वों का कोमल मिश्रण. यह आपकी त्वचा के भीतर समाकर, न केवल आपकी खोई हुई नमी वापस लाता है बल्कि त्वचा को आवश्यक पोषण भी प्रदान करता है.

इसमें चिकनाहट का नामो-निशान ही नहीं, और यह इतना हलका है कि चेहरे पर इसके होने का अहसास ही नहीं होता... लेकिन फिर भी आपकी त्वचा हर पल ताज़गी से खिली रहती है!

लॅक्मे मैक्ज़ीमम मॉइस्चराइज़िंग लोशन में ऐसे अनोखे पदार्थ हैं जो हर तरह की त्वचा की ज़रूरत के अनुसार त्वचा में समा जाते हैं. आंखों और मुंह के आसपास की सूखी त्वचा में अधिक और नाक जैसी तेल-युक्त त्वचा में कम. इसलिए आपकी त्वचा चाहे सूखी हो या तेल-युक्त... सामान्य या मिली-जुली, लॅक्मे मैक्ज़ीमम मॉइस्चराइज़िंग लोशन हर तरह की त्वचा को से नर्म और कोमल बनाता है.

लॅक्मे मैक्ज़ीमम मॉइस्चराइज़िंग लोशन
नर्म, मुलायम और खूबसूरत त्वचा के लिए.

खिला रूप-रंग, दिल में उमंग,
लॅक्मे के संग.

Rediffusion/L/5226 c HN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरिता व मुक्ता में प्रकाशित
लेखों के महत्वपूर्ण रिप्रिंट

सेट नं. 1

- प्राचीन हिंदू संस्कृति
- शंबूक वध
- अतीत का मोह
- पुरोहितवाद
- गौ पूजा
- हमारी धार्मिक सहिष्णुता
- कृष्ण नीति: हमारा नैतिक पतन
- परलोकवाद
- राम का अंतर्द्वंद्व
- राम का अंतर्द्वंद्व: आ.व.आ.के उत्तर
- भारत में संस्कृति का ब्राह्मण नियंत्रित विस्तार
- हिंदू धर्म
- संस्कृत
- भारतीय नारी की धार्मिक यात्रा
- कर्ण
- भारतीय नारी की सामाजिक यात्रा
- तुलसी और वेद
- रामचरितमानस में ब्राह्मणशाही
- भारतीय नारी
- भ्रष्टाचार
- रामचरितमानस में नारी
- सत्यनारायण व्रत कथा
- क्या नास्तिक मूर्ख हैं?
- गांधीजी का बलिदान
- यज्ञोपवीत
- जंत्र तंत्र मंत्र
- कर्मयोग
- गरुड़पुराण
- ईश्वर, आत्मा और पाप
- कितना महंगा धर्म?

V.V./D.B.C.-185

मूल्य 5 रुपए

50% की पुस्तकालयों, विद्यार्थियों व अध्यापकों के लिए विशेष छूट. रुपए अग्रिम भेजें.
वी.पी.पी. नहीं भेजी जाएगी.
सेट में लेखों का परिवर्तन कभी भी हो सकता है.

दिल्ली बुक कंपनी,
एम-12 कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001

एक दिन साहब ने मुझे घर पर बुलाया था?"

"जी, जी, सरकार, याद है."

"बस, उसी दिन उन्होंने तुम्हारे नाम सब कुछ कर दिया था. दोनों बेटों का नाम वसीयत में से खारिज कर दिया था."

"क्या?" रामू काका हैरानपरेशान से वकील साहब का मुंह ताकने लगे, "पर उस दिन तो साहब बड़े खुश थे. मुझे याद है कि उन्होंने बरफी मंगा कर खाई थी. हम से बोले कि आज हम ने एक अधूरा पड़ा काम पूरा कर दिया है. उसी की खुशी मना रहे हैं." मानो रामू काका अपनेआप से ही बुड़बुड़ाए जा रहे थे.

पर दोनों भाइयों के तने चेहरों पर उन की बातों का कोई असर नहीं हुआ. उलटे मुकेश ने कहा, "बूढ़ा बन रहा है. वकील साहब, दाल में कुछ काला है. हम भी देख लेंगे इसे. यह हमारे बाप की जायदाद कैसे हड़प करता है," कह कर वह आग्नेय नेत्रों से कुछ देर रामू काका को ताकता रहा. फिर पलटा और घर से बाहर हो गया. नितिन भी उस के पीछेपीछे ही चला गया.

अब घर में वकील साहब और रामू काका ही रह गए. किस ने कैसे कर्नल साहब को मारा था, दोनों ही जानते थे. वकील साहब ने वसीयत के कागजात रामू काका के सामने खोल कर रखते हुए कहा, "काका, दस्तखत करो यहां."

"हम क्या करेंगे इस सब जायदाद का, जब हमारे साहब ही नहीं रहे?" रामू काका की आंसुओं से धुंधलाई आंखों को कुछ भी नहीं दिखाई दे रहा था. वह कांपती उंगलियों से आंसू पोंछते जा रहे थे. पर आंसू थे कि थम ही नहीं रहे थे.

चुपचाप खड़े वकील साहब उन्हें निहारे जा रहे थे. कर्नल का कौन अपना था और कौन पराया, यह तथ्य भलीभांति उन के सामने उजागर हो गया था.

अब कर्नल साहब की वसीयत बदलने की जिद का कारण वकील साहब की समझ में अच्छी तरह आया था. वह मन ही मन उन की समझदारी की दाद दे रहे थे. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

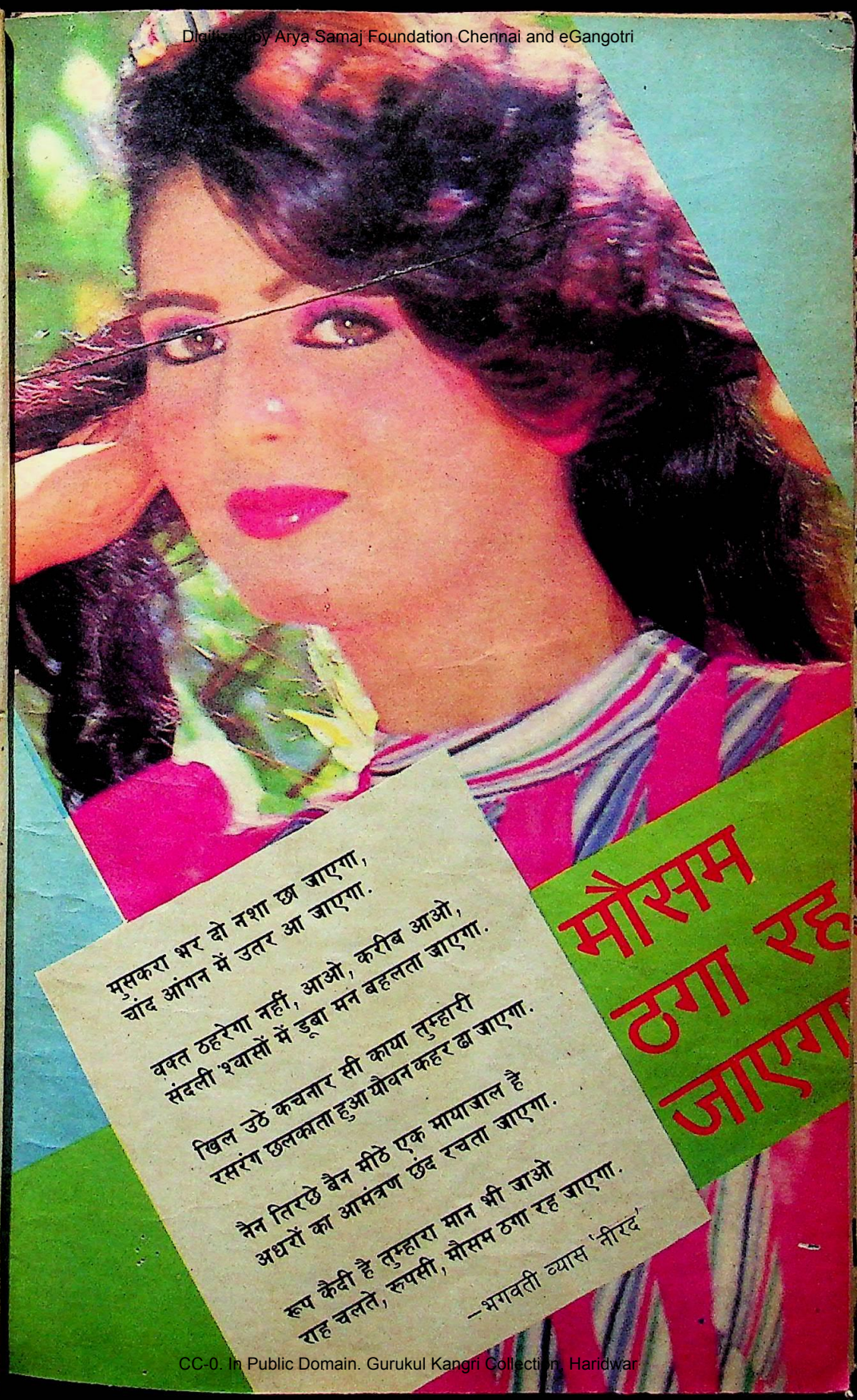

मौसम ठगा रह जाएगा

मुसकरा भर दो नशा छा जाएगा,
चांद आंगन में उतर आ जाएगा.

वक्त ठहरेगा नहीं, आओ, करीब आओ,
संदली श्वासों में डूबा मन बहलता जाएगा.

खिल उठे कचनार सी काया तुम्हारी
रसरंग छलकता हुआ यौवन कहर ढा जाएगा.

नैन तिरछे बैन मीठे एक मायाजाल है
अधरों का आमंत्रण छंद रचता जाएगा.

रूप कैदी है तुम्हारा मान भी जाओ
राह चलते, रुपसी, मौसम ठगा रह जाएगा.

—भगवती व्यास 'नीरद'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कराची

जो बारबार याद आता है

लेख • विनोदिनी गोयनका

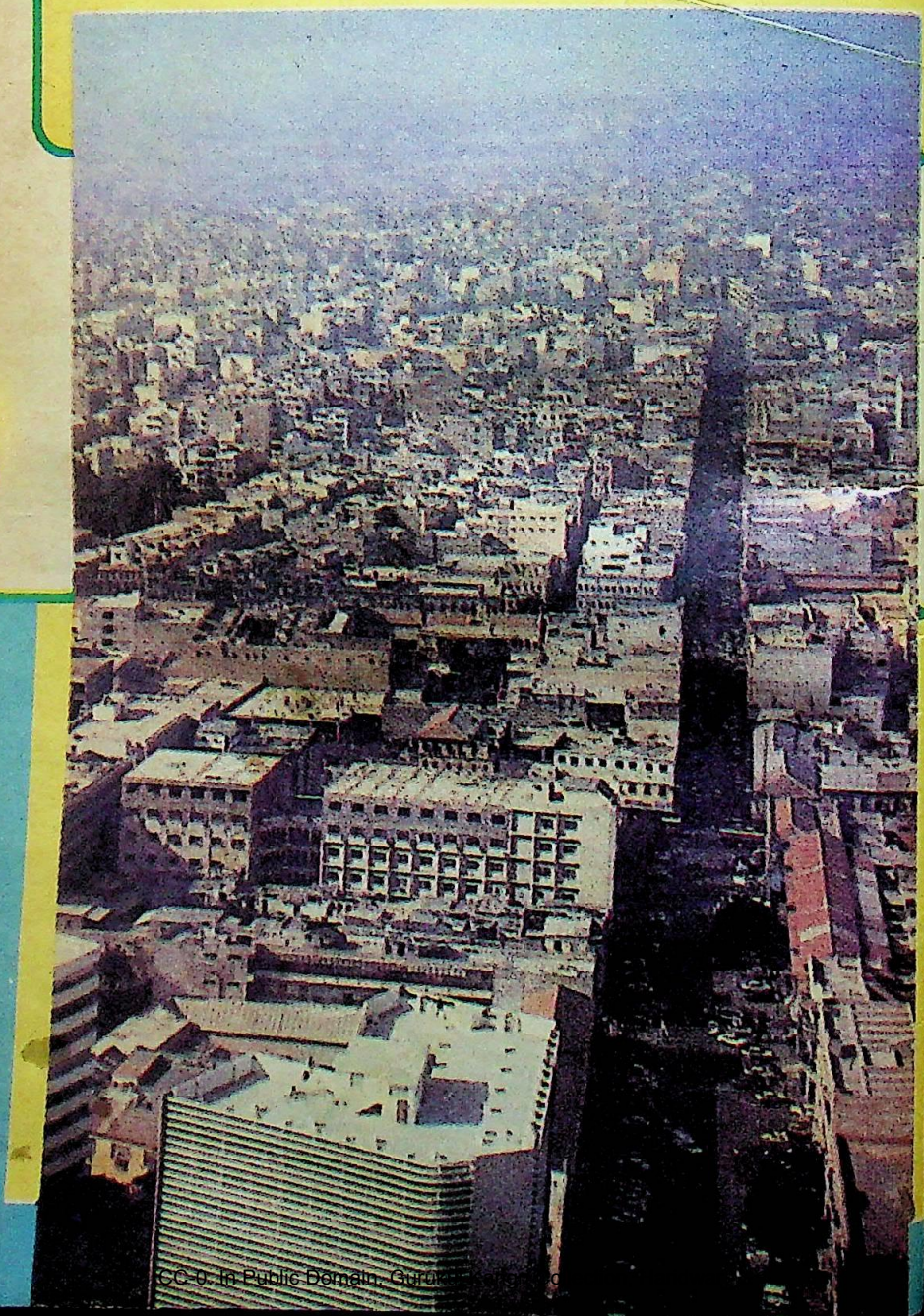

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हम बंबई से कराची (पाकिस्तान) के लिए विमान द्वारा रवाना हुए तो हृदय उत्साह तथा उत्सुकता से भरा था.

केवल एक घंटे की उड़ान थी. हमारा विमान कराची हवाई अड्डे पर उतरने जा रहा था. मैं खिड़की से चिपकी नीचे शहर को देख रही थी और सोच रही थी, जिस पड़ोसी देश के लिए इतना सुनती तथा पढ़ती हूं न जाने कैसा होगा वह देश और वहां के लोग? हमारे प्रति क्या प्रतिक्रिया होगी उन की?

धड़कते हृदय से वहां की धरती पर पैर रखा तो परिचित सी लगी. वही मिट्टी का रंग तथा सुगंध. आगे बढ़ते ही कस्टम के

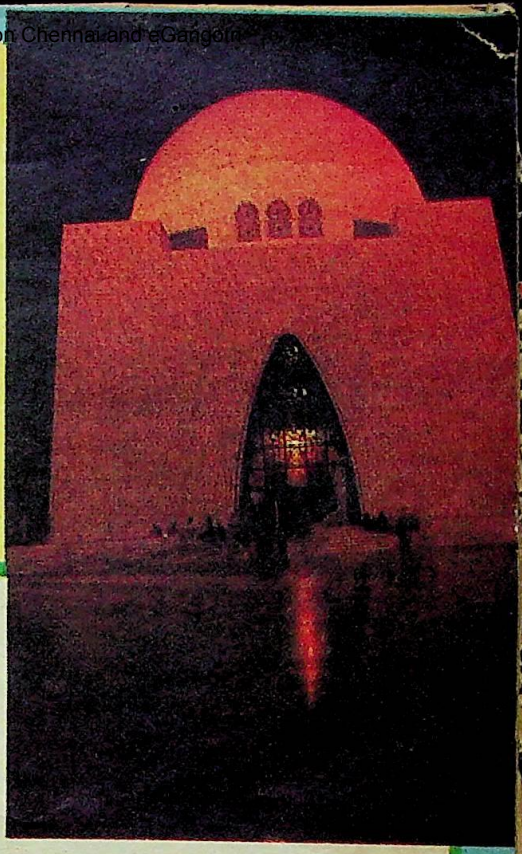

बरसों पहले भारत से अलग हुआ उस का ही एक हिस्सा पाकिस्तान यद्यपि आज खुशहाली तथा प्रगति की दौड़ में बहुत आगे निकल गया है तो भी क्या वहां की मिट्टी में बसी अपनेपन की महक में कुछ कमी आ पाई है?

मुहम्मद अली जिन्ना का मकबरा : एक दर्शनीय स्थल.

अधिकारियों ने मुसकरा कर स्वागत किया. हमारी ही जबान में बोले, "अच्छा आप हिंदुस्तान से आए हैं न...आप तो हमारे मेहमान हैं. मेरे वालिद भी जौनपुर से यहां आए थे."

उन्होंने हमारा सामान भी नहीं खोला और सम्मान सहित बाहर पहुंचा दिया. वहां हमारे मेजबान जाफरी साहब तथा उन की बेगम हमारे स्वागत के लिए फूल लिए खड़े थे. वे लोग हम से ऐसे गले मिले मानो अरसे से बिछुड़े हुए भाईबहन मिल रहे हों.

बेगम जाफरी कहने लगीं, "मैं तो मेरठ की ही लड़की हूं. शादी हो कर यहां आई तो 22 साल हो गए, फिर वहां जाना ही नहीं हो सका. इस बीच मेरे वालदेन भी गुजर गए. वैसे वहां मेरे रिश्तेदार तो बहुत हैं. आज आप से मिल कर ऐसा लग रहा है मानो मेरे मायके से ही आप लोग आए हैं."

उन के साथ मेरी भी आंखें नम हो गईं.

हम गाड़ी में बैठ कर होटल के लिए रवाना हुए तो मैं चारों तरफ दृष्टिपात कर रही थी. ऐसा लग रहा था मानो हम भारत के ही किसी बड़े शहर में चल रहे हों. वही जानीपहचानी धरती, पेड़पौधे तथा हवा में गंध और बंबई जैसा नम तथा गरम मौसम. वहां के निवासियों की हमारे समान ही बनावट, रंगरूप, वेशभूषा तथा बोली थी.

कराची पाकिस्तान का सब से बड़ा व्यापारिक श र तथा बंदरगाह है. चौड़ी-चौड़ी, साफसु री सड़कें, उन के दोनों तरफ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यत्न से लगाए गए पेड़ों की कतारें और दौड़ती हुई तरहतरह की विलायती गाड़ियां. सुंदर आधुनिक बंगले तथा अट्टालिकाएं. चारों तरफ सफाई, सुंदरता. कहीं भी गंदगी नजर नहीं आ रही थी.

वहां की आबादी करीब 70 लाख है. पर शहर तो इतना फैला हुआ है कि कहीं भी अधिक भीड़ या रास्ते पर रुकावट नहीं मिली झुग्गीझोपड़ियों में रहने वालों की बस्तियां तथा गरीबी भी नहीं दिखी. लोग खुशहाल लग रहे थे. वहां कहीं भी भिखारी नजर नहीं आए.

वहां की बोलचाल की भाषा उर्दू है जो बिलकुल हमारी हिन्दीहिंदुस्तानी के ही समान है. उस में केवल अरबी, फारसी के कुछ शब्द अधिक हैं. पढ़ेलिखे लोग अंगरेजी भी बोलते हैं. पर यह जानकर दुख हुआ कि वहां साक्षरता केवल 15% ही है. उस में भी विशेष रूप से स्त्रियों तथा ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा का अभाव है. बड़े शहरों में अच्छे स्कूल व कालिज हैं पर लड़के और लड़कियां अलग-अलग पढ़ते हैं.

गुलाम अली तथा मलिका पुखराज जैसे मशहूर गायकों के होते हुए भी पाकिस्तानी लोग भारतीय संगीतज्ञों को सुनने के लिए बेताब रहते हैं.

लड़कियां स्कूलकालिज की चारदीवारी में बंद रहती हैं. उन्हें बाहर खेलकूद में शामिल होने की इजाजत नहीं है. शास्त्रीय संगीत या नृत्य भी सरकार की तरफ से वर्जित है. वैसे पाकिस्तान में अच्छीअच्छी गजल गायिकाएं तथा गायक हैं, जिन में मलिका पुखराज, फरीदा खानम, आबिदा परवीन, गुलाम अली मशहूर हैं. परंतु वहां के लोग भारतीय संगीतज्ञों का गान तथा वादन सुनने के लिए बहुत इच्छुक रहते हैं.

बेगम जाफरी दूसरे दिन जब स्वयं अपनी गाड़ी चला कर मुझ से मिलने आईं तो मैं ने उन से जिज्ञासावश पूछा, "हम सुनते थे कि यहां परदा बहुत है, पर आप को देख कर तो ऐसा कुछ नहीं लगता है."

उन्होंने बताया, "जिया उल हक के शासन द्वारा आरंभ में इसलाम के कायदों पर बहुत जोर दिया गया था. उस समय हम बिना बुर्का या बड़ी सी चादर ओढ़े बाहर नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जनवरी 1988

सुमन सौरभ

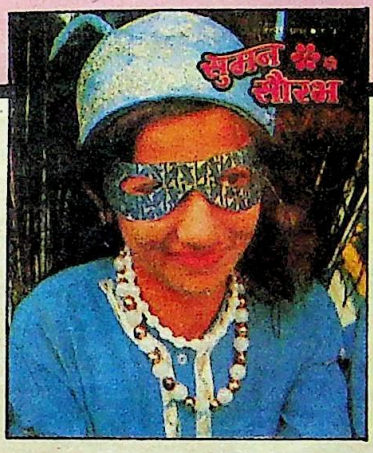

इस अंक की झलक

■ मंत्रिमंडल का कोई सदस्य जरमनी के जासूसों से तो नहीं मिल गया. इस की पुष्टि के लिए चर्चिल ने एक दो बार मंत्रिमंडल में हेरफेर भी किया, पर महत्वपूर्ण भेद निकलने बंद नहीं हुए. आनेजाने वालों पर भी कड़ी निगरानी रखी गई. मगर सब बेकार ही रहा. आखिर वह जासूस था कौन, जिस ने अंगरेजों का जीना मुहाल कर दिया था. (लेख : वह जासूस कौन था.)

■ रोबिन ने वापस आ कर भुवन को बताया कि "ऐसा लगता है हम उस जगह पहुंच गए है जहां लड़कों को कैद किया गया है. सिर्फ एक पहरेदार है और वह भी तसवीरें बनाने में मगन है."

सनसनीखेज धारावाहिक की तीसरी किश्त में पढ़ें कि रोमांच से भरी घटनाओं के भंवर में उलझतेजूझते रोबिन और भुवन क्या अपने अपहरण किए गए साथियों को खोज पाए?

(गुप्त गोफा का रहस्य : तीसरी किश्त)

कहानियां

- दंगा क्यों हुआ
- एक अनोखी तरकीब
- नीयत
- जंगल और गधे
- टोनी की वफादारी
- मुसीबत

सतरंगे लेख

- कैलेंडर की कहानी. (कैलेंडर के उद्‌भव एवं विकास की मजेदार कहानी)
- वह जासूस कौन था. (एक रहस्यमय लेख)
- हमारी सूरत पे मत जाओ. (ऊंट के अनोखेपन की परतें खोलने वाला सचित्र लेख)
- क्या भूतप्रेत होते हैं (इस प्रश्न का जवाब लेख में ही पढ़ें)

इन के अलावा अनेक ज्ञानवर्धक लेख, 13 मनोरंजक कहानियां, मजेदार कविताएं, सभी स्थायी स्तंभ, दो पृष्ठों का रंगीन चित्र और साथ में नए वर्ष (1988) का कैलेंडर.

अपनी प्रति आज ही खरीदें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निकल सकते थे. पर अब धीरेधीरे नरम पड़ रहा है. सिर पर चुन्नी रख कर काम चल जाता है. यहां टेलीविजन तथा सरकारी कार्यालयों में काम करने वाली औरतों के लिए भी चुन्नी सिर पर रखना जरूरी है.

"पर कहीं पर भी औरतों के साथ छेड़छाड़ या बलात्कार नहीं होता है. चोरी, डकैती भी नहीं के बराबर है, क्योंकि लोग सैनिक शासन से बहुत डरते हैं."

वहां अधिकतर स्त्रीपुरुष एक लंबा सलवार सूट पहनते हैं. यह वहां भुट्टो के समय से प्रचलित हुआ और अब उन की मुल्की पोशाक बन गई है. सभी वहां सरकारी कार्यक्रमों में तथा दावत एवं सभाओं में भी उस पर एक जाकिट पहन कर आते हैं. इस के अतिरिक्त पुरुष वर्ग पैंट, कमीज, सूट वगैरह भी पहनते हैं. स्त्रियां साड़ी भी पहनती हैं. परंतु नवयुवतियों को आधुनिक लिबास जींस, टाप वगैरह में कहीं नहीं देखा. बहुत कायदे से कुरता, चूड़ीदार पाजामा या सलवार और चुन्नी पहनती हैं. व्यवहार भी शालीन है.

वहां के लोग भारतीय सिनेमा के बहुत ही शौकीन हैं. सरकारी तौर पर मनाही होने पर भी सब घरों में वी.सी.आर. पर देखते हैं और हमारे सिने अभिनेता तथा अभिनेत्रियों पर दीवाने हैं. वहां हमारी सिनेमा की मामूली पत्रिकाएं भी 50-60 रुपयों में बिक जाती हैं.

स्त्रियों को वैसे तो घूमनेफिरने की स्वतंत्रता है, पर वे मसजिद में नहीं जा सकती हैं. उन की इबादत के लिए अलग स्थान हैं.

कानूनी तौर पर पुरुष एक ही शादी कर सकता है, पर कभीकभी अपनी पहली बीवी की इजाजत ले कर दूसरा निकाह भी कर सकता है परिवार नियोजन पर वहां भी जोर दिया जाता है.

मैं ने जाफरी साहब से पूछा कि पाकिस्तान में खुशहाली का राज क्या है?

उन्होंने बताया, "यहां के लोग बहुत मेहनती हैं. खूब मन लगा कर काम करते हैं. हड़ताल वगैरह की इजाजत नहीं है. रोटी, कपड़ा और मकान सभी को मिलता है. एक साधारण मजदूर को भी 50 रुपये प्रतिदिन मजदूरी मिलती है. बढ़ई, राजमिस्तरी तथा अन्य कारीगरों को तो डेढ़ सौ से दो सौ रुपए तक प्रतिदिन मजदूरी मिलती है. बहुत से लोग दुबई वगैरह गए हुए हैं. वहां से कमा कर जो रुपया भेजते हैं, उस से उन के घरों में तथा देश में खुशहाली आती है."

मेजबान की हमारे लिए जो गाड़ी आती थी उस के ड्राइवर मुहम्मद से मैं ने पूछा, "आप को क्या तनख्वाह मिलती है?"

उस ने बताया सब मिला कर साढ़े चार हजार पड़ते हैं. उस में उस का काम मजे में चलता है. खाने का सामान वहां सस्ता है फलसब्जी भी खूब मिलती है. वह अपने चार बच्चों का अच्छे स्कूल में शिक्षा दे रहा है.

बड़े घरों में अधिकतर बंगलादेश के ही नौकर तथा बावर्ची काम करते हैं. उन को तनख्वाह भी एक हजार से दो हजार तक मिलती है.

पाकिस्तान अनाज के मामले में आत्मनिर्भर है. कुछ निर्यात भी करता है. परंतु वहां उद्योग एवं कलकारखाने बहुत ही कम हैं. अपनी सभी जरूरतों के लिए दूसरे देशों द्वारा आयात पर निर्भर है. यहां आयात अधिक तथा निर्यात बहुत कम है. इसलिए सभी चीजें मिलती तो बहुतायत से हैं पर बहुत ही महंगी हैं. एक छोटा टूथ पेस्ट और साबुन भी 20-25 रुपए से कम नहीं है. वहां अब कुछ पोलिएस्टर कपड़ा बनने लगा है. वह अच्छा तथा सस्ता भी है.

जापान, कोरिया, सिंगापुर, हांगकांग के कपड़े, घड़ियां, इलेक्ट्रानिक का सामान खुलेआम बाजार में बिकता है. परंतु वहां की महिलाएं भारतीय सूती तथा सिल्क के कपड़े, साड़ियां इत्यादि बहुत ही पसंद करती हैं.

मुझ से तो कई महिलाओं ने तो यहां तक कहा, "हमारी इच्छा लंदन, टोकियो, न्यूयार्क से भी अधिक हिंदुस्तान जा कर खरीदारी करने की है. हमारे मतलब का सामान तो हिंदुस्तान में ही मिलता है. हम तो अपने बेटेबेटियों की शादी की तैयारी के लिए इसी कोशिश में रहते हैं कि किसी तरह दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Moments and moments of Freshness!

VMC
V.M. CONFECTIONERY LTD.,
135/1, Kaval Byrasandra, Bangalore-560 034.
The manufacturers of Gem centre-filled chewing Gum

वी. एम. कन्फैक्शनरी लि., बंगलौर द्वारा निर्मित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नियम

मानव का तन विकारी है, इसलिए क्षय निश्चय है. जन्ममरण और उत्पत्ति विनाश के नियम से कोई नहीं बच सका.

—यादवेंद्रनाथ शर्मा 'चंद्र'

जाने को मिल जाए. क्याक्या जेवर, बनारसी साड़ियां, कामदानी के लहंगे, सूती सलवार, कुरते इत्यादि मिलते हैं. वे भी इतने सस्ते कि आधे खर्च में शादी की तैयारी हो जाती है. ऊपर से खूब मौजमस्ती, चाट खाना, सिनेमा देखना बस मजा आ जाता है. पर न जाने हमारी सरकार को क्या परेशानी है कि जाने का वीजा मिलना ही टेढ़ी खीर है."

मैं ने सब से महत्त्वपूर्ण बात यह देखी कि शराब तथा जुआ सरकार द्वारा बंद कर दिया गया है. अवहेलना करने पर बहुत ही कड़ी सजाएं हैं. इसलिए लोग कानून तोड़ने से डरते हैं. यहां तक कि विदेशी यात्री भी अपने साथ शराब की एक बोतल भी नहीं ले जा सकते. वे केवल अपने होटल के कमरों में ही पी सकते हैं.

वहां के लोग मुहम्मद अली जिन्ना को राष्ट्रपिता की तरह मानते हैं. उन की मजार बहुत विशाल तथा सुंदर बनाई गई है. लोग उन्हें सम्मान देने जाते हैं और साथ में सुंदर बगीचे का भी आनंद लेते हैं. विशाल अरब महासागर के किनारे हजारों लोग सैर करने तथा नहाने आते हैं. हमेशा मेला सा लगा रहता है.

कराची में भारतीय दूतावास को छोड़ कर हिंदुओं की संख्या नगण्य है. बहुत पूछने पर मंदिर का पता चला, पर वहां जाने पर वीरान मिला. पहले एक पुजारी था, पर कई वर्षों पहले वह भी भाग गया.

मैं ने कई लोगों से वहां की सरकार तथा राजनीति के विषय में चर्चा छेड़ी, पर लोग कतरा गए. वे इस विषय में बात करने से डरते हैं. परंतु कुछ लोगों ने यह कहा कि सैनिक शासन से मुल्क में अमनचैन तो है, नहीं तो रोज ही दंगेफसाद चलते रहते थे. बोलने की आजादी से ही पेट भरता है क्या? ऐसा लगा बेनजीर भुट्टो को दिल से लोग चाहते तो हैं, पर खुलेआम बोलने में डरते हैं.

जकरिया साहब ने हमें अपने घर खाने पर बुलाया. वह इलाहाबाद के रहने वाले तथा भारत में आई.सी.एस. थे. कहते लगे, "मैं तो सन 1947 में गोंडा में जिलाधीश था. जब सरकार ने हम से यह कहा कि जो अधिकारी पाकिस्तान जाना चाहें, चले जाएं तो यह सोच कर कि नई जगह है जल्दी तरक्की होगी, चला आया. पर कभी ऐसा तो नहीं सोचा था कि हमारे बीच में इतना फर्क पड़ जाएगा कि हम अपने मित्रों एवं रिश्तेदारों से मिलने को तथा आनेजाने को भी तरसते रहेंगे."

बेगम जकरिया लखनऊ की चिकन की साड़ी पहने हमारे स्वागत के लिए खड़ी थीं. हमारे कहने पर कि हम तो पक्के शाकाहारी हैं, वह हंसने लगीं. बोलीं, "आप आएं तो देखें. हम आप को उत्तर प्रदेश की पूरी, भाजी अचार खिलाएंगे."

फिर बेगम सहिबा ने अपने हाथ से पान की गिलौरी पेश की.

बेगम जाफरी बोलीं, "मैं भी तो लखनऊ की लड़की हूं और आई.टी. कालिज की पढ़ी हुई हूं. सच, वहां की बहुत याद आती है. चौक पर रामआसरे की जयकेदार मिठाई, अमीनाबाद की चाट, आम, खरबूजे और चिकन के काम की मलमल की साड़ियां और कुरते. हम तो तरस गए हैं उन सब चीजों के लिए. कई साल हुए जब गए थे. उस समय दिल्ली, लखनऊ और इलाहाबाद गए, पर 'वीजा' और पुलिस को बराबर खबर देना यह सब बहुत आफत है. हम दोनों के दिल तो एक हैं पर ये दोनों सरकारों की बंदिशें हैं. कौन सा वह दिन होगा कि जब हम फिर से आजादी से मिलजुल और आजा सकेंगे."

जब हमारे मेजबान तथा मित्रगण हमें कराची हवाई अड्डे पर विदा करने आए तो उन सब की आंखें नम थीं. हमारा दिल भी भर आया, और ऐसा महसूस हुआ मानो हम अपने निकट परिवार को छोड़ कर जा रहे हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चंपक पाक्षिक.....

चंपक के हर अंक में आकर्षक रंगों में छपी हुई सुंदर मनमोहक सचित्र कहानियां, शिक्षाप्रद लेख, कार्टून और चित्र पहेलियां प्रकाशित होती हैं.

चंपक से हर महीने में दो बार बच्चे "चीकू", "चुंचू", "डिंकू", "पप्पू" और बंदरकुमार के साहसिक कारनामों का आनंद उठाते हैं.

चंपक की सामग्री आप के बच्चों के लिए ज्ञान के नए मार्ग खोलती है, बच्चों का चरित्र बनाती है, उन का स्वस्थ मनोरंजन करती है.

अपने बच्चों को आज ही एक प्रति ले कर दें

इन के अलावा
- अंगरेजी
- गुजराती
- मराठी

में भी प्रकाशित होता है.

दिल्ली प्रेस प्रकाशन

बि.वि./चं-215

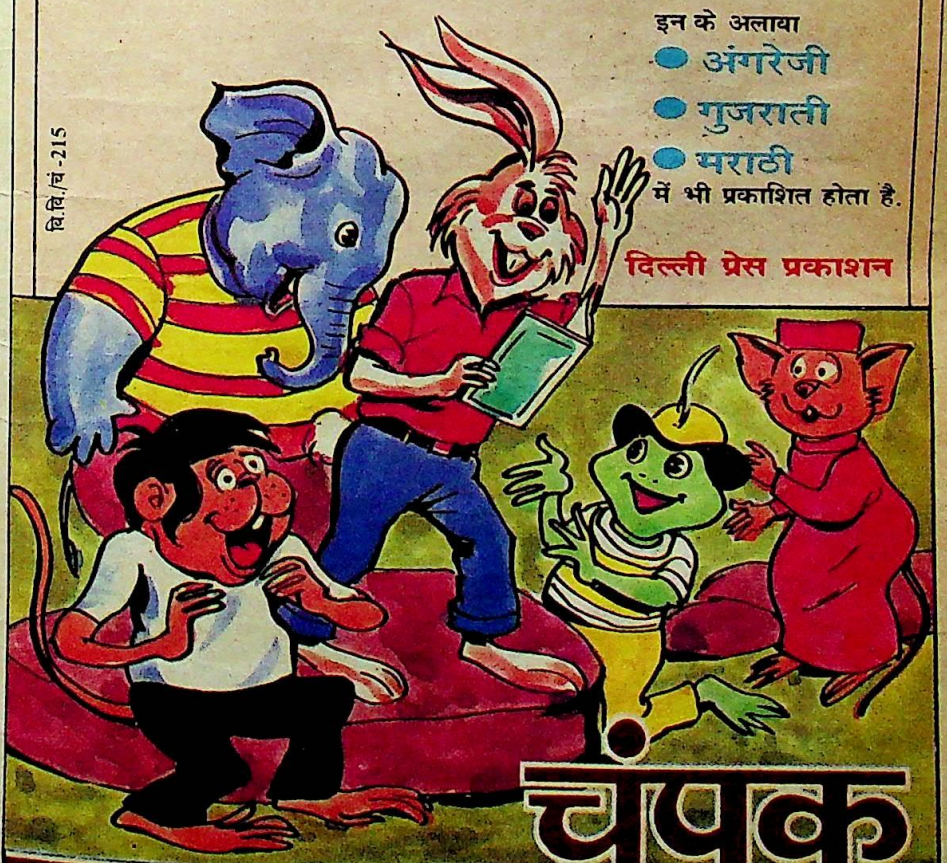

चंपक

• नन्हे मुन्नों की रंगीन हिन्दी पाक्षिक पत्रिका •

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अच्छा खाना और गिन्नी मूँगफली का तेल दोनों का स्वाभाविक मेल

गिन्नी मूँगफली का तेल आधुनिकतम प्रक्रिया से बनाया जाता है ताकि आपको खाना पकाने साफ़, शुद्ध, गंधहीन माध्यम प्राप्त हो जो आपके भोजन में सच्चा स्वाद लाए. जी हाँ, अच्छे व्यंज और गिन्नी मूँगफली के तेल का गहरा नाता है. लाजवाब स्वाद, उत्तम क्वालिटी और बेहतर क़ीम

"गिन्नी में भोजन बने स्वादिष्ट और तारीफ़ें मिलें आपको" — मुन मुन सेन

गिन्नी रिफ़ाइंड और डीओडोराइज़्ड मूँगफली का तेल पूरी शुद्धता और सफ़ाई के साथ 2 कि.ग्रा., 5 कि.ग्रा. और 15 कि.ग्रा. के पैक में और पालीजारों तथा एक नई आकर्षक, पारदर्शी, धारीदार 1 कि.ग्रा. की पी.ई.टी. (पॉलीथीलीन टेरिफ्थलेट) बोतल में भी मिलता है.

गिन्नी®

मूंगफली का रिफाइन्ड और डीओडोराइज़्ड तेल

मन को भाए – स्वाद बढ़ाए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CHAITRA-D ABC 1486 HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आराम

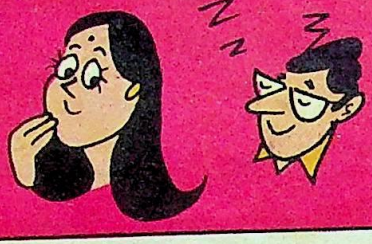

आजकल आप बहुत सुस्त हो गए हैं. कब से कह रही हूं कि वाशबेसिन टूटा पड़ा है, अलमारी का ताला खराब है, खिड़की के शीशे टूटे हैं. और स्नानघर का नल सारे दिन टपकता है.

आज सब अवश्य ठीक करा देना और हां, शेविंग भी होते आना.

रात में

इतनी देर कहां लगा दी? पता है क्या समय हो रहा है?

सीधे दफ्तर से आ रहा हूं थका मांदा, जरा चैन तो लेने दो.

नहीं. पहले यह बताओ कि मैंने जो काम कहे थे उन का क्या हुआ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सजीले

लहंगाचोली पारंपरिक अवसरों के लिए बहुत उपयुक्त परिधान है. आज के आधुनिक युग में यह अपनी माटी और संस्कृति की गंध बिखेरता है.

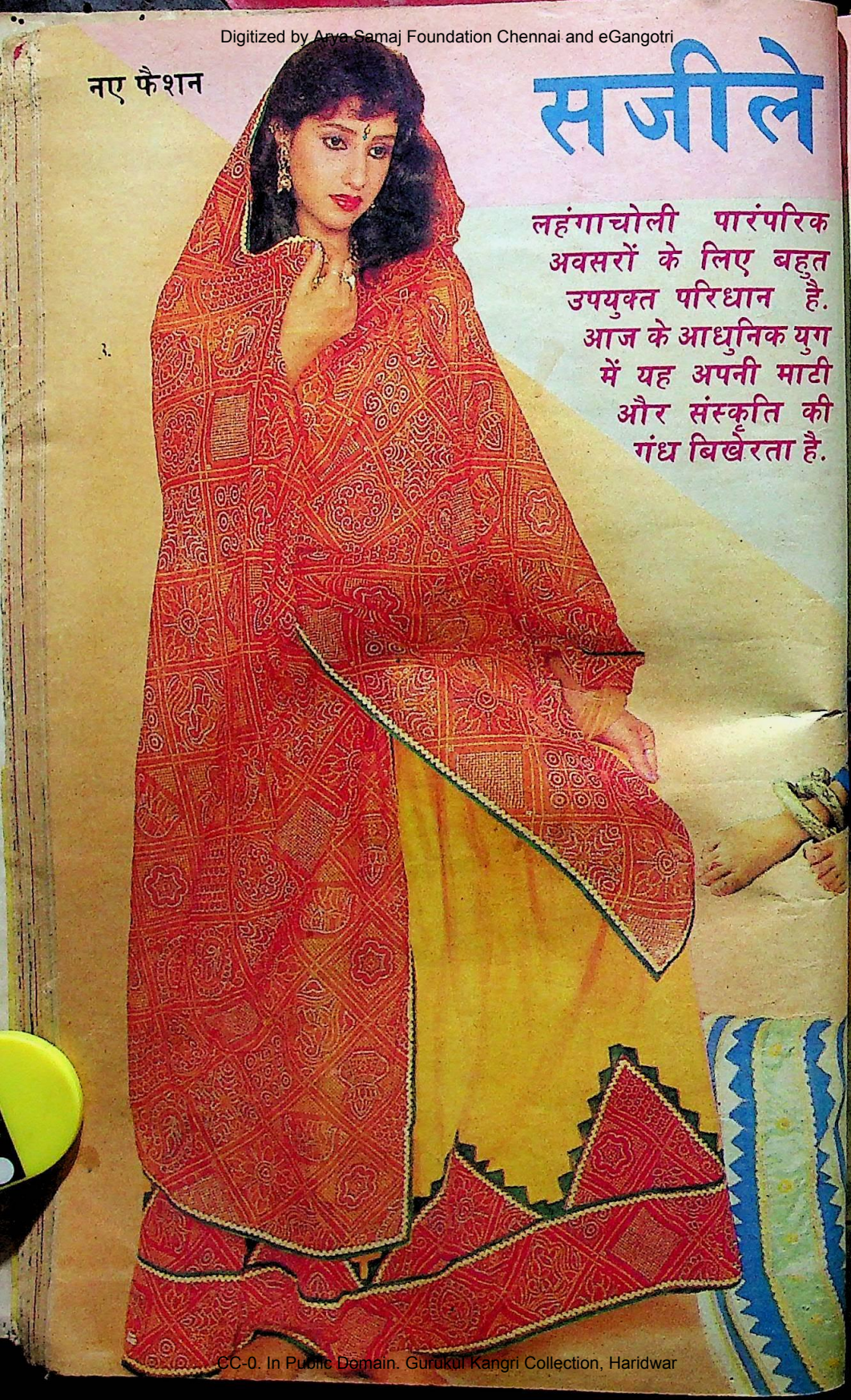

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लहंगे और चुनरियां

1. नीले रंग पर शीशों और रंगबिरंगी लेसों का कमाल दिखाते इस राजस्थानी लहंगेचोली में आप गांव की अल्हड़ गोरी सी भोली व मोहक दिखाई देंगी.

2. गहरे रंगों से मन भर जाए तब हल्के स्वप्निल रंगों के अद्भुत संयोजन और रुपहली लेस तथा पैचवर्क वाला यह लहंगा किसी भी उत्सव में सब से अलग दिखाई देगा.

3. जरीगोटों वाले भारी लहंगों का बोझ उठाने के बाद चुनरी छापे वाली लाल चुनरिया और उसी से मेल खाते पैचवर्क वाला हलकाफुलका सा यह पीला लहंगा अनूठा आकर्षण प्रदान करता है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लौकिक परछाईयों
के पार
अलौकिक रंगों का संसार.

इंदु कलर फ़िल्म IR 100.
इंदु कलर पेपर FP8.

INDU

हिन्दुस्तान फ़ोटो फ़िल्म्स् मैन्यु. कं. लि..
(भारत सरकार का एक उपक्रम)
इंदुनगर, उधगमंडलम् 643005.
बिक्री-व्यवस्था मुख्यालय:
सुब्रामनियन् बिल्डिंग, पो. बॉ. नं. 2771,
नं. 1, क्लव हाऊस रोड, मद्रास - 600 002.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बात ऐसे बनी

एक बार मैं अपने मित्र के साथ मोटरसाइकिल पर जा रहा था. रास्ते में हमें यातायात पुलिस के एक दस्ते ने रोक लिया. मोटरसाइकिल के सारे कागजात देखने के बाद भी यातायात निरीक्षक संतुष्ट नहीं हुआ. उस ने यह कह कर कि गाड़ी की हैडलाइट के ऊपर काला रंग नहीं लगा है, हमारा चालान बना दिया.

तभी मेरे मित्र ने उन की जीप की ओर इशारा करते हुए कहा, "पहले आप अपना चालान बनाइए क्योंकि आप की गाड़ी की हैडलाइट के ऊपर भी काला रंग नहीं है."

अब यातायात निरीक्षक की शक्ल देखने लायक हो गई. उस ने हमारा चालान फार्म फाड़कर हम से क्षमा मांगी.

—अरविंद केवलानी 'आकाश'

*

मेरे एक मित्र अपनी आदत के अनुसार बोलते समय "है कि नहीं" वाक्य का प्रयोग करते थे.

एक बार मैं और मेरी पत्नी उन के घर गए. मैं ने उन के लड़के की तारीफ करते हुए कहा, "आप का बच्चा बहुत सुंदर और ताकतवर है."

मेरी बात सुनते ही वह तपाक से बोले, "आखिर लड़का तो हमारा ही है." फिर अपनी पत्नी की ओर मुखातिब हो कर बोले, "क्यों जी, है कि नहीं." उन की बात सुन कर हम जोर से हंसने लगे.

जब उन्हें अपनी कही बात का अर्थ समझ में आया तो वह बहुत खिसियाए और उन की यह आदत भी छूट गई.

—अजयकुमार कटियार

*

उन दिनों मैं छात्रावास में रहता था. मेरा एक मित्र कुछ चंचल प्रवृत्ति का था. एक बार हम साइकिल पर बैठे कहीं जा रहे थे कि हमारे पास से एक रिकशा गुजरा. उस में दो लड़कियां बैठी थीं. मेरा मित्र रिकशे के साथसाथ साइकिल चलाने लगा.

थोड़ी दूर साथ चलने पर उस ने छींटाकशी करते हुए कहा, "कुछ तो कहो, मेरी जान." इस पर उन में से एक लड़की ने कहा, "हम तो इतना ही कहेंगे कि जाओ, भाइयों, पढ़ो."

उस दिन से मित्र ने ऐसी हरकतें करनी बंद कर दीं और आज वह पढ़लिख कर एक उच्च पद पर आसीन है.

—जगदंबाप्रसाद काजा

*

हमारे पड़ोस में रहने वाली एक महिला अपने से कम उम्र वाली महिलाओं को भी चाची या मौसी कहती थी. कारण पूछने पर वह कह देती, "कुछ तो कह कर दिन निकालने ही हैं."

एक दिन जब वह मेरी मां से उन्हें चाचीजी कह कर बात कर रही थी तो उसी समय मैं वहां आ पहुंचा और मैं ने उन्हें 'नानीजी' कह कर अभिवादन किया. इस पर वह तुनक कर बोली, "मुझे नानीजी कैसे कह रहे हो?"

तब मैं ने तपाक से कहा, "मां के बाल इतने काले होते हुए भी आप उन्हें चाची कहती हो तो आप के बाल बिलकुल सफेद हैं. फिर कुछ कह कर तो दिन निकालने ही हैं." इस के बाद उन्होंने अपनी आदत छोड़ दी.

—आशा घिवार●

इस स्तंभ के लिए अपने तथा अपने संबंधियों के अनुभव भेजिए. प्रत्येक प्रकाशित अनुभव पर 30 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. अपने अनुभव इस पते पर भेजें. संपादकीय विभाग, सरिता, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जब कभी रसोई में मुझे ज्यादा देर काम करना पड़ता है, तो आँखों में जलन और खुजलाहट होने लगती है अतः मैं हफ्ते में तीन बार सिनेरारिया श्वाबे डालती हूँ"

श्रीमति शर्मा एक व्यस्त गृहणी हैं तीन के अपने परिवार की देखभाल, स्कूल अध्यापिका की नौकरी, पत्र-पत्रिकाओं का पढ़ना और रसोई में घण्टों धुँऐं में काम करना नजर पर बुरा प्रभाव डालता था, बचाव के लिये इन्होंने नियमित रूप से सिनेरारिया श्वाबे का इस्तेमाल शुरू कर दिया है।

सिनेरारिया श्वाबे – आँखों की जलन की रामबाण दवा

सिनेरारिया मैरिटिमा सक्कस श्वाबे एक विश्वस्नीय होमियोपैथिक दवा है जो दर्द व खुजलाहट सरीकी आँखों की रोजमर्रा समस्याओं में आराम पहुँचाती है और मोतियाबिंद को रोकने में मदद करती है। पिछले बीस वर्षों से विश्वभर में, परिवारों में विश्वास और सफलता से इस्तेमाल की जा रही है।

परिवार में सभी के लिये उपयोगी

सिनेरारिया श्वाबे भरोसेमंद फार्मूले का कोई गलत प्रभाव नहीं पड़ता और परिवार का हर सदस्य बेखटके इसका इस्तेमाल कर सकता है आँखों के पोषण और शक्ति के लिये व्यस्क बच्चों को इसकी नियमित मात्रा दी जा सकती है पढ़ने लिखने वाले और कामकाज़ी सदस्यों को, जिन्हें आँखों पर जोर डालना होता है, सिनेरारिया श्वाबे खुजलाहट जैसी समस्याओं में आराम पहुँचाती है।

आपकी आँखों को तन्दुरूस्त व स्वस्थ रखती है

सिनेरारिया श्वाबे नज़र का ह्रास रोकती है और आँखों का पोषण करती है आँखों पर अधिक जोर में, आराम पाने के लिये इसका कभी भी उपयोग किया जा सकता है। आँखों की रोज की मुसीबतों में सिनेरारिया श्वाबे की दो बूँदें ही काफी हैं।

आँखें दुखने और मोतियाबिंद का विश्वस्नीय निदान

सिनेरारिया श्वाबे का नियमित प्रयोग आँखों की बिमारियों के प्रति अवरोध शक्ति उत्पन्न करता है। सिनेरारिया मैरिटिमा सक्कस श्वाबे अगर समय रहते प्रयोग में लाया जाये तो मोतियाबिंद के बढ़ने को प्रभावशाली ढंग से रोका जा सकता है और आपरेशन से बचा जा सकता है। आँखें दुखने जैसी छुआ-छूत की बिमारियों से सुरक्षा भी प्रदान करता है।

SCHWABE **श्वाबे**

सिनेरारिया मैरिटिमा सक्कस

डा० विलिमर श्वाबे आफ वेस्ट जर्मनी की दवाइयों की सभी बड़ी दुकानों पर उपलब्ध

विश्वस्नीय चक्षु उपचार उनकी राय मानिये जिन्होंने इससे फायदा पाया हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

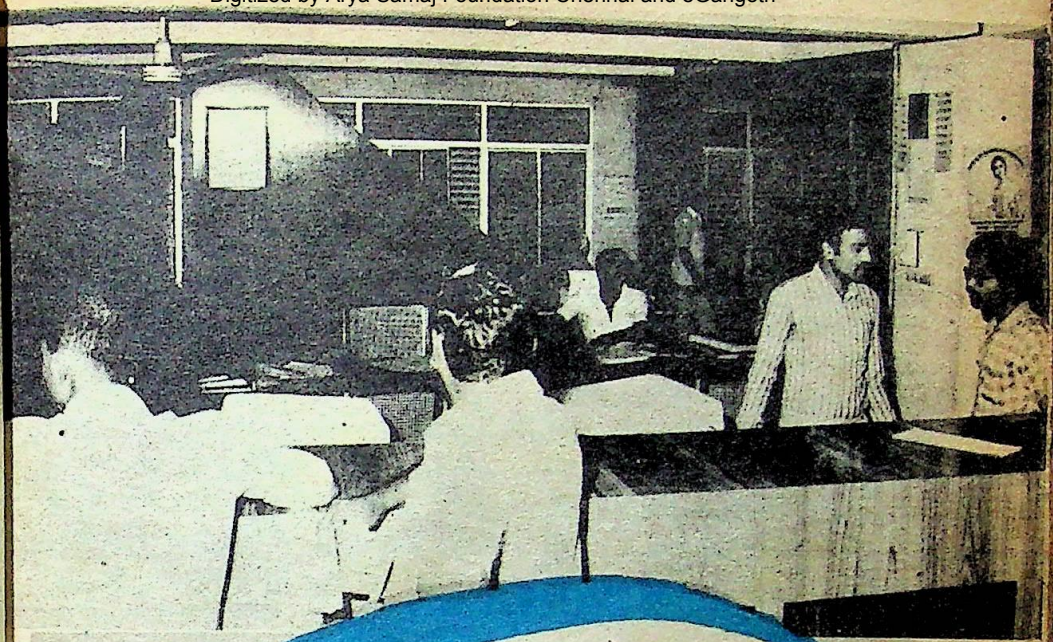

काम कीजिए किंतु तरीके से

लेख • शिवेंद्र गर्ग सुमन

बैंक के मंडलीय कार्यालय को शनिवार को तीसरे पहर लगभग पौने दो बजे यह दुखद समाचार प्राप्त हुआ कि बैंक के अध्यक्ष महोदय का देहांत हो गया है. समाचार प्राप्ति के तुरंत बाद औपचारिक काररवाई में लगभग पंदरह मिनट लग गए, तब तक अर्द्धकार्य दिवस होने के कारण कर्मचारियों के जाने का समय हो गया था. इसी समय हिंदी टाइपिस्ट को शोक संवेदना का चार पंक्तियों का तार टाइप करने को कहा गया. टाइपिस्ट ने बड़ी अशिष्टतापूर्वक दो बजे बाद यह कार्य करने से मना कर दिया. उच्च प्रबंध अधिकारी इस अवहेलना को सिर्फ देखते रहे, खिसियाते रहे.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संस्थान का एक कर्मचारी एक घंटे के लिए कहीं बाहर गया था. वह प्रायः हर तीसरेचौथे दिन अपने निजी कार्य से इधर-उधर जाता है. अधिकारी अपने अनुभाग के उस दिन के कार्यभार को देखते हुए शायद अनुमति देने में संकोच करता, पर उस से पूर्व ही कर्मचारी ने टिप्पणी की, "यह तो हम हैं, जो बता कर जाते हैं, वरना एकडेढ़ घंटे के लिए यहां कौन किस को बताता है."

कर्मचारी अपने काम से लगभग ढाई घंटे में लौटा. पूछने पर उस का उत्तर था, "साहब काम पूरा होता, तभी तो आता, बीच में लाइन में से थोड़े ही आ जाता." इन लोगों को प्रबंध अधिकारी यह नहीं कह सकते कि आप अवकाश ले लेते क्योंकि उत्तर मिलेगा, "रोज ही छोटेछोटे कामों के लिए छुट्टी लेते रहे तो हो गया काम."

कहने का तात्पर्य यह है कि कर्मचारी कहीं भी जा सकता है, जब उस की इच्छा होगी, वह आ जाएगा. टाइपिस्ट यदि दिन भर में मात्र चारछः छोटेछोटे पत्र टाइप करता है तो यह भी उस की मरजी है. वह कहेगा, "आप दूसरे से टाइप करा लीजिए. मुझ से तो इतना ही होगा. हम कोई नीम के पेड़ के नीचे बैठ कर टाइप करने वाले तो हैं नहीं. काम तो काम के तरीके से होगा. यदि आप को कोई शिकायत है तो आप लिख कर मंडल प्रबंधक को दे सकते हैं."

मंडल कार्यालय में आप रोजाना ऐसी स्थिति देख सकते हैं. फिर भी कर्मचारियों का कहना है, "यहां का वातावरण बहुत शांतिपूर्ण है, परिवार जैसा माहौल है." कर्मचारियों का यह कहना सही भी है. काम नहीं होगा, टाइपराइटर नहीं चलेंगे तो शांति रहेगी ही. सरोवर के शांत जल में कंकड़ डाला जाएगा, तभी तो लहरें उठेंगी. कोई भी प्रबंध अधिकारी अपने कार्यालय में श्मशान जैसी शांति नहीं चाहेगा. यदि शांति इसलिए है कि कर्मचारियों को काम करने के लिए कहने का साहस अधिकारीगण में नहीं है तो ऐसी शांति का न होना ही बेहतर है. हाथों पर हाथ रख कर बैठे हुए कामगार किसी मूर्तिगृह या म्यूजियम की ही शोभा बढ़ा सकते हैं. "काम प्यारा होता है, चाम नहीं" यह एक प्रसिद्ध लोकोक्ति है.

हमारे मंडल कार्यालय में आया हुआ आगंतुक यह देख कर हैरान हो जाता है कि यहां के कर्मचारी 11 बजे से पूर्व तो सीट पर बैठते तक नहीं. टाइपिस्टों का टाइपराइटर घंटों तक चालू नहीं होता. फिर उन्हें चाहिए लैटर हैड, कार्बन और न जाने क्याक्या. वे चपरासी को बुलाएंगे. चपरासी को आना होगा, तभी तो आएगा. वह चाय के इंतजार में होगा तो कहेगा, "चाय पी कर आता हूं." उसे भी चाय पीने में कम से कम पंदरह मिनट लगते हैं. टाइपिस्ट पास ही रखी अलमारी में से कार्बन और पेपर नहीं लेगा क्योंकि यह उस का काम नहीं है. यह चपरासी का कार्य है. मैं चाहूं कि चपरासी पहले आ जाए, पर उस के नेता कहेंगे, "पहले जो काम हाथ में है, उसे पूरा कर के आना, वरना दिन भर ही लोग बुलाते रहेंगे."

पहले यह माना जाता था कि महिला कर्मचारी अपनी सीट पर अधिक बैठती हैं. पर आज हम देखते हैं कि महिलाएं न केवल स्त्री कर्मचारियों के साथ, वरन अपने पुरुष कर्मचारियों के साथ भी दिन भर गपशप में मशगूल रहती हैं. मनजीत को आप हमेशा ही किसी न किसी दूसरे कर्मचारी की सीट के पास पाएंगे. उन के अधिकारी उन की प्रतीक्षा कर रहे होते हैं, ताकि काम आरंभ हो, पर मनजीत है जो अपनी ही गपशप में बुरी तरह

काम आप भी करते हैं और हम भी. और अपने जिम्मे का सारा काम करते हैं. फिर भी लोग कहते हैं कि दफ्तरों में काम नहीं होता. आप जानते हैं कि इस विरोधाभास का क्या कारण है?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

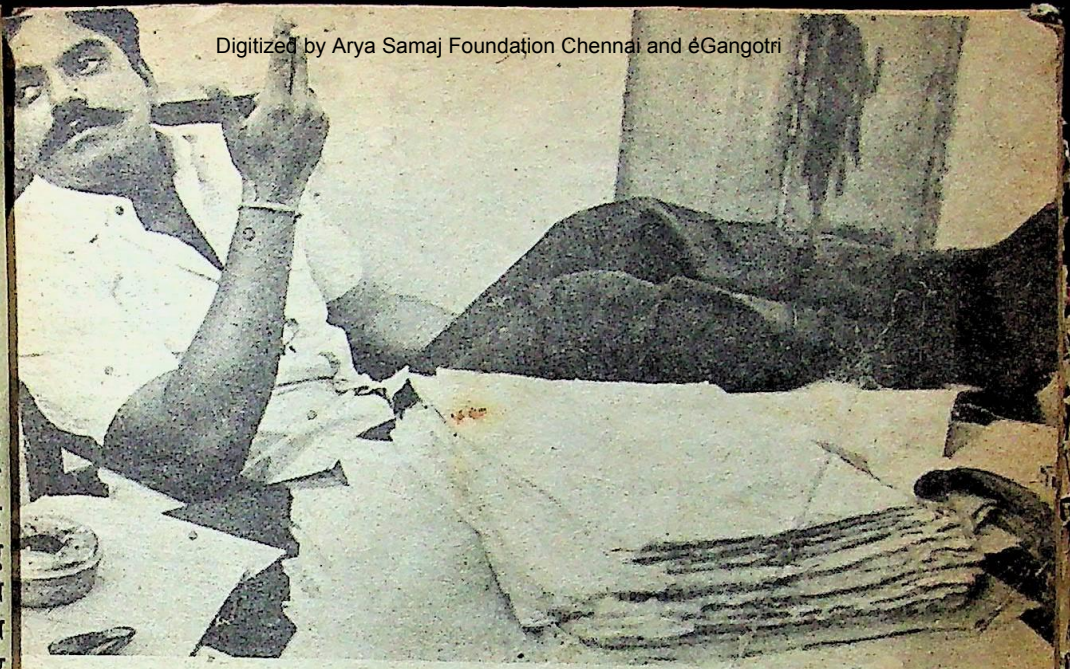

व्यस्त है. रामचरणजी जरा जोर दे कर बुलाएं तो वह कहेंगी, "क्यों, अब तो आप भी अफसरी जताने लग गए. कब से अफसर बने हैं आप?"

दफ्तरों में यह भी एक त्रासदी है कि रामचरणजी जैसे पदोन्नत अधिकारी बाबुओं से काम इसलिए नहीं ले पाते कि वर्षों तक रामचरणजी भी उन के साथ बाबू रहे हैं. अब कल के अफसर रामचरणजी को न तो स्टाफ वाले अफसर समझते हैं और न वे उन बाबुओं से काम ही करवा सकते हैं.

शायद घर जैसे वातावरण का मतलब यही है कि काम के समय में अपनी सीट पर ही कोई महिला कर्मचारी पत्रिका पढ़ रही है या स्वेटर बुन रही है. कहीं कोई कर्मचारी पत्र लिख रहा है, कहीं और कुछ निजी कार्य हो रहा है.

कभी बिजली बंद होने का बहाना होता है और घंटों काम ठप हो जाता है. पता नहीं, अपने घरों में भी ये लोग बत्ती बंद होने पर सड़कों पर चले आते हैं क्या. कभी चाय का इंतजार हो रहा है, क्या मजाल कि बिना चाय पिए काम चालू हो जाए फिर शकुंतलाजी चाय भी तो अपनी मित्रों के साथ पिएंगी. अतः जो चाय पांच मिनट में पी जा सकती है, काम का एक तरीका यह भी है— मेज पर कागजात खुले पड़े हैं और..

उस में वह आधा घंटा बड़े आराम के साथ लगा देती हैं.

अकसर रणजीतजी कहेंगे, "साहब, आज मेरा मूड काम करने का नहीं है." कभी उन्हें दफ्तर के समय में नींद आती है, कभी अपना कोई निजी कार्य करना होता है. दरबारीलालजी सिपाही हैं, पर उन्हें किसी न किसी बहाने से बाहर रहना ज्यादा अच्छा लगता है. अतः कभी वह पान लाने जाते हैं तो कभी महिला स्टाफ के लिए फलफूल. इस बीच कोई अधिकारी उन्हें पानी पिलाने के लिए कह दे तो दरबारीलालजी के हावभाव देखते ही बनते हैं. बाहर जाना दरबारी-लालजी के लिए मानो मुक्ति की सांस है. उन से आप यह पूछिए कि देर कहां हो गई तो वह कहेंगे, "पान वाला खाना खा रहा था, चाय वाला दूध लेने गया था." उन के पास बहानों की कोई सीमा नहीं है.

ऐसे ही माहौल में जब उन जैसे व्यक्ति की शिकायत होती है तो मंडलीय प्रतिनिधि वावैला खड़ा कर देते हैं. क्या मजाल कि मंडलीय प्रतिनिधि की अनुचित हरकतों एवं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रशासन में उन के लगातार अनुचित हस्तक्षेप के लिए प्रबंध अधिकारी उन के विरुद्ध कुछ काररवाई कर लें. जब उच्च प्रबंध अधिकारी कुछ सार्थक करने के स्थान पर कुछ कर पाने की अपनी इच्छा शक्ति को भी खो देता है तो शीघ्र ही कुछ कर पाने की सामर्थ्य से भी वह सहज ही वंचित हो जाता है. दरबारीलालजी जैसे अनेक कर्मचारी हैं, जिन्हें प्रबंध अधिकारी चाह कर भी स्थानांतरित नहीं कर सकते.

यह अत्यंत अफसोस की बात है कि प्रबंध अधिकारी सर्वशक्तिमान होते हुए भी एक दोषी कर्मचारी तक को दंडित नहीं कर सकते. मंडलीय प्रबंध अधिकारी आज एक व्यक्ति को स्थानांतरित करता है तो कल श्रमिक संघों के अनुचित्त दबाव के सामने झुक कर अपने आदेश को वापस ले लेता है. इस से यह सिद्ध होता है कि वह अपने आदेश नहीं मंनवा सकता. इस से अधिक खेदजनक बात भला और क्या हो सकती है कि प्रबंध अधिकारी अपने अपमान एवं निराशा को सहज ही पचा जाते हैं.

प्रबंधक की विवशता

इस तरह आज श्रमिक वर्ग ही प्रबंधक वर्ग बन गया है. सुरेशजी जैसे वरिष्ठ बाबू कहते हैं, "हम लोग जैसा चाहें, वैसा ही करवा सकते हैं, अपनी हर मांग मनवा सकते हैं. पर आप अफसर कुछ भी तो नहीं करवा सकते. संख्या में हम ज्यादा जो हैं."

वास्तव में यही होता है, गोया प्रबंधक वर्ग संख्या की दानवी शक्ति के सामने बौना हो गया है. उस में किसी गलत बात को रोकने का साहस भी नहीं रहा है. उस के सामने बाबू लोग अपनी मनमानी करते हैं, कामचोरी करते हैं, काम टालते हैं, लेकिन ऐसे उदाहरण नगण्य हैं, जहां किसी दोषी कर्मचारी को दंडित किया गया हो.

सारे दिन चलती हैं यूनियन की गतिविधियां और स्टाफ को भड़काने, उकसाने वाली हरकतें, पर इन्हें रोकने का भी कोई सफल एवं सार्थक प्रयास नहीं किया जाता. हमारी मनोवृत्ति है कि हम बुरा नहीं बनना चाहते. हम सोचते हैं, "होने दो, जैसा होता है. हम क्यों पहल करें और क्यों बुराई मोल लें."

इसी मनोवृत्ति के कारण आज देश गर्त में जा रहा है. सभी को अपनेअपने हितों की चिंता है. सब अपने ही स्वार्थों की पूर्ति में लगे हुए हैं, देश का और संस्थान का किसी को भी कोई विचार नहीं है.

पिछले दिनों हमारी फोटोस्टेट मशीन खराब थी. खराब वह इसलिए हो जाती है कि चपरासी को फोटोस्टेट कार्य बाजार में करवाना पसंद है. क्योंकि बाहर आनेजाने के नाम पर उसे मुफ्तखोरी के लिए काफी समय मिल जाता है और वाहन के नाम पर भी वह रिकशा व्यय के तीनचार रुपए कमा लेता है. फोटोस्टेट कराने का बिल भी काफी ऊंची दर पर बनता है. मशीन वह साफ करता नहीं, क्या मजाल कि वह डेढ़ लाख रुपए की मशीन को पोंछ भी दे. वह बहाना बनाएगा और कहेगा, "साहब, बिजली का काम है, कहीं करेंट आ जाए या क्या पता कोई चीज टूट जाए, खराब हो जाए. मैं तो इतना जोखिम नहीं लेता."

संस्थान के प्रति दायित्व

कर्मचारियों के नेता भी उसे यह सब कार्य न करने के लिए ही उकसाते रहते हैं, "तुम्हें कोई भत्ता मिलता है इसे चलाने का, इसे ठीक करने का?" मामूली सी मरम्मत का छोटाबड़ा कार्य तो हम सब अपने घरों में भी करते हैं, पर यही बात दफ्तर में आप कह दें तो तुरंत उत्तर मिलेगा, "यह कोई घर नहीं है. यहां तो बैंक का काम बैंक के तरीके से ही होगा."

यह नियमबद्धता कितनी विचित्र है, कैसी एकपक्षीय है, जो कर्मचारियों को मात्र कामचोरी ही सिखाती है, संस्थान के प्रति दायित्व या लगाव की कोई भावना ही नहीं उत्पन्न होने देती. आप देखेंगे कि बजरंगलालजी कहेंगे, "अरे भाई, दोपहर के भोजन का समय होने में आधा घंटे की देर है," लेकिन इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साठ साल के बूढ़े या साठ साल के जवान?

कभी आपने ग़ौर किया है कि सड़क पर दौड़ते यह बुज़ुर्ग ६० बरस की उम्र में भी क्यों शक्ति और स्फूर्ति से भरपूर है? जबकि आप अभी ३० ही के हैं फिर भी थके-थके से रहते हैं.

इसका जवाब है, केसरी जीवन.
हर दिन, दिन में दो बार दो छोटे चम्मच.

ज़ाफ़रान (केसर)–अनमोल तत्त्व!

केसरी जीवन की बोतल खोलिए. ज़ाफ़रान की लुभावनी खुशबुएँ सबसे पहले आपका स्वागत करेंगी. शुद्ध, असली ज़ाफ़रान. दुनिया की सब से महँगी जड़ी-बूटियों में से एक. जिसे ख़ास तौर से कश्मीर की वादियों से चुना गया.

केसरी जीवन में ज़ाफ़रान के अरोग्यकर और सौंदर्यवर्धक गुणों के साथ-साथ ताज़ा आँवला और कई दूसरी जड़ी-बूटियाँ मिली हुई हैं. यह सब मिलकर आपके शरीरगठन को मज़बूत करते हैं. शरीर के टिशूज़ को वृद्धावस्था में भी चुस्त बनाए रखते हैं और आज की तेज़ रफ़्तार ज़िन्दगी के तनावों से आपको मुक्त रखने में आपकी मदद करते हैं. तो आज ही से इसे अपनी आदत बना लीजिए. और जीवनभर बीमारियों से मुक़ाबला करने की शक्ति जुटा लीजिए. वृद्धावस्था में सेहत का अनमोल रत्न आप भी पा लेंगे, और सारी ज़िन्दगी, ज़िन्दगी से भरपूर तरो-ताज़ा रहेंगी.

ZP/8/173

रग-रग में जान – ज़िन्दगी की शान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पैरीज़ पान मज़ा

पैरीज़ की पेशकश—मीठे पान का मज़ा—पान मज़ा । आपको इसका असली पान जैसा स्वाद और इसकी सुगंध बहुत भाएगी...और फिर मुँह में महसूस होने वाली ठंडी-ठंडी ताज़गी भी पसंद आएगी ।

भोजन के बाद या काफी के बाद...या फिर जब भी आप मुँह का स्वाद तरो-ताज़ा करना चाहे, पैरीज़ की स्वादिष्ट पान--स्वीट मुँह में डालिए । वाह ! अब आएग मज़ा !

असली पान का भरपूर सुगन्ध-भरा स्वाद लीजिए...

और फ़िर लीजिए इसकी ठंडी ताज़गी का भज़ा...वाह !

पान के सुगंध वाली स्वीट जो आपके मुँह में लाए मज़ेदार ठंडी ता-ज़-गी !

PARRYS
पैरीज का उत्कृष्ट उत्पादन

Parry's
पान मज़ा

PCL 2097 R

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के बावजूद कर्मचारी अपना काम तो सवा बजे, डेढ़ बजे ही रोक देते हैं और घड़ी की तरफ ताकते रहते हैं कि कब दो बजें और वे अपनी सीटे से उठें.

यही बात शाम को होती है. चार बजते ही कर्मचारीगण काम समेट लेते हैं, इधरउधर चहलकदमी शुरू कर देते हैं. कोई आवश्यक काम आए तो भी वे उसे अगले दिन के लिए टाल देंगे. आप कुछ कहना चाहें तो उत्तर मिलेगा. "साहब कल के लिए भी तो कुछ छोड़िए न, चार बजे बाद भी भला कोई काम होता है?" फलतः चार से पांच बजे तक कोई काम नहीं होता.

रमाजी पौने पांच बजे ही चली जाती हैं, क्योंकि बस चार बज कर 50 मिनट पर जाती है. उन्हें आप यह नहीं कह सकते कि वह पांच बज कर 10 मिनट पर जाने वाली बस से जा सकती हैं. जी नहीं, कर्मचारी को यह हक है कि वह पांच बजे से पहले ही चला जाए, आप को यह हक नहीं है कि उसे पांच बजने के बाद एक मिनट भी अधिक रोक लें.

यदि दो बजे से पौने पांच बजे तक बिजली बंद है और आप चाहते हैं कि पौने पांच बजे बाद, बिजली आ गई है तो बाबूपांचदस मिनट ज्यादा ठहर कर एक जरूरी पत्र टाइप कर दे तो आप भूल कर रहे

अजी साहब, आप परेशान क्यों होते हैं, आप का ही तो काम हो रहा था. क्या हुआ जो जरा सी आंख झपक गई.

हैं. कर्मचारियों को यह हक है कि वे पांच बजे चले जाएं, चाहे वे सारे दिन खाली बैठे रहे हों, लेकिन पांच बजे बाद तो उन्हें आप एक मिनट भी नहीं रोक सकते, क्योंकि यह श्रमिक अधिकारों पर कुठाराघात है, उन की स्वाधीनता का हनन है और उसी हनन के लिए वे दुनिया भर के मजदूरों से एक होने का आह्वान करते हैं. उन का श्रमिक संघ इसी एकता के बल पर तो टिका है. अतः आप का काम कितना ही जरूरी क्यों न हो, सुशील जैसे कर्मचारी उसे ठेंगा दिखाते हैं. वे संस्थान के गुलाम नहीं हैं, संस्थान ने उन्हें नौकरी दे कर उन पर एहसान नहीं किया है और न वे बंधुआ मजदूर ही हैं.

आप सोचते रहिए कि वास्तव में गुलाम तो संस्थान है, आप स्वयं मैनेजर होते हुए भी बंधुआ मजदूर हैं. शासक वे हैं, शासित आप. वे कुछ भी करने के लिए स्वतंत्र हैं, आप इस बात के लिए लाचार हैं कि आप चाह कर भी कुछ नहीं कर सकते. आप अमरीका की, जापान की, जरमनी की तुलना न करें, वहां काम करने की संस्कृति है पर यहां काम करने की संस्कृति ही नहीं है. हमें शुरू से अभी तक यही तो सिखाया गया है कि आज का काम कल के लिए किस तरह से छोड़ा जाए क्योंकि हम उस देश के वासी हैं, जहां 'दासमलूका' कह गए हैं: "अजगर करे न चाकरी, पंछी करे न काम." तभी तो हमारे यहां काम हराम है.

आवश्यकता इस बात की है कि संविधान में संशोधन कर हमें काम न करने का मौलिक अधिकार दे दिया जाए. अर्थात कैसे एक सरकारी क्षेत्र की संस्था में रहते हुए काम से मुक्ति पाई जा सके. हर कर्मचारी इस कला में निष्णात होता है. क्योंकि आखिर उस ने इस के अलावा और कुछ सीखा भी क्या है. एक यही तो गुरुमंत्र वह पढ़ता आया है और वह हर नए कामगार को भी यही मंत्र तो पढ़ाता रहेगा—आज, कल और सर्वदा, सर्वदा. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

PCL2097R

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

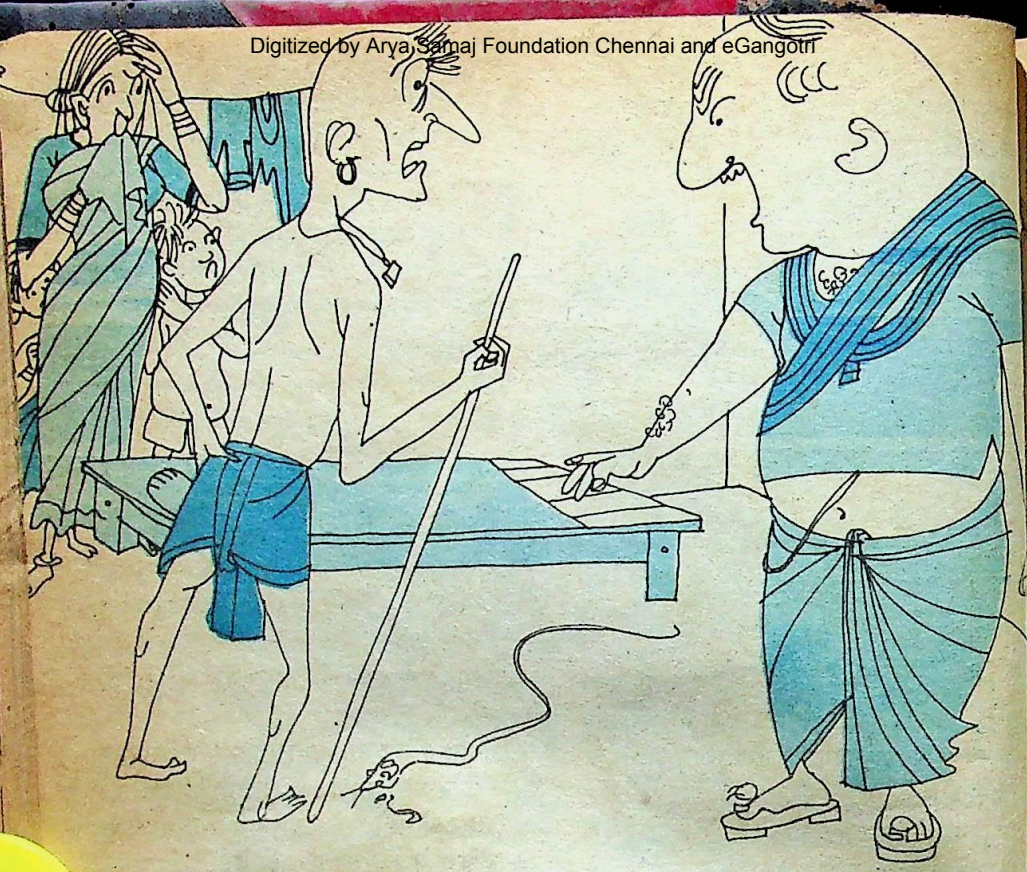

हत्या एक देवता की

व्यंग्य • अशोक थावरानी

"सांप..., सांप...मां...सांप..." हरीश के चिल्लाते ही आंगन में बैठी शारदा अपनी झोंपड़ी की ओर दौड़ पड़ी.

उस ने देखा, हरीश का मासूम चेहरा भय से पीला पड़ गया था. शारदा के आते ही उस ने चिल्लाना बंद कर दिया, पर वह इस तरह हांफ रहा था जैसे मीलों पैदल दौड़ कर आया हो. शारदा ने उसे अपने सीने से चिपका लिया और सांप के बारे में उस से पूछने लगी.

घबराए हुए हरीश ने अपनी उंगली से चारपाई की ओर इशारा कर दिया. कुछ समय पूर्व जो हरीश गला फाड़ कर चिल्ला रहा था, उस के मुंह से अब शब्द गायब हो गए थे. वह अधिक कुछ न बता सका, पर शारदा यह तो अच्छी तरह समझ चुकी थी कि उस ने सांप देखा है.

सांप की खोज युद्ध स्तर पर शुरू हुई. शारदा जहां खोज सकती थी, वहां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"राम ! राम ! राम ! ...सर्पहत्या, नाग तो देवता होता है, तुम ने उस की हत्या कर दी." पंडितजी मरे हुए सांप को देख कर बोले.

वीरभान द्वारा आत्मरक्षा हेतु की गई जिस हत्या (?) के लिए पंडित रामकृष्ण ने उसे भारी दंड चुकाने पर मजबूर किया था वही अपराध अपने द्वारा होने पर वह किस तरह साफ बच निकले?

उदारनाथ के खेत पर 'हाली' (खेत के समस्त कार्य करने वाला मजदूर) का काम करता था. पर हाली तो वह सिर्फ नाम के लिए ही था. सेठ उस से हर तरह का काम लेता था. वैसे काम में वह किसी कोल्हू के बैल से कम न था.

अपनी जायदाद के नाम पर उस के पास पत्नी के चांदी के पाजेब के अलावा कुछ भी न था. जिस झोंपड़ी में वे रह रहे थे, वह भी सेठ उदारनाथ ने किराए पर दी हुई थी.

झोंपड़ी से सटा हुआ एक पक्का मकान पंडित रामकृष्ण का था. पंडितजी वैसे ही थे जैसे मथुरा, बनारस के पंडे होते हैं. अगर खुश होते थे तो मक्खनमलाई और बिगड़ जाते तो भी उन्हें नहीं मना सकता था. पंडितजी का शरीर वीरभान के ठीक विपरीत था. देखने में वह लाल टमाटर से लगते थे. पेट था उन का कद्दू जैसा. वजन वैसे ठीक से तो मालूम नहीं था, परंतु शरीर के अनुसार डेढ़ क्विंटल से कम तो क्या होगा? माथे पर चंदन का लेप, आयु 60 वर्ष की थी, पर जैसे खून टपक पड़ना चाहता था. उन्हें प्रत्येक घर में होने वाले प्रत्येक कार्य की खबर रहती थी और उन की एक प्रिय आदत थी—हर छोटीबड़ी बात में पके आम की तरह टपक पड़ना.

शारदा ने जब वीरभान को सांप वाली घटना सुनाई तो वह चिंतित हो उठा. दोनों ने मिल कर फिर सरगर्मी से सांप की तलाश की, पर वह सांप तो किसी हिंदी फिल्म के एड़ीचोटी का जोर लगा कर खोजने की कोशिश की. मगर सांप का कहीं भी सुराग नहीं मिला.

रात होने को आई. घर में समय पर भोजन भी नहीं बन सका था. कुछ समय पश्चात शारदा का पति वीरभान भी थकाहारा घर पर आ गया. कहने को तो वीरभान 35 वर्षीय था, पर गरीबी ने उसे उस की वास्तविक आयु से 15 वर्ष आगे धकेल दिया था. उस के शरीर में खून या मांस नाम की कोई चीज नजर ही न आती थी. एक चलताफिरता हड्डियों का ढांचा था वह. इल्म के नाम पर वह सिर्फ तीसरी कक्षा तक पढ़ालिखा था. लेकिन शारदा के लिए तो काले अक्षर भैंस बराबर थे.

वीरभान ने कभी अपने घर रह कर सूरज नहीं देखा था. सुबह सूर्योदय से पहले ही वह खेत पर पहुंच जाता था और सूर्यास्त के पश्चात ही घर लौटता था. वह सेठ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खलनायक की तरह गायब हो चुका था.

वीरभान ने सुबह खेत में जाते समय शारदा को बच्चों का ध्यान रखने की हिदायत दी और बच्चों को भी सावधान रहने की ताकीद की. घर से बारह निकलते ही उसे पंडितजी भी मिल गए. उस ने पंडितजी का चरणस्पर्श किया और पंडितजी ने "जीते रहो" कह कर उस के सिर पर आशीर्वाद का हाथ रख दिया.

अभी पंडितजी से कोई बात भी न हो पाई थी कि शारदा की चीख सुनाई दी. वीरभान बौखला कर वापस अपने घर की ओर दौड़ पड़ा. शारदा सांप को देख कर चीखे जा रही थी और सांप बिल में घुसने की कोशिश में था. पता नहीं कब वीरभान ने आंगन में पड़ी लाठी उठा ली और एक भरपूर वार किया सांप के सिर पर. वार कारगर था. सांप का सिर कुचल गया. बस, फिर क्या था, सांप तड़पने लगा.

इतने में पंडितजी घर में घुस आए. वह भीतर का दृश्य देख कर बोल उठे, "रामराम, रामराम...सर्प-हत्या. इतना बड़ा पाप."

वीरभान कभी पंडितजी की ओर देख रहा था, कभी उस सांप की ओर, जो अब शांत हो चुका था. उस के मुंह से शब्द नहीं निकले. पर पंडितजी पुनः बोल उठे, "बेटे, कुछ तो सोचा होता. नाग तो देवता होता है. तुम ने देवता की ही हत्या कर दी."

वीरभान पछताने लगा. वह धीरे से बोला, "पंडितजी, क्या करता? सांप तो जहरीला जानवर होता है. मेरे घर में छोटेछोटे बच्चे हैं. अगर यह किसी को डस लेता तो..."

यह बात पंडितजी के लिए असहनीय थी. उन का दांव बेकार सिद्ध होने जा रहा था. वह बहती गंगा में हाथ धो लेना चाहते थे और वीरभान उन के रास्ते में कांटे बिछा रहा था. वह अपने तेवर चढ़ाते हुए उबल पड़े, "मूर्ख, सांप को जानवर कहता है. क्या यह जानवर है? जब बीतेगी तब जानेगा. अब देखना यह कैसे तुम से बदला लेता है. तुम समझते हो, यह मर गया है. काला नाग कभी अपने हत्यारे को माफ नहीं करता. यह फिर से जीवित हो कर अपना बदला लेगा. यह तुम्हें दरिद्र बना देगा," पंडित प्रत्येक शब्द चबाचबा कर बोल रहे थे.

वह पल भर रुके और फिर बोले, "तुम समझते हो मैं झूठ बोल रहा हूं? 30 वर्ष पूर्व एक किसान ने ऐसा ही किया था, किंतु उस का घर बरबाद हो गया, संतान मर गई और वह खुद कोढ़ी हो गया."

बेचारे वीरभान ने जैसे अनजाने में ही एक रीछ के पिछले पैर पकड़ लिए थे. यदि वह उसे छोड़ता है तो जान से हाथ धोने पड़ेंगे और पकड़े रहे तो कब तक? वह यह नहीं जानता था कि जीवित सांप से मरा हुआ सांप अधिक खतरनाक होता है.

किंतु अब क्या किया जा सकता था. जो होना था, वह तो हो चुका था. सांप मर चुका था, पर वीरभान के मन में भय और अधिक गहरा गया था. उसे अपने किए पर बहुत पछतावा हो रहा था. वह वास्तव में अपनेआप को मूर्ख समझने लगा था.

अचानक उसे कुछ याद आया और वह बोला, "पंडितजी काला नाग बदला लेता है, लेकिन यह तो लाल..."

वीरभान का अपनी बात झुठलाना बरदाश्त करना पंडितजी के वश में नहीं था. हालांकि वीरभान की बात अत्यंत महत्त्वपूर्ण थी, पर पंडितजी तो किसी कुशल राजनीतिज्ञ से कम नहीं थे. बात बदलना तो उन के लिए बाएं हाथ का खेल था. वह गरज उठे, "मूर्ख, सर्वनाश हो तेरा. एक तो तूने देवता की हत्या कर दी, ऊपर से तू फिर उस का रंग देखता है. क्या देवता अपना रंग नहीं बदल सकता?"

बेचारे वीरभान की जबान तालू से चिपक गई. शारदा को किसी अनिष्ट की आशंका ने पत्थर बना दिया था. वह तो जैसे दुनिया में ही नहीं थी. झोंपड़े के दरवाजे पर भीड़ जमा हो गई थी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नयी क्रीम की मेहरबानी

अब ठंड का डर नहीं

दे'ज़ मेडिकल की केयो-कार्पिन ऐन्टिसेप्टिक क्रीम नियमित रूप से लगाइए। रूखी-सूखी स हवा से आप की त्वचा को कोई नुकसान नहीं पहुंचा सकती।

यह क्रीम त्वचा की स्वाभाविक नमी कायम रखते हुए त्वचा को कोमल और सतेज बनाती है। इसके कीटाणुनाशक ऐन्टिसेप्टिक गुण कटने-छिलने में भरपूर सुरक्षा देते हैं। यह क्री चिपचिपाहट या अतिरिक्त चिकनाहट भी नहीं देती, न कोई निशान छोड़ती है। इस बार ठंड के मौसम में आप भी सपरिवार नियमित रूप केयो-कार्पिन ऐन्टिसेप्टिक क्रीम आज़माकर देखें। समूचे तन-बदन, हाथ-पैर या होठ फट का डर बिल्कुल गायब! सचमुच, ठंड के मौस में अतिरिक्त सुरक्षा देने में यह क्रीम अकेली ही सौ के बराबर!

Dey's दे'ज़ मेडिकल
की संभाल, आपका भरोसा

दे'ज़ मेडिकल की

केयो-कार्पिन

ऐन्टिसेप्टिक क्रीम

त्वचा की सुरक्षा में यह क्रीम
अकेली ही सौ के बराबर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kan

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहला हफ्ता

चौथा हफ्ता

देखिए! सिर्फ़ ६ हफ़्तों में अनोखा गोरापन

छटा हफ्ता

क्लियर-टोन गोरेपन प्लान का क

आप अक्सर अपने सजीले सलोने प्राकृतिक रंग रूप की कल्पना करते हैं. क्लियर-टोन गोरेपन की क्रीम आपकी त्वचा में नैसर्गिक निखार लाकर आपकी कल्पना को साकार करती है.

दिन में दो बार हल्के-हल्के क्लियर-टोन लगाइये. इसकी नर्म क्रीम आपकी त्वचा में ज ही समा जाएगी. रह जाएगी सिर्फ़ इसकी भीनी फ्रेंच सुगन्ध. बस इसी समय इसका चौतरफा भी शुरु हो जाएगा.

एक अनोखा गोरेपन का तत्व (जो इसी क्रीम में है) आपके रोम-रोम में जादू उ आपकी त्वचा को नैसर्गिक सुन्दरता प्रदान

एक विशेष सन-स्क्रीन जो दिन भर आपकी त्वचा को सूरज की तपती किरणों से वरन् आपकी त्वचा को काली पड़ने से भी

भरपूर माइश्चराइज़र जो आपकी त्वचा तरोताजा बनाकर आप में यौवन की छलकाएगा.

दाग धब्बे सब खत्म इन चन्द छः हफ़्ते बाद आप ख़ुद क्लियर कमाल महसूस करेंगी... ठीक उसी भारत की और बहुत सी नारियां पहले कर रही हैं.

अब तो आपको भी चाहिए न क्लियर-टोन का गोरापन?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eSangotri

"बेटा वीरभान, यह नागहत्या नहीं है. इस सांप ने तो मेरे हाथों मर कर मोक्ष प्राप्त किया है," पंडितजी समझाते हुए बोले.▲

भीड़ में से एक सज्जन बोले, "पंडितजी, अब जो कुछ हुआ सो हुआ, अब इस का प्रायश्चित्त करने का कोई उपाय भी तो हो सकता है."

यह सुन कर वीरभान को जैसे अचानक होश आ गया. उस ने भी उस सुझाव का समर्थन करते हुए कहा, "हां, पंडितजी, कोई तो उपाय होगा प्रायश्चित्त का?"

पंडितजी अब शांत हुए. उन का दांव काम कर रहा था. मुरगा अपनी गरदन कटवाने के लिए तैयार था. पंडितजी ने अपनी आवाज को धीमा करते हुए कहा "हां, उपाय तो है. लेकिन..."

पंडितजी इतना कह कर रुक गए. लेकिन वीरभान को बड़ी मुशकिल से अपने किए हुए पाप से छुटकारा मिलने की एक हलकी किरण नजर आई. अब वह एक क्षण भी बेकार गंवाना नहीं चाहते थे, पर पंडितजी का 'लेकिन' शब्द उन के आड़े आ रहा था. वीरभान उत्सुकता से पूछ बैठा, "लेकिन क्या?"

"लेकिन थोड़ा खर्च आएगा," पंडितजी बोले, "पहले नागदेव का संस्कार करवा दो और वहां उन की समाधि बनवा दो. नियमानुसार तो मंदिर बनाना चाहिए. किंतु तुम गरीब हो तो मिट्टी का चबूतरा ही बनवा देना. एक माह तक ब्राह्मण भोज अवश्य कराना होगा. नागदेव के वजन के बराबर चांदी का दान करना अनिवार्य है."

वीरभान को यह सुन कर तो जैसे बिजली का नंगा तार छू गया. उस की बोलने की शक्ति ही जैसे किसी ने छीन ली थी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिर भी वह साहस बटोर कर बड़ी मुश्किल से बोला, "पंडितजी, इतना खर्च तो जब मेरी मां गुजर गई थी, तब भी नहीं आया था और फिर आप तो मेरी आर्थिक स्थिति से अच्छी तरह वाकिफ ही हैं. यह सब तो मेरे बूते से बाहर की बात है."

यह बात पंडितजी के गले न उतर सकी. 'शेर भला जबड़ों में फंसा शिकार कैसे छोड़ सकता है. वह कुछ और कड़क हुए, "क्या तुम पहले नहीं सोच सकते थे कि जो पाप तुम करने जा रहे हो, उस का प्रायश्चित्त क्या होगा? यह बात भूलना नहीं कि जब तक तुम नागदेव के वजन के बराबर चांदी दान नहीं कर देते, तब तक वह तुम्हारे परिवार में से किसी को भी डस सकता है. तुम अपने बच्चों को सावधान रखते हुए शीघ्र यह कार्य पूर्ण कर देना, किंतु ब्राह्मण भोज तो आज से ही आरंभ करा दो."

वीरभान को न चाहते हुए भी यह सब करना पड़ा. आखिर अपनी संतान तो सभी को प्रिय होती है. पंडितजी के परिवार का भोजन वीरभान के घर पर बनने लगा था. चांदी की बात रह गई थी. उस के लिए पंडितजी से एक माह की मुहलत ली गई.

बेचारी शारदा की पाजेब भी बेचनी पड़ी. कुछ रूपया सेठ उदारनाथ से उधार देने की प्रार्थना की गई. सेठजी ने एक सप्ताह बाद वीरभान को रुपया देने का आश्वासन दिया.

धूल के बादलों से हुई है ग्रहों की उत्पत्ति

अमरीका के एक वैज्ञानिक का मत है कि कुछ तारों के चारों ओर विशाल चक्राकार धूल के बादलों से ग्रहों की उत्पत्ति हुई है. इन बादलों से कई हजार सालों में सौर मंडलों की उत्पत्ति होती है. यही धूल एकत्रित हो कर अपनी कक्षा में घूमने वाले ग्रहों के रूप में बदल जाती है.

वीरभान की आंखों से नींद लुप्त हो गई थी. वह रातरात भर जाग कर झोंपड़ी में पहरा देने लगा. रहरह कर उस के कानों में पंडितजी के वाक्य बारबार गूंज उठते थे, "जब तक सांप के वजन के बराबर चांदी दान नहीं कर देते, तब तक वह तुम्हारे परिवार में किसी को भी डस सकता है."

एक सप्ताह पश्चात सेठ उदारनाथ ने उसे रुपया उधार दे दिया. सांप के वजन के बराबर चांदी का दान कर के अचानक हुए कर्ज से वीरभान को छुटकारा मिला. अब पंडितजी के बताए अनुसार उपाय पूर्ण हो चुके थे. अतः वीरभान के मन से भय दूर हो गया था.

वीरभान की आर्थिक स्थिति और अधिक बिगड़ चुकी थी. सांप उसे दरिद्र बनाता या नहीं, यह तो दूर की बात थी किंतु पंडितजी ने उसे शीघ्र ही दरिद्र बना दिया था.

दिन बीतते रहे.

एक दिन वीरभान रात के समय घर में बैठा भोजन कर रहा था. उसी समय पंडितजी के घर से बच्चों की चीखें सुनाई दीं. वीरभान किसी अनिष्ट की आशंका से भोजन छोड़ कर पंडितजी के घर पहुंच गया. उस ने देखा कि पंडितजी के हाथ में लाठी थी और फर्श पर मरा हुआ काला सांप पड़ा था.

वीरभान स्थिति समझ चुका था.

उस ने सहानुभूति दर्शाते हुए पंडितजी से कहा, "पंडितजी, यह तो बहुत बुरा..."

इस से पहले वीरभान अपना वाक्य पूरा करता पंडितजी बोल उठे, "बेटा वीरभान, तुम आजीवन मूर्ख के मूर्ख ही रहोगे. यह नागहत्या नहीं है." वीरभान कुछ न बोला. पंडितजी पुनः बोले, "यह सर्प एक पंडित के हाथ से मरा है और पंडित भगवान के प्रतिनिधि होते हैं. इस का नसीब अच्छा था जो मेरे हाथ से मर कर इसने सर्पयोनि त्यागी और मोक्ष प्राप्त किया."

वीरभान का मुंह खुला का खुल रह गया.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and

घर और घाट

कहानी • पूर्णिमा गुप्ता

मेरे पति आकाश का देहांत हो गया था. उम्र 35 की भी नहीं हुई थी. उन्हें कोई लंबी बीमारी नहीं थी. बस अचानक दिल का दौरा पड़ा और बत्ती गुल हो गई. अभी तक तो मित्रगण आते रहे थे. लेकिन पति के देहांत के बाद कोई नहीं आया. इस में उन का भी दोष नहीं. वहां की जिंदगी थी ही इतनी व्यस्त.

पहली तीन रातें मेरे साथ किरण सोई थी. अब से रातें अकेले ही गुजारनी थीं. शायद हफ्ता गुजरने तक दिन भी अकेले बिताने होंगे. क्या करूंगी, कहां रहूंगी – कुछ सोचा नहीं था.

यों तो कहने को मेरी ननद भी अमरीका में ही रहती थीं लेकिन वह ऐसे मौके पर भी नहीं आई थीं. साल भर पहले कुछ देर के लिए आई थी. तब मुझ से कह गई थी, "रीता, आकाश बचपन से बड़ा विनोदप्रिय किस्म का है. तुम्हें दोष नहीं देती, लेकिन आकाश को कुछ हो गया तो भुगतोगी तुम ही. तुम लोगों की शादी को 10 बरस हो गए. देखती हूं पहले आकाश की हंसी जाती रही. फिर माथे पर अकसर बल पड़े रहने लगे. साथ ही वह चुप भी रहने लगा. पांच बरस से सिगरेट और शराब का सहारा भी लेने लगा है. रक्तचाप से शुरुआत हुई तनाव की. उस का कालस्ट्राल का स्तर ज्यादा है..."

मुझे तो लगता है उन को और कुछ नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मूर्खतापूर्ण धारणाओं तथा पति के धनदौलत के नशे में चूर हो कर रीता ने अपने संगेसंबंधियों को खुद से बहुत दूर कर दिया था. लेकिन आकाश की मृत्यु के बाद उसे अपना यह कदम कितना महंगा पड़ा?

था, बस दीदी ही की टोकाटाकी खा गई थी. उन से मेरा सुख नहीं देखा गया था.

मैं ने दशकों से बहुओं के ऊपर होते हुए अत्याचारों को देखतेसुनते मन में ठान ली थी कि मैं कभी अपने ऊपर किसी की ज्यादती नहीं होने दूंगी. अगर आप जुल्म न सहें तो कोई कर ही कैसे सकता है. इस तरह समस्या जड़ से ही उखड़ जाएगी.

लेकिन मैं जैसी शरीर की बेडौल हूं वैसी अक्ल की भी मोटी हूं. मेरी लंबाई कम और चौड़ाई ज्यादा है. जहां तक खूबसूरती का सवाल है, कहीं न कहीं, कुछ न कुछ होगी ही वरना क्यों आकाश जैसा खूबसूरत नौजवान, वह भी अमरीका में बसा हुआ सफल इंजीनियर, मुझ 18 बरस की अल्हड़ को एक ही बार देख कर पसंद कर लाया था.ऊपर से उन्होंने न तो दहेज की मांग की थी,न ही खर्च की नोकझोंक हुई थी.

मेरे मांबाप भी होशियार निकले थे. उन्होंने एक बार की "हां" के बाद आकाश और उस के कितने रिश्तेदारों के कहने पर भी उन्हें मेरी एक और झलक न मिलने दी थी. मां ने कहा दिया था, "शादी के बाद सुबहशाम अपनी दुलहन को बैठा कर निहारना."

डर तो था ही कि कहीं लेने के देने न पड़ जाएं. मां ने शादी के वक्त भी अपारदर्शी साड़ी में मुझ को नख से शिख तक छिपाए रखा था. क्या मालूम बरात ही न लौट जाए. खैर, जैसेतैसे शादी हो गई और मैं सजीधजी ससुराल पहुंच गई.

अभी तक तो घूंघट में कट गई. मरफी का सिद्धांत है कि यदि कुछ गलत होने की गुंजाइश है तो अवश्य हो कर रहेगा. मैं कमरे में आ कर बैठी ही थी कि ननद ने पीछे से आ कर घूंघट सरका दिया. मैं बुराभला सब सुनने को तैयार थी. मगर किसी ने कुछ कहा ही नहीं. मुंह दिखाई के नाम पर कुछ चीजें और रुपए मिलने अवश्य शुरू हो गए. दीदी तो अमरीका से आई थीं. उन्होंने वहीं का बना खूबसूरत सैट मुझे मुंह दिखाई में दिया. बाकी रिश्तेदार और अड़ोसीपड़ोसी भी आते रहे.

इतने में ददिया सास आईं. दीदी झट बोलीं, "लता, जरा आगे बढ़ कर दादीजी के पैर छू लो."

मैं ने वहीं बैठेबैठे जवाब दे दिया, "पैर छुआने का इतना ही शौक था तो ले आतीं गांव की गंवार. मैं तो बी.ए. पास शहरी लड़की हूं."

दीदी को ऐसा चुप किया कि वह उलटे पांव लौट गईं.

कुछ देर बाद एक कमरे के पास से गुजर रही थी तो खुसुरफुसुर सुनाई पड़ी, "इस को इतना गुमान है बी. ए. करने का. एक आकाश की मां एम. ए. पास आई थी, जिस के मुंह से आज तक भी कोई ऐसीवैसी बात नहीं सुनी."

अब आप ही बताइए, सास के एम. ए. करने का मेरे पैर छूने से क्या सरोकार था. खैर, मुझे क्या पड़ी थी जो उन लोगों के मुंह लगती. मुझे कल मायके चले जाना था उस के चार दिन बाद आकाश के संग अमरीका. वहां दीदी जरूर मेरी जान को मुसीबत बन कर चार घंटे की दूरी (200 किलो मीटर) पर रहेंगी. मैं पहले दिन से ही संभल कर रहूंगी तो वह मेरा क्या बिगाड़ लेंगी. अनचाहे ही मुझे किसी कवि की लिखी एक पंक्ति याद आ गई.

"क्षमा बड़ों को चाहिए, छोटों को उत्पात."

लेकिन देखूंगी,दीदी की क्षमा कब तक चलेगी मेरे उत्पात के सामने. बड़ी आई थीं मेरे से दादीजी के पैर छुआने..डाक्टर होंगी अपने लिए, मेरे लिए तो बस एक सठियाई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आकाश से विवाह होने के बाद मेरे पांव जमीन पर नहीं पड़ रहे थे. इतना अच्छा घरबार मेरे सभी संबंधियों के खयाल से भी दूर की चीज था.

रूढिवादी ननद थीं.

सच पूछिए तो पिछले चार दिनों में मैं एक बार भी उन की याद नहीं आई थी. मैं पिछले दिनों अपनी एक सहेली के यहां गई थी. पूरा एक महीना उस की देवरानी उस के घर रह कर गई थी. एक मेरी ननद थीं, जिन के चेहरे पर जवान भाई के मरने पर शिकन तक नहीं आई थी.

जब मैं 10 बरस पहले आकाश के साथ इस घर में घुसी थी तो गुलाब के फूलों का गुलदस्ता हमारे लिए पहले से इंतजार कर रहा था. उसे ननद ने भेजा था. आकाश ने मुझ को घर की चाबी थमा दी थी. लेकिन मुझे ताला खोलते हुए लगा था जैसे ननद वहां पहले से ही विराजमान हों.

घर क्या था, जैसे किसी राजकुमार की स्वप्न नगरी थी. मुझ को तो सब कुछ विरासत में ही मिला था. भले ही वह सब आकाश की चार साल की कड़ी मेहनत का इनाम था. मैं इतनी खुश थी कि मेरे पैर जमीन पर नहीं पड़ रहे थे. मेरे सब संबंधियों में इतना अच्छा घरबार उन के खयाल से भी दूर की चीज थी.

मैं ने गुलाब के फूल बैठक में सजा लिए.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोशन

तुम्हीं से है रोशन
चराग़े दिल
वरना खो जाते कब के हम तो
स्याह अंधेरों में.
—अरविंद केवलानी

मगर दीदी का शुक्रिया तो क्या अदा करती, उन की रसीद तक नहीं पहुंचाई. दोचार दिन बाद उन का फोन आया तो कह दिया, "हां, मिल तो गए थे."

एक बार दीदी शुरू में सपरिवार आई थीं. वह रात को नौ बजे पहुंचने वाली थीं. भला इतनी रात गए तक कौन उन लोगों के लिए इंतजार करता. मैं ने आठ बजे ही खाना लगा दिया था. आकाश कुछ बोलते, मैं ने इस से पहले ही सुना कर कह दिया, "नौ बजे आने के लिए कहा है. फिर भी क्या भरोसा, कब तक आएं? आप खाना खा लो."

वह न चाहते हुए भी खाने बैठ गए थे.

अभी खाना खत्म भी नहीं हुआ था कि दरवाजे की घंटी बजी. मैं बोली, "अब खाना खाते हुए तो मत उठो. पहले खाना खत्म कर लो. फिर दरवाजा खोलना."

खाना खा कर आकाश दरवाजा खोलने गए. मैं बरतन मांजने लगी. उधर न पहुंची तो 15 मिनट बाद ही दीदी रसोई में आ गईं और नमस्ते कर के लौट गईं. मैं ने उन सब का खाना लगा दिया.

दीदी ने हम से भी खाने को पूछा. फिर बोलीं, "इस देश में खाने की कमी नहीं है. हर चौराहे पर मिलता है. साथ न खाना था तो कह देते, हम खा कर आते."

तो क्या मैं ने कहा था कि यहां आ क
खाएं या उन को किसी डाक्टर ने सलाह दी
थी? मैं ने सिर दर्द का बहाना बनाया औ
ऊपर शयन कक्ष में चली गई. खुद ही निबट
अपने भाई जान से.

सुबह उठी तो दीदी चाय बना रही थीं
" क्या खालाजी का घर समझ रखा है, जो
पूछने की भी जरूरत न समझी?" मैं ने दीदी
को लताड़ा, "आप ने क्या समझा था कि
आप को उठ कर चाय भी नहीं दूंगी."

मेरी रसोई को अपनी रसोई समझा था
उस के बाद कभी दीदी को मेरी रसोई में घुसने
की हिम्मत न हुई.

मैं ने दीदी को नहानेधोने के लिए दो
तौलिए दिए तो वह दो बच्चों के लिए और
मांग बैठीं. अपने घर में चार तौलिए इस्तेमाल
करें या आठ, यहां एक दिन दो तौलियों से काम
नहीं चला सकती थीं? मैं ने एक पुराना सा
तौलिया और दे दिया. आखिर मेरा घर है, जो
चाहूंगी करूंगी.

उस के बावजूद कुछ ही दिनों बाद दीदी
अचानक दोनों बच्चों के साथ मेरे यहां आ
धमकीं. रात को देर तक आकाश से बात
करती रही थीं. वह पति महोदय से खटपट
कर के आई थीं. मैं पूछ बैठी, "आप ने तो
अपनी इच्छा से प्रेम विवाह किया था. फिर
अब किस बात का रोना?"

दीदी से कुछ जवाब न देते बना.

मैं तो घबरा गई. कहीं दीदी जिंदगी भर
मेरे घर डेरा न डाल लें. अगली सुबह आकाश
दफ्तर गए और मैं सोती दीदी के पास
पहुंच गई, "दीदी, वापस लौटने के बारे में क्या
सोचा है?"

समझदार को इशारा काफी है. उन्हों
हमारे घर रह पति महोदय से बिलकुल बात
बढ़ाई. उसी दिन जीजाजी को फोन किया और
शाम को वापस अपने घर लौट गईं. बस
समझ लीजिए तभी से उन का हमारे यहां
आनाजाना कुछ खास नहीं रहा. हम ही उन
यहां साल में दोतीन दिन के लिए ही जा
थे.जाते भी क्यों न, वह बड़े आग्रह से बुलाती
जो थीं. बुलाती भी क्यों न, आखिर उन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पति से कम ही पटती थी. हम से भी नाता तोड़ लेतीं तो आड़े वक्त में कहां जातीं? कौन काम आता?

और फिर उन पर क्या जोर पड़ता था हमें बुलाने में. उन्होंने खाना बनाने को एक विधवा फुफेरी सास को साथ रखा हुआ था. घर की सफाई करने वाली अलग आती थी.

एक बार दीदी भारत गईं तो मेरे लिए मां ने उन के साथ कुछ सामान भेजा. जब मुझे सामान मिला तो उस में से एक कटहल के अचार का डब्बा गायब था. "दीदी, अचार चाहिए था तो आप कह देतीं, मैं आप के लिए भी मंगा देती. चोरी करना तो बहुत बुरी बात है."

बाद में मां ने बताया कि अचार का डब्बा भेजने से रह गया था. बात आईगई हो चुकी थी. तो मैं ने फिर दीदी से कुछ कहने की जरूरत न समझी.

अभी पिछले दिनों दीदी फिर भारत गई थीं. उन्होंने लौट कर फोन किया, "लता, तुम्हारे मांबाबूजी से मिल कर आ रही हूं. सब मजे में हैं. मगर तुम्हारे लिए कुछ नहीं भेजा है."

"हां, मैं ने ही मां को मना कर दिया था कि हर ऐरेगैरे के हाथ कुछ न भेजा करें. फिर भी मां किसी न किसी के हाथों सामान भेजती रहती हैं. एक पार्सल तो पिछले आठ बरस से आ रहा है.एक छः महीने बाद मिला था."

खैर, जो हुआ सो हुआ. लेकिन मुझ को अकेले नींद नहीं आ रही थी. रात के दो बज गए थे. एक तरफ आंसू नहीं थम रहे थे और दूसरी तरफ डर भी लग रहा था इतने बड़े घर में.भूख लग रही थी मगर... मैं अकेली थी... बिलकुल अकेली. शरीर टूट सा रहा था.

मैं मां को भारत ट्रंककाल करने लगी, मां, आप कुछ दिनों के लिए अमरीका आ जाइए. मैं आप का टिकट भेज देती हूं."

मां अपनी मजबूरी सुनाने लगीं विरासत. में मिला सुख कुछ भी तो काम नहीं आ रहा था. पति के मरते ही कुछ भी अपना न रहा था दस बरस बाद भी उस घर में न तो कोई अपनापन था, न ही देश में.

आकाश एक लाख डालर छोड़ कर मरे थे. मैं एअर इंडिया को फोन करने लगी, "मैं वापस भारत जाना चाहती हूं. अपने घर."

भारत लौट कर पीहर पहुंची तो वहां कुछ और ही नजारा पाया. भाई की शादी हो चुकी थी. सो एक कमरा भाईभाभी का और दूसरे में मेरे मांबाबूजी. मेरा बैठक में सोने का प्रबंध कर दिया था. मेरा सामान मां के साथ. सुबह बिस्तर समेटते ऐसा लगता था, जैसे उस घर में मैं फालतू थी. मैं ने सोचा, "सहना शुरू किया तो जिंदगी भर सहती ही रहूंगी. ऐसी कोई गईगुजरी स्थिति मेरी भी नहीं है. आखिर 10 लाख रुपए ले कर लौटी हूं. चाहूं तो इन चारों को खरीद लूं."

एक दिन भाभी जान फरमाने लगीं, "दीदी, पूरी तलवाने में मदद कर दो न, मैं बेलती जाती हूं."

आखिर भाभी ने मुझे समझ क्या रखा था, मैं नौकरानी बन कर आई थी क्या वहां? इतना पैसा था मेरे पास कि 10 नौकर रख देती. लेकिन बात बढ़ाने से क्या फायदा था. मैं कुछ भी न बोली थी. मदद नहीं करनी थी, सो नहीं की.

खाना खाने के वक्त भाभी ने अपना खाना परोसा और खाने लगीं. मैं ने भी ले तो लिया, मगर यह बात मेरे मन को चुभ गई. जब मांबाबूजी ही सब बातों में चुप लगाए थे तो भाभी तो मेरी छाती पर मूंग दलेंगी ही.

मैं ने कहा, "मेरे आने का तुम लोगों को इतना कष्ट हो रहा है तो मैं वापस चली जाती हूं. मेरे पास जितना पैसा है, मैं उतने में जिंदगीभर मजे से रहूंगी – न किसी से कहना, न सुनना."

कोई कुछ भी न बोला. मैं सन्नाटे में रह गई. मैं सपने में भी नहीं सोच सकती थी कि मेरे मांबाबूजी ही इतने बेगाने हो जाएंगे. फिर ससुराल से ही क्या आशा करती.

घर छोड़ते हुए मेरे आंसू टपक पड़े. मैं फिर अकेली हो गई थी – बिलकुल अकेली. बिलकुल धोबी का कुत्ता बन कर रह गई – न घर की न घाट की. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

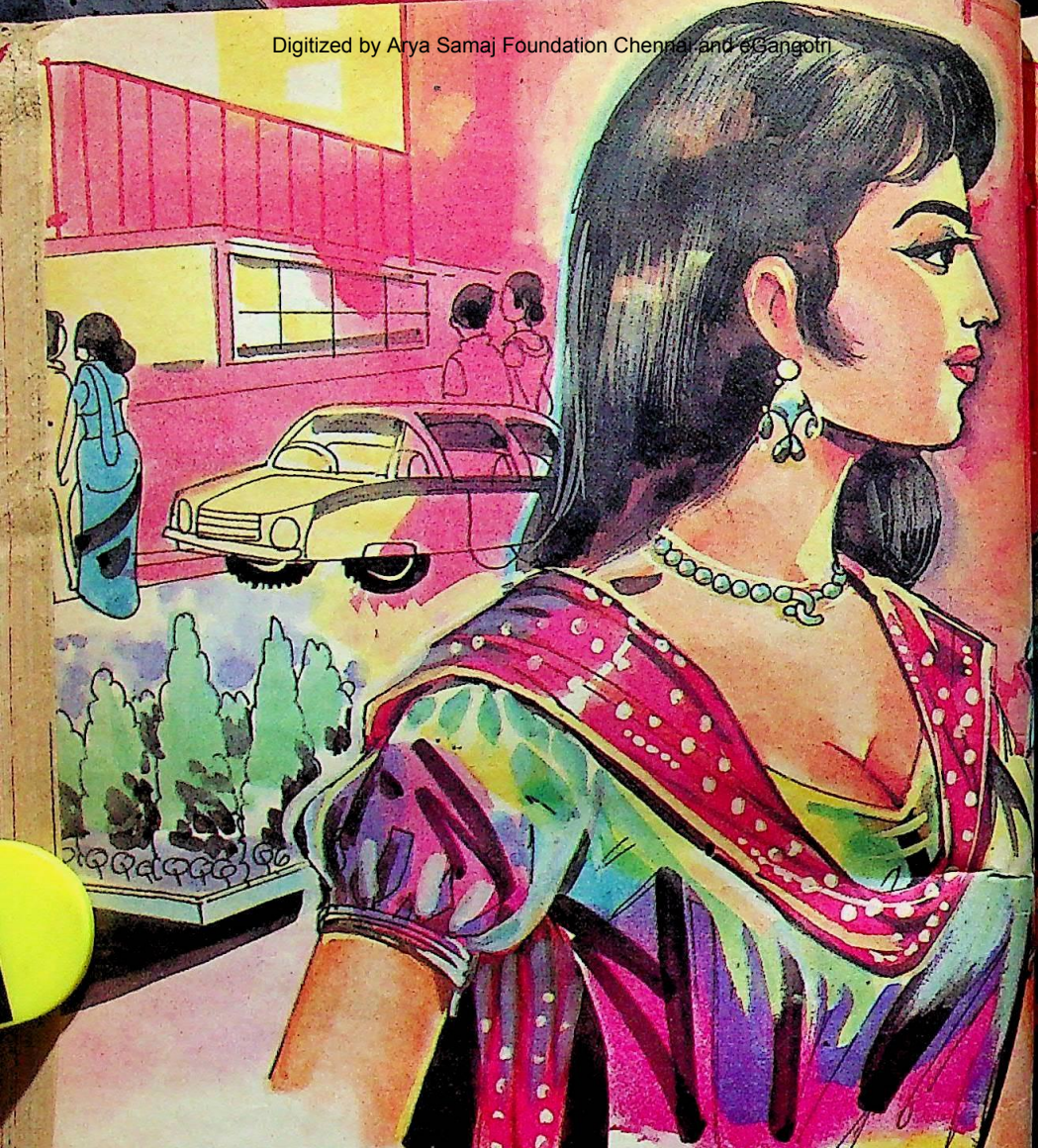

पत्रों का जाल

कहानी • गुलजार राजस्थानी

ज्योतिका की सलाइयां बहुत तेजी से चल रही थीं. शायद उस ने तय कर लिया था कि वह हाथ के स्वेटर को उसी दिन पूरा कर देगी. उस ने आंखों पर जो ऐनक लगा रखी थी, वह इस बात की निशानी थी कि उस की दूरनजदीक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"दीपी, मैं सामने की दुकान पर जा कर चीजें देखती हूं तब तक तू उस गुजराती लड़के से बात कर ले," मां बोली.

दोनों तरह की नजरें कमजोर हो चुकी थीं. पर बढ़ती उम्र के विपरीत उस के सिर के बाल अब भी काले थे. स्वेटर बुनतेबुनते उस की निगाहें बारबार कलाई घड़ी पर चली जाती थीं. कभीकभी वह बैठक के भीतर के दरवाजे की तरफ भी देख लेती थी.

आखिरकार वह एक लंबी सांस ले कर पुकारने लगी, "दीपी...दीपी...जल्दी करो, भई. क्या आज कालिज नहीं चलना है. नौ बज चुके हैं. ड्राइवर क्लिनिक से कार ले कर आता ही होगा."

पत्र मित्रता की शौकीन दीपिका के लिए उस का एक पत्र-मित्र मनमोहन जब मुसीबत बन उठा और किसी भी तरह अपनी हरकतों से बाज नहीं आया तो उसे सबक सिखाने के लिए दीपिका के मातापिता ने कौन सी योजना तैयार की?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"बस, मां, मैं तैयार हूं." ज्योतिका की 21 वर्षीया बेटी दीपिका ने भीतर ही से जवाब दिया. फिर दरवाजे से निकलती हुई बोली, "बस, लंच बाक्स बनाना है. आप का भी बना दूं?"

"मैं ने अपना टिफिन तैयार कर लिया है. तुम अपना बना लो."

दीपिका पलटना चाहती थी कि दरवाजे की घंटी बज उठी. ज्योतिका ने अंदर जाती दीपिका को टोका, "जरा, देख तो कौन है?"

दीपिका ने दरवाजा खोल कर बाहर झांका. सामने एक सुदर्शन नवयुवक को खड़ा देख कर वह ठिठक गई. नवागंतुक ने अभिवादन में हाथ जोड़े तो दीपिका को पूछना पड़ा, "फरमाइए, किस से मिलना है?"

"कुमारी दीपिकाजी से," आगंतुक ने दीपिका के सवाल का जवाब दिया. फिर अपना परिचय देते हुए बोला, "मेरा नाम गुलशनकुमार है. मैं दिल्ली से आया हूं. मैं दीपिकाजी का पत्र मित्र हूं."

"ओह, लगता है, आप बिन बुलाए आ गए." दीपिका समझ गई कि गुलशन ने उसे नहीं पहचाना था. इसलिए उस ने झट से बात बनाई, "वरना आप को पता होता कि दीपिका पत्र मित्रों से केवल पत्रों में ही मिलना पसंद करती है. बदतमीजी के लिए मुझे क्षमा कीजिएगा. आप जा सकते हैं. बिन बुलाए मेहमानों का यहां स्वागत नहीं होता."

दीपिका गुलशन के जवाब की प्रतीक्षा किए बिना अंदर आ गई और दरवाजा भीतर से बंद कर दिया.

उस का तमतमाया चेहरा देख कर ज्योतिका ने हाथ रोकते हुए हैरानी से पूछ लिया, "क्या हुआ? कौन था?"

"वही पत्र मित्र, महाशय. मुसीबत बन गई है यह पत्र मित्रता तो मेरे लिए," दीपिका भीतर जाते हुए खीजी, "मैं ने 16 वर्ष की उम्र में सिर्फ किशोरकिशोरियों की एक पत्रिका में पत्र मित्र बनाने के लिए नाम,पता, शौक इत्यादि छपवाए थे. फिर किसी पत्रिका को पत्र मित्रता के लिए नामपता भेजने की भूल नहीं की थी. मगर उसी पत्रिका से ले कर अन्य भाषाओं की पत्रिकाओं में अभी तक सारे विवरण के साथ पत्र मित्रता के लिए मेरा नामपता प्रकाशित किया जा रहा है. कैसा दुरुपयोग है. इस तरह कोई न कोई आए दिन ऊंट की तरह मुंह उठा कर यहां टपक पड़ता है. समझ में नहीं आता कि इन से कैसे पीछा छुड़ाऊं?"

दीपिका तो अपना टिफिन बनाने रसोई में चली गई पर ज्योतिका के माथे पर चिंता की रेखाएं उभर आईं. दीपिका की समस्या उस की अपनी समस्या थी. वह उस पर जितना विचार करती थी, समस्या उतनी ही उलझती जा रही थी. परेशानी में और भी तेजी से हाथ चलाने लगी. वह उस समय अपना ध्यान उस समस्या की ओर से हटा लेना चाहती थी मगर लाख चाहने पर भी सफल न हो सकी.

ज्योतिका की कल्पना में बरबस ही पिछले दिन की एक घटना चलचित्र के समान उभर आई. उस घटना ने ज्योतिका को पहली बार एहसास कराया था कि दीपिका किस मकड़ी की तरह अपने पत्रों के जाल में खुद ही उलझती जा रही है. ज्योतिका बहुत गहरे तक हिल कर रह गई थी.

उस दिन इतवार था. ज्योतिका दीपिका को साथ ले कर खरीदारी के लिए बड़ा बाजार के लिए रवाना हो गई थी. दीपिका के पिता डाक्टर असितकुमार का क्लिनिक भी इतवार के दिन शाम को बंद रहता था. उस के भाई अजयकुमार का फुटबाल मैच रद्द हो जाने पर वह भी खरीदारी के लिए उन के साथ हो लिया था. कार असितकुमार खुद चला रहे थे. अजय उन की बगल की सीट पर बैठा था.

ज्योति ने घर से रवाना होते वक्त ही महसूस कर लिया था कि बालीगंज से ही एक गुजराती लड़का मोटरसाइकिल पर उन की कार का पीछा कर रहा था. कभी वह कार से आगे निकल जाता था, कभी पीछे रह जाता था. पहले तो ज्योतिका ने उसे संयोग समझा पर जब उस ने अपनी बगल में बैठी दीपिका को बेचैनी से पहलू बदलबदल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

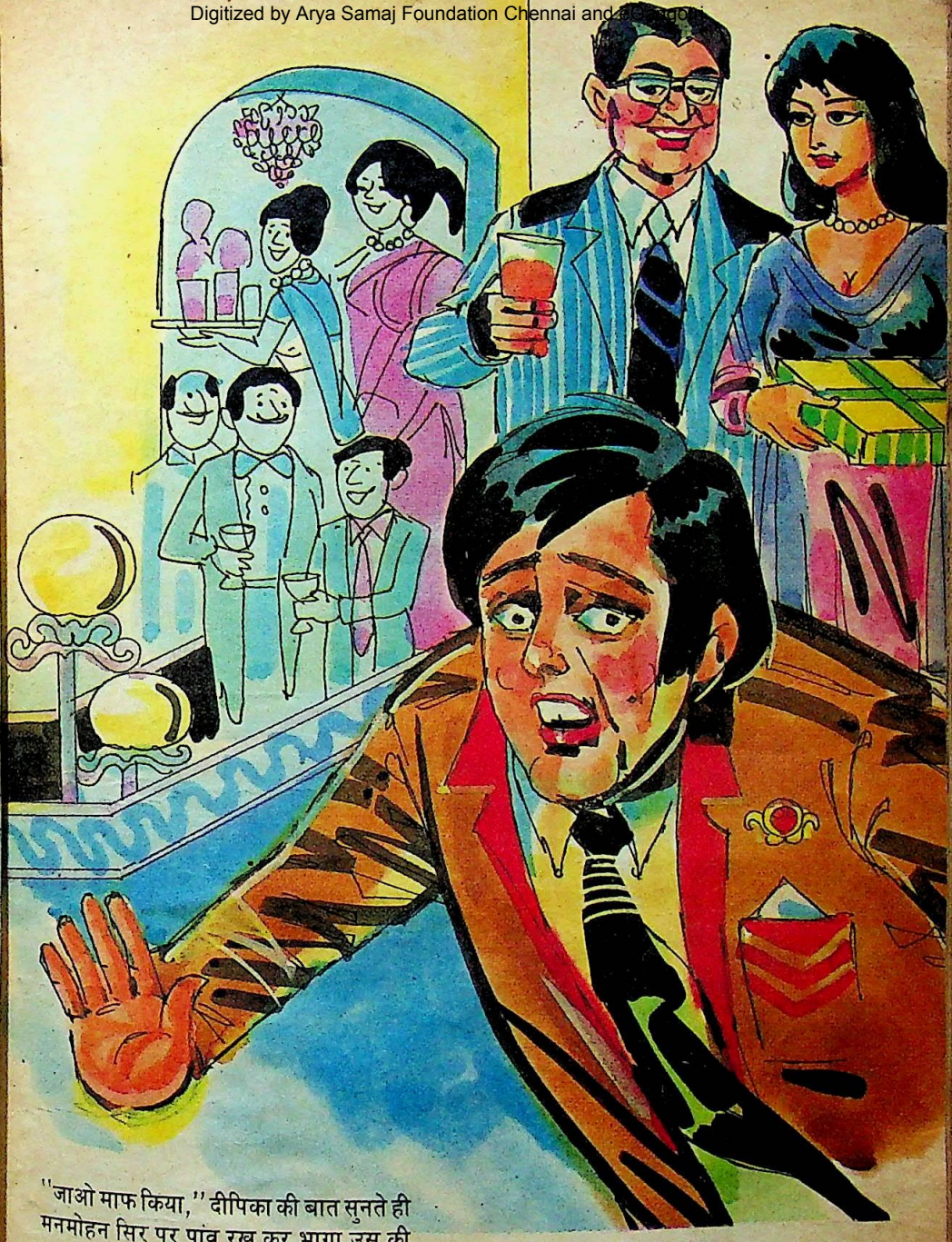

"जाओ माफ किया," दीपिका की बात सुनते ही मनमोहन सिर पर पांव रख कर भागा. उस की यह दशा देख कर सारे मेहमान हंस पड़े.

उस लड़के को बारबार कनखियों से देखते हुए अनुभव किया तो दबी जबान से पूछ ही लिया, "क्या बात है, दीपी? तू इतनी हताश और बौखलाई हुई क्यों है?"

"कुछ नहीं, मां" दीपिका को जवाब देते न बन पड़ा, "ऐसे ही."

"ऐसे ही क्यों? इतनी ठंडक में भी तुझे पसीने आ रहे हैं. कुछ तो बात है. कौन है यह गुजराती लड़का? मैं देख रही हूं कि यह घर से हमारा पीछा कर रहा है. क्या तू उसे जानती है?"

दीपिका पहले तो चुप रही. मगर फिर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्योतिका के धीरज बंधाने और प्रोत्साहन देने पर उस ने कानाफूसी करते हुए सचाई बता दी थी, "हां, मां, मैं इस नौजवान को जानती हूं. यह कलकत्ता का ही है. दो वर्ष पहले इस से मेरी पत्र मित्रता शुरू हुई थी. अब तक कुल छःसात चिट्ठियां और कई बधाई पत्रों का आदानप्रदान हो चुका है. पर पत्रों के अलावा भी इस ने मुझ से फोन पर अनेक बार कई बहानों से संपर्क बनाने की कोशिश कीं. हालांकि मैं ने अपने पत्र में इसे स्पष्ट रूप से जता दिया था कि मैं किसी पत्र मित्र, विशेष रूप से लड़कों से फोन पर बातचीत करना या व्यक्तिगत रूप से मिलनाजुलना कतई पसंद नहीं करूंगी.

"फिर भी यह बाज नहीं आया. इस पर मैं ने एक दिन नाराज हो कर इसे फोन पर घुड़क दिया. साथ ही कठोरता से चेतावनी देते हुए बता दिया कि मैं ने पत्र मित्रता समाप्त कर दी है. अब मैं न तो उसे पत्र लिखूंगी न ही फोन का जवाब दूंगी. बेहतर होगा कि वह आइंदा फोन न करे, वरना नतीजा खराब होगा.

"बस, मां, उस दिन से यह मेरे पीछे लग गया है. रास्ते में रोक कर बातें करने की कोशिश करता है. मगर मैं मौका नहीं देती."

"कितना गलत मतलब ले लेते हैं ये भारतीय लड़के पत्र मित्रता का. विदेशों में ऐसा नहीं है. भारत में भी अधिकांश कुलीन व समझदार लड़के पत्र मित्रता की मर्यादा को समझते हैं. पत्र मित्रता का अर्थ है, केवल पत्र द्वारा भेंट करना या बातचीत करना. अगर व्यक्तिगत रूप से मिलना या बात करना संभव हो, चाहे फोन पर ही, तो पत्र मित्रता का कोई अर्थ व महत्त्व नहीं रह जाता. पत्र मित्रता का सच्चा आनंद तो इसी में है कि जो भी संपर्क बनाना हो, वह पत्रों द्वारा ही बनाया जाए, चाहे पत्र मित्र उस का जवाब दे या न दे. किसी भी दशा में व्यक्तिगत रूप से हरगिज भेंट न की जाए."

"हां, मां, मैं ने ये सब बातें गुजराती लड़के और दूसरे व्यक्तिगत रूप से मिलने के इच्छुक लड़कों को पत्रों में समझा दी हैं."

दीपिका ने लज्जा से सिर झुका कर कहा, "इस पर भी कुछ सिरफिरे और गैरजिम्मेदार लड़के घर तक पहुंच जाते हैं. ऐसे में मुझे आप लोगों से बड़ी शरमिंदगी महसूस होती है. गुस्सा भी आता है."

"शर्म तो आनी ही चाहिए. पर अपने गुस्से पर काबू रखना चाहिए तुम्हें. गुस्सा इनसान का सब से बड़ा दुश्मन है. इनसान की अक्ल इस का भोजन होती है. वैसे भी गुस्सा करने से तो यह समस्या हल होगी नहीं."

"फिर?" दीपिका बहुत दुखी थी.

ज्योतिका कोई जवाब देती, उस से पहले ही कार रुक गई. डाक्टर असित ने पीछे मुड़ कर उन लोगों को संबोधित किया, "तुम लोग यहीं उतर जाओ. हम कार पार्किंग में खड़ी कर के आते हैं."

ज्योतिका दीपिका को साथ ले कर उतर गई. कार पार्किंग की दिशा में बढ़ गई. उस ने कनखियों से देखा कि गुजराती लड़के ने भी अपनी मोटरसाइकिल एक बैंक के सामने खड़ी कर के ताला लगा दिया था.

ज्योतिका दीपिका को साथ ले कर बढ़ती हुई बोली, "तू ऐसा कर, दीपी, मैं सामने की दुकानों पर चीजें देखती हूं. तू जा कर उस गुजराती लड़के से बात कर ले. शायद उसे जिद हो. तेरे एक बार बात कर लेने से वह शांत हो कर बैठ जाए. यों इस का सार्वजनिक स्थानों पर तेरा पीछा करना ठीक नहीं है. उस से एक बार प्रार्थना कर के देख ले."

दीपिका को बड़ा संकोच हो रहा था. मगर ज्योतिका के ऊंचनीच समझाने से वह उसे छोड़ कर उस लड़के से बातचीत करने चली गई थी.

ज्योतिका एक एंपोरियम में घुस गई थी. मगर शीशे के पार्टीशन से उन दोनों पर नजर रखे हुए थी.

दीपिका उस लड़के से बड़ी विनम्रता एवं शिष्टता से पेश आई थी. पर ज्योतिका ने देखा कि वह क्षुब्ध हो कर जल्दी ही लौट आई.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्योतिका भी एंबुलैंस ले कर आई.

दीपिका ने ज्योतिका को पास आने पर बताया, "वह नहीं मानता, मां. कहता है कि मैं उस से मिलती रहूं, फोन पर उस की बातों का जवाब दूं. वरना वह यों ही मुझे परेशान करता रहेगा और घर और कालिज के आसपास मंडराता रहेगा."

"इस का मतलब है कि वह तुम्हारी गतिविधियों से भलीभांति परिचित है?"

"हां, मां." दीपिका रोंआसी हो गई, "मैं भी उसे चेहरे से नहीं जानती थी. मगर आसपास मंडराते देख कर ही मैं ने पहचाना कि यही फोन वाला मनमोहन है."

"अरी, यह मनमोहन वही लड़का तो नहीं, जो हमारे तमाम सगेसंबंधियों के फोन नंबर जाने किस चालाकी से जान गया है. आएदिन उन्हें फोन कर के तेरे बारे में तरहतरह के प्रश्न पूछा करता है. उन्हें तेरे विषय में झूठीसच्ची बातें सुनाता रहता है."

"हां, मां." दीपिका का सिर अपराधियों की तरह झुक गया, "वह अजनबी युवक यही मनमोहन है." इस बीच डाक्टर असित और अजय उन्हें खोजते हुए वहां पहुंच गए थे. ज्योतिका ने महसूस किया था कि उस के बाद मनमोहन ने उन का पीछा नहीं किया था.

"चलो, मां," दीपिका की आवाज ने ज्योतिका की विचारशृंखला भंग कर दी थी. उस ने चौंक कर देखा कि दीपिका कालिज के लिए तैयार हो कर खड़ी है. दीपिका ने आगे कहा, "ड्राइवर कार ले आया है."

ज्योतिका ने कार में कालिज जाते हुए देखा कि मनमोहन अपनी मोटरसाइकिल पर उन का पीछा कर रहा था. दीपिका उस की इस हरकत पर झेंपीझेंपी सी सिर झुकाए बैठी थी. उस की आंखों से हताशा टपक रही थी.

ज्योतिका की आंखों से भी गहरी चिंता झांकने लगी. कालिज में भी सारा दिन मनमोहन को ले कर उस के दिलदिमाग उलझे रहे. वह अपने व्याख्यानों के दौरान अनेक बार अटकी थी.

रफ्तार

लगता है थम गई है
रफ्तार-ए-जिंदगी,
यूं खो गए हैं हमतुम
ख्वाबों में बेतरह.

—'अदा' देहलवी

उस रात को क्लिनिक से डाक्टर असित लौटे, तब उन्हें भोजन कराते हुए ज्योतिका ने दीपिका की समस्या उन के सामने खोल कर रख दी. वह आखिर में बोली, "इस प्रकार वह मनमोहन पत्र मित्रता का अनुचित लाभ उठाना चाहता है. वह दीपिका को आज ब्लैकमेल कर के फोन पर बात करने और व्यक्तिगत रूप से मुलाकातें करने के लिए दबाव डाल रहा है—कल कुछ और करने पर भी मजबूर कर सकता है. मेरे मन को तो तरहतरह की आशंकाएं डस रही हैं."

"श्रीमती आचार्याजी," असित ने भोजन समाप्त कर के मेज से उठते हुए गंभीर स्वर में कहा, "जब आज से पांचछः वर्ष पूर्व आप ने दीपिका को पत्र मित्रता की प्रेरणा दी थी और दूसरों के सामने एक अच्छा उदाहरण रखने की कोशिश की थी, मैं ने तभी आप को इन आशंकाओं से वाकिफ करा दिया था. मैं मानता हूं कि पत्र मित्रता के बड़े लाभ हैं. इस से बच्चों में आत्मविश्वास बढ़ता है, व्यक्तित्व का बहुमुखी विकास होता है, ज्ञानजिज्ञासा बढ़ती है, उस की अंतर्राष्ट्रीय एकता की भावनाओं को प्रोत्साहन मिलता है—सब से बड़ी बात यह कि वे अपने देश और समाज इत्यादि के विषय ही में जानकारी का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आदानप्रदान नहीं करते, बल्कि उपहारों के लेनदेन द्वारा एकदूसरे की जरूरत भी पूरी करते हैं और संग्रहों आदि में मूल्यवान बढ़ोतरी करते हैं. इसी तरह अभ्यास और अनुसरण करतेकरते वे बहुत कुछ सीख जाते हैं.

"पत्र मित्रता अनेक बार प्यार में बदल कर उन्हें अच्छा जीवनसाथी भी बना देती है. पर मैं ने यह भी तो बताया था कि अभी भी भारतीय समाज इस के लिए अनुकूल नहीं है. हमारे यहां लड़कियों पर बहुत सी पाबंदियां हैं. अब भी यहां ऐसे संकीर्ण विचारों के लोग मौजूद हैं, जो जवान होने पर भी लड़की का लड़कों को पत्र मित्र बनाना अच्छी निगाहों से नहीं देखते हैं. मैं ने यह भी बताया था कि यहां के लड़कों की मानसिकता विदेशी लड़कों की अपेक्षा इस मामले में बड़ी अपरिपक्व एवं दूषित है. मनमोहन उसी का प्रमाण है."

"वह तो ठीक है." ज्योतिका जूठे बरतन समेटती हुई बोली, "लेकिन अब हम क्या करें? यह लड़का तो गले ही पड़ गया है. ढीठ भी अव्वल दरजे का है."

"ठीक है," असित उठते हुए विनोद भाव से बोले, "तुम तो बड़े उदार विचारों की हो. जब तुम दीपी को पत्र मित्रता जैसा महंगा और खर्चीला शौक करा सकती हो तो उसे इन मित्रों से घुलमिल कर अपनी जानपहचान वालों का दायरा भी बढ़ाने दो.

"हो सकता है कि मनमोहन से मित्रता रोमांस में बदल जाए. शायद लड़का योग्य हो और दीपिका उस से शादी का फैसला कर ले. एक दिन दीपिका की शादी तो करनी ही होगी हमें!"

"जी नहीं", ज्योतिका गंभीर हो गई. वह असित के पीछेपीछे बैठक में आ कर बैठ गई, "बेशक मैं अंतर्जातीय विवाह के पक्ष में हूं. मगर शिक्षा के दौरान प्यारमुहब्बत जैसी बातों के सख्त खिलाफ हूं. हर काम का एक वक्त होता है.

"फिर आप ने यह कैसे समझ लिया कि जो लड़का पत्र मित्रता के लायक नहीं है वह व्यक्तिगत दोस्ती के योग्य होगा. उस ने अपनी योग्यता अभी से सिद्ध कर दी है. वह सज्जन नहीं है, बल्कि दुर्जन है और अपराधी मनोवृत्ति का है. गुंडों की तरह उसे मिलने या फोन पर बातें करने पर मजबूर करता है.

"इस के अलावा दीपिका उसे कतई पसंद नहीं करती है, बल्कि उस के इन अशोभनीय कृत्यों से उस से घृणा करने लगी है. उसे घर पर निमंत्रित करने अथवा दोस्ती करने का प्रश्न ही नहीं उठता."

"फिर तुम क्या चाहती हो?" डाक्टर असित गंभीर हो गए.

"अपनी बेटी का पीछा छुड़ाना चाहती हूं उस गलत लड़के से."

"दो रास्ते हैं. या तो उसे कुछ गुंडों से पिटवा देते हैं या पुलिस में रिपोर्ट कर के अंदर करा देते हैं?" असित ने व्यंग्य और उपहास मिली आवाज में कहा, "क्यों, ठीक रहेगा?"

"यों तो मेरी बच्ची बदनाम हो

धातु प्रौद्योगिकी में सौर उर्जा

उर्जा के गैरपारंपरिक स्रोतों में सौर शक्ति का महत्त्व बढ़ता जा रहा है. रूस की उकेरेनियन विज्ञान अकादमी ने धातुओं को वेल्ड करने के लिए एक उन्नत किस्म का सौर संयंत्र तैयार किया है.

इस संयंत्र में सौर किरणों को दो मीटर वाले परावलय दर्पण के एक पूर्व निर्धारित कोण पर कई गुणा क्षमता से सकेंद्रित एवं निर्देशित कर के इस के किरणबिंदु पर 3,500 डिगरी सेंटीग्रेड तक की उष्मा उत्पन्न की जा सकती है. यह उष्मा धातु को गलाने के लिए ही नहीं, बल्कि उस के वाष्पीकरण के लिए भी पर्याप्त है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मेरा रंगरूप तो बस, एक ही है न!

तभी तो साधारण साबुन मेरे लिए किसी काम का नहीं. मुझे तो भरोसा है केवल लक्स पर."

श्रीदेवी

"कोई-सी भी भूमिका क्यों न निभाऊँ, अपने रंगरूप की हिफ़ाज़त पर मैं हमेशा ख़ास ध्यान देती हूं. और इसके लिए मुझे भरोसा है तो बस, लक्स पर. इसका शुद्ध, सौम्य झाग मेरे रंगरूप के लिए सचमुच वरदान है."

शुद्ध, सौम्य लक्स—फ़िल्मी सितारों का सौंदर्य साबुन.

HTA 1402

हिन्दुस्तान लीवर लिमिटेड का एक उत्कृष्ट उत्पादन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न्याय

यदि न्यायकर्ता स्वार्थ और अपनत्व में अपने सिद्धांतों को विस्मृत कर के अनुचित न्याय करते हैं, तो वे भी बड़े अपराधी हैं. –यादवेंद्रनाथ शर्मा 'चंद्र'

जाएगी. वह दुष्ट पहले ही मेरी दीपिका को सगेसंबंधियों में चर्चा का विषय बनाए हुए हैं.''ज्योतिका घबरा कर बोली, ''कोई ऐसा उपाय कीजिए न कि सांप भी मर जाए और लाठी भी न टूटे.''

''यही तो हमारी विडंबना है. हम समाज को बदलना चाहते हैं और समाज से डरते भी हैं. पुरानी रूढ़ियों को त्याग कर नए मूल्यों को अपनाना भी चाहते हैं और जर्जर आदर्शों से भी चिपके रहना चाहते हैं. हमारे सड़ेगले समाज के लोग तो दीपिका पर ही उंगली उठाएंगे शायद उस लफंगे को कोई दोष नहीं देगा.'' असित गंभीर हो कर बोले, ''खैर, दीपिका का जन्म दिन कब का है?''

''अगले सोमवार ही को.''

''बस, इस बार मनमोहन का फोन आए तो तुम उसे सम्मानपूर्वक दीपिका के जन्मदिन पर निमंत्रित कर लेना.''

''यह क्या कह रहे हैं, आप?'' ज्योतिका हैरानी और दुख से असित को घूरने लगी. ''आप होश में तो हैं?''

इस के जवाब में असित धीरेधीरे ज्योतिका को अपनी योजना समझाने लगे. आखिर में बोले, ''इस तरह सगेसंबंधियों में जो बदनामी है वह समाप्त हो जाएगी. मनमोहन दोस्त नहीं तो दुश्मन भी नहीं रहेगा. पर दीपिका को कुछ पता नहीं चलना चाहिए.''

जन्मदिन पर दीपिका की सहेलियां और दोस्त तो आए ही थे. डाक्टर असित और ज्योतिका ने अपनी जानपहचान वालों और सगेसंबंधियों को भी इकट्ठा कर लिया था. पर जब दीपिका ने मेहमानों के साथ मनमोहन को भी शानदार सूट पहने हाथों में उपहार लिए हाल में प्रवेश करते देखा तो चौंक पड़ी, ''इसे किस ने बुलाया?''

''मैं ने,'' पास खड़ी ज्योतिका ने दीपिका को समझाया, ''इस के स्वागतसत्कार में कमी न रहे. यह हमारा खास मेहमान है.''

ज्योतिका ने खुद बढ़ कर मनमोहन का स्वागत किया. द्विविधा में पड़ी दीपिका भी ज्योतिका का अनुसरण करने लगी.

डाक्टर असित ने जन्मदिन का केक कटने से पहले तमाम मेहमानों को संबोधित करते हुए मनमोहन से उन का परिचय कराया, ''दोस्तो, यह हैं हमारे आज के आयोजन के विशिष्ट अतिथि जनाब मनमोहन. आप दो वर्षों से दीपिका के पत्र मित्र हैं. अब जबतब दीपिका को फोन करते रहते हैं. दीपिका जहां जाती है, यह छाया की तरह उस का पीछा करते रहते हैं. यही वह अजनबी युवक है जो हमारे संबंधियों को तरहतरह से फोन कर के दीपिका की याद दिलाते रहते हैं.''

यह सुन कर मनमोहन का चेहरा पीला पड़ गया. उसे ऐसा ही लगा जैसे डाक्टर असित एकएक कर के उस के बदन पर से कपड़े उतार रहे थे. डर और दहशत से कुछ देर के लिए उस के होश ही जाते रहे. फिर जब वह संभला तो उस ने सुना कि डाक्टर असित कह रहे थे, ''मैं ने ये सारी बातें इन के मांबाप से मिल कर उन्हें बताई थीं. उन्होंने मुझे अधिकार दिया है कि मैं जैसा उचित समझूं, इन के साथ व्यवहार करूं. अब मैं यह बात आप पर छोड़ता हूं. बताइए, इस के साथ कैसा बरताव किया जाए?''

मेहमानों में कानाफूसी होने लगी. सब की आंखों से गुस्से और नफरत की ज्वाला फूट रही थी. देखते ही देखते पार्टी में हंगामा सा खड़ा हो गया था. फिर एकाएक शोर उठा. ''इस का मुंह काला कर के गधे की सवारी कराओ.''

''इतने जूते मारो कि आने वाली नस्लें भी गंजी पैदा हों.''

''अजी, हाथपांव तोड़ दो ताकि पत्र मित्रता कर ही न सके.''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पुलिस में दे दो—छेड़छाड़ के अपराध में!"

जितने मुंह उतनी बातें.

मनमोहन पहले ही सहमासिकुड़ा एक कोने में खड़ा था और डर के मारे थरथर कांप रहा था. मेहमान धीरेधीरे चारों तरफ से उसे घेरे में लेते जा रहे थे. उन की आंखों से शोले निकल रहे थे. मनमोहन की घिग्घी बंध गई.

ऐसे में दीपिका ने सारे नाटक को समझते हुए जोर से कहा, "मेरे विचार से अंडरवियर के सिवा इन के सारे कपड़े उतार कर इन्हें घर भेज देना चाहिए, ताकि यह फिर कभी नंगापन न दिखा सकें और दूसरों को नंगा करने की कोशिश कर के उन की इज्जत से खिलवाड़ न कर सकें."

"नहीं," मनमोहन भयत्रस्त हो कर रोने लगा और हाथपांव जोड़ने लगा, "मुझे क्षमा कर दीजिए. मैं फिर कभी ऐसा नहीं करूंगा. किसी से पत्र मित्रता नहीं करूंगा.. कभी नहीं करूंगा.."

"क्षमा कर दो, दीपिका," डाक्टर असित ने आदेशयुक्त स्वर में दीपिका को इशारा करते हुए कहा, "क्षमा से बढ़ कर कोई दंड नहीं होता. अपने पत्रों के जाल में यह खुद ही उलझ गया."

"जाओ, माफ किया," दीपिका के कहते ही मनमोहन वहां से सिर पर पांव रख कर भागा.

पार्टी में गगनभेदी ठहाके गूंजने लगे. दीपिका भी हंसने लगी. पर उस की आंखें भीगती जा रही थीं. वह सोच रही थी, 'काश, मनमोहन पत्र मित्रता का दुरुपयोग न करता तो वह अभी कुछ और साल उस की अच्छी दोस्त रहती.' ●

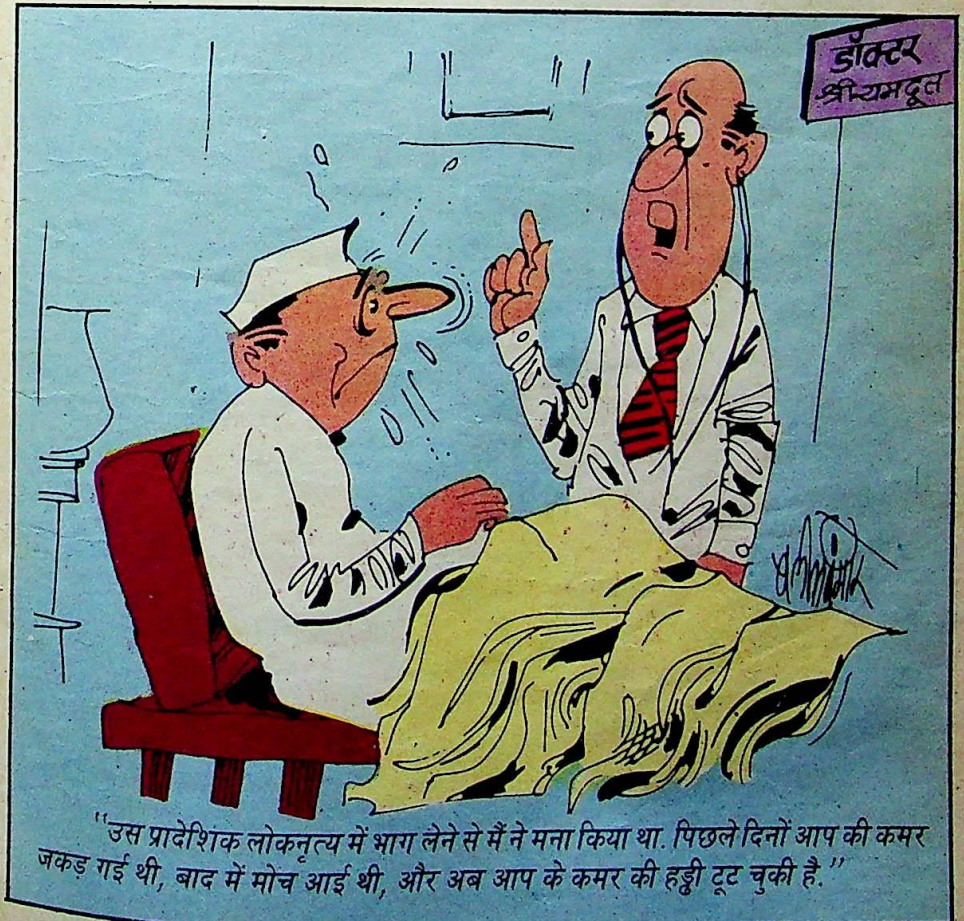

"उस प्रादेशिक लोकनृत्य में भाग लेने से मैं ने मना किया था. पिछले दिनों आप की कमर जकड़ गई थी, बाद में मोच आई थी, और अब आप के कमर की हड्डी टूट चुकी है."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

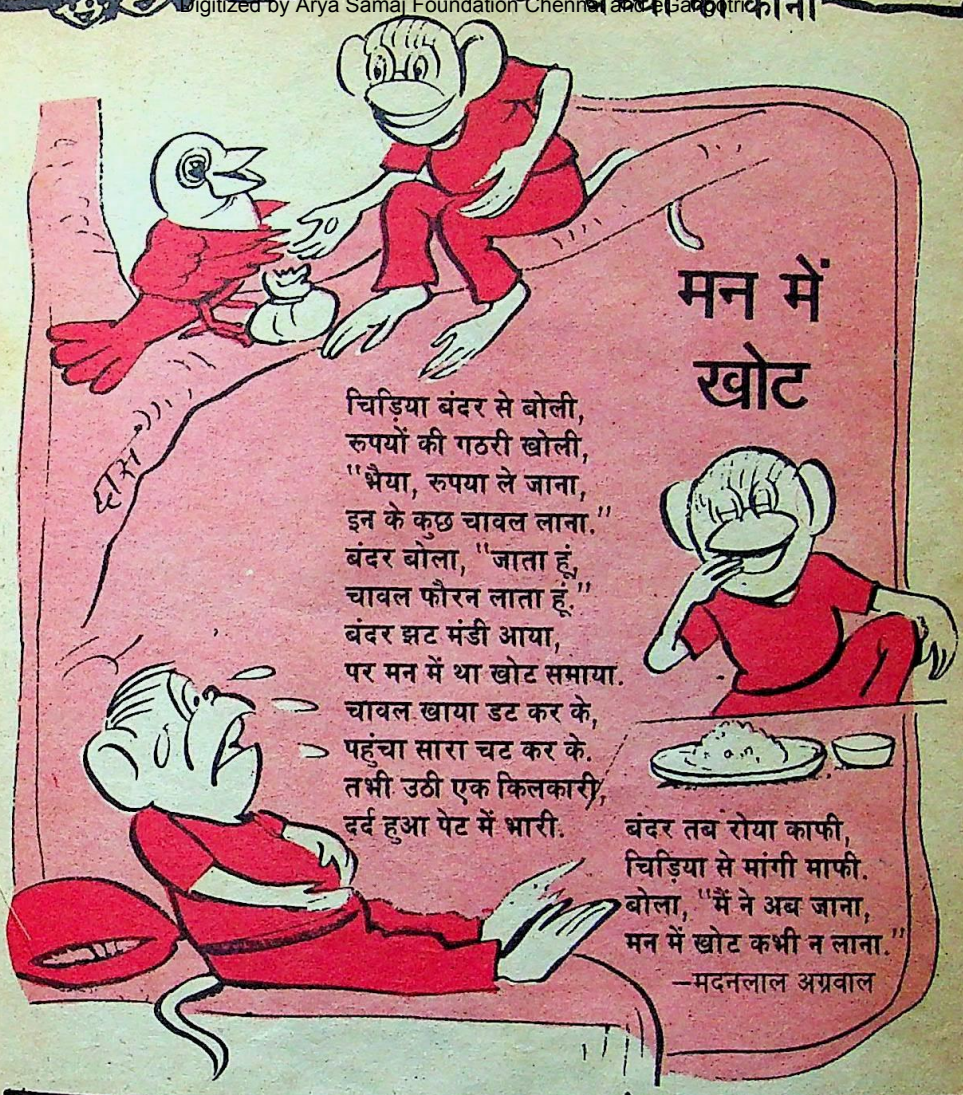

मन में खोट

चिड़िया बंदर से बोली,
रुपयों की गठरी खोली,
"भैया, रुपया ले जाना,
इन के कुछ चावल लाना."
बंदर बोला, "जाता हूं,
चावल फौरन लाता हूं."
बंदर झट मंडी आया,
पर मन में था खोट समाया.
चावल खाया डट कर के,
पहुंचा सारा चट कर के.
तभी उठी एक किलकारी,
दर्द हुआ पेट में भारी.

बंदर तब रोया काफी,
चिड़िया से मांगी माफी.
बोला, "मैं ने अब जाना,
मन में खोट कभी न लाना."

—मदनलाल अग्रवाल

एक से 25 तक बिंदु मिलाकर चित्र बनाओ.

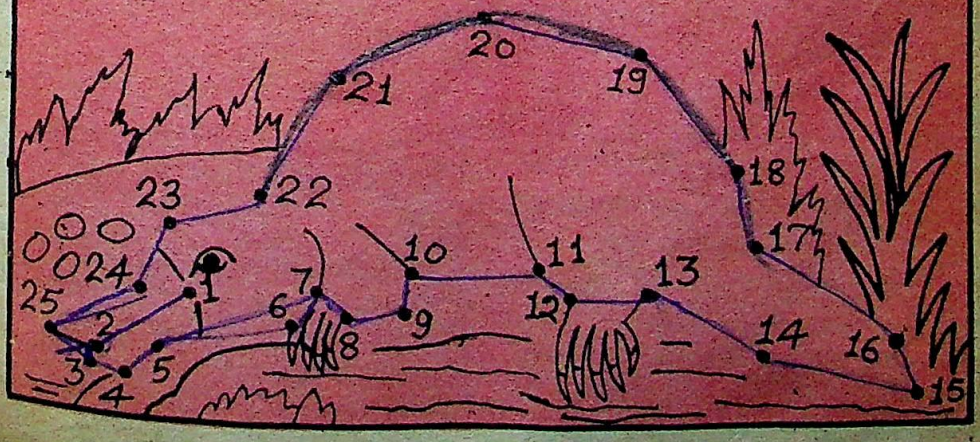

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ये पति

एक बार मुझे अपने मायके अपनी चचेरी बहन की शादी में जाना था. बहन की शादी में कौन सा उपहार दूं, समझ में नहीं आ रहा था. मैं ने अपने पति और उन के दोस्तों से सुझाव मांगा कि 250 रुपए तक की कोई ऐसी वस्तु बताइए जो देखने में बड़ी लगे.

पति के दोस्तों ने कई वस्तुओं के नाम बताए पर मुझे कोई भी पसंद नहीं आया. इस पर मेरे पति जो काफी देर से मेरी असहमति और नापसंदगी सुन रहे थे, मुसकरा कर बोले, "ऐसा करो 250 रुपए का भूसा खरीद लो. वह बड़ा और ज्यादा दिखेगा."

इतना सुनते ही मैं बुरी तरह झेंप गई और वे सभी ठहाका लगा कर हंस दिए.

—ज्योत्स्ना कोठारी

*

मेरी सहेली के पति क्रोधी स्वभाव के हैं. वह सहेली से अकसर झगड़ते रहते हैं. घर में तनाव रहने से मेरी सहेली अकसर बीमार रहती है.

डाक्टर ने उसे खून की कमी दूर करने के लिए कुछ दवाएं खाने की सलाह दी. मेरी सहेली ने यह बात पति को बताई.

यह सुन कर उस के पति बोले, "खून बढ़ाने के लिए दवा की क्या जरूरत है? मेरा खून ही पी जाओ." बेचारी पत्नी हतप्रभ सी उन का चेहरा देखती रह गई.

—वंदना सिंह

*

मेरे भैया की हाल ही में शादी हुई है. उन की पत्नी तुनकमिजाज है. वह बातबात में उन की गलतियां निकालती रहती हैं.

एक बार हम सब आंगन में बैठे बातें कर रहे थे. अचानक एक चूहा पास से गुजरा. भैया डर कर पलंग पर चढ़ गए. भाभी हंसते हुए बोलीं, "भला चूहों से भी कोई डरता है, मुझे देखो मैं तो बिलकुल भी नहीं डरती."

उन की इस बात पर भैया तपाक से बोले, "तुम ने अपने मायके में चूहे, तिलचट्टों के अलावा देखा ही क्या है?"

यह सुन कर हम सब ठहाका मार कर हंस पड़े. उस समय भाभी की सूरत देखने लायक थी. उस दिन के बाद उन की तुनकमिजाजी की आदत छूट गई.

—विनय असावा

*

मेरे एक मित्र पहली बार ससुराल गए थे. एक दिन वह छत पर बैठ कर बांसुरी बजाने लगे. तभी उन की पत्नी अपनी कुछ सहेलियों के साथ वहां पहुंची और बोली, "अब बांसुरी बजाने की कोई जरूरत नहीं है क्योंकि इतनी गोपियां तो आप के पास आ गई हैं."

लेकिन मित्र अपनी धुन में लगे रहे. जब सहेलियों ने यह बात फिर दोहराई तो उन्होंने कहा,

"हम ने तो अपनी बांसुरी को बांसुरी समझ कर बजाया था, पर लगता है इस में से जो धुन निकली, वह बीन की थी. तभी..."

इतना सुनते ही सहेलियां खिलखिला कर हंस पड़ीं, परंतु मित्र की पत्नी लालपीली हो कर नीचे चली गई.

—शंकर राडवेल

इस स्तंभ के लिए अपने तथा अपने संबंधियों के अनुभव भेजिए. प्रत्येक प्रकाशित अनुभव पर 30 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. अपने अनुभव इस पते पर भेजें. संपादकीय विभाग, सरिता, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आप की पत्नी चिड़चिड़ी क्यों है?

लेख • मंजु नागोरी

"चाय बना रही हो क्या?"

"क्या सारे दिन चायचाय लगा रखी है. अभी नहीं बनाती मैं चायवाय. यहां सुबह से खटतेखटते दोपहर होने को आई, पर तुम हो कि बैठेबैठे हुक्म ही चला रहे हो. अरे, छुट्टी का दिन है तो क्या नहाओगे, निबटोगे नहीं?"

"चाय बना देतीं तो निबट भी लेता." पति पत्नी की बदमिजाजी व चिढ़े स्वर को सहता हुआ कुछ अनमना सा हो उठा.

"अच्छा चलो उठो, ये चोंचले छोड़ो,"

बड़बड़ाती त्योरियां चढ़ाती पत्नी कमर में साड़ी का फेंटा कस कर लड़ाई की सी मुद्रा में झाड़ू पटकते हुए बोली तो पति 'कौन इस के मुंह लगे' सोच कर तौलिया ले कर स्नानघर में घुस तो गया, पर पत्नी की बड़बड़ाहट कभी धीमे कभी तेज उस के कानों में पड़ कर उसे भी खीज से भर रही थी.

ऐसा ही दृश्य प्रायः हर घर में सुबहशाम देखने को मिल जाता है. काम के बोझ, बच्चों की जिम्मेदारी से परेशान पत्नी काम तो समेटती है पर चिढ़ती हुई सी, झींकती हुई सी, मानो वह कोई बोझ जबरन उठा रही हो. क्यों अच्छीभली स्त्री घुटन व क्रोध को पहले अंदर ही अंदर पीती रहती है पर बाद में धीरेधीरे जैसे नारी सुलभ मर्यादा, संयम, शालीनता भूल कर सारे दिन जराजरा सी बात पर कभी बच्चों पर तो कभी नौकरों पर खीजती रहती है, चिड़चिड़ाती है. मानो मन की तमाम कड़वाहट शब्दों में घोल कर दूसरों के सामने रख देगी? कोई क्या सोचेगा, उसे इस की कुछ परवाह नहीं रहती.

पत्नी की चिड़चिड़ाहट पर उपेक्षा दर्शाने के बजाए उस की वजह तलाशिए.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नारी को त्याग व सहनशीलता की मूर्ति कहा गया है. कटु बोलना, ऊंचा बोलना उसे नहीं सिखाया जाता. और तो और, उस का मन, उस का विवेक उसे इस बात की इजाजत नहीं देता कि वह पति से जबान लड़ाए या उस की बात काटे. फिर क्या कारण है कि समर्पिता पत्नी अपने मन व जबान में इतनी कड़वाहट बसा लेती है कि सुनने वाले आश्चर्य में पड़ जाएं? कई बार बड़ी से बड़ी मुसीबत में, तनावपूर्ण वातावरण में भी सहज भाव से जी लेने वाली नारी छोटी सी बात का बतंगड़ बना कर कलहक्लेश मचा देती है. आखिर क्यों?

पति को पत्नी का मन टटोल कर यह तो जानना ही चाहिए कि आखिर उस की बदजबानी, चिड़चिड़ाहट, माथे की त्योरियां या अनमनेपन का कारण क्या है. ऐसी कौन सी

पति के सुखदुख की हिस्सेदार बन कर उस की प्रत्येक परेशानी व जरूरत का पूरापूरा ध्यान रखने वाली पत्नी के शादी के कुछ ही वर्षों बाद चिड़चिड़े हो जाने में क्या काफी हद तक पति ही दोषी नहीं?

शिकायतें उस ने अंदर ही अंदर पाल ली हैं कि उस का मन भारी और व्यथित हो उठा है और वह जराजरा सी बात पर चिढ़ जाती है? हो सकता है कि पति पत्नी पर घर, बाहर व मेहमानों की सब जिम्मेदारी छोड़ कर निश्चित हो जाता हो और उधर बेचारी पत्नी चकरघिन्नी की तरह घर, बच्चों व आएगयों का बंदोबस्त करतेकरते लस्तपस्त हो गई हो. परिणामस्वरूप उस का अच्छाभला स्वभाव भी रूखा व चिड़चिड़ा हो जाएगा. ऐसे में पति भी बैठेबैठे चाय बनाने का हुक्म दागे तो पत्नी के सब्र का बांध टूट जाना स्वाभाविक ही है और वह घायल शेरनी सी झपटे तो कोई असंभव बात नहीं है.

यदि ऐसे में पत्नी पर पड़े अतिरिक्त काम के बोझ व जिम्मेदारी को समझ कर पति पत्नी से सहानुभूति के दो बोल ही बोल दे या केवल इतना ही कह दे कि बहुत थक गई हो, चलो थोड़ा आराम कर लो, मेरे पास बैठो या चाय बना लाओ, दोनों पिएंगे तो पत्नी को थकावट दूर होती हुई महसूस होगी और उस का क्लांत शरीर व मन जरा राहत पाएगा. वह पति की सहानुभूति पा कर संतुष्ट हो जाएगी. उसे लगेगा कि पति को उस का कितना खयाल है.

एक परिचित परिवार में छुट्टियों में जब भी घर ननदों व बच्चों से भर जाता है तो पति जबतब पत्नी को सहानुभूति या प्रशंसा के दो शब्द कह कर उस का मन हलका कर देता है. कहता है, "लाओ, मेरे लायक कोई काम हो तो बता दो" या "बाजार जा रहा हूं, कुछ मंगवाना तो नहीं?" बस इतने भर से ही पत्नी खुश हो जाती है.

कई बार पतियों की लापरवाही, पत्नी को जरा भी आराम का वक्त न देना पत्नी को खिजा देता है. उसे लगता है कि सब मौजमस्ती कर रहे हैं, एक मैं पागल सी इन के धंधों में उलझी हुई हूं.

एकरसता जीवन को बोझिल बना देती है जबकि थोड़ाबहुत परिवर्तन ही मन का अवसाद खत्म कर नया उत्साह भर देता है. पत्नी के साथ कभीकभार घूमने जाना पत्नी को घरेलू दिनचर्या की बंधीबंधाई लीक से हटाता है. उसे ऊब से मुक्ति मिलती है व घर से बाहर निकलने से मन हलका हो जाता है. घुटन, कुढ़न, खीज सब हवा हो जाती है और मन का तनाव दूर हो जाता है.

कई पति जराजरा सी बात या गलती के कारण पत्नी पर तीखे व्यंग्य बाणों की बौछार शुरू कर देते हैं. इस से व्यर्थ का विवाद खड़ा हो जाता है. पति खुद तो मन की भड़ास निकाल कर घर से बाहर दफ्तर या काम पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चल देते हैं और उधर भावुक हृदय पत्नी घर में पूरा दिन क्लेश व तनाव में बिताती है. पत्नी की गलती को उसे समझा कर सुधारने की कोशिश करना ज्यादा सही कदम है, क्योंकि इस से पत्नी को अपनी भूल महसूस होगी और वह उस के लिए पश्चात्ताप करेगी, ठंडे दिमाग से सोचेगी व गलती दूर करने का प्रयास भी करेगी. पर यदि बारबार उसे हर छोटीछोटी बात पर झिड़की सहनी पड़े तो बहुत संभव है कि वह झुंझलाहट व बौखलाहट में भर कर जबानदराजी करे या फिर उस समय तो चुप हो जाए पर बाद में अपना क्रोध नौकरों, बच्चों पर चिड़चिड़ा कर निकाले और घर की शांति भी भंग करे. अपना और घर वालों का सुखचैन भी मिटाए.

कई बार पति का गुस्सैल स्वभाव पत्नी की सहनशक्ति समाप्त कर देता है. पत्नी को हर काम करते समय भय सा बना रहता है कि जाने कब किस बात पर डांट पड़ जाए. फलतः उस का आत्मविश्वास खत्म हो जाता है. वह पति के होते हुए भी अपने को असुरक्षित महसूस करती है और अशांत मन किसी को क्या देगा सिवा खीज के?

पति का पक्षपाती व्यवहार भी पत्नी को चिड़चिड़ा बना देता है. जब वह देखती है कि उस की भूल न होने पर भी पति अपनी मांबहनों के सामने उसे नीचा दिखा रहा है, तानेउलाहने दे रहा है तो उस का मन बेचैन हो उठता है. पति द्वारा बारबार बेवजह अपमानित व तिरस्कृत पत्नी झुंझलाएगी, बातबात पर चिढ़ेगी, कटु वचन भी बोलेगी.

पति जब यह देखे कि अच्छीभली पत्नी चिढ़ कर बोलती है, बुरा व्यवहार करती है तो उसे गंभीरता से, सहानुभूति से उस का

पत्नी को अपने धैर्य व प्रेम का सहारा दीजिए. क्या मजाल, जो चिड़चिड़ापन उस के आस पास भी फटक जाए. ▲

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिलकुल मेल खाती!

बढ़िया लेस से सजी ब्रा और पैंटी मनमोहक व आकर्षक फूलों वाले नमूनों में एकदम आप के नाप के अनुसार बनीं बढ़िया क्वालिटी, उत्तम फिटिंग और लाजवाब कारीगरी ही इन की पहचान है. ब्राइडल फोर्म ब्रा और पैंटी पहनिए और दिन भर महिलोचित आनंद का अनुभव कीजिए.

BRIDAL FORM®

ब्रा और पैंटी उपहार योग्य आकर्षक पैकेट में उपलब्ध

निर्माता:—
के.आर. चिटनिस, 13 त्रिकमजी त्रिशा मार्ग, बंबई-400 002. फोन : 317 919
वी.पी. से भी माल मंगवा सकते हैं.
मूल्य सूची के लिए लिखिए.

कारण जानने की चेष्टा करनी चाहिए. चिढ़ने वाले को लापरवाही से छोड़ देना व 'इस की तो आदत ही है कुढ़नेमरने की, चिढ़ने दो हमें क्या,' ऐसा सोचना ठीक नहीं है. यह व्यवहार तो उसे और ज्यादा चिड़चिड़ा बनाएगा. चिढ़ने वाले को धैर्य व प्रेम से सहारा देना, समझाना, उस से सहानुभूति रखते हुए उस की समस्या का हल खोजना जरूरी है ताकि उसे यह पीड़ा न साले कि वह अकेली है, उस का कोई नहीं है. चिढ़ने का कारण ढूंढ़ कर उसे दूर करने का यत्न करना ही उचित उपाय है.

पत्नी किसी भी परिवार की सुखशांति का आधार है. वह घर की महत्त्वपूर्ण सदस्य है. वह दुखी रहे, खीजी रहे या असंतुष्ट रहे तो पूरे परिवार पर असर पड़ेगा. घर का वातावरण कटु व बोझिल बना रहेगा. पति चूंकि घर का मुखिया है अतः उसे धैर्य, सहानुभूति व समझदारी से पत्नी की खीज का कारण समझ कर उसे दूर करना चाहिए जिस से पति का सहयोग पा कर पत्नी जीवन की छोटीबड़ी अनेक दिक्कतों व परेशानियों को झेल सके. अकेली पड़ जाने पर ही वह असहाय महसूस करेगी.

वास्तव में जब अकेले इनसान पर किसी काम या जिम्मेदारी का समूचा बोझ आ पड़ता है और वह उसे संभाल नहीं पाता तो असहाय सा हो कर बेबसी में चिढ़ जाता है. शरीर व मन थका हुआ हो तो व्यक्ति चिढ़ेगा ही. ऐसे में समझदार पति पत्नी को अकेला नहीं छोड़ते, वरन उस की हर प्रकार से मदद करने की चेष्टा करते हैं. उस का मनोबल बनाए रखते हैं ताकि वह व्यर्थ अपना स्वभाव खराब न करे व जो जिम्मेदारी उस के सिर पर पड़ी है उसे निभा ले जाए. पति का सहारा पा कर वह संतुष्ट ही नहीं, हलकीफुलकी भी रह सकेगी व ज्यादा अच्छे ढंग से अपना काम बिना खीज या चिढ़ के समेट सकेगी. पति का सहारा, सहयोग, सहानुभूति व प्रोत्साहन पा कर पत्नी बड़ी से बड़ी जिम्मेदारी बखूबी निभा ले जाती है पर अकेला पड़ने पर घबरा कर हिम्मत हार जाती है और खीजने लगती है या टूट जाती है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब पेश है लिंक तालों के निर्माता की ओर से !

लिंक प्रेशर कुकर

Adfield

3, 4, 5, 6.5 लीटर में उपलब्ध

निर्माता :- लिंक लॉक्स प्रा० लि० (प्रेशर कुकर डिविज़न)
बदर बाग़ अलीगढ़-202001 (इंडिया)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जनवरी, 1988

गृहशोभा

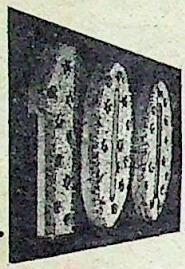

का

वां अंक

सफलता का एक नया कीर्तिमान

अक्तूबर, 1979 में गृहशोभा ने पहले ही अंक से पाठकों का स्नेह व समर्थन प्राप्त कर लिया था. लगातार सौ अंकों में इस का न केवल रूप निखरा, इस के पाठकों व प्रशंसकों की संख्या में भी अभूतपूर्व वृद्धि हुई. आज गृहशोभा महिलाओं की सब से अधिक सरस, सुंदर व संग्रहणीय पत्रिका है.

गृहशोभा ने आरंभ से ही महिलाओं के लिए अनूठी सामग्री प्रस्तुत की. गृहसज्जा, फैशन, पारिवारिक संबंध ही नहीं, महिलाओं की मानसिक आवश्यकताओं की पूर्ति करने में भी गृहशोभा अन्य पत्रिकाओं से आगे रही. गृहशोभा का 100वां अंक इसी विशिष्टता को लिए होगा.

गृहशोभा : महिलाओं की हिंदी की सर्वाधिक चहेती पत्रिका.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सावधान!

खुशियों के क्षण मातम में न बदल जाएं

लेख • सर्वेश वार्ष्णेय 'पायल'

पूरा घर 'जन्मदिन मुबारक हो' के सम्मिलित स्वरों से गूंज रहा था, तीन वर्ष की नन्ही रजनी छोटेछोटे बच्चों की मंडली में खड़ी बिलकुल गुड़िया जैसी खूबसूरत और मासूम लग रही थी. उस के गोलमटोल जिस्म पर झालरों वाला सफेद नाइलोन का फ्राक बेहद फब रहा था. पास ही खड़ी निर्मला की गर्वपूर्ण दृष्टि बारबार अपनी इकलौती व लाड़ली बेटी की ओर उठ जाती थी.

निर्मला के पति रमण आमंत्रित मेहमानों का स्वागतसत्कार करने में व्यस्त थे. सब को केक बांटने के बाद रमण और निर्मला भोजन परोसने में लग गए.

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इधर डाक्टर की लापरवाही से पटकी गई दवाइयां किसी भी हंसतीखेलती जिंदगी को मौत के करीब ले जा सकती हैं

रजनी अपने उपहारों को संभालसंभाल कर अपने कमरे में रखने लगी. उसे सब से प्यारा उपहार लगा बिजली से चलने वाली जापानी रेलगाड़ी, जो निर्मला की सब से घनिष्ठ एवं धनी सहेली पूनम ले कर आई थी.

रजनी उस रेलगाड़ी को चलाने के लिए अत्यंत आतुर थी. रेलगाड़ी के डब्बे, इंजन, पटरी सभी अलगअलग पैक थे. वह उन्हें जोड़ना नहीं जानती थी. फिर भी वह जोड़ने बैठ गई.

नादान रजनी ने गलती से बिजली के कुछ तार कैंची से काट डाले. फिर जैसे ही उस ने प्लग लगाया. उस का हाथ रेलगाड़ी पर चिपकता चला गया. वह बौखला कर चीख उठी. लेकिन पार्टी के शोरशराबे में उस की आवाज कोई नहीं सुन पाया.

काफी देर के बाद निर्मला किसी काम से रजनी के कमरे में आई तो उस का बेजान जिस्म देख कर बेहोश हो गई.

देखते ही देखते कुहराम मच गया. रमण पागलों की तरह दीवारों से सिर टकराने लगे. इस हादसे से सभी मेहमान स्तब्ध रह गए थे.

फिर सभी पूनम को कोसने लगे जो रजनी के लिए बिजली से चलने वाली रेलगाड़ी ले कर आई थी. पूनम सभी से लांछित हो कर ग्लानिवश निगाहें ऊपर नहीं उठा पा रही थी.

इसी तरह सुनीता अपने ढाई वर्षीय पुत्र गुड्डू को ले कर मायके में आई तो घर में कोई अन्य छोटा बच्चा न होने के कारण गुड्डू सब की निगाहों का तारा बनता चला गया. उसे सब से अधिक प्यारदुलार उस के नानाजी किया करते थे. गुड्डू जब भी उन की दुकान में जाता तो जिद कर के बहुत सारे सिक्के ले आया करता था.

सुनीता अपने पिता को मना भी करती थी कि वह इतने पैसे गुड्डू को दे कर उस की आदत बिगाड़ रहे हैं. पर गुड्डू के नानाजी उस की जिद देख कर सिक्के देने से इनकार नहीं कर पाते थे.

एक रात गुड्डू ने पचास पैसे का एक सिक्का अपने मुंह में डाल लिया जो गले में फंस गया. उस की आवाज बंद हो गई. आंखें बाहर निकलने लगीं. दम घुटने लगा.

घर के सभी सदस्य घबरा उठे और अपनेअपने ढंग से गुड्डू के गले में अटका हुआ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने जिन नन्हेमुन्नों की सुरक्षा के प्रति आप हर पल चिंतित रहती हैं, उन्हीं को आप की छोटीछोटी लापरवाहियां किस तरह मौत के मुंह में धकेल सकती हैं?

सिक्का निकालने की कोशिश करने लगे. पर सिक्का बाहर निकलने के स्थान पर और अंदर चला गया.

फिर कसबे के एकमात्र डाक्टर को बुलाया गया जिस ने डाक्टरी उपकरणों की सहायता से सिक्का बाहर निकालने की कोशिश की. सिक्का तो नहीं निकल पाया, लेकिन उपकरण चुभ जाने के कारण गले के अंदर कई जख्म हो गए, जिन से खून रिसने लगा.

गुड्डू की गंभीर दशा देख कर उसे शहर ले जाने की तैयारियां होने लगीं. लेकिन टैक्सी आने से पहले ही गुड्डू ने दम तोड़ दिया.

एक दंपती के इकलौते बेटे कमल ने इमली खाने के बाद खेल ही खेल में इमली की गुठली नाक में फंसा ली, जो बहुत कोशिशों पर भी बाहर नहीं निकल पाई. नाक में जख्म हो गया. एक बड़े हस्पताल में कमल की नाक का आपरेशन शुरू हुआ, पर कमल की मृत्यु आपरेशन के दौरान ही हो गई.

एक घर में छोटेछोटे बच्चे लुकाछिपी का खेल खेल रहे थे. दीपक स्टोर में रखे बड़े संदूक के अंदर छिप गया. संयोगवश झटका लगने से संदूक की कुंडी अपनेआप ही बाहर से बंद हो गई. दीपक संदूक के अंदर ही बंद रह गया और उस की मृत्यु हो गई.

एक घर में घुटनों के बल चलने वाले आठ माह के एक बच्चे ने कमरे के फर्श पर ही कोने में पड़ी चूहामार दवा की गोलियां खा डालीं और तड़पतड़प कर मर गया. उस की मृत्यु के बाद जब परिवार वालों को कारण पता लगा तो वे अपनी लापरवाही पर सिर पीटते रह गए.

इस प्रकार की जानलेवा दुर्घटनाएं अकसर मासूम बच्चों के साथ घटती रहती हैं और लोग अफसोस करते रह जाते हैं कि काश, हम उस मासूम जिंदगी को बचा पाते.

छोटे बच्चे सचमुच बड़े मासूम और भोले होते हैं. उन्हें समुचित देखभाल और चौकसी की आवश्यकता होती है. जरा सी भी लापरवाही एक बड़ी दुर्घटना को जन्म दे डालती है और एक हंसताखेलता खिलौना हमेशा के लिए खामोश हो जाता है, एक भरापूरा परिवार वीरान हो जाता है.

बच्चों को कभी भी बिजली से चलने वाले खिलौने नहीं देने चाहिए.

न कभी लोहे के जंग लगे खिलौने दिलवाएं, इन से जख्म लग कर टिटनेस हो जाने का खतरा रहता है.

कांच के खिलौने, कांच के बरतन, कैंची, चाकू, ब्लैड वगैरह भी बच्चों के हाथों में न पड़ने दें.

घर में दैनिक उपयोग में आने वाले बिजली के उपकरण जैसे मिक्सी, हीटर, स्टोव आदि को यथासंभव बच्चों की पहुंच से दूर रखने का प्रयास कीजिए.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लैंप, पंखे, इस्तिरी, चारा काटने की मशीन वगैरह छोटे बच्चों की पहुंच से दूर रखें.

चूहामार दवा की गोलियां बना कर घर में जगहजगह डालना उचित नहीं है. बेहतर उपाय यही है कि चूहामार पाउडर सूखे आटे और थोड़ी चीनी में मिला कर सूखा ही किसी गत्ते के डब्बे में डाल दें और स्टोर के कोने में भारी बक्सों और अलमारियों के नीचे ऐसे स्थानों पर रख दें, जहां बच्चों की पहुंच न हो.

गोलियां एक ही दिन में सूख कर सख्त हो जाती हैं, जबकि सूखा पाउडर काफी दिनों तक उपयोगी रहता है.

पेश हैं, छोटीछोटी दुर्घटनाओं से बच्चों को बचाने के लिए कुछ उपाय:

अगर बच्चे की आंख में तिनका या अन्य कोई वस्तु गिर गई है तो उसे आंख में उंगली डाल कर निकालने का प्रयत्न न करें. इस से आंख में नाखून चुभने का खतरा रहता है.

फौरन एक बड़े गिलास में लबालब पानी भर लें और उसे बच्चे की आंख के नजदीक ले जाएं, बच्चे से गिलास के अंदर बारबार आंख खोलने और बंद करने को कहें. इस से आंख में पड़ी वस्तु गिलास के पानी में निकल आएगी.

वरवधू ढूंढ़ने की समस्या सरिता में वैवाहिक विज्ञापन दे कर हल कीजिए

सरिता सारे भारत में समृद्ध, सजग व सुशिक्षित परिवारों में पढ़ी जाती है. इस प्रकार सरिता में वैवाहिक विज्ञापन आप को वरवधू ढूंढ़ने में बहुत सहायक सिद्ध होगा. दैनिक पत्र तो केवल अपने शहर या इलाके में पढ़े जाते हैं, लेकिन सरिता का क्षेत्र सारा भारत है. इन विज्ञापनों का शुल्क भी सरिता के पाठकों के लिए नाम मात्र रखा गया है.

विस्तृत जानकारी के लिए निम्नलिखित पते पर पत्रव्यवहार करिए :

विज्ञापन व्यवस्थापक, सरिता,
नई दिल्ली - 110055.

अगर बच्चे ने मुंह में सिक्का या अन्य वस्तु अटका ली है तो बजाए उंगली से निकालने के बच्चे को उलटियां कराने का प्रयत्न करें. इस से अटकी वस्तु बाहर निकल जाएगी. अगर सिक्का बाहर नहीं निकल पाता और बच्चे को सांस लेने में तकलीफ हो रही है तो बच्चे को कोई ठोस आहार (जैसे परांठा, रोटी इत्यादि) खिला कर पानी पिला दें, इस से गले में फंसा सिक्का आहार के साथ पेट में चला जाएगा और बच्चे की जान बच जाएगी. बाद में सिक्का मल के द्वारा बाहर निकल जाता है.

अगर बच्चे ने नाक के अंदर कुछ फंसा लिया है तो उसे तंबाकू या नसवार सुंघा कर छींकें दिलवाएं, इस से नाक में फंसी वस्तु आसानी से बाहर निकल आएगी.

अगर बच्चे के कान में कीड़ा घुस गया है या कोई वस्तु पड़ गई है तो सलाई से निकालने की कोशिश मत कीजिए. इस से कान का परदा क्षतिग्रस्त हो सकता है. फौरन सरसों का तेल गरम कर के बच्चे के कान में डालिए. फिर कुछ वक्त के बाद तेल उलटिए. कीड़ा मर कर बाहर आ जाएगा. अन्य वस्तु होगी तो वह भी तेल के साथ बाहर आ जाएगी.

अगर बच्चे ने कोई नशीली वस्तु खा ली है तो उसे नमक मिला कर नीबू का रस पिलाइए. नशा उतर जाएगा.

अगर बच्चे ने जहरीली वस्तु खा ली है तो पानी में नमक मिला कर बारबार पिलाइए और उलटियां कराने का प्रयत्न कीजिए. जरूरत पड़ने पर होशियार डाक्टर की मदद लीजिए.

अगर बच्चे ने आलपीन, सूई, कांच जैसी चुभने वाली वस्तु खा ली है तो डाक्टर के आने से पहले ही बच्चे को दूध में देसी घी मिला कर पिलाइए. बाद में सेब खिलाइए. इस से आंतों में जख्म नहीं हो पाएंगे.

बच्चों के मामले में किसी नीमहकीम की नहीं, कुशल चिकित्सक की सहायता लेनी चाहिए. दुर्घटना के वक्त घबराने की जगह पूरी सावधानी से काम लेना चाहिए.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बच्चोंके मुखसे

एक बार मैं अपने चाचाजी के साथ उन के मित्र के घर गया था. हम सभी उन के आंगन में बैठ कर नाश्ता कर रहे थे.

इतने में चाचाजी के मित्र की नज़र ऊपरी मंजिल की बालकनी पर पड़ी. वहां ऊपर वालों की 6 वर्षीया बच्ची खड़ी हो कर हमारी ओर देख रही थी. उसे इस प्रकार अपनी ओर देख कर चाचाजी के मित्र ने उस से कहा, "आओ बेटी, नीचे आ कर नाश्ता कर लो."

यह सुनते ही उस बच्ची ने बड़े भोलेपन से कहा, "मेरी मां ने दूसरों के घर जा कर खाने से मना किया है. आप नाश्ता यहीं दे जाइए." यह सुन कर हम सभी हंसे बिना नहीं रह सके.

— विकास सरीन

*

मेरे छोटे भाई की हर किसी से खाने की चीज मांगने की आदत थी. उस की यह आदत छुड़ाने के लिए एक दिन माताजी ने उस से कहा, "बेटा, ऐसे बच्चों को गंदा बच्चा कहा जाता है. तुम्हें जब कोई चीज दी जाए तो तुरंत इनकार कर दिया करो, लेकिन अगर कोई बहुत आग्रह करे तो ले लिया करो, अन्यथा लोग तुम्हें बदतमीज समझेंगे."

उसी दिन थोड़ी देर बाद वह माताजी के साथ एक पड़ोसी के घर गया. पड़ोसी जब उसे मिठाई देने लगे तो उस ने तुरंत कहा, "जब तक आप बहुत आग्रह नहीं करेंगे, तब तक मैं मिठाई नहीं लूंगा." — प्रवीरकुमार भट्टाचार्य

*

एक दिन मैं अपने जीजाजी एवं दीदी के साथ बैठा था कि मेरी 5 वर्षीया भानजी ने मुझ से कहा कि वह गाना सुनाना चाहती है. मेरे 'हां' कहने पर वह गाना सुनाने जा रही थी कि दीदी ने उसे चुप रहने को कहा. इस से वह रोंआसी हो गई.

उसे रोंआसी देख कर जीजाजी ने उस से कहा, "बेटी, तुम गाना सुनाओ, तुम्हारी मां की ऐसी की तैसी."

जीजाजी के आश्वासन पर वह अपनी तोतली भाषा में गाना गाने लगी.

"प्यार तिया है प्यार तरेंदे
दुनिया ते अब तो हम न दरेंगे,
मम्मी की ऐसी की तैसी."

— नीरज दीवान

*

मेरी 5 वर्षीया बहन को अखबार पढ़ने का बहुत शौक है. एक दिन अखबार में एक खबर छपी : 'पंजाब में सबइंस्पेक्टर सहित दो मरे.'

पढ़ कर वह मुझे दिखाते हुए बोली, "पंजाब में क्या दो ही इंस्पेक्टर हैं. यहां तो लिखा है सब इंस्पेक्टरों समेत दो मरे." उस की बात पर हम सब मुसकराए बिना न रह सके.

— उपेंद्र सिंह रावत

*

एक दिन नहाते समय मेरे पिताजी एक गीत गुनगुना रहे थे, जिस की पंक्तियां कुछ इस तरह थीं. "ए.बी.सी.डी. छोड़ो, नैनों से नैना..."

उस समय मेरी चार वर्षीया बहन भी कापी पर वही वर्णमाला लिख रही थी. गाने की पंक्तियां सुन कर वह बोली, "नहीं, ए.बी.सी.डी. छोड़ दूंगी तो अध्यापिका मारेगी नहीं?"

— अश्विनी गुप्ता ●

इस स्तंभ के लिए आप अपने बच्चों, मित्रों व संबंधियों के बच्चों के मुख से कही गई बात भेज सकते हैं. प्रत्येक प्रकाशित संस्मरण पर 30 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. अपने संस्मरण इस पते पर भेजें : संपादकीय विभाग, सरिता, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

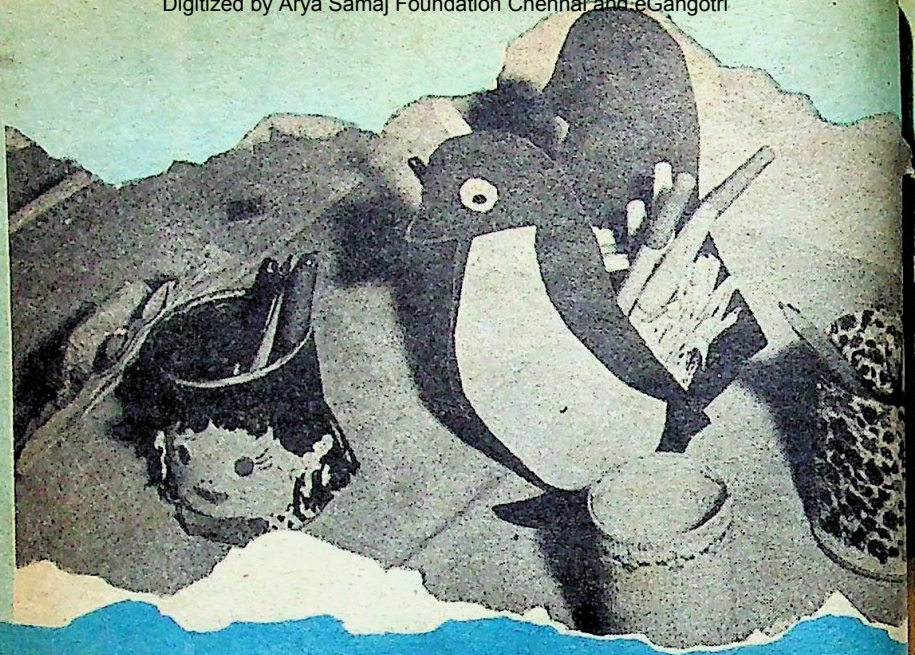

बेकार चीजें भी उपयोगी हो सकती हैं

बेकार समझ कर फेंक दी जाने वाली कई चीजें घर में रोज निकलती हैं. अपनी सूझबूझ से इन्हीं चीजों का उपयोग करते हुए हम अपने घर को कलात्मक ढंग से सजा सकते हैं.

बेकार वस्तुओं को अपनी सूझबूझ से उपयोगी बनाने के लिए किसी खास तकनीक की जरूरत नहीं होती. हां, उन्हें आप इकट्ठी करती जाएं और समय मिलते ही उन्हें कलात्मक रूप दे दें.

शैंपू की शीशियां कई आकार की होती हैं. किसी भी आकार की एक शीशी पर एक रंग का पेंट कर दें. फिर उस पर तैल रंगों से रेखाचित्र खींच दें. तूलिका का स्पर्श उस शीशी को कितना मनमोहक बना देगा यह

लेख • सरस्वती माथुर

आजमा कर देखें. तैल रंग नहीं हो तो पानी
रंगों से ही उस पर चिड़िया, फूल आदि
चित्र बना दें. शैंपू की उस शीशी में पानी भ
कर आप 'मनीप्लांट' लगा दें.

मेरी एक परिचिता ने तो बेकार समझे
जाने वाले प्लास्टिक के टुकड़ों, तेल और शैं
की शीशियों, बटनों, साबुनदानियों
तश्तरियों, प्यालों और अन्य चीजों पर चित्र
बना कर एक प्रदर्शनी लगाई. इस प्रकार उ
ने न सिर्फ अपनी पहचान बनाई है बल्कि कल
जगत के लिए साधना का नया मार्ग भी खो
दिया है. उस का कहना है कि "कई बार कचरे
में फेंक दी गई चीजें चुनचुन कर मैं ने उन पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

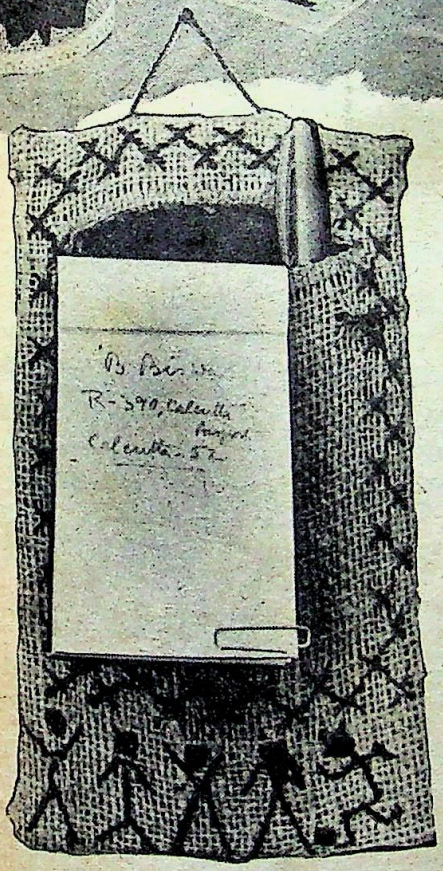

पुरानी बोरी पर ऊन की हलकीफुलकी कढ़ाई से तैयार वह वालहैंगिंग छोटीमोटी वस्तुएं रखने के लिए बेहद उपयोगी है.

चित्र बनाए हैं और वे ही आज मेरी कला निधियों में शामिल हैं."

तेल के डब्बों को ऊपर से कटवा कर बाहर से उस पर उस के आकार के अनुसार मोटे जूट या बोरी का खुरदरा कपड़ा चढ़ा कर सी लें. सुंदरता के लिए उस पर कढ़ाई कर दें या एक चित्र बना दें. लीजिए, कचरा पात्र तैयार है. इसे बच्चों के कमरे में या रसोईघर में रखा जा सकता है.

पाउडर का खाली डब्बा भी इसी प्रकार उपयोग में लाया जा सकता है. किसी मोटे कपड़े को काट कर कढ़ाई कर लें. उसे पाउडर के डब्बे पर चढ़ा कर गोंद या 'क्विक फिक्स' से अच्छी तरह चिपका दें. यह बच्चों के कमरे की मेज पर पेन, पेंसिल, रबर रखने के लिए

घर की बेकार वस्तुओं को अपनी सूझबूझ, बुद्धि तथा मेहनत के बल पर सुंदर, उपयोगी, सजावटी वस्तुओं का रूप दे कर आप भी अपने घर को कुछ और अधिक खूबसूरत, आकर्षक बना सकती हैं?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपयोगी रहेगा. इसे चाहें तो स्नानघर में टूथ पेस्ट, ब्रश आदि रखने के लिए काम में ले लें.

सिलाई के बाद कपड़े की कतरनें बच जाती हैं. इन कतरनों को आप पत्र या छोटीमोटी चीजें रखने की वाल हैंगिग बना कर उपयोग में ला सकती हैं. मिठाई के डब्बे या किसी भी साफ गत्ते या कागज को आम, सेब या हृदय अथवा किसी भी आकार में काट लें. उस पर दोहरा कपड़ा इस प्रकार चिपकाएं कि जेब सी बन जाए. चारों तरफ लेस या पाइपिन लगा दें. ऊन के पांचछः तारों को हाथ से बट कर इस की डंडी बना दें. इसी पर लटकाने वाले हुक लगा दें.

घर के बरामदे में भी इसी आकार की हैंगिग टांक कर उस में बचे हुए खाली कागज की कतरनें जोड़ कर चिपका दें. लीजिए,

कपड़ों की कतरनों, शीशों तथा माचिस की तीलियों से तैयार, यह वाल हैंगिग भी कुछ कम नहीं.

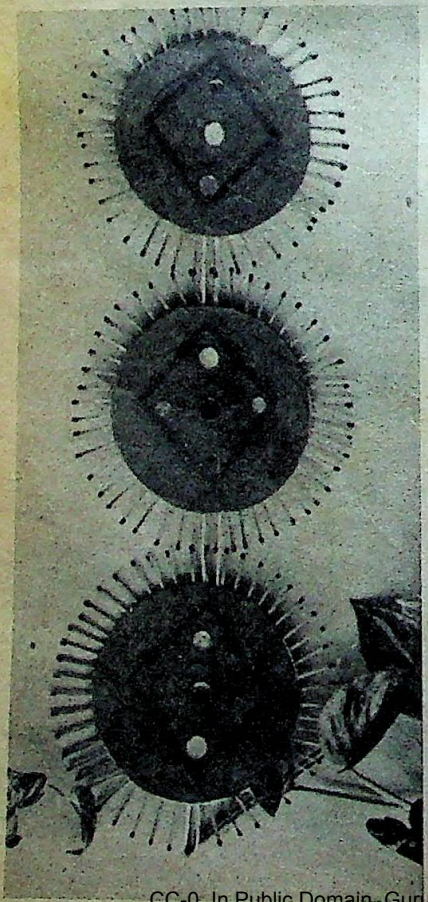

मिट्टी के बरतन को रंगों की चंद लकीरों ने अच्छेखासे फूलदान का रूप दे दिया है.

मुलाकातियों के लिए एक पुस्तिका तैयार है उस में छोटी सी पैंसिल भी रख दें. आप की अनुपस्थिति में आने वाला अपना नाम उस पर लिख जाएगा और लौटने पर आप को फौरन पता लग जाएगा कि कौन आया था.

बेकार के कैलेंडर के नंबर काट कर उन को आप एक कापी के ऊपर चिपका दें लीजिए दूध के हिसाब की डायरी तैयार है. यह काम आप टेलीविजन देखते हुए आराम से कर सकती हैं. कैलेंडर की तसवीरें भी वनस्पति घी के डब्बे के चारों तरफ लपेट कर, उस डब्बे में मिट्टी भर कर गमला बनाया जा सकता है. नीचे पानी निकालने का छेद कर लें. कैक्टस यानी नागफनी वर्ग के पौधे जिन में कम पानी की जरूरत होती है, इन गमलों में लगाएं.

चूड़ियां यदि कांच की हैं तो टूटेंगी ही. इन्हें इकट्ठी करती रहें. जब काफी हो जाएं तो किसी एक रंग के कपड़े को गत्ते पर चिपका कर 'क्विक फिक्स' से इन चूड़ियों के टुकड़ों को किसी भी चित्र की शक्ल में चिपकाती जाएं. बहुत महंगे वाल हैंगिग का यह सस्ता विकल्प है.

बैठक, सोने के कमरे, स्नानघर और रसोईघर में हम इन बेकार वस्तुओं से बनी कलाकृतियों का उपयोग कर सकते हैं. सहज सौंदर्य के साथसाथ हमें सृजन की नई दृष्टि भी प्रदान करेंगी. कला का क्षेत्र बहुत व्यापक है. उस के रूप भी भिन्न हैं. शायद हम भी उसे कोई नया रूप दे सकें.

अरि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरों की बातों में अनावश्यक रुचि क्यों?

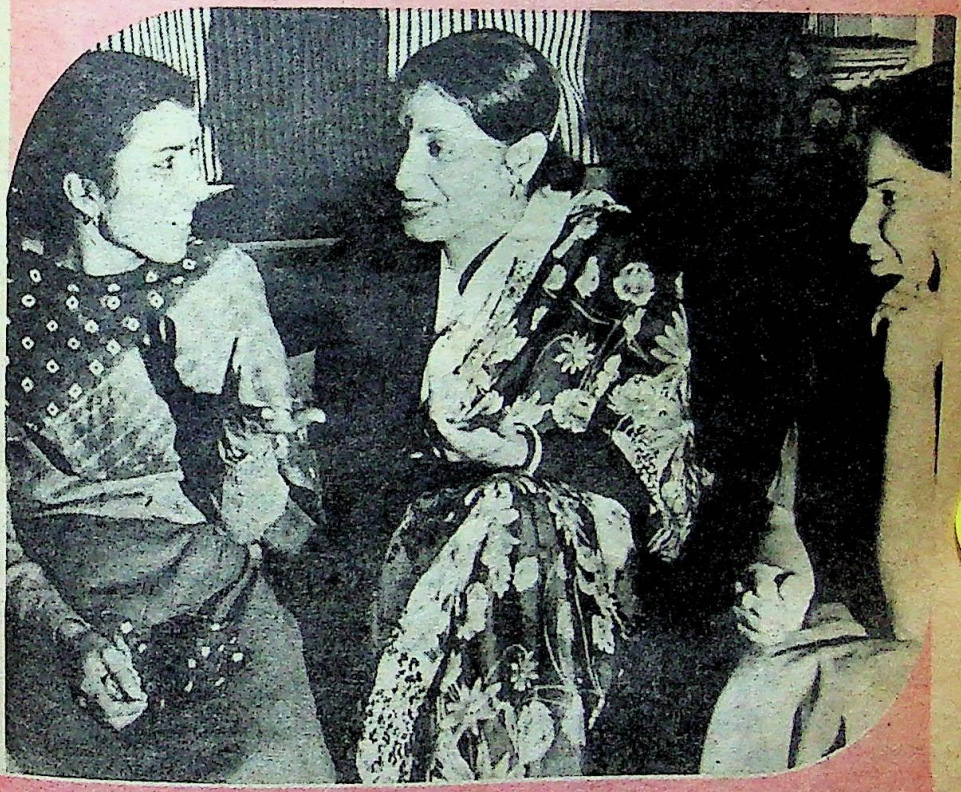

लेख • कुमुद सिंह

दूसरों की बातों में अनावश्यक रुचि लेना हर एक की कमजोरी होती है. यह एक मनोवैज्ञानिक तथ्य है. कोई भी इस कमजोरी से अछूता नहीं है. वैसे अगर देखा जाए तो महिलाएं पुरुषों से भी आगे मिलती हैं. मतलब यह कि उन में यह बीमारी कुछ अधिक होती है. दूसरों के रहनसहन, खानपान, बच्चों की पढ़ाईलिखाई, तड़कभड़क, पतिपत्नी के आपसी संबंध, सासबहू के आपसी संबंध, पति की ऊपरी कमाई में अनावश्यक रुचि प्रदर्शित करने में महिलाएं चाह कर भी अपनेआप को रोक नहीं पाती हैं.

दूसरों की बातों में अनावश्यक रुचि लेना और फिर उन बातों को बढ़ाचढ़ा कर दूसरों को सुनाना, जरा सोचिए, कितना अनुचित और गलत है. इन्हीं सब हरकतों से बात का बतंगड़ बनता है. और फिर वर्षों से बनेबनाए हमारे मधुर संबंधों में तनाव आ जाता है, दरार उत्पन्न हो जाती है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने दैनिक जीवन में हम लोग आए दिन किसी न किसी के घर शादीविवाह, मुंडन वर्षगांठ आदि अवसरों पर आयाजाया करते हैं. वहां जा कर हमारा उद्देश्य मात्र परिचितों से मिलनाजुलना, उपहार देना, आशीर्वाद देना ही होता है. पर हम लोग इतने से ही संतुष्ट होने वाले नहीं हैं. घर पहुंचने में चाहे कितनी ही देर हो जाए, बच्चे सोने की जिद करतेकरते वहीं पर सो जाएं, पर जब कुछ विशेष जानकारी (जैसे दहेज कितना दियालिया, क्याक्या उपहार आए? आदि) प्राप्त नहीं कर लेती हैं, आप वहां से चलना पसंद नहीं करती हैं क्योंकि दूसरे दिन वे सब बातें आप को नमकमिर्च लगा कर अपने पड़ोसियों को जो बतानी हैं. क्यों ठीक है. न.

देखिए, बुरा मत मानिए. वास्तविकता यही है. लेकिन आप की इस अनावश्यक रुचि के कारण ही आप के परिचित के प्रगाढ़ संबंधों में कितना अंतर आ जाता है. इस तरफ कभी ध्यान दे कर देखिए, ठंडे मन से सोचिए.

शैल ने अपने इकलौते बेटे की शादी बिना दहेज लिए ही कर ली. पर यह बात किसी के भी गले नहीं उतर रही थी क्योंकि इंजीनियर लड़के की शादी बिना लंबेचौड़े दहेज के कैसे हो सकती है. महिलाओं में इस विषय पर गुपचुप चर्चा भी हो रही थी. पर किसी ने भी सभ्य बनने की कोशिश में प्रयत्क्ष रूप से शैल से पूछना उचित नहीं समझा.

प्रतिमा और शैल का काफी घनिष्ठ परिचय था इसलिए उन से नहीं रहा गया और वह शैल के पास पहुंच गईं, "सचसच बताओ, कितना मिला है. काफी नकद मिला होगा. आखिर लड़का इंजीनियर है, कोई मजाक तो नहीं."

शैल काम की ज्यादती के कारण किसी की तरफ पूरा ध्यान तक नहीं दे पा रही थीं. ऐसे में इन बातों के लिए उन के पास समय कहां था. इसलिए झुंझलाती हुई बोलीं, "क्यों मजाक करती हो? कुछ नहीं मिला है, मैं ने मांगा ही नहीं था. जो भी मिल गया है, बहुत है. मांगना अच्छा नहीं लगता है. मैं ने तो अपने लड़के के लिए लड़की के गुणों को ही प्रमुखता दी है, जो आजीवन काम आएंगे."

लेकिन उन की इस बात को प्रतिमा मानने को तैयार नहीं थी. इसलिए उन्होंने प्रचार करना प्रारंभ कर दिया, "शैल ने अपने मुंह से तो कुछ भी नहीं कहा, पर अब मन ही मन पछता रही हैं कि मैं ने पहले ही कह दिया होता तो कुछ तो दहेज मिलता. इंजीनियर लड़का होते हुए भी कुछ नहीं ले पाई."

कुछ दिनों बाद यह बात शैल को पता चली. उन्हें सुन कर बड़ा दुख हुआ. उन्हें प्रतिमा से ऐसे अमंगल प्रचार की आशा नहीं थी. खैर, उन्होंने पूछा तो नहीं, पर प्रतिमा से बोलचाल बंद कर दी. अगर प्रतिमा उन की बातों में अनावश्यक रुचि नहीं लेतीं तो फिर आपसी संबंध क्यों खराब होते. पर नहीं, आदत से मजबूर होने के कारण वह रह ही नहीं पाईं.

ऐसे ही मेरे पड़ोस में एक वृद्धा रहती हैं. वृद्धा होने के कारण घर पर उन्हें कोई काम नहीं रहता है. इसलिए वह सुबह का खाना खा कर पड़ोसियों के यहां निकल जाती हैं. पड़ोसियों से गपशप करती हैं, इधरउधर की बातें करती हैं.

इनसानियत के नाते किसी का दुखदर्द पूछने के बजाए मात्र अपने मनोरंजन के लिए दूसरों की बातों में अनावश्यक रुचि ले कर उन का बतंगड़ बना देने का रवैया किसी वक्त आप के लिए बेहद महंगा भी पड़ सकता है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक दिन वह नईनई आई सुचित्रा के यहां पहुंच गई.

सुचित्रा उस समय बुनाई कर रही थी. वृद्धा बोली, "अरे, क्या घर का काम खत्म हो गया है, जो आराम से बैठी बुनाई कर रही हो?"

सुचित्रा ने कहा, "बूआ, आज इन का पेट गड़बड़ था. इसलिए आज खिचड़ी बना ली. अब खाली बैठी हूं."

वृद्धा ने पेट खराब होने की बात नहीं सुनी. बस, दूसरे घर में जा कर बोलीं, "यह नई पड़ोसिन तो बड़ी ही कंजूस और आलसी है. बनती बहुत अमीर है, पर खाती है रोज खिचड़ी."

उड़तेउड़ते बात सुचित्रा तक भी पहुंची. सुन कर उन्हें बड़ा गुस्सा आया. साथ ही हंसी भी. पर वृद्धा के बुढ़ापे का ध्यान रख कर उन्होंने कहा तो कुछ नहीं. पर उन्होंने वृद्धा से रूखा व्यवहार करना प्रारंभ कर दिया जिस से वृद्धा का उन के यहां आनाजाना समाप्त हो जाए.

यों देखा जाए तो बात का बतंगड़ हर जगह ही बनता है. इस के लिए कोई निश्चित समय, अवसर नहीं होता है. अकसर देखा जाता है कि छोटीछोटी बातों को ले कर बातबेबात पतिपत्नी में आए दिन ही झगड़ा होता रहता है. दोनों आपस में मुंह फुलाए रहते हैं. कोई भी झुकने को, अपनी बात मानने को तैयार नहीं होता है.

दोचार दिन बाद जब गुस्सा शांत होता है तो फिर दोनों ही पछताते हैं कि बात कुछ भी नहीं थी.

जरा सी बातें, जिन्हें पतिपत्नी थोड़ी सी समझदारी से सुलझा सकते हैं, पहाड़ का रूप धारण कर लेती हैं. इस तरह बात का बतंगड़ बनने से आपसी संबंधों में भी तनाव आ जाता है. इस का प्रभाव बच्चों पर भी पड़ता है. पर इसे कोई नहीं समझता है.

अब देखिए न, मीरा के घर से चिट्ठी आई कि उस के भैयाभाभी आ रहे हैं पति के दफ्तर से आते ही, उन्हें चिट्ठी दिखाई. उस के पति भी खुश हुए.

मीरा ने पति के साथ कार्यक्रम बनाया

पराई बातों में अनावश्यक रुचि लेने की आदत मधुर संबंधों में तनाव भी पैदा कर सकती है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि भैयाभाभी का स्वागत करने के लिए स्टेशन जाएंगे.

लेकिन उस दिन दफ्तर में अचानक काम बढ़ जाने के कारण पति ने स्वागत के लिए स्टेशन चलने में असमर्थता प्रकट की तो मीरा का मन खराब हो गया. लगी झगड़ने, "अगर अभी आप के भैयाभाभी आते तो उन्हें लेने जाने के लिए समय मिल जाता. पर मेरे घर वालों के लिए समय नहीं है."

यह कह कर मीरा रोने लगी. बस, हो गई दोनों में तनातनी.

भैयाभाभी आए, पर दोनों ही अनमने से अपनाअपना कर्तव्य पूरा करते रहे. सारा मजा ही किरकिरा हो गया था. बात का बतंगड़ बन चुका था, जिसे वे चाह कर भी नहीं रोक पाए थे.

देखा आप ने बात से ही बात निकलती है. फिर ऐसीऐसी बातें निकलती हैं, जिन का दूरदूर तक भी संबंध नहीं होता है. बाद में उन बातों को संभालना कठिन हो जाता है. हां, बात का बतंगड़ बनने से दूसरों को आनंद आता है. वे लोग चटखारे लेले कर जानपहचान वालों को बताते फिरते हैं. इसलिए जहां तक हो सके, बात का बतंगड़ न बनने दीजिए.

वैसे इस संबंध में व्यावहारिकता यही है कि कमी किस में नहीं होती है. सभी में कोई न कोई कमी अवश्य ही होती है. इसलिए हमें अपने परिचितों, मित्रों, स्वजनों, सगेसंबंधियों की किसी भी बात को कुरेदकुरेद कर जानने का प्रयास नहीं करना चाहिए. लड़ाईझगड़ा कहां नहीं होता है. इसलिए इन सब बातों से दूर ही रहना चाहिए. जो जितना बता दे, उतना सुन लें. उस से अधिक जानने का प्रयास न करें.

एक बात और है. अगर अनजाने में या विश्वास के कारण कोई आप को अपना समझ कर गंभीर बात बता दे, फिर यह आप का नैतिक कर्तव्य है कि आप उस बात को अपने तक ही सीमित रखने का प्रयास करें.

वैसे यह एक मनोवैज्ञानिक सत्य है कि महिलाएं खाली रहने के कारण इस संक्रामक रोग से अधिक ग्रसित होती हैं. जो नौकरी करती हैं उन महिलाओं के पास तो दोहरी जिम्मेदारी के कारण समय का घोर अभाव होता है और वे इस रोग से कुछ सीमा तक दूर रहती हैं. पर सभी महिलाएं तो नौकरी नहीं करती हैं. जो नौकरी नहीं करती हैं, वे ही इस रोग से पीड़ित रहती हैं. इसलिए दूसरों की बातों में अनावश्यक रुचि लेने से बचने के लिए आप अपनेआप को अधिक से अधिक व्यस्त रखने का प्रयास करें, ताकि फालतू समय ही नहीं मिल पाए.

आलोचना न करें.

किसी भी पार्टी, मुंडन, जन्मदिन, शादीविवाह आदि में जाने पर अपनेआप को कम से कम बातों में उलझाएं. अपनी तरफ से सामान्य बातें ही करें, जैसे स्वास्थ्य, मौसम, महंगाई आदि के बारे में. इन विषयों से हरएक संबंधित होता है और इन में हर एक भाग ले सकता है. परिचितों से स्वस्थ हंसीमजाक करें और उन के बारे में अन्य बातों को जानने की उत्सुकता प्रकट न करें.

जिस के घर आप गई हैं, उस के बारे में तो कभी भी कोई चर्चा न करें. उस का आयोजन कैसा है, कितना खर्चा आया है? क्या मीनू है? कौनकौन से उपहार आए हैं? इन व्यक्तिगत बातों की चर्चा भूल कर भी न करें. अगर वह किसी समस्या पर विचारविमर्श करें तो अवश्य ही अपनी सलाह दें. वरना खुद आगे बढ़ कर उस के किसी काम में टांग नहीं अड़ाएं.

इसलिए बातें कीजिए, आयोजनों में जाइए, पर दूसरों की व्यक्तिगत बातों में अनावश्यक रुचि प्रदर्शित मत कीजिए. आप नहीं जानतीं कि एक झूठ को छिपाने के लिए कितने झूठ बोलने पड़ते हैं. उस के बाद भी सच छिपता नहीं है. किसी की बात का बतंगड़ बनाने से आप की सामाजिक प्रतिष्ठा पर आंच आ सकती है. संभव है कि बरसों पुराने संबंध, रिश्तेनाते एक ही झटके में टूट जाएं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छोटी माता (चिकनपाक्स) से घबराइए नहीं

लेख • डा. सूरज गुप्ते

अभी मैं हस्पताल पहुंचा ही था कि फोन की घंटी बज उठी. सुषमाजी का फोन था. कह रही थीं, "मीनू बिटिया को पिछले तीनचार दिन से तेज बुखार है. उस के सिर और पीठ में बहुत दर्द है. गला भी बहुत खराब है. वह अपना बदन बारबार जोर से खुजला रही है."

"बदन पर कोई दाने तो नहीं हैं?" मैं ने पूछा.

"जरा एक मिनट रुकिए, मैं देखती हूं," वह बोलीं. थोड़ी देर बाद उन्होंने बताया, "हां, डाक्टर साहब, पीठ, छाती और पेट पर कुछ दाने से दिखाई दे रहे हैं, लेकिन चेहरे, बाजू और टांगों पर तो कुछ नहीं है. यह क्या है, डाक्टर साहब? कहीं बिटिया को चेचक तो नहीं हो गई?"

"आप को चेचक की ही आशंका क्यों हुई, सुषमाजी? यह रोग तो लगभग 10 वर्ष पहले ही अपने देश से भगा चुके हैं." मैं ने उन्हें तसल्ली दी, "आप मीनू को हस्पताल ले आइए. मैं उसे अभी देख लेता हूं."

सुषमाजी की सात वर्षीया बेटी मीनू चिकन पाक्स से पीड़ित थी. मीनू को भली प्रकार देखने के बाद मैं जिस निष्कर्ष पर पहुंचा, डाक्टरी जांचपड़ताल ने भी उस की पुष्टि कर दी.

चिकन पाक्स के बारे में, जिसे हमारे यहां बोलचाल की भाषा में छोटी माता कहते हैं, बात करने से पहले आप को बता दूं कि आधुनिक चिकित्साशास्त्र के प्रवर्तक सर विलियम आस्लर ने इसे 'मानव जाति का सर्वाधिक संक्रामक रोग' की संज्ञा दी थी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह रोग बहुत ही सूक्ष्म कीटाणुओं के कारण फैलता है. इन्हीं कीटाणुओं से ही कच्ची दाद (शिंगल्ज) रोग भी हो जाता है. वास्तव में इन कीटाणुओं से छेटी माता पहले होती है. कच्ची दाद अथवा शिंगल्ज का रोग उन्हें होता है, जिन्हें पहले छोटी माता निकल चुकी हो.

आम तौर पर 2 से 10 बरस के बच्चे चिकन पाक्स के शिकार होते हैं. वैसे यह रोग किसी भी उम्र में हो सकता है. इस आयु वर्ग के बच्चों को इस रोग की आशंका भी अधिक रहती है और वे आम तौर पर पूर्णतया ठीक भी हो जाते हैं. एक बार होने के बाद दोबारा यह रोग कम ही होता है.

बच्चों को यह रोग अधिकतर सर्दी या वसंत के मौसम में होता है.

जैसा कि मैं बता चुका हूं, यह बीमारी छूत से होती है. इस बीमारी के मरीज के सीधे संपर्क में आने से या उस के आसपास पड़ी खानेपीने की वस्तुएं इस्तेमाल करने से उस की छूत लग जाती है. इस रोग के कीटाणु वायु और पानी के जरिए भी फैलते हैं.

कीटाणुओं के आक्रमण

शरीर पर कीटाणुओं का हमला होने के लगभग दो सप्ताह बाद बीमारी के लक्षण दिखाई देने लगते हैं. कीटाणुओं के आक्रमण तथा लक्षण दिखाई देने के बीच की अवधि को 'इन्क्यूबेशन पीरियड' कहा जाता है.

बच्चे को तेज बुखार हो जाता है. वह सिर, गले और बदन में दर्द की शिकायत करता है. यह दशा दाने निकलने से पहले होती है और लगभग तीन दिन तक रहती है.

इस के तत्काल बाद ही बदन पर दाने दिखाई देने लगते हैं. यानी अगर ध्यान से देखा जाए तो ये बेरंग धब्बे साफ पहचान में आ जाते हैं. लेकिन अभी यह त्वचा से उभरे हुए दिखाई नहीं देते. कुछ ही घंटों में छोटेछोटे, गोलाकार तथा ठोस दाने त्वचा पर उभरने लगते हैं. फिर इन ठोस दानों में पानी भरने लगता है. ये दाने अब त्वचा पर ओस की बूंदों या आंसुओं की तरह दिखाई देते हैं.

तीनचार दिनों में ही इन दानों का साफ पानी पीप में बदल जाता है. और फिर इन दानों पर पपड़ी सी आने लगती है. यह पपड़ी वैसी नहीं होती जैसी कि चेचक के दानों पर दिखाई देती है. पपड़ी आने पर ये दाने दूसरे किसी को छूत का शिकार नहीं बना सकते.

चिकन पाक्स के दानों की विशेष बात यह है कि इन में खारिश बहुत अधिक होती है. बच्चा इसे बरदाश्त नहीं कर पाता. दाने अधिकतर पीठ, पेट या सीने पर ही होते हैं. चेहरे तथा अन्य अंगों पर इन का हमला कम ही रहता है. दानों की अलगअलग दशाएं साफ नजर आती हैं. ये दाने त्वचा के ऊपर ही होते हैं, गहरे नहीं.

इस बीमारी के दाने त्वचा के अन्य रोगों जैसे खुजली, फुंसी या दाद आदि के दानों से अलग होते हैं. इन दानों को अन्य चर्म रोगों के दानों से अलग पहचाना जा सकता है. एक बड़ी निशानी यह है कि चिकन पाक्स के रोगी के मुंह के अंदर भी पानी वाले दाने दिखाई देते हैं.

संक्रामक रोगों के विश्वप्रसिद्ध विशेषज्ञ लंदन के प्रोफेसर एस.ए.डब्ल्यू. पाल ने 'ब्रिटिश मेडिकल जरनल' में लिखा था: "त्वचा पर उभरे दानों से अगर चिकन पाक्स रोग की पहचान के बारे में कभी भी कोई संदेह हो तो डाक्टर को हमेशा मुंह में उभरे दानों की सावधानी से जांच करनी चाहिए." प्रोफेसर पाल के इस कथन की अवहेलना करने से किसी भी डाक्टर से भयंकर भूल हो सकती है.

चिकन पाक्स रोग के बारे में अभी तक मैं ने जो भी बताया है उस से आप को लगा होगा कि यह बीमारी बहुत ही साधारण है और इस से खतरे वाली कोई बात नहीं. लेकिन कुछ स्थितियों में यह निश्चय ही खतरनाक हो सकती है.

अगर दाने केवल त्वचा की सतह तक ही सीमित रहें, तब तो रोगी के चंगे होने की संभावनाएं बनी रहती हैं. लेकिन अगर फेफड़े (निमोनिया की स्थिति में) तंतु प्रणाली, हृदय, रक्त तथा एपेंडिक्स के किसी रोगी को चिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानवजाति के सर्वाधिक संक्रामक रोग की संज्ञा पाने वाले 'चिकन पाक्स' के लिए यद्यपि अभी कोई टीका उपलब्ध नहीं हुआ है तो भी शिशुओं में इस रोग के लक्षण उभरते ही सही इलाज व परहेज द्वारा इस से हमेशा के लिए मुक्ति पाई जा सकती है.

पाक्स निकल आएं तो यह बहुत खतरनाक साबित होती है.

कैंसर का रोगी तथा ऐसा कोई व्यक्ति जो ऐसी दवाएं ले रहा हो जिन से शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली शिथिल पड़ती है, अगर चिकन पाक्स रोग का शिकार हो जाए तो उस की मृत्यु भी हो सकती है.

गर्भावस्था में चिकन पाक्स का शिकार होने से शिशु में शारीरिक या मानसिक कमजोरियां रह सकती हैं. इस प्रकार के शिशुओं की मृत्यु दर बहुत अधिक होती है.

इसे विडंबना ही कहा जाएगा कि बच्चों को अकसर होने वाली इस बीमारी की तरफ पूरा ध्यान नहीं दिया गया. अभी तक इस का कोई इलाज भी उपलब्ध नहीं है.

अतः डाक्टर लोग इस रोग का जो भी थोड़ा बहुत उपचार करते हैं वह रोगी को केवल राहत ही दे पाता है. दर्द निवारक दवाएं देने से रोगी को तेज सिर दर्द तथा बदन दर्द से आराम मिलता है. बुखार उतारने के लिए कोई दवा दे कर तेज बुखार को कम किया जा सकता है.

इसी प्रकार किसी शरबत आदि से गले को खुलने में सहायता दी जा सकती है. तेज खुजली से राहत दिलाने के लिए किसी पाउडर या लेप इत्यादि का प्रयोग किया जाता है. इन दवाओं से अगर आराम महसूस न हो तो एंटी एलर्जिक दवाएं मुंह के रास्ते ही दी जा सकती हैं. विधि पूर्वक गरारे आदि करने से भी गले को आराम मिलता है.

इस रोग का साधारण सा आक्रमण तो ऐसी दवाओं से झेला जा सकता है, लेकिन अगर बीमारी ने तेज हमला किया है तब तो पूरी जांचपड़ताल के बाद ही उपचार प्रारंभ किया जाना चाहिए. ऐसी स्थिति में मरीज के खानेपीने का परहेज भी डाक्टर के कहे अनुसार ही रखा जाना चाहिए.

एक बात मैं जोर दे कर कहना चाहूंगा. अभी तक चिकन पाक्स रोग के लिए कोई टीका उपलब्ध नहीं हो पाया है. इसलिए न्यूयार्क के सैंट सिनाइ मेडिकल सेंटर के प्रोफेसर राय ब्राउन के परामर्श का पालन अवश्य ही किया जाना चाहिए. उन का कहना है: "अच्छा तो यही होगा कि शिशु पर इस बीमारी का हमला होते ही उस का पूरी तरह से इलाज कर लें." जैसा कि हम पहले बता चुके हैं, शिशुओं में बीमारियों से चंगा होने की अद्भुत प्राकृतिक क्षमता होती है. इसलिए शैशवावस्था में ही पूरे इलाज और परहेज से इस रोग से हमेशा के लिए छुटकारा पाया जा सकता है.

रोगी को अलगथलग रखना भी श्रेयस्कर होगा. ऐसा करने से दूसरों को इस बीमारी की छूत लगने से बचाया जा सकता है.

कैंसर के रोगी या शरीर की शिथिल प्रतिरक्षा प्रणाली वाले रोगियों पर इस रोग का आक्रमण हो तो उन्हें 'गामा ग्लोब्युलिन' टीका लगवाना चाहिए. यह टीका रोग के तीव्र आक्रमण को हलका कर देगा.

प्रत्येक व्यक्ति, विशेषकर नन्हे शिशुओं की माताओं को इस रोग के कारणों, लक्षणों तथा निदान की जानकारी अवश्य लेनी चाहिए. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पड़ोसी का धर्म

कहानी • कुसुम गुप्ता

रामास्वामी की दुंदुभी बज उठी थी. मैं समझ गया कि अब शीघ्र ही पानीपत की पांच सौंवीं लड़ाई होने वाली थी.

इतवार का दिन था. एक दिन तो मिलता था तनावमुक्त हो कर देर तक बिस्तरे में पड़े रहने और पत्नी से चुहलबाजी करने का. पर रामास्वामी के लिए तो हर दिन इतवार था. उस की पत्नी अपनी बेटी का जापा कराने के लिए बंबई चली गई थी. अकेला था अपने नौकर के साथ. नीचे और ऊपर वाले हम दोनों की नाक में दम कर रखा है उस ने.

"सर्दी तो गई इधर निचली और ऊपरी मंजिल के बीच सैंडविच होने से तो अच्छा था कि हम मद्रास चले जाते. दो लाख रुपया भी खर्च किया. पर इधर न तो शांति है और न ही शालीनता. ऊपर वाला हर समय कुछ न कुछ टपकाता रहता है और नीचे वाला..."

"अजी सुनते हैं, यह मदरासी फिर चालू हो गया. अब घंटे भर से पहले इस की कथा खत्म नहीं होने वाली," सुमनजी ने घबरा कर कहा.

मैं पूरी तरह जाग गया. सर्दी का मौसम था, पौने सात बजे थे. खिड़की से झांका. बाहर अभी कोहरा छाया था. इतनी सुबहसुबह जाने रामास्वामी को क्या तकलीफ हो गई? मैं सोचने लगा.

सुमन चाय ले आई. हम दोनों बालकनी के पास खड़े हो कर चाय पीने लगे. तभी खट से कुछ बाहर आ कर गिरा. मैं ने बाहर झांका, मनी प्लांट का मोटे शीशे का गमला था.

"ओह, कोई बाहर होता तो सिर फट जाता. इस रामास्वामी के बच्चे ने तो जिंदगी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जराजरा सी बातों को ले कर अड़ोसपड़ोस में तूफान उठाने वाले रामास्वामी की एक दुर्घटना ने न केवल आंखें खोल दीं, बल्कि पड़ोसी धर्म का पाठ भी पढ़ा दिया.

हराम कर दी है. इन फ्लैटों में रह कर मैं तो पागल हो जाऊंगी," सुमन उखड़ गई.

"शांति रखो, सुमन. इस में कुसूर फ्लैटों का नहीं, हम इनसानों का है, जो शांति और सदभाव के साथ नहीं रह सकते. अच्छे पड़ोसी बन कर रहना कोई मुशकिल काम नहीं है," मैं ने सुमन को समझाया.

"शांति और सदभाव कहां से पैदा होगा, जब आप दिन भर कुत्तों की तरह अपने नीचे और ऊपर वाले पर भूंकते रहेंगे. कभी औरत बाल संवार कर नीचे फेंक रही है, कभी मर्द दाढ़ी बना कर ब्लेड और सिगरेट पी कर टोटा नीचे फेंक रहा है. नीचे घर नहीं, घूरा है कूड़े का मैदान, जहां सारा कचरा फेंकना ही चाहिए." सुमन उत्तेजित हो गई.

"अगर सहअस्तित्व की भावना से काम लिया जाए तो हम अच्छे पड़ोसियों की तरह रह सकते हैं. सुमन, हम इस महानगर में अकेले हैं. अजनबियों की तरह रहेंगे या फिर छोटीछोटी बातों पर महाभारत करते फिरेंगे तो फिर आपातकाल में हमारी सहायता के लिए कौन आएगा?" मैं ने अपनी अंदर की भावना को व्यक्त कर दिया.

"इन से सहायता की उम्मीद करते हैं आप? जिस दिन से हम ने कार खरीदी है, रामास्वामी और प्रेम जलभुन कर राख हो गए हैं."

"जिओ और जीने दो. खाओ और खाने दो. हम ने इन सिद्धांतों को तिलांजलि दे कर

"हम तुम को क्या परेशान करता है? बोलो?" रामास्वामी ने लगभग चीख कर पूछा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने लिए समस्याएं ही पैदा की हैं. सुमन, थोड़ा ठंडे दिमाग से सोचो. परिवार के बाकी सदस्य कहां हैं? बेटी कनाडा में, बेटा त्रिवेंद्रम में. अब कल ही अगर कोई भारी समस्या आ जाए तो कौन यहां मदद को आएगा? इसी तरह रामास्वामी को देखो. उस की बेटी बंबई में है. एक बेटा है आई.ए.एस. अफसर. वह मिजोरम के किसी अनाम स्थान पर नियुक्त है. कल को रामास्वामी..."

सुमन ने मेरी बात पूरी होने से पूर्व ही अपने टिप्पणी जड़ दी, "खुद सेवानिवृत्त उपसचिव है. बेटा आई.ए.एस. अफसर है. बेटी भी अच्छे घर गई है. दामाद एक कंपनी में उच्च पद पर है. तभी तो दिमाग सातवें आसमान पर रहता है."

बाहर से आने वाली आवाजें तेज हो गईं. अब रामास्वामी के स्वर के साथसाथ प्रेम और उस की पत्नी के स्वर भी मिल गए थे.

मैं बाहर निकल आया. निचली मंजिल का यही लाभ है. एक छोटा सा आंगन है, जिस में खड़े हो कर आप पहली और दूसरी मंजिल दोनों के निवासियों के घरों की बालकनी पर नजर रख सकते हैं.

आज जब जनसंख्या में अभूतपूर्व वृद्धि हो रही है और भूमि सीमित मात्रा में उपलब्ध है, विशेष रूप से महानगरों में, तो आवास पड़ी रेखा नहीं, खड़ी रेखा के रूप में ही विकसित होंगे. इसी कारण फ्लैट संस्कृति का जन्म हुआ था और इस संस्कृति ने आज पड़ोसियों के संबंधों को नया आयाम दे अनगिनत मानवीय समस्याएं उत्पन्न कर दी हैं.

मैं आंगन में खड़ा, दार्शनिक हो चला था कि पहली मंजिल के निवासी और दूसरी मंजिल पर रहने वाले प्रेम के बीच लड़ा जाने वाला युद्ध ईरानइराक युद्ध सा तेज हो गया.

"देखो, प्रेम, मुझ से बहस करना ठीक नहीं होगा, मैं बोले देता हूं. तुम अपने स्नानघर का पाइप ठीक नहीं कराओगे तो हमारी बैठक की दीवार की सीलन कैसे जाएगी?" रामास्वामी चीखा.

"हम ने सारे पाइप चैक करा लिए हैं. इधर कोई पाइप नहीं रिस रहा है," प्रेम की पत्नी ने उत्तर दिया.

"फिर हमारी बैठक की दो दीवारों में इतनी सीलन क्यों है?"

"हमें क्या पता? हम कोई कारीगर हैं?"

"हम ने इधर एक कारीगर को बुलाया था. उस का कहना था कि ऊपर वाले की बैठक में पानी भरता है. कहीं अंदर की दीवार से पानी रिसता है. शायद दीवार के भीतर पाइप से," रामास्वामी ने दोनों हाथ ऊपर उठा कर कहा.

"तो तुम्हारी दीवार की सीलन के लिए हम अपने घर का स्नानघर और उस की दीवारें तुड़वा दें?" प्रेम की पत्नी उखड़ कर बोली.

"नहीं, हमारी सारी दीवार तुड़वा दो..."

न जाने कब तक यह बहस चलती. मैं बीच में आ गया. मध्यस्थता करना जरूरी हो गया था. इसलिए मैं बोला, "रामास्वामी जी, जिस कारीगर ने आप को यह बताया था कि ऊपर वालों का पाइप रिस रहा है, उसी को बुला कर दूसरी मंजिल की बैठक और दीवारों की जांच करा लीजिए. इस में परेशानी की क्या बात है?"

"उस की मजदूरी कौन देगा?" रामास्वामी ने अपनी समस्या प्रस्तुत की.

"साधारण सी बात है. अगर ऊपर वालों के स्नानघर में खराबी है और वह आदमी उस खराबी को ठीक करता है तो वह खर्च ऊपर वाले करेंगे. यदि वहां खराबी नहीं निकलती है तो मजदूरी आप देना," मैं ने सुझाव दिया.

"ठीक है, हमें मंजूर है," प्रेम की पत्नी बोली.

रामास्वामी कुछ क्षण तक वह सोच में डूबा रहा. फिर बोला, "वाह, करे कोई, भरे कोई."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"फटाफट तैयार हो जाइए. रामास्वामी बेहोश है, उसे तत्काल हस्पताल पहुंचाना होगा." सुमन बोली.

"करने को हम ने ऐसा क्या किया है जो कराह रहे हो?" प्रेम की पत्नी ने क्रोध में भर कर कहा.

"नीचे आ कर रहो, तब पता चलेगा. रात के दस बजे भी जरा आंख लगी नहीं कि पलंग और फरनीचर की खींचतान शुरू हो जाती है. एकदम ऐसी धमक आती है, जैसे लड़ाई के मैदान में तोप के गोले छूट रहे हों. चलेंगे तो ऐसे कूदकूद कर, जैसे घर नहीं खेल का मैदान या नेहरू स्टेडियम हो."

"पता नहीं था कि पहली मंजिल पर हमारे प्रधान मंत्री रहते हैं, वरना हम अपने घर में हमेशा के लिए स्थायी कर्फ्यू लगा देते," प्रेम ने चिढ़ कर कहा.

"मुंह को बड़ा खोलने में पैसा थोड़े ही खर्च होता है. नीचे रहो तब पता चलेगा कि रातरात भर नींद नहीं आती."

"तो बदल लो. तुम ऊपर आ जाओ. हम बीच में आ जाते हैं."

"क्यों नहीं, इस में भी तुम्हारा 80 हजार का फायदा है. हमारा फ्लैट दो लाख का, तुम्हारा एक लाख 20 हजार का. तुम क्यों अदलाबदली नहीं करना चाहोगे."

मैं दिल्ली विकास प्राधिकरण के इंजीनियरिंग विभाग की मन ही मन सराहना कर रहा था. अच्छेखासे फ्लैट बनाए हैं उन्होंने. पर क्या वे इन में ऐसी कोई व्यवस्था नहीं कर सकते थे, जिस से पड़ोसियों में पारस्परिक झगड़े न हों.

"ठीक है, सुबह ही सुबह मन खराब कर के रख दिया. न जाने दिन कैसा बीतेगा?" कह कर प्रेमजी अंदर चले गए.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन की पत्नी भी आंखें मटका कर, हाथों को झटकती हुई पति के पीछेपीछे चली गई.

रामास्वामी को शांत हो जाना चाहिए था क्योंकि प्रतिद्वंद्वी मैदान छोड़ कर जा चुका था. पर नहीं, उस के मन को तसल्ली नहीं हुई थी.

"इन जैसे आदमी को तो एक बार लंदन भेजा जाए. वहां रहें तो पता चले तौर-तरीकों का. मजाल है कि वहां घर को खेल का मैदान बना सके कोई? जरा जोर से चलो तो नीचे वाला तुम्हारी ऐसी की तैसी कर के रख देता है. पर इस मुल्क की तो रीति ही उलटी है. उलटा चोर कोतवाल को डांटे," रामास्वामी की बुड़बुड़ाहट जारी थी.

रामास्वामी के अनर्गल प्रलाप को रोकने के लिए मैं ने थोड़े हास्य की सृष्टि करने के उद्देश्य से बड़ी शालीनतापूर्वक कहा, "स्वामीजी, आप ने अपने रक्तचाप की जांच कराई?"

"क्यों, मेरे रक्तचाप को क्या हुआ?" रामास्वामी ने ऊंची आवाज में पूछा.

"आप को बहुत गुस्सा आता है."

"हम को गुस्सा आता है. जरा इधर आ कर रहो तो पता चलेगा. ऊपर वाला कितना गैर जिम्मेदार आदमी है."

"रामास्वामीजी, आप बीच में हैं. प्रेम के होते हुए आप नीचे वाले हैं. पर आप यह क्यों भूलते हैं कि हमारे लिए आप दोनों ऊपर वाले हैं और हम नीचे वाले. हम भी परेशान होते हैं. पर पड़ोसियों से छोटीछोटी बातों पर लड़ना..."

मेरी बात पूरी भी नहीं हो पाई थी कि रामास्वामी ने लगभग चीख कर पूछा, "हम तुम को क्या परेशान करते हैं, बोलो?"

"अब क्या बताएं, बेकार झगड़ा खड़ा हो जाएगा."

"जब कुछ होगा ही नहीं तो बोलेंगे क्या?"

"कुछ है क्यों नहीं," कहती हुई सुमन कमर कस कर मैदान में आ गई.

"बोलो."

"दीखिए, सिगरेट पी कर खाली पैकेट और पुराने ब्लेड नीचे हमारे आंगन में फेंके जाते हैं. यही नहीं, रात को जरा आंख लगी नहीं कि ऊपर धमाचौकड़ी मचना शुरू हो जाती है."

"हम धमाचौकड़ी मचाते हैं?"

"रामास्वामी साहब, हम सब का यही हाल है. हमें खुद पता नहीं चलता कि हमारे कारण दूसरे को कोई कष्ट पहुंच रहा है या नहीं?" मैं ने शांतिपूर्वक कहा.

"हम जानते हैं. तुम ऊपर वाले का पक्ष ले रहे हो. क्यों नहीं लोगे. तुम उत्तर वाले मिल कर दक्षिण वालों को क्यों नहीं सताओगे."

"आप भी कैसी संकुचित मनोवृत्ति की बातें करते हैं. इन मामूली झगड़ों में क्षेत्रीयता कहां से आ गई?" मैं ने हैरान हो कर कहा.

"इन से बहस करना व्यर्थ हैं. अंदर चलिए," सुमन मुझे अंदर घसीट ले गई.

मुझे पीठ पीछे रामास्वामी का विषबुझा व्यंग्य सुनाई पड़ गया. वह कह रहा था, "सब जोरू के गुलाम हैं. रिश्वत के पैसे से गाड़ी खरीद कर अपने को बड़ा लाट साहब समझता है."

मैं अंदर बैठक में जा कर सोफे पर बैठ गया. सुमन रसोईघर में चली गई, चाय बनाने के लिए.

मैं क्षुब्ध सा बैठा था. मन में कड़वाहट घुल गई थी. अकारण अप्रियता का वातावरण बनाने में कौन सी बुद्धिमानी है. यह अप्रियता मानवीय संबंधों को जोड़ती नहीं, तोड़ती है. जिस परिवेश में कटुता, संवेदनहीनता, ईर्ष्या और स्वार्थ का आधिक्य हो, वहां इनसान अपने को अंदर समेट लेता है—एकदम कछुए की तरह. शायद महानगरों में संबंधहीनता तथा अपरिचय के कैक्टस इसी मौसम की उपज हैं.

सुमन चाय बना लाई. वह भी बहुत उत्तेजित थी. तमतमा कर बोली, "किस तरह पैसापैसा जोड़ कर, बचत कर के हम ने कार खरीदी. सब के पेट में दर्द हो गया."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं बेहद... सुदृढ़ हूँ

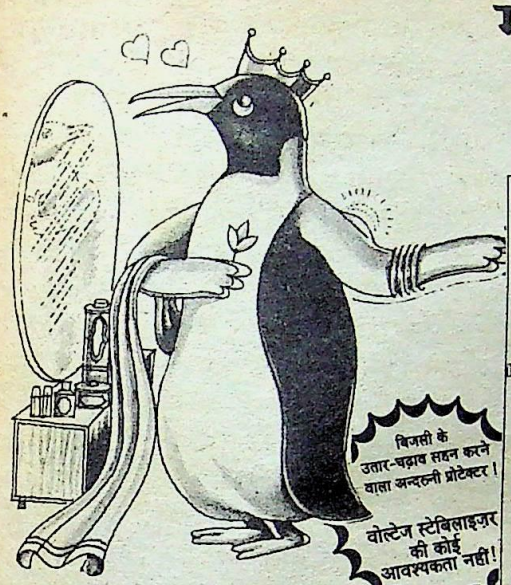

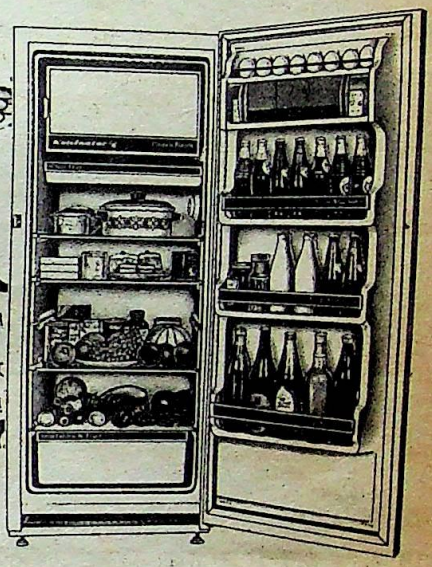

(सम्राट पेंगविन के एक के ऊपर एक पंख, उसके सौन्दर्य में ही चार चांद नहीं लगाते, बल्कि उत्तम इन्सूलेशन भी प्रदान करते हैं। तथा दो महीने की अण्ड-सेवन अवधि के दौरान प्रतिकूल मौसम परिस्थितियों में भी उसे जीवित रखने में सहायता देते हैं जब तापमान गिर कर हो जाता है — 40° से 60° सें. के बीच!! सुदृढ़, है न!!)

सन्दर्भ : रीडर्स डाईजेस्ट की एन्साक्लिका एण्ड बर्ड्स आफ़ दि वर्ल्ड, लेखक ऑलिवर एल. ऑस्टिन जूनियर प्रकाशक : ऑप्टीमम

केल्विनेटर रेफ़्रिजरेटर. सुदृढ़ बनावट.

इसका अत्यंत मज़बूत हृदय है — विश्व विख्यात 'पावर-सेवर' कम्प्रैसर। सब से सुदृढ़ जिसके खराब होने की सम्भावना न के बराबर। यह व्यापक उच्च तापमान में भी उतनी ही तेज़ी से ठंडा करता है। वोल्टेज के विस्तृत उतार चढ़ाव सहन करता है। तथा बिजली की खपत न्यूनतम करता है।

मज़बूत ए बी एस लाइनर। आधुनिक एवं उत्तम। जिसमें ज़ंग, पपड़ी लगने या खाने की सुगंध रचने का डर नहीं।

स्टील की मज़बूत सुदृढ़ बॉडी। इपाक्सी फ़िनिश, घिसाव एवं पपड़ी रोकता है।

और सोने पर सुहागा यह कि केल्विनेटर रेफ़्रिजरेटर अनुपम बाहरी फिनिश तथा मनभावन अन्दरूनी रंगों में उपलब्ध है। जिन के कारण इनकी सुन्दरता देखते ही बनती है।

विशेष खूबियाँ :

* पूर्ण इन्सूलेशन कैबिनेट तापमान को बेहतर बनाती है।
* सर्विस में विश्वसनीय
* बिजली की खपत में अत्यंत किफ़ायती
* विशाल स्टोरेज क्षमता
* अनेक मॉडल

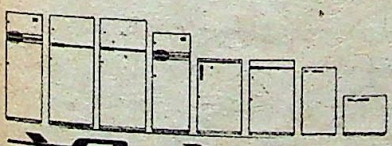

केल्विनेटर
रेफ़्रिजरेटर
"इसकी ठण्डक...बेमिसाल!"

286 लिटर तथा 165 लिटर मॉडल, डी जी एस एण्ड डी रेट कान्ट्रैक्ट पर भी उपलब्ध

बिक्री एवं सर्विस के लिए :
एक्सपो मशीनरी लिमिटेड
प्रगति टावर, 26 राजिन्द्रा प्लेस, नई दिल्ली-110 008.

Mutual-4510A HN

केल्विनेटर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

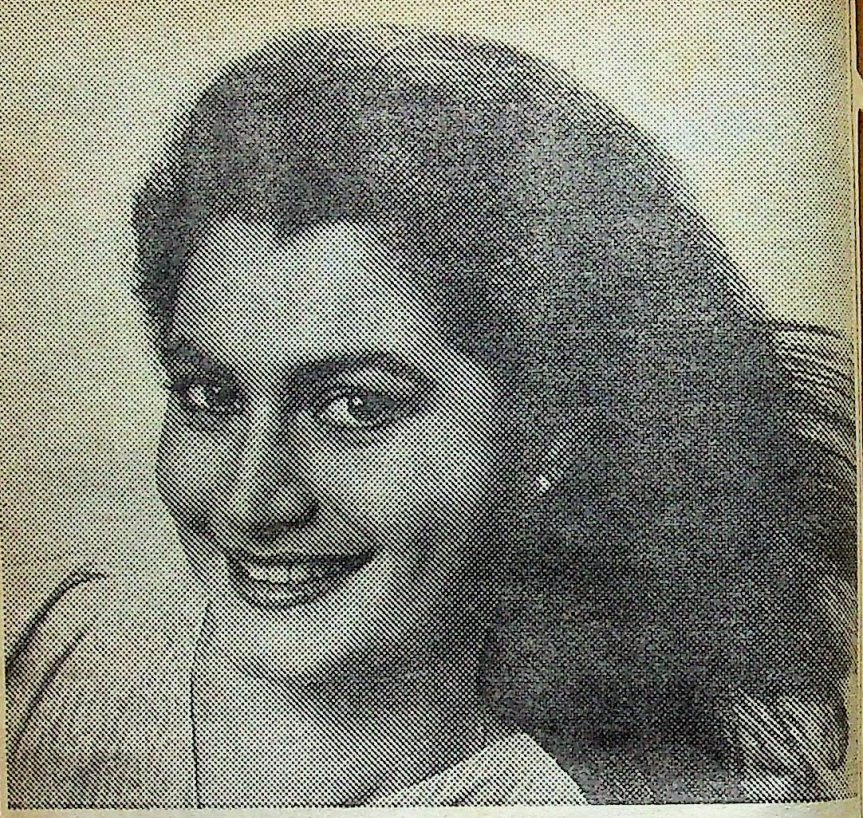

सनी! होम्योपैथिक शैम्पू है जो आपके बालों के लिए प्रकृति का अनोखा उपहार प्रदान करती है : आर्निका– एक ऐसी बूटी जो बालों को साफ करने के साथ ही उन्हें पुष्ट भी बनाती है। बालों का झड़ना रोकती है, रूसी दूर करती है – सहज भाव से, कुदरती ढंग से।

और सबसे बड़ी बात यह है कि सनी का कंडिशनर बालों की उलझनें सुलझा देता है। इससे आपके बाल हो जाते हैं रेशमी मुलायम और संवारने में आसान। सनी की खास फ्रांसीसी सुगंध आपका मन मोह लेगी।

*सबसे अच्छे उपयोग के लिए पहले सिर में **सनी आर्निका हेयर ऑयल** की मालिश कीजिए। 1-2 घंटे तक छोड़ दीजिए। गीले बालों में **सनी आर्निका शैम्पू** लगाइए। झाग बनाइए और अच्छी तरह धो डालिए।*

निर्माता
बेकसन होम्यो फार्मेसी प्राईवेट लिमिटेड
121, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज-1 ,
नई दिल्ली-110 020.

अपनाइए

सनी
आर्निका शैम्पू

और लाइए अपने बालों में फिर से निखार

सभी प्रमुख दुकानों पर उपलब्ध है

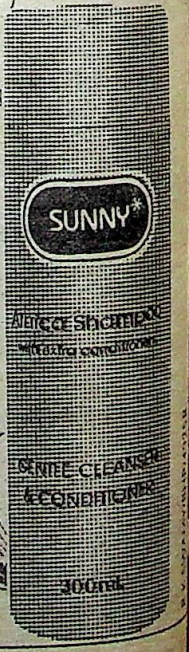

सनी आर्निका शैम्पू विथ कंडिशनर

कोमल और कुदरती –
जो है देन केवल होम्योपैथी की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"होने दो, सुम्मी. तुम इन व्यर्थ की बातों को क्यों गंभीरतापूर्वक लेती हो?"

"कैसे न लूं? पता है, नौ नंबर वाली कमला क्या कह रही थी?

"क्या?"

"कहती थी, सुमनजी, आप ने 80 हजार की कार कैसे खरीद ली? हम तो पिछले पांच साल से अपने 'उन को' एक नया सूट बनवाने की कोशिश कर रहे हैं, पर नहीं बनवा पाए."

"तुम ने क्या उत्तर दिया?" मैं ने पूछा.

"उत्तर क्या देना? जब इन लोगों का यह मत है कि यह कार हम ने रिश्वत के पैसों से खरीदी है तो फिर इस का एक ही उत्तर हो सकता है—एक 'शालीन मौन.'" शायद सुमन की विचारधारा परिपक्वता पर आधारित थी.

काफी दिनों बाद एक विचित्र घटना घटी.

रात को करीब एक बजे किसी ने घंटी बजाई. हम दोनों ही जाग गए. मैं उठ तो सुमन बोली, "आधी रात का समय है. यों ही दरवाजा मत खोल देना. पहले खिड़की में से झांक कर बाहर देख लेना."

फिर घंटी बजी. मैं ने खिड़की खोल कर बाहर झांका और पूछा," कौन है?"

"साहब, मैं कृष्णन."

"क्या है?" तब तक सुमन भी उठ कर मेरे पीछे आ खड़ी हुई थी.

"जल्दी ऊपर आइए. पता नहीं साहब को क्या हो गया है?"

"क्या हुआ?" मैं ने पूछा.

"बेहोश हो गए हैं, साहब."

"तो हम क्या करेंगे? डाक्टर को बुलाओ."

"साहब, इतनी रात में डाक्टर कहां मिलेगा?"

"हम कोई डाक्टर हैं?" मैं ने शुष्क स्वर में कहा. मन में कड़वाहट रचीबसी थी. पड़ोसी गीली लकड़ी की तरह होता है. अगर जलता है तो धुआं देता है और अच्छा भला हो तो लड़ता है. परेशान या दुखी हो तो तुम्हारे पास मदद के लिए भागेगा.

बंदी

बंदी हो गए अहसास,
बेबस हो गए अरमान,
ऐ दोस्त ये क्या हो गया!
अपना ही गुलाम बन गया इनसान.

—इंदरा हरभजनका

"पड़ोसी का फर्ज है दुखपरेशानी में एकदूसरे के काम आना. स्वामी का यहां अपना कौन है. पत्नी भी बंबई से नहीं लौटी है. हमें उस की मदद करनी चाहिए," कहती हुई सुमन कृष्णन के साथ ऊपर चली गई.

कोई पांच मिनट बाद वह लौटी और आदेश युक्त स्वर में बोली, "फौरन तैयार हो जाइए. रामास्वामी बेहोश है. उसे तत्काल हस्पताल पहुंचाना होगा."

"उस लड़कू के प्रति इतनी सहानुभूति?" मैं ने मजाक किया.

"पड़ोसी कैसा भी हो, संकट के समय उस की सहायता करना अन्य पड़ोसियों का धर्म है," सुमन बोली और अंदर जा कर वह गाड़ी की चाबी ले आई.

हम तीनों ने मिल कर बड़ी मुशकिल से बेहोश रामास्वामी को नीचे उतारा. वह पतलादुबला, छरहरे बदन का था. यदि मोटा और भारी होता तो निश्चित रूप से बड़ी परेशानी हो जाती.

हम उसे कार में डाल कर अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान के आपात विभाग में ले गए. वहां उसे तुरंत भरती कर लिया गया. हम सारी रात वहां प्रतीक्षा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करते रहे. सुबह एक डाक्टर ने हमें बताया कि रामास्वामी के दिमाग की नस फट गई है. यदि उसे तत्काल उपचार के लिए नहीं लाया जाता तो उस की मृत्यु निश्चित थी.

अब भी रामास्वामी जीवनमृत्यु के बीच झूल रहा था.

हम लोग घर लौट आए. हम ने उस के नौकर से पूछा, "तुम्हें साहब के बेटे का पता मालूम है?"

"नहीं, साहब."

"उन की बंबई वाली लड़की का पता?"

"वह भी नहीं मालूम, साहब."

फिर कैसे होगा? रामास्वामी के बच्चों को कैसे सूचित किया जाए? कुछ समझ में नहीं आ रहा था.

मैं नहाधो कर, नाश्ता कर के दफ्तर गया. रास्ते में हस्पताल में रुका. पता चला रामास्वामी को गहन चिकित्सा एकांश में रखा हुआ है. शाम को दफ्तर से लौटते हुए भी मैं उसे देखता हुआ आया.

करीब एक सप्ताह बाद डाक्टरों ने खुशखबरी दी, "रामास्वामी बच जाएंगे. उन की दशा में सुधार हो रहा है."

मैं प्रसन्न हो गया. मुझे ऐसा लगा जैसे मेरा कोई अपना बच गया हो, मृत्यु के मुख से लौट आया हो.

लगभग दो मास हस्पताल में रहने के बाद रामास्वामी स्वास्थ्य लाभ कर के वापस घर आ गया. उस के बेटाबेटी को सूचना भेज दी गई थी. इस बीच वे भी दिल्ली आ गए थे.

रामास्वामी के बेटाबेटी तथा पत्नी ने हमारी प्रशंसा के पुल बांध दिए. हमें इस प्रशंसा को सुन कर कोई विशेष प्रसन्नता नहीं हुई.

असली खुशी तो हमें यह देख कर हुई कि एक पड़ोसी को बीमारी के बाद फिर से नई जिंदगी ही नहीं मिली थी, बल्कि उन्हें एक नया व्यक्तित्व भी मिल गया था.

रामास्वामी ने पड़ोसियों के साथ सौहार्दपूर्ण, सुशील, विनम्र व्यवहार शुरू कर दिया था.

एक दिन उस ने हमें और प्रेम दंपती को दोसाइडली की दावत दी. हमें खुशी हुई दक्षिण भारतीय खाना खा कर. पर सब से बड़ी खुशी उस समय हुई जब रामास्वामी ने गंभीर स्वर में कहा, "प्रेमजी, इस बीमारी के बाद हमें पड़ोसी के धर्म का ज्ञान हो गया है. अपने बच्चे साथ न हों तो फिर बेटाबेटी और परिवार के सदस्यों का कर्तव्य पड़ोसी ही निभाते हैं. हमें अच्छे पड़ोसियों के रूप में प्रेम, शांति, सुख से रहना चाहिए. एकदूसरे के सुखदुख में भागीदारी करनी चाहिए."

हम लोगों ने समर्थन में तालियां बजा दीं.

रामास्वामी दंपती के मुख पर प्रफुल्लता भरी मुसकान बिखर गई.

शर्मीला प्राणी बिच्छू

अकसर लोग बिच्छू देखते ही उस से अनायास दूर भागते हैं जबकि वास्तव में यह एक शर्मीला जीव है. यदि यह काटता है तो केवल आत्मरक्षा के लिए ही, न कि किसी आक्रामक भावना से.

अधिकांश लोग बिच्छुओं को कीट ही समझते हैं, लेकिन यह 'एराकनीड' नामक एक समूह का प्राणी है. इस समूह में मकड़ी, शतपादी, सहस्रपादी आदि जीव शामिल हैं.

विश्व में बिच्छुओं की 600 से अधिक जातियां हैं. बिच्छुओं के चार जोड़े पैर होते हैं. लेकिन यह सामान्य से धीमी गति से रेंगता है. सिर्फ छेड़े जाने पर ही फुरती दिखाता है.

बिच्छू पतंगे, मक्खी, चींटी, भृग, मकड़ी आदि कीड़ेमकोड़ों को खाता है. बड़ी जाति के बिच्छू छिपकली और चूहों को भी पकड़ लेते हैं.

बिच्छुओं को भी अपने शत्रुओं से बच कर रहना पड़ता है. कई प्रकार की मकड़ियां, छिपकलियां, सांप, पक्षी और बंदर इन्हें चाव से खाते हैं. लेकिन बिच्छू तो अपने भाईबंधुओं को भी खा जाते हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वेदों में क्या है?

सूक्त—१६७ प्रथम मंडल देवता—इंद्र एवं मरुत

हे इंद्र तुम्हारे हजारों प्रकार के रक्षण उपाय हजारों तरह से हमारे पास आवें. हे अश्वों के स्वामी! तुम्हारे हजारों तरह के प्रसिद्ध अन्न हमें प्राप्त हों. तुम्हारे पास जो हजारों प्रकार के धन हैं, वे हमें प्रसन्नता देने केलिए मिलें. हमें हजारों पशु प्राप्त हों. (१)

मरुद्गण रक्षा के साधानों सहित हमारे पास आवें. शोभन बुद्धि वाले मरुद्गण परम प्रसिद्ध एवं दीप्तिशाली धन के साथ हमारे समीप आवें. उनके नियुत नामक घोड़े समुद्र के उस पार रहते हुए भी धन धारण करते हैं. (२)

भली प्रकार स्थित, जल बरसाती हुई एवं सुनहरे रंग की बिजली मरुतों के साथ मेघमाला, छिपे हुए स्थान में रहने वाली राजपुरुष की पत्नी अथवा यज्ञीय वाणी के समान रहती है. (३)

जिस प्रकार युवक साधारण नारी से मिलते हैं, उसी प्रकार शोभन अलंकारों वाले परम वेगशाली एवं महान् मरुद्गण बिजली के साथ संगत होते हैं. भयंकर वर्षा करने वाले मरुद्गण धरती और आकाश का त्याग नहीं करते. देवगण मित्रता के कारण मरुतों की उन्नति का प्रयत्न करते हैं. (४)

बिखरे हुए बालों वाली मरुत-पत्नी बिजली समागम के निमित्त इन की सेवा करती है. जिस प्रकार सूर्य की पुत्री अश्विनीकुमारों के रथ पर सवार हुई थी, उसी प्रकार तेजस्वी शरीर वाली चंचल बिजली मरुतों के रथ पर बैठकर यज्ञस्थल पर आती है. (५)

नित्य तरुण मरुद्गण नियम से मिलन करने वाली एवं शक्तिशाली तरुणी बिजली को वर्षा केलिए अपने रथ पर बैठा लेते हैं. उसी समय पूजा के मंत्र बोलते हुए हव्यदाता एवं सोमरस निचोड़ने वाले यजमान मरुतों की सेवा करते हुए स्तुतियां पढ़ते हैं. (६)

मैं मरुतों की प्रशंसनीय एवं सरलता से समझ में न आने वाली महिमा का वर्णन करता हूं. मरुतों से संबंधित बिजली बरसने की इच्छा वाली, अहंकार युक्त स्थिर सौभाग्यशाली एवं जननसमर्थ प्रजाओं को धारण करने वाली है. (७)

हे मरुतो! मित्र, वरुण और अर्यमा इस यज्ञ की निंदा से रक्षा करते हैं तथा यज्ञ के दोषयुक्त पदार्थों का नाश करते हैं. इन्हीं के कारण समय पर मेघ का अच्युत एवं ध्रुव जल टपक पड़ता है. जल की अधिकता से मित्रादि ही जगत की रक्षा करते हैं. (८)

हे मरुद्गण! हम लोगों में से एक भी व्यक्ति दूर रहकर भी तुम्हारे बल की सीमा नहीं जान सका. तुम शत्रुओं को हराने वाले बल से जलराशि के समान बढ़ते हो और अपनी शक्ति से उन्हें हराते हो. (९)

आज हम इंद्र के अत्यंत प्रिय बनकर यज्ञ में उनकी महिमा का वर्णन करेंगे. हम ने प्राचीन काल में इंद्र की महिमा का वर्णन किया था और प्रतिदिन कर रहे हैं. इसलिए महान् इंद्र अन्य लोगों की अपेक्षा हमारे अनुकूल बनें. (१०)

हे मरुतो! आदर के योग्य मांदर्य कवि का यह स्तुतिसमूह तुम्हारे लिए है. यह स्तुति इस अभिलाषा से तुम्हारे पास जाती है कि स्तुतिकर्ता का शरीर पुष्ट हो. हम भी इस स्तुति द्वारा अन्न, बल एवं दीर्घ आयु प्राप्त करें. (११)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उड़ बांध कमल

तमिल कहानी • के.सी. कृष्णन

सत्ताधारी दल ने विधानसभा चुनाव में डाक्टर सदाशिवम को अपना उम्मीदवार क्यों और कैसे बनाया, यह डाक्टर स्वयं नहीं जानते. राजनीति और चुनाव लड़ना उन के स्वभाव के अनुकूल नहीं था. फिर भी चुनाव लड़ने का उन से बारबार आग्रह किया गया. डाक्टर सदाशिवम ने हर बार अपना यह पक्ष सामने रखा कि उन का काम रोगियों की चिकित्सा करना है, न कि चुनाव लड़ना. पर कसबे के प्रमुख लोग व नेतागण उन्हें पकड़ कर डाक बंगले में ठहरे मंत्रीजी तक ले ही गए. आखिर नामांकनपत्र भर कर ही उन्हें छुटकारा मिला.

और तब शुरू हुआ चुनाव क्षेत्र के अंतर्गत गांवगांव में जाना, प्रत्येक मतदाता की ड्योढ़ी पर जा कर उस के आगे सिर नवाना. यह सब उन के लिए नया अनुभव था.

कार्यकर्ता नारे लगा रहे थे: "सदाशिवम को वोट दो, श्रवणन को चोट दो."

सदाशिवम को यह नारा अच्छा न लगा, पर दल के नेताओं ने कहा, "कार्यकर्ताओं को अपने मन की करने

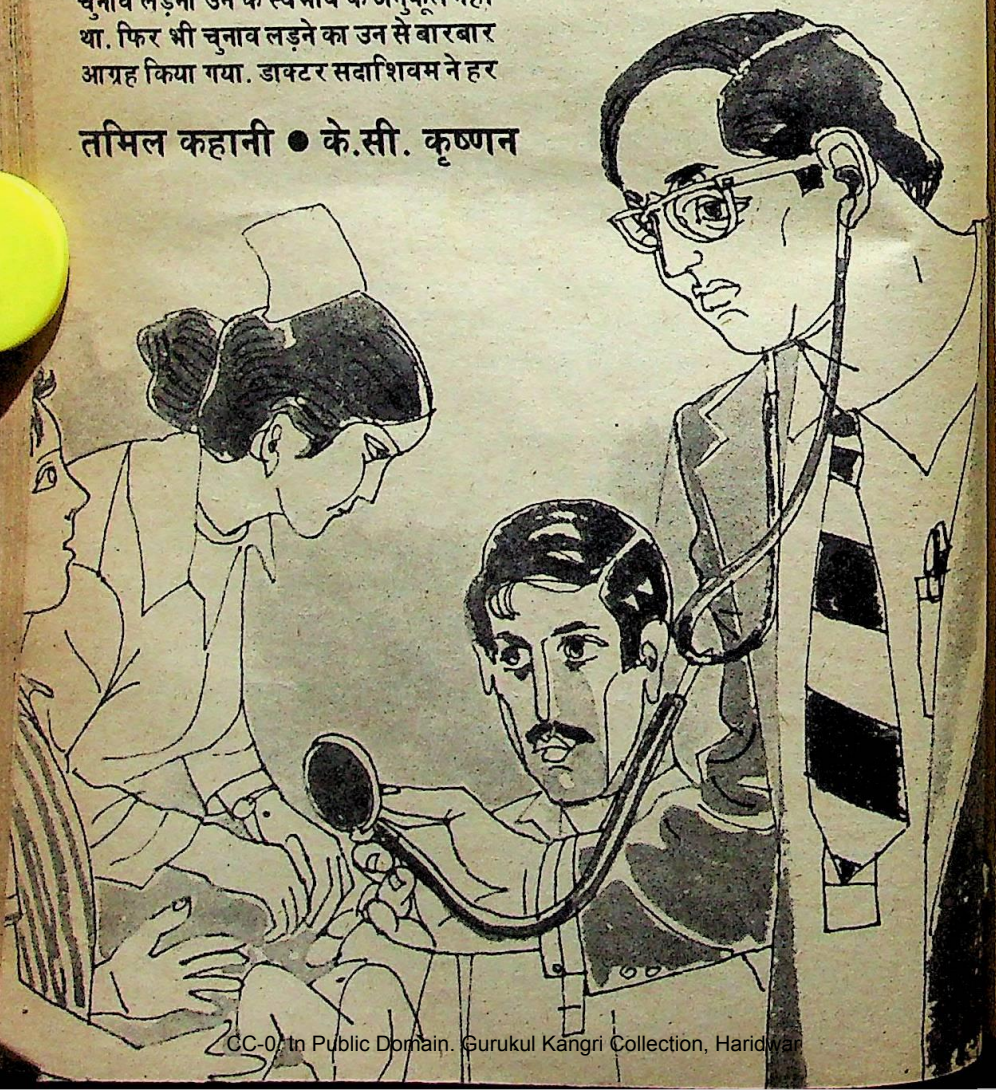

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

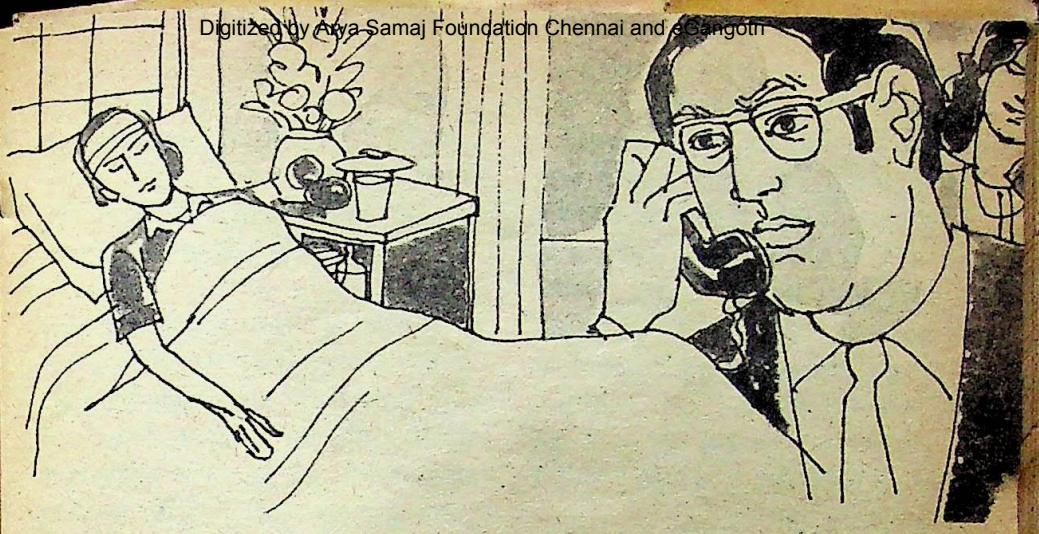

दीजिए. तभी वे खुशीखुशी काम कर सकेंगे."

चुनाव का परिणाम घोषित हुआ. हारने वाले श्रवणन ने विजयी उम्मीदवार सदाशिवम को माला पहनाई, उन से हाथ मिलाया और इस प्रकार अपनी सौम्यता व सौजन्यता की छाप छोड़ी. कार्यकर्ता जश्न मनाते रहे.

फिर डाक्टर सदाशिवम गांवगांव में घूम कर मतदाताओं को धन्यवाद देते रहे.

इन सब औपचारिकताओं में काफी समय निकल गया. सदाशिवम को हस्पताल में अपनी कुरसी पर बैठे और मरीजों का उपचार किए काफी समय हो चुका था. इस बीच रोगियों की देखभाल डाक्टर सदाशिवम की पत्नी मृंदा ने ही की, जो नर्स का काम भी करती थी.

मृंदा की सुंदर काया ऐसी गरिमा लपेटे थी कि देखने वाले के मन में श्रद्धा ही जाग्रत होती थी.

डाक्टर सदाशिवम के घर के पास मिट्टी व ईंटों की ढेरियां लगी थीं. इरादा था

"माफ कीजिए, मैं फिर बात करूंगा. इस समय मैं रोगियों को देखने में व्यस्त हूं." सदाशिवम बोले.▲

घर के बरामदे को ही हस्पताल का रूप दे दिया जाए, ताकि रोगियों की रातदिन देखभाल होती रहे. पर फिलहाल स्थिति यह थी कि मृंदा के गहने तक चुनाव की भेंट चढ़ चुके थे. अब तो घर में आवश्यक फेरबदल का निर्माणकार्य भी संभव न था क्योंकि अपने पेशे से धन कमाने में डाक्टर सदाशिवम की कोई रुचि नहीं थी. मृंदा न केवल अपने पति से प्रेम करती थी, बल्कि पति के मानवीय कार्यों को आगे बढ़ाने में अपने समस्त व्यक्तित्व, प्रेम, प्यार, सादगी आदि से पूर्ण योगदान करती थी.

पर विधायक बन जाने के बाद डाक्टर सदाशिवम पुराने अनुशासन पर कायम नहीं रह पा रहे थे. हस्पताल व रोगियों से उन का संपर्क पहले जैसा न रहा था. इधरउधर व्यर्थ ही घूमने की उन्हें लत लग चुकी थी. इस स्थिति को परख कर मृंदा मानसिक

राजनीति में जबरन लाए गए डाक्टर सदाशिवम वहां व्याप्त भ्रष्टाचार से घबरा कर इस्तीफा देने की सोच ही रहे थे कि अचानक एक नए विचार ने उन्हें चौंका दिया, और वह पुनः दृढ़ आत्मविश्वास के साथ कमर बांध कर उठ खड़े हुए.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कष्ट के दौर से गुजर रही थी. उस की समझ में नहीं आता था कि आखिर वह कैसे अपने पति की सहायिका की भूमिका निभाए.

उस दिन डाक्टर सदाशिवम बरामदे से जांच कक्ष में भेजे गए रोगी की जांच कर रहे थे. रोगी को अलसर था. निरीक्षण के बाद सदाशिवम ने रोगी से कहा, "दवा से आप की बीमारी ठीक न होगी. मैं पत्र लिख कर देता हूं. आप सरकारी हस्पताल में जा कर आपरेशन करा लें."

"पर डाक्टर साहब, आप ने तो खुद आपरेशन करने की बात कही थी," रोगी ने सदाशिवम को याद दिलाया.

सदाशिवम सोचने लगे. शल्य चिकित्सा की ऊंची डिगरियां ले कर आपरेशन की सारी व्यवस्था के होते हुए, मूंबा जैसी समझदार सहायिका के बावजूद-मात्र गोलियां और इंजेक्शन दे कर इलाज करना क्या उन्हें शोभा देता है? सदाशिवम ने डाक्टर मणि को फोन किया. मणि ने तुरंत सहमति दी, "क्या अलसर का आपरेशन है? कल सवेरे करना है? जरूर आऊंगा. चिंता न करें. मैं आप से पूरापूरा सहयोग करूंगा."

इस के बाद सदाशिवम अन्य रोगियों की जांच और चिकित्सा में जुट गए. तभी फोन की घंटी बजी. सदाशिवम ने चौंगा उठा कर कहा, "हां, मैं डा. सदाशिवम बोल रहा हूं."

"मैं यूनियन का प्रतिनिधि बोल रहा हूं समरसम. लेकिन आप अपने को डाक्टर सदाशिवम क्यों कह रहे हैं? कहिए, मैं एम.एल.ए. सदाशिवम बोल रहा हूं."

"जी, अभी तो मैं एक डाक्टर के रूप में हस्पताल में रोगियों के उपचार में लगा हूं."

जवाब में दूसरी तरफ से जो हंसी सुनाई दी, उस में अनादर का भाव शामिल था. डाक्टर सदाशिवम ने उस चोट को सहन कर लिया. फिर समरसम की आवाज आई, "हमारे कसबे में मंत्रीजी आ रहे हैं."

"माफ कीजिए, बाद में फोन कीजिएगा. फिलहाल रोगियों को देखने का समय है. मैं इस समय कोई दूसरा काम नहीं करता."

और फिर डाक्टर सदाशिवम पूर्ण निष्ठा के साथ चिकित्सक का कर्तव्य निभाने लगे.

अगले दिन सुबह शयनकक्ष से बाहर आते ही सदाशिवम को एक विचित्र अनुभव हुआ. एक बूढ़े और एक नौजवान ने भय और भक्ति की मिलीजुली भावना के साथ उन्हें अभिवादन किया. डाक्टर ने नमस्कार का जवाब देते हुए पूछा, "कहिए, क्या बात है?"

बूढ़े ने सकुचाते हुए एक लिफाफा उन की ओर बढ़ाया, जिस से कुछ नोट बाहर भी झांक रहे थे. सदाशिवम ने उन्हें प्रश्नवाचक मुद्रा में घूर कर देखा. बूढ़े ने कहा, "जी, पांच हजार रुपयों का प्रबंध तो नहीं हो सका. अपना घर गिरवी रखने पर मात्र चार हजार रुपए प्राप्त हुए हैं. वह ही ले आया हूं."

"पर ये रुपए किस लिए? आइए, अंदर आइए. जरा बैठ कर समझाइए."

बूढ़ा और नौजवान डरतेडरते बैठ गए. बूढ़े ने नौजवान को इशारा करते हुए कहा, "कहो न, इंजीनियरिंग की पढ़ाई के लिए कहां इंटरव्यू देना है?"

डाक्टर सदाशिवम उन के आने का उद्देश्य समझ गए. उन्होंने नौजवान से प्रमाणपत्र ले कर देखे. प्रतियोगी परीक्षा में वह 90% अंक लाया था. सदाशिवम प्रशंसा के भाव से बोले, "तुम्हें जरूर जगह मिलेगी. जा कर इंटरव्यू में भाग लो. प्रधानाध्यापक ने भी तुम्हारे चरित्र की सराहना की है. और फिर विधायक का भी प्रशंसापत्र देख रहा हूं. क्या इसे यूनियन सचिव से प्राप्त किया है?"

"जी हां, हम तो गरीब लोग हैं, इसलिए समरसमजी ने मात्र 10 रुपए लिए, वैसे वह दूसरों से 50 रुपए लेते हैं."

सदाशिवम दंग रह गए. उन्हें यह कहावत याद आने लगी कि अपने हथियार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

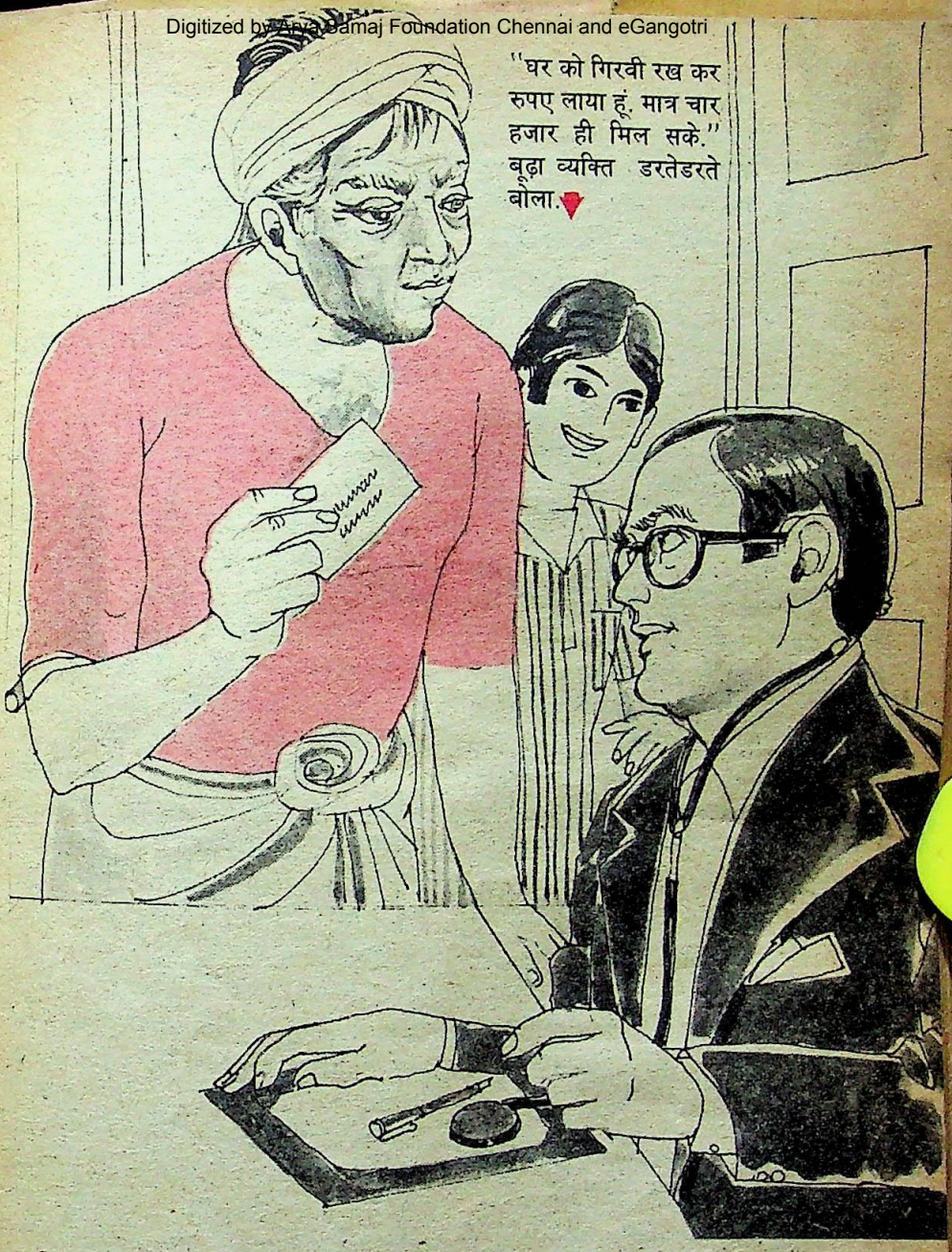

और अपना धन दूसरों को सौंपने वाला आदमी बेवकूफ होता है.

इंजीनियरिंग में प्रवेश के प्रत्याशी उस नौजवान से कहा गया था कि विधायक के जरिए मंत्रीजी को पांच हजार रुपए देने पर ही काम बनेगा. सीधे विधायक तक न जाने की भी हिदायत दी गई थी. इसलिए वे लोग सीधे समरसमजी के घर ही गए थे. घर पर उन के न होने के कारण वे सदाशिवम के पास आए थे. उस गुस्ताखी के लिए वे लगातार क्षमा याचना भी कर रहे थे.

सदाशिवम का शरीर गुस्से और क्षोभ के मारे कांपने लगा. उन्होंने बड़ी मुशकिल से खुद को संभाल कर कहा, "कल इंटरव्यू है न. आप के बेटे को जरूर इंजीनियरिंग कालिज में दाखिला मिलेगा. किसी से मिलने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की जरूरत नहीं है, न ही किसी का पैसा देना है क्योंकि आप के बेटे के समान अंक बहुत कम लोगों ने ही प्राप्त किए होंगे."

"पर अगर दाखिला न मिला तो क्या होगा? कृपया इन रुपयों को रख ही लें. शायद एक हजार रुपए कम होने की वजह से आप हमें टाल रहे हैं. बेटे का प्रवेश होते ही बाकी हजार रुपए मैं भीख मांग कर भी चुका दूंगा. नहीं तो आप के घर नौकर बन कर भी..."

बूढ़े की आंखों में आंसू थे और उस का कंठ अवरुद्ध हो चला था. उस का खयाल था कि पैसे स्वीकार कर लिए जाने पर ही उस का काम हो पाएगा.

सदाशिवम ने उन्हें हर तरह से भरोसा दिलाया. फिर भी वे खिन्न मन से ही लौटे.

सदाशिवम भीतर ही भीतर क्रोध से उबल रहे थे. इस तरह के नीच और निंदनीय कार्य बंद होने ही चाहिए. उन्होंने जल्दीजल्दी में काफी पी और मृंदा से डाक्टरी बैग ले कर समरसम से मिलने चल दिए.

वहां पहुंच कर सदाशिवम ने देखा कि वे बूढ़ा और नौजवान समरसम के घर से ही निकल रहे हैं, 'ओह, इन पर मेरी हिदायतों का कोई असर न हुआ? आखिर इन्हें मुझ पर भरोसा क्यों न हुआ? इन लोगों को सुधारना भी बहुत ही मुश्किल है.'

दरवाजे की घंटी बजाते ही खिड़की से एक चेहरे ने झांकते हुए जवाब दिया, "समरसमजी नहीं है."

जबकि डाक्टर सदाशिवम को पूरा विश्वास था कि समरसम घर में ही होंगे. सरकारी हस्पताल लौट कर उन्होंने मंत्रीजी को फोन करने की कोशिश की पर बारबार नंबर मिलाने पर भी संपर्क न हो सका.

सदाविशम ने खीज कर चोंगा रख दिया. तभी फोन की घंटी बजी. सदाशिवम के जवाब देने पर दूसरी तरफ से आवाज उभरी, "मैं मृंदा बोल रही हूं."

"हां, क्या बात है, मृंदा?"

"आप जल्दी चले आइए."

"मैं मंत्रीजी के लिए काल बुक कर के इंतजार में बैठा हूं"

"हाय, नाश हो जाए उस का. आप जल्दी यहां आइए."

"आखिर, बात क्या है, कुछ बताओ भी."

"एक गर्भपात का केस है. बहुत अधिक रक्तस्राव हो रहा है."

"इस तरह का केस क्यों ले लेती हो? कह तो चुका हूं कि ऐसे मामले सरकारी हस्पताल में भेज दिया करो."

"क्या यह सब एक डाक्टर बोल रहा है? खैर, आप आ रहे हैं या नहीं?" कहतेकहते मृंदा रो पड़ी.

"अभी आया मैं."

डाक्टर सदाशिवम तत्काल चल दिए. पत्नी की कर्तव्य भावना के बारे में सोचकर उन्हें गौरव का अनुभव हो रहा था.

उन के निजी हस्पताल में अचेत पड़ी युवती के रक्त के ग्रुप की जांच कर के मृंदा रक्तदान करने के इच्छुक व्यक्ति को बुलावा भेज चुकी थी. जब डाक्टर सदाशिवम वहां पहुंचे तो रक्तदान करने वाले लयन षणमुख सुंदरम भी आ गए थे.

अचेत मरीज के शरीर में रक्त की प्रत्येक नई बूंद ने नवजीवन का संचार किया. अगले दिन इस युवती ने (जिस का नाम मोहना था) मृंदा को अपनी रामकहानी सुनाई, "बी.ए. पास करने के बाद शिक्षणप्रशिक्षण विद्यालय में दाखिल होना चाहती थी. सात हजार रुपयों की मांग हुई. गरीबी के कारण पैसे देने की स्थिति में न थी. तो कहा गया—फिर अपना शरीर दो. कोई अन्य विकल्प न था."

सदाशिवम और मृंदा आगबबूला हो उठे. पर वे कर भी क्या सकते थे? कुछ भी तो नहीं. एक नारी का जीवन, उस का भविष्य नष्ट हो चुका था. उस ने खुद अपने पांवों पर कुल्हाड़ी मार ली थी.

उस दिन मंत्रीजी एक नए भवन का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ताज़गी का संदेशा लिये एक नई बहार आई है। क्रिस लाईम सोप। नींबू की प्यारी सुगँध! मन में उभरती हुई खुशी। क्रिस लाईम सोप से नहा कर तो देखिये। आप कह उठेंगे, 'मज़ा आ गया!'

K-87

A Kusum Product
विश्वास के साथ खरीदिये

नींबू की महकती ताज़गी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उदघाटन करने वाले थे. उदघाटन समारोह का निमंत्रण सदाशिवम को भी मिला था. उन्हें ही समारोह की अध्यक्षता भी करनी थी.

निश्चित समय पर मंत्रीजी पधारे थे. वह स्थानीय डाकबंगले में ठहरे थे. मंच पर मंत्रीजी के साथ बैठे सदाशिवम ने कई बार उन से बात करने की चेष्टा की थी, पर कामयाब न हुए थे..

आखिर रेलवे स्टेशन पर विदाई के समय मंत्रीजी को सदाशिवम पर दया आ ही गई. कहने लगे, "आप के विरुद्ध कई रिपोर्टें आई हैं. देखिए, इस स्मरणपत्र पर कितने लोगों के हस्ताक्षर हैं."

सदाशिवम ने कांपते हाथों से ले कर उन कागजों पर दृष्टि डाली. लिखा था:

"विधान सभा के हमारे प्रतिनिधि आम जनता को दर्शन नहीं देते. दल के सच्चे कार्यकर्ताओं का आदर नहीं करते. कुमारी युवतियों के गर्भपात करना और चरित्र प्रमाणपत्र दे दे कर कमाई करना—यही उन के कार्य हैं."

लेटर प्रेस व आफसेट पर
कम लागत व उत्तम छपाई
के लिए प्रयोग करें

चंपक मुद्रण स्याही
चंपक इंक्स
ई-3, झंडेवालान, नई दिल्ली-110055.

उस पर सैकड़ों हस्ताक्षर थे. सदाशिवम ने फंसीफंसी आवाज में कहा, "जी, इस का कारण है..."

"मैं कारण नहीं पूछता. आप ने दल के कर्मठ कार्यकर्ताओं को निराश किया है. क्या आप को पता है कि चुनाव में आप की जीत कैसे हुई? आप के विरोधियों की जमानतें तक जब्त हो गईं. इस पर आप ने कभी सोचा है? ये सभी पार्टी के लिए जान देने वाले व्यक्ति हैं. आप तो चुनाव के समय पार्टी में आए. अगर आप को पार्टी के कार्य पसंद नहीं हैं तो आप इस्तीफा दे कर जा सकते हैं."

"जी, मेरे कहने का मतलब है..."

"मैं समझता हूं कि आप जो कुछ भी कहना चाहते हैं, मैं पहले ही उस का जवाब दे चुका हूं."

और रेलगाड़ी मंत्रीजी को ले कर चली गई. मन का तूफान शांत होने तक सदाशिवम मूर्तिवत खड़े रहे. किसी ने उन का स्पर्श किया तो उन्होंने सिर उठाया. समरसमजी थे, "आइए, अब चला जाए."

कार में भी सदाशिवम मौन रहे. देर तक उन के मन में भावनाएं उमड़तीघुमड़ती रहीं, 'इन सब से छुटकारा पाने के लिए इस्तीफा देना तो बहुत ही आसान है पर इस से क्या लाभ होगा? क्यों न इन के साथ रह कर ही इन्हें अनुशासित किया जाए और निर्वाचन क्षेत्र के लोगों की सेवा की जाए. आम व्यक्ति बन कर कोई लाभ नहीं. विधायक बन कर विशेषाधिकारों की सहायता से इन की सेवा करने का अधिक मौका मिलता है. यह बात और है कि सभी ऐसा नहीं सोचते. यह भी सच है कि जो हाथ माला पहनाते हैं, वही गला भी घोंट सकते हैं.

'मैं डाक्टर हूं. मैं इन के मन की बुराई को धो कर वहां सौंदर्य की स्थापना करूंगा. मैं सेवा करूंगा. मैं यह पहले ही क्यों सोच लूं कि मुझे सफलता नहीं मिलेगी?'

डाक्टर सदाशिवम ने मुसकराते हुए समरसम को देखा. अब डाक्टर का मन शांत था, चेहरे से आत्मविश्वास और इतमीनान झांक रहा था.—अनुवाद आर. जयप्रकाशम ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

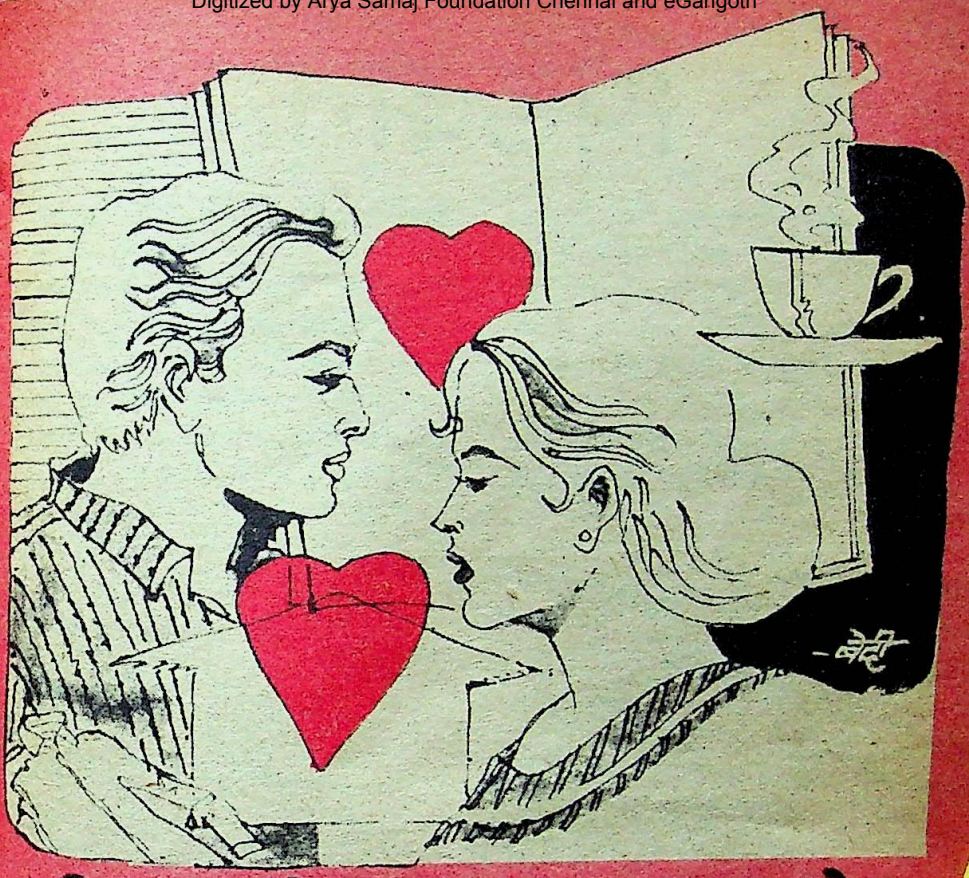

कितनी बार पूछा है

आप अपने प्यार को
क्यों नहीं बताते,
ऐसा तो हो ही नहीं सकता
कि आप ने प्यार न किया हो.
मुझे तो ऐसा लगता है, किसी ने
आप को धोखा दिया है.
अगर नहीं हो बताइए,
और आज ही सुनाइए.
बसंत ऋतु में किए गए
तुम्हारे इकरार को मैं नकार नहीं सका
मैं ने प्यार किया उस सफेद कमीज को
जिसे मैं ने स्वप्न में संजो रखा था.
मैं ने प्यार किया उस किताब को
जिसे परीक्षा की घड़ी में,
एकाएक पाया, बारबार चूमा
प्यार किया उस गुड़ की चाय को
जिसे पहली बार होंठों से लगाया,
प्यार किया उस टूटे छप्पर की पैबंद को,
जिस ने पानी के टपटप को बंद किया
प्यार किया उस नंगधड़ंग जीव को
जिस की बहती हुई नाक को अपनी
सफेद कमीज से पोंछ दिया.
यही मेरा प्यार है, जिसे
बारबार तुम्हें सुनाने को जी चाहता है
पर यह क्या? तुम सुनतेसुनते
टेलीविजन की आवाज तेज कर देती हो
और अपने प्यारे बच्चे को, टिशू पेपर से
नाक पोंछने की सलाह देती हो.

-श्यामराज उपाध्याय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पिंडदान

कहानी • जगवीरसिंह वर्मा

"अरे, अरे, गजब है गया, इत्ता दिन चढ़ आया और अबई तक कछु प्रबंध नांय दिखाई दे रहा है. कहां है सुक्खन की बहुरिया?" बाहर से ब्राह्मणों की कई एक आवाजें घर के भीतर घुस आईं.

"रो मत, दुलारी, रो मती, देख, आज तेरहवीं है, सगरे काम शांति से विधपूरवक करनौ चाहिए. जे तो सब समझ सकत हैं किया ते जादा दुख औरत के ल्यां और का है सकत है. बामन आय गए हैं. आंसू पोंछ, बेटी, और पिंडदान करवा. जान वारौ चलौं गयौं, अब आंसू बहाइबे ते कुछ नाय होयगो," पीहर से शोक में आई दुलारी की चाची ने कहा. उसने

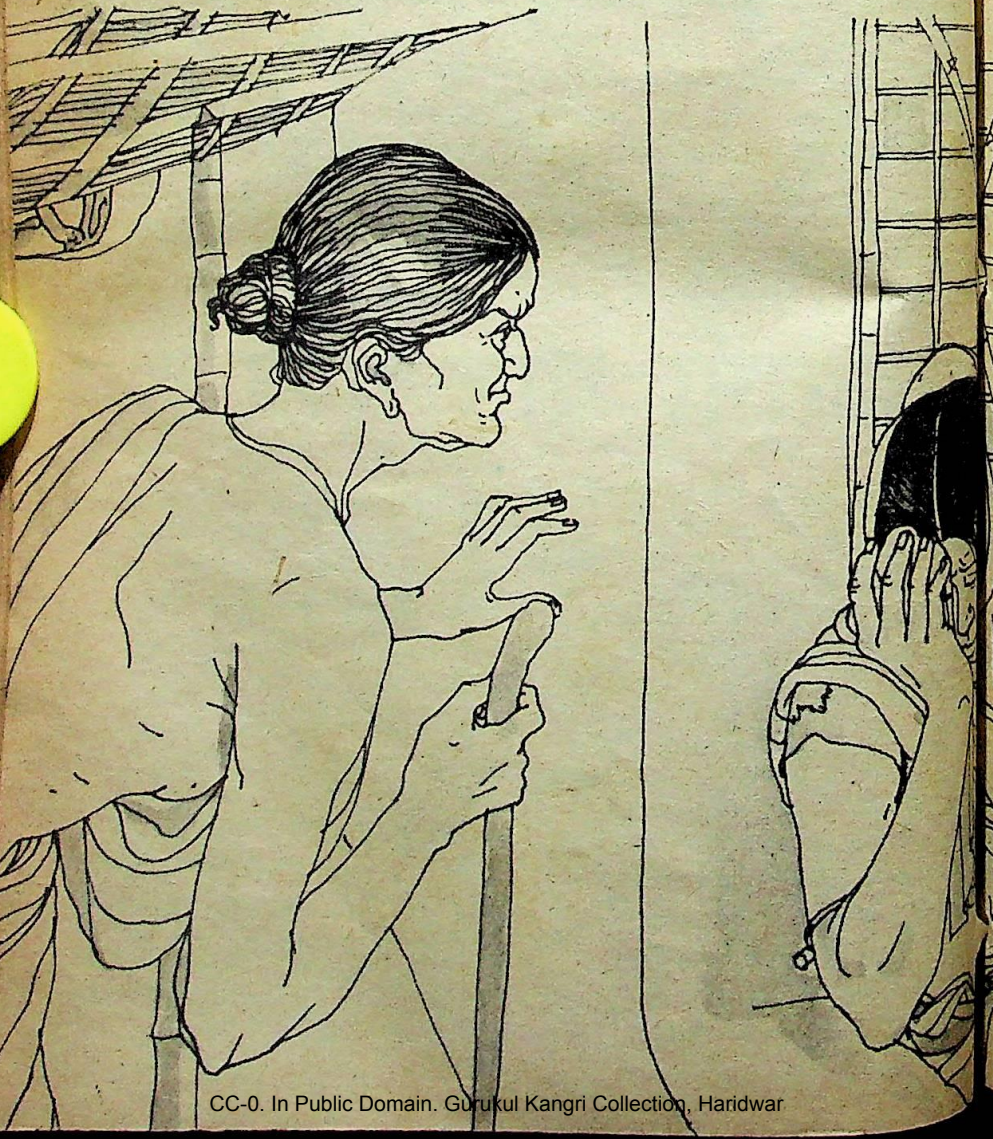

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फड़कते हुए अपने होंठों को भींचा और किसी तरह हृदय के आवेग को थाम कर आंसू पोंछने लगी.

काफी लंबा घूंघट काढ़े, फटी सी कमीज और फटी सी धोती में नाक सुड़कते और जाड़े के मारे ठिठुरते दो अनाथ बच्चों को साथ लिए वह आंगन में आ खड़ी हुई.

"बहू, सामान जुटा.अबेर भई जाय रही है. सूरज निकरबे ते पहले पिंडदान है जानो चहिए हो. सास्तरन में लिक्खो है."

शास्त्रों में क्याक्या लिखा है, यह अभागिन दुलारी क्या जाने. उस ने तो लोगों के मुंह से ही सुन रखा है कि कोई गरुड़ पुराण है जिस में लिखा है कि आदमी की आत्मा मरने के बाद प्रेत योनि में भटकती रहती है और पिंडदान पाने के बाद ही उस की सदगति होती है. इसलिए पिंडदान हो जाना चाहिए और वह जरूरी भी है. इस से अधिक उसे और कुछ जाननेसमझने की जरूरत नहीं थी. किसी तरह भीतर से उमड़ती रुलाई को थाम कर हाथ जोड़ कर बोली, "सामान का जोरूं, पंडितजी. काऊ तरह कुशतिल बहा दे ओ, उन्हें पितरन में मिला दे ओ, बाकी मैं दुखिया और आप की का सेवा करिबे लायक हूं." दुलारी ने कांपते होंठ भींचे.

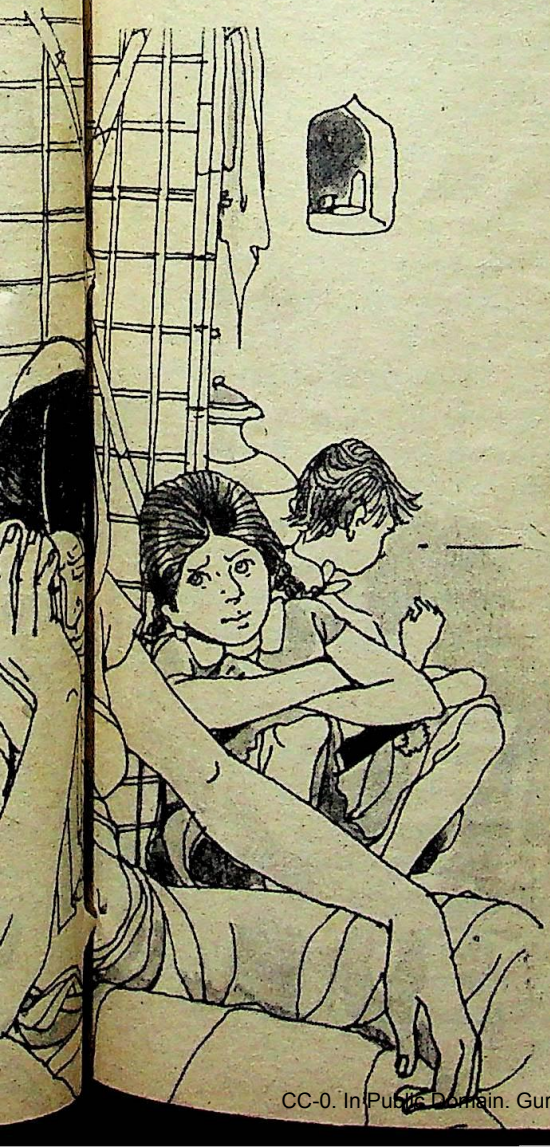

सब की आंखें आश्चर्य से चौड़ी हो गईं, मानो दुलारी ने कोई विचित्र बात कर दी हो. ऐसा अंधेर भी करेगी यह दुलारी, इस की उम्मीद किसी को नहीं थी. इसी लिए शायद सब की आंखों से आश्चर्य के साथसाथ उपेक्षा भी बरसने लगी.

कुछ देर तक चुप्पी छाई रही. फिर हरचरन ब्राह्मण ने खामोशी तोड़ कर कहा, "खैर, कछु बात नांय, पितरन में तो वा कूं मिलानो ही परे, परि सिरधा जित्ती होय, उतनी तो करना ही चहिए. काजकरम में जो जितनो लगावे है, उतनो वा कूं वहां मिले है. तेरह बामन नांय जिमाय सकत तो पांच तो जिमाने ही परें. पांचपांच, दसदस के नांय तो

पति की अकाल मृत्यु से टूटी लाचार, बेसहारा, फटेहाल दुलारी को पिंडदान के लिए मजबूर करने वाले क्रूर समाज में से क्या एक भी हाथ उसे सहायता देने के लिए आगे बढ़ा था?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सवासवा रुपया के ही दोतीन गोदान कर दे. गरुन पुरान में अएसो ही लिखा है, च्यों?" उन्होंने अपने निकट खड़े जोगेश्वर ब्राह्मण की तरफ गरदन फेरी. वह दूसरी ही उधेड़बुन में लगे थे. सोच रहे थे कि अब पंडिताइन को दोबारा चूल्हा जलाना पड़ेगा और परेशानी होगी. इसलिए उन्होंने अनमने भाव से समर्थन में केवल सिर हिला दिया.

गरुड़ पुराण की बात सुन कर दुलारी हतप्रभ हुई और शोकातुर हो कर बोली, "पंडितजी, पुरानन में तो पतौ ना काका लिखो है, मेरो इतनो बित्त कहां. गे सब तो बड़ेबड़े लोगन के ल्यां है. मेरे ढिग तो जौतिल बहाने कूं भी दाम नांय, बालक ही द्वै दिना ते अध पेट खाय रहे हैं." दुलारी अपने को संभाल न पाई.

यह क्या कह रही है, किसी की भी समझ में नहीं आ रहा था. किसी को भी उस के कहे पर विश्वास नहीं हो पा रहा था. सुक्खन दसियों बरस से गांव के सब से बड़े काश्तकार का चौथाई का साझेदार रहा और उस के घर की यह हालत! कहां गई सारी कमाई? आज पिंडदान के लिए भी उस की बहू असमर्थता प्रकट कर रही है. कुशतिल भी बहाने का कोई ढंग दिखाई नहीं दे रहा है.

दुलारी अंदर जा कर औंधे मुंह गिर पड़ी, सिसकने लगी, सुबकने लगी.

"दुलारी! दुलारी! बामन तेरे घर में बैठे हैं और तू रोय रही है. आंख फोर रही है, भला रोए ते का है सकत है! समझ से काम ले, बेटी, पिंडदान करवा. तेरहवीं तो करनी ही परे, नहीं तो पिरेत योनि ना छूटेगी. और फिर या ही दिना के ल्यां तो लोग अपने बहूबालकन कूं याद करें हैं. बेटी, बख्त निकरो जाय रहयो है, अनर्थ है जाइगो, जल्दी कछु कर."

"मैं का करूं, चाची. मैं लाचार, बेसहारा और गरीब औरत हूं. तुम्हीं बताओ का करूं मैं. कौन के ढिग जाऊं और कैसे कछु मागूं. लोग का कहेंगे." और फफकफफक कर रोने लगी. बच्चे सहमे, दुबके से कोने में खड़े थे. उन की समझ में कुछ नहीं आ रहा था कि यह सब क्या हो रहा है.

"अरी, तो पासपरोस काहे ल्यां होंय. का ऐसे बखत में तेरी कोई मदद न करैंगो. जाय के तो देख. अब या ते जादा और बुरो बखत तो पे कब आवेगो."

"चाची, आजकल अपने भइयाभतीजे रिश्तेदारन के ल्यां जब लोग मदद ना करें तो मेरो कौन का लगे! या गांम के सगरे रिश्ता उन के ही पीछे हैं, जब गो ही न रहे तो अब मोय कौन पूछेगो और तुम कहत हो तो कहूं देखूंगी जाय के..."

दुलारी ने टूटीफूटी कच्ची दीवारों को देखा, टूटीफूटी सोटों (कड़ियों) वाली छत को देखा जिस में से सूरज की किरणें छन कर भीतर कोठे में आंखमिचौनी खेल रही थीं. उस के दिल में एक भभूका सा उठा जिस से लंबी और गहरी उसांस निकल पड़ी. आंखों को मल कर फौरन उठी और पिछले दरवाजे से निकल कर गली में आ गई. किस के पास जाए? एक क्षण खड़े हो कर उस ने सोचा... और उस के दिमाग में एक विचार कौंध गया. क्यों न वह लखना के पास जाए. वह उन का दोस्त था. बड़ी उठबैठ थी. शायद इतनी सी मदद कर दे.

यह सोच कर वह लखना के घर की ओर बढ़ चली. अभी उस ने दस कदम ही बढ़ाए होंगे कि रास्ते में अपने घर के सामने उसे कल्लू पंडित की घरवाली रामश्री खड़ी मिल गई. वह कतरा कर भाग जाना चाहती थी क्योंकि वह नहीं चाहती थी कि उसे राह बीच कोई मिले और उस से कोई बात कह बैठे. लेकिन बच कर भागने का कोई रास्ता नहीं था. फिर भी उस ने अपनी नजर झुका ली और रामश्री को अनदेखा कर के उस के सामने से गुजरना चाहा. लेकिन वह टोक बैठी, "ऐं..या. बख्त कहां जाय रही है, दुलारी? का बामनों का खानपीन होय गया?"

"अभी, ना," चलतेचलते ही दुलारी ने जवाब दिया.

"क्यों?"

पर पलट कर दुलारी ने फिर कोई जवाब नहीं दिया और शीघ्रता से आगे बढ़ गई.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लखना के घर पहुंची तो उस की घर वाली से पता चला कि वह तो तीन दिन पहले अपनी बहन के यहां गया था और अभी तक नहीं लौटा है. दुलारी की हिम्मत लखना की घरवाली से कुछ कहने को नहीं हुई. पर जैसे ही वह वापसी के लिए पलटी, लखना की घरवाली ने पूछ लिया, "का बात ई?"

"कुछ ना, गो होते तो कुछ कहती," उस ने निराश स्वर में कहा.

"हमें नांय बता सकत? और, हां, पिंडदान होय गया?"

"नांय, घर में कछु नांय, जाई ते आई ही. गो तो नांय, तुम ही कछु मदद कर देओ, बहन," वह गिड़गिड़ा उठी.

यह सुन कर लखना की घरवाली की भौंहों पर बल पड़ गए पर प्रकट में सहानुभूति जताते हुए वह बोली, "गो होते तो कुछ प्रबंध कर बी देते. मेरे ढिग तो एक फूटी कौड़ी भी नांय."

"दुलारी, क्या तोय लोकपरलोक कौ नेंकऊ लिहाज नांय. अपने आदमी की आत्मा की जरा भी चिंता नांय." ब्राह्मण क्रोधित हो कर बोला.

इस सहानुभूति ने दुलारी का साहस बंधाया. बोली, "कुशतिल ही दे दो, बहन, मैं काम चला लूंगी."

"कुशतिल." वह ऐसे चौंकी जैसे दुलारी ने कोई बहुत अनोखी बात कह दी हो. कुछ रुक कर बोली, "का कुशतिल को भी इंतजाम नांय? हमें का जरूलत परत है,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहन." उस ने अफसोस जाहिर किया. फिर एकदम बोली, "अरे, हां, रधिया के यहां हैं, वा पे ते मांग लियो."

खना की घर वाली की बनावटी सहानुभूति को दुलारी ने अब भांपा और आंसुओं की जगह उस की आंखों में खून उतर आया. उस के शरीर में कांटे से चुभने लगे... नहीं, अब वह कहीं नहीं जाएगी... किसी से कुछ नहीं मांगेगी... नहीं होगा पिंडदान... न... हो... वह क्या कर सकती है.

और वह वहां से भागती आंधी के वेग की तरह घर में घुस आई. खाली हाथ देख चाची का माथा ठनका. ब्राह्मण पहले तो आशा से सम्हल कर बैठ गए थे पर अब भौंचक रह गए. वही बुजुर्ग ब्राह्मण बोले, "दुलारी, दोपहर होय गयो. तू का कर रही है? का तोय लोकपरलोक कौ नेंक ऊ लिहाज नांय. अपने आदमी की आत्मा की जरा भी चिंता नांय?"

"पंडितजी, मैं भौत लाचार हूं. जो होयगो है जयगो, बाकी पिंडदान नांय है सकत. मेरे वश की कछु नांय, आप लोग मेहरबानी कर के और मोय का माफ कर के अपने घर जाय सकत हैं. हां, काऊ के कुशतिल होंय और कोई मोय कछु कर्ज दे सके तो मैं बाके मेहनतमजूरी कर के उतार दऊंगी."

"मेहनतमजूरी करेगी, उतार देगी, इत्ता ही खयाल होता तो पहले ना कर लेती मेहनतमजूरी..." ब्राह्मण आपस में फुसफुसाए और फिर श्राप दे कर होंठ बिदकाते हुए क्रोधित मुद्रा में घर से चल दिए. "राम, राम, कैसी कलिजुगी औरत है, राक्षसिनी ने जौतिल तक ना बहाए. उलटे हम से कर्ज मांगे ही, ब्राह्मणों ते कर्ज... ब्राह्मण भूखे वापस जाय रहे हैं...या ही मारे तो है गे हालत, श्रद्धा ही नांय..."

"त्रियाचरित्तरकाऊ ते न समझो". एक ने घर से बाहर निकलतेनिकलते कहा. बात की बात में दुलारी के पिंडदान न करने की खबर सारे गांव में फैल गई और तरहतरह की चर्चाएं छिड़ गई.

बच्चे भूख से बिलबिला रहे थे. सुबह से तो एक कौर भी मुंह तक न पहुंचा था. कुछ क्षण तक वह एकटक बच्चों के निरीह अलसाए, मुर्झाए और फीके से चेहरों को ताकती रही और फिर एकदम बोली, "चाची, तू बालकों कूं सम्हालना, मैं भट्टे पर जाइ रही हूं, सांझ तक की कछु तो मजूरी मिलेगी ही."

और वह घर से निकल गई. उस की आंखों में आंसू नहीं, एक दृढ़ निश्चय था. उस की चाल में मजबूती थी, कुछ करने की तमन्ना थी. उस के दिल में हौसला था और पिंडदान न होने का उसे कोई मलाल नहीं था.

पाठकों की सेवा में:

सरिता

में

सिगरेट, शराब, लाटरी (सरकारी जुआ/धोखाधड़ी) बोगस पत्राचार शिक्षण संस्थाओं के विज्ञापन प्रकाशित नहीं किए जाते और न ही जनभ्रामक ज्योतिष की साप्ताहिक या पाक्षिक तथाकथित भविष्यवाणियां.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वरना कल कहीं बिटिया को डिब्बा भर मिट्टी तेल के लिये एक ग्राम सोने से भी ज्यादा कीमत न देनी पड़े !

हमेशा नीली लौ पर ही खाना पकाइए !

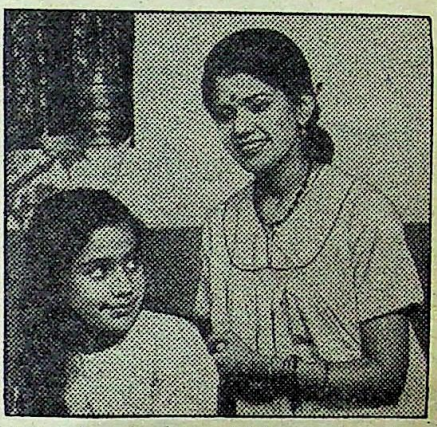

नीली लौ ही सबसे ज़्यादा ताप देती है। अगर आपके स्टोव में पीली लौ आती है तो उसकी बत्तियों को बराबर कतरना या बदलना जरूरी है। जली हुई ऊँची नीची बत्तियों का मतलब है मिट्टी के तेल की ज्यादा खपत।

इसलिये अपने स्टोव की बत्तियां हमेशा साफ और बराबर रखिये। अन्यथा मिट्टी का तेल ज्यादा दिन तक नहीं चलेगा। याद रखिये मिट्टी के तेल की बचत, आपके बच्चे के भविष्य की योजना का ही एक अंग है।

घर में मिट्टी का तेल बचाने के कुछ अन्य सुझाव :

* खाना हमेशा प्रेशर कुकर में पकायें।
* हमेशा नूतन स्टोव का इस्तेमाल करें। इससे 25% तक मिट्टी के तेल की बचत होती है।
* दाल, चना आदि पंकाने से पहले पानी में भिगो दें।
* बर्तन में पानी कम से कम मात्रा में रखें।
* बर्तन में पक रहा खाना जब उबलने लगे तो लौ कम कर दें।
* फ्रिज से निकाले खाने को गर्म करने से पहले उसे कमरे के तापमान पर आने दें।
* चौड़े तले वाले बर्तन में खाना पकायें जिससे ताप का पूरा लाभ मिल सके।
* खाना ढक्कनदार बर्तन में पकायें।

कृपया मुझे, घर में मिट्टी तेल/गैस की बचत से संबंधित और जानकारी दें।

नाम : _____

पता : _____

_____

_____ PCRA/O/87

PCRA

पेट्रोलियम
कन्ज़र्वेशन रिसर्च एसोसिएशन
३०६, सेठी भवन, ७, राजेन्द्रा प्लेस,
नई दिल्ली-११०००८

आज से ही मिट्टी का तेल बचाइये
वरना जल्दी ही यह सोने से महंगा मिलेगा

Mudra:D:PCRA 2716 HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारी बेड़ियां

हमारे यहां त्योहार और विशेष अवसर पर घर में कच्चा खाना (रोटी, चावल आदि) नहीं बनता है. पिछले वर्ष मेरे बड़े भाई साहब अपने जन्मदिन पर बहुत बीमार थे. डाक्टर ने उन्हें पक्का खाना (तला हुआ) खाने के लिए सख्ती से मना किया था.

मेरी माताजी उन के लिए खिचड़ी बनाने लगीं. लेकिन दादीजी ने मना कर दिया और भैया को जबरदस्ती पक्का खाना ही खिलाया. अगले दिन उन की हालत गंभीर हो गई. फलस्वरूप उन्हें अपनी जान से हाथ धोना पड़ा. —अनिता रानी

होलिका दहन के अवसर पर हमारे यहां बड़ेबूढ़े, बच्चे, स्त्रियां सभी जलती होलिका की परिक्रमा करते हैं. उस के बाद धान सेंका जाता है और मिठाई बंटती है.

पिछले साल हमारे महल्ले में धधकती होलिका की परिक्रमा कर रही एक 70 वर्षीया वृद्धा का पैर फिसल गया. वह आग में जा गिरीं. उन्हें तत्काल हस्पताल पहुंचाया गया. परंतु वह काफी झुलस गई थीं. काफी प्रयास के बाद ही उन्हें बचाया जा सका.

—शिवरतन शर्मा

हमारे कुमांऊ क्षेत्र में मां की मृत्यु पर छोटा लड़का उस का दाह संस्कार करता है. पिछले वर्ष मेरी दादीजी की मृत्यु हो गई. उन दिनों मेरे चाचाजी बहुत बीमार थे. लेकिन प्रथा के अनुसार उन्हें मटकी ले कर नंगे पैर कड़कती धूप में पहाड़ी रास्तों पर अर्थी के आगेआगे चलना पड़ा.

तभी अचानक उन्हें कमजोरी के कारण चक्कर आ गए. जब तक उन्हें कोई संभालता, वह पहाड़ से नीचे लुढ़क गए

-संजय नियाल

मेरे मित्र के दिवंगत पिताजी का जिस दिन श्राद्ध था उसी दिन उस की बैंक में भरती से संबंधित परीक्षा भी थी. परीक्षा नजदीक के ही शहर में होनी थी.

मां के मजबूर करने पर मेरे मित्र को घर पर रुक कर ब्राह्मणों को भोजन कराना पड़ा. भोजन करातेकराते परीक्षा में कुछ मिनट शेष रह गए थे. वह बिना भोजन किए ही स्कूटर किराए पर ले कर जब परीक्षा केंद्र पर पहुंचा तो देर होने के कारण उसे परीक्षा में बैठने से वंचित कर दिया गया.

इस प्रकार एक रूढिवादी मां के कारण बेचारे उस के होनहार बेटे का भविष्य अंधेरे में डूब गया. —उपेंद्रकुमार शर्मा

मेरे मित्र की पत्नी जब कई वर्षों के बाद पहली बार गर्भवती हुई तो उस की सास ने इस वहम से कि कहीं बच्चे को नजर न लग जाए, उस का बाहर निकलना बंद करा दिया.

8वें माह में पत्नी की तबीयत खराब होने के कारण मित्र चुपचाप उसे डाक्टर के पास जांच के लिए ले गया. डाक्टर ने बताया कि बच्चा सामान्य स्थिति में नहीं है, इसलिए प्रसूति हस्पताल में करानी पड़ेगी.

जब मित्र ने यह बात अपनी मां को बताई तो उस ने हस्पताल में प्रसूति कराने से मना कर दिया. प्रसूति के दिन 24 घंटे की घोर प्रसव वेदना झेलने के कारण अनाड़ी दाई बहू और बच्चे को बचाने में असफल रही.

—विजयकुमार 'विजय'

इस स्तंभ के लिए अपने तथा अपने संबंधियों के अनुभव भेजिए. प्रत्येक प्रकाशित अनुभव पर 30 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. अपने अनुभव इस पते पर भेजें. संपादकीय विभाग, सरिता, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रोशिए से बुना बाबा सूट

गुलाबी व सफेद रंग की ऊन से बुना यह बाबा सूट बच्चों पर खूब खिलेगा. आप भी एक बना ही डालिए.

सामग्री: 5 गोले गुलाबी ऊन व 1 गोला सफेद ऊन, 10 नं. का क्रोशिया व मोटी सूई.

संकेत चिह्न: चे.-चेन, ट्रे.-ट्रेबल, ड.क्रो.-डबल क्रोशिया, स्लि.स्टि.- स्लिप स्टिच.

कोट: 113 चें. बना कर प्रत्येक चे. पर 1-1 ट्रे. बनाते हुए एक पंक्ति बनाएं. यह ध्यान रखें कि प्रत्येक पंक्ति में पहले ट्रे. के स्थान पर 2 चे. बनाएं. अब नमूने की पंक्तियां इस प्रकार बुनें:

पहली पंक्ति (गुलाबी): 2 ट्रे. पर 2 ट्रे., * 3 ट्रे. छोड़ कर अगले ट्रे. पर 2 ट्रे. 1-चे. 2 ट्रे. * चिह्न से चिह्न तक दोहराती जाएं. अंत में 3 ट्रे. छोड़ कर 2 ट्रे. पर 2 ट्रे.

दूसरी पंक्ति (सफेद): पहले ट्रे. पर स्लि. स्टि. द्वारा जोड़ें. 3 चे. * पहली पंक्ति में छोड़े गए 3 ट्रे. में से बीच वाले पर 1 ड.क्रो., 4 चे. * चिह्न से चिह्न तक दोहराती जाएं. अंत में 3 ट्रे. में से बीच वाली पर 1 ड.क्रो., 3 चे. बना कर अंतिम ट्रे. पर स्लि.स्टि. द्वारा जोड़ें.

तीसरी पंक्ति (गुलाबी): पहली पंक्ति में बनाई 2 ट्रे. पर 2 ट्रे., दूसरी पंक्ति में बनाई 4 चे. को बीच में लेते हुए प्रत्येक 1 चे. स्पेस में 2 ट्रे. 1 चे., 2 ट्रे. बनाती जाएं. अंत में 2 ट्रे. पर 2 ट्रे.

चौथी पंक्ति (सफेद): पहले ट्रे. पर स्लि.स्टि. द्वारा जोड़ें. 3 चे. तीसरी पंक्ति में बनाए शुरू के 2 ट्रे. छोड़ कर * अगले 2 ट्रे. 1 चे. 2 ट्रे. के पहले के स्पेस में 1 ड.क्रो., 4 चे. * चिह्न से चिह्न तक दोहराती जाएं. 2 ट्रे. से पहले के स्पेस में 1 ड.क्रो. 3 चे. बना कर पहले ट्रे. पर स्लि. स्टि. द्वारा जोड़ें.

पंक्ति 3 व 4 को दोहराते हुए 18 सें.मी. कर लें. नमूना समाप्त करते समय अंत में गुलाबी नमूने वाली पंक्ति आनी चाहिए.

ऊपर का भाग केवल गुलाबी रंग से बुनें. सामने से बाएं भाग के लिए शुरू के 24

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्टि. पर 24 ट्रे. बनाएं. ऊपर का पूरा भाग ट्रे. पर ट्रे. बनाते हुए बुनें. सामने से बाईं ओर के किनारे पर 3 पंक्तियों में 2-2 ट्रे. कम करें व शेष 4 पंक्तियों में 1-1 ट्रे. कम करें. इस तरह अंतिम पंक्ति में 14 ट्रे. रहेंगे. सामने से बायां भाग तैयार है.

पीछे के भाग के लिए बाएं भाग की एक ओर के 4 ट्रे. छोड़ कर 47 ट्रे. बुन लें. दोनों किनारों पर रेगलेन शेप दें. फं. बाएं भाग के समान ही घटाएं. अंतिम पंक्ति में 27 ट्रे. बचेंगे.

सामने से दाएं भाग के लिए पीछे के भाग की एक ओर के 4 ट्रे. छोड़ कर शेष 24 स्टि. पर 24 ट्रे. बुनें. सामने से दाईं ओर रेगलेन शेप दें. फं. बाएं भाग के समान ही घटाएं. अंतिम पंक्ति में 14 ट्रे. रहेंगे.

बाजू: गुलाबी ऊन से 35 चे. बना कर प्रत्येक चे. पर 1-1 ट्रे. बनाएं. प्रत्येक छठी पंक्ति में दोनों किनारों पर 1-1 ट्रे. बढ़ाती जाएं. कुल 45 ट्रे. हो जाने पर स्टि. बढ़ाना बंद कर दें. 19 सें.मी. लंबाई हो जाने पर किनारे के 6-6 फं. छोड़ कर बीच के 33 फं. पर पीछे के भाग के समान रेगलेन शेप दें. अंतिम पंक्ति में 13 फं. बचेंगे. इसी तरह दूसरा बाजू बुनें.

कोट की सिलाई कर के इस के गले, आगे की पट्टियों, घेर व बाजुओं के आगे फैंसी लेस बनाएं. लेस बनाने के लिए गुलाबी ऊन से 3 चे. बनाएं. हुक से तीसरी चे. में 2 ट्रे. बना कर 2 सें.मी. की दूरी पर स्लि. स्टि. द्वारा जोड़ती जाएं.

डोरी बट कर यथास्थान डाल दें. आवश्यकतानुसार बटन आदि लगा सकती हैं.

टोपा : गुलाबी ऊन से 10 चे. का वृत्त बनाएं. अब चक्कर इस प्रकार बुनें:

पहली पंक्ति: वृत्त में 18 ट्रे. बनाएं. प्रत्येक चे. में पहले ट्रे. के स्थान पर 2 चे. बनाएं.

दूसरी पंक्ति: 2 ट्रे. पर 2 ट्रे., अगले 1 ट्रे. पर 2 ट्रे. 6 बार बनाएं.

तीसरी पंक्ति: 3 ट्रे. पर 3 ट्रे. अगले ट्रे. से पहले के स्पेस में 2 ट्रे. 6 बार.

चौथी पंक्ति: 4 ट्रे. पर 4 ट्रे., अगले ट्रे. से पहले के स्पेस में 2 ट्रे. 6 बार.

पांचवीं पंक्ति: 5 ट्रे. पर 5 ट्रे. अगले ट्रे. से पहले के स्पेस में 2 ट्रे. 6 बार.

छठी पंक्ति: 6 ट्रे. पर 6 ट्रे. अगले ट्रे. से पहले के स्पेस में 2 ट्रे. 6 बार.

अब गुलाबी व सफेद रंग से कोट के घेर वाला नमूना डालें पर ध्यान रहे कि पहले चक्कर में 2 ट्रे., 1 चे., 2 ट्रे. के गुच्छे के बीच में 3 के स्थान पर 2-2 ट्रे. छोड़ें. बुनाई के 11 चक्कर करें.

अठारहवीं पंक्ति: 1 ट्रे. पर 1 ट्रे. व 1 ट्रे. पर 2 ट्रे. बुनते हुए गुलाबी ऊन से चक्कर पूरा करें.

उन्नीसवीं पंक्ति: सफेद ऊन से प्रत्येक ट्रे. पर 2-2 ट्रे. बनाएं.

बीसवीं पंक्ति: गुलाबी ऊन से प्रत्येक ट्रे. पर 1-1 हा. ट्रे. बनाएं. चक्कर 17 के अंत में उलटी ओर प्रत्येक ट्रे. पर 1-1 ड.क्रो. बनाते हुए चक्कर पूरा करें.

दोनों किनारों पर बांधने के लिए पट्टी बनाएं. एक पट्टी बनाने के लिए ड.क्रो. वाले चक्कर में 9 ड.क्रो. पर 9 ट्रे. बनाएं. प्रत्येक पंक्ति के शुरू में 1-1 ट्रे. कम करती जाएं. जब तक कि 5 ट्रे. न रह जाएं. कुल 14 पंक्तियां कर के ऊन तोड़ दें. इसी प्रकार दूसरी पट्टी बनाएं.

मोजे: गुलाबी ऊन से 31 चे. बना कर प्रत्येक चे. पर 1-1 ट्रे. बनाएं. अब गुलाबी व सफेद रंग से बुनाई की 15 पंक्तियां बुनें. ऊन तोड़ दें. अब शुरू के 11 स्टि. पर 11 ट्रे. बनाएं. 10 ट्रे. की 5 पंक्तियों के एक ओर 8 ट्रे. बनाएं. बीच में 10 ट्रे. पर 10 ट्रे. बुनें. 5 पंक्तियों की दूसरी ओर 8 ट्रे. बनाएं. अंत में बचे 11 स्टि. पर 11 ट्रे. बनाएं. इस तरह कुल 11+8+10+8+11 = 48 ट्रे. बनेंगे. इन 48 ट्रे. पर ट्रे. बनाते हुए 2 पंक्तियां और बुनें.

मोजे की नीचे से व बगल सिलाई कर दें. टांग के शुरू में फैंसी लेस बना लें व आवश्यकतानुसार लंबाई की डोरी बट कर डाल दें.

इसी तरह दूसरा मोजा बुनें.

-शालिनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

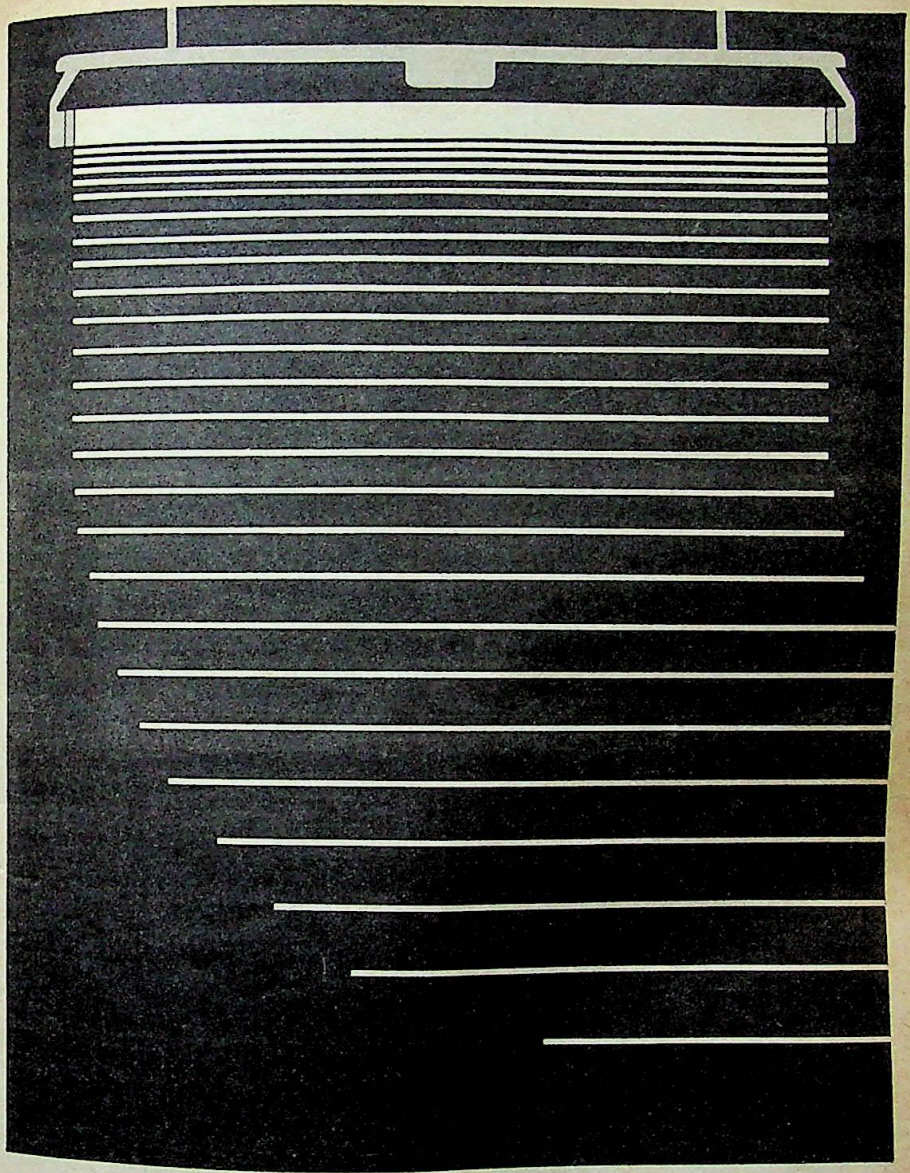

बजाज 'सिल्वरलाइट' पट्टी में किफ़ायती 'बेलास्ट' और सही किस्म का अन्य सामान लगे होने के कारण यह फ़्लोरोसेंट ट्यूब को भरपूर कुशलता से काम करने में सहायता देती है. ताकि आपको बिजली का खर्च कम आए और रोशनी ज़्यादा मिले. बजाज 'सिल्वरलाइट' पट्टी और बजाज फ़्लोरोसेंट ट्यूब की जोड़ी बेजोड़ है. और किफ़ायती भी. बरसों तक बगैर तकलीफ़ के काम देती है.

बजाज पट्टी और ट्यूब bajaj

सही रोशनी के लिए सही जोड़ी

Heros BE 874 HN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाड़ों की सौगात

गुड़ और तिल के साथ

मूंगफली की चक्की गुड़ में

सामग्री: 400 ग्राम मूंगफली भुनी, छिली हुई, 100 ग्राम गुड़, 2 ग्राम टाटरी, 4 चम्मच खाने का तेल, लकड़ी का छोटा तख्ता या बोर्ड, बेलन, स्टील की गहरी प्लेटें.

विधि: भुनी हुई मूंगफली के छिलके उतार लीजिए. गुड़ को कड़ाही में डाल कर उस में आधी कटोरी पानी डाल कर धीमी आंच पर चढ़ा दीजिए और कलछी से चलाते जाइए. अब उस में टाटरी डाल दीजिए. जब गुड़ में बुलबुले उठने लगें तथा वह गाढ़ा होने लगे तो मूंगफली डाल दें. ठंडा होने पर पहले जल्दीजल्दी एकएक कलछी बोर्ड पर डालती जाएं. दूसरा व्यक्ति उसे बेलता जाए. यदि छोटी चक्की या पट्टी बनानी हो तो स्टील की छोटी प्लेट में खाने का तेल लगा कर छोटीछोटी फैला लें. जम जाने जाने पर गरम पानी की कटोरी से सेक दे दें, वह आसानी से निकल आएगी. यदि चक्की

गुड़ तिल की चक्की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तिल के मलाईदार लड्डू

मूंगफली की चक्की

बेलने के लिए दूसरा आदमी नहीं है, तो तो स्टील की गहरी प्लेटें काम आएंगी.

गुड़ तिल की चक्की

सामग्री: 300 ग्राम गुड़, 2 चम्मच छेटे तिल, 1 चम्मच नीबू का रस, 1/4 चम्मच सौंफ, 4-5 फांकें कच्चे नारियल की सजाने के लिए, 1 चम्मच तेल खाने का, लकड़ी का तख्ता, पोलीथीन की शीट या फिर स्टील की छोटी गहरी प्लेटें.

विधि: तिल को हलका भून लीजिए. अब दूसरी कड़ाही में गुड़ डाल कर रखिए. पहले एक बड़े पतीले को पानी से भर कर, पानी उबाल लें. उस पतीले पर गुड़ की कड़ाही रख दें. भाप से गुड़ पिघलना चाहिए. जब गुड़ पिघल जाए तब धीमी आंच पर चढ़ा दें. लकड़ी की कलछी से चलाएं. जब गुड़ रबड़ की तरह होने लगे तो एक चम्मच नीबू का रस या 2 ग्राम टाटरी डाल कर चलाएं. भुने हुए तिल मिला कर, लकड़ी के तख्ते पर तेल लगा कर फैला दें और नारियल, सौंफ से सजा दें. गरमगरम काट कर पोलीथीन की शीट पर रखें. 10 मिनट बाद डब्बे में बंद कर दें. यदि थोड़ी बनानी हों तो स्टील की गहरी प्लेटों में घी लगा कर थोड़ाथोड़ा मिश्रण डालें. ठंडा होने पर प्लेटों को भाप से गरम करें और छोटीछोटी चक्की बिना कटे निकाल कर नारियल से सजाएं.

तिल के मलाईदार लड्डू

सामग्री: 1 किलो दूध, 100 ग्राम चीनी, 1 बड़ा चम्मच मलाई, 2 छोटे चम्मच तिल, 2-3 बूंदें गुलाब एसेंस, 4-5 छोटी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इलायची, 5 बादाम, 5 पिस्ते, 8-10 दाने मूंगफली या काजू, 2 चम्मच पिसी हुई मिसरी, चुटकी से कम केसर, 1 बड़ा चम्मच मैदा.

विधि: मैदे को कड़ाही में बिना घी के हलका भून कर निकाल लें. अब तिल को हलका भून लें और निकाल कर अलग रख लें. दूध का पनीर बनाएं. गरमगरम पनीर को छान कर उस में चीनी मिला कर, भगोने में डाल कर आंच पर चढ़ाएं. अब चीनी को पनीर में पकने दें. हिलाते रहें ताकि जलने न पाए. जब चीनी के बुलबुले निकलने लगें तो थोड़ा ठंडा कर के भुना हुआ मैदा मिला कर खूब फेंटें. फिर मलाई डाल कर आंच पर भगोने को चढ़ाएं जब तक कि मलाई पिघल जाए और उस में अच्छी तरह मिल जाए. अब भुने हुए तिल, इलायची तथा गुलाब एसेंस डाल कर लड्डू बना लें.

मूंगफली या काजू को मोटामोटा पीस लें. लड्डू को इस बूरे से लपेट लें. आखिर में पिसी हुई मिसरी लपेट दें. मिसरी यदि पहले लपेटेंगे तो पानी छोड़ देगी. केसर को एक चम्मच पानी में घोल कर उंगली से एकएक कर लड्डुओं पर लगा दें या चांदी के वर्क लगा कर खाली जगह पर बादाम पिस्ता काट कर चिपका दें.

—शोभा छुटानी ●

हिंदी

गुलामों गंवारों जाहिलों की भाषा है न?

तभी तो आप

- हिंदी की बोलचाल में और हर वाक्य में दो तीन शब्द अंग्रेजी के जरूर रखते हैं. हर दूसरा वाक्य अंग्रेजी का बोलते हैं.
- अपने नाम का संक्षिप्तीकरण अंग्रेजी अक्षरों में करते हैं बी.पी. शर्मा, एस.एन. वर्मा, के.एम. गुप्ता, आई.एम. दास.....
- अपने सांस्कृतिक, सामाजिक, पारिवारिक और निजी उत्सवों एवं सम्मेलनों के निमंत्रण अंग्रेजी में छपवाते हैं, चाहे आप और आपके आमंत्रित अंग्रेजी के चार वाक्य भी सही रूप में न लिख सकें और न समझ सकें.
- अपना निजी पारिवारिक पत्रव्यवहार अंग्रेजी में करते हैं.

अंग्रेजी साहबों की भाषा है. आप पूरी नहीं बोललिख सकते तो आधीअधूरी ही सही, साहबी कुछ तो दिखाई देगी ही!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चंचल कैमरा

★★★★अति उत्तम ★★★ उत्तम ★★ मध्यम ★ साधारण ○ बेकार

★ इनसाफ की पुकार

निर्माता: रमेश ग्वालानी व राजभक्तियानी
निर्देशक:टी. रामा राव
संगीत:लक्ष्मीकांत प्यारेलाल
मुख्य कलाकार: धर्मेंद्र, जितेंद्र, भानुप्रिया, अनीता राज, प्रेम चोपड़ा, अनुपम खेर, कादर खान, शक्ति कपूर

नाम को तो यह 'इनसाफ की पुकार' फिल्म है मगर इस में इनसाफ की पुकार कम और मारधाड़ ज्यादा है. जिस तरह नायकद्वय बदमाशों का सफाया करते चलते हैं, उसे देख कर लगता है जैसे ये साधारण इनसान नहीं, अतिमानव हैं. हां, इन की यह मारधाड़ देख कर बच्चे जरूर खुश हो जाएंगे.

कहानी के नाम पर जीरो इस फिल्म में अजय (जितेंद्र) और विजय (धर्मेंद्र) दो गहरे दोस्त हैं. इन का एक ही मकसद है अमीरों को लूटना और गरीबों में बांटना. जेल में इन दोनों की मुलाकात एक बेगुनाह लड़के मनोहर (राकेश) से होती है, जिसे जल्दी ही फांसी दी जाने वाली होती है. जेल से बाहर लौट कर वे उसे फांसी से बचाने का प्रयत्न करते हैं. इस प्रयत्न में उन्हें मालूम होता है कि धनीलाल (प्रेम चोपड़ा), दिनेशलाल (शक्ति कपूर), सोहनलाल (अनुपम खेर) और पुलिस इंस्पेक्टर ईमानदार (कादर खान) चारों ने मिल कर मनोहर के मातापिता पर अत्याचार किए हैं और उसे

फिल्म 'इनसाफ की पुकार' में धर्मेंद्र : इनसाफ के नाम पर खूनखराबा.

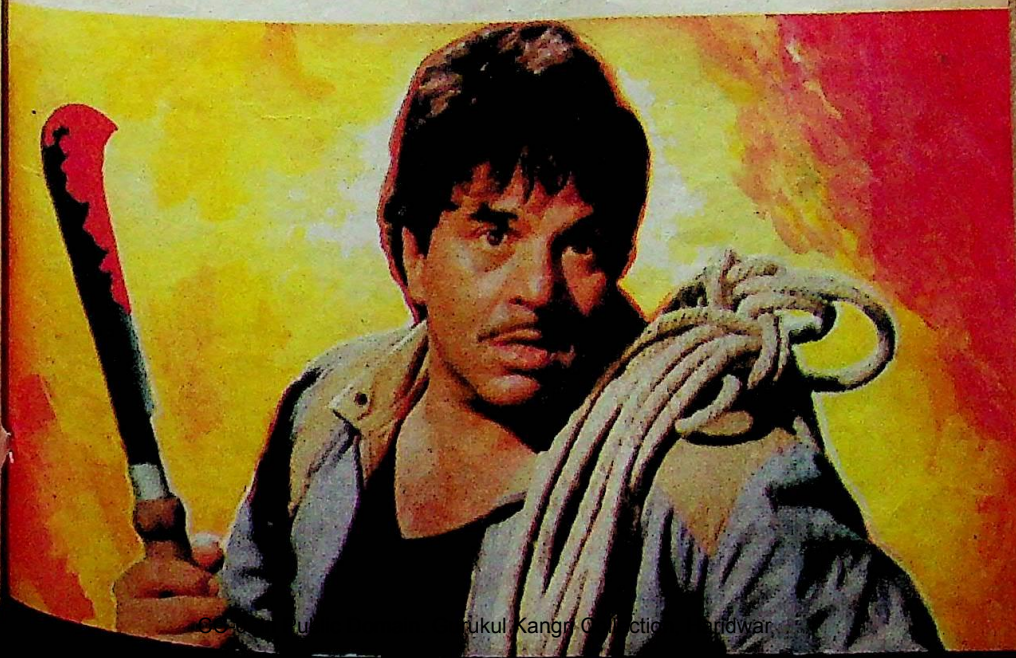

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पिछले बारह महीनों में

★★★ मिर्च मसाला, पुष्पक

★★ प्रतिघात, संसार, सत्यमेव जयते, काश, कुदरत का कानून

★ पाले खां, नजराना, जवाब हम देंगे, बहम, इतिहास, हुकूमत, डकैत, मजाल, औलाद, मिस्टर इंडिया, परिवार, खुदगर्ज, सिंदूर, प्यार की जीत, जान हथेली पे, ठिकाना, उत्तर दक्षिण.

○ मेरा हक, अविनाश, अनोखा इनसान, तहखाना, इनसानियत के दुश्मन, अनुभव, बाबुल, जुंबिश, लोहा, दादागिरी, बेशक, इनाम दस हजार, प्यार कर के देखो, मांबेटी, डाकू हसीना, मेरा लहू, कौन कितने पानी में, ईमानदार, कलयुग और ???, काम अग्नि, आग ही आग, यादों की जंजीर, मनु द ग्रेट, नामोनिशान, सीतापुर की गीता, प्यार के दोचार दिन, मेरा यार मेरा दुश्मन, डांसडांस, मुकद्दर का फैसला, इनसाफ, हवालात, इनसाफ कौन करेगा, खूनी महल, मरते दम तक, दिलरुबा तांगेवाली, सड़क छाप, हिरासत, दिलजला, कच्ची कली, दिल तुझ को दिया, मर्द की जबान, वतन के रखवाले, गोरा, दीवाना तेरे नाम का, मैं और तुम, प्यार के काबिल, हिफाजत, घर का सुख, औरत का इंतकाम, परम धरम, हिम्मत और मेहनत, जागो हुआ सवेरा, रात के अंधेरे में.

दिखाया है. वे मनोहर के माता पिता को इन के चंगुल से छुड़ाते हैं तभी अजय को पता चलता है कि यही उस के माता पिता भी हैं. दोनों मिल कर अपराधियों का सफाया करते हैं.

फिल्म की यह कहानी बहुत बचकानी है. जिस तरह मध्यांतर के बाद कहानी मोड़ लेती है और दोनों गहरे दोस्त एकदूसरे की जान के दुश्मन बन जाते हैं, उसे देख कर तो हंसी आती है. इस ऊलजलूल कहानी को धर्मेंद्र और कादर खान की कामेडी ने थोड़ा सा संभाल लिया है. लेकिन इस कामेडी का स्तर भी ऊंचा नहीं है. चालू संवादों के सहारे कादर खान ने दर्शकों को थोड़ा सा बहलाने की कोशिश जरूर की है. हां, धर्मेंद्र की कामेडी अच्छी कही जा सकती है. उस का "हां जनाब" कहना दर्शकों को हंसा जाता है. फिल्म में मारधाड़ के अलावा बलात्कार, गोलाबारी तथा अन्य फार्मूलों का भी भरपूर प्रयोग किया गया है. फिल्म का उद्देश्य ही इसे मसालाप्रधान बनाने का लगता है.

फिल्म का निर्देशन ठीक है. निर्देशक ने इस घिसीपिटी कहानी को न संभाला होता तो फिल्म टांयटांय फिस्स हो जाती. फिल्म का संपादन भी ठीक है. फिल्म का छायांकन अच्छा है. फिल्म के गीत आनंद बख्शी ने लिखे हैं, जिन्हें लक्ष्मीकांत प्यारेलाल ने अच्छा संगीत दिया है.

अभिनय की दृष्टि से धर्मेंद्र और जितेंद्र ने अपनी राबिनहुड वाली छाप दिखाने की कोशिश की है. धर्मेंद्र तो महाबली लगता भी है परंतु जितेंद्र जैसा कोमल शरीर वाला नायक महाबली कम, एक खूबसुरत हीरो ज्यादा लगता है. धर्मेंद्र भी अब बूढ़ा लगने लगा है. हलकीफुलकी कामेडी के रोल में या शक्तिशाली नायक की भूमिका के लिए तो वह ठीक है परंतु नायिका के साथ परदे पर इश्क लड़ाते हुए अब वह अच्छा नहीं लगता. इन दोनों नायकों के लिए फिल्म में दो नायिकाएं अनीता राज और भानुप्रिया भी हैं. अन्य कलाकार भी साधारण हैं.

सरिता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपकी ज़िन्दगी का यह वक्त...
हर लम्हा हर पल इक खज़ाना है बेशकीमती.
वक्त की कद्र आपकी नज़रों में
है कितनी यह साफ़ झलकता है
आपकी बोल-चाल, चाल-ढाल
हर काम में... हर कामयाबी में...
ज़िन्दगी के हर छोटे-बड़े इम्तिहान में!
और झलकता है इन सबसे ज़्यादा
कलाई पर आपकी -
आपकी कलाई-घड़ी की पहचान में.

TIMESTAR

क्वार्ट्ज़ घड़ियाँ

सौ से भी ज़्यादा डिज़ाइनों में.

मोल अनमोल... वक्त का और आपके पैसों का.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

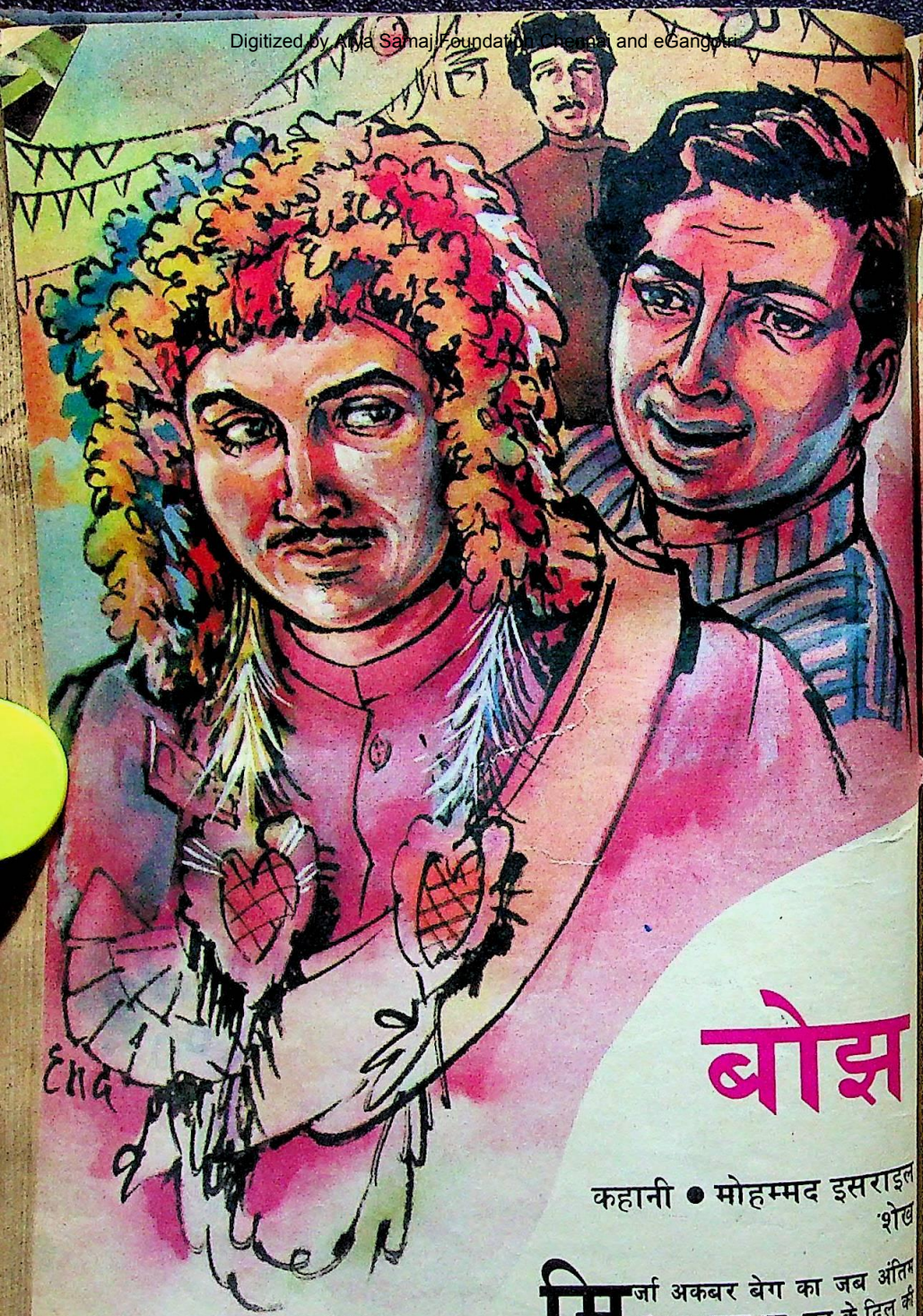

बोझ

कहानी • मोहम्मद इसराइल 'शेख

मिर्जा अकबर बेग का जब अंतिम समय आया था, उन के दिल की बेचैनी बहुत ही बढ़ गई थी. एक ही बात उन्हें बारबार सालती रही थी कि वह जीते जी अपनी इकलौती बेटी 'शकीला के

शरीफा

"नोशे मियां, क्या मजनूं बन के बैठे हो, दुलहन वालों को जरा अपना रंग तो दिखाओ ताकि उन्हें पता चले महबूब खां नाम की भी कोई हस्ती है," दल्हे मियां के कान में किसी ने कहा. ▲

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

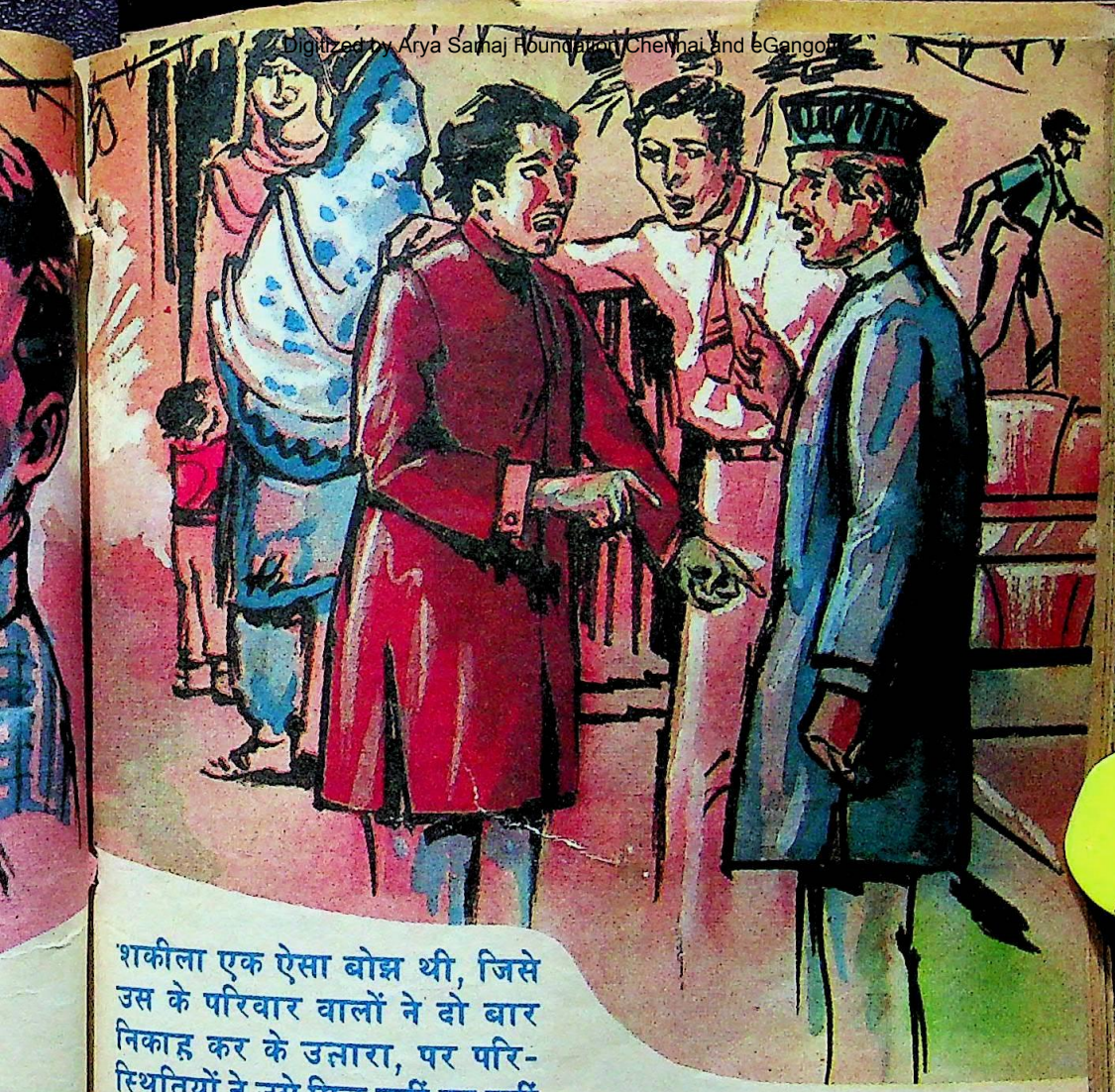

शकीला एक ऐसा बोझ थी, जिसे उस के परिवार वालों ने दो बार निकाह कर के उतारा, पर परिस्थितियों ने उसे फिर वहीं का वहीं पहुंचा दिया था. अब वह अकेली नहीं, उस के साथ एक बच्चा भी बोझ था.

हाथ पीले नहीं कर पाए थे. वह उसे अविवाहिता ही छोड़ कर इस दुनिया से विदा लेने जा रहे थे.

शकीला को बचपन से ही एक मातृहीन बेटी के रूप में बड़े लाड़प्यार से उन्होंने पाला था. शकीला के लिए वह माता और पिता दोनों ही थे. इसलिए उन्हें एक ही चिंता सताती रहती थी कि उन के मरने के बाद शकीला का न जाने क्या होगा. क्या पता उन का बेटा मिर्जा अफजल बेग अपने सिर से बला जल्दी से टाल देने के इरादे से किसी नाकाबिल शख्स से ही शकीला के जीवन की डोर न बांध दे.

जब अकबर बेग के दिल की बेचैनी हद पार करने लगी थी, उन से रहा नहीं गया था. उन्होंने मिर्जा अफजल बेग को अपने करीब बुला कर अपनी आखिरी ख्वाहिश जाहिर की थी और उन्हें ताकीद की थी कि उन के मरने के बाद वह शकीला के लिए अच्छे खातेपीते घर का काबिल लड़का तलाश करेंगे. फिर शकीला का विवाह कर देंगे, ताकि शकीला का विवाहित जीवन सुखी हो सके और उसे किसी किस्म की तकलीफ न हो.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब तक मिर्जा अफजल बेग ने पिता को उन की आखिरी ख्वाहिश पूरी करने का आश्वासन नहीं दे दिया था, उन का दम जा कर आता रहा था. बेटे के दिए हुए आश्वासन से जब उन्हें पूरी तसल्ली हो गई थी तो उन की जान भी निकल गई थी.

इसलिए मिर्जा अफजल बेग ने शकीला के भावी वर के रूप में जब तक काबिल लड़का नहीं ढूंढ़ लिया था, पिता को दिया हुआ उन का आश्वासन उन्हें कचोटता रहा था. शकीला के विवाह की समस्या उन के सिर पर बहुत बड़ा बोझ बन गई थी.

मिर्जा अफजल बेग महसूस करने लगे थे कि शकीला के सुखदुख की सारी जिम्मेदारी अब सीधी उन के सिर पर आ पड़ी है. वालिद साहब जिंदा थे तो वह शकीला के सुखचैन का खुद खयाल रखा करते थे. इसलिए वह शकीला की ओर से पूरी तरह बेफिक्र थे. लेकिन अब तो शकीला की सभी किस्म की फिक्र उन्हें ही करनी थीं. उन के सिवा शकीला का था भी कौन?

उन्होंने अपने मन में एक गांठ बांध ली थी, जब तक वह इस बात से आश्वस्त नहीं हो जाते कि शकीला का रिश्ता जहां भी तय होगा, वहां वह सुखी रह सकेगी, तब तक वह शकीला के रिश्ते के लिए हामी नहीं भरेंगे.

मिर्जा अकबर बेग के जीवन काल में ही शकीला के लिए कई रिश्ते आए थे लेकिन बात कहीं बनी नहीं थी. जहां लड़का काबिल होता था, वहां उस के घर के लोगों के मिजाज और तौरतरीके मेल नही खाते थे. जहां घर के लोग अच्छे होते, वहां लड़के में कोई न कोई नुक्स निकल आता था. अतः इस बात को ले कर महल्लेपड़ोस के लोगों ने मिर्जा अकबर बेग पर फब्तियां भी कसी थीं कि हीरा ढूंढ़तेढूंढ़ते कहीं कंकड़ ही हाथ न लग जाए.

मिर्जा अफजल बेग ने अपने दोस्तों और रिश्तेदारों की मदद से शकीला के लिए काबिल लड़का ढूंढ़ने में एड़ीचोटी का जोर लगा दिया था और काफी छानबीन के बाद एक रिश्ता उन्हें पसंद आ गया था. उस पर उन के सभी रिश्तेदारों ने अपनी पसंद की मुहर लगा दी थी.

लड़का कलक्टर की कचहरी में स्टेनो था. उस के घर में एक वृद्धा बेवा मां थी. तीनों बहनें थी, जो शादी हो कर अपने अपने घर चली गई थीं. अतः शकीला के भावी सुखी गृहस्थ जीवन के प्रति सभी आश्वस्त थे.

शकीला की शादी का निश्चित दिन भी आ गया था. उस दिन मिर्जा अफजल बेग की खुशी का ठिकाना न था. शकीला की महबूब खां से शादी हो गई थी. निकाह के बाद जब महबूब खां ने मिर्जा अफजल बेग से गले मिल कर उन से मुसाफा किया था तो उन्हें लगा था कि उन के सिर का आधा बोझ भी हलका हो जाएगा.

रात के 10 बजे दुलहन की विदाई का समय निश्चित हुआ था. विदाई से संबंधित सारी औपचारिकताएं करीबकरीब पूरी हो चुकी थीं. दहेज का सारा सामान भी बांधा जा चुका था. सिर्फ एक पलंग ही अभी बांधा जाना बाकी था.

पलंग बांधा जाए उस से पहले उस के नटबोल्ट खोल कर उस के हिस्से अलग करना जरूरी था. लेकिन नटबोल्ट खोलने के लिए आवश्यक औजार का कहीं अतापता नहीं था. अतः दुलहन पक्ष उसी की जुगाड़ में मशगूल हो गया था.

वास्तविकता यह थी कि दुलहन पक्ष वाले फरनीचर की दुकान से पलंग तो खरीद कर ले आए थे, लेकिन उस से संबंधित जरूरी हथकल लाना भूल गए थे. अतः साइकिल वाले की दुकान से हथकल उधार मांग कर लाया गया था और नटबोल्ट कस कर पलंग खड़ा कर दिया गया था. उस के बाद हथकल साइकिल की दुकान वाले को लौटा दी थी. यह बात किसी के मन में नहीं आई थी कि पलंग खोलने के वक्त फिर हथकल की जरूरत पड़ेगी.

जब पलंग बांधने की बारी आई थी, रात के 9.30 बज चुके थे. तभी हथकल के बारे में चिल्लाहट मची थी. अतः लोग साइकिल की दुकान की और दौड़ पड़े थे.

शेष अगले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शादी के दोतीन महीने बाद ही शकीला ने पाया कि जावेद मियां को कभीकभी जानलेवा खांसी उठती थी. उन का इलाज तो हो रहा था, लेकिन वास्तविक मर्ज कोई नहीं जानता था.

लेकिन तब तक दुकान बंद हो चुकी थी. नजदीक में और कहीं हथकल मिलने की गुंजाइश नहीं थी. अतः लोग साइकिल दुकान वाले के घर की ओर दौड़ पड़े थे, जो वहां से काफी दूरी पर था.

देखते ही देखते रात के 11 बजने को आ गए थे, लेकिन हथकल की जुगाड़ नहीं हो सकी थी. दूल्हा पक्ष के सब्र का बांध टूटा जा रहा था, उन्हें वहां से दुलहन को ले कर बरात की रवानगी की जल्दी थी.

बरात ले कर लौटने वाली विशेष बस भी तैयार खड़ी थी. ड्राइवर और कंडक्टर भी बरात की जल्दी से जल्दी रवानगी के लिए बारबार तकाजा कर रहे थे क्योंकि उन का दूसरे दिन कहीं और बरात ले जाने का कार्यक्रम निश्चित था.

उधर दुलहन पक्ष यही तसल्ली दिए जा रहा था कि इतनी देर हो गई है, थोड़ी देर और सही. पलंग बंधते ही बरात रवाना कर दी जाएगी. कोई न कोई हथकल ले कर आता ही होगा.

इधर दूल्हा पक्ष वालों में आपस में कानाफूसी शुरू हो गई थी. ऐसे ही मजाक भरे लहजे में किसी ने दूल्हे मियां पर कटाक्ष करते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिलोरें

गुलमोहर सी
तुम्हारी देह को
छू गया
भौंरा शायद,
तब से अब तक
ये समंदर सा
हिलोरें ले
रहा है.

—नीलिमा खरे

हुए कह दिया था, "नोशे मियां, क्या मजनूं बन के बैठे हो. निकाह के बाद हम गढ़ जीत चुके हैं. अब दुलहन वाले हमारी मुट्ठी में हैं. फिर नेक काम में देरी कैसी? दुलहन वालों को जरा अपना रंग तो बताओ, ताकि वह भी समझें कि महबूब खां नाम की भी कोई हस्ती है.

"वैसे तुम्हें सुहागरात की जल्दी नहीं है तो न सही, पर नन्हेमुन्हे और बूढ़े बरातियों का तो कुछ खयाल करो. सब बेचारे ऊंघने लगे हैं. सुनो मियां, अगर वक्त रहते तुम अपनी मर्दानगी दिखाने में चूक गए तो रह गए जिंदगी भर जोरू के गुलाम बन कर."

चोट भरपूर थी. महबूब खां तिलमिला गए थे. उन्होंने झट अपने बहनोई मिर्जा शमीम बेग को पास बुला कर बरात रवानगी में हो रही अंनावश्यक देरी के बारे में चिंता व्यक्त की थी. बरात जल्दी से जल्दी रवाना हो इस के लिए कुछ उपाए करने के लिए भी अनुरोध किया था.

लेकिन मिर्जा शमीम बेग दूल्हे मियां को उलटी घुट्टी पिलाते हुए बोले थे, "महबूब मियां, यह हथकल वगैरह सब बहानेबाजी है. मुझे तो कुछ दाल में काला नजर आ रहा है.

"अपनी तरफ की औरतों ने मुझे बताया है कि दुलहन वाली में यह चर्चा जोरों पर थी कि दूल्हा सरकारी नौकरी में हुआ तो क्या हुआ, वह आदतों का अच्छा नहीं है. शराब पीता है और जुआ भी खेलता है.

"इसी बात को ले कर निकाह के बाद दुलहन और उस की भाभी दोनों ने रोआंराट शुरू कर दी थी और एकदूसरे से गले मिलमिल कर खूब रोई थीं. मुझे तो लगता है कि दुलहन वालों का इरादा नेक नहीं है."

मिर्जा शमीम बेग की बात से महबूब खां को आश्चर्य के साथ धक्का लगा था. फिर वह कुछ संयत होते हुए उन से बोला था, "लेकिन भाई साहब, मैं तो इन सभी बुरी आदतों से कोसों दूर हूं. फिर उन्होंने ये कैसे समझ लिया कि मैं इन बुराइयों का आदी हूं. मेरे कुछ दोस्त जरूर ये लतें पाले हुए हैं. शायद इसी से उन्हें गलतफहमी हो गई हो.

"कल अपनी बरात जनवासे में पहुंचाने के बाद हम कुछ दोस्त मिल कर गांव में घूमने निकल गए थे. तभी लल्लूराम और मुन्ना भाई देशी दारू का ठेका देख कर अपनी आदत के मुताबिक खुद को नहीं रोक पाए थे और थोड़ीथोड़ी पी आए थे. हम लोग उन दोनों का इंतजार करते हुए बाहर खड़े थे.

"वैसे रात में हम ने दिल बहलाने के लिए कुछ देर के लिए रमी वगैरह भी खेली थी. उसे जुआ नहीं कहा जा सकता.

"खैर, आप दुलहन के भाई से मिल कर बरात की जल्दी रवानगी के लिए गुजारिश कर के तो देखिए. फिर हम अपने अगले कदम के बारे में सोचेंगे."

महबूब खां की बात पर अमल करते हुए मिर्जा शमीम बेग मिर्जा अफजल बेग से मिले और बोले, "भाई साहब, रात काफी गुजर चुकी है. वक्त भी काफी हो गया है. बालबच्चों का साथ है. हम पलंग के लिए और नहीं रुक सकते. आप चाहें तो पलंग यहीं रहने दीजिए. उसे फिर कभी भी ले जाया जा सकता है. बस, अब आप बरात रवानगी में और देर न कीजिए. मेरी आप के साथ गुजारिश है."

"नहीं, मिर्जा शमीम बेग, हमें पलंग के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बगैर बरात रवाना करना अच्छा नहीं लगेगा. चचामियां हथकल ले कर आते ही होंगे. हथकल आते ही पलंग खोल कर बांधने में कितनी देर लगेगी. चंद मिनटों की ही तो बात है." "लेकिन भाई साहब, सब्र की भी कोई इंतिहा होती है. प्यास लगने पर आप कुआं खुदवा रहे हैं. क्या हथकल की जरूरत के बारे में आप लोगों को पहले सूझा नहीं? दूल्हा वालों को परेशान करने का खूब तरीका ढूंढ़ निकाला है आप लोगों ने. हम तो आप लोगों से तंग आ गए."

"बातोबा, कैसी बात करते हो मिर्जा शमीम बेग? हम ने रिश्तेदारी आप लोगों को परेशान करने के लिए नहीं की है. फिर हम लड़की वाले हैं. हम ऐसा सोच भी नहीं सकते. हथकल लाना हम भूल गए. यह हम से गलती हो गई. फिर गलती तो इनसान से होती ही है. आप हमारी मजबूरी को तो समझिए."

"खैर, अब पलंग को मारिए गोली और हमें जल्दी से जल्दी बरात रवानगी की इजाजत दीजिए.

"फिर पलंग में ऐसे कौन से हीरेमोती जड़े हैं, जिस की वजह से बरात रवानगी में इतनी देर की जा रही है. अगर पलंग के बगैर बरात रवाना हो भी गई तो उस में ऐसी कौन सी हमारी और आप की शान में कमी आ जाने वाली है.

"हमारे घर पर पलंगों की कोई कमी नहीं है. शायद आप को मालूम नहीं कि हमारे ससुर तहसीलदार थे."

मिर्जा शमीम बेग की उलटीसीधी बातों से मिर्जा अफजल बेग कुछ तैश में आ गए. गुस्से से भर कर मिर्जा शमीम बेग से बोले, "पलंग में हीरेमोती जड़े हुए हों या न हों, अगर पलंग नहीं तो बरात भी रवाना नहीं होगी. चाहे पलंग खोल कर बांधने में 10 दिन ही क्यों न लग जाएं."

"आप ने अपनी तज भरी बातों से हमारे दिल पर नश्तर चला दिए हैं," मिर्जा शमीम बेग भी तैश में आते हुए बोले, "भाई साहब, यह तो आप की ज्यादती है. अगर हमें यह पहले ही मालूम होता कि आप इस किस्म के लोग हैं, तो आप के घर रिश्ता करने से पहले हम सौ बार सोचते."

"आप कहना क्या चाहते हैं, मिर्जा शमीम बेग? क्या आप ने हमें ऐसावैसा समझ रखा है. अपनी जुबान को लगाम दें. हम इज्जतदार लोग हैं. क्या हम आप को चोरउचक्के, शराबी या जुआरी नजर आते हैं?"

इसी बीच महबूब खां उन दोनों के बीच आ टपका था. अफजल बेग का आखिरी वाक्य सुन कर वह आपे से बाहर होता हुआ गरजा, "लगता है, आप हमारी तौहीन करने पर आमादा हैं. आप के कहने का मतलब यह है कि हम शराबीजुआरी हैं. कान खोल कर सुन लो, आप को इस तरह हमें शराबीजुआरी कह कर जलील करने का कोई हक नहीं है.

"हम जानते हैं कि आप की बहन कौन सी हूर है. उसे कौन से सुर्खाब के पर लगे हुए हैं. असलियत तो यह है कि नौ सौ चूहे खा कर बिल्ली हज को चली."

महबूब खां का इतना कहना था कि मिर्जा अफजल बेग ने उस के गाल पर एक जोरदार तमाचा जड़ दिया. महबूब खां तो पहले ही अपना आपा खो बैठा था. तमाचे के जवाब में उस ने मिर्जा अफजल बेग पर जोरजोर से घूंसे बरसाने शुरू कर दिए. देखते ही देखते दूल्हादुलहन दोनों पक्षों के लोगों में हाथापाई शुरू हो गई.

कुछ बुजुर्ग लोगों ने हस्तक्षेप कर के बीचबचाव करने की कोशिशें भी कीं, लेकिन मारपीट ने और भी उग्र रूप धारण कर लिया. उसी हंगामे में कुछ बुजुर्ग भी पिटने लगे. अतः वे बेचारे अपनीअपनी जानें बचाते हुए अलग एक कोने में दुबक गए.

विचार

लोकाचार और हृदय में जमे हुए विचार हमारे जीवन में आकस्मिक परिवर्तन नहीं होने देते. —प्रेमचंद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्त्रियों के सम्पूर्ण स्वास्थ्य
के लिए
प्रामाणिक औषधि व टॉनिक

हेमपुष्पा

हेमपुष्पा स्त्रियों को स्वस्थ बनाने वाली एक प्रभावशाली आयुर्वेदिक औषधि व टॉनिक है जिसका निर्माण उनके शरीर की विशेष रचना और खास जरूरतों को ध्यान में रखकर किया गया है।

हेमपुष्पा नये रक्त का निर्माण करने के साथ-साथ रक्त को साफ करती है जिससे नारी सौन्दर्य खिल उठता है।

हेमपुष्पा हार्मोनल असंतुलन ठीक करती है।

हेमपुष्पा स्त्रियों की घबराहट, चिडचिडापन, उत्तेजना, भूख न लगना, अनुत्साह, हथेली व तलवों की जलन, शरीर का टूटना, कमर तथा पेडू का दर्द तथा मानसिक एवं शारीरिक थकावट को दूर कर जीवन में स्फूर्ति व उमंग लाती है।

हेमपुष्पा एक हानिरहित, विश्वसनीय और स्थाई लाभप्रद बेजोड़ औषधि है।

निर्माता:
राजवैद्य शीतल प्रसाद एण्ड संस
4771/23, दरियागंज, नई दिल्ली - 110 002
शाखाएं: दिल्ली, नागपुर, इन्दौर, गाजियाबाद

हथकल की बॉट जोहते पलंग को दूल्हा पक्ष ने अपना निशाना बनाया. उन्होंने उसे पूरी ताकत से उलट दिया. फिर चंद ही लम्हे गुजरे होंगे कि पलंग अनेक टुकड़ों में परिवर्तित हो गया. दहेज का सारा सामान खोलखोल कर इधरउधर फेंक दिया गया. औरतों में भगदड़ मच गई.

इस बीच मिर्जा अफजल बेग के चचा मिर्जा हातिश बेग हथकल हाथ में लिए साइकिल पर दौड़ेदौड़े चले आए. वह वहां का दृश्य देख कर हक्काबक्का रह गए. इतने में उन्होंने देखा कि मिर्जा शमीम बेग पलंग की टूटी हुई पट्टी हाथ में ले कर मिर्जा अफजल बेग के पीछे से वार करने जा रहे हैं. उन्होंने आव देखा न ताव. झट से बिजली के वेग से दौड़ कर अपने हाथ के हथकल से उन्होंने मिर्जा शमीम बेग के सिर पर जोर से प्रहार कर दिया. नतीजतन मिर्जा शमीम बेग चक्कर खा कर जमीन पर गिर पड़े और बेहोश हो गए.

महबूब खां अपने बहनोई को ऐसी हालत में देख कर बौखला गया. उसी बौखलाहट में ही वह चिल्ला उठा, "यह शादी नहीं, फरेब है, धोखा है. मैं और बरदाश्त नहीं कर सकता. मैं शकीला को अभी, इसी वक्त तलाक देता हूं. तलाक, तलाक, तलाक..."

दूल्हादुलहन दोनों पक्षों के लोगों के दिमाग में चढ़ा उन्माद "तलाक" शब्द सुनते ही पल भर में शांत हो गया. खुशी के घर में मरघट जैसा सन्नाटा छा गया.

महबूब खां की बरात दुलहन के बगैर लौट गई. एक छोटी सी बात बढ़तेबढ़ते इतनी खिंच गई कि नवदंपती जो एकदूसरे की शक्ल भी नहीं देख पाए थे, एक नए जीवन की शुरुआत करने से पहले ही एकदूसरे से जुदा हो गए थे.

मिर्जा अफजल बेग के घर में मातम छा गया था. शादी की खुशियां बरबादी के गम में बदल गई थीं. सभी बरातियों के मुंह लटक गए थे.

इसी बीच किसी बराती के दिमाग में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह बात आई कि लोहा अभी गरम है, उस पर समय रहते हथौड़े से चोट करना उचित होगा. मौके की नजाकत को देखते हुए बरातियों में ऐसा भी कोई लड़का मिल सकता है, जो वस्तुस्थिति को जानते हुए, मासूम और बेगुनाह शकीला बेग को अपनाने की हिम्मत दिखाए. इस तरह शकीला की उजड़ी जिंदगी संवर जाए.

मिर्जा अफजल बेग का शकीला की दोबारा शादी को ले कर होने वाला खर्च भी बच जाएगा. उन्हें कुछ राहत मिल जाएगी. न जाने बाद में शकीला की शादी होने में क्याक्या दिक्कतें आएं? क्याक्या पापड़ बेलने पड़ें?

बरातियों में ही मिर्जा अफजल बेग के दूर के एक रिश्तेदार गुलदाद खां भी शामिल थे, जो अपने बेटे जावेद खां के साथ शकीला के विवाह में रायपुर से आए थे. उन्होंने अपने बेटे जावेद खां का शकीला से निकाह का इरादा जाहिर कर दिया.

गुलदाद खां के नेक इरादे को जान कर सभी के चेहरों पर एक नई चमक आ गई. सभी के दिलों में उत्सुकता थी कि आशा की एक किरण फूटती हुई नजर आने लगी.

जावेद खां गोराचिट्टा, तीखे नाकनक्श का, लेकिन बहुत ही दुबलापतला लड़का था. वह आटो इलेक्ट्रीशियन था. उस ने अपनी निजी दुकान खोल रखी थी. वह अच्छाखासा कमा लेता था.

सभी ने सिर्फ एक ही बात पर ध्यान दिया था कि लड़का कमाऊपूत है. उस की अन्य किसी बात पर गौर करने या किसी किस्म की छानबीन करने की किसी को जरूरत ही महसूस नहीं हुई, सभी को रिश्ता पसंद आ गया और शकीला का जावेद खां से निकाह हो गया. वह उस के साथ अपनी ससुराल विदा हो गई.

इस घटना को अखबारों ने काफी उछाला. उस से जावेद खां सज्जन के रूप में और महबूब खां दुर्जन के रूप में उभर कर लोगों के सामने आए. जावेद खां की हर कोई तारीफ कर रहा था.

मिर्जा अफजल बेग तो उसे एक मसीहा के रूप में देखने लगे थे. उन का दिल उस के प्रति बहुत ही समर्पण और इज्जत की भावना से भर गया था.

ससुराल जाने पर शकीला को पता चला कि जावेद खां की मां उस की सगी नहीं सौतेली मां है. वह सौतेली सास के नाम से कुछ घबरा सी गई थी. उसे लगने लगा था कि न जाने सौतेली सास उस के साथ कैसा व्यवहार करे. लेकिन सास की ओर से उसे कभी कोई शिकायत नहीं रही थी.

शादी के दोतीन महीने बाद ही उस ने पाया कि जावेद मियां को कभीकभी जानलेवा खांसी चलती रहती है. उस का किसी नीम हकीम के पास इलाज भी चल रहा था. लेकिन असली मर्ज क्या था, यह उसे सहीसही मालूम नहीं हो सका था.

9

शकीला को जल्दी ही गर्भ ठहर गया था. उसे सातवां महीना चल रहा था. उसी अवस्था में प्रसूति के लिए मिर्जा अफजल बेग उसे अपने घर ले आए थे.

शकीला ने एक लड़के को जन्म दिया था. अतः लड़का पैदा होने की खुशी का तार उस के पिता के नाम भेज दिया गया था, लेकिन दूसरे ही दिन गुलदाद खां की ओर से मिर्जा अफजल बेग के नाम भी एक तार आया था, जिस में जावेद खां की मौत का दुखद समाचार था.

तार पढ़ कर मिर्जा अफजल बेग के दिल को बहुत बड़ा धक्का लगा था, उन्हें सारी दुनिया घूमती हुई नजर आने लगी थी. उन के कदमों तले की जमीन खिसक गई थी.

शकीला पर दुखों का पहाड़ टूट पड़ा था. लेकिन उस के पास सिवा रोने के अब शेष बचा ही क्या था.

असल में जावेद खां विवाह के पहले से ही बीमार चला आ रहा था. वह बीच में कुछ दिन अच्छा रहता था. फिर कुछ दिन बाद उस की बीमारी जोर पकड़ लेती थी. वह क्षय रोग का मरीज था.

उस की जिंदगी सिर्फ चंद दिनों की थी,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस बात का हिसाबकिताब उस के मांबाप पहले ही लगा चुके थे. उन्होंने उस की उचित चिकित्सा कराने की बात को कभी गंभीरता से लिया ही नहीं था. उन का मानना था कि तपेदिक एक जानलेवा रोग है. बेवजह उस पर खर्च कर के पैसों की क्यों बरबादी की जाए.

वे यह जरूर सोचते थे कि जावेद के कुंआरा मरने से बेहतर होगा कि वह शादी हो कर मरे, ताकि उस की शादी का अरमान दिल में बाकी न रह जाए.

जावेद खां की शादी के लिए गुलदाद खां ने कई जगह बातचीत छेड़ी थी. लेकिन कहीं न कहीं से लड़की वालों को जावेद की बीमारी की भनक लग जाती थी और बात बनतेबनते बिगड़ जाती थी.

अतः शकीला के तलाक से उत्पन्न स्थिति गुलदाद खां का जावेद खां की शादी का मनसूबा पूरा करने के लिए वरदान सिद्ध हुई थी.

जावेद खां दोस्तों के साथ कभीकभी देशी दारू का जहर भी ले लिया करता था. शकीला के प्रसव के लिए अपने मायके आने के बाद वह रोज ही पीने लगा था. दोतीन बार तो वह लड़खड़ा कर गंदी नाली में गिर भी पड़ा था. तभी से उस ने खाट पकड़ ली थी. फिर वह खाट से उठ ही नहीं सका था.

जब मिर्जा अफजल बेग पर जावेद खां की मृत्यु के बाद उस की असलियत जाहिर हुई थी तो वह खून का घूंट पी कर रह गए थे. उन्हें अपनेआप पर बहुत गुस्सा आ रहा था. कभी उन का मन चाहा था कि गुलदाद खां का गला घोट दें. उन्होंने जावेद खां की बीमारी और दारू के व्यसन के बारे में अंधेरे में रख कर उन के साथ बहुत बड़ा विश्वासघात किया था. आखिर उन्होंने शकीला की जिंदगी के साथ इतना बड़ा खिलवाड़ क्यों कर किया?

अतः वह मन मसोस कर रह गए. शकीला और उस के बच्चे के भविष्य को ले कर वह चिंतित हो उठे थे. उन दोनों की कुछ न कुछ व्यवस्था करने के इरादे से उन्होंने गुलदाद खां के सामने यह प्रस्ताव रख दिया था कि वह अब शकीला और उस के बच्चे की परवरिश का बोझ उठाएं. आखिर शकीला उन के मृतक बेटे की बीवी और उन की बहू है. उस का बच्चा उन का पोता है. लेकिन गुलदाद खां ने अपना तर्क दे कर शकीला और उस के बच्चे का बोझ उठाने से इनकार कर दिया.

गुलदाद खां मिर्जा बेग से बोले, "देखो बेटा, शकीला मेरी बहू नहीं, मेरी बेटी है. इस जवान मिट्टी को मैं अपने घर में रख कर क्या करूंगा? अगर कल को कुछ ऐसावैसा हो गया तो लेने के देने पड़ जाएंगे. फिर उस की सास भी सौतेली है. बेचारी बिना मांबाप की बेटी मुफ्त में पीसी जाएगी. इसलिए शकीला और उस का बच्चा आप के ही पास रहे तो ज्यादा अच्छा रहेगा."

फिर वह आंखों में आंसू भर कर बोले, "तुम से कुछ छिपा नहीं है. मेरी माली हालत पहले ही गिरी हुई है. जावेद खां की बीमारी ने मुझे कहीं का नहीं रखा. मुझ पर साहूकारों का पहले ही कर्ज चढ़ा हुआ है. मुझे अफसोस है कि मैं शकीला और उस के बच्चे के लिए कुछ भी नहीं कर सकता."

मिर्जा अफजल बेग गुलदाद खां से कुछ

यह अंक
आप को कैसा लगा?

सरिता आप ही के लिए प्रकाशित की जाती है. हम पूरीपूरी कोशिश करते हैं कि सरिता का प्रत्येक अंक आप की रुचि के अनुसार रहे और उस से आप को अधिक से अधिक संतोष हो और वह आप की प्रिय पत्रिका बनी रहे.

कृपया हर अंक पर अपनी राय भेजिए. कौन सी रचना आप को पसंद आई, कौन सी नहीं आई. आप किन विषयों पर लेख और कहानियां पढ़ना करेंगे. हम आप की आलोचना और सुझावों का स्वागत करेंगे. अपनी आलोचनाएं व सुझाव निम्न पते पर भेजें :

सरिता,
ई-3, दिल्ली प्रेस, झंडेवालान एस्टेट, नई दिल्ली-110055.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहे बगैर चुपचाप अपने घर लौट आए थे.

जब उन्होंने सारी हकीकत शकीला को बताई तो वह उन के गले लग कर रो पड़ी और बोली, "भाईजान, जिंदगी तो बरबाद हो गई है, अब मैं क्या करूं, कुछ समझ में नहीं आता."

"जब कुदरत को मेरे साथ ऐसा ही करना था तो उस मरने वाले से मुझे औलाद क्यों दे दी? अब तो मैं मरना चाह कर भी नहीं मर सकती. इस की ममता मुझे जीने के लिए मजबूर कर रही है.

"मैं आप पर बोझ भी नहीं बनना चाहती. मैं इस बच्चे को ले कर कहां जाऊं, क्या करूं? कुछ समझ में नहीं आता, भाईजान, आप ही मुझे कोई रास्ता दिखाइए.

"मैं मरना पसंद करूंगी, लेकिन अब और निकाह कभी नहीं करूंगी. यह मेरी बात पत्थर की लकीर है. भाईजान, आप मुझे अपने घर के एक कोने में ही जगह दे दीजिए. मैं किसी तरह मेहनतमजदूरी कर के अपना और अपने बच्चे का पेट भर लूंगी."

मिर्जा अफजल बेग शकीला को समझाते हुए बोले, "भाई के जिंदा रहते, तुम्हें परेशान होने की जरूरत नहीं. कहते हैं कि जरूरतमंद की आंखों पर परदा पड़ जाता है. उसी परदे में जावेद खां से तुम्हारी शादी कर के हम ने गलती की.

"हम तो समझ रहे थे कि जावेद खां के रूप में एक मसीहा हमें मिल गया है लेकिन हमें क्या मालूम था कि वह मसीहा नहीं, हमारे और हमारी बहन के सुखचैन का लुटेरा है.

"अब हमें महसूस हो रहा है कि हमें तुम्हारी दूसरी शादी इतनी जल्दबाजी में नहीं करनी चाहिए थी. वरना आज यह दिन नहीं देखना पड़ता. खैर, हमें अपनी अदूरदर्शिता का नतीजा तो अब भुगतना ही पड़ेगा. जिस तरह मेरे दो बच्चे हैं, उसी तरह तुम दो और सही."

और मिर्जा अफजल बेग ने अपने सिर पर से कंधे तक उतारा हुआ बहन के सभी किस्म के दायित्वों का बोझ, उस के बच्चे के दायित्व के बोझ के साथ और ज्यादा भारी रूप में फिर से अपने सिर पर ले लिया. ●

'जेट' घर में लाइये, मच्छर बाहर भगाइये

और मीठी-मीठी नींद सोइये

जेट मच्छरोंको दूर भगाएं

इसमें है न धुएं का चक्कर, न राख का झमेला. सब कुछ है साफ-सुथरा. बस 'जेट' लगाइये, स्विच ऑन कीजिए और आराम से सो जाइये. 'जेट' से आये भीनी-भीनी खुशबू और आपको आये मीठी-मीठी नींद. 'जेट'.... झट मच्छर भगानेवाली– बिजली का साधन जिसमें है बिल्कुल नई जापानी टेक्नोलॉजी. मच्छर झट भगानेवाला नये ज़माने का एक साफ-सुथरा तरीका.... असरदार, कम-खर्चीला और 'जेट'-सा तेज़. आज ही 'जेट' ले आइये और मच्छरों को निकाल बाहर कीजिये.

निर्माता:
सोनिक इलेक्ट्रोकेन प्रा. लि.
38 पटेल नगर, इंदौर 452001 (भारत)
फोन: 605057

Bidhan-PL-7-Hin

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

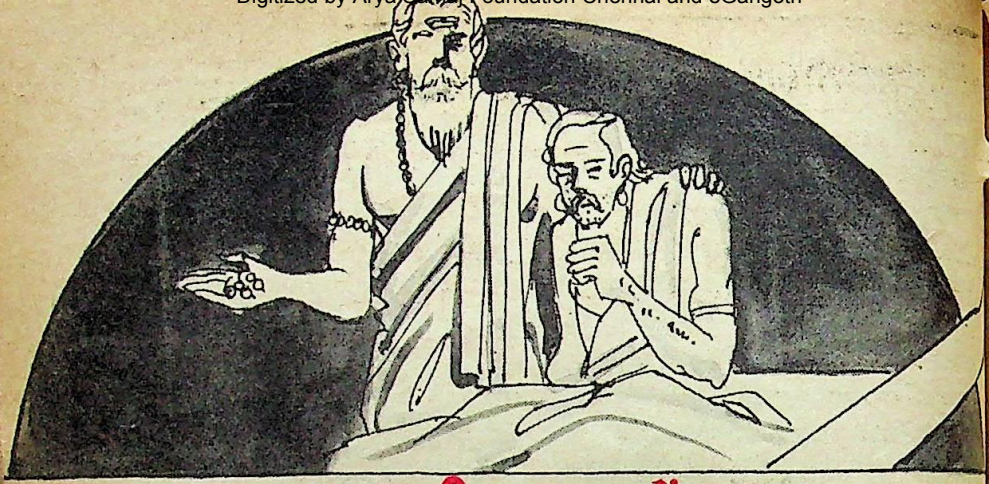

प्राचीन भारत में आयुर्विज्ञान

वेद मानव जाति के बहुत पुराने अभिलेख हैं. इन में वर्तमान हिंदुओं के पूर्वजों (आर्यों) के आरंभिक जीवन के साक्ष्य हैं. उस तथाकथित सतयुग में जिन रोगों का मानव को सामना करना पड़ता था, उन के तात्कालिक ज्ञान के आलोक में उस ने इलाज भी ढूंढ़े, चाहे उन में से अधिकतर आज हमें नीमहकीम ही लगते हों.

वेदों में जिस तरह के उपचार थे, उन्हें चरक ने 'दैव व्यपाश्रय भेषज' अर्थात देवताओं की कृपा पर आश्रित औषधि कहा है. उस ने लिखा है : 'तत्र दैवव्यपाश्रयं मंत्र

लेख • डा. सुरेंद्रकुमार 'अज्ञात'

औषधि मणि मंगल बलि उपहार होम नियम प्रायश्चित्त उपवास स्वस्त्ययन प्रणिपात गमनादि.' (चरक संहिता 1-11-54)

दैव व्यपाश्रय उपचार वे हैं जिन में मंत्र पढ़ना, प्याज, सरसों जैसी औषधि को गले में लटकाना (जैसे आज भी गांवों में शिशु के गले में लटकाते हैं), मणियां, शुभकारी अनुष्ठान, आहुतियां, उपहार, हवन, प्रतिज्ञा, प्रायश्चित्त, उपवास, देवताओं की प्रसन्नता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के लिए पूजा विशेष, सिर झुकाना और तीर्थों को जाना आदि शामिल हैं.

ऋग्वेद में ऐसा इलाज करने वालों की काफी प्रशंसा की गई है. अनेक देवताओं की उन के चिकित्सासामर्थ्य के कारण स्तुति की गई है. जैसे–

रुद्र की स्तुति करते हुए कहा गया है : हे रुद्र, हमारे पुत्रों को ओषधि द्वारा परिपुष्ट करो. मैं ने सुना है कि तुम वैद्यों में सर्वश्रेष्ठ हो : उन्नो वीरान् अर्षय भेषजेभिर्भिवक्तमं त्वा-भिषजां शृणोमि (ऋ. 2-33-4).

सोम की स्तुति में कहा गया है : हे सोम, तुम इस विश्व में बीमारों का इलाज करने वाले हो: भिषक्ति विश्वं यत्तुरम् (ऋ. 8-79-2).

ऋग्वेद से यजुर्वेद तक पहुंचतेपहुंचते चिकित्सकों की प्रशंसा घृणा में परिणत हो गई जिस का मुख्य कारण था उन का हर छूतअछूत के घर इलाज करने जाना.

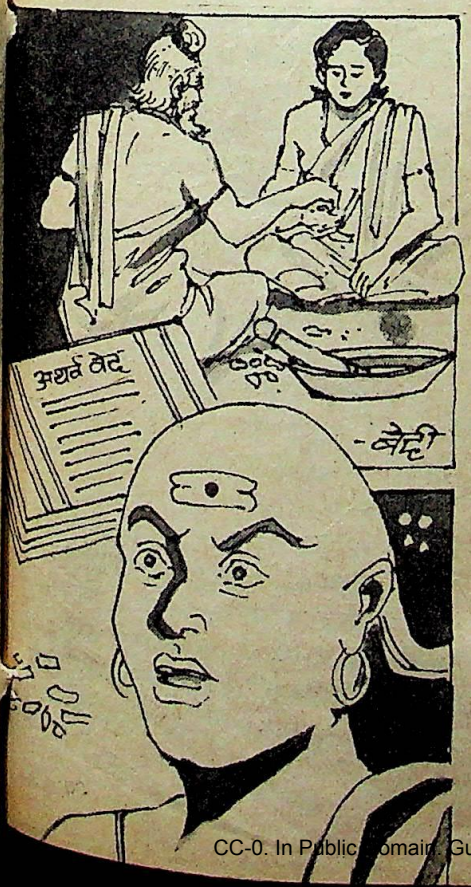

जिन वेदों, धर्मग्रंथों ने चिकित्सा तथा चिकित्सकों के प्रति दुर्भाव व्यक्त करते हुए उन की जम कर निंदा की, उन्हें मटियामेट करने में कोई कसर नहीं छोड़ी, उन्हीं को आयु-विज्ञान की समस्त उपलब्धियों का श्रेय देना क्या हमारे छलकपट तथा ओछेपन का परिचायक नहीं?

वरुण की स्तुति करते हुए कहा गया है: हे वरुण, तुम्हारी सैकड़ोंहजारों औषधियां हैं: शतं ते राजन भिषजः सहस्रम् (ऋ. 1-24-8).

मरुत की स्तुति में कहा गया है : सुंदर दान वाले मरुतो, अपनी ओषधि ले आओ. सुंदर यज्ञ वाले मरुता, सिंधु नद, चिनाब नदी, समुद्र और पर्वत में जो औषध है, तुम वह सब औषध पहचान कर हमारे शरीर की चिकित्सा के लिए ले आओ. मरुतो, जिस प्रकार रोगी के रोग की शांति हो, उसी प्रकार बाधित अंग को जोड़ो : मरुतो मारुतस्य न आ भेषजस्य वहता सुदानवः 23. यत् सिंधौ यदसिक्यां यत्समुद्रेषु मरुतः सुबर्हिषः, यत् पर्वतेषु भेषजम् 25. विश्वं पश्यंतो विभृथा तनूष्वा तेना नो अधि वोचत, क्षमा रपो मरुत आतुरस्य न इष्कता विहुतं पुनः 26. (ऋ. 8/20).

विश्वेदेवों की स्तुति करते हुए कहा गया है कि उन के हाथ में जल औषध बन जाता है और वह सब रोगों का शामक होता है : आप इद्वा उ भेषजीरायो अमीवचातनीः, आपः सर्वस्य भेषजीस्तास्ते कृण्वन्तु भेषजम् (ऋ. 10-137-6).

वायु देवता की प्रशंसा करते हुए कहा गया है : वायु, तुम इस ओर बह कर औषध ले आओ और जो अहितकर है, उसे यहां से बहा ले जाओ. तुम संसार के औषध रूप हो. तुम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देवदूत हो : आ वात वाहि भेषजं. वि वात वाहि यद्रपः, त्वं हि विश्व भेषजो देवानां दूत ईयसे. (ऋ. 10-137-3).

अश्विद्वय को तो चिकित्सा के निराले देवता माना गया है, जो देवताओं तक की बीमारियों का इलाज करते थे. ऋग्वेद कहता है : दिव्य वैद्य (भिषक्) अश्विद्वय हमारा मंगल करें. उन्होंने जिन औषधियों से पक्थ की रक्षा की, जिन से अघ्रिगु और बभ्रु की रक्षा की, उन्हीं से वे आतुरों की चिकित्सा करें :

उत त्या दैव्या भिषजा शं नः करतो अश्विना (ऋ. 8-18-8).

याभिः पक्थमवद्यो याभिरघ्रिगुं याभिर्बभ्रु विजोषसं,

ताभिर्नो मक्षू तूयमश्विना गतं भिषज्यतं यदातुरम् (ऋ. 8-22-10).

उन्हें उषा, सूर्य, अग्नि, इंद्र, वरुण, विष्णु, आदित्य, रुद्र और वसुओं के साथ सोम पीने की प्रार्थनाएं की गई हैं :

अग्निनेन्द्रेण वरुणेन विष्णुनादित्यै

बौद्ध क्रांति को दबा दिया गया तो ब्राह्मणवाद ने पुनः सिर उठाया और आयुर्विज्ञान की अवैदिक परंपरा के प्रति जनरुचि नष्ट करने का हर संभव प्रयास किया.

रुद्रैर्वसुभिः सचाभुवा,

सजोषसा उषसा सूर्येण च सोमं पिबतमश्विना (ऋ. 8-35-1).

अश्विनीकुमारो, तुम अग्नि, इंद्र, वरुण, विष्णु, आदित्यगण, रुद्रगण और वसुगण के साथ और उषा तथा सूर्य के साथ मिल कर सोमपान करो.

विश्वैर्देवैस्त्रिभिरेकादशैरिहाद्भिर्मरुद्भिर्भृगुभिः सचाभुवा (ऋ. 8-35-3).

हे अश्विद्वय, तुम इस यज्ञ में तैंतीस देवताओं, मरुतों और भृगुओं के साथ सोम पान करो.

लेकिन ऋग्वेद से यजुर्वेद तक पहुंचते-पहुंचते चिकित्सकों की यह प्रशंसा न केवल काफूर हो गई, बल्कि उन की घृणा के रूप में भी परिणत हो गई. ऐसा क्यों हुआ, यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है. इस का उत्तर खुद यजुर्वेद ने दे दिया है.

यजुर्वेद का कहना है कि चिकित्सा करने वाले देवता अश्विद्वय (दोनों अश्विनीकुमार) अपवित्र हैं क्योंकि वे आम जनता में जाते हैं. हर छूतअछूत के यहां जाते हैं. देवताओं के दलाल पुरोहित की 'शुद्धता' के विपरीत आचरण करते हैं. ब्राह्मण को चिकित्सा कार्य कदापि नहीं करना चाहिए, क्योंकि चिकित्सक (भिषक्) अपवित्र होता है : ते देवा अब्रुवन्– अपूतो वैमो मनुष्यचरौ भिषजौ इति. तस्मात्ब्राह्मणेन भेषजं न कार्यम्. अपूतो ह्येषोऽमेध्यो यो भिषक्. (यजुर्वेद. तैत्तिरीय संहिता 6-4-9).

यजुर्वेद से यह भी पता चलता है कि तब तक चिकित्सा के देवता अश्विद्वय का बहिष्कार हो चुका था. उन्हें यज्ञों में आहुति नहीं दी जाती थी. उन को व उन के प्रतिनिधि अन्य चिकित्सकों को उसी हालत में सहा जाता था, जब उन के बिना गुजारा नहीं होता था.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

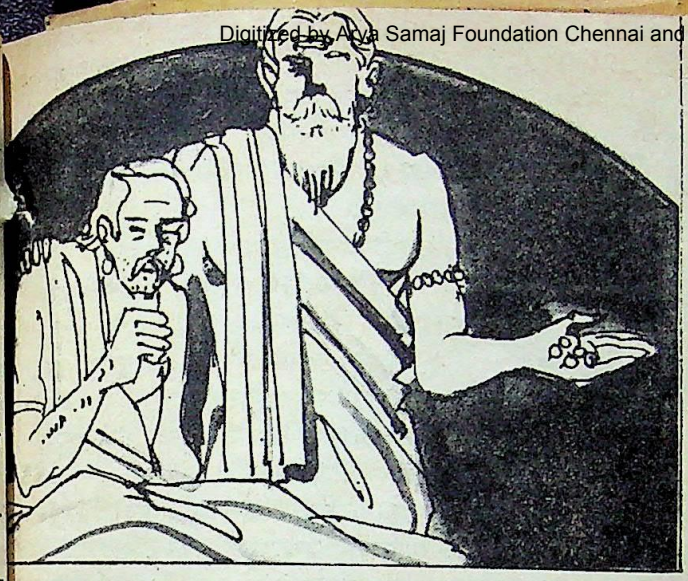

चिकित्सकों द्वारा रोगी व्यक्ति को औषधियां दिए जाने के स्थान पर पुरोहितों ने झाड़फूंक पर बल दिया.

यथा भिषजमु-पधावन्ति. शेष तैत्तिरीय संहिता के समान (मैत्रायणी संहिता, 4-6-2).

शुक्ल यजुर्वेद के व्याख्या ग्रंथ शतपथ ब्राह्मण (4-1-5-1-/15) में आता है कि सुकन्या ने अश्वियों को कहा कि तुम अपूर्ण हो. जब उन्होंने पूछा कि हम अपूर्ण कैसे हैं तो सुकन्या के पति च्यवन ने उत्तर दिया कि कुरुक्षेत्र में देवता जो यज्ञ करते हैं, उस में तुम्हें शामिल नहीं करते. इस दृष्टि से तुम अधूरे हो. यह सुन कर अश्विद्वय वहां गए, जहां देवता यज्ञ कर रहे थे. वहां जब 'बहिष् पवमान स्तोत्र' का पाठ हो चुका तो उन्होंने देवताओं से कहा कि हमें भी आहुति दो, हमारा भी दूसरे देवताओं की तरह आह्वान करो. इस पर देवता बोले, "हम तुम्हारा आह्वान नहीं करेंगे, तुम्हें आदर से नहीं पुकारेंगे क्योंकि तुम घूमते रहे हो, आम लोगों से घुलतेमिलते रहे हो, तुम इलाज करते रहे हो."

स्पष्ट है कि चिकित्सक को हर आदमी के पास जाना पड़ेगा, ऊंचनीच का ध्यान किए बिना उसे सब की सहायता करनी पड़ेगी. इस सर्वजन समभाव को यजुर्वेदीय पुरोहितों ने पसंद नहीं किया और ब्राह्मण को स्पष्टतः चिकित्सा कार्य से वर्जित कर दिया तथा चिकित्सा के देवता को अछूत घोषित कर दिया.

महाभारत में आता है कि च्यवन ऋषि ने जब इंद्र को अश्वियों के साथ सोमपान करने को कहा तो उस ने उत्तर दिया:

अस्माभिनिन्दतावेतौ भवेतां सोमपौ

यजुर्वेद की तैत्तिरीय संहिता में आता है कि एक बार यज्ञ का सिर कट गया. तब देवता अश्विद्वय के पास उसे ठीक कर देने की प्रार्थना ले कर पहुंचे. तब उन्होंने (अश्विद्वय ने) कहा कि यदि हमें यज्ञ में भाग दोगे तो हम ठीक करेंगे. देवता इस शर्त को मान गए. तब पहले दोनों अश्विनीकुमारों को 'बहिष पवमान स्तोत्र' से शुद्ध किया गया और बाद में उन्हें आहुति दी गई (तैत्तिरीय संहिता 6-4-9).

यजुर्वेद की एक दूसरी संहिता– काठक संहिता– में आता है कि देवताओं के चिकित्सक अश्विद्वय को सोम की आहुति नहीं दी जाती थी. जब एक बार यज्ञ का सिर कट गया तो देवता उसे ठीक करने की प्रार्थना ले कर अश्वियों के पास गए. तब उन्होंने कहा, "हमें भी देवताओं के मध्य बैठ कर सोम पीने की अनुमति हो, हमारे लिए भी आहुति डाली जाए." तब देवताओं ने अश्वियों को 'बहिष् पवमान स्तोत्र' से शुद्ध कर के उन्हें आहुति दी. (काठक संहिता 27/4.)

यही बात कपिष्ठल कठ संहिता में कही गई है. यजुर्वेदीय मैत्रायणी संहिता में आता है कि यज्ञ का सिर कट जाने पर सोमपान के अयोग्य ठहराए गए अश्वियों के पास देवता ऐसे दौड़े गए जैसे मानव वैद्यों के पास दौड़े जाते हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कथम्, देवैर्न सम्मितावता तस्मान्मैव वदस्व नः 17. अश्विभ्यां सह नेच्छामः सोमं पातुं महाव्रत, यदन्यद् वक्ष्यसे विप्र तत् करिष्यामि ते वचः 18. अश्विभ्यां सह सोमं वै न पास्यामि द्विजोत्तम, पिबंत्वन्ये यथाकामं नाहं पातु मिहोत्सहे 21. (महा. अनुशासन पर्व, अः 156.)

हे विप्र, अश्विनीकुमार हम लोगों द्वारा निंदित हैं. फिर वे सोमपान के अधिकारी कैसे हो सकते हैं? ये देवताओं के सदृश नहीं. अतः उन के लिए इस तरह की बात न करें. हम उन के साथ सोमपान नहीं करना चाहते. अतः इसे छोड़ कर यदि किसी अन्य काम की आप आज्ञा देंगे तो उसे मैं अवश्य पूर्ण करूंगा. द्विजश्रेष्ठ, यह निश्चित है कि मैं दोनों अश्विनीकुमारों के साथ सोमपान नहीं करूंगा. अन्य देवताओं की इच्छा हो तो वे उन के साथ सोमपान कर लें. मैं तो ऐसा नहीं कर सकता.

यही नहीं, चिकित्सक को बलि पशु भी बनाया गया. यजुर्वेद में जहां पुरुषमेध में बलि दिए जाने वाले व्यक्तियों की सूची दी गई है, वहां लिखा है: पवित्राय भिषजम् (यजुर्वेद, 30/10) अर्थात पवित्र के लिए भिषक (चिकित्सक) की बलि दे.

इस के बावजूद लोगों ने बीमारियों से छुटकारा पाने के प्रसाय जारी रखे. अथर्वन ऋषि के वंशजों ने इस दिशा में कुछ प्रगति भी की.

ऋग्वेदकाल में केवल मंत्रों से झाड़फूंक होती थी.

विष दूर करने का नुसखा : सो चिन्नु न मराति नो वयं मरामारे अस्य योजनं, हरिष्ठा मधु त्वा मधुला चकार. (ऋ. 1-191-10).

अश्व द्वारा परिचालित हो कर सूर्यदेव दूर स्थित विष को दूर करते हैं. विष, मधुविद्या तुम्हें अमृत के रूप में परिणत कर देती है.

राजयक्ष्मा (तपेदिक) का उपचार: अंगादंगाल्लोमनो लोम्नो जातं पर्वणि पर्वणि, यक्ष्मं सर्वस्मादात्मनस्तमिदं वि वृहामि ते. (ऋ. 10-163-6)

प्रत्येक अंग, प्रत्येक रोम, शरीर के प्रत्येक जोड़ और तुम्हारे सर्वांग में जहां कहीं यक्ष्मा रोग उत्पन्न हुआ है, मैं उसे वहां से दूर करता हूं.

नींद लाने की दवा: य आस्ते यश्च चरति यश्च पश्यति नो जनः, तेषां सं हन्मो अक्षाणि यथेदं हर्म्यतथा (ऋ. 7-55-6).

जो भी यहां बैठा हो, चलताफिरता हो या देखताभालता हो, हम हर एक की आंखें बंद कर रहे हैं. सब कोई इस स्थिर भवन की भांति निश्चल हो जाए.

पुत्र उत्पन्न करने का नुसखा: अपश्यं त्वा मनसा दीध्यानां स्वायां तनू ऋत्व्ये नाधमानाम्, उप मामुच्चा युवतिर्बभूयाः प्रजायस्व प्रजया पुत्रकामे. (ऋ. 10-183-2.).

मैं ने मानस चक्षु से देखा कि तुम्हारी मूर्ति उज्ज्वल है. तुम यथासमय अपने शरीर में गर्भाधान की कामना करती हो. तुम ने पुत्र की इच्छा की है. मेरे पास आ कर तुम तरुणी हो जाओ. तुम पुत्र उत्पन्न करो.

जलोदर रोग का इलाज: यदेमि प्रस्फुरन्निव दृतिर्न ध्मातो अद्रिवः मृळ्ह सुक्षत्र मृळ्ह (ऋ. 7-89-2).

हे वरुण, यह तेरा महागर्जन अंतरिक्ष में भरता है. मैं फूली हुई मशक के समान हूं. अतः लड़खड़ाता हुआ चलता हूं. महाशक्तिशालिन, सुख दे. रक्षा कर. सुख दे.

लेकिन अथर्वा के वंशजों ने भेषज (औषध) का भी प्रयोग इस के साथ आरंभ कर दिया, यद्यपि यह भेषज आज की अपेक्षा आदिम रूप में ही था. उन्होंने जंगिड (अथर्व. 19-34-1), गुलगुल (अथर्व. 19-38-1), कुष्ठ (अथर्व. 19-39-1), आदि कुछ औषधियों का प्रयोग आरंभ किया. यह एक करेला दूसरा नीम चढ़ा वाली बात थी. एक तो चिकित्सा वैसे ही दूषित, ऊपर से मंत्रों द्वारा झाड़फूंक के स्थान पर औषध का प्रयोग, वृक्षों की जड़ों आदि का प्रयोग.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

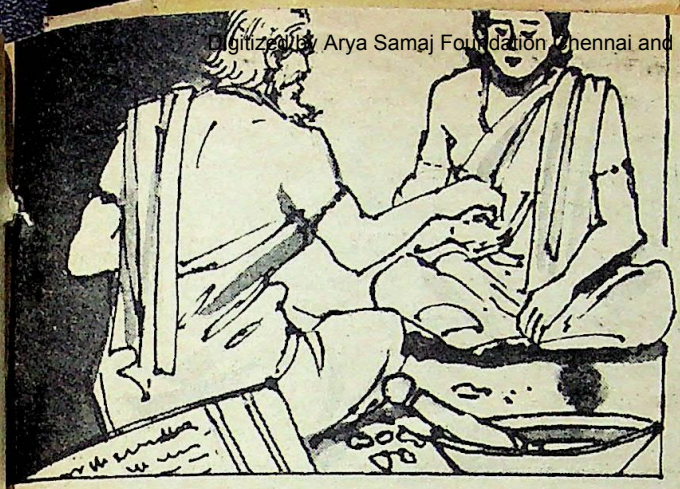

जड़ों से उपचार का ही निषेध नहीं किया गया बल्कि चिकित्सक को भी अति अपवित्र और निंदनीय माना गया.

इसलिए अथर्वा और उस के वंशजों का बहिष्कार किया गया. उन के द्वारा संगृहीत अथर्ववेद को 'वेद' नहीं स्वीकारा गया. ऋग्वेद से संबद्ध किसी ब्राह्मण ग्रंथ में अथर्ववेद का नाम तक नहीं मिलता. यजुर्वेद की मैत्रायणी संहिता, तैत्तिरीय ब्राह्मण, कौषीतकी ब्राह्मण और शतपथ ब्राह्मण में भी इसे वेदों में परिगणित नहीं किया गया है. कात्यायन (शुक्ल यजुर्वेद से संबद्ध) और लाट्यायन (सामवेद से संबद्ध) के श्रौत सूत्रों जैसे दूसरे प्राचीन ग्रंथों में भी इस का उल्लेख नहीं है.

छांदोग्य ब्राह्मण (6--17) ने केवल तीन वेदों की बात की है. अग्नि से ऋग्वेद, वायु से यजुर्वेद और आदित्य से सामवेद उपजा. यह त्रयी विद्या है. अग्नेर्ऋचो वायोर्यजूंषि, सामान्यादित्यात्.स एतां त्रयीं विद्याम्.

मनुस्मृति भी केवल तीन वेदों का नाम लेती है. यथा :

अग्निवायुरविभ्यस्तु त्रयं ब्रह्म सनातनम्, दुदोह यज्ञसिद्धयर्थमृग्यजुः सामलक्षणम्. (मनु. 1/23)

उस परमात्मा ने यज्ञों की सिद्धि के लिए अग्नि, वायु और सूर्य से क्रमशः ऋग्वेद, यजुर्वेद और सामवेद को प्रकट किया.

ऋग्वेदो देवदैवत्यो यजुर्वेदस्तु मानुषः, सामवेदः स्मृतः पित्र्यः (मनु. 4/124).

ऋग्वेद के देव, यजुर्वेद के मनुष्य और सामवेद के पितर देवता हैं.

आपस्तंब ने अथर्ववेद के परिशिष्ट भाग को स्त्रियों और शूद्रों के पढ़ने योग्य कहा है: आथर्वणस्य वेदस्य शेष इत्युपदिशन्ति. (आपस्तंब धर्म सूत्र 2-11-29-12.)

विष्णुधर्मसूत्र (विष्णुस्मृति) ने अथर्वा के वंशजों द्वारा प्रवर्तित जड़ा आदि से उपचार को निषिद्ध घोषित किया गया. मूलक्रियास्वनभिरतिः (25/7) अर्थात जड़ों से इलाज करने में रुचि नहीं रखनी चाहिए.

मनु ने जड़ों से उपचार को गोहत्या के समान (उपपातक) घोषित किया. गोवधः 59 हिंसौवधीनां स्त्र्याजीवोग्भिचारो मूलकर्म च. 63. (मनु. अ. 11).

जड़ों से उपचार का ही निषेध नहीं किया गया, बल्कि चिकित्सक को भी अति अपवित्र और निंदनीय माना गया.

भिषक् चिकित्सकस्य... अन्नमनाद्यम (आपस्तंब धर्मसूत्र 1-6-19-14, 1-6-18-21.गौतम धर्मसूत्र 2-2-17).

अर्थात चिकित्सक और शल्य चिकित्सक का अन्न खाने के योग्य नहीं होता.

पूयं चिकित्सकस्यान्नम् (मनुस्मृति 4/220).

अर्थात चिकित्सा करने वाले का अन्न पीब के समान है, अतः ग्राह्य नहीं.

नानृग्ब्राह्मणो भवति... न चिकित्सकः (वसिष्ठस्मृति 3/4).

अर्थात वह ब्राह्मण ब्राह्मण नहीं जो वेद नहीं जानता, जो चिकित्सा का काम करता है.

वैद्यो...चतुर्विप्रा न पूज्यन्ते बृहस्पतिसमा यदि (अत्रि संहिता, 387).

अर्थात वैद्य आदि चार तरह के ब्राह्मणों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का सत्कार नहीं करना चाहिए, चाहे वे बृहस्पति के समान ही विद्वान क्यों न हों.

चिकित्सकस्य यच्चान्नमभोज्यम् (महाभारत, शांतिपर्व 36/30, वसिष्ठ स्मृति 4/2, मनुस्मृति 4/212, याज्ञवल्क्य स्मृति, आचाराध्याय, श्लो. 162).

अर्थात चिकित्सक का अन्न खाने के अयोग्य है.

चिकित्सकान्...वर्ज्याःस्युर्हव्यकव्ययोः (मनु. 3/152).

अर्थात चिकित्सा करने वाले ब्राह्मण को न श्राद्ध में भोजन कराए और न किसी देवपूजा आदि के अवसर पर.

भिषजे पूयशोणितम् (मनु 3/180).

अर्थात चिकित्सा कर के आजीविका चलाने वाले ब्राह्मण को भोजन कराने से पीब और रक्त खाने वाले कीड़ों की योनि में उत्पन्न होना पड़ता है. (मनुस्मृति, मणिप्रभा हिंदी टीका, पृ. 145).

भिषजे पूयशोणितम् (महाभारत, अनुशासनपर्व, 90/13).

अर्थात श्राद्ध में यदि वैद्यक करने वाले ब्राह्मण को जिमाया जाए तो उसे खिलाया गया अन्न पितरों के लिए पीब और रक्त के समान हो जाता है. (महाभारत, हिंदी टीका, सहित, पृ. 5746, गीता प्रेस, गोरखपुर) भाव यह है कि वैद्य को खिलाने के 'अपराध' में खिलाने वाले के पितरों को दंड मिलता है. उन्हें पीब और रक्त खाना पड़ता है.

चिकित्सा को इतना गंदा और घटिया घोषित किया गया कि हिंदू धर्मशास्त्र इसे करने की आज्ञा केवल वर्णसंकरों (अंतर्जातीय विवाहों की संतानों, जिन्हें नीच समझा जाता था और जो एक तरह से सभ्य समाज से बहिष्कृत लोग थे) एवं अवैध संतानों को देते हैं.

उशना स्मृति में यह काम ब्राह्मण पुरुष और वैश्य स्त्री की संतान को सौंपा गया है: ब्राह्मणात् वैश्यायामम्बष्ठः, हि अंबष्ठाः शल्यजीविनः (उशनास्मृति 31).

अर्थात ब्राह्मण द्वारा वैश्य स्त्री से उत्पन्न संतान अंबष्ठ कहलाती है. वह शल्य चिकित्सा कर के अपनी निर्वाह करे.

उशना ने एक अन्य वर्णसंकर जाति को भी यह काम सौंपा है. वह है क्षत्रिय स्त्री और ब्राह्मण पुरुष के गुप्त संबंधों के परिणामस्वरूप जन्मी भिषक जाति. इसे आयुर्वेद के आठों अंगों को पढ़ कर अपनी आजीविका चलाने का निर्देश दिया गया है : नृपायां विप्रतश्चौर्यात् संजातो यो भिषक् स्मृतः वैद्यकः 26. आयुर्वेदमथाष्टांगं तंत्रोक्तं धर्ममाचरेत, कामिकीं वृत्तिमाचरेत 27. (उशना स्मृतिः)

अपरार्क का मत है कि भिषक शल्य चिकित्सा एवं रोगियों की सेवा कर के अपनी आजीविका चलाए.

मनु का कथन है : अंबष्ठों का पेशा चिकित्सा है. अंबष्ठानां चिकित्सनम् (मनु. 10-47)

चिकित्सा और चिकित्सक के प्रति दुर्भाव को वैदिक परंपरा के कवियों तक ने सूक्तियों में पद्यबद्ध कर के आम आदमी के मन में उसे बैठाने की पूर्ण कोशिश की. यथा:

वैद्यराज नमस्तुभ्यं यमराजसहोदर, यमो हरति वै प्राणान् त्वं प्राणान् धनानि च.

अर्थात हे वैद्य, तुम यमराज के भी बड़े भाई हो. तुम्हें दूर से ही नमस्कार. यम तो केवल प्राणों को हरता है, लेकिन तुम प्राणों के साथसाथ धन को भी हरते हो.

वैद्यनाथ नमस्तुभ्यं क्षपिताशेषमानव, त्वयि संन्यस्तभारोऽयं कृतान्तः सुखमेधते (मय)

अर्थात सारी मानव जाति का विनाश करने वाले हे वैद्यनाथ, आप पर भार सौंप कर यमराज अब आराम कर रहा है. आप को दूर से ही नमस्कार है.

आर्युविज्ञान की परंपरा

प्राचीन भारत में इतना सब कुछ होने पर भी आयुर्विज्ञानियों की एक परंपरा मिलती है. लेकिन वह परंपरा अवैदिक लोगों की है, जिन में शामिल हैं व्रात्य, चार्वाक और बौद्ध.

इस परंपरा ने आयुर्विज्ञान का विरोध

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्राह्मणपुरोहित समुदाय ने लोगों को चिकित्साशास्त्र से विमुख करने में एड़ीचोटी का पसीना एक कर दिया. कभी चिकित्सक को नीच, अपवित्र घोषित किया, कभी चिकित्सा को निंदित लोगों का पेशा बताया तो कभी चिकित्सा विज्ञान पर ग्रहनक्षत्रों की छाया डाल कर उसे अंधविश्वासों का पुंज बनाने की कोशिश की.

करने वाले पुरोहित पर भरपूर गोलाबारी की. पुरीषस्य च रोषस्य हिंसायाः तस्करस्य च, आद्याक्षराणि संगृह्य वेधाश्चक्रे पुरोहितम्.

अर्थात पुरीष (मल), रोष (क्रोध), हिंसा और तस्कर के आदि अक्षरों पुरोहित को एकंत्र कर के बनाने वाले ने पुरोहित की रचना की.

जब बौद्ध क्रांति को प्रतिक्रांति द्वारा दबा दिया गया, तब पुनः ब्राह्मणवाद ने सिर उठाया और पहले से चली आ रही आयुर्विज्ञान की अवैदिक परंपरा का मूलोच्छेद कर उस के प्रति जनरुचि नष्ट करने का हर संभव प्रयास किया, क्योंकि चिकित्सा ब्राह्मण पुरोहित के उस दार्शनिक महल की नींव कर्मसिद्धांत पर वज्राघात करती थी, जो कहता था कि बीमारियां पिछले जन्म के दुष्कर्मों के दंडस्वरूप हैं.

गरुड़ पुराण के अध्याय 5 में बड़े विस्तार से बताया गया है कि पूर्वजन्म में कौन सा पाप करने के दंडस्वरूप अगले जन्म में कौन सी बीमारी होती है. कुछ श्लोक प्रस्तुत हैं :

ब्रह्महा क्षयरोगी स्यात्, कन्याघाती भवेत्कुष्ठी 3. दुश्चर्मा गुरुतल्पगः 4. मांसभोक्ताऽतिरक्तांगः श्यावदन्तस्तु मद्यपः, अभक्ष्यभक्षको लौल्याद् ब्राह्मणः स्यान्मोदरः 5. श्राद्धेऽन्नमशुचि दत्त्वा चित्रकुष्ठी प्रजायते 6. गुरोर्गर्वणावमानादपस्मारी भवेन्नरः, निन्दको वेदशास्त्राणां पांडुरोगी भवेद् ध्रुवम् (गरुड़पुराण, अ. 5).

अर्थात ब्राह्मण का हत्यारा क्षयरोगी होता है. कन्याघाती कोढ़ी होता है. गुरु की पत्नी से संभोग करने वाला चर्मरोगी होता है. मांसाहारी अति रक्तांग (कुष्ठ विशेष) होता है. शराबी व्यक्ति के दांत काले हो जाते हैं. भक्ष्यअभक्ष्य का ध्यान न रखने वाला जलोदर रोगी होता है. श्राद्ध में अपवित्र अन्न परोसने वाला फुलबहरी ग्रस्त होता है. गर्व से गुरु का अपमान करने वाला मिरगी का शिकार होता है. वेदों और शास्त्रों का निंदक पीलिया रोग से ग्रस्त होता है.

चिकित्सक औषध से इन रोगों को दूर कर के उस 'दंड' में हस्तक्षेप करता था. इस से कर्म सिद्धांत झूठा सिद्ध होता था और उस सिद्धांत का प्रचार करने वालों की रोटीरोजी नष्ट होती थी.

लेकिन पुरोहित की रोटीरोजी रहे या न रहे, इस से रुग्ण व्यक्ति को क्या लेनादेना? पुरोहित के एड़ीचोटी का पसीना एक करने के बावजूद जब लोग चिकित्सा से विमुख न हुए तो पुरोहित ने पैंतरा बदला. उस ने दोधारी नीति अपनाई. एक तो उस ने दैव व्यपाश्रय भिषक अर्थात अपनी पुरोहित ब्रांड चिकित्सा को अचूक चिकित्सा घोषित किया, दूसरे उस ने चिकित्सक पर अपना गलवा डालने की कोशिश की.

एक तो उस ने व्रत, तीर्थयात्रा, दान आदि से रोगों के दूर होने के सब्जबाग दिखाने शुरू किए.

स्कंद पुराण में कहा गया है कि सोमवार को व्रत करने तथा सब प्रकार के अनाज पुरोहित की भेंट चढ़ाने से सब व्याधियां नष्ट हो जाती हैं :

प्रथमः सोमवारस्तु तं नक्तेन समूजयेत्.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्नानि यान्यभीष्टानि तानि सर्वाणि-दापयेत् आरोग्यं जायते (जयसिंहकल्पद्रुम, पृ. 850 पर उद्धृत).

भविष्योत्तर पुराण में शुक्रवार के व्रत को आयु बढ़ाने वाला एवं आरोग्यप्रद कहा है. कहा गया है कि यदि व्यक्ति ब्राह्मणों को संतुष्ट करे, शुक्र देवता की सोने या रूपे या कांसे की मूर्ति बनाए, उसे सफेद रंग के कपड़ों में लपेट कर ब्राह्मण को दान करे तो उस की आयु बढ़ेगी तथा उस के रोग नष्ट हो जाएंगे

पूर्वोक्तक्रमयोगेन द्विजानां तर्पणेन तु, सप्तमे त्वथ संप्राप्ते सौवर्णं कारयेत् सितम्. रौप्ये वा कांस्यपात्रे वा स्थापयित्वा भृगोः सुतम्. संपूज्य परया भक्त्या श्वेतवस्त्रानुलेपनैः. दद्याद ब्राह्मणाय, हत्वा, ग्रहकृतान् दोषानायुरारोग्यदो भव.

स्कंद पुराण का कहना है कि शनि ग्रह के कारण पैदा होने वाली व्याधियों को नष्ट करने के लिए शनि की लौह प्रतिमा बना कर, उड़दभात, तिल, लोहा, दक्षिणा, काली गाय अथवा काला बैल ब्राह्मण को दे:

भक्त्योपचारैः संपूज्य प्रतिमां लोहजां मम. माषौदनं तिलैर्मिश्रं दद्याल्लोहं च दक्षिणाम् कृष्णा गां वृषभं वापि दद्यात् विप्राय धीमते.

नेत्र रोग और कुष्ठादि चर्म व्याधियों के नाश के लिए रविवार को व्रत रखा जाए. ब्राह्मण दंपती को भोजन करा कर यथाशक्ति लाल वस्त्र, फल एवं दक्षिणा से उसे प्रसन्न करे.

रक्त में विकार से उपजने वाली तकलीफों—फोड़ा, फुंसी, उठाव आदि को शांत करने के लिए मंगलवार को व्रत करें. गुड़, पीले लड्डू तथा लाल वस्त्र दान में दें.

पुरानी बीमारियों को दूर करने के लिए शनिवार को व्रत करे. 19वें शनिवार को जूते, जुराब, नीले रंग के वस्त्र, काले माश (उड़द), चाकू, तेल निर्मित वस्तुएं वृद्ध ब्राह्मण को दें. (ज्वर और कुष्ठ आदि) शरीर तथा आगंतुक (चोट आदि से उत्पन्न) व्याधि के नाश के लिए रविवार को ब्राह्मण की पूजा कर के उसे घृत, गुड़, नमक और सुवर्ण का दान करें. जो सोमवार को ब्राह्मण के लिए उबटन देता है, वह सब रोगों से छूट जाता है. आश्विन के महीने में गोरस, गाय का घी, दूध और दही तथा अन्न देने वाला सब रोगों से छुटकारा पा जाता है. जिस नक्षत्र में रोग पैदा हो, उसी शुभ नक्षत्र में स्नान करे तथा बलि दे. (अग्निपुराण 280 2-5).

जपों से इलाज

इस के साथ ही एक अन्य साधन निकाला गया— जप का. बताया गया कि अमुक मंत्र का जप करने से अमुक रोग दूर होता है. यथा: 'ओंकार' आदि मंत्र आयु देने वाले तथा सब रोगों को दूर कर के आरोग्य प्रदान करने वाले हैं. 'औं हूं विष्णवे नमः' यह मंत्र उत्तम औषध है. इस मंत्र का जप करने से देवता और असुर नीरोग हो गए. 'पुष्कराक्ष' यह नाम मंत्र नेत्र रोगों का निवारण करने वाला है.

औषध देते और लेते समय इन सब नामों का जप करना चाहिए. औषध कर्म में 'अच्युत' इस अमृत मंत्र का भी जप करे. (अग्नि पुराण— अ. 284, श्लोक 1-10).

धर्मसिंधु में कहा गया है:

रोगानुसारेण लघु रुद्रमहारुद्रातिरुद्राणां जपोऽभिषेको वा.

विष्णुसहस्रनामस्तोत्रस्य शतं सहस्रमयुतं वा जपः सौरजपः.

सूर्यनमस्कारार्घ्य दानानि मुंचामि त्वेति सूक्तजपोऽच्युतानंतगोविंदेति नामत्रयजपो मृत्युंजयजपश्च रोगानुसारेणेति सर्वरोगहराणि. (धर्मसिंधु, तृतीय परिच्छेद).

अर्थात रोग के अनुसार लघुरुद्र, महारुद्र और अतिरुद्र का जप या अभिषेक, विष्णुसहस्रनाम स्तोत्र का 100 बार या 10,000 बार जप, सूर्य मंत्र का जप, सूर्य नमस्कार, सूर्य को अर्घ्य देना, 'मुंचामि त्वा' इस सूक्त का जप, अच्युतानंद गोविंद इन तीन नामों का जप और मृत्युंजय जप रोग के अनुसार करे. ये सब रोगों को दूर करने वाले हैं.

यहां यह विशेष ध्यान देने योग्य है कि ये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जप भी पुरोहित की आमदनी का साधनमात्र थे. जप के लिए नहानाधोना, मुद्रा विशेष में चिरकाल तक बैठना आदि आवश्यक कहा गया है. रोगी यह सब नहीं कर सकता. अतः दानदक्षिणा ले कर उस के लिए पुरोहित ही जप करता था.

पूर्वोक्त प्रकार की बातें आज भी पंचांगों (जंत्रियों) में लिखी मिलती हैं और आज भी पुरोहित, ज्योतिषी आदि इन का प्रचार करते हैं. इन्हें अपनाने की लोगों को जोरदार शिक्षा देते हैं.

दूसरे उस ने चिकित्सक पर भी अपना आधिपत्य जमा कर, अपने को उस से बड़ा दरशा कर, अपने हलवेमांडे को सुरक्षित किया. उस ने ग्रहों और नक्षत्रों के शुभअशुभ फल की कपोल कल्पित बातों से न केवल आम आदमी को, बल्कि चिकित्सक को भी भरमाने की कोशिश की और ऐसी बातें कीं जिन से रोगी औषध खाने से और चिकित्सक औषध देने से ही पराङ्मुख हो जाए. उस ने कहा कि अमुक नक्षत्र में रोग पैदा होगा तो इतने दिन तक पीड़ा अवश्य रहेगी. उस के बाद खतम हो जाएगी. अतः औषध लेना या न लेना एक ही बात है.

नीचे कुछ लक्षणों के विषय में भिन्नभिन्न अवधियां अंकित हैं: अश्विनी नक्षत्र में रोग की उत्पत्ति होने पर एक दिन या 9 दिन अथवा 25 दिन तक पीड़ा होती है. भरणी नक्षत्र में रोग उत्पन्न होने पर 11 अथवा 21 अथवा 1 महीने तक पीड़ा होती है अथवा मृत्यु हो जाती है. कृत्तिका में 10 दिन या 9 दिन अथवा 21 दिन पीड़ा रहती है:

अश्विन्यां रोगोत्पत्तौ एकाहं नवदिनानि वा पंचविंशतिदिनानि वा पीड़ा भरण्यामेकादशैकविंशतिर्वा मासं वा मृत्युर्वा.

कृत्तिकायां दश नववैकविंशतिर्वा (धर्मसिन्धु तृतीय परिच्छेद 1-3)

इसी तरह 27 नक्षत्रों के विषय में काल्पनिक अवधियां लिखी हुई हैं. इस सब का परिणाम यह हुआ कि लोगों में औषध न लेने की प्रवृत्ति बढ़ी और वैद्य हतोत्साहित हुए. लोग रोग निवृत्ति के लिए वैद्य के पास जाने की अपेक्षा पुरोहित और ज्योतिषी के पास यह जानने के लिए जाने लगे कि रोग किस नक्षत्र में पैदा हुआ है और कितने दिन बाद शांत होगा.

हर व्यक्ति मृत्यु से डरता है. उसे अपने से दूर रखना चाहता है. पुरोहितों ने, जिन्हें अपनी दानदक्षिणा मिलने न मिलने तक का कुछ ज्ञान न था, लोगों को वैद्य से दूर कर के अपने चंगुल में फंसाने के लिए उन्हें बताना शुरू किया कि अगर अमुक तिथि को आदमी बीमार होगा तो उस की मृत्यु निश्चित है. एक बहुत लंबी सूची में से कुछ योग निम्नलिखित हैं :

जन्मनक्षत्र, जन्मराशि और अष्टम चंद्रमा में रोग का आरंभ होने पर मृत्यु होती है. रविवार को मघा द्वादशी, सोमवार को विशाखा एकादशी, मंगलवार को पंचमी आर्द्रा के योग में मृत्यु होती है : जन्मनक्षत्रे जन्मराशौ अष्टमचंद्रे रोगोत्पत्तौ मृत्युः अर्कादिवारे क्रमेण मघाद्वादश्यौ विशाखैदश्यौ पंचम्यार्द्रे...योगे मृत्यु (धर्मसिंधु. तृतीय परिच्छेद).

लोगों को इस तरह अंधकारमय भविष्य से भयभीत कर उन के रोग तो पंडोंपुरोहितों से दूर न हो सकते थे पर उन्होंने अपनी गरीबी अवश्य दूर की. 'धर्मसिंधु' में आगे लिखा है कि जिसजिस नक्षत्र में रोग आरंभ होने से मृत्यु अवश्य होती बताई गई है, उसउस नक्षत्र की शांति अवश्य करनी चाहिए. शांति में मुख्यतः उस नक्षत्र की सोने की प्रतिमा बनानी चाहिए, उसकी पूजा कर के, वह सुवर्णमूर्ति तथा एक गाय पुरोहित को दी जानी

स्वार्थपरता

राष्ट्रीयता बुरी बात नहीं है, बुरी बात तो है संकुचितता, स्वार्थपरायणता और औरों से बिलकुल अलग रहने की वृत्ति, जो कि आधुनिक राष्ट्रों का जहर है, पाप है.

—महात्मा गांधी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहिए. येषु नक्षत्रेषु मरणमुक्तं तत्र शांतिरावश्यकी ... नक्षत्रदेवताप्रतिमां सौवर्णी संपूज्य...आचार्याय प्रतिमां च दद्यात्.

यहां यह ध्यान रहे कि पुरोहित ने कहीं भी यह बात नहीं कही कि इस तरह शांति करने से मृत्यु टल जाएगी. यदि दान देने के पश्चात संयोगवश कोई बच गया तो पुरोहित अपनी पीठ पर थापी दे कर उस का उदाहरण यहांवहां दे कर दूसरों को उलटे उसतरे से निर्विकार भाव से मूंड़ता था. यदि दान देने वाला मर जाता, तब भी पुरोहित के लिए कोई धर्म संकट नहीं पैदा होता था. वह बड़ी ढिठाई से मृतक के संबंधियों को बताता कि मृत्युयोग था. उस को कोई कैसे टाल सकता था. हां, हम ने जो अनुष्ठान किया, मृतक ने जो दान आदि दिया है, उस से उस की सद्गति होगी. स्वर्ग में देवदुर्लभ स्थान प्राप्त होगा.

जो लोग फिर भी औषध खाने से विमुख नहीं हुए, पुरोहितों ने उन के दवाई खाने के दिन तक पर अपना अधिकार जमाया, उन्हें नक्षत्र जानने और मंत्रोच्चारण करने के चक्र में फंसाया ताकि वैद्य से पहले रोगी उन के यहां भेंट चढ़ाएं :

ज्येष्ठामूलश्रुतिस्वातीमृदुक्षिप्रपुनर्वसौ, गुरुशुक्रेन्दुवारेषु शस्तं भेषजभक्षणम् (धर्मसिंधु, पृ. 675)

अर्थात ज्येष्ठा, मूल, श्रवण, स्वाती, पुनर्वसु नक्षत्रों, गुरुवार, शुक्रवार और सोमवार को औषध ग्रहण करना उत्तम है.

औषध चतुर्थी, नवमी और चतुर्दशी तिथि, भौमवार, एवं मंद, दारुण तथा उग्र नक्षत्र में शुरू न करे. चिकित्सक को चाहिए कि विष्णु, गौ, ब्राह्मण, चंद्रमा, सूर्य आदि देवों की पूजा कर के रोगी के उद्देश्य से निम्नलिखित मंत्र का उच्चारण करते हुए औषध प्रारंभ करे:

ब्रह्मदक्षाश्विरुद्रेन्द्रभूचन्द्रार्कानिलानलाः, ऋषयश्चौषधीग्रामा भूतसंघाश्च पांतु ते. रसायनमिवर्षीणां देवानाममृतं यथा, सुधैवोत्तमनागानां भैषज्यमिदमस्तु ते.

अर्थात ब्रह्मा, दक्ष, अश्विनीकुमार, रुद्र, इंद्र, भूमि, चंद्रमा, सूर्य, अनिल, अनल, ऋषि, औषधिसमूह तथा भूतसमुदाय—ये तुम्हारी रक्षा करें. जैसे ऋषियों के लिए रसायन, देवताओं के लिए अमृत तथा श्रेष्ठ नागों के लिए सुधा ही उत्तम एवं गुणकारी है, उसी प्रकार यह औषध तुम्हारे लिए आरोग्यकारक एवं प्राणरक्षक हो. (अग्निपुराण, अ. 280, श्लो. 7-14).

इस तरह स्पष्ट है कि प्राचीन भारत में ब्राह्मण पुरोहित ने चिकित्साशास्त्र को पैर जमाने से रोकने के लिए अनेक हथकंडे अपनाए. कभी चिकित्सक को नीच और अपवित्र घोषित किया गया तो कभी चिकित्सा को समाज में निंदित लोगों का पेशा बताया और बनाया गया. कभी दानदक्षिणा के अवसर जुटाने वाले कामों को चिकित्सा के नाम पर प्रचारित किया गया तो कभी चिकित्सा विज्ञान पर ग्रहनक्षत्रों की मनहूस छाया डाल कर उसे अंधविश्वासों का पुंज बनाने की कोशिश की गई. इस सब का दुष्परिणाम यह हुआ कि जनता वैद्यों से चिकित्सा करवा कर भी मन में उन्हें नीच, अपवित्र और गंदे मानती रही.

चिकित्सकों के प्रति यह अपवित्रता और नीचता की भावना 19वीं शताब्दी तक स्पष्ट देखी जा सकती है. 1830 ईसवी के लगभग जब कलकत्ता मेडिकल कालिज खुला तो इसी कारण वहां दाखिला लेने के लिए तथाकथित ऊंची जातियों का कोई विरला ही विद्यार्थी हौसला करता था.

आज प्राचीन भारत का गुणगान करने वाले अतीतवादी हिंदू चरक आदि प्राचीन आयुर्विज्ञान की उपलब्धियों को हिंदू धर्म वेदों की महानता के रूप में प्रस्तुत करते हैं, जबकि वास्तविकता यह है कि वे हिंदू धर्म व वैदिक परंपरा के कारण नहीं पनपे, बल्कि उस के जानलेवा विरोध के बावजूद डटे. इस प्रतिकूलता के कारण ही बहुत कम नाम ऐसे हैं, जिन्होंने आयुर्विज्ञान को समृद्ध किया.

एक तरह से बौद्ध क्रांति के खत्म होने के साथ ही आयुर्विज्ञान में मौलिक खोजें खत्म हो गईं. भारतीय संस्कृति के निष्पक्ष विद्वानों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्व बाल साहित्य

मनोरंजक, ज्ञानवर्धक, प्रेरक पुस्तकें

प्रत्येक रु. 2.50
ईमानदारी का इनाम
सबसे अच्छा मित्र
तेनालीराम
तूफान की वापसी
कंजूस महाजन
दो बहादूर लड़के
महीने में एक बार
झूठी शिकायत
शिवाजी की महानता

प्रत्येक रु. 3.00
प्रसिद्ध वैज्ञानिक
हमारी सेना
मंगल की सैर

प्रत्येक रु. 4.00
शुक्र की खोज
दुश्मनों के बीच
आगरे वाले मामा जी

प्रत्येक रु. 5.00
कल नहीं आज
एकता का जादू
एक और देशद्रोह

आज ही अपने पुस्तक विक्रेता से लें या आदेश भेजें.

दिल्ली बुक कंपनी एम - 12 कनाट सरकस, नई दिल्ली - 110001

• पूरा सैट 50 रुपए मूल्य अग्रिम भेजने पर डाक खर्च केवल 2 रुपए वी.पी.पी. से. चुनी हुई पुस्तकें मंगवाने पर 10 रुपए अग्रिम भेजें. चैक नहीं, बैंक ड्राफ्ट/पोस्टल आर्डर/मनीआर्डर भेजें. डाक खर्च अतिरिक्त.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का मत है कि भारत में दवाईयों और शल्यचिकित्सा के क्षेत्र में बौद्ध काल में जो असाधारण प्रगति हुई, उस का कारण है बुद्धधाम का यह महत्त्वपूर्ण सिद्धांत की दुखों को नष्ट करना है. (देखें, दि कल्चरल हैरिटिज आफ इंडिया, जिल्द 3, पृ. 445).

ईसा की प्रारंभिक शताब्दियों में हुए बौद्ध नागार्जुन के बाद शायद ही कोई ऐसा नाम हो जिसे आयुर्विज्ञान को उन्नत करने वालों में शामिल किया जा सके. इसी कारण आज का आयुर्वेद का नामलेवा (पक्षपाती) हिंदू हजारों वर्ष पहले के ग्रंथों की ओर भागता है, जबकि उस समय के आयुर्विज्ञान को बाद की शताब्दियों के ज्ञान की अपेक्षा निम्नस्तर का होना चाहिए था, यदि बाद की शताब्दियों में उत्तरोत्तर उन्नति हुई होती.

आज हिंदू धर्म व वेद विरोधी परंपरा के लोगों की उपलब्धियों को हिंदू धर्म व वेदों की उपलब्धियां बना कर क्यों पेश किया जा रहा है? इस प्रश्न के उत्तर के दो भाग हैं. एक तो यह कि अतीतवादी हिंदू को आयुर्वेद में 'वेद' शब्द देख कर भ्रम होता है कि यह उस के वेदों की ही शाखा है, जबकि आयुर्वेद में 'वेद' मात्र ज्ञान का अर्थ देता है—आयु का ज्ञान.

वैसे वेद शब्द को हिंदू भोलेपन के कारण ही अपना रहा हो, ऐसी बात नहीं. यह आयुर्वेद को वेदों से जोड़ने का चतुराईपूर्ण तरीका भी है. इसी आधार पर तो अवैदिक आयुर्विज्ञान को वैदिक बनाया जाता है.

दूसरे यह कि अतीत को सर्वांगपूर्ण बनाने के लिए आवश्यक है कि उस में से फालतू को निकाला जाए और जो नहीं है, वह जोड़ा जाए. तभी सर्वांग सुंदर चित्र उभर सकता है. उन्हें मानव के लिए अतिउपयोगी आयुर्विज्ञान जब अपने हिंदू अतीत में नहीं मिलता तो वे अहिंदू अतीत को हिंदू अतीत बनाने का हथकंडा अपनाते हैं. लेकिन इस तरह अधर्म अर्थात छलकपट से धर्म की कब तक महानता स्थापित रह सकती है?

हिंदू धर्म की इस तरह झूठी महिमा स्थापित करने के स्थान पर हमें सचाई को, चाहे वह कड़वी है, स्वीकार कर के आधुनिक विज्ञान के आलोक में आगे बढ़ना चाहिए और हर मूर्खतापूर्ण बात को त्याग कर वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाना चाहिए. क्योंकि महत्त्वपूर्ण हिंदू धर्म की महिमा नहीं, बल्कि महत्त्वपूर्ण है मानव का आरोग्य, मानव का कल्याण. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिहार में डायन बना कर हत्याओं का सिलसिला

लेख • प्रमोद दत्त

बिहार में छोटानागपुर इलाके के वनवासियों में शिक्षा के प्रसार, रहनसहन के स्तर में सुधार और चिकित्सा की सुविधाएं मुहैया कर के आदिवासी समाज की प्रगति से संबंधित ईसाई मिशनरियों के दावे का खोखलापन तब नजर आता है, जब इन क्षेत्रों में 'डायन' बता कर जिंदा जला देने या मारपीट कर हत्या करने की घटनाएं बारबार सामने आती हैं.

दरअसल, मिशन वालों को सिर्फ अपने धर्म के प्रचार से मतलब रहा है. विकास के नाम पर सिर्फ आदिम धर्म के अनुसार पेड़, झरना और बिजली जैसे प्राकृतिक तत्त्वों को पूजने वाले आदिवासियों को साफसुथरे 'चर्च' में खड़ा कर दिया गया. तीरधनुष की परंपरागत शैली में जीने वाले आदिवासियों के दूरदराज जंगलों में फैले परिवारों में पश्चिमी शैली का बदलाव लाया गया. लेकिन इस के बावजूद आदिवासी समाज में जड़ जमा चुकी रूढि परंपराओं को तोड़ा नहीं जा सका या इस के लिए कोशिश ही नहीं की गई.

पिछली 14 अगस्त, 1987 को कोडरमा थाने के जोड़ा सिमर गांव की एक 60 वर्षीया निर्दोष महिला अकली देवी को 'डायन' होने के आरोप में जिंदा जला दिया गया.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोडरमा के पुलिस उप अधीक्षक विद्यानंद मिश्र के अनुसार, इस गांव के रामकिशन सिंह की पत्नी की मृत्यु हो गई. गांव में यह अफवाह फैला दी गई कि अकली देवी डायन है और उसी ने अपने तंत्रमंत्र से रामकिशन की पत्नी की हत्या की है. इस अफवाह ने तंत्रमंत्र में विश्वास रखने वाले ग्रामीणों को उत्तेजित कर दिया. गांव वाले महिला की लाश को ले कर अकली देवी के घर पहुंचे और तंत्रमंत्र से मृतक महिला को जिंदा करने के लिए अकली देवी पर दबाव डालने लगे.

लाख मिन्नतआरजू करने और गिड़-गिड़ाने पर भी अकली देवी की मजबूरी पर ग्रामीणों ने जम कर उस की पिटाई कर दी. अधमरी अकली देवी को बचाने के लिए उस के दामाद सोना सिंह ने बीचबचाव की कोशिश की तो गांव वालों ने उसे घर में बंद कर दिया.

इस के बाद गांव वालों ने श्मशान घाट पर दो चिताएं एक साथ सजाईं, एक पर रामकिशन की पत्नी की लाश रखी और दूसरे पर तथाकथित डायन अकलीदेवी को रख कर जिंदा जला दिया. बंदी बनाए गए सोना सिंह ने किसी तरह भाग कर कोडरमा थाने में घटना की जानकारी दी. गांव के 16 व्यक्तियों के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया गया. घटना-स्थल पर पुलिस के पहुंचने से पहले सभी अभियुक्त फरार हो गए.

एक सप्ताह के अंदर ही इसी प्रकार की दूसरी घटना आदिवासी बहुल जिला चाई-बासा के जनुमपी गांव में घटी. 18 अगस्त, 1987 को सेना में कार्यरत, इस गांव के उमेशचंद चातर की बेटी की अचानक मृत्यु हो गई. मृत्यु की सूचना पर उमेशचंद चातर छुट्टी ले कर घर आया. अंधविश्वास में जकड़े सेना के इस जवान ने गांव के एक ओझा से अपनी बेटी की मृत्यु का कारण पूछा.

ओझा ने तंत्रमंत्र का नाटक किया और उसी गांव के मंगल सिंह की मां एवं पत्नी को डायन बताते हुए कहा कि दोनों ने ही तंत्रमंत्र कर उस की बेटी की हत्या की थी. उमेश चंद्र चातर पर ओझा की बात का ऐसा असर हुआ कि उस ने अपने भाई सुभाष चातर के साथ मिल कर 19 अगस्त,1987 को आधी रात के समय मंगल सिंह के घर पर धावा बोल दिया. घर के बाहर सोई मंगल सिंह की मां को दोनों भाइयों ने बुरी तरह पीटा, जिस से उस की मृत्यु हो गई.

दोनों ने मंगल सिंह के घर का दरवाजा बाहर से बंद कर दिया. शोरगुल सुन कर मंगल सिंह ने अंदर से हाथ निकाल कर दरवाजे को खोलने की कोशिश की तो उस के हाथ काट दिए गए. मकान के चारों ओर मिट्टी का तेल छिड़क कर सेना के जवान और उस के भाई ने आग लगा दी. मंगल सिंह ने तो किसी तरह घर से निकल कर अपनी जान बचा ली, लेकिन उस की गर्भवती पत्नी एवं तीन वर्षीय पुत्र घर के अंदर ही जल कर राख हो गए. सुभाष चातर पुलिस की गिरफ्त में आ गया, लेकिन उमेशचंद्र चातर वापस अपने काम पर लौट गया. फलस्वरूप उस की गिरफ्तारी नहीं हो सकी.

इन दोनों घटनाओं के पहले जहानाबाद जिले के मोदनगंज गांव की टुना देवी पर 'डायन' होने का आरोप लगा कर अंधविश्वास में जकड़े कोई ग्रामीण नहीं, बल्कि घोसी थाने के जमादार ब्रह्मदेव तिवारी ने उसे बुरी तरह पीटा. और उस के घर का सारा सामान पुलिस

ग्रामीण इलाकों से वोट समेटने के लिए हमेशा आगे रहने वाली सरकार तथा उन्हें प्रगतिशील बनाने का दावा करने वाले ईसाई मिशनरी क्या आए दिन अंधविश्वासों की बलि चढ़ते निर्दोष ग्रामीणों को अज्ञान के इस अंधकार से बाहर निकालने की ओर भी कभी ध्यान देंगे?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंधविश्वासों की भेंट चढ़ी एक निर्दोष जिंदगी : प्रगति का दावा करने वालों के मुंह पर तमाचा

उसे बुरी तरह पीटा. और उस के घर का सारा सामान पुलिस के सिपाही लूट ले गए.

13 अगस्त, 1987 को रात के 12 बजे ब्रह्मदेव तिवारी पुलिस बल के साथ टुना देवी के घर आ धमका. पुलिसिया रोब में घर का दरवाजा खुलवाया और घर के अंदर घुस आया. टुना देवी से कहा कि उस का बेटा बीमार है और वह डायन होने के नाते उसे ठीक कर दे.

टुना देवी ने पुलिस वालों को लाख समझाने की कोशिश की कि वह डायन नहीं है और बीमार को ठीक करना उस के बूते से बाहर की बात है. लेकिन पुलिस वालों को टुना देवी की बातों पर जरा भी भरोसा नहीं हुआ टुना देवी की बुरी तरह पिटाई की गई. पुलिस वालों को जब लगा कि टुना देवी मर गई है तब वे घर के कीमती सामानों को उठा कर चलते बने.

दूसरे दिन जमादार के खिलाफ मामला दर्ज करने गांव के कुछ लोग घोंसी थाना पहुंचे. वहां रिपोर्ट लिखने से इनकार कर दिया गया. बाद में जहानाबाद अदालत में मुकदमा दायर किया गया.

टुना देवी को इलाज के लिए जहानाबाद सदर हस्पताल में भरती कराया गया. गांव में अभी भी भय का वातावरण बना हुआ है क्योंकि जमादार के खिलाफ गवाही देने वालों को पुलिस वाले

बिहार के गांवों में आज भी तंत्रमंत्र, ओझा डायन आदि रूढिवादी एवं अंधविश्वासपूर्ण परंपराओं को तोड़ा नहीं जा सका है. अगर कथित डायन में किसी की हत्या करने की तांत्रिक शक्ति है तो साधारण लोगों द्वारा पीटे जाने पर भी वह उस शक्ति से उन का अहित क्यों नहीं कर पाती है?

किसी असाधारण किस्म की दिखने वाली औरतों पर 'डायन' होने का आरोप लगा कर उस की संपत्ति हड़पने या पुराने झगड़े का बदला लेने की साजिश चलती है.

सवाल अकली देवी, टुना देवी या मंगल सिंह की निर्दोष मां एवं पत्नी की मौत का नहीं है, बल्कि ऐसी सारी कमजोर एवं वृद्ध महिलाओं का है, जो इक्कीसवीं शताब्दी में 'डायन' कह कर मारी जाने वाली हैं. •

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोकतंत्र

(पृष्ठ 27 का शेषांश)

कर दिया, वही काफी है. क्या इसे ही लोकतंत्र कहते हैं?

व्यापार या व्यवसाय पुश्तैनी हो, यह माना जा सकता है. उद्योग व व्यापार व्यक्ति की निजी संपत्ति होती है और वह चाहे जिसे दे कर जाए, यह उस की मरजी है पर देश व समाज को भी यदि कोई अपनी निजी जागीर या पुश्तैनी संपत्ति समझने लगे तो इस का खमियाजा भी लोकतंत्र को कभी न कभी उठना पड़ सकता है. नेहरू खानदान तो वैसे भी प्रधान मंत्री पद को अपनी व्यक्तिगत जागीर समझता है.

भारतीय संविधान के अनुसार हमारे यहां स्वतंत्र न्यायपालिका की व्यवस्था है और उच्चतम न्यायालय को न्यायिक समीक्षा (जुडिशियल रिव्यू) का अधिकार दिया है. अगर उच्चतम न्यायालय संसद या विधान मंडलों के किसी कानून या उस के किसी अंश को संविधान के किसी अनुच्छेद के विरुद्ध समझता है तो वह उसे असंवैधानिक घोषित कर सकता है.

संसद और उच्चतम न्यायालय में से कौन ज्यादा प्रभावशाली है, यह विवाद भी अब लगभग तीन दशक पुराना हो गया है, पर अभी तक इस का अंतिम फैसला नहीं हो पाया. सरकार पहले भी और अब भी उच्चतम न्यायालय को अपना दुश्मन सा मानती है. यह स्थिति तो तब है जब सभी न्यायाधीशों की नियुक्ति प्रधान मंत्री की मरज़ी से ही होती है. कई बार तो मुख्य न्यायाधीश की नियुक्ति में प्रधान मंत्री ने वरिष्ठतम न्यायाधीश को पद न दे कर अपने मनचाहे कनिष्ठ न्यायाधीश को चुना ताकि वह न्यायपालिका को भी सरकार के इशारे पर चला सके. लेकिन यह प्रथा भी लोकतंत्र के लिए बड़ी खतरनाक और संविधान के सिद्धांतों के खिलाफ़ है.

आपातकाल में लोगों ने सत्ता की कितनी ज्यादतियां सहीं, यह एक अलग कहानी है. मगर हमारे संविधान में जहां नागरिक स्वतंत्रताओं का उल्लेख है वहां निवारक नजरबंदी कानून का भी जिक्र है, जिसे अपनी ढाल बना कर सत्ता ने हमेशा अपने विरोधियों को कुचलने का ही यत्न किया है.

निवारक नजरबंदी कानून का शिकार प्रारंभ में किसान और मजदूर आंदोलन एवं कम्यूनिस्ट और सोशलिस्ट पार्टियों को बनाया गया. वह कानून आज तक बदस्तूर कायम है. अंगरेजों के जमाने में स्वतंत्रता आंदोलन को दबाने के लिए जो दमनात्मक कानून थे, स्वतंत्र भारत के इतिहास में उस से भी कठोर कानूनों की ऐसी कड़ियां तैयार होती रही हैं जो जनता पर निरंकुश शासन करते रहने में सहायक हों.

विरोधियों का दमन

26 जून 1975 को आपातकाल के दौरान सरकार ने कुख्यात 'आसुका' (आंतरिक सुरक्षा कानून) के दौरान हजारों राजनीतिक विरोधियों को बंदी बनाया, जबकि इस कानून को बनाते समय कहा गया था कि इस के अंतर्गत केवल तस्करों, कालाबाजारियों तथा जमाखोरों को ही बंद किया जाएगा. इस के नए संस्करण 'राष्ट्रीय सुरक्षा कानून' बनाते समय भी सरकार ने वही बातें दोहराईं, मगर इस का इस्तेमाल भी राजनीतिक विरोधियों के खिलाफ ही किया जा रहा है.

राष्ट्रीय सुरक्षा कानून सरकार को अधिकार देता है कि वह किसी भी व्यक्ति को बिना मुकदमा चलाए और आरोप लगाए या कारण बताए गिरफ्तार कर सकती है. सरकार कहती है कि ऐसे कानून समाज-विरोधी तत्त्वों यानी बदमाशों और चोरबाजारियों के लिए हैं. लेकिन वास्तव में इन्हें लागू करने का एकमात्र उद्देश्य जनता के लोकतांत्रिक अधिकारों को खत्म करने के लिए सरकार के हाथ में अपार शक्ति देने के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मुझे तो आप जानते ही हैं. जब आयोडेक्सवालों ने मुझसे कहा कि मैं इस नये सरदर्द के बाम की सिफ़ारिश आपसे करूँ, तो मैंने कहा 'माफ़ कीजिये'."

"परन्तु कुछ दिनों बाद जब मेरे सर में भयन्कर दर्द उठा तो मैंने संजीवनी बाम की नमूनेवाली बोतल आज़माई। बोतल खोलते ही बाम की तेज़ असरदार महक से मेरा आधा सरदर्द गायब हो गया और बाम लगाते ही एक गरम राहत मेरे सर में समाकर तनाव और दर्द को हटाने लगी। मेरे पति भी अपने पीठ और कमर के दर्द में इससे बड़ी राहत पाते हैं। अब यह मेरे घर में हरदम मौजूद रहता है और मैं तो आपसे कहूँगी, कि इसे अपने घर में भी हमेशा रखिये। पता नहीं, कब किसे दर्द उठे?"

संजीवनी बाम कैसे असर करता है।

संजीवनी बाम खास तौर से तैयार किया तेज़-असर बाम है। इसमें हैं विन्टर ग्रीन का तेल और पुदीने का फूल जैसी जानी-परखी औषधियाँ। संजीवनी बाम की गर्मी तेज़ी से त्वचा में समा कर राहत देती है क्योंकि इसका दर्द-नाशक तत्व फ़ौरन त्वचा में सोख कर दर्द को खींच निकालता है, और सरदर्द बदन, जोड़ों, या कमर के दर्द और नस चढ़ने में फ़ौरन राहत देता है।

नवीन
संजीवनी
स्ट्रॉंग बाम

एस्केएफ़ का एक बेहतरीन उत्पादन।

EL-117-87 HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोकतंत्र

(पृष्ठ 27 का शेषांश)

कर दिया, वही काफी है. क्या इसे ही लोकतंत्र कहते हैं?

व्यापार या व्यवसाय पुश्तैनी हो, यह माना जा सकता है. उद्योग व व्यापार व्यक्ति की निजी संपत्ति होती है और वह चाहे जिसे दे कर जाए, यह उस की मरजी है पर देश व समाज को भी यदि कोई अपनी निजी जागीर या पुश्तैनी संपत्ति समझने लगे तो इस का खमियाजा भी लोकतंत्र को कभी न कभी उठना पड़ सकता है. नेहरू खानदान तो वैसे भी प्रधान मंत्री पद को अपनी व्यक्तिगत जागीर समझता है.

भारतीय संविधान के अनुसार हमारे यहां स्वतंत्र न्यायपालिका की व्यवस्था है और उच्चतम न्यायालय को न्यायिक समीक्षा (जुडिशियल रिव्यू) का अधिकार दिया है. अगर उच्चतम न्यायालय संसद या विधान मंडलों के किसी कानून या उस के किसी अंश को संविधान के किसी अनुच्छेद के विरुद्ध समझता है तो वह उसे असंवैधानिक घोषित कर सकता है.

संसद और उच्चतम न्यायालय में से कौन ज्यादा प्रभावशाली है, यह विवाद भी अब लगभग तीन दशक पुराना हो गया है, पर अभी तक इस का अंतिम फैसला नहीं हो पाया. सरकार पहले भी और अब भी उच्चतम न्यायालय को अपना दुश्मन सा मानती है. यह स्थिति तो तब है जब सभी न्यायाधीशों की नियुक्ति प्रधान मंत्री की मरज़ी से ही होती है. कई बार तो मुख्य न्यायाधीश की नियुक्ति में प्रधान मंत्री ने वरिष्ठतम न्यायाधीश को पद न दे कर अपने मनचाहे कनिष्ठ न्यायाधीश को चुना ताकि वह न्यायपालिका को भी सरकार के इशारे पर चला सके. लेकिन यह प्रथा भी लोकतंत्र के लिए बड़ी खतरनाक और संविधान के सिद्धांतों के खिलाफ़ है.

आपातकाल में लोगों ने सत्ता की कितनी ज्यादतियां सहीं, यह एक अलग कहानी है. मगर हमारे संविधान में जहां नागरिक स्वतंत्रताओं का उल्लेख है वहां निवारक नजरबंदी कानून का भी जिक्र है, जिसे अपनी ढाल बना कर सत्ता ने हमेशा अपने विरोधियों को कुचलने का ही यत्न किया है.

निवारक नजरबंदी कानून का शिकार प्रारंभ में किसान और मजदूर आंदोलन एवं कम्यूनिस्ट और सोशलिस्ट पार्टियों को बनाया गया. वह कानून आज तक बदस्तूर कायम है. अंगरेजों के जमाने में स्वतंत्रता आंदोलन को दबाने के लिए जो दमनात्मक कानून थे, स्वतंत्र भारत के इतिहास में उस से भी कठोर कानूनों की ऐसी कड़ियां तैयार होती रही हैं जो जनता पर निरंकुश शासन करते रहने में सहायक हों.

विरोधियों का दमन

26 जून 1975 को आपातकाल के दौरान सरकार ने कुख्यात 'आसुका' (आंतरिक सुरक्षा कानून) के दौरान हजारों राजनीतिक विरोधियों को बंदी बनाया, जबकि इस कानून को बनाते समय कहा गया था कि इस के अंतर्गत केवल तस्करों, कालाबाजारियों तथा जमाखोरों को ही बंद किया जाएगा. इस के नए संस्करण 'राष्ट्रीय सुरक्षा कानून' बनाते समय भी सरकार ने वही बातें दोहराईं, मगर इस का इस्तेमाल भी राजनीतिक विरोधियों के खिलाफ ही किया जा रहा है.

राष्ट्रीय सुरक्षा कानून सरकार को अधिकार देता है कि वह किसी भी व्यक्ति को बिना मुकदमा चलाए और आरोप लगाए या कारण बताए गिरफ्तार कर सकती है. सरकार कहती है कि ऐसे कानून समाज-विरोधी तत्त्वों यानी बदमाशों और चोरबाजारियों के लिए हैं. लेकिन वास्तव में इन्हें लागू करने का एकमात्र उद्देश्य जनता के लोकतांत्रिक अधिकारों को खत्म करने के लिए सरकार के हाथ में अपार शक्ति देने के

शरिता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मुझे तो आप जानते ही हैं. जब आयोडेक्सवालों ने मुझसे कहा कि मैं इस नये सरदर्द के बाम की सिफ़ारिश आपसे करूँ, तो मैंने कहा 'माफ़ कीजिये'."

"परन्तु कुछ दिनों बाद जब मेरे सर में भयन्कर दर्द उठा तो मैंने संजीवनी बाम की नमूनेवाली बोतल आज़माई। बोतल खोलते ही बाम की तेज़ असरदार महक से मेरा आधा सरदर्द गायब हो गया और बाम लगाते ही एक गरम राहत मेरे सर में समाकर तनाव और दर्द को हटाने लगी। मेरे पति भी अपने पीठ और कमर के दर्द में इससे बड़ी राहत पाते हैं। अब यह मेरे घर में हरदम मौजूद रहता है और मैं तो आपसे कहूँगी, कि इसे अपने घर में भी हमेशा रखिये। पता नहीं, कब किसे दर्द उठे?"

<u>संजीवनी बाम कैसे असर करता है।</u>

संजीवनी बाम खास तौर से तैयार किया तेज़-असर बाम है। इसमें हैं विन्टर ग्रीन का तेल और पुदीने का फूल जैसी जानी-परखी औषधियाँ। संजीवनी बाम की गर्मी तेज़ी से त्वचा में समा कर राहत देती है क्योंकि इसका दर्द-नाशक तत्व फ़ौरन त्वचा में सोख कर दर्द को खींच निकालता है, और सरदर्द बदन, जोड़ों, या कमर के दर्द और नस चढ़ने में फ़ौरन राहत देता है।

नवीन
संजीवनी
स्ट्राँग बाम

एस्केएफ़ का एक बेहतरीन उत्पादन।

EL-117-87 HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अलावा और कुछ नहीं हो सकता. जनता के लोकतांत्रिक अधिकारों से वंचित करने वाले ऐसे कानूनों व अधिनियमों को लागू करने में कांग्रेस सरकार का एक अटूट कीर्तिमान रहा है.

रासुका या आसुका के अतिरिक्त ऐसे कितने ही विशेष कानून हैं जो व्यवहार में 'सैनिक कानूनों' का सा काम करते हैं. जैसे–'आंध्र प्रदेश अशांति दमन कानून 1949, असम अशांत क्षेत्र कानून 1955, सशस्त्र बल विशेष शक्ति अधिनियम और अशांत क्षेत्र कानून 1976 इत्यादि. ये कानून सरकार को इस योग्य बनाते हैं कि जहां कहीं भी असंतोष फैल रहा हो व जन आंदोलन हो रहे हों, सरकार उस क्षेत्र को अशांत क्षेत्र घोषित कर सकती है. उस अशांत घोषित क्षेत्र में पुलिस व सशस्त्र सेना लोगों को बिना वारंट के गिरफ्तार कर सकती है. किसी के भी घर पर छापा मार सकती है. यहां तक कि लोगों को देखते ही गोली भी मार सकती है.

भारतीय लोकतंत्र की नियति

कहना गलत न होगा कि जहां कहीं भी गरीब जनता ने राजसत्ता के क्रूर शोषण के खिलाफ अपनी आवाज बुलंद की है, वहीं पुलिस ने इन कानूनों की छाया में गरीब जनता पर क्रूर अत्याचार किए हैं. सोचने की बात यह है कि यदि ऐसे ही कानूनों की छाया में जीना भारतीय लोकतंत्र की नियति हो तो क्या संविधान द्वारा दिए गए अधिकार 'कागजी' नहीं कहलाएंगे?

राजनीतिक चुनौती का अभाव कांग्रेस (इ) नेताओं को बहुत सुहावना लग रहा है क्योंकि उन के पास कुरसी है तथा सत्ता के गलियारों में वे कोलाहल कर सकते हैं. कांग्रेस की इसी मनमानी के कारण ही सारी राजनीति ऐसे मोड़ पर आ पहुंची है जहां एक तरफ कुआं है और दूसरी तरफ खाई. चारों ओर समस्याओं के कांटे ही कांटे हैं. स्थिति बड़ी विचित्र है. कांग्रेस की छवि एक लोकतांत्रिक दल की नहीं, बल्कि ऐसी पार्टी की बन कर रह गई है जहां निष्ठा सिर्फ एक व्यक्ति के प्रति है, सिद्धांतों के प्रति नहीं. संक्षेप में कांग्रेस सत्तारूढ भले ही हो, लेकिन सत्ता के साथ जो दायित्वबोध होना चाहिए वह उस में नाममात्र भी नहीं है. जब दायित्व और दिशाबोध ही नहीं है तो संकल्प कहां से आएगा. यही तो सब से बड़ी परेशानी है.

हमारे लोकतंत्र के सामने जो समस्याएं पहले छोटी थीं, वे भी अब जटिल हो गई हैं. पंजाब के संबंध में राजीव लोंगोवाल समझौता लगभग धूमिल पड़ चुका है. यह चिंता की बात है कि पंजाब से पैदा हुआ आतंकवाद सिर्फ पंजाब तक सीमित नहीं रहा, वह दूसरे क्षेत्रों में भी फैल रहा है. इस के खिलाफ संघर्ष में जिन को आगे आना चाहिए था वे अपने चारों ओर सुरक्षा की अभेद्य दीवार खड़ी कर यह महसूस कर रहे हैं कि आतंकवाद से निबटने के लिए जो भी प्रयास हो सकते थे, वे कर लिए गए हैं. इस में संदेह नहीं कि पुलिस 'अति विशिष्ट' व्यक्तियों की सुरक्षा में 'अति व्यस्त' हो गई है और आम आदमी को अपने हाल पर छोड़ दिया गया है.

इसी तरह श्रीलंका समझौते पर दस्तखत करते समय कितनीकितनी उम्मीदें बंधी थीं कि 48 घंटे के अंदर ही सारी हिंसक गतिविधियां बंद हो जाएंगी. 72 घंटे के अंदर सारे हथियार डलवा दिए जाएंगे. आम माफी दे दी जाएगी. अंतरिम प्रशासन व्यवस्था तुरंत लागू हो जाएगी. तीन महीनों में पूर्वी व उत्तरी प्रांतीय परिषदों के चुनाव करा लिए जाएंगे. अगला साल खत्म होतेहोते दोनों प्रांतों के विलय पर जनमतसंग्रह भी करा लिया जाएगा. यह सब नियत समय पर होता तो अंतिम को छोड़ कर बाकी सभी लक्ष्य कब के पूरे हो चुके होते. लेकिन विडंबना तो यह है कि पहला ही लक्ष्य–हिंसा की समाप्ति–पूरा नहीं हो पाया है. असफल समझौतों का राजीव गांधी का अब तक का रिकार्ड बदस्तूर कायम है.

राजनीतिक समीकरणों की लचक देखें तो अनुभवी व पुराने लोगों की उपेक्षा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भुखमरी के शिकार ये परिवार लोकतंत्र का अर्थ क्या समझेंगे?

कर के सत्ता पक्ष के सलाहकार भी वे ही लोग बन गए हैं, जिन के बारे में कहा जाता है कि उन्हें राजनीति का जरा भी अनुभव नहीं है. अफसरों ने भी अपनी कर्तव्यनिष्ठा की जगह अंगरेजियत वाली हुकूमत का चेहरा ज्यादा साफ रखा है. इतना ही नहीं, वे अपने विभागीय उच्च अधिकारियों और सत्ताधारियों को भी गलत सलाह देने से नहीं चूकते. इसी का परिणाम यह हुआ है कि लोकतंत्र को भी गलत रास्तों पर हांका जाने लगा है. आजादी के 40 वर्षों में जो अनैतिकता व मूल्यहीनता पनपी है उस ने तनाव, असंतोष और हिंसा को बढ़ने का भरपूर मौका दिया है. रास्ते आसान हुए हैं तो तस्करों और अपराधियों के या उन सुरक्षित स्वार्थी हाथों के, जिन की पहुंच ऊपर तक है या राजसत्ता से सांठगांठ है, वरना वस्तु से ले कर व्यक्ति तक हर क्षेत्र में अवमूल्यन ही दिखाई देता है.

संसद का समर्थ और सार्थक होना लोकतंत्र के लिए एक जरूरी शर्त है. मगर जिस तरह से अब संसद में हंगामेबाजी के दृश्य दिखाई देने लगे हैं, उन की मिसाल भी शायद पूरे विश्व के संसदीय इतिहास में मिलनी मुशकिल है. देखा गया है कि यहां सदन में मंत्री के हाथ से कागज छीनने वाले सांसद को पूरे सत्र के लिए सदन से निष्कासित कर दिया गया. विपक्ष के वरिष्ठ नेताओं को विदेशी खुफिया संगठनों का एजेंट तक कहा गया. लगभग पूरा विपक्ष काफी दिनों तक राज्य सभा का बहिष्कार करता रहा. अध्यक्ष पर पक्षपातपूर्ण रवैए की तोहमतें तक लगाई गईं. कुल मिला कर संसद की तमाम बहसें हंगामेबाजी और शोरगुल के अलावा कुछ भी आदर्श प्रस्तुत नहीं कर रही है.

संसदीय कार्य प्रणाली की जीर्णता अगर हंगामेबाजी के रूप में उजागर होती है तो कई और गंभीर मसले भी हैं. जैसे, प्रश्नकाल का सही इस्तेमाल नहीं होता. इस दौरान कितनी सही जानकारी उपलब्ध कराई जाती है? बजट पर बहस अचानक रोक दी जाती है, इसलिए मंत्रालयों के बजट की पर्याप्त समीक्षा नहीं हो पाती और सदस्यों की गैरहाजिरी की समस्या भी है. कई महत्त्वपूर्ण चर्चाएं कोरम के बगैर भी हुई हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विधेयकों पर मुद्देवार विस्तार से बहस के बावजूद, मसौदे निम्नस्तरीय होते हैं. विधायी कार्यों पर समय कम से कम दिया जाने लगा है. यह सांसदों के स्तर का परिचय तो देता ही है, यह भी बताता है कि 50 हजार रुपए प्रति मिनट के खर्च से चलने वाली संसद का कितना वक्त बरबाद होता है. लोक लेखा, प्राक्कलन और सरकारी क्षेत्र की कंपनियों पर निगरानी रखने वाली तीन शक्तिशाली वित्तीय समितियां भी वित्त की इस बरबादी पर ध्यान नहीं देतीं.

संवैधानिक प्रावधान का दुरुपयोग

विशाल बहुमत के कारण सरकारी प्रस्तावों और विधेयकों की मंजूरी भी प्रायः निश्चित ही हो गई है. आलोचना यह भी होती है कि संसद के सत्र लगातार छोटे होते जा रहे हैं. लेकिन यह रोग राज्यों में ज्यादा गंभीर है, जहां विधान सभा महज कुछ हफ्तों के लिए बैठती है और कानून बनाने का काम अकसर कार्यपालिका की मरजी पर होता है.

अध्यादेश जारी करने के संवैधानिक प्रावधान का दुरुपयोग किया जाता है और अकसर एक ही अध्यादेश बारबार लागू किया जाता है.

लोकसभा में अनुपूरक मांगों पर बहस के समय नोकझोंक तो होती ही है, पर हाल ही में समाप्त हुए शीतकालीन अधिवेशन में बहस के लिए मंत्री भी हाजिर नहीं थे, जिस पर विपक्ष ने कड़ा एतराज किया. विपक्ष का कहना था कि अनुपूरक मांग जैसे गंभीर वित्तीय मामले के समय सदन में एक भी मंत्री का न होना संसद के प्रति सरकार के लापरवाह रवैए को दरसाता है. यह उपेक्षा संसद की अवमानना है. बाद में जब संसदीय कार्य राज्य मंत्री शीला दीक्षित तथा वित्त राज्य मंत्री वी.के.गढ़वी ने सदन में आते ही इस चूक के लिए क्षमा याचना की, तब जा कर कहीं विपक्ष संतुष्ट हो पाया.

कहना गलत न होगा कि नारों और आश्वासनों के बीज से वोटों की खेती कर के सीटों की फसल काटने वाले राजनीतिबाजों ने सत्ता के मद में जिस तरह देश की मुख्य समस्याओं गरीबी, बेरोजगारी, महंगाई और निरक्षरता आदि की अनदेखी की है और 'समाजवाद' जैसे शब्द में मनमाने अर्थों के पैबंद लगाए हैं, उस से उन की निरंकुशता साफ झलकती है. प्रधान मंत्री द्वारा सदन में दिए गए इस आश्वासन के कुछ ही दिनों बाद कि 'सरकार महंगाई और बढ़ती कीमतों पर हर संभव तरीके से रोक लगाएगी' यदि कोयला, चीनी और खाद्य तेलों की कीमतों में वृद्धि कर दी जाती है तो यह भी एक तरह से गरीब जनता की रीढ़ पर प्रहार है जो जाहिर करता है कि सदन में दिया गया प्रधान मंत्री का आश्वासन भी कितना 'बोगस' है.

देश की प्रगति के सरकारी दावे चाहे कितने ही बढ़चढ़ कर दिए जाते रहे हों, लेकिन वास्तव में उतना काम नहीं हुआ है, यह बात तो हमारे अर्थशास्त्री भी अच्छी तरह से जानते हैं. किसी भी अंतर्राष्ट्रीय मानदंड से अभी भी यह देश प्रति व्यक्ति आय, नवजात शिशु मृत्युदर, साक्षरता और बेरोजगारी के मामलों में लगभग सब से पिछड़ा हुआ है.

इस के अलावा विदेश व्यापार के क्षेत्र में भारी असंतुलन, विदेशी मुद्रा का सामान्य सा भंडार, औद्योगिक क्षेत्र में बढ़ती बदहाली, वन कटाई के कारण पर्यावरण को खतरा, बंजर क्षेत्र का बढ़ता दायरा और सूखा व बाढ़ के कारण दिन पर दिन बढ़ता संकट, ये सारी बातें चिंता का कारण तो हैं ही और इन सब के ऊपर बेरोजगारी की समस्या की मुंहतोड़ चुनौती का कोई जवाब तक नहीं मिल रहा है. कई राज्य यदि हिंसा और अस्थिरता की चपेट में हैं तो इस का कारण भी केंद्र की गलत नीतियां ही हैं.

आज कई राज्य सरकारें जब यह आरोप लगाती हैं कि राज्यों के प्रति केंद्र का व्यवहार सौतेला रहा है तो उन का मकसद यही होता है कि राज्यों को केंद्र से जो आर्थिक सहायता मिलती है वह अनुपात व आवश्यकताओं की दृष्टि से काफी कम होती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है. यह शिकायत उस रसोईघर के भंडारी की सी है जिस के हाथ गीले आटे में सने हैं और खाली कनस्तर को देखने के बाद समझ नहीं पा रहा है कि वह रसोईघर की मर्यादा की रक्षा कैसे करे?

कर्नाटक के मुख्य मंत्री रामकृष्ण हेगड़े ने इस बात को उदाहरण दे कर बताया था कि मैसूर और बंगलौर के बीच 80 किलोमीटर की रेल लाइन बिछाने के सिलसिले में केंद्र ने कहा था कि उस के लिए स्लीपर का इंतजाम राज्य सरकार करे. इस पर 7 करोड़ रुपए लग गए. रेल से होने वाली सारी आदमनी तो केंद्रीय खाते में जाए और 7 करोड़ रुपए के स्लीपर का इंतजाम राज्य सरकार करे. सिर्फ इस तर्क पर कि रेल लाइन बन जाने से राज्य के औद्योगिक विकास में सहायता मिलेगी. यह कहां तक उचित है?

संवैधानिक शक्तियों की तरह मुख्य आर्थिक स्रोत भी केंद्र ने अपने ही पास रखे हैं और इन के बल पर वह जब चाहे और जैसा चाहे राज्यों को कमजोर व मजबूत बना सकता है. केंद्र ने पहले ही इतने कर लगा रखे हैं कि राज्यों के पास और ज्यादा कर लगाने की गुंजाइश तक नहीं रहती. इस से लगता है कि सभी तरह की शक्तियों का सिर्फ केंद्रीकरण ही नहीं हो रहा, बल्कि देश की संघीय व्यवस्था को भी धीरेधीरे खत्म करने की कोशिशें हो रही हैं.

राज्यों के राज्यपाल तो केंद्र के हाथों की कठपुतली थे ही, मगर अब राज्यों के अधिकार क्षेत्र में केंद्र के हस्तक्षेप की प्रवृत्ति इस हद तक बढ़ चुकी है कि केंद्र सरकार राज्य प्रशासन में भी दखलअंदाजी करने लगी है. राजीव गांधी द्वारा राज्य सरकारों की अनदेखी कर के जिला मजिस्ट्रेटों का सम्मेलन बुलाए जाने की घटना इस का एक जीवंत उदाहरण है जिस पर केरल के मुख्य मंत्री ई. के. नैयनार ने सवाल उठाते हुए कहा था कि प्रधान मंत्री राजीव गांधी को देश के 439 जिलाधीशों से निजी तौर पर मिलने और उन से उन के उत्तरदायित्व के बारे में बातचीत करने का क्या अधिकार है?

स्वतंत्रता

वैयक्तिक स्वतंत्रता को प्रगट होने का पूरा अवकाश केवल विशुद्ध अहिंसा पर आधारित शासन में ही मिल सकता है.

—महात्मा गांधी

सरकार किसी भी तरीके से बनी हो, उस में प्रेस की भूमिका निस्संदेह बहुत महत्त्वपूर्ण है. तानाशाही सरकारें भी किसी न किसी तरह के लोक समर्थन के बिना नहीं चल पातीं. इसी लिए प्रेस को राज्य का चौथा खंभा कहा गया है. प्रेस की जिम्मेदारियों को निभाना कोई आसान काम नहीं है. लोकतंत्र में प्रेस की आजादी का बड़ा महत्त्व है. चूंकि लोकतंत्र में जनता ही शासक होती है, इसलिए प्रेस उस के सलाहकार जैसा काम करता है.

पर सरकारें प्रायः अपने दोषों की आलोचना स्वीकार नहीं करतीं, इसलिए आलोचना करने वाले प्रेस का मुंह बंद करना ही वे बेहतर समझती हैं. प्रेस पर रोक लगाने का अर्थ है जनता को सही सूचनाएं देने वाले स्रोतों का मुंह बंद करना.

लोकतंत्र लोगों को बहलाने का कोई झुनझुना नहीं है, बल्कि यह तो एक ऐसी कसौटी है जो इस बात का पता देती है कि जनता द्वारा चुने हुए जनता के शासक, जनता के लिए कितना कुछ कर पाते हैं या कर पाए हैं.

कांग्रेस शासन में भ्रष्टाचार, अव्यवस्था व अराजकता से देश का जनमानस परेशान है और किसी भी विकल्प की बाट देख रहा है. इसे विडंबना ही कहा जाएगा कि विपक्ष सिर्फ विपक्ष ही रहना चाहता है, विकल्प नहीं क्योंकि इस के सभी राजनेता अपनी ही व्यवस्था व पूर्वाग्रहों के बंदी हैं. इतना होने पर भी देश का जनमानस अभी उस सीमा तक निराश नहीं हुआ है, जहां तक उसे लगे कि लोकतंत्र में उस की भूमिका अब बिलकुल नगण्य हो गई है. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यक्तिगत विज्ञापन

वैवाहिक विज्ञापन

वर चाहिए

यादव मांगलिक, 26 वर्षीया, पोस्ट ग्रेजुएट, गौरवर्णीय, सुंदर, 157 सें.मी. कन्या हेतु शासकीय सेवारत मांगलिक ही वर चाहिए. लिखें : वि. नं. 8528, सरिता, नई दिल्ली-110055.

चौरसिया, 24 वर्षीया, एम.बी.बी.एस. हेतु सजातीय, डाक्टर इंजीनियर वर चाहिए. लिखें : वि. नं. 8529, सरिता, नई दिल्ली-110055.

21 वर्षीया, 157 सें.मी.,एम.ए. (अर्थशास्त्र), गौरवर्ण,सुंदर, सुशील, गृहकार्यदक्ष, माहेश्वरी कन्या हेतु सजातीय वर चाहिए. शीघ्र विवाह, दहेज इच्छुक कष्ट न करें. लिखें : वि. नं. 8530, सरिता, नई दिल्ली-110055.

22 वर्षीया, 147 सें.मी. गोरी, सक्सेना (दूसरे) कन्या हेतु कार्यरत, सजातीय वर चाहिए. गृहकार्य-निपुण, निगाह कमजोर होने के कारण पढ़ाई तथा कढ़ाईबुनाई में असमर्थ. लिखें : वि. नं. 8542, सरिता, नई दिल्ली-110055.

20, 163 सें.मी.,गोरी, स्मार्ट, शिक्षित, यादव कन्या हेतु सजातीय वर चाहिए. सरकारी सेना अधिकारी, उच्च व्यापारी को वरीयता. लिखें : वि. नं. 8543, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सुंदर, सुशील, 30 वर्षीया, 163 सें.मी., गृहकार्यकुशल, एम.ए.प्रिवी., ब्यूटीशियन शार्ट कोर्स, प्रतिष्ठित, इंगलिश स्कूल टीचर, पंजाबी, खत्री कन्या हेतु प्रतिष्ठित सजातीय वर चाहिए. शीघ्र संपर्क करें. लिखें : वि. नं. 8650, सरिता, नई दिल्ली-110055.

30 वर्षीया, बरई (थवाईत चौरसिया), 157 सें.मी., एम.ए., सुंदर, शांत, गृहकार्यदक्ष कन्या, गेहुआं, हलका चेचक दाग, हेतु आत्मनिर्भर वर (डाक्टर, इंजीनियर, उच्चाधिकारी) चाहिए. जाति - बंधन नहीं. सजातीय को प्राथमिकता. पूर्ण विवरण लिखें : वि. नं. 8651, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24 वर्षीया, कुर्मी क्षत्रिय, प्रतिष्ठित एवं संपन्न परिवारीय, एम.काम. फाइनल में अध्ययनरत, सुशील, स्मार्ट, साफ रंग, 163 सें.मी., गृहकार्यदक्ष, इकहरा बदन, मधुर स्वभाव, सुरुचिपूर्ण व्यक्तित्व वाली कन्या हेतु प्रथम श्रेणी अधिकारी, इंजीनियर अथवा डाक्टर वर चाहिए. सजातीय को प्राथमिकता. लिखें : वि. नं. 8652, सरिता, नई दिल्ली-110055.

म.प्र. निवासी, 32 वर्षीया, 152 सें.मी., प्रथम श्रेणी राजपत्रित अधिकारी, वेतन 3,200/-, एम.ए. (अर्थशास्त्र) थ्रू आउट फर्स्ट क्लास, रंग गेहुआं, आकर्षक, अनुसूचित जाति हेतु योग्य वर चाहिए. दहेज एवं जातिबंधन नहीं. साधारण विवाह. प्रथम वर्ग में पूर्ण विवरण लिखें : वि. नं. 8653, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23 वर्षीया, 160 सें.मी., अग्रवाल (गोयल), एम.एससी. (सांख्यिकी), गोल्ड मेडलिस्ट, कानवेंट शिक्षित, आकर्षक कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. लिखें : वि. नं. 8654, सरिता, नई दिल्ली-110055.

22, 150 सें.मी., भूमिहार ब्राह्मण, बी. एससी., सुंदर, सुशील, गृहकार्यदक्ष, संतानोत्पत्ति असमर्थ कन्या हेतु अविवाहित, संतान अनिच्छुक युवक संपर्क करें. विधुर विचारणीय. जातिबंधन नहीं. प्रथम बार सविवरण लिखें : वि. नं. 8655, सरिता, नई दिल्ली-110055.

20 वर्षीया, प्रतिष्ठित, उत्तरप्रदेशीय, बृहमभट्ट ब्राह्मण, गोरी, सुंदर, साइंस ग्रेजुएट, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु अच्छी सेवा, व्यवसायरत वर चाहिए. लिखें वि. नं. 8681, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जायसवाल, एम.ए. अर्थशास्त्र, अत्यंत गोरी, सुंदर, 22 वर्षीया, गृहकार्यनिपुण, संपन्न प्रतिष्ठित परिवार, कन्या हेतु गौरवर्णीय वर. लिखें : वि. नं. 8682, सरिता, नई दिल्ली-110055.

37 वर्षीया, शिवहरे, गौरवर्ण, स्मार्ट, होमसाइंस स्नातक, एम.ए., एलएल.बी., पिता रिटायर्ड आई.ए.एस., कन्या हेतु अविवाहित, सेवारत वर चाहिए. जातिबंधन नहीं. लिखें : वि. नं. 8683, सरिता, नई दिल्ली-110055.

श्रीवास्तव (कायस्थ), 25 वर्षीया, 150 सें.मी., डबल एम.ए., गृहकार्यदक्ष, गेहुआं रंग, गोंडा उत्तर प्रदेश निवासी हेतु सजातीय वर चाहिए. लिखें : वि. नं. 8684, सरिता, नई दिल्ली-110055.

20½, 155 सें.मी., गौड़ब्राह्मण, एम.ए. अध्ययनरत, सुंदर, गृहकार्यदक्ष, कन्या हेतु सजातीय, आत्मनिर्भर वर चाहिए. उत्तम विवाह, उपजाति-बंधन नहीं. लिखें : वि. नं. 8685, सरिता, नई दिल्ली-110055.

चित्ताकर्षक, गोरवर्ण, पोस्ट ग्रेजुएट, भैड़/माहौर क्षत्रिय कन्या 30, 150 सें.मी., हेतु सुंदर, सुयोग्य, सुस्थापित वर.शीघ्र विवाह. लिखें : वि. नं. 8686, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सुंदर, सुशील, घरेलू, क्षत्रिय गौतम, द्वितीय वर्ष स्नातक अध्ययनरत, कन्या 19, 150 सें.मी., हेतु सजातीय वर. मध्यम परिवार,सरकारी, बैंक सेवारत को वरीयता. संपूर्ण विवरण सहित लिखें : वि. नं. 8687, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24, 157 सें.मी., एम.ए., बी.एड., 21,158 सें.मी., एम.ए., विचारशील कन्याओं हेतु विवेकशील, योगनिष्ठ क्षत्रियत्व संपन्न राजपूत वर चाहिए. लिखें : वि. नं. 8688, सरिता, नई दिल्ली-110055.

22 वर्षीया, 158 सें.मी., क्षत्रिय, एम.ए., आकर्षक रंग, सिलाई, टाइपिंग डिप्लोमा, पिता एडवोकेट, गृहकार्यदक्ष, सुशील कन्या हेतु सजातीय,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुयोग्य, आत्मनिर्भर वर चाहिए शीघ्र प्रतिष्ठानसार विवाह. लिखें : वि. नं. 8689, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सैनी, 22, 153 सें.मी., एम.ए., गौरवर्ण, आकर्षक, सुशील कन्या हेतु सुशिक्षित, सजातीय, शाकाहारी वर चाहिए. सरकारी पदाधिकारी को वरीयता. लिखें : वि. नं. 8690, सरिता, नई दिल्ली-110055.

22, 158 सें.मी., एम.ए., बंसल गोत्रीय, उ.प्र. निवासी, प्रतिष्ठित परिवारीय, गौरवर्ण, स्लिम, स्मार्ट सुंदर, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु सजातीय, सुयोग्य वर चाहिए. विवाह अच्छा व शीघ्र. पूर्ण विवरण सहित लिखें : वि. नं. 8691, सरिता, नई दिल्ली-110055.

मेयर राजपूत, 26 वर्षीया, 163 सें.मी., मैट्रिक, गौरवर्ण, सुंदर, गृहकार्यदक्ष, सुशील कन्या हेतु वर. उत्तम विवाह. लिखें : वि. नं. 8692, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28 वर्षीया, स्नातकोत्तर, राजपूत, रंग साफ, कन्या हेतु सजातीय वर. लिखें : वि. नं. 8693, सरिता, नई दिल्ली-110055.

चौरसिया, 22, 160 सें.मी., एम.ए., मंगली कन्या हेतु सजातीय वर. व्यवसायरत, राजपत्रित कर्मचारी लिखें : वि. नं. 8694, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सुन्नी मुसलिम, 21 वर्षीया, बी.ए., सुंदर, लंबी, अच्छे खानदान की कन्या के लिए वर चाहिए. लिखें : वि. नं. 8695, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28 वर्षीया, 152 सें.मी. एवं 25 वर्षीया, 147 सें.मी., नाई क्रमशः इंटर एवं हाईस्कूल, सांवली, स्लिम, गृहकार्य में निपुण कन्याओं हेतु शिक्षित, सेवारत, सजातीय वर चाहिए. लिखें : वि. नं. 8696, सरिता, नई दिल्ली-110055.

क्षत्रिय, 20, 150 सें.मी., 162 सें.मी., इंटरमीडिएट, गृहकार्यदक्ष कन्याओं हेतु सुयोग्य, सजातीय, सरकारी सेवारत, दहेजविरोधी वर चाहिए. लिखें : वि. नं. 8697, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28 एवं 26 वर्षीया, राजस्थान वासी, प्रोटेस्टेंट क्रिश्चियन, स्नातक, सरकारी सेवारत शिक्षिका बहनों हेतु सुयोग्य वर चाहिए. शीघ्र एवं साधारण विवाह. लिखें : वि. नं. 8698, सरिता, नई दिल्ली-110055.

22 वर्षीया, 160 सें.मी., भारतीय पाठक ब्राह्मण, अमरीका निवासी, ग्रीनकार्डधारक, सुंदर, शिक्षित एवं गृहकार्यनिपुण कन्या हेतु इंजीनियर, फार्मेसिस्ट या उच्च तकनीकी योग्यता प्राप्त, सजातीय युवक चाहिए. लिखें : वि. नं. 8699, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अत्यंत कुशाग्र बुद्धिमान, एम.ए., बी.एड., 25, 158 सें.मी., 42 कि.ग्रा., सुंदर, गृहकार्यदक्ष, माहेश्वरी कन्या हेतु वर चाहिए. पिता बिरला संस्थान में उच्चपदाधिकारी. माहेश्वरी, अग्रवाल, जैन लिखें : वि. नं. 8700, सरिता, नई दिल्ली-110055.

बाल्मिकी लड़की, सरकारी सेवा, 25 हेतु वर. लिखें : वि. नं. 8701, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24 वर्षीया, 155 सें.मी., एम.ए., गृहकार्यदक्ष, अतिसुंदर, सुशील, धोबी (व्यवसाय नहीं) वर. पिता विदेशी कंपनी में अधिकारी. लिखें : वि. नं. 8702, सरिता, नई दिल्ली-110055.

संभ्रांत गुप्ता वैश्य परिवार की विधवा हेतु वर. 27, 160 सें.मी., रंग गेहुआं, पहली शादी से एक पुत्री, एक पुत्र. नसबंदी हो चुकी है. जातिबंधन नहीं है. लिखें: वि. नं. 8703, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26 वर्षीया, 155 सें.मी., युवती छाबड़ा परिवारीय, गेहुआं रंग, डबल एम.ए., शासकीय सेवारत, गृहकार्यकुशल हेतु सजातीय, सरकारी सेवारत, सुयोग्य वर चाहिए. सिख मोना भी स्वीकार्य. लिखें : वि. नं. 8704, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी वैश्य, सुंदर, 157 सें.मी., 22, एम.ए., बी.एड., अध्ययनरत, बैंक सर्विस, हेतु वर चयन. एक हाथ जन्म से छोटा, शीघ्र उत्तम विवाह. लिखें : वि. नं. 8705, सरिता, नई दिल्ली-110055.

चौहान राजपूत कन्या, 26 वर्षीया, 161 सें.मी., रंग गेहुआं, बी.एससी., बी. एड., कानवेंट शिक्षित, गृहकार्यदक्ष (पिता कर्नल), हेतु वर. लिखें : वि. नं. 8706, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25 वर्षीया, कायस्थ, एम.ए., पेंटिंग, हिंदी आशुलिपिक सहित, 158 सें.मी., 2½ वर्षीय पुत्र, तलाकशुदा लड़की हेतु वर चाहिए. पुत्र रखना अनिवार्य नहीं. विवाह कोर्ट द्वारा, दहेजबंधन रहित इच्छुक व्यक्ति संपर्क करें. लिखें : वि. नं. 8707, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26 वर्षीया, 150 सें.मी., एम.ए. (अर्थशास्त्र), कुर्मि क्षत्रिय, गेहुआं रंग, गृहकार्यकुशल, सुशील कन्या हेतु स्वजातीय वर चाहिए. उत्तम एवं शीघ्र विवाह. प्रथम बार में पूर्ण विवरण लिखें : वि. नं. 8708, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27 वर्षीया, शाकद्वीपीय ब्राह्मण कन्या, सुंदर, गोरी, प्रतिष्ठित, बी.एड., पीएच.डी. थ्रू आउट फर्स्ट, हेतु उच्च पदाधिकारी, सजातीय वर. दहेज हेतु क्षमाप्रार्थी. लिखें : वि. नं. 8709, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी, राजस्थानी, एम.काम. (फाइनल), इंजीनियर्स परिवारीय, 21, 156 सें.मी., गेहुआं कन्या हेतु वर. विवरण कुंडली भेजें. लिखें : वि. नं. 8710, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सिंधी, 21, 165 सें.मी., 19, 152 सें.मी., मैट्रिक, स्मार्ट, फेयर, सर्वगुण कन्याओं हेतु दहेज विरोधी, सिंधी वर चाहिए. लिखें : वि. नं. 8711,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरिता, नई दिल्ली-110055.

एम.ए., 156 सें.मी., 23 वर्षीया, कुलीन, सुंदर, सुसंस्कृत, गृहकार्यकुशल कन्या हेतु श्रेष्ठ अधिकारी वर चाहिए. दहेज नहीं. लिखें : वि. नं. 8712, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26, 150 सें.मी., बी.ए., सुंदर, सिख कन्या (बच्चे पैदा करने में असमर्थ) हेतु सजातीय, सुयोग्य वर चाहिए. विधुर भी मान्य. लिखें : वि. नं. 8713, सरिता, नई दिल्ली-110055.

प्रतिष्ठित गढ़वाली ब्राह्मण परिवार, जिला देहरादून निवासी की 24 वर्षीया, 157 सें.मी., सुंदर, एम.ए. कन्या हेतु गढ़वाली परिवारीय वर चाहिए. उत्तम चयन. लिखें : वि. नं. 8714, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जैन, एम.बी.बी.एस. डाक्टर, 152 सें.मी., 24 वर्षीया, इंटर्नीशप कर रही, सुंदर, आकर्षक व्यक्तित्व, कन्या हेतु डाक्टर या आई.ए.एस. वर चाहिए. पिता प्रथम श्रेणी राजपत्रित अधिकारी. दहेज व मांग अस्वीकार्य. शादी उत्तम. लिखें : वि. नं. 8715, सरिता, नई दिल्ली-110055.

29, 156 सें.मी., एम.ए., वाई.डब्ल्यू.सी.ए. डिप्लोमा, स्वस्थ, आकर्षक, सक्सेना कन्या हेतु सुयोग्य कायस्थ वर चाहिए. शीघ्र उत्तम विवाह. लिखें : वि. नं. 8716, सरिता, नई दिल्ली-110055.

22 वर्षीया, 157 सें.मी., निस्संतान विधवा (अकस्मातिक), बी.एससी., बी.एड., अचल संपत्ति से आजीवन, मासिक आय रु. 2,000/-, संभ्रांत व अति संपन्न, हरियाणा के अग्रवाल परिवारीय कन्या हेतु वर. लिखें : वि. नं. 8717, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27, 161 सें.मी., सारस्वत ब्राह्मण, गौरवर्ण, सुंदर, आकर्षक, गृहकार्यदक्ष, बी.एससी., बी.एड., दिल्ली सरकारी स्कूल में टीचर हेतु सजातीय वर चाहिए. लिखें : वि. नं. 8718, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26 वर्षीया, 158 सें.मी., सिसौदिया राजपूत, एम.ए., सुंदर, सुसंस्कृत, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु सजातीय, सेवारत, योग्य वर चाहिए. लिखें : वि. नं. 8719, सरिता, नई दिल्ली-110055.

31, 165 सें.मी., गौरवर्ण, सुंदर, गृहकार्यदक्ष, ग्रेजुएट, फलसंरक्षण डिप्लोमा, स्वर्णकार कन्या हेतु कुलीन, सुयोग्य वर चाहिए. उच्च नौकरी या उच्च व्यवसाय आवश्यक. संतान छोड़ कर अन्य बंधन नहीं. लिखें : वि. नं. 8773, सरिता, नई दिल्ली-110055.

22 वर्षीया, 165 सें.मी., इकहरा बदन, सिलाई, कढ़ाईबुनाई, गृहसज्जा व अन्य कार्यदक्ष, बी.ए. द्वितीय वर्ष अध्ययनरत, राजपूत चौहान कन्या हेतु सुशिक्षित, स्वावलंबी, कार्यशील वर चाहिए. जातिबंधन नहीं. दहेजलोभी क्षमा करें. लिखें : वि. नं. 8774, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27 वर्षीया, गौरवर्ण 145.3 सें.मी., क्षत्रिय (कलार), नान मैट्रिक, गृहकार्य और सिलाईकढ़ाई में दक्ष, अनुसूचित जनजाति को छोड़कर, दहेज विरोधक, शासकीय कर्मचारी को प्राथमिकता. लिखें: वि.नं. 8775, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सरकारी कार्यरत, प्रतिष्ठित परिवार, 30 वर्षीया, गृहकार्यदक्ष, सुयोग्य युवती हेतु सजातीय (कोरी) शिक्षित, कार्यरत, अच्छा व्यवसायी वर चाहिए. लिखें : वि. नं. 8776, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जैन, एम.ए., पीएच.डी. कर रही, 157 सें.मी., 22 वर्षीया, सुंदर, आकर्षक व्यक्तित्व, कंटेक्टलेंस प्रयोगकर्त्री कन्या हेतु आई.ए.एस., डाक्टर, इंजीनियर, चार्टर्ड एकाउंटेंट वर चाहिए. पिता प्रथम श्रेणी राजपत्रित अधिकारी. दहेज व मांग अस्वीकार्य. शादी उत्तम. लिखें : वि. नं. 8777, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अत्यंत कुशाग्र बुद्धि गृहकार्यदक्ष, सुंदर, स्लिम, 21, 155 सें.मी., बी. ए., कान्यकुब्ज ब्राह्मण कन्या हेतु सुंदर, सजातीय, कार्यरत वर चाहिए. शीघ्र उत्तम विवाह. लिखें : वि. नं. 8778, सरिता, नई दिल्ली-110055.

20 वर्षीया, 146 सें.मी., 40 कि.ग्रा., एम.ए. अध्ययनरत, आकर्षक, सुंदर, स्मार्ट, गुप्ता कन्या हेतु सजातीय सुशिक्षित वर चाहिए. दहेज के इच्छुक व्यक्ति पत्रव्यवहार न करें. लिखें : वि. नं. 8779, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कौशिक गोत्र, ग्रेजुएट, लाइब्रेरी कोर्स पास, गोरी, कार्यरत कन्या 33, 150 सें.मी., 1,500/-, हेतु महाराष्ट्रीयन ब्राह्मण वर. प्रतिष्ठित परिवार लिखें: वि. नं. 8780, सरिता, नई दिल्ली-110055.

राजस्थान सेवारत, कायस्थ, अध्यापिका, 35, 152 सें.मी., 1,890/-, हेतु सुयोग्य वर चाहिए. लिखें: वि. नं. 8781, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जायसवाल, 24 वर्षीया, 160 सें.मी., एम.एससी. (कैमेस्ट्री) प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण, साफ रंग, उत्तम नाकनक्श, हंसमुख, संपन्न परिवारीय कन्या हेतु योग्य, कार्यरत वर. लिखें : वि. नं. 8782, सरिता, नई दिल्ली-110055.

वधू चाहिए

29, कर्मि, बी.ए., सीनियर क्लर्क रेलवे, 1500/-, परिवार में केवल मां, बेटा हेतु सुंदर, शिक्षित वधू, दहेज नहीं, शीघ्र विवाह. लिखें : वि.नं. 8589, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल, 27, 165 सें.मी., असिस्टेंट इंजीनियर हेतु सुंदर, शिक्षित, गृहकार्यदक्ष, सजातीय कन्या चाहिए. प्रथम बार में संपूर्ण विवरण सहित लिखें. वि. नं. 8590, सरिता, नई दिल्ली-110055.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अग्रवाल गर्ग, 32, 165 सें.मी. विधुर दो बच्चे, कंपनी एक्जीक्यूटिव हेतु सजातीय, मृदुभाषी, मिलनसार, प्रतिष्ठित परिवारीय कन्या चाहिए. निस्संतान विधवा विचारणीय. लिखें: वि. नं. 8608, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सक्सेना, 24, 167 सें.मी., 2,000/-, एअरफोर्स हेतु गोरी कन्या चाहिए. (प्राथमिकता एम.एससी.) लिखें: वि. नं. 8612, सरिता, नई दिल्ली-110055.

श्रीवास्तव, 25, 178 सें.मी., सहायक यंत्री, पी.एच.ई. म.प्र., हेतु सुंदर, शिक्षित, सुशील कन्या. लिखें: वि. नं. 8613, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुशवाहा, आर्मी कैप्टेन, 26½, 180 सें.मी., शौक फोटोग्राफी, संगीत, बागवानी, हेतु 160 सें.मी. से ऊंची, ग्रेजुएट, सुंदर, गृहकार्यकुशल तथा अंगरेजी बोलने में सक्षम वधू चाहिए. स्वजातीय व कानवेंट एजुकेटेड को प्राथमिकता. पूर्ण विवरण सहित लिखें: वि. नं. 8614, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27, 167 सें.मी., मासिक आय 5,000/-, कंपनी सर्विस, चार्टर्ड एकाउंटेंट, राजस्थानी अग्रवाल गर्ग दिगंबर जैन, प्रदेश, जातिबंधन नहीं. उत्तम विवाह. शाकाहारी, गृहकार्यदक्ष, सुंदर, शिक्षित, कुंआरी कन्या चाहिए. पूर्ण विवरण सहित लिखें: वि. नं. 8615, सरिता, नई दिल्ली-110055.

34 वर्षीय, एम.ए., कायस्थ, मासिक आय 3,500/-, खड़े हो कर चलने में असमर्थ, हर प्रकार से समर्थ, दीखने में बिलकुल सामान्य, हेतु वधू चाहिए. कोई बंधन नहीं. लिखें: वि. नं. 8639, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26 वर्षीय, 178 सें.मी., लंबे, स्वस्थ, आकर्षक, खूबसूरत, शिक्षित, उच्च संपन्न घराने के जैन, उद्योगपति युवक हेतु खूबसूरत, स्वस्थ, सुशील, शिक्षित, व्यवहारकुशल, अच्छे परिवारीय कन्या चाहिए. लड़के की आय मासिक पांच अंकीय. विज्ञापन उत्तम चयन हेतु. पूर्ण विवरण सहित तुरंत लिखें: वि. नं. 8640, सरिता, नई दिल्ली-110055.

स्नेही, सुशिक्षित, दिल्ली कोठी मालिक, निर्व्यसनी, एकाकी, विधुर, हिंदू, 51, हेतु धर्म, प्रांत निरपेक्ष निर्धन वधू. सविवरण लिखें: वि. नं. 8641, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अतिप्रतिष्ठित, धनी, अनेक व्यवसाय, 26 वर्षीय, 183 सें.मी., ग्रेजुएट, कानवेंट से शिक्षा प्राप्त, गोरा, अति आकर्षक, जायसवाल परिवारीय युवक हेतु सुशील, सुंदर, शिक्षित, आकर्षक व्यक्तित्व वाली वधू चाहिए. पूर्ण विवरण सहित लिखें; वि. नं. 8720, सरिता, नई दिल्ली-110055.

संपन्न, सुशिक्षित, माहेश्वरी परिवारीय, 28 वर्षीय, 180 सें.मी., ग्रेजुएट, मैनेजमेंट डिप्लोमा प्राप्त, उच्चसेवारत युवक हेतु सुंदर, सुशिक्षित, कुलीन, वैश्य परिवारीय वधू चाहिए. शीघ्र पत्रव्यवहार. लिखें: वि. नं. 8721, सरिता, रानी झांसी मार्ग, मंडेवालान, नई दिल्ली-110055.

जाटव अ.जा., 26, 169 सें.मी., केंद्रीय सरकार सेवारत, 3,000/-, हेतु लंबी, सुंदर, सुशील, ग्रेजुएट वधू चाहिए. लिखें: वि. नं. 8722, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24 वर्षीय, गौड़ ब्राह्मण, बी.काम., चार अंकों में मासिक आय, हेतु सुंदर, सुशील, सुशिक्षित वधू चाहिए. लिखें : वि. नं. 8723, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28 वर्षीय, कुशवाहा (मौर्य), एम.बी.बी.एस. डाक्टर हेतु सुंदर, गौरवर्ण, सुशिक्षित, गृहकार्यनिपुण, सजातीय कन्या चाहिए. कोई मांग नहीं. विज्ञापन उत्तम चयन हेतु, प्रथम बार में ही सविवरण लिखें: वि. नं. 8724, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28, 165 सें.मी., हिंदू पंजाबी, प्रतिष्ठित घराने से संबंधित, स्मार्ट, विधुर, बिजनेसमैन, अच्छी आय, 3 बच्चियां, हेतु प्रतिष्ठित, गरीब घराने से संबंधित, 25 वर्षीया सुंदर, गोरी वधू चाहिए. तलाकशुदा, निस्संतान विचारणीय. लिखें: वि. नं. 8725, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कश्यप राजपूत (कहार), 28 वर्षीय, 182 सें.मी., निजी व्यवसायरत, उत्तम आय, हेतु लंबी, शिक्षित, सुंदर, विनोदप्रिय, गृहकार्यदक्ष, स्वजातीय कन्या चाहिए. शीघ्र विवाह. महाराष्ट्र, दिल्ली व पंजाबवासी को प्राथमिकता. पूर्ण विवरण सहित लिखें: वि. नं. 8726, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुमावत, 26, 177 सें.मी., विज्ञान स्नातक, मांगलिक युवक हेतु सुंदर, सजातीय, शिक्षित वधू चाहिए. पूर्ण विवरण के साथ लिखें: वि. नं. 8727, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28, कान्यकुब्ज ब्राह्मण, एम.एससी., शासकीय अधिकारी म.प्र., हाथपैर पर सफेद दाग, हेतु उपयुक्त कन्या चाहिए. लिखें : वि.नं. 8728, सरिता, नई दिल्ली-110055.

32 वर्षीय, 163 सें.मी., 2,000/-, अरोड़ा, अविवाहित, मैट्रिक फेल, निजी मकान, व्यवसाय रुड़की निवासी युवक हेतु गरीब, कुंआरी, तलाकशुदा, विधवा जीवनसंगिनी चाहिए. जातिबंधन नहीं. लिखें: वि. नं. 8729, सरिता, नई दिल्ली-110055.

36, 168 सें.मी., 1,500/-, इंटरमीडिएट, विधुर (तीन बच्चे) हेतु विधवा, बांझ, सच्चरित्र, ममतामयी जीवनसाथी चाहिए. लिखें: वि. नं. 8730, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28 वर्षीय, पंजाबी, ग्रेजुएट, 175 सें.मी., 4,000/-, निजी व्यवसाय, निजी निवास, हेतु पतली, गोरी, सुंदर, घरेलू कन्या चाहिए. लिखें: वि. नं. 8731, सरिता, नई दिल्ली-110055.

30 वर्षीय, 170 सें.मी., अमरीका निवासी, भारतीय पाठक ब्राह्मण, कमर्शियल आर्टिस्ट हेतु सजातीय, नर्स या कमर्शियल आर्टिस्ट, अंगरेजी ज्ञान,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संदर, गृहकार्यनिपुण कन्या चाहिए. लिखें: वि. नं. 8732, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23 वर्षीय, एअरफोर्स टेक्नीशियन, 1,600/-, हेतु योग्य वधू चाहिए. लिखें: वि. नं. 8733, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुशवाहा, 29 वर्षीय, सुंदर, डाक्टर (एम.बी. बी.एस.) हेतु सुयोग्य कन्या चाहिए. लिखें: वि. नं. 8734, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुशवाहा, 27 वर्षीय, 168 सें.मी., एडवोकेट, गौरवर्ण, सुंदर, शहरी जायदाद, संपन्न, प्रतिष्ठित परिवार हेतु स्मार्ट, शिक्षित, गौरवर्ण, अतिसुंदर कन्या चाहिए. कोई बंधन नहीं. लिखें: वि. नं. 8735, सरिता, नई दिल्ली-110055.

22 वर्षीय, 177 सें.मी., (बी.काम.) हिंदी भाषी, व्यापारी युवक, मासिक आय चार अंक, हेतु ब्राह्मण वधू चाहिए. शीघ्र विवाह. लिखें: वि. नं. 8736, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल विधुर, 45,2,000/-, हेतु सजातीय, निस्संतान विधवा, बांझ जीवनसंगिनी चाहिए. लिखें: वि. नं. 8737, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी, 27, 175 सें. मी., सेवारत, आय चार अंकीय, हेतु सुंदर, सुशिक्षित, पतली वधू चाहिए. उपजाति स्वीकारीय. लिखें: वि. नं. 8738, सरिता, नई दिल्ली-110055

25 वर्षीय, जायसवाल, 165 सें.मी., बी.एससी., बंबई एअरपोर्ट पर केंद्रीय सरकार सेवारत, 1,900/-, पिता पुलिस आफिसर (पश्चिम बंगाल), स्मार्ट युवक हेतु सजातीय, शिक्षित वधू चाहिए. शीघ्र विवाह. लिखें: वि. नं. 8739, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गौड़ ब्राह्मण, 25, 170 सें.मी., एम.ए., गौरवर्ण, समृद्ध उद्योगपति, व्यवसायी परिवार के युवक हेतु उपयुक्त वधू चाहिए. लिखें: वि. नं. 8740, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25 वर्षीय, कर्मि क्षत्रिय, 165 सें.मी., अंतर-राष्ट्रीय कंपनी में एक्जीक्यूटिव, बिहार प्रतिष्ठित पारिवारीय युवक हेतु सजातीय, सुंदर, स्नातक, गृहकार्यदक्ष कन्या चाहिए. लिखें: वि. नं. 8741, सरिता, नई दिल्ली-110055.

30 वर्षीय, मैट्रिक पास, गौड़ ब्राह्मण, सरकारी सर्विस, 2,000/- मासिक आय, हेतु सजातीय, सुशील वधू चाहिए. लिखें: वि. नं. 8742, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अति अमीर, दसवीं, ब्राह्मण लड़का, 33 हेतु गरीब कन्या. लिखें: वि. नं. 8743, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अति अमीर, दसवीं, बंगाली लड़का, 26, हेतु गरीब वधू. लिखें: वि. नं. 8744, सरिता, नई दिल्ली-110055.

करोड़पती विधुर, कायस्थ, अकेला, 47, हेतु वधू लिखें: वि. नं. 8745, सरिता, रानी झांसी मार्ग, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-110055.

हिंदू नाई (कार्य नहीं), 25, 161 सें.मी., बी.एससी., बी. टेक्स्ट. (टेक्सटाइल इंजीनियर) 2,000/-, पिता अधिकारी, हेतु गौरवर्ण, सुंदर शिक्षित कन्या चाहिए. लिखें: वि. नं. 8746, सरिता, नई दिल्ली-110055.

30 वर्षीय, 177 सें.मी., संपन्न प्रतिष्ठित मारवाड़ी, बंबई निवासी परिवार के तलाकशुदा, व्यवसायरत लड़के के लिए जीवनसंगिनी चाहिए. कोई बंधेन नहीं. लिखें: वि. नं. 8747, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28 वर्षीय, 154 सें.मी., कहार (बाथम), दसवीं क्लास, मासिक आय 1,100/- रु., मुरादाबाद, हेतु घरेलू वधू चाहिए. लिखें: वि. नं. 8748, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23 वर्षीय, 170 सें.मी., बीसा अग्रवाल, कार्यरत, मैकेनिकल इंजीनियर, संपन्न परिवार, हेतु सुंदर गृहकार्यदक्ष, शिक्षित वधू. लिखें: वि. नं. 8749, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुमाऊंनी राजपूत, विधुर 31, एक पुत्र 3½ वर्षीय, 4,500/- से 5,000/- मासिक, हेतु सुंदर जीवनसंगिनी चाहिए. शीघ्र शादी, गरीबी बंधन नहीं. लिखें : वि. नं. 8750, सरिता, नई दिल्ली-110055.

पंजाबी खत्री लड़का, एम.काम., 28, 173 सें.मी., 2,400/-, बैंक कर्मचारी, दहेज, जातिबंधन नहीं, प्रथम पत्नी से संबंधविच्छेद. प्रथम बार में सविवरण व जन्म कुंडली आवश्यक. लिखें: वि. नं. 8751, सरिता, नई दिल्ली-110055.

50 वर्षीय, निस्संतान विधुर हेतु योग्य विधवा, तलाकशुदा, संतानोत्पत्ति में असमर्थ, निस्संतान अथवा एक बच्चे वाली गरीब, असहाय, गृहकार्य-निपुण जीवनसाथी. पूर्ण विवरण सहित लिखें: वि. नं. 8752, सरिता, नई दिल्ली-110055.

वार्ष्णेय (वैश्य), एम.बी.बी.एस., स्नातकोत्तर अध्ययनरत, 27 वर्षीय, 167 सें.मी., स्वस्थ युवक हेतु सुंदर, सजातीय, मेडिको कन्या चाहिए. लिखें: वि. नं. 8753, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अति सुंदर, आकर्षक, स्वस्थ, सारस्वत ब्राह्मण युवक, एम.ए., एल.एल.बी., 29, 182 सें.मी., निजी बड़ा कृषि फार्म (जि. नैनीताल में), उत्तम आय, हेतु अति सुंदर, आकर्षक, सुशिक्षित ब्राह्मण वधू चाहिए. दहेजबंधन नहीं. विज्ञापन उत्तम चयन हेतु. कृपया प्रथम बार में ही पूर्ण विवरण सहित लिखें: वि. नं. 8754, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25 वर्षीय, गौड़ ब्राह्मण, 168 सें.मी., बी.एससी., मासिक आय 1,800/-, आकर्षक, निजी व्यवसाय, प्रतिष्ठित परिवार, हेतु पारिवारिक, शिक्षित, आकर्षक, सुंदर, स्लिम, प्रतिष्ठित परिवार की वधू चाहिए. पहली बार ही पूर्ण विवरण लिखें: वि.

सरिता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नं. 8755, सरिता, नई दिल्ली-110055.

30 वर्षीय, 172 सें.मी., क्षत्रिय, सुंदर, पाली-टेक्निक डिप्लोमा, निजी व्यवसायरत, आय आकर्षक चार अंकीय, तलाकशुदा (पत्नी की निर्दयता वैवाहिक जीवन एक माह) हेतु सजातीय, सुंदर, सुयोग्य, गृहकार्यदक्ष, व्यावहारिक वधू. शीघ्र विवाह. (दहेज नहीं). लिखें : वि. नं. 8756, सरिता, नई दिल्ली-110055.

37, जाट, विधुर, प्राथमिक अध्यापक, पश्चिमी उत्तरप्रदेशीय देहात, तीन बच्चे, हेतु महिला साथी चाहिए. बंधन नहीं. लिखें: वि. नं. 8757, सरिता नई दिल्ली-110055.

26 वर्षीय, गुप्ता, बी.ए., शासकीय सेवारत, हेतु वधू. वैश्य समाजीय को वरीयता, अन्य हिंदू जाति भी विचारणीय. दहेज पीड़ितों को प्राथमिकता. लिखें: वि. नं. 8758, सरिता, नई दिल्ली-110055.

मांगलिक ठाकुर राजपूत, 25, 165 सें.मी., 1,900/-, केंद्रीय सेवारत, मेरठ निकटवर्ती, हेतु सुयोग्य वधू चाहिए. कोई बंधन नहीं. लिखें: वि. नं. 8759, सरिता, नई दिल्ली-110055.

मंगली, 23 वर्षीय, बीसा अग्रवाल, कंसल गोत्र, 170 सें.मी., शिक्षित, ग्रेजुएट, संपन्न परिवार, इकलौता पुत्र, उत्तम व्यवसाय, हेतु शिक्षित व सुयोग्य वधू चाहिए. लिखें: वि. नं. 8760, सरिता, रानी झांसी मार्ग, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली– 110055.

26 वर्षीय, 170 सें.मी., धोबी, बी.काम. इंगलिश मीडियम, स्वस्थ एवं स्मार्ट, रंग साफ, 5,000/- मासिक आय, व्यापारी, संभ्रांत एवं शिक्षित परिवार, हेतु शिक्षित परिवार की शिक्षित, इंगलिश मीडियम, रंग साफ, योग्य वधू चाहिए. दहेजबंधन नहीं. लिखें : वि. नं. 8761, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28, 167 सें.मी., 1,500/-, निर्व्यसनी, शाकाहारी, पोस्टग्रेजुएट, अग्रवाल युवक हेतु सुंदर, ग्रेजुएट वधू चाहिए. विधवा भी विचारणीय. कोर्ट मैरिज. लिखें: वि. नं. 8762, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27, 180 सें.मी., 2,800/-, स्मार्ट, शाकाहारी, बैंक आफिसर, दिल्ली वासी हेतु सुंदर कन्या चाहिए. जाति व दहेजबंधन नहीं. लिखें: वि. नं. 8763, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27, 176 सें.मी., सोनी, एम.बी.बी.एस., शासकीय डाक्टर, हेतु सुंदर, सुशिक्षित, मेडिको/लेक्चरर, सजातीय वधू चाहिए. जन्मपत्रिका सहित शीघ्र लिखें : वि. नं. 8764, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27 वर्षीय, प्रतिष्ठित कायस्थ, ग्रेजुएट, निजी व्यवसाय में संलग्न, आय चार अंक मासिक, हेतु सुंदर, सुशील एवं शिक्षित कन्या चाहिए. लिखें: वि. नं.

व्यक्तिगत विज्ञापन उत्तरदाताओं के लिए सूचना

सरिता में वैवाहिक विज्ञापन पाठकों की सेवा के लिए प्रकाशित किए जाते हैं. इन विज्ञापनों से आप अपने सीमित क्षेत्र में ही नहीं, पूरे देश में ही नहीं, विदेशों में भी वैवाहिक संबंध स्थापित कर सकते हैं.

वैवाहिक विज्ञापनों का उत्तर देते हुए यदि आप निम्न बातों का ध्यान रखेंगे तो आप को, हमें और विज्ञापनदाताओं को काफी सुविधा रहेगी:

1. वैवाहिक पत्रव्यवहार बंद लिफाफे में करें.

2. पहली बार में ही लड़की व लड़के की आयु, शिक्षा, रंग, ऊंचाई, वजन, व्यवसाय, आय आदि का पूरा विवरण लिखें.

3. विज्ञापनदाताओं के पास भेजे जाने वाले लिफाफे पर "विज्ञापन विभाग, संपादक, सरिता" आदि न लिखें. केवल "वि.नं.–सरिता, नई दिल्ली-110055." पते के रूप में लिख देने पर पत्र हम तक पहुंच जाएंगे.

4. यदि आप कई विज्ञापनदाताओं से पत्रव्यवहार करना चाहते हैं तो सब विज्ञापनदाताओं के लिए विज्ञापन नं. लिखे लिफाफे एक ही बड़े लिफाफे में रख कर "वैवाहिक विज्ञापन विभाग, सरिता, नई दिल्ली-110055" के पते पर भेज दीजिए. विज्ञापन विभाग द्वारा आप के पत्र संबंधित विज्ञापनदाताओं को अलगअलग भेज दिए जाएंगे. इस से आप को सब लिफाफों पर टिकट नहीं लगाने पड़ेंगे और पत्र भेजने में सुविधा भी रहेगी.

5. वैवाहिक विज्ञापन केवल पत्रव्यवहार के लिए संपर्क सूत्र का काम करते हैं. विवाह तय करने से पहले संबंधित व्यक्ति के बारे में पूरी जानकारी प्राप्त किए बिना और आवश्यक जांचपड़ताल किए बिना कोई निर्णय नहीं लेना चाहिए.

6. विदेशों में रहने वाले युवकों से विवाह तय करने से पहले उन के पूर्व विवाहित होने या न होने व उन की आय के बारे में जांच कर लेनी चाहिए. इस के लिए उन के नियोक्ता (जिस कंपनी में वे काम करते हों) से संपर्क कर के जानकारी प्राप्त की जा सकती है.

7. विज्ञापनदाता के नाम व पते गुप्त रखे जाते हैं. विज्ञापन नंबर के उत्तर में प्राप्त पत्रों को विज्ञापनदाता के पास भेज दिया जाता है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

8765, सरिता नई दिल्ली-110055.

बैंक कर्मचारी, 33 वर्षीय युवक, एक पैर में साधारण मोच, हेतु गृहकार्यदक्ष, सौम्य व्यवहार साथी की आवश्यकता है. जातिबंधन नहीं. शीघ्र सौम्य विवाह. लिखें: वि. नं. 8766, सरिता, नई दिल्ली-110055.

36, 172 सें.मी., स्मार्ट, इकहरा, गौरवर्ण, शाकाहारी, उच्चव्यवसायी, कार, बंगला, फलबाग, महाराष्ट्र निवासी हेतु सुंदर, सुशिक्षित, विवाहइच्छुक लड़कियों से सीधे पत्राचार हिंदी में आमंत्रित. कोई बंधन नहीं. गरीब, नौकरीशुदा स्वयं निस्संकोच लिखें: वि. नं. 8767, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27, 2,700/-, 170 सें.मी., प्रगतिशील. नास्तिक, व्याख्याता, संग रूढ़िमुक्त, कार्यरत, चित्ता-कर्षक, आधुनिक नवयुवतियां विवाहानुबंधार्थ स्वयं लिखें: वि. नं. 8768, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गर्ग, 25 वर्षीय, गौरवर्ण, बी.एससी. (मैरिट), बैंक सेवारत, उज्ज्वल भविष्य, हेतु सुंदर लंबी, सुशील वधू चाहिए. लिखें: वि. नं. 8769, सरिता, नई दिल्ली-110055.

दिगंबर जैन, 23 वर्षीय युवक, बी.काम., व्यवसायी परिवार, किसी भी ऐसी कन्या को अपनाने का इच्छुक जो कि नेत्रहीन हो या विकलांग पर वधू पक्ष को घरजंवाई के रूप में स्वीकार करना होगा. केवल उच्चवर्गीय, व्यवसायी या उद्यमी परिवार वाले ही लिखें: वि. नं. 8770, सरिता, नई दिल्ली-110055.

40 वर्षीय विधुर, मारवाड़ी अग्रवाल, कलकत्ता निवासी, उद्योगपति, उच्च संभ्रांत परिवार से संबंधित, उत्तम स्वास्थ्य, 3 बच्चे (एक कन्या विवाहिता, 1 कन्या कॉलिज में अध्ययनरत और 14 वर्षीय एक पुत्र) उच्च स्तरीय रहनसहन, हेतु अग्रवाल, माहेश्वरी या गुजराती से उम्र लगभग 35 वर्षीया प्रस्ताव आमंत्रित है. विधवा को वरीयता. लिखें: वि. नं. 8771, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल सिंघल गोत्र, 29 वर्षीय, बी.ए., सरकारी सेवारत, बायां पैर पोलियोग्रस्त, प्रतिष्ठित परिवार, हेतु सुशील, गृहकार्यदक्ष वधू चाहिए. दहेज जातिबंधन नहीं. गरीब, तलाकशुदा अथवा निस्संतान विधवा स्वीकार्य. लिखें: वि. नं. 8772, सरिता, नई दिल्ली-110055.

वरवधू चाहिए

28 वर्षीया, 155 सें.मी., होमसाइंस लेक्चरर, योग्य कन्या हेतु वर एवं 29 वर्षीय, 179 सें.मी., निजी व्यवसाय, युवक आय चार अंकीय मासिक, हेतु सुशील, घरेलू वधू चाहिए. लिखें: वि. नं. 8783, सरिता, नई दिल्ली-110055.

22 वर्षीया, बी.ए., गोरी, सुंदर, सुशील, शाकाहारी, गृहकार्यदक्ष, आगरा निवासी, स्वर्णकार, उच्चशिक्षित परिवारीय कन्या हेतु सुयोग्य वर एवं 26, 170 सें.मी., एम.काम., 2,000/-, मासिक, स्मार्ट भाई हेतु स्नातक, गोरी, अतिसुंदर, सुशील, पारिवारिक वधू चाहिए. लिखें: वि. नं. 8784, सरिता, नई दिल्ली-110055.

उच्चकुलीन हिंदू, कनाडा नागरिक, कन्या 21, बी.एससी. तथा युवक 24, एयरो स्पेस इंजीनियर हेतु कनाडा/अमरीका में नागरिक बनकर रहने के इच्छुक, उच्च शिक्षित, शाकाहारी वरवधू चाहिए. कोई बंधन नहीं. फोटो सहित प्रथम विवरण लिखें: C/o Silk & Cotton Studio, 195, Spadina Avenue, TORONTO, Ontario, MST-2C5, CANADA

आवश्यकता है

वर्ल्डकप, 87, वेस्टइंडीजपाकिस्तान मैच दि. 16-10-87 की वीडियो कैसेट की, और क्रिकेट से संबंधित कोई भी वीडियो कैसेट हो तो कीमत सहित लिखें. लाइब्रेरी वाले भी लिखें. लिखें: वि. नं. 8726, सरिता, नई दिल्ली-110055.

रिक्तस्थान

भारत तथा विदेश में लेखन व शोधकार्य में सहायता एवं घर की देखभाल के लिए 30-35 वर्षीया, निस्संतान महिला की आवश्यकता है. भोजन, वस्त्र आदि की समस्त दैनिक सुविधाओं के साथ 750/-रु. प्रतिमाह. शिक्षित, बेसहारा व टाइप जानने वाली को प्राथमिकता व अधिक वेतन संभव. पूर्ण व ठीक विवरण सहित लिखें: Prof. B.S. Aggrawal, Academy of Korean Studies, 50, Unjung-Dong, Seongnam -SI Kyeonggi-Di 130-17, Via Seoul, KOREA. तथा इसकी प्रति पोस्ट बाक्स नं. 55, ग्वालियर, म.प्र.-474001 को भेजें.

व्यक्तिगत विज्ञापनों की दरें

सरिता : 3.50 रु. प्रति शब्द
वूमंस ईरा : 1.50 रु. प्रति शब्द
सरिता व वूमंस ईरा : 4.00 रु. प्रति शब्द.

पूर्ण विवरण के लिए लिखे :

मुख्य विज्ञापन कार्यालय :

दिल्ली प्रेस पत्रिका विभाग,
एम- 12, कनाट सरकस,
नई दिल्ली- 110001.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कपड़े चमकें इन्द्रधनुष से सालों साल
डाक्टर वाशिंग पाउडर की है इतनी सुरक्षित देखभाल

डाक्टर
वाशिंग पाउडर

किफ़ायती और आसान धुलाई के लिए
हमेशा प्रयोग करें

डाक्टर सोप के निर्माताओं का उत्कृष्ट-उत्पादन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरिता

सामाजिक व पारिवारिक पुनर्निर्माण की पाक्षिक पत्रिका

संपादक व प्रकाशक : विश्वनाथ

अंक : 787 फरवरी प्रथम 1988

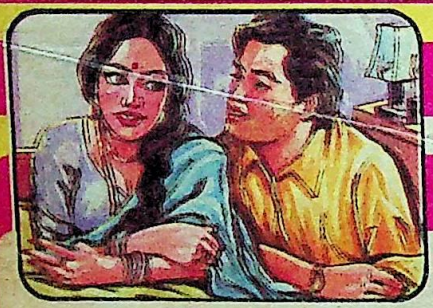

कथा साहित्य

28 बुरे फंसे
सासससुर व मातापिता का एकसाथ आना

44 भटकती राहें
प्रौढावस्था में गैर से प्रेम

74 चीलकौए
पिता की मृत्यु के बाद संतानों का व्यवहार

86 एक और आकाश
बिन ब्याही मां की दृढ़ता

100 एक भटका हुआ सच
इनसान से हैवान बनने वाला युवक

111 बात बाजा बजने की
खुशी जाहिर करने का तरीका

132 विरासत
न्याय की आस में वृद्ध की मौत

148 पहला पत्थर
भाषा विवाद का शिकार—एक परिवार

158 दरार
महिला कर्मी को ले कर पितापुत्र में तनाव

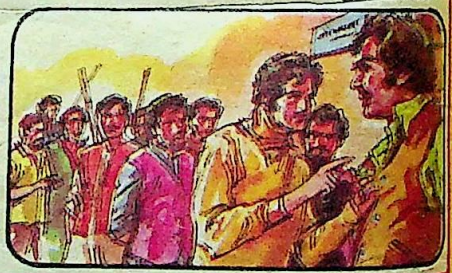

लेख

21 जीवन बीमा निगम की भ्रामक योजनाएं
भोलीभाली जनता का धन हड़पने की कोशिश

37 कंप्यूटर ज्योतिष
अंधविश्वासी लोगों को मूंड़ने की नई तकनीक

52 चेहरे का मेकअप
कम से कम समय में कैसे करें?

57 सर्दियों में त्वचा की देखभाल
शुष्क व रूखी त्वचा को सुंदर बनाने के उपाय

61 प्रौढावस्था और आकर्षक व्यक्तित्व
बढ़ती उम्र में आकर्षक दिखने के तरीके

64 आहार चिकित्सा
विटामिन के अंधाधुंध प्रयोग की मनाही

70 सौंदर्य और देखभाल
सदाबहार बने रहने के गुर

93 चेरी वाले कोस्टर बुनिए
सजावट के लिए एक नमूना

95 रंगबिरंगा हाइनेक स्वेटर
बच्चों के लिए एक आकर्षक परिधान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

117 **पति का सम्मान**
पत्नी के हाथ

121 **बेटी को यों न बिगाड़ें**
लड़की के मातापिता के लिए निर्देश

125 **बच्चे के सर्वांगीण विकास के लिए**
मां के अलावा पिता का भी प्यार आवश्यक

138 **हालैंड में स्कूली शिक्षा**
विदेश में बच्चों को व्यावहारिक शिक्षा

156 **खट्टेमीठे अचारों की बहार**
अचार के कुछ नए नमूने

168 **1987 की फिल्मों का लेखाजोखा**
वर्षभर की फिल्मों पर एक नजर

स्तंभ

17 सरित प्रवाह
98 ननमुन
116 ये पत्नियां
124 बच्चों के मुख से
144 मुझे शिकायत है
146 नए फैशन
183 चंचल छाया

6 आप के पत्र
12 जीवन की मुसकान

कविताएं

51 तुम गजल हो धूप की
83 छू गए हो तुम
99 मैं हूं घुड़सवार
131 याद बहुत आए
155 आंखों के सपने

सपादकीय, विज्ञापन व प्रकाशन कार्यालय :
दिल्ली प्रेस भवन, ई-3 झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली – 110055.
दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन प्रा.लि. के लिए विश्वनाथ द्वारा प्रकाशित तथा दिल्ली प्रेस समाचार पत्र प्रा.लि. साहिबाबाद/गाजियाबाद में मुद्रित.
अन्य कार्यालय: अहमदाबाद : 503, नारायणा चैंबर्स, आश्रम रोड, अहमदाबाद–380009., बंगलौर : 302-बी, 'ए' क्वींस कारनर एपार्टमेंट्स, 3, क्वींस रोड, बंगलौर–560001. बंबई : 79-ए मित्तल चैंबर्स, नरीमन पाइंट, बंबई-400021. कलकत्ता : तीसरी मंजिल, पोद्दार पाइंट, 113, पार्क स्ट्रीट, कलकत्ता-700016. मद्रास : 14, पहली मंजिल, सीसंस कांप्लेक्स, 150/82 मांटीअथ रोड, मद्रास-600008. लखनऊ : 9, दुर्गा भवन, कपूर लेन, महात्मा गांधी रोड, लखनऊ-226001. सिकंदराबाद : 122, पहली मंजिल, चिनाय ट्रेड सेंटर, 116, पार्क लेन, सिकंदराबाद-500003.

©दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन प्रा.लि. बिना आज्ञा कोई रचना किसी प्रकार उद्धृत नहीं की जानी चाहिए.

सरिता में प्रकाशित कथा साहित्य में नाम, स्थान, घटनाएं व संस्थाएं काल्पनिक हैं और वास्तविक व्यक्तियों, स्थानों, घटनाओं या संस्थाओं से उन की किसी भी प्रकार की समानता संयोग मात्र है.
वैवाहिक विज्ञापन विभाग : एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001.
वार्षिक मूल्य केवल ड्राफ्ट/मनी आर्डर द्वारा 'सरिता' के नाम से ई-3, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-110055 को ही भेजें. चैक व वी.पी.पी. स्वीकार नहीं किए जाते.
मूल्य : विदेशों में (समुद्री डाक से) 240 रु., (हवाई डाक से)636 रु.

मूल्य : एक प्रति 5.00 रुपए, वार्षिक 120 रुपए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आप के पत्र

सरित प्रवाह/दिसंबर/द्वितीय

'सोवियत महोत्सव' से संबंधित संपादकीय टिप्पणी काफी विचारोत्तेजक लगी.

कैसी विडंबना है कि एक ओर तो सरकार बाढ़ और सूखे का सामना करने के लिए जनता से मदद मांग रही है और दूसरी ओर जनता के पैसों को इन नाचतमाशों में उड़ा रही है. क्या यह जनता को मूर्ख बनाना नहीं है?

देश की जरूरतों के नाम पर दूसरे देशों से ऋण लेना और ऐसी ओछी हरकतों पर उसे लुटाना मूर्खता की पराकाष्ठा है. सरकार को जनता के मनोरंजन पर ध्यान देने के बजाए उस के रहनसहन, भरणपोषण जैसी बुनियादी जरूरतों पर ध्यान देना चाहिए.

—ललित सागर

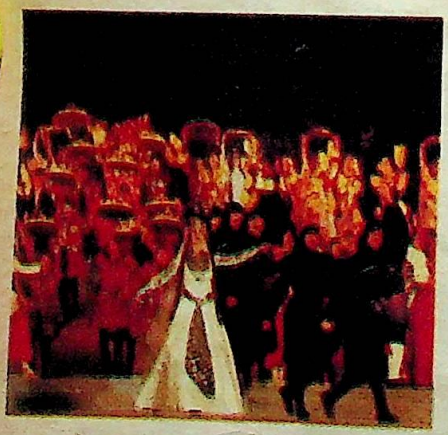

सरकारी खर्चे से संबद्ध आप के विचारों से मैं पूर्णरूपेण सहमत हूं.

सारा देश सूखे, महंगाई, कालाबाजारी व जमाखोरी के दलदल में फंसा है. ऐसे में सरकार द्वारा अनापशनाप खर्च औचित्यहीन लगता है. रिलायंस कप, सोवियत महोत्सव जैसे खर्चीले आयोजन पर सरकार ने करोड़ों का चूना लगाया है. और अब 1780 करोड़ रुपयों के खर्च की पूर्ति तरहतरह के करारोपण से करना चाहती है.

—एल आर. फरक्या

रामायण या अंधविश्वास का प्रचार

लेख 'रामानंद सागर की रामायण : आलोचनाओं और आपत्तियों के उत्तर' (दिसंबर/प्रथम/द्वितीय) से मैं पूर्णतः सहमत हूं.

21 वीं सदी में प्रवेश करने को तैयार बैठे देश में बंदर और भालुओं का तमाशा दिखा कर दूरदर्शन समाज को कौन सी रचनात्मक राह दिखा रहा है, समझ में नहीं आता.

—खूबीलाल पटेल

*

यह एक भ्रांत धारणा है कि धारावाहिक 'रामायण' के प्रसारण/प्रदर्शन से भारतीय संस्कृति का गौरव बढ़ रहा है.

जनक वाटिका में राम और सीता को करीब 10 मिनट तक उत्तेजक मुद्रा में एकदूसरे को निहारते हुए दिखाना क्या भारतीय संस्कृति का गौरव है? आजकल अगर कोई आदमी किसी नारी को इस तरह देखे तो लोग उसे बुराभला कहें.

यह धारावाहिक व्यक्तिपूजा और अंधविश्वास को बढ़ावा देता है. धर्मनिरपेक्ष देश में ऐसे प्रसारण नीति विरुद्ध हैं.

—सूर्यकांत शर्मा

*

यह धारावाहिक केवल अंधविश्वास को ही नहीं कामचोरी को भी पोषित कर रहा है.

हमारे गांव के केवल दो घरों में ही टेलीविजन हैं. 'रामायण' के समय तथाकथित भगवान राम के दर्शन करने के लिए सभी गांव वाले अपनाअपना काम छोड़ कर इन्हीं घरों पर उमड़ पड़ते हैं. कुछ धर्मांध जन तो स्नान कर के हाथों में फूल, चावल आदि ले कर टेलीविजन के सामने बैठ जाते हैं.

जो मजदूर प्रतिदिन 8 बजे तक खेतों पर काम करने के लिए निकल जाते हैं, वे उस दिन दो टूक जवाब दे देते हैं, "रामायण देख कर ही काम करेंगे. मरजी हो तो काम कराओ, वरना आज आराम ही सही."

—केवलराम मालवीय

*

'रामायण' में राजा और राजनीति पर धर्म को हावी दिखाया गया है. राजा दशरथ (जो राजसत्ता का प्रतीक है) को धर्मगुरु विश्वामित्र के पांव धोते दिखाना, इसी कथन की पुष्टि करता है.

—ललित शर्मा

*

सभी आपत्तियां एवं आलोचनाएं बेमानी हैं. 'रामायण' तो अनेक अव्यावहारिक और अनुचित प्रसंगों का संग्रह है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Moments and moments of Freshness!

VMC

AAA/VMC/8801

VMC
V.M. CONFECTIONERY LTD.,
135/1, Kaval Byrasandra, Bangalore-560 034.
The manufacturers of Gem centre-filled chewing Gum
वी. एम. कन्फैक्शनरी लि., बंगलौर द्वारा निर्मित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उदाहरण के लिए, हनुमान ने लंका में पहुंच कर सीता को 'मां' कह कर संबोधित किया था. फिर भी सीता उन्हें परपुरुष मान कर उन के साथ जाने से मना कर देती हैं. मां और पुत्र के संबंध में 'पराएपन' की कल्पना क्या अव्यावहारिक नहीं लगती?

—राजीव 'शांत'

*

भारत में बचपन से ही सब के दिमाग में यह बात कूटकूट कर भर दी जाती है कि धर्म ही सब कुछ है, धर्म से जुड़ कर हर कार्य पवित्र है. धर्मग्रंथ के रूप में मान्य होने के कारण 'रामायण' पर भी यह बात लागू होती है.

धारावाहिक में चंद फिल्मी कलाकारों द्वारा ऊलजलूल अभिनय करा कर, उन से फिल्मी अंदाज में संवाद बुलवा कर किस कर्तव्य को पूरा किया जा रहा है अथवा किस धर्म की प्रतिष्ठा की जा रही है?

—रोमिला मसंद

*

20 मिनट के दैनिक सरकारी विज्ञापन 'दूरदर्शन समाचार' में एक दिन राष्ट्रपति रामास्वामी वेंकटरमन को 'रामायण' के वीडियो कैसेट उपहार में देते दिखाया गया था. यह या तो शिष्ट तरीके से उन्हें रिश्वत दी गई थी या फिर उन्हें एक माडल के रूप में उपस्थित किया गया था.

शायद इसी का यह परिणाम है कि 'रामायण' के लिए दूरदर्शन ने अपनी आचार संहिता को ताक पर रख दिया है.

—प्रणयकुमार मिश्र

*

दूरदर्शन धारावाहिक 'रामायण' की आलोचना कर के आप ने जनता की भावनाओं को ठेस पहुंचाई है.

लेख में जिन्हें 'कैमरा ट्रिक' कहा गया है, वे दृश्य वास्तविकता को प्रदर्शित करने के लिए हैं. रामायण कालीन तीर तीर नहीं एटमी शक्तियां थीं.

आप को बताना चाहिए कि वह लक्ष्मण रेखा क्या है?

—एल.डी. गुप्ता

*

पत्रकारिता का सच्चा उदाहरण

लेख 'ईसाइयत के नाम पर' (दिसंबर/द्वितीय) में पत्रकारिता का सच्चा उदाहरण पेश किया गया है.

राजनीति के दलदल व पश्चिमी सभ्यता की होड़ में ईसाई समाज वास्तव में भौंडा बन कर बिखरता जा रहा है. उत्तरी ही नहीं, संपूर्ण भारत में ईसाइयों का हाल किसी से छिपा नहीं हैं.

—ज्योतिप्रकाश शर्मा

*

मनभाया लेख

लेख 'मांगने वालों से छुटकारा पाने के उपाय' (दिसंबर/द्वितीय) मन को बहुत भाया.

वास्तव में जरूरतमंद की समय पर मदद करना प्रत्येक सभ्य नागरिक का कर्तव्य है, पर आदतन रोज मांगने वालों के प्रति कठोरता अवश्य बरतनी चाहिए.

—सुरेश कासलीवाल

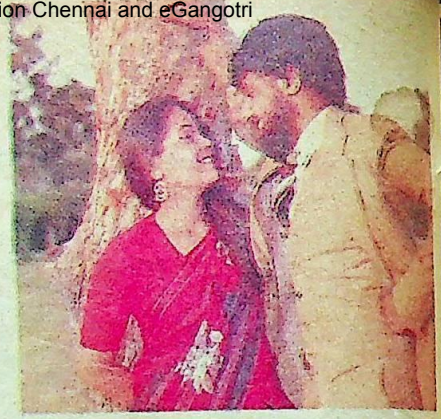

सजनेसंवरने की सामाजिक उपयोगिता

लेख 'सजिएसंवरिए सजना के लिए' (दिसंबर/द्वितीय) एक स्वाभिमानी गृहिणी के अहं को ठेस पहुंचाता है.

सलीके से रहना सिर्फ पति को रिझाने के लिए ही नहीं, स्वयं में चुस्तीफुर्ती लाने और समाज में रहने के लिए भी जरूरी होता है.

—पूनम

*

ईश्वर धंधेबाजी का एक साधन

लेख 'विश्व प्रणेता शक्ति कहां है?' (दिसंबर/द्वितीय) ज्ञानवर्द्धक, सटीक एवं ईश्वरवादी लोगों के मुंह पर एक तमाचा है.

जिस प्रकार सपेरे की बीन व बाजीगर की डुगडुगी उन की कमाई का साधन है, उसी प्रकार आज धर्म के धंधेबाजों ने ईश्वर को विभिन्न रूप दे कर अपनी रोजीरोटी का साधन बना लिया है. ये धंधेबाज ईश्वर के नाम पर लूटखसोट, ऐयाशी व व्यभिचार करने से भी नहीं चूकते.

—रत्नकुमार सांभरिया

*

फ्रिज की खरीदारी

लेख 'क्या आप फ्रिज खरीदने वाली हैं' (दिसंबर/द्वितीय/ तथ्यपूर्ण है. वास्तव में फ्रिज खरीदते समय कंपनी द्वारा दी गई एक वर्ष की गारंटी ही पर्याप्त है क्योंकि इस अंतराल में फ्रिज की मशीनरी के खराब होने या नहीं होने का पता आसानी से चल जाता है. पांच वर्ष का सेवा अनुबंध ग्राहक द्वारा नहीं किया जाना चाहिए क्योंकि पांच वर्षों के सेवा अनुबंध की भाषा कानूनी दांवपेचों के आधार पर तैयार होती है.

ऐसे में अदालत का द्वार खटखटाने पर कंपनी की विजय होना स्वाभाविक है.

—जितेंद्रकुमार विज

मर्मस्पर्शी कहानी

कहानी 'सुबह के बाद' (दिसंबर/प्रथम) मर्म को छू गई.

पुनर्विवाह हो जाने पर यादों से जुड़ा नारी का अतीत उसे उस के वर्तमान में पूर्णतः समर्पित नहीं होने

शरीरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खाओ गगन, रहो मगन!

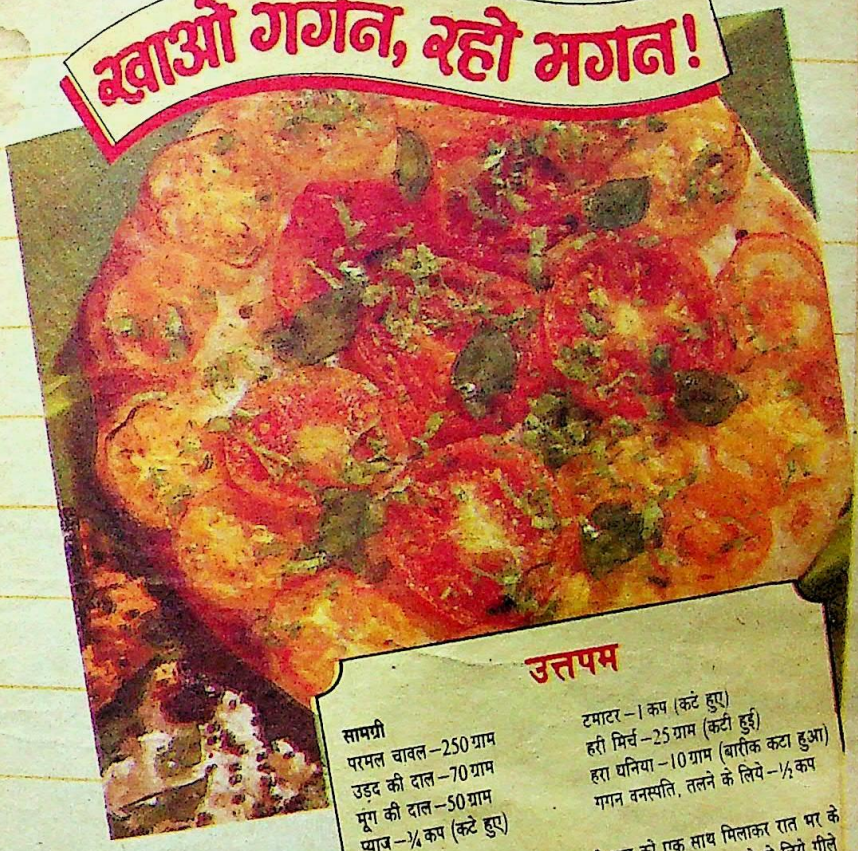

उत्तपम

सामग्री

परमल चावल – 250 ग्राम
उड़द की दाल – 70 ग्राम
मूंग की दाल – 50 ग्राम
प्याज़ – ¼ कप (कटे हुए)
टमाटर – 1 कप (कटे हुए)
हरी मिर्च – 25 ग्राम (कटी हुई)
हरा धनिया – 10 ग्राम (बारीक कटा हुआ)
गगन वनस्पति, तलने के लिये – ½ कप

विधि

1. चावल, उड़द की दाल और मूंग की दाल को एक साथ मिलाकर रात भर के लिये भिगो दीजिए। सुबह इन्हें बारीक पीस कर खमीर उठाने के लिये गीले कपड़े से ढक कर, तीन घन्टे तक रख दीजिये।
2. अब तवे या हॉट प्लेट पर गगन वनस्पति लगाकर एक चम्मच मिश्रण डाल कर गोल फैला लीजिये। फिर उस पर कटे हुए प्याज़, टमाटर, हरी मिर्च और हरा धनिया डालिये।
3. एक तरफ से सुनहरा हो जाने के बाद दूसरी ओर पलटिये और सुनहरा हो जाने पर गर्म-गर्म परोसिये।

हमारी अन्य आकर्षक व्यंजन-विधियों का इन्तज़ार कीजिए।

अत्यंत आधुनिक फ़ैक्टरी में
शुद्ध और स्वच्छ गगन वनस्पति का उत्पादन

विश्वसनीय
गगन
वनस्पति

अमृत बनास्पति कम्पनी का एक उत्कृष्ट उत्पादन

HTA 5149 HIN B

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देता. उस के मन में अतीत और वर्तमान का अंतर्द्वंद्व चलता है. फलतः निर्दोष होते हुए भी वह दोषी ठहरा दी जाती है. किंतु उस के अंतर्द्वंद्व को समझने का प्रयास कोई नहीं करता.

क्या आज का पुरुष एक नारी को इस स्थिति से उबार कर एक खुला वातावरण दे सकेगा, जहां वह अपना जीवन सुखी बना सके?.

—सुधाकर क. सहल

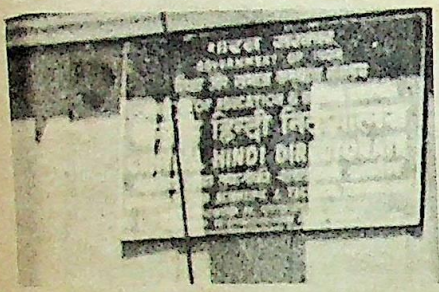

हिंदी के साथ छल

लेख 'केंद्रीय हिंदी निदेशालय' (दिसंबर/प्रथम) से इस संस्थान के संबंध में महत्त्वपूर्ण जानकारी मिली.

यदि देखा जाए तो इस संस्थान की अब तक की उपलब्धियां नगण्य हैं जब कि इस पर खर्च किया गया धन बहुत अधिक है. यह संस्थान हिंदी के प्रचारप्रसार एवं उसे गौरवमय पद प्रदान करने में विशिष्ट भूमिका अदा कर सकता है, बशर्ते कि किसी सुयोग्य विभागाध्यक्ष के नीचे इस की संपूर्ण व्यवस्था ठीक कर दी जाए.

—प्रभातकुमार

*

वस्तुतः केंद्रीय हिंदी निदेशालय और वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग दो नहीं, एक ही कार्यालय हैं. दो व्यक्तियों को विभागाध्यक्ष (एक चेयरमैन और दूसरा निदेशक) नियुक्त करने के लिए एक ही कार्यालय (केंद्रीय हिंदी निदेशालय) को दो टुकड़ों में बांट दिया गया है.

दोनों कार्यालयों के सभी कर्मचारियों की वरीयता सूची एक ही है. दोनों का प्रशासनिक अधिकारी भी एक ही है. वही दोनों कार्यालयों के कर्मचारियों की नियुक्तियां तथा अन्य प्रशासनिक कार्य करता है.

शब्दावली आयोग का तो कार्य इतना ही था कि निदेशालय द्वारा 1962 से पूर्व संग्रहीत शब्दावली का पुनर्निर्माण किया जाए. साथ ही स्नातकोत्तर स्तर की शब्दावली का भी निर्माण किया जाए. ये दोनों कार्य 1970 में ही पूरे हो चुके थे. अब तो यह कार्यालय इस उक्ति को चरितार्थ करता है.

"ए मर्दे बेकार कुछ तो किया कर,
कोई काम नहीं तो पाजामा उधेड़ कर सिया कर."

शब्दावली आयोग और निदेशालय के अधिकांश कर्मचारियों ने उन विषयों में कभी कोई कार्य नहीं किया है, जिन में कार्य करने के लिए उन की नियुक्ति वर्षों पूर्व हुई थी. उदाहरणार्थ, अनेक राजपत्रित अधिकारियों की नियुक्ति वर्षों पूर्व राजनीतिशास्त्र, दर्शनशास्त्र, कृषि विज्ञान, इतिहास, भूगोल, फार्मेसी, रसायन आदि विषयों में हुई थी. लेकिन इन अधिकारियों ने 10 से 15 वर्षों तक अपनेअपने विषयों में कोई भी कार्य नहीं किया. यही कारण है कि पिछले वर्ष में शब्दावली आयोग में नियुक्त कर्मचारियों के वेतन एवं भत्तों आदि पर हुआ खर्च उस के द्वारा कार्यान्वित योजना के खर्च से 5 गुना से भी अधिक था.

यद्यपि निदेशालय एवं शब्दावली आयोग में अनेक कर्मचारियों के पास कोई काम नहीं है, फिर भी प्रशासन द्वारा कई निहित स्वार्थों वाले व्यक्तियों की तदर्थ नियुक्ति, प्रतिनियुक्ति, पुनर्नियुक्ति, परामर्शदाता नियुक्ति, दैनिक नियुक्ति आदि अनियमित नियुक्तियां जारी हैं.

हाल ही में वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग में परामर्शदाता नियुक्ति ऐसे व्यक्ति की हुई है, जो न तो वैज्ञानिक है और न ही तकनीकी विशेषज्ञ. उसे न तो ठीक से दिखाई देता है और न सुनाई. वह 75 वर्षीय व्यक्ति हृदय रोग से भी पीड़ित है.

देश की वर्तमान परिस्थितियों में भी इन कार्यालयों के अधिकारियों द्वारा बेकार की संगोष्ठियों, शिविरों और दौरों का सिलसिला जारी है, जिन का उद्देश्य हिंदी का प्रचारप्रसार नहीं, बल्कि अपने साथसाथ अपने संबंधियों को भी 'भारत दर्शन' कराना है.

केंद्रीय हिंदी निदेशालय और शब्दावली आयोग द्वारा खरीदी और प्रकाशित की गई 75,00,000 रुपयों की पुस्तकें इन कार्यालयों के बरामदों और भंडारघरों में बिखरी पड़ी हैं. इन में अधिकांश पुस्तकें खराब हो गई हैं. उन में दीमक लग गई है. यहां के भंडारघर का यदि वर्तमान किराया ही आंका जाए तो 5 लाख रुपए प्रतिमाह से कम नहीं होगा.

इन में से अनेक पुस्तकें ऐसी भी हैं, जिन के लेखक निदेशालय के कर्मचारी ही हैं. इन कर्मचारियों ने अपनी ही पुस्तकें बहुत अधिक मूल्य पर अपने ही कार्यालय यानी केंद्रीय हिंदी निदेशालय और आयोग को बेची हैं.

रूसीहिंदी, जरमनहिंदी और चैकहिंदी आदि कई कोश पिछले 15 वर्षों से तैयार हो रहे हैं. निदेशालय के कई कर्मचारी इन कोशों के चक्कर में रूस, जरमनी और चेकोस्लाविया आदि देशों की यात्रा कर आए हैं, लेकिन अभी तक ऐसा कोई कोश न तो निदेशालय ने प्रकाशित किया है और न ही करेगा क्योंकि इन कोशों की कोई उपयोगिता नहीं है.

अतः ऐसे फ़ुजूलखर्ची वाले कार्यालयों को तुरंत बंद कर देना चाहिए ताकि सरकार का करोड़ों रुपया बच सके और इस धन का उपयोग अन्य लाभकारी योजनाओं में किया जा सके.

—एक सदस्य, केंद्रीय हिंदी निदेशालय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya

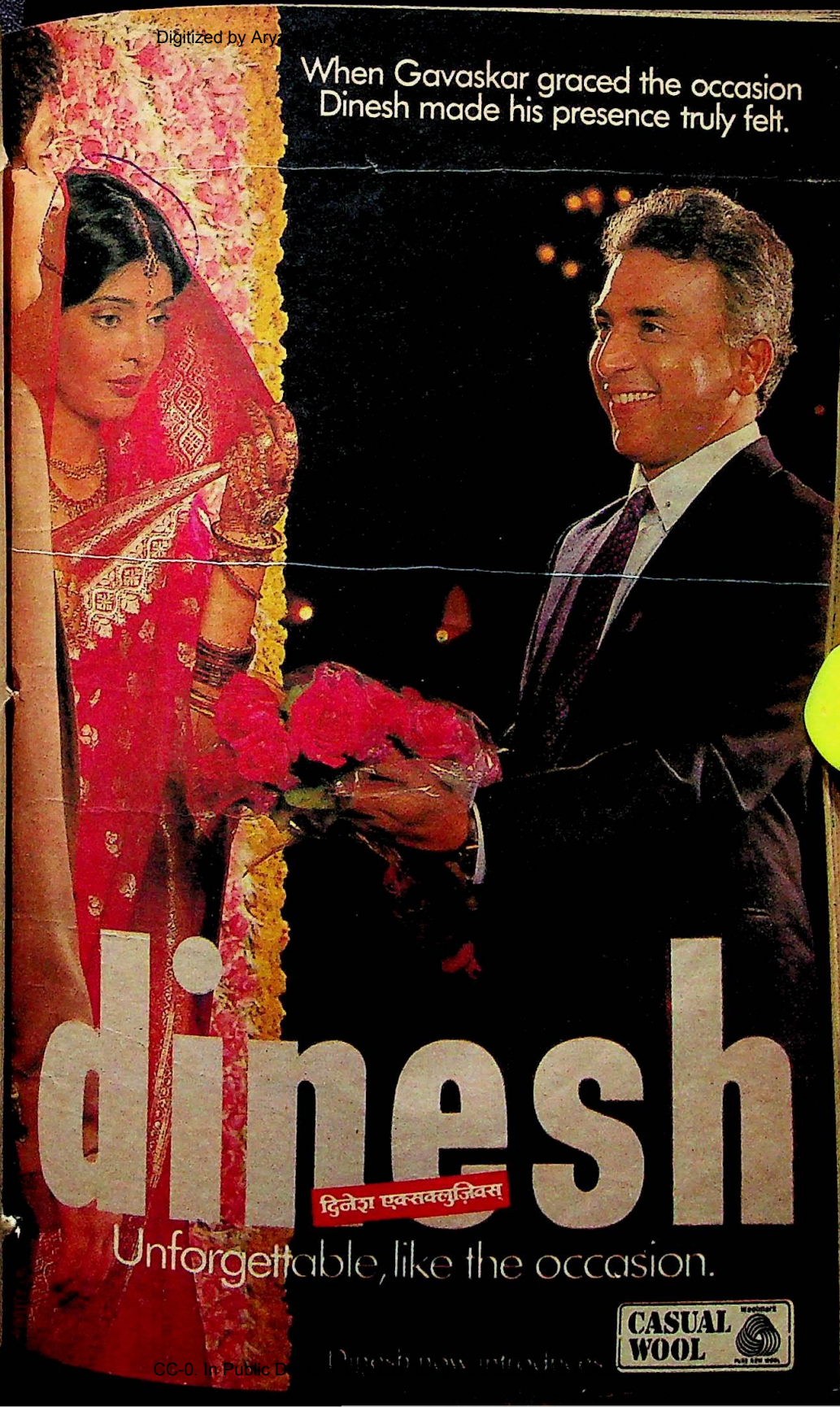

CC-0. In Public D

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवन की मुसकान

गत वर्ष मैं बस से बनारस जा रहा था. रास्ते में बस चायनाश्ते के लिए रुकी. मैं भी चाय पीने के लिए एक रेस्तोरां में चला गया.

जब मैं वापस लौटा तो बस जा चुकी थी. उस में मेरी अटैची और बैग रखा था. मैं एक जीप से बनारस के बस डिपो पहुंचा. यह देखकर मेरी खुशी का ठिकाना नहीं रहा कि बस का संवाहक मेरा सामान भंडार में जमा कर के मेरा इंतजार कर रहा था.

मैं अपना सामान ले कर जब तक संवाहक को इनाम देने के लिए बाहर आया, तब तक वह जा चुका था.

—पवनकुमार तुलस्यान

*

पिछले वर्ष हम आंध्र प्रदेश घूमने जा रहे थे कि रास्ते में हमारी गाड़ी एक नाले में गिर गई. कुछ लोगों ने हमें बाहर निकाला. इस बीच एक सज्जन गाड़ी ले कर वहां से गुजरे.

हमें मुसीबत में फंसा देख कर वह हमें अपने खेतों पर ले गए.फिर हमें वहां छोड़ कर पिताजी को वर्कशाप ले गए. हम लोगों ने भोजन वहीं किया.

रात 8 बजे वह हमारी गाड़ी को भी साथ ले कर लौटे. उन्होंने आते ही मां से पूछा, "आप को कोई परेशानी तो नहीं हुई?"

उन की सज्जनता से हमारी आंखें डबडबा आईं.

—भारती पाठक

*

बात 1980 की है. मैं अपने परिवार के साथ पहलगांव से श्रीनगर आ रही थी. चट्टान गिर जाने से पैदल सफर करना पड़ा. रास्ते में कुछ स्थानीय लोगों से हम ने जीरो पुल का पता पूछा. उन्होंने हाथ से इशारा कर के हमें दिशा बता दी.

अभी हम उस दिशा में बढ़ ही रहे थे कि हमारे पास सेना का एक जवान आया और बोला, "आप विपरीत दिशा में जा रहे हैं."

फिर वह सैनिक हमें जीरो पुल तक छोड़ने आया. अगर वह जवान हमें न मिलता तो न जाने वे बदमाश हमारे साथ क्या वारदात करते.

उस जवान की कर्तव्यपरायणता को देख कर आज भी हमारा मन गदगद हो उठता है.

—ज्योत्स्ना अस्थाना

*

पिछले वर्ष मेरा सोलन से कालका स्थानांतरण हो गया था. मैं अपना सारा सामान ले कर रेल से कालका जा रहा था.

गाड़ी में मेरी एक सज्जन से मुलाकात हुई, जिन्हें धर्मपुर उतरना था. थोड़ी देर बाद एक स्टेशन के आने पर मैं उन से बिना पूछे खाना खाने के लिए गाड़ी से उतर गया.

अभी मैं भोजन कर भी नहीं पाया था कि रेलगाड़ी चल पड़ी. मैं बस पकड़ कर कालका रेलवे स्टेशन पर पहुंचा. मैं यह देख कर हैरान रह गया कि वही सज्जन मेरा सामान प्लेटफार्म पर उतार कर मेरा इंतजार कर रहे थे. उन्हें कालका से भी पहले धर्मपुर स्टेशन पर उतर जाना था.

—पंकजकुमार गोयल

इस स्तंभ के लिए अपने तथा अपने संबंधियों के अनुभव भेजिए. प्रत्येक प्रकाशित अनुभव पर 30 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. अपने अनुभव इस पते पर भेजें. संपादकीय विभाग, सरिता, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

सरिता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पोटेटोज़ की एक गर्मागर्म हलचल!

POTATOZ

इधर चाहा, उधर तैयार!

अब गर्मागर्म फ्रेंच फ्राइज़, क्रोकेट्स् और पैटीज़, चुटकी बजाते तैयार।

बस तलने के लिए तैयार,
पोटेटोज़ को 'फ्रीज़र' से निकालिए
और गर्म तेल में कुछ क्षण तलिए,
या फिर अपने ग्रिलर में ग्रिल कीजिए।
गर्मागर्म परोसिए, चटनी के साथ।
एक बार चखकर तो देखिए
—आपका मन मोह लेंगे ये पोटेटोज़!

POTATOZ

स्वादिष्ट! फौरन तैयार!

फ्रेंच फ्राइज़• क्रोकेट्स्• पैटीज़

इधर चाहा, उधर तैयार!

Shems/4711

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुमीत SP-16: पहली किचन मशीन, जिसके बारे में आप दोनों की अपनी अपनी राय है

श्रीमान की

"इसकी इंजीनियरिंग बहुत बढ़िया है"

कारीगरी साफ़ दिखाई पड़ती है.

इसका हर हिस्सा दूसरे हिस्सों से पूरी तरह मेल खाने के लिए डिज़ाइन किया गया है. ४२६ हिस्से, बड़ी सावधानी से काटछांटकर बनाए गए हैं, ताकि बिल्कुल सही ढंग से एक दूसरे को सहें और साथ मिल कर मज़बूती से काम करें—

इलेक्ट्रानिक्स का यहां नाज़ुक खिलवाड़ के तौर पर नहीं, बल्कि इस मशीन के दिल की तरह काम करने के लिए इस्तेमाल किया गया है. इससे एस पी–१६ वज़न की परवा किए बिना एक जैसा बढ़िया काम करता है. यह सिस्टम पूरी तरह से बेहिसाब बदलने वाली रफ़्तारों के योग्य है.

मज़बूत चैसिस बनावट, रबर शाक डैम्पनर्स और प्रोसेसर बोल के लिए निचले गियर का ड्राइव शोर इतना नीचे रखते हैं कि सिर्फ़ मशीन का गुनगुनाना भर सुनाई पड़े.

और सुमीत के साथ तो यह हमेशा सच रहा है कि इसकी मोटर लगातार आधा घंटे से ज़्यादा देर तक चलती रह सकती है—पूरे वज़न के होते हुए.

सुमीत एसपी–१६. ४२६ साज़, लेकिन सुर एक–ऐसा है इसका काम.

OBM/2019/HN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्राइन्डर कप अटैचमेंट

आपकी

"इतना ज़्यादा काम, इतनी आसानी से"

इसकी ख़ूबी इस बात में इतनी नहीं है कि ये कितने काम करता है बल्कि इसमें है कि इसकी रफ़्तार कितनी अच्छी है और इसे इस्तेमाल करना कितना आसान है.

फूड प्रोसेसर वर्क बोल, स्टेनलेस स्टील जार और एक सामान्य कण्ट्रोल. इन सबके तालमेल से मिनटों में इससे और भी ज़्यादा काम ले लेना कितना आसान है.

आप इससे सूखी पिसाई, गीली पिसाई कर सकती हैं, आटा गूंध सकती हैं, मिला सकती हैं, स्लाइस, लच्छे या चिप्स बना सकती हैं. और तो और गोश्त का कीमा बनाइए, काटिए, मिलाइए, फेंटिए, घिसिए या और भी कुछ कीजिए. कुल मिलाकर १६ काम. और इन कामों के साथ कम मात्रा वाला छोटा ग्राइन्डर और नींबू, मोसम्मी, संतरे वगैरह का रस निकालने के लिए सिट्रस प्रेस जूसर.

अब हर तरह का भोजन बनाना आपकी आसान पहुंच के अंदर.

सुमीत एसपी–१६ लोड या वज़न के साथ अपने आप ही ख़ुद को ठीक कर लेता है और अगर कहीं भूल से इस पर वज़न ज़्यादा हो जाय तो भी इसकी रफ़्तार में फर्क नहीं पड़ता. सुमीत एसपी–१६ पूरी तरह सुरक्षित भी हैं, क्योंकि अगर चालू रहते इसे कोई खोल दे तो यह अपने आप एकदम बंद हो जाता है.

वास्तव में यह हमेशा ही एक जैसा बढ़िया बारीक काम करता है. और यहीं ये बाज़ी मार ले जाता है. अधिक फुलफुली इडलियां और आमलेट, वेफर जितनी बारीक ककड़ी की स्लाइसें, ख़ूब अच्छी तरह पिसे मसाले.

बस आप काम सोचिए, सुमीत तैय्यार है आपको ख़ुश करने के लिए. सुमीत एसपी–१६. तरह तरह के साज, लेकिन सभी आपकी ही धुन बजाएं.

सुमीत एसपी–१६ के अलावा सुमीत डोमेस्टिक भी उपलब्ध है, जो वैसी ही सावधानी से बना है और कुल मिलाकर ८ काम कर सकता है. अगर आपकी ज़रूरतें कम हों तो इसे लीजिए.

सुमीत® SP-16 इलेक्ट्रानिक

काम में कमाल, मज़बूती बेमिसाल.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पार्टी, विशेष और सामान्य अवसरों के लिए लजीज ही नहीं स्वादिष्ट भी 50 भारतीय और विदेशी व्यंजन एकसाथ.

फरवरी, 1988.

गृहशोभा

व्यंजन विशेषांक

क्या आप पाक कला निपुण नहीं हैं. व्यंजन बनाने से हिचकिचाती हैं, पर तारीफ के दो बोल सुनना चाहती हैं, तो गृहशोभा का यह व्यंजन विशेषांक खरीद कर पढ़ें. और अपने पति, बच्चों और मेहमानों से वाहवाही लूटें.

इस के अलावा कई अन्य लेख, रोचक ज्ञानवर्द्धक समाचार, मनोरंजक कहानियां और गुदगुदाते व्यंग्य व सभी स्थायी स्तंभ.

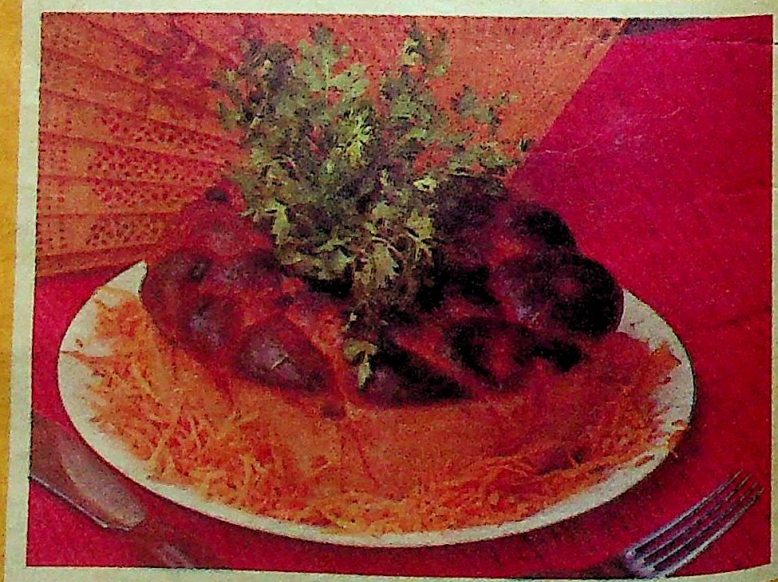

युवा महिलाओं की चहेती पत्रिका.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अरित प्रवाह

साम्राज्यवाद के विरुद्ध सब से ज्यादा जोर से बोलने वाले और साम्राज्यवाद व शोषण को हर तरह से नष्ट करने का बीड़ा उठाने वाले कम्यूनिस्ट रूस ने अफगानिस्तान पर अपना कब्जा करने और स्वतंत्रता के दीवाने अफगानियों को गुलामी में जकड़ने के प्रयास में पिछले आठ वर्षों के दौरान अपने 20,000 से अधिक सिपाही मरवा डाले हैं, एक लाख से ऊपर जख्मी करवाए हैं, और अरबों रुपए का साजसामान नष्ट कराया है. इस कम्यूनिस्टी साम्राज्यवाद के विरुद्ध लड़ते हुए गरीब, अनपढ़, परंतु स्वतंत्रता पर मर मिटने वाले अफगानियों ने अपने 10 लाख से अधिक जानें इस युद्ध में झोंक दी हैं.

रूस तो अब इस लड़ाई से तंग आ गया है, पर अफगानों के हौसले अभी भी पूर्ववत हैं. अपनी इस हार पर रूस चाहे प्रकट रूप से शर्मिंदा न हों, पर यह तो साफ हो ही गया है कि वह अपने इतने सिपाहियों को खो कर और अपार धनराशि खर्च कर के भी अफगानों को दबा नहीं पाएगा. इसी लिए वह अब वहां से बेगैरत हो कर निकलने को तैयार हो गया है. एक समाचार के अनुसार शीघ्र ही जिनेवा में इस विषय में एक संधि पर हस्ताक्षर कर दिए जाएंगे.

यद्यपि भारत सरकार ने अफगानिस्तान में रूसी कब्जे की कभी भर्त्सना या आलोचना नहीं की, पर भारत को यह रूसी साम्राज्यवाद बड़ा महंगा पड़ा है.

रूस से लड़ते हुए अफगानियों को रसद और अस्त्रशस्त्र पहुंचाने के लिए अमरीका को एक आधार चाहिए था. और इसलिए उस ने पाकिस्तान का हाथ पकड़ा. पाकिस्तान ने जो चाहा उसे दिया गया. उस के हर अनुचित कदम को आंख से ओझल किया गया (जैसे पाकिस्तान द्वारा परमाणु बम बनाना). नतीजा यह हुआ कि पाकिस्तान के पास नएनए और भरपूर अस्त्र आ जाने से भारत को भी उसी के मेल के, उतने ही प्रभावशाली, अस्त्रशस्त्र खरीदने पड़े (जो पाकिस्तान को मुफ्त में मिले). इस विषय में रूस ने भारत के साथ वही सुलूक नहीं किया जो अमरीका ने पाकिस्तान के साथ किया. रूसी हर चीज के पूरे दाम लेते हैं, नकद लेते हैं और धौंस और एहसान जता कर लेते हैं.

दूसरे, अगर रूस अफगानिस्तान पर कब्जा रखने में सफल हो जाता तो रूसी टैंक और वायुयान भारत की सीमा से केवल 400 मील दूर रह जाते. और भारत के लिए स्थायी रूप से बहुत बड़ा खतरा बन जाते.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाकिस्तान से तो खैर भारत निबट सकता है, पर रूस से?

यह समझना कि अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में कोई स्थायी मित्र या स्थायी शत्रु होता है, गलत है. हर देश अपना स्वार्थ सिद्ध करने की कोशिश करता है और समयानुसार अपनी नीति बदलता रहता है.

जब 1962 में चीन ने भारत पर आक्रमण किया था तो क्या रूस ने कुछ हमारी सहायता की थी चाहे हम 1947 से बराबर रूस की चाटुकारी में लगे रहे. और आज भी वही कर रहे हैं, हमें उस में कितनी ही हानि उठानी पड़ रही हो.

*

सरकार जब उद्योगव्यापार में अपना हाथ डालती है, या यों कहिए कि अपनी टांग अड़ाती है तो उपभोक्ता नागरिक को बजाए लाभ होने के अकसर नुकसान ही होता है. इस का कारण यह है कि सरकारी अधिकारी और उन का 'बास' राजनीतिबाज हमेशा एकाधिकार में काम कर सकते हैं, नागरिक की प्रतिस्पर्धा में उन के पांव कहीं टिक ही नहीं सकते.

एक छोटी सी मिसाल ले लीजिए. भारतीय भोजन में लौंग और दालचीनी का एक विशेष स्थान है. बिना गरम मसाले के भारतीय भोजन स्वादिष्ट नहीं बन सकता, और इस गरम मसाले में लौंग और दालचीनी बहुत महत्त्वपूर्ण हैं. ये दोनों विदेश से आयात होती हैं.

पहले बड़े मजे में इन का आयात और वितरण चल रहा था. सरकार लाइसेंस देती थी. अनेक व्यापारी लाइसेंस की शर्तें पूरी कर के इन का आयात करते थे. आपस में प्रतिस्पर्धा थी, माल उचित मूल्य पर मिल जाता था.

पर सरकारी अधिकारी, जिन का एक मुख्य उद्देश्य नागरिक की जेब से अंतिम पैसा छीनना और उस की स्वतंत्रता छीन कर उसे गुलाम बना कर अपनी जेबें भरना होता है, इस छोटे से मामले में भी कब चुप बैठते. तत्काल आदेश निकाला गया कि सरकार स्वयं, सरकारी व्यापार निगम की मारफत लौंग और दालचीनी का आयात एकाधिकार के रूप में करेगी ताकि जनता को सस्ते मूल्य पर ये दोनों चीजें उपलब्ध होती रहें.

नतीजा : सरकारी एकाधिकार होते ही लौंग का थोक मूल्य 150 रुपए प्रति किलो से बढ़ कर 250 रुपए प्रति किलो हो गया और दालचीनी का 65 रुपए प्रति किलो से 150 रुपए प्रति किलो हो गया.

*

वर्ष 1987 में भारतीय रुपए का अभूतपूर्व मूल्य ह्रास हुआ. ब्रिटिश पाउंड के मुकाबले में रुपया 23.5% छीज गया, 18.34% पश्चिमी जरमन मार्क के मुकाबले, 20% जापानी येन से, और अमरीका डालर के साथ 1.38%.

देश के भीतर रुपए के मूल्य में यह छीजन मालसामान, सेवाएं खरीदने की दृष्टि से 10% से अधिक बैठेगी.

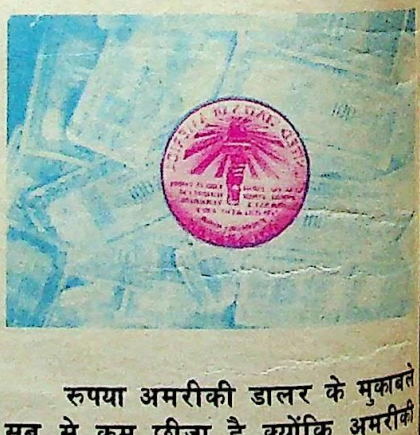

रुपया अमरीकी डालर के मुकाबले सब से कम छीजा है क्योंकि अमरीकी सरकार व अमरीकी जनता आजकल आमदनी, उत्पादन से अधिक खर्च कर रही है और विदेशों से धड़ाधड़ कर्ज ले रही है. यही हाल भारत सरकार का भी है. परंतु अमरीका संसार में सब से धनाढ्य, उद्यमी राष्ट्र है: फ़जूलखर्ची उन का थोड़े दिनों का उन्माद है. वे जब चाहेंगे, ठीक कर लेंगे. पर भारत दुनिया के सब से गरीब देशों में है. जनता, कमोवेश, काहिल और भाग्यवादी. "होई है सोई जो राम रचि राखा" मानने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाला है. मिलबैठ कर काम नहीं कर सकती. उद्योग व्यापार में सरकार का गलाघोट हस्तक्षेप है. यहां अगर हम आमदनी से अधिक खर्च करेंगे या उत्पादन नहीं बढ़ाएंगे तो केवल गरीबी, भुखमरी ही हमारे पल्ले पड़ेगी, हम कभी संसार में कोई सम्मान प्राप्त नहीं कर सकेंगे.

*

पिछले दिसंबर 1987 में भारत सरकार ने एक आयकर संशोधन कानून तैयार किया और इसे संसद में अपने बहुमत के जोर से बिना किसी बहस या सांसदों के विचारों को सुने व उन पर गौर किए, जबरदस्ती पास करा लिया.

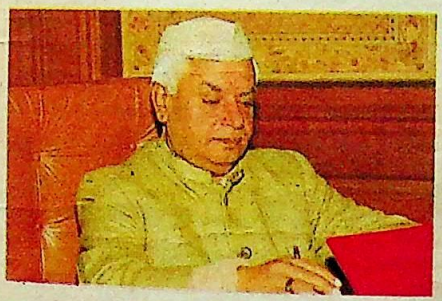

वित्त मंत्री नारायण दत्त तिवारी से जब लोकसभा और राज्य सभा के कांग्रेसी यानी सरकारी सदस्यों ने भी इस धकापेली पर एतराज किया तो टका सा जवाब मिला: ये प्रस्तावित संशोधन काफी अरसे से जनता को मालूम थे; इन पर समाचारपत्रों में व अन्यथा भी काफी वादविवाद हो चुका है, अब आप लोगों के हस्तक्षेप, सोचविचार की कोई आवश्यकता नहीं है.

दोनों सदनों की अंतिम दिन की बैठक में यह प्रस्तावित संशोधन विधेयक पेश किया गया और उसी रोज बैठक को देर तक जारी रख कर, जबरदस्ती पास करा लिया गया.

इस विधेयक का देश के सारे व्यापार उद्योग पर गहरा असर पड़ेगा. साझे की फर्मों का तो ढांचा ही बदलना पड़ेगा. हर व्यापार उद्योग संस्थान और यहां तक कि हर व्यक्ति को अपना हिसाबकिताब नए सिरे से आयोजित करना होगा. और बजाए इस के कि संशोधन से आयकर कानून का सरलीकरण किया जाता, उसे और पेचीदा बना दिया गया है.

जब भी उच्च न्यायालयों के सामने नागरिकों के मौलिक अधिकारों का प्रश्न जाता है तो कांग्रेस की ओर से, जो स्वतंत्रता के बाद से, 3-4 वर्षों को छोड़ कर बराबर गद्दी पर विराजमान रही है, और लगातार संविधान में निहित नागरिक मौलिक अधिकारों को छीलने, तोड़ने, मरोड़ने और नष्ट करने में लगी रही है, यही कहा जाता रहा है कि कांग्रेस की सरकार भारतीय जनता द्वारा चुनी हुई सरकार है, और जनता के प्रतिनिधियों द्वारा चलाई जा रही है. इसलिए इसे हर तरह का कानून बनाने की, चाहे संविधान कुछ भी कहता हो, पूरा अधिकार है.

पर असलियत तो यह है कि इस प्रकार के नागरिक अधिकारों का हनन करने वाले कानूनों के बारे में कांग्रेस के चुनाव घोषणापत्र में कोई जिक्र नहीं होता है, न कांग्रेसी सांसदों, विधायकों को इतनी सूझबूझ या फुरसत होती है कि वे इस प्रकार के कानूनों को समझ सकें, उन के दुष्प्रभाव का अनुमान लगा सकें. यदि इक्कादुक्का इन कांग्रेसियों में से बोलतासमझता भी है तो उस की आवाज तत्काल दबा दी जाती है, जैसा इस आयकर संशोधन विधेयक के साथ हुआ.

इस प्रकार यह कहना कि सरकार जो करती है उस पर उसे जनता का समर्थन प्राप्त है, और इसलिए वह चाहे जो कुछ कर सकती है, एक बहुत बड़ा सफेद झूठ है, जनता को बेवकूफ बना कर उस का शोषण करना है, न्यायपालिका को बेकार बनाना है.

*

राजीव गांधी दिसंबर के अंतिम सप्ताह में लक्षद्वीप में सैरसपाटे के लिए गए थे. समाचार एजेंसियों ने और सरकारी दूरदर्शन और रेडियों ने उन्हें उछालना ही था. और कुछ नहीं मिला तो एक ह्वेल का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किस्सा ही प्रसारित कर दिया गया–किस तरह राजीवजी ने सूखे से मरती एक ह्वेल को बड़ी तेजी, फुरती से समुद्र के पानी में कूद कर, जान पर खेल कर बचा लिया.

आश्चर्य तो यह है कि ह्वेल ने पहले ही से दूरदर्शन के कैमरामैनों को बता दिया लगता था कि वह कब लक्षद्वीप के किनारे आ कर उथले पानी में दम तोड़ेगी. अन्यथा ऐन उसी क्षण दूरदर्शन के कैमरामैनों को कैसे आभास हो गया कि अब वहां कुछ नाटकीय होने वाला है जिसे लैंसबंद किया जा सकता है.

*

कांग्रेस अध्यक्ष की हैसियत से राजीव गांधी अनेक बार कांग्रेस के पदाधिकारियों और विभिन्न समितियों के आंतरिक आम चुनाव कराने का वायदा कर चुके हैं. पर आज तक कहीं कोई चुनाव होने के आसार नजर नहीं आते. क्या उन्हें अपने ही कार्यकर्ताओं और सदस्यों पर भरोसा नहीं है कि वे लोग उन्हें और उन के सहयोगियों को खुले मतदान में चुन लेंगे?

आज कांग्रेस, जो जनतंत्र का दम भरती है, सारे ऐसे पदाधिकारियों द्वारा चलाई जा रही है जो रेसकोर्स रोड, नई दिल्ली के एक बंगले से नियुक्त/निलंबित/बरखास्त किए जाते हैं.

*

भारत सरकार ने सरकारी प्रतिष्ठानों, दफ्तरों में ओवरटाइम पर प्रतिबंध लगा कर अच्छा काम किया है. यहां काम के समय काम न कर के अतिरिक्त भत्ता कमाने की इच्छा से काम के घंटों के बाद बैठने का एक अधिकार सा बन गया था जैसे बिना रिश्वत लिए जनता के कोई भी काम न करना, जो स्वयं करना एक कर्तव्य होता है, जिस के लिए मोटी तनख्वाह, भत्ता और सुविधाएं मिलती हैं.

हर दफ्तर और संस्थान में जहां पांच व्यक्तियों की आवश्यकता होती है, वहां 10 व्यक्ति तो पहले ही से मौजूद रहते हैं. फिर भी मोटा ओवरटाइम चलता है. कहीं न कहीं तो इस लूट पर रोक लगानी ही थी.

पर सरकारी नौकर लोग इसे अपने गले उतरने देंगे, इस में बहुत संदेह है. मजदूर दादाओं ने तो चीखपुकार शुरू कर दी है. अगर कल आप सुनें कि अमुक संस्थान, दफ्तर या कारखाने में कर्मचारियों ने ओवरटाइम निषेध के विरुद्ध हड़ताल कर दी है तो कोई आश्चर्य नहीं होना चाहिए. भला ये लोग अपनी बैठेबिठाए मिलने वाली कमाई पर कैसे आंच आने दे सकते हैं?

*

भारत सरकार ने 8 जनवरी से पेट्रोल के दाम 1 रुपया प्रति लीटर बढ़ा दिए हैं. इस से पहले कोयले और इस्पात के दाम बढ़ा दिए गए थे. पर यह तो पेशगी नमूना है. देखते जाइए 28 फरवरी को, जिस दिन नया केंद्रीय बजट पेश किया जाएगा, क्याक्या होता है.

जैसा इन पंक्तियों में कई बार कहा जा चुका है सरकार, उस के नेता, उस के अधिकारी सब का सब से बड़ा उद्देश्य नागरिक की जेब से अंतिम पैसा निकालना होता है, ताकि वे स्वयं आराम से जिंदगी बसर कर सकें, मौजमस्ती कर सकें. इसी लिए हर वस्तु पर टैक्स है जिस की सीमा निरंतर बढ़ती रहती है. जो नागरिक इस लूट से बचने का प्रयत्न करता है, उसे ये लोग बदनाम करते हैं, उस के यहां कानूनी डकैतियां डालते हैं. पर अपने द्वारा गरीब जनता से जबरदस्ती वसूल किए गए राजस्व को किस प्रकार नष्ट करते हैं यह देखने की बात है.

हरेक रुपया, जो नागरिक की जेब में रहता है, सरकार के खजाने में प्राप्त रुपए से 10 गुना अधिक देश की आर्थिक उन्नति कर सकता है, समृद्धि ला सकता है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

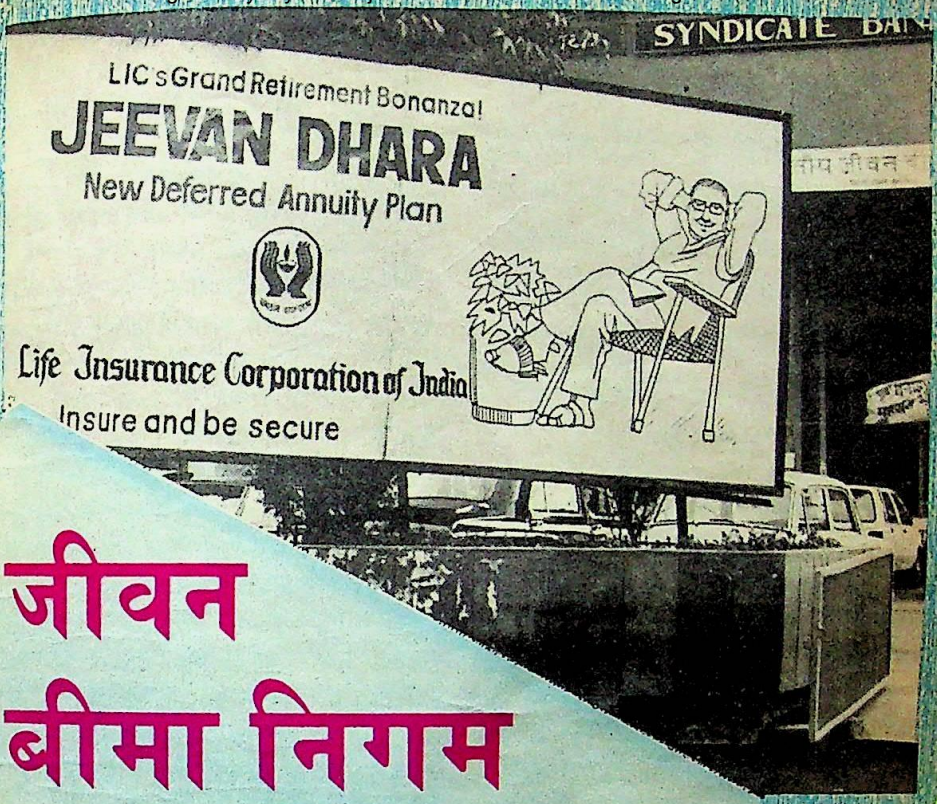

जीवन बीमा निगम की भ्रामक योजनाएं

लेख • सोमराज अग्रवाल

जीवन बीमा निगम की आधारशिला ही आम जनता और अपने बीमादारों को गुमराह करने की सफलता व एकाधिकार पर टिकी हुई है. अतः निगम द्वारा जनकल्याण, सुरक्षा, वृद्धावस्था का सहारा, सेवानिवृत्ति उपहार आदि की बातें पूर्णतः बेमानी, थोथी, हास्यास्पद और छलावा हैं. बड़े पैमाने पर प्रचार कर के और भारीभरकम एवं आकर्षक कमीशन, बोनस आदि की बदौलत एजेंटों की लंबीचौड़ी फौज तैयार कर के निगम आम जनता के पैसों से फलफूल रहा है. इस के बावजूद वह आम जनता को यह विश्वास दिलाने की गलत चेष्टा कर रहा है कि जीवन बीमा निगम आम जनता के हित में है जबकि यह एक तरह की जबरन टैक्स वसूली संस्था बन चुकी है.

जब कोई झूठ बारबार और जोरशोर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरकारी एकाधिकार वाला जीवन बीमा निगम भी ठगों द्वारा चलाई जा रही वित्तीय संस्थाओं से कम नहीं जो लुभावने वायदे कर के पैसा तो जमा कर लेते हैं, पर उन वायदों को पूरा करते समय अनुबंध की बारीकियों की आड़ लेने लगते हैं.

से बोला जाता है तो वह सत्य पर हावी हो जाता है और सचाई झूठ रूपी कुहरे से ढकी रह जाती है. इस लेख का उद्देश्य इसी कुहरे और भ्रांत धारणा को दूर कर आम जनता को यह बतलाना है कि जीवन बीमा निगम की योजनाएं आम जनता के हित में नहीं हैं बल्कि यह आम जनता के खूनपसीने की गाढ़ी कमाई को हड़पने के लिए आंकड़ों का एक ऐसा सुनियोजित, जबरदस्त और घना जाल है जिस में फंस कर बीमेदार अपने धन की भारी हानि उठाते हैं.

पियरलेस कंपनी के मामले में यह बात स्पष्ट हो चुकी है. पियरलेस की भांति जीवन बीमा निगम भी एक निश्चित अवधि तक किस्तें जमा न करने पर बीमेदार द्वारा जमा करवाई गई सारी रकम हड़प कर जाता है. निगम इसी हड़पी गई राशि के बल पर एक ओर तो अपने एजेंटों को भारी कमीशन, बोनस आदि का लालच दे कर और ग्राहक फंसा रहा है, वहीं दूसरी ओर हर दो वर्ष में अधिक लाभांश भी घोषित कर रहा है.

निगम अपने असंगत एवं एकतरफा नियमों के अंतर्गत हर वर्ष लाखों बीमापत्रों (पालिसियों) को कालातीत (बंद) घोषित कर बीमेंदारों के करोड़ोंअरबों रुपए जब्त कर रहा है. यह बात आगे की तालिका में निगम द्वारा तीन वर्षों के दौरान जारी की गई पालिसियों एवं उन्हीं तीन वर्षों में कालातीत मान कर जब्त की गई पालिसियों की संख्या से स्पष्ट हो जाती है:

पियरलेस के मामले में सर्वोच्च न्यायालय ने अपने निर्णय में इस तरह से धन जब्ती के एकतरफा व अनैतिक नियमकायदों की न केवल भर्त्सना की बल्कि जीवन बीमा निगम की इस चालबाजी की भी खुल कर आलोचना की.

इस भर्त्सना और आलोचना से कोई सबक लेने और आम जनता के धन की लूटखसोट न करने की बजाए निगम ने सर्वोच्च न्यायालय में एक याचिका दायर की कि चूंकि पियरलेस वाले मामले से निगम का कोई संबंध या सरोकार नहीं था, अतः न्यायाधीशों की इस प्रकार की टिप्पणी गलत थी और उसे निर्णय में से निकाल दिया

पियरलेस के मामले में ही जीवन बीमा निगम की भी धोखाधड़ी का पता चला.

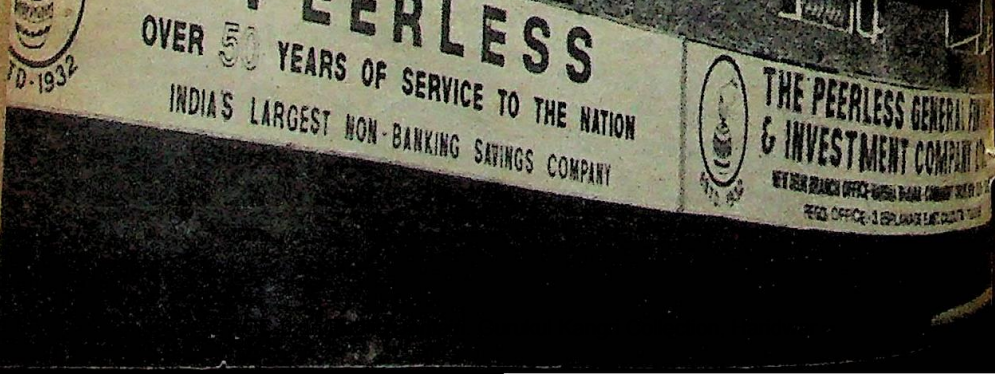

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्ष	वर्ष के दौरान बेची गई नई पालिसियां	वर्ष में कालातीत मान कर जब्त की गई पालिसियां	कालातीत या जब्त की गई पालिसियों का प्रतिशत
1978-79	17,55,282	6,99,327	39.84129%
1979-80	20,95,839	6,16,386	29.40999%
1980-81	19,54,424	6,25,627	32.01081%
जोड़	58,05,545	19,41,340	33.43941%

जाए. निगम की इस याचिका को रद्द करते हुए सर्वोच्च न्यायालय ने बड़ी ही सही व सटीक बात कही है कि निगम बजाए अपनी गलती सुधारने के इस अनैतिकता पर न्यायालय की मुहर लगवाना चाहता है.

निगम प्रति दो वर्ष में बोनस में वृद्धि की घोषणा कर के इस वृद्धि का बड़े जोरशोर से प्रचार करता रहता है. न्यायाधीशों ने इस पर पैना कटाक्ष करते हुए कहा कि लगता है कि इसी जब्त किए धन से ही निगम यह बढ़ा हुआ बोनस दे रहा है.

निगम अपनी सुनियोजित नीति से हर वर्ष अपने बीमेदारों के करोड़ोंअरबों रुपए जब्त कर बोनस वृद्धि का जोरजोर से ढोल पीटता है. एकाधिकार का अनुचित एवं सरासर गलत लाभ उठा कर अपने बीमेदारों के धन से जितनी खुली कमाई सरकारी जीवन बीमा निगम कर रहा है उतनी अन्य कोई प्रतिष्ठान या निगम नहीं कर रहा होगा.

सर्वोच्च न्यायालय की टिप्पणियों एवं निर्णयों के संदर्भ में ऐसा लगता था कि जीवन बीमा निगम अपने समाजविरोधी कायदेकानूनों को हटा कर आम जनता को बीमे का सही लाभ उठने का अवसर प्रदान करेगा, किंतु आश्चर्य एवं दुख की बात है कि निगम ने अपने इन नाजायज नियमकायदों को अभी तक नहीं हटाया है और न ही उस का ऐसा कोई इरादा ही नजर आता है. कारण साफ है. निगम बीमा करने वाला एकमात्र ठेकेदार है और उस का सारा कारोबार और इस की तथाकथित सफलता का सारा दारोमदार आम जनता के धन की जब्ती पर टिका है.

1957 में निगम का व्यवसाय 336.37 करोड़ रुपए का था जो 31 मार्च, 1986 तक बढ़ कर 7,088.45 करोड़ रुपए हो गया. वर्ष 1989-90 के लिए व्यवसाय का लक्ष्य 15,500 करोड़ रुपए का रखा गया है. चूंकि निगम का सारा कारोबार अपने बीमेदारों के धन की लूटखसोट और उस की बंदरबांट पर टिका हुआ है, अतः 'निगम का व्यवसाय बढ़ रहा है' यह कहने के स्थान पर यह कहना ज्यादा उपयुक्त होगा कि निगम द्वारा अपने बीमेदारों के धन की लूटखसोट बढ़ती जा रही है.

यह कितनी हास्यास्पद एवं दुखद बात है कि निगम की इस दिनदहाड़े की जाने वाली डकैती को उस की सफलता एवं उपलब्धियों की संज्ञा दी जाती है. निगम के गठन की 30वीं वर्षगांठ के अवसर पर तत्कालीन वित्त मंत्री विश्वनाथप्रताप सिंह ने निगम की उल्लेखनीय प्रगति की सराहना की थी और कहा था कि उसे दूरदराज के इलाकों में भी जा कर आदिवासियों और अन्य कमजोर वर्गों की सेवा करनी चाहिए. यदि निगम की वर्तमान धन हड़पने वाली योजनाएं ही जनसेवा हैं तो अच्छा होगा कि वह आदिवासी और अन्य कमजोर वर्गों से दूर ही रहे, अन्यथा बेचारे आदिवासी और अन्य कमजोर वर्ग के लोग आर्थिक दृष्टि से और टूट जाएंगे.

जीवन बीमा निगम अपने जीवन के 31 वर्ष पूरे कर चुका है और इन 31 वर्षों के दौरान इस निगम ने अपने बीमेदारों के करोड़ोंअरबों रुपए डकार लिए हैं. जीवन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बीमा निगम के जीवन के ये 31 वर्ष इस के द्वारा दिनदहाड़े की गई अपने बीमेदारों के धन की भारी लूट की रोमांचक कहानी कहते हैं.

जिस तरह जुआ, सरकारी लाटरी एवं सट्टे के संचालक एवं उन के सहयोगीगण सदैव फायदे में रहते हैं और जिन की बदौलत जुआ, सरकारी लाटरी एवं सट्टा चलता है, वे बरबाद हो जाते हैं या भारी हानि उठाते हैं. ठीक उसी प्रकार निगम एवं उस के धन लूटने के व्यवसाय में सहयोगी अधिकारी, कर्मचारी, एजेंट आदि बेहद फायदे में रहते हैं जबकि बीमेदार भारी हानि उठा रहे हैं.

निगम का अपने व्यवसाय को चलाने का खर्च एजेंटों को दिया जाने वाला कमीशन, बोनस आदि कुल मिला कर उस की वास्तविक आय (बीमेदारों द्वारा दी गई जब्ती की धनराशि एवं समर्पित बीमापत्रों पर निगम को होने वाले लाभ को छोड़ कर) से काफी अधिक है. निगम के इस भारी खर्च, अपव्यय और उस के द्वारा अपने जाल में ग्राहक फंसाने के लिए अभिकर्ताओं को दिए जाने वाले भारीभरकम कमीशन, बोनस आदि का सारा भार बेचारे बीमेदारों पर पड़ता है.

गणित के आंकड़े तो किसी जादुई करिश्मे के समान होते हैं. इन्हीं आंकड़ों को जीवन बीमा निगम भोलीभाली आम जनता के सामने पेश कर के लोगों को अपने जाल में फांस कर उन का अच्छाखासा शोषण कर रहा है.

निगम की बीमा पालिसी या अन्य कोई पालिसी लेते समय यदि कोई व्यक्ति अपने देश में चल रही दूसरी एजेंसियों की विभिन्न योजनाओं की सही एवं पूर्ण जानकारी ले कर तुलनात्मक अध्ययन करे तो उसे मालूम होगा कि निगम द्वारा प्रस्तुत करिश्मा झूठ, फरेब और छलावे के अलावा कुछ नहीं है. तथा वह व्यक्ति निगम का बीमापत्र या अन्य कोई पालिसी खरीद कर आर्थिक हानि का ही शिकार हो रहा है.

निगम ने आम जनता से धन बटोरने के लिए कई योजनाएं चला रखी हैं. फिर भी निगम समयसमय पर नई बोतल में पुरानी शराब के समान कुछ नई योजनाएं लागू करता है और उन का जोरदार प्रचार कर के यह बतलाने का झूठा दावा करता है कि नई योजना काफी लाभकर है, जबकि हकीकत यह है कि निगम की कोई भी योजना भोलीभाली जनता की जेब से पैसा निकालने में किसी तरह कम नहीं है और आम जनता केवल आंकड़ों के जाल में उलझ कर अपनी गाढ़ी कमाई उसे सौंप देती है.

गणित का जादू

कुछ वर्षों पहले निगम ने 'मनी बैंक पालिसी' चालू की थी. आज यह योजना काफी चलन में भी है. किंतु इस योजना से बीमेदारों को भारी आर्थिक हानि होती है. (इस संबंध में लेखक का मुक्ता/जनवरी/प्रथम 1983 में प्रकाशित लेख 'गणित का जादू और जीवन बीमा निगम' पढ़ने से वास्तविकता ज्ञात हो जाती है).

अभी 3 अक्तूबर, 1987 से जीवन बीमा निगम ने 'जीवनधारा' नामक नई विलंबित वृत्ति योजना चालू की है. 'जीवनधारा' योजना अन्य एजेंसियों की विभिन्न योजनाओं की तुलना में काफी हानिकारक है.

'जीवनधारा' का जोरदार प्रचार कर के आम जनता को यह बतलाने की चेष्टा की जा रही है कि 'जीवनधारा' एक अनोखी एवं लाभकर योजना है. 'जीवनधारा' के संबंध में यह एक थोथा और निरर्थक नारा है कि "अपनी कमाई के दिनों में नाममात्र प्रीमियम अदा कीजिए और अवकाश ग्रहण के बाद भारी लाभ कमाइए."

यदि आंकड़ों पर गहराई से विचार न किया जाए तो कोई भी व्यक्ति निगम के इस खूबसूरत एवं सुनहरे जाल में आसानी से फंस सकता है.

निगम द्वारा प्रस्तुत उदाहरण के ही अनुसार, 30 वर्ष की आयु का एक व्यक्ति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

25 वर्षों तक 1,107 रुपए प्रतिवर्ष की दर से प्रीमियम का भुगतान कर के अपनी 55 वर्ष की आयु के बाद बोनस के कारण हुई वृद्धि के साथ 12,000 रुपए प्रतिवर्ष जीवन पर्यंत प्राप्त करेगा. इस धनराशि का भुगतान प्रारंभ हो जाने के बाद उस की मृत्यु हो जाने पर उस के उत्तराधिकारियों को बंदोबस्ती मूल्य के रूप में अतिरिक्त एकमुश्त बोनस के साथ 1,19,640 रुपए का भुगतान किया जाएगा.

इस उदाहरण से ऐसा लगता है कि यह तो एक करिश्मा है कि केवल 1,107 रुपए प्रतिवर्ष, अर्थात 25 वर्षों में कुल मिला कर केवल 27,675 रुपए के बदले बीमेदार को बोनस के कारण हुई वृद्धि के साथ जीवनपर्यंत 12,000 रुपए प्रतिवर्ष और उत्तराधिकारियों को 1,19,640 रुपए मिल जाएंगे. किंतु यदि हम लोक भविष्य निधि योजना पर दृष्टिपात करें तो हमें मालूम होगा कि 'जीवनधारा' पालिसी खरीदने वाले व्यक्ति को भारी आर्थिक हानि उठानी पड़ेगी.

उक्त उदाहरण में जीवन बीमा निगम जहां मात्र 1,19,640 रुपए देगा वहीं लोक भविष्य निधि योजना के अंतर्गत 1,107 रुपए प्रति वर्ष 25 वर्ष तक जमा कराने पर (ब्याज की वर्तमान दर पर) 1,65,305 रुपए प्राप्त होंगे. इस प्रकार मात्र 1,107 रुपए प्रतिवर्ष के प्रीमियम के 25 वर्ष तक भुगतान अथवा जमा करने के मामले में 'जीवनधारा' पालिसी खरीदने वाले व्यक्ति को 45,665 रुपए (अर्थात 1,65,305 रुपए–1,19,640 रुपए) की भारी हानि होगी. इस के अलावा, 'जीवनधारा' पालिसी खरीदने वाले व्यक्ति को वृत्ति के रूप में केवल 12,000 रुपए और नाममात्र का बोनस मिलेगा, जो कि जमाकर्ता को केवल एक बार प्रथम वृत्ति के समय प्राप्त होगा और बाकी वर्षों का बोनस बंदोबस्ती मूल्य में जमा किया जाता रहेगा जो जमाकर्ता की मृत्यु के बाद उस के उत्तराधिकारियों को मिलेगा. जबकि लोक भविष्य निधि योजना से मिलने वाले 1,65,305 रुपए पर वर्तमान 12% प्रतिवर्ष की दर से ब्याज की राशि 19,836 रुपए 60 पैसे होती है. (भविष्य में ब्याज दर में वृद्धि होने पर यह राशि और भी बढ़ जाएगी). इस प्रकार उक्त 45,665 रुपए के अलावा, 'जीवनधारा' पालिसी खरीदने वाले व्यक्ति को प्रतिवर्ष कई हजार रुपए की हानि उठानी पड़ेगी. परिणाम-स्वरूप कुल हानि एक लाख रुपए से भी अधिक हो सकती है.

इसी 'जीवनधारा' योजना के दूसरे उदाहरण में 25 वर्षीय व्यक्ति द्वारा 35 वर्ष तक वार्षिक प्रीमियम 389 रुपए देने पर बंदोबस्ती मूल्य 1,19,580 रुपए रखा गया है. जबकि इतनी अवधि तक इतनी ही राशि लोक भविष्य निधि में जमा करने पर (वर्तमान 12% प्रतिवर्ष ब्याज के आधार पर) उस की परिपक्व राशि 1,88,060 रुपए होती है. अर्थात उसे मात्र 389 रुपए वार्षिक प्रीमियम 35 वर्ष तक देने पर 'जीवनधारा' योजना से, लोक भविष्य निधि की तुलना में 68,480 रुपए (अर्थात

जीवन बीमा निगम कार्यालय : जनता की सेवा का भ्रामक दावा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

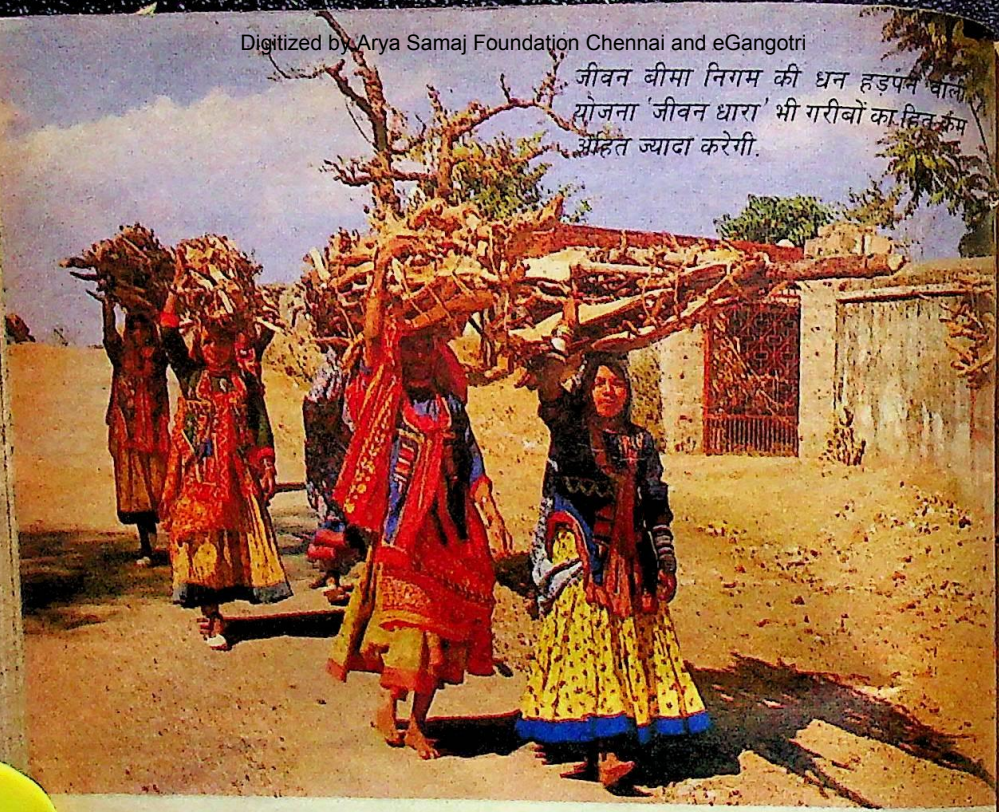

जीवन बीमा निगम की धन हड़पने वाली योजना 'जीवन धारा' भी गरीबों का हित कम अहित ज्यादा करेगी.

1,88,060 रुपए– 1,19,580 रुपए) का भारी नुकसान होगा. इस के अलावा उपर्युक्त वार्षिक वृत्ति के रूप में प्रतिवर्ष हजारों रुपए का और नुकसान होगा. इस प्रकार कुल आर्थिक नुकसान एक लाख रुपए से भी ज्यादा का हो सकता है.

निगम द्वारा 'जीवनधारा' पालिसी के पक्ष में कितने ही निरर्थक एवं थोथे नारे एवं दावे क्यों न प्रचारित किए जाएं, किंतु इस विज्ञापनबाजी के शोरशराबे में निगम इस सचाई को नहीं छिपा सकता कि 'जीवनधारा' पालिसी खरीदने वाला व्यक्ति चाहे वह पालिसी की विलंबित अवधि तक या उस के बाद जीवित रहे अथवा विलंबित अवधि के दरम्यान ही मर जाए, हर स्थिति में भारी घाटे में ही रहेगा.

अत्यंत दुख की बात है कि पियरलेस कंपनी के मामले में एवं उस संबंध में निगम द्वारा दायर याचिका पर सर्वोच्च न्यायालय ने जीवन बीमा निगम के ठगी भरे कानूनकायदों की जो भर्त्सना की थी, उस से भी कोई सबक न लेते हुए 3 अक्तूबर, 1987 से प्रस्तुत 'जीवनधारा' योजना में भी धनजब्ती का प्रावधान रखा गया है. 'जीवनधारा' जैसी विलंबित वृत्ति योजना (जिस में निगम का कोई जोखिम भी नहीं है) में भी जमा धन की जब्ती के प्रावधान इस ओर स्पष्ट संकेत देते हैं कि जीवन बीमा निगम का यह सारा गोरखधंधा केवल बीमेदारों एवं अन्य पालिसियों के खरीदारों के धन की लूटखसोट पर चलाया जा रहा है.

यदि 'जीवनधारा' पालिसी खरीदने वाला कोई व्यक्ति तीन वर्षों तक प्रीमियम नहीं दे पाता है तो उस के द्वारा जमा की गई संपूर्ण प्रीमियम की राशि निगम जब्त कर लेगा.

इसी प्रकार, यदि किसी व्यक्ति ने 'जीवनधारा' पालिसी खरीद कर उस पर कम से कम तीन वर्षों के प्रीमियम का भुगतान कर दिया है और किसी कारणवश वह आगे प्रीमियम देने की स्थिति में न होने की वजह से अपना जमा किया हुआ धन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वापस लेना चाहे तो निगम उस के द्वारा जमा कराए गए धन पर ब्याज, बोनस आदि देना तो दूर रहा, मूलधन से भी एक अच्छीखासी रकम हड़प कर लेगा.

उदाहरण के लिए मान लीजिए कि एक 45 वर्षीय व्यक्ति 10 वर्ष की विलंबित अवधि की 12,000 रुपए प्रतिवर्ष की मासिक रूप से देय वृत्ति प्राप्त करने के लिए 'जीवनधारा' पालिसी खरीदता है और वह व्यक्ति 7,244 रुपए की केवल तीन वर्षों की किस्तें देने के बाद प्रीमियम देना बंद कर देता है और अपना जमा किया हुआ धन वापस प्राप्त करना चाहता है तो निगम उस व्यक्ति को तीन वर्षों या अधिक अवधि का ब्याज देना तो दूर रहा बल्कि मूलधन में से भी एक मोटी रकम हड़प कर लेगा और उस व्यक्ति द्वारा जमा किए हुए धन 21,732 रुपए (अर्थात 7,244×3) में से केवल 13,039 रुपए 20 पैसे देगा अर्थात मूलधन में से भी 8,692 रुपए 80 पैसे (उपर्युक्त उदाहरण में मूलधन का 40%) की राशि हड़प कर जाएगा.

यहां पर एक और भी ध्यान देने योग्य नियम यह है कि यदि इस पालिसी का खरीदार पालिसी खरीदने के पहले तीन वर्षों के दौरान मर जाता है तो उस के द्वारा अदा की गई कुल प्रीमियमों की राशि निगम द्वारा बगैर किसी ब्याज, बोनस आदि के ज्यों की त्यों उस के उत्तराधिकारियों को दे दी जाएगी. इसी प्रकार यदि मृत्यु पालिसी लेने के तीन साल बाद होती है तो भुगतान की गई समस्त प्रीमियमों की कुल राशि मात्र 6½% वार्षिक चक्रवृद्धि ब्याज के साथ लौटा दी जाएगी.

इन स्थितियों में यदि हम 'जीवनधारा' पालिसी की तुलना लोक भविष्य निधि योजना से करें तो हमें मालूम होगा कि 'जीवनधारा' पालिसी लूटखसोट पालिसी के अलावा कुछ नहीं है.

उदाहरण के लिए यदि 40 वर्ष का कोई व्यक्ति 15 वर्ष की अवधि के लिए 12,000 रुपए प्रतिवर्ष की मासिक रूप से देय वृत्ति प्राप्त करने के 'जीवनधारा' पालिसी खरीदता है और यदि वह 14 वर्ष तक प्रतिवर्ष 3,559 रुपए प्रीमियम का भुगतान करने के बाद मर जाता है तो उस के उत्तराधिकारियों को मात्र 82,505 रुपए प्राप्त होंगे, जबकि इस स्थिति में लोक भविष्य निधि से उस के उत्तराधिकारियों को एक लाख 29 हजार 113 रुपए प्राप्त होते. इस प्रकार, इस उदाहरण में 'जीवनधारा' पालिसी खरीदने की वजह से 46 हजार 608 रुपए की हानि होगी.

इन सब के बावजूद भारतीय जीवन बीमा निगम ने एक प्रचार पुस्तिका जारी कर के 'जीवनधारा' विलंबित वृत्ति की सभी व्यक्तियों के लिए आवश्यकता प्रतिपादित करते हुए 'जीवनधारा' योजना को एक मित्र और रक्षक के साथ ही साथ बुढ़ापे की लकड़ी बतलाया है.

यदि यही पैसा अन्य क्षेत्रों में लगाया जाए तो थोड़ा जोखिम चाहे जरूर हो, इस से कई गुना आय हो सकती है. जमीनजायदाद की खरीद, शेयरों आदि में पैसा लगाने पर काफी अधिक आमदनी संभव है और आयकर देने के बाद भी लाभ रहेगा.

रक्षक की बजाए भक्षक अधिक

उपर्युक्त विवेचन एवं उदाहरणों से यह बात बिलकुल साफ है कि जीवन बीमा की नई 'जीवनधारा' पालिसी मित्र और रक्षक की बजाए शत्रु और भक्षक का काम ज्यादा करेगी तथा बुढ़ापे की दुश्चिंताओं को आसान करने की बजाए उस व्यक्ति को हकीकत मालूम होते ही उसे बुढ़ापे में कुढ़ने के लिए मजबूर कर देगी.

कुल मिला कर यह कहा जा सकता है कि निगम की नई 'जीवनधारा' योजना भी जीवन बीमा निगम की अन्य योजनाओं की भांति पालिसी के खरीदारों के धन की लूटखसोट और बंदरबांट करने का एक माध्यम मात्र है और जनता को बेवकूफ बनाने के लिए निगम की भ्रामक योजनाओं की शृंखला में अब 'जीवनधारा' नामक एक और कड़ी जुड़ गई है. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बुरे फंसे

कहानी • अश्विनीकुमार भटनागर

शादी को आठनौ महीने हो चुके थे. रमा और मनोहर अपनी नई गृहस्थी सजाने में लगे थे. कुछ तो दहेज का सामान्य सामान था, कुछ मनोहर को मां ने अपनी ओर से दिया था और बहुत कुछ मनोहर ने अपनी पांच साल की नौकरी में इकट्ठा किया था. इस कारण गृहस्थी जमाने में अधिक समय नहीं लगा.

जब घर सज जाता है तो सब की यह प्रबल इच्छा होती है कि उन के मांबाप कुछ दिन अवश्य उन के पास रहने आएं और उन का ठाठबाट देखें. मनोहर इस कारण अपने मातापिता को कभीकभी पत्र में आने का जोरदार निमंत्रण दे डालता था. इधर रमा तो लगभग प्रति सप्ताह अपने मांबाप को न आने पर उलाहने भरे पत्र लिखा करती थी.

श्रीनगर में एक सरकारी गोष्ठी थी. बहुत प्रयत्न कर के मनोहर ने अपना नाम साहब की खुशामद कर के भिजवा दिया था. इस चक्कर में उसे साहब को सपत्नीक खाने पर बुलाना पड़ा. उसे क्या मालूम था कि उन

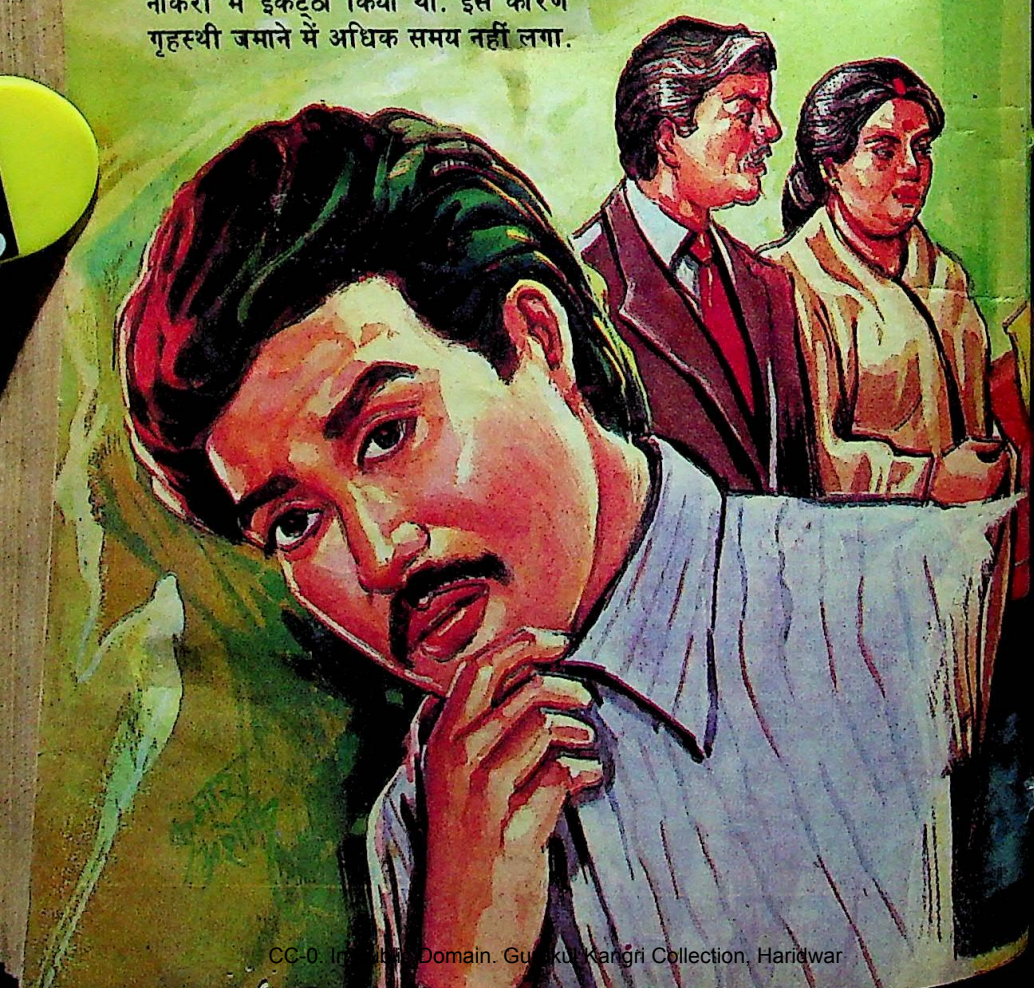

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के दो शैतान बच्चे भी साथ आएंगे.

बच्चों ने जो उधम मचाया और जो तोड़फोड़ की तो रमा और मनोहर का मनोबल टूट सा गया. उन के जाने के बाद रमा और मनोहर ने निश्चय किया कि श्रीनगर तो क्या, अगर स्विटजरलैंड भी जाने का अवसर मिले तो वे कभी इन्हें निमंत्रण नहीं देंगे.

साहब काफी सज्जन निकले. उन की सिफारिश स्वीकृत हो गई और अगले सप्ताह दो दिन की गोष्ठी में जाने की मनोहर ने तैयारी आरंभ कर दी. इधर रमा पासपड़ोसियों से पूछपूछ कर ऐसे सामान की सूची बना रही थी, जो मनोहर घर के और उस के लिए खरीद कर ला सकता था. स्पष्ट था कि सूची में सिल्क की पांच साड़ियां सब से ऊपर थीं.

वैसे तो मनोहर को घर आतेआते साढ़े छः बज जाते थे, पर उस दिन वह चार बजे ही आ पहुंचा था. उस का मुंह गुलाब के फूल की तरह खिला हुआ था. स्कूटर को ताला

मनोहर के मातापिता के आने के कुछ समय बाद ही रमा के मातापिता भी वहां पहुंच गए. दोनों समधीसमधिन एकदूसरे को देख कर हैरान रह गए

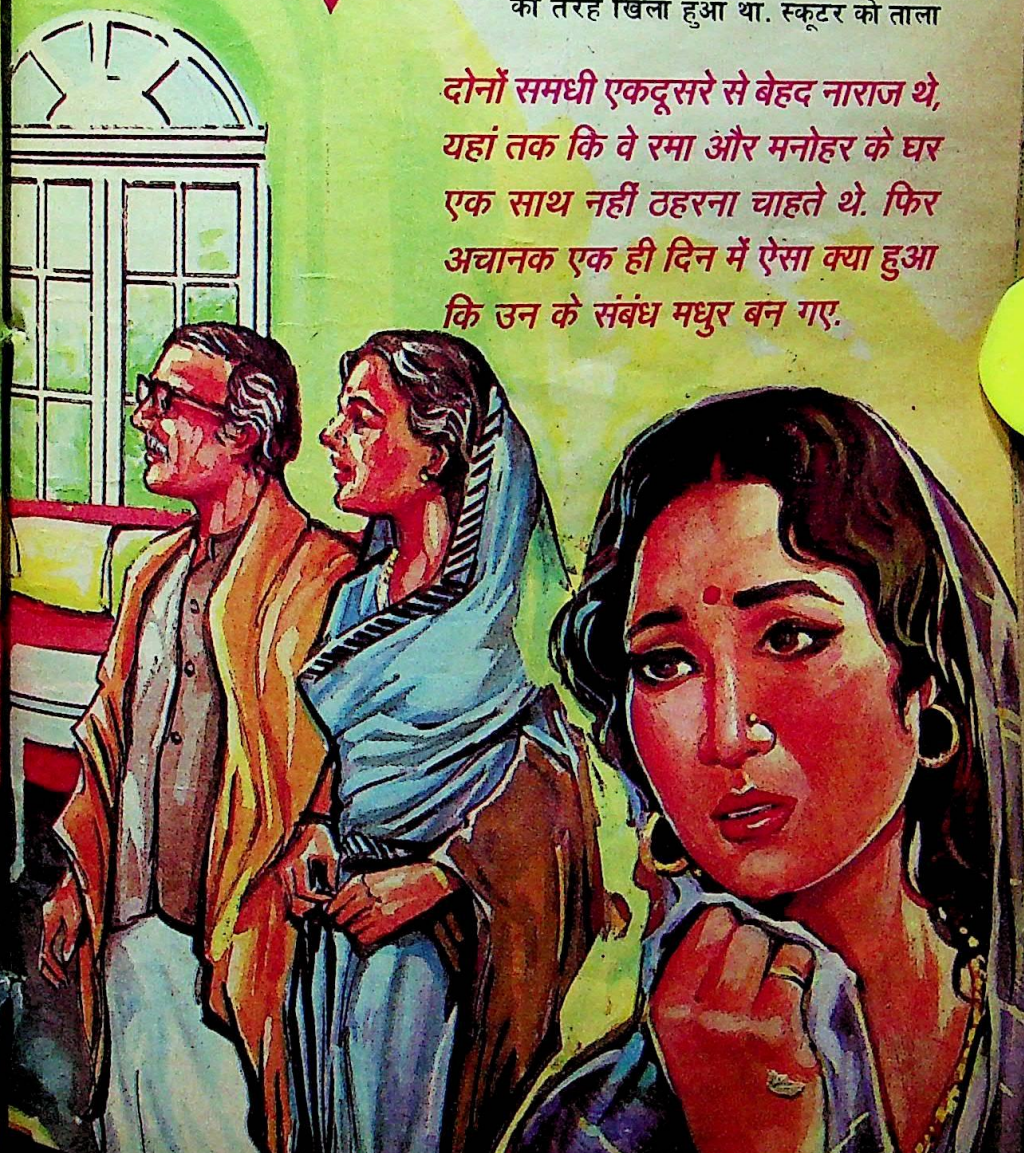

दोनों समधी एकदूसरे से बेहद नाराज थे, यहां तक कि वे रमा और मनोहर के घर एक साथ नहीं ठहरना चाहते थे. फिर अचानक एक ही दिन में ऐसा क्या हुआ कि उन के संबंध मधुर बन गए.

CC-0. Public Domain. Gurukul Kangri College, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगा कर बाहर ही छोड़ दिया था और जोरजोर से दरवाजे की घंटी बजाने लगा था. सोचा, रमा चिढ़ती हुई दरवाजा खोलेगी और वह उसे बहुत खिजाएगा, पर हुआ उलटा.

मनोहर को देखते ही आश्चर्य से पहले तो चौंकी और फिर खिलखिला कर हंस पड़ी. अब आश्चर्य से मनोहर उस का मुंह देख रहा था.

"हाय, आज मैं इतनी प्रसन्न हूं. दिल से चाह रही थी कि अगर आज दफ्तर से जल्दी आ जाओ तो बस मजा ही आ जाए. सच, मेरे दिल की बात तुम्हारे तक कैसे पहुंच गई? बड़ी अच्छी खबर है."

"रानी," मनोहर ने रोमांटिक अंदाज से दिल पर हाथ रख कर कहा, "दिल का मामला है. तुम्हारे दिल ने तार दिया और मेरे दिल को मिल गया. मैं तो ऐसी खुशखबरी लाया हूं कि बस रुक ही नहीं सका. भागाभागा आ रहा हूं."

"सच?" रमा ने पूछा, "बताओ, तुम क्या खबर लाए हो?"

"अब पहले तुम ही बता दो." मनोहर ने उत्तर दिया.

"नहीं, पहले आप."

"नहीं, पहले आप."

हंसतेहंसते दोनों अंदर आ कर सोफे पर गिर पड़े.

मनोहर ने पहले अपनेआप पर नियंत्रण पाया, "अच्छा, अब बता भी दो."

"बता दूं?"

"बता दो."

रमा ने ब्लाउज में से एक कागज निकालते हुए कहा, "पिताजी का तार आया है. दोनों कल आ रहे हैं."

"अरे," मनोहर ने आंखें फाड़ते हुए कहा, "यही खबर तो मैं लाया हूं."

"पर जब तार घर पर दिया है तो तुम्हें अलग से कैसे खबर दी?"

"मुझे तो टेलीफोन पर ट्रंक काल आई थी. देखूं तो देना मुझे तार.

रमा ने तार दिया. मनोहर ने पढ़ा तो और हैरान हो गया, "पर यह तो तुम्हारे पिताजी का तार है."

"तुम्हें ट्रंक काल किस ने किया था?"

"मुझे ट्रंक काल मेरे पिताजी ने किया था."

"मर गए," रमा माथे पर हाथ धर कर बैठ गई. दोनों के मांबाप को एक ही साथ आना था क्या? एक तो आ नहीं रहे थे और अब आ रहे हैं तो एक मुसीबत खड़ी हो गई. मनोहर का दिल भी डूब गया. चेहरे की हंसी गुल हो गई.

दो

दोनों के मांबाप का एकसाथ आने का एक ही मतलब था. घर कुरुक्षेत्र का मैदान बन जाएगा. एक तरफ कौरवों की सेना की तरह एक मांबाप और दूसरी ओर पांडवों की सेना के रूप में दूसरे मांबाप.दोनों का चिंतित होना उचित था. बुलाने की और उन के आने की तमाम उत्सुकता नकली खुशबू की तरह उड़ गई. इस महाभारत के पीछे एक इतिहास था.

रमा और मनोहर का विवाह कोई विशेष रूप से नहीं हुआ था. वही सामान्य पत्रव्यहार. लड़की और लड़के को एकदूसरे को न केवल देखने देना, बल्कि आपस में बातचीत करने का भी अवसर देना. और फिर दहेज की बातों का खुलासा आपस में मांबाप के ऊपर छोड़ना. इस तरह अंतिम समय तक कोई अप्रिय बात नहीं हुई थी.

लड़की को दहेज में जो कुछ मिला, वह सासससुर ने उसे हीं सौंप दिया. उन्हें न तो किसी चीज का लालच था और न ही कोई लड़की ब्याहने को बैठी थी. हां, मनोहर के पिता ने अपने लिए भिन्नभिन्न अवसरों के लिए तीन सूटों व अपने पत्नी के लिए तीन बढ़िया साड़ियों की फरमाइश अवश्य की थी. रमा के पिता ने केवल दो सूट और दो साड़ियां दी थीं. उन में से एक सूट और एक साड़ी तो ठीक थे, बाकी का दूसरा सूट नाप में कम था तो साड़ी एकदम घटिया –वह भी बिना ब्लाउज पेटीकोट के.

उस अनादर या उपेक्षा से वे दोनों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अगर तुम साथ चलोगी तो तुम्हारे सामान की लंबीचौड़ी सूची और पांचपांच साड़ियों का क्या होगा? उन का खर्चा कहां से निकलेगा?" मनोहर ने पूछा.

काफी नाराज हो गए थे. और जब अवसर मिलता था तो बहू को ताना अवश्य मार देते थे. रमा के पास केवल सुनने के अलावा कोई और चारा भी नहीं था.

रमा के पिता को भी शिकायत थी. बरात के लिए बैंडबाजे, पटाखे और मोटर सजाने का खर्च लड़के का बाप देता है. मनोहर के पिता ने सूट और साड़ी का घटियापन देख कर यह खर्च देने से इनकार तो नहीं किया, पर दिया भी नहीं. रमा जब कभी घर जाती थी, मांबाप से उस के सासससुर के ओछेपन व कंजूसी पर ताने सुनती थी. रमा के पास सिवा सुनने के और चारा भी क्या था?

एक बात थी जो दोनों के लिए ठीक बैठ गई थी. रमा को दूसरे शहर में सासससुर से अलग रहने को मिल गया था. मनोहर के लिए जब भी सुसराल जाने का अवसर आता था, उस का वहां सेवासत्कार इतना अच्छा होता था कि आ कर रमा से भी उस की खूब प्रशंसा करता था. अब दोनों के सासससुर आपस में लड़ते रहें तो उन की मरजी. कम से कम वे दोनों तो प्रसन्न थे.

अब जब दोनों के एकसाथ एक ही दिन आने की बात हुई तो दोनों का माथा ठीक कर बैठ जाना एकदम स्वाभाविक था. अलग-अलग आते तो निपट लेते, पर एकसाथ आना तो एक भयंकर बवंडर के समान था. समझ में ही नहीं आ रहा था कि इस अजीब परिस्थिति से कैसे निपटा जाए.

रमा ने कहा, "सुनो."

"सुनाओ, सुनाओ," मनोहर ने व्यंग्य से कहा, "जी भर कर सुनाओ. अब सुनने के सिवा बाकी क्या रह गया है?"

"तुम तो नाराज हो गए."

"अब नाराज नहीं होऊं तो क्या ढोल बजाऊं?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चेहरा

जुल्फों के बीच चांद सा चेहरा,
उफ! ये खोयाखोया सा चेहरा,
अजनबी दुनिया की इस भीड़ में
इक अपनेपन को ढूंढ़ता चेहरा.
—मनमोहन शर्मा

"सुनो, अपने पिताजी को तार दे दो न अभी न आएं, एक महीने बाद आ जाएं."

"कान खोल कर सुनो," मनोहर ने खड़े होते हुए कहा, "इस समय तो वह रेलगाड़ी में सवार भी हो गए होंगे. रेलगाड़ी में मुसाफिरों को खोज कर तार देने की सुविधा अभी भारत में नहीं है. वैसे भी भारत में तार सेवा का यह हाल है कि पत्र पहले पहुंचता है, तार बाद में. दूसरी बात, तुम अपने पिताजी को नहीं आने का तार क्यों नहीं दिलवा देतीं?"

"लो, बोलो, बराबर तो आने को लिख रही हूं. अब आ रहे हैं तो मना कर दूं? फिर वे लोग भी तो इस समय रेलगाड़ी में बैठ चुके होंगे. तार कहां दूंगी?"

"मेरा तो घर छोड़ कर भाग जाने को दिल कर रहा है," मनोहर ने फिर से सोफे पर गिरते हुए कहा.

"अकेले मत भागना, मैं भी तुम्हारे साथ चलूंगी," रमा ने दृढ़ता से कहा.

"तुम बहू हो और बेटी भी. दोनों बूढ़ेबूढ़ियों की सेवा करना तुम्हारा परम कर्तव्य है. सेवा करने का मैं अपना अधिकार भी त्याग कर तुम्हें सौंप रहा हूं."

"अहाहा, क्या बच कर भाग रहे हैं. अग्नि को साक्षी मानकर सात फेरे खाए हैं और सुखदुख में साथ निभाने के वादे भी किए हैं," रमा ने चोट की.

"वह तो कमजोरी में हर इनसान करता है. मैं अभी और इसी समय घोषणा करता हूं कि मेरे सारे वादे झूठे थे. चाहो तो उलटे फेरे ले लो."

"अब ऐसे काम कैसे चलेगा? स्थिति को समझो और कुछ हल सोचो," रमा ने मनोहर के साथ चिपक कर बैठते हुए कहा.

"सोचता हूं," मनोहर ने रमा की चोटी खींचते हुए कहा, "पर पहले चाय का गरमागरम प्याला ले कर आओ."

"ओह" रमा ने अचानक उठते हुए कहा, "पानी तो कब का गैस पर चढ़ा रखा था. सब सूख गया होगा."

"ठीक तुम्हारी बुद्धि की तरह," मनोहर ने रमा के पीठपीछे कहा, रमा सुनीअनसुनी कर के दरवाजे से बाहर जा चुकी थी. वह जल्दी ही लौट आई.

"सोचा कुछ?" रमा ने चाय का प्याला हाथ में देते हुए पूछा.

"क्या सोचूं, पहले चाय तो गले के नीचे उतरने दो?"

"मुझे एक बात सूझी है."

"[illegible]को, बको. आज तो तुम्हारे बकने का दिन है," मनोहर ने कटुता से कहा.

"तुम तो ऐसे बिगड़ रहे हो मानो सारा कुसूर मेरा ही है. अरे तुम भी तो अपने मांबाप को बराबर आने के लिए लिख रहे थे."

"लिख रहा था, जरूर लिख रहा था, पर सिर्फ तुम्हारे कहने से. बारबार तुम ही तो उकसाती थीं कि लिखो, लिखो."

"यह तो मेरा कर्तव्य था. अगर नहीं लिखवाती तो कल को सब यही कहते कि बहू ने बेटे को मांबाप से अलग कर दिया. सुनना तो मुझे पड़ता है न."

"और जोजो सुनती हो वह मुझे सुनाती हो, क्या मैं नहीं सुनता?"

"तुम से नहीं कहूंगी तो क्या किसी और से कहूंगी?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"चलो, छोड़ो. तुम जानो,तुम्हारा काम जाने. मैं तो जा रहा हूं श्रीनगर. तुम पीछे से निबटती रहना," मनोहर ने ऐसे कहा मानो तुरप चाल चल दी हो.

"ऐ लो, मैं तो भूल ही गई थी. इसी बात पर एक विचार मन में आया."

"मैं जानता हूं," मनोहर ने ताना कसते हुए कहा, "अब यही कहोगी कि मुझे भी साथ ले चलो."

"वाह, मान गई," रमा ने प्रसन्न होते हुए कहा, "तुम तो अंतर्यामी हो. तुम ने मेरे मन की बात कैसे जान ली?"

"काठ का उल्लू हूं क्या जो इतना भी नहीं समझूंगा," मनोहर ने दृढ़ता से कहा, "इसी घर में रहो और मातापिता, साससुसर की तन मन धन से सेवा कर के आयुष्मान व पुत्रवती होने का आशीर्वाद पाओ."

"नहीं, नहीं," रमा ने चिपटते हुए कहा, "ऐसे मुझे अकेले मंझधार में मत छोड़ जाओ. सच,तुम अभी जा कर मेरा भी टिकट ले आओ."

"सोच लो, खर्च काफी हो जाएगा. मैं तो सरकारी खर्च पर जा रहा हूं. साथ जाने के लिए तुम्हारे लिए भी प्रथम श्रेणी का टिकट लेना होगा, होटल का पूरा खर्च भी देना होगा. फिर तुम साथ में होगी तो सैरसपाटे का भी कार्यक्रम बन जाएगा."

"सच," रमा ने चहकते हुए कहा, "बड़ा मजा आएगा.हम तो 'हनीमून' को भी नहीं गए थे. 'हनीमून' के नाम से बस झुमरीतलैया ले गए थे."

मनोहर को झुमरीतलैया से बड़ी चिढ़ थी. बात यह थी कि शादी के समय वह अधिक छुट्टी नहीं ले सका था. इस कारण कहीं पहाड़ या पर्यटन स्थल को नहीं जा सका था. मन बहलाने के लिए फरीदाबाद की तालतलैयों में घुमा लाया था. वह भी सुबह गया और शाम को वापस.

मनोहर ने गंभीर हो कर कहा, "अगर साथ चलोगी तो तुम्हारे सामान की लंबीचौड़ी सूची का क्या होगा, उस का खर्च

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भटकाव

एक घने सुनसान, भयानक वन में भटका हुआ मनुष्य जिधर पगडंडियों का चिह्न पाता है, उसी मार्ग को पकड़ लेता है. वह सोचविचार नहीं करता कि यह मार्ग उसे कहां ले जाएगा. –प्रेमचंद

कहां से निकालोगी?"

"न बाबा," रमा ने कान पकड़ते हुए कहा, "मुझे कुछ नहीं चाहिए. वादा करती हूं, कभी कुछ नहीं मांगूंगी."

"और साड़ियां, वह भी एक नहीं पांचपांच?"

"कहा न बाबा, मुझे कुछ नहीं चाहिए. साड़ी भी नहीं, कालीन भी नहीं, साजसज्जा का भी कुछ सामान नहीं चाहिए. बस जा कर मेरा टिकट ले आओ."

गहरी सांस भर कर मनोहर ने कहा, "तो फिर हमारे बड़े क्या यहां आकर झक मारेंगे?"

"यह मुझ पर छोड़ दो."

"क्या छोड़ दूं? करोगी क्या, यह तो बताओ?"

"कहना क्या है, यही कहूंगी कि हम ने श्रीनगर जाने का कार्यक्रम पहले से ही बना रखा था. अब अगर आप के आने का पहले से पता होता या तो कार्यक्रम नहीं बनाते या आप को बाद में आने के लिए लिख देते," रमा ने झूठी तसल्ली देते हुए कहा, "इस में कुछ झूठ थोड़े ही है."

गहरी सांस ले कर मनोहर ने कहा, "सारा मजा ही किरकिरा हो गया. अब अगर हमारे मांबाप अलगअलग आते तो क्या हो जाता."

"अब उन्हें क्या मालूम था."

मनोहर तुरंत जा कर रमा का टिकट खरीद कर ले आया. रमा का आरक्षण किसी और डब्बे में हुआ था, परंतु उस समय तो उस ने यह सोच कर ले लिया कि बाद में सहयात्रियों से सीट बदलने की कोशिश करेगा.

मनोहर के मातापिता को सुबह की गाड़ी से आना था और रमा के मातापिता की गाड़ी का समय उस से चार घंटे बाद का था. पहले तो मनोहर अपने मातापिता को घर ले आया. सब लोग आपस में बड़े प्रेम से मिले. नाश्तापानी हुआ. जैसे ही सामान खोलने लगे मनोहर ने अपने सासससुर के आने की बात कह दी, "उन्हें भी ले कर आने का समय हो गया है."

मनोहर के पिता का मुंह लटक गया और मां की भृकुटि तन गई, "पहले क्यों नहीं बताया, हम लोग फिर कभी आ जाते."

"बताने का समय कहां था? साथ ही साथ तो दोनों के आने का समाचार मिला."

"ऐसा है," पिता ने कहा, "हम लोग शाम की गाड़ी से वापस चले जाएंगे. जब तुम अपने सासससुर से निबट लोगे तो फिर हम लोग आएंगे."

"नहीं, नहीं, आप यों चले जाएंगे तो अच्छा नहीं लगेगा. और फिर हम लोग श्रीनगर दो ही दिन को तो जा रहे हैं. अब आप ही उन को नहीं देखेंगे तो कौन देखेगा?"

"भई, उन की खातिर करना हमारे बस का नहीं है. ऐसे बेईमान लोगों से हमारी तो पटेगी नहीं. बस, दूर की ही दुआसलाम अच्छी."

"मां, आप ही समझाइए न." मनोहर ने कहा, "अब तो शादी को भी कई महीने हो गए हैं, कब तक ये बातें याद रखी जाएंगी?"

"हां, तू तो ऐसा कहेगा ही," मां ने ताना दिया, "मुझे जो साड़ी दी है, हमारी महरी ने भी नहीं ली. सोचती हूं तेरे जब कोई बाल बच्चा होगा तो उस साड़ी के ही पोतड़े बना दूंगी."

"ओह, मां. बस, तुम भी यों ही झगड़े पर आमादा हो. मैं तुम्हें श्रीनगर से बहुत बढ़िया साड़ी ला कर दूंगा."

"सो तो लाएगा, पर उस साड़ी की जगह तो कोई साड़ी नहीं ले सकती. शादी का सामान एक बार ही मिलता है."

मनोहर ने पीछा छुड़ाते हुए कहा,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अच्छा आप लोग आज तो आराम कीजिए. रमा खाना बना रही है. किस को कब जाना है, बाद में फैसला होगा. आप का सामान मेरे कमरे में है."

मांबाप कमरे में चले गए और आपस में खुसुरफुसुर करने लगे.

कुछ ही देर बाद दूसरी पार्टी भी आ गई. कहां तो हंसतेमुसकराते आए थे, समधी और समधिन को देख उन के मुंह लटक गए. औपचारिकता निभाने के लिए एकदूसरे से गले मिले. दोचार बातों के बाद ही बातचीत का स्रोत सूख गया. उन के सामान दूसरे कमरे में पहुंचा दिया. तीसरा कमरा था ही नहीं. कमरे में बैठ कर रमा ने समझाना शुरू किया.

मां ने छूटते ही कहा, "लिख तो देती कि तेरे सासससुर आ रहे हैं. हमें ऐसी कौन सी जल्दी थी आने की."

"अब मां, कह तो रही हूं कि जैसे आप का आना अचानक हो गया, वैसे ही वे भी आ गए. अब मैं ने इन के साथ श्रीनगर जाने का कार्यक्रम बना लिया था. रोजरोज ऐसा अवसर थोड़े ही आता है. क्या करूं, अपना टिकट वापस करवा देती हूं."

"नहीं,नहीं," पिता ने टोक कर कहा, "ऐसे अवसर छोड़ना ठीक नहीं है. तू अवश्य जा. कुछ हम ही सोचते हैं. अब आज तो किसी तरह काटना ही पड़ेगा. कल सुबह की गाड़ी से चल देंगे."

"ओह, पिताजी, बस, दो दिन की तो बात है..."

"दो दिन क्यों? क्या आनेजाने में समय नहीं लगता?" मां ने कहा, "भला छः सात दिन कैसे काटेंगे इन के साथ? नहीं, हमारा जाना ही ठीक रहेगा."

"मुझे तो बुरा लग ही रहा है, ये बेचारे भी बड़े संकट में पड़ गए हैं. आप किसी तरह से कुछ दिन निकाल लीजिए. बस, फिर तो हम लोग आ ही जाएंगे."

रमा रसोई में खाने का बंदोबस्त करने आ गई. मां बाप आपस में खुसुरफुसुर करने लगे. इतने सारे लोगों के होते हुए भी ऐसा लग रहा था मानो घर एकदम खाली था. एकदम सन्नाटा था.

अगले दिन रमा और मनोहर का सामान बंध चुका था. खाना दोनों समय का बना कर रख दिया था. मेज भी सजा दी गई थी. रमा ने मां और सास को अच्छी तरह समझा दिया था कि झाड़ूबुहारी और बर्तन साफ करने महरी आती है. ऐसा न हो कि वे घर की सफाई में लग जाएं.

मनोहर से कह कर रमा ने खाने की मेज पर एक डब्बे में 500 सौ रुपए रख दिए थे. रमा ने अपने मातापिता को और मनोहर ने अपने मातापिता को अलगअलग कह दिया था कि अपने पास से कुछ खर्च न करें. मेज पर डब्बों में रुपए रखे हैं. जो कुछ भी खर्च हो उसी में से करें. वैसे घर में सब सामान है. किसी चीज की कमी नहीं है. फिर वे लोग जल्दी ही आ जाएंगे. पहले तो कुछ दिन रुकने का इरादा था, पर अब नहीं रुकेंगे.

जब जाने लगे तो वे सब साथ में विदा करने के लिए स्टेशन तक चलने को तैयार हो गए. किसी तरह उन्हें समझाबुझा कर घर ही छोड़ा. उन के जाते ही मनोहर के मांबाप तो घूमने के लिए बाजार चले गए. रमा के मांबाप घर में अकेले रह गए.

सातवें दिन श्रीनगर से लौट कर जब दोनों ने घर आने के लिए टैक्सी पकड़ी तो दिलों में यह बेचैनी थी कि घर में क्या हो रहा होगा. एक दल तो अवश्य भाग खड़ा हुआ होगा. सब से पहले लड़की के मां बाप होने के

डर

शासित प्रजा की स्वीकृति के बिना बड़ी से बड़ी सरकार भी टिक नहीं सकती और यह स्वीकृति तानाशाह शासक अकसर जबरन ही प्रजा से प्राप्त करता है. जिस क्षण प्रजा तानाशाह की ताकत से डरना छोड़ देती है, उसी क्षण तानाशाह की सत्ता खत्म हो जाती है.

—महात्मा गांधी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ तुम्हारी कुछ हमारी
पसन्द है लाजवाब
चुटकी पान मसाला
खाईऐ जनाब

सौंफ इलायची छुआरे वाला
चुटकी
पान मसाला

Chutki
"A Perfect Mouth Freshner"

CHUTKI
चुटकी
के॰के॰ कार्यालय का
उत्कृष्ट उत्पादन

नाते रमा के दल ने ही हथियार डाल दिए होंगे. चलो, उस के मांबाप हैं, मना लेगी. बेटी से कोई अधिक दिनों तक अप्रसन्न नहीं रहता.

टैक्सी रुकी तो सब से पहले दरवाजे पर लगे ताले पर निगाह पड़ी. दोनों गायब. अब चाबी कहां मिलेगी? पास आ कर देखा तो एक छोटी सी परची लगी थी. पता लगा कि चाबी पड़ोस में 303 तीन नंबर वाले घर में है. रमा दौड़ कर गई.

पड़ोसिन ने कहा, "वे लोग तो दूसरे दिन ही चले गए थे."

रमा का दिल डूब गया. दरवाजा खोल कर अंदर घुसे. सामान अंदर रखा. घर का सन्नाटा उन्हें कुछ अच्छा न लगा. अपने को अपराधी महसूस कर रहे थे. घूमघाम कर सब कमरों में देखा, सारा सामान ठीक तरह से रखा था, सब एकदम साफसुथरा. तभी खाने की मेज पर निगाह पड़ी. रुपए वाले डब्बे के नीचे एक पत्र था. खोला, रमा की मां का पत्र था.

"प्यारी बेटी,

तुम चिंता मत करना. हम लोग एक ही दिन रहे, पर बड़े आनंद से रहे. पहले तो कुछ तनाव सा रहा. फिर मेरी बात तेरी सास से होने लगी और पिताजी तेरे ससुर से इधरउधर की बातें करने लगे. अब अकेले बैठे कोई झक थोड़े ही मारते. जब बातें करने लगे तो बात पर बात निकलने लगी. इस तरह हमारी सफाई भी हो गई. सच, तेरे साससुसर बड़े भले लोग हैं. हम उन्हें अब अपने साथ ले जा रहे हैं. कुछ दिन हमारे पास रह कर ही घर वापिस जाएंगे.

तुम दोनों को आशीर्वाद.

– तेरी मां."

पत्र पढ़ा और दोनों ने एक गहरी सांस ली. चलो, दोनों दलों में सुलह हो गई. अचानक डब्बे का ध्यान आया. खोल कर देखा कि कितने रुपए बचे हैं. गिना तो पूरे 1,500 सौ थे. दोनों दलों ने उन के 500 में अपनेअपने 500-500 और डाल दिए थे.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

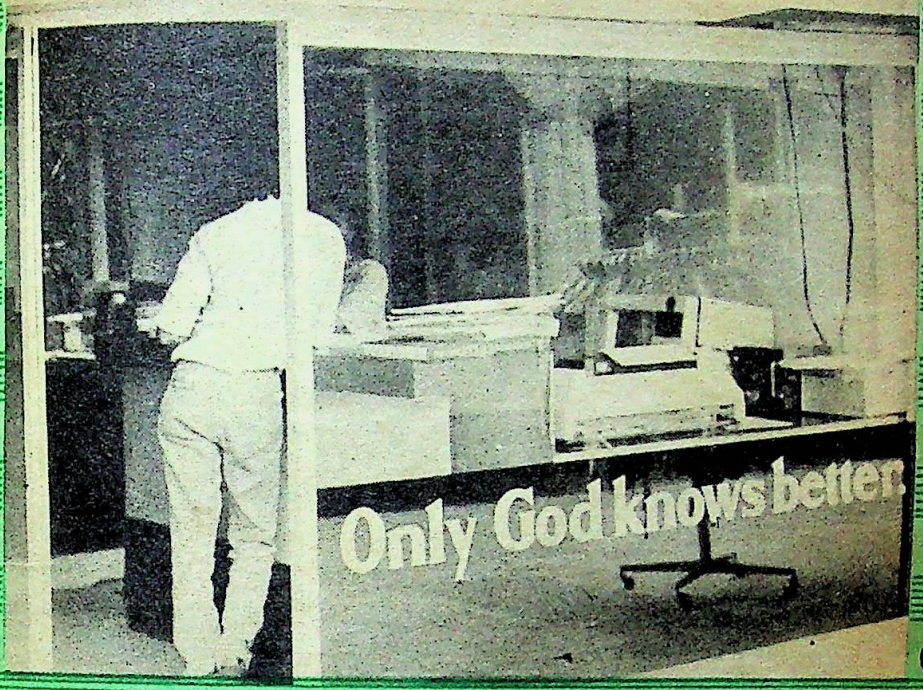

कंप्यूटर ज्योतिषः

भविष्य बताने के नाम पर लोगों को मूड़ने की नई कला

लेख • जगदीश चावला

सन 1983 में ज्योतिषियों के एक भव्य सम्मेलन में भारतीय ज्योतिष के विद्वान कहे जाने वाले डा. बी.वी. रमन ने कहा था कि ज्योतिष एक विद्या है और इस का विकास भी वैज्ञानिक दृष्टिकोण के अनुरूप ही होना चाहिए. उन का यह भी कहना था कि यदि 60% भविष्यवाणियां सही उतरती हैं तो भी उसे विज्ञान मानने में कोई कठिनाई नहीं होनी चाहिए. चिकित्साशास्त्र में भी अनुसंधान और तकनीकी विकास के बावजूद रोग का निदान और इलाज तजवीज करने में भूलचूक की संभावना बनी रहती है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मौसमविज्ञान की भविष्यवाणियां अकसर गलत निकल जाती हैं, फिर भी वह विज्ञान बना रहता है तो ज्योतिष क्यों नहीं?

मगर डा. बी.वी रमन के इस कथन पर सहमत न होने वालों में से अधिकांश लोगों की राय बिलकुल इस के विपरीत थी. उन का कहना था कि ज्योतिष कोई विज्ञान नहीं है. बल्कि यह एक शुद्ध दुकानदारी है और इस से भी बढ़ कर यह एक ठगविद्या है, जिस में कुछ उलटीसीधी बातें बता कर मानसिक तनावों में जीने वाले धर्मभीरु लोगों को पहले से भी अधिक संशय की स्थिति में छोड़ दिया जाता है और भविष्यफल बताने के नाम पर लोगों की जम कर मुंडाई की जाती है. कभीकभी तो इन ज्योतिषियों की भविष्यवाणियां देश और समाज का इतना अधिक अहित करती हैं कि जिस के बारे में कभी सोचा तक भी नहीं जा सकता.

अभी कुछ ही वर्ष पहले की बात है कि चिदंबरम के एक गांव पेडयार में एक व्यक्ति ने जब अपने पुत्र की जन्मकुंडली एक ज्योतिषी को दिखाई तो उस ज्योतिषी ने बताया कि "तुम्हारी मृत्यु तुम्हारे पुत्र के हाथों होगी."

बस फिर क्या था. उस की इसी बात पर विश्वास कर के घर आते ही उस व्यक्ति ने एक तेजधार के फरसे से अपने अबोध बच्चे की हत्या कर दी. बाद में उस हत्यारे पिता को स्थानीय पुलिस ने गिरफ्तार भी कर लिया.

चिदंबरम में घटित यह एक छोटी मगर सच्ची घटना आज के ज्योतिष व्यवसाय पर कई तरह के प्रश्नचिह्न लगाती है. फिर भी यह धंधा हमारे यहां बड़े ही जोरशोर से फलफूल रहा है. इस धंधे की बदौलत कई भोलेभाले लोग जहां लुट कर भी शिकायत करने की स्थिति में नजर नहीं आते, वहीं पर कई शातिर और पेशेवर ज्योतिषी इस धंधे की बदौलत खूब मालामाल हो रहे हैं.

ज्योतिष की जड़ें भारत में बहुत गहरी हैं. मंत्री से ले कर संतरी तक और नेता से ले कर अभिनेता तक के बीच हजारोंलाखों स्त्रीपुरुष, यहां तक कि पढ़ेबेपढ़े, विद्वान, नास्तिक और आस्तिक सभी वर्गों के लोग इस मक्कड़जाल में बुरी तरह से फंसे दिखाई देते हैं. यह कहना भी कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी कि आज देश और राजनीति भी इन्हीं राशिफलों और कुंडलियों के सहारे ही नियंत्रित होती है. सत्ता के सर्वोच्च आसन पर बैठे हुए व्यक्ति से ले कर नौकरशाही की सब से निचली सीढ़ी पर खड़ा हुआ आदमी भी अपनी तमाम समस्याओं का समाधान इन ज्योतिषियों, भविष्यवक्ताओं और तांत्रिकों के रहस्यमय पिटारे से पाने की कोशिश में जुटा नजर आता है.

इंदिरा गांधी से ले कर राजनारायण तक जब ज्योतिष के सम्मोहन से पृथक नहीं रह सके तो साधारण आदमी इस के तथाकथित दावों को एकदम से कैसे नकार सकता है? अभी अपने देश में ऐसे धर्मपरायण, अंधविश्वासी, बुद्धिहीन, भाग्यवादी, जाहिल और अकर्मण्य लोग बड़ी संख्या में मौजूद हैं जो अपने चारों ओर फैल रहा विज्ञान का उजाला देख कर भी हर सुबह राशिफल और कुंडलियों के स्याह शब्दों में अपना भविष्य देखने की कोशिश करते हैं और ऐसे लोगों की मति पर तब सचमुच बड़ी दया आती है जब वे कहते हैं कि हमारा तो

अंधविश्वास में उलझे लोगों को भविष्य के झूठेसच्चे सपने अथवा डर दिखा कर उन की खूनपसीने की कमाई हड़पने वाले पाखंडियों की ही नई ईजाद कंप्यूटर ज्योतिष क्या इन भाग्यवादियों को अंधविश्वास, अनिश्चय तथा अकर्मण्यता के दलदल में कुछ और गहरे नहीं धकेल देगी?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

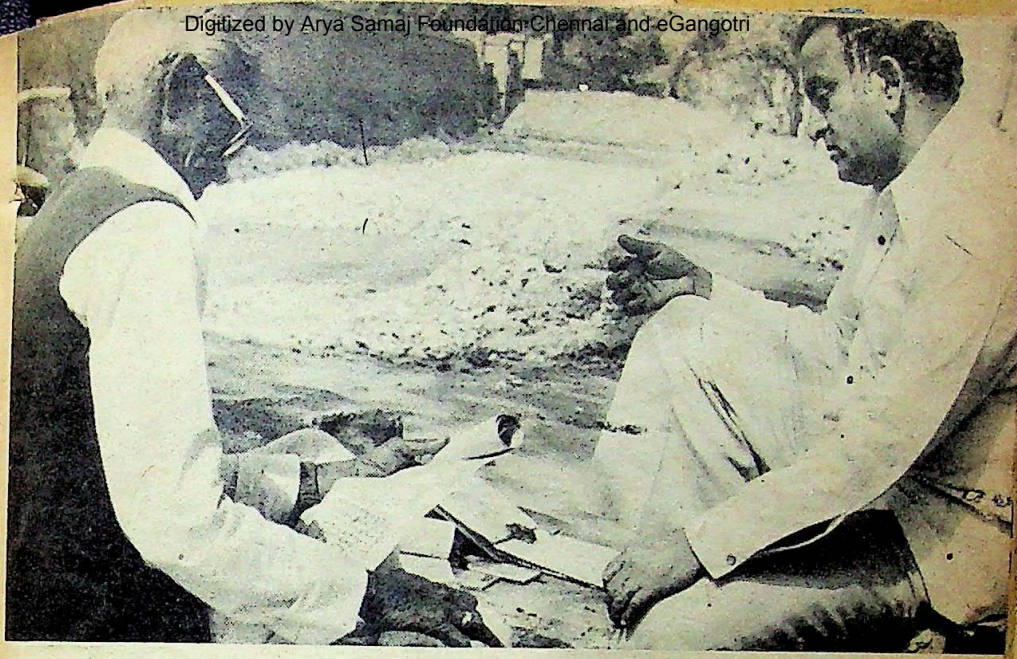

भाग्य ही खराब है या हम कर भी क्या सकते हैं.

ज्योतिष भले ही कुछ लोगों के लिए ठगे जाने का कारण बनता है, मगर कई लोग इसे संजीवनी बूटी समझ कर इस में अपनी पूरी आस्था रखते हैं. मानसिक परेशानियों में जीने वाले लोग, तनावों में पलने वाले व्यक्ति, व्यवसाय, शादीब्याह, प्रेमप्रसंग, पदोन्नति, मुकदमा, बीमारी, चोरी, औलाद तथा कई अन्य चिंताओं से ग्रस्त लोग भी कभी न कभी ज्योतिष की झूठीसच्ची बातों से सांत्वना प्राप्त करते हुए सर्वत्र देखे जा सकते हैं. ऐसे लोग समझते हैं कि उन की हर समस्या का निदान व उपचार इसी ज्योतिष में ही छिपा है.

उस दिन एक बूढ़ी विधवा जब अखबार में अपना राशिफल देख रही थी तो मुझे ताज्जुब हो रहा था कि 80 को पार कर रही यह बुढ़िया अब अपने भविष्य के बारे में और अधिक क्या जानना चाहती है? जब मुझ से रहा नहीं गया तो मैं ने उस से बड़ी विनम्रता से पूछा, "मांजी, आप इस राशिफल में क्या ढूंढ़ रही हैं?"

थोड़ी देर तक मेरे चेहरे को देखती हुई वह बोली, "बेटा, इस में देख रही हूं कि मेरा आज का दिन कैसा गुजरेगा?"

"तो क्या लिखा है तुम्हारी राशि में, जरा हमें भी बताइए."

अपनी कमजोर आंखों पर तब एक टूटा चश्मा चढ़ा कर उस बुढ़िया ने पढ़ना शुरू किया. "मेष लग्न होने के कारण आप के आर्थिक मामलों में काफी उतारचढ़ाव आएगा. मानसिक परेशानी बनी रहेगी. नया वाहन मिलेगा. मगर चोट लगने का भय है. स्वास्थ्य अच्छा रहेगा. दांपत्य जीवन सुखमय होगा. हनीमून के लिए किसी रमणीय स्थल पर भी जाने का योग है."

इस राशिफल की अंतिम पंक्तियां पढ़तेपढ़ते बेचारी बुढ़िया सकते में आ गई और मैं भी काफी देर तक इस बेहूदा भविष्यवाणी पर चिंतन करता रहा कि एक विधवा का दांपत्य जीवन कैसे सुखमय हो सकता है और उस के हनीमून मनाने की बात तो कितनी बेहूदा बकवास है.

मगर इसी तरह की कई ऊलजलूल भविष्यवाणियों से लोगों को बहलाया,

लोगों की भाग्यवादिता का लाभ उठा कर उन्हें बरगला कर अपनी जेबें भरने वाले ज्योतिषी जहांतहां बैठे मिल जाएंगे.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फुसलाया और बरगलाया जाता है. कई लोग तो देश, दुनिया और प्रधान मंत्री तक के बारे में भी अपनी भविष्यवाणियां करते रहते हैं, मगर वे कई बार तर्कहीन विरोधाभासों और विसंगतियों से ही भरी नजर आती हैं.

ऐसे ही कुछ ज्योतिषियों व उन के भाई-बंदों ने सन 1981 में कहा था कि 1982 में अष्टाग्रही योग व्यापक विपत्ति का कारण बनेगा. मगर आज तक ऐसा कुछ भी नहीं हुआ. सार्वजनिक रूप से घोषित ये भविष्यवाणियां जब गलत सिद्ध होती हैं तो इन की जिम्मेदारी भी प्रायः नक्षत्रों व ग्रहों पर डाल कर मुक्ति पा ली जाती है.

डा. रमन की निगाह में ज्योतिष की विश्वसनीयता घटाने में ज्योतिषियों का हाथ भी कम नहीं है. बहुत से कुपढ़ ज्योतिषी जल्द से जल्द पैसा और यश कमाने के चक्कर में अखबारों में सनसनीखेज भविष्यवाणियां छपवा देते हैं. जब वे सही नहीं उतरतीं तो ज्योतिषशास्त्र बदनाम होता है.

कितना सच कितना झूठ?

यों तो ज्योतिषी लोग भी ज्योतिष को भविष्य जानने का सौ फीसदी सही साधन नहीं मानते और असलियत है भी यही. ज्योतिष कोरा अंधविश्वास है. भावी घटनाओं का आभास पाने की अधकचरी विद्या है. यह कोरा पाखंड है, जिस से लोगों को ठगा जाता है.

जो पूर्व निर्धारित है, जिस का होना निश्चित है, उसी को पहले से जाना जा सकता है या उसे जानने की कोशिश हो सकती है. ज्योतिष घटनाक्रम को पूर्व निर्धारित मानता है और उसे ही ग्रह स्थिति और घटनाक्रम के परस्पर संबंध के जरिए जानने की कोशिश करता है. लेकिन वह यह भी मानता है कि पुरुषार्थ से, उपायों से और प्रयासों से बड़ी घटनाएं नहीं तो परिस्थितियां बदल सकती हैं.

आज देश में ऐसे ज्योतिषियों की कमी नहीं है जो आदमी का भविष्य और घटनाक्रम बता कर खूब पैसा बटोर रहे हैं. वे शायद लोगों की इसी कमजोरी का लाभ उठा रहे हैं कि मनुष्य भाग्यवाद का पोषक है और उसे इसी मुकाम पर बखूबी मूर्ख बनाया जा सकता है. ज्योतिषी चाहे घरघर जा कर जन्म-पत्री बांचते हों अथवा सड़कों या बड़ेबड़े पांचसितारा होटलों में बैठ कर लोगों का भविष्य बताते हों. मगर इतना जरूर है कि ज्योतिष के इतने प्रचारप्रसार के बाद भी कई लोग जिन्हें अपनी कार्यशक्ति पर भरोसा होता है, ज्योतिष को महज एक नाटकबाजी ही समझते हैं. इन की निगाह में ज्योतिष कुतर्क, अंधविश्वास और ठगी का प्रतिरूप है. प्रसिद्ध फ्रांसीसी लेखक वाल्टेयर भी कहा करता था, "ज्योतिष (ऐस्ट्रालाजी) का खगोल विज्ञान (ऐस्ट्रानामी) से वही संबंध है जो अंधविश्वास का धर्म से होता है. दरअसल ज्योतिष एक बहुत चतुर मां (खगोल विज्ञान) की बेवकूफ लड़की है."

मगर इन सब बातों के बावजूद यह देखा गया है कि ज्योतिष की अंधेरगर्दी बखूबी फैल रही है और ज्यादातर स्त्रियां ही ज्योतिष, सामुद्रिक शास्त्र, अंकशास्त्र और कंप्यूटर ज्योतिष में विश्वास रखती पाई जाती हैं.

तेजी से विकसित होते विज्ञान और तकनीकी आविष्कारों ने आज ज्योतिष को भी कंप्यूटर के सांचे में ढाल दिया है.

जन्म के समय की राशि और नक्षत्र संज्ञा वाले 27 तारा समूहों तथा 9 (अथवा 12) ग्रहों की स्थिति का खाका जो अब तक हाथ से ही तैयार होता था, अब वैसी और उस से अच्छी जन्मपत्री कंप्यूटर से तैयार की जाने लगी है.

दिल्ली के कनाट प्लेस में पालिका पार्किंग सेंटर में कंप्यूटर से जन्मकुंडली तैयार करने वाली कंपनी 'फोरसाइट' की शाखा पर काफी समय से काम करने वाली सुमन तागरा बताती हैं कि ज्योतिष हिंदू धर्मग्रंथों से अनुप्राणित है और जन्मपत्रियां बनाना व उन को पढ़ना हमेशा ही एक बड़ा व्यवसाय रहा है. कुंडलियों के चार्ट में दी गई ग्रहदशाएं भविष्य में घटने वाली बड़ी घटनाओं की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कंप्यूटर से जन्मकुंडली तैयार करने वाली कंपनी में कार्यरत एक युवती: कंप्यूटर की तार्किक गणनाशक्ति के सहारे अतार्किक ज्योतिष की बिक्री.

तारकीय समय सारणी मानी जाती हैं. जन्म के समय की ग्रहदशाओं की गणना कुंडली निर्माण का सब से अधिक मेहनत का काम है जो अब कंप्यूटर से होने लगा है.

सुमन तागरा ने बताया कि उन की कंपनी ने सब से पहले नवंबर 1981 में प्रगति मैदान की एक बड़ी प्रदर्शनी में इस कंप्यूटर ज्योतिष का प्रदर्शन किया था और तब इस के द्वारा अपना भविष्य जानने वालों की एक खासी भीड़ वहां हर समय जुटी रहती थी. बाद में इस कंपनी ने अपने काम का विस्तार किया और आज दिल्ली के अतिरिक्त बंबई, पूना, बंगलौर, अहमदाबाद और कलकत्ता आदि बड़े शहरों में भी इस की शाखाएं खुल चुकी हैं. विदेशों में भी कुछ शाखाएं खोलने का विचार है.

वह बताती हैं कि जहां पारंपरिक कुंडली तैयार करने में कई दिन का समय लग जाता था. अब उस से अच्छी व उत्तम कुंडली मिनटों में कंप्यूटर द्वारा तैयार की जाती है. इस कुंडली मशीन में 16 माने हुए ज्योतिषियों व इतने ही कंप्यूटर वैज्ञानिकों द्वारा तैयार किया 'साफ्टवेयर प्रोग्राम' पहले भर लिया जाता है जिस के जरिए संबंधित व्यक्ति के विषय में भविष्यवाणियां की जाती हैं.

कंप्यूटर टर्मिनल और प्रिंटर द्वारा जो कुंडलियां बनती हैं उन की गणना तो वास्तव में सूक्ष्म होती है, लेकिन उस की भविष्यवाणियां बेहद सामान्य होती हैं. कई 'फाइव स्टार' ज्योतिषियों का धंधा भी इस नई कला की बदौलत खूब चमक रहा है क्योंकि अब वे पारंपरिक कुंडली बनाने की जगह कंप्यूटर कुंडली बनवाने की व्यवस्था करने लगे हैं.

कुंडली मशीन का संचालन भी बड़ा आसान काम है. इस में मुख्यतः नाम, जन्म समय, दिनांक, स्थान तथा स्त्री/पुरुष की जानकारी भरी जाती है. इन पांच बातों के रेखांश व अक्षांश भरते ही प्रिंटर कुंडली छापना शुरू कर देता है और देखते ही देखते पारंपरिक कुंडली से कहीं ज्यादा सुंदर व

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्पष्ट कुंडली बन कर हाथ में आ जाती है.

'फोरसाइट' कंपनी जन्मपत्रिका तैयार करने का खर्चा 40 से 500 रुपए तक लेती है. मगर यह जन्मपत्रिका के विवरण के अनुरूप ही लिया जाता है. इस कुंडली से शादीब्याह के बंधनों में बंधने वाले जोड़ों का मिलान (मैचिंग) भी किया जाता है. बताया जाता है कि यदि ऐसे विवाह योग्य लड़केलड़कियों के 36 गुणों में से 18 गुण भी मेल खा जाएं तो शादी तय की जा सकती है. इस विषय पर सुमन तागरा ने बताया कि चंडीगढ़ के किसी व्यक्ति धीर साहब ने अपने बेटे के मैच के लिए 73 कुंडलियां बनवाईं जिन में 72 वीं कुंडली के बाद 73 वीं कुंडली उन के लिए काफी उपयुक्त साबित हुई.

कंप्यूटर की विश्वसनीयता?

एक कुशल और अनुभवी सेल्समैन के अंदाज में सुमन ने बताया, "जन्मपत्री तो हर कोई बनवाना चाहता है चाहे वह गंवार हो या प्रशासनिक अधिकारी, मगर हमारी यह ज्योतिष मशीन बिना किसी भय या लोभ के सिर्फ वही कहती है जो सच है. लड़केलड़कियों के गुण मिलाने में पारंपरिक कुंडली बनाने वाले भले ही किसी लोभ या लालच के वश में आ कर कुछ फेरबदल कर दें मगर हमारा कंप्यूटर ऐसा नहीं करता, इसी से इस की विश्वसनीयता दूरदूर तक फैल रही है."

सुमन का कहना है, "हमारी कंपनी ने प्रधान मंत्री राजीव गांधी से ले कर कई प्रसिद्ध विपक्षी नेताओं व प्रतिष्ठित लोगों की जन्मपत्रियां बनाई हैं. और चूंकि हम अन्य कई ज्योतिषियों की तरह गलत चल रहे ग्रहों को ठीक करने के लिए ताबीज, गंडे और चमत्कारिक अंगूठियां नहीं बांटते, इसी लिए आज विदेशों से, खास कर अमरीका से, हमारे पास कुंडली बनाने के कई आदेश आए हैं. अभी नोएडा आश्रम में ठहरे महर्षि महेश योगी के 9,000 अनुयायियों की कुंडलियां भी हमारी कंपनी ने ही तैयार कर के दी थीं."

वैसे अभी तक यह कंप्यूटर ज्योतिष हिंदी व अंगरेजी भाषा में ही जीवन का सारा वृत्तांत बताता है मगर इस की कार्यप्रणाली देख कर काफी उत्सुकता जगती है और आश्चर्य भी होता है.

कंप्यूटर ज्योतिष एक ऐसी प्रणाली है जिसे अकेला व्यक्ति संचालित कर सकता है. बिजली की समस्या व मशीन में कोई तकनीकी खराबी न हो तो इसे बड़ी आसानी से चलाया जा सकता है.

कंप्यूटर ज्योतिष किसी का भाग्य बनाने या संवारने का दावा तो नहीं करता मगर थोड़े ही समय में जीवन की कुंडली का साफसाफ और स्पष्ट लिखावट में बन कर हाथों में आना लोगों में काफी रुचि व जिज्ञासा पैदा करता है. 'फोरसाइट' को 12,000 रुपया प्रतिमाह एक दुकान का किराया नई दिल्ली नगरपालिका को देने व अपने कर्मचारियों को पर्याप्त वेतन देने के बाद कितना कुछ बच जाता है, इस का आकलन करना हमारा काम नहीं है. मगर कंप्यूटर ज्योतिष की ये तथाकथित दुकानें इन कुंडलियों की बदौलत काफी मुनाफा कमा रही हैं.

ज्योतिष से संबद्ध लोगों का कहना है कि ज्योतिष पुराने समय से नक्षत्रों का अध्ययन कर के और ब्रह्मांड की गति से मनुष्य की मनोदशा व गतिविधियों को जोड़ता आया है. ग्रहों के अमुक राशि में होने से उन का आदमी के व्यक्तित्व या घटनाचक्र पर क्या प्रभाव पड़ता है, इस की व्याख्या करना ही फलित ज्योतिष का काम है.

ज्योतिषी लोग चांद को एक ग्रह मानते हैं. मगर इस की जांचपड़ताल के लिए भी कई देश अपने उपग्रह भेज रहे हैं. वहां ज्योतिष के नियमों की व्यावहारिकता को जांचनेपरखने के यत्न हो रहे हैं. मगर हमारे भारतीय ज्योतिषी हैं कि वे सरकार से यह मांग कर रहे हैं अब रजिस्टर्ड वैद्यडाक्टरों की तरह रजिस्टर्ड ज्योतिषियों की संस्था भी बनाई जाए. अपनी असफलताओं व पाखंडों को छिपाने के लिए वे कहते हैं कि ज्योतिषशास्त्र के साथ समयसमय पर रूढ़ियों व अंधविश्वासों के जुड़ जाने से इस की प्रामाणिकता खत्म हो जाती है. मगर यहां तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हम ने स्वयं कई ज्योतिषियों को कंप्यूटर ज्योतिष की दुकानों पर अपनी जन्मपत्री बनवाते देखा है. तो क्या हमें ऐसे अधकचरे लोगों का आभारी होना चाहिए कि उन्होंने इस विद्या को जीवित रखा है.

कंप्यूटर ज्योतिष को भी शत प्रतिशत सही नहीं माना जा सकता. यहां काल गणना की छोटी सी भूल भविष्यवाणी की असफलता की नींव हो सकती है. जन्मपत्री की भविष्यवाणियां भी प्रायः इसलिए गलत सिद्ध होती हैं क्योंकि वे हमेशा पूर्व अनुमानों के आधार पर तैयार की जाती हैं और जीवन ऐसे अंदेशों व अनुमानों के सहारे कभी नहीं जिया जाता.

पूछने पर एक महिला ने बताया, "ज्योतिषियों की ऊलजलूल भविष्यवाणियां लोगों को या तो एक सुरक्षित भविष्य का सपना देती हैं या बिना कारण किसी भयावह घटना के प्रति आशंकित किए रहती हैं."

दूसरे शब्दों में कहें तो इस तरह कंप्यूटर ज्योतिष भी लोगों को मूर्ख बना कर उन्हें एक पलायनवादी ढर्रा सौंपता है और इस से लोगों में यथार्थ का सामना करने का साहस तक भी चुक जाता है.

एक व्यक्ति ने बताया कि "मैं तो अपने जीवन का प्रत्येक महत्त्वपूर्ण कदम हमेशा इस कंप्यूटर गणना के अनुसार ही उठाता हूं और मुझे इस से काफी लाभ पहुंचा है." परंतु अन्य कई लोगों की राय इस से भिन्न थी उन का कहना था, "ज्योतिष एक पाखंड है जिसका दुष्प्रभाव सारी पीढ़ी पर पड़ता है. ज्योतिष के अनुमानित व संभावित खतरों से समाज सतर्क कम और हतोत्साह ज्यादा होता है.

इस में कम संदेह नहीं कि अब कंप्यूटर मशीनें क्रांति के दौर से गुजर चुकी हैं मगर कंप्यूटर ज्योतिष के सम्मोहन से कई लोग आज भी प्रभावित हैं. समय रहते इस व्यवस्था और पेशे का मूल्यांकन अवश्य किया जाना चाहिए, जो भविष्य के नाम पर लोगों को अनिश्चय अंधविश्वास और अकर्मण्यता के दलदल में धकेलता है.

कुछ वर्ष पहले ज्योतिष के नाम पर हो रही व्यापक लूटखसोट में जब राजस्थान के एक प्रसिद्ध ज्योतिषी के घर से लाखों रुपए की नकद और अचल संपत्ति के कागजात छापे में पकड़े गए थे तो उस की हालत भी देखने योग्य थी. दूसरों का भविष्य बताने वाला या मार्गदर्शन करने वाला जब खुद फिसलता है तो लोगों को भी हंसने का मौका मिल ही जाता है.

इतने सारे पाखंडों का परदाफाश होने के बाद भी यदि लोग ऐसे ज्योतिष और भविष्यवाणियों में यकीन रखते हैं तो इस का सीधा सा अर्थ यही हो सकता है कि वे अपनी इच्छाओं और आकांक्षाओं को किसी भी तरह से सच मानते रहने की विवशता के अलावा और कुछ भी नहीं करते. ●

अपने छोटे बच्चों को

चंपक

दीजिए

और बड़े बच्चों को

सुमन सौरभ

चंपक व सुमन सौरभ में भूतप्रेतों, राक्षसों, देवीदेवताओं, चमत्कारों और श्रापों के कारनामे, जादूटोने, अंधविश्वास की कहानियां प्रकाशित नहीं की जातीं.

दोनों पत्रिकाओं में रचनात्मक चरित्र निर्माण करने वाली, ज्ञान बढ़ाने वाली मनोरंजक कहानियां व लेख प्रकाशित किए जाते हैं. जिस से कल व आज के बच्चे जागरूक, स्वाभिमानी, देशप्रेमी नागरिक बन सकें.

नमूने की प्रति के लिए लिखें : दिल्ली प्रेस, नई दिल्ली - 110055.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भटकती राहें

कहानी ● परशीश

पिताजी मुझे देखते ही चौंक उठे. शायद यह सोच कर कि मैं और वह भी उन के पास. उन के हाथ की पुस्तक नीचे गिर पड़ी. नाक पर टिका चश्मा थोड़ा और नीचे सरक गया.

मुझे देख कर उन का चौंकना स्वाभाविक था. मां की मृत्यु के बाद मैं अब तक पिताजी के पास आई कहां थी. मां जब तक जिंदा थीं, मैं भी उन के साथ ही पिताजी के प्रति बरती गई घृणा को निबाहती रही थी. उन के चले जाने के बाद यह दायित्व मैं अकेली निबाहती आ रही थी. अचानक फिर कैसे आ गई यहां, पिताजी यही देख कर चौंके थे.

"क्यों, क्या यह मेरा मायका नहीं है, जो मैं यहां नहीं आऊं," मैं ने सामान्य बनते हुए कहा. हालांकि वर्षों के अन्याय और अजनबीपन को कुछ पलों में खत्म कर देना आसान नहीं था, यह मैं भी समझ रही थी. इसी से मेरा मुंह झेंपी हंसी के बावजूद शायद ही सहज रह पाया था. पर पिताजी ने उसे जानबूझ कर अनदेखा सा करते हुए कहा, "इंदु, मैं यह कब कह रहा हूं. पर अब तुम्हारे मायके में तो एक कोठरी भी हमारे टिकने के लिए नहीं बची है."

"मतलब?" मैं ने आश्चर्य से पूछा.

"घर सूनासूना होने के कारण इधर मैं ने समाज सेवा करना शुरू कर दिया. पूरे घर को

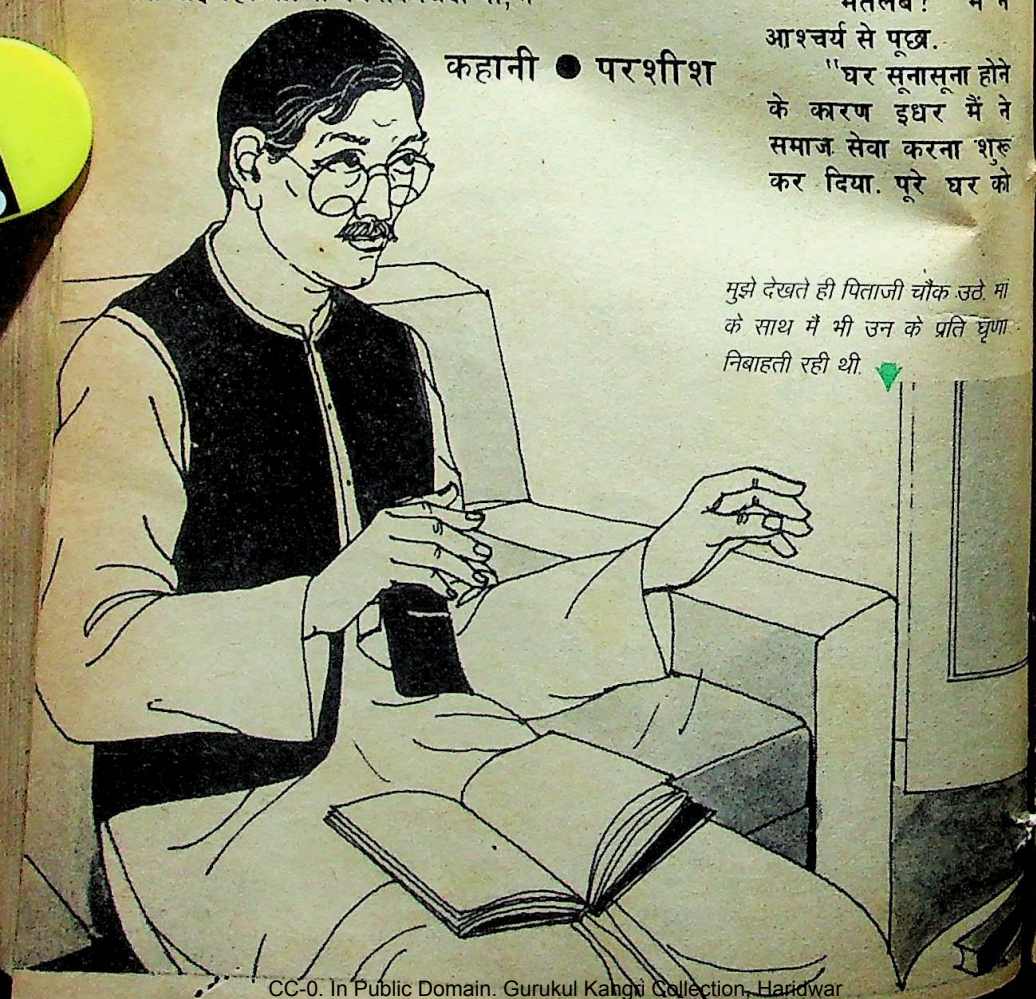

मुझे देखते ही पिताजी चौंक उठे. मां के साथ मैं भी उन के प्रति घृणा निबाहती रही थी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बच्चों की प्राथमिक पाठशाला का रूप दे दिया है. अब बच्चे इस में पढ़ते हैं, खेलते हैं और रहते हैं. मैं तो कहीं भी टाट बिछा कर पड़ा रहता हूं."

पिताजी के शब्दों में खुशी, दर्द, समझौता या जीने के तरीके को बदल डालने का तनिक भी अफसोस नहीं था. अफसोस तो केवल मुझे था – उन्हें अब तक अपने सानिध्य से परे ठेले रहने का और उन्हें इतनी कड़ी सजा देने का.

एकाएक मैं टूट कर उन के गले से लग गई. कई पलों तक यह निकटता बनी रही. फिर पिताजी मुझे अलग करते हुए बोले, "मधुमेह को नमस्कार. आज तो मुझे मिठाई खानी ही पड़ेगी. पहले मैं बाजार जा कर मिठाई ले आऊं. कितनी बड़ी खुशी मिल गई मुझे आज. इंदु बेटे, तू ने मुझे क्षमा कर दिया तो मैं समझूंगा कि तेरी मां ने भी मुझे क्षमा कर दिया."

पिताजी एक पल में अपनी धोती संभालते, चश्मा नाक पर जमाते, अपनी उम्र का खयाल न कर के बच्चों की तरह दौड़ ही तो पड़े.

और मैं स्कूल बन गए उस घर को देखती पता नहीं अपने वक्त से कितने पीछे लौट गई. उस दौर में, जब उस घर में मैं थी, मां थी और थे पिताजी. संसार के सब से सुखी प्राणी. संसार का सब से सुखी घर. संसार का सब से सुखी परिवार. शायद दुनिया में किसी घर में कुछ न हो, पर बहुत अधिक शांति और सुख हो तो उस घर को पता नहीं क्यों किसी की नजर सी लग जाती है.

हमारे घर के साथ भी ऐसा ही हुआ. शायद हमारी खुशी को हमारी ही नजर लग गई. इस की पूरी जिम्मेदारी पिताजी पर ही जाती थी. प्रेम करना कोई गुनाह नहीं है, मगर एक विवाह के बाद जब मन दांपत्य मर्यादा की सीमाएं तोड़ने लगता है तो उस मन को चाबुक लगाना हमारा पहला कर्तव्य बन जाता है.

मैं ने अपनी मरजी से विवाह किया था. फिर भी मेरा मन अमरकांत की ओर खिंचने लगा था पर ईश्वर ने मुझे क्षमा कर के भटकने से बचा लिया था. क्या मेरी मां पिताजी को कभी क्षमा कर सकीं जबकि उन का भी यही अपराध था.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अगर उस वक्त भी मन को बिगड़ैल घोड़े की तरह प्रेम के मैदान में दौड़ने दिया जाए तो यह प्रेम कभी किसी भी पक्ष के लिए हितकर सिद्ध नहीं होता.

पिताजी फिल्मी सितारों के हजारहजार प्रेम किस्से पढ़ते तो कहते, "भई, मैं ने तो ब्याह ही सीमा से किया है यानी मेरी तो सीमा तय हो गई है. फिर भला मैं अपनी सीमा कैसे तोड़ सकता हूं?"

मां का नाम सीमा था. इसलिए पिताजी को यह मजाक करने का हर वक्त मौका मिल जाया करता था. पर पिताजी को तब शायद पता ही नहीं था कि चोर के घर भी सेंध लगती है. घर में ही उन्होंने सीमा रखी हुई थी और वहीं उन्होंने अपनी सीमा तोड़ दी.

उम्र के ढलते पड़ाव पर पिताजी पुनः प्रेम में फंस गए. वह भी किसी हसीन सोलह साल की लड़की के नहीं, बल्कि एक अत्यंत साधारण स्त्री के. पर थी वह विदुषी और मेहनती. मां से उस की तुलना की जाए तो मां के रूप के आगे वह कुछ भी नहीं थी. मां का रूप अब भी उस बड़ी उम्र में उन्हें मौकेबेमौके मेरी बड़ी बहन बना देता था. आभिजात्य के गर्व से भरा मां का चेहरा जब भी कोई देखता, अपनी आंखों को हटा नहीं पाता.

पर पता नहीं क्यों होता है ऐसा कि अच्छी से अच्छी चीज और उत्तम से उत्तम उपहार अपनी झोली में रहने पर भी मन अल्लमगल्लम चीजों को देख कर ललक उठता है. ठीक पिताजी की भी ऐसी ही दशा थी.

इस नए प्राप्य पर पगला से उठे थे पिताजी. उसी से पिताजी मेरी और मां की निगाहों में सब से बड़े अपराधी बन गए. ऐसे घोर अपराधी, जो कभी भी क्षमा न किए जा सकें. इसी लिए तो मां ने उन्हें कभी क्षमा नहीं किया.

वैसे पिताजी बहुत भले थे. मां और मुझे बहुत प्यार भी करते थे. मगर अचानक पिताजी के विषय में हमें कुछेक लोगों ने बताया कि वे अपने दफ्तर की सहकर्मी से बहुत ज्यादा घुलनेमिलने लगे हैं. कई बार होटल, पार्क जैसे भ्रमण स्थलों पर उन्हें साथ देखा गया. मां को विश्वास न हुआ. मां और पिताजी ने प्रेम विवाह किया था और मां के लिए यह सूचना उस विश्वास की टूटन थी, जो हर प्रेमविवाह के मध्य संतुलन रूप में विद्यमान रहता है.

मां ने पहले इस घटना की ओर कोई खास ध्यान नहीं दिया, देना भी नहीं चाहिए था. कोई बड़ी बात तो न थी किसी से मिलनाजुलना. पर धीरेधीरे उन मुलाकातों की बात ने पंख फैला कर उड़ना शुरू किया और यकीन करने के लिए सारे प्रमाण इकट्ठा होने लगे.

उस मां को हफ्ते भर तक तो रुलाई ही फूटती रहती थी. पिताजी के घर से जाने के बाद वह चुपकेचुपके रोती रहती थीं. उन की उस रुलाई का साझेदार कोई नहीं था. घर में और था ही कौन. सिर्फ मैं ही तो थी. पर इस समस्या से आरंभ में मां ने मुझे भी नहीं जोड़ा था. मैं 16-17 की उम्र छू रही थी. अधिक दिनों तक मुझ से बात छिपाई भी तो नहीं जा सकती थी. जब मां ने मुझे यह बात बताई तो मैं पिताजी के प्रति नफरत से भर उठी थी. पिताजी मुझे उस अपराधी की तरह लग रहे थे जिन के लिए क्षमा शब्द मेरे किसी शब्द-कोष में नहीं थे.

दूसरे दिन ही मां ने पिताजी से एकदम कठोर मगर स्पष्ट अंदाज में पूछा था, "क्या यह बात सही है?"

पिताजी ने कोई बचाव नहीं किया, लगता था कि वह स्वयं ही चाहते थे, मां उन से यह सवाल पूछें. शायद उस समस्या को ले कर वह भी भीतर ही भीतर उलझे हुए थे. उन्होंने पूरी तरह अपनेआप को मां के हाथों में सौंप दिया, "हां सीमा, यह सच है, बिलकुल सच है. पता नहीं कब मैं ने उसे पसंद कर लिया और चाह कर भी मैं उसे छोड़ नहीं पा रहा हूं. क्या तुम दोनों साथ नहीं रह सकतीं?"

"शर्म नहीं आती तुम्हें यह कहते हुए," मां को पूरी उम्मीद थी कि पिताजी सफाई, बचाव आदि की पूरी कोशिश करेंगे. और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"सीमा, मुझे माफ कर दो. जिस औरत के प्रेम में मैं पागल हो रहा था, उस ने आज मेरी आंखें खोल दीं," पिताजी गिड़गिड़ाते हुए बोले.

तब उन्हें मन की भड़ास निकालने का मौका मिलेगा. जम कर बहस और कहासुनी करने के बाद वह शांत हो सकेंगी. पर यह सब न होते देख कर वह पूरे क्षोभ से बरस पड़ीं, "मेरा विश्वास तोड़ा है तुम ने. मैं तुम्हारा मुंह नहीं देखना चाहती, कभी नहीं देखूंगी."

वह उसी क्षण उन के कमरे से निकल गईं थीं. पिताजी ने उन्हें रोका भी था. वह जानते थे कि मां वहां से कहीं नहीं जा सकती है. घरपरिवार तो वह इस प्रेमविवाह के चक्कर में छोड़ चुकी थीं. किस मुंह से लौटतीं अपने मायके.

मां ने उसी क्षण पिताजी के कमरे से अपनी जगह बदल ली थी. उन्होंने जिस मौन रूप से विरोध प्रकट किया था उस के आगे पिताजी को टिकने की हिम्मत नहीं थी. मैं ने भी मां का ही साथ दिया था. हमारे और पिताजी के संबंधों के मध्य नौकर देबू ही सारे काम निपटाता था. न मां खाना बनाती थीं, न परोसती थीं, न ही उन के जूतेकपड़ों की फिक्र रखती थीं. मेरे लिए मां का यह बरताव बिलकुल सही था. मैं भी पिताजी से बात करना एकदम बंद कर चुकी थी.

एकएक कर के इसी तरह दिन गुजर रहे थे. घर के घोर मौन अजनबीपन से मैं सहमने लगी थी.

चार छः माह बीते नहीं थे कि एक दिन अचानक पिताजी आ कर सीधे मां के पैरों पर गिर गए, "सीमा, मुझे माफ कर दो. मैं अपने घर लौट आया. अपनी गलती का मुझे एहसास हो गया. जिस औरत के प्रेम में तुम से भाग रहा था मैं, उस ने आज मुझे तुम्हारे पास वापस भेज दिया. उस ने मेरी आंखें खोल दीं."

"क्यों, क्यों भेजा उस ने तुम्हें यहां? दूसरे पल्लू का स्वाद चख कर भी तुम उसे निभा नहीं पाए. तुम नहीं निभा पाए तो वह वेश्या भी नहीं निभा पाई."

"वेश्या मत कहो उसे, सीमा," पिताजी को चोट सी लगी थी. उस औरत के लिए 'वेश्या' शब्द उन्हें अखर गया, "तुम मानो न मानो, उसी ने मुझे यहां भेजा है, मुझे सही राह दिखाई है, वरना वह चाहती तो मुझे अपने इशारों पर नचा सकती थी."

"मैं कहती हूं, क्यों भेजा? उस से कहो कि वह तुम्हें अपने आंचल या पर्स में रख ले," मां का स्वर बेहद कड़वा हो गया था, "मैं उसे सौ बार वेश्या कहूंगी. तुम क्या बिगाड़ सकते हो मेरा?"

पिताजी उन के व्यवहार से सकपका गए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थे. उन्होंने प्रार्थना भरे स्वर में कहा, "तो तुम ने मुझे माफ नहीं किया?"

"नहीं," मां ने फैसला दिया, "जिस तरह एक बार मैं ने तुम्हें चुन लिया था, उसी तरह एक बार मैं ने तुम्हें छोड़ दिया तो छोड़ दिया. जाओ, तुम्हें जहां रहना है, रहो."

यह अंतिम संवाद था मां और पिताजी के मध्य. पिताजी डरे, पछताए बच्चे की तरह उन के कमरे से बाहर निकल आए थे. वह अपने कमरे में जा कर बैठ गए थे. फिर एक बार बाहर निकल कर मुझ से भी माफी मांगी. पर मैं भी मां की तरह ढीठ सी तनी खड़ी रही.

उस दिन के बाद मां में कुछ सक्रियता आई. अब वह खाना पकाने लगीं. पिताजी के कपड़े, जूते –सब देखने लगीं. पर हर चीज उन तक पहुंचाने का माध्यम देबू ही बना रहा. खुद न तो जाती थीं न ही बात करती थीं. मुझे संतोष सा था. पर कुछ दिनों के बाद मेरी समझ में आया था कि मां यह सब काम करते हुए भी पिताजी को सिर्फ सजा ही दे रही थीं. न उन की रूचि का भोजन बनातीं, न उन के पसंद के कपड़े निकालतीं, न ही जूते, बल्कि कई मौकों पर वह उन्हें चिढ़ाने के लिए बेतुके कपड़ों से ले कर बेढंगा भोजन तक भेज देतीं. वह चाहती थीं कि पिताजी उन से झगड़ें तो वह उस बहाने फिर उन की उस औरत को वेश्या कह सकें.

पर पिताजी आश्चर्यजनक रूप से चुप रहने लगे थे. वह न तो बेस्वाद भोजन पर कुछ बोलते, न ही कपड़ों के बेमेल चुनाव पर टोकते. जैसे वह कोई पत्थर हों, जिसे कोई भावना तक छू नहीं गई थी. शायद वह मान चुके थे कि उन्होंने अपराध किया है, जिस के एवज में उन्हें जो भी सजा दी जाए, जितनी भी दी जाए, चुप रह कर झेल लेंगे.

घर के उस घुटन भरे वातावरण से निकलने को तब मैं पंख फड़फड़ाने लगी थी. मुझसे रहा न जाता था उन दो पाटों की तरह घिसते हुए मौनों के बीच. मैं चाहती थी कि पिताजी भी अपनी दूसरी प्रेमिका को भरपूर गाली दे कर मां से माफी मांग लें. पर पिताजी के दिल पर शायद उस की बहुत इज्जत थी, वह उस के विरूद्ध बोलना तो क्या, कुछ सुनना भी नहीं चाहते थे.

ऐसे ही समय में ईश्वर से भेंट हुई थी मेरी. ईश्वर में क्या था, क्या नहीं यह सब मैं ने नहीं सोचा था. बस, उसे पसंद करने लगी थी. जब उस ने ब्याह का प्रस्ताव रखा, तब मैं ने निस्संकोच हां कर दी थी. पर प्रेमविवाह से चोट खाई मां मेरे इस विवाह के लिए कतई तैयार नहीं थीं. मुझे अपनी इच्छा के लिए मां का दिल तोड़ना पड़ा था. इस का मुझे अफसोस था. पर मैं कैसे उन्हें समझाती कि हर प्रेम - विवाह एक ही दौर से नहीं गुजरता.

मेरे जाने के बाद पता नहीं क्या हुआ कि मां को ही वर्ष बाद गुजर गईं. मां के बाद क्या था मेरे लिए उस घर में. पिताजी को तो मैं भी क्षमा न कर सकी थी, बल्कि मां के असमय गुजर जाने का कारण मैं ने पिताजी को ही समझा. इसलिए उन से घृणा, क्रोध, नफरत, को पालते रहना जहां मेरे लिए स्वाभाविक था, कर्तव्य भी था. पिताजी ने मुझ से एक बार आते रहने के लिए कहा भी था, पर मैं जो एक बार गई तो फिर उस दिन ही आई.

ईश्वर ने भी कई बार मुझे समझाना चाहा था कि मैं पिताजी को क्षमा कर दूं. पर मैं उलटी ईश्वर पर ही बिगड़ उठती थी. ईश्वर लाचार हो कर चुप हो जाते थे. मैं ने एकएक वर्ष के अंतर से दो बच्चों को जन्म दिया – राका और राकेश. पता नहीं कैसे पिताजी के पास खबर नहीं भेजने पर भी उन की तरफ से आशीर्वाद कार्ड, बच्चों के नाम का तोहफा आ जाता था. इतना ही नहीं, हर बच्चे के हर जन्मदिन पर वे मिठाई व कार्ड इस तरह याद कर के भेज देते थे, जैसे वह सामने हों. पर मेरी नजरों में यह सब हरकतें उन की चाटुकारिता के सिवा कुछ भी न थी – अपने अपराधी व्यक्तित्व को सुदर्शन प्रदर्शित करने के लिए.

राकेश चार वर्ष का होने को आया. तब उस के लिए एक ट्यूटर रखा गया – अमरकांत. उसी समय एक अजीब घटना घटी. तभी मैं ने जाना कि क्षमा से बढ़ कर कोई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हाऽऽ!

साँस साँस में ताज़गी
साँस साँस में आत्मविश्वास

सिबाका टॉप का विशेष फैलनेवाला तत्व फ़ौरन आपके पूरे मुँह में फैलकर दांतो में सड़न पैदा करनेवाले कीटाणुओं का नाश करता है और साँस की बदबू को रोकता है — आपके मुँह और दांतों को पूरी तरह साफ़ करते हुए आपकी साँसों को भरपूर ताज़गी से भर देता है.

यानी, सिबाका टॉप से – साँस साँस में ताज़गी साँस साँस में आत्मविश्वास. ऐसे-हा!!!

सिबाका टॉप
टूथपेस्ट

क्वालिटी उत्पादनों के निर्माता
हिन्दुस्तान सीबा-गायगी लिमिटेड

RCA/CT/88-HN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मार नहीं है एक गुनहगार के लिए.

राकेश को रोजरोज पढ़ाता अमरकांत धीरेधीरे मेरी ओर आकृष्ट होता चला गया और मैं खुद समझ नहीं पाई कि मुझे क्या हो गया. जबकि मैं जान रही थी कि मैं विवाहिता ही नहीं, दो बच्चों की मां भी थी. फिर भी मैं अमरकांत की प्रशंसा से फूलती चली गई. यहां तक कि मुझे हजार बार सोचना पड़ा कि कौन श्रेष्ठ है – अमरकांत या ईश्वर.

उन दिनों बैठीबैठी मैं यही सोचती रहती थी. अमरकांत की बातें, उस की तारीफें, उस की कविता. ये सब मेरे लिए एकदम नई चीजें थीं. ईश्वर जैसे सीधेसादे के लिए कविता दोहा सुन लेना ही काफी था, किसी के लिए कहना या गढ़ देना तो बड़ा मुशकिल था. बैठीबैठी मैं मुसकराती, सजतीसंवरती.सोचती, अमरकांत देखेगा तो यह कहेगा, वह कहेगा.

धीरेधीरे पढ़ाई के बीच में हमारे और अमरकांत के मध्य कापियों में लिखलिख कर बातें होने लगीं. राकेश के लिए यह सब कोई मतलब नहीं रखता था.

मगर एक दिन अपनी ही गलती से हमारी लिखी एक परची कापी में छूट गई, जिसे कापी जांचते हुए ईश्वर ने पढ़ लिया, "इंदु, यह तुम्हारी लिखाई है न?" ईश्वर ने बिलकुल सहजता से पूछा था. मैं ने तुरंत 'हां' कह दिया था. दूसरे पल उस कागज को देखते ही मेरे होश उड़ गए थे. मेरी लिखावट के नीचे ही तो अमरकांत की लिखावट थी: "मैं तुम्हें अपने से अधिक प्यार करता हूं." मेरा प्रश्न था: "तुम मुझे कितना प्यार करते हो?"

इतना ठोस सुबूत ईश्वर के हाथ में था कि इनकार नहीं कर सकती थी. मुझे अवसर के अनुसार बोलना ही पड़ा, "हां, अमरकांत मुझ से प्यार करने लगा है."

"और तुम?" ईश्वर ने पूछा.

"मैं अ...अ..." मैं उलझन में पड़ गई थी. कुछ देर मैं ने कोई उत्तर नहीं दिया, फिर केवल इतना ही कहा, "क्या पुरुष मित्र स्त्री के लिए केवल प्रेमी होते हैं?"

ईश्वर ने कहा, "कभी नहीं, वह तुम्हारा मित्र है तो बहुत ठीक है. अगर प्रेमी भी हो जाए तो तुम इतनी अक्ल रखती हो कि यह नादानी करो या न करो."

बस, सारा मामला ही साफ हो गया. यह ईश्वर की सहिष्णुता ही थी, जो मुझे पिताजी की याद आ गई. ईश्वर ने जिस तरह मेरे अपराध को अनदेखा कर दिया था, हम दोनों मांबेटी क्यों नहीं कर पाए. सुबह का भूला शाम को घर लौट आए तो उसे भूला नहीं कहते. उसे सदा माफ किया जाना चाहिए. ईश्वर सदा पिताजी के लिए यही कहते थे, और मैं? मैं क्या थी, मैं भी क्या सुबह की भूली नहीं थी? नहीं, मैं ने तो अभी प्यार के झूले की पेंगें ली ही थीं. फिर भी ईश्वर ने मुझे माफ कर दिया था.

करीब सात दिन तक हम दोनों में बातचीत नहीं हुई थी. अमरकांत उसी तरह आताजाता रहा. उसे हमारी अनबन की खबर तक न थी. पर ईश्वर के व्यवहार ने मुझे बता दिया था कि मेरे लिए तो ईश्वर ही श्रेष्ठ है. मैं ने अमरकांत की ट्यूशन लेना खुद ही बंद कर दिया था और राकेश को स्वयं पढ़ाना शुरू कर दिया था.

एक दिन मैं ईश्वर के पैरों से लग गई, "ईश्वर, मुझे माफ कर दो."

"माफी कैसी, तुम ने किया ही क्या है?" ईश्वर ने मुझे उठा कर कहा, "मैं कहता था न कि सुबह का भूला शाम को घर लौट आए तो उसे भूला नहीं कहते."

मैं क्या कहती, चाबुक खाए घोड़े सी उसे भौचक्की देखती रह गई थी, पिताजी को याद करती हुई.

उसी क्षण मैं ने ठान लिया था कि मैं पिताजी के पास जरूर जाऊंगी, उन्हें माफ करने नहीं, उन से माफी मांगने. बहुत सजा दी उन्हें हम ने. अफसोस तो बस इतना ही था कि मां मर चुकी थीं. काश, मां जिंदा होतीं और वह भी ईश्वर की तरह पिताजी को माफ कर के गले से लगा लेतीं. मगर हुआ यह कि मुसाफिर भटका सो भटका, राह भी भटक गई. और उन दोनों की भटकन में प्यार की मंजिल जाने कहां खो गई !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस पल जब आप इसे पढ़ रही हैं... त्वचा को नर्म बनाने वाली ज़रूरी नमी आपके चेहरे से गायब होती जा रही है!

इस नमी को बचाने के लिए आप कुछ कर रही हैं?

यदि नहीं, तो शायद आप इस बात से पूरी तरह अनजान हैं कि त्वचा को सजीव बनाने, इसमें कोमलता जगाने के लिए नमी कितनी ज़रूरी है. या फिर... आपकी त्वचा थकी, रूखी और बेजान ही क्यों न नज़र आए... आपको इसकी कोई चिन्ता ही नहीं!

किशोरावस्था में आपकी त्वचा में नमी खुद-ब-खुद पैदा होती है. लेकिन जैसे-जैसे उम्र बढ़ती है, ऐसा नहीं होता. यानी आपकी त्वचा से धूप, धूल, आदि के कारण नमी गायब तो बड़ी तेज़ी से होती है, लेकिन उतनी ही तेज़ी से पैदा नहीं हो पाती... और तभी आपको चाहिए एक ऐसी चीज़ जो आपकी त्वचा की नमी भी बरक़रार रखे और इसे नर्म व कोमल बनाए.

यानी आपको चाहिए लॅक्मे मैक्ज़ीमम मॉइस्चराइज़िंग लोशन. पानी और त्वचा को मुलायम बनाने वाले विशेष तत्वों का कोमल मिश्रण. यह आपकी त्वचा के भीतर समाकर, न केवल आपकी खोई हुई नमी वापस लाता है बल्कि त्वचा को आवश्यक पोषण भी प्रदान करता है.

इसमें चिकनाहट का नामो-निशान ही नहीं, और यह इतना हलका है कि चेहरे पर इसके होने का अहसास ही नहीं होता... लेकिन फिर भी आपकी त्वचा हर पल ताज़गी से खिली रहती है!

लॅक्मे मैक्ज़ीमम मॉइस्चराइज़िंग लोशन में ऐसे अनोखे पदार्थ हैं जो हर तरह की त्वचा की ज़रूरत के अनुसार त्वचा में समा जाते हैं. आंखों और मुंह के आसपास की सूखी त्वचा में अधिक और नाक जैसी तेल-युक्त त्वचा में कम. इसलिए आपकी त्वचा चाहे सूखी हो या तेल-युक्त... सामान्य या मिली-जुली, लॅक्मे मैक्ज़ीमम मॉइस्चराइज़िंग लोशन हर तरह की त्वचा को से नर्म और कोमल बनाता है.

लॅक्मे मैक्ज़ीमम मॉइस्चराइज़िंग लोशन
नर्म, मुलायम और खूबसूरत त्वचा के लिए.

खिला रूप-रंग, दिल में उमंग,
लॅक्मे के संग.

Rediffusion/L/5226 c HN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चीलकौर

कहानी •

रोशनलाल सुरीरवाला

फोन कर के डाक्टर बुला लिया. डाक्टर ने जांचपड़ताल के बाद सलाह दी, "दिल का तीसरा दौरा है, गंभीर है. इंजेक्शन दे दिया है. आहिस्ता से मगर जल्दी से जल्दी रोगी को मेडिकल कालिज पहुंचना चाहिए."

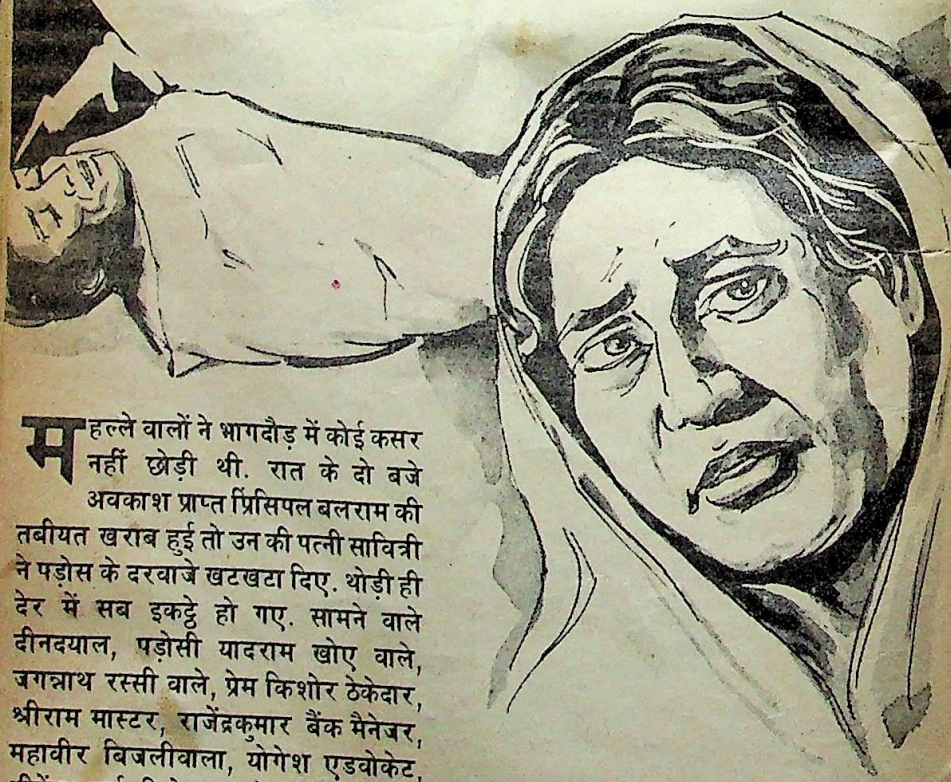

महल्ले वालों ने भागदौड़ में कोई कसर नहीं छोड़ी थी. रात के दो बजे अवकाश प्राप्त प्रिंसिपल बलराम की तबीयत खराब हुई तो उन की पत्नी सावित्री ने पड़ोस के दरवाजे खटखटा दिए. थोड़ी ही देर में सब इकट्ठे हो गए. सामने वाले दीनदयाल, पड़ोसी यादराम खोए वाले, जगन्नाथ रस्सी वाले, प्रेम किशोर ठेकेदार, श्रीराम मास्टर, राजेंद्रकुमार बैंक मैनेजर, महावीर बिजलीवाला, योगेश एडवोकेट, धीरेंद्र भाई सिनेमा वाले और परसादी चाटवाला—सभी आ गए.

महल्ले वालों के मन में पिछली घटना कौंध गई. अधिक समय नहीं हुआ था. पांच

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महीने पहले की बात थी. प्रिंसिपल साहब को अचानक सांस लेने में कठिनाई हुई थी आधी रात को. डाक्टर के परामर्श पर ही बलराम को मेडिकल कालिज पहुंचाया गया था. रोगी के पास रहने और पथ्य पहुंचाने की ड्यूटियां संभाल ली गई थीं. बेटेबेटियों को फोन और तार कर दिए गए थे. प्रिंसिपल बलराम बच गए थे और एक सप्ताह में हंसतेबोलते घर लौट आए थे.

तब उन के बड़े बेटे अधिशासी इंजीनियर रमेश ने कहा था, "पिताजी के गले में जरा सा कफ अटक गया था, मगर महल्ले वालों ने खामखां हमें तंग किया. कितना पैसा खराब हुआ हमारा?"

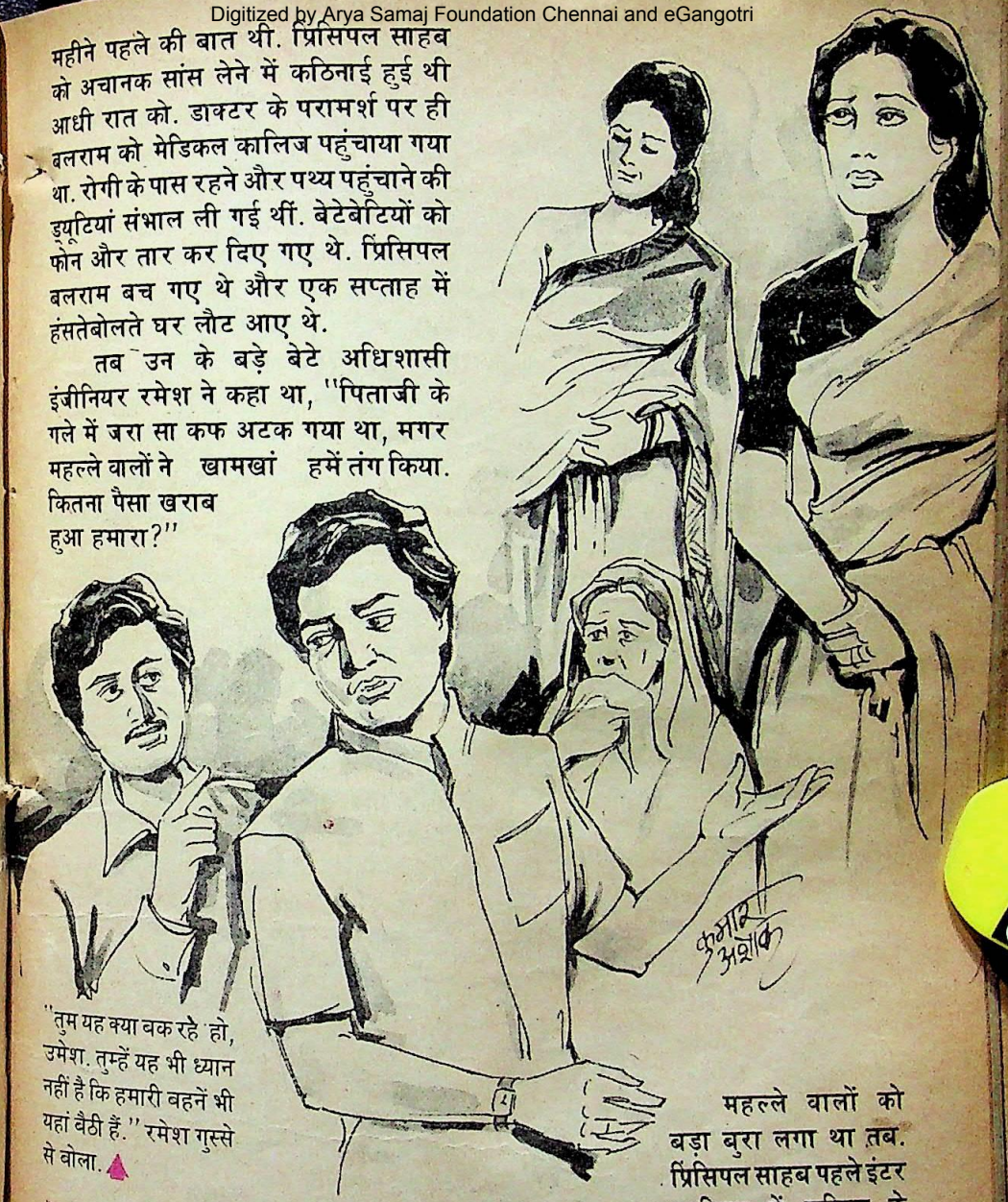

"तुम यह क्या बक रहे हो, उमेश. तुम्हें यह भी ध्यान नहीं है कि हमारी बहनें भी यहां बैठी हैं." रमेश गुस्से से बोला. ▲

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल बलराम की मृत्यु के बाद उन के बेटेबेटियों ने सारे घर को चील कौओं की तरह नोचखसोट डाला था. फिर भी ऐसा क्या था जो सावित्री दृढ़, प्रसन्न और निश्चित थी मानो कुछ हुआ ही नहीं.

महल्ले वालों को बड़ा बुरा लगा था तब. प्रिंसिपल साहब पहले इंटर कालिज में गणित के अध्यापक थे, फिर डिगरी कालिज में गणित के प्रवक्ता हुए. इस के बाद विभागाध्यक्ष, फिर प्रिंसिपल बने. विषय ही ऐसा था कि महल्ले का एक भी घर ऐसा न था जिस में कोई न कोई बलराम के कालिज में न पढ़ा हो.

अब भी वह बच्चों को पढ़ातेपढ़ाते ही समय काटते थे. एक ही दिशा में या विपरीत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिशाओं में जाने वाली रेलगाड़ियों के सवाल वह मौखिक निकाल देते थे. वह महल्ले वालों को उचित सलाह देते ही थे, चबूतरे पर बैठेबैठे खांसते भी रहते थे और महल्ले की गली पर निगाह भी रखते थे. बड़ोंबड़ों को डांट देते थे, लेकिन गलत काम होते नहीं देख सकते थे. महल्ले वालों को उन के होने से बड़ी तसल्ली थी. एक शिक्षित, अनुभवी, स्नेही और विश्वासपात्र आदमी उन का मार्गदर्शक बना हुआ था.

उन की पत्नी सारे महल्ले की मौसी थीं, सास और बहुएं सभी सावित्री को सम्मान देती थीं. किसी भी उत्सव या झमेले में बलराम और सावित्री के बिना पत्ता तक नहीं हिलता था. दुख और बीमारी में उन की सलाह से ही कोई कदम उठाया जाता था. बीमार बच्चों के सिरहाने बैठे रहना और तीमारदारी करना सावित्री का स्वभाव था.

दिन भर महल्ले के बच्चे प्रिंसिपल साहब के घर खेलते रहते थे. मतलब यह कि बलराम और सावित्री को कभी भी अपने परिवार का अभाव नहीं खला था. सारे महल्ले में उन का परिवार फैला हुआ था. फिर भी बड़े बेटे रमेश की वह टिप्पणी लोगों के दिलों के अंदर खरोंच लगा गई थी.

"क्या करना चाहिए?" प्रेमकिशोर ठेकेदार बोला.

"अरे, टैक्सी मंगवाते हैं और पहले की तरह ड्यूटियां संभालते हैं. अधिशासी इंजीनियर साहब नाराज होंगे तो हो जाएं. सावित्री मौसी और प्रिंसिपल साहब उन्हीं के नहीं हैं, हमारे भी हैं," यादराम खोए वाले ने कहा.

"फिर मैं उन्हें फोन और तार करता हूं." महावीर बिजलीवाला अपने घर की ओर मुड़ा.

"मैं टैक्सी मंगाता हूं," योगेश एडवोकेट पलटा.

तभी सावित्री आ कर बोलीं, "अभी तार और फोन करने की किसी को आवश्यकता नहीं हैं. पहले मेडिकल कालिज ले जाने की व्यवस्था करो."

टैक्सी आ गई. बलराम को संभालने के लिए लोग झुके तो जैसे बुझने से पहले दीपक भभक उठा. बलराम ने आंखें खोलीं. धीमे पर स्पष्ट स्वर में बोले, "हस्पताल ले जा कर अपने मन की कर लो आप लोग, मगर मैं अब रुकूंगा नहीं. सावित्री, किसी बेटेबेटी का इंतजार मत करना. महल्ले का कोई भी व्यक्ति मेरी चिता में आग लगा देगा. हो सके तो नुक्कड़ के परसादी से लगवाना. सारा महल्ला अपना घर है, सभी अपने बेटेबेटियां हैं. मैं सिद्धांतों के साथ स्वाभिमान से जी लिया, इतना काफी है. देखो सावित्री, मेरे बाद हिम्मत से काम लेना, जिस तरह अब तक लिया है."

क्षण भर बाद बलराम फिर बोले, "कोई जिंदगी भर साथसाथ चले, मौत आगेपीछे कर ही देती है."

और बलराम ने आंखें बंद कर लीं.

फिर बलराम की आंखें नहीं खुलीं. मेडीकल कालिज में भी कोई फर्क नहीं पड़ा और सुबह होतेहोते प्राणों का पक्षी उड़ गया. महल्ला बिलख उठा. सावित्री मौसी चीत्कार कर उठीं.

टैक्सी से लाश उतरते ही सावित्री ने दृढ़ता से इच्छा व्यक्त की, "बेटे रमेश व उमेश और बेटियों लक्ष्मी व पदमा को फोन और तार कर दो. मगर उन की बाट जोहने की आवश्यकता नहीं है," उस ने रुपए निकाले, "इतना बहुत है कि तुम लोग समय पर पहले भागदौड़ करते हो, खर्च की चिंता नहीं करते. किंतु इस काम में मैं किसी से रुपएपैसे की मदद नहीं लूंगी. आप लोग अर्थी का सामान एकत्र करें, मुखाग्नि परसादी देगा."

यादराम और महावीर कांटीकफन की सामग्री लेने चले गए. जगन्नाथ और प्रेमकिशोर लकड़ी, फूंस और कंडों का प्रबंध करने चल दिए. चाट का ठेला लगाने वाला युवक परसादी फूटफूट कर इस तरह रोने लगा, मानो उस का अपना बाप मर गया हो.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

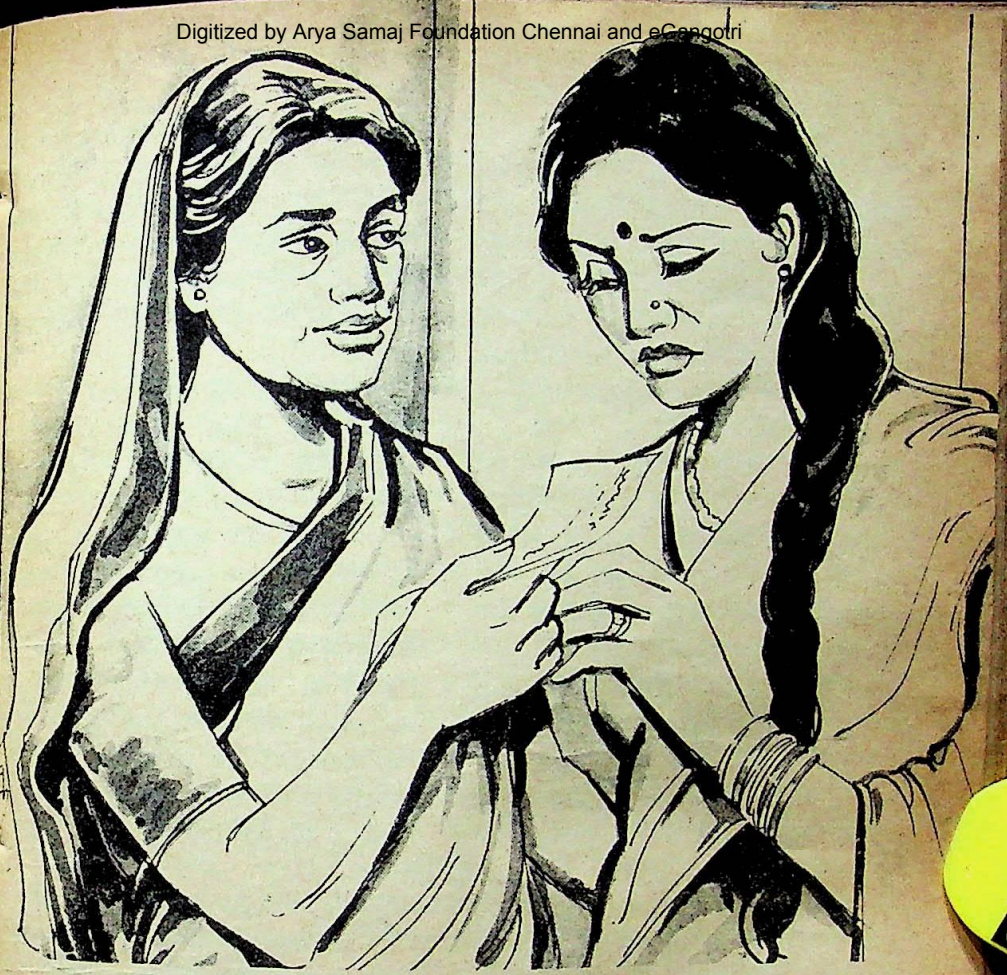

दोपहर से पहले ही दाह संस्कार हो गया. शाम तक बड़ा बेटा रमेश दिल्ली से और छोटा बेटा उमेश फरीदाबाद से सपरिवार आ गए. तीसरे दिन कानपुर से बड़ी बेटी लक्ष्मी और लखनऊ से छोटी बेटी पदमा आ गई.

महल्ले वाले सांध्य सूर्य की किरणों से सिमट गए और अपनेअपने काम में उलझ गए. इस बात से उन्हें बड़ी सांत्वना मिली कि किसी ने कुछ नहीं कहा खास तौर से चिता में आग देनें के संदर्भ में.

"मां, हमारा विश्वास तेरहवीं की दावत में नहीं है. हम सब की इच्छा है कि तेरह ब्राह्मण कर दिए जाएं, बस," रमेश ने बात आरंभ की.

"चलो बेटे, पिता की किसी लीक पर

"ले बेटी, रो मत." सावित्री पदमा की ओर बीस हजार का चैक बढ़ाते हुए बोली.

तो चले तुम लोग. मैं भी तेरहवीं की दावत में विश्वास नहीं रखती. हां, महल्ले के प्राथमिक स्कूल के लिए मैं तुम्हारे पिता के नाम पर 10 हजार रुपए दान अवश्य कर दूंगी. छतों की मरम्मत हो जाएगी, हाथ का नल लग जाएगा, कुछ पंखे आ जाएंगे और थोड़ा सा फरनीचर भी. सरकारी अनुदान का क्या भरोसा, कब आए? बच्चों को तकलीफ होती है."

"इस से तो. मां, तेरहवीं ही ठीक रहेगी. इतने रुपए तो तेरहवीं में भी नहीं उठेंगे."

"तो इस का अर्थ यह है कि व्यय के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आधार पर तुम लोगों ने तेरहवीं न करने का निर्णय लिया था, सिद्धांतों के आधार पर नहीं?" सावित्री ने लंबी सांस छोड़ी.

रमेश के पास कोई उत्तर नहीं था, उमेश भी चुप था और बहूबेटियां भी कुछ नहीं कह सकी थीं. रुपए तो मां ही खर्च कर रही थी. सावित्री के निर्णय में इतना आत्मविश्वास भरा हुआ था कि आदेश का पालन करने के अलावा कोई कुछ कर ही नहीं सकता था, शाम तक चिट्ठियां बंट गईं.

सावित्री की इच्छानुसार सब हो गया. 10 हजार रुपए के दान से प्राथमिक पाठशाला में प्राण पड़ गए. महल्ले में सावित्री का सम्मान दोगुना हो गया, प्रिंसिपल बलराम के प्रति श्रद्धावनत सिर और अधिक झुक गए.

दूर के रिश्तेदार विदा हो गए. दोनों दामाद भी छुट्टियां न होने के कारण चले गए. सावित्री सामान्य जीवन आरंभ करने से पूर्व अपने मायके वालों से मिलने और उन के दर्शन के शेष जीवन के लिए शक्ति मांगने चली गई.

सावित्री के घर से निकलते ही बेटेबेटियों की गोष्ठी शुरू हो गई. काफी देर तक कोई नहीं बोला.

आखिर रमेश ने मौन तोड़ा. उस ने अपराध बोध के स्वर में कहा, "हम लोग भी दूर के रिश्तेदारों की तरह ही हैं. पिताजी के अंतिम संस्कार में हमारा कोई हिस्सा नहीं रहा. फोन मिल जाने पर भी मैं ने दो गाड़ियां निकाल दीं. मैं यह भूल गया कि पिताजी ने हमारा कभी एहसान नहीं लिया. उन्हें अच्छीखासी पेंशन मिलती थी. बैंक में भी पर्याप्त रकम जमा है.

"मुझे ध्यान ही नहीं रहा कि पिताजी ने कई सुंदर और छात्रोपयोगी पुस्तकें लिखी हैं, जिन की रायल्टी उन्हें मिलती थी. मैं अनुमान नहीं लगा पाया कि मां भी पिताजी के पदचिह्नों पर चलेंगी और हम से कोई सहायता नहीं लेंगी."

"सब बेकार की बातें हैं", छोटा भाई उमेश बोला, "मैं भी देर से चला. यह सोच कर कि रमेश भैया पहले पहुंच जाएं और दाह संस्कार का खर्चा उठा लें. मेरी पत्नी किरण का भी यही विचार था," उमेश ने कहना जारी रखना, "और तुम ने भी, भैया, दो गाड़ियां इसी लिए निकाल दीं कि मैं पहले पहुंच जाऊं और सारा खर्च वहन करूं. भाभी अर्चना का निश्चय ही यही विचार रहा होगा."

"तुम यह क्या बक रहे हो, उमेश," रमेश को गुस्सा आ गया, "यह भी ध्यान नहीं है तुम्हें कि यहां हमारी बहनें भी बैठी हैं."

"कोई किसी से कम नहीं है," उमेश लापरवाही से बोला, "सब मतलब से आए हैं और मतलब से ही टिके हुए हैं. आज की संतान होती ही इतनी स्वार्थी है. मांबाप कितनी ही मुश्किलों से पढ़ाएं, शादी के बाद संतान बेगानी हो जाती है. हम दोनों इंजीनियर भी इस के अपवाद नहीं हैं. पिताजी के अंतिम दर्शन हम लोगों ने जानबूझ कर नहीं किए."

कड़वे सत्य की मार से सभी तिलमिला उठे. एकदूसरे को नजरों से तोलते रहे. सभी को जैसे सांप सूंघ गया. अंत में उमेश ही बोला, "मां से डरने की कोई आवश्यकता नहीं है. भारतीय मां होती ही ऐसी है. बेटा चाहे छाती में छुरा भोंक दे तो भी वह यही चिंता करेगी कि बेटे की कलाई में मोच तो नहीं आ गई? फिर पिताजी 75 वर्ष की उम्र में निरीह नहीं थे और मां 65 की हो कर निरीह नहीं हैं.

"पिताजी की इतनी रकम बैंक में है कि मां को जीवन भर हमारे सामने हाथ नहीं फैलाना पड़ेगा. उसे न बेटों के पैसे की आवश्यकता है, न बहुओं की सेवा की और न ही बेटियों से सहानुभूति की. इसलिए जो कुछ मन में घुमड़ रहा है, उसे निर्लज्जता के साथ बाहर निकालो. नहीं तो मां आ जाएंगी और हमें खाली हाथ लौटना पड़ेगा."

हार कर रमेश ने अपने मन की बात

.CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eG

कही, "जब तक पिताजी थे, घर सामान्य था. उन से परामर्श करने अध्यापक आते रहते थे, मेहमान भी आ कर ठहरते ही थे. इसी लिए सब चीजों का होना और रहना आवश्यक था. पर अब मां अकेली रहेंगी और कौन जाने कब तक रहेंगी. कम से कम एक वर्ष तो वह यहां से हिलेंगी भी नहीं, जब तक पिताजी की बरसी नहीं हो जाती. ऐसी दशा में..."

"ऐसी दशा में जो सामान यहां दिखाई दे रहा है, उस का यहां क्या होगा, यही न?" उमेश मुसकराया, "कोई नूरजहां भी बोलेगी या जहांगीर ही बकते जाएंगे?"

"उमेश का अनुमान सही है," रमेश ने बात आगे बढ़ाई, "दोनों कमरों, बरामदे और बैठक में चार सीलिंग फैन लगे हैं. फ्रिज और टी.वी. है, डाइनिंग टेबल हैं, बैठक में गोदरेज की मेज लगी है, मिक्सी है, दोदो डबलबेड हैं, तीनतीन घड़ियां हैं, सिलाई मशीन है, टेबल फैन हैं, कूलर हैं, दो सेफ हैं. फिर यह सब तो दिखाई पड़ रहा है..."

"मां से ही पूछ लेंगे. वह सब कुछ सामने पटक देंगी," उमेश ने अंगड़ाई ली.

"भैया, आप कुछ ले जाओगे तो हम भी मां से कुछ न कुछ मांग ही लेंगे," लक्ष्मी ने पदमा की ओर ताका.

"मैं तो सब से अंत में जाऊंगी," पदमा बोली, "मुझे जाने की कोई जल्दी नहीं है. दोनों भैया और बड़ी बहन जो चाहें, सो ले जाएं. मां मुझे घाटे में नहीं रहने देंगी."

"फिर ठीक है. मैं कल जाऊंगा. इसलिए आज रात को मां से बात करूंगा, मकान और भविष्य निधि को इस समय नहीं छेड़ेंगे," रमेश ने गोष्ठी विसर्जन की मुद्रा में कहा.

"अरे, मां से क्या पूछना," उमेश उठ खड़ा हुआ, "उस ने तो हमेशा ही दिया है. आप को सीलिंग फैन ले जाना है तो बाजार से प्लास और पेचकस ले आओ. मैं चारों पंखे खोल दूंगा. जिसे चाहो, ले जाना. मैं खूंटियां और तसवीरें भी उतार दूंगा. देखते नहीं, कितनी खूबसूरत हैं. असल में पिताजी को

आगोश

बात ही कुछ और
है आगोश-ए-यार की,
वरना तो कम कहां थीं
आबादियां बसर के लिए.
–'अदा' देहलवी

खूबसूरत चीजें लाने का बड़ा शौक था. चाहे घर का निर्जीव सामान हो या हमारी मां और पत्नियों जैसे सजीव प्राणी."

मां

"मैं कल जा रहा हूं," रमेश ने रात के 10 बजे करवट बदली.

"अच्छा," सावित्री ने निःश्वास छोड़ा.

"मां, तुझे याद तो होगा कि पिताजी ने हम दोनों भाइयों की शादियां अपने सिद्धांतों के अनुसार की थीं. नकद से तो मना किया ही था, दहेज में भी पलंग तक लेने से इनकार कर दिया था."

"अरे, खूब याद है, दोनों शादियों में 10-10, 12-12 हजार रुपया कर्ज हो गया था. कोई रिवाज नहीं किया था, किंतु बहुओं को साड़ियां आदि तो लानी ही पड़ी थीं. फिर भी समाज और रिश्तेदारों ने विश्वास नहीं किया था. उन के तीनों जीजा बहुत नाराज हुए थे और रिश्ता तोड़ने की धमकी दी थी. मगर आखिर में जब देखा कि वाकई कुछ नहीं लिया है तो उन्होंने क्षमा मांगी थी."

"वही तो, मां, फिर आवश्यक धन लगा कर बहनों की शादियां की थीं. मेरा आशय है कि हम नौकरी तो करते हैं,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अच्छाखासा कमाते भी हैं, मगर अब तक गृहस्थी का पूरा सामान नहीं जुटा पाए हैं..."

"अरे, इतनी बड़ी भूमिका की क्या आवश्यकता थी," सावित्री हंसी, "जो दिखाई दे, ले जाओ. किसी सेफ या बक्से में ताला नहीं लगा है. खोल लो और देख लो. बस, मैं इतना चाहती हूं कि तुम भाईबहनों में झगड़ा नहीं होना चाहिए."

सावित्री के करवट बदलते ही रमेश की नींद उड़ गई. वह मन ही मन ले जाने योग्य मोटीमोटी वस्तुओं का मूल्यांकन और विभाजन करने लगा.

महल्ले के स्त्रीपुरुषों ने द्वार पर खड़े हो कर और बहुओं ने किवाड़ों की ओट से देखा कि रमेश का परिवार मैटाडोर में विदा हो रहा है, अर्चना परचा हाथ में लिए निशान लगाती जा रही है और रमेश, उमेश तथा महल्ले के किशोर सामान उठाउठा कर रख रहे हैं. रखने का स्थान ड्राइवर बता रहा है. बीच में खाने की मेज उखड़ा हुए पलंग और फ्रिज रखा हुआ था. एक ओर किनारे पर दो फोल्डिंग पलंग रखे हैं. सहारे से खूंटियां, हैंगर और कागजों में लिपटी तसवीरें रखी थीं. उस के पास ही खुला हुआ सीलिंग फैन भी रखा था. दूसरे किनारे से पीतल की दो नादें, कूलर और गेहूं भरने का 22 गेजी चद्दर का ड्रम चमक रहा था. खाने की मेज पर दरी और गलीचा रखा था. कोनों में खाने की मेज की छः कुरसियां ठूंस दी गई थीं. तीनों बच्चों ने हाथों में बैट विकेट और गेंद पकड़ी हुई थीं.

रमेश और अर्चना ने सावित्री के चरण स्पर्श किए. तीनों बच्चों से बैट, विकेट और गेंद छीन कर उन से भी सावित्री के पैर छुवाए. सावित्री ने चिरपरिचित आशीषों की झड़ी लगा दी. उमेश, लक्ष्मी और पदमा ने भी एकदूसरे को अभिवादन किया. किंतु उन की निगाहें मैटाडोर पर लदे सामान पर ही टिकी थीं. बच्चों ने सावित्री को टाटा किया तो सावित्री ने रमेश को पैन दिया, "उन्हें अच्छे कलमों से लिखने का चाव था. एक तू ले जा."

रमेश ने कीमती और खूबसूरत पेन जेब में लगा लिया. वह मां के पास पैनों की संख्या जानना चाहता था, किंतु तभी उस की दृष्टि भरे मैटाडोर पर पड़ गई. और वह चुप रह गया. सहसा मैटाडोर का हार्न बजा. अर्चना ने साड़ी का पल्ला सिर पर किया, "मांजी, मुझे कुछ नहीं दोगी?"

"ठहर," सावित्री अंदर भागी और प्यारी सी कलाई घड़ी ला कर अर्चना को दे दी, "शादी की रजत जयंती पर उन्होंने ला कर दी थी मुझे."

अर्चना ने पल्ले से पूरा सिर ढक लिया.

मैटाडोर चला गया. सावित्री का शेष परिवार अंदर आ गया.

दूसरे दिन सुबह सावित्री के घर के सामने फिर मैटाडोर खड़ा था. महल्ले की स्थिति लगभग कल वाली ही थी. इस बार सावित्री की दोनों बेटियां लक्ष्मी और पदमा मैटाडोर में भरे सामान का मूल्यांकन कर रही थीं. परचे में निशान किरण लगा रही थी. मैटाडोर के बीच में प्रिंसिपल साहब के बैठने की गोदरेज की मेज और घूमने वाली कुरसी रखी हुई थी. एक और किनारे से डब्बे में बंद टी.वी. रखा था. टी.वी. के पास गेहूं भरने का 22 गेजी चद्दर का ड्रम चमक रहा था. कल की ही भांति खूंटियां, हैंगर और तसवीरें रखी थीं.

दूसरे किनारे पर खुला हुआ डबलबेड और सीलिंग फैन रखा था. पास ही मेज का पंखा भी रखा था. मिक्सी और सिलाई मशीन एक कोने में रखी थीं. मेज पर कैरमबोर्ड साफ नजर आ रहा था. मेज के नीचे एक गलीचा और गलीचे पर रेल, जहाज और गुड़िया जैसे चाबीदार खिलौने रखे हुए थे. एक बच्चे के हाथ में कैरम की गोटियों का डब्बा था और दूसरे बच्चे के हाथ में रंग फेंकने वाली पीतल की दो पिचकारियां थीं.

चलते समय उमेश और किरण ने बच्चों के साथ सावित्री के चरण स्पर्श किए तो सावित्री ने कल की भांति आशीर्वाद लुटा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिए. उस ने बच्चों को दुलारा, किरण का माथा चूमा और उमेश के सिर पर हाथ फेरा. उस ने एक आकर्षक पैन और प्रिंसिपल साहब द्वारा अपने लिए खरीदी हुई नई घड़ी उमेश को दी.

वह मैटाडोर भी चला गया. दोनों बेटियां घर के अंदर आ गईं. सावित्री बहुत देर तक दरवाजे पर खड़ी रही.

मां

"रमेश और उमेश ने तो दो छत के पंखों के अलावा कुछ भी नहीं छोड़ा. ऐसे गए हैं जैसे किरायेदार हों. तुम ने भी एक शब्द नहीं कहा. जिस ने जो चाहा उठा लिया." लक्ष्मी ने सावित्री से क्षोभ पूर्वक कहा, "मैं भी परसों चली जाऊंगी. वह कल लिवाने आ जाएंगे."

"सब उन्हीं का है और तू क्यों घबराती है. देख, मेज की घड़ी ले जा और स्टील के कितने बर्तन रखे हैं अलमारी में. दर्जनों चम्मचों, कटोरियां, गिलास, प्लेटें, थाल, डोंगे, जग और न जाने क्याक्या हैं. दो तो प्रेशर कुकर ही हैं. पता नहीं, क्या शौक था खरीदने का उन्हें. बड़ा प्यारा टी सैट रखा है स्टील का. 500 रुपए का लाए थे. एक बार भी तो उस से चाय नहीं पी."

"मां, बुरा न मानो तो एक बात कहूं?"

"कहो."

"पिताजी और मेरे ससुरजी के कदकाठी में कोई अंतर नहीं है. मैं ने देखा है कि कितने ही कपड़े सही और नए हैं. वह पहन लेंगे यदि..."

"अरी, बुरा क्या लगेगा, सब ले जा. अगर काम में ले सके तो मेरी दर्जनों साड़ियां हैं, नई भी हैं. मैं तो अब सफेद और सादी धोतियां पहनूंगी. कितनी ही साड़ियों की तो तहें भी नहीं खुली हैं. तीनचार तो शाल ही हैं. कितनी ही चादरें और गिलाफ रखे हैं. जो ले जा सके, ले जा, बेटी."

चलते समय लक्ष्मी बहुत रोई. सावित्री ने दामाद को सोने की अंगूठी पहना दी. लक्ष्मी के गले में सोने का पेंडिल डाल दिया. टाप्स की डिबिया हाथों में दे दी और

विवाह

पाशविक विकार की तृप्ति ही जब विवाह का उद्देश्य और उस का श्रेष्ठ उपयोग माना जाता है और उस तृप्ति के कुदरती परिणाम से बचने की इच्छा रखी जाती है, तब विवाह की सारी पवित्रता नष्ट हो जाती है. —महात्मा गांधी

बोली, "किसी बकसे में चांदी के 50 रुपए पड़े हैं. हर दीवाली पर वह चांदी के सिक्के खरीदा करते थे."

"मुझे पता है, मां." रोतेरोते भी लक्ष्मी की खुशी छिप न सकी. वह सावित्री के गले से बांहें हटा कर भंडार में घुसी और रुपए निकाल लाई.

महल्ले को पता भी नहीं लगा कि लक्ष्मी कब गई. दो रिकशे चुपचाप चले गए. बस, छोटी बेटी पदमा आश्चर्य से बचे असबाब का मूल्यांकन करती रह गई.

दो

दिन बाद छोटे दामाद भी आ गए. पदमा ने बड़ा धैर्य रखा. उसे घर में भारीभारी दो सेफों और एक छत के पंखे के अलावा कुछ भी नजर नहीं आ रहा था. विदा के समय वह सच्चे मन से दहाड़ें मारमार कर रो पड़ी.

"ले, बेटी, रो मत," पदमा ने देखा कि मां ने 20 हजार का चैक उस की ओर बढ़ा दिया था.

"धीरज का फल हमेशा मीठा होता है," पदमा ने मन ही मन कई बार दोहराया और खुशी में रोती हुई सावित्री से लिपट गई. महल्ले वालों को इस बार भी पता नहीं चला कि पदमा का एकमात्र रिकशा कब चला गया.

यादराम जब सुबह दुकान जा रहा था तो सावित्री ने उसे आवाज दी, "बेटा, कल एक राज और एक मजदूर का प्रबंध कर देना. फिर दो दिन बाद कलई वाले को बुला लाना. बाजार भी चलना है. खिलौने लाने हैं बच्चों के लिए. तसवीरें भी धीरेधीरे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आ जाएंगी. खूटियां और हैंगर भी चाहिए. छत के चार पंखों की तुरंत आवश्यकता है. जाने कहां सो जाएं बच्चे खेलतेखेलते. अब तो सारा घर खाली हो गया है न."

"मौसी, लगता है कुछ नहीं बचा."

"पगले, उन्होंने हाथ ही किसे लगाया है? न मुझे छुआ और न महापुरुषों की जीवनियों पर नजर डाली. बैठक में बैठ कर पहले की तरह ही पढ़ा करेंगे."

"मौसी, तुम्हें साथ चलने को किसी ने नहीं कहा?"

"कहा न, किसी ने नहीं छुआ मुझे?"

"मौसी, जिस घर में आवाज दोगी, उसी घर की बहू या बेटी तुम्हारी दो रोटियां डाल जाएंगी. नहीं तो जिस घर में कदम रखोगी, वही तुम्हें आदर देगा और..."

"गैस का चूल्हा भी किसी ने नहीं लिया और दीवार घड़ी भी छोड़ दी. मैं समयसमय पर सब कर लिया करूंगी. आज तो मैं सारे घर की सफाई कर लेती हूं."

"एक बात कहूं, मौसी. तुम कहो तो तुम्हारा घर किराए पर उठा दूं? तुम तो एक कमरे में रह लोगी. कम से कम 500 रुपए मासिक मिल जाएंगे."

"अरे, मुझे रुपयों की क्या कमी है? महल्ले में आएदिन शादीब्याह होते रहते हैं, बच्चों के जन्मदिन मनाए जाते हैं, मेहमान आते हैं तो जगह की कमी पड़ जाती है. अब मेरा घर हर काम के लिए रहेगा. महल्ले वालों को सुविधा हो जाएगी. मैं तो एक कोने में पड़ी रहूंगी."

"सच मौसी, तुम से इस महल्ले की रौनक है. मैं कल राज और मजदूर अवश्य बुला लाऊंगा."

यादराम को जैसे कुछ याद आया और वह अपने घर में घुस गया.

"दीपा," यादराम ने आवाज दी, "मेरी अच्छी बहन, जा, सावित्री मौसी का हाथ बंटा. वह घर को संभाल रही हैं. झपट्टे मारमार कर चीलकौओं ने अपने पंजों और चोंचों से सारे घर को नोचखसोट कर बुरा हाल कर दिया है."

सरिता

सरिता में विज्ञापन दीजिए
अपनी बिक्री बढ़ाइए

उच्च व मध्य वर्ग के 3,00,000 से भी अधिक धनी व समृद्ध परिवारों द्वारा खरीदी जाती है और इस के 80 लाख से भी अधिक पाठक हैं. यद्यपि 'सरिता' महिलाओं में विशेष रूप से लोकप्रिय है, पर परिवार का कोई भी सदस्य इसे पढ़े बिना नहीं छोड़ता.

यदि आप की निर्मित वस्तुएं एवं उत्पादन संपन्न परिवारों द्वारा खरीदे जाते हैं तो 'सरिता' में विज्ञापन दीजिए और बिक्री बढ़ाइए.

विज्ञापन दर अपेक्षाकृत कम व अन्य पत्रपत्रिकाओं से कहीं अधिक आकर्षक लिखें:

विज्ञापन व्यवस्थापक
सरिता रानी झांसी रोड. नई दिल्ली-55

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छू गए हो तुम

छू गए हो तुम मुझे
जैसे गुलाबों की छुअन !
याद की भीगी नदी
कुनमुनाने सी लगी है
बाजुओं में एक हलकी
कसमसाहट सी जगी है,
जिंदगी लगने लगी
जैसे सहर का आगमन!
फिर बसंती हो गई,
देह की अंगड़ाइयां,
रूप धन को कौन लेगा
हैं बेचती पुरबाइयां,
जागती है पास बैठी
बस रात भर मीठी चुभन!
छू गए हो तुम मुझे
जैसे गुलाबों की छुअन!

—लक्ष्मीनारायण 'शोभन'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आ जाएंगी
छत

हीरो

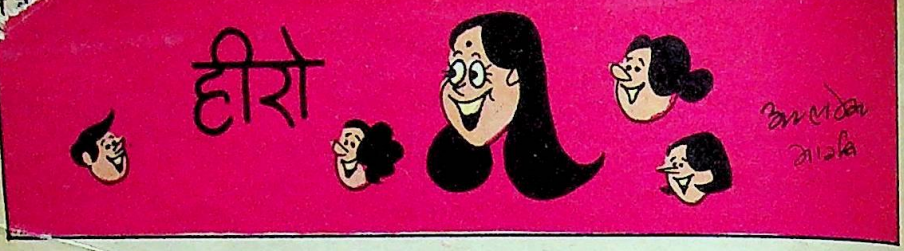

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीमतीजी, आपके पास तो बहुत सी शानदार साड़ियां हैं, एक मुझे दे दो. आखिर म'हल्लेकी इज्जत का सवाल है.

अगले दिन

सुबह से शाम होने को आई पर हीरोकुमार का कुछ पता नहीं.

देखो, लालमहोदय आ रहे हैं. चलो उन से पूछें.

वह तो होटल पांचसितारा में ठहरे थे. हम सारा दिन उन के साथ थे. अब उन के चले जाने के बाद लौटे हैं.

चलो इसी बहाने म'हल्ले की सफाई तो हो गई.

हाय! मेरा नया पेन!

हाय! मेरा फिल्म का चांस.

हाय! हमारी तैयारियां.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

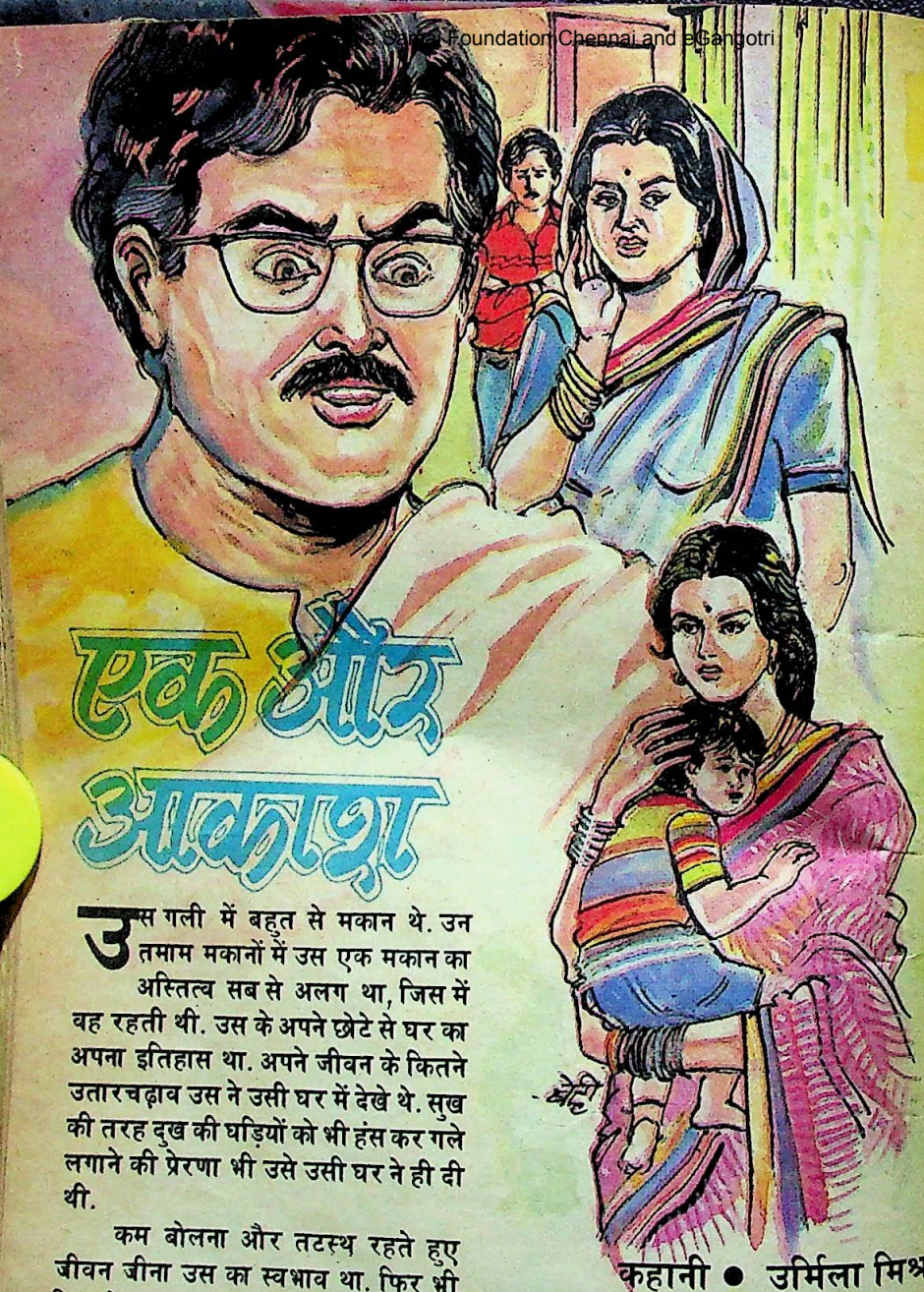

एक और आकाश

उस गली में बहुत से मकान थे. उन तमाम मकानों में उस एक मकान का अस्तित्व सब से अलग था, जिस में वह रहती थी. उस के अपने छोटे से घर का अपना इतिहास था. अपने जीवन के कितने उतारचढ़ाव उस ने उसी घर में देखे थे. सुख की तरह दुख की घड़ियों को भी हंस कर गले लगाने की प्रेरणा भी उसे उसी घर ने ही दी थी.

कम बोलना और तटस्थ रहते हुए जीवन जीना उस का स्वभाव था. फिर भी दिन हो या रात, दूसरों की मुसीबत में काम आने के लिए वह अवश्य पहुंच जाती थी. लोगों को आश्चर्य था कि अपने को विधवा बताने वाली उस शांति मूर्ति ने स्वयं के लिए कभी किसी से कोई सहायता नहीं चाही थी.

अपने एकमात्र पुत्र के साथ उस घर की छोटी सी दुनिया में खोए रह कर वह अपने

कहानी • उर्मिला मिश्र

संबंधों द्वारा अपने नाम को भी सार्थक करती रहती थी. उस का नाम ज्योति था और उस के बेटे का नाम प्रकाश था. ज्योति, जो कभी बुझने वाली ही थी कि उस में अंतर्निहित प्रकाश ने उसे नई जगमगाहट के साथ जलते रहने की प्रेरणा दे कर उसे बुझने से बचा लिया था.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तब से वह ज्योति अपने प्रकाश के साथ आलोकित थी. जीवन के एकाकीपन की भयावहता को वह अपने साहस और अपनी व्यस्तता के क्षणों में डुबो चुकी थी. प्यार, कर्तव्य और ममता के आंचल तले अपने बेटे के जीवन की रिक्तताओं को पूर्णता में बदलते रहना ही उस का एकमात्र उद्देश्य था.

उस दिन ज्योति के बच्चे की 12 वीं वर्षगांठ थी. पिछली सारी रात उस की बंद आंखों में गुजरे 11 वर्षों का पूरा जीवन आताजाता रहा था चित्रपट की तरह. उन

स्वार्थभरा प्रेम नासमझ लड़कियों को अकसर उस मोड़ पर ला खड़ा करता है, जहां से एक रास्ता मौत तो दूसरा तबाही की तरफ जाता है. लेकिन ज्योति ने ऐसा रास्ता तलाशा था, जिस पर चल कर वह सब के लिए प्रेरणा बन उठी.

ज्योति के मन में उमड़ती भावनाएं शब्दों के रूप में कागज पर बिखरने लगी थीं. 11 वर्ष की लंबी अवधि—मां के नाम यह उस का पहला पत्र था.

आवाजों, तानों, व्यंग्यों, कटाक्षों और विषम झंडावातों के क्षण मन में कोलाहल भरते रहे थे, जिन के पुल वह पार कर चुकी थी. उस जैसी युवतियों को समाज जो कुछ युगों से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सा आया था, वह उस ने भी पाया था. अंतर केवल इतना था कि उस ने समाज से पाया हुआ कोई उपहार स्वीकार नहीं किया था. वह चलती रही थी, अपने ही बनाए हुए रास्ते पर. उस के मन में समाज की परंपरागत घिनौनी तसवीर न थी. उसे तलाश थी उस साफसुथरे समाज की, जिस का आधार प्रतिशोध नहीं, मानवीय हो, उदार हो, न्यायप्रिय और स्वार्थरहित हो.

अपनी जिंदगी याद करतेकरते अनायास ज्योति का मन कहीं पीछे क्यों लौट चला था, वह स्वयं नहीं जान पाई थी. मन जहां जा कर ठहरा, वहां सब से पहला चित्र उस की अपनी मां का उभरा था. उसे बच्चे की वर्षगांठ मनाने की परंपरा और संस्कार उसी मां ने दिए थे. वह स्वयं उस का और उस के भाई का जन्मदिन एक त्योहार की तरह मनाती थी. याद करतेकरते मन में कुछ ऐसा भी कसक उठा जो आंखों के द्वारों से आंसू बन कर बहने के लिए आतुर हो उठा. उस ने आंखें पोंछ डालीं. यादों का सिलसिला चलता रहा...

काश, कहीं मां मिल जाती. केवल उस दिन के लिए ही मिल जाती. मां प्रकाश को भी उसी तरह आशीष देती जैसे उसे दिया करती थी. उसे विश्वास था कि बड़ेबूढ़ों के आशीर्वाद में कोई अदृश्य शक्ति होती है. भले ही उस की मां के आशीर्वाद उस के अपने जीवन में फलदायक न हो सके हों, परंतु वह अब जो कुछ भी थी, उस में मां के आशीर्वाद के प्रभाव का अंश, बचपन में मां से मिले संस्कारों का असर अवश्य रहा होगा.

मन रुक न सका. सुबह होतेहोते ज्योति कागजकलम ले कर बैठ गई थी. भावनाओं के मोती शब्दों के रूप में कागज पर बिखरने लगे थे. 11 वर्ष की लंबी अवधि में मां के नाम ज्योति का यह पहला पत्र था. उसे भरोसा था कि वह उस पत्र को लिखने के बाद पोस्ट अवश्य करेगी. हमेशा की तरह वह पत्र टुकड़ों में बदल जाए, अब वह ऐसा नहीं होने देगी.

वह लिखे जा रही थी और आंखें पोंछती जा रही थी. कैसी विडंबना थी कि आज उसे उस घर की धुंधली पड़ गई छवि को नए रूप में याद करना पड़ रहा था जो कभी उस का अपना घर भी था. उस में वह 16 वर्ष की आयु तक पलीबढ़ी, पढ़ीलिखी थी. उस की बनाई हुई पेंटिंगों से उस घर की बैठक की दीवारों की शोभा बढ़ी थी. उस घर के आंगन में उस के नन्हेनन्हे हाथों ने एक नन्हा सा आम का पौधा लगाया था.

वह कल्पना में अपना अतीत स्पष्ट देख रही थी. पत्र को अधूरा छोड़ कर होंठों के बीच कलम दबाए हुए आंसू भरी आंखों के साथ सोच रही थी. मां बहुत बूढ़ी हो चली थी, शायद अपनी उम्र से अधिक. पिता के चेहरे पर कुछ रेखाएं बढ़ जाने के बावजूद उन की आवाज में अब भी वही रोब था, शान थी और अपने ऊंचे खानदान में होने का अहंकार था. वह अपने समाज और खानदान में वयोवृद्ध सदस्य की तरह आदर पा रहे थे. भाई के सिर के बाल सफेद होने लगे थे. भाभी आ गई थीं. घर के आंगन में नन्हेमुन्ने भतीजेभतीजी खेल रहे थे.

सोच रही थी ज्योति. बैठक की दीवार पर लगी पेंटिंगें हटाई नहीं गई थीं. शायद इसलिए कि घर वालों की दृष्टि में वह भले ही मर चुकी हो, लेकिन उन पेंटिंगों के बहाने उस की याद जिंदा रही. नित्य उन की धूलगर्द झाड़तेपोंछते समय उसे जरूर याद किया जाता होगा. कभी आंगन में लगाया गया आम का पौधा बढ़तेबढ़ते वृक्ष का रूप ले चुका था. उस में फल आने लगे थे और प्रत्येक फल की मिठास में एक विशेष मिठास थी, उस की याद की, उस घर की बेटी की यादों की.

इस तरह वह पत्र पूरा हो चला था, जगहजगह आंखों से टपके आंसू की मुहरों के साथ. उस में ज्योति ने लिख कर अपने अब तक के जीवन की पुस्तक का एकएक पृष्ठ खोल कर रख दिया था, कहीं कोई दाग न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

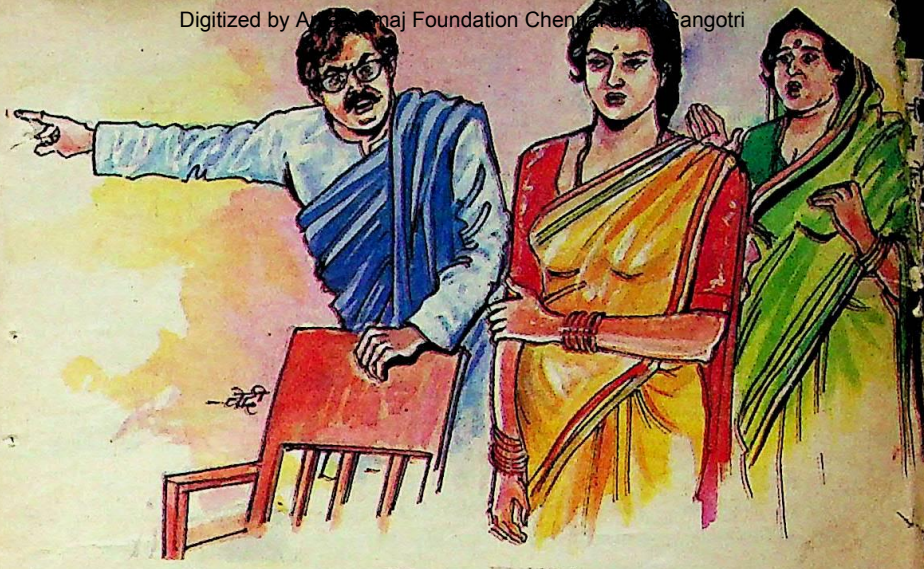

था. वह पत्र मात्र पत्र न था, कुछ सिद्धांतों का दस्तावेज था. उस के अपने आत्मविश्वास की प्रतिछवि था वह. उस में आह्वान था एक नए आकार का, जिस के तले नई सुबहें होती हों, नई रातें आती हों. उस के तले जीने वाला जीवन, जीवन कहे जाने योग्य हो. ऐसा जीवन, जो केवल अपने लिए न हो कर दूसरों के लिए भी हो.

ज्योति ने उस पत्र की प्रतिलिपि को अपने पास सहेज कर एक हितैषी द्वारा दूसरे शहर के डाकघर से भिजवा दिया था.

सात दिन बीत चुके थे. इस बीच ज्योति के मन के भीतर विचित्र अंतर्द्वंद्व चलता रहा था. कौन जाने उस के पत्र की प्रतिक्रिया घर वालों पर क्या हुई होगी. पत्र अब तक तो पहुंच चुका होगा. 33 किलोमीटर दूर स्थित दूसरे शहर के डाकघर से पत्र भेजने का अभिप्राय केवल इतना था कि वह पत्र का उत्तर आए बिना, अपना असली पता नहीं देना चाहती थी. जवाब के लिए भी उस ने दूसरे शहर में रहने वाले एक ऐसे सज्जन महेंद्र का पता दिया था, जो उसे असली पते पर पत्र भेज देते.

''खबरदार जो आज के बाद तू ने मुझे पिता कहा. निकल जा अभी इसी वक्त घर से, मैं तेरा काला मुंह नहीं देखना चाहता,'' पिता चिल्ला उठे थे. ▲

ज्योति एकएक दिन उंगलियों पर गिनती रही थी. अब तक तो पत्रोत्तर आ जाना चाहिए था. क्यों नहीं आया था? उस के पत्र ने घर की शांति तो नहीं भंग कर दी थी? नहीं, नहीं, ऐसा नहीं हो सकता. निश्चय ही उस के हाथ की लिखावट देखते ही उस की मां ने पत्र को चूम लिया होगा. फिर खूब रोई होगी. पिता को भलाबुरा सुनाया होगा. खुशामद की होगी कि जा कर बेटी को लिवा लाएं. पिता ने कहा होगा कि बेटी ने सौगंध दी है कि उसे केवल पत्रोत्तर चाहिए. उत्तर के स्थान पर कोई उसे लिवाने न आए. यहां आना या न आना, उस का अपना निर्णय होगा.

फिर भी पिता के मन में छटपटाहट जागी होगी कि चल कर देखें अपनी बेटी को. अनायास पिता का भूलाबिसरा वास्तविक रूप उस को याद आ गया था. नहीं, नहीं, पिता मुझ तक आएं यह उन की शान के विरुद्ध होगा. पत्र पढ़ कर जब मां रोई होगी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दर्दे दिल

कोई नहीं ऐसा,
दर्दे दिल को समझे
बैठे हैं मायूस कुन, हम
खामोश वर्षों से.
—सुशीला ठाकुर

तब पिता की दबंग आवाज ने मां को डांट दिया होगा. परंतु वह खुद भी भावुक होने से न बच पाए होंगे.

मां के सो जाने के बाद उन्होंने भी लुकछिप कर एक बार फिर उस के पत्र को ढूंढ़ कर पढ़ने की कोशिश की होगी. आंखें भर आई होंगी तो इधरउधर ताका होगा कि कहीं कोई उन्हें रोते हुए देख तो नहीं रहा. मां ने पिता की इस कमजोरी को पहचान कर पहले ही वह पत्र ऐसी जगह रखा होगा, जहां वह चोरीछिपे ढूंढ़ कर पढ़ सकें क्योंकि सब के सामने उस पत्र को बारबार पढ़ना उन की मानप्रतिष्ठा के विरुद्ध होता और इस बात का प्रमाण होता कि वह हार रहे हैं.

ज्योति अनमनी सी नित्य बच्चों को पढ़ाने स्कूल जाती थी. घर लौट कर देखती थी कि कहीं पत्र तो नहीं आया. धीरेधीरे 10 दिन बीत गए थे और आशा पर निराशा की छाया छाने लगी थी.

और उस दिन रास्ते में वही हितैषी महेंद्र अचानक मिल गए थे. उन के हाथ में एक लिफाफा था. उस पर लिखी अपने पिता की लिखावट पहचानने में उसे एक पल भी न लगा था.

"बेटी, डाक से तुम तक पहुंचने में देर लगती, इसलिए मैं खुद ही पत्र ले कर चला आया.. खुश है न?" महेंद्र ने पत्र उसे थमाते हुए कहा.

स्वीकृति में सिर झुका दिया था ज्योति ने. होंठों से निकल गया था, "कोई मेरे बारे में पूछने घर से आया तो नहीं था?"

"नहीं, अभी तक तो नहीं आया. और आएगा भी तो तेरी बात मुझे याद है. घर के सब लोगों को भी बता दिया है. विश्वास रखना मुझ पर."

"धन्यवाद, दादा."

महेंद्र ने ज्योति के सिर पर हाथ फेरा. बहुत सालों बाद उस स्पर्श में उसे अपने मातापिता के हाथों के स्पर्श जैसी आत्मीयता मिली. पत्र पाने की खुशी में वह यह भी भूल गई कि वह स्कूल की ओर जा रही थी. तुरंत घर की ओर लौट पड़ी.

लिफाफा ज्यों का त्यों बंद था. मां के हाथों की लिखावट होती तो अब तक पत्र खुल चुका होता. परंतु पिता के हाथ की लिखावट ने ज्योति के मन में कुछ और प्रश्न उठा दिए थे क्योंकि अब तक वह पिता के प्रति अपनी भावनाओं पर नियंत्रण नहीं ला सकी थी. उस की दृष्टि में उस के दुखों के लिए वह खुद तो जिम्मेदार थी ही, परंतु उस के पिता भी कम जिम्मेदार न थे.

तो क्या उन्हीं कठोर पिता का हृदय पिघल गया है? मन थरथरा उठा. कहीं पिता ने अपने कटु शब्दों को तो फिर से नहीं दोहरा दिया था?

कांपते हाथों से ज्योति ने लिफाफा फाड़ा. पत्र निकाला. पढ़ने लगी. एकएक शब्द के साथ मन की पीड़ा पिघलपिघल कर आंखों के रास्ते बहने लगी. वह भीगती रही उस ममता और प्यार की बरसात में, जिसे वह कभी की खो चुकी थी.

ज्योति अगले दिन की प्रतीक्षा नहीं कर सकी थी और उसी समय उठ कर स्कूल के लिए चल दी थी. छुट्टी का आवेदन देने के साथसाथ डाकघर में जा कर तार भी दे आई थी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सांस की ताज़गी के लिए लौंग चबाना - यह गुर है सदियों पुराना

कहते हैं कि चीन देश के राजदरबार में, दरबारी अधिकारी बादशाह के सामने जाने से पहले लौंग चबाया करते थे ताकि सांस में ताज़गी और सुगंध आ जाए. यही लौंग आजकल प्रॉमिस टूथपेस्ट का सबसे महत्त्वपूर्ण अंश है. जब आप प्रॉमिस से ब्रश करते हैं तो चीन के दरबारियों, अधिकारियों की तरह सांस में सुगंधित ताज़गी भरते हैं. यह है लौंग के तेल का करिश्मा जो प्रॉमिस के बेजोड़ फ़ार्मूले के कारण, मुंह और सांस में बदबू फैलाने वाले कीटाणुओं को हाथोंहाथ लेता है और सांस में ताज़गी भर देता है. इसके अलावा लौंग के तेल के अन्य गुण, आपके दांतों के कोनों, छिद्रों में पहुँचकर उन सब कीटाणुओं को खदेड़ते हैं जो आपके दांतों की जड़ें काटने में लगे रहते हैं. इनसे छुटकारा पाकर दांत स्वस्थ, मज़बूत और चमकदार, और सांस ताज़गी से भरपूर, खुशबूदार. अब आप भी पूरे विश्वास के साथ किसी बादशाह या बेगम के दरबार में जा सकते हैं.

Promise

बलसारा — टूथपेस्ट विशेषज्ञ

लौंग के तेल की अद्भुत रचना–प्रॉमिस टूथपेस्ट

CHAITRA - B BLS 852 HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

झूठी तसल्ली

जो मनुष्य सुसंगत दिखाई देने के खातिर अपने मतों से चिपटे रहने का प्रयत्न करता है, वह अपनेआप को झूठी स्थिति में डाल देता है.

—महात्मा गांधी

वह रात भी वैसी ही अंधियारी रात थी, जैसी रात में ज्योति ने 11 वर्ष पूर्व अकेले यात्रा की थी. मांबाप और समाज के शब्दों में, अपने गर्भ में वह किसी का पाप लिए हुए थी और अनजानी मंजिल की ओर चली जा रही थी एक तिरस्कृता के रूप में. और उसी पाप के प्रतिफल के रूप में जनमे पुत्र के साथ वह वापस जा रही थी. उस रात जीवन एक अंधेरा बन कर उसे डस रहा था. इस रात वही जीवन सूरज बन कर उस के लिए नई सुबह लाने वाला था.

उस रात ज्योति अपने घर से ठुकरा दी गई थी. इस रात उस का अपने उसी घर में स्वागत होने वाला था. यह बात और थी कि उस स्वागत के लिए पहल स्वयं उस ने ही की थी क्योंकि उस ने अपना अतापता किसी को नहीं दिया था. अपने साहसी व्यक्तित्व के इस पहलू को वह केवल परिवार जनों के ही नहीं, पूरे समाज के सामने लाना चाहती थी यानी इस तरह घर से ठुकराई गई बेटियां मरती नहीं, बल्कि जिंदा रहती हैं पूरे आदरसम्मान और उज्ज्वल चरित्र के साथ.

ठुकराए जाने के बाद अपने पिता का घर छोड़ते समय के क्षण ज्योति को याद आए. मन में गहन पीड़ा और भय का समुद्र उफन रहा था. फिर भी उस ने निश्चय किया था कि वह मरेगी नहीं, वह जिएगी. वह अपने गर्भ में पल रहे भ्रूण को भी नष्ट नहीं करेगी. उसे जन्म देगी और पालपोस कर बड़ा करेगी. वह समाज के सामने खुद को लज्जित अनुभव कर के अपने बच्चे को हीन भावना का शिकार नहीं होने देगी. वह समाज के निकृष्ट पुरुष के चरित्रों के सामने इस बात का प्रमाण उपस्थित करेगी कि पुरुषों द्वारा छली गई युवतियों को भी उसी तरह जीने का अधिकार है, जिस तरह कुंआरियों या विवाहिताओं को. वह यह भी न जानना चाहेगी कि उस का प्रेमी जीवित है या मर गया. वह स्वयं को विधवा मान चुकी थी, केवल विधवा. किस की विधवा इस से उसे कोई मतलब नहीं था.

इस मानसिकता ने उस नींव का काम किया था, जिस पर उस के दृढ़ चरित्र का भवन और बच्चे का भविष्य खड़ा था. उस ने घरघर नौकरी की. पढ़ाई आगे बढ़ाई. बच्चे को पालतीपोसती रही. जिस ने उस के शरीर को छूने की कोशिश की, उस पर उस ने अपने शब्दों के ही ऐसे प्रहार किए कि वह भाग निकला. आत्मविश्वास बढ़ता गया और उस ने कुछ भलेबुजुर्ग लोगों को आप बीती सुना कर स्कूल में नौकरी पा ली. एक घर ढूंढ़ लिया और अब अपने महल्ले की इज्जतदार महिलाओं में वह जानी जाती थी.

ज्योति का अब तक का एकाकी जीवन उस के भविष्य की तैयारी थी. उस भविष्य की जिस के सहारे वह समाज के बीच रह सके और यह जता सके कि जिस समाज में उसे छलने वाले जैसे प्रेमी अपना मुंह छिपा कर रहते हैं, ग्लानि का बोझ सहने के बाद भी दुनिया के सामने हंसते हुए देखे जाते हैं, वहां उन के द्वारा ठुकराई हुई असफल प्रेमिकाएं भी अपने प्रेम के अनपेक्षित परिणाम पर आंसू न बहा कर उसे ऐसे वरदान का रूप दे सकती हैं, जो उन्हें तो स्वावलंबी बना ही देता है, साथ ही पुरुष को भी अपने चरित्र के उस घिनौने पक्ष के प्रति सोचने का मौका देता है.

उस एकाकीपन में ऐसे क्षण भी कम नहीं आए थे, जब ज्योति के लिए किसी पुरुष का साथ अपरिहार्य महसूस होने लगा था. कई बार उस ने सोचा भी था कि इस समाज के कीचड़ में कुछ ऐसे कमल भी होंगे, जो उसे अपना लेंगे. कुछ ऐसे व्यक्तित्व भी उसे मिलेंगे, जिन में उस जैसी ठुकराई हुई लड़कियों के लिए चाहत होगी.

(शेष पृष्ठ 181 पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

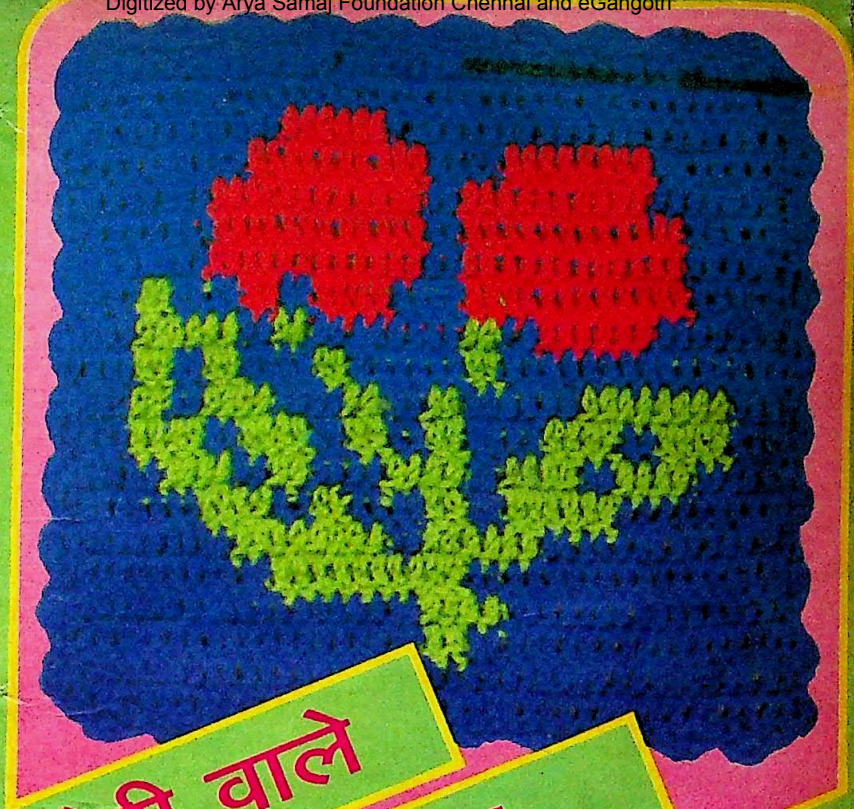

चेरी वाले कोस्टर बुनिए

चाय के कप, शरबत के गिलास या नाश्ते की प्लेटें रखने से पहले मेज पर बुने हुए कोस्टर बिछाने से मेज का सौंदर्य तो बढ़ेगा ही, आप की मेज पर धब्बे भी नहीं पड़ेंगे. चित्र के अनुसार आप भी चेरी के नमूने वाले कोस्टर बुन सकती हैं.

नाप: प्रस्तुत कोस्टर लगभग 19 सें.मी. भुजा वाले वर्ग के बराबर बनेगा.

सामग्री: लाल, नीले तथा तोतिया हरे रंगों में बुनाई वाले मोटे धागे या पतली ऊन और 11 नं. का क्रोशिया.

संकेत चिह्न: चे.—चेन, ट्रे—ट्रेबल, नी.—नीला रंग, ला.—लाल रंग, ह.—तोतिया हरा रंग.

निर्देश: नी. से 40 चे. बनाएं. प्रत्येक पंक्ति की पहली ट्रे. के स्थान पर 2 चे. बनाते हुए 40-40 ट्रे. की 2 पंक्तियां बुनें. अगली 16 पंक्तियों में नीचे दिए गए विवरण के अनुसार नी., ला. तथा ह. लगाते हुए केवल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ट्रे. की पंक्तियों में चेरी का नमूना डालें. विवरण में रंग के साथ दी गई संख्या के बराबर ट्रे. बनाएं. एक पंक्ति सीधी ओर से तथा एक उलटी ओर से के क्रम में बनानी होंगी.

पहली पंक्ति: 22 नी., 6 ला. तथा 12 नी.

दूसरी पंक्ति: 10 नी., 10 ला., 4 नी., 8 ला. तथा 8. नी.

तीसरी पंक्ति: 8 नी., 10 ला., 2 नी., 12 ला. तथा 8 नी.

चौथी पंक्ति: 8 नी., 12 ला., 2 नी., 12 ला. तथा 6 नी.

पांचवीं पंक्ति: नी. पर नी. तथा ला. पर ला.

छठी पंक्ति: 4 नी., 2 ह., 4 नी., 2 ला., 2 नी., 4 ला., 4 नी., 12 ला. तथा 6 नी.

सातवीं पंक्ति: 8 नी., 6 ला., 2 नी., 2 ह., 8 नी., 2 ह., 2 नी., 6 ह. तथा 4 नी.

आठवीं पंक्ति: 4 नी., 2 ह., 2 नी., 2 ह., 4 नी., 2 ह., 6 नी., 2 ह. तथा 16 नी.

नौवीं पंक्ति: 4 नी., 8 ह., 6 नी., 2 ह., 2 नी., 2 ह., 4 नी., 4 ह., 2 नी., 2 ह. तथा 4 नी.

दसवीं पंक्ति: 4 नी., 4 ह., 2 नी., 4 ह., (2 नी., 2 ह.) 2 बार, 4 नी., 4 ह., 2 नी., 4 ह. तथा 4 नी.

ग्यारहवीं पंक्ति: 6 नी., (4 ह., 2 नी.) 2 बार, 4 ह., 4 नी., 2 ह., 2 नी., 4 ह. तथा 6 नी.

बारहवीं पंक्ति: 8 नी., 4 ह., 2 नी., 2 ह., 4 नी., 2 ह., 2 नी., 6 ह. तथा 10 नी.

तेरहवीं पंक्ति: 14 नी., 6 ह., 2 नी., 8 ह. तथा 10 नी.

चौदहवीं पंक्ति: 12 नी., 10 ह. तथा 18 नी.

पंदरहवीं पंक्ति: 16 नी., 4 ह. तथा 20 नी.

सोलहवीं पंक्ति: 20 नी., 2 ह. तथा 18 नी.

अगली दो पंक्तियां नी. से 40-40 ट्रे की और बना लें.

इस तरह बने चौक्बेर के चारों ओर नी. से 10-10 कंगूरे बनाने हैं. एक के लिए 3 चे. बनाएं. हुक से तीसरी चे. में 1 ट्रे बना कर आवश्यकतानुसार दूरी पर स्लिप स्टिच द्वारा जोड़ दें.

इसी प्रकार वांछित आकार में क्वेस्टर बुन लें.

-शालिनी •

रूस में गोबर गैस

भारत के गोबर गैस संयंत्रों की तरह रूस ने भी संयंत्र लगाने की सोची है. फर्क यही होगा कि वहां बायोगैस सूअरों के बाड़े से प्राप्त मल से बनाया जाएगा. गैस निकल जाने के बाद बचा हुआ मल खेतों में खाद के रूप में डाला जाएगा.

लैटविया के सरकारी फार्म में (जहां 24 हजार सूअर हैं) ऐसे संयंत्र लगाए जा रहे हैं, जिन से साढ़े 15 लाख घन मीटर गैस और लगभग एक लाख टन उर्वरक प्रतिवर्ष प्राप्त किया जा सकेगा.

तीन वर्ष पहले रूस के एक सरकारी फार्म तथा एक सामुदायिक फार्म में भी ऐसे प्रयोग हुए. उत्साहवर्धक परिणाम यह निकला कि संयंत्रों में लगाई गई पूंजी उत्पादित वस्तुओं के मूल्य में लगभग चार वर्ष में ही वापस प्राप्त हो जाती है, जबकि आम तौर पर कृषि योजनाओं में लगाई गई पूंजी लगभग 14 वर्षों में वापस मिलती है. एक और लाभ यह है कि इन संयंत्रों में गैस और उर्वरक का उत्पादन करने पर वातावरण भी दूषित नहीं होता है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रंगबिरंगा हाइनेक स्वेटर

रंगबिरंगी ऊन से बनाया गया अपने लाड़ले के लिए यह हाईनेक स्वेटर. इसे पहन कर आप का लाड़ला और भी खूबसूरत लगेगा. यह स्वेटर छः से सात वर्ष के बच्चे के लिए बनाया गया है. रंगों का चुनाव अपनी पसंद के अनुसार भी कर सकती हैं.

सामग्री: गहरी नीली ऊन 75 ग्राम, सफेद ऊन 75 ग्राम, लाल ऊन 50 ग्राम व हलकी फीरोजी ऊन 50 ग्राम, 12 व 10 नंबर की सलाइयां, 12 नंबर की गले वाली सलाई तथा स्वेटर सीने की सूई.

विधि: आगे का पल्ला: 12 नंबर की सलाई पर 80 फंदे गहरे नीले रंग मे डालें और 1 सी. 1. उ. बुनें, बार्डर की 24 पंक्तियां इसी प्रकार बुनें. अब 10 नंबर की सलाई पर सफेद ऊन लगा कर पूरी सलाई सीधी बुनते हुए 4 फंदे इसी सीधी सलाई में बढ़ा लें. अब फंदों की संख्या 84 हो गई. उलटी, पूरी सलाई उलटी बुने. फिर ग्राफ के अनुसार रंग बदलते हुए पूरी 11 धारियां बुनें.

12 वीं धारी के शुरू में दोनों ओर 5-5 फंदे बंद करें. फिर 3-3 फंदे बंद करें. उस के बाद प्रत्येक सलाई में दोनों ओर 1-1 फंदे बंद करती जाएं. जब सलाई पर 40 फंदे बच जाएं तो उसे सलाई पर ही रहने दें. इस प्रकार आप का अगला पल्ला बन गया.

इसी प्रकार आप पिछला पल्ला भी बुन लें.

बाजू: 12 नंबर की सलाई पर 40 फंदे गहरे नीले रंग से डाल कर 1 सी. एक उ. का बार्डर बनाते हुए 20 पंक्तियां बुनें. फिर 10 नंबर की सलाई पर सफेद ऊन लगा कर, पूरी सलाई सीधी बुनते हुए 9 फंदे बढ़ा लें. अब फंदों की संख्या 49 हो गई.

ग्राफ के अनुसार पूरी बाजू पर नमूना बनाते हुए प्रत्येक 9 वीं सलाई पर दोनों ओर 1-1 फंदा बढ़ा लें तथा 11 धारियां बुनें. 12 वीं धारी के शुरू में दोनों क्रमशः 5-5, 3-3 फंदे घटाएं. फिर दोनों ओर 1-1 फंदे बंद कर के पल्ले के बराबर मुड़ढा बनाएं.

इसी प्रकार एक और बाजू बनाएं.

गला: अब दोनों पल्लों तथा बाजुओं को गले वाली सलाई पर इस प्रकार चढ़ाएं—पल्ला, बाजू, पल्ला, फिर बाजू. फिर इन फंदों से थोड़े (लगभग 12) फंदे कम कर के 1 सी. 1. उ. का बार्डर लगभग 12

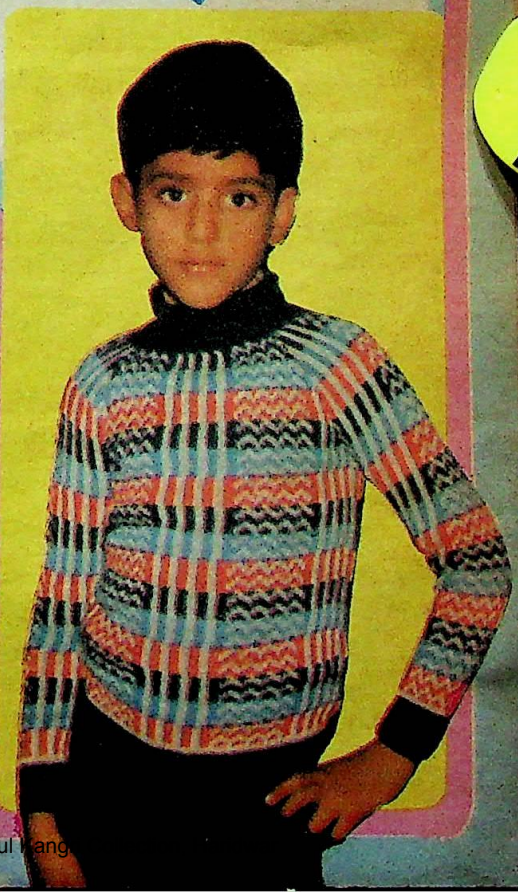

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

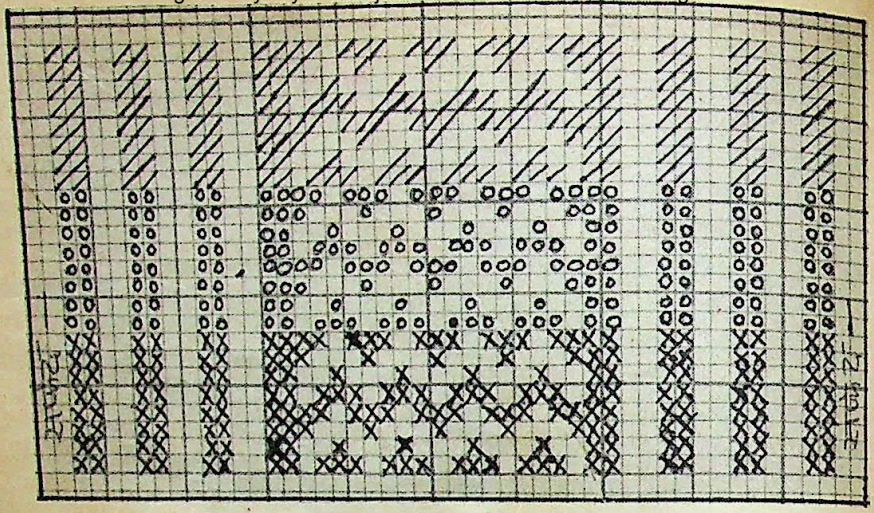

संकेत : × लाल, /गहरी नीली, ० फीरोजी, □ सफेद ▲

सेंटीमीटर बुनें. अब सभी फंदों को बंद कर दें.

सिलाई: रंगों की धारी पर धारी बैठाते हुए मुड़े जोड़ें. फिर बगल सी लें. इस तरह तैयार स्वेटर को उलटा कर के हलकी इस्तिरी करें. लीजिए, तैयार है आप के लाड़ले की रंगबिरंगा हाईनेक स्वेटर!

—लता श्रीवास्तव •

विश्व के सब से प्राचीन व हिंदू धर्म का आधार ग्रंथ

सरल, सुलभ भाषा में पहली बार प्रकाशित

ऋग्वेद

(ऋग्वेद की संपूर्ण 'शाकल संहिता' का हिंदी भाषांतर)

भाषांतरकार :

डा. गंगासहाय शर्मा एम.ए. (संस्कृत), पीएच.डी. व्याकरणाचार्य

वेद में क्या है, क्या नहीं है, दूसरों से न सुन कर स्वयं पढ़िए. यह वही वेद है जो आज तक एक गोपनीय विधा रहा है और जिस के लिए शास्त्र कहते हैं कि शूद्र के कान में यदि इस का एक अक्षर भी पड़ जाए तो उस के कान में पिघला सीसा भर देना चाहिए.

हर हिंदू परिवार के लिए आवश्यक

मूल्य रु. 85 डाक व्यय 10/- अतिरिक्त

पूरा मूल्य अग्रिम भेजने पर डाक व्यय केवल 5 रुपए

प्राप्य : दिल्ली बुक कंपनी, एम/12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001

VV/DBC-172

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वेरका

देसी घी

100% शुद्ध

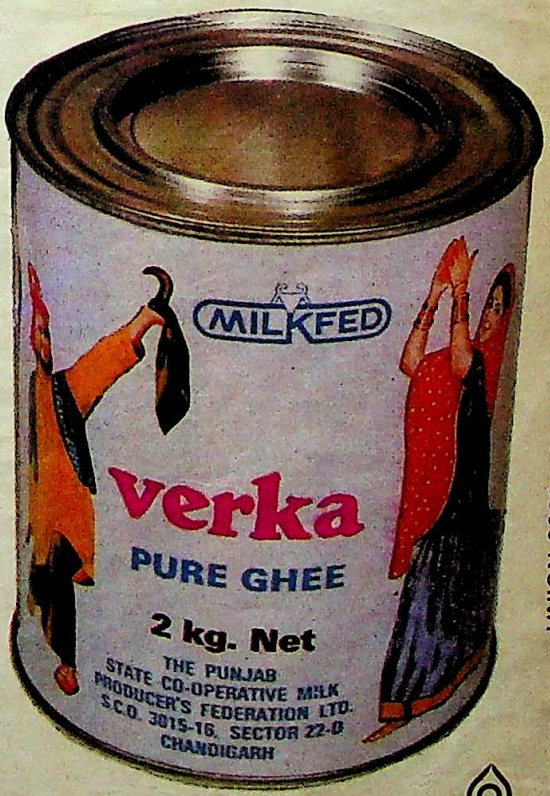

वेरका देसी घी। स्वाद, शुद्धता व उत्तमता में लाजवाब। वेरका के बिना आपका भोजन अधूरा है।

मिल्कफ़ैड का एक उत्तम उत्पादन

MILKFED

दी पंजाब स्टेट कोआप्रेटिव मिल्क प्रोड्यूसर्ज़ फेडरेशन लिमिटेड, एस० सी० ओ० न० 3015-16 सैक्टर 22-डी, चण्डीगढ़ -160 022

OPERATION FLOOD

UNION-2288

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ननमुन

- पंकज गोस्वामी -

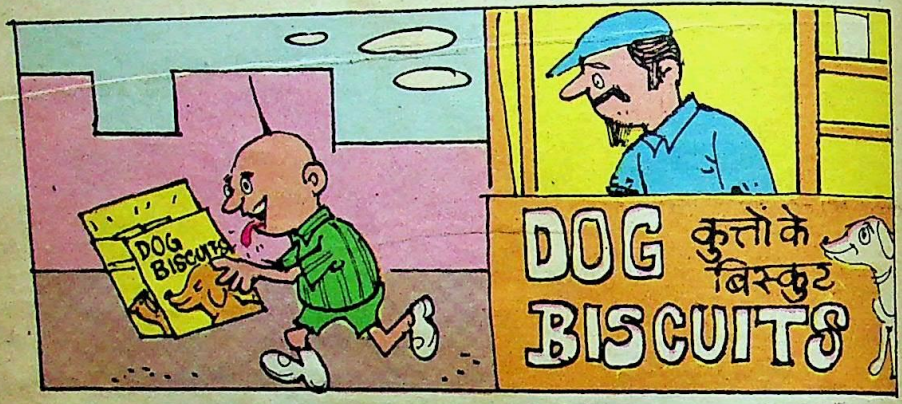

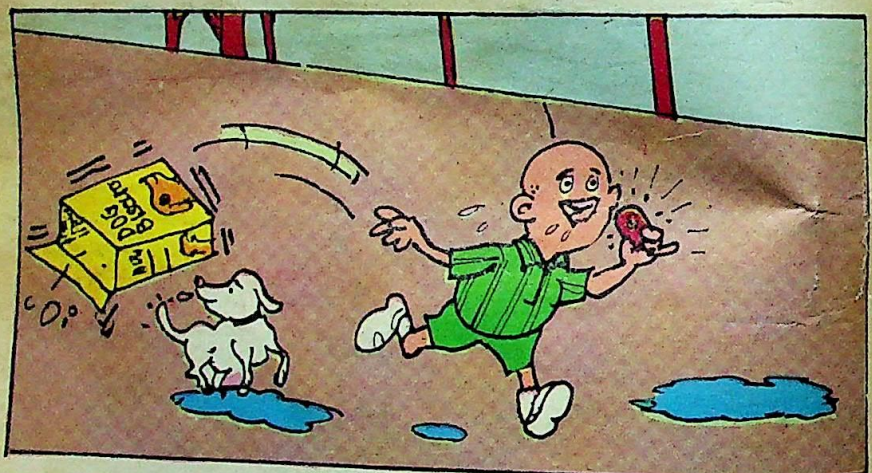

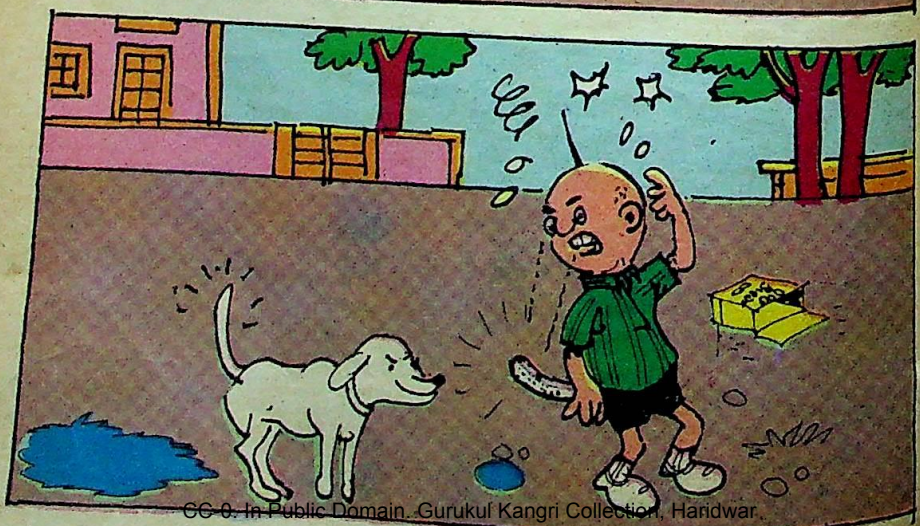

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं हूं घुड़सवार

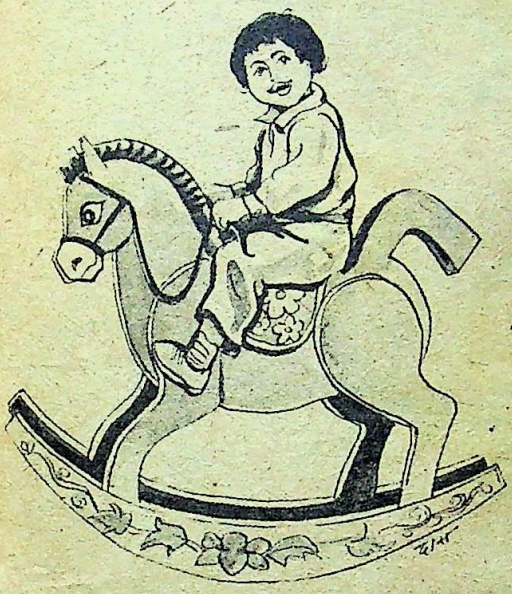

मैं हूं घुड़सवार मतवाला
मेरा घोड़ा है ईरानी.
कुदककुदक कर यह चलता है,
इस की चाल बड़ी मस्तानी.
जब यह सैर कराता मुझ को,
लगती हवा बहुत ही सुहानी.
सदा मानता बात यह मेरी,
करता नहीं कभी मनमानी.
उस के झाड़ दुलत्ती मारे,
करे जो इस के संग शैतानी.

—रावेंद्रकुमार 'रवि'

नाम बताओ

इन चित्रित जीव-जन्तुओं के नाम बताओ.

उत्तर:- 1-दूकवा. 2-सारस. 3-शुतुरमुर्ग. 4-कौवी. 5-मुरगी. 6-मछली.

बताओ तो जानें

ये सींग किन जानवरों के हैं? बताओ तो जानें.

उत्तर:- 1-खिराक. 2-बारहसिंगा. 3-गायव 4-गेंडा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

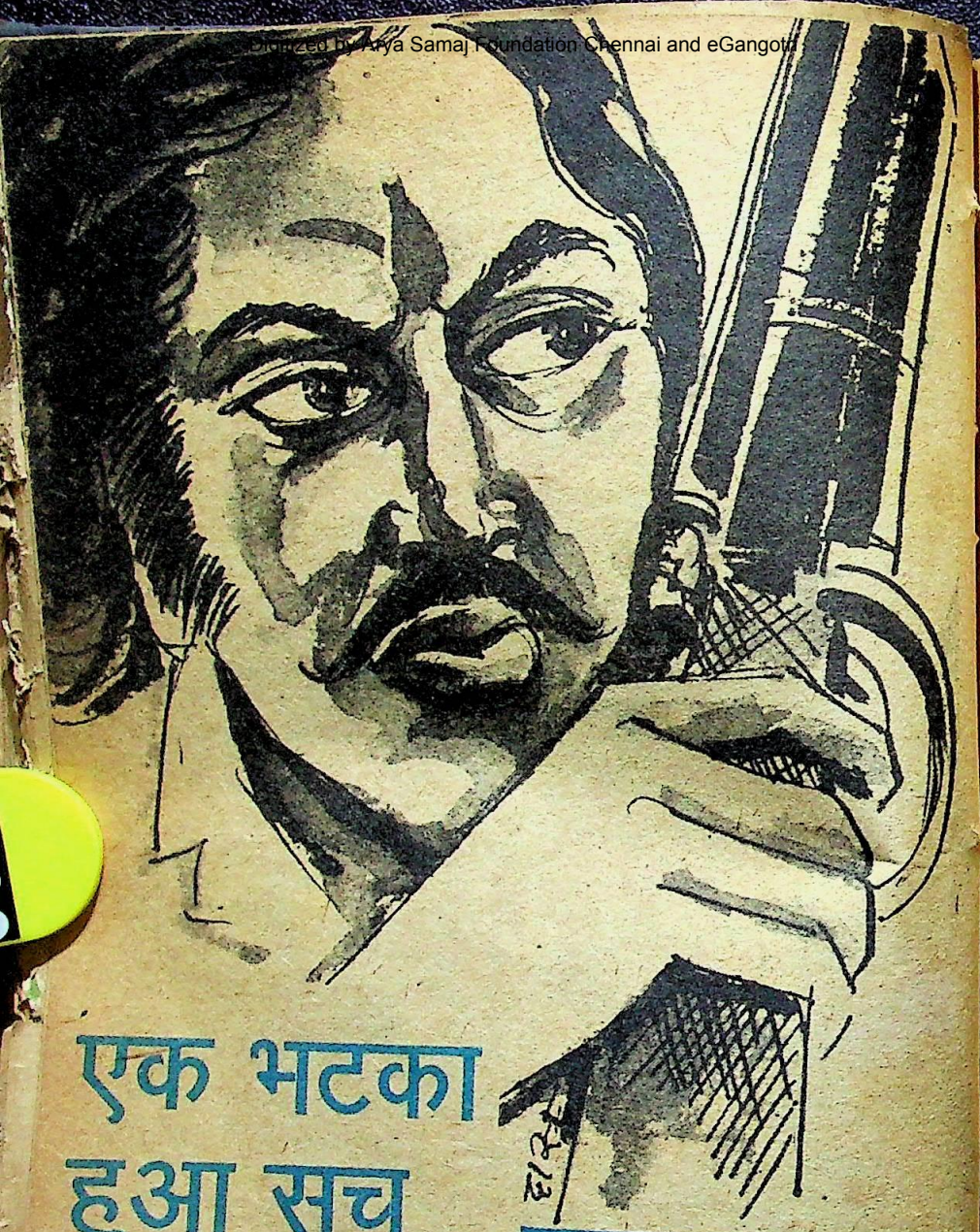

एक भटका हुआ सच

कहानी • निर्मला वाजपेयी

सरिता, 20 साल पहले,
फरवरी (प्रथम) 1968

कहीं दूर नदी के उस पार पुराने वृक्षों से भरी ऊबड़खाबड़ धरती. कहीं-कहीं पर लालपीले जंगली फूलों के गंधहीन पेड़पौधे. पैरों को चीर कर रख देने वाली ऊंचीऊंची, न जाने कौन सी कंटीली घास. ऊंची चट्टान की फैली सी चोटी पर क्रमशः मटमैली होती जाती सूरज की लाली. और इसी वीरान धूमिल अंचल के कुछ आगे नदी का लंबाचौड़ा पुल. पुल पर जगमगाते बल्ब जो पीछे फैले बीहड़ वीरान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अर्चना को बेतहाशा चाहने वाला सुमंत उसे हासिल करने के लिए मर्यादा की सभी सीमाओं को लांघ गया था. उस के प्रति गहरी नफरत लिए पलपल सुलगती अर्चना अवसर मिलने पर भी उस से बदला क्यों नहीं ले पाई?

और भयावह जंगल की भयपूर्ण मानसिक दुर्बलता को वहन करते हैं – काटते से हैं.तीसरे पहर के पहले ही अंधेरा झुक आया है. नदी के बहते जाने की अनवरत आवाज, पीछे से गीदड़ों और सियारों का 'हूहू' करता भयानक स्वर.

सन्नाटे को भेद कर एक आवाज वातावरण में फैलती है. यह जानवर की आवाज नहीं है. सारे अंचल में तहलका मचा देने वाले डाकू सुमंत के इस अनोखे संकेत पर घने जंगल के ऊंचेनीचे गड्ढों से अनेक आकृतियां उभरती हैं और क्षण भर में ही सरदार का छोटा सा टेंट 14 विशाल व भयावह आकृतियों से भर जाता है.

"कल बैरिस्टर वाणीमोहन के बंगले पर ठीक एक बजे..."

"जी," एकसाथ कई मस्तक झुकते हैं, फिर सीधे हो जाते हैं.

"लेकिन वीरा, धर्मेन और जवाहर ही

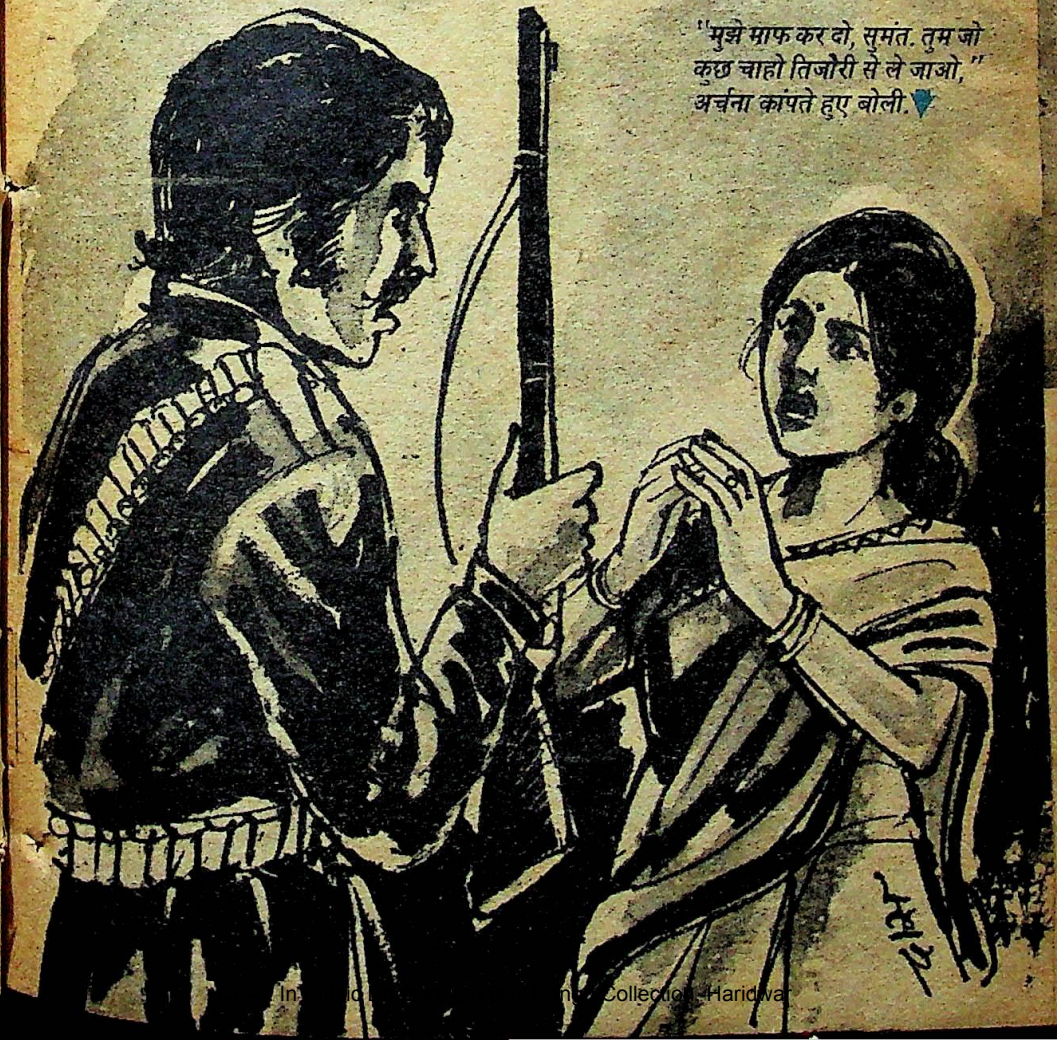

"मुझे माफ कर दो, सुमंत. तुम जो कुछ चाहो तिजोरी से ले जाओ," अर्चना कांपते हुए बोली.

In... Collection. Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरे साथ रहेंगे, बाकी मानसिंह के सर्राफे पर परसों ठीक दो बजे... पूरी टोली रहेगी, चेहरे बदले होंगे, समझे?"

"जी..." उसी भांति फिर कई आवाजें एकसाथ उभरती हैं, जिन में अदब था, विश्वास था और थी सहानुभूतिपूर्ण मैत्री की अपूर्व मिठास.

"जा सकते हो."

सरदार के आदेश के साथ ही टेंट तुरंत खाली हो जाता है और फिर सन्नाटा अपने पांव पसार देता है. सुमंत का मन जैसे निःशेष हो कर टूटता जाता है. अपने जीवन के पुरातन अभाव को वह किस वस्तु से भरने चला है? मन की वैसी स्थिति में यह जहरीला प्रश्न उस के अंतर के कोनकोने से टकरा उठता है. किसी नारी का आकंठ सुधापान? आज तक तो निराश स्वर उभरते चले आए हैं. माथे पर कितनी ही बूंदें छलक आई हैं. मन ही मन सुमंत कहता है, 'प्रभु मां की मौत के एक दिन पहले भी तुम्हारी याद कर के रोया था और आज फिर एक झंझा उठ खड़ी हुई है. मन का यह मोह क्षण भर का ही तो नहीं है? नहीं, भगवान, नहीं. जो मोह प्राणों में समा जाता है वह क्षणभंगुर कैसे होगा!'

सहसा सुमंत को लगता है कि जीभ जैसे मुंह में ही अकड़ गई है. क्षोभ, अभिमान और विस्मय से उस का गला भर आया है. एक बार आंखों में अतीत कांप उठता है.

"तुम फूलों पर मुग्ध हुई थीं, दुष्यंत पर भी हुई थीं. फिर अवसाद की छाया में कैसा छाती चीरने वाला था वह रुदन! फिर भी दुष्यंत के प्रति कोई आक्रोश नहीं, यह कैसी क्षमा थी तुम्हारी? क्या वह केवल नाटक था? तुम क्या केवल कारण ही थीं? अंतर उतना ही कोमल नहीं था क्या? तो भारतीय नारी की वह करुणा कहां लोप हो गई थी तुम्हारे वास्तविक अंतर से?"

'कालिज ग्रुप ड्रामा सोसाइटी' की शकुंतला, बैरिस्टर वाणीमोहन की इकलौती बेटी अर्चना, कर्नल सिन्हा के कैप्टन बेटे की भावी वधू. कितना दुख झेल कर बी.ए. की पढ़ाई कर रहा था सुमंत. दूसरे साथियों के साथ हंसतीखिलखिलाती अर्चना कालिज के बाहर आती तो न जाने क्यों नशा भर जाता था सुमंत की आंखों में. कितना मजाक उड़ाया था अर्चना ने सुमंत का और कितना रोया था वह अपनी गरीबी पर... बिफरबिफर कर... फूटफूट कर!

12 बजे जंगल का घना अंधकार. सुमंत अर्धनिद्रित अवस्था में है. मन में सौंदर्य के कई छोर आपस में इतने उलझने और फंसने लगते हैं कि एक सिरा खींचते ही सारे तंतु टूटटूट कर बिखर जाते हैं. न जाने किस सम्मोहन में उस की पलकें झपकती हैं, फिर बंद हो जाती हैं. और उन पलकों के अंदर एक स्वप्न भर आता है...

गुलमोहर की, रजनीगंधा की महकतीहंसती डालियों के बीच वही 'कालिज ग्रुप ड्रामा सोसाइटी' वाली शकुंतला. कितने करीब हैं अर्चना और सुमंत. उस की गति में कितनी लय है, कितनी थिरकन है. दोनों साथ हैं, बिलकुल साथ. एकांत पा कर सुमंत कहता है, "जानती हो मेरी मां के ख्वाब?"

"ऊं...हूं," अर्चना कहती है.

अर्चना के दुलार भरे उत्तर से सुमंत और करीब आ जाता है, "एक सुंदर सी तुम जैसी बहू पालकी से उतर कर चले तो पायलों की झनकार के साथसाथ रिमझिम वर्षा होने लगे. उस के हंसने पर फूल खिलें, खिलते जाएं, और जब वह उदास हो तो...तो जानती हो? नहीं, नहीं, वह उदास कभी न हो. मेरी मां यही सब तो चाहती थी. मैं ने उस की चाह पूरी नहीं की, कर ही नहीं सका. देखो, डाकू बन गया, धन ही धन है. अब तो नहीं हंसोगी मुझ पर?"

दोनों और करीब आते हैं, आते ही जाते हैं.

"मैं ने आज तक किसी की इज्जत नहीं लूटी, केवल पैसा लूटा है, बस. मां गरीबी में बिना दवा के दम तोड़ गई थीं. उस के जवान बेटे को बहू नहीं मिली और वह डाकू बन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"रोते नहीं बेटी. तेरे इस दुख की कहानी संसार में कोई भी नहीं जान पाएगा," मां ने धैर्य बंधाने का प्रयास किया.

गया, डाकू सुमंत. आज मेरे पास धन है, तुम भी हो. मां स्वर्ग में कितनी खुश होगी. फूल झरने लगे होंगे हरसिंगार के, लाल और सफेद महकते फूल. यहां आओ, जरा नजदीक... कितनी सुंदर, कितनी मोहक हो तुम!"

सुमंत के दोनों हाथ अर्चना की ओर बढ़ते हैं. सहसा एक झटके के साथ पलकें खुल जाती हैं, "अरे, कहां उड़ गई महकते हरसिंगार और स्वर्ग की कहानी?"

उठ बैठता है सुमंत.

"कितनी गहरी है यह खाई, पत्थर की नोक ने कंधे का सिरा ही छील दिया है," अपने से ही कहता है वह, "मां, तुम कभी नहीं हंसोगी. हरसिंगार कभी नहीं खिलेंगे, मां, तुम्हारा बेटा अपने जीवन की संपूर्ण तृप्ति भोग लेगा, फिर सदा के लिए अतृप्ति की वेदना ले कर जीता रहेगा."

सहसा पुल पर से तीन बजे पैसेंजर की गाड़ी झकझक करती निकल जाती है. सुमंत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उठ खड़ा होता है और टहलने लगता है. फिर तकिया खींच कर खोह के दूसरे सिरे पर जा कर सोने की कोशिश करता है. घंटे पर घंटे बीतते हैं. उलझन की रेशमी गांठें पड़ी हैं जो कसती ही जाती हैं, सुलझने का नाम ही नहीं लेतीं.

सुबह दिन आता है, फिर चला जाता है. अब रात का एक बज चुका है. तीन व्यक्तियों का साथ है सुमंत का. बैरिस्टर वाणीमोहन और पत्नी तारादेवी कठिन बंधनों में जकड़े हुए हैं. बाहर जवाहर के एक कठिन मुक्के से गोरखा चौकीदार बेहोश हो चुका है.बाकी दो व्यक्ति बैरिस्टर और पत्नी पर दुनालियां ताने सीधे पर निश्चिंत खड़े हैं. अर्चना के कमरे में सुमंत बिलकुल निश्चिंत हो कर घुसता है.

"याद आता है कुछ, अपना गरीब सहपाठी सुमंत?"

अर्चना कांपती है.

सुमंत फिर कहता है, "अब वह अपार संपत्ति का मालिक बन चुका है. डाकू सुमंत का नाम तो जरूर सुना होगा, उस की असली सूरत तो कभी अखबार में आई ही नहीं,अब देख लो. तुम ने गरीब सुमंत का बड़ा मजाक उड़ाया था, अर्चना. भूल गई वह सब न? याद है कुछ?"

"नहीं,नहीं,मुझे कुछ याद नहीं. तुम्हारी इतनी हिम्मत. तुम आए कैसे इस घर में? चौकीदार! अरे, कोई है?"

अर्चना कांपती हुई उठती है.

"कोई नहीं है, कोई भी नहीं. बस, अकेला मैं हूं यहां. यह एक ऐसी बदसूरत सचाई है जिस को झेला जा सकता है, काटा नहीं जा सकता. तुम्हें एक नशा होगा. हां, पति मिलने का नशा. तुम्हारी आंखें कैप्टन की कल्पना के आगे मुंदती ही नहीं होंगी, खुली ही रहती होंगी, तभी तो सोई नहीं हो अभी तक."

सुमंत की दो आंखें हंस दी हैं. वे दोनों आंखें हजार आंखें बन कर अर्चना के अंगों पर थिरक उठती हैं. स्वर में भावों की उद्दाम लालसा. सुमंत की सांसें भारी हो गई हैं. अर्चना के अंतर में स्मृतियों के कई टुकड़े तैरते चले जाते हैं.

"सुमंत! सुमंत! तुम ऐसा बदला लोगे, मैं ने कभी सोचा भी न था."

घबड़ाहट और भय से वह थरथर कांपती है. फिर गालों पर आक्रोश के बड़ेबड़े आंसू बहते चले आते हैं.

"तुम मेरे सहपाठी रहे हो, सुमंत. धर्मभाई के समान."

अर्चना का स्वर भय की गिड़गिड़ाहट से इतना भरा है कि सुमंत की सिक्त आंखों में हंसी की एक झलक फिर खेल जाती है.

"मैं ने अपनी गरीब थकती सांसों में दूषित जिंदगी भरने का प्रयत्न ही कब किया था, अर्चनादेवी! लेकिन पगपग पर बजहबेवजह किए गए अपमान को पुरुष का दंभ झेल नहीं पाता है."

सुमंत हंसता है तो हंसता ही जाता है. अर्चना भय से मानो अपनी ही परछाईं में लुप्त होने का प्रयत्न करती है.

"मुझे माफ कर दो, सुमंत! तुम जो कुछ चाहो, तिजोरी से ले जाओ. तुम्हें जितने धन की आवश्यकता होगी, डैडी दे देंगे."

वह हाथ जोड़ कर दीवार से सट कर खड़ी है, कांप रही है.

"अभी तक धन ही लूटा था, अर्चना, आज पहली बार किसी स्त्री पर डाका डालने आया हूं. विश्वास करो या न करो, लेकिन मैं ने अपने जीवन के हर क्षण में तुम्हें, केवल तुम्हें प्यार किया है. तब का सुमंत नहीं है जो तुम्हारी आंखों की घृणा और अवहेलना में ही जीता था. आज वह बहशी हो गया है, एक जंगली डाकू हो गया है."

और एक झटके के साथ कमरे में बिजली बंद कर के सुमंत ज्यों ही आगे बढ़ा कि अर्चना ने एक झटके से सुमंत के दाएं गाल पर अपने लंबे नाखून से एक गहरी रेखा खींच दी, "बदमाश कहीं का, कुत्ता!"

ताजे खून की एक लकीर बह आई थी और सुमंत के लबादे पर टपटप टपकती चली गई थी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"और कुछ?...तुम्हारा दिया हुआ यह स्मृतिचिह्न जीवनभर साथ रहेगा"

फिर खिड़की से आते चांद के मद्धिम प्रकाश में चिरप्रेयसी का मुंह ऐसा किया था सुमंत ने कि वह स्वयं भी अपनी आवाज नहीं सुन पाई थी. और अंधकार को भेद कर, गवाह बन कर चांद ने सुमंत और छटपटाती अर्चना की आकृतियों की सिर्फ रेखाएं ही देखी थीं. क्षण पर क्षण बीतते चले गए थे.

बेहोश सी अर्चना को वहीं छोड़, बत्ती जला कर एक कागज पर सुमंत कुछ लिखता रहा था. फिर एक क्षण उस को निहार कर, उस के मस्तक को चूम कर फुसफुसाया था सुमंत, "तृप्ति मिल गई है, अर्ची. इसी की वेदना ले कर जी लूंगा. डाकू हूं न, आदर्शों की कहानी नहीं जानता."

उस ने अर्चना के सिरहाने की मेज पर से एक अंगूठी उठा ली थी और वह लिखा हुआ कागज उस के तकिए के नीचे दबा कर बाहर चला आया था. साथियों ने देखा कि सरदार जीत के उत्साह से उछल नहीं रहा है. सरदार के गाल से टपकते लहू से साथी घबड़ा कर कुछ कहें कि एक स्वर गूंज उठा था, "एक तिनका भी नहीं उठाना है, लौटो."

गुफाओं में लौटतेलौटते जवाहर ने हिम्मत बांधी थी, "कुछ लगाऊं ला कर? घाव बड़ा है, पक जाएगा."

"यही चाहता हूं, जवाहर. पकेगा नहीं तो एक दिन निशान भी मिट जाएगा."

जवाहर स्वामी के प्राणहीन कोमल स्वर से ऐसा चौंका था मानो सर्पदंश हो गया हो. वह वैसे ही लौट पड़ा था.

उधर उस रात्रि के बाद बैरिस्टर के घर में मानो समय थम गया है. अब वहां का एकांत और वहां की खामोशी, सब कुछ मरघट सी लगती है. कोई किसी से कुछ नहीं कहता. चौकीदार को सुबह होने के बाद ही होश आया है. बैरिस्टर और पत्नी के अतिरिक्त इस दुर्घटना का नौकरों तक को पता नहीं. वे सुबह से ही आ कर कामधंधों में लग चुके हैं.

सचाई

हम से नाराज हो क्या
जो पूछा तो किस नाज से बोले,
तुम से किस ने कहा कि हम
कभी मेहरबां भी थे तुम पर.

—धर्मपाल सभरवाल

विद्वान बैरिस्टर ने पुलिस को रिपोर्ट लिखावाई है :

"5,000 रुपए कैश और कुछ जेवरात के साथ उन की बेटी की हीरे की एक अंगूठी भी, जिस पर 'ए' लिखा है, गायब है. बैरिस्टर की पुत्री अर्चना ने, जो बच कर छत पर चढ़ गई थी, चुपचाप, बिना शोर मचाए सरदार को तिजोरी खोलते और सामान निकालते देखा था. बैरिस्टर और उन की पत्नी रस्सियों से बंधे पड़े थे. अर्चना उस डाकू को खूब अच्छी तरह से पहचान सकती है क्योंकि निश्चितता के कारण डाकू ने अपने चेहरे से नकली चेहरे और नकाब को उतार दिया था. उस के गाल पर एक लंबा सा निशान भी होगा." फिर भी घर भर न जाने किस ऊहापोह में भटक रहा है, जैसे जीवन की इस विवशता से थक गया हो. पतिपत्नी मानो बस हवा के झोंकों से चल रहे हों.

'ओह, बेटी के कुंआरेपन की क्या यही नियति थी. वह तो रौंद डाली गई है, कुचली गई है. उसे किसी दूसरे की सुहागिन बनना है. क्या हो गया है यह सब? यह जिंदगी कितनी और कैसी घुटनभरी है! 'मां सोचती है, 'कहीं कोई दुष्परिणाम, हाय, हमारी बुनियाद क्या इतनी अस्तित्वहीन थी!"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रात घिर आई है. अधिकतर अपने कमरे में ही रहती है अर्चना. मन इतना थका है कि सोचने की शक्ति लड़खड़ा कर गिरनेगिरने को हो आती है. वह बिस्तर के बीच में सीधी हो कर लेटी है. दोनों हाथ कोहनी पर से मुड़ कर सिर के नीचे फंसे हैं. वह कुछ भी भूल नहीं पाती. शांति कतई नहीं है. उस का मन चीखचीख कर उसे रुलाता है. तकिए को खींच कर वह अपना सिर धुनती है, सहसा एक चिट खिसक आती है बाहर.

"क्या है? कुछ लिखा है? किस ने लिखा होगा? हाय? हाय !..." वह खुद ही कहती है. उस का पूरा शरीर पसीने से तर हो जाता है. चिट उठा कर वह पढ़ने लगती है. लिखा है...

"अर्चना !

मैं ने अतीत से केवल मेल ही नहीं किया, उसे निभाया भी है. उसी का साहस ले कर तुम्हारे पास आया था. जो कुछ वर्तमान में है, उस से जी नहीं भरता. तुम्हारी कटु अवहेलना पा कर तुम पर रीझ क्यों रहा हूं, तुम्हें भूल क्यों नहीं पाया? इस जीवन में अतृप्ति की स्थिरता न जाने कहां से फूटती चली गई है. तुम्हारी खुली आंखों में एक भयानक सपना बन कर ही मैं तुम्हारे पास चला आया था. फिर भी तुम्हारे उस तरह से भयकंपित हो कर रोने की याद, मेरे जैसे को भी हिला जाती है, कमजोर बना जाती है.

"तुम्हें समाज द्वारा पाना असंभव था, अर्चना. इसी लिए उस दिन तुम्हारी आंखों की असह्य घृणा पीते हुए जो अमानवीयता की थी, उस के लिए माफी नहीं मांगूंगा. फिर भी इतना जरूर कहूंगा कि जीवन में डाकू हो कर भी किसी नारी के सम्मुख इतनी भीषण घृणा का पात्र प्रथम और अंतिम बार ही बना था. मुझे माफ न करना, अर्चना. पुलिस गिरफ्त में जब कभी भी आऊं, तुम्हारी गवाही सुमंत को बड़े से बड़ा दंड दिलवा सकेगी. अखबारों में हमेशा उस के नकली चेहरे की ही फोटो निकली है. तुम्हारी अंगूठी साथ ही रखता हूं, पहन नहीं सकता. अगर पहनूं तो फौरन पकड़ा जाऊंगा. अच्छा, विदा!

डाकू सुमंत."

अर्चना पढ़ती है, बारबार पढ़ती है. फिर क्रोध से जल कर कागज की चिंदीचिंदी उड़ा देती है. और अंत में भयभीत हो कर सोचती रह जाती है, "यह क्या कर डाला मैं ने! इतनी भारी भूल, मम्मी को दिखाया भी नहीं."

अर्चना चुप ही रहती है अधिकतर. कभी सारी रात जाग कर बिताती है, कभी आधी. रात होती है, साथ ही खामोशी भी. अचानक कुछ सिसकियां उभरती हैं, क्या वह रोई है? नहीं तो! फिर उस का मन रोया होगा. एक सिसकी, फिर दूसरी, फिर सिसकियों का समूह उभरता चला आता है. ऐसा लगता है, मानो कमरा क्रंदन से भर उठा हो. मां द्वार थपथपाती है. फिर आवाज आती है, "अर्ची, बेटी अर्ची!

"हूं... मां, नींद आती है, सोऊंगी."

मां लौटती है. उस का मन भय के धक्कों से सिकुड़ता है, फिर कभीकभी आश्वस्त हो कर फैलता है. मां आ कर चुपचाप बिस्तर पर लुढ़क जाती है. बैरिस्टर पत्नी की तरफ आंखें बचा कर देखते हैं. फिर चुपके से आंखें बंद कर लेते हैं. सहसा वह फिर उठती है और पूजा घर में जा कर भगवान की मूर्ति के सामने कांपते हाथ जोड़ देती है, "अंतर्यामी! लज्जा तुम्हारी है, मेरी नहीं. जीवन भर तुम्हारी सेवा की है. इस दुर्घटना का कठोर परिणाम न देखना पड़े, मेरे देवता."

दूसरी ओर अर्चना रो रही है. उस के आंसू रुकते नहीं, उमड़ते ही चले आते हैं. उसे लज्जा आती है अपने पर और अपने अस्तित्व पर. अपनी बुझी भावनाओं में बुझी रह कर वह अपनी सीमाएं पहचानने का प्रयत्न करती है. उस का मन चटखचटख कर टूटता जाता है. दिन और रात, रात और दिन एक ही क्रम से आते हैं, और चले जाते हैं. वह कैसी मानसिक स्थितियों से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवन के रंग अजीब...

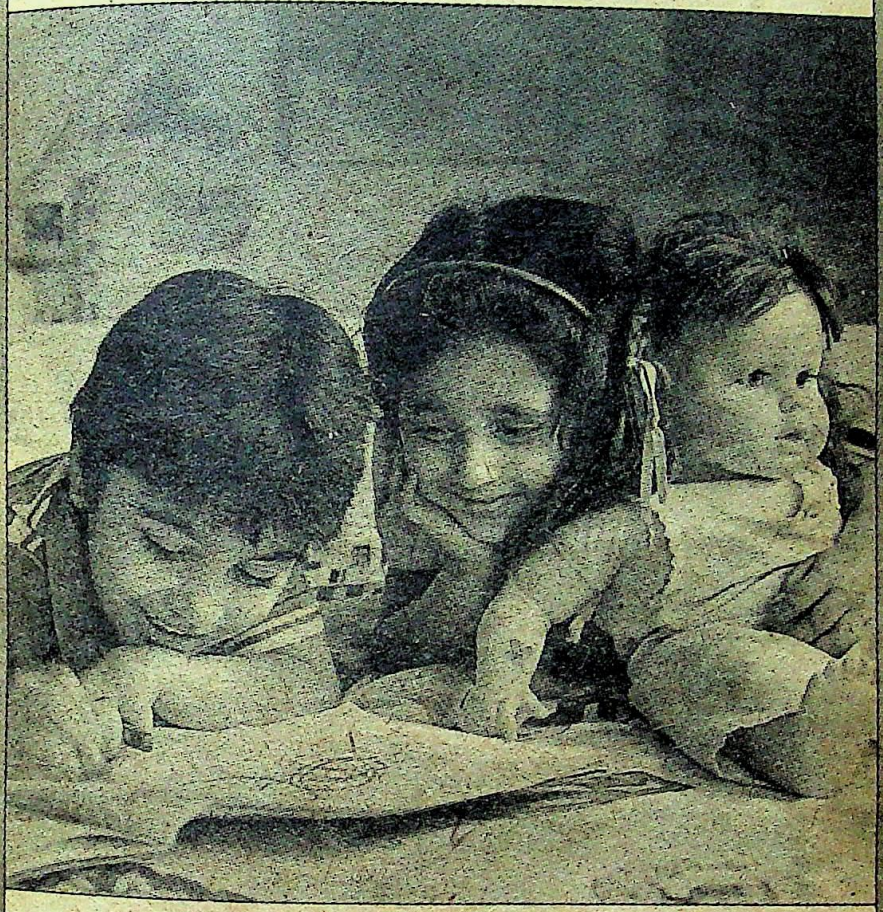

शुक्र है बोरोलीन करीब

सुगन्धित ऐन्टिसेप्टिक क्रीम

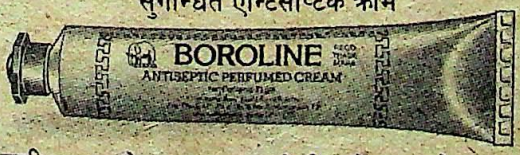

सूखी त्वचा और साधारण कटने-छिलने पर अनोखा असर

साठ साल पहले अव्वल आज भी अव्वल

बोरोलीन प्रसाधन सामग्री नहीं

जी डी फार्मास्युटिकल्स
कलकत्ता ७०००५३

Response 1033

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सनी! होम्योपैथिक शैम्पू है जो आपके बालों के लिए प्रकृति कामनीय उपहार प्रदान करती है : आर्निका – एक ऐसी बूटी जो बालों को साफ़ करने के साथ ही उन्हें पुष्ट भी बनाती है। बालों का झड़ना रोकती है, रूसी दूर करती है – सहज भाव से, क़ुदरती ढंग से।

और सबसे बड़ी बात यह है कि सनी का कंडिशनर बालों की उलझनें सुलझा देता है। इससे आपके बाल हो जाते हैं रेशमी मुलायम और संवारने में आसान। सनी की ख़ास फ्रांसीसी सुगंध आपका मन मोह लेगी।

सबसे अच्छे उपयोग के लिए पहले सिर में सनी आर्निका हेयर ऑयल की मालिश कीजिए। 1-2 घंटे तक छोड़े दीजिए। गीले बालों में सनी आर्निका शैम्पू लगाइए। झाग बनाइए और अच्छी तरह धो डालिए।

अपनाइए

सनी

आर्निका शैम्पू

और लाइए अपने बालों में फिर से निखार

सभी प्रमुख दुकानों पर उपलब्ध है

सनी आर्निका शैम्पू
चिय कंडिशनर

कोमल और क़ुदरती –
जो है देन केवल होम्योपैथी की

निर्माता
बेकसन होम्यो फार्मेसी प्राईवेट लिमिटेड
121, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज-I
नई दिल्ली-110 020.

R.K.SWANY/BHP/4925R

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुजरी है, इस का पूरा अनुमान तो वह भी नहीं लगा पाती. अजनबी आंखों से वह एकएक को देखती है. कहीं विश्वास नहीं, केवल घुटन, अंधकार और बिखराव.

अतीत में जो विषपान किया है, उस का असर अर्चना को जीने नहीं देता. उस के तन और मन का रेशारेशा आहत है. फिर भी वह बिखरना नहीं चाहती, सिमट आने का प्रयत्न करती है. कभी हंसती है तो हंसती ही जाती है, रोती है तो रोने का अंत ही नहीं आता. रात झींगुरों की आवाज में अजीब तरह से कंपित हो उठती है. वह कभी खिड़की की सलाखों पर सिर टिकाती है, कभी जोरजोर से सिर टकराने लगती है. कोई बताए आ कर कि अब आंखों में कौन सा भावी सपना भर कर वह जिंदा रहे? न जाने कैसी रीती, अनचाही और अनिश्चित घुटन उसे मारे डालती है. वह कमरे की खिड़की में सारी रात बैठी, पूरे चांद की चांदनी में आंखें भटकाए सुदूर अंतरिक्ष में न जाने क्या ढूंढ़ती है. विवशता ही विवशता है, सीमा कहीं नहीं. कैसे जिए अर्चना? कहां चली जाए? मन की इस रिक्तता से वह साधना किस की करेगी? कितना डर रही है वह! क्या वह कैप्टन को सच्चे मन से समर्पित हो सकेगी? वह पति के साथ चलना ही तो होगा, चुपचाप खिंचते चले जाना ही तो.

एक माह बीत गया है. मां आज बड़ी प्रसन्न हैं. डैडी से कहती हैं, "अब कुछ चिंता न करो, अर्ची के डैडी. हमारी इज्जत बच गई है. मंगल के दिन हनुमान के मंदिर में प्रसाद चढ़ाने चलेंगे."

आज पहली बार अकेले बैठ कर बैरिस्टर अपनी धुन में अपना प्रिय रमी का खेल लगाने बैठे हैं.

मंगल के दिन मंदिर के उस वातावरण में सांस खुल कर आती है. पर मां के कहने पर अर्ची मूर्ति के सम्मुख माथा नवाने के लिए ज्यों ही झुकती है, एक सम्मोहन के साथ ही मन के कटु सत्य का सर्प फन काढ़ कर बाहर आ जाता है.

मम्मी और डैडी के मन की शांति और हार्दिक प्रसन्नता के कारण, साथ ही मंदिर के कुछ सुगंध भरे उस वातावरण में उस का मन थोड़ाथोड़ा प्रसन्न हो आया है.

अर्चना सोचती है कि मंदिर के प्रति वह सच्ची आस्था कहां चली गई जो बचपन में मम्मीडैडी के साथ देवी की अनाश्रित परिक्रमा करने से होती थी? अपने टूटेफूटे अस्तित्व में वह हृदय की सच्ची आस्था और विश्वास कहां से लाती? मंदिर के बाहर महकती और फूली प्रकृति को देख कर वह सोचती है, 'इसी प्रकृति के बीच बसंत का

135 देश एड्स की चपेट में

खतरनाक यौन रोग एड्स अब पूर्वी देशों में भी अपने भयानक पंजे फैलाने लगा है. हाल ही में भारत में भी इस के कई मामले देखने में आए हैं. हालांकि पड़ोसी देश पाकिस्तान में अभी इस दावानल की जीभ नहीं पहुंची है. फिर भी वहां इस से सुरक्षा के पूरे उपाय किए जा रहे हैं.

विश्व के 135 देश इस भयंकर बीमारी से प्रभावित हैं, जिन में से केवल अमरीका में ही 15 लाख एड्स से पीड़ित लोग मौजूद हैं. उन में से 50 हजार पूर्णतः एड्स से जूझ रहे हैं.विश्व स्वास्थ्य संगठन में गत सितंबर तक दुनिया भर के 59,563 एड्स के मामले दर्ज थे.

अनुमान है कि समस्त विश्व में 50 लाख से 1 करोड़ तक लोग एड्स से किसी न किसी रूप में प्रभावित हैं. उन में से अगले 5 वर्षों में 25 प्रतिशत मामले पूर्ण रूप से एड्स में बदल जाएंगे और 40 प्रतिशत रोगियों में एड्स के प्रभाव स्पष्ट हो जाएंगे.

अगले 5 वर्षों में एड्स के 5 लाख से 2 लाख तक मामले सामने आ जाएंगे तथा 5 से 10 करोड़ लोग इस रोग से प्रभावित होंगे.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुप्त प्रेम

गुप्त प्रेम में कायरता भी भरी रहती है. —महात्मा गांधी

सुहाग चढ़ेगा, फूल आएंगे, प्रकृति खिल-खिला कर झरेगी, बहकेगी और लहकलहक कर अपने प्रिय के समागम में लोटलोट जाएगी.

और अर्चना? निकृष्ट पुरुष की विकट वासना का शिकार... छिः! वह फिर धीरेधीरे सिसकने लगती है.

"रोते नहीं, बेटी. ईश्वर ने रक्षा कर ली है. उन को प्रणाम कर, आशीर्वाद देंगे. यह दुख की कहानी संसार में कोई भी जान नहीं पाएगा," मां कहती है.

हां, सच तो, नारी की पराजय की कहानी दुनिया के परदे में छिपी ही रह जाएगी.अर्चना डैडी और मम्मी के पीछेपीछे कार के पास आ जाती है. कुछ देर में घर पहुंचते हैं सब.

सहसा बड़ा खुशखुश चौकीदार दौड़ कर गेट खोलता है. "डाकुओं के गिरोह का सरदार पकड़ा गया है, हुजूर. कोठी से गए जेवरात में से एक अंगूठी बरामद हुई है. पुलिस इंस्पेक्टर साहब आए थे अंगूठी दिखाने. कह गए हैं, आप लौट कर पुलिस स्टेशन पर उन से बात कर लें."

ऐसा ही होना था, हुआ भी, इत्तफाक था और सच भी.

अर्चना आती है कोर्ट में. कदम बिलकुल सधे हुए हैं. फिर गवाही के पहले की औपचारिकता का निर्वाह. गीता पर हाथ रख कर उसे कुछ कहना है.

इस के दल के हाथों कितने ही लोग बरबाद हो गए. अब इस को दंड मिलना ही चाहिए. बड़ी भीड़ है. लोग खुशी से भरे हुए हैं. अर्चना सामने देखती है. अभियुक्त के कटघरे में खड़ा सुमंत. वही हंसतीहंसती आंखें. दाहिने गाल पर एक बड़े से घाव का चिह्न. स्मृतियों के टुकड़े बहने लगते हैं.

"यह स्मृतिचिह्न जीवन भर साथ रहेगा सुमंत के," वह मन ही मन सोचती है और तभी याद आ जाता है वह पत्र कि 'तुम्हारे उस तरह रोने की याद मुझ डाकू को भी कमजोर बना जाती है. फिर :भी सच कहूंगा, जीवन में डाकू बन कर भी, किसी नारी के सम्मुख ऐसी भीषण घृणा का पात्र प्रथम और अंतिम बार ही बना था."

फिर और भी बहुत कुछ... "तुम्हारी कटु अवहेलना के बाद भी तुम पर रीझ क्यों रहा हूं, तुम्हें भूल क्यों नहीं पाया, अर्चना!"

अर्चना सहसा सहम कर सामने देखती है. सुमंत के गाल का घाव जैसे और गहरा हो कर उस की आंखों में समा जाता है.

"मुझे माफ न करना, अर्चना. पुलिस की गिरफ्त में जब कभी भी आऊं, तुम्हारी गवाही मुझे कठिन से कठिन दंड दिला सकेगी."

"आप गवाह बन कर आई हैं, अर्चनादेवी! अपना बयान दीजिए. क्या आप इस व्यक्ति को पहचानती हैं? इस के पास से जो अंगूठी बरामद हुई है वह क्या आप की है?"

स्वाभाविक स्वर में वकील उस से पूछता है.

चौंक जाती है अर्चना. अदालत में निस्तब्धता है. सीधी दृष्टि से जज की तरफ देख कर वह बड़े ही सीधे स्वर में उत्तर देती है, "जी हां, जज साहब, मैं इस व्यक्ति को पहचानती हूं."

अदालत में हर्ष के हलकेहलके स्वर उभरते हैं. अर्चना का मुंह फिर खुलता है, "लेकिन..."

एक बार फिर सन्नाटा छा जाता है.

"लेकिन यह कालिज में मेरा सहपाठी था. उस रात को जिस डाकू को मैं ने बेनकाब देखा था वह यह हरगिज नहीं है."

फिर सामने मुसकराते सुमंत पर एक गहरी नजर जमा कर वह बड़े ही अडिग स्वर में इतना और कहती है, "और यह अंगूठी भी मेरी नहीं है."

शरिता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बात बाजा बजने की

व्यंग्य • विजयकृष्ण ठाकुर

शहर की बात आप जानें, पर हमारे गांवकसबों में लोग शहर वालों की तरह यों नहीं पूछा करते कि आप के यहां शादी किस तारीख को है? या लड़के की सगाई किस दिन है?

हमारे यहां लोग इसी बात को इस तरह जानना पसंद करते हैं: "क्यों भइया, बाजा कब बजवा रहे हो?"

और बाजे का मतलब है—लाउड-स्पीकर.

वैसे भी खुशी प्रदर्शित करने के तरीकों में सब से सुगम, सस्ता और दूरदूर तक सुनाई, दिखाई पड़ सकने वाला तरीका है—लाउडस्पीकर बजवाना. अब यह बात अलग है कि लाउडस्पीकर में क्या बज रहा है और क्यों बज रहा है. बस, समझ लीजिए कि कुछ भी बज रहा है. बजना है सो बज रहा है. चूंकि चारपांच घंटे के लिए किराए पर लाया गया है, इसलिए उसे उतनी देर तक लगातार ध्वनि प्रदूषण करते हुए बजवाने वालों की लंबी खुशी प्रदर्शित करना है.

जिन दिनों लाउडस्पीकर नहीं थे, खुशी के अवसरों पर नाचगानों, कव्वालियों आदि की महफिलें सजा करती थीं. खाने-पीने का लंबाचौड़ा आयोजन किया जाता था. आजकल इन कार्यक्रमों को बाजारी दूध के डब्बों की तरह संघनित (कंडेस्ड) कर दिया गया है. अब 'वीडियो' फिल्मों का प्रदर्शन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और गिनेचुने लोगों को चाय पार्टी पर बुला कर लोग काम चला लेते हैं. कहींकहीं इस में भी कटौती करते हुए, लाउडस्पीकर बजवा कर, बताशे बांट कर काम चला लिया जाता है. वैसे भी सुरसा के मुंह की तरह फैलती महंगाई ने खुशी जाहिर करने के मंहगे तरीकों को अख्तियार करना एक मुशकिल काम बना दिया है.

लोग कहते हैं कि अगर 'खुशी' को जाहिर न भी किया जाए तो भी वह बालटी में बन गए सूराख से टपकते पानी की तरह खुद ब खुद प्रकट होने लगती है. कवि रहीम ने उन चीजों की सूची में, जो चाह कर भी नहीं छिपाई जा सकती, 'खुशी' को भी शामिल किया है.

"खैर, खून, खांसी, खुशी, बैर, प्रीति, मदपान."

कहने का आशय यह है कि कत्थे का दाग, खून करना, खांसी, खुशी का होना, दुश्मनी, प्रेम करना और शराब का सेवन—ऐसी चीजें हैं, जिन्हें कोई नहीं छिपा सकता. छिपाना भी चाहे तो वे खुद ही प्रकट हो कर दुनिया के सामने आ जाती हैं.

आजकल खुशी के मामले में एक नई दिक्कत आने लगी है. बदलते वक्त के साथ रोशनी, आतिशबाजी, दावतें, गीतसंगीत के भी लाउडस्पीकर पर प्रदर्शन को देख कर यह कहना बड़ा मुशकिल हो गया है कि क्या यह सच में खुशी का मौका है. कम से कम यह अंदाजा करना तो और भी मुशकिल हो गया है कि इस प्रदर्शन में खुशी का प्रतिशत कितना है. कुछ लोगों के लिए यह सब एक 'आम' बात बन गई है. वे खुशी की एवज में यह सब नहीं करते, बल्कि इस प्रदर्शन से यह बताने की कोशिश करते हैं कि देखो भई, हमें कितनी खुशी हो रही है.

आज की दावत फलां अधिकारी के तबादले पर बिदाई के तौर दी गई तो कल की दावत अमुक के आगमन के सिलसिले में होगी. पिछले सप्ताह उन के 25 वर्ष के लड़के का जन्मदिन था तो अगले सप्ताह उन की शादी की 36 वीं साल गिरह की पार्टी निश्चित की गई है. 15 तारीख को उन के भतीजे के विदेश प्रस्थान पर शुभकामनाएं व्यक्त करने की पार्टी है तो 22 तारीख को उन की साली के 'ब्यूटी पार्लर' खुलने के संदर्भ में चायपानी का आयोजन है. सब्जी में आलू की तरह एक बात इन सभी आयोजनों में सामान्य तौर पर मौजूद रहेगी. वह है इन सब आयोजनों में लाउडस्पीकर का मुकम्मल इंतजाम.

इन आयोजनों को देख कर लगता है जैसे खुशियां इन आयोजकों के दरवाजे पर डेरा ही डाले रहती हैं और वे उन्हें पकड़ कर बाइज्जत कुरसी पर बैठा देते हैं. इन खुशियों का दूसरा विचारणीय पहलू यह भी है कि क्या ये सब वास्तव में खुशियां ही होती हैं, जिन का जश्न मनाया जाता है या इन को मनाने का कोई और भी कारण होता है. कुछ लोग इन्हें रईसों के चोंचले बताते हैं तो कुछ लोग इन्हें निमंत्रित लोगों को भुनाने का जरिया मानते हैं. कुछेक के हिसाब से इन आयोजनों में दीखने वाली खुशी पर स्वार्थ का परदा पड़ा होता है या दूसरे शब्दों में ऐसे आयोजन संबंधित लोगों के स्वार्थ पर खुशी की नकाब ओढ़े रहते हैं. अब आप ही कहिए, इन जश्नों में क्या आप खुशी की खुशबू कहीं सूंघ सकते हैं.

खैर, छोड़िए साहब, बात कहीं संजीदा न हो जाए. हम खुशी के प्रदर्शन की बात को ले कर चले थे, सो खुशियों की बरात में ही चलें. शादीब्याह के मामले आम

अरे, आप इतने खुश क्यों हैं? अगर बात बाजा बजाने वाली है तो फिर देर क्यों, मगर इतना जरूर ध्यान रखिए कि आप का बाजा यानी लाउडस्पीकर पड़ोसियों के लिए भी खुशी ही रहे.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

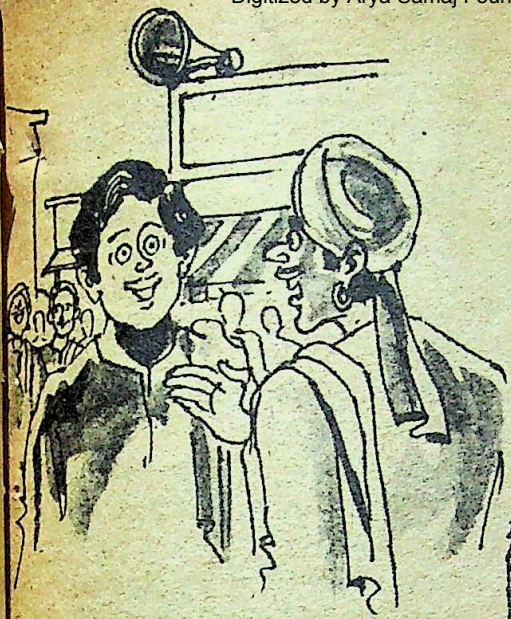

खुशी प्रदर्शित करने के तरीकों में सब से सुगम, सस्ता और दूरदूर तक सुनाई पड़ सकने वाला तरीका है लाउडस्पीकर.

तौर पर खुशी के उत्सव माने जाते हैं पर कुछ लोग इन मौकों पर भी गड़बड़ पैदा कर के इन्हें भी गंभीर बना देते हैं.

महाराष्ट्र के वैवाहिक संस्कारों में एक विशिष्ट बात यह होती है कि मंगलाष्टक के बाद जब वरवधू एकदूसरे पर जयमाला डालने ही वाले होते हैं तो पुरोहित की कड़कदार आवाज गूंजती है, "सावधान."

उपस्थित जन और खुद वरवधू यह 'सावधान' की ललकार सुन कर उस महत्त्वपूर्ण क्षण के लिए तैयार हो जाते हैं, जब दो अपरिचित या अल्पपरिचित व्यक्ति चिरपरिचित होने के लिए विवाह बंधन द्वारा बंध जाने वाले होते हैं.

छत्रपति शिवाजी के गुरु समर्थ रामदास के जीवन की इसी संदर्भ में एक महत्त्वपूर्ण घटना है. हुआ यह कि रामदास के विवाहोत्सव पर पंडित ने जब कड़क कर कहा, "सावधान."तो न जाने उन्होंने क्या सोचा कि वह छलांग लगा कर 'विवाह मंडप' से ही कूद गए. शायद उन्हें लगा कि पंडित जब सावधान कह रहे हैं तो जरूर कोई खतरे की बात होगी. वरना पंडित को 'सावधान' कराने की क्या जरूरत थी. इस तरह शादी की बात को खतरनाक आंकते हुए वह मंडप से भाग गए. आगे क्या हुआ, यह सभी जानते हैं. वह गृहस्थाश्रम की बजाए संन्यास मार्ग पर चले गए.

एक बार किसी ने उत्सुकता प्रकट की थी, "क्या वजह है कि लोग शादीविवाह के

समय गीतसंगीत, रोशनीसजावट आदि के प्रदर्शन पर इतना अधिक खर्च करते हैं. यह सब सादगी से भी तो किया जा सकता है."

उन की शंका का समाधान करते हुए एक बुजुर्ग ने समझाया, "मियां, यह सब दूल्हे को भरोसा दिलाने के लिए किया जाता है कि यह एक खुशी का मौका है. कहीं वह बिदक न जाए और खूंटा तोड़ कर बैल की तरह भागने न लगे."

इस तरह कहा जा सकता है कि खुशी की परिभाषाएं और उन के प्रदर्शन के तरीके अलगअलग हुआ करते हैं. कई लोगों को तो कभीकभी खुशी देख कर भी गम का एहसास होने लगता है. दूसरी तरफ कुछ लोग किसी के गमजदा होने पर भी खुशी महसूस करने लगते हैं. वैसे इस हकीकत को पसंद अपनीअपनी खयाल अपनाअपना कह कर भी टाला जा सकता है.

खुशी और गम को तो लोगों ने चोलीदामन का साथी बताया है यानी जहां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बजती है शहनाई वहां मातम भी होते हैं. हां, पर यह बात जरूर काबिले गौर है कि अपनी खुशी जाहिर करते समय आप दूसरों का नुकसान तो नहीं कर रहे हैं. खास कर अगर खुशी जताने का जरिया 'लाउडस्पीकर' है तब तो यह बात और भी जरूरी हो जाती है.

अपने घर आए किसी खुशी के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम पर हमारा ध्यान सब से पहले लाउडस्पीकर पर ही जाता है, हम सारे पासपड़ोस को, बल्कि दूर तक के महल्ले वालों को यह बताने की कोशिश करते हैं कि देख लो सुनने वालो, आज हम कितने खुश हैं. अब हमारे परिवार नियोजन का रेकार्ड तोड़ कर 'छक्का' मारने की खुशी का पड़ोसी के लड़के की शुरू हो रही वार्षिक परीक्षाओं, चार घर आगे किसी का मां के मरने या सामने वाले को दिल का दौरा पड़ने से हमारा दूरदूर तक का संबंध नहीं है. हमारी प्रसन्नता की चीख का ध्वनि प्रदूषण, हमारी खुशी पर जलने वालों के माथे पर चाहे कितने ही बल क्यों न पैदा करता हो, हमें बिना शरमिंदा हुए अपने काम में लगे रहना है. क्यों, मैं ने गलत तो नहीं कहा?

लीजिए बातोंबातों में आप से यह तो पूछना भूल ही गया कि आप की छत में 'लाउडस्पीकर' मेरा मतलब हमारी तरफ की भाषा में आप के यहां बाजा कब बजने वाला है? कोई बात नहीं साहब, तारीख बताने में हिचक रहे हों तो फिर मैं आप पर कोई दबाव नहीं डालूंगा. पर चलतेचलते यह जरूर अर्ज करूंगा कि अपनी खुशी में चाहे इस खाकसार को भूल जाइए, पर पासपड़ोस वालों का खयाल कर लीजिएगा, ताकि आप के यहां बाजा बजने को वे अपनी खुशी समझ सकें. ●

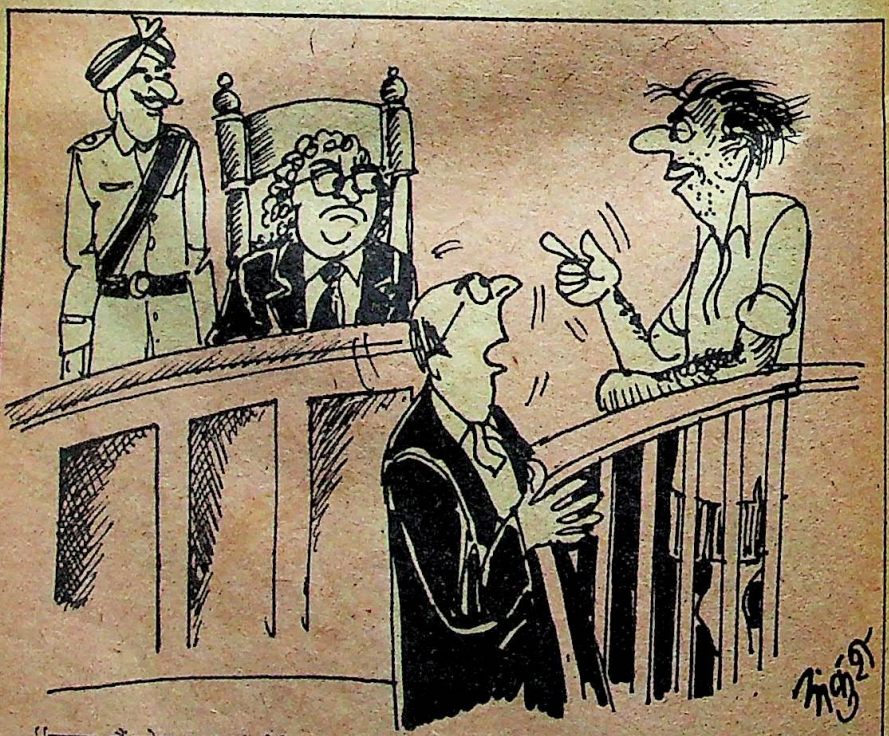

"हुजूर, मैं चोर जरूर हूं, लेकिन देशभक्त हूं. मैं ने चुराया हुआ धन देश में ही रखा, विदेश नहीं भेजा!"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ये पत्नियां

मेरे एक हंसमुख दोस्त की नईनई शादी हुई थी. एक दिन उस ने हमें खाने पर बुलाया.

अचानक मित्र ने अपनी पत्नी से कहा, "तुम्हें अच्छी रोटियां बनानी नहीं आतीं. तुम मेरी मां से रोटियां बनाना सीख लो."

इस पर उस की पत्नी तपाक से बोली, "अगर तुम पिताजी की तरह आटा गूंधना और सब्जी बनाना सीख लोगे तो मैं भी मां से अच्छी रोटियां बनाना सीख लूंगी."

उस के इतना कहते ही महफिल में एक जोरदार ठहाका लगा, लेकिन मित्र का चेहरा उतर गया. —अवधेश कुमार अग्रवाल

*

मेरी एक चाची शरीर से थोड़ी भारी हैं और चाचा थोड़े पतले हैं. एक दिन मैं उन के घर बैठी थी, तभी उन की एक परिचिता आ गईं. बातोंबातों में उन्होंने चाची को मुटापा घटाने की सलाह दी.

जब चाची ने अपनी परिचिता की सलाह सुनी तो वह झल्लाते हुए बोलीं, "मैं तो खातेपीते घर की हूं. किसी भूखे घर से थोड़े ही आई हूं."

परिचिता तपाक से बोलीं, "तो क्या तुम्हारे पति ही भूखे घर के हैं?"

उन का इतना कहना था कि मैं ठहाका मार कर हंस पड़ी. लेकिन चाची बुरी तरह झेंप गईं. —रीता कपूर 'रीतिका'

*

मेरा एक मित्र हमेशा गहरे रंग के कपड़े लेकिन उस की पत्नी को गहरे रंग अच्छे नहीं लगते थे.

एक दिन वह काली पैंट, काली कमीज और काली टाई पहने खड़ा था. यह देख कर मैं मजाक में बोला, "भई, वाह, पैंट भी काली और कमीज भी काली, अब बचा ही क्या है?"

मेरा इतना कहना था कि उस की पत्नी तपाक से बोली, "बस, मुंह बचा है. उसे भी कर लेंगे किसी दिन." इतना सुनते ही मैं खिलखिला कर हंस पड़ा. लेकिन मित्र का चेहरा उतर गया. —रवींद्र कुमार गुप्ता

*

कुछ दिन पहले मेरी और मेरी पत्नी की आपस में तकरार हो गई. तंग आ कर मैं ने अपनी पत्नी से कहा, "भई, मैं तो चला आत्महत्या करने."

इस पर तुरंत उस ने मुझे 10 रुपए का नोट दे कर थैला पकड़ाते हुए कहा, "तुम आत्महत्या जरूर कर लेना. लेकिन अगर नहीं कर सको तो लौटते समय सब्जी जरूर लेते आना." उस की यह बात सुन कर मेरा सारा गुस्सा हिरण हो गया. —प्रमोद बेहेरे

*

मेरे सिर पर बाल नहीं थे. इसलिए मैं विग लगाती थी. शादी से पहले यह बात मेरे पति को छोड़ कर सब को पता थी.

पहली ही रात को जब मैं ने देखा कि वह सो गए हैं तो मैं ने अपना विग उतार कर रख दिया. आधी रात को जैसे ही उन का हाथ मेरे सिर पर गया तो वह जोरजोर से चिल्लाते हुए बाहर भागे, "भूतभूत, अरे कोई बचाओ."

जैसे ही उन्होंने दरवाजा खोला तो बाहर भागेखड़े घर के सभी सदस्य ठहाका लगा कर हंस रहे थे और मैं इन की हालत देख कर शर्म से लाल हो गई. —अंजना

इस स्तंभ के लिए अपने तथा अपने संबंधियों के अनुभव भेजिए. प्रत्येक प्रकाशित अनुभव पर 30 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. अपने अनुभव इस पते पर भेजें. संपादकीय विभाग, सरिता, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पति का सम्मान पत्नी के हाथ

लेख • विजयकुमार 'विजय'

"सुनो, इस बार दीवाली पर मैं मायके अवश्य जाऊंगी. मां ने हम दोनों को बुलाया है और लिखा है कि यदि दोनों न आ सको तो कम से कम तुम तो चली ही आना," कह कर श्रीमतीजी ने अपने तेवर चढ़ा लिए.

पति महोदय थोड़ी देर तक तो चुपचाप खड़े सोचते रहे, फिर एक लंबी सांस ले कर "हां" कर दी. "तुम कितने अच्छे हो," कह कर पत्नी ने पति की प्रशंसा शुरू कर दी.

बेचारे पति महोदय अपनी पत्नी को ले कर दीवाली पर अपनी ससुराल पहुंच गए. इन

पति महोदय की विशेषता यह है कि जबतब अपनी पत्नी की जिद पर अपनी ससुराल चले जाते हैं. इन से बात करने पर पता चला कि पत्नी के माता - पिता इन्हें अकसर बुलाते रहते हैं. किंतु इन का कहना है, "दूर बहुत पड़ जाता है."

आप के बारबार मायके जाने से आप की मां को खास प्रसन्नता नहीं होती, बल्कि वह भी मात्र औपचारिकता निभाती है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kang

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह महाशय ससुराल के प्रति अत्यंत वफादार हैं. ससुराल में सभी संपन्न हैं, फिर भी वहां जाने पर इन की अच्छीखासी राशि सालेसालियों पर भेंट चढ़ जाती है. किंतु यह अपने छोटे भाई की पढ़ाई के लिए एक भी पैसा नहीं भेजते, क्योंकि इन की श्रीमतीजी ऐसे मौकों पर इन्हें बचत की शिक्षा देने लगती हैं.

हमारे एक मित्र हैं और वह हमारे साथ ही काम करते हैं. आज से लगभग चार वर्ष पूर्व उन का विवाह हुआ था. सुंदर पत्नी एवं संपन्न ससुराल पा कर वह फूले नहीं समाते थे. वह दो वर्ष तक निरंतर अपनी ससुराल आतेजाते रहे. फिर अगले छः माह के दौरान उन की इस आवाजाही में कुछ कमी आई तथा तीन वर्ष पूरे होते ही ससुराल आनाजाना बिलकुल बंद हो गया. अब एक वर्ष से दोनों पतिपत्नी एक पल भी अलग नहीं हुए हैं. हमारे मित्र भी ससुराल का विचार लगभग त्याग ही चुके हैं.

एक दिन वह बड़े प्रसन्नचित्त थे. उसी तरंग में अपनी सारी कहानी सुनाने लगे. उन्होंने अपने विवाह में कुछ भी नहीं मांगा था. वह पढ़ेलिखे हैं. मानवतावादी विचारों के हैं. आदर्शवादी एवं स्वाभिमानी भी हैं. उन की ससुराल वालों ने भी उन के विचारों को पूरा सम्मान दिया. सामान्य रीति से विवाह कर के अपनी लड़की विदा कर दी.

मित्र महोदय अपनी ससुराल अधिक आनेजाने में विश्वास नहीं करते थे. किंतु उन की श्रीमतीजी हर बार अपने मायके जाने की हठ पकड़ लेती थी. प्रारंभ में उन का स्वागत भारतीय दामादों की तरह हुआ करता था. पर बारबार पत्नी के साथ ससुराल जाना उन के लिए मुसीबत बन गया. नौबत यहां तक आ गई कि बिना बुलाए ही पत्नी की जिद पर वह ससुराल में टपकने लगे.

एक दिन उन की सास ने उन से कहा, "अजय, नीलम को अभी तक कान के कुंडल नहीं खरीद कर दिए. कैसे रखते हो मेरी फूल सी लाड़ली को?" कह कर उन की सास व्यंग्य से मुसकरा दीं.

"बात यह है, मांजी, कि अभी नईनई गृहस्थी बसाई है. शादी में कुछ रुपए कंपनी से लिए थे. अभी उसी का भुगतान नहीं हो पाया है. इसी कारण... " हमारे मित्र कुछ संकोच करते हुए बोले.

"रुपया कम हो तो मैं कुंडल ले कर दे दूं? भई, मुझे तो इस के ये सूने कान अच्छे नहीं लगते." मांजी ने बनावटी हंसी के बीच ताना मारा.

"ठीक है, मैं कोशिश करूंगा कि इस वर्ष इसे कुंडल बनवा दूं. पर आप मत दीजिए." शायद हमारे मित्र को अपने अंदर कुछ चुभा.

इस प्रकार के व्यंग्यबाण उन महाशय को आए दिन सुनने को मिलते रहते थे. उन की इच्छा होती थी कि अब फिर कभी ससुराल न आऊं. पर उन की श्रीमतीजी को उन के स्वाभिमान का जरा भी ध्यान नहीं था. पत्नी सदैव यही कहती, "मां की बात का बुरा नहीं मानते. वह तो आप को बेटे की तरह मानती हैं."

एक बार भी उन की श्रीमतीजी ने अपनी मां से नहीं कहा कि शादी के बाद लड़की के जीवन में उस के मांबाप को हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए. अगर कोई चीज देनी भी हो तो पहले दामाद से पूछ लें ताकि पतिपत्नी के सुखी जीवन में कलह के बीज न पड़ें.

लड़की से मातापिता का संबंध विवाह के बाद बहुत कुछ बदल जाता है. उस के बाद तो वह मायके में एक मेहमान सी होती है क्योंकि जीवन का एक लंबा हिस्सा उसे अपने

क्या आप बारबार अपने पति के साथ मायके जाती हैं? यदि हां तो क्या आप ने कभी सोचा है कि इस से उन के सम्मान और स्वाभिमान को ठेस तो नहीं पहुंचती?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

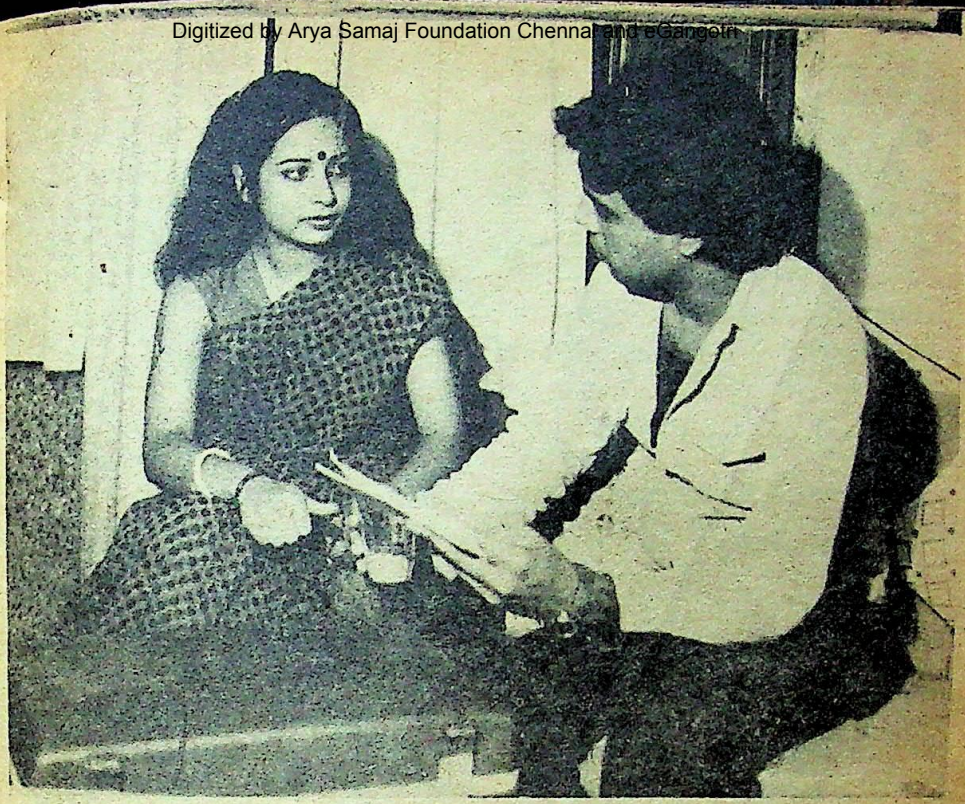

मातापिता के साथ नहीं बल्कि पति के साथ व्यतीत करना होता है.

लेकिन हमारे मित्र की श्रीमतीजी को तो अपना मायका ही याद रहता, भले ही सीधीसादा पति वहां जा कर कितना ही अपमानित क्यों न अनुभव करता हो.

पतिपत्नी जीवन की गाड़ी के दो पहिए होते हैं. यदि उन में एक बार संतुलन बिगड़ जाए तो उस को पहले जैसी स्थिति में लाने के लिए न ससुराल काम आता है, न ही मायका. इस संतुलन को बनाए रखने का अधिकतर दायित्व पत्नी पर ही होता है, बशर्ते कि उस का पति भी उस की भावनाओं का ध्यान रखता हो, उसे मित्र की तरह मानता हो.

हमारे मित्र महोदय के साथ भी ऐसा ही हुआ. वह अपनी पत्नी की भावनाओं का बहुत ध्यान रखते हैं. किंतु जब उन के साथ उन की ससुराल में उपेक्षा का व्यवहार किया गया तो उन की पत्नी खामोश रही.

मुझे अच्छी तरह याद है कि आज तक हमारे मित्र की ससुराल से कोई भी व्यक्ति *मायके वालों की चिट्ठी मिलते ही, आप ने तो जाने की तैयारी कर ली. लेकिन पति की परेशानी की आप को कोई चिंता नहीं.*

उन्हें सम्मान के साथ बुलाने नहीं आया. बस, पत्र आया और वह भी बेटी के नाम कि "अमुक तारीख को आ जाना, क्योंकि तुम्हारे मामा की लड़कियां आ रही हैं" आदि.

बस, पत्र मिलते ही उन की श्रीमतीजी जिद कर लेती हैं और हमारे मित्र उन की जिद को बिना टाले ससुराल चले जाते हैं. वह अपनी श्रीमतीजी को उदास नहीं देखना चाहते. यह अलग बात है कि उन की श्रीमती पति के साथ अतीत में किए गए व्यवहार को भूल जाती थीं.

मैं यह नहीं कहता कि ससुराल मत जाइए. किंतु आदरपूर्वक बुलाए जाने पर ही जाइए, वह भी किसी विशेष काम से.

ससुराल आप का अपना घर तो है नहीं कि जहां आप अपने अधिकारों का प्रयोग कर सकते हैं. न ही वह विवाहोपरांत उस घर में जन्मी लड़की का 'अपना घर' होता है. तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिर जिस चौखट से निकल कर वह अपने पति एवं अपने परिवार के प्रति समर्पित होती है, उस चौखट के अंदर पुनः प्रवेश करने पर उसे अपने एवं अपने पति के सम्मान के प्रति भी सोचना चाहिए. दांपत्य जीवन में यह आवश्यक नहीं है कि प्रगाढ़ता तभी हो, जब आप का पति हर समय आप की प्रशंसा करे, आप के सौंदर्य का गुणगान करे. यह भी आवश्यक है कि पत्नी अपने पति के स्वाभिमान की कितनी रक्षा करती है.

दामाद का अपमान

आखिरकार अजय अपने साले के विवाह के बाद अकेले ही घर आ गए मगर उन की श्रीमतीजी को वहां से आने नहीं दिया गया. शादी के बाद घर में काम भी अधिक होता है. वह निबटाने में उस का सहयोग जरूरी था.

अजय ने अपने साले के विवाह के बाद अपनी श्रीमती को अपने साथ ले चलने की बात तो कही, पर उन की सास ने नीलम को आने ही नहीं दिया. अजय ने तर्क दिया, "मांजी, यहां तो आप का हाथ बंटाने के लिए बहुत से लोग हैं, पर वहां मेरे पास और कोई नहीं हैं. मेरे लिए अधिक समय तक अकेला रहना संभव नहीं है."

उन की इस बात पर उन्हें बहुत खरीखोटी सुनने को मिली. अजय अपना सा मुंह लिए लौट आए, हालांकि उन की श्रीमतीजी ये सब बातें सुन रही थीं, फिर भी वह कुछ कहने का साहस न जुटा पाईं.

हमारे मित्र महोदय को अपने घर आए अभी चारपांच ही दिन हुए थे कि उन की श्रीमतीजी अकेली ही अटैची लिए घर आ गई.

अजय अब भी इस घटना को सुनाते फूले नहीं समाते, क्योंकि वह दिन उन के लिए सब से महत्त्वपूर्ण दिन था. उन की श्रीमतीजी आते ही रो पड़ीं. थोड़ी देर तसल्ली देने के बाद मित्र महोदय ने पूछा, "जल्दी कैसे आ गईं?"

शांत होने के बाद उन की श्रीमतीजी ने उन्हें बताया, "मां ने भाभी के सामने आप के लिए बहुत बुराभला कहा. मुझे भी जो मुंह में आया सुनाती रहीं. मैं उसी पल उठ कर चली आई. बहुत सह लिया अपमान. और फिर जहां आप का अपमान हुआ हो वहां तो मैं वैसे भी नहीं रह सकती."

मित्र महोदय ने सोचा कि श्रीमतीजी में अभी भावनाओं का आवेश है. कुछ दिन बाद हमारे मित्र ने अपनी श्रीमतीजी से कहा, "क्या तुम्हें मां की याद नहीं आती? कहो तो तुम्हें मायके छोड़ आऊं?"

बस, इतना कहना था कि उन की श्रीमतीजी बरस पड़ीं, "क्यों, मेरे बिना आप का मन लगने लगा है? क्या मेरा यहां रहना अच्छा नहीं लगता? आप को सौगंध है जाने की बात की तो. इतना अपमान सह कर भी ससुराल जाने की बात करते हैं? मेरे होते अब आप को कोई भी अपमानित नहीं कर सकता," कहतेकहते वह रोने लगीं. अजय साहब ने उन्हें अपने हृदय से लगा लिया.

उस दिन के बाद से दोनों पतिपत्नी तनावमुक्त जीवन व्यतीत कर रहे हैं. एक बार मैं उन के यहां पहुंच गया तो मैं ने नीलम भाभी से पूछ लिया, "अब आप हमारे दोस्त को अकेला नहीं छोड़तीं, यह तो बड़ी खुशी की बात है."

इस पर नीलम भाभी ने कहा, "पत्नी को सदैव अपने पति के सम्मान के प्रति सचेत होना चाहिए. जहां पति का सम्मान न हो वहां तो पत्नी को एक पल भी नहीं ठहरना चाहिए. जब पति हमारी भावनाओं का इतना ध्यान रखता हो तो हमारा भी तो दायित्व है कि उन की भावनाओं को ठेस न पहुंचाएं. फिर सारा जीवन तो मुझे इन्हीं के साथ गुजारना है. वैसे भी, भाई साहब, पति का सम्मान पत्नी के हाथ में होता है."

मैं धीरेधीरे अपने घर की ओर जाते समय यही सोच रहा था कि नीलम भाभी ठीक कह रही थीं. क्या आप भी अपनी पत्नी को ले कर बिना बुलाए ससुराल में तो नहीं टपक पड़ते? अरे भई, अपने सम्मान को बचाइए और अपनी श्रीमतीजी को ले कर बिना बुलाए ससुराल कभी मत जाइए. तभी सुखी दांपत्य जीवन व्यतीत कर सकते हैं.●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बेटी को यों न बिदा करें

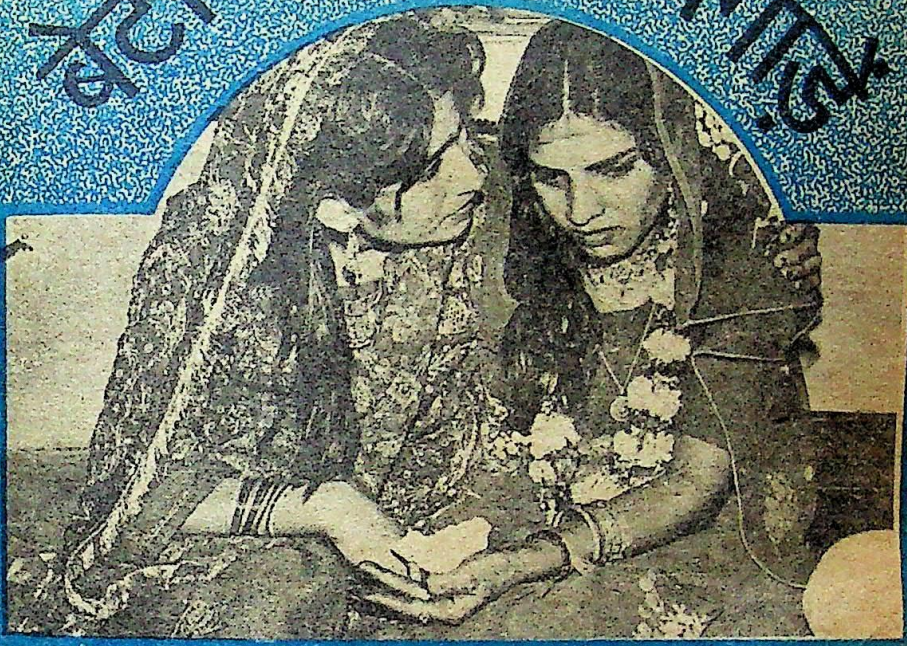

बेटी के प्रति लाड़प्यार दर्शाना निश्चय ही आप की ममता का परिचायक है. परंतु अपने इस प्रेम, सहानुभूति के तीव्र बहाव में बह कर आप उस के जीवन में कांटे तो नहीं बो रहीं?

लेख • सुरैया जबीं

कन्या कश्मीर से कन्याकुमारी तक कहीं की भी हो, एक न एक दिन उसे मायके को अलविदा कह कर ससुराल की डोली (अब कार) में बैठ कर जाना ही पड़ता है.

विदाई की बेला भी अजीब होती है. लड़की के लिए ही नहीं, बल्कि वहां मौजूद तमाम लोगों के लिए भी यह एक न भुलाया जाने वाला क्षण हो जाता है. पुराने जमाने में इस मौके पर मांबाप अपनी बेटी को कुछ सीखें, कुछ नसीहतें और कुछ हिदायतें दिया करते थे. लड़की उन को जिंदगी भर याद रखती थी. लेकिन अब हालात बदल गए हैं. अब नसीहत करना उबाऊ और दकियानूसी हो गया है.

हां, लड़की के ससुराल से मायके में आते ही उस पर सवालों की बौछार शुरू हो जाती है. इस प्रकरण में विशेषकर मां की भूमिका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रमुख होती है. मां कुछ इस तरह के सवाल करती है : सास तुम्हें मानती है न? घर का काम कैसे होता है? तुम्हारा पति रुपया किस के हाथ में देता है? मां को क्यों, तुम खुद क्यों नहीं लेतीं? देवर और ननद को ज्यादा सिर चढ़ाने की जरूरत नहीं, जरा हाथ रोक कर खर्च करो, नहीं तो कंगाल हो जाओगी. देवर को नौकरी दिलाने के लिए तुम ने रुपया क्यों दिया?

अगर इन सारे सवालों का जवाब सकारात्मक या खुशी भरा मिल जाए तो भी न जाने क्यों मां को संतुष्टि नहीं होती. अपवाद हो सकते हैं, पर ज्यादातर घरों में यही होता है. फिर मां दूसरा हथियार फेंकती है. वह अच्छीखासी गोलमटोल सी बेटी को कहेगी, "कैसी सूख गई है. चेहरा कितना पीला पड़ गया है. यहां हम ने तुम्हें कितने नाजों से पाला था. तुम से काम करा कर के कैसा अधमरा कर दिया तुम्हारी ससुराल वालों ने."

मिलजुल कर रहने की सीख दें

जाहिर है, इन बातों का लड़की पर अच्छा असर तो पड़ नहीं सकता. खामखां उस का ससुराल वालों से मन मैला हो जाता है. छलकपट से दूर नवविवाहिता मां को ही अपना सब से बड़ा हितैषी समझने लगती है.

इसलिए एक हितैषी मां का यह फर्ज बनता है कि वह उसे ससुराल में मिल कर रहने के गुर सिखाए, न कि फूट के बीज बोने के.

हमारी सहेली रितु की मां कमलाजी ने उस की विदाई के समय उस के कान में कहा, "ससुराल में काम से दूर ही रहना."

पास ही उस की ननद मीना खड़ी थी. मीना ने सुना तो वह अपनी भाभी की मां की कूटनीति और नीचता पर दंग रह गई. कमलाजी ने रितु को ससुराल में काम से दूर रहने की सीख दी थी. लेकिन अपने घर में खुद उन से एक गिलास पानी ले कर भी नहीं पिया जाता था. रितु की शादी से पहले गृहस्थी का सारा भार उन की दोनों बेटियों रितु और किरण पर था. किरण को तो फैशन और सहेलियों से गपशप से ही फुरसत नहीं थी. घर का सारा काम अकेले रितु को ही करना पड़ता था. और रितु को ही ससुराल जाते वक्त अपनी मां से यह सीख मिली कि काम से दूर ही रहना. कितनी मूर्खता और नीचता की बात थी.

और एक कृष्णाजी हैं. पांचछः देवर-ननदों के बीच बड़ी भाभी बन कर आई थीं. पति एकदम सीधासादा था – भाईबहनों का भाई नहीं, बल्कि पिता.

लेकिन कृष्णाजी को यह सब कैसे सुहाता. उन्होंने आते ही दिलों में दूरी पैदा करने और घर में नफरत के बीज बोने की कोशिशें शुरू कर दीं.

लेकिन उन का पति अरविंद अपने फर्ज से नहीं हटा. दिलों में तो दूरी पैदा नहीं हो सकी, हां, उस घर में चूल्हे अलगअलग हो गए. आज अरविंद की मृत्यु के बाद भी कृष्णाजी ससुराल में ही रहती हैं, लेकिन स्थिति यह है कि जो देवर रातदिन बड़े भाई का गुणगान करते नहीं अघाते हैं, वही भाभी के नाम तक से नफरत करते हैं. देवरानियां मुंह बिचका देती हैं.

संयोग से उन की बेटी रजनी भी अपनी ससुराल की बड़ी बहू बनी. कृष्णाजी ने ससुराल में खुद जो सब किया था, वही सब अपनी भोलीभाली बेटी रजनी को भी सिखाया. काश, उन्होंने एक बार भी ससुराल में अपनी वास्तविक स्थिति का जायजा लिया होता तो रजनी को गलत बातों पर चलने के लिए कभी न कहतीं.

कुछ लड़कियों को मायके में घरगृहस्थी के कामों से विशेष दिलचस्पी नहीं होती. ऐसी लड़कियों की माताओं को हमेशा चिंता बनी रहती है. लेकिन इन माताओं को भी अपनी बेटियों को कभी भी किसी तरह की गलत सीख नहीं देनी चाहिए. आप की बेटी जितना काम कर सकती है, उतना ही करेगी. मगर उसे आप मना मत कीजिए.

जो बातें ये माताएं अपनी बेटियों को अपनाने को कहती हैं, वही बातें उन की बेटियां और बहुएं अपना लें तो ये आठआठ आंसू रोती हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आप की सही शिक्षा ही बेटी के आने वाले जीवन में बहारें ला सकती हैं.

मिनी ने यही बात अपनी मां को बताई. मां ने इस बात को जब अपनी सहेली को बताया तो इस घटना ने मिर्चमसाला मिलने पर यह रंग ले लिया :

"हम ने कैसे घर में अपनी बेटी की शादी कर दी. उस की सास बड़ी जालिम है. जरा देर भी चैन नहीं लेने देती. यहां तक कि रात को भी नींद में उठा कर दम लेती है."

यह बात उड़तेउड़ते मिनी की सास के कानों तक भी पहुंची. सुन कर वह दंग रह गई. अपनी भलमनसाहत का यह बदला मिला था उन्हें.

लेकिन कभीकभी ऐसी माताओं की भूमिका बेटी की ससुराल में कुछ ज्यादा ही महत्त्वपूर्ण हो जाती है. ऐसी मां चाहती है कि बेटी और दामाद की नकेल उस के हाथ में रहे.

प्रत्येक दिन कोई न कोई बेटी के पास उस की ससुराल पहुंच जाता है. बेटी को अगर जुकाम भी हो जाए तो मायके से पूरा काफिला इस तरह ससुराल में जा धमकता है जैसे अंत्येष्टि में शामिल होने जा रहा हो. तिल को ताड़ बनता देख कर ससुराल वालों को बड़ी खिन्नता होती है.

जिस घर में केवल पतिपत्नी रहते हों, वहां जरा सी अनबन होते ही पति तो दफ्तर चला जाता है और पत्नी ताला लटका कर मायके पहुंच जाती है. ऐसे में अच्छी मां का यह परम कर्तव्य होता है कि वह बेटी को बजाए शह देने के उसे उस के कर्तव्य का बोध कराए. उसे समझाए कि वह रूठ कर नहीं, बल्कि खुशीखुशी पति की सहमति से मायके आए. हो सकता है कि यों समझाने पर बेटी नाराज हो जाए. वह बुरा भी मान सकती है. मगर उस की क्षणिक नाराजगी के डर से उसे गलत रास्तों पर न भटकने दें. हमेशा उसे सही रास्ता दिखाती रहें. एक न एक दिन उसे जरूर एहसास होगा कि आप ने एक अच्छी मां की तरह उसे बिगड़ने में मदद नहीं की, बल्कि खुद बुरी बन कर भी उसे सुधारा ही. •

कितनी अजीब बात है कि जो मां अपने घर में भाईबहन से मिल कर रहने को कहती है, वही ससुराल में पति के भाईबहनों से अलग हो जाने की शिक्षा देती है.

इन गलत रास्तों पर चल कर कोई भी लड़की न तो अच्छी सहचरी बन सकती है और न ही गृहिणी, जो नारी जीवन की सब से बड़ी उपलब्धि है.

अर्थ का अनर्थ न करें

कुछ माताओं को अर्थ का अनर्थ कर के पेश करने की आदत होती है. मिनी की शादी हुई. उस में एक बुरी आदत थी. वह रात का खाना नहीं खाती थी. रात आठ बजे ही बिस्तर पर चली जाती थी और फिर लाख उठाने से भी नहीं उठती थी. मिनी की सास बड़ी दयालु औरत थीं. उन से यह सहन नहीं होता था कि बहू भूखी सोए. वह मिनी के बिस्तर पर उसे मनाती रहतीं, पुचकारती रहतीं और आखिर में खाना खिला कर ही दम लेतीं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बच्चों के मुख से

एक बार मेरे पिताजी जंत्री देख रहे थे. उसी समय मेरे आठ वर्षीय छोटे भाई ने उन से पूछा कि क्या उस का भी भविष्यफल इस से जाना जा सकता है?

पिताजी ने 'हां' कह दिया.

कुछ देर बाद पिताजी जंत्री को रख कर कुछ और पढ़ने लगे. इस बीच मेरा भाई जंत्री में अपना भविष्यफल देखने लगा.

थोड़ी देर बाद उस ने पिताजी से कहा कि यह तो आदमियों के लिए है. लेकिन पिताजी के यह कहने पर कि नहीं, इसी में सभी का भविष्यफल लिखा होता है, उस ने कहा, "इस में तो लिखा है कि संतान सुख प्राप्त होगा, मेरी संतान कहां है?"

– रजतकुमार

*

मेरे जन्मदिन पर मामाजी अपने पांच वर्षीय पुत्र के साथ आए. पार्टी के दौरान मामाजी से जब उन के एक मित्र ने उन के बेटे का परिचय पूछा तो वह बोले, "इसे अपना ही बेटा ही समझिए."

मित्र ने पुत्र से मामाजी की ओर इशारा करते हुए पूछा, "बताओ, बेटे, यह कौन हैं."

"इन्हें अपना ही बाप समझिए," पुत्र ने तपाक से जवाब दिया.

–विजय कुमार सिंह

*

मेरी तीन वर्षीया भतीजी बहुत चंचल है. एक दिन वह स्कूल से लौटी तो उस की आंखों को देख कर उस की मां ने पूछा, "बेटी, तुम आज स्कूल में रोई थीं?"

उस ने बताया कि एक लड़के ने उसे मारा था.

इस पर उस की मां ने ज़ब यह कहा कि बेटी, बाहर से पिट कर मत आया करो. उस का जवाब था, "मां, मैं बाहर से नहीं भीतर से पिट कर आई हूं."

उस की बात सुन कर हम लोग हंसतेहंसते लोटपोट हो गए.

– शिवकुमार सिंह

*

मेरे मित्र की बेटी का जन्मदिन था. वह सब लोगों से गाना गाने के लिए कह रहे थे. लेकिन सब आनाकानी कर रहे थे. इस पर उन की 3 वर्षीया बेटी तुतलाते हुए बोली, "पिताजी, आप ही गाना सुना दो. जो मां को सुनाते हो, 'चूले में दे दो इन नाजुक होंठों को."

उन का इतना कहना था कि हम लोगों का हंसतेहंसते बुरा हाल हो गया और मित्र तथा उन की पत्नी का चेहरा देखने लायक हो गया.

दरअसल मित्र की बेटी ने तोतली जुबान से, 'छू लेने दो इन नाजुक होंठों' को कहा था.

– सत्यप्रकाश ताम्रकार 'सत्य'

*

एक दिन मैं अपने 9 वर्षीय छोटे भाई को पढ़ा रही थी. तभी मैं ने उस से पूछा, "बताओ भारत क्या है?"

वह चुप रहा. मैं ने उसे डांटते हुए कहा, "तुम्हें मालूम नहीं भारत एक राष्ट्र है."

इस पर वह मुसकराहट से मेरा उत्तर काटते हुए बोला, "वाह, दीदी, आप भी क्या कहती हैं, भला राष्ट्र के अंदर महाराष्ट्र कैसे हो सकता है?"

– संध्या राय

इस स्तंभ के लिए आप अपने बच्चों, मित्रों व संबंधियों के बच्चों के मुख से कही गई बात भेज सकते हैं. प्रत्येक प्रकाशित संस्मरण पर 30 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. अपने संस्मरण इस पते पर भेजें : संपादकीय विभाग, सरिता, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विकास के लिए पिता का प्यार

लेख • उषा मनोहर

हमारे समाज में यह आम धारणा है कि बच्चे के प्रति पिता का कर्तव्य केवल भौतिक है, अर्थात अच्छी कमाई कर के उस की आवश्यकताओं की पूर्ति करना, उस की पढ़ाई के लिए पैसा जुटाना और समयसमय पर पिता के अधिकार को जतलाते हुए डांटडपट कर उसे सीधे रास्ते चलाना. इस के विपरीत, मां के कर्तव्यों की सूची लंबी होती है और अधिकांश महिलाएं अपने कर्तव्य को बखूबी निभाती हैं. शायद यही कारण है कि बच्चे आजीवन मां के प्रति आकर्षित रहते हैं. और जहां पिता बच्चे के लिए भौतिक सुख ही जुटाता है, वहां बच्चे का सर्वांगीण विकास नहीं हो पाता.

बच्चे के शारीरिक, मानसिक और नैतिक विकास के लिए मातापिता दोनों का प्यार आवश्यक है. एक ओर जहां भौतिक सुखसाधन उसे अच्छा खाने, पहनने, रहने और शिक्षा प्राप्त करने की सुविधा दे कर

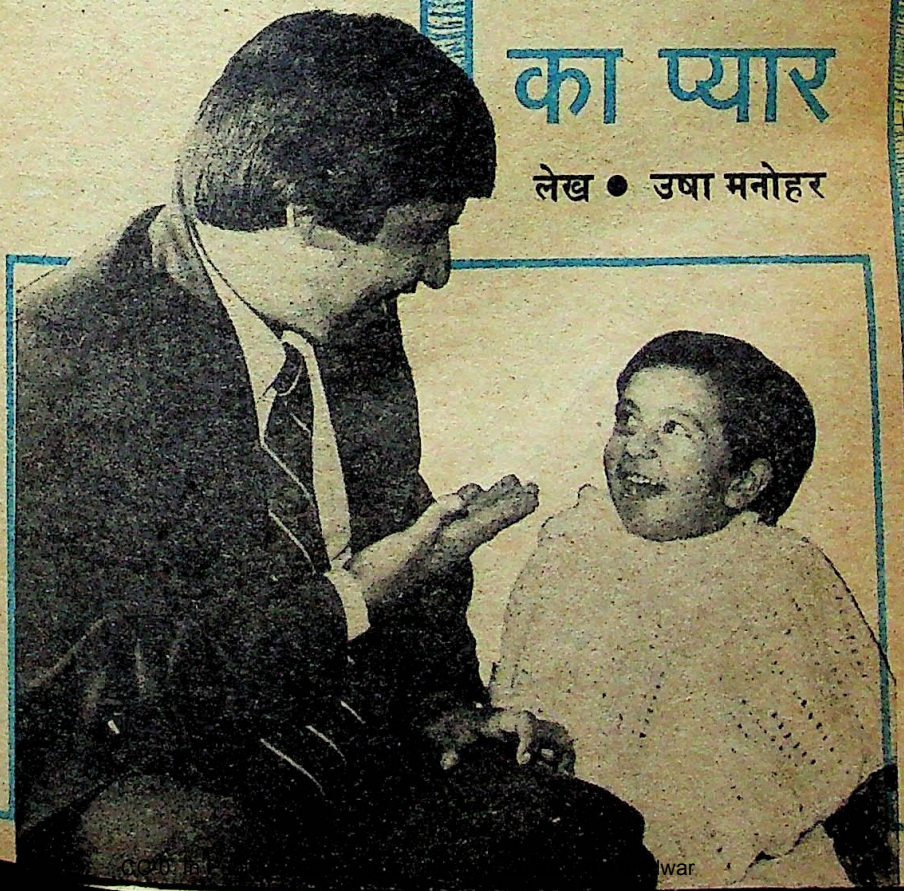

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बच्चोंके मु

व

एक बार मेरे पिताजी [illegible] देख रहे थे. उसी समय मेरे [illegible] छोटे भाई ने उन से पूछा कि [illegible] भविष्यफल इस से जाना [illegible]

पिताजी ने [illegible] धरती के समान है जिस [illegible] जड़ जुड़ी हुई हैं. उस के प्यार की ऊष्मा, उस के स्नेह का एहसास हम पैदा होने से पहले ही पा जाते हैं. यह एक ऐसा प्यार है जो बिना मांगे हमारी ओर निर्बाध गति से बहता है. मनोवैज्ञानिक एरिक फ्राम के कथनानुसार मां जब बच्चे को प्यार देती है तो उसे मानव अस्तित्व का सब से पहला आधार प्रदान करती है. बच्चे को एहसास होता है, "मुझ से कोई प्रेम करता है." यही प्रेम की भावना है जो हमें इनसान बनाती है, जो बच्चा निर्बाध, निर्द्वंद्व व निर्मल प्रेम पाएगा वह जीवन में वैसा ही प्यार बिखेरेगा.

इस के ठीक विपरीत है पिता का प्यार. मां का प्यार भावनाओं की दुनिया बसाता है तो पिता का प्यार बच्चे के विचारों व बौद्धिकता का विकास करता है. अनुशासन, बाहरी जगत को पहचानना, विचारों की दुनिया में विचरना, घूमनाफिरना, ये सब बातें पिता का प्यार उसे सिखाना शुरू कर देता है.

आमतौर पर बच्चा जब मौलिक आवश्यकता की पूर्ति करने लायक हो जाता [illegible] और खानेपीने, पहनने के लिए मां पर [illegible] तर्वथा आश्रित नहीं रहता तो उस का ध्यान पिता की ओर आकर्षित होने लगता है. क्योंकि अब एक नई दुनिया का नजारा उस के सामने खुलने लगता है. बच्चा नईनई बातें सीख कर समाज में पहला कदम रखने की तैयारी में होता है. अब वह एक स्वतंत्र व्यक्तित्व के रूप में विकसित होने लगता है. ऐसे में मां नहीं, पिता उस का मार्गदर्शन करेगा तो बच्चा आश्रित नहीं बल्कि एक आत्मनिर्भर व्यक्तित्व हासिल करेगा.

आज के नारीमुक्ति के युग में कोई भी नारी आगे बढ़ कर पूछेगी, "क्यों, मां के प्यार में क्या कमी है कि पिता के प्रेम की आवश्यकता हो." मेरा विनम्र निवेदन है कि यहां नारीपुरुष की लड़ाई नहीं बल्कि प्रकृति के नियम की बात है. मां का प्यार बच्चे को सुरक्षा देता है. किंतु कुछ बड़े होने पर यदि मां उसे निर्भरता और आश्रय की मंजिल से आगे नहीं बढ़ने देगी तो उस के स्वतंत्र व्यक्तित्व का विकास नहीं होगा. वह एक आश्रित व दब्बू व्यक्ति के रूप में सारा जीवन बिता देगा.

यही कारण है कि पिता के द्वारा मार्गदर्शन आवश्यक है. मनोविश्लेषण के लिए विशेषज्ञों के पास आए कई व्यक्तियों की पृष्ठभूमि पर विचार करें तो हम जान पाएंगे कि बचपन में पिता का ध्यान व प्रेम न पाने के कारण किस प्रकार के मनोविकार उत्पन्न हो सकते है.

रामस्वरूप का केस लीजिए. अच्छे घर के थे. अच्छे ओहदे पर भी थे. किंतु व्यक्तित्व था एक दब्बू का सा. हमेशा किसी न किसी पर निर्भर रहने की आदत

परिवार के लिए मात्र भौतिक साधन जुटाने को ही अपने कर्तव्य की इति समझ लेने वाले पिता क्या यह जानते हैं कि उन का यह व्यवहार बच्चों में कई तरह के मनोविकार उत्पन्न कर के उन की प्रगति में बाधक भी बन सकता है?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

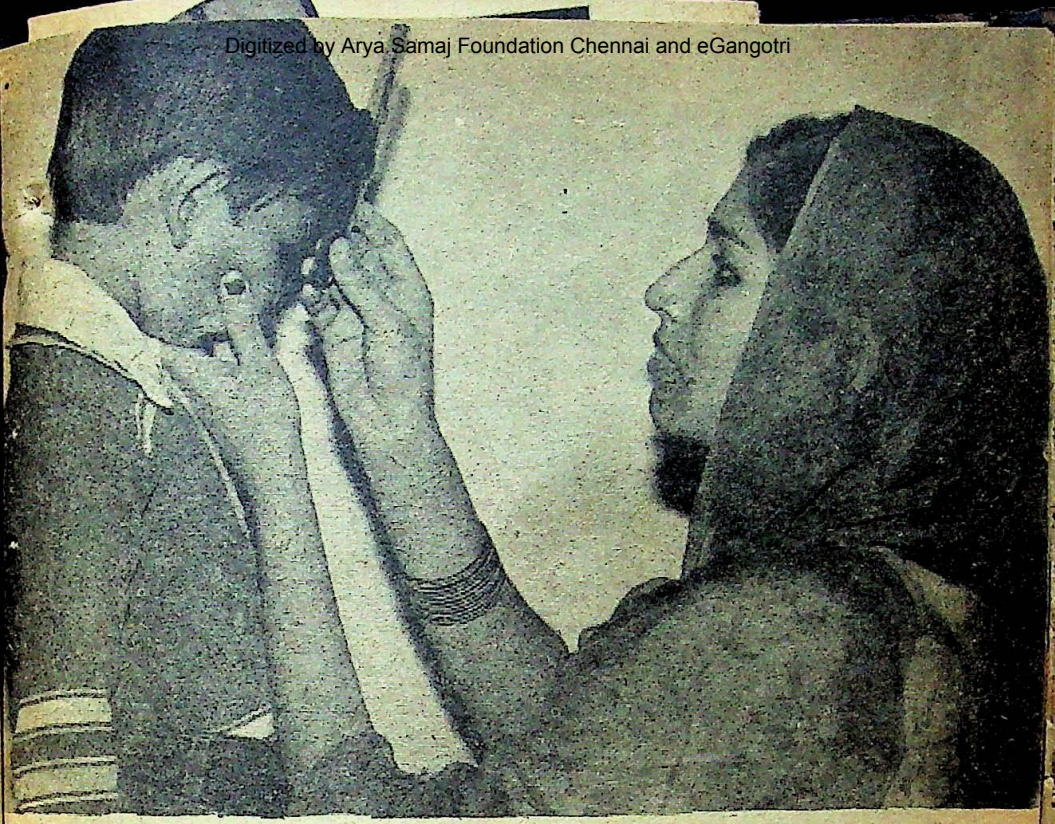

यदि मां बच्चे को निर्भरता और आश्रय की मंजिल से आगे नहीं बढ़ने देगी तो उस का स्वतंत्र विकास नहीं होगा.

थी. उन का व्यक्तित्व एक बेल के समान था जो सदा सहारा ढूंढ़ती है. उन में पुरुषत्व की धमक व हिम्मत नहीं थी. जरा सी बात दिल को लग जाती और आंखें भर आतीं.

आयु के साथ यह दोष एक मानसिक रोग का रूप ले बैठा. तब उन्होंने अपने मनोविश्लेषक मित्र की सलाह ली. विशेषज्ञ ने रोग की जड़ तक पहुंच कर देखा तो पाया कि यह चरित्र दोष बचपन में ही रामस्वरूप के व्यक्तित्व में समा गया था. मां काबिल किंतु प्रभावी व्यक्तित्व की महिला थीं. पिता कमजोर थे और उन्होंने घर में कभी दखल नहीं दिया, न ही रुचि ली क्योंकि उन के विचार से बच्चे का पालनपोषण स्त्री का काम है.

अब बच्चे मां पर निर्भर रहने लगे. मां ने कभी उन का स्वतंत्र विकास नहीं होने दिया. वह सदा आश्रित रहे. कोई बात होती बच्चे मां से कहते. मां उन्हें मार्गदर्शन नहीं दे पाती, उन्हें परिस्थितियों का सामना करने की हिम्मत नहीं दे पाती. बल्कि मुरगी की भांति उन्हें पंखों की पनाह में ले लेती. परिणामस्वरूप बच्चे कमजोर मानसिकता ले कर बड़े हुए. आज के प्रतियोगिता के युग में मनोवैज्ञानिक रूप से निर्बल व्यक्ति कहां खड़ा होगा?

अब हमारे समक्ष प्रश्न आता है कि क्या लड़केलड़कियों को समान रूप से पिता के प्रेम एवं आदर्श की आवश्यकता होती है? क्या यह सर्वविदित सत्य नहीं कि लड़कियां मां का और लड़के पिता का अनुकरण स्वाभाविक रूप से ही करते हैं? जी हां, यह सत्य है कि लड़के बचपन से 'मैं बड़ा हो कर पिताजी की तरह बनूंगा' कहते हैं और उन्हीं की भांति व्यवहार करते हैं. लड़कियां बहुधा 'मैं मां की तरह बनूंगी' कहती हैं. इसे मनोविज्ञान की भाषा में आदर्श (माडल) ढूंढ़ना कहते हैं. फिर भी यह कहना सही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं कि लड़कियों को पिता के आदर्श की इतनी आवश्यकता नहीं जितनी मां के आदर्शों की है.

महान मनोवैज्ञानिक कार्ल युंग के अनुसार हर व्यक्ति में दो तत्त्व होते हैं जिन्हें 'ऐनिमा' और 'ऐनिमस' कहते हैं. इन में से प्रथम स्त्री तत्त्व व द्वितीय पुरुष तत्त्व है. लड़के पिता के समान ऐनिमस ऊपरी व्यवहार में विकसित करते हैं पर उन में सुप्त अवस्था में ऐनिमा होता है जो मां से प्राप्त करते हैं. यह तत्त्व उन्हें कोमल भावनाएं प्रदान करता है जो छिपी रहती हैं, केवल समय आने पर सामने आती हैं.

संतुलित विकास

इस के विपरीत लड़कियां स्त्रियोचित ऐनिमा मां से प्राप्त करती हैं और यह उन के ऊपरी व्यवहार में दिखता है. यह उन्हें कोमल, भावुक, नाजुक बनाता है. किंतु पिता अथवा अन्य निकटतम पुरुषों से लड़कियों का 'ऐनिमस' विकसित होता है. यह उन्हें परिस्थिति का सामना करने का साहस, अनुशासन, कठोरता आदि प्रदान करता है. लड़कियों में ये गुण छिपे रहते हैं और समय आने पर ही उन का उपयोग होता है.

जब संतुलित मात्रा में बच्चे को पिता व मां का प्यार मिले तो वह संतुलित रूप से विकास की ओर बढ़ेगा. बड़े होने पर जब व्यक्तित्व परिपक्व हो जाता है तो व्यक्ति में पिता के तत्त्व समाज में, बाहरी दुनिया से आदानप्रदान, व्यवहार आदि में उस का मार्गदर्शन करते हैं और मां के तत्त्व उसे इनसानियत की राह पर चलाते हैं. दया, अनुकंपा, प्रेम आदि उस में वास करते हैं.

पिता का संतुलित व्यवहार घर में प्रेम व अनुशासन का वातावरण बनाए रखता है, बच्चे मां व पिता दोनों से सुरक्षा व प्रेम पा आनंदित रहते हैं. उन्हें विश्वास होता है कि किसी भी अड़चन अथवा आवश्यकता के समय थामने के लिए एक ठोस दामन उन के पास है. अतः निर्भय हो कर बच्चा पढ़ाई, खेलकूद आदि सभी क्षेत्रों में तेजी से आगे बढ़ता है.

इस के विपरीत जहां पिता दिनरात अपने में खोया रहता है, वहां मां पर दोगुना बोझ पड़ जाता है. वह मां का प्यार लुटा देती है किंतु बच्चे एक पराअहं (सुपरईगो) से वंचित रहते हैं. जो वह केवल पिता से पा सकते है. इस क्षेत्र में हुए कई अध्ययनों से यह विदित होता है कि ऐसे वातावरण में पले बच्चे हिस्टीरिया (उन्माद) या नशीली दवाइयों का शिकार हो जाते हैं, जीवन से जूझने की सामर्थ्य खो बैठते हैं.

इन सब का अर्थ यह नहीं कि मां बच्चे को अनुशासन में नहीं रख पाती. जहां किसी कारण पिता की छत्रछाया नहीं हो, वहां मां को दोहरी भूमिका निभानी पड़ती है. उसे कठोर होना चाहिए ताकि वह बच्चे को ममता के साथसाथ मार्गदर्शन भी दे सके.

इतिहास साक्षी है कि स्त्रियों ने यह भूमिका अच्छी तरह निभाई है. छत्रपति शिवाजी की मां जीजाबाई का उदाहरण सामने है. शाहजी भोंसले, शिवाजी के पिता, अधिकतर बाहर रहते थे क्योंकि उन का काम बीजापुर में था. मां ने शिवाजी में एक ओर प्रेम जैसे कोमल गुण विकसित किए तो दूसरी ओर कर्तव्य की महान प्रेरणा उन के रोमरोम में भर दी.

आज के संदर्भ में, जहां तलाक या पिता की मृत्यु के कारण मां पर ही गृहस्थी का बोझ आ पड़ा हो, वहां उसे पुरुष की भूमिका बाहर ही नहीं घर में भी निभानी चाहिए, वरना पिता की अनुपस्थिति में लड़के बेकाबू हो सकते हैं. ऐसे में लड़कों के प्रति अधिक सतर्कता व सावधानी बरतनी चाहिए. लड़के बाहरी दुनिया के संपर्क में अधिक आते हैं.

घर में पुरुषतत्त्व के अभाव में वह बाहर किसी पुरुष को मन ही मन संबल या आदर्श मान कर एक छवि (इमेज) बना लेते हैं. फिर उसी को अपना ध्येय या 'हीरो' मान कर उस के पदचिह्नों पर चलते हैं. यदि यह पुरुष सचमुच अच्छा या आदर्श है तो बच्चा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

RADEUS/PAH/6-87 RR

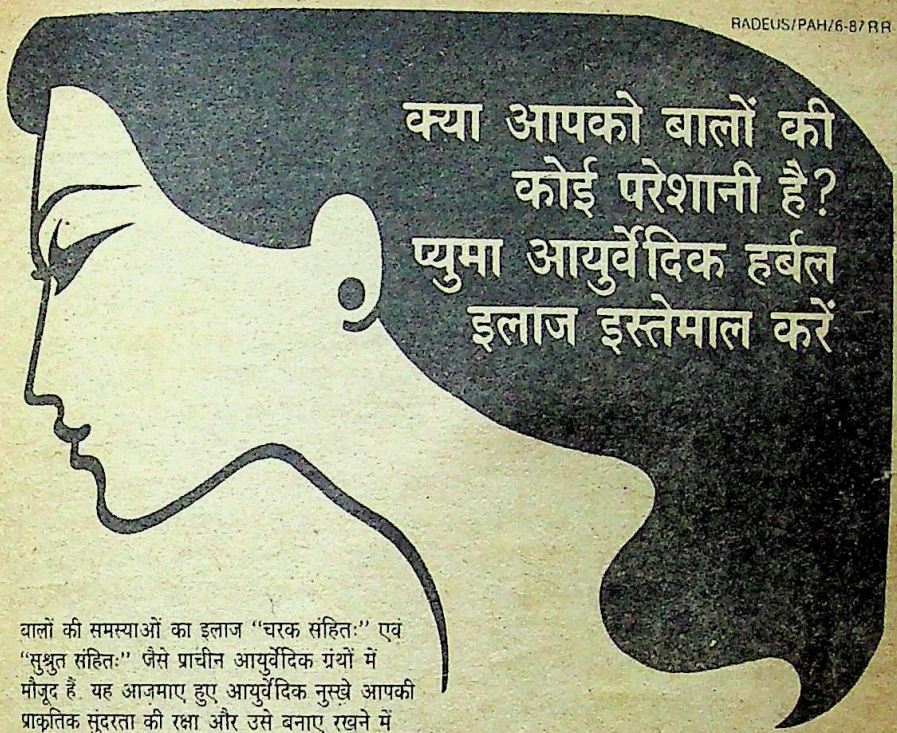

क्या आपको बालों की कोई परेशानी है? प्युमा आयुर्वेदिक हर्बल इलाज इस्तेमाल करें

बालों की समस्याओं का इलाज "चरक संहिताः" एवं "सुश्रुत संहिताः" जैसे प्राचीन आयुर्वेदिक ग्रंथों में मौजूद हैं. यह आज़माए हुए आयुर्वेदिक नुस्ख़े आपकी प्राकृतिक सुंदरता की रक्षा और उसे बनाए रखने में सहायक सिद्ध होते हैं.

प्युमा आयुर्वेदिक हर्बल इलाज इन्हीं सदियों से आज़माए नुस्ख़ों पर आधारित हैं–इनमें केवल क़ुदरती औषधि जड़ी-बूटियों का इस्तेमाल होता है। (किसी भी प्रकार का सिंथेटिक आधार या "फिलर" नहीं मिलाया जाता है) नीचे दिए इलाजों का विवरण पढ़कर अपनी समस्या का हल ढूंढ लीजिए.

दांडिका – प्युमा हर्बल एन्टी डैन्ड्रफ़ ऑयल (७० मि.ली. रु. १८.१५) रुसी को साफ़ करे बालों की जड़ में पपड़ी जमने न दे.

सुकेशी – प्युमा हर्बल हेयर टॉनिक पावडर (२० ग्राम रु. १२.६५) बालों को झड़ने से रोके, स्वस्थ बालों के विकास में सहायक.

लिसिका – आयुर्वेदिक एन्टीलाइस ऑयल – (१५ मि.ली. रु. ५.५०) जूं और लीखों से छुटकारा दिलाने में सहायक. गैरज़हरीला. बच्चों के लिए सुरक्षित.

प्युमा शिकाकाई शैम्पू – (१०० मि.ली. रु. १५.४०) अरीठा और शिकाकाई नर्मी से बालों को साफ़ करें.

कीमतों में स्थानीय कर शामिल नहीं है.

चुनिंदा शहरों के बड़े केमिस्टों, जनरल स्टोरों और ब्युटी पार्लरों में उपलब्ध.

डाक द्वारा पार्सल मंगाने के लिए उत्पादन की कीमत का (प्युमा आयुर्वेदिक हर्बल प्रायवेट लिमिटेड के नाम से) डिमांड ड्राफ्ट या मनी ऑर्डर भेजें. डाक खर्च वी पी पी द्वारा देय होगा.

प्युमा

प्युमा आयुर्वेदिक हर्बल इलाज

प्युमा आयुर्वेदिक हर्बल प्रायवेट लिमिटेड,
किंग्सवे, नागपुर-.४४० ००१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अच्छी राह पर चलेगा. किंतु 90 प्रतिशत उदाहरणों में पाया गया है कि बच्चे बाहर से जब प्रेरणा लेंगे तो उस व्यक्ति का थोथापन या बुरे गुण ही जल्दी ग्रहण करेंगे.

जैसे एक प्रसिद्ध उपन्यास में पढ़ा था: कहानी का नायक पिता की देखरेख से वंचित है क्योंकि पिता को अपने कारोबार, पार्टियां, ताश आदि से फुरसत नहीं है. उन के घर के निकट ही पुराने शाही परिवार से संबंधित एक सज्जन रहते हैं जो घोड़े पर बैठ कर शान से सैर करने के लिए जाते हैं. बस, नायक ऐसा ही बनने के स्वप्न देखता है. अपने घर के वातावरण में जब नहीं मिल पाता तो घर से भाग जाता है आदि. घर से भागे हुए या नशीली दवाओं के कीचड़ में धंसे हुए बच्चों की व्यथा के पीछे पिता के मार्गदर्शन का अभाव होता है.

अतः जो स्त्रीपुरुष यह सोचते हैं कि बच्चे मां की जिम्मेदारी हैं, पिता केवल पैसे जुटाने का साधन है, वे एक गलत धारणा लिए चल रहे हैं. पशुपक्षियों में तो शायद नर की भूमिका बच्चे पैदा होते ही समाप्त हो जाती है पर हम मानव हैं और हमारे सामने बड़ेबड़े उद्देश्य होते हैं जो हमें बच्चे के समक्ष रखने हैं. उन की आंखों में सपने सजाने हैं. उन में बुद्धि, तर्क, अनुशासन आदि का विकास करना है. पिता का सही मार्गदर्शन ही मां की ममता के साथ मिल कर बच्चे को जीवन की राह पर चलने का साहस दे सकता है.

बच्चे को चाकलेट पकड़ा देना या आयु के अनुसार कोई खिलौना थमा देना या गोद में उठा कर पुचकार लेना ही प्यार नहीं है. न ही इस के साथ पिता का कर्तव्य समाप्त हो जाता है बल्कि आप को तो कुछ छोटेबड़े बलिदान करने होते हैं.

छुट्टी का दिन है. इसे घर में अपने परिवार के साथ बिताइए. इधरउधर भटकने या दफ्तर में जबरदस्ती काम कुरेद कर निकालने या दिन भर टेलीविजन देखते रहने से आप अपना ही नहीं परिवार का भी नुकसान कर रहे हैं.

इस के स्थान पर अपने नन्हेमुन्नों के संग बैठिए. उन से बातचीत कीजिए. यदि आप ने लड़के के लिए खिलौने के कलपुर्जे ला कर दिए हैं तो उन से वह क्या बनाता है, इस में रुचि लीजिए. बच्चा आनंदित अनुभव करेगा. कई चीजें बनाबना कर आप को दिखाएगा और आप के सहयोग से उस की कल्पनाशक्ति बढ़ेगी. बेटी यदि कोई कहानी, परिकथा पढ़ रही है तो उस में दिलचस्पी लीजिए. आप की रुचि से आप को खुश करने के लिए बच्चे और अधिक मेहनत करेंगे ताकि वे आप को अपना करतब दिखा सकें.

बच्चों के साथ खेलिए

बच्चों के साथ बौद्धिक खेल खेलिए, जैसे शब्द रचना, अंताक्षरी, सामान्य ज्ञान के प्रश्न, कभी कैरम, कभी बैडमिंटन, जो भी उन में उत्साह, उमंग भर दे. किसी भी प्रकार का खेल खेलें, बच्चों को उस में पूरी तरह डुबो दीजिए. सच मानिए, आप एक ऐसा सृजनात्मक कार्य कर रहे हैं जो जीवनपर्यंत आप को प्रसन्न करेगा. इस तरह के खेलों से बच्चों का बौद्धिक स्तर ऊंचा उठेगा. बड़े हो कर किसी प्रतियोगिता आदि में वे हमेशा प्रथम रहेंगे.

घर में दर्जनों छोटेछोटे काम पड़े होंगे, बच्चों को साथ ले कर ये काम कीजिए. आप का नेतृत्व (लीडरशिप) का गुण बच्चों में भी उभर आएगा जो जीवन में हमेशा काम आएगा. जैसे, शीशे चमकाने हैं, फ्रिज की सफाई करनी है तो बच्चों को लीजिए. फिर मिल कर काम करने में बच्चों का उत्साह देखिए, आप चौंक जाएंगे.

खेल, काम, कहानियों आदि के माध्यम से आप बच्चे के जीवन में इस प्रकार समा जाएंगे कि प्यार, मार्गदर्शन, अनुशासन यह सभी आवश्यक पहलू बिना सिखाए ही बच्चे सीख जाएंगे.

आप तो जानते ही हैं कि उपदेश देने से उदाहरण सामने रखना अधिक प्रभावशाली होता है.

सरिता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिर हम लोग रहेंगे कहां, यह भी सोचा है तुम ने?'' विपिन बाबू की खीझ स्वाभाविक थी.

रोशन जानता था कि एक दिन ऐसा आने वाला है. उस ने इस स्थिति से निबटने की पहले ही तैयारी कर ली थी,' ''हम क्या करें? बिना पगड़ी इस शहर में कौन किराए पर मकान देगा हमें और वह भी इस किराए पर?'' रोशन बोला.

''शर्म नहीं आती तुम्हें ऐसी बात करते? पिछले महीने इस शहर में तुम ने

लोग विरासत में अपनी संतान को क्या कुछ नहीं दे जाते. पर विपिन बाबू अपने पुत्र पुनीत को विरासत में सिर्फ एक मुकदमा दे गए, एक ऐसा मुकदमा, जिसे लड़तेलड़ते आदमी बीत चुका था, लेकिन मुकदमा जीवित था.

''आप तो दोनों अदालतों से मुकदमा जीत गए हैं. यह सब मेरी बहस का ही तो कमाल है. हां, मेरी फीस की बकाया रकम...'' वकील साहब बोले.

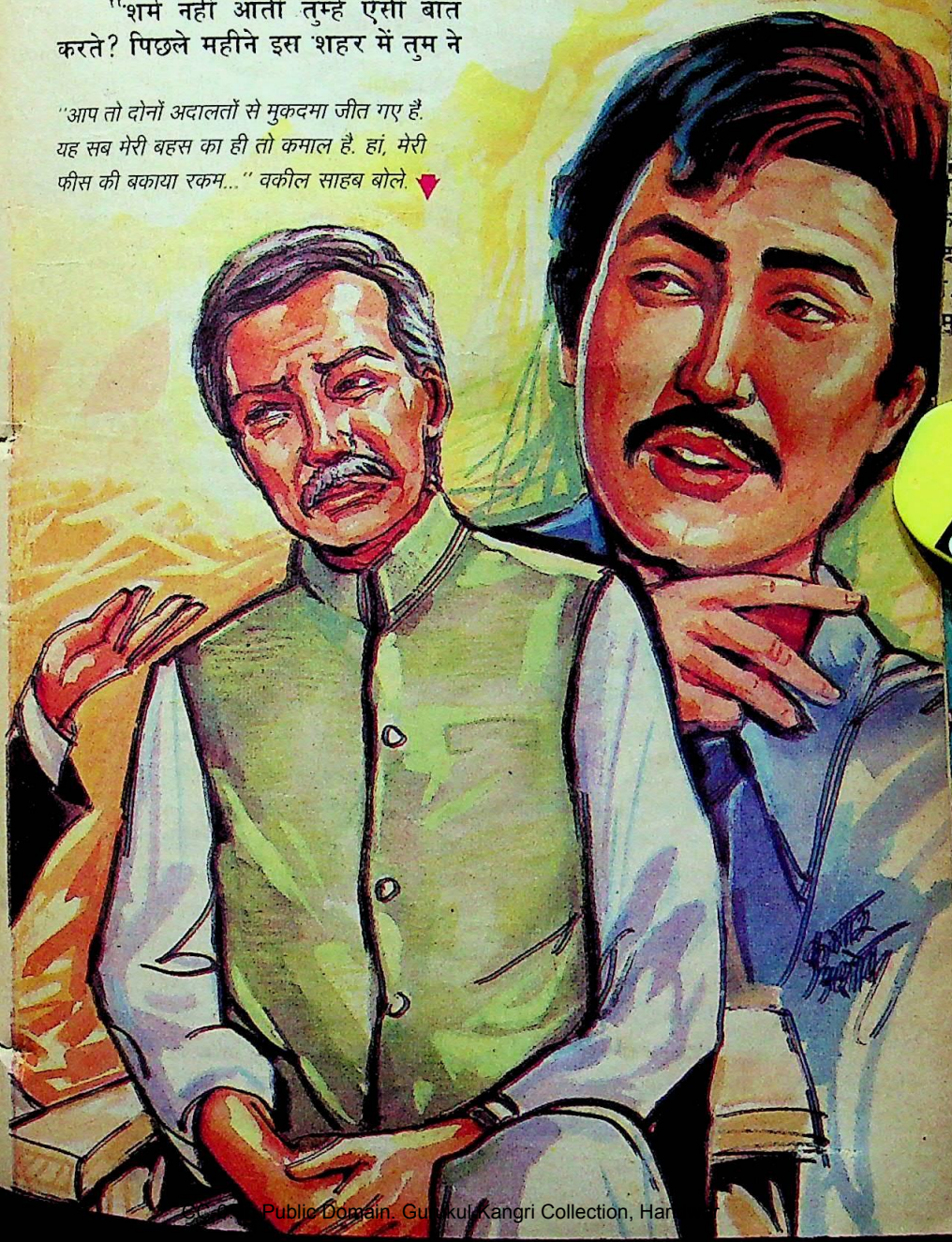

CC-0. Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Har

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपना खुद का मकान बना कर उसे पगड़ी में मोटी रकम ले कर भारी किराए पर चढ़ा दिया और अब मेरा बुढ़ापा खराब करने पर तुले हो," विपिन बाबू क्रोध में कांपने लगे.

किराने का व्यापारी रोशन किसी भी बात को लाभहानि के तराजू में तौल कर ही बोलता था. वह जानता था कि अब उसे क्या कहना है. "ठीक है, कोर्टकचहरी खुली है, जोर आजमा लो," यह कह कर रोशन बरामदे से उठ कर मकान के अंदर चला गया और उस ने बेशर्मी से मकान का दरवाजा बंद कर दिया.

विपिन बाबू अपने ही मकान के दरवाजे खुद के लिए बंद होते देख कर भौचक्के से रह गए. क्या इसी दिन के लिए उन्होंने सरकारी ऋण ले कर हाउसिंग बोर्ड से मकान खरीदा था कि उस में खुद रहने को भी तरस जाएंगे?

वह दिन याद कर उन की आंखें डबडबा गईं जब नौकरी के प्रारंभिक वर्षों में सहगल का गाया अपना मनपसंद गाना "इक बंगला बने न्यारा" गुनगुनाते रहने पर एक दिन उन की देहाती पत्नी ने खीझ कर ताना मारा था," न्यारे बंगले की जगह एक छोटा सा मकान ही ले लो तो नौकरी खत्म होने के बाद सिर छिपाने को ठौर तो मिलेगा."

यही तो ताना उन्हें चुभ गया था. साथ ही वह अपने घर के महत्त्व को भी भांप गए थे वरना वह दफ्तर के काम में इतने डूबे रहते थे कि अपने बारे में सोचने का समय ही नहीं निकाल पाते थे.

विपिन बाबू बड़े दुखी मन से अपनी मोपेड चालू कर घर की ओर चल दिए.

सुबहसुबह ही उन का मूड खराब हो गया था.

उन जैसा शांत प्राणी भी उस समय क्रोध से विचलित था. घर से बाजार या दफ्तर जाते समय कचहरी रास्ते में ही पड़ती थी.

सो उस की इमारतों पर उन की नजर प्रायः ही पड़ती थी. लेकिन आज वह कचहरी को बड़ी हसरत भरी नजर से देख रहे थे. उन्हें विश्वास था कि न्यायालय उन की सेवानिवृत्ति के बाद उन के खुद के रहने की निजी जरूरत को देखते हुए फैसला उन्हीं के पक्ष में देगा और फिर अमीन द्वारा डुगडुगी बजवा कर सरेआम रोशन को बेइज्जत करते हुए उस से मकान खाली करवा कर उन्हें कब्जा दिलवा देगा.

लेकिन यह सब कब होगा? उन्होंने यह भी सुन रखा था कि दीवानी मुकदमे वर्षों तक चलते रहते हैं.

अनिश्चय व सशंकित मनःस्थिति में दिन भर उन का मन कार्यालय में नहीं लगा. वह अपनी मेहनत, ईमानदारी व सूझबूझ से दूसरे दरजे के अध्यापक से शुरू कर के जिला शिक्षा अधिकारी के पद पर पहुंचे थे. अपने सेवाकाल के अंतिम चरण में उन्होंने अपनी नियुक्ति शिक्षा निदेशालय में करवा ली थी ताकि वह अपनी पेंशन का मामला जल्दी से तय करवा सकें और अपना गृह जिला होने से कुछ घरेलू कार्य भी निबटा सकें. इन में मुख्य कार्य अपना मकान खाली करवाना था ताकि सेवानिवृत्ति के बाद वह अपनी पत्नी के साथ उस में रह सकें.

अपने छोटे से परिवार का दायित्व वह करीबकरीब पूरा कर ही चुके थे. एक लड़की थी स्वाति जिस का विवाह कर दिया था. दूसरा था लड़का पुनीत जो इंजीनियर बन कर अमरीका में कंप्यूटर विज्ञान में निपुणता हासिल करने गया हुआ था. विपिन बाबू विशुद्ध भारतीय संस्कृति व आस्थाओं से ओतप्रोत सीधेसादे इनसान थे. उन की हार्दिक इच्छा थी कि उन का मकान खाली हो तो पुनीत को भारत बुला कर उसी में उस का विवाह रचाएंगे. उस के लिए उन्होंने अपने मित्र की एक सुंदर, सुसंस्कृत व गृह-कार्य में दक्ष कन्या भी ढूंढ़ रखी थी.

लेकिन जब मकान के लिए, लिए गए ऋण की साढ़े चार सौ रुपए की मासिक किस्त वेतन में से कटने लगी तो विपिन बाबू का हाथ तंग रहने लगा. उन्हें तो सरकारी मकान रहने को मिला हुआ था, सो अपना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

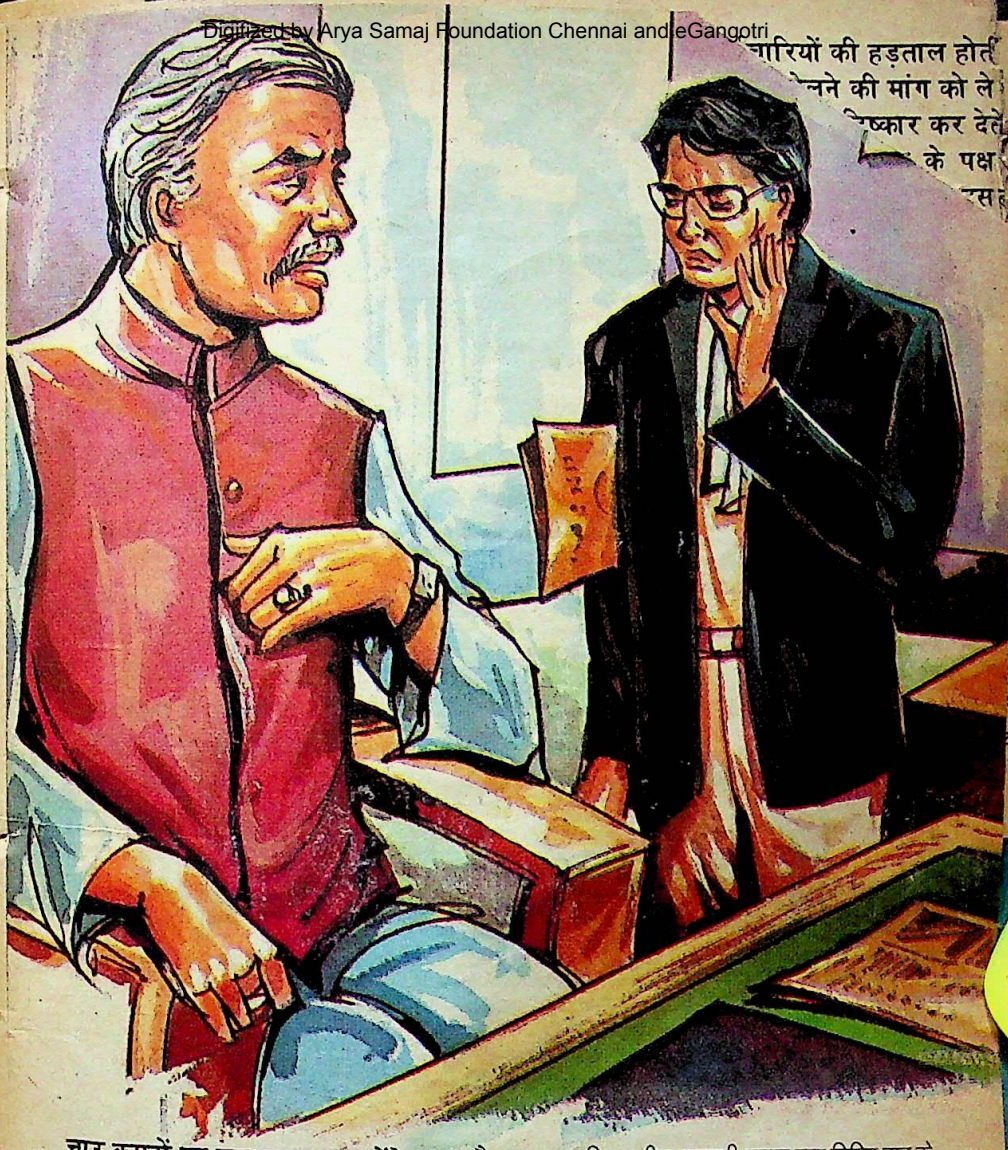

चार कमरों का नया मकान उन्होंने चार सौ रुपए मासिक किराए पर रोशन को दे दिया था.

लेकिन गत 10 वर्षों में हालात बिलकुल बदल गए थे. शहर के पास सेना का डिवीजन मुख्यालय हो जाने व नहर आने से सिंचाई व वन विभाग के अनेक नए कार्यालय खुल जाने से मकानों के किराए आसमान को छूने लगे थे. पगड़ी का रिवाज अलग चालू हो गया था.

आज विपिन बाबू को इस मकान की 25 हजार पगड़ी और एक हजार रुपया

एक दिन वकील भगवती प्रसाद खुद विपिन बाबू के घर आए और मुंह लटका कर बोले, "रोशन ने उच्च न्यायालय में अपील कर के कब्जे की काररवाई रुकवा दी है."

मासिक किराया मिल सकता था. ऐसे में रोशन जैसा व्यापारी इतने सस्ते मकान को खाली करने की बेवकूफी कैसे कर सकता था.

वकील भगवती प्रसाद किरायानामा पढ़ लेने के बाद पान की गिलौरी मुंह में रखते हुए विपिन बाबू से बोले, "आप फिक्र मत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपना खुद का मकान [illegible] मोटी रकम ले [illegible] दिया और [illegible] तले [illegible]

उलझन

किस मोड़ पर ला खड़ा किया
है जिंदगी ने हम को
कि हर राह है उलझी
और भटकने का डर है.
—संतोष शोभासरीया

कीजिए. एक साल के अंदरअंदर आप का मकान खाली हुआ समझो. कल ही रोशनलाल को नोटिस भेज देता हूं और फिर दावा कर देते हैं."

"लेकिन क्या एक साल में मकान खाली हो जाएगा?" विपिन बाबू ने सशंकित मन से पूछा.

"एक साल! यह तो मैं ने ज्यादा से ज्यादा बतलाया है. यह देखिए किरायानामा में साफ लिखा है कि जब भी मकान मालिक मकान खाली करने को कहेगा तो एक माह का नोटिस देगा जिस पर किराएदार मकान खाली कर उस के सिपुर्द कर देगा और यह रहे रोशनलाल के दस्तखत. वह इस इकरार से कानूनन पाबंद है कि नहीं? बस अदालत में जाने भर की देर है," वकील साहब मुंह में थोड़ी सी निकली पान की लार को अपने रूमाल से पोंछते हुए बोले.

वकील भगवतीप्रसाद जानते थे कि किरायादारी कानून में ऐसे इकरार का कोई अर्थ नहीं होता. उन्हें यह भी मालूम था कि दीवानी दावे का मतलब करीबकरीब एक युग का चक्कर होता है लेकिन फरीक को फंसाने की कला उन्हें विरासत में मिली थी.

अब विपिन बाबू सेवानिवृत्त हो रहे थे. रोशन पर दावा किए करीब चार माह हो चुके थे. अभी तो रोशन पर दावे का सम्मन भी तामील नहीं हुआ था. सम्मन की तामील के बारे में दी गई रिपोर्ट बतला रही थी कि उस पर रोशन के पैसे का असर है. रिपोर्ट में लिखा था कि प्रतिवादी की उस के घर व दुकान पर तलाश की तो वह नहीं मिला. जबकि वास्तविकता यह थी कि रोशन मकान या दुकान छोड़ कर कहीं नहीं जाता था.

कोई सरकारी कर्मचारी सेवानिवृत्ति के एक माह बाद से अधिक समय तक सरकारी मकान कब्जे में नहीं रख सकता सो उसे मकान को खाली करना ही पड़ेगा. बीमा, ग्रेच्युटी और पेंशन के कागजात उन्होंने तैयार करवा लिए थे. कुल मिला कर करीब 80 हजार रुपए नकद तथा सात सौ रुपए मासिक पेंशन उन्हें मिलने वाली थी.

सेवानिवृत्ति की विदाई पार्टी के बाद उस रात विपिन बाबू सरकारी मकान की छत पर लेटे कभी अतीत में झांकने लगते तो कभी भविष्य की उलझनों में खोने लगते. उन के मानस पटल पर 30 वर्षों की नौकरी का हर दृश्य चित्रवत आने लगा.

उन्हें याद आया कि किस तरह उन्होंने अपने एक अधिकारी मित्र की सिफारिश पर रोशन को मकान किराए पर दिया था और रोशन ने उन के कहते ही मकान खाली कर देने का जबानी और लिखित में वादा किया था. बाद में वही साथी अधिकारी किसी विभागीय वैमनस्यतावश उन के खिलाफ हो गया और रोशन को भी उन के खिलाफ खूब भड़काया. उन्होंने सोचा, यदि पुनीत ही कहीं भारत में नौकरी कर रहा होता तो कुछ महीने वह उसी के पास रह लेते.

कुछ क्षणों के लिए उन्होंने अपने वर्तमान को भूल कर आंखें मूंद लीं, ठीक वैसे ही जैसे बिल्ली को देख कर कबूतर अपनी आंखें मूंद कर यह सोचने लगता है कि बिल्ली है ही नहीं. लेकिन यथार्थ के झपट्टे से कौन बच पाया है? शायद वही जिस ने साहस और संघर्ष की इच्छाशक्ति के साथ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उस झपट्टे का सामना करने की शक्ति जुटा ली हो.

सरकारी मकान खाली कर देने के बाद विपिन बाबू ने अपने एक शिष्य की सहायता से बिना पगड़ी दिए एक कमरा 250 रुपए मासिक किराए पर ले लिया था.

रोशन कभी डाकिए को तो कभी सम्मन तामील करने वाले कचहरी के कर्मचारी को खुश कर के सम्मन की तामील टालने में सफल हो रहा था.

आखिर एक दिन विपिन बाबू ने न्यायाधीश के समक्ष सम्मन तामील करने वाले कर्मचारी की शिकायत कर दी, जिस पर एक विशेष दूत स्वयं विपिन बाबू के साथ रोशन की दुकान कर भेजा गया और सम्मन तामील करवाया गया. लेकिन विपिन बाबू का दिल तब बैठने लगा जब दो साल हो जाने के बाद भी रोशन के वकील ने पांच पेशियां जवाब दावे के लिए ले लीं और मुकदमा वहीं का वहीं पड़ा रहा.

कभी मुंसिफ साहब अवकाश पर होते तो कभी वकील बीमार होता. कभी सरकारी कर्मचारियों की हड़ताल होती. कभी नया कोर्ट खोलने की मांग को ले वकील न्यायालय का बहिष्कार कर देते. आखिर चार साल बाद उन के पक्ष गवाही आरंभ हुई. गनीमत थी कि इस एक सख्त और बहुत योग्य मुंसिफ तैन हुए थे. विपिन बाबू पहले ही दिन अपने गवाहों सहित पहुंचे हुए थे. मुंसिफ साहब दोनों पक्षों के वकीलों की अनिच्छा के हो हुए भी चारों के बयान ले लिए. अब मुकद्द गति पकड़ने लगा.

पांचवां साल लगतेलगते मुकदमे के फैसला विपिन बाबू के पक्ष में हो गया.

मुकदमे की जीत की खुशी में मधुमेह के रोगी होते हुए भी उन्होंने मिठाई ज्यादा खा ली थी. दूसरे दिन रक्तचाप बढ़ने से तबीयत खराब हो गई तो एक महीने तक बिस्तर में ही पड़े रहे. सेवानिवृत्ति के बाद उन के स्वास्थ्य में काफी गिरावट आ गई थी. पुनीत का पत्र आया था कि वह कम से कम एक साल तक नहीं आ सकता.

(शेष पृष्ठ 177 पर)

"देखो जी, तैयारी में कोई कसर न रहे. स्कूल में मुन्ने का दाखिला बस आप के इंटरव्यू पर निर्भर करता है."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हालैंड में स्कूली शिक्षा

लेख • नीलिमा गुप्ता

हम लोगों को हालैंड में रहते हुए लगभग एक साल हो गया था. आसपास में कुछ लोगों से जानपहचान भी हो गई थी. एक दिन जब एक महिला ने मुझ से पूछा कि क्या मैं कुछ समय निकाल कर उन के बच्चों के स्कूल में चल सकती हूं और भारत की संस्कृति व अपने देश के जनजीवन के बारे में उन्हें कुछ बता सकती हूं तो मैं ने सहर्ष ही स्वीकृति दे दी, क्योंकि मैं भी यहां के बच्चों से मिलने की इच्छुक थी.

पढ़ाई के साथसाथ बच्चों को व्यावहारिक ज्ञान देने में भी कोई कसर नहीं छोड़ी जाती.

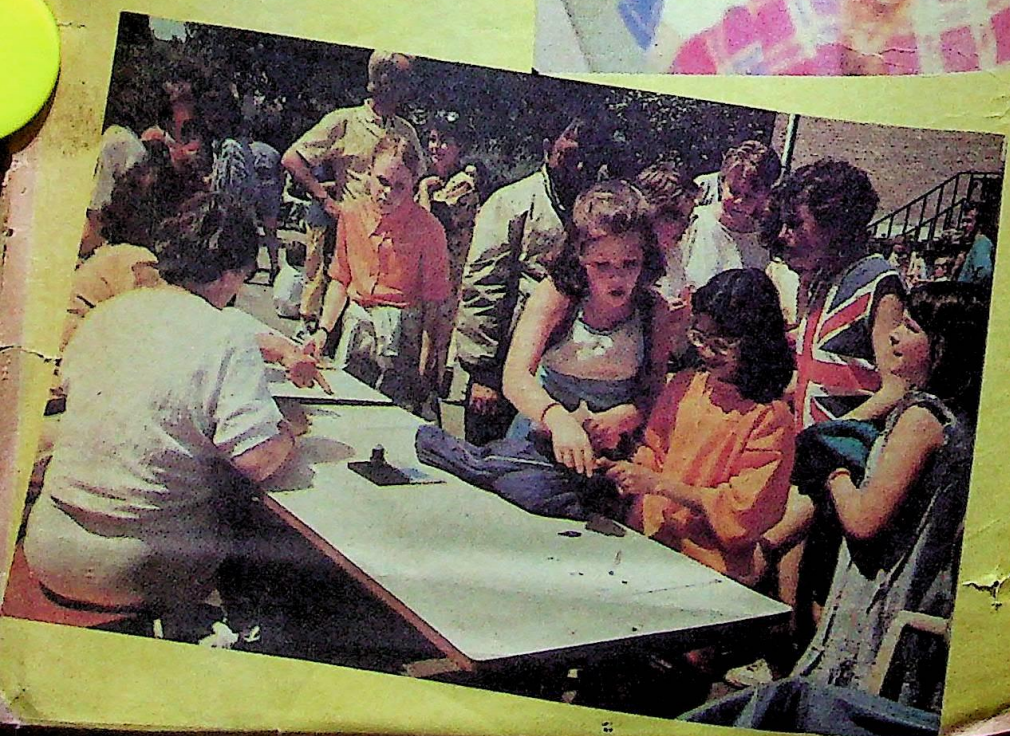

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समस्त सुविधाओं से पूर्ण होने के अतिरिक्त हालैंड की स्कूली शिक्षा में और कौन सी ऐसी विशेषता है, जो वहां स्कूली बच्चों में एक ऐसे गहरे आत्मविश्वास को जन्म देती है, जिसे पा कर वे तेजी से कामयाबी के मुकाम लांघते चले जाते हैं ?

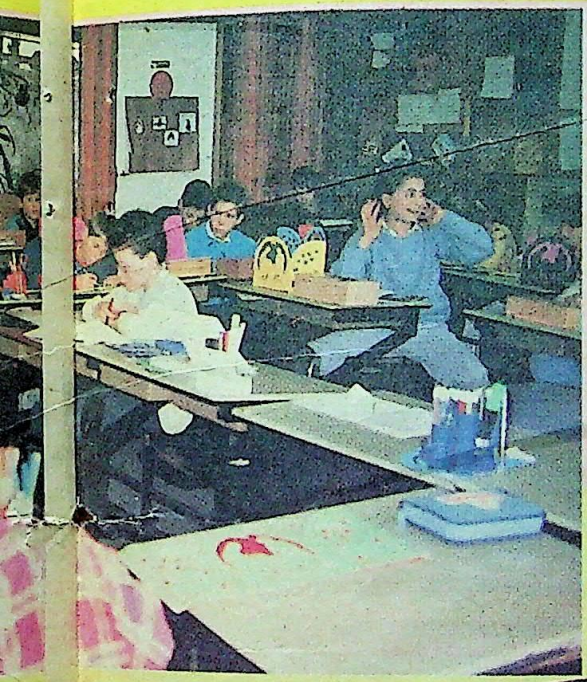

उसी महिला ने मुझे बताया कि बच्चे भूगोल में भारत के बारे में पढ़ रहे हैं. अतः वे कुछ बातें पूछना चाहते हैं. मैं ने उस महिला से कहा कि मुझे डच भाषा तो आती नहीं, इसलिए मुशकिल हो जाएगी. इस पर उस ने बताया कि भूगोल के अध्यापक को अंगरेजी आती है और वह भी साथ ही रहेंगी और जहां पर भी जरूरत होगी वह अनुवाद कर देंगी.

हालैंड की शिक्षा प्रणाली में हमारे यहां से थोड़ा फर्क है. पहले बच्चों को अपनी प्राइमरी शिक्षा के छः साल पूरे करने होते हैं.

स्कूल में क्रिसमस की तैयारी : शिक्षा को संस्कृति से दूर नहीं रखा गया.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उस के बाद वे माध्यमिक स्कूलों में जाते हैं. वहां भी पहले चार साल सभी विषय पढ़ाए जाते हैं. इस के बाद बच्चा जो भी विषय चुनना चाहे उस में व अन्य विषयों में अपनी पढ़ाई करता है. यहां पर प्राइवेट व पब्लिक स्कूल नहीं हैं, सिर्फ सरकारी स्कूल ही हैं. जब बच्चे की स्कूल जाने की उम्र होती है तो एक कार्ड घर में आ जाता है. इसी तरह से माध्यमिक स्कूल में भेजने के लिए भी वे लोग घर पर ही पत्र भेज कर सूचित करते हैं. इस से आगे की काररवाई करने में आसानी रहती है.

मुझे कुछ डर सा लग रहा था और मैं घबरा भी रही थी कि बच्चे न जाने क्या पूछ बैठें. रात भर बैठ कर भूगोल व इतिहास की कुछ पुस्तकों में से ढूंढ़ कर नोट्स तैयार किए. पर जब मैं उस महिला के साथ स्कूल पहुंची तो बच्चों ने बताया कि वे भारत के क्षेत्रफल, वातावरण, मौसम व मुख्य नगरों के बारे में थोड़ाबहुत पढ़ चुके हैं. वे हमारे यहां के धर्म, संस्कृति व सामान्य जनजीवन के बारे में ही जानना चाहते हैं.

इस पर मैं ने उन से कहा कि वे जो पूछना चाहते हैं, पूछ लें, क्योंकि भारत बहुत विशाल देश है और भिन्नभिन्न भाषाएं होने से हर प्रदेश की संस्कृति भी अलगअलग है. अगर मैं विस्तार से बताना शुरू करूंगी तो बहुत समय लग जाएगा. इस पर विद्यार्थियों ने पूछा कि हमारे देश में कितनी भाषाएं हैं. मैं ने उन्हें उत्तर दिया कि भारत में सब मिला कर लगभग 250 बोलियां हैं और 18 मुख्य भाषाएं हैं.

बच्चों का दूसरा प्रश्न था कि हिंदू धर्म में कुल कितने देवता हैं. इस पर जब मैं ने उन्हें बताया कि पुराणों के अनुसार तो लगभग तैंतीस करोड़ देवता हैं तो सब हंसने लगे. फिर उन्होंने मुख्य देवता के बारे में पूछा तो मैं ने उन्हें ब्रह्मा, विष्णु व महेश के बारे में बताया.

उन्होंने कहा कि हम ने पढ़ा है कि वहां वर्षा का भी एक देवता है, उस का क्या नाम है. तब मैं ने उन्हें बताया कि इंद्र देवता को हमारे धर्म में वर्षा का देवता मानते हैं.

एक विद्यार्थी का प्रश्न था कि क्या मैं धर्म में विश्वास करती हूं. इस पर मैं ने उन्हें बताया कि मैं धर्म में तो विश्वास करती हूं पर अंधविश्वासों से दूर रहती हूं. जो भी बात ठीक लगती है उसे दिमाग से सोच कर तब विश्वास करती हूं और पंडितपुरोहितों से दूर रहती हूं.

एक बच्चा बहुत देर से सोच रहा था. उस ने पूछा कि जब आप के यहां पर इतनी भाषाएं हैं तो आप की राष्ट्रीय भाषा कौन सी

पढ़ाई का यह हल्काफुल्का रोचक रूप ही उसे बच्चों के सामने हौआ नहीं बनने देता.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुई. इसी प्रश्न से मैं बचना चाह रही थी. पर अब क्या कर सकती थी. मैं ने ग्लानि महसूस करते हुए बताया कि अभी हमारे यहां पर अंगरेजी में ही सारा काम होता है, वैसे हिंदी को राष्ट्रीय भाषा माना गया है पर जरूरी नहीं है कि सभी को हिंदी आती हो. इसी कारण ज्यादातर काम अंगरेजी में ही होता है. सभी अहिंदी भाषी प्रदेश अपनीअपनी प्रादेशिक भाषा व अंगरेजी में अपना काम करते हैं.

हमारा राष्ट्रीय परिधान

इस तरह कुछ देर तक तो हम लोग भाषाओं व देवीदेवताओं के विषय में ही बात करते रहे. अब एक बच्चे ने मुझ से पूछा कि मैं बिंदी क्यों लगाती हूं और हमारा राष्ट्रीय परिधान क्या है. मैं ने उस बच्चों को बताया कि बिंदी तो हम लोग विवाह के पश्चात सुहाग की कामना के लिए लगाते हैं और साड़ी हमारा राष्ट्रीय परिधान है. वैसे हमारे यहां सूट भी पहनते हैं. आजकल पुरानी धार्मिक मान्यताएं बदलने से स्त्रियां बिंदी लगाना आवश्यक नहीं समझतीं और अविवाहित लड़कियां भी बिंदी का प्रयोग करती हैं. जो भी पहरावा आरामदायक लगता है वही पहन लेती हैं. पर ज्यादातर स्त्रियां साड़ी ही पहनती हैं.

एक विद्यार्थी का प्रश्न था कि महिलाओं का पहनावा साड़ी है तो पुरुषों का पहनावा क्या है. इस पर मैं ने उन्हें बताया कि आजादी से पहले तो अधिकतर लोग धोतीकुरता अथवा कुरतापाजामा पहनते थे और पगड़ी या टोपी का भी प्रयोग करते थे. आजादी के बाद अंगरेजों की देखादेखी पैंट पहनने का प्रचलन बढ़ता गया और देश में पाश्चात्य सभ्यता के प्रभाव से लोगों ने उसी को अपना लिया. हम भारतीय लोग बहुत जल्दी ऐसी किसी भी चीज को अपना लेते हैं जो हमें आरामदायक लगती है.

एक विद्यार्थी का प्रश्न था कि हमारे दांत इतने क्यों चमकते हैं और जल्दी खराब क्यों नहीं होते. इस पर मैं ने बताया कि हम लोग पूर्ण शाकाहारी हैं और डब्बाबंद खानों का ज्यादा इस्तेमाल नहीं करते. पुराने लोग तो अभी भी दांतों की सफाई के लिए पेड़ों की टहनी की बनी दातुन ही इस्तेमाल करते हैं. यूरोप में आने से पहले मैं भी घर का बना दंत मंजन इस्तेमाल करती थी. यहां पर अनुपलब्ध होने के कारण टूथपेस्ट का प्रयोग

सामूहिक संगीत अभ्यास : शिक्षा का ही एक मनोरंजक पहलू. ▲

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करना पड़ता है. यहां पर ज्यादातर लोगों के दांत बहुत खराब रहते हैं. और 30 साल की आयु होतेहोते नए दांत लगने शुरू हो जाते हैं. डब्बाबंद खाद्य सामग्री का ज्यादा इस्तेमाल करने से भी दांतों पर काफी प्रतिकूल असर पड़ता है.

बच्चों के अध्यापक ने पूछा कि मैं किस आयु तक जीवित रहना चाहती हूं. मैं ने उन्हें उत्तर दिया कि जब मेरे बच्चे पढ़लिख कर अपने पैरों पर खड़े हो जाएं और मेरी जिम्मेदारियां पूरी हो जाएं, तब तक ही मैं जीना चाहती हूं, यानी ज्यादा से ज्यादा 50 साल. इस पर वे हैरानी से मेरी ओर देखने लगे और बोले कि हमारा दृष्टिकोण तो आप से बिलकुल भिन्न है. हम तो सोचते हैं कि रिटायर होने के बाद हम लोग अपने उन सभी शौकों को पूरा करेंगे जो समयाभाव के कारण हम पहले नहीं कर पाए.

उन की बातों से मैं पूर्णतः सहमत थी क्योंकि मेरी पेंटिंग की शौकिया क्लास में ज्यादातर 60 साल से ऊपर की आयु के स्त्रीपुरुष थे. मैं ने कहा कि यहां के लोगों और हम लोगों का जीवन के प्रति दृष्टिकोण बिलकुल ही भिन्न है. शायद इसी लिए पूर्व व पश्चिम अलगअलग हैं. जहां इन लोगों में जीवन को भोगने और हर पल का सदुपयोग करने की प्रबल आकांक्षा है, वहीं हम लोगों के जीवन का लक्ष्य अपनी जिम्मेदारी को पूरा कर देना भर होता है.

कुछ और भी विद्यार्थी प्रश्न पूछना चाहते थे पर समयाभाव के कारण सब का उत्तर देना संभव नहीं था. पीरियड भी खत्म हो गया था और अगले विषय की कक्षा का समय हो गया था. मैं ने सभी को धन्यवाद कहा व शुभकामनाएं प्रकट करते हुए बाहर आ गई. वापस आते समय मैं सोच रही थी कि यहां पर अध्यापक व विद्यार्थियों में काफी दोस्ताना संबंध हैं. बच्चे पढ़ाई को एक बोझ की तरह न ले कर एक शौकिया जानकारी के रूप में लेते हैं. बिना झिझक कुछ भी पूछ सकते हैं. बच्चों को अपने विचार प्रकट करने की पूरी आजादी है.

प्रश्न पूछते समय उन के चेहरे पर आत्मविश्वास होता है न कि झिझक. इस का कारण शायद यह है कि यहां पर किताबी ज्ञान की अपेक्षा व्यावहारिक रूप से पढ़ाई ज्यादा करवाई जाती है. अध्यापक भी कठोर होने के बजाए विद्यार्थियों की परेशानियों का समाधान करने की कोशिश करते हैं. हम लोग तो सिर्फ परीक्षाएं पास करने के लिए पढ़ाई करते हैं. यहां पर छोटी कक्षाओं में परीक्षाओं के स्थान पर रोज टेस्ट होते हैं और पूरे साल के आधार पर रिपोर्ट बनती है. शायद इन सब बातों का कारण यहां की कम जनसंख्या है. ऐसा सोचते हुए मैं वापस आ गई. ●

पौधे धुएं के विषाक्त अंश सोख लेंगे

मटर जैसी विभिन्न फसलों पर एक लंबी अवधि तक किए गए प्रयोगों के आधार पर जार्जियन विज्ञान अकादमी के वनस्पति जैव रसायन संस्थान के वैज्ञानिक इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि पौधों की कुछ जातियां वायुमंडल में उपस्थित कैंसर पैदा करने में सक्षम जहरीले पदार्थ सोख लेने में समर्थ होती हैं. परीक्षण के दौरान उन्होंने मटर के पौधों के ऊतकों में बेंजीडीन नामक कार्बनिक यौगिक के सोखने का गुण पाया. बेंजीडीन एक विषाक्त, कैंसर जन्य यौगिक है, जो आम तौर पर वाहनों और रसायन उद्योग से निकलने वाले धुएं में पाया जाता है.

इस प्रकार सड़कों के किनारे ऐसे पौधों को लगा कर वातावरण नियंत्रण संबंधी आवश्यकता को काफी सीमा तक पूरा किया जा सकता है, बशर्ते कि इन पौधों और इन से प्राप्त उत्पादन को खाया न जाए.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फरवरी 1988

किशोरों की सचेतक पत्रिका

सुमन सौरभ

"जल्दी..., सब लोग इस नाव में बैठ जाओ," रोबिन भुवन को नाव में चढ़ाता हुआ बोला. लड़के भी उस के पीछे चढ़ गए. रोबिन भी उस पर चढ़ने वाला था कि एक आवाज ने उसे रोक दिया... "ठहरो, तुम कौन हो..?", सब ने देखा, बूढ़ा पुजारी एक हाथ में टार्च और दूसरे में पिस्तौल थामे खड़ा हुआ था... सब सन्न रह गए.
(सनसनीखेज धारावाहिक उपन्यास : गुप्त गोंफा का रहस्य की चौथी किस्त)

रमन धुंध जैसे यान में बैठा चला जा रहा था. उस यान में न तो कोई चालक था, न कोई दूसरा प्राणी. रमन का आकार भी बौने जैसा हो गया था. तभी एक चश्मा उस की आंखों पर आ गया. अब उसे यह देख कर आश्चर्य हुआ कि वह सब कुछ देख सकता था और उस के जैसे कई बौनों ने आ कर उसे घेर लिया था. वह किसी विचित्र ग्रह में जा पहुंचा था.

(कहानी : सनकी वैज्ञानिक).

भारत में एक ऐसा पुराना ऐतिहासिक शहर है जो तीन सुंदर झीलों से घिरा हुआ है. एक ओर पहाड़ों का मनमोहक सौंदर्य है, दूसरी तरफ नयनाभिराम झील के बीच सफेद झक संगमरमरों का महल बना हुआ है, जो पानी पर तैरता है. इस अनोखे महल और प्राचीन शहर की रंगबिरंगी जानकारी इसी अंक में.

साथ ही 13 मजेदार कहानियां, जैसे — आवारा मोती, बागी राजा तेजसिंह, बलि, गलत राह, असली मंत्र, सीटी का कमाल आदि...

इसी अंक के लेखों की एक झलक:

- इंगलिश चैनल की रोमांचक जीत
- हवाई खतरों में सच्चा साथी
- कुछ खेल, कुछ ज्ञान
- आओ, खरगोश से मिलें

साथ में अनेक मजेदार कहानियां, दिलचस्प लेख, चुटीली कविताएं, चार चित्रकथाएं, आप के सभी प्रिय स्तंभ, खट्टीमीठी खबरें तथा मध्य पृष्ठ का रंगीन संग्रहणीय चित्र.

अपनी प्रति आज ही खरीदें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुझे शिकायत है

इन प्रकाशित शिकायतों को काट कर संबंधित व्यक्तियों को भेजिए या उपयुक्त स्थान पर चिपकाइए ताकि इन्हें पढ़ने वाले अपनी त्रुटियों को पहचान कर उन्हें दूर कर सकें.

मुझे शिकायत है उन शिक्षकों से जो ट्यूशन पढ़ाने के लोभ में अपने विद्यार्थियों को जानबूझ कर फेल कर देते हैं और ट्यूशन पढ़ने पर उन्हें अतिरिक्त नंबर दे कर उत्तीर्ण कर देते हैं.

—शार्दूल सिंह टंडन

मुझे शिकायत है उन मित्रों से जो अपने मित्रों को पत्रपत्रिका पढ़ते देख कर उन से उक्त पत्रपत्रिका को छीन कर स्वयं पढ़ने लगते हैं.

—संदीप कुमार जायसवाल

मुझे शिकायत है उन शिक्षकों से जो तबीयत खराब होने का बहाना कर के स्कूल से जल्दी छुट्टी कर लेते हैं और अपने बालबच्चों के साथ सिनेमा देखने चले जाते हैं.

—विनोद कुमार मिश्र

मुझे शिकायत है उन लोगों से जो किसी के घर में बिना दरवाजा खटखटाए चल आते हैं.

—इला अग्रवाल

मुझे शिकायत है उन सहपाठियों से जो अपने मित्र से यह कह कर किताब ले जाते हैं कि कल दे देंगें. लेकिन कई दिन बीत जाने और घर के कई चक्कर लगाने के बाद भी किताब को रद्दी कर के लौटाते हैं.

—विनोद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रभाषा हिंदी के समर्थन-विमर्थन के नाम पर हुए दंगों में मैथिली के लगे पत्थर ने उस के तन को ही नहीं, मन को भी चोट पहुंचाई थी. उस का दोष क्या था? यही न कि वह और उस का परिवार अहिंदीभाषी होते हुए हिंदी में पारंगत था. क्या वह पत्थर हिंदी की समस्या के समाधान में 'पहला पत्थर' बन सका?

सन 1965 की बात है. वह उस दिन मुंह अंधेरे जगदलपुर के दौरे से लौटे थे. घर आए तो कामाक्षी ने दरवाजा खोल कर "शी...शी..." करते हुए चौके के अंदर ले जा कर बताया, "हिंदी के लिए झगड़ा हो रहा है. कल शहर में खूब दंगा हुआ. दंगाई लड़के आए और हमारे घर पर भी खूब पत्थर बरसाए."

कामाक्षी रोने लगी. श्रीधर उस के कंधे थपथपा कर उसे समझाने और दिलासा देने लगे. कामाक्षी ने धीरे धीरे सब बातें उन्हें बताईं, "किले की तरफ से लड़कों का एक जलूस आया था. वे हर घर के नामपट्ट पढ़ रहे थे. अपने घर की नाम की पट्टी मैं निकाल

"हम सब चाहते है कि आप अपना यह थोबड़ा ले कर यहां से रफूचक्कर हो जाओ." आगे वाला लड़का उन्हें धकेलते हुए बोला.

नारायणी पलटी, "लो, मैं ने इसे दुखी किया है या यह खुद ही दुखी हुआ है? अरे, मैं कहती हूं, क्या मिला इस के दादा को भोपाल जा कर? क्या मिला इसे नागपुर जा कर? बस, यही पत्थर, यही चोटें, क्यों?"

"काम्, इस के तो पीठ के घाव अभी भरे नहीं हैं. अब मुंह भी घायल हो गया है. ये घाव कब भरेंगे?"

श्रीधर ने मुंह खिड़की की ओर कर लिया. आंखों में भर आए विवशता के आंसुओं को छिपाने के लिए. उस के दिल पर क्या बीत रही थी, यह उन्हें कौन समझाए?

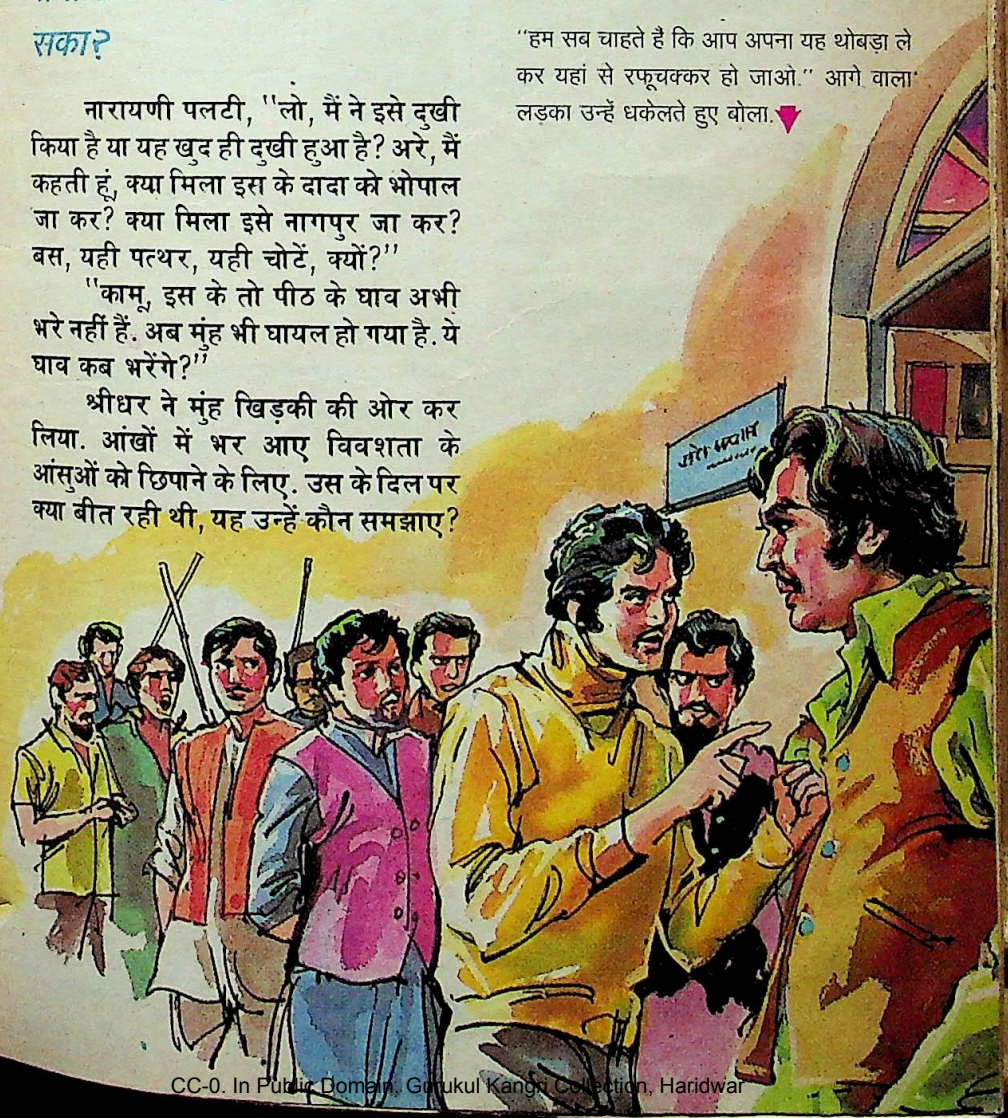

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाती, उस से पहले ही उन्होंने उसे देख लिया. उन्होंने उस पर काला रंग पोत दिया."

"लेकिन मेरा नाम हिंदी में लिखा था."

"तो क्या हुआ? वे कह रहे थे 'ये रहा एक और मद्रासी का घर श्रीधर अय्यर, निकल बे बाहर ओ मद्रासी... काले."

"मुझे मद्रासी कहा और काला भी? कितनी बार कहा है इन लोगों को कि मद्रासी कोई जाति नहीं होती है और क्या हम काले हैं? फिर जैसे उन लोगों में कोई काला है ही नहीं."

कामाक्षी रोने लगी, "आप मत जाया कीजिए हम सब को अकेले छोड़ कर. हमें बड़ा डर लगता है."

"किया क्या उन लोगों ने?"

"क्या नहीं किया? बगीचा पूरा रौंद डाला. भिंडी के सारे पौधे उखाड़ कर भिंडियां भी तोड़तोड़ कर ले गए. अमरूद और आम की सारी टहनियां तोड़ दीं. बेलें काटकाट कर जमीन पर डाल दीं. खिड़की की सारी चिकें ले गए. मैं ने पहले ही आप से कहा था कि चिकें बाहर से न लगवाएं."

"हां, भला उस वक्त मुझे मालूम था न कि हिंदी विरोधी आंदोलन होगा और दंगाई हमारे घर की चिकें तक उठा कर ले जाएंगे. तुम तो यह बताओ, हमारे बच्चों को तो चोटें नहीं आईं?"

"नहीं, लेकिन बड़े घबरा गए हैं तीनों. पापू कहने लगा, 'मां मैं जा कर उन लोगों से कह दूं कि हम सब स्कूल में हिंदी पढ़ते हैं और हमारे पिताजी भी हिंदी की सरकारी परीक्षा पास कर चुके हैं.' मैं ने मना कर दिया.'

"बड़ा भोला है मेरा पापू."

"फिर रात को भी आए कुछ दंगाई तथा पीछे और आगे लगे दोनों बल्ब और उन के कवर ले गए."

श्रीधर आहत हुए, कितना? कहना मुशकिल है. उन्होंने कपड़े बदले और काफी पीने के बाद अखबार वाले से स्थानीय अखबार भी लिया. दूसरे गिलास की काफी ठंडी होती रही और वह अखबार पढ़ते रहे. किसी विरोधी दल के छात्र नेता ने कहा था "अहिंदी भाषियों को उन के प्रांतों में वापस भेज देना चाहिए. वे नौकरी के बहाने हिंदी भाषी प्रांतों में बस गए हैं और हमारी नौकरियां छीने जा रहे हैं. हमारा ही अधिकार छीन कर हिंदी का विरोध करते हैं."

कुछ लोगों ने हिंसा व उग्रता का विरोध करते हुए लोगों से शांति व सद्भाव रखने का अनुरोध किया था.

श्रीधर सोचने लगे. उन के पिता श्रीनिवास सन 1927 में नौकरी करतेकरते नागपुर आए थे. स्वतंत्रता मिलने के बाद उन्होंने वहीं घर बना लिया था. काले सीमेंट का फर्श बड़ेबड़े लाल पत्थरों का वह मकान अब भी श्रीधर का है.

श्रीनिवास की अकाल मृत्यु के बाद सन 1946 में अंगरेजों के ही शासनकाल में श्रीधर को अपने पिता के दफ्तर में काम मिल गया था. सन 1952 में वे कार्यालय के स्थानांतरण के साथसाथ भोपाल आ गए थे.

उन के बच्चों ने पहली कक्षा से उच्च शिक्षा, सब हिंदी में ही पाई थी. उन की बेटी ने तो स्नातकोत्तर परीक्षा के लिए हिंदी साहित्य को ही विषय चुना था. ऐसा नहीं था कि श्रीधर को इस के पहले कभी इस प्रकार दुखदायी अनुभव न हुआ हो.

जब मैथिली ने हिंदी में एम.ए. करते हुए सर्वाधिक अंक प्राप्त किए थे तो उसे कितनी खुशी हुई थी? पर उस की सारी प्रसन्नता हवा हो गई थी, जब एक दिन उस के एक प्राध्यापक ने यह पूछा, "मैथिली, तुम्हें कौनकौन से प्रश्नपत्र मालूम थे? इतने अच्छे अंक कैसे आ गए?"

जब वह रोने लगी थी तो वह बोले, "अच्छा बैठ जाओ, मैं ने तो मजाक किया था."

शकुंतला ने कहा था, "तुम मद्रासियों ने सब जगह घुसपैठ कर ली है. अब हिंदी में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

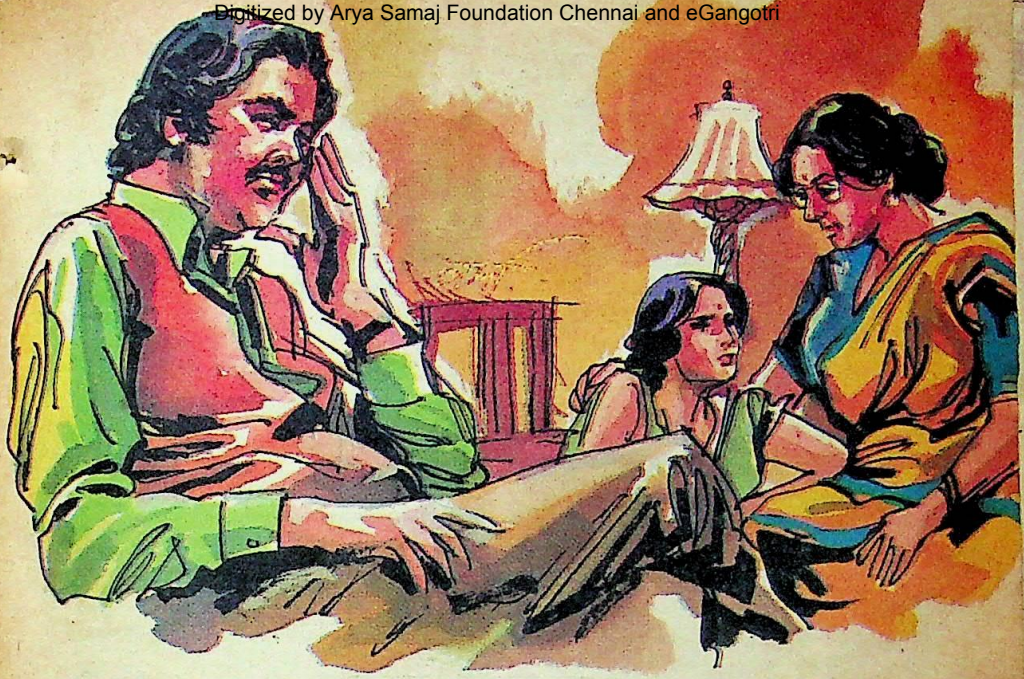

भी तुम लोग प्रथम आने लगे.''

मैथिली ने तमक कर कहा था, ''हां, आने लगे हैं. हमारे अंदर श्रद्धा है. हिंदी में मेरी रूचि है. यह स्थान पाने के लिए मैं ने कड़ी मेहनत की है.''

श्रीधर को यह बात बहुत चुभी थी. यह चोट तो सब से भीषण थी. वह अखबार रखेरखे सोच रहे थे. तभी बाहर दंगाई लड़कों का शोर सुनाई दिया, ''ओ मद्रासी, अंदर क्या घुसे हो, बाहर आओ.''

श्रीधर अखबार रख कर बाहर चले गए, ''क्या है, बोलो?''

सब से आगे वाला लड़का बोला, ''ओ हो, मद्रासी हिंदी बोल रहा है.''

उस ने उन की ठेड़ी पकड़ कर घुमाई. श्रीधर ने उस का हाथ झटका, ''हम से क्या लड़ाई है तुम्हारी? हम लोग तो हिंदी का विरोध नहीं करते हैं?''

''नहीं करते तो क्या, हो तो मद्रासी ही.''

''चाहते क्या हो?''

''यह चाहते हैं कि अपना यह थोबड़ा ले कर यहां से रफूचक्कर हो जाओ,'' कहते हुए एक लड़के ने उन्हें जोर से धकेला तो पीछे जाफरी में लगी दो कीलें उन की पीठ को चीरती हुई नीचे तक चली गईं. श्रीधर अवाक व आहत बड़ी देर तक चुप पड़े रहे.

उन का बरसों का हिंदी प्रेम इस प्रकार अपमानित होगा, उन्हें मालूम न था. उन के बच्चे बहुत दिनों तक स्कूल नहीं गए. उन्होंने कामाक्षी के बारबार कहने पर चारों बच्चों के नाम के आगे से 'अय्यर' हटवा दिया. श्रीधर की मां नारायणी ने कहा, ''हम लोग शर्मा हैं. चलो, अपने नाम के आगे शर्मा ही लिखने लगते हैं.''

श्रीधर नहीं माने.

कार्यालय में भी उन के सहकर्मी उन्हें शंकालु आंखों से देखते थे. बड़े अधिकारी, जो हर काम यह कह कर उन्हें सौंपते थे, ''मद्रासी बड़े ईमानदार व मेहनती होते हैं.'' वह भी अब श्रीधर से सौतेला व्यवहार करने लगे थे.

आखिरकार डेप्यूटेशन यानी प्रतिनियुक्ति पर जब बंगलूर जाने की बात

''निश्चय करने में इतनी द्विविधा क्यों? हम सब अब यहीं रहेंगे. ये लोग एकदो बार ऐसा करेंगे फिर ठीक हो जाएंगे.'' नारायणी बोली.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तनहाई

उदासी ने हमें घेर लिया
तनहाई के इस आलम में,
आज फिर मन करता है रोएं
लिपट किसी के दामन में.
—नरेश खत्री

निकली तो उन्होंने उस में अपना नाम लिखवा दिया. इस बीच उन्होंने "मैं ने हिंदी परीक्षा में 80% अंक प्राप्त किए. मुझे 200 रुपए मिले." कहना तो बिलकुल बंद ही कर दिया था.

आठ माह बाद वह बंगलौर चले गए. वह जिस कार्यालय में लेखा अधिकारी बन कर गए, वह उन्हें सम्मान नहीं देते थे. बारबार उन के मुंह से हिंदी के शब्द निकल जाते थे और वे सब उन्हें ताने देते थे.

लेकिन धीरेधीरे भाषा का विवाद शांत हो गया था और श्रीधर सब के विश्वासपात्र बन गए थे. सब के कहने पर श्रीधर ने अपनी मातृ संस्था से त्यागपत्र दे कर बंगलौर में लेखा अधिकारी का स्थायी पद प्राप्त कर लिया था.

दुख व चिंताएं यहीं खत्म नहीं हुई थीं. उन की बेटी के लिए विवाह के प्रस्ताव आते और हिंदी एम.ए. का उल्लेख करते ही, वे मुंह मोड़ लेते, "इसे अपनी भाषा भी नहीं आती होगी. हमें तो नौकरी करने वाली लड़की चाहिए. इसे कौन नौकरी देगा?"

इसी तरह धीरेधीरे मैथिली उम्र की सीढ़ियां चढ़ती रही. सन 1982 में भाषा विवाद की कोई भनक भी कहीं नहीं रह गई थी. मैथिली ने हिंदी शिक्षण की कक्षाएं घर में ही खोल ली थीं. वह उत्तर भारत में नौकरी पर जाने वालों को सरल हिंदी व कार्यालयीन हिंदी का शिक्षण देने लगी. इस से उस का समय भी कटने लगा और आमदनी भी होने लगी. वह हिंदी अध्यापिका के नाम से मशहूर होने लगी.

इसके बाद सन 1986 में सेवा निवृत्त हो कर श्रीधर मद्रास में आ बसे. मैथिली भी वहीं अपने कक्षाएं लगाने लगी.

अगस्त 1986 में मैथिली के नाम धमकी भरे पत्र आने लगे कि वह तुरंत हिंदी की कक्षाएं बंद करें, वरना बहुत बुरा होगा. मैथिली ने अपने पिता से कुछ नहीं कहा. उस ने तो जीवन ही हिंदी की सेवा में बिताने का संकल्प ले लिया था. उस ने घर से अलग एक कमरा हिंदी शिक्षण के लिए किराए पर ले लिया.

फिर आया वह बुरा दिन—हिंदी विरोध के नाम पर चक्का जाम, आगजनी और न जाने क्याक्या. मैथिली पास ही में स्थित अपने कमरे पर से वह नामपट्ट निकालने गई, जिस पर उस ने हिंदी कोचिंग क्लासेज लिखवा रखा था. छिपतेछिपाते पहुंची ही थी कि दनदनाता हुआ एक चार इंच लंबा नुकीला पत्थर पीछे से आ कर उस के सिर के निचले हिस्से में घुस गया.

"अम्मां..." चीख कर वह वहीं गिर गई.

"अरे, लड़की थी फिर भी मारा," किसी ने स्थानीय भाषा में कहा.

दूसरे ने कहा, "लड़की थी तो क्या, हिंदी प्रेम तो इस के दिल में उफान ले रहा है. लड़की थी तो बैठती घर में भली लड़की की तरह. हुंह, हिंदी पढ़ाएगी. अब देखता हूं कैसे हिंदी पढ़ाती है यह?"

भीड़ चली गई. श्रीधर को पता लगा तो दौड़ते हुए आए. भीड़ ने उन्हें देख लिया और उम्र का भी लिहाज किए बिना उन के बाल पकड़ कर बुरी तरह नोचाखसोटा और मारापीटा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीधर मूक बने रहे. उन की जीभ ही नहीं, उन का सारा अस्तित्व ही गूंगा हो गया था. वह शून्यवत मैथिली को घर ले गए. वहां से हस्पताल ले गए. मैथिली 20 दिनों में ठीक हुई. वह घर आई और अपनी मां से लिपट कर रो पड़ी, "अम्मां, यहां से मुझे ले चलो. मैं भोपाल जाऊंगी, मैं ग्वालियर जाऊंगी, कहीं भी भेज दो मुझे. यहां मेरा दम घुटता है."

नारायणी बोली, "यह अपना शहर है, अपना प्रदेश है. यहीं रहना चाहिए हमें."

"नहीं ये पूरा देश हमारा है. हम कहीं भी रहेंगें, अप्पा. मुझे आप वहां भेज दीजिए."

श्रीधर की आंखों में आंसू आ गए. 20 दिन बाद उन का मुंह खुला, "मैथिली, मैं क्या करूं, बताओ? क्या निश्चय करूं, क्या नहीं?"

नारायणी ने कभी भी उत्तर भारत में आना या रहना पसंद नहीं किया था. वह बोली, "निश्चय करने में इतनी द्विविधा क्यों? हम सब अब यहीं रहेंगे. एकदो बार लोग ऐसा करेंगे, फिर ठीक हो जाएंगे."

पापू क्रुद्ध हो गया, "क्या मतलब है आप का दादी? क्या अप्पा ऐसे ही और पिटें एक बार? अप्पा को ऐसे ही चोटें पहुंचें दोबारा, फिर सब ठीक हो जाएगा? अप्पा ही क्यों, इस तरह एक बार हम सब और पिटें तो एकदम ठीक हो जाएंगे."

कामाक्षी ने उसे टोका, "पापू, तुम चुप रहो. आवेश में आने से क्या लाभ? जब तुम्हारे दादाजी उत्तर भारत में गए थे तो आशा और विश्वास से. ऐसे दिन आएंगे, कभी उन्होंने सोचा भी नहीं था."

बड़ा बेटा सुंदर बोला, "हम लोग कहीं के भी न रहे. जहां जड़ जमाना चाहते हैं, वहीं से उखाड़ दिए जाते हैं. आखिर हम तो हिंदी विरोधी नहीं, सरकार को हमारी सुरक्षा के ...र भी कुछ करना चाहिए."

...धर थकी आवाज में बोले, "नहीं, ...सरकार की नहीं, जनता की

आनंद

जीवन की अभिव्यक्ति आनंद है और आनंद के लिए आत्मा चाहिए, ऐसी आत्मा जिस में अनुभूति हो.

—यादवेंद्रनाथ शर्मा 'चंद्र'

जिम्मेदारी है. हम हिंदी प्रांतों में सरकार को खुश करने के लिए नहीं जाते हैं. फिर आपसी सद्भाव व विश्वास भी कोई चीज होती है या नहीं?"

पापू बोला, "तो क्या हम यहीं रहेंगे?"

पापू को अपनी मातृभाषा का एक भी शब्द नहीं आता था. हिंदी ही उस की मातृभाषा और हिंदी ही उस की राष्ट्रभाषा थी. नारायणी बोली, "हां, यहीं रहेंगे. वहां से पिट कर यहां आए, अब यहां से पिट कर वहां जाएंगे. वाह, क्या तमाशा बना रखा है."

मैथिली अभी तक रो रही थी, "अप्पा, ले चलेंगे न हमें वापस? आप ने जब हमें हिंदी में पढ़ाया था तो कुछ तो सोचा होगा, अब मैं हिंदी में ही लिखपढ़ सकती हूं. इस के सिवा दूसरी भाषा पर मेरा विशेष अधिकार भी नहीं है. यहां मैं किसी से ठीक ढंग से बात भी नहीं कर पाती हूं. अजीब सा, अजनबी सा लगता है मुझे."

पापू कहने लगा, "उस समय हम लोगों को यहां नहीं आना था. वैसी दुर्घटना सन् 1965 के बाद कभी नहीं हुई. संयोगवश फंस गए एक बार, अप्पा. चलिए, हम लोग अपने नागपुर वाले मकान में चलें."

श्रीधर निःशब्द, निरुत्तर बैठे रहे. खुद ही असमंजस में थे. बच्चों से क्या कहते? गांधीजी के या पंडित नेहरू के कथनों को दोहराना या किसी से भी किसी भी प्रकार की अपील करना हास्यास्पद हो जाता. क्या यही हमारी भारतीयता है? क्या यही हमारा हिंदी प्रेम है? क्या हिंदी न लाने के लिए हम हिंदी वालों को मारें? क्या हम हिंदी लाने के लिए हिंदी न जानने वालों को मारें?

हमारी भाषा विचारों के आदानप्रदान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का माध्यम होती है. आज वही अस्त्रों व प्रहारों के आदानप्रदान का कारण बन गई है. इस परिस्थिति के लिए सभी उत्तरदायी हैं. सचमुच यह उन की मूर्खता है कि वे इस स्थिति का सामना किए बगैर वहां से दक्षिण की ओर भाग आए थे. क्या उत्तर भारत उन का नहीं? सब यों ही भाग खड़े हुए तो इस विवाद को सुलझाएगा कौन?

जिन दंगाई लड़कों ने श्रीधर को मारा था और जिन्होंने उन्हें हिंदी प्रेम के नाम से प्रताड़ित किया था, क्या उन्हें हिंदी प्रेम देशप्रेम की हद तक था? क्या यही देशप्रेम है कि अपने ही देश के कुछ लोगों को बरबाद कर दो, खत्म कर डालो.

सुंदर बड़ा तिलमिला रहा था, "अप्पा, हमीं लोग मूर्ख हैं जो किसी के लिए भी कुछ करने की सोच रहे हैं. हिंदी सेवा कर के हमें कोई तमगा मिलने वाला नहीं है."

"हर काम तमगे के लिए नहीं किया जाता है, सुंदर," मैथिली ने टोका.

"हांहां, ज्यादा विवेकी मत बनो."

"क्या हिंदी वाले हमारा विरोध सिर्फ इसलिए करते हैं कि उन्हें हिंदी बोलने और लिखने में ही भारत का सारा सम्मान नजर आता है. अगर ऐसा होता न, तो हिंदी के लिए लड़ने वाला भीड़ का एकएक व्यक्ति पहले अपनी हिंदी सुधारता."

उस की दादी भी उन की बातें सुन रही थी. वह बोली, "देशप्रेम तो त्याग और बलिदान से प्रकट होता है, जैसा स्वतंत्रता के लिए लोगों ने किया था. आपसी मारकाट से नहीं."

"यही तो मैं भी कह रहा हूं. किसी न किसी को तो पहल करनी ही होगी न? क्यों न हम पहल करें? लोग अगर किसी कारण दिग्भ्रमित हैं तो उन्हें सही दिशा हम दिखाएं. मैं तो समझता हूं कि उत्तर व दक्षिण भारत में सही संवाद नहीं बन पा रहा है. सही तादात्म्य हो तो बिना कानूनों के भारत का भाषा विवाद खत्म हो जाएगा," श्रीधर ने मन की इच्छा प्रकट कर ही दी.

"लेकिन यह तो एक बहुत बड़ा काम है. हम इसे कैसे कर पाएंगे?"

"बड़ा काम भी आरंभ करने से ही पूरा होगा न? हम लोग यानी मैं और तुम्हारी मां कुछ हिंदी प्रेमियों को तमिल व मलयालम सिखाएंगे. ये विवाद वही लोग समाप्त कर सकते हैं, जिन्हें हिंदी के साथसाथ एक दक्षिण भारतीय भाषा भी आती हो."

"यहां रह कर कैसे सिखाएंगे?"

"मैथिली, मैं तुम्हारी इच्छा पूरी करने वाला हूं. हम सब वापस भोपाल चलेंगे और वहीं से इस की शुरुआत करेंगे."

"ओह, अप्पा," मैथिली खुशी से झूम उठी, "हुर्रे..."

पापू भी नाचने लगा, "वह पत्थर, जो मैथिली के सिर में लगा था?" नारायणी ने टोका. वह अपनी जन्मभूमि को छोड़ना नहीं चाहती थी.

"उसी पत्थर ने मुझे यह प्रेरणा दी. वह पहली चोट थी. अब वही पत्थर हमारी योजना में पहला मील का पत्थर बनेगा," श्रीधर ने बड़े आत्मविश्वास के साथ जवाब दिया.

यह अंक
आप को कैसा लगा?

सरिता आप ही के लिए प्रकाशित की जाती है. हम पूरीपूरी कोशिश करते हैं कि सरिता का प्रत्येक अंक आप की रुचि के अनुसार रहे और उस से आप को अधिक से अधिक संतोष हो और वह आप की प्रिय पत्रिका बनी रहे.

कृपया हर अंक पर अपनी राय भेजिए. कौन सी रचना आप को पसंद आई, कौन सी नहीं आई. आप किन विषयों पर लेख और कहानियां पढ़ना करेंगे. हम आप की आलोचना और सुझावों का स्वागत करेंगे. अपनी आलोचनाएं व सुझाव निम्न पते पर भेजें :

सरिता,
ई-3, दिल्ली प्रेस, झंडेवालान एस्टेट, नई दिल्ली-110055.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उधर से उस की निजी सहायक रिनी की मीठी जलतरंगीय आवाज नहीं आई. एक पुरुष स्वर गूंजा, "हां, बोलिए."

अमर उस स्वर को बखूबी पहचानता था. गोरखनाथ चपरासी, उस के निजी कार्यालय का 'पीर, बावरची, भिश्ती, खर.' रिनी की अनुपस्थिति में वह केवल स्टेनोग्राफी तथा टाइपिंग को छोड़ कर वे सारे काम संभाल लेता है, जिन्हें वह करती है.

"रिनी कहां है?" अमर ने उखड़ कर पूछा.

"वह तो अभी तक नहीं आई है."

अमर ने घड़ी देखी. 11 बज रहे थे. दफ्तर को शुरू हुए डेढ़ घंटा हो गया था. उस ने झल्ला कर पूछा, "कोई सूचना?"

"नहीं, साहब. कोई काम?"

"हां, काफी पिलाओ."

"अभी लाया, साहब."

अमर ने फोन बंद कर दिया. बहुत पंख निकल आए हैं इस रिनी के. शायद इस की छुट्टी ही करनी पड़ेगी. पहले वह बचा ले गया उसे. पिताजी को जब पता चला कि वह अपनी निजी सहायक को प्यार करता है और वह लड़की विजातीय है तो उन्होंने उसे

रिनी को अमर से दूर करने के प्रयास में उस के पिता ने स्वयं रिनी के करीब आ कर पिता पुत्र के संबंधों में एक दरार पैदा कर दी थी. अपने बिगड़े संबंधों को पुनः सहज बनाने के लिए उन्हें कौन सा निर्णय लेना पड़ा?

"रिनी, मैं तुम से बहुत खुश हूं. तुम ने मेरे जीवन में दीवाली की जगमग और होली की मस्ती भर दी है," अमर भावुक हो उठा था.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नौकरी से निकालने का फैसला कर लिया. वह नहीं माना, अड़ गया.

अब वह चाहता है कि रिनी को सेवा मुक्त कर दिया जाए. जो कुछ वह सुनता रहा है इन दिनों, उस से तो अच्छा है कि बांस को ही नष्ट कर दिया जाए, जिस से बांसुरी बजने की स्थिति ही उत्पन्न न हो. पर क्या वह यह कर पाएगा? पिताजी के सामने उस की इच्छा चलेगी?

मन उद्विग्न हो गया अमर का. नारी व्यवहार की रहस्यमय भूलभुलैया में खो कर वह एकदम अवश और असहाय सा हो गया था.

उस ने अपने एक पुराने मित्र की सिफारिश पर रिनी को नौकरी दी थी. उस ने कहा था कि यह लड़की निजी सहायक बनने के लिए हर प्रकार से उपयुक्त है. उस ने सचिवालयिक पाठ्यक्रम (सेक्रेटरियल कोर्स) किया हुआ था. दो वर्ष से बेकार थी. चार महीने पूर्व उस के बाप की मृत्यु हो गई थी. वह घर में सब से बड़ी थी.

विधवा मां और छोटी बेटी दो बहनों का उत्तरदायित्व उस के कंधों पर आ गया था. यदि उसे नौकरी नहीं मिली तो वह परिवार नष्ट हो जाएगा.

अमर को कुशल निजी सहायक की जरूरत थी. इसलिए उस ने मित्र से कहा कि वह उस लड़की को अगले दिन दफ्तर भेज दे.

लड़की कार्यालय में आई. आयु लगभग 22 वर्ष. नपातुला गठित शरीर. नारियल सी मुखाकृति. बड़ीबड़ी आंखें. गेहुआं रंग. मुख पर विद्यमान एक मन खींचने वाली सौम्यता. रिनी के पूरे व्यक्तित्व पर विपन्नता तथा अभावों की करुण कहानी लिखी हुई थी.

संक्षिप्त सी बातचीत के बाद अमर ने उसे नौकरी दे दी. अमर ने महसूस किया था, जैसे ही उस ने अपने निर्णय की घोषणा की, रिनी की आंखों में कृतज्ञता की चमक और सुख से उपजी नमी उभर आई थी.

कुछ ही दिनों में रिनी ने अपनी कार्यकुशलता तथा कार्यालयी दक्षता से उस के निजी दफ्तर को संभाल लिया. अपने ममत्वपूर्ण व्यवहार से उस ने उस का मन मोह लिया. वह उस के सुबह से शाम तक इतने सारे काम करती, छोटी से छोटी हर स्थिति के प्रति इतनी सजग रहती कि अमर एक बेहद कुशल प्रबंधक के रूप में प्रतिस्थापित हो गया.

यह उनकी अपनी कंपनी थी. उस के पिताजी इस कंपनी के 'बड़े साहब' थे. वह भी अमर की इस उत्तरोत्तर बढ़ती दक्षता को रेखांकित करते जा रहे थे.

अमर महसूस करता था कि उस की सफलता का शतप्रतिशत श्रेय रिनी को जाता है. वह उस से प्रसन्न था. दो वर्ष के अंदरअंदर उस ने रिनी को तीन बार विशेष तरक्की दी थी.

रिनी कृतज्ञ थी उस की. वह और दोगुने उत्साह से उस की सेवा में जुट गई. कार्यालयी कार्य हो अथवा अमर की कोई व्यक्तिगत समस्या, रिनी उस को संभाल लेती.

अचानक एक दिन अमर को लगा, 'काश, यह लड़की मेरी...' वह आगे सोच नहीं पाया.

रिनी को उस के प्रति कृतज्ञता, अमर का उस के सेवाभाव से उत्पन्न संतोष दोनों एक बिंदु पर मिले और प्रेम का जन्म हो गया.

रिनी ने आंखें मूंद कर प्यार के गहरे सागर में छलांग लगा दी. वे दोनों दफ्तर के बाद मिलते, घूमतेफिरते, खाना खाते. जब कभी अमर को कंपनी के काम से दौरे पर जाना होता तो वह रिनी को साथ ले जाता. वह खुशीखुशी उस के साथ जाती. फिर तो अमर की यात्रा और बाहर बिताए क्षण जैसे उसे अमरत्व प्रदान कर जाते.

अंतिम बार जब वह रिनी को ले कर बंबई गया तो कंपनी का काम निबटा कर शाम को वे दोनों जुहू तट की सैर करने चले गए.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मेरा आप की कंपनी में काम करने को मन नहीं करता है. मैं ने इसे छोड़ने का फैसला कर लिया है." अमर ने निर्णयात्मक स्वर में कहा.

सूर्यास्त का समय, लाल रंग की आभा का सागर के गर्भ में सामना—बड़ा ही रंगीन दृश्य था.

"रिनी, तुम ने तो मेरे जीवन में दीवाली की जगमग और होली की रंगबिरंगी मस्ती भर दी है. सच, मैं तुम से बहुत खुश हूं." अमर भावुक हो गया था.

"यह मेरा बड़ा मान है, सर. मेरे जीवन का तो बस एक ही उद्देश्य है, अपने जीवनरक्षक को ज्यादा सुख देना," रिनी खुल गई.

"रिनी, हम लोग अनौपचारिक रूप से तो पतिपत्नी बन चुके हैं. इन अनौपचारिक संबंधों को औपचारिक क्यों न बना दें?"

"आप मुझ से विवाह करना चाहते हैं?" रिनी ने पूछा. उस में उत्सुकता कम, उदासी ज्यादा थी.

"हां."

"मुझे यह संभव नहीं लगता."

"क्यों?"

"सर, आप हिंदू और मैं ईसाई. आप अमीर उद्योगपति और मैं गरीब, आप की नौकर."

"तो क्या हुआ?"

"सर, यह संभव नहीं," रिनी की प्रतिक्रिया में व्यावहारिकता थी.

"अगर संभव हो जाए तो?"

"तो मेरे लिए इस से बढ़ कर खुशी की और क्या बात होगी," कह कर उस ने अपना सिर अमर के कंधे पर टिका दिया था.

अमर बंबई से लौटा था. उस ने बड़ा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

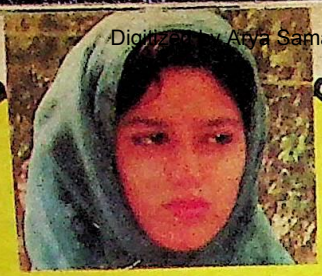

चिरागेयास

मेरी कश्ती, मेरा तूफां,
मेरा दरिया, मेरी मौज,
जिस जगह चाहूं वहीं
साहिल बना सकता हूं मैं.
मैं ने माना इक धुंधला
सा चिरागे यास हूं
हां, मगर फिर भी सहर तक
झिलमिला सकता हूं मैं.
—प्रदीप वर्मा 'सोना'

साहस जुटा कर पिताजी से अपने मन की बात कह दी थी. पहले तो वह यह सुन कर स्तब्ध रह गए थे. फिर जैसे नागासाकी पर अणु बम का विस्फोट हो गया हो, एकदम ध्वस्त हो गए थे पिताजी.

तो क्या रिनी की आशंका सच होने जा रही थी? शायद पिताजी की अस्तव्यस्तता इस तथ्य की साक्षी थी.

पिताजी ने तत्काल एक संक्षिप्त सी प्रतिक्रिया व्यक्त की थी, "हद कर दी तुम ने."

बाद में उस ने मां के माध्यम से पिताजी पर दबाव डालना शुरू कर दिया. एक दिन तो पिताजी ने उसे दफ्तर में बुला कर डांटा था, "देखो अमर, अगर तुम्हारा प्रेम का पागलपन नहीं गया तो मुझे इस लड़की को नौकरी से निकालना पड़ जाएगा."

वह घबरा गया था. वह तो रिनी के परिवार का 'पोषक' और 'रक्षक' था. अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए वह रिनी को सड़क पर नहीं भेजना चाहता था.

उस ने सिर झुका कर पिताजी का निर्णय स्वीकार कर लिया था. वह उदास और निराश था. उसे पिताजी की यह तानाशाही प्रवृत्ति कतई पसंद नहीं आई थी.

उस दिन के बाद उस के और पिताजी के बीच अलगाव की एक बर्फ जैसी सीमा रेखा खिंच गई थी. पास हो या दूर, पिताजी से उस के संबंध खिंचेखिंचे और ठंडे हो गए. वह पिताजी के उस दूरगामी निर्णय से पूरी तरह सहमत नहीं हो पाया था.

इसी अलगाव ने उस की कार्य कुशलता को भी प्रभावित करना शुरू कर दिया था. पहले वह पूरे उत्साह तथा लगन से काम करता था. पर अब वह बात कहां रह गई थी. एक अदृश्य शीत युद्ध ने उसके श्रम तथा दक्षता को ग्रस लिया था.

पिताजी की खोजी तथा तीक्ष्ण दृष्टि से अमर के अंदर आया यह परिवर्तन छिपा नहीं रह सका. एक दिन उन्होंने उसे बुलाया और बड़े आत्मीय स्वर में बोले, "अमर बेटे, मैं देख रहा हूं, तुम्हारा मन काम में नहीं लग रहा है."

"ऐसा तो नहीं है."

"ऐसा ही है, वरना तुम चंडीगढ़ वाली निविदा को यों नहीं खोते. आखिरी तारीख निकल गई और तुम हाथ पर हाथ रखे बैठे रहे. अगर यह सप्लाई आर्डर मिल जाता तो कम से कम चार लाख..."

"पिताजी, वह फाइल आप के पास ही थी."

"मैं स्पष्टीकरण नहीं मांग रहा हूं. मैं समझता हूं तुम्हारी उखड़ी मनोदशा का रहस्य. ऐसा करो, तुम जा कर रिनी को मेरे पास भेज दो."

"किस लिए?"

"क्या मुझे तुम्हें यह भी बताना होगा?"

अमर ने प्रतिवाद नहीं किया. सिर झुकाए चुपचाप लौट आया. आ कर उस ने रिनी से बड़े साहब के पास जाने के लिए कहा तो पहले वह घबराई, फिर साहस जुटा कर अंदर चली गई.

बस, उस दिन के बाद रिनी के व्यवहार में आश्चर्यजनक परिवर्तन आ गया. वह विशुद्ध कार्यालयी हो गई. सारे व्यक्तिगत संबंधों का अंतिम संस्कार कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिया रिनी ने. अब वह सिर्फ उस के दफ्तर के काम करती. उस के साथ पार्टियों और दौरे पर जाने से कतराने लगी.

यह पिताजी ने उसे क्या कर दिया था? एक ही संक्षिप्त भेंट में उन्होंने रिनी का हृदय परिवर्तन कर के उस के आत्मीय, अनौपचारिक, प्यार भरे संबंधों को पूरी तरह औपचारिक और रेगिस्तान की धूल सा मरुस्थली बना दिया था.

उस ने कई बार रिनी को कुरेदा, पर कुछ पल्ले नहीं पड़ा. वह भी महान कलाकार है. एकदम भयंकर रूप से परिपक्व. एक शाम को जब उस ने रिनी को चारों तरफ से घेर लिया तो वह केवल इतना ही बोली, "सर, प्यार से ज्यादा जरूरी है रोटी. बस, इस से ज्यादा और मैं क्या कहूं?"

तो पिताजी ने उसे धमकाया है. नौकरी से निकाल देने की धमकी दी होगी. एक दिन घर पर मौका देख कर वह पिताजी से भिड़ गया. तिक्त स्वर में बोला, "पिताजी, आप को रिनी को धमकाने की कोई जरूरत नहीं थी."

"यह तुम से किस ने कहा कि मैं ने रिनी को धमकाया है?"

"कहेगा कौन?" साफ नजर आ रहा है."

"अमर, मैं ने रिनी को सिर्फ समझाया था. यही कहा था कि फटेहाल लोग चैलेंजर में बैठ कर चांद की यात्रा पर नहीं जा सकते."

जो भी हो, पिताजी ने उसे धमकाया या समझाया, लेकिन अपने निर्णय के भारी, फौजी बूटों से उन्होंने उस के प्रेम की कोमल, हरी दूब को मसल कर रख दिया था. पिछले कुछ हफ्तों से वह जो कुछ अप्रत्याशित सुन रहा था, उस से तो एक बात सिद्ध होती थी. पिताजी ने रिनी को न धमकाया और समझाया था, बल्कि उसे पटाया और फंसाया भी था.

इस विचार के साथ उस का मन एक विचित्र ग्लानि भरी लिजलिजी अनुभूति से भर गया था. शुरू में जब उस ने यह चर्चा सुनी थी तो उसे विश्वास नहीं हुआ था. धीरेधीरे यह तथ्य सार्वजनिक हो गया था. एक छोटी सी कंपनी में कुछ इनेगिने कर्मचारियों के बीच यह चटपटा मिर्च-मसालेदार समाचार सब तरफ फैल गया था.

गोरखनाथ काफी ले आया तो अमर उबल पड़ा, "अब ला सके हो काफी, आधे घंटे बाद?"

"सर, अभी 10 मिनट पहले ही आप ने कहा था. रसोई में बिजली का फ्यूज..."

"बको मत."

"मैं क्षमा चाहता हूं, सर."

"रिनी का कोई संदेश? कहां मर गई वह?"

"सर, माफ करें तो एक बात कहें."

"कहो."

"रिनीजी तो 'बड़े साहब' की निजी सहायक बन गई हैं."

"तुम फिर बकने लगे."

"सर, मैं अभी वहीं से आ रहा हूं. रिनीजी वहीं बैठी हैं."

"यह क्या तमाशा है," अमर लगभग चीख पड़ा. उस ने तत्काल इंटरकाम पर रिनी से संपर्क किया और बोला, "यह कैसी बदतमीजी है?"

"सर बदतमीजी नहीं, बड़े साहब का हुक्म है."

"उन की प्राइवेट सेक्रेटरी कहां गई"

"तीन महीने की छुट्टी पर गई है."

"फिर मेरा क्या होगा?"

"सर, बेहतर होगा, आप बड़े साहब से पूछ लें."

"ठीक है," अमर ने झुंझला कर चोंगा पटक दिया.

वह काफी पीने लगा. उस के अंतर में आक्रोश का ज्वालामुखी फट पड़ा, 'यह मेरे पिताजी हैं या प्रतिद्वंद्वी? पहले रिनी को उस के विरुद्ध भड़काया. अब उस पर खुद अधिकार कर लिया!'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमर को लगा, जैसे उस के और पिताजी के बीच अलगाव की जो बर्फ जैसी सीमारेखा खिंची थी, वह एक चौड़ी दरार में बदल गई है. उस का मन तनावग्रस्त और उदास हो गया.

इस के बाद की अनुभूति सचमुच बड़ी विषाक्त और अप्रासंगिक थी. पिताजी जैसा प्रौढावस्था की दहलीज को पार करता व्यक्ति, अपने से लगभग 30 वर्ष छोटी लड़की और वह भी अपने पुत्र की प्रेयसी के साथ, प्रेमपाश में बंध गया—सजमुच अपने में एक अविश्वसनीय तथ्य था, पर था सत्य.

धीरेधीरे इस के प्रमाण उसे मिलने लगे.

कंपनी के खजांची ने आ कर बताया कि बड़े साहब की प्राइवेट सेक्रेटरी सुधा छुट्टी पर नहीं गई है, बल्कि उस की छुट्टी कर दी गई है. उस का हिसाब साफ कर दिया गया है. यही नहीं, रिनी का वेतन दोगुना कर दिया गया है.

विक्रय विभाग के सुरेंद्र ने उसे दबी जबान से यह सूचना दी थी कि अब जब भी बड़े साहब दौर पर जाते थे, रिनी उन के साथ जाती थी. पिछली बार वह कलकत्ता गए थे तो रिनी को भी हवाई जहाज से साथ ले गए थे.

ठीक था. इस में रिनी का क्या दोष? जब उसे 'बड़े साहब' की अनुकंपा प्राप्त हो रही थी तो वह 'छोटे साहब' की चिंता क्यों करती?

असली समस्या तो पिताजी ने उत्पन्न की थी. उन्हें शोभा देता था यह अशिष्ट, पतित और स्तरहीन व्यवहार. बेटी से छोटी एक लड़की के साथ उन का यह अशोभनीय व्यवहार सचमुच उसे के लिए बड़ी लज्जा की बात थी.

अमर एकदम हतोत्साहित हो गया था. दफ्तर के काम में उस का मन नहीं लगता था. वह पिताजी का सामना करने से कतराता रहता था. वह जानता था कि पिताजी उस के प्रतिद्वंद्वी बन कर, विजयी हो गए थे और वह पराजित सा उन से आंखें मिलाने का साहस नहीं जुटा पा रहा था.

घर पर भी वह पिताजी के संपर्क से कतराता रहता था. उस के और पिताजी के बीच पैदा हुई दरार की साक्षी थीं मां. सुबह नाश्ते या रात्रि के खाने के समय पूरा परिवार खाने की मेज पर एकत्र होता था—केवल उसे छोड़ कर.

"तुम पिताजी से नाराज हो?"

"मुझे क्या अधिकार है उन से नाराज होने का?"

"बात अधिकार की नहीं, वस्तुस्थिति की है."

"वैसे पिताजी से नाराजगी क्या होनी है. जी तो चाहता है कि आत्महत्या कर लूं या घर छोड़ जाऊं. पिताजी की जगह कोई और ऐसा करता तो मैं उस की हत्या करने के बारे में भी सोच सकता था."

अमर के अंतर में उबलता लावा बाहर आ गया...

"ऐसा उन्होंने क्या कर दिया?" मां ने घोर आश्चर्य से पूछा.

"मेरी जबान से यह गंदी कहानी क्यों कहलवाना चाहती हैं. आप स्वयं उन्हीं से पूछ लीजिए रिनी के बारे में."

"तो उस ईसाई लड़की को ले कर अभी तक तेरे मन में क्षोभ बना हुआ है."

अमर ने कोई उत्तर नहीं दिया. मां जैसी भोली, सरल हृदया महिला को यह भी नहीं पता था कि उन का पति पत्नी से ही नहीं अपने पुत्र से भी विश्वासघात कर रहा है. ऐसी महिला से वार्त्तालाप से लाभ?

जनमत

राष्ट्र की प्रभुसत्ता होते हुए भी विश्व के व्यूह से कोई देश बाहर नहीं है और इसलिए विश्व के जनमत को न कोई ठग सकता है, न उस से निरपेक्ष रह सकता है. आपस में स्वार्थ के सूत्र भी इस उगती और उभरती विश्वमानव की एकता को अधिक बांध कर नहीं रख सकते हैं.

—जैनेंद्रकुमार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मां से वार्त्ता का एक लाभ हुआ. उस का आक्रोश मां के माध्यम से पिताजी तक पहुंच गया.

एक दिन दोपहर बाद पिताजी ने उसे अपने कमरे में बुलाया और उखड़े स्वर में बोले, "अमर, लगता है आजकल तुम्हारा काम में मन नहीं लग रहा है?"

उस ने कोई उत्तर नहीं दिया. एक आक्रामक मुखमुद्रा बनाए और अपमानजनक चुप्पी साधे बैठा रहा वह.

"यह देखो? धनबाद से तार आया है," कह कर पिताजी ने एक लाल कागज उस की ओर बढ़ा दिया.

उस ने न कागज पकड़ा, न उसे पढ़ने की कोशिश की.

"तुम ने निश्चित तारीख तक माल नहीं पहुंचाया. धनबाद की फर्म ने तीन लाख का आर्डर कैंसिल कर दिया है."

वह मौन के आवरण में लिपटा बैठा रहा.

"आखिर, ऐसा कब तक चलेगा? तुम्हें हुआ क्या है?" पिताजी बौखला गए.

उस की चुप्पी फिर भी नहीं टूटी.

"तुम बोलते क्यों नहीं, गूंगों की तरह क्या ताके जा रहे हो?"

"पिताजी, मेरा मुंह न खुलवाइए, वरना..."

"खोलो मुंह और कह डालो जो कुछ कहना है. दिल में रख कर घुटते रहने से तो अच्छा है कि साफ बातें हो जाएं. दिल का गुबार निकल जाए तो मन को सुखशांति मिल जाती है."

"तो फिर सुनिए. मेरा आप की कंपनी में काम करने को मन नहीं करता है. मैं ने इसे छोड़ने का फैसला कर लिया है," अमर ने शांत एवं तटस्थ स्वर में कहा.

"क्या?" बड़े साहब बुरी तरह चौंक पड़े अमर का निर्णय सुन कर. फिर उन्होंने अपने को संभाला और पूछा, "तुम ने यह निर्णय क्यों किया?"

"आप के इस अशोभनीय व्यवहार के कारण," अमर ने ठंडे स्वर में कहा.

"तुम्हें मेरे निजी जीवन में दखल देने का कोई हक नहीं. मैं तुम्हारा बाप हूं, न कि तुम मेरे बाप हो."

"दुख तो यही है, पिताजी, कि आप ने मेरे जन्मदाता हो कर भी मेरे साथ विश्वासघात किया."

"अमर? तुम हद से बढ़ते जा रहे हो. तुम्हें इस तरह मेरा अपमान करने में लज्जा नहीं आ रही?" पिताजी जैसे तिलमिला गए.

अमर तो जैसे इस कांड का उपसंहार लिखने के लिए कटिबद्ध हो कर आया था. उस ने क्रूर स्वर में कहा. "इस समय तो नहीं पर हां, जब कंपनी के कर्मचारी आप के रोमांस की चर्चा करते हैं, तब अवश्य लज्जा आती है. इसी लिए मैं इस कंपनी को छोड़ रहा हूं."

"इसे छोड़ कर कहां जाओगे?"

"महेश एंड महेश में."

"वह तुम्हें रखना पसंद करेंगे?"

"जी हां, मैं ने महेश चाचा से बात कर ली है."

अमर ने देखा, इस बार पिताजी पराजित हो कर चिंतित से बैठे रह गए. उन के मुंह से बस इतना ही निकला, "ठीक है, जैसी तुम्हारी मरजी."

अमर के अंदर ज्वालामुखी फट पड़ा, 'कैसे पिता हैं यह. दो कौड़ी की एक लड़की को पाने के लिए वह अपने बेटे को खोने के लिए तैयार हैं. ठीक है.'

वह उठा और आवेश में भर कर गोली की तरह उन के कमरे से बाहर निकल गया.

अमर चला गया, किंतु वह अपने पिता नरेंद्र के मन की शांत झील में विद्रोह का बड़ा सा पत्थर फेंक कर हलचल मचा गया. वह स्तब्ध और उलझे से बैठे रहे.

उन्हें अमर पर कम, महेश पर क्रोध ज्यादा आ रहा था. उसी ने भड़काया होगा अमर को. क्रोधित हो कर उन्होंने रिनी से कहा कि वह महेश से फोन मिलाए. कुछ ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्षणों बाद महेश से संपर्क हो गया.

"महेश, सुना है कि तुम मेरे बेटे को अपनी कंपनी में नौकरी दे रहे हो?"

"मैं कब दे रहा हूं? उसी ने मांगी और मैं ने हां कर दी."

"पर क्यों?"

"क्या तुझे इस क्यों के बारे में नहीं पता? नरेंद्र. यार, तुझे कुछ शर्महया भी है या फिर पूरी बेशर्मी ओढ़ ली है. अपने बेटे की प्रेमिका के साथ..."

"तुझे किस ने बताया यह सब?" नरेंद्र ने घोर आश्चर्य से पूछा.

"बताएगा कौन? पूरे व्यापारी जगत में तेरे इस काले कारनामे की चर्चा है. हद कर दी तू ने एक दो कौड़ी की लड़की के लिए तू अपने बेटे..."

"उस लड़की को गाली मत दो."

सरिता पर्यटन अंक

सरिता के आगामी पर्यटन अंक के लिए पाठकों के सुझाव व अनुभव आमंत्रित हैं. यदि आप पिछले दो वर्षों में किसी पर्वतीय पर्यटन स्थल पर गए हैं तो वहां के खट्टेमीठे अनुभव हमें भेजें.

आप को ठहरने, खाने, घूमने और देखने के जो स्थान अच्छे लगे, उन के बारे में भी बताइए और जो बहुचर्चित स्थान खराब लगे, उन के बारे में भी.

पर्यटन में सरकारी विभागों की उदासीनता, लालफीताशाही, भ्रष्टाचार, रहने व यातायात की बेइमानियों व असुविधाओं आदि के बारे में भी लिखें.

पर्यटन स्थल के अच्छे फोटोग्राफ भी भेजे जा सकते हैं.

अस्वीकृत रचनाएं वापस मंगाने के लिए टिकट लगा, पता लिखा लिफाफा अवश्य भेजें :

पता :

सरिता पर्यटन सेवा विभाग
दिल्ली प्रेस भवन,
नई दिल्ली-110055.

"गाली? मैं होता तो गोली मार देता. यह लड़की है या व्यभिचारिणी. पहले बेटे के साथ प्रेम करती रही. अब पिता समान, प्रेमी के बाप के साथ रंगरेलियां मना रही है. कल किसी और के साथ गुलछर्रे उड़ाती फिरेगी. अरे नरेंद्र, ऐसी अनुत्तरदायित्वपूर्ण, मूल्यहीन महिला पर निर्भर करना आत्मघात से कम नहीं," कह कर महेश ने फोन बंद कर दिया.

नरेंद्र को लगा जैसे महेश ने उन्हें झकझोर कर रख दिया हो. वह हिल गए थे.

अमर ने कार्यालय आना बंद कर दिया था. हालांकि उस ने महेश की कंपनी में जाना अभी शुरू नहीं किया था.

घर पर भी उन्हें घोर विरोध का सामना करना पड़ रहा था. शेष दो बच्चे अमर के साथ थे. यही नहीं, अब तो अमर की मां भी उन का साथ छोड़ गई थीं. वह भी अमर के पक्ष में चली गई थीं.

घर और बाहर वह निपट अकेले, उपेक्षित और निराश्रित से हो गए थे.

एक दिन अमर की मां ने उन्हें चेतावनी दे दी, "देखिए, तीन दिन के भीतर रिनी नामक उस लड़की को कंपनी से निकाल दीजिए, वरना..."

"पर उस लड़की का कुसूर क्या है?"

"उस ने मेरे घर को विघटन और विनाश के कगार पर पहुंचा दिया है, पितापुत्र के बीच दीवार खड़ी कर दी है."

"उस में क्या केवल उसी का दोष है?"

"हां, वह प्रलोभन की प्रतीक है, वर्जित वृक्ष का वह फल है जिसे खा कर महामानव दानव बन जाता है," इस बार एम.ए. में पढ़ने वाले सुरेश ने कहा. वह साहित्य पढ़ रहा था.

नरेंद्र पाल चारों तरफ से फंस गए थे. पहली बार उन्हें प्रकाश दिखाई दिया. सचमुच अंधेरे में वह भटक गए थे. रिनी की प्राप्ति, पर किस कीमत पर?

उन्होंने पत्नी की चेतावनी के सामने सिर झुका कर अपनी पराजय स्वीकार कर ली.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्लिनिक स्पेशल शैम्पू आपको डैण्ड्रफ़ से छुटकारा दिलाता है. फिर तो आप महफ़िल पर छा जाते हैं.

जब डैण्ड्रफ़ के कारण महफ़िल में आपकी शान घटती नजर आये तो स्पेशलिस्ट से शैम्पू कीजिए. इसका मृदु-मुलायम झाग बालों को साफ़ करता है जबकि इसमें मिले विशेष तत्त्व डैण्ड्रफ़ की रोकथाम करते हैं. तभी तो आपके बाल बेहद दिलकश होकर निखर आते हैं – साफ़ और स्वस्थ बाल तथा खुजली का नामोनिशान नहीं.

HLL-2607

क्लिनिक स्पेशल
शैम्पू

साफ़, स्वस्थ और डैण्ड्रफ़ रहित बालों के लिए.

हिन्दुस्तान लीवर लिमिटेड का उत्कृष्ट उत्पादन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

1987 की फिल्में

1987 का वर्ष हिंदी फिल्मों के लिए कमजोर रहा. 1986 के बंबई बंद और उत्तर प्रदेश के बंद के कारण फिल्मों का निर्माण और प्रदर्शन काफी कम रहा और जितनी फिल्में बनीं भी उन में से कुछ ही प्रभाव छोड़ पाईं.

लेख • विशेष प्रतिनिधि

औपचारिक तौर पर जहां सारी दुनिया ने गुजरे साल 1987 को विदाई दी और नए वर्ष 1988 का स्वागत किया, वहीं पर बीते हुए वर्ष में हिंदी फिल्मों की सफलताओं का आकलन करना इसलिए जरूरी सा हो जाता है क्योंकि उत्पादन की दृष्टि से आज संसार के एक बड़े उद्योग 'सिनेमा' के अंतर्गत भारतीय फिल्मों ने अपने जन्म से ले कर आज तक एक लंबा सफर तय कर लिया है.

वर्ष 1987 को फिल्मों के लिए अच्छा तो किसी भी दृष्टि से नहीं कहा जा सकता. एक तो संख्या की दृष्टि से ही यह वर्ष काफी कमजोर रहा. 1986 में जहां 137 हिंदी फिल्में प्रदर्शित हुई थीं, वहीं इस वर्ष लगभग 115 फिल्में ही सेंसर बोर्ड का प्रमाणपत्र हासिल कर सकीं. इस कमी का एक प्रमुख कारण यह भी रहा कि वर्ष 1986 के अंत में 'बंबई बंद' और 1987 के अंत में उत्तर प्रदेश में 55 दिनों के 'सिनेमा बंद' का असर भी इस उद्योग पर पड़ा. प्रदेश के 850 सिनेमाघरों में 16 अक्तूबर से दिसंबर तक चली हड़ताल के कारण राज्य सरकार को यदि 2 करोड़ रुपए प्रतिदिन का नुकसान

सरिता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

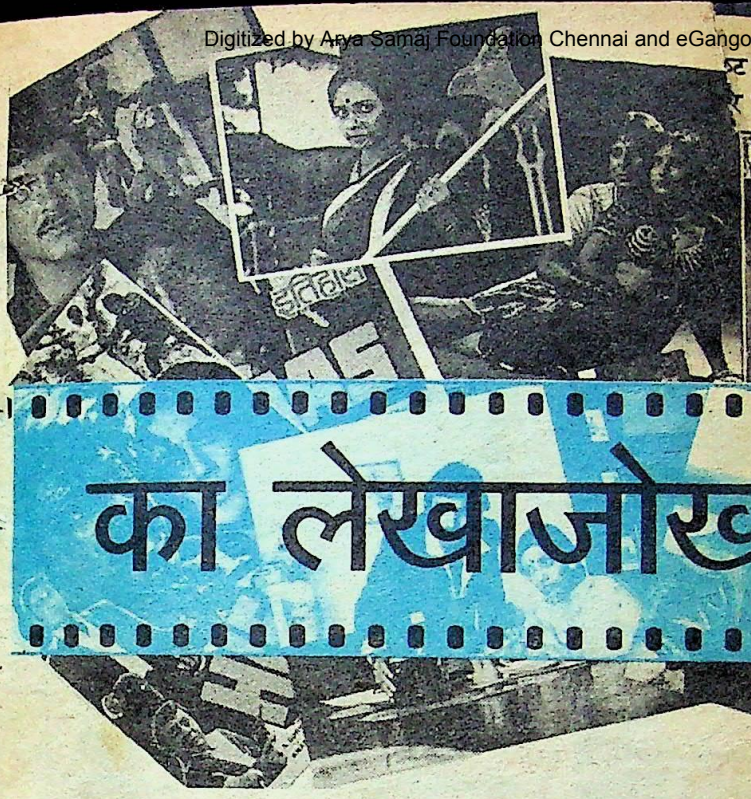

का लेखाजोखा

ट व्यवस्था और दोषी
र प्रहार किया गया था.
ा द्वारा भ्रष्टाचार का
को ही नहीं, नारी
च्छा लगा. वैसे, भ्रष्ट
ो खुली सड़क पर
निष्ठावान पुलिस
हथकंडों से पागल
में मतदाताओं को
रोकना और अंत
र की हत्या होना
ाविक प्रसंग हैं.
प्रभावित किया.
र अवश्य होना
यह प्रतिकार
ाया गया है.
रा विकल्प
तर होता.
में उसूलों
वस्था का
हो जाता
स्था का

हुआ तो इस बात का अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है कि इन दो बड़ी हड़तालों से फिल्म उद्योग को कितनी आर्थिक हानि हुई होगी.

टिकट खिड़की पर भी बंबइया फिल्मों की आमदनी कुछ ज्यादा नहीं बढ़ी. वर्ष 1985-86 के दौरान कुल वसूल
66 लाख रुपए थी तो वर्ष 1 नायक
दौरान कुल वसूली 585 करोड़ वस्था
रुपए हुई. यानी 1986-87 में 1
मुकाबले यह इजाफा करीब 5% ह
इतने बड़े उद्योग के लिए कोई बड़ी स

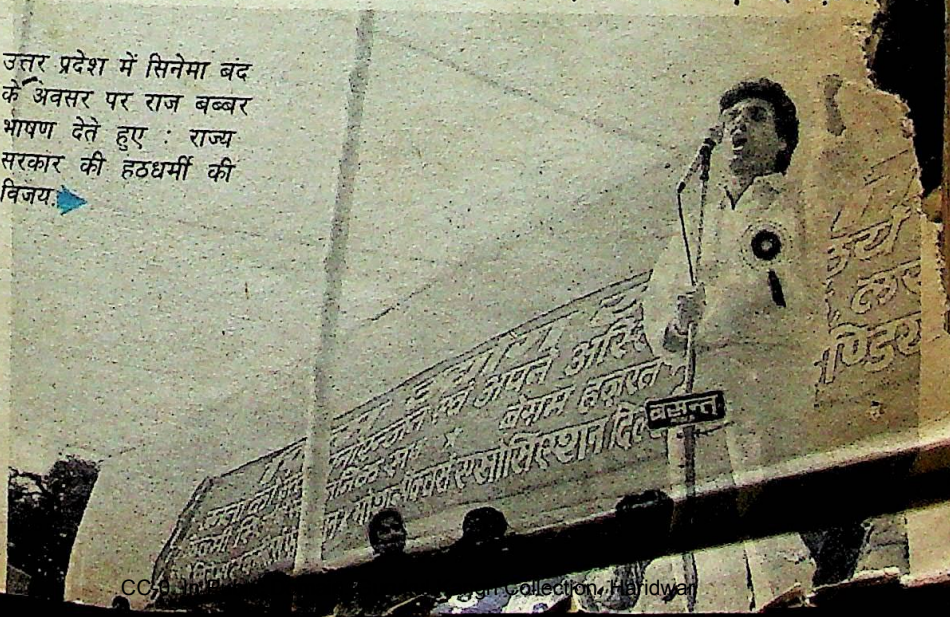

उत्तर प्रदेश में सिनेमा बंद के अवसर पर राज बब्बर भाषण देते हुए : राज्य सरकार की हठधर्मी की विजय.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

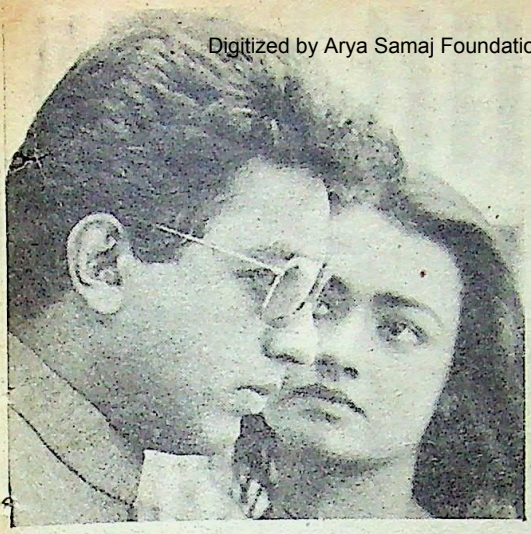

फिल्म 'पुष्पक में' कमल हासन और अमला : मूक रह कर भी बहुत कुछ वह देने में सफल.

और तबाह करने में कोई कसर नहीं रखी. पैसे कमाने और फिल्म उद्योग में अपने पैर जमाने के लिए कई फिल्मों में फारमूलेबाजी, अश्लीलता, व्यर्थ की मारधाड़, एक्शन और भौंडे संगीत की पुनरावृत्ति ही देखने को मिली. मगर उद्देश्य की दृष्टि से जो सफल फिल्में दर्शकों के सामने आईं, उन की संख्या भी चारपांच से अधिक नहीं कही जा सकती. ऐसी कुछ सफल फिल्मों में निर्देशक केतन मेहता की फिल्म 'मिर्चमसाला' तथा निर्देशक सिंगीतम की फिल्म 'पुष्पक' को तो सचमुच इस वर्ष की बेहतरीन फिल्मों में गिना जाएगा. वैसे 'कशमकश,' 'सत्यमेव जयते,' 'सिंदूर' और 'मि. इंडिया' जैसी फिल्में भी काफी लोकप्रिय रहीं.

यह एक अच्छी बात है कि हमारे कुछ निर्मातानिर्देशक कम से कम हमें यह तो एहसास करा देते हैं कि हम आजादी से पहले कितने कायर व बुजदिल थे. जमींदार हमारे ऊपर अत्याचार करते थे और हम चुपचाप सहते रहते थे. 'मिर्चमसाला' इसी कथानक को ले कर बनाई गई एक ऐसी ही सशक्त फिल्म थी, जिस में नायिका सोना बाई (स्मिता पाटिल) ने बड़े ही प्रभावी ढंग से उन के अत्याचारों बुलंद की. स्मित व्यवस्था और दोषी अच्छा था. यह प्रहार किया गया था. मगर उस ने अपने द्वारा भ्रष्टाचार का फिल्म पर छोड़ी को ही नहीं, नारी

इस फिल्म को छा लगा. वैसे, भ्रष्ट से सम्मानित किया खुली सड़क पर समारोह में सर्वश्रेनिष्ठावान पुलिस पुरस्कृत किए जाने हथकंडों से पागल संजीव शाह ने पुरस्क मतदाताओं को दिया था. स्मिता पारोकना और अंत शाह के अलावा, ओ की हत्या होना ओबराय का अभिनय विक प्रसंग हैं. आकर्षक बनाने में विशेभावित किया.

इसी तरह, निर्माता अवश्य होना सिंगीतम श्रीनिवास राव यह प्रतिकार भी दर्शकों द्वारा खूब सराहा गया है. दशक में राजकपूर की एक विकल्प 'जागते रहो,' जिस में रा तर होता. तक चुप रह कर दुनिया में उसूलों देखता और दिखाता रहा. व्यवस्था का दशक में सुनील दत्त ने बना हो जाता फिल्म में भी सुनील दत्त ने खुद व्यवस्था का दिखाया था. मगर 'पुष्पक' इस श्रेष्ठ फिल्म रही जिस में संवाद नायक भी पटकथा अच्छी है. व्यवस्था

वैसे, इस फिल्म में कहीं फंतासी का सहारा भी लिया गया प्रतीकात्मक दृश्य तो बड़ी ही शि साथ उभारे गए हैं. मसलन, ए अंधाधुंध अमीर है. हालत यह है कि बिना अनीमा के पेट साफ नहीं कर सक अमीरी की थोथी जिंदगी पर इतने भर व्यंग्य की संभावना को और कोई निर्मा ऐसे नहीं दरसा सकता था.

एक दूसरा प्रसंग देखिए. कमल हासन बेरोजगार है. फुटपाथ पर एक भिखारी बैठा है. कमल हासन उसे एक अठन्नी दिखा कर वापस जेब में डाल लेता है. जवाब में भिखारी अपनी जेबों से, कमीज की मैली आस्तीनों से नोट ही नोट निकाल कर जब अपने नीचे बिछी दरी पर फैलाता

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

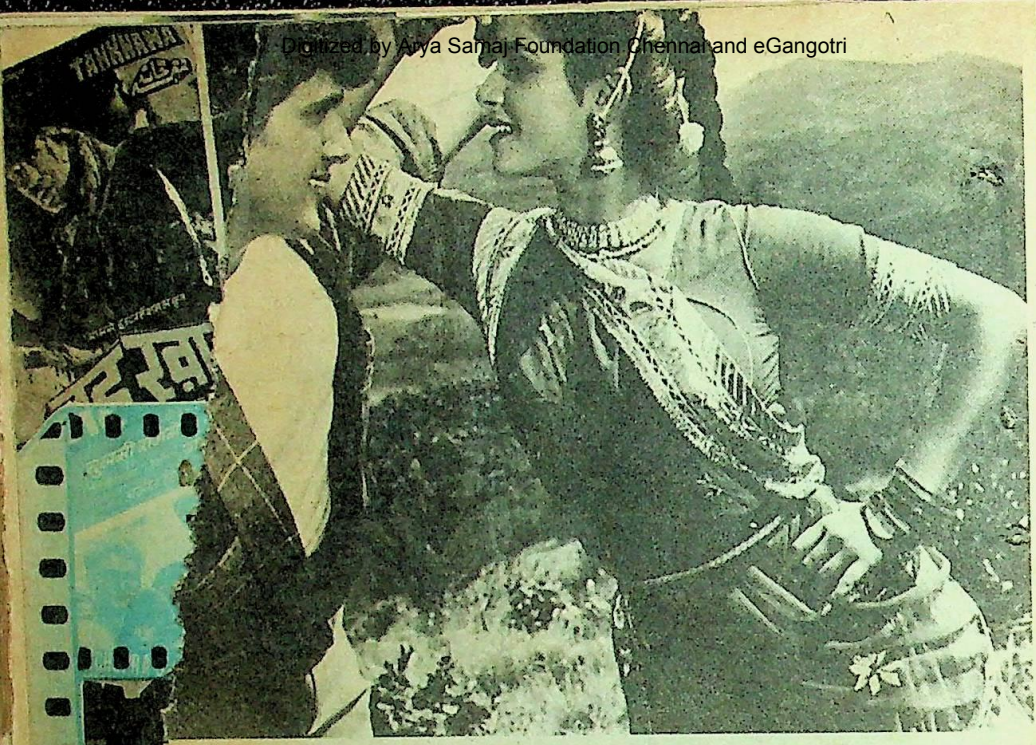

गोविंदा और नीलम : अभिनय के नाम पर सिर्फ मटकना और थिरकना.

नोट देख कर कमल हासन की
फटी रह जाती हैं.
रसे बाद वही फुटपाथ का
ारी मर चुका है. उस की
ाश को नगर निगम वाले उठा रहे
चारी उस की बोरी को दूर फेंकने
ि हवा में नोट ही नोट उड़ने लगते
ग लाश को वहीं पटक कर नोटों
पड़ते हैं.

इस में कोई शक नहीं कि ऐसे कई
क चित्रण में निर्देशक ने अपनी गहरी
ा सुबूत दिया है. कमल हासन तथा
अभिनेत्री अमला का अभिनय दर्शकों
रा खूब पसंद किया गया. इस फिल्म में
टनाओं के साथ यदि संवाद होते तो
संभवतः यह भी फारमूला फिल्म बन जाती.
इस फिल्म की बड़ी खूबी यही रही कि इस में
एक भी संवाद नहीं है. फिल्म में निर्देशक ने
भावों की अभिव्यक्ति एवं कलाकारों के
अभिनय को कैमरे से ही संवारा है.

महेश भट्ट द्वारा निर्देशित फिल्म 'काश' भी चर्चित रही. इसलिए भी कि प्रदर्शन से पहले यह समझा जा रहा था कि यह फिल्म राजेश व डिंपल की निजी जिंदगी पर आधारित है. प्रदर्शन के बाद यह इसलिए चर्चा में आई कि महेश भट्ट ने एक बार फिर एक सुलझी हुई फिल्म जनता के सामने प्रस्तुत की.

इस वर्ष की बेकार फिल्मों में 'दिलजला,' 'दिल तुझ को दिया,' 'मनु दि ग्रेट,' 'डांसडांस,' 'मरते दम तक,' दिलरुबा तांगेवाली,' 'सीतापुर की गीता,' 'मेरा यार मेरा दुश्मन,' 'औरत का इंतकाम,' 'नामोनिशान,' 'डकैत,' 'अवाम,' 'झंकार,' 'मुकद्दर का फैसला,' 'इतिहास,' 'खूनी महल,' 'कलियुग और ???,' 'हिरासत,' 'दीवाना तेरे नाम का,' 'हवालात,' 'दादागीरी,' 'मर्द की जुबान,' जैसी अनेक फिल्में गिनाई जा सकती हैं, जिन के कथानक पुरानी फारमूलेबाजी पर आधारित थे और उद्देश्य नाम की चीज तो शुरू से ही गायब थी.

मध्यम दर्जे की कुछ पारिवारिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिल्में भी दर्शकों को अच्छी लगीं, जैसे 'औलाद,' 'सिंदूर,' 'परिवार' इत्यादि.

भेड़चाल के लिए तो हमारा फिल्म उद्योग भी काफी बदनाम है. यहां एक बार जो फिल्म टिकट खिड़की पर चल निकलती है तो उस के जैसी और फिल्में भी धड़ाधड़ बनने लगती हैं. ऐसा ही कुछ पिछले सालों से राजनीति और कानून व्यवस्था पर आधारित फिल्मों के साथ हो रहा है. ऐसी फिल्मों में फ्रांसीसी, लातीनी (लैटिन) व पश्चिम जरमनी के फिल्मकारों की तरह ठोस पैठ नहीं होती है और यदि होती है तो उस पर उन का पूर्वाग्रह बुरी तरह हावी रहता है. इस लिहाज से पिछले वर्ष जो राजनीतिप्रधान फिल्में बनीं, उन में 'प्रतिघात,' 'इंसाफ,' 'सत्यमेव जयते' और 'कुदरत का कानून' जैसी गिनीचुनी फिल्में ही चर्चित रहीं.

छोटे बजट पर बनी फिल्म 'प्रतिघात' ने फिल्म दर्शकों को इसलिए प्रभावित किया क्योंकि इस में भ्रष्ट व्यवस्था और दोषी नेताओं पर जम कर प्रहार किया गया था. नायिका सुजाता मेहता द्वारा भ्रष्टाचार का विरोध करना पुरुषों को ही नहीं, नारी दर्शक वर्ग को भी अच्छा लगा. वैसे, भ्रष्ट नेता द्वारा नायिका को खुली सड़क पर निर्वस्त्र करना, एक निष्ठावान पुलिस अफसर का भ्रष्ट लोगों के हथकंडों से पागल सा हो जाना, चुनावों में मतदाताओं को जबरदस्ती वोट डालने से रोकना और अंत में एक फरसे से भ्रष्ट नेता की हत्या होना आदि इस फिल्म के अस्वाभाविक प्रसंग हैं. पर इन्होंने दर्शकों को काफी प्रभावित किया. जुल्म और शोषण का प्रतिकार अवश्य होना चाहिए, मगर इस फिल्म में यह प्रतिकार सिर्फ हिंसा के रूप में ही दरसाया गया है. लोकतंत्र में इस का कोई दूसरा विकल्प सुझाया जाता तो शायद ज्यादा बेहतर होता.

फिल्म 'प्रतिघात' में सुजाता मेहता : जुल्म और शोषण के प्रतिकार का कोई दूसरा विकल्प सुझाया जाता तो ज्यादा बेहतर होता.

इसी तरह फिल्म 'इंसाफ' में उसूलों का पक्का एक प्रोफेसर भ्रष्ट व्यवस्था का विरोध करने पर उस का शिकार हो जाता है. लेकिन बाद में वह उस व्यवस्था का खात्मा भी करता है.

'सत्यमेव जयते' में फिल्म का नायक पुलिस विभाग में पनप रही गलत व्यवस्था

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से दुखी है. वह उस का विरोध तो नहीं करता, लेकिन उसे स्वीकारता भी नहीं. इस कारण उसे किनकिन परेशानियों का सामना पड़ता है और उस के व्यक्तित्व व्यवहार का इस पर क्या प्रभाव पड़ता है, यही इस फिल्म का कथानक दरसाता है. अभिनय के लिहाज से विनोद खन्ना ने इस फिल्म में सराहनीय काम किया है. अभिनय के बारे में विनोद खन्ना का यह कहना सर्वथा उचित है कि "एक्टिंग (अभिनय) भी बागबानी की तरह है. जैस आप पौधा उगाते हैं वैसे ही आप अपने अंदर एक चरित्र को बीज की तरह बोते हैं. अगर आप उसे भावनाओं से न सींचें, उस की देखभाल न करें, तो वह दर्शकों को पसंद नहीं आएगा."

वैसे, फिल्म में हर कलाकार को खुद ही उगना पड़ता है. कहानी जितनी अच्छी होगी, पटकथा जितनी उपजाऊ होगी, अभिनेता उतना ही अधिक फलफूल दे सकेगा.

एक बार एक विदेशी फिल्मकार ने कहा था कि किसी भी सफल और उद्देश्यपूर्ण फिल्म के लिए कथा, संगीत, निर्देशकीय क्षमता और तकनीकी कुशलता के अलावा, सामाजिक प्रतिबद्धता की आवश्यकता होती है. मगर हमारे यहां राजनीतिक सिनेमा के दावेदारों में इस बात की कमी है. इसलिए राजनीतिक फिल्मकार प्रतिबद्ध तो लगते हैं लेकिन विचारधारा के प्रति, न कि समाज और फिल्म कला के प्रति. ऐसे फिल्मकार कला और मनोरंजन के नाम पर जातीय विद्वेष, पूर्वाग्रह और अलगाववाद जैसी विकृतियां बाकायदा तर्कों के साथ सिनेमा के माध्यम से समाज में स्थापित करते हैं, जो वस्तुतः देश की नई पीढ़ी के लिए कोई आदर्श नहीं हो सकतीं.

ऐसी राजनीतिक फिल्मों का निर्माण और उन को मिली लोकप्रियता दो बातें स्पष्ट करती हैं. एक तो यह कि आज हर कोई इस व्यवस्था से किसी न किसी तरह से प्रभावित है. इसलिए ऐसी फिल्मों में आत्मसात हो कर दर्शक अपने को आनंदित अनुभव करता है. दूसरे, इस विषय पर बनी फिल्मों में हिंसा और यौन के खुले प्रदर्शन की बहुत गुंजाइश होती है. 'ए' प्रमाणपत्र पाने वाली अधिकांश फिल्मों के साथ यही संभावना जुड़ी हुई है.

नई तारिकाओं की नग्नता

हिंसा का विषय अब भी टिकट खिड़की पर सफलता की गारंटी है. इस वर्ष अनेक फिल्में दर्शकों के सामने आईं, जिन में हिंसा और यौन प्रसंग प्रमुख रूप से निरूपित किए गए थे. 'लोहा,' 'हुकूमत,' 'डाकू हसीना,' 'सीतापुर की गीता,' 'आग ही आग,' 'इनसानियत के दुश्मन,' 'जान हथेली पर,' 'उत्तर दक्षिण,' 'इंसाफ कौन करेगा,' 'इंसाफ मैं करूंगा,' आदि कई फिल्मों में एक्शन, मारधाड़, आलिंगन और चुंबन के दृश्य देख कर दर्शकों पर इस का क्या प्रभाव पड़ता होगा, इस की चिंता करने वाला आज शायद सेंसर भी नहीं है. वरना जिस तेज गति से हिंसक व यौन प्रधान फिल्में बन रही हैं और नवोदित अभिनेत्रियां भी जिस बेशर्मी से अपने कपड़े उतारने (अंग प्रदर्शन) पर तुल गई हैं, इस से लगता है कि इक्कीसवीं सदी आने तक देश में 'ब्लू' फिल्में खुले आम सिनेमा के परदे पर दिखाई जाने लगेंगी.

मलयाली और हालीवुड की फिल्मों का तो विज्ञापन ही अश्लीलता और खुले यौन प्रदर्शन के नाम पर दिया जाता है. इस बात का असर हिंदी फिल्मों पर न हो यह कैसे हो सकता है? इस वर्ष यौन ज्ञान के नाम पर बनी फिल्मों में 'मैं और तुम,' 'औरत का इंतकाम' 'कच्ची कली,' 'नासमझ,' 'कामाग्नि' और 'रात के अंधेरे में' देख कर दर्शकों को यौन शिक्षा का वह सार्थक परिचय नहीं मिला, जो इन फिल्मों के प्रचार में प्रचारित किया गया था. इन फिल्मों के विज्ञापन भी इस तरह से दिए गए थे मानो ये फिल्में शारीरिक संबंधों के बारे में ज्ञानवर्धक तत्त्व पेश न कर के सिर्फ अर्धनग्न दृश्यों से ही भरपूर हों.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिल्म 'रात के अंधेरे में' तो इसलिए भी चर्चित रही क्योंकि इस में दूरदर्शन धारावाहिक 'रामायण' में सीता बनी दीपिका के अश्लील व उत्तेजक दृश्य थे.

दर्जनों फिल्मों में निर्देशकों ने कई अभिनेत्रियों से खूब अंग प्रदर्शन करवाया है. इस के बावजूद ये फिल्में टिकट खिड़की पर बुरी तरह तो पिटीं ही, साथ ही साथ इन फिल्मों में काम करने वाली अभिनेत्रियां एक अर्थ में 'टाइप्ड' भी हो गईं. किमी काटकर की दो फिल्में 'मेरे लहू' व मर्द की जुबान' प्रदर्शित हुईं, पर कोई भी 'टारजन' जैसा करिश्मा पैदा नहीं कर सकीं. इसी तरह मंदाकिनी ने 'प्यार कर के देखो,' 'डांसडांस,' 'अपनेपराए' और 'परम धरम' में अपने जिस्म की खूब नुमाइश की, पर ये सभी फिल्में बुरी तरह पिट गईं.

सोनम, नीता पुरी, डिंपी कपूर, खुशबू, साहिला और हुमा खान जैसी तारिकाएं भी अंग प्रदर्शन को ही अपनी फिल्म की सफलता समझे बैठी हैं.

फिल्मी दुनिया की ऐशपरस्ती से प्रभावित हो कर इस क्षेत्र में आने वाली नई तारिकाएं आज कैसी भी भूमिकाएं करने पर राजी हो जाती हैं. पर इन में से कोई भी नरगिस, मीनाकुमारी या स्मिता पाटिल बनने की सामर्थ्य नहीं रखती.

नए कलाकारों में सुमीत सहगल फिल्म 'इनसानियत के दुश्मन' व 'ईमानदार' में, सुशांत रे फिल्म 'झांझर' में, चंकी पांडे फिल्म 'आग ही आग' में, राहुल 'कलयुग और ???' में, पंकज धीर 'मेरा सुहाग' में तथा आलोकनाथ 'कामाग्नि' और 'कच्ची कली' में दिखाई दिए. लेकिन इन के अभिनय में भी मेहनत और लगन की कमी दिखाई दी. इसी तरह अभिनय प्रतिभा से शून्य गोविंदा और जैकी श्राफ कई फिल्मों में आए पर चूंकि इन कलाकारों ने सिर्फ अपने नृत्य को ही कला व फिल्म की सफलता का मापदंड बनाए रखा, इसलिए इन की फिल्मों ने काफी 'बोर' किया.

वैसे जितेंद्र, ऋषि कपूर और मिथुन चक्रवर्ती आदि ने तो फिल्मों में हीरो की परिभाषा ही बदल दी है. इन कलाकारों ने अपनी प्रदर्शित फिल्मों से यह साबित कर दिया कि भावाभिव्यक्ति का इन की नजर में उतना मोल नहीं है जितना थिरकने और मटकने का है. मगर ऐसे नचनियों के बल पर क्या फिल्में कोई प्रेरणा दे सकेंगी.

अच्छे हास्य अभिनेता तो पूरे वर्ष ही फिल्मों में दिखाई नहीं दिए. खलनायकों में भी चरणदास ने 'प्रतिघात' तथा 'कुदरत का कानून' में अच्छा काम किया. शक्ति कपूर की ज्यादा फिल्में प्रदर्शित हुईं, पर इन की खलनायकी हर फिल्म में एक ही जैसी दिखाई दी. किरणकुमार को 'खुदगर्ज' में और सदाशिव अमरापुरकर को 'हुकूमत' व 'मजाल' फिल्म में बतौर खलनायक के काफी सराहा गया. इन से तो दर्शकों को भविष्य में भी अच्छी आशाएं हैं.

1987 में जिन मुख्य कलाकारों का अभिनय दर्शकों को सचमुच बहुत पसंद आया, उन में चार साल बाद फिल्म जगत में अपनी पुनः वापसी के साथ सक्रिय होने वाले विनोद खन्ना का नाम सर्वोपरि है.

फिल्म 'मैं और तुम' का एक दृश्य : उत्तेजक दृश्य दिखा कर पैसा बटोरना ही निर्माता का एकमात्र उद्देश्य.

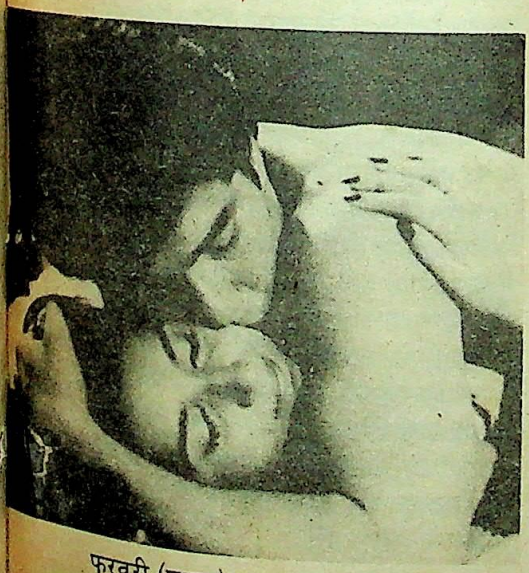

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्ष का चर्चित कलाकार

विनोद खन्ना ने इस वर्ष अमिताभ बच्चन की कमी को ही पूरा नहीं किया बल्कि उस की फिल्म 'इंसाफ' और 'सत्यमेव जयते' देख कर तो दर्शक यही कहते नजर आए कि अब यह पट्ठा अमिताभ की जगह ले लेगा. मगर इस कलाकार की एक फिल्म 'जलियांवाला बाग' फ्लाप रही.

इस वर्ष धर्मेंद्र ने भी कई फिल्मों में कई रूपरंग दिखाए. उस की फिल्म 'हुकूमत' और 'लोहा' काफी चर्चित रहीं. बाकी में इस की अदाकारी सामान्य थी. 'आग ही आग' धर्मेंद्र की सब से बेकार फिल्म कही जाएगी. उस की फिल्मों के चलने का कारण यह था कि वह कहीं तो कामेडी करता नजर आया और कहीं पर 'ढिशुमढिशुम' दिखाता. इसी लिए सिनेमाघर की अगली पंक्तियां इस के हावभाव देख कर खूब मुदित हुईं और उस के हर एक्शन पर अपनी तालियां पीटती रहीं.

अमिताभ बच्चन की तरह इस वर्ष दिलीपकुमार और देवआनंद की भी कोई फिल्म दर्शकों के सामने नहीं आई.

सफल अभिनेत्रियों में इस वर्ष निश्चय ही श्रीदेवी, सुजाता मेहता और डिंपल कापड़िया का अभिनय दर्शकों को बहुत पसंद आया. श्रीदेवी अपने ग्लैमर, नृत्यकला और अभिनय क्षमता के कारण 'जवाब हम देंगे,' 'मि. इंडिया' जैसी फिल्मों में पूरी तरह हावी नजर आई. वैसे 'मजाल' श्रीदेवी की इस वर्ष की उल्लेखनीय फिल्म कही जाएगी, जिस में उस ने एक महिला वकील की भूमिका बड़े ही भावनाप्रधान ढंग से निभाई है. 'नजराना,' 'औलाद' तथा 'हिम्मत और मेहनत' में भी इस अभिनेत्री की भूमिकाएं स्वभाविक और सशक्त थीं.

डिंपल कापड़िया ने इस वर्ष 'इंसानियत के दुश्मन' और 'काश' में काफी जानदार अभिनय किया. जबकि पहले इस की कई फिल्मों की असफलता से इस के कैरियर पर भी प्रश्नचिह्न लग गया था. अब डिंपल के पास कई नई फिल्में हैं.

सुजाता मेहता ने 'प्रतिघात' में जो भावपूर्ण अभिनय किया है, उसे दर्शकों ने खूब सराहा. इसी लिए गुजराती रंगमंच से हिंदी फिल्मों में आने वाली इस अभिनेत्री से दर्शक काफी आशाएं लिए हुए हैं. अपनी अगली फिल्मों में सुजाता मेहता अपनी इस वर्ष की छवि को सुरक्षित रख सकेगी या नहीं, यह कैसे कहा जा सकता है? मगर यह सच है कि 'प्रतिघात' जैसी फिल्म में इस नायिका से पहले इस फिल्म का कथानक और प्रस्तुतीकरण दर्शकों को अधिक प्रभावित करने वाला है.

इस साल किसी भी धार्मिक फिल्म का न बनना जाहिर करता है कि धार्मिक फिल्में कलापक्ष की दृष्टि से बहुत ही लचर बनती हैं. उन में भरमार होती है तो उसी फूहड़पन, तमाशेबाजी और ग्लैमर की, जो अंततः किसी भी जागरूक दर्शक के गले नहीं उतरती.

यहां यह भी बताना जरूरी होगा कि कई बार निर्माता अपनी फिल्मों के बारे में जानबूझ कर प्रतिबद्धता का प्रचार कराते हैं. जो बाद में महज एक हथकंडा बन कर ही रह जाता है. ऐसा प्रचार चर्चित होने का फारमूला तो हो सकता है, मगर इस से ज्यादा रोना तो तब आता है, जब कोई निर्मातानिर्देशक बिलकुल बेसिरपैर की, उद्देश्यहीन, फारमूलों के गलत जोड़तोड़ वाली, प्रत्येक पक्ष से कमजोर फिल्म बना कर जनता की मानसिकता, समय और पैसे के साथ खिलवाड़ करता है.

हिंदी की लगभग 175 फिल्में प्रतिवर्ष सिनेमाघरों में रिलीज होती हैं, लेकिन उन में से चार या पांच फिल्में ही सार्थकता और सोद्देश्यता के आधार पर देखने योग्य होती हैं. इस से तो यही अच्छा है कि भले ही साल में कम फिल्में बनें, लेकिन जो भी बनें वे ऐसी हों जो हमारी चेतना को नई राह दिखाएं, हमारे लिए मार्गदर्शक बनें और दर्शकों की मानसिकता पर अपनी सार्थकता की छाप छोड़ने में सक्षम हों. ●

सरिता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विरासत

(पृष्ठ 137 का शेषांश)

इधर रोशन ने मुंसिफ के निर्णय के विरुद्ध जिला न्यायाधीश के समक्ष अपील दायर कर मकान खाली कराने की कारर्वाई रुकवा दी थी. देखते ही देखते अपील दायर हुए भी डेढ़ साल बीत गया.

"आज क्या हिसाब कर रहे हो?" विपिन बाबू की पत्नी फीकी चाय का प्याला उन्हें पकड़ाती हुई बोली.

"यही कि इन पांच वर्षों में कोई 15 हजार रुपए का खर्चा मुकदमे व बीमारी पर हो चुका है और मकान खाली होने के आसार ही नजर नहीं आ रहे." विपिन बाबू की आवाज में थकान और हताशा थी. बीमारी और मुकदमे के बढ़ते खर्च ने विपिन बाबू की विपन्नता भी बढ़ा दी थी.

एक दिन विपिन बाबू को शहर में लगने वाली लोक अदालत का नोटिस मिला. उन्हें कुछ आशा बंधी. वह अपने एक शिष्य को साथ ले कर लोक अदालत में पहुंच गए. उन्होंने देखा वहां एक शानदार शामियाने में भांतिभांति के मुकदमों के पक्षकार व अनेक वकील आदि बैठे हैं. शहर के एक विधायक का धुआंधार भाषण चल रहा था.

"प्राचीन काल की गांवों की चौपाल का आधुनिक नाम ही लोक अदालत है. आज आम अदालतों में लाखों मुकदमों के अंबार लगे हैं. न्यायाधीश कम और मुकदमे बहुत होने से लोगों का इस व्यवस्था पर विश्वास डगमगाने लगा है. अदालत के चार शब्दों 'अ' का अर्थ आओ, 'दा' से तात्पर्य दावा करो, 'ल' से लड़ो और 'त' से मतलब तबाह होना रह गया है. ऐसे में, भाइयो और बहनो, मैं आप से निवेदन करता हूं कि लोक अदालत में आपस में अपने विवादों को सुलझा कर लाभ उठाएं."

लोक अदालत में विपिन बाबू के मामले की सुनवाई के समय पता चला कि रोशन तो आया ही नहीं है. वह तो किसी न किसी तरह मामले को लटकाए रखना चाहता था.

लेकिन एक साल बाद रोशन की अपील खारिज हो गई और विपिन बाबू एक बार फिर मुकदमा जीत गए.

इधर उन के स्वास्थ्य में तेजी से गिरावट आ गई थी. मधुमेह और रक्तचाप के बाद अब दमा भी परेशान करने लगा था. खांसतेखांसते वह तांगे में बैठ कर वकील के दफतर पहुंचे. वह बुरी तरह हांफ रहे थे. कुछ देर बाद थोड़ा आराम ले कर वह बोले, "वकील साहब, आप एक साल में मकान खाली करवा कर दिलवा रहे थे. अब आठ साल हो गए हैं. क्या मेरे जीते जी मुझे मकान मिल सकेगा?"

"यह आप कैसी बातें कर रहे हैं? अब मकान खाली होने में देरी ही क्या है? वैसे देखिए, अदालतों में समय तो लगता ही है. फिर आप तो दोनों अदालतों से मुकदमा जीत गए हैं. यह सब मेरी बहस का ही तो कमाल है. हां, अपील की मेरी फीस की बकाया रकम."

"लेकिन अपील की आठ सौ रुपए फीस तो मैं ने शुरू में ही दे दी थी," विपिन बाबू ने बीच में खांसते हुए कहा.

"देखिए, दूसरों से मैं 15 सौ लेता हूं. आप मेरे भाई के अध्यापक रह चुके हैं. सो 12 सौ ही ली है. चार सौ अपील के बकाया और तीन सौ रुपए अब इजराय के लगेंगे, सो दीजिए ताकि मकान खाली कराने की कारर्वाई हो सके. हां, दो सौ रुपए नकलों व अपील वगैरह के तो लगेंगे ही," वकील साहब ने अपने नजर के चश्मे में से अपलक झांकते हुए कहा.

विपिन बाबू ने बड़े भारी मन से नौ सौ रुपए वकील को देते हुए कहा, "वकील साहब, इस मुकदमे ने तो मुझे बरबाद ही कर दिया है. अदालत में पिछले तीन वर्षों का किराया जो रोशन ने जमा करा रखा है वह भी मुझे नहीं मिला है."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भगवती प्रसाद ने विपिन बाबू को यह कहते हुए विदा किया कि अब आप दस दिन बाद अपने मकान में पार्टी करने की तैयारी करो, कब्जा मिल जाएगा और बकाया रकम भी मिल जाएगी.

दस दिन के स्थान पर एक माह बीत गया और एक दिन वकील भगवतीप्रसाद खुद विपिन बाबू के घर आए. मुंह लटका कर बोले कि रोशन ने उच्च न्यायालय में फिर अपील कर के कब्जे की कारर्वाई रुकवा दी है. अतः आप को उच्च न्यायालय में जा कर वकील करना पड़ेगा.

विपिन बाबू ने अपना माथा पीट लिया. उन का सिर चकराने लगा. लेकिन अब किनारे पहुंचते हुए सब कुछ छोड़ भी कैसे सकते थे. सो हिम्मत बटोर कर उच्च-न्यायालय गए. वकील भगवतीप्रसाद ने उन्हें उच्च न्यायालय के एक ऐसे वकील के नाम चिट्ठी दे दी थी जिन से उन का कमीशन बंधा था. विपिन बाबू को उच्च न्यायालय के वकील को डेढ़ हजार रुपए फीस देनी पड़ी.

लौटते हुए उन की ट्रेन एक अंधेरी सुरंग से गुजर रही थी. उन्हें महसूस हुआ कि मुकदमे की यात्रा भी आरंभ से अंत तक एक अंधेरी सुरंग की यात्रा ही तो है. नीचे की अदालत में मुकदमा जीत लिया तो लगा कि उस अनंत अंधेरी सुरंग में प्रकाश की एक किरण, लहरा गई. अपील से मामला रुक जाने पर वह किरण लुप्त हो जाती है और फिर अंधेरा ही अंधेरा.

दो साल बाद उच्च न्यायालय से भी निर्णय हो गया और वहां भी विपिन बाबू जीत गए. उच्च न्यायालय ने रोशन को आदेश दिया कि वह एक माह के भीतर मकान का कब्जा विपिन बाबू को दे दे. रोशन को सर्वोच्च न्यायालय में अपील की अनुमति नहीं मिली थी.

इस बार विपिन बाबू प्रसन्न एवं निश्चिंत थे. कुछ देर के लिए वह सुखद कल्पना लोक में खो गए. डुगडुगी बज रही है... अदालत अमीन पुलिस की मदद से रोशन का सामान बाहर रखवा रहा है. मकान खाली होने और पुनीत के विवाह के उपलक्ष्य में अपने मकान में पार्टी हो रही है और फिर दूसरे दिन वह अपने हाथ से लगाए गुलमोहर के पेड़ की छाया में आराम कुरसी पर पैर पसारे अखबार पढ़ रहे हैं तभी दूध वाले की कर्कश आवाज ने उन की मधुर तंद्रा भंग कर दी.

लेकिन विपिन बाबू का जीवन अभी भी संकटों से घिरा पड़ा था. एक दिन वह बाजार से सब्जी ले कर लौट रहे थे कि एक सांड ने सींग मार कर उन्हें गिरा दिया. गिरते ही कूल्हे की हड्डी टूट गई और वह बेहोश हो गए. कुछ लोगों ने उन्हें उठा कर हस्पताल में भरती कराया. उन का रक्तचाप भी बढ़ गया था, मधुमेह के कारण घाव भी नहीं भर रहा था. काफी गंभीर अवस्था थी. पुनीत को तार भेजा गया. पांच दिन बाद पुनीत भी आ गया. विपिन बाबू की आवाज क्षीण हो गई थी.

उन की सफेद निष्प्राण सी आंखें हस्पताल के कमरे की छत की ओर टिकी हुई थीं. उन की पत्नी, पुत्री स्वाति, पुत्र पुनीत व कुछ अन्य संबंधी खड़े थे. उसी समय वकील भगवतीप्रसाद भी वहां आ गए. विपिन बाबू ने उन की ओर आशा भरी

वरवधू ढूंढ़ने की समस्या सरिता में वैवाहिक विज्ञापन दे कर हल कीजिए

सरिता सारे भारत में समृद्ध, सजग व सुशिक्षित परिवारों में पढ़ी जाती है. इस प्रकार सरिता में वैवाहिक विज्ञापन आप को वरवधू ढूंढ़ने में बहुत सहायक सिद्ध होगा. दैनिक पत्र तो केवल अपने शहर या इलाके में पढ़े जाते हैं, लेकिन सरिता का क्षेत्र सारा भारत है. इन विज्ञापनों का शुल्क भी सरिता के पाठकों के लिए नाम मात्र रखा गया है.

विस्तृत जनकारी के लिए निम्नलिखित पते पर पत्रव्यवहार करिए :

विज्ञापन व्यवस्थापक, सरिता,
नई दिल्ली - 110055.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नजर से देखा. उच्च न्यायालय द्वारा निर्दिष्ट एक माह की अवधि भी बीत चुकी थी. भगवतीप्रसाद विपिन बाबू की दृष्टि को समझ गए पर वह कुछ बोले नहीं. बस नजरें इधरउधर चुराने लगे.

"क्या मकान का कब्जा मिल गया?" अचानक विपिन बाबू की आंखों में आशा और उत्सुकता की चमक आ गई थी पर आवाज क्षीण ही थी.

"सब ठीक हो जाएगा, पहले आप ठीक तो हो जाइए," भगवतीप्रसाद झेंपते हुए बोले.

विपिन बाबू का मन उद्विग्न हो उठा. वकील की झेंप से वह सब्र खो बैठे, "कब्जा मिला या नहीं," वह पूरी शक्ति से चिल्लाए.

वकील भगवतीप्रसाद घबरा गए.

"जी... जी नहीं. रोशन ने एक नया एतराज कर के फिर स्थगन आदेश ले लिया है," वह रुक कर बोले, "एतराज यह किया है कि फैसले में लिखे विवादग्रस्त मकान का अड़ोसपड़ोस मौके पर मिलान ही नहीं खाता सो कब्जा नहीं दिलाया जा सकता." वकील भगवतीप्रसाद का गला यह कहते हुए रुंध गया था. शायद भगवतीप्रसाद को भी यह एहसास हो गया था कि वह वकील के रूप में एक ऐसी न्याय व्यवस्था के भागीदार हैं जिस में तत्काल कोई क्रांतिकारी परिवर्तन नहीं हुआ तो ब्लड कैंसर की तरह यह लाइलाज हो जाएगी.

विपिन बाबू कुछ क्षणों तक खामोश पड़े रहे. हस्पताल के कमरे में भयानक स्तब्धता छा गई थी. सब ने देखा कि उन की आंखों से किसी गहन पीड़ा के दो आंसू ढुलक पड़े थे. उन्होंने हाथ के इशारे से पुनीत को पास बुलाया. भर्राई हुई क्षीण आवाज में बोले, "बेटा, अपने मकान का कब्जा जरूर लेना. मेरे पास...कुछ नहीं बचा है...तुझे देने को... विरासत में मैं तुझे यह मुकदमा ही दे कर जा रहा हूं."

कुछ क्षणों के बाद सचमुच आदमी बीत चुका था पर-मुकदमा जीवित था. ●

फूल जैसा चेहरा, मोहक, मासूम, आपको भी चाहिये.
पर फोडे - फुन्सीयोंको फोडिये नहीं.
सिर्फ गरम पानीसे चेहरा धोइये, पोछिये. हररोज़
कैलास जीवन का चिकना लेप बनाइए, फिर देखिये.
आपका वही चेहरा फूल जैसा निखरा, तरोताजा बनेगा.
क्यों कि कैलास जीवन का मतलब है,
खुशबुदार चंदन, शीतल कपूर तथा
आयुर्वेदीय औषधीयोंका समतुल्य मिलाप.
वह देह में भिद जाएगा और अनचाही गर्मी का मुकाबला करेगा.

कैलास जीवन
मल्टिपर्पज आयुर्वेदिक क्रीम

आसम् पुणे २

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुझे तो वही पहनना पसंद है जो भीतर बाहर आरामदेह हो ...

Colts

बनियाइन व जांघिए
भीतर से आरामदेह

बेहद मुलायम अस्तर, बेतरीन किस्म का इलास्टिक और सिलाई तो इतनी मजबूत कि सालों चले. भांतिभांति के सुंदर रंगों में उपलब्ध कोल्ट्स के जांघिए व बनियाइनें वाकई बहुत शानदार हैं. जरा बाहर भीतर पहन कर तो देखिए

मैं. मृधु इंटरप्राइजेज

506, प्रथम मंजिल, कटरा अशर्फी, चांदनी चौक, दिल्ली-110006.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक और आकाश

(पृष्ठ 92 का शेषांश)

परंतु उसी क्षण हृदय के किसी कोने में पुरुष के प्रति फूटा घृणा का अंकुर उसे फिर किसी पुरुष की ओर आकृष्ट होने से रोक देता. तब सचमुच उसे प्रत्येक युवक की सूरत में बस वही सूरत नजर आती, जिस से उसे घृणा थी, जिसे वह भूल जाना चाहती थी. उस ने धीरेधीरे अपनी इच्छाओं, कामनाओं को केवल उसी सीमा तक बांधे रखा था, जहां तक उस की अपनी धरती थी, जहां तक उस का अपना आकाश था.

शारीरिक भूख से अधिक महत्त्वपूर्ण उस के अपने बच्चे प्रकाश का भविष्य था, जिसे संवारने के लिए वह अभी तक कई बार मरमर कर जी थी. अपने को उस सीमा तक व्यस्त कर चुकी थी, जहां उस को कुछ सोचने का अवकाश ही नहीं मिलता था.

ज्योति की कल्पना में अभी स्मृतियों का क्रम टूट नहीं पाया था. वह शाम आंखों में तिर गई थी, जब उस ने मां को सब कुछ साफसाफ कह दिया था. अपने प्रेम को भूल का नाम दे कर रोई थी, क्षमा की भीख मांग कर मां से याचना की थी कि वह गर्भ नष्ट करने के लिए उसे जाने दे.

मां ने उसे गर्भ नष्ट कराने का मौका न दे कर सब कुछ पिता को बता दिया था. फिर पहली बार पिता का वास्तविक रूप उस के सामने आया था. उन्होंने ज्योति को नफरत से देखते हुए दहाड़ कर कहा था, "खबरदार, जो तू ने मुझे आज के बाद पिता कहा. निकल जा, अभी इसी वक्त इस घर से. तेरा काला मुंह मैं नहीं देखना चाहता. जाती है या नहीं?"

आज उन्हीं पिता का पत्र उसे मिला था. पल भर के लिए मन तमाम कड़वाहटों से भर आया था. परंतु धीरेधीरे पिता के प्रति उदासीनता का भाव घटने लगा था. वह निर्णय ले चुकी थी कि अगर पिता ने उसे क्षमा नहीं किया तो कोई बात नहीं, वह अपने पिता को अवश्य क्षमा कर देगी.

उस दिन तो पिता की दहाड़ सुन कर कुछ क्षण ज्योति जड़वत खड़ी रही थी. फिर चल पड़ी थी बाहर की ओर. उसे विश्वास हो गया था कि उस का प्रेमी हो या पिता, पुरुष दोनों ही हैं और अपनेअपने स्तर पर दोनों ही समाज के उत्थान में बाधक हैं.

उस दिन ज्योति घर छोड़ कर चल पड़ी थी. किसी ने उस की राह नहीं रोकी थी. किसी की बांहें उस की ओर नहीं बढ़ी थीं. किसी आंचल ने उस के आंसू नहीं पोंछे थे. आंसू पोंछने वाला आंचल तो केवल मां का ही होता है. परंतु साथ ही उसे इस बात का पूरा एहसास था कि पिता के अंकुश तले दबी होंठों के भीतर अपनी सिसकियों को दबाए हुए उस की मां दरवाजे पर खड़ी जरूर थी, पर उसे पांव आगे बढ़ाने की अनुमति नहीं थी. वह चली जा रही थी और समझ रही थी मां की विवशता को. आखिर वह भी तो नारी थी उसी समाज की.

बच्चे को जन्म देने के बाद ज्योति ने उसे प्रकाश नाम दे कर अपने भीतर अभूतपूर्व शक्ति का अनुभव किया था. उसे वह गुलाब के फूल की तरह अनेक कांटों के बीच पालती रही थी.

अब ज्योति की आंखों में केवल एक ही स्वप्न शेष था. किस प्रकार वह समाज में अपना वही स्थान प्राप्त कर ले, जिस पर वह घर से निकाले जाने से पहले प्रतिष्ठित थी.

शायद इन्हीं भावनाओं ने ज्योति को प्रेरित किया था मां के नाम पत्र लिखने के लिए. डब्बे में रोशनी कम थी. फिर भी उस ने अपने पर्स को टटोल कर उस में से कुछ निकाला. आसपास के सारे यात्री सो रहे थे या ऊंघ रहे थे. ज्योति एक बार फिर उस पत्र को पढ़ रही थी जिसे उस ने केवल मां को भेजा था, केवल यह जानने के लिए कि कहीं भावावेश में किसी शब्द के माध्यम से उस का आत्मविश्वास डिग तो नहीं गया था.

"मां, अपनी बेटी का प्रणाम स्वीकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करते हुए तुम्हें यह विश्वास तो हो गया है न कि ज्योति जीवित है.

"मैं जीवन के युद्ध में एक सैनिक की भांति लड़ी हूं और अब तक हमेशा विजयी रही हूं प्रत्येक मोर्चे पर. परंतु मेरी विजय अधूरी रहेगी जब तक अंतिम मोर्चे को भी न जीत लूं. वह मोर्चा है, तुम्हारे समाज के बीच आ कर अपनी प्रतिष्ठा पुनः प्राप्त कर लेने का. मैं ने उस घर को अपना घर कहने का अधिकार तुम सब से छीन लेने के बाद भी छोड़ा नहीं. मैं उसी घर में आना चाहती हूं. परंतु मैं तभी आऊंगी जब तुम मुझे बुलाओगी. सचसच कहना, मां, क्या तुम में इतना साहस है कि तुम और पिताजी दोनों अपने समाज के सामने यह बात निस्संकोच स्वीकार कर सको कि मैं तुम्हारी बेटी हूं और प्रकाश मेरा पुत्र है.

"मेरी परीक्षा की अवधि बीत चुकी है. अब तुम दोनों की परीक्षा का अवसर है. मैं नहीं चाहती कि आप में से कोई मेरे पास ममतावश आए. मैं चाहूंगी कि आप सब कभी मुझे इस दया का पात्र न बनाएं. मैं छुट्टियों के कुछ दिन आप के पास बिता कर पुनः यहां वापस आ जाऊंगी. मेरे पुत्र या मुझे ले कर आप की प्रतिष्ठा पर जरा भी आंच आए, यह मेरी इच्छा नहीं है. मैं ऐसे में अंतिम श्वास तक आप के लिए उसी तरह मरी बनी रहने में अपनी खुशी समझूंगी जिस तरह अब तक थी. यदि मैं ने आप लोगों को अपनी याद दिला कर कोई गलती की है तो भी क्षमा चाहूंगी. शायद यही सोच कर मैं ने इस पत्र में केवल अपनी याद दिलाई है, अपना पता नहीं दिया.

—ज्योति.

शांति

उदात्त से उदात्त ध्येय के लिए उपयोग में लाई गई घृणा और हिंसा केवल घृणा और हिंसा को ही जन्म देती है और शांति की स्थापना करने के बजाए उसे खत्म कर देती है. —महात्मा गांधी

ज्योति को यह सोच कर शांति मिली थी कि उस ने ऐसा कुछ नहीं लिखा था जिस से उन के मन में कोई दुर्बलता झांके. उस ने पत्र को पर्स में रखने के साथ दूसरा पत्र निकाला, जो उस के पिता का था. वह पत्र देखते ही उस की आंखें डबडबा आईं और उन आंसुओं में उतने बड़े कागज पर पिता के हाथ के लिखे केवल दो वाक्य तैरते रहे. "चली आ, बेटी. हम सब पलकें बिछाए हुए हैं तेरे लिए."

सुबह का उजाला उसे आह्लादित करने लगा था. अपनी जन्मभूमि का आकर्षण उसे बरबस अपनी ओर खींच रहा था. कल्पना की आंखों से वह सभी परिवारजनों की सूरत देखने लगी थी.

गाड़ी ज्योंज्यों धीमी होती गई, ज्योति की हृदय गति त्योंत्यों तीव्र होती गई. प्रकाश की उंगली थामे हुए वह डब्बे के दरवाजे पर खड़ी हो गई. कल्पना साकार होने लगी. गाड़ी रुकते ही कई गीली आंखें उन दोनों पर टिक गईं. कई बांहों ने एकसाथ उन का स्वागत किया. कई आंचल आंसुओं से भीगे और कई होंठ मुसकराते हुए कह बैठे, "कैसी हो गई है ज्योति, योगिनी जैसी."

ज्योति ने डबडबाई आंखों से भाई की ओर निहारा जो एक ओर चुपचाप खड़ा सहज आंखों से बहन को निहार रहा था. ज्योति ने अपने पर्स से पिछले 11 वर्षों की राखी के धागे निकाले और उस की कलाई पर बांधते हुए पूछा, "भाभी नहीं आई, भैया?"

"नहीं, बेटी. तेरे बिना तेरे भैया ने शादी नहीं की. अब तू आ गई है तो इस की शादी भी होगी." मां बोल उठी थी.

घर की ओर जातेजाते ज्योति के मन में अपूर्व शांति थी. अपने भाई के प्रति मन स्नेह से भर गया था. उस का संघर्ष सार्थक हुआ था. उस के वियोग का मूल्य भाई ने भी चुकाया था. उस ने ऊपर की ओर ताका. मन के भीतर ही नहीं, ऊपर के आकाश को भी विस्तार मिल रहा था.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चंचल छाया

★★★★अति उत्तम ★★★ उत्तम ★★ मध्यम ★ साधारण ○ बेकार

○धर्मशत्रु

निर्माता : अ. व. मोहन
निर्देशक : हरेश मलहोत्रा
संगीत : हेमंत भोंसले
मुख्य कलाकार : शत्रुघ्न सिन्हा, रीना राय, प्राण, जीवन, अमजद खान, निरूपा राय

"धर्मशत्रु या दर्शकों के समय व पैसे की शत्रु (?)" फिल्म देखने के बाद सिनेमाहाल से बाहर निकलते ही हम ने सब से पहला सवाल अपनेआप से यही किया कि इस फिल्म का नाम धर्मशत्रु क्यों है?

वर्षों से ठंडे बस्ते में पड़ी इस फिल्म को रजतपट की रोशनी भी शायद इसलिए मिल सकी क्योंकि इस के निर्देशक हरमेश मलहोत्रा फिल्म 'नगीना' के बाद तथा नायक शत्रुघ्न सिन्हा (खुदगर्ज) के बाद 'हिट' (?) कलाकारों की जमात में शामिल हो गए हैं.

बंबई में बनने वाली कम से कम 60 प्रतिशत फिल्मों का गणित क्या होता है, वह भी इस फिल्म से स्पष्ट हो जाता है. छः मारधाड़ के दृश्य, एक या दो कैबरे, दो रोमांटिक गीत, चार हास्यपूर्ण दृश्य वगैरहवगैरह और लीजिए साहब, हो गई एक अदद फिल्म तैयार!

कहानी के नाम पर जो कुछ भी इस फिल्म में है, वह इस प्रकार है. प्राण और जीवन कुछ गलत धंधा करते हैं (क्या गलत धंधा करते है, यह आखिर तक नहीं पता चलता). परिस्थितिवश भारतीय पुलिस से बचने के लिए प्राण को सिंगापुर भागना पड़ता है. घटनाएं कुछ इस प्रकार घटती हैं (कोई नई बात है?) कि एक बेटा (अमजद खान) जीवन के संरक्षण में अपराधी बनता है तो दूसरा बेटा (शत्रुघ्न सिन्हा) मां (निरूपा राय) के संरक्षण में पुलिस अधिकारी बनता है. दोनों बेटों में टक्कर होती है. पुलिस अधिकारी बेटा बाप को गिरफ्तार करता है. इस बीच खलनायक जीवन अपने जानेपहचाने

फिल्म 'धर्म शत्रु' के एक दृश्य में शत्रुघ्न सिन्हा और प्राण: अभिनय कम नाटकीयता ज्यादा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पिछले बारह महीनों में

★★★ मिर्च मसाला, पुष्पक

★★ प्रतिघात, संसार, सत्यमेव जयते, काश, कुदरत का कानून

★ नजराना, जवाब हम देंगे, इतिहास, हुकूमत, डकैत, मजाल, औलाद, मिस्टर इंडिया, परिवार, खुदगर्ज, सिंदूर, प्यार की जीत, जान हथेली पे, ठिकाना, उत्तर दक्षिण, इनसाफ की पुकार.

○ इनसानियत के दुश्मन, अनुभव, बाबुल, जुंबिश, लोहा, दादागिरी, बेशक, इनाम दस हजार, प्यार कर के देखो, मांबेटी, डाकू हसीना, मेरा लहू, कौन कितने पानी में, ईमानदार, कलयुग और ???, काम अग्नि, आग ही आग, यादों की जंजीर, मनु द ग्रेट, नामोनिशान, सीतापुर की गीता, प्यार के दोचार दिन, मेरा यार मेरा दुश्मन, डांसडांस, मुकद्दर का फैसला, इनसाफ, हवालात, इनसाफ कौन करेगा, खूनी महल, मरते दम तक, दिलरुबा तांगेवाली, सड़क छाप, हिरासत, दिलजला, कच्ची कली, दिल तुझ को दिया, मर्द की जबान, वतन के रखवाले, गोरा, दीवाना तेरे नाम का, मैं और तुम, प्यार के काबिल, हिफाजत, घर का सुख, औरत का इंतकाम, परम धरम, हिम्मत और मेहनत, जागो हुआ सवेरा, रात के अंधेरे में.

अंदाज में खलनायकनुमा चालें भी चलता रहता है. अंत में, जैसा होना चाहिए, सारे परिवार का मिलन होता है तथा दोनों भाई मिल कर खलनायक को सजा देते हैं. इस सारे झमेले के बीच शत्रुघ्न सिन्हा व रीना राय के प्यार की कहानी भी चलती रहती है.

फिल्म का तकनीकी पक्ष साधारण है. 70 प्रतिशत शूटिंग सिंगापुर में की गई है तथा वहां की खूबसूरती को कैमरे ने अच्छा कैद किया है. परंतु क्या ही अच्छा होता कि निर्माता फूजीकलर के स्थान पर ईस्टमैनकलर का प्रयोग करता.

रीना राय के संवाद एक स्थान पर उस की जगह किसी और की आवाज में डब किए गए हैं. साउंड ट्रैक कई स्थान पर खराब आवाज देता है.

निर्देशन के स्तर का पता इसी बात से चल जाता है कि शुरू में तो नायक को एक पुलिस अधिकारी की वरदी में दिखाया गया है, परंतु बाद में अचानक ही उसे केंद्रीय जांच ब्यूरो के अधिकारी में तबदील कर दिया जाता है. जिस प्रकार नायक प्राण को सिंगापुर से गिरफ्तार कर के भारत लाता है, उसे देख कर तो सिर पीट लेने को मन करता है.

हिंदी फिल्मों के जो सफल कलाकार हैं, वे अपनीअपनी छवि व शैली के अनुसार अपनी भूमिकाएं निभाने में खतरे की हद तक पारंगत हो चुके हैं. इसलिए किसी के भी अभिनय पर टिप्पणी करना बेकार है.

हेमंत भोंसले जैसे नए संगीतकारों को कभीकभी संगीत देने का अवसर मिलता है और वह उस अवसर को किस प्रकार गंवा देते हैं, यह फिल्म इस का ज्वलंत उदाहरण है. कष्ट तब होता है जब यही लोग फिल्म उद्योग पर इलजाम लगा देते हैं कि यहां पर प्रतिभाशाली लोगों का शोषण होता है.

दिल्ली, उत्तर प्रदेश व अन्य बड़े वितरण क्षेत्रों में इस फिल्म के बाक्स आफिस पर सफल रहने की संभावनाएं बेहद कमजोर हैं. हां, अन्य क्षेत्रों में कुछ कमाई की उम्मीद जरूर है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यक्तिगत विज्ञापन

वैवाहिक विज्ञापन

वर चाहिए

26 वर्षीया, 158 सें.मी., सिसौदिया राजपूत, एम.ए., सुंदर, सुसंस्कृत, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु सजातीय, सेवारत, योग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 8719, सरिता, नई दिल्ली-110055.

राजस्थान सेवारत, कायस्थ, अध्यापिका 35, 152 सें.मी., 1,890/-, हेतु सुयोग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 8781, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जायसवाल, 24 वर्षीया, 160 सें.मी., एम.एससी. (कैमेस्ट्री) प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण, साफ रंग, उत्तम नाकनक्श, हंसमुख, संपन्न परिवारीय कन्या हेतु योग्य, कार्यरत वर. लिखें: वि.नं. 8782, सरिता, नई दिल्ली-110055.

21 वर्षीया, 157 सें.मी., एम.ए. (अर्थशास्त्र), गौरवर्ण, सुंदर, सुशील, गृहकार्यदक्ष, माहेश्वरी कन्या हेतु सजातीय वर चाहिए. शीघ्र विवाह. दहेज इच्छुक कष्ट न करें. लिखें: वि.नं. 8798, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24 वर्षीया, 163 सें.मी., कुर्मि क्षत्रिय, प्रतिष्ठित एवं संपन्न परिवारीय, एम.काम. फाइनल में अध्ययनरत, सुशील, स्मार्ट, साफ रंग, गृहकार्यदक्ष, इकहरा बदन, मधुर स्वभाव, सुरुचिपूर्ण व्यक्तित्व वाली कन्या हेतु प्रथम श्रेणी अधिकारी, इंजीनियर अथवा डाक्टर वर चाहिए. सजातीय को प्राथमिकता. लिखें: वि.नं. 8799, सरिता, नई दिल्ली-110055.

म. प्र. निवासी, 32 वर्षीया, 152 सें.मी., प्रथम श्रेणी राजपत्रित अधिकारी, वेतन 3,200/-, एम.ए. (अर्थशास्त्र) थ्रू आऊट फर्स्ट क्लास, रंग गेहुआं, आकर्षक, अनुसूचित जाति, हेतु योग्य वर चाहिए. दहेज एवं जातिबंधन नहीं. साधारण विवाह, प्रथम बार में पूर्ण विवरण. लिखें: वि.नं. 8800, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23 वर्षीया, 160 सें.मी., अग्रवाल (गोयल), एम.एससी. (सांख्यिकी) गोल्ड मेडलिस्ट, कानवेंट शिक्षित, आकर्षक कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 8801, सरिता, नई दिल्ली-110055.

22, 150 सें.मी., भूमिहार ब्राह्मण, बी.एससी., सुंदर, सुशील, गृहकार्यदक्ष, संतानोत्पत्ति असमर्थ कन्या हेतु अविवाहित, संतान अनिच्छुक युवक संपर्क करें. विधुर विचारणीय. जातिबंधन नहीं. प्रथम बार सविवरण लिखें: वि.नं. 8802, सरिता, नई दिल्ली-110055.

20 वर्षीया, 160 सें.मी., लोहिया-गर्ग बीसा अग्रवाल, दिल्ली निवासी, एम.ए. फाइनल अध्ययनरत, स्मार्ट, सुंदर, स्लिम, गृहकार्य व संगीत में निपुण (केवल दो छोटे भाई इंजीनियरिंग अध्ययनरत) कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 8803, सरिता, नई दिल्ली-110055.

भदौरिया राजपूत, पोस्ट ग्रेजुएट, हिंदी टाईपिंग, लाइब्रेरियन साइंस डिप्लोमा, 28, 160 सें.मी., सुंदर, गौरवर्ण कन्या हेतु सुशिक्षित, सरकारी सेवारत, सजातीय वर चाहिए. शीघ्र विवाह. सविवरण लिखें: वि.नं. 8804, सरिता, नई दिल्ली-110055.

रौनियार, 19 वर्षीया एवं 21 वर्षीया, बी.एस.सी., गृहकार्यदक्ष कन्याओं हेतु डाक्टर/इंजीनियर वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 8805, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25 वर्षीया, रौनियार वैश्य, सरकारी सेवारत, 23 वर्षीया, मंगली कन्याओं हेतु सजातीय वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 8806, सरिता, नई दिल्ली-110055.

धोबी, 22½ वर्षीया, 158 सें.मी., हायर सेकंडरी, सुशील, रंग सांवला, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु सजातीय, कार्यरत वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 8807, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24, 22 वर्षीया, गोयल, गौरवर्ण, गृहकार्यनिपुण, लंबाई 152 सें.मी., गूंगीबहरी बहनों के लिए स्वावलंबी युवक. अच्छी शादी. लिखें: वि.नं. 8808, सरिता, नई दिल्ली-110055.

22 वर्षीया, अग्रवाल, बी.ए., 155 सें.मी., स्लिम, सुंदर, गौरवर्ण, गृहकार्यनिपुण कन्या हेतु उच्चपदस्थ, कार्यरत, सजातीय वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 8809, सरिता, नई दिल्ली-110055.

चौरसिया कन्या, 19, 152 सें.मी., गोरी, दुबली, बी.ए. प्रथम, हेतु सेवारत वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 8810, सरिता, नई दिल्ली-110055.

19½ वर्षीया, 159 सें.मी., कानवेंट शिक्षित, बी.एससी., सुंदर एवं गृहकार्यदक्ष, प्रतिष्ठित पंजाबी खत्री कन्या हेतु उच्चस्तरीय व्यावसायिक वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 8811, सरिता, नई दिल्ली-110055.

हिंदू नाई कन्या, 20, 150 सें.मी., गोरी, ग्रेजुएट हेतु उत्तम, सजातीय वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 8812, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24 वर्षीया, 153 सें.मी., एम.ए., लाइब्रेरी साइंस डिग्री, जैन गर्ग, सुंदर, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 8813, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मि क्षत्रिय, 24 वर्षीया, 157 सें.मी., सुंदर, गोरी, आकर्षक, बी.एससी., एलएल.बी., गृहकार्यदक्ष, शिक्षित एवं प्रतिष्ठित परिवारीय कन्या हेतु वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 8814, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी, 21, 157 सें.मी., मंगलीक, एम.ए. (फाइनल) अध्ययनरत, गृहकार्यदक्ष, स्मार्ट, पिता व भाइयों का अपना व्यापार, कन्या हेतु मंगलीक, सुयोग्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर अपेक्षित. लिखें: वि.नं. 8815, सरिता, नई दिल्ली-110055.

यादव, 28 वर्षीया, 155 सें.मी., एम.ए., बी.एड., हेतु सजातीय वर. लिखें: वि.नं. 8816, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26वर्षीया, 156 सें.मी., एम.ए., बी.एड., गेहुआं रंग, गृहकार्यदक्ष, कायस्थ सक्सेना कन्या हेतु सजातीय, कार्यरत वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 8817, सरिता, नई दिल्ली-110055

25 वर्षीया, त्यागी ब्राह्मण (बीसवें), बी.ए. में अध्ययनरत, सुंदर, सुशील, गृहकार्य में दक्ष कन्या हेतु सजातीय, कार्यरत वर चाहिए. सविवरण सहित लिखें: वि.नं. 8818, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25 वर्षीया, राजस्थान निवासी, कान्यकुब्ज ब्राह्मण, एम.एस.सी., बी.एड., गृहकार्यदक्ष, सुंदर, गौरवर्ण कन्या हेतु सुयोग्य, सजातीय वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 8819, सरिता नई दिल्ली-110055.

26,148 सें.मी., प्रजापति, सुंदर, गोरी, ग्रेजुएट कन्या हेतु वर चाहिए. लिखें: वि.नं., 8820, सरिता, नई दिल्ली-110055.

चौरसिया, 22, 165 सें.मी., गौरवर्णीय, सुंदर, पतली, एम.ए. (अंगरेजी), उत्तर प्रदेश, राजपत्रित अधिकारी की कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 8821, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25 वर्षीया, चौरसिया, एम.ए., बी.एड., राजकीय अध्यापिका, मासिक 1, 800/-, सुंदर कन्या हेतु वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 8822, सरिता, नई दिल्ली-110055.

29 वर्षीया, 153 सें.मी., जाटव, एम.ए., गृहकार्यदक्ष, परिवारीय कन्या हेतु वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 8823, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24 वर्षीया, बी.काम., स्मार्ट, 157 सें.मी., गॉड (हिंदू), बैंक सेवारत कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 8824, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26, 155 सें.मी., स्टेट बैंक में कार्यरत कन्या हेतु सुयोग्य गढ़वाली, कुमाऊंनी ब्राह्मण वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 8825, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26, 165 सें.मी., बी.काम., एलएल.बी., बी.एड., सरकारी कार्यरत, गेहुआं रंग, आकर्षक, कान्यकुब्ज ब्राह्मण कन्या हेतु केवल सजातीय युवक स्वीकार्य. लिखें: वि.नं. 8826, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गौरवर्णीय, अति सुंदर, गृहकार्यनिपुण, टैलेंटेड, 26, 153 सें.मी., स्नातकोत्तर कन्यार्थ उत्तरप्रदेशीय जातिबंधनमुक्त, दहेजविरोधी, राजपत्रित अधिकारी व अग्रवालों को प्राथमिकता. लिखें: वि.नं. 8827, सरिता, नई दिल्ली-110055.

30 वर्षीया, 150 सें.मी. सुन्नी मुसलिम, ग्रेजुएट, केंद्रीय कार्यालय में कार्यरत, मासिक आय 1, 800/-, म.प्र. निवासी कन्या हेतु समान वर चाहिए. दहेज संपूर्ण. कृपया वह पत्र लिखें जो सर्विस में सहूलत दें पूर्ण विवरण सहित प्रथम बार लिखें: वि.नं. 8828, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गोयल, 22 वर्षीया, 157 सें.मी., बी.ए. (आनर्स), सुंदर, गोरी, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु सुयोग्य दिल्ली निवासी वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 8829, सरिता, नई दिल्ली-110055.

36 वर्षीया, माहेश्वरी, गृहकार्यदक्ष, साफ रंग, सुशील, स्वस्थ निस्संतान, परित्यक्ता लड़की हेतु आत्मनिर्भर माहेश्वरी, अग्रवाल वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 8830, सरिता, नई दिल्ली-110055.

22 वर्षीया, 147 सें.मी., गोरी, सक्सेना (दूसरे) कन्या हेतु कार्यरत, सजातीय वर चाहिए. गृहकार्यनिपुण, निगाह कमजोर होने के कारण पढ़ाई तथा कढ़ाईबुनाई में असमर्थ. लिखें: वि.नं. 8831, सरिता, नई दिल्ली-110055.

20, 163 सें.मी. गोरी, स्मार्ट, शिक्षित, यादव कन्या हेतु सजातीय वर चाहिए. सरकारी सेना अधिकारी, उच्च व्यापारी को वरीयता. लिखें: वि.नं. 8832, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28 एवं 25 वर्षीया, 152 सें.मी., 154 सें.मी., सक्सेना, केंद्रीय विद्यालय शिक्षित, उसमानिया विश्वविद्यालय से बी.ए., गोरी, स्वस्थ, शाकाहारी, गृहकार्यदक्ष, पिता अवकाश प्राप्त वायु सेना अधिकारी, ज्येष्ठ भ्राता चाय बागान मैनेजर, हेतु आत्मनिर्भर तथा सुस्थापित, कायस्थ वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 8833, सरिता, नई दिल्ली-110055.

30 वर्षीया, बरई (धवाईत चौरसिया), 157 सें.मी., एम.ए., सुंदर, शांत, गृहकार्यदक्ष, कन्या गेहुआं, हलका चेचक दाग, हेतु आत्मनिर्भर वर (डाक्टर, इंजीनियर, उच्चाधिकारी)चाहिए. जातिबंधन नहीं. सजातीय को प्राथमिकता.पूर्ण विवरण लिखें: वि.नं. 8834, सरिता, नई दिल्ली-110055.

29 वर्षीया, 151 सें.मी., एम.ए., गौरवर्ण, उच्च परिवारीय ब्राह्मण, तलाकशुदा, शिशुरहित, सुंदर, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु कार्यरत, व्यवसायी, योग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 8835, सरिता, नई दिल्ली-110055.

पश्चिम बंग निवासी, मारवाड़ी अग्रवाल मित्तल, 22, 161 सें.मी., बी.ए. इकोनामिक्स आनर्स, सी.एफ.ए. अध्ययनरत, सुंदर, गृहकार्यनिपुण, संगीत पेंटिंग, टाइपिंग आदि दक्ष कन्या हेतु उच्च शिक्षित आत्मनिर्भर वर चाहिए. उत्तम विवाह. लिखें: वि.नं. 8836, सरिता, नई दिल्ली-110055.

20½ वर्षीया, चौरसिया, 150 सें.मी., बी.एससी., गृहकार्य, सिलाई, बुनाई व कला में दक्ष, स्लिम, अति सुंदर, गोरी कन्या हेतु सजातीय, सुयोग्य वर चाहिए, पिता प्रथम श्रेणी अधिकारी, भाई इंजीनियरिंग (अंतिम वर्ष). विज्ञापन उत्तम चयन हेतु. दहेज नहीं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विवाह उत्तम. लिखें: वि.नं. 8837, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28 वर्षीया, सक्सेना (दूसरे), 154 सें.मी., एम.ए., गोरी, स्वस्थ, सुशील, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु सुयोग्य, सरकारी सेवारत, व्यवसायरत, कायस्थ वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 8838, सरिता, नई दिल्ली-110055.

उच्च अधिकारी, सजातीय, कार्यरत, ग्रेजुएट, इंजीनियर वर चाहिए. कन्या एम.एससी., 22, 158 सें.मी., गौरवर्ण, स्मार्ट, सूर्यवंशी क्षत्रिय (राजपूत) पिता उच्च अधिकारी. लिखें: वि.नं. 8839, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26 वर्षीया, दिगंबर जैन, 149 सें.मी., सुंदर, गेहुआं रंग, जबलपुर निवासी, डाक्टर, एम.बी.बी.एस. कन्या हेतु सजातीय, शाकाहारी, डाक्टर वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 8921, सरिता, नई दिल्ली-110055.

स्वर्णकार, 24 वर्षीया, 160 सें.मी., ग्रेजुएट, सुंदर, सुशील, गृहकार्य में दक्ष कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 8922, सरिता, नई दिल्ली-110055.

30, 158 सें.मी., सरयूपारीण ब्राह्मण, पोस्ट ग्रेजुएट, गृहकार्यदक्ष, सुशील कन्या हेतु सुशिक्षित, सुस्थापित वर. शीघ्र विवाह. लिखें: वि.नं. 8923, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल, 24, 150 सें.मी., एम. एससी., इलेक्ट्रानिक प्रथम कंप्यूटरकोर्स, गृहकार्यकुशल कन्या हेतु वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 8924, सरिता, नई दिल्ली-110055.

164 सें.मी., गौरवर्ण, सुंदर, कानवेंट शिक्षित, एम.बी.बी. एस., 23 वर्षीया, प्रतिष्ठित माहेश्वरी परिवार की सुशील कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. विज्ञापन उत्तम चयन हेतु. लिखें: वि.नं. 8925, सरिता, नई दिल्ली-110055.

बीसा अग्रवाल, मंगली, गृहकार्यदक्ष, सुंदर, एम.ए., 25 वर्षीया, 163 सें.मी., कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. उत्तम विवाह. लिखें: वि.नं. 8926, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सनाढ्य ब्राह्मण, 23, 166 सें.मी., बी. एससी., बी.एड., गेहुआं रंग, आकर्षक नाकनक्श, छरहरी, विनम्र, व्यवहारकुशल, पूना स्थित कन्या हेतु इंजीनियर वर चाहिए. उत्तम विवाह. लिखें: वि.नं. 8927, सरिता, नई दिल्ली-110055.

31 वर्षीया, बंगाली कायस्थ, सरकारी क्लर्क (पटना), साफ रंग, हेतु बंगाली में जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 8928, सरिता, नई दिल्ली-110055.

वधू चाहिए

30 वर्षीय, 177 सें.मी., संपन्न, प्रतिष्ठित मारवाड़ी, बंबई निवासी परिवार के तलाकशुदा, व्यवसायरत लड़के के लिए जीवनसंगिनी चाहिए. कोई बंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 8747, सरिता, नई दिल्ली-110055.

वार्ष्णेय (वैश्य), एम.बी.बी.एस., स्नातकोत्तर अध्ययनरत, 27 वर्षीय, 167 सें.मी., स्वस्थ युवक हेतु सुंदर, सजातीय, मेडिको कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 8753, सरिता, नई दिल्ली-110055.

36, 172 सें.मी., स्मार्ट, इकहरा, गौरवर्ण, शाकाहारी, उच्चव्यवसायी, बंगला, कार, फलबाग, महाराष्ट्र निवासी हेतु सुंदर, सुशिक्षित विवाह इच्छुक लड़कियों से सीधे पत्राचार हिंदी में आमंत्रित. कोई बंधन नहीं. गरीब, नौकरीशुदा स्वयं निस्संकोच लिखें: वि.नं. 8767, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27, 2,700/-, 170 सें.मी., प्रगतिशील, नास्तिक, व्याख्याता, संग रूढिमुक्त हेतु कार्यरत, चित्ताकर्षक, आधुनिक नवयुवतियां विवाहानुबंधार्थ. स्वयं लिखें: वि.नं. 8768, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गर्ग, 25 वर्षीय, गौरवर्ण, बी.एससी. (मेरिट). बैंक सेवारत, उज्ज्वल भविष्य, हेतु सुंदर, लंबी, सुशील वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 8769, सरिता, नई दिल्ली-110055.

दिगंबर जैन, 23 वर्षीय, युवक बी.काम., व्यवसायी परिवार, किसी भी ऐसी कन्या को अपनाने का इच्छुक जो कि नेत्रहीन हो या विकलांग, पर वधू पक्ष को घरजंवाई के रूप में स्वीकार करना होगा. केवल उच्चवर्गीय, व्यवसायी या उद्यमी परिवार वाले ही लिखें: वि.नं. 8770, सरिता, नई दिल्ली-110055.

40, वर्षीय, विधुर, मारवाड़ी अग्रवाल, कलकत्ता निवासी, उद्योगपति, उच्च संभ्रांत परिवार से संबंधित, उत्तम स्वास्थ्य, 3 बच्चे (1 कन्या विवाहित, 1 कन्या कालिज में अध्ययनरत और 14 वर्षीय एक पुत्र), उच्च स्तरीय रहनसहन, हेतु अग्रवाल, माहेश्वरी या गुजराती से उम्र लगभग 35 वर्षीया, प्रस्ताव आमंत्रित हैं. विधवा को वरीयता. लिखें: वि.नं. 8771, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल सिंघल गोत्र, 29 वर्षीय, बी.ए., सरकारी सेवारत, बायां पैर पोलियोग्रस्त, प्रतिष्ठित परिवार, हेतु सुशील, गृहकार्यदक्ष वधू चाहिए. दहेज, जातिबंधन नहीं. गरीब, तलाकशुदा अथवा निस्संतान, विधवा स्वीकार्य. लिखें: वि.नं. 8772, सरिता, नई दिल्ली-110055.

29, कुर्मि, बी.ए., सीनियर क्लर्क रेलवे, 1,500/-, परिवार में केवल मांबेटा, हेतु सुंदर, शिक्षित वधू. दहेज नहीं. शीघ्र विवाह. लिखें: वि.नं. 8840, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल 27, 165 सें.मी., असिस्टेंट इंजीनियर हेतु सुंदर, शिक्षित, गृहकार्यदक्ष, सजातीय कन्या चाहिए. प्रथम बार में संपूर्ण विवरण सहित लिखें: वि.नं. 8841, सरिता, नई दिल्ली-110055.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

32, 30 वर्षीय, सरकारी सेवारत इंजीनियर, एम.डी. डाक्टर, साधारण जमींदार परिवार, राजपूत सिसौदिया भाइयों हेतु सुंदर, सुशील, गृहकार्यनिपुण क्रमशः सेवारत, डाक्टर को प्राथमिकता. वधू चाहिए. जातिबधंन नहीं. पंजाबी भाषी क्षमा करें. लिखें : वि.नं. 8842, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27, माहेश्वरी चार्टर्ड एकाउंटेंट, जयपुर में प्रैक्टिस, हेतु सजातीय, सुयोग्य, शिक्षित वधू चाहिए. लिखें : वि.नं. 8843, सरिता, नई दिल्ली-110055.

रस्तोगी (क्षत्रिय), उद्योगपति परिवार, 24½, 178 सें.मी., एम. काम., स्टेट बैंक नियोजित, आकर्षक युवक हेतु संभ्रांत परिवारीय, सुशिक्षित, सुशील, अति सुंदर कन्या चाहिए. दहेज, जातिबंधन नहीं. लिखे : वि.नं. 8844, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कान्यकुब्ज ब्राह्मण, लखनऊवासी, अंगरेजी स्नातकोत्तर, केंद्रीय विद्यालय सेवारत, 25, 2,000/-, 165 सें.मी., सुंदर, शाकाहारी हेतु सजातीय, सुंदर, सुशिक्षित, नजदीकी वधू चाहिए. विज्ञापन उत्तम चयन हेतु. शीघ्र विवाह. जन्मपत्री सहित लिखें : वि.नं. 8845, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सैनी, 28, 1,800/-, सेवारत हेतु अनाथ, बेसहारा, परित्यक्ता स्वीकार्य. जातिबंधन नहीं. लिखें : वि.नं. 8846, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गौड़ ब्राह्मण, 25, 173 सें.मी., बी. काम., अपना व्यवसाय, आय 3,500/-, संपन्न परिवार, हेतु गौरवर्ण, सुंदर, पारिवारिक वधू चाहिए. लिखें : वि.नं. 8847, सरिता, नई दिल्ली-110055.

मित्तल, बी.काम., सुस्थापित व्यवसायरत, 28, 170 सें.मी., युवक हेतु सुंदर, गोरी, इकहरी, लंबी, सुशील वधू चाहिए. लिखें : वि.नं. 8848, सरिता, नई दिल्ली-110055.

यादव, प्रोफेसर के इकलौते, सुंदर, 24, 178 सें.मी., 2,000/- (90 बीघा कृषि फार्म की देखरेख से) अंगरेजी में दक्ष पुत्र हेतु सुंदर, गोरी, लंबी, गृहकार्यदक्ष, हाईस्कूल/इंटर, सजातीय वधू चाहिए. शीघ्र विवाह. पिता, पुत्र, नौकर का छोटा परिवार, फौजी/पुलिस परिवार को वरीयता. लिखें : वि.नं. 8849, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26, 173 सें.मी., माहेश्वरी, बी. ई. (सिविल), मध्य प्रदेश शासकीय सेवारत युवक हेतु सुंदर, सुशील वधू चाहिए. लिखें : वि.नं. 8850, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मि क्षत्रिय, गेहुआं रंग, 29, 170 सें.मी., एम.एससी., एलएल.बी., ग्रामीण बैंक आफिसर हेतु सुंदर, गोरी, पतली, पोस्ट ग्रेजुएट, शिक्षित, प्रतिष्ठित परिवार की शहरी बैक ग्राउंड की वधू चाहिए. लिखें : वि.नं. 8851, सरिता, नई दिल्ली-110055.

29 वर्षीय, कसबा निवासी, माहेश्वरी, 170 सें.मी., 3,000/- मासिक आय (अचल संपत्ति), संभ्रांत परिवार, स्वस्थ, बी.ए. शिक्षित युवक हेतु माहेश्वरी, अग्रवाल, गृहकार्यदक्ष कन्या चाहिए. दहेजबंधन नहीं. विवाह शीघ्र. लिखें : वि.नं. 8852, सरिता, नई दिल्ली-110055.

34, 160 सें.मी., 1,200/-, माहेश्वरी (राठी), एम.ए., एलएल.बी., रिसर्च स्कालर, तलाकशुदा, निस्संतान हेतु आदर्श विवाह के इच्छुक निर्धन परिवार की सुशिक्षित, सुंदर वधू चाहिए. लिखें : वि.नं. 8853, सरिता, नई दिल्ली-110055.

30, 165 सें.मी., 1,000/-, विधुर, शर्मा (गुसाईं). अध्यापक, दो बच्चे (6,4), निजी मकान, अच्छी आर्थिक स्थिति, दहेज, जाति कोई बंधन नहीं. शीघ्र विवाह. लिखें : वि.नं. 8854, सरिता, नई दिल्ली-110055.

मेरठ मंडल निवासी, बीसा अग्रवाल, गोयल, 34 वर्षीय, 168 सें.मी., ग्रेजुएट, सरकारी सेवारत क्लर्क, वेतन 1,600/- प्रतिमाह वाले, तलाकशुदा, निस्संतान युवक हेतु शिक्षित वधू चाहिए. दहेज नहीं. लिखें : वि.नं. 8855, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28 वर्षीय, 170 सें.मी., राजपूत (मीना), स्वस्थ,स्मार्ट, दिल्ली में सरकारी नौकरी, मासिक आय 1,800/-, हेतु सुंदर, नौकरीशुदा, गृहकार्यदक्ष कन्या चाहिए. दहेज, जातिबंधन नहीं. लिखें : वि.नं. 8856, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कानपुर निवासी, सुंदर, ग्रेजुएट, गौड़ ब्राह्मण, व्यवसायी, संपत्तिवान युवक हेतु शिक्षित, सुंदर, स्वस्थ लड़की चाहिए. विवाह हेतु लिखें : वि.नं. 8857, सरिता, नई दिल्ली-110055.

उत्तरप्रदेशीय जाटव (अ.जा.), 25, 170 सें.मी., जीवन बीमा निगम सेवारत, 2,000/-, हेतु लंबी, सुंदर, स्लिम, सुशील, गृहकार्यनिपुण, ग्रेजुएट, सजातीय वधू. दहेजबंधन नहीं. विज्ञापन उत्तम चयन हेतु. प्रथम बार सविवरण लिखें : वि.नं. 8858, सरिता, नई दिल्ली-110055.

मारवाड़ी ओसवाल जैन, मद्रास निवासी, 32 वर्षीय, विधुर, चार बच्चे, संपन्न व्यापारी, निजी मकान, कार, के लिए, सुंदर, सुशील, घरेलू, सजातीय वधू चाहिए. बिना बच्चे वाली विधवा भी विचारणीय. लिखें : वि.नं. 8859, सरिता, नई दिल्ली-110055.

वैश्य, 26, 158 सें.मी., 2,100/-, क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक में मैनेजर, हेतु गोरी, सुंदर कन्या चाहिए. लिखें : वि.नं. 8860, सरिता, नई दिल्ली-110055.

45 वर्षीय विधुर, कुशवाहा, मासिक वेतन 2,500/-, हेतु सजातीय, 30 साल से ऊपर विधवा, बांझ वधू चाहिए. अंतर्जातीय विचारणीय. लिखें : वि.नं. 8861, सरिता, नई दिल्ली-110055.

21 वर्षीय, 175 सें.मी., उत्तरप्रदेशीय, आकर्षक, संभ्रांत राजपूत, निजी कृषि फार्म नैनीताल, अध्ययनरत ग्रेजुएट छात्र हेतु अत्यंत विदुषी, कानवेंट छात्रा, वगैर दहेज, सजातीय चाहिए. लिखें : वि.नं. 8862, सरिता, नई दिल्ली-110055.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संभ्रांत गौड़ ब्राह्मण, सामान्य संपन्नता, 45 वर्षीय, अविवाहित, व्यवसायरत, वाराणसी निवासी युवक हेतु सुशील, घरेलू स्वभाव, ब्राह्मण कन्या चाहिए. पूर्ण विवरण प्रथम पत्र में लिखें: वि.नं. 8863, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सनाढ्य ब्राह्मण (मथुरा निवासी) संपन्न प्रतिष्ठित परिवार, 25, 168 सें.मी., जूनियर इंजीनियर सिविल (दिल्ली नगर निगम) हेतु सुंदर, स्वस्थ, लंबी कन्या चाहिए. विज्ञापन उत्तम चयन हेतु. लिखें: वि.नं. 8864, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कलकत्ता स्थित, धनी, अग्रवाल परिवार के सुंदर व ग्रेजुएट वर हेतु सुंदर व सुशील वधू चाहिए. खुद की आमदनी 5 अंकों में. विज्ञापन मात्र उत्तम चयन हेतु. पूर्ण विवरण सहित लिखें: वि.नं. 8865, सरिता, नई दिल्ली-110055.

49, 168 सें.मी., 3,300/-, हरियाणा राज-पत्रित, समृद्ध अग्रवाल, विधुर (दो लड़के) हेतु सुंदर, शिक्षित, घरेलू जीवनसाथी चाहिए. कोई बंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 8866, सरिता, नई दिल्ली-110055.

49, 175 सें.मी., गौड़, राजस्थानी ब्राह्मण वशिष्ठ गोत्र, आय 1,500/-, राज्य सरकार सेवारत, शाकाहारी, विधुर, सेक्सुअली कमजोर को गृहकार्य-दक्ष, नम्रस्वभाव, शाकाहारी, विधवा या तलाकशुदा, 35 वर्ष के ऊपर, 2/3 साल के लड़के वाली, गरीब, बेसहारा जीवनसंगिनी चाहिए. जातिबंधन नहीं, लेकिन सजातीय प्रधानता. लिखें: वि.नं. 8867, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुशवाहा (मौर्य), 28, 168 सें.मी., प्रिंटिंग टेक्नालाजी डिप., दिल्लीवासी, निजी व्यवसायी लड़के हेतु लंबी, स्वस्थ, सुंदर, सुशिक्षित, कुशवाहा, सैनी, मौर्य वधू चाहिए. दिल्लीवासी कार्यरत को वरीग्रता. लिखें: वि.नं. 8868, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25, 168 सें.मी., यादव (ग्वाल), शिक्षित, सुंदर (गौरवर्ण), प्रतिष्ठित, पंपिंगसेट व्यवसायी (स्वयं का निजी व्यवसाय), पूर्वी उ.प्र. निवासी, (वाराणसी मंडल) हेतु सुंदर, सुशील व गृहकार्यदक्ष, घरेलू कन्या चाहिए. शादी शीघ्र. प्रथम बार में ही पूर्ण विवरण दें. लिखें: वि.नं. 8869, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल, 29, 170 सें.मी., 3,500/-, एम.ए., कानूनन तलाकशुदा, बैंक सेवारत, मेरठ, हेतु सुंदर, कुंआरी कन्या चाहिए. दहेज नहीं. साधारण शादी. लिखें: वि.नं. 8870, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल गर्ग, 32, 165 सें.मी., विधुर, दो बच्चे, कंपनी एक्जीक्यूटिव हेतु सजातीय, मृदुभाषी, मिलनसार, प्रतिष्ठित परिवारीय कन्या चाहिए. निस्संतान, विधवा विचारणीय. लिखें: वि.नं. 8871, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सक्सेना, 24, 167 सें.मी., 2,000/-, एअरफोर्स, हेतु गोरी कन्या चाहिए. (प्राथमिकता एम.एससी.). लिखें: वि.नं. 8872, सरिता, नई दिल्ली-110055.

श्रीवास्तव, 25, 178 सें.मी., सहायकयंत्री, पी.एच.ई., म.प्र. हेतु सुंदर, शिक्षित, सुशील कन्या लिखें: वि.नं. 8873, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुशवाहा, आर्मी कैप्टेन, 26½, 180 सें.मी., शौक फोटोग्राफी, संगीत, बागवानी, हेतु 160 सें.मी. से ऊंची, ग्रेजुएट, सुंदर, गृहकार्यकुशल तथा अंगरेजी बोलने में सक्षम वधू चाहिए. स्वजातीय व कानवेंट एजुकेटेड को प्राथमिकता. पूर्ण विवरण सहित लिखें: वि.नं. 8874, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27, 167 सें.मी., मासिक आय 5,000/-, कंपनी सर्विस, चार्टर्ड एकाउंटेंट, राजस्थानी अग्रवाल गर्ग, दिगंबर जैन, प्रदेश, जातिबंधन नहीं, उत्तम विवाह. शाकाहारी, गृहकार्यदक्ष, सुंदर, शिक्षित, कुंआरी कन्या चाहिए. पूर्ण विवरण सहित लिखें: वि.नं. 8875, सरिता, नई दिल्ली-110055.

34 वर्षीय, एम.ए., कायस्थ, मासिक आय 3,500/-, खड़े हो कर चलने में असमर्थ, हर प्रकार से समर्थ, दीखने में बिलकुल सामान्य, हेतु वधू चाहिए. कोई बंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 8876, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26, वर्षीय, 178 सें.मी., लंबे, स्वस्थ, आकर्षक, खूबसूरत, शिक्षित, उच्च संपन्न घराने के जैन, उद्योगपति युवक हेतु खूबसूरत, स्वस्थ, सुशील, शिक्षित, व्यवहारकुशल, अच्छे परिवारीय कन्या चाहिए. लड़के की आय मासिक पांच अंकीय. विज्ञापन उत्तम चयन हेतु. पूर्ण विवरण सहित तुरंत लिखें: वि.नं. 8877, सरिता, नई दिल्ली-110055.

स्नेही, सुशिक्षित, दिल्ली कोठी मालिक, निर्व्यसनी, एकाकी, विधुर, हिंदू, 51, हेतु धर्म, प्रांत निरपेक्ष, निर्धन वधू. सविवरण लिखें: वि.नं. 8878, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कलकत्ता निवासी, 38 वर्षीय, 180 सें.मी., शिक्षित, निजी व्यवसाय, संपन्न, मारवाड़ी अग्रवाल, विधुर हेतु सुशील, पढ़ीलिखी, सुंदर, गृहकार्य में दक्ष, सजातीय, अग्रवाल वधू चाहिए. सम्मानित गरीब परिवार की या निस्संतान विधवा को प्राथमिकता. पूर्ण विवरण, गोत्र सहित लिखें: वि.नं. 8879, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सिख युवक, 34, 170 सें.मी., 7,000/-, बुद्धिमती एवं बालिग कन्या से अंतर्जातीय/अंतर्धर्मीय विवाह में विश्वासी, इच्छुक कन्याओं से सीधा पत्राचार आमंत्रित करते हैं. निस्संतान विधवा भी विचारणीय. लिखें: वि.नं. 8880, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25, 168 सें.मी., 2,200/-, राजपूत, केंद्रीय सेवारत, इंजीनियर हेतु सजातीय, सुंदर, न्यूनतम ग्रेजुएट वधू चाहिए. केंद्रीय सेवारत भी विचारणीय. लिखें: वि.नं. 8881, सरिता, नई दिल्ली-110055.

29 वर्षीय, 168 सें.मी. एम.बी.बी.एस., डी.सी.एच., कार्यरत, पंजाबी हिंदू अरोड़ा, डाक्टर हेतु सजातीय, मेडिको वधू चाहिए. दहेज नहीं. लिखें:

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

28, 165 सें.मी., हिंदू अरोड़ा, स्मार्ट, बिजनेस बिजनेसमैन, अच्छी आमदनी, 3 बच्चियां, हेतु गरीब घराने की सुंदर वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 8883, सरिता, नई दिल्ली-110055.

बिहार निवासी, 25, 175 सें.मी., 3,400/-, इंजीनियर, भारतीय नौसेना में अधिकारी, मंगला, गोरे युवक हेतु योग्य, सजातीय, मोहक, स्मार्ट, मेधावी, पारिवारिक, उपनगरीय वातावरण से भी परिचित, अंगरेजी भाषा द्वारा अपने विचार व्यक्त करने में समर्थ बेटी के मातापिता जन्मकुंडली सहित पत्राचार करें. लिखें: वि.नं. 8884, सरिता, नई दिल्ली-110055.

राजपूत (क्षत्रिय), 25, 185 सें.मी., स्मार्ट, पुलिस सबइंस्पेक्टर हेतु प्रतिष्ठित परिवारीय, सुंदर, लंबी, सुशिक्षित, राजपूत कन्या चाहिए. पिता पब्लिक सेक्टर सेवा में, भाई इंजीनियर (राजपत्रित अधिकारी). लिखें: वि.नं. 8885, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27 वर्षीय, 170 सें.मी., एम.ए., एम.एस डब्ल्यू., निजी व्यवसाय (फुटवियर शोरूम), स्वस्थ, सुंदर, गौरवर्ण, कर्मि क्षत्रिय युवक हेतु स्वस्थ, सुंदर सजातीय वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 8886, सरिता, नई दिल्ली-110055.

यादव, बंबई निवासी, 28, 170 सें.मी., बी.ए., क्लर्क, साथ में ट्रांसपोर्ट व्यापार कर रहे युवक हेतु सुंदर, सुशिक्षित, सजातीय वधू चाहिए. मूल निवास स्थान उत्तर प्रदेश. पूर्ण विवरण सहित लिखें: वि.नं. 8887, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मि क्षत्रिय, 25, 173 सें.मी., उत्तर प्रदेश निवासी, आर्मी कैप्टेन हेतु सुंदर, स्मार्ट, कानवेंट पढ़ी वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 8888, सरिता, नई दिल्ली-110055.

उत्तरप्रदेशीय, अनुसूचित जाति, 31, 160 सें.मी., एम.बी.बी.एस., भारतीय नौसेना में सिविलियन मेडिकल आफिसर हेतु सुंदर, सुशिक्षित, सुशील वधू चाहिए. कोई बंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 8889, सरिता, नई दिल्ली-110055.

राजस्थानी प्रतिष्ठित माहेश्वरी, 37 वर्षीय, पोस्ट ग्रेजुएट, स्वस्थ, कार्यरत, विधुर हेतु शिक्षित सुंदर, सुयोग्य, सजातीय वधू लिखें: वि.नं. 8890, सरिता, नई दिल्ली-110055.

31 वर्षीय, जैन श्वेतांबर, विधुर, एक पुत्र एवं पुत्री 7 वर्ष, 5 वर्ष, कर सलाहकार हेतु सुंदर, शिक्षित, सुशील, गृहकार्यदक्ष, जैन वधू चाहिए. साधारण विवाह शीघ्र. सविवरण लिखें: वि.नं. 8891, सरिता, नई दिल्ली-110055.

33, 186 सें.मी., स्वस्थ, गोरा, सुदर्शन, एम.बी.ए. (आई.आई.एम.) नेशनेलाइज्ड बैंक्स कालिज प्रोफ़ेसर, 5,000/-, गौहाटी प्रतिष्ठित, अकेला, उत्तम चरित्र, असम निवासी हिंदू युवक हेतु सुंदर, आकर्षक, लंबी, गोरी, सुशिक्षित कन्या चाहिए. कोई बंधन नहीं. साधारण विवाह. लिखें: वि.नं. 8892, सरिता, नई दिल्ली-110055.

33 वर्षीय, 166 सें.मी., 3,625/- मासिक, दृष्टिहीन, प्राध्यापक दिल्ली विश्वविद्यालय, हेतु सुशिक्षित वधू चाहिए. जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 8893, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सुंदर, गुणवान, लखपती, तलाकशुदा, राजपत्रित अधिकारी, 41, 162 सें.मी., हेतु निर्धन स्वीकार. लिखें: वि.नं. 8894, सरिता, नई दिल्ली-110055.

33, 165 सें.मी., 5,000/-, सिंधी, तलाकशुदा, मैट्रिक, चेचक के दाग, सिर्फ ससंतान, विधवा, तलाकशुदा लिखें. जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 8895, सरिता, नई दिल्ली-110055.

43, 170 सें.मी., 4,000/-, निजी व्यवसायरत अरोड़ा, विधुर (3 बच्चे) हेतु जीवनसंगिनी जो सिर्फ चार सदस्यों वाले छोटे से परिवार को पूरे अधिकार के साथ, समझदारी से सुचारु रूप से चला सके. संतानोत्पत्ति असमर्थ को प्राथमिकता. निस्संतान विधवा, तलाकशुदा स्वीकार्य. जातिबंधन नहीं. शीघ्र, सादा विवाह. लिखें: वि.नं. 8900, सरिता, नई दिल्ली-110055.

37 वर्षीय, विधुर, ससंतान, अनुसूचित जाति, राजपत्रित अधिकारी हेतु सुंदर, सुशिक्षित वधू चाहिए. जातिबंधन नहीं. दहेज बिलकुल नहीं. लिखें: वि.नं. 8901, सरिता, नई दिल्ली-110055.

29 वर्षीय, विधुर, निजी मकान, व्यवसायरत, दो संतान (लड़की 5 वर्ष, लड़का 1 वर्ष), हेतु दिगंबर जैन, खंडेलवाल, सुंदर कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 8902, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जाटव, विधुर, बी.एससी., 37,174 सें.मी., 3,300/-, (15 वर्षीया लड़की) हेतु, सजातीय, सुयोग्य अविवाहित, तलाकशुदा, विधवा जीवनसाथी चाहिए. लिखें: वि.नं. 8903, सरिता, नई दिल्ली-110055.

स्वर्णकार (माहौर क्षत्रिय), 25 वर्षीय, 164 सें.मी., प्रतिभावान, बैचलर आफ आर्किटेक्चर (गोल्ड मेडलिस्ट), प्रतिष्ठित परिवार के कार्यरत युवक हेतु सुशील, गृहकार्य में निपुण, सुशिक्षित वधू चाहिए. (आर्किटेक्चर/सिविल इंजीनियरी, स्नातक को प्राथमिकता) जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 8904, सरिता, नई दिल्ली-110055.

बंसल गोत्र, 30 वर्ष, एकाउंटेंट, आय 1,000/-, हेतु सुंदर, सुशील कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 8905, सरिता, नई दिल्ली-110055.

41 वर्षीय, तलाकशुदा व्यक्ति, मासिक आय 2,300/-, बोलने में थोड़ा दोष को 35 से 38 वर्षीया, विधवा, तलाकशुदा, बेसहारा, संतानोत्पत्ति में असमर्थ जीवनसंगिनी चाहिए. लिखें: वि.नं. 8906, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27, 172 सें.मी., 1,100/-, गौड़ ब्राह्मण, रेलवे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर्मी, बी.एससी., युवक हेतु सजातीय, गौरवर्णी कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 8907, सरिता, नई दिल्ली-110055.

22 वर्षीय, बी.काम. झुंझुनू राजस्थान में स्थापित युवक उद्योगपति, मासिक आय चार अंकों में, हेतु खटीक समुदाय की शिक्षित, स्मार्ट, अतिसुंदर, चरित्रवान, गृहकार्यदक्ष जीवनसंगिनी चाहिए. दहेज-बंधन नहीं. शीघ्र विवाह. संपूर्ण विवरण लिखें: वि.नं. 8908, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28 वर्षीय, 168 सें.मी., एम.काम., अग्रवाल, विंदल गोत्र, मध्य प्रदेश निवासी, स्वयं का व्यवसाय, आय उच्चतम चार अंकों में, स्वस्थ, सुंदर युवक हेतु, सुंदर, शिक्षित, गृहकार्य में दक्ष, सजातीय परिवार की कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 8909, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अरोड़ा, 45, विधुर, आय 10,000/-, व्यवसायी हेतु विधवा, तलाकशुदा, निस्संतान, 35 से ऊपर जीवनसाथी चाहिए. लिखें: वि.नं. 8910, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26 वर्षीय, उच्चवर्णीय ठाकुर, टेहरीगढ़वाल की बोली, दिल्ली, गाजियाबाद में उत्तम व्यवसाय, टेहरी में अच्छी संपत्ति, युवक हेतु मामूली मंगली एवं बी. काम., सजातीय कन्या चाहिए जो निजी व्यवसाय संभालने में समर्थ हो. लिखें: वि.नं. 8911, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28, 168 सें.मी., ग्रेजुएट, प्रभावशाली व्यक्तित्व, संपन्न प्रतिष्ठित परिवार, शाकाहारी, आर्यसमाजी, ट्रांसपोर्ट व्यवसाय, रु. 6,000/- मासिक, हैदराबाद, युवक हेतु ग्रेजुएट, अतिसुंदर, स्मार्ट, स्लिम, गौरवर्ण वधू चाहिए. शीघ्र विवाह. जाति, दहेजबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 8912, सरिता, नई दिल्ली-110055.

इज्जतदार (चाहे गरीब) परिवार की, शिक्षित (कम से कम ग्यारहवीं तक अवश्य पढ़ी), सुंदर, मधुर स्वभाव वाली, समझदार, गृहकार्यदक्ष, घर बनाने वाली, मृदुभाषी कन्या अमरीका बसे पंजाबी, 30 वर्षीय, 178 सें.मी., आकर्षक, पांच अंकीय आय वाले पुत्र हेतु चाहिए. शीघ्र साधारण विवाह. कोई बंधन नहीं. कन्या स्वयं भी लिख सकती है. प्रथम बार ही कन्या का नाम, कद, सही जन्मतिथि, शिक्षा, ताजा खिंचा फोटो, संपूर्ण पारिवारिक जानकारी सहित निस्संकोच भेजें: 1103, CULLOM STREET, APT-9, BIRMINGHAM, AL 35205, U.S.A.

अरोड़ा पंजाबी, 26 वर्षीय, 177 सें.मी., स्वस्थ, सुंदर, शिक्षित, व्यवसायरत युवक हेतु सुंदर, सुशिक्षित, गृहकार्यदक्ष वधू चाहिए, दहेज जातिबंधन

व्यक्तिगत विज्ञापन उत्तरदाताओं के लिए सूचना

सरिता में वैवाहिक विज्ञापन पाठकों की सेवा के लिए प्रकाशित किए जाते हैं. इन विज्ञापनों से आप अपने सीमित क्षेत्र में ही नहीं, पूरे देश में ही नहीं, विदेशों में भी वैवाहिक संबंध स्थापित कर सकते हैं.

वैवाहिक विज्ञापनों का उत्तर देते हुए यदि आप निम्न बातों का ध्यान रखेंगे तो आप को, हमें और विज्ञापनदाताओं को काफी सुविधा रहेगी:

1. वैवाहिक पत्रव्यवहार बंद लिफाफे में करें.

2. पहली बार में ही लड़की व लड़के की आयु, शिक्षा, रंग, ऊंचाई, वजन, व्यवसाय, आय आदि का पूरा विवरण लिखें.

3. विज्ञापनदाताओं के पास भेजे जाने वाले लिफाफे पर "विज्ञापन विभाग, संपादक, सरिता" आदि न लिखें. केवल "वि.नं.–सरिता, नई दिल्ली-110055." पते के रूप में लिख देने पर पत्र हम तक पहुंच जाएंगे.

4. यदि आप कई विज्ञापनदाताओं से पत्रव्यवहार करना चाहते हैं तो सब विज्ञापनदाताओं के लिए विज्ञापन नं. लिखे लिफाफे एक ही बड़े लिफाफे में रख कर "वैवाहिक विज्ञापन विभाग, सरिता, नई दिल्ली-110055" के पते पर भेज दीजिए. विज्ञापन विभाग द्वारा आप के पत्र संबंधित विज्ञापनदाताओं को अलगअलग भेज दिए जाएंगे. इस से आप को सब लिफाफों पर टिकट नहीं लगाने पड़ेंगे और पत्र भेजने में सुविधा भी रहेगी.

5. वैवाहिक विज्ञापन केवल पत्रव्यवहार के लिए संपर्क सूत्र का काम करते हैं. विवाह तय करने से पहले संबंधित व्यक्ति के बारे में पूरी जानकारी प्राप्त किए बिना और आवश्यक जांचपड़ताल किए बिना कोई निर्णय नहीं लेना चाहिए.

6. विदेशों में रहने वाले युवकों से विवाह तय करने से पहले उन के पूर्व विवाहित होने या न होने व उन की आय के बारे में जांच कर लेनी चाहिए. इस के लिए उन के नियोक्ता (जिस कंपनी में वे काम करते हों) से संपर्क कर के जानकारी प्राप्त की जा सकती है.

7. विज्ञापनदाता के नाम व पते गुप्त रखे जाते हैं. विज्ञापन नंबर के उत्तर में प्राप्त पत्रों को विज्ञापनदाता के पास भेज दिया जाता है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं. लिखें: वि.नं. 8913, सरिता नई दिल्ली-110055.

प्रजापति, 33 वर्षीय, 163 सें.मी., 2,600/- मासिक, केंद्रीय सरकार सेवारत, तलाकशुदा, एम. एससी. एवं प्रतिष्ठित परिवारीय, स्मार्ट युवक हेतु सुयोग्य, शिक्षित वधू चाहिए. उपजातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 8914, सरिता, नई दिल्ली-110055.

खूबसूरत, दिल्लीवासी पंजाबी खत्री, तलाकशुदा, व्यवसायी, 40, 176 सें.मी., देखने में कम उम्र, अच्छी आमदनी, हेतु सुंदर लंबी, शिक्षित, 35 वर्ष तक वधू. तलाकशुदा, विधवा, बच्चेसहित या निस्संतान स्वीकार्य. कोई बंधन नहीं. सादा विवाह. पारिवारिक तथा पूर्ण व्यक्तिगत विवरण सहित. लिखें : वि.नं. 8915, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24½, 168 सें.मी., जैन, बीसा ओसवाल, वार्षिक आय 20,000/-, परमाणु उर्जा निगम सेवारत, स्नातकोत्तर युवक हेतु सुंदर, शिक्षित, सजातीय वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 8916, सरिता, नई दिल्ली-110055.

पश्चिम उत्तर प्रदेश निवासी, 28 वर्षीय, अविवाहित, सुंदर, स्मार्ट, जाटव, बैंक सेवारत हेतु सुशिक्षित, सुंदर जीवनसंगिनी चाहिए. लिखें: वि.नं. 8917, सरिता, नई दिल्ली-110055.

व्यक्तिगत विज्ञापनों की दरें

सरिता : 3.50 रु. प्रति शब्द
यूमंस ईरा : 1.50 रु. प्रति शब्द
सरिता व यूमंस ईरा : 4.00 रु. प्रति शब्द.

मूल विज्ञापन के साथ लिखें : 'वि. नं.–सरिता, नई दिल्ली-110055' इन 6 शब्दों का मूल्य देना आवश्यक है. विज्ञापनदाता के 'निजी पते वाले' (विदेशों को छोड़ कर) व 'फोटो सहित' शब्द वाले विज्ञापन स्वीकार नहीं किए जाते. डाक व्यय 15 रुपए अतिरिक्त है.

गोद विज्ञापन की दर सरिता में 3.50 रुपए प्रति शब्द और यूमंस ईरा में 1.50 रुपया प्रति शब्द है. दोनों में एक साथ प्रकाशित करवाने पर 4.00 रु. प्रति शब्द.

पूर्ण विवरण के लिए लिखें :

मुख्य विज्ञापन कार्यालय :

दिल्ली प्रेस पत्रिका विभाग,
एम-12, कनाट सर्कस,
नई दिल्ली-110001.
फोन नं.-351313.

27 वर्षीय, 172 सें.मी., माहेश्वरी, बी. एससी., एलएल.बी., जयपुर में लिमिटेड कंपनी में कार्यरत, 3,000/-, युवक हेतु सुशिक्षित, सुंदर एवं सुशील, माहेश्वरी अथवा अग्रवाल वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 8918, सरिता, नई दिल्ली-110055.

पंजाबी बंसल, 40, 160 सें.मी., विधुर, दो बच्चे (मांगलिक) निजी व्यवसाय, हेतु सुयोग्य वधू चाहिए. निस्संतान, परित्यक्ता विधवा भी मान्य. लिखें: वि.नं. 8919, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28 वर्षीय, 164 सें.मी., पंजाबी, हिंदू, मैट्रिक, बिजनेसमैन हेतु सुंदर, सुशील, सुशिक्षित कन्या चाहिए. जातिबंधन और दहेज नहीं. प्रथम बार फोटो सहित लिखें: S. Badar, P.O. BOX 5956, SHARJAH (U.A.E.).

27 वर्षीय, दिगंबर जैन, 168 सें.मी., गेहुआं रंग, जबलपुर निवासी, डाक्टर, एम.डी. (रेडियोलाजी स्टुडेंट) हेतु सजातीय, डाक्टर वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 8920, सरिता, नई दिल्ली-110055.

36 वर्षीय, 176 सें.मी., स्वस्थ, उच्च शिक्षित, निजी व्यवसाय, मकान, कार, हेतु, सुंदर सुशिक्षित, निस्संतान एकाकी विधवा, तलाकशुदा, संतान की अनिच्छुक जीवनसंगिनी चाहिए. कोई बंधन नहीं. लिखें: MAGELHAENLAAN 265 3526 CG UTRECHT, HOLLAND.

वरवधू चाहिए

कुर्मी क्षत्रिय, बैतूल मध्य प्रदेश निवासी; 28, 173 सें.मी., 52 कि.ग्रा., ग्रेजुएट, इलेक्ट्रिकल इंजीनियर, 3,000/-, युवक हेतु ग्रेजुएट, अतिसुंदर वधू एवं बहन 20, 163 सें.मी., 46 कि.ग्रा., ग्रेजुएट, अतिसुंदर, गृहकार्य, सिलाई, बुनाई, कढ़ाई, पेंटिंगदक्ष हेतु इंजीनियर, डाक्टर, बैंक, राजस्व अधिकारी, व्यवसायी, सजातीय वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 8896, सरिता, नई दिल्ली-110055.

राजपूत, एम.ए., एलएल.बी., 29,157 सें.मी., गेहुआं रंग, सरकारी सेवारत हेतु वर तथा इंटर कंप्यूटर ट्रेनिंग, 23, 168 सें.मी., हेतु कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 8897, सरिता, नई दिल्ली-110055.

22 वर्षीया, बी.काम. एवं भाई 28 वर्षीय, एम.काम. सरकारी सेवारत, आय 2,200/-, हेतु सुयोग्य वरवधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 8899, सरिता, नई दिल्ली-110055.

रिक्त स्थान

टेलीवीज़न फैक्टरी में काम हेतु ट्रेंड/अनट्रेंड लड़कियों की जरूरत है. वेतन के अतिरिक्त आवास, खाना फ्री. लिखें: वि.नं. 8898, सरिता, नई दिल्ली-110055.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरि

PEARL PET®

JARS ● BOTTLES ● CONTAINERS

आधुनिक रसोईघर की शान

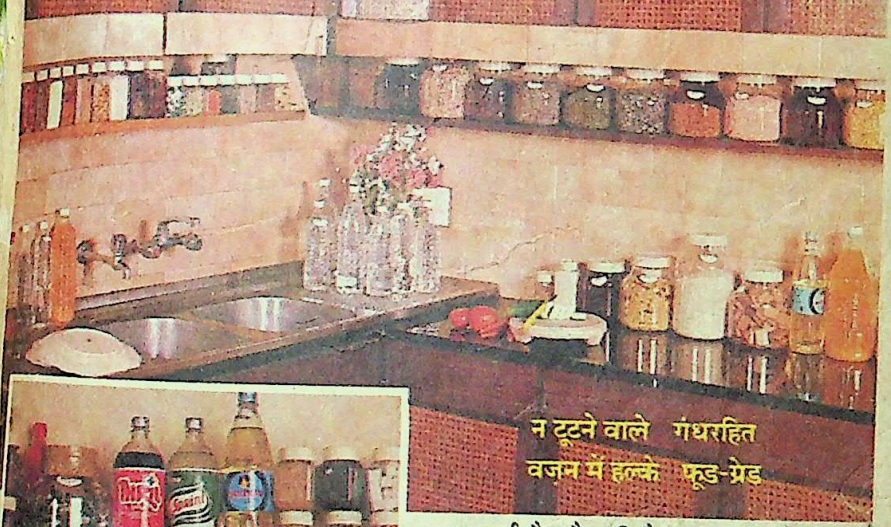
न टूटने वाले गंधरहित
वज़न में हल्के फूड-ग्रेड

नया पर्ल पैट फैमली पैक
आपकी रसोईघर के लिए:

KITCHEN KIT

SUGAR & SPICE SET

आपके फ्रिज के लिए:

COOL FREEZE BOTTLE SET

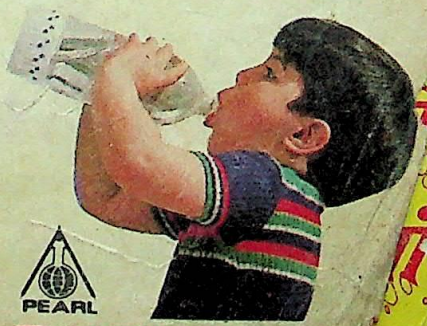

पर्लपेट खाद्य पदार्थ रखने योग्य अत्यंत सुरक्षित पदार्थ पौलीथिलीन टेरेफ्थैलेट से निर्मित हैं । सीसा, प्लास्टिक, टिन और पी वी सी के विपरित **पर्लपेट** न तो टूटते हैं, न चिटकते हैं और न इनमें जंग लगता है । **पर्लपेट** पूरी तरह स्वास्थ्यकर है – यह रखे गए खाद्य पदार्थों पर न तो कोई गंध छोड़ता है और न कोई रंग । **पर्लपेट** विविध किस्म के साइजों, रंगों और आकारों में मिलता है ।

पर्लपेट हर तरह के खाद्य पदार्थों को रखने के लिए आदर्श है । अचार, नमकीन, बिस्कुट, चावल, दाल, मसाले, तेल आदि . . . कुछ भी आप रख सकते हैं – बिना किसी चिंता के ।

PEARL

PEARL PET

JARS ● BOTTLES ● CONTAINERS

रोहित हाऊस, टॉलस्टाय मार्ग, नई दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

2 सें.मी., माहेश्वरी, बी. एससी.,
में लिमिटेड कंपनी में कार्यरत,
सुशिक्षित, सुंदर एवं सुशील,
बाल वधू चाहिए. लिखें: वि.नं.
दिल्ली-110055.
0, 160 सें.मी., विधुर, दो बच्चे
देत सुयोग्य वधू चाहिए.
ज. लिखें: वि.नं.

मेरी पसंद है हाय - चॉ

– कहती हैं सिनेत

नई
दिल्ल
एम-1
नई दिल्ल
फोन नं.-33

फिल्मी सितारों की मनपसंद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मार्च (प्रथम) 1988 रुपए 3.00

11319

सरिता

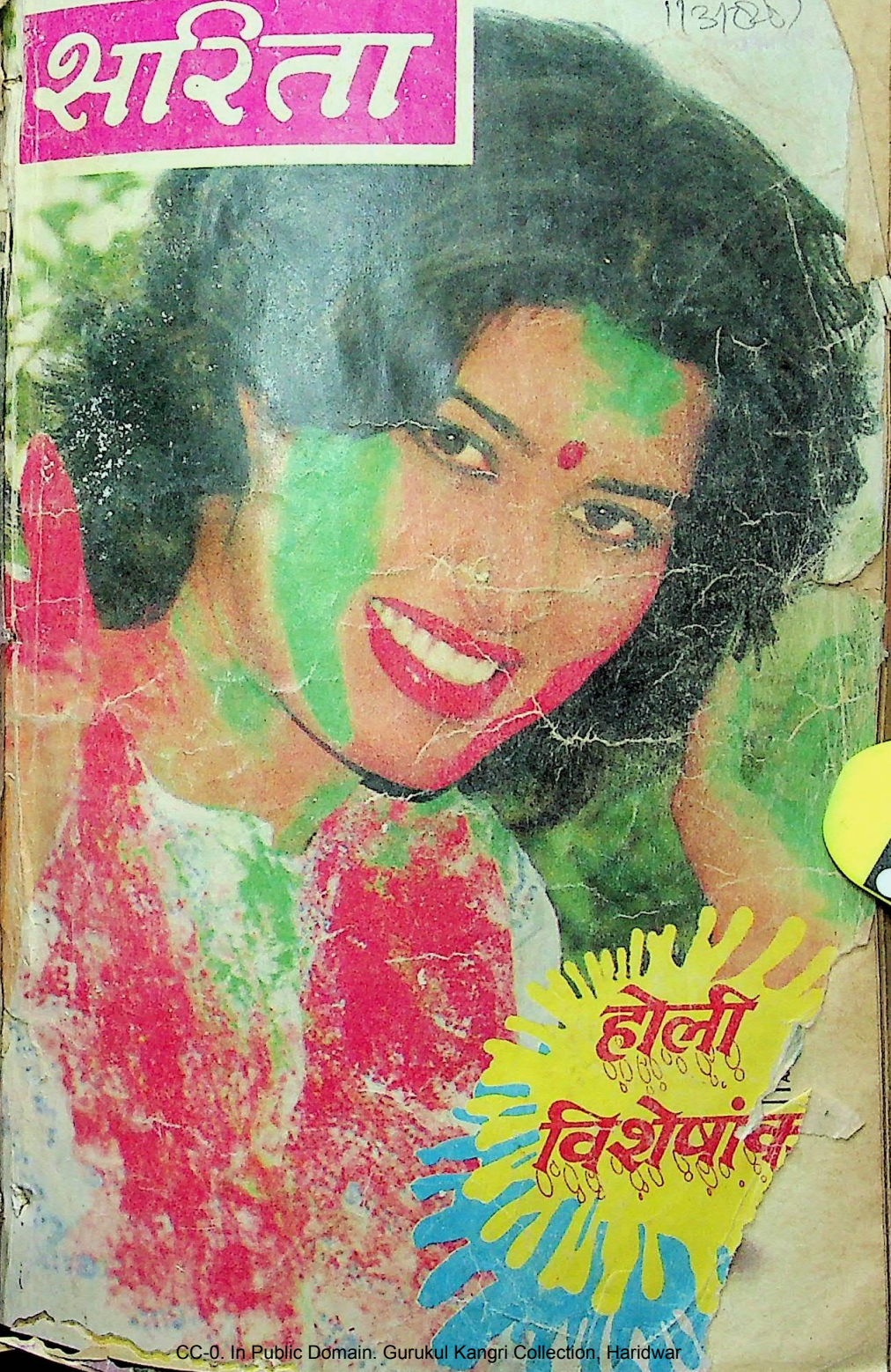

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उम्र लंबी हो तो इतनी

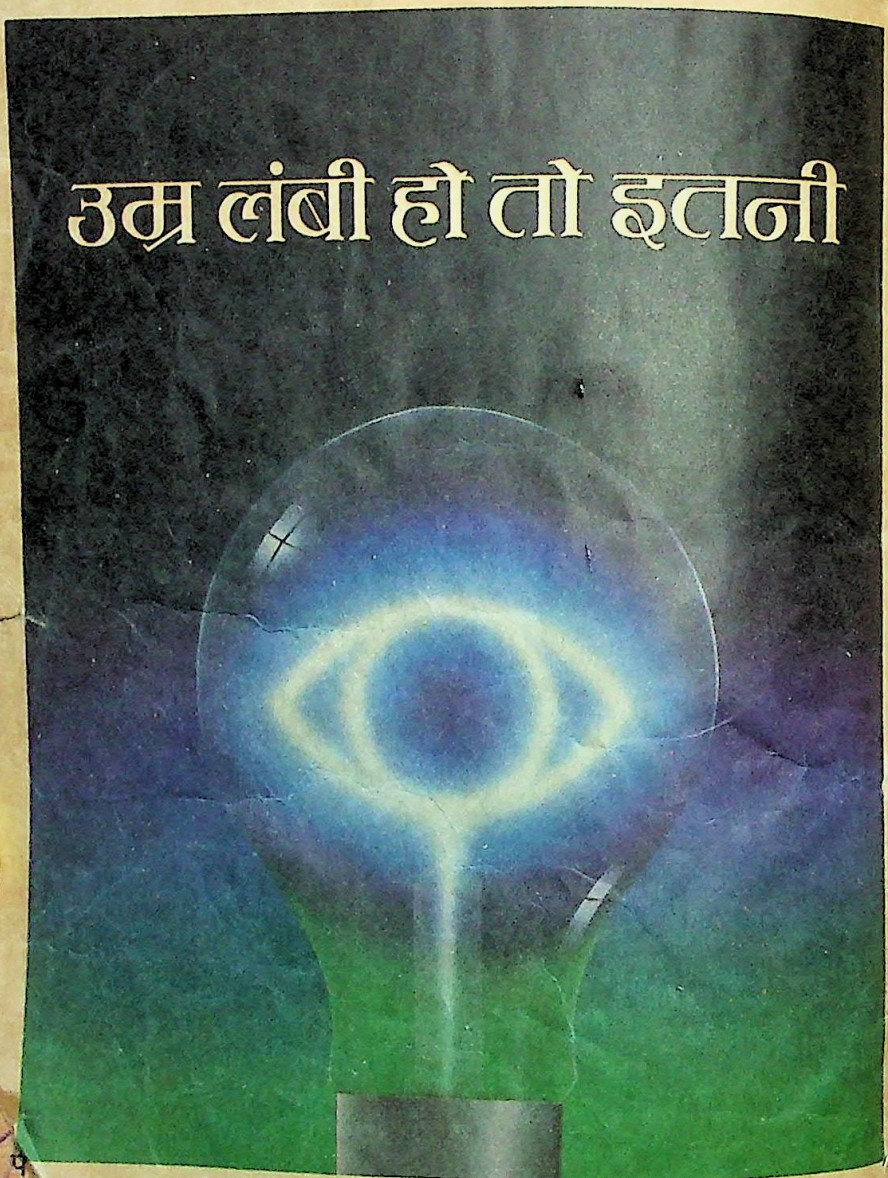

आपकी दृष्टि की पूरी सुरक्षा के लिए
हर बजाज बल्ब को क्वालिटी की सौ कसौटियों पर खरा उतरना पड़ता है. ठेठ कच्चे माल से लेकर बल्ब तैयार होने तक. इन जांचों के द्वारा बजाज बल्ब की रोशनी वोल्टेज के उतार-चढ़ाव सहने की उसकी क्षमता की खातरी की जाती है.

जब भी बल्बों की बात चलती है उनकी क्वालिटी मजबूती और विश्वसनीयता की एक ही गारंटी काफी है–बजाज का नाम.

बजाज बल्ब
कम खर्च में चलते ज़्यादा

Horse Brand

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Moments and moments of Freshness!

VMC

NOW IN POUCHES FOR JUST Re.1/-

Also available in containers

AAA/VMC/8801

VMC V.M. CONFECTIONERY LTD.,
135/1, Kaval Byrasandra, Bangalore-560 034.
The manufacturers of Gem centre-filled chewing Gum
वी. एम. कन्फैक्शनरी लि., बंगलौर द्वारा निर्मित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होली विशेषांक

सरिता

सामाजिक व पारिवारिक पुनर्निर्माण की पाक्षिक पत्रिका

संपादक व प्रकाशक : विश्वनाथ

अंक : 789 मार्च (प्रथम) 1988

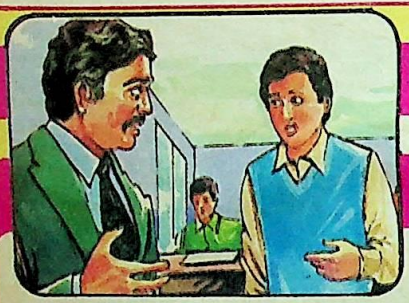

कथा साहित्य

120 चेहरा
शादी में दूल्हे की मुसीबत

134 गोद से वंचित
धार्मिक संस्थाओं का खोखलापन

148 आशीर्वाद
एक परीक्षार्थी का साहस

174 चिंता
पति के बाहर जाने पर पत्नी की चिंता

37 हम भी
संपन्न देशों से प्रतिस्पर्धा

40 रिश्ते की डोर
मेधावी छात्रा से शिक्षिका की सहानुभूति

54 अपने घर की होली
गुंडे को सुधारने वाली महिला

77 अशोक राणा
राजनीतिक पार्टी में भेदभाव

92 हठीली
राजघराने की परंपराओं का विरोध

लेख

22 होली आत्मीयता का त्योहार
सलीके से होली मनाने का सुझाव

27 होली के रंग करें बदरंग
रासायनिक रंगों का दुष्प्रभाव

31 भारत में प्रजातंत्र की जड़ें
जनाधिकारों पर कुठाराघात

85 होली खेलने जा रही हैं?
घर से बाहर होली खेलने के तरीके

107 बच्चों को होली खेलने दें
होली का वैज्ञानिक विश्लेषण

111 रजस्वला से जुड़ी धार्मिक कुरीतियां
सड़ीगली परंपराओं की उपयोगिता?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

115 मायके में पति की उपेक्षा
सुखी दांपत्य के गुर
155 आप का पर्स
व्यक्तित्व के निखार के लिए
163 टेस्टट्यूब बेबी और हिंदू धर्मग्रंथ
धर्म के धंधेबाजों की थोथी दलीलें
183 होली के दागधब्बे
रंग छुड़ाने के लिए हिदायतें

स्तंभ

12 ये पत्नियां
16 बच्चों के मुख से
18 सरित प्रवाह
33 पाठकों की समस्याएं
90 रंगबिरंगे व्यंजन
132 नए फैशन
159 चंचल छाया
8 आप के पत्र
12 हमारी बेड़ियां

कविताएं

16 बंधन अनचाहा
51 होली के रंगों में
83 आंचल में इंद्रधनुष
89 कहां रंग लगाएं
106 बंदर मामा
131 बच के कहां जाओगी
147 रंग प्रीत का

संपादकीय, विज्ञापन व प्रकाशन कार्यालय :
दिल्ली प्रेस भवन, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.
दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन प्रा. लि. के लिए विश्वनाथ द्वारा प्रकाशित तथा दिल्ली प्रेस समाचार पत्र प्रा.लि. साहिबाबाद/गाजियाबाद में मुद्रित.
अन्य कार्यालय : अहमदाबाद : 503, नारायण चैंबर्स, आश्रम रोड, अहमदाबाद-380009. बंगलौर : 302-बी, 'ए' क्वींस कारनर एपार्टमेंट्स, 3, क्वींस रोड, बंगलौर-560001. बंबई : 79-ए मित्तल चैंबर्स, नरीमन पाइंट, बंबई-400021.कलकत्ता : तीसरी मंजिल, पोद्दार पाइंट, 113, पार्क स्ट्रीट, कलकत्ता-700016, मद्रास : 14, पहली मंजिल, सीसंस कांप्लेक्स, 150/82, मांटीअथ रोड, मद्रास-600008., लखनऊ : 9, दुर्गा भवन, कपूर लेन, महात्मा गांधी रोड, लखनऊ-226001. सिकंदराबाद : 122, पहली मंजिल, चिनाय ट्रेड सेंटर लेन, 116, पार्क लेन, सिकंदराबाद-500003.
© दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन प्रा. लि. बिना आज्ञा कोई रचना किसी प्रकार उद्धृत नहीं की जानी चाहिए.
सरिता में प्रकाशित कथा साहित्य में नाम, स्थान, घटनाएं व संस्थाएं काल्पनिक हैं और वास्तविक व्यक्तियों, स्थानों, घटनाओं या संस्थाओं से उन की किसी भी प्रकार की समानता संयोग मात्र है.
वैवाहिक विज्ञापन विभाग : एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001.
वार्षिक मूल्य केवल ड्राफ्ट/मनी आर्डर द्वारा 'सरिता' के नाम से ई-3, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-110055 को ही भेजें. चैक व वी.पी.पी. स्वीकार नहीं किए जाते.
मूल्य विदेशों में (समुद्री डाक से) 240 रु., (हवाई डाक से) 636 रु.

मूल्य : एक प्रति 5.00 रुपए. वार्षिक : 120 रुपए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

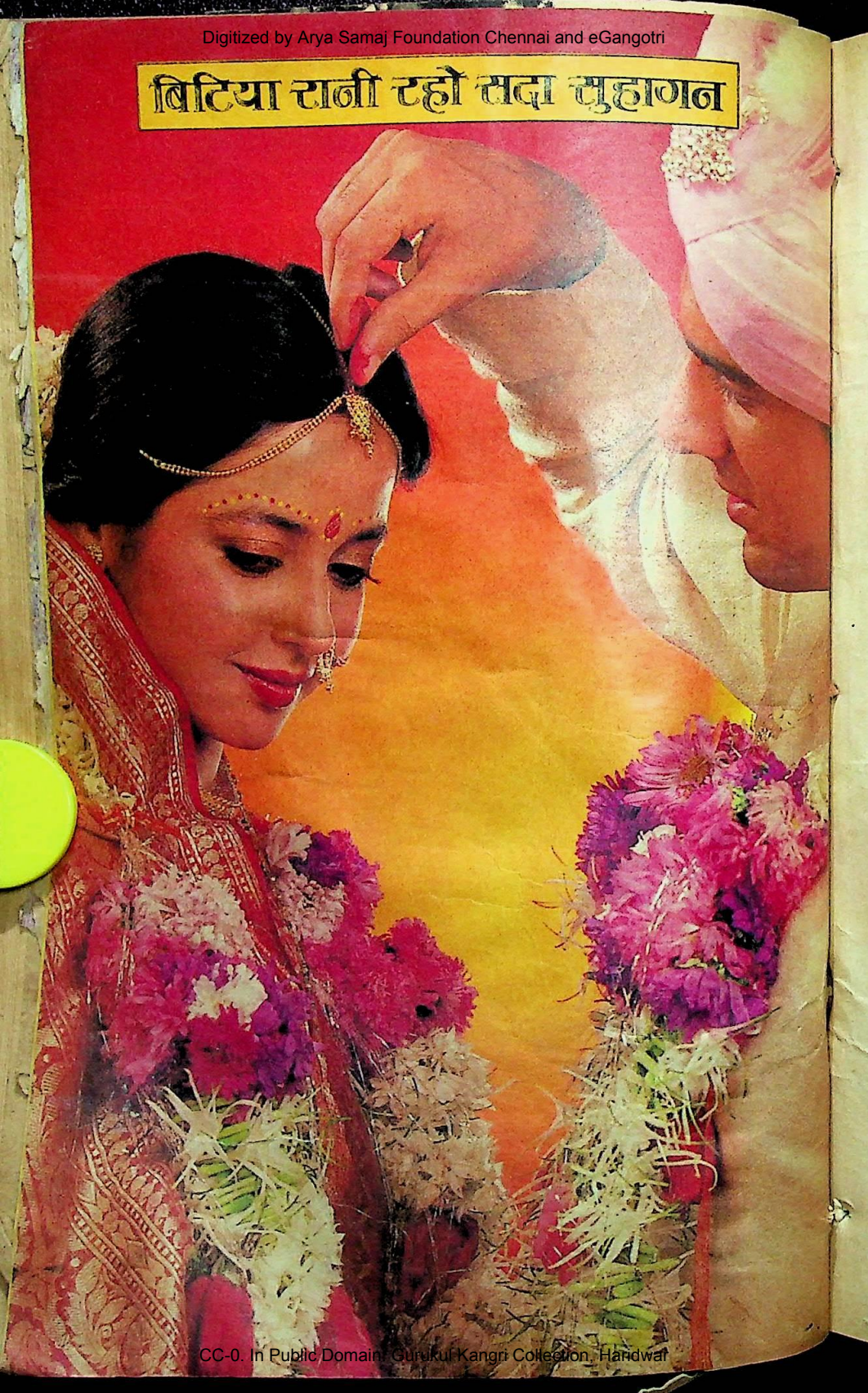

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जैसे कल ही की तो बात है...
एक नन्हीं सी गुड़िया आँगन में खेलती थी.
हँसती थी... रुलाती थी. देखते ही देखते
बचपन की वो मीठी यादें बन गईं शादी
का अटूट बंधन !

और एरिस्टोक्रैट ख़ूब जानते हैं
जीवन में एक बार आनेवाली इस
अनमोल घड़ी का मोल.

तभी तो बड़ी सूझबूझ और
देखभाल से हमने बनाया उपहार के रूप
में ख़ूबसूरती से पैक किया... सुहागन.

शादी के लिए तीन सूटकेसों और
एक वेनिटी केस का ऐसा सुंदर सेट जो
आसानी से एक दूसरे में समा जाए. और
जिस में हैं बेहतरीन ख़ूबियाँ जो किसी
और सूटकेस में नहीं.

ख़ूबियों से चमकते मौके के लिए
सुनहरे ताले.

हर सूटकेस में बाहर की तरफ़ हैं
भीतरी रंग से मेल खातीं ख़ूबसूरत
पट्टियाँ.

जो सुहागन को बनाएँ विवाह का
सबसे शानदार उपहार !

बिटिया रानी को प्यार से दीजिए
सुहागन... और कहिए सदा रहो सुहागन !

फिर ज़िंदगी की डगर पर लाडली
को करते देखिए सदा सुखमय सफर !

चार सूटकेस का अनमोल सेट.

SUHAGAN
FOUR-PIECE SET

Aristocrat

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरित प्रवाह/जनवरी/द्वितीय

किसानों की दयनीय स्थिति के बारे में आप के विचार सटीक हैं.

मुझे यह जान कर खुशी हुई कि कोई तो हम किसानों की सही दशा को समझता है. हमारी सरकार तो पिछले 20 वर्षों से कागजों और भाषणों में किसानों की स्थिति सुधार रही है.

मैं एक किसान हूं और पिछले 15 साल से खेतीबाड़ी का काम कर रहा हूं. मेरे कई साथी पढ़ाई समाप्त कर के सरकारी नौकरी में चले गए. आज उन के पास शहरों में मकान, मोटर तथा अन्य आधुनिक सुविधाएं हैं और मुझ जैसे लाखों लोग गांवों में ही देहाती जीवन जीते हुए जहां के तहां हैं.

किसान पूरा वर्ष खेती में लगा रहता है. कुछ अपने पास से, कुछ लोगों से कर्जे ले कर अपनी सारी पूंजी भी खेती में लगाए रहता है. लेकिन तैयार फसल को ले कर जब वह बाजार में जाता है, तब उसे उचित कीमत नहीं मिलती.

किसान को कभी विपरीत मौसम का सामना करना पड़ता है तो कभी कीड़ेमकोड़े उस की फसल को नष्ट कर देते हैं. हमारे यहां तो एक अजीब ही रोग लगता है, जिस में हरी फसल ही सूख जाती है. ऐसे में हमारी दशा क्या सुधरेगी.

उस पर भी यह आलम है कि मजदूरी बढ़ रही है. खाद, बीज एवं अन्य कृषि उपयोगी वस्तुओं की कीमतें आसमान छू रही हैं. साथ ही सामान मिलने में कठिनाई होती है.

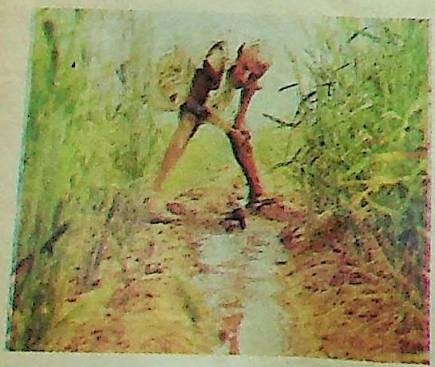

हमारे यहां दलहन उत्पादन का सब से बड़ा क्षेत्र है—बड़हिया मोकामाटाल. इस का हजारों एकड़ का रकबा है कहने को तो यहां दलहन विकास के लिए बिहार सरकार का सब से बड़ा कार्यालय है, लेकिन सब बेकार. कागजों पर ही काम होते हैं, वास्तव में कुछ नहीं.

हमारी स्थिति साधारण से ऊपर कभी नहीं रही. यहां के अधिकतर किसान दयनीय स्थिति में जी रहे हैं. ऐसे में भला साधारण किसान नई पीढ़ी को खेती में क्यों लगाए रखेगा.

यही कारण है कि अब किसान भी खेती को छेड़ कर अन्य रोजगारों की ओर बढ़ रहे हैं. यह एक खतरनाक प्रवृत्ति है किसानों की. लेकिन हमारी सुनने वाला भी कौन है?

हम पढ़ेलिखे हो कर भी मूर्ख, गंवार और देहाती 'शब्दों से संबोधित किए जाते हैं. हमें सभ्य नहीं समझा जाता. यह तो है अच्छे किसानों की दशा. छोटे और बहुत छोटे किसानों की हालत तो शर्मनाक ही है. उन की चर्चा से फायदा भी क्या?

बाजार में उपलब्ध समस्त वस्तुओं की अपनी कीमत होती है, जिसे उन के उत्पादक जब चाहें बढ़ा सकते हैं, घटाने की बात तो इस देश में सोचना ही बेकार है.

लेकिन किसान जो अनाज उत्पादन करता है, उस की कोई कीमत नहीं होती. व्यापारी जो भी दाम दे दें दान में वही अनमोल है.

मैं 'सरिता' के माध्यम से यह बात आम लोगों तक पहुंचाना चाहता हूं कि जो किसानों का शोषण करते हैं, हमारी दयनीय दशा का मजाक बनाते हैं, उन्हें हमारे बारे में कुछ तो सोचना चाहिए.

—सुनीलकुमार 'सेबी'

*

तंबाकू, बीड़ी, सिगरेट आदि के विज्ञापन के बारे में सरकार के रवैए पर आप की टिप्पणी से मैं सहमत हूं

यह बड़ी विचित्र बात है कि सरकार ने जनकल्याण को ताक पर रख कर थोड़े से राजस्व के लालच में सिगरेट, तंबाकू आदि के विज्ञापन को खुली छूट दे रखी है. यदि सरकार युवा पीढ़ी को वास्तव में व्यसनमुक्त करना चाहती है तो तंबाकू, सिगरेट आदि के विज्ञापनों और बिक्री पर तुरंत रोक लगानी चाहिए.

—सुनीलकुमार बाफना

*

आज हमारे देश में लाखों लोग बीड़ी, तंबाकू आदि के व्यसन के कारण जानलेवा बीमारियों के शिकार हो गए हैं. अनेक घर बरबाद हो रहे हैं और फिर भी सरकार 'वैधानिक चेतावनी' के खोखले आवरण में अपनी स्वार्थांधता को ढकने का असफल प्रयास कर रही है.

—सीमा सक्सेना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खाओ गगन, रहो मगन!

स्प्रिंग-रोल्स (शाकाहारी)

सामग्री:– पैनकेक बनाने के लिए: मैदा–1 कप, दूध–¼ कप, पानी–¼ कप, नमक व काली मिर्च–स्वादानुसार, मस्टर्ड पाऊडर–स्वादानुसार, **भराई के लिए:**– गाजर–2 (लम्बाई में कटी), प्याज़–1 (गोल कतलों मे कटा), शिमला मिर्च–1 (लम्बाई में कटी), पनीर–100 ग्राम, बंद गोभी–1 (कुतरी हुई), बीनस्प्राउट्स–50 ग्राम, फ्रेंच बीन्स–50 ग्राम (लम्बाई में कटी), अदरक–5 ग्राम, गगन वनस्पति–तलने के लिए

विधि

1. पैनकेक बनाने की सारी सामग्री को अच्छी तरह मिला लें। यह इतनी पतली होनी चाहिए कि तवे पर आसानी से डाली जा सके। ज़रूरत पड़े तो इसमें थोड़ा पानी और मिला लें।
2. भराई के लिए प्याज और अदरक को गगन वनस्पति में भून लीजिए। फिर क्रमशः गाजर, फ्रेंच बीन्स, शिमला मिर्च और बंद गोभी डालें। हर सब्जी को थोड़ी-थोड़ी देर पकने दें। आँच तेज़ करके पनीर और बीनस्प्राउट्स मिला दें। ठंडी होने पर इनमें नमक, काली-मिर्च व मस्टर्ड पाऊडर स्वादानुसार डाल दें।
3. पैनकेक पकाने के लिए तवे पर गगन वनस्पति गरम करें। उस पर पैनकेक की सामग्री को चम्मच से फैलाएं। तब तक पकाएं जब तक उसके किनारे मुड़ने न शुरू हो जाएं। फिर इसे पलट कर दूसरी ओर से पकाएं।
4. तैयार पैनकेक पर भराई का सामान फैला कर, बेलन से थोड़ा चपटा कर लें। फिर उसे गोलाई में बन्द कर दें। गगन वनस्पति में सुनहरा-भूरा होने तक तलें।
5. गरम-गरम परोसें।

अत्यंत आधुनिक फ़ैक्टरी में
शुद्ध और स्वच्छ गगन वनस्पति का उत्पादन

हमारी अन्य आकर्षक व्यंजन-विधियों का इन्तज़ार कीजिए।

विश्वसनीय
गगन
वनस्पति

अमृत वनास्पति कम्पनी का एक उत्कृष्ट उत्पादन

HTA 5149 HIN C

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्त्रियों के सम्पूर्ण स्वास्थ्य
के लिए
प्राकृतिक औषधि व टॉनिक

हेमपुष्पा

हेमपुष्पा स्त्रियों को स्वस्थ बनाने वाली एक प्रभावशाली आयुर्वेदिक औषधि व टॉनिक है जिसका निर्माण उनके शरीर की विशेष रचना और खास जरूरतों को ध्यान में रखकर किया गया है।

हेमपुष्पा नये रक्त का निर्माण करने के साथ-साथ रक्त को साफ करती है जिससे नारी सौन्दर्य खिल उठता है।

हेमपुष्पा हार्मोनल असंतुलन ठीक करती है।

हेमपुष्पा स्त्रियों की घबराहट, चिडचिडापन, उत्तेजना, भूख न लगना, अनुत्साह, हथेली व तलवों की जलन, शरीर का टूटना, कमर तथा पेडू का दर्द तथा मानसिक एवं शारीरिक थकावट को दूर कर जीवन में स्फूर्ति व उमंग लाती है।

हेमपुष्पा एक हानिरहित, विश्वसनीय और स्थाई लाभप्रद बेजोड़ औषधि है।

निर्माताः
राजवैद्य शीतल प्रसाद एण्ड संस
4771/23, दरियागंज, नई दिल्ली - 110 002
शाखाएं: दिल्ली, नागपुर, इन्दौर, गाजियाबाद

राष्ट्रीय विपक्ष के संदर्भ में पिछले कुछ अंकों में आप की टिप्पणियां सटीक हैं.

वास्तव में, आजकल राष्ट्रीय विपक्ष का कार्य नईनई पार्टी बनाने तथा अन्य बेमतलब की बातों में समय गंवाने के अतिरिक्त और कुछ नहीं रह गया है. जनता में अपनी अच्छी छवि बनाने का इस से अच्छा मौका और क्या होगा, जब सत्ता पक्षीय कांग्रेस की लोकप्रियता दिनोदिन कम होती जा रही है.

लेकिन अफसोस की बात यह है कि विपक्ष एकजुट हो कर कोई रचनात्मक कार्य नहीं करना चाहता. उस के सभी नेता प्रधान मंत्री ही बनने के ख्वाब देखते रहते हैं.

—अरविंदकुमार सिन्हा

*

लोकतंत्र नहीं, धनतंत्र

लेख 'लोकतंत्र : लोगों को बहलाने का झुनझुना तो नहीं' (जनवरी/द्वितीय) पढ़ कर लगा कि सचमुच ही लोकतंत्र झुनझुना बन कर रह गया है, जो सत्तापक्ष की जेब में है.

देश की गरीब जनता तो यह भी नहीं जानती कि 'लोकतंत्र' किस बला का नाम है. उसे अपने लिए दो जून की रोटी कमाने से ही फुरसत नहीं है. अपने मताधिकार का भी वह 'वस्तु विनिमय' में रातोरात इस्तेमाल कर लेती है.

मेरे विचार से तो देश में लोकतंत्र की जगह 'धनतंत्र' हो गया है, जिसे सभी नेता अपना रहे हैं.

—गुरुदेव सिंह भाटिया

*

राजीव कांग्रेस के झूठी वाहवाही लूटने वाले एवं दंगेफसाद करा कर मजा लूटने वाले कतिपय असामाजिक तत्त्वों ने लोकतंत्र की कमर तोड़मरोड़ कर रख दी है.

राजीव के कार्यालय में भ्रष्टाचार, बेईमानी, कालाबाजारी व अफसरों, मंत्रियों के ऐश्वर्य ने अपनी उन्नति के नए शिखर छू लिए हैं. सभी सरकारी विभागों के आला अफसर इन के हाथों की कठपुतली बन गए हैं. कुरसी और वोटों की भूख मिटाने के लिए सांप्रदायिक हिंसा, दंगे और खूनखराबा ही इस कुशासन की दिनचर्या बन गया है.

देश की कार्यपालिका और न्यायपालिका जैसी निष्पक्ष संस्थाओं पर भी इन लोगों का वरदहस्त होने से गुनहगार बच जाता है और बेगुनाह सजा भोगता है. शासन के काले कारनामों को देखते हुए लगता है कि हमारे चेहरों पर छाई खुशी अब चंद दिनों की मेहमान है.

—एल.आर. फरक्या

*

रोचक व ज्ञानवर्द्धक स्तंभ

स्तंभ 'शून्य काल का शून्यालाप' (जनवरी/द्वितीय) रोचक व ज्ञानवर्द्धक लगा.

इस में उन अनछुए प्रश्नों को उठाया गया है, जिन का सीधा संबंध जनता से है.

—दिनेश शर्मा

शरिता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

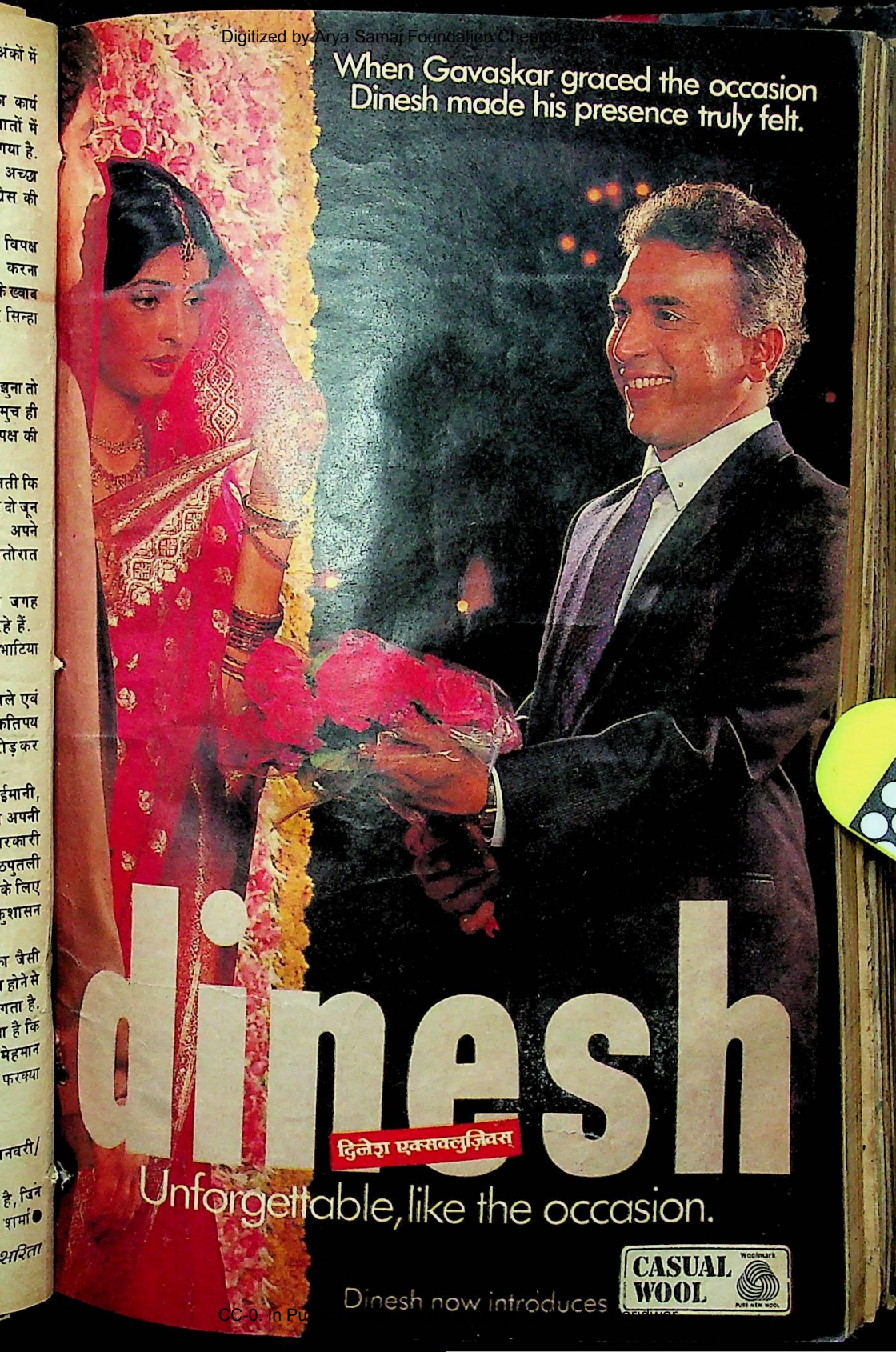

CC-0. In Pu

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारी बेड़ियां

मेरे गांव में ऐसा माना जाता है कि शुक्रवार तथा शनिवार को पूरब दिशा की यात्रा नहीं करनी चाहिए. इस से दिशाशूल पड़ता है.

एक बार मेरी चाची को एक जहरीले सांप ने डस लिया. जब उन की दशा चिंताजनक होने लगी तो उन्हें तत्काल शहर ले जाने की राय दी गई.

लेकिन उस दिन शुक्रवार होने के कारण गांव के ही कुछ बुजुर्गों ने पूरब दिशा में सफर करने से मना कर दिया. विवश हो कर उन्हें दूसरी दिशा की तरफ ले जाना पड़ा.

मगर उन दिनों हुई भारी बरसात के कारण उधर के तमाम रास्ते बंद थे. अतः पलट कर शहर ले जाने के पूर्व ही चाची ने दम तोड़ दिया. —अशोककुमार सिंह

हमारे यहां प्रथा है कि एक 'दोबड़ी आठें पर्व' में महिलाएं मुंह में बेर के पेड़ का कांटा रख कर धार्मिक कथा सुनती हैं और उपवास रखती हैं.

यह पर्व आने पर हमारी चाचीजी ने भी मना करने के बावजूद उपवास किया. यह कह कर बड़ा सा कांटा भी मुंह में रख लिया कि अगर वह ऐसा नहीं करेंगी तो उन्हें पाप लगेगा.

मगर मुंह में रखा हुआ कांटा खांसी आने पर उन के गले में जा कर फंस गया. उन्हें तुरंत चिकित्सालय ले जाया गया. जहां अथक प्रयास कर के उन के गले से कांटा तो निकाल लिया गया, परंतु उन की स्वर तंत्रियां हमेशा के लिए खराब हो गईं.

—राजेश गर्ग 'सुरु'

ये पत्नियां

मेरा लड़का और लड़की अपनी वार्षिक परीक्षा की तैयारी कर रहे थे. मेरी लड़की ने लड़के से कहा, "भैया, मैं ने पढ़ने की दिनचर्या बनाई है. कल से मैं इसी के अनुसार पढ़ा करूंगी."

योजना के अनुसार उसे सुबह 4 बजे उठना था. इस के बजाए 6 बजे सो कर उठी तो मेरे लड़के ने कहा, "तूने पहले ही दिन अपनी दिनचर्या तोड़ दी."

मेरी पत्नी अनपढ़ है. उस की बात सुनते ही वह रसोई में से ही चिल्ला कर बोली, "कमबख्तो, कुछ न कुछ तोड़ते ही रहते हो. अब सुबहसुबह दिनचर्या भी तोड़ दी. कल ही तो बनाई थी." उन की इस बात पर हम तीनों का हंसतेहंसते बुरा हाल था. —रमेशचंद्र

बात उन दिनों की है जब मेरी नईनई शादी हुई थी. मुझे साड़ी बांधनी नहीं आती थी. रोज जेठानी ही मेरी साड़ी बांधती थी.

एक दिन मेरे पति मुझे फिल्म दिखाने ले गए. फिल्म समाप्त होने पर जैसे ही मैं उठी तो मेरी साड़ी की सारी चुन्नटें खुल गईं. मेरे हाथ में सिर्फ पल्ला रह गया. मैं वहीं रुक कर साड़ी बांधने लगी. पीछे से सब चिल्ला रहे थे और मेरी हालत देख कर मुसकराते हुए आगे बढ़ते जा रहे थे. मैं ने जैसेतैसे चुन्नटें समेटीं और पति के साथ घर आ गई.

घर आते ही ननद और सास ने पूछा, "फिल्म कैसी लगी?"

पति गुस्से से बोले, "कौन सी फिल्म की बात कर रही हो? आज लोगों ने दो फिल्में देखी हैं. एक सिनेमा हाल के पर्दे पर और दूसरी तुम्हारी बहू की साड़ी खुलने पर."

—शांता सरन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कपड़े चमकें इन्द्रधनुष से सालों साल
डाक्टर वाशिंग पाउडर की है इतनी सुरक्षित देखभाल

डाक्टर
वाशिंग पाउडर

किफ़ायती और आसान धुलाई के लिए
हमेशा प्रयोग करें

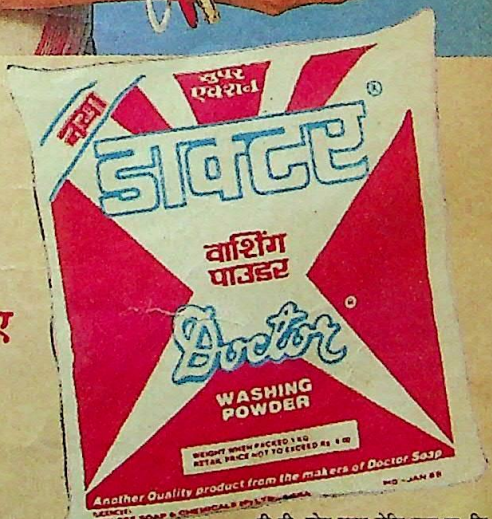

डाक्टर सोप के निर्माताओं का उत्कृष्ट-उत्पादन

पी.सी. सोप एण्ड केमिकल्स प्रा. लि.
[illegible] खतैना रोड, लोहा मंडी, आगरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दफ़्तर में मेरे शौहर से
ज़रूर मिलती है,
स्वादिष्ट चीज़...अमूल चीज़.

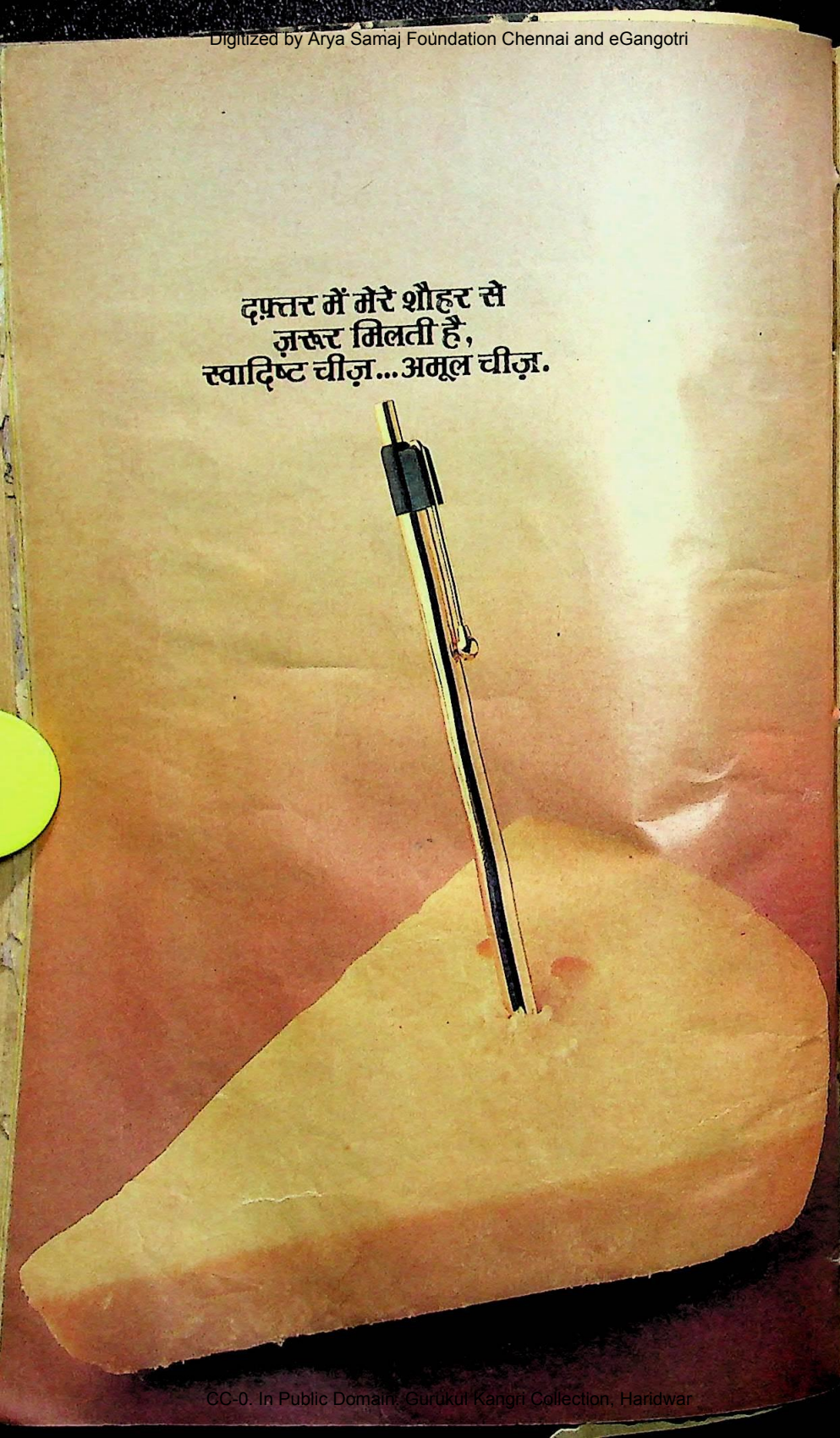

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चीज़ भी क्या चीज़ है. मेरे पति की कितनी अज़ीज़ है. इसीलिए रोज़ उनके खाने के डिब्बे में मैं कोई न कोई 'सरप्राइज़' चीज़ जरूर रख देती हूं. अब पता नहीं इत्तफाक है या मेरे पतिदेव जानबूझ कर ऐसी हरकत करते हैं, कि जिस दिन मैं चीज़ भेजना भूल जाती हूं, श्रीमानजी भी लंच लेना भूल जाते हैं.

उन्हें खुश करने के लिए, मैंने तो चीज़ के कुछ ऐसे स्वाद भरे व्यंजन खोज निकाले हैं कि दफ्तर में उन्हें औरों के लिए फुर्सत मिले या न मिले, इस चीज़ के लिए 'वे' वक्त निकालते ही हैं.

वेजिटेबल चीज़ कटलेट

(१० की सामग्री)

३ बड़े आलू-उबालकर छीले और कुचले हुए; १००-१०० ग्राम गाजर, बीन्स, फूलगोभी, पत्तागोभी–सभी बारीक कटे हुए; १०० ग्राम मटर–छिली हुई; १०० ग्राम अमूल चीज़–किसी हुई; १ चम्मच नमक; १/२ चम्मच पिसी हुई लाल मिर्च; ३ चम्मच पिसा धनिया; १ चम्मच गरम मसाला; १ चम्मच जीरा; १ चम्मच सरसों के दाने; २ हरी मिर्च-कटी हुई; १ गड्डी हरा धनिया; १/२ नींबू का रस; वनस्पति-घी-फ्राई करने के लिए.

एक भारी कड़ाही में २ बड़े चम्मच वनस्पति-घी गरम कर लें. इसमें जीरा और सरसों डालकर भून लें और दूसरे मसाले और नमक भी डाल दें. कुछ सेकेंड तक फ्राई करें और कटी हुई सब्जियां और मटर भी डाल दें. अब काफी पानी डालकर इस मिश्रण को पका लें. आंच से उतारकर, कसी हुई चीज़ डाल लें. इस मसाले को अलग रख दें. अब कुचले हुए आलुओं में नमक, नींबू का रस, धनिया और हरी मिर्च मिला लें. आलुओं के इस मिश्रण के, नींबू के बराबर गोले बना लें. हर गोले को हथेली से दबाकर पूरी की तरह चपटा करें और वेजिटेबिल चीज़ का बनाया हुआ मसाला रखकर दूसरी चपटी की हुई आलू की पूरी उसके ऊपर रखें और किनारे दबा दें. अब डबलरोटी के चूरे में थपथपा कर कटलेट को सुडौल आकार दे दें. तवे पर घी डालकर कटलेटों को शैलो-फ्राई कर लें. दोनों तरफ पलटें ताकि करारे और लाल-लाल सिक सकें. चटनी या टमाटर सॉस के साथ परोसें.

अमूल चीज़ आलू टिक्की

(१० टिकियों के लिये सामग्री)

१/२ कि.ग्रा. आलू–उबालकर छीले और कुचले हुए; १ बड़ा चम्मच सींगदाना–भूनकर छिला और पिसा हुआ; ४ बड़े चम्मच साबुदाना–१/२ घंटे तक पानी में भीगा हुआ; १०० ग्राम अमूल चीज़–कसी हुई; १ या २ हरी मिर्च कटी हुई; १/२ छोटी गड्डी हरा धनिया–कटा हुआ; वनस्पति घी–तलने के लिए.

साबुदाने में से पानी निचोड़ लें और सारी सामग्री अच्छी तरह मिला लें. पतली-पतली गोल टिकियाएं बनाकर तवे पर घी में तब तक सेकें जब तक करारी और लाल न हो जायें. फौरन गर्म-गर्म परोसें.

चीज़ के १२० स्वादिष्ट व्यंजनों की 'अमूल चीज़ पुस्तिका' (केवल अंग्रेजी में उपलब्ध) मंगाने के लिए इस पते पर लिखें : पो.ऑ. बॉक्स १०१२४, बम्बई ४०० ००१. कृपया साथ में रु. १५/- का क्रॉस्ड डिमांड ड्राफ्ट या पोस्टल ऑर्डर, 'एडवर्टाइज़िंग एंड सेल्स प्रमोशन कंपनी' के नाम ज़रूर भेजें और अपना पूरा पता भी लिखें.

अमूल चीज़

खाने में लज़ीज़...
सेहत की चीज़

बिक्री व्यवस्था :
गुजरात को-ऑपरेटिव मिल्क मार्केटिंग फेडरेशन लिमिटेड, आणंद-३८८ ००१.

OPERATION FLOOD

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बच्चोंके मुखसे

पिछले साल होली में हम सभी रंग खेलने में मस्त थे. मेरा आठ वर्षीय भानजा भी आतेजाते लोगों पर रंग डाल रहा था. रंग समाप्त होने पर उस ने लोगों पर पानी डालना शुरू कर दिया. मैं ने उस से कहा, "घर जा कर रंग क्यों नहीं लाते. होली पानी से नहीं खेलनी चाहिए."

इस पर उस ने तुरंत जवाब दिया, "रंग से ही तो खेल रहा हूं. पहले लाल रंग से खेली, अब सफेद रंग से खेल रहा हूं."

– सुभाषकुमार राय

*

मेरी 5 वर्षीया भानजी बड़ी ही चंचल है. एक दिन वह दरवाजे पर खड़ी थी, तभी डाकिया आया. उस ने हमारा पत्र अंदर फेंका, जो नाली में गिर गया.

यह देख कर उस ने डाकिए को रोका और बोली, "ठहरो, हमारी चिट्ठी भीग गई है इसे बदल कर दो." – सुधीर खोईवाल 'नलिन'

*

मेरी मामीजी गर्भ से थीं. एक रात जब उन्हें प्रसवपीड़ा के कारण हस्पताल ले जाया जाने लगा, तो मेरी मामीजी की छोटी लड़की भी उन के साथ जाने की जिद करने लगी. तब उसे समझाते हुए मामीजी ने कहा, "बेटी, मुझे बहुत दर्द है. जल्दी से हस्पताल जाने दो. फिर हम वहां से तुम्हारे लिए छोटी बहन लाएंगे."

हस्पताल से लौटने पर उस ने देखा कि उस के लिए वास्तव में एक छोटा भाई आ चुका था. थोड़े दिनों बाद उस के कान में दर्द हुआ. वह मामीजी के पास आ कर बोली, "मां, मुझे जल्दी से हस्पताल ले चलो. मेरे कान से छोटी बहन आने वाली है."

–वंदना कठल

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक अंतर्राष्ट्रीय सौंदर्य-साधन अब आपके देश में, आपके बिल्कुल करीब आ कर अपना राज़ खोल रहा है... आपकी त्वचा से कुछ खूबसूरत बातें बोल रहा है. इसकी एक अनमोल बूंद ही काफी कुछ कहे... सुनिए. इसकी मुलायम-गुलाबी नमी इतनी सहज कि आपकी त्वचा में आसानी से घुल-मिल जाए, रोम-रोम में समाए. हर ढलता दिन आपकी त्वचा से कुछ छीन ले जाए... उसे ये लौटाए.

क्योंकि ये आपकी त्वचा की परतों में प्राकृतिक नमी-तेल का नाज़ुक संतुलन बनाए रखे. त्वचा के रूखेपन को हटाए, ऐसी ताज़गी लाए कि हर छोटी से छोटी सिलवट अपने-आप ही मिट जाए. आपकी त्वचा में वही मुलायम एहसास लौट आए, कोमल चमक जग जाए... त्वचा में फिर बसंत खिल जाए. आइए इस अंतर्राष्ट्रीय सौंदर्य साधन के राज़ में शामिल हो जाइए. ऑइल ऑफ ओले अपनाइए... प्यारी सी सौंदर्य-रस्म निभाइए!

मासूम त्वचा पाने का राज़ जान जाइए!

ऑइल ऑफ ओले संसार भर में 60 से ज़्यादा नामों से मशहूर है... जैसे ऑइल ऑफ ओले, ऑइल ऑफ ओलाय और ऑइल ऑफ ओलॅज़.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सारिता
मार्च (प्रथम) 1988

अरित प्रवाह

प्रधान मंत्री राजीव गांधी ने एक बार फिर अपने मंत्रिमंडल में व कुछ राज्यों के राज्यपालों में फेरबदल, उलटपलट की है. कहा गया है, इस से सरकार के काम में तेजी, पैनापन आएगा. सरकार जोर से काम करेगी. पर जिस प्रकार विभिन्न मंत्रालयों के लिए मंत्री चुने और बैठाए गए, उस से इस सबल कार्यक्रम का कोई आभास नहीं मिलता. उलटे, लगता है कि एक नौसिखिया, अपनी शतरंज की बाजी को बारबार बैठाने की कोशिश कर रहा है, पर बात नहीं बन रही है.

एक अल्पबुद्धि जीव भी यह स्वीकार करेगा कि साधारण से भी किसी काम के लिए, जैसे जूते पर पालिश करना या फलसब्जियों की चाट बनाने के लिए भी प्रशिक्षण, तजुर्बे, अनुभव की आवश्यकता होती है. फिर भारत जैसे विशाल देश के लिए, जिस की समस्याएं भी उतनी ही विशाल और पेचीदा हैं, विभिन्न मंत्रालयों को संभालने, संचालन करने के लिए कुछ तो मूलभूत ज्ञान और अनुभव चाहिए. पर यहां राजीव गांधी के राज में कल जो व्यक्ति वित्त मंत्रालय का काम देख रहा था, आज उसे शिक्षा मंत्रालय में फेंक दिया जाता है; जो संचार देख रहा था, उसे कृषि मंत्रालय में लगा दिया जाता है. और मजेदार बात यह है कि वह व्यक्ति, जिसे अपने विभाग का कखग नहीं आता, वह नियुक्ति के पांच घंटे बाद विभाग से संबंधित विशेषज्ञों की अंतर्राष्ट्रीय सभा में लंबाचौड़ा भाषण झाड़ता नजर आता है.

इस सब मोहरेबाजी का नतीजा यही होता है कि सरकारी काम अफसरों के हाथ में पूरी तरह आ जाता है. जो वे चाहते हैं, वही होता है. मंत्रियों को नकेल पहननी पड़ती है. जिधर सचिव और बाबू लोग उन्हें मोड़ते हैं, फाइल पर जो नोटिंग कर देते हैं, उसी ओर मंत्रियों को बरबस मुड़ना पड़ता है. आंख मींच कर हस्ताक्षर करने होते हैं.

इस प्रकार इन मंत्रियों का अपना दबदबा या स्वनिर्णय केवल इतने तक सीमित होता है कि वे अपनी जेबें भर सकें, अपने चहेतों, मित्रों, संबंधियों या रिश्वत देने वालों को ठेके दिला दें, लाइसेंस, परमिट दिला दें. उन्हें पैसा बनवा दें. या दोचार दस को मोटी तनख्वाह वाली नौकरियां दिलवा दें. बाकी सारा काम तो सचिव करते हैं. मंत्रिगण उन के लिखे भाषण पढ़ देते हैं, उन के लिखे उत्तर संसद में उगल देते हैं. बहस में बेतुकी बातें करते हैं. समाचारपत्रों में तो इन की संक्षिप्त, संपादित रिपोर्ट ही छपती है. आप अगर संपूर्ण, पूरा भाषण पढ़ें, तो आप स्तंभित रह जाएं कि क्या विषय था और क्या बोला जा रहा है. इस सिलसिले में राजधानी में एक किस्सा प्रचलित है.

भारत सरकार के एक सचिव नार्थ ब्लाक में बैठे अपने दोस्त से गप लड़ा रहे थे. बीच में बात मंत्री और सचिव की आ गई.

सरिता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

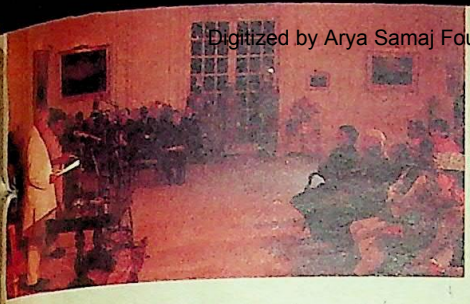

सचिव बोला, "देखो, मैं तुम्हें अभी करिश्मा दिखाता हूं. मैं मंत्री महोदय से स्वयं अपने को फांसी दिलाने के आदेश दिखाता हूं." इतना कह कर उन्होंने चटपट एक लंबा नोट तैयार किया. और उस के बीच में यह वाक्य भी जोड़ दिया कि संबंधित मंत्री को फांसी पर लटका दिया जाए. इस नोट को फाइल में लगा कर मंत्री महोदय के यहां भेज दिया. एक घंटे बाद फाइल मंत्री महोदय के यहां से लौट आई. और उस आदेश पर उन के स्वयं के दस्तखत थे!

खैर, सचिव ने वह नोट तो निकाल कर फाड़ डाला, पर मंत्रियों की योग्यता, कार्य-कुशलता पर एक बहुत बड़ा प्रश्नचिह्न अवश्य छोड़ गया.

*

मंत्रियों की गैरजिम्मेदारी, बेवकूफियों, अनभिज्ञता और वास्तविक अनपढ़ता का सुबूत हर रोज सरकार द्वारा विभिन्न आदेश निकाले जाना और दूसरे दिन उन में संशोधन करना है.

अभी हाल में प्रत्यक्ष कर कानून में संशोधन विधेयक संसद में जोरजबरदस्ती से पास करा लिया गया. जब स्वयं कांग्रेसियों ने इस पर आपत्ति की और कहा कि इतने महत्त्वपूर्ण दूरगामी परिणामों वाले विधेयक पर बारीकी से जांच व बहस होनी चाहिए, तो वित्त मंत्री महोदय ने कहा, " हम ने यह सब कर लिया है, बाजारों में इस पर बहस हो चुकी है, हर तरह से जांचपड़ताल हो चुकी है. और किसी देखभाल की आवश्यकता नहीं है."

पर इस के दूसरे दिन ही उन्होंने स्वीकार किया कि वास्तव में यह कानून काफी हद तक गलत और दुष्परिणाम वाला है और इस पर गौर किया जाएगा.

स्पष्ट है कि पहले जो वित्त मंत्रालय के सचिवों ने कहा वह आंख मूंद कर मान लिया गया, पर जब जनता पर उस के असर का पता चला तो मानना पड़ा कि सचिव व सरकारी अधिकारी जनता से कितने दूर, अपने वातानुकूलित कक्षों में बैठे जो पुलाव पकाते हैं वे सब खाने तो क्या, देखने योग्य भी नहीं होते.

जैसा कि इन पंक्तियों में पहले भी लिखा जा चुका है, और जिसे बारबार दोहराने की भी जरूरत है, आज सरकारी अधिकारी इस बात पर तुला बैठा है कि हर नागरिक से उस का अंतिम पैसा बटोर लिया जाए, उस की स्वतंत्रता छीन कर उसे सरकारी फाइलों में बंद कर दी जाए ताकि सत्तारूढ राजनीतिबाज व सरकारी अधिकारी गुलछर्रे उड़ा सकें, धौंस जमा सकें, जनता को अपना गुलाम बना सकें.

जनता द्वारा चुने हुए मंत्रियों व विधायकों का यह कर्तव्य होता है कि नौकरशाहों की इस प्रवृत्ति को दबा कर रखें. पर जब वे, मंत्रिगण, स्वयं निरक्षर भट्टाचार्य हों, जिन्हें अपने विभाग का कुछ पता न हो और जो आज इस खाने में बैठे हैं, कल दूसरे में होंगे या पिट कर बाहर फेंके जा चुके होंगे तो सरकारी अधिकारियों पर नियंत्रण कैसे रहेगा, कौन रखेगा? और सरकार जनता की क्या सेवा करेगी.

*

राज्यों के मुख्यमंत्रियों के उलटफेर जो 14 फरवरी को हुए, वह भी अलिफलैला की कहानियों से कम मजेदार नहीं हैं.

बिहार में बिंदेश्वरी दुबे की जगह भागवत झा आजाद बैठाए गए. मध्यप्रदेश में मोतीलाल वोहरा की बजाए अर्जुन सिंह स्थापित किए गए.

मुख्य मंत्री हमेशा विधान सभा के बहुमत वाले दल में चुनाव द्वारा सत्तारूढ होता है. पर यहां दोनों जगह मुख्यमंत्रियों का चुनाव रात के अंधेरे में 2 बजे, थोड़े से विधायकों को सोते से अचानक उठा कर,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

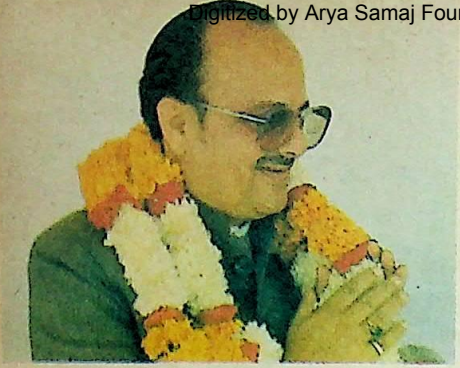

सभाभवन में ला कर, उन के हाथ उठवा कर किया गया. दल की न कोई बाकायदा बैठक हुई, न कोई चुनाव हुआ. ऊपर से आदेश दिया गया, नई दिल्ली के दूत प्रकट हुए, और विधायकों से आधे सोते आधे जागते 'हां' करा ली गई. जनतंत्र की काररवाई पूरी हो गई.

अब यदि दूसरी सुबह से ही असंतुष्ट विधायक शहंशाह के सामने दरख्वास्त पेश करने लगे कि इन्हें हटाया जाए, तो हर्ज भी क्या है. इस से दरबार की रौनक ही तो बढ़ती है. जब तक दरबार में सौ दो सौ याचक हाथ जोड़े खड़े दिखाई न दें तो दरबार ही क्या.

*

राज्यपाल राज्य प्रशासन का प्रमुख होता है. पर वास्तव में जहां तक सरकारी कामकाज का संबंध है, वह रबड़ की एक मुहर की तरह काम करता है. उस का काम मुख्य मंत्री द्वारा बनाई/चलाई जा रही सरकार के हर काम को अनुमोदित ही करना होता है. ऐसी ही संविधान की आत्मा और व्यावहारिक रीतिरिवाज की मांग है. बहुत से बहुत, अगर वह राज्य के किसी काम से सहमत नहीं होता या किसी कानून को ठीक नहीं समझता तो वह उसे राष्ट्रपति की स्वीकृति के लिए नई दिल्ली भेज सकता है.

राज्यपाल केंद्र से राष्ट्रपति यानी प्रधान मंत्री द्वारा नियुक्त किया जाता है. समयसमय पर वह केंद्र को राज्य की गतिविधि का लेखाजोखा भी भेजता रहता है. और समय आने पर प्रधान मंत्री यदि किसी राज्य सरकार को बरखास्त करवाना चाहता है तो वह उसे निकाल बाहर करता है. एक प्रकार से वह केंद्रीय सरकार का दूत होता है.

परंपरा यह है, यद्यपि आजकल मानी नहीं जा रही, कि राज्यपाल की नियुक्ति राज्य के मुख्य मंत्री की सहमति से होती है. पर अभी हाल में केरल में भूतपूर्व केंद्रीय मंत्री रामदुलारी सिन्हा को राज्यपाल मुख्य मंत्री ई.के. नयनार की सहमति के बिना थोपा गया है. हरियाणा में हरि आनंद बरारी को, जो केंद्रीय जासूस संस्थान के अध्यक्ष थे, लगाया गया है, बिना देवीलाल की सलाह के. इन राज्यों के राज्यपालों और मुख्य मंत्रियों में संघर्ष होने की काफी संभावना है.

इस समय भी एक राज्य आंध्र प्रदेश में राज्यपाल कुमुदबेन जोशी और मुख्य मंत्री रामाराव में काफी झगड़ा चल रहा है. यह इस हद तक बढ़ गया कि राज्य मंत्रिमंडल को कुमुदबेन जोशी के विरुद्ध औपचारिक प्रस्ताव पास कर के राष्ट्रपति को शिकायत करनी पड़ी कि गणतंत्र दिवस पर कुमुदबेन ने जो भाषण दिया वह राज्य सरकार के कार्यक्रमों की भर्त्सना करने वाला है.

इस के अतिरिक्त राज्य मंत्रिमंडल ने यह भी कहा है कि कुमुदबेन राजभवन में बैठ कर धन लुटा रही हैं.

क्योंकि राजीव गांधी ने अपनी छवि सुधारने के लिए हर बात में कांग्रेस विरोधी व्यक्तियों व दलों से मुठभेड़ करने का फैसला दिया है, इसलिए आंध्र प्रदेश की इस शिकायत पर होने वाला तो कुछ नहीं है. हां, इस से कांग्रेस और विपक्ष में कटुता अवश्य बढ़ेगी.

*

पिछले वर्ष दिल्ली विश्वविद्यालय के शिक्षकों ने तीन महीने की हड़ताल कर के मौज उड़ाई. सरकार की ओर से कहा गया था कि हड़ताल के दिनों का वेतन नहीं दिया जाएगा—काम नहीं तो दाम नहीं. पर अब पता चला है कि धीरेधीरे बातों के जाल में छिपा कर हड़ताल के समय का पूरा वेतन दे दिया गया है. इस प्रकार शिक्षकों को,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिन्होंने अपने क्षुद्र स्वार्थ के लिए विद्यार्थियों के जीवन के साथ खिलवाड़ किया, न केवल कोई दंड ही नहीं मिला, उलटे एक प्रकार से इनाम दिया गया है.

यह हड़ताल भी किसी उचित कारण से नहीं की गई थी. मुद्दा था कि इन लोगों को पदोन्नति बिना रोकटोक बिना योग्यता की जांच किए स्वयमेव होती रहे. अभी भी ये लोग वर्ष में तीन चार महीने काम कर के पूरे 12 महीने का वेतन लेते हैं. पर इस से भी संतुष्ट नहीं हैं और जैसा ये लोग पढ़ाते हैं, वह तो सर्वविदित ही है.

काम न करने पर भी सरकारी कर्मचारियों को पूरा पैसा मिलना देश की दो समय भी पेट भर सब्जीरोटी न मिलने वाली जनता का शोषण है. क्योंकि अंतिम रूप से सारा धन तो वहीं से बंदूक की नली के जोर पर टैक्स के रूप में आता है.

यह सोचना गलत है कि सरकार का धन थोड़े से अमीरों पर टैक्स से आता है 60,000 करोड़ के बजट में आयकर केवल 3,000 करोड़ होता है. बाकी वस्तुओं पर उत्पादन, बिक्री व आयात करों से पूरा होता है, जिस का सारा भार गरीब जनता पर पड़ता है. अमीर जो टैक्स देता है, वह अपनी सेवा या सामान का मूल्य बढ़ा कर पूरा कर लेता है.

*

देश में केंद्र और राज्य सरकारों की मनोवृत्ति ऐसी हो गई है कि वे किसी भी समस्या का हल शांति से बैठ कर बातचीत से करना ही नहीं चाहतीं. जब तक कोई मारकाट, तोड़फोड़ या विध्वंस न हो, वे बातचीत करना अपनी प्रतिष्ठा के प्रतिकूल समझती हैं.

27 जनवरी, 1988 से मेरठ में महेंद्र टिकैत के नेतृत्व में किसान आंदोलन चल रहा है. वह शांतिपूर्ण ढंग से कमिश्नर की कोठी का घेराव कर रहे हैं (इस से कमिश्नर को कोई असुविधा नहीं हुई. वह दूसरी जगह जा कर रहने लगे. उन की कोठी केवल एक सरकार, प्रशासन के चिह्न स्वरूप रह गई थी).

राज्य सरकार ने दो व्यक्तियों को किसान नेताओं से बात करने का नाटक करने के लिए भेजा. पर दोतीन दिन बाद बात बंद कर दी. किसानों ने प्रधान मंत्री से भी भेंट करनी चाही पर वहां से भी उन्हें दुत्कार दिया गया.

इस सब का नतीजा यह होगा कि पश्चिमी उत्तर प्रदेश और शायद सारे प्रदेश में भयंकर हिंसा काफी तेज हो गई तो सरकार अंत में मुंह की खा कर झुकेगी. क्योंकि जनशक्ति के आगे वह टिक नहीं सकती, चाहे राजनीतिबाजों का अहं कितना ही आड़े आए.

किसानों की मांगें आवश्यकता से अधिक हो सकती हैं. पर यह तो सौदेबाजी की बात है. हर पक्ष पहले बढ़ाचढ़ा कर मांग रखता है, अंत में लेदे कर फैसला होता है. पर बजाए बातचीत के राज्य सरकार, केंद्र की शह से, बातचीत ही से इनकार कर रही है और किसानों को यह कह कर कि वे कुलक हैं, धनाढ्य हैं, अमीर हैं, खेतिहर मजदूरों का शोषण कर रहे हैं बदनाम करने की कोशिश कर रही है.

लालबहादुर शास्त्री ने पाकिस्तान से लड़ाई जीतने के बाद नारा दिया था 'जय जवान, जय किसान.' इस नारे का बड़ा महत्त्व है. इस समय देश टिका हुआ ही जवान और किसान पर है इन की अवहेलना बड़ी ही दुखदायी हो सकती है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

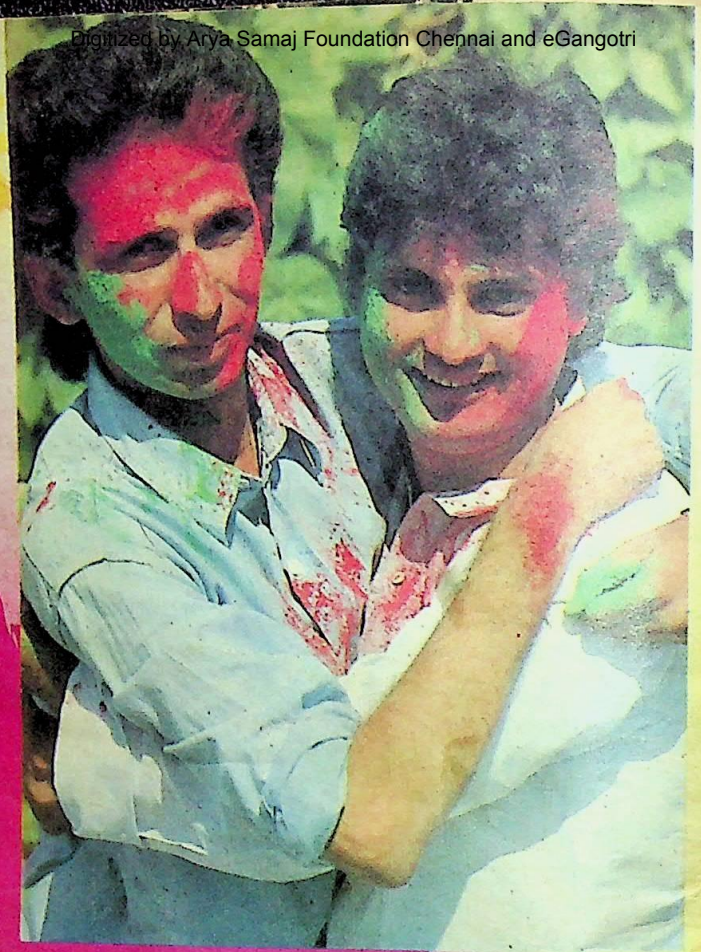

होली

हुड़दंग का नहीं, आत्मीयता का त्योहार

लेख • जगदीश चावला

बसंत ऋतु का प्रमुख पर्व होली प्राचीन काल से ही कृषि उपज और ऋतु परिवर्तन का उत्सव रहा है. प्राचीन ग्रंथों में इस उत्सव का उल्लेख मदनोत्सव के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूप में भी मिलता है. हर्ष के 'रत्नावली' नाटक और सोमदेव भट्ट के 'कथा सरित्सागर' में मदनोत्सव को हर्ष के प्रमुख सामाजिक उत्सव के रूप में प्रस्तुत किया गया है. तब इस उत्सव पर नगर का सारा वातावरण विविध रंगों से रंगीन हो उठता था. सर्वत्र हासपरिहास और नागरिकों के ठहाके सुनाई देते थे.

मुगल काल में होली का स्वरूप प्रमुख रूप से संगीतमय था. आगे चल कर संगीत पक्ष तो ग्रामीण अंचलों व लोकजीवन में ही सिमट गया और रंगोत्सव यानी 'होली' नगरीय सभ्यता में रचबस गई.

होली का त्योहार हमेशा से ही पारंपरिक सौहार्द, भाईचारे और रंगतरंग का अच्छा अवसर देने वाला पर्व रहा है.

लेकिन अब शहरों में होली की ठिठोली धीरेधीरे लुप्त होती जा रही है. शहरों में आजादी के बाद कुछ समय तक तो फिर भी कुछ जिंदादिली और मस्ती नजर आती थी, मगर वह भी अब आहिस्ता-आहिस्ता खत्म होती जा रही है. होली का स्वरूप पहले इतना विकृत और दहशत भरा नहीं था जितना कि अब हो गया है. सच तो यह है कि हल्ला मचाती होली अब हुड़दंग हो गई है.

एक बार होली के अवसर पर

होली का त्योहार आज अश्लीलता और फूहड़पन का पर्याय बनता जा रहा है. आइए हम आप को बताएं कि इस रंगबिरंगे त्योहार को शालीनता व स्वस्थ हासपरिहास के साथ कैसे मनाएं?

इस तरह गले मिलने से प्रेम और सौहार्द तो बढ़ता ही है, त्योहार का असली आनंद भी मिलता है (बाएं) जबकि हुड़दंग से त्योहार का मजा ही किरकिरा हो जाता है (नीचे).

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैदराबाद के मूसापेट क्षेत्र में कुछ शरारती लोगों ने रंग में तेजाब मिला कर उसे फैक्ट्री में काम पर जाते कर्मचारियों पर डाल दिया था, जिस से 14 व्यक्ति बुरी तरह जल गए थे.

इसी तरह, एक दूसरी होली पर भुवनेश्वर में शराब में धुत्त एक हरिजन ने एक सवर्ण हिंदू को कुछ अपशब्द कह दिए थे, जिस पर हुड़दंग मचाने वालों ने समूची बस्ती पर धावा बोल दिया था और दो व्यक्तियों की हत्या तथा चार को बुरी तरह जख्मी कर दिया गया था.

सहारनपुर में कुछ युवकों ने मसजिद से आते दो मुसलमानों पर रंग फेंक दिया था जिस का उन्होंने बुरा माना और तनाव बढ़ गया था.

होली के दिन एक बार अजमेर मेडिकल कालिज के छात्रावास के सामने मेडिकल कालिज के लड़के भंग पी कर नशे में नंगे हो कर नाचने लगे थे.

होली की आड़ में इस तरह की हरकतें और अश्लीलता का नंगा नाच अब कहीं भी देखा जा सकता है. रंगों के इस रंगबिरंगे त्योहार के बदसूरत होने का एक मुख्य कारण यही है कि त्योहार में पहले जैसी आत्मीयता, स्वस्थ हासपरिहास और शालीनता नहीं रह गई है. होली अब अश्लीलता और फूहड़पन का पर्याय बनती जा रही है. इस त्योहार को अब इतना दूषित कर दिया गया है कि अच्छेभले और सभ्य लोगों को इस से अरुचि होने लगी है.

एक तो बढ़ती महंगाई के कारण वैसे भी होली के रंग अब फीके हो गए हैं. दूसरे, इस त्योहार पर टेसू के फूलों से उतरे रंगों की जगह नकली, घटिया व हानिकारक रासायनिक रंग, पानी, तारकोल, गंदी नालियों का कीचड़ आदि तक एकदूसरे पर फेंका जाने लगा है, जिस से लगता है कि इस अच्छेखासे त्योहार ने अपनी सार्थकता, अपने सारे मूल्य ही गंवा दिए हैं.

होली के दिन गुलाल और अबीर तो अब भी उड़ते हैं, मगर लगता है कि लोगों को होली खेलना तो याद रह गया है परंतु इस के पीछे जो भावना थी, उसे वे भूलते जा रहे हैं. पहले जहां होली के दिन भाईचारा बढ़ाने, बदला चुकाने और मनमुटाव दूर करने की भावना होती थी, वहां आज लोग दूसरों से बदला लेने का बहाना ढूंढ़ते हैं. त्योहारों पर की गई अशिष्ट व अभद्र हरकतों का अंजाम भी कभीकभी बड़ा दुखद और मनोमालिन्य पैदा करने वाला होता है.

होली पर होने वाले हास्य सम्मेलनों और गप्प गोष्ठियों में भी अब फूहड़पन और अश्लीलता ही देखने को मिलती है. पहले होली के साथ जुड़े हास्य का रूप यही था कि समाज में घुस रही कुरीतियों व रूढ़ियों की खिल्ली इस ढंग से उड़ाई जाए कि उस से समाज को सुधार का संदेश मिले. तब यदि किसी व्यक्ति विशेष को उपाहास का पात्र बनाया भी जाता था तो यह ध्यान में रखते हुए कि वह अपनी करनी पर लज्जित तो जरूर हो, मगर उस का सामाजिक निरादर न हो. अब चूंकि पहले जैसे आदर्शों को होली के साथ हास्य में पिरोना हर किसी के लिए संभव नहीं रहा, अतः हास्य की उन्मुक्तता भी अब उद्दंडता में बदलती जा रही है.

गुलाल और अबीर तो जरूर लगाइए मगर रिश्तों की सीमा में रह कर.

सरिता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुरुषों के साथ होली खेलते समय महिलाओं को भी मर्यादा में रहना चाहिए.

अभी पिछली ही होली के दिन दरियागंज के कुछ उद्दंड युवकों ने होली जलाने के नाम पर एक गरीब सब्जी वाले का तख्त ही अग्नि की भेंट चढ़ा दिया था. माना कि कुछ धर्मपरायण लोग होलिका दहन के नाम पर गलीमहल्ले के चौराहों पर ईंधन फूंकने की रस्म निभाते हैं. पर ऐसी रस्म के लिए किसी बेचारे फलवाले की खाली पेटियां या सब्जी वाले का तख्त जलाने में कौन सी नेकनामी है. दूसरों की आजीविका के साधनों को जबरदस्ती स्वाहा कर के संबंधों को आत्मीय कैसे बनाया जा सकता है?

वैसे भी आजकल जहां ईंधन का उपयोग समझदारी से होना चाहिए वहां त्योहारों के नाम पर उस की बरबादी को उचित भी कैसे ठहराया जा सकता है? हिंदुओं के ज्यादातर सामाजिक त्योहारों को धार्मिक जामा पहना दिया गया है, जिस से वे विशुद्ध स्वरूप को खो कर अंधविश्वासों, आडंबरों, झूठी मनौतियों और अविश्वसनीय कथाओं को माननेमनाने के ही पर्व बन गए हैं. यह एक विडंबना है.

फिर भी होली का त्योहार चूंकि उल्लास, उमंग और मौजमस्ती का त्योहार है, अतः इसे ऐसे ढंग से मनाना चाहिए कि यह उत्सव हुड़दंग न हो कर आपसी रिश्तों को मजबूत व आत्मीय बनाने वाला सिद्ध हो.

बच्चे तो बच्चे, होली के दिन कई समझदार और प्रौढ लोग भी छेड़छाड़ और छिछोरेपन की हरकतों से बाज नहीं आते. माना कि होली पर की गई ठिठोली और छेड़छाड़ को ज्यादा बुरा नहीं समझा जाता, पर क्या यह जरूरी है कि इस दिन पुरुष ननदोई, देवर, दोस्त कुछ भी बन कर और ऐसे रिश्तों की दुहाई दे कर स्त्रियों से न चाहने पर भी हंसीठट्ठा करें?

होली के अवसर पर नाहक किसी लड़की को रंग मलना तो वैसे भी एक बदतमीजी है. पर यदि कोई लड़की रिश्तों का लिहाज कर के अपने चेहरे पर गुलाल लगवा भी लेती है तो इस का यह अर्थ कदापि नहीं है कि वह होली के बहाने पुरुष को छीनाझपटी या अपने शरीर के अतिक्रमण की छूट दे देती हैं. चूंकि कई लोग अब रिश्तों की आड़ में ढांवकुंवं रंग लगाने को अपना अधिकार मानने लगे हैं, इसलिए आत्मीयता में भी खिंचाव आने लगा है.

परिचय के दायरे में कुछ महिलाएं भी पुरुषों से होली खेलती हैं. जहां पर संबंध घरेलू व घनिष्ठ होते हैं, वहां पर गलतफहमी की गुंजाइश नहीं रहती. मगर पिछली बार अंजना के पति की एक निजी सचिव जब होली खेलने आई तो उस ने पहले अंजना को ही रंग लगाया. इस से अंजना को बुरा नहीं लगा. मगर जब वह उस आगंतुक महिला के लिए कुछ नाश्तेपानी का इंतजाम करने लगी तो उस ने देखा कि उस के पति भी अपनी सचिव के साथ रंग खेलने में बड़े मेहरबान हुए जा रहे हैं और वह भी उन को रंग लगालगा कर उन पर न्योछावर हुई जा रही है. दोनों की यह हरकत अंजना के सीने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

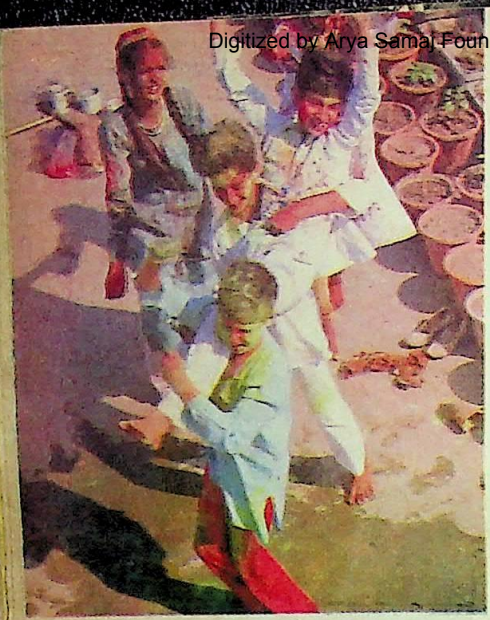

आपस में मिलजुल कर होली खेलने का मजा ही कुछ और है.

पर सांप हो उठी.

और तभी से अंजना अपने पति को भी शक की निगाहों से देखने लगी है.

भले ही यह सब स्वाभाविक तौर पर हुआ हो, मगर क्या अंजना जैसी स्त्रियां अपने पति को किसी दूसरी महिला पर होली के बहाने कुरबान होते सहन कर सकती हैं. यदि नहीं, तो क्यों न होली को इस ढंग से मनाया जाए कि संबंधों में शक होने या उन में दरार पड़ने की गुंजाइश ही न रहे.

होली चूंकि नए संबंधों को आत्मीय बनाने का और पुराने प्रगाढ़ संबंधों को तरोताजा करने का पर्व है, इसलिए होली मनाते समय यह जरूर सोचना चाहिए कि ढेरों बेहूदगियों के रहते हुए भी इस त्योहार को अर्थवान कैसे बनाया जाए?

होली 'मिलन' का त्योहार है, स्त्रियों को छेड़ने या उन के शरीर पर जबरदस्ती हाथ फेरने का नहीं. अतः जहां इस बात की मर्यादा को बनाए रखना जरूरी है वहां होली के अवसर पर नशा और नशीले पदार्थों से दूर रहना भी आवश्यक है. होली के अवसर पर भांग छानने और नशा करने की बुरी आदत अब भी कई तबकों में विद्यमान है. होली पर शराब और स्मैक के नशे में गिरतेपड़ते अनेक लोग इधरउधर दिखाई दे जाते हैं. ऐसे लोगों में गालीगलौज और सिर फुटव्वल तक होना सामान्य बातें हैं.

रमा का देवर अजय नशा तो क्या सिगरेट तक भी नहीं पीता था. मगर होली के दिन उस के कुछ यारदोस्तों ने उसे भांग के पकौड़े खिला दिए. भांग की मस्ती में हंसी के फव्वारे छोड़ता हुआ अजय जब अपने घर पहुंचा तो यहां उस की हरकतें असामान्य हो गईं. वह पागलपन की सीमा तक जा पहुंचा. उस का कई महीनों से मानसिक इलाज हो रहा है. अब उस को भांग खिलाने वाले यारदोस्त उस का कुशलक्षेम पूछने तक नहीं आते.

नशे की बुराइयों से परिचित होते हुए भी नशा करना समझदारी नहीं है. हां, होली को यादगार बनाना हो तो इस अवसर पर अपने शुभचिंतकों से उपहारों का आदान-प्रदान कीजिए. ऐसा करना भी होली के उत्साह को गहरा करना है. होली के अवसर पर मीठे या नमकीन व्यंजनों से किसी का स्वागतसत्कार करने की बात तो फिर भी समझ में आती है, लेकिन ऐसे मौकों पर किसी को शराब पिला कर या नशीली चीजें खिला कर उस का तमाशा देखना पहले दर्जे की बेहूदगी है.

बुरा तो यह भी है कि कुछ लोग होली के अवसर पर अपने ही रंगदार कपड़ों की चिंदीचिंदी कर के अपना हुलिया मजनुओं जैसा बना लेते हैं और फिर छज्जे पर खड़ी किसी युवती को देख कर उसे लैलालैला पुकारने लगते हैं. ऐसे ही लोगों के हुड़दंग से होली की मौजमस्ती स्वाभाविक नहीं रह पाती.

होली पर ढलती हुई गर्मजोशी और इस में घटती हुई रुचि का कारण यह भी है कि अधिकांश लोगों को दूसरों पर फिकरे कसने और अवांछनीय उपाधियां बांटने का हुड़दंग तो याद रहता है पर वे अपनों से बिगड़े हुए संबंधों को 'आत्मीय' बनाने का सबक पूरी तरह भूल जाते हैं. ●

सरिता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होली के रंग करें बदरंग

लेख • डा. विजयकुमार

लो फिर आ गई होली. चारों तरफ, जिधर देखो उधर रंग ही रंग. कहीं लाल तो कहीं हरा, कहीं नीला तो कहीं पीला. जिसे भी देखिए वही सराबोर है किसी न किसी रंग में.

होली भारतवासियों, विशेषकर उत्तरी भारत में रहने वालों का एक प्रमुख रंगारंग त्योहार है. इस की उत्पत्ति के बारे में ठीक से तो कुछ पता नहीं है, लेकिन जितने भी पुराने इतिहास पर दृष्टि डाली जाए भारतीय सभ्यता में होली के प्रमाण जरूर मिलते हैं. वैसे सचाई तो यह है कि जब से मानव और प्रकृति के बीच एक तारतम्य, एक रिश्ता स्थापित हुआ है तभी से मनुष्य मौसम में होने वाले प्रत्येक परिवर्तन को हर्षोल्लास से मनाता आ रहा है. हमेशा जाने वाले मौसम को खुशीखुशी विदाई और आने वाले मौसम का जोरदार ढंग से स्वागत होता रहा है.

होली भी दो मौसमों की संधि का पर्व

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है. इस समय सर्दी विदा ले रही होती है और वसंत का आगमन होता है. चूंकि वसंत ऋतु भी रंगों का मौसम है, संभवतः इसी लिए होली को भी रंगों के त्योहार के रूप में मनाने की प्रथा पड़ी. इसे वसंतोत्सव के रूप में भी जाना जाता है.

लेकिन आज के युग में रंगों के इस त्योहार ने अपने अंदर छिपे संदेश से परे घिनौना रूप ले लिया है कि प्रत्येक वर्ष अनेक लोग होली के रंगों की पीड़ा बरसों तक झेलते रहते हैं. कुछ लोगों पर तो ये रंग जीवन भर के लिए एक अमिट छाप छोड़ जाते हैं.

याद रहे, प्राचीन काल में मनुष्य सभी प्रकार के रंग प्रकृति से, पेड़पौधों से प्राप्त करता था, जो हमें किसी तरह की हानि नहीं पहुंचाते थे. होली में पहले मुख्यतः गुलाल का प्रयोग होता था. यह भी सप्पन अथवा ब्राजील वृक्ष (इसे पतंग वृक्ष भी कहते हैं) की छाल से प्राप्त किया जाता था. लेकिन आज बाजार में मिलने वाले सारे रंग विभिन्न रसायनों के मिश्रण से तैयार किए जाते हैं. इन में से कुछ तो अम्लीय होते हैं तथा कुछ क्षारीय. इन सभी रंगों को वस्त्रोद्योग में प्रोटीन से तैयार धागों, जैसे ऊन अथवा रेशम आदि को रंगने के लिए तैयार किया जाता है.

होली में इन्हीं रंगों का प्रयोग होता है क्योंकि ये सस्ते होते हैं और पानी में थोड़ी मात्रा में ही मिलाए जाने पर काफी चटक रंग देते हैं. लेकिन यह संभवतः बहुत कम लोगों को मालूम है कि होली जितनी ही रंगीन होती है, अपने वर्तमान रूप में कभीकभी उतनी ही खतरनाक हो सकती है. और कोईकोई होली के दीवाने रंगों के साथ उछलकूद के कुछ ही समय पश्चात अपने हाथपैरों एवं चेहरे पर छोटेछोटे दानों, फुंसियों, फफोलों के साथ किसी डाक्टर के यहां जाने को मजबूर हो जाते हैं. और हर हालत में ये फफोले प्रभावित स्थान की त्वचा ले कर ही जाते हैं.

होली आई है तो ऐसा कैसे हो सकता है कि आप होली न खेलें. लेकिन क्या कभी आप ने यह भी सोचा है कि इस मौके पर प्रयोग किए जाने वाले रंग आप की त्वचा को कितना नुकसान पहुंचाते हैं?

इन रंगों में छिपे हुए अम्ल अथवा क्षार त्वचा के लिए बहुत ही हानिकारक होते हैं. इन के प्रभाव से सब से पहले त्वचा में खुजलाहट शुरू होती है. इस को यदि आगे न बढ़ने दिया जाए तो ठीक है, अन्यथा थोड़ी ही देर बाद त्वचा पर सफेद रंग के छोटेछोटे दाने उभर आते हैं. और इन में बहुत ही खुजलाहट होती है. इन दानों में और कुछ नहीं, बल्कि सीरम और मवाद भरा होता है और ये त्वचा को बहुत अधिक नुकसान पहुंचाते हैं.

इस अवस्था में भी यदि उपचार कर लिया जाए तो स्थिति अधिक गंभीर नहीं होती. लेकिन यदि इसे बिना उपचार के छोड़ दिया जाए तो इस पर धूप लगने से स्थिति और खराब हो जाती है. इन रंगों से त्वचा को होने वाली हानि का कारण है इन में मिले हुए अम्लों और क्षारों का त्वचा के बाहरी स्तर 'एपीडर्मिस' को नुकसान पहुंचाना. यह बाहरी त्वचा सामान्य अवस्था में सुरक्षा कवच का काम करती है.

जिन लोगों की त्वचा शुष्क होती है उन के लिए तो इन रंगों का प्रभाव और भी हानिकारक होता है. इसी तरह पुरुषों की तुलना में महिलाओं और बच्चों की त्वचा भी इन से प्रभावित होती है. क्योंकि उन की त्वचा अधिक मुलायम रंग में मिले अम्लों व क्षारों के प्रति अधिक संवेदनशील होती है.

पेंट, ग्रीज, तारकोल आदि का प्रयोग तो और भी खराब होता है. फिर भी इन सब का प्रयोग दिनप्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है.

अरिता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

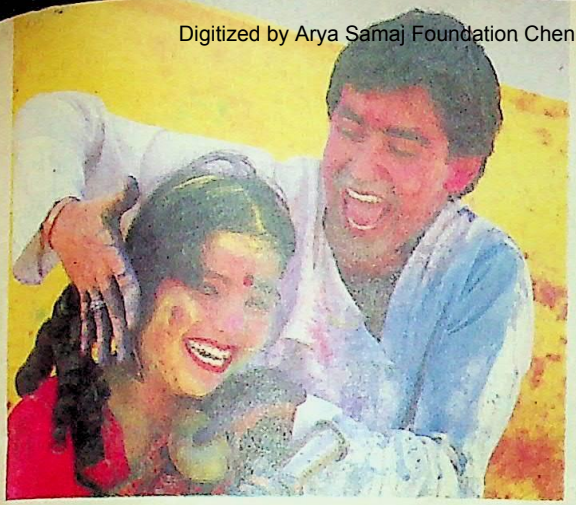

होली पर गुलाल का खेल : सुरक्षा की दृष्टि से अधिक देर तक न खेलें.

ये त्वचा को बहुत अधिक हानि पहुंचाते हैं. ये सभी धीरेधीरे त्वचा को जला देते हैं. और इन को छुड़ाने के लिए प्रयुक्त मिट्टी का तेल तथा कठोर साबुन रंग तो जरूर छुड़ा देते हैं लेकिन त्वचा पर इन के घातक प्रभावों को और अधिक गंभीर बना देते हैं.

सिंदूर का प्रयोग भी बहुत हानिकारक होता है. सिंदूर में सीसे के आक्साइड अथवा अन्य धातुओं की मिलावट होती है. बहुत बार इस में एक बहुत ही हानिकारक रंग 'पैराफेनिल डाइअमीन' की मिलावट होती है. ये तत्त्व त्वचा पर अमिट छाप छोड़ सकते हैं. जिन की त्वचा बहुत अधिक संवेदनशील होती है, उन को ये सफेद दाग जैसा भद्दा रोग दे सकते हैं. इस प्रकार की घटनाएं सामने आ चुकी हैं..

गलती से होली की मस्ती में सूखा रंग खा जाने अथवा रंग का गाढ़ा घोल पी जाने से जान से हाथ धो बैठने तक की नौबत आ जाती है.

कैसे सुरक्षित रहें?

अब प्रश्न उठता है, होली में अपने को सुरक्षित रखने के लिए क्या करें? इस का सब से सरल, सुविधाजनक और सुरक्षित तरीका है बाजार में मिलने वाले रासायनिक रंगों से दूर रहा जाए. बुराई की जड़ यह है कि कोई भी रंग केवल होली को ध्यान में रख कर तैयार नहीं किया जाता, बल्कि वस्त्रोद्योग तथा अन्य उद्योगों के लिए तैयार किए गए रंगों का ही इस में प्रयोग होता है.

यदि रंग से खेलना आवश्यक ही हो तो केवल सूखे गुलाल से ही काम चलाया जा सकता है. लेकिन सुरक्षा की दृष्टि से यह खेल भी अधिक देर नहीं चलना चाहिए क्योंकि अधिक देर तक गुलाल खेलने से पसीना छूटता है और गुलाल इस पसीने में घुल जाता है. तब यह गुलाल आसानी से त्वचा में प्रवेश कर जाता है और अपना असर दिखाने लगता है.

शरीर के अधिक संवेदनशील एवं नाजुक अंगों को रंगों से दूर रखने और बचाने की अधिक जरूरत होती है.

होली खेलने के तुरंत बाद स्नान बहुत ही जरूरी है, लेकिन ध्यान रहे, रंग छुड़ाने के लिए कठोर और कपड़े धोने वाले साबुन का प्रयोग कभी न करें. रंग छुड़ाने के लिए हलदी, दही, चूने के पानी का प्रयोग भी कभी न करें, नहीं तो परेशानी और भी बढ़ जाएगी. स्नान और रंग छुड़ाने के पश्चात किसी कोल्ड क्रीम अथवा ऐसी ही अन्य क्रीम का प्रयोग लाभदायक होता है.

वैसे होली खेलने का सब से सुरक्षित तरीका होता है पेड़पौधों से प्राप्त रंगों से होली खेलना. टेसू का फूल पानी में थोड़ी देर तक भिगोए जाने पर बहुत ही बढ़िया लाल रंग देता है जो बिलकुल हानिकारक नहीं होता. भारत के कुछ भागों में होली खेलने के लिए इसी रंग का प्रयोग होता है और यदि बर्मा की तरह होली खेली जाए तो किसी तरह की शारीरिक हानि होने का कोई प्रश्न ही नहीं उठेगा. वहां रंगों का प्रयोग बिलकुल नहीं होता. उस के स्थान पर सुगंधित गुलाब जल का प्रयोग होता है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्यार-दुलार...
ममता और डालडा
ये सदाबहार रिश्ते

बच्चों की खुशियों में झलके आपका प्यार-दुलार, और खुशी-भरी इन घड़ियों का आधार है प्यार से पकाए हुए भोजन का खास स्वाद. वही प्यार-भरा स्वाद जो कभी आपको मिला था अपनी मां से, डालडा में पके भोजन से. विटामिन युक्त असली वनस्पति डालडा, जो आज भी उतना ही शुद्ध है. इसीलिए केवल यही आपकी कसौटी पर खरा उतरता है. ये जीवन से जुड़ी खुशियां, ये डालडा में पकाया हुआ भोजन, भुला सकता है कोई?

डालडा असली वनस्पती

आज भी ममता की कसौटी पर खरा

LIPTON MEANS QUALITY

LIL/DLD/2/1710

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

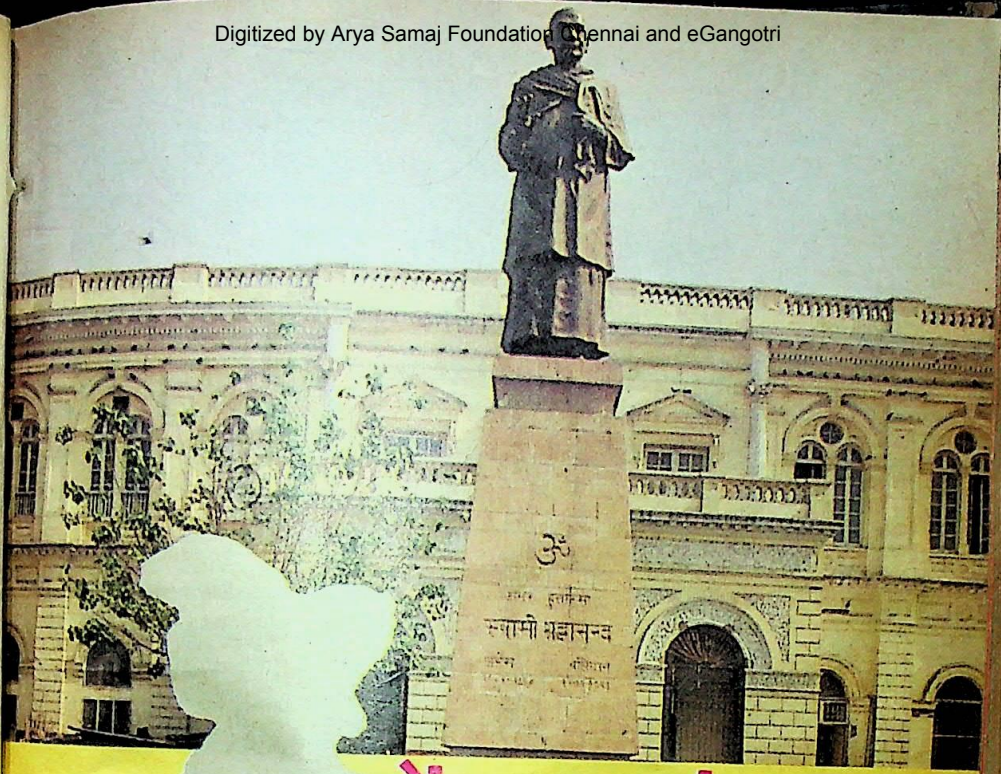

भारत में प्रजातंत्र की जड़ें सूखती जा रही हैं

लेखक • यमुना दत्त वैष्णव 'अशोक'

विश्व के सब से बड़े प्रजातंत्र भारत की राजधानी दिल्ली के नगर निगम और महानगर परिषद के चुनावों को एक वर्ष के लिए स्थगित कर दिया गया है. यह स्थानीय निकायों के चुनावों का स्थगन वही मनमानी असंवैधानिक प्रक्रिया है, जिस की मार से उत्तर प्रदेश की जनता पिछले दो दशकों से अपने ही घरों और नगरों में बिना पानी और रोशनी के बंदियों जैसा जीवन बिता रही है. उत्तर प्रदेश के समस्त महानगरों, नगरपालिकाओं, नगर समितियों के चुनाव गत 12-15 वर्षों से नहीं हुए हैं. फलस्वरूप जनता से अपने ही घर की सफाई, प्रकाश, पेय जल और आनेजाने के रास्तों का प्रबंध करने का अधिकार शासन ने बिना किसी अपराध के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नागरिकों की सुविधाओं के लिए गठित की गई नगरपालिकाएं वर्तमान समय में न केवल अनापशनाप कर लगा कर, करों में अंधाधुंध वृद्धि कर नागरिकों के लिए मुसीबत पैदा कर रही है, बल्कि प्रजातंत्र के मूलभूत सिद्धांतों को भी खत्म करने पर आमादा हैं.

छीन लिया है. प्रदेश भर के 58 जिलों में नगरपालिकाएं भंग कर दी गई हैं. जो कार्य इन स्थानीय निकायों की नगर समितियों के निर्वाचित सदस्य और अवैतनिक चेयरमैन करते थे, उसे मंडल आयुक्तों और जिला अधिकारी के अधीन नियुक्त प्रशासकों को सौंप दिया गया है.

नगर प्रशासकों की कार्य प्रणाली का एक ज्वलंत उदाहरण नैनीताल की नगरपालिका है. भारत में इंगलैंड का एक टुकड़ा कही जाने वाली इस नगरी के निवासी अपने नगर का स्वयं ही प्रबंध सन 1842 से चलाते चले आ रहे थे. सन 1960 के दशक में प्रदेश की यह सब से संपन्न, आत्मनिर्भर और सब से स्वच्छ नगरपालिका मानी जाती थी. अवैतनिक चेयरमैन हर करदाता नगरवासी की सुविधा का स्वयं को जिम्मेदार मानते थे. कहीं शिकायत आ जाए कि पानी नहीं है अथवा बिजली नहीं आ रही है तो स्वयं शिकायत करने वाले के घर पर पहुंच कर संबंधित अधिकारियों को वहीं तलब करते थे.

चेयरमैन के चुनाव का मुद्दा ही उस के नगर की समस्याओं की जानकारी और उन के समाधान के प्रति जागरूकता होती थी.

जब सन 1985 की वर्षा ऋतु में नगर के सब से पुराने हस्पताल में पानी नहीं पहुंचा तो इस की शिकायत संबंधित अभियंता से की गई. उन्होंने इसे जल निगम द्वारा बनाई गई नई पाइप लाइन का दोष बताया. जल निगम के ध्यान में यह बात लाई गई तो उन्होंने बताया कि प्रदेश सरकार इस के लिए दोषी है, जो उन को नलों के रखरखाव के लिए वित्तीय संसाधन नहीं देती है.

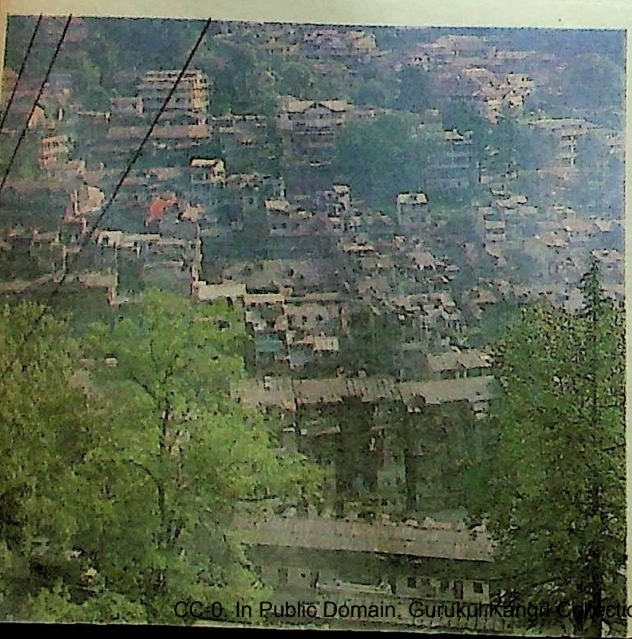

नागरिकों ने इस संबंध में पर्वतीय विकास मंत्री को ज्ञापन दिया. इस पद पर श्री वीर बहादुरसिंह के मंत्रिमंडल के राज्य मंत्री रामअवतार दीक्षित हैं. पर्वतीय जिलों के भूगोल, उन की संस्कृति और उन के इतिहास से वह अनभिज्ञ ही हैं. उन्होंने यह बात एक कान से सुनी और दूसरे कान से

नैनीताल की खूबसूरत वादियों में रहने वाले लोगों को स्वतंत्रता के 40 साल बाद भी अंगरेजों द्वारा लादा गया मुंड कर देना पड़ता है.

अरिता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निकाल दी. स्थानीय विधायक किशनसिंह तड़ागी नगरपालिका के अंतिम निर्वाचित चेयरमैन रह चुके हैं. उन से भी जनता की यह दुर्दशा छिपी नहीं है, किंतु वह भी कुछ सुधार करने में असमर्थ हैं, क्योंकि वह सत्ताधारी दल के ही हैं. आखिरकार इस क्षेत्र के विधायक नित्यानंद स्वामी ने विधान परिषद में यह प्रश्न उठाया. इस घटना को भी आज डेढ़ वर्ष हो गया है. वर्तमान में स्थिति यह है कि रैमजे हस्पताल के साथ पूरे इलाके में गत एक महीने से पानी नहीं आया है. यदि इस मकान के पीछे एक प्राकृतिक जल का स्रोत न होता तो जाने किन मुसीबतों का सामना करना पड़ता.

पानी की आपूर्ति की हालत देख कर भी नगरपालिका के प्रशासक द्वारा गृहकर और सफाईकर मनमाने ढंग से बढ़ा दिए गए हैं. मेरे घर 'वैष्णव कुंज' के आवासीय कक्ष का सन 1986-87 तक वार्षिक मूल्यांकन 1,000 रुपए था और गृहकर वार्षिक 100 रुपए था. मेरी छः मास की अनुपस्थिति के समय बिना मुझ से जानकारी प्राप्त किए इस कक्ष का मूल्यांकन वर्ष 1987-88 में 9,600 रुपए कर दिया गया है. गृहकर का सवा गुना सफाई कर और इसी दर पर जलकर लगा दिया गया है. इस प्रकार मैं अपने इस मकान की पानी और सफाई का कर जो पहले 350 रुपए वार्षिक देता था, अब बारह गुना अर्थात 4,200 रुपए देने को बाध्य हूं. समय पर न दूं तो 20% की छूट यानी 840 रुपए की बचत नहीं होगी. अगले वर्षों में देय धनराशि बढ़ती जाएगी.

इस मनमानी वसूली के विरुद्ध कोई अपील भी तब तक नहीं की जा सकती, जब तक कर चुका न दिया जाए. नैनीताल की नगरपालिका की आय का एक प्रमुख स्रोत मुंडकर (चुंगी) है, जो बस से नगरपालिका क्षेत्र में प्रवेश करने वाले हर व्यक्ति से दो रुपए और कार से आने वाले हर व्यक्ति से तीन रुपए वसूल किया जाता है.

हर पहाड़ी नगर को अपंग, भीख मांगने वाले लुच्चेलफंगों से मुक्त रखने के लिए यह कर अंगरेज शासकों के समय से चला आ रहा था. गृहकर आदि टैक्सदाता नागरिकों को इस प्रवेशकर से मुक्त रखा जाता था. आज स्थिति यह है कि सभी

पाठकों की समस्याएं

कानूनी समस्याएं

मेरे पति की मृत्यु के बाद मेरी ससुराल वालों ने मुझे बच्चों सहित घर से निकाल दिया. मेरे दो बच्चे हैं. मैं दूसरा विवाह करना चाहती हूं. परंतु मेरी ससुराल वाले कहते हैं कि दूसरा विवाह करने पर वे बच्चों को अपने साथ रखेंगे. मैं अपने बच्चों को अपने साथ ही रखना चाहती हूं. इस स्थिति में क्या कानूनी तौर पर वे मेरे बच्चों को मुझ से छीन सकते हैं?

हिंदू अल्पसंख्यक और संरक्षणकर्ता अधिनियम-1956 की धारा 6(ए) के अनुसार किसी बच्चे का स्वाभाविक संरक्षक उस का पिता है और पांच वर्ष की आयु तक बच्चा मां के संरक्षण में रह सकता है. इस बीच बच्चे की मां के जिंदा रहने पर भी, यदि बच्चे का पिता अपनी मृत्यु से पहले किसी और को अपने बच्चे का संरक्षक नियुक्त कर जाता है तो धारा 9(2) के अनुसार उस नियुक्ति का कोई कानूनी महत्त्व नहीं होता.

धारा 13 के अनुसार बच्चों की रुचि व उन का हित ही सब से अधिक महत्त्वपूर्ण मुद्दा है. इसलिए बच्चे तो आप के पास ही रहेंगे. लेकिन आप यदि दूसरा विवाह कर रही हैं तो बच्चे अपने दादादादी के पास ही ज्यादा खुश रहेंगे और आप का वैवाहिक जीवन ज्यादा आसान रहेगा.

मेरी मां और मौसेरे भाई ने मिल कर एक जमीन खरीदी, जिस की रजिस्ट्री मेरी मां के नाम है. उन के मौसेरे भाई ने धोखा दे कर जमीन की रजिस्ट्री के कागज अपने पास रख लिए हैं. नौटरी की सहायता से पूरी जमीन के कागज अपने नाम लिखवा कर मेरी मां से उस पर हस्ताक्षर करवा लिए हैं. अब वह किसी दूसरे आदमी को पूरी जमीन बेच रहे हैं.

पंजीकरण अधिनियम की धारा-17 के अनुसार 100 रुपए से अधिक मूल्य की किसी भी अचल संपत्ति की खरीद व हस्तांतरण की रजिस्ट्री करवाना जरूरी है. आप के पत्र के अनुसार जो भी कागज आप की मां के मौसेरे भाई ने नौटरी के सामने पंजीकृत करवाए हैं, उन का कानूनी तौर पर कोई महत्त्व नहीं है. इसलिए यदि जमीन की रजिस्ट्री के कागज आप की मां के पास नहीं हैं और जमीन पर कब्जा भी नहीं है तो उस रजिस्ट्री की प्रमाणित प्रतिलिपि सबरजिस्ट्रार के कार्यालय से निकलवाने का प्रयत्न करिए और प्राप्त हो जाने पर कचहरी से स्थगन आदेश ले लीजिए. आप की मां के मौसेरे भाई को जमीन बेचने का कानूनन कोई हक नहीं है. आप तुरंत उस जमीन पर कब्जा प्राप्त करने की कोशिश करिए. **—मनजीत चावला, एडवोकेट** ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

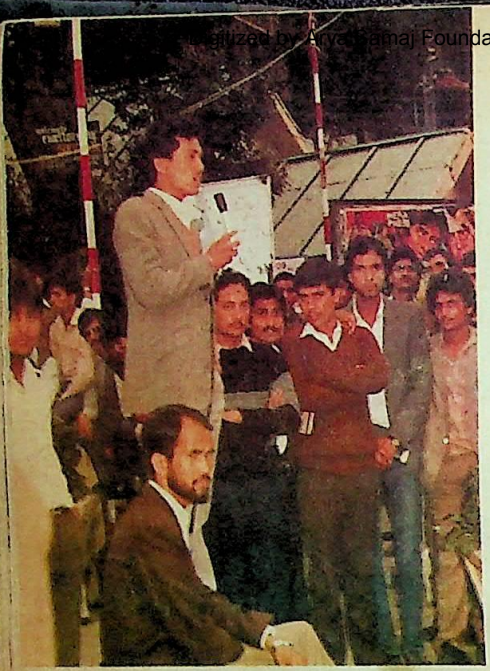

अपने अधिकारों की रक्षा के लिए नागरिक चाहे कितने भी प्रदर्शन आदि करें, प्रशासकों के कानों पर जूं तक नहीं रेंगती.

सरकारी नौकर इस कर से मुक्त हैं और स्वयं नगरवासी (बाहर से अपने घर लौटने पर) को यह कर देना पड़ता है.

नगरवासियों ने इस कर का कई बार विरोध किया है, परंतु नगर प्रशासकों ने सुनीअनसुनी कर दी है. बूढ़े और अशक्त लोग तीर्थ यात्रा से अपने घर वापस लौटने पर, मुंडकर न दें तो उन्हें शहर सीमा पर उतर कर आठ किलोमीटर पैदल आना पड़ता है. वे तब याद दिलाते हैं कि यह तो गोरखाली हो गई है.

नैनीताल के गोरखा शासकों (1790-1815 ई.) के समय गैर नेपाली को दो रुपए वार्षिक मुंडकर देना पड़ता था. जो परिवार यह कर चुकाने में असमर्थ होता था उस के सभी सदस्यों को पकड़ कर हरिद्वार ले जाया जाता था. वहां बच्चों, बूढ़ों सभी को गुलाम मंडी में नीलाम कर दिया जाता था.

आम लोगों का शासन, आम लोगों के लिए और आम लोगों के द्वारा, यही लोकतंत्र का मूल-सिद्धांत है. उत्तर प्रदेश में आज नगरपालिकाएं जिन प्रशासकों द्वारा संचालित हैं, वे उस नगर के निवासी नहीं हैं और उन को उस से कोई प्रेम नहीं है. उस नगर को सजा संवार कर रखने, उस की सफाई और वहां के निवासियों के स्वास्थ्य में भी उन की कोई रुचि नहीं है. वे किसी विदेशी सरकार के नगर अधिकारी की भांति समय पर वेतन व कम काम कर के अधिकतम सुविधा की ही अपेक्षा में रहते हैं. जनसेवा उन का ध्येय नहीं होता है. वे नैनीताल में आ कर अपना कार्यकाल जैसेतैसे पूरा करते हैं. उन के निकम्मेपन की शिकायत हो जाए तो वे उस का स्वागत करते हैं क्योंकि इस पहाड़ी स्थान में रहना महंगा है और ऊपरी आमदनी के उतने स्रोत नहीं हैं, जितने अन्य मैदानी नगरों में होते हैं.

प्रदेशभर की 2,000 से अधिक स्वायत्तशासी नगरपालिकाओं और नगर क्षेत्रीय समितियों में मूलभूत भूतपूर्व नागरिक अधिकारों की प्राप्ति के लिए जनता बारबार स्थानीय निकायों का चुनाव कराने की मांग करती आ रही है, पर प्रदेश शासन के कान पर जूं तक नहीं रेंगती. विपक्षी दलों ने चुनावों की मांग को ले कर आंदोलन चलाए, प्रदर्शन किए, कहींकहीं तो जिलाधिकारी पर पानी न मिलने पर मुकदमा भी दायर किया गया, लेकिन सब कुछ टांयटांय फिस हो कर रह गया. कुछ प्रबुद्ध नागरिकों ने उच्च न्यायालय में याचिका प्रस्तुत की. उस का अंतिम निर्णय सर्वोच्च न्यायालय द्वारा मई 1987 में यह दिया गया कि प्रदेश सरकार छः मास के अंदर स्थानीय निकायों के चुनाव कराए.

गत नवंबर, 1987 में यह छः मास की अवधि भी समाप्त हो गई. प्रदेश सरकार ने यह नहीं बताया कि कब तक चुनाव होंगे. न्यायालय की अवमानना के अपराध में प्रदेश के मुख्य मंत्री के विरुद्ध इलाहाबाद उच्च न्यायालय की लखनऊ पीठ में रिट दायर की गई, पर उस का भी कोई परिणाम नहीं निकला. दिसंबर 1987 के मध्य में उच्च

(शेष पृष्ठ 186 पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यदि आपका जन्म १९६३ से पहले हुआ है तो इस विज्ञापन को ध्यान से पढ़िए

२५ साल से अधिक उम्र वाले १० में से ९ लोगों के बाल झड़ रहे हैं.... लेकिन उन्हें इसका पता नहीं!

क्या आप उन ९ लोगों में से एक हैं? तब तो आज ही यह परीक्षण कीजिए

अपने बालों को ज़ोरों से कंघी कीजिए. अगर कंघी पर बाल उतर आएं तो समझ लीजिए आपके बाल झड़ रहे हैं.

इसका हल है — प्योर सिल्विक्रिन

बालों के झड़ने का कारण है —ज़रूरी अमिनो एसिड्स की कमी — जो आपके बालों की कुदरती ख़ुराक है. केवल प्योर सिल्विक्रिन में ही वैज्ञानिक अनुसंधान से बना वह फार्मूला है जो इस कमी को पूरा करता है.

इसके कारण हैं :

१. प्योर सिल्विक्रिन १७ अमिनो एसिड्स का अनोखा मिश्रण है — आपके बालों की कुदरती ख़ुराक.

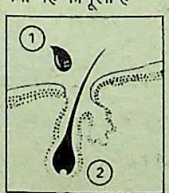

२. नोबेल पुरस्कार विजेता अनुसंधान तकनीक यह प्रमाणित करती है कि प्योर सिल्विक्रिन बालों की जड़ों तक बहुत जल्दी पहुंचता है, बालों में कुदरती ख़ुराक की कमी पूरी करता है और बालों को फिर से स्वस्थ बनाता है.

उत्तम परिणाम के लिए प्योर सिल्विक्रिन को सर की त्वचा पर तब तक प्रतिदिन दो बार मलिए जब तक आपके बालों का स्वास्थ्य सामान्य नहीं हो जाता.

प्योर सिल्विक्रिन अमरदा है — नोबेल पुरस्कार विजेता अनुसंधान तकनीक का प्रमाण

OBM/571/HIN M

प्योर सिल्विक्रिन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

यूलिप सदस्य बनिये
और अन्तर महसूस करिये

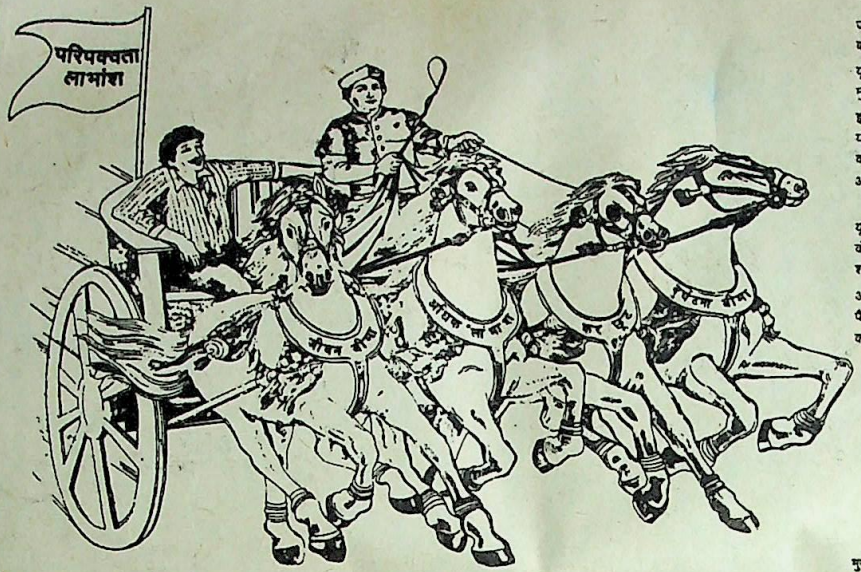

जब आप यूलिप सदस्यता ग्रहण करते है तो आप निर्विघ्न व सुरक्षित जीवन यात्रा की ओर अग्रसर होते है।

यूलिप ही केवल ऐसी योजना है जो आपको जीवन बीमा के संग-संग अधिक लाभ, मुफ्त दुर्घटना बीमा एवं कर छूट देती है।

इसके अतिरिक्त, आपके द्वारा रु. 4,000 प्रति वर्ष का अंशदान 10 वर्षीय योजना के अंतर्गत लगभग रु. 75,000 हो जाता है तथा रु. 2,600 प्रति वर्ष का अंशदान 15 वर्षीय योजना के अंतर्गत रु. 1,00,000 से ऊपर हो जाता है आपको हर अंशदान पर 80 सी के अन्तर्गत कर छूट प्राप्त है।

यूलिप सदस्यता ग्रहण करना बहुत आसान है वह भी बिना किसी डाक्टरी परीक्षा के। आपको केवल पूरा आवेदन पत्र भर कर पंजाब नैशनल बैंक की किसी भी शाखा अथवा यू.टी.आई. के किसी भी कार्यालय में जमा कराना होगा।

आवेदन पत्र के लिए किसी भी पंजाब नैशनल बैंक की शाखा, युनिदा हिन्दुस्तान पैट्रोलियम पम्प, यू.टी.आई. के ऐजेन्ट, मुख्य प्रतिनिधि अथवा यू.टी.आई. कार्यालय से सम्पर्क करें।

कृपया मुझे यूलिप की पुस्तिका मुफ्त भेजें

नाम _____

पता _____

_____

भारतीय यूनिट ट्रस्ट

(सार्वजनिक क्षेत्र की निवेश संस्था)

मुख्य कार्यालय : 13, न्यू मैरिन्स लाइन्स, बम्बई- 400 20 फोन : 286-3767

क्षेत्रीय कार्यालय : गुलाब भवन, 6, बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली- 331-9786, 331-8638.

शाखा कार्यालय : (उत्तरी क्षेत्र)

लुधियाना : सोहन पैलेस, 455, दी माल, लुधियाना 141 001 फोन : 38373

कानपुर : वीरेन्दस्मृति, 15/54 ए, सिविल कोर्ट्स रोड, सिविल लाइन्स, कानपुर- 280 001 फोन : 211858

जयपुर : पील मुटीर, डी- 43, ए, सुभाष मार्ग, सी-स्कीम, जयपुर 302001 फोन : 68312.

• आकर्षक लाभांश • विश्वसनीय • सुरक्षित • बचत

*(परिपक्वता बीमा सहित)

BDK-2052

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हम भी

एक था बनियों का जमाई. वह गरमियों में अपनी ससुराल गया, अपने जाट मित्र को साथ ले कर. वहां उस की बहुत खातिर हुई, "कुंवरजी क्या पिएंगे?" "कुंवरजी लस्सी पिएंगे." "कुंवरजी क्या खाएंगे?" "कुंवरजी कल्फी खाएंगे?" "कुंवरजी कहां सोएंगे?" "कुंवरजी छत पर सोएंगे." जाट अपने दोस्त का आदरसत्कार देखदेख कर हैरान हो रहा था.

खैर कुछ समय बाद उस की भी बन आई. कड़कती ठंड में वह अपनी ससुराल पहुंचा और शुरू की अपनी खातिर करवानी. "कुंवरजी क्या पिएंगे?" कुंवरजी ने शान से मांग की "लस्सी !" सब हैरान ! कुंवरजी इतनी ठंड में लस्सी ! पर जो बनियों का जमाई कर सकता है वह जाट का जमाई क्यों नहीं? कुंवरजी ने लस्सी पी, कुल्फी खाई और छत पर सोने चले. सब ने बहुत मना किया, "कुंवरजी बहुत ठंड है." पर जब बनियों का जमाई छत पर सो सकता है तो वह क्यों नहीं? तो जाट का जमाई छत पर चादर तान कर सोया और सुबह हमेशा के लिए ठंड में जबड़े कसे हंसता हुआ पाया गया.

ये 'जाट के जमाई' सिर्फ कहानियों में ही नहीं पाए जाते. जरा आसपास नजर डालिए, कितने ही जाट के जमाई मिल जाएंगे. आप को अपने पड़ोस में ही ऐसे किसी सज्जन की स्त्री झींकती मिलेगी. अब इन के दोस्त अफसर हैं तो हम उन की बराबरी कर सकते हैं क्या? महीने में दो बार उन के यहां दावत होती है और दो बार हमारे

व्यंग्य • नलिनी शर्मा

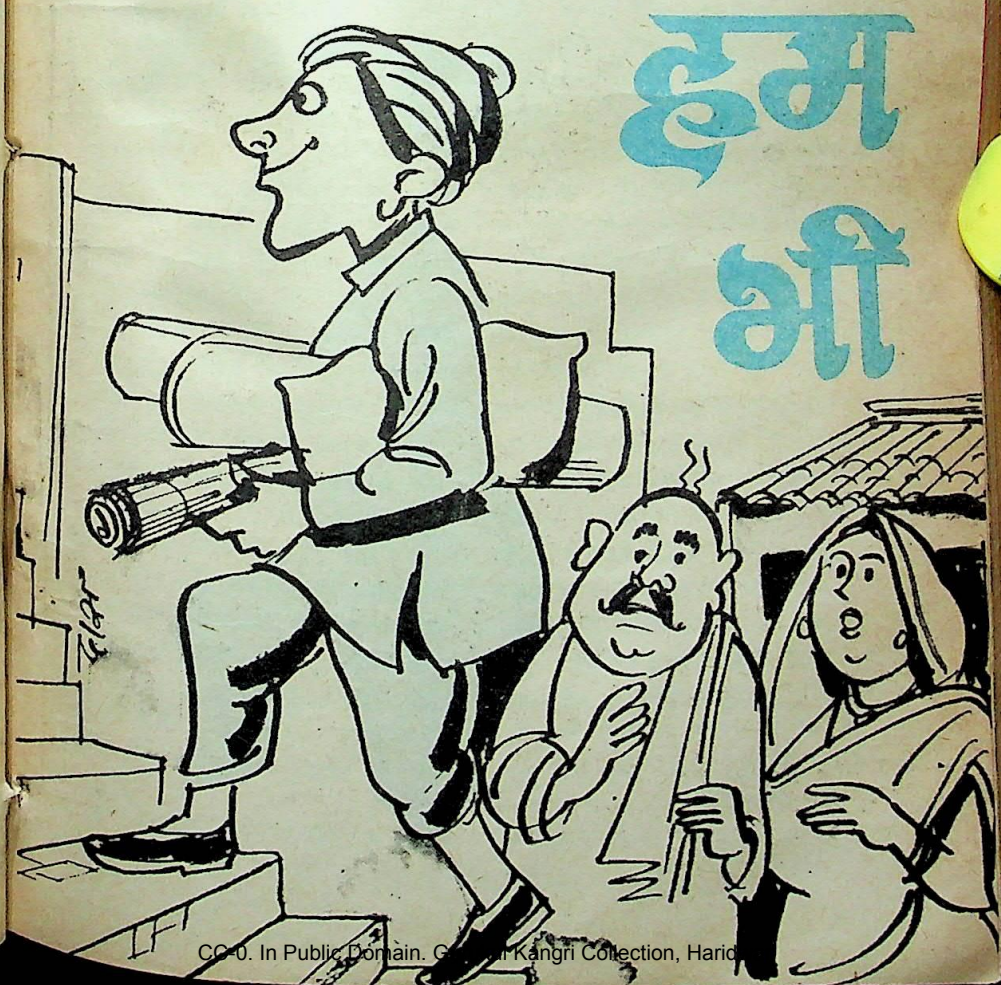

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यहां. और ये उन्हीं की तरह की दावत देंगे. इन दावतों के बोझ तले घर का बजट कुचला जाता है.''

दोस्त को अगर वह अपने अनुसार दावत देते तो भी दोस्ती में कतई कोई फर्क आने वाला नहीं था. पर जाट के जमाई वाली मनोग्रंथि उन्हें चैन नहीं लेने देती. देखिए, यह मनोग्रंथि घर के बजट और पत्नी के गुस्से पर भी भारी पड़ गई.

हमारे पिताजी के एक मित्र हैं. उन के बच्चे की परेशानी यह थी कि वह जरा देर से पैदा हुआ था. साथ के मित्रों के बच्चे उस के बड़े होने तक 'उदाहरण' बन चुके थे. और सारा दिन उन के इकलौते की शामत आई रहती, ''राधेश्याम के लड़के को देखा है, कितने सलीके से बोलता है.'' या ''अंबाप्रसाद के बच्चों को देखा है, सब छात्रवृत्ति ले रहे हैं और एक यह है... ''

और उन 'जाट के जमाई' का बेटा इस बोझ तले न लंबाई में बढ़ रहा है, न चौड़ाई में और न अक्ल में. उसे देख कर मुझे लगता है कि अच्छा हुआ जाट के जमाई का किस्सा जल्दी खत्म हो गया. अगर बनिए के जमाई की एक आंख वाली संतान होती हो तो वह अपने बच्चों की एक आंख खुद ही घटा देता.

आप को बता दूं कि इस बीमारी के लगने के लिए किसी प्रतिस्पर्धी का होना जरूरी नहीं. इस के कीटाणु लोगों की प्रशंसात्मक दृष्टि से भी फैलते हैं. मेरा इस बीमारी को इतनी बारीकी से जानने का कारण क्या है? मेरे खयाल से आप समझ ही गए होंगे. जी हां, मैं भी इस बीमारी से ग्रस्त रह चुकी हूं. पूरे एक वर्ष और वह बहुत ही दुखदायी वर्ष रहा. अंगरेजी में एम. ए. करने के बाद जरमन में डिप्लोमा करतेकरते प्राध्यापक की नौकरी मिल गई और लोगों की आंखों में प्रशंसा और ईर्ष्या की मिली जुली चमक ने हमारी अक्ल पर परदा नहीं, बल्कि तिरपाल डाल दिया.

हम ने 'जाट का जमाई' बनने की दिशा में पहला कदम उठाया और प्रशासनिक सेवाओं का फार्म भी भर दिया और अगले सत्र के लिए एम. फिल. की प्रवेश परीक्षा का भी. उस वर्ष की उपलब्धि थी, चारों चीजों में असफल होने का कीर्तिमान.

यह बीमारी व्यक्तिगत स्तर पर तो फैलती ही है. इस का दौरा व्यापक रूप से भी पड़ सकता है. यानी 'जाट के जमाइयों' का संप्रदाय बन जाता है.सब से ताजा रोगग्रस्त बिरादरी उभर रही है 'कंप्यूटर पीढ़ी.' जब यूरोप और अमरीका में छःछः श्रमिकों और अध्यापकों का काम कंप्यूटर कर सकता है तो हमारे यहां क्यों नहीं. इस से हमारे यहां उन्नति होगी. हम आगे बढ़ेंगे. जी हां, बेरोजगारों की पंक्ति में एकएक कर के नहीं, छःछः कर के. 'जाट का जमाई' तो सर्दियों में लस्सी पिएगा और हम कंप्यूटर लगाएंगे.

सब सामयिक विषयों पर आप को जानकारी देता है दूरदर्शन. जैसे देश की नब्ज पर हाथ रखे हुए हो. देश में कैंसर का रोग बढ़ रहा हो, एड्स या गोरबाचौफ, यह सब की जानकारी आप के लिए सहज उपलब्ध कराता है. 'जाट का जमाई' बनने के बारे में तो दूरदर्शन ने देश की नब्ज पर हाथ ही नहीं रखा है. बल्कि उसे छूत भी लग गया है. इस का उदाहरण है 'ब्रेकफास्ट टेलीविजन.'

जब विदेशों में प्रातः प्रसारण हो सकता है तो यहां क्यों नहीं. चाहे सामाजिक व पारिवारिक स्थितियां भिन्न ही नहीं, विपरीत क्यों न हों, वहां अधिकतर लोगों का प्रातःकार्य दाढ़ी बनाने, अखबार पढ़ने तक

ईर्ष्या और प्रतिस्पर्धा के मामले में 'जाट के जमाई' का किस्सा बहुत प्रसिद्ध है. क्या कभी आप ने अपने गिरेबान में झांक कर देखा है कि कहीं आप भी तो इसी ओर नहीं बढ़ रहे?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही सीमित होता है और यहां दूध लाने से ले कर, गरमठंडा स्नान और ठाकुरजी के आगे घंटी टुनटुनाना भी जरूरी है. वहां स्कूल, कालिज, दफ्तर भेजने का कोई खास आयोजन नहीं होता और यहां नाश्ता खिलाने और टिफिन साथ बांधने में भेजने वालों को 'ब्रेकफास्ट' की भी सुध नहीं होती. यानी राजीव गांधी के शब्दों में कहें तो "मैं... दा... नों... का... ढां... चा... पहा...ड़ों में इस्तेमाल किया जा रहा है."

अलबत्ता ब्रेकफास्ट टेलीविजन तो शुरू हो ही गया है. देखिए 'जाट के जमाई' की दोनों बिरादरियां कितने तारतम्य से काम कर रही हैं. कंप्यूटर लगा कर बेरोजगार बैठेंगे और मजे से टेलीविजन देखेंगे. न काम पर जाने का झंझट, न भेजने का.

सारी विज्ञापन कंपनियां इसी मनोग्रंथी के बूते पर पनप रही है. "भला उस की साड़ी मेरी साड़ी से सफेद कैसे." चाहे अधिकतर महिलाओं के पास दिन भर की फुर्सत हो और सूजी, चावल, मकई, केला सब रसोई में रखा हो, पर वे अपने सलौने के लिए 'बेबी फूड' के डब्बे जरूर लाएं. और लाती भी हैं. विदेशों में भी तो स्त्रियां बेबी फूड लाती हैं. क्योंकि 'जाट का जमाई' बनने में ही समझदारी है.

गोरखा लिबरेशन फ्रंट, सिख लिबरेशन फ्रंट और असम लिबरेशन फ्रंट के होते हुए भी एक आशा की किरण बाकी है. संस्कृति, वेशभूषा और भाषा के फर्क से 'जाट का जमाई' बिरादरी में कोई फर्क नहीं आएगा. अमेठी से बटाला तक हम एक हैं तो बोलिए हम सब एक हैं. ●

"भला उस की साड़ी मेरी साड़ी से सफेद कैसे?" ऐसी ईर्ष्या की भावना से सभी बेजार हैं. ▲

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

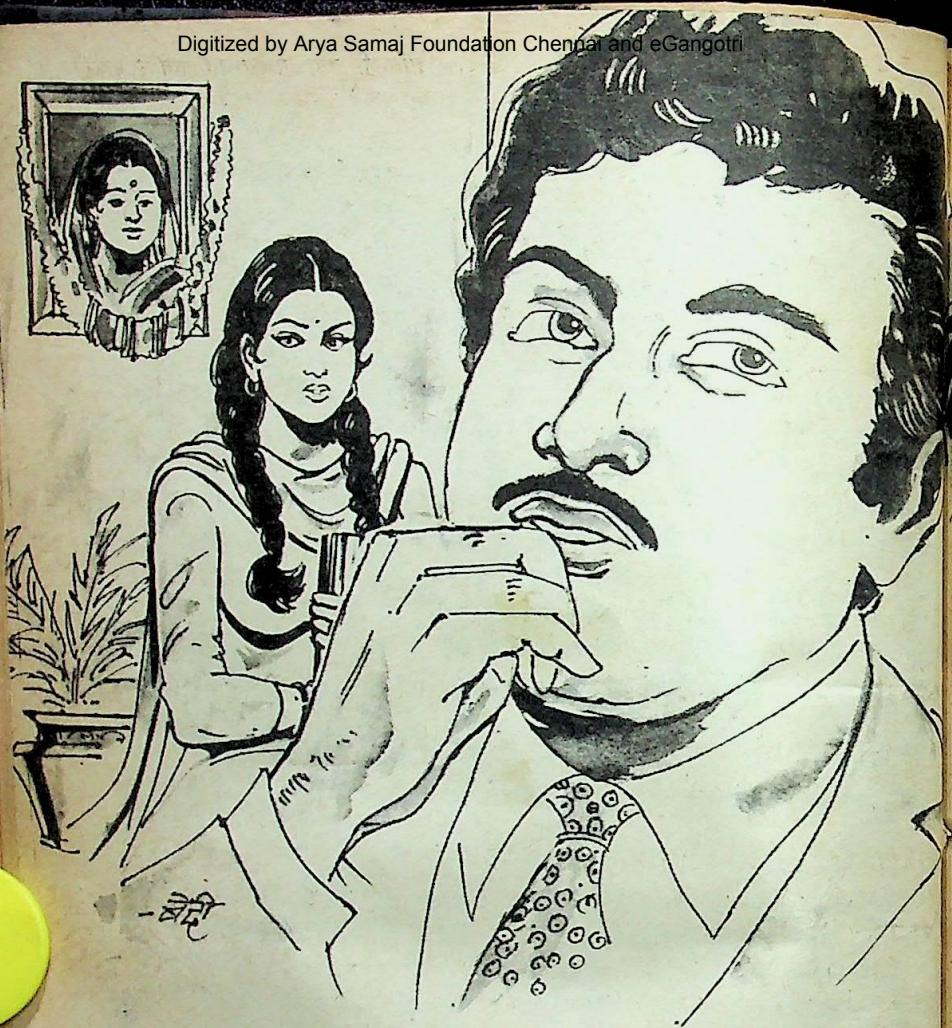

रिश्तों की डोर

कहानी • हीरा लाल ठाकुर

जीवन में सब कुछ ठीक चल रहा होता है. मनुष्य अपनी इच्छा से जीवन यापन कर रहा होता है. एकाएक अनपेक्षित, अनचाही आंधी आती है और सारी जीवन व्यवस्था बिगाड़ देती है.

यह आंधी कभीकभी मौत भी ले आती है. कहां से लाती है? क्यों लाती है? उसी समय क्यों लाती है? ऐसे अनेक प्रश्न मनुष्य के मन में उठते हैं. क्या हमारे पास उन सब के उत्तर हैं? न भी हों तो भी जीवन को तो जीना ही पड़ता है. जीवन कोई ऐसी बाजी तो नहीं है कि हमारी जीत हो तो खेलेंगे और हार हो तो नहीं खेलेंगे. यह खेल तो आखिरी सांस तक खेलना ही पड़ता है.

कभीकभी लगता है कि संसार का हर मनुष्य जीवन का खेल अपनी मरजी के खिलाफ ही खेल रहा है. उन्हें देख कर विश्वास नहीं आता कि संसार में वे लोग भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

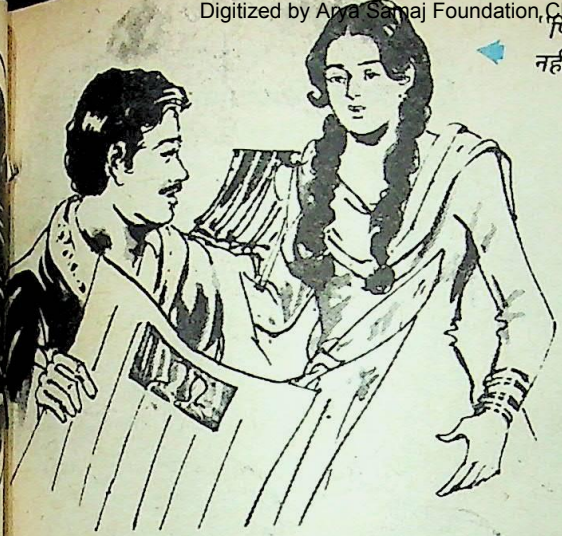

पिताजी, क्या आज सुबह आप ने अखबार नहीं पढ़ा?" अंजु ने अपने पिता से पूछा.

तुम्हारी माताजी का देहांत हुआ है न?

"जी," कहते हुए अंजु ने अपनी स्कर्ट की जेब से रूमाल निकाला और गीली आंखें पोंछने का प्रयत्न करने लगी.

"आज तुम्हें स्कूल नहीं आना था."

"मैडम, मैं भी नहीं आना चाहती थी पर पिताजी ने मुझे जबरदस्ती भेजा है. कहने

मां के देहांत के बाद अंजु के खिलते हुए व्यक्तित्व पर ही नहीं, उस की पढ़ाई पर भी कुहरा सा छा गया था. यह देखते हुए अध्यापिका किरण द्वारा वार्षिक परीक्षा के पूर्व उसे अपने घर ले जा कर परीक्षा की तैयारी में मदद देना क्या केवल हमदर्दी थी या इस में उस का अपना कोई स्वार्थ था?

होंगे जो इस खेल में हर बार जीतते ही हैं और उन की हार कभी नहीं होती. किरण भी उन्हीं लोगों में से एक थीं.

उस समय किरण को देख कर यही एहसास होता था कि वह जीवन पर अपनी मरजी नहीं लाद सकी, जीवन उस की मरजी पर लद गया है. वह अपनी कक्षा में थी और हाजिरी ले रही थीं, "अरुणा, अचला, अंजली, अंजु..."

वह अंजु के नाम पर खुद ही रूक गई थीं. उस दिन अंजु को अनुपस्थित रहना था. पर नाम पुकारने पर 'यस मैडम' का स्वर उन्होंने सुन लिया था. बिना नजरें ऊपर उठाए ही उन्होंने अंजु का नाम दोबारा लिया. 'यस मैडम' का उत्तर उन्होंने दोबारा सुना. रजिस्टर से नजरें ऊपर उठा कर उन्होंने देखा. अंजु उपस्थित थी. उसे संबोधित कर के कहा, "आज तुम स्कूल क्यों आई हो?"

"क्यों, मैडम?"

"परसों ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगे, घर में रहोगी तो मां की याद आएगी. स्कूल जाओगी तो पढ़नेलिखने में और सहेलियों के साथ समय कट जाएगा."

"तुम्हारे पिताजी बहुत कठोर आदमी हैं."

"ऐसा मत कहिए, मैडम. मैं ने उन्हें इतना रोते हुए कभी नहीं देखा है."

"मां की मौत के बाद तीसरे ही दिन बेटी को स्कूल भेजना कठोरता नहीं है तो क्या है?"

"मेरे पिताजी को ऐसा मत कहिए, मैडम."

"अच्छा स्कूल छूटने पर मुझ से मिलना," अध्यापिका किरण ने डांटते हुए आदेश दिया.

शाम के पांच बज चुके थे. अंजु के सब घंटे समाप्त हो चुके थे. वह मां की यादों के भंवर में उलझा मन लिए स्टाफ रूम के बाहर आ कर किरण की बाट देख रही थी.

किरण ने अपने सारे काम निबटाए और स्टाफ रूम के बाहर आ कर देखा तो अंजु खड़ी थी.

"चलो, आज तुम्हारे घर चलते हैं." किरण अंजु के साथ हो गई.

दोनों पैदल ही चलने लगीं. जब वे स्कूल के फाटक के बाहर आईं तो किरण ने अंजु से पूछा, "तुम्हारी मां को क्या बीमारी थी?"

"पता नहीं, मैडम. उन्हें पेट में दर्द होता था. कभीकभी तो वह दर्द के मारे रात भर कराहती रहती थीं. पिताजी ने कई डाक्टरों से इलाज कराया. पर कोई लाभ नहीं हुआ. जिस दिन उन्हें खून की उलटी हुई, उसी दिन उन की मृत्यु हो गई."

"कौन से हस्पताल में भरती किया गया था?"

"जी, सरकारी हस्पताल में."

"वह हस्पताल में कितने दिनों तक रहीं?"

"20 दिन."

दोनों बातचीत करतेकरते वेरायटी चौक तक पहुंच गई थीं. एकाएक कुछ याद करते हुए किरण ने अंजु से कहा, "अंजु मैं तुम्हारे घर किसी और दिन आऊंगी. अभी मुझे एक जरूरी काम याद आ गया है."

और वह अपने घर की ओर मुड़ गई. अंजु कुछ न समझ सकी. वह देख रही थी कि किरण अपने घर की दिशा में बड़ी तेजी से चली जा रही है.

दूसरे दिन स्टाफ रूम में चाय के वक्त अध्यापिकाओं में गपशप हो रही थी. किरण ने विमला से कहा, "आप को मालूम है, हमारी कक्षा की अंजु की मां की मृत्यु हो चुकी है."

"अंजु अरविंद न. मैं जानती हूं उस लड़की को. पिछले साल वह मेरी ही कक्षा में थी. बड़ी दुखी है बेचारी." विमला ने कहा, "पर कल तो वह स्कूल आई थी."

"हां"

"बड़ी प्यारी लड़की है."

"बड़ी होशियार भी."

"किस की बात हो रही है? जरा हम भी तो सुनें," बीच में टोकते हुए शीला ने कहा.

"अंजु अरविंद की."

"अंजु अरविंद तो 10 वीं में पढ़ती है. किरण की कक्षा में है, वही न? सुना है, उस की मां को कैंसर हो गया था," शीला ने कहा.

"मैं ने तो सुना था कि आखिरी समय तक डाक्टर इस बीमारी का पता ही नहीं लगा सके थे." विमला ने कहा.

तब तक शीला तीन प्याली चाय ले आई थी. एक विमला और दूसरी किरण को थमाते हुए कहने लगी, "अंजु तो प्रथम श्रेणी लाने वाली लड़की है. पर इस साल तो उसे बोर्ड की परीक्षा में बैठना है."

"पता नहीं परीक्षा दे भी पाएगी या नहीं," विमला ने आशंका प्रकट की.

"क्यों विमला, इतनी छोटी उम्र में इस लड़की पर दुखों का पहाड़ टूट पड़ा है. क्या करेगी बेचारी? पति कैसे सह लेते होंगे पत्नी की मृत्यु का दुख?" किरण ने पूछा.

"बहुत समझदार हैं अरविंदजी. उन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eG

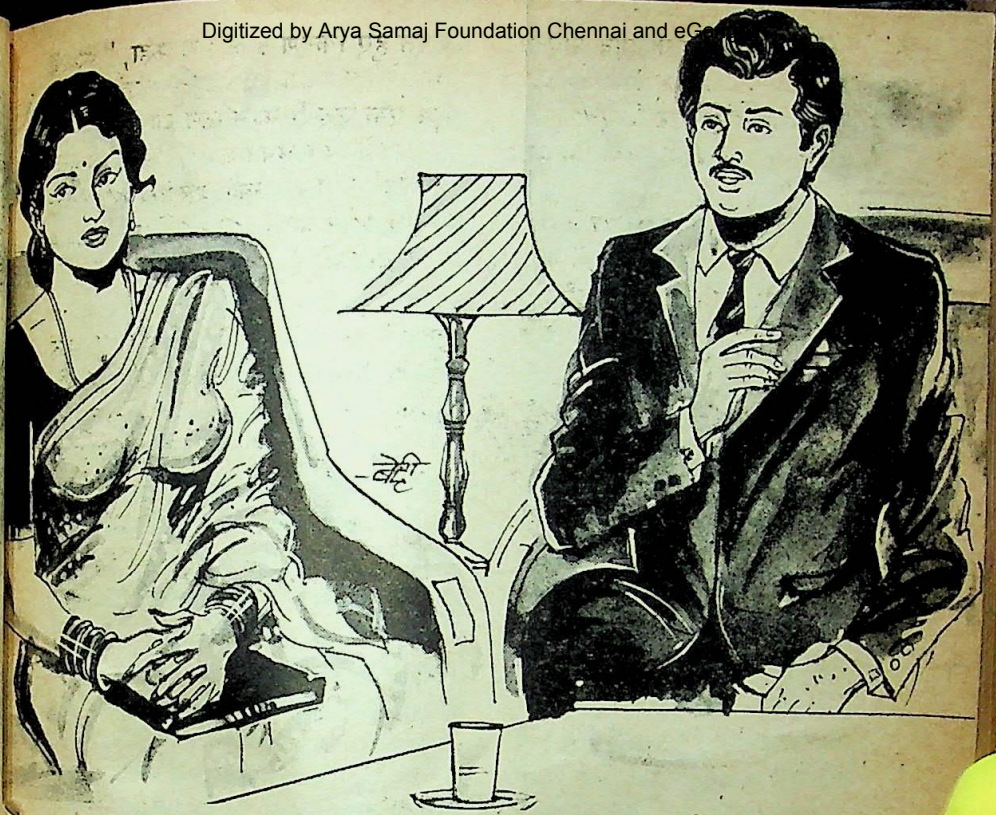

की पत्नी भी कुछ कम नहीं थीं.'' शीला ने अपनी जानकारी का रोब जमाते हुए कहा.

''अरे भई, बात समझदारी की नहीं चल रही है,'' विमला बोली.

''बात में छिपा कर बात बोलना कुछ लोगों की आदत होती है,'' किरण से न रहा गया तो वह बोल उठीं. उन्होंने कुछ रुक कर शीला से कहा, ''शीलाजी, आखिर तुम्हारा मतलब क्या है?''

''मेरा ऐसावैसा कोई मतलब नहीं है, किरणजी. इतनी नाराज क्यों होती हो?'' शीलाजी ने बात बिगड़ते देख कर संभालने की कोशिश की.

''जरा सोचसमझ कर बोला कीजिए,'' किरण ने डांट कर कहा.

किरण अंजु की कक्षा की अध्यापिका थीं. वह बड़ी चुस्त और खुशमिजाज थीं. अंगों में उभरता हुआ यौवन समाया हुआ था, जो उन्हें और भी आकर्षक बना देता था. पढ़नेलिखने के कारण प्राप्त तेजस्विता चेहरे पर झलकती थी. एम. ए. बी. टी. थीं. खातेपीते परिवार से होने पर भी अपनी रुचि के कारण शिक्षिका बनी थीं. अभी तक अविवाहित थीं. कुछ अध्यापन कार्य में आने, कुछ अपने स्वभाव और कुछ किसी भी पुरुष का अधिकार न सह पाने के कारण अब तक विवाह नहीं किया था.

''क्या आप अंजु की खातिर इतना बड़ा त्याग कर सकेंगी?'' अरविंद ने किरण से पूछा.

पिता अवकाश प्राप्त वन अधिकारी थे. वह बेटी पर अस्वाभाविक दबाव डालना उचित नहीं समझते थे. बूढ़ी मां थीं, जो घर संभालती थीं.

किरण की उम्र 30-32 के आसपास हो चुकी थी.

अंजु किरण की सब से प्यारी छात्रा थी. अंजु पढ़नेलिखने के अलावा खेलकूद में भी तेज थी. उस वर्ष भी वह अपनी स्कूल की हाकी टीम की कप्तान थी. जब से किरण ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंजु की मां की मृत्यु की खबर सुनी थी, वह कुछ उदास सी रहती थीं. वह अंजु के घर जा कर उस के पिता से सहानुभूति के दो शब्द कह पाने में अपनेआप को असमर्थ पाती थीं. इसीलिए वह अंजु के साथ कुछ दूर जा कर भी उस के घर जाने का साहस नहीं कर सकी थीं.

स्टाफ रूम की बातचीत के बाद अन्य अध्यापिकाओं ने यह तय किया था कि प्राचार्या सरोज के साथ वे सब अध्यापिकाएं अंजु के घर जाएंगी, जो अंजु को पढ़ाती थीं.

दूसरे दिन स्कूल छूटने पर उन अध्यापिकाओं के साथ किरण भी अंजु के घर गई. ऐसे अवसर पर वे सब बातें हुईं, जो औपचारिकतावश कहीसुनी जाती हैं और जिन्हें सभ्य समाज का तकाजा माना जाता है.

जब सब लोग लौटने लगे तो किरण अंजु के साथ बातचीत करतेकरते पीछे रह गई थीं. अंजु के पिताजी पास ही खड़े थे. अंजु पिताजी के पास आई. किरण ने हाथ जोड़े और विदा लेनी चाही. अरविंद अंजु के कंधे पर हाथ रखते हुए किरण से कहने लगे, "हो सकता है, मुझे मेरे पापों का फल मिला हो. पर इस अबोध लड़की का क्या दोष हो सकता है, जिस की मां को मौत ने छीन लिया"?

"किस ने क्या किया और किस ने क्या नहीं किया, यह बताना तो कठिन है. पर जो कुछ होता है, उस का फल तो हमें भुगतना ही पड़ता है." इतना कह कर किरण प्राचार्या और अन्य अध्यापिकाओं के साथ लौट गई.

अरविंद का वह उदास, करुण चेहरा, पत्नी का वियोग सहने की दृढ़ता और अपनी पुत्री के भविष्य की चिंता की धूपछांव लिए हुए था. चाहने पर भी किरण से वह चेहरा भुलाया नहीं जा रहा था.

अरविंद का सदर बाजार में सिलेसिलाए कपड़ों का एक बहुत बड़ा स्टोर था. वहां 25 सेल्समैन तथा अन्य नौकर काम करते थे. उन्होंने युवावस्था में ही पर्याप्त पैसा कमा लिया था. वह पढ़ेलिखे भी थे. वह चुस्त, सुदर्शन और युवा थे. सुबह 10 बजे दुकान खोलते थे. सब कर्मचारियों से कुशलमंगल पूछते थे. घरबार की मदद करने के लिए सदैव तैयार रहते थे. उन से सब कर्मचारी प्रसन्न थे. सुखी वैवाहिक जीवन के करीब 15 वर्ष बिता चुके थे. उन के मातापिता का देहांत हो चुका था. अब वह अपनी पत्नी की मृत्यु के बाद जीवन के सुखदुख अपनी पुत्री के साथ ही बांट लिया करते थे.

अंजु संसार में दुख के नाते केवल अपनी मां की मृत्यु को समझ सकी थी. मां की मृत्यु पर वह इतना रोई थी कि किसी के भी कहने, मनाने से रोना नहीं रोक सकी थी. इतने कोमल फूल पर कुठाराघात के लिए मौत को दोषी ठहराना, क्या संतप्त मन को बहलाने का प्रयास नहीं था? मौत या समय को बलवान मान लेने से क्या मनुष्य की समस्याएं हल हो जाती हैं?

अंजु पढ़नेलिखने और खेलनेकूदने में तेज थी. उस ने अब तक की अपनी स्कूल की परीक्षाएं प्रथम श्रेणी में पास की थीं. हर बार मां का सहारा, प्रोत्साहन और मार्ग दर्शन होता था. पर अब तो कुछ भी नहीं बचा था.

रईस पिता की संतान होने पर भी अंजु जिद्दी और खर्चीले स्वभाव की कतई नहीं थी. उस का गुलाब सा चेहरा, नीली झील सी आंखें, मस्ती में दमकता अल्हड़पन, सहेलियों को परेशान करने की आदत सब पर मां के मरने के बाद एक प्रकार का कुहरा सा छा गया था. अब वह हंसती भी कम थी. हर समय गंभीर बनी रहती थी. जरा भी हंसने की बात पर पहले वह खिलखिला कर हंस पड़ती थी. अब केवल फीकी सी हंसी उस के चेहरे पर बिखर जाती थी.

अंजु में होने वाले इस परिवर्तन के प्रति सब से अधिक चिंतित थीं उस की अध्यापिका किरण. वह पहले कभीकभी अंजु को प्यार से डांट देती थीं. अब उन्हें इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का साहस भी न होता था. पर वह हर समय अंजु की खोजखबर लेती रहती थीं, जैसे पढ़ाई कैसी चल रही है? घर में क्याक्या होता है? आदि.

फरवरी माह का दूसरा सप्ताह चल रहा था. करीब तीन सप्ताह बाकी रह गए थे बोर्ड की परीक्षा में. एक दिन किरण स्कूल छूटने पर अंजु के साथ उस की दुकान पर गई. दुकान पर ग्राहक ज्यादा नहीं थे. अरविंद काउंटर पर बैठे अखबार पढ़ रहे थे.

"नमस्ते जी," का शब्द सुन कर उन्होंने अखबार से अपना चेहरा उठाया. सामने किरण तथा अंजु को देखा तो झट स्वागत में खड़े हो गए.

अंजु अपनी अध्यापिका से अलग हो गई और एक सेल्समैन के पास जा कर बातें करने लगी. इधर अरविंद ने किरण से पूछा, "कैसी हैं, आप? अंजु की पढ़ाई कैसी चल रही है?"

"सब ठीक चल रहा है."

"आज दुकान पर कैसे आना हुआ, कुछ खरीदना है?"

"अगर आप को एतराज न हो तो..."

"कहिए, कहिए."

"अंजु की परीक्षा में करीब 15 दिन रह गए हैं. मैं चाहती हूं कि वह इस साल भी प्रथम श्रेणी में पास हो."

"यह तो उस की पढ़ाई पर निर्भर है,"

"मैं चाहती हूं, परीक्षा में खत्म होने तक अंजु मेरे साथ रहे."

"आप के साथ?"

"यानी हमारे घर पर."

"पर अंजु क्या चाहती है?" कह कर अरविंद ने अंजु को पुकार लिया.

"जी, पिताजी," कपड़ों पर से ध्यान हटा कर अंजु अरविंद के पास आ गई. अरविंद ने बनावटी नाराजगी दिखाते हुए अपनी बेटी से कहा, "क्यों, आज तक तुम्हारी कौन सी बात हम ने नहीं मानी, जो आज तुम्हें एक वकील के सहारे हमारे पास आने की जरूरत पड़ गई?"

मौसम

मौसम की पाके शह,
शबनम कुछ और
इतराने लगी,
आई जो तेरी याद
मैं और शरमाने लगी.

—गोविंद शाह

"पिताजी, मैं समझी नहीं. आप क्या कहना चाहते हैं?" अंजु की समझ में कुछ नहीं आया.

"क्या तुम परीक्षा खत्म होने तक किरणजी के घर पर रह कर पढ़ाई करना चाहती हो?" अरविंद ने पूछा.

"पिताजी, जैसा आप चाहें."

"मैं ने अंजु से इस विषय में कुछ भी नहीं कहा है," किरण ने स्थिति स्पष्ट करते हुए अरविंद से कहा.

"क्यों अंजु, तुम्हारी अध्यापिका जो चाहती हैं, उस के लिए तुम तैयार हो?" अरविंद ने पूछा.

"आप की इच्छा हो तो..." अंजु ने बड़े संकोच से कहा.

"तुम्हें तकलीफ तो नहीं होगी, किरणजी?" अरविंद ने पूछा.

"मुझे तकलीफ होती तो यह प्रस्ताव मैं स्वयं अपनी ओर से न रखती आप के सामने. आप मेरी बातों का गलत अर्थ भी न लगाएं. मैं सिर्फ अंजु की भलाई चाहती हूं," किरण ने साफसाफ बात की.

"ठीक है, मुझे मंजूर है," अरविंद कह तो गए, पर घर में अकेले रहने की कल्पना से ही कांप गए. फिर भी उन्होंने अपनेआप पर नियंत्रण रखते हुए कहा, "किरणजी, आप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनी कक्षा की हर लड़की की इतनी ही चिंता करती हैं?"

"हर लड़की की मां..." किरण कुछ कहतेकहते रुक गईं.

अरविंद सचाई को बिना पूरा सुने ही समझ गए. उन्होंने पूछा, "कब ले जाना चाहतीं हैं अंजु को?"

"आप की इजाजत हो तो अभी."

अंजु किरण के साथ हो गई. पर जाते समय अपने पिताजी के कानों में कुछ कह गई. दुकान से बाहर आने पर किरण ने अंजु से पूछा, "तुम ने अपने पिताजी के कानों में क्या कहा था?"

अंजु ने बताया, "हमारा नौकर रामू काका आज शाम को परवल की सब्जी और परांठे बनाने वाला है."

"क्या तुम्हारे पिताजी को ये चीजें बहुत पसंद हैं?" किरण ने पूछा.

"हां, बहुत पसंद हैं."

फिर अंजु किरण के घर आ गई थी. किरण के मातापिता बहुत खुश हुए थे. अंजु उन्हें दादादादी कह कर बुलाने लगी थी. अंजु ने अपनी किताबें, कपड़े तथा अन्य आवश्यक वस्तुएं नौकर के हाथों मंगवा ली थीं. उन के घर का वातावरण ही बदल गया था. उन के मातापिता अब पहले की अपेक्षा अधिक खुश रहने लगे थे.

अंजु इतवार के दिन अरविंद के पास आ जाती थी. वह किरण की खूब तारीफें करती थी. किरण उस का कितना ध्यान रखती हैं? क्या खिलाती हैं? क्या पिलाती हैं? कैसे पढ़ाती हैं? इन बातों की विस्तार से चर्चा करती थी. यह सब सुन कर अरविंद गदगद हो जाते थे.

अरविंद भी किरणजी के घर दोएक बार हो आए थे. सिर्फ इसलिए कि कहीं वह यह न समझने लगें कि उन्होंने अपनी बेटी की फिक्र छोड़ दी है. वह हर बार किरण की उदारता और परोपकारिता की प्रशंसा करते थे. किरण के मातापिता से भी कभीकभी बातें करते थे.

जब किरण के घर अंजु के रहने की खबर स्कूल की अन्य अध्यापिकाओं को मालूम हुई तो तरहतरह की बातें होने लगीं. विमला ने कहा, "किरण को अपनी कक्षा की छात्राओं की कितनी चिंता है."

पूनम ने कहा, "किरण कितने बड़े दिल की शिक्षिका है."

पर इन सब से भिन्न विचार था शीला का. उस के विचार से किरण ने अभी तो उंगली पकड़ी थी. यह तो पहुंचा पकड़ने का तरीका है. जितने मुंह उतनी बातें. किरण ने भी उन बातों को सुना और सोचा, 'स्त्री का मुंह बद करने वाला ताला अभी तक नहीं बना है.'

वह सब कुछ सुन कर भी चुप ही रहती थीं.

परीक्षा खत्म होने पर अंजु अपने घर चली गई. उस के पर्चे अच्छे हुए थे.

एक दिन अरविंद दुकान से काफी रात गए लौटे. वह किसी विचार में खोए हुए थे. रामू काका ने खाना लगाया. पितापुत्री ने साथसाथ खाना खाया. खाने की मेज पर पितापुत्री के बीच कोई खास बात नहीं हुई. खाना खा कर अरविंद अपने बिस्तर पर लेट गए और अखबार पढ़ने लगे. अंजु से न रहा गया. पूछ बैठी, "पिताजी, क्या आप ने आज सुबह अखबार नहीं पढ़ा था?"

"नहीं, बेटी, समय ही नहीं मिला. दुकान पर भी आज फुरसत नहीं मिली."

"पिताजी, एक बात कहूं?"

"कहो."

"मानोगे?"

"क्या मैं ने आज तक तुम्हारी कोई बात टाली है?"

"पुरानी बातों को जाने दीजिए."

"पुरानी नहीं तो नई बात सुनाओ."

"बात यह है..." कहतेकहते अंजु झिझकी.

"आज तुम्हें अपने मन की बात कहने में संकोच हो रहा है."

"जब से मैं अपनी अध्यापिका किरणजी के घर से लौट कर आई हूं, तब से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुझे कुछ अच्छा नहीं लगता है.''

''उन के घर फिर से जाना चाहती हो?''

''पर अब तो कोई कारण नहीं है. पिताजी, क्या यह नहीं हो सकता कि जैसे मैं उन के घर रही, वैसे वह हमारे घर रह जाएं?''

''नहीं बेटी, यह कैसे हो सकता है?''

''क्यों नहीं हो सकता? मुझे उन के बगैर अब अच्छा नहीं लगता. मैं उन्हीं के साथ रहना चाहती हूं.''

''बेटी, तुम अभी छोटी हो. तुम्हारी उम्र भी कम है. बड़ी उम्र की लड़कियां दूसरों के घर पर जा कर ऐसे नहीं रह सकतीं.''

''क्यों नहीं रह सकतीं?''

''बड़ी उम्र की लड़कियां शादीब्याह होने पर ही दूसरों के घर जा कर रहती हैं.''

''क्या किरणजी शादी कर के हमारे यहां आ सकती है?''

''यह कैसे कहूं, बेटी? मैं कैसे समझाऊं तुम्हें?''

अरविंद को अपने जीवन में कभी इतने बड़े सवाल का सामना करना पड़ेगा, इस की उन्होंने कल्पना भी नहीं की थी. वह अंजु को ऐसा क्या उत्तर देते, जिस से वह संतुष्ट हो जाती, उन की समझ में नहीं आ रहा था. उन्होंने बहुत सोचसमझ कर फिर कहा, ''अंजु बेटी, कल इतवार है. तुम अपनी किरणजी को दोपहर के खाने पर बुला लो. उन्हें क्याक्या चीजें पसंद हैं, रामूकाका को बता दो. तुम भी उन से बात करना और मैं भी करूंगा. उन का मन जानना बहुत जरूरी है. अच्छा अब सो जाओ.''

अंजु सोने चली गई. पर वह अरविंद के व्यवहार से खुश नहीं थी.

अरविंद को नींद नहीं आ रही थी. हालांकि आज वह बहुत थक चुके थे. पर अंजु द्वारा उठाए गए प्रश्नों को ले कर वह सोच में डूब गए.

उन्होंने सपने में भी नहीं सोचा था कि अंजु ऐसा कोई सवाल कर बैठेगी. पत्नी की मौत के बाद एक उदासी, एक खिन्नता, एक निराशा उन के जीवन में घिर आई थी. जीवन और संसार के प्रति एक निरपेक्षता का भाव उन के मन में पैदा हो गया था, कोई विशेष रुचि नहीं रह गई थी. फिर भी अंजु को छोड़ कर उन के लिए चिंता का कोई विषय नहीं था. व्यापार, मुनाफा, दुकान के प्रति भी कोई विशेष आसक्ति नहीं रह गई थी.

वह मन को व्यस्त रखने के लिए नियमित रूप से दुकान जाते, हिसाबकिताब देखते, नए आदेश निकलवाते. पत्नी रमा की याद आने पर एकदम चुप हो जाते, चाहे कोई भी काम करते हों. रमा की एकएक बात उन्हें याद आती. कितना सुखद था उन का जीवन. रमा कितनी सुंदर थी. उस ने पूरा

अमरीकी सेना के सुरक्षा प्रहरी हंस

विश्व की अग्रणी अमरीकी सेना ने अत्याधुनिक इलेक्ट्रानिकी और कंप्यूटरी-यंत्रों के बावजूद अपनी सेना में सुरक्षा कर्मचारियों को सचेत करने के लिए हंसों का एक दस्ता रखा है.

अमरीकी वायु सेना की 32वीं कमान ने 18 हंसों को अनेक नाजुक क्षेत्रों में तैनात कर रखा है. ये हंस किसी अपरिचित ध्वनि को सुनते ही तीखे स्वर में एक प्रकार से प्राकृतिक चेतावनी देते हैं, जिसे सुन कर सुरक्षा कर्मचारी सचेत हो जाते हैं.

बताया जाता है कि हंसों की सुनने की शक्ति अति तीव्र होती है. इसलिए प्राचीन काल से ही फौजी काम के लिए हंसों का प्रयोग किया जाता रहा है. ईसा से 300 ई. पूर्व हंसों ने रोमन सैनिकों को उन के शत्रुओं के हमले से सचेत किया था.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घरबार संभाल लिया था. घर की कोई चिंता नहीं करनी पड़ती थी. सब कुछ रमा देख लेती थी. वह केवल दुकान में ही अपना ध्यान रखते थे. पति की हर बात, हर चीज की चिंता रमा करती थी. कभी उन में मनमुटाव या झगड़ा नहीं हुआ था, वह किसी बात के लिए जिद नहीं करती थी. सदैव खिले हुए फूल की तरह रहती थी.

पर आज अंजु ने जो चर्चा छेड़ी थी, उस से अरविंद सचमुच परेशान हो उठे थे. क्या अंजु को किरण इतनी अच्छी लगती हैं? यह चाह क्या अंजु के मन की है? 14-15 साल की लड़की क्या दुनियादारी नहीं समझती? क्यों ऐसे सवाल कर बैठती है? कहीं किरण में तो अंजु ने अपनी मां का प्रतिरूप नहीं ढूंढ लिया है? क्या एक लड़की मां के बिना सुखी नहीं हो सकती? लगता है, मां का छिन जाना लड़की के जीवन की सब से बड़ी हानि है. कहीं ऐसा तो नहीं कि 15-20 दिनों में अंजु और किरण एकदूसरे के इतने करीब आ गई हों कि अब अंजु के लिए अलग रहना कठिन हो गया हो? मां का रिक्त स्थान क्या अंजू सह नहीं सकती? क्या एक अविवाहिता ने अंजु को इतना प्यार दे दिया कि अब उस के लिए किरण के बिना रह पाना दूभर हो रहा हो?

किरण देखने में सुंदर, आकर्षक, चुस्त और पढ़ीलिखी है. नौकरी भी करती है. परंतु उन्होंने अभी तक विवाह क्यों नहीं किया? क्या वजह हो सकती है?

इन्हीं विचारों में उलझे अरविंद सो गए.

सुबह वह देरी से जागे.

अरविंद ने चाय की मेज पर रखा दैनिक समाचारपत्र पढ़ने के लिए उठाया था कि अंजु ने आ कर पूछा, "पिताजी, आप ने क्या सोचा है?"

"अंजु, तुम ने कहा था न कि किरण के पड़ोस में फोन है. तुम फोन पर कह दो कि वह आज दोपहर का खाना हमारे घर खाएं."

"आप गंभीर हैं न? या सहज मुझे टालने के लिए कह रहे हैं?" अंजु ने अपने मन का संदेह दूर करना चाहा.

"नहीं, बेटी, तुम्हारी कोई बात हम ने टाली है आज तक? जाओ, अभी फोन कर दो, तुम्हें संकोच हो रहा हो तो मैं खुद बात किए लेता हूं. अब तो खुश हो न?"

अंजु फोन कर के लौटी तो कहने लगी, किरण मैडम राजी हो गई हैं. दोपहर एक बजे तक आ जाएंगी. कह रही थीं कि बहुत दिनों बाद उन की याद आई. देखो न पिताजी, हमारी मैडम कितनी अच्छी हैं. वह किसी के घर आतीजाती नहीं हैं."

अरविंद ने अपनी ओर से कोई प्रतिक्रिया प्रकट नहीं की.

उस के बाद अंजु रामू काका के साथ बाजार गई और किरणजी की पसंद की सारी चीजें खरीद कर ले आई. फिर वह खाना पकाने में रामू काका का हाथ बंटाने लगी.

अरविंद दुकान के बहीखातों में अपना मन लगाने की कोशिश करते रहे. पर उन का ध्यान नहीं बंटा. वह बारबार यही सोचते रहे कि किरण से बातें कैसे करेंगे. कहां से शुरू कर के कहां पर खत्म करेंगे? वगैरहवगैरह.

अभी दोपहर का एक बजने में कोई छः सात मिनट बाकी थे कि दरवाजे की घंटी बज उठी. अरविंद अपने कमरे में बैठेबैठे बहीखातों को उलटपुलट रहे थे.

घंटी की आवाज पर अंजु दरवाजा खोलने के लिए लपकी. किरणजी ही थीं. अंजु और किरण की बातें अरविंद को अपने कमरे में साफ सुनाई दे रही थीं.

"आज कोई खास बात है, अंजु? खाने पर क्यों बुलाया है हमें?"

"मैं ने पिताजी से कहा, जैसे मैं आप के घर 15-20 दिन रही, वैसे क्या आप हमारे घर नहीं रह सकतीं."

"ये कैसी बातें कर रही हो? तुम्हारी तबीयत तो ठीक है न? ऐसा कैसे हो सकता है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मेरी मां बन कर भी नहीं?" कहते हुए अंजु सिसक पड़ी.

"अंजु, तुम रो रही हो? चुप हो जाओ. चुप नहीं हुई और रोती ही रही तो मैं अभी अपने घर चली जाऊंगी." किरण ने अंजु की आंखें अपने आंचल से पोंछते हुए कहा. फिर वे दोनों अरविंद के कमरे की ओर आए.

अरविंद ने बहीखातों को एक ओर हटाते हुए उन का स्वागत किया, "अरे, किरणजी हैं. आइए, आइए, बैठिए. अंजु बेटे, खाने में कितनी देरी है, जरा देखो तो."

अंजु चली गई. किरणजी कुरसी पर भारी मन से बैठ गईं. अरविंद ने बातचीत शुरू की, "किरणजी, अंजु की ओर से मैं आप से माफी चाहूंगा. मैं ने आप की और अंजु की बातें सुन ली हैं. ये बच्चे जिंदगी को भी एक खेल समझ लेते हैं. छोटे मुंह बड़ीबड़ी बातें कर लेते हैं. जाने कहां से इन में इतनी समझ आ जाती है? अंजु की बात का आप को अवश्य बुरा लगा होगा. जब से आप के घर से लौटी है, उदास रहती है. किसी काम में उस का मन नहीं लगता है. बात करती है तो केवल आप की. बातबात में आप की तारीफ करते नहीं थकती. बड़ी मायूस लड़की है. मुझे तो समझ में नहीं आता कि उसे कैसे खुश रखा जाए."

किरण ने प्रसंग बदलने के इरादे से कहा, "कोई छात्रा अपनी शिक्षिका की इतनी तारीफ भी करती है, इस बात पर विश्वास ही नहीं आ रहा है. हम ने तो सुना है, आजकल छात्राएं अपनी शिक्षिकाओं का मजाक उड़ाना अपना सब से पहला कर्तव्य समझती हैं. अकसर कहती रहती हैं कि अमुक शिक्षिका पढ़ाती है या सोती रहती है, समझ में नहीं आता. अमुक शिक्षिका तो पढ़ाती क्या खाक है, शायद वह खुद भी नहीं समझती कि क्या पढ़ा रही है. अमुक शिक्षिका तो घर में लड़झगड़ कर आती है और स्कूल में हम पर अपना गुस्सा निकालती है वगैरहवगैरह. पर अंजु ऐसी लड़की नहीं है. हां, जब से उस की मां की

अनहोनी

प्यार और प्रतिशोध दो भिन्न बातें हैं. जहां प्यार है वहां प्रतिशोध नहीं, जहां प्रतिशोध है वहां प्यार नहीं. इन दोनों का एकसाथ होना कुछ अनहोनी सा लगता है.

—यादवेंद्रनाथ शर्मा 'चंद्र'

मौत हुई है, बड़ी उदास रहती है. ज्यादा बोलती भी नहीं है. कोई सवाल भी पूछो जवाब नहीं देती है."

"इसी की तो चिंता है. हंसने की बात पर भी नहीं हंसती है. चुप हो जाती है. आप के घर से लौटी है, तब से तो और भी अधिक चुप रहने लगी है." अरविंद बोल पड़े.

"समय बीत जाने पर सब ठीक हो जाएगा."

"आप के घर तो काफी दिनों तक रही है. आप ने तो उस का मन पढ़ने का प्रयत्न किया होगा. वह क्या चाहती है क्या नहीं चाहती, आप ने कुछ तो समझा होगा."

"उस ने हमारे घर पर तो पढ़ाई के सिवा कुछ नहीं किया. जो काम बताते थे, वह कर लेती थी. मेरे मातापिता के साथ खूब गप्पें मारती रहती थी."

"यदि आप कुछ भी बताना नहीं चाहतीं तो मैं मजबूर नहीं करूंगा. आप ने अंजु की बात का भी उत्तर नहीं दिया. उसे डांट भर दिया."

"जब मेरे पास कोई उत्तर है ही नहीं तो मैं क्या करती?"

"मान लीजिए, वही प्रश्न मैं करता तो आप का उत्तर क्या होता?"

"मेरा उत्तर 'नहीं' होता.

"इस 'नहीं' का कारण मैं जान सकता हूं?"

"क्या कारण बताना जरूरी है?"

"अब तो लगता है, जरूरी है."

"क्या आप मेरे एक सवाल का उत्तर देंगे?"

"मैं तो संसार में किसी भी बात का उत्तर देने के लिए तैयार रहता हूं."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्या आप मुझे इस योग्य समझते हैं?"

"मैं भी यही सवाल आप से करूं तो?"

"आप हर सवाल उलट देते हैं. सवाल का जवाब देने के बजाए सवाल कर बैठते हैं?"

"जब तक मैं यह न जान लूं कि आप क्या चाहती हैं, मैं क्या जवाब दे सकता हूं."

"मतलब, पहले मैं कुछ कहूं, फिर आप कहेंगे."

"ठीक सोचा आप ने. आप जानती हैं, कि मैं अंजु को सब कुछ दे सकता हूं, पर एक चीज नहीं दे सकता. और वह है, मां का प्यार. क्या आप उस की खातिर इतना बड़ा त्याग कर सकती हैं?"

"त्याग?"

"हां, त्याग. हर लड़की, मेरा मतलब है, हर युवती का एक सपना होता है, उस सपने का साथी होता है और होता है एक ऐसा संसार, जिस में वह विचरण करना चाहती है. क्या आप वह वह सब अंजु की खातिर त्याग सकेंगी?"

"मैं सपनों की मतवाली नहीं हूं."

"गलत है. यह."

"क्या गलत है?"

"जो आप कह रही हैं. किसी युवती का कोई सपना न हो, ऐसा मैं नहीं मानता."

"मैं सपने देख कर जीना नहीं जानती. जीवन की ठोस धरती पर ही अपना संसार सजाना आता है मुझे."

"क्या उस संसार में अंजु और मेरे लिए कोई जगह है?"

"अगर आप की ओर से कोई शर्त न हो तो..."

"शर्त और मेरी ओर से? पहले यह बताइए, क्या आप की ओर से कोई शर्त है?"

"मेरे मातापिता भी अगर हम लोगों के साथ रहें."

"मेरे विचार से यह कोई शर्त नहीं हुई. हम तो उन्हें बड़े प्यार और आदर से रखेंगे. आप जानती हैं, मेरे मातापिता नहीं रहे हैं. घर में बड़ेबूढ़ों का साया हमारे सिर पर रहेगा. यह तो मेरे मन की बात होगी."

"तब अंजु की बात मुझे मंजूर है." किरण ने लजा कर स्वीकृति में सिर झुका दिया.

उसी समय अंजु आ कर कहने लगी, "खाना लगा दिया गया है."

शायद अंजु ने सारी बातें सुन ली थीं. वह अगले ही पल किरणजी से लिपट गई. किरणजी ने भी उसे अपनी बांहों में भर लिया. दोनों की आंखें भर आई थीं. अरविंद एक मूक दर्शक के समान देख रहे थे.

मगर कुछ ही दिनों बाद शीला स्टाफ रूम में कह रही थी, "मैं न कहती थी कि अंजु को घर ले जाने का मतलब उंगली पकड़ना है." ●

सरिता के स्वामित्व व अन्य विवरण संबंधी जानकारी
फार्म 4, देखिए नियम 8

1. प्रकाशन का स्थान: नई दिल्ली. 2. प्रकाशन अवधि: पाक्षिक. 3,4, व 5. मुद्रक, प्रकाशक व संपादक का नाम: विश्वनाथ. राष्ट्रीयता: भारतीय. पता: ई-3 झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-110055. 6. उन व्यक्तियों के नाम व पते जो इस समाचारपत्र के मालिक व हिस्सेदार हैं या जो इस की पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के शेयर होल्डर हैं: दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन प्रा. लि., ई-3 झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-110055.

मैं विश्वनाथ, घोषित करता हूं कि ऊपर दिए गए विवरण मेरी पूरी जानकारी और विश्वास के अनुसार सही हैं.

(ह.) विश्वनाथ, प्रकाशक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होली के रंगों में

होली के
रंगों में रंगी तुम,
और
फाग मेरा मन हुआ,

रंगों का
इंद्रधनुष
अंगों पर छा गया.
रूप यह तुम्हारा
सब को
तड़पा गया,

यों लगा
अधरों से
तुम ने ही मुझे छुआ.
होली के
रंगों में रंगी तुम
और
फाग मेरा मन हुआ.

चूनर रंग गई
रंग गई चोली,
अब के
बरस तुम ने
ऐसी खेली होली.
सखियों बीच तुम्हारा
पहचानना
मुशकिल हुआ.
होली के रंगों में
रंगी तुम,
और
फाग मेरा मन हुआ.

—पवन करण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

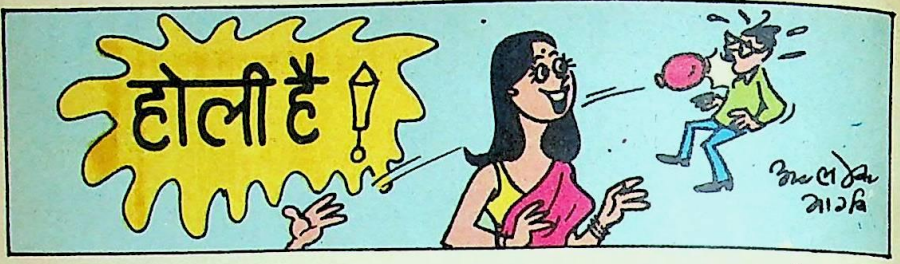

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने घर की होली

कहानी ● सर्वेश वार्ष्णेय 'पायल'

एक संकरी सी गली के अंदर मकान था. कुछकुछ पुरानापन लिए हुए. कई दीवारों पर जगहजगह पलास्तर टूट रहा था. लकड़ी की कड़ियों और पाटियों वाली छतें थीं, पर कमरे कई थे. रसोईघर भी काफी बड़ा था– पूरे एक कमरे के बराबर. महल्ला कुछ विशेष अच्छा नहीं मालूम पड़ रहा था. पर इतना बुरा भी नहीं था कि रहा ही न जा सके. वह महल्ला शहर से बाहर न हो कर बाजार के बीचोंबीच घनी बस्तियों में स्थित था.

सब से बड़ी बात तो यह थी कि मकान की कीमत काफी कम थी– सिर्फ 75 हजार रुपए. इतने में तो नई बस्तियों में मकान की जमीन ही नहीं मिलती. फिर बनवाने की परेशानी और लाखों का खर्च. ढंग का मकान बनवाओ तो लाखों रुपए लग जाएं.

रीता के पास इतना रुपया ही कहां था कि वह लंबेचौड़े लान वाली, बड़ेबड़े कमरे और उन से जुड़े स्नानघर वाली आधुनिक कोठी के सपने देखती. वर्षों से मन में एक ही साध थी कि अपना मकान हो. किराए के

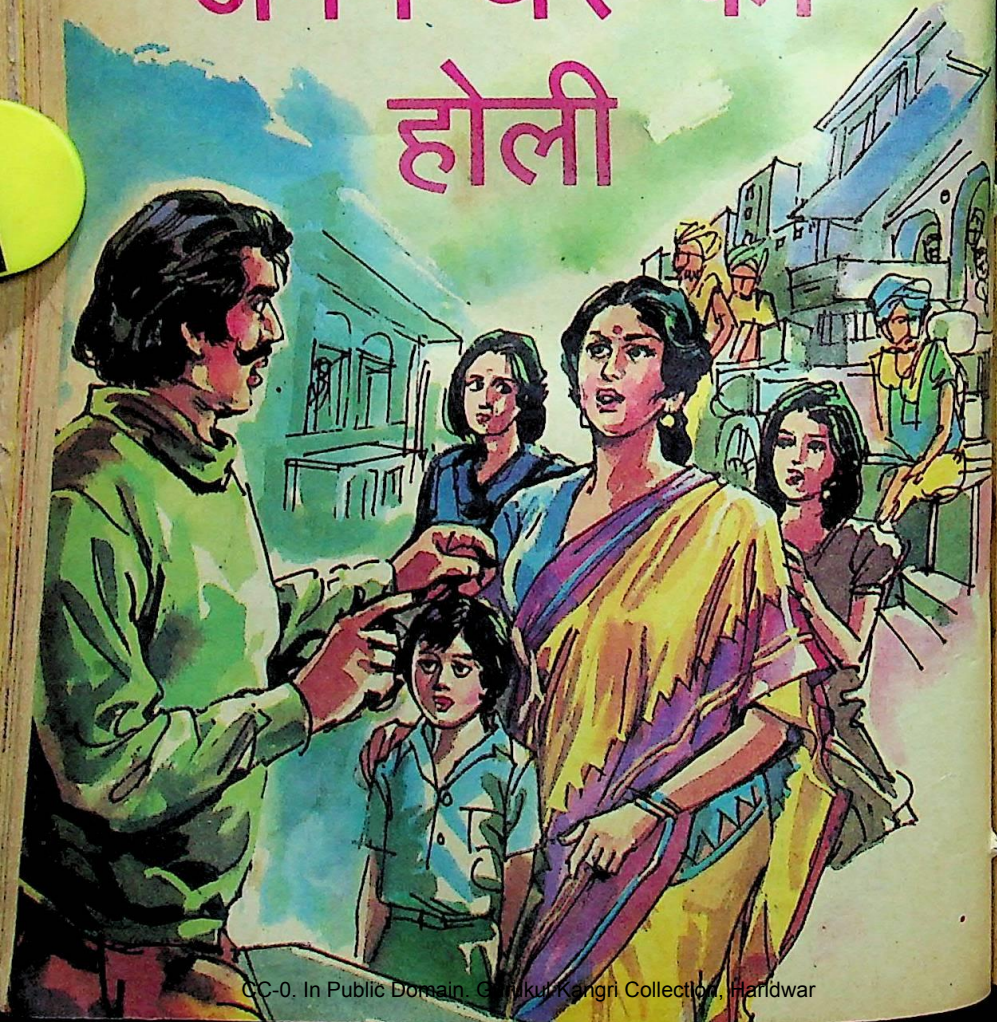

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

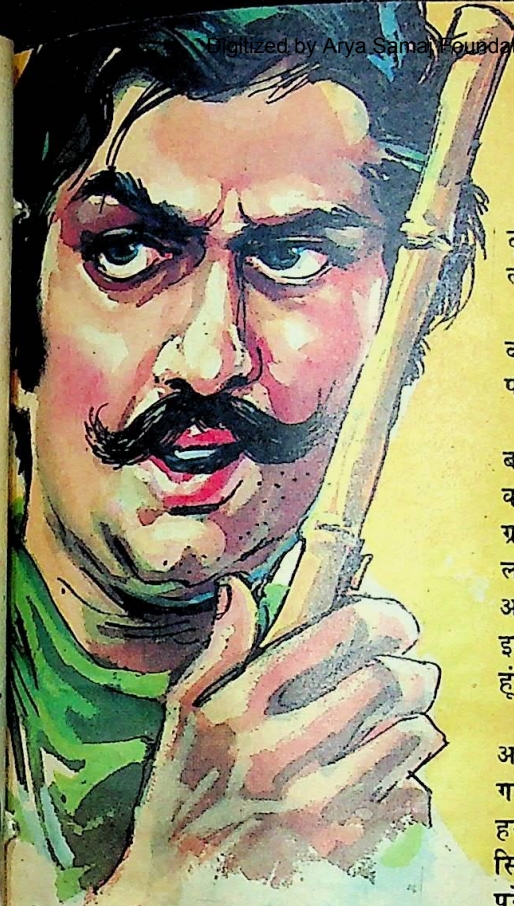

बड़ीबड़ी मूंछों वाला वह गुंडा एक हाथ से लाठी पकड़े रीता को ऐसे घूर रहा था, जैसे कह रहा हो, 'इस महल्ले में रहना है तो हम से दब कर रहना पड़ेगा.'

मकानों में रहतेरहते, मकानमालिकों की झिड़कियां खातेखाते वह तंग आ चुकी थी. बारबार मकान बदलने में सामान की जो टूटफूट हुआ करती थी, वह नुकसान और लाने ले जाने में भाड़े का खर्च अलग था.

इसलिए उस ने साथ में आए मकानों के दलाल से कह दिया, "ठीक है, मकान मुझे पसंद है."

"खूब अच्छी तरह से देख लीजिए, बहनजी. फिर न कहना कि मकान में कोई कमी है. इस मकान के लिए मेरे पास बहुत से ग्राहक आ रहे हैं. कई असामी तो पूरे एक लाख देने को तैयार हैं. पर आप ठहरे अपने आदमी. वीरेंद्र बाबू से वर्षों की दोस्ती है. इसलिए आप को बड़े सस्ते में सौदा करा रहा हूं," दलाल ने व्यावसायिक अंदाज में कहा.

"हां, हां, भैया. हमारी हैसियत इस से अधिक कीमत का मकान लेने की है ही कहां. गली कुछ संकरी जरूर है, पर क्या हुआ. हमारे पास कोई कार या स्कूटर तो है नहीं, सिर्फ साइकिल है. इसलिए कोई खास परेशानी नहीं होगी."

"फिर बहनजी, बयाना दे दीजिए. बात पक्की हो जाएगी."

रीता ने झट से रूमाल की गांठ खोल कर रूमाल से बंधे एक हजार रुपए दलाल के हाथ में पकड़ा दिए.

दलाल रुपए ले कर अंदर मकान मालिक के पास चला गया. रीता भी उस के साथ मकानमालिक के पास चली आई.

दलाल ने वे रुपए मकानमालिक को दे कर एक कागज के पुरजे पर रसीद बनवा

रीता ने एक घर खरीदा था. उस की बड़ी तमन्ना थी कि वह उसी घर में होली मनाए, लेकिन महल्ले के एक गुंडे ने उस की तमाम तमन्नाओं पर पानी फेर कर उसे महल्ला छोड़ देने पर विवश कर दिया. फिर अचानक ऐसा क्या हुआ कि वही गुंडा उसे ससम्मान उस के घर ले आया.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ली और वह रसीद रीता को थमा दी. बोली, "बहनजी, आठ दिनों के अंदर मकान की रजिस्ट्री करा के मकान आप को दिलवा दूंगा."

"जो उचित हो वही करो, भैया ये लोग चाहें तो कुछ दिन और भी मकान में रह सकते हैं. आखिर अपने मकान का मोह इतनी जल्दी कहां छूट पाता है."

"ठीक कहती हो, बेटी," मकान मालकिन वृद्धा की आंखें भर आई थीं, "अपना मकान तो अपना ही हुआ करता है. जब मकान बनवाया था तो क्या मालूम था कि एक दिन इसे छोड़ कर जाना पड़ जाएगा. पर अब यहां रह कर भी क्या करें. हमारा इकलौता बेटा तो लखनऊ में रहता है. वहीं उस की खूब बड़ी कोठी है, कार है. हम दोनों बूढ़ेबूढ़ी का बेटे के बिना यहां न तो मन लगता है, न ही कोई मकान की देखभाल करने वाला है."

वृद्धा मकानमालकिन ने आग्रह कर के रीता को अपने पास बैठा लिया तथा अपने बेटे की आर्थिक संपन्नता के बारे में बातें करने लगी.

कुछ समय के बाद रीता जब उस घर से निकली तो उस के मन में वृद्धा मकान मालकिन के प्रति बेहद अपनत्व और सम्मान के भाव थे. कितने अच्छे हैं ये लोग!

रीता के चेहरे पर संतोष की झलक थी. उस ने मकान के विषय में पति और बच्चों से भी राय लेनी उचित नहीं समझी थी. उस के पति वीरेंद्र को इतनी फुरसत ही कहां थी कि दलाल के साथ जगहजगह मकान देखने जा पाते. छोटी सी जनरल स्टोर की दुकान थी. एक भी दिन बंद रखनी पड़ जाती थी तो बहुत नुकसान हो जाता था. इसलिए मकान पसंद करने की पूरी जिम्मेदारी उन्होंने रीता के कंधों पर ही डाल दी थी.

मकान खरीदने के लिए रुपए भी रीता ने खुद ही जमा किए थे. वह वर्षों से घर के खर्चों में से धन बचाबचा कर जोड़ रही थी. घर के कामों से अवकाश मिलता तो वह लोगों के कपड़े सीती थी. फिर भी अभी तक सब मिला कर सिर्फ 50 हजार रुपए ही जमा हो पाए थे. उसे बाकी के 25 हजार रुपए रिश्तेदारों और मित्रों से उधार मिलने की पूरी उम्मीद थी.

जैसेतैसे रुपए इकट्ठे हो गए. मकान की कीमत चुका दी गई. फिर एक दिन मकान की रजिस्ट्री भी हो गई.

अपना मकान तो अपना ही हुआ करता है. किराए का मकान खाली करते वक्त बच्चों में बेहद उत्साह था. बेटियां सुनीता, अनीता और बेटा अनुज-तीनों बच्चे सामान बंधवाने में रीता की पूरी सहायता कर रहे थे.

बच्चों ने अभी मकान नहीं देखा था, इसलिए वे बड़ी जल्दी मचा रहे थे. 10 वर्षीय अनुज एक ही बात बारबार कह रहा था कि वह अपने घर में जा कर खूब साइकिल दौड़ाया करेगा. किराए के मकान में तो यह सुविधा थी ही नहीं.

रीता भी बड़ी उत्साहित थी. उस के होंठ बारबार मुसकरा उठते थे. उस की जेठानी और देवरानी दोनों उस से अधिक संपन्न थी, फिर भी अपना मकान नहीं बनवा पाई थीं. वह सोच रही थी कि अब वे दोनों अवश्य ही उस से ईर्ष्या करने लगेंगी.

पति वीरेंद्र सामान बांधने की और ले जाने की जिम्मेदारी रीता पर ही डाल कर अपनी दुकान पर चले गए थे.

सामान बंध गया तो रीता ने पड़ोस के एक लड़के को बाजार भेज कर चार ठेले वाले बुला लिए और सामान ठेलों पर लदवा दिया. कुछ सामान रह गया. रीता ने सोचा कि अगले दिन आ कर ले जाएगी. ठेलों पर सामान लदवाने से भाड़े का खर्च कुछ अधिक पड़ गया. लेकिन इस संकरी गली में ट्रक जाने का रास्ता भी तो नहीं था. रीता और बच्चों को भी रिकशे में बैठ कर ठेलों के साथ जाना पड़ा.

कुछ देर का रास्ता भी बड़ा लंबा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

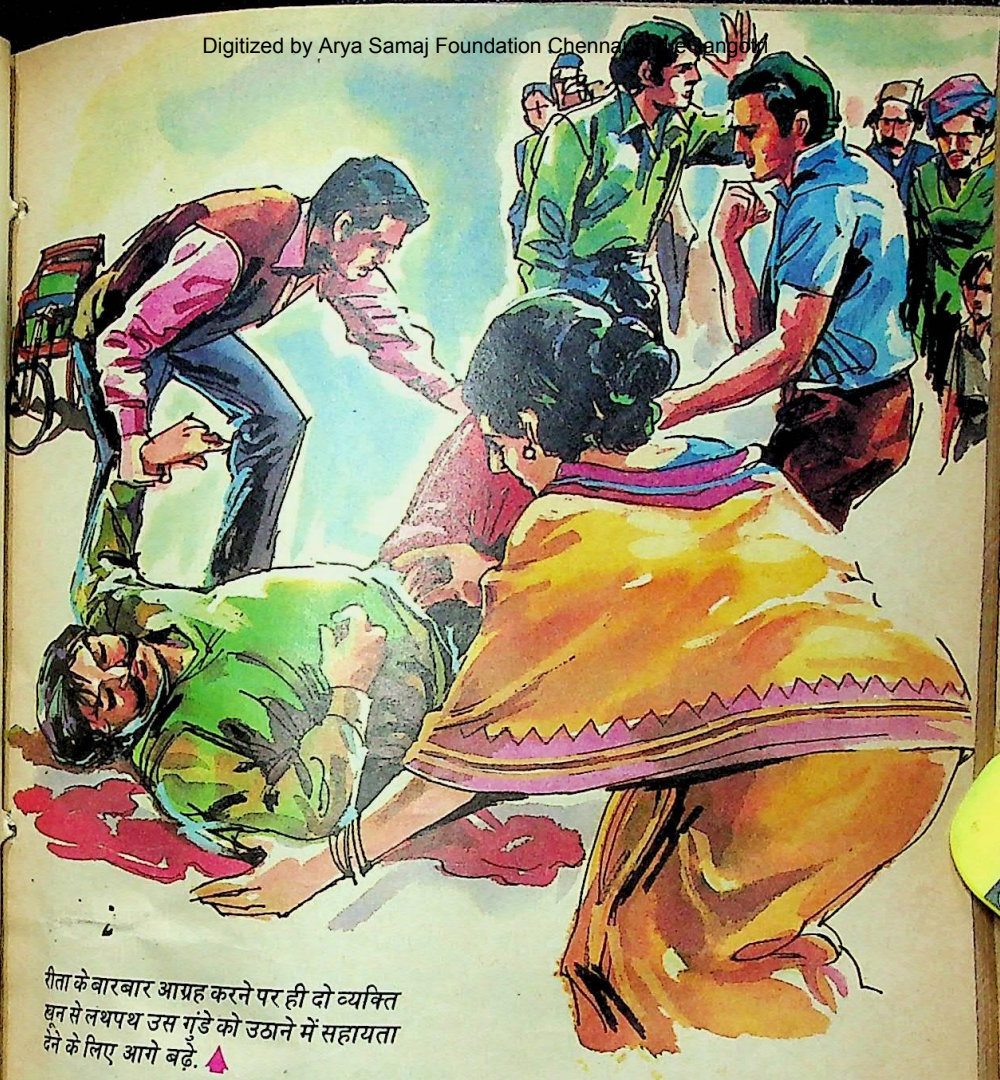

रीता के बारबार आग्रह करने पर ही दो व्यक्ति खून से लथपथ उस गुंडे को उठाने में सहायता देने के लिए आगे बढ़े. ▲

मालूम पड़ रहा था. खैर, देखते ही देखते अपने मकान वाली गली आ गई. ऊबड़खाबड़ सड़क होने के कारण अब ठेले वालों को थोड़ी परेशानी होने लगी थी. एक ठेले वाले ने भाड़ा बढ़ा देने के लिए झिकझिक शुरू की तो दोनों बेटियों ने उसे डांट दिया.

"जो तय हुआ है वही तो देंगे. महल्ले का नाम और मकान का नंबर तो पहले ही बता दिया था. फिर अब झिकझिक किस लिए?"

संकरी गली में जैसतैसे ठेले प्रविष्ट कराए जाने लगे थे कि एकाएक एक मकान के अंदर से, एक मोटा सा गुंडा जैसा दिखाई देने वाला आदमी निकल आया और सीना तान कर गली के बीच में खड़ा हो गया. वह अकड़ते हुए बोला, "ये ठेले गली के अंदर नहीं जाएंगे. वहीं चौक में खड़े कर लो."

तीनों बच्चे सहम उठे. ठेले वालों ने ठेले रोक दिए और पलट कर प्रश्नसूचक निगाहों से रीता की ओर देखने लगे.

रीता को इस प्रकार से सड़क पर रोका जाना बड़ा अटपटा लगा. वह साहस कर के बोली, "हम ने इस गली के अंदर मकान खरीदा है और अब अपना सामान ले कर आए हैं."

"मकान खरीदा है तो हम पर कोई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

याद

यादों की तितलियों को
पुस्तक में मत रखो,
वरना मैं ढाई अक्षर भी
भूल जाऊंगा.

—श्रीराम मीना

एहसान थोड़े ही किया है. ठेले वहीं रोक दो और सामान हाथों में उठाउठा कर ले आओ."

"यह सब कैसे होगा, भैया. बच्चे छोटे हैं. भारीभारी सामान कैसे उठा पाएंगे."

"हम कुछ नहीं जानते, इन ठेलों से हमारा रास्ता मत रोको."

शोर सुन कर आसपास के मकानों में रहने वाली स्त्रीपुरुष व बच्चे भी निकल कर बाहर आ गए. गली में भीड़ इकट्ठी हो गई. अधिकतर व्यक्ति उस गुंडे की हां में हां मिलाने लगे थे. वह गुंडा कमर पर एक हाथ टिका कर, दूसरे हाथ से अपनी बड़ीबड़ी मूछों पर ताव देता हुआ इस प्रकार रीता को घूरने लगा, जैसे कह रहा हो, 'महल्ले में रहना है तो हम से दब कर रहना पड़ेगा.'

रीता तमाशा खड़ा करना नहीं चाहती थी. इसलिए उस ने ठेलेवालों को वापस मुड़ने के लिए कह दिया.

ठेले गली के बाहर चौक में खड़े कर दिए गए. ठेले वाले सुस्ताने लगे. रीता ने उन से सामान उठवा कर मकान में ले जाने को कहा तो उन सब ने टका सा उत्तर दे दिया, "बहनजी, हमारा काम तो सामान लाना और ले जाना है. मकान में सामान रखवाने की जिम्मेदारी हमारी नहीं है. इस काम के लिए तुम्हें अलग से मजदूर लाना चाहिए था."

चौक में रहने वाले अलग मुंह बना रहे थे. मजदूरों को लाने का वक्त भी नहीं था. बच्चे सहमे हुए एक ओर खड़े थे. बच्चों ने ऐसा वातावरण और ऐसे लोग पहले कभी नहीं देखे थे. अपने मकान में आने की उन की खुशी मिट चुकी थी.

वक्त की नजाकत को समझते हुए रीता को ठेले वालों की दोगुनी मजदूरी की मांग स्वीकार करनी पड़ी. सामान उठवाने और मकान तक पहुंचाने में तीनों ठेले वालों ने इतनी बेदर्दी से सामान के बंडलों को जमीन पर पटका कि रीता को बारबार टोकना पड़ा, "अरे भैया, जरा संभाल कर सामान रखो न. कपप्लेट और मरतबान टूट जाएंगे."

पर सुनता ही कौन था. ठेले वालों की मजदूरी व भाड़ा चुका कर रीता ने जब बंडल खोले तो कई वस्तुएं टूटी हुई थीं.

खैर, अपने मकान में तो आ ही गए थे. यही संतोष की बात थी, पर बच्चों के मुंह लटके हुए थे.

सुनीता रोंआसे स्वर में बोली, "मां, मकान के साथ महल्ले वालों को भी देख लेना चाहिए था. ऐसे महल्ले में कैसे रह पाएंगे हम लोग."

अनीता घूमघूम कर पूरे मकान का निरीक्षण कर रही थी. फिर मुंह बिसूरती हुई बोली, "मकान क्या है, बिलकुल खंडहर है. सोचा था कि अपना मकान हो जाएगा तो उसे खूब सजाएंगेसंवारेंगे, पर इस मकान में तो कोई शोकेस भी नहीं है."

"और महल्ले वाले पूरे गुंडे हैं. हमारी शुरू में ही रेगिंग कर दी." अनुज बहनों की हां में हां मिलाता हुआ बोला.

महल्ले वालों के दुर्व्यवहार से रीता पहले ही परेशान थी. अब बच्चों की बातों से झुंझला उठी. ऊंचे स्वर में बोली, "जितनी चादर होती है, उतने ही पैर फैलाए जाते हैं. जैसेतैसे पेट काट के रुपए जोड़ कर और

→ शरिता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुशल गृहिणियों की पहली पसन्द

रुचि-शुद्ध दानेदार वनस्पति।

मोदी का रुचि शुद्ध दानेदार वनस्पति।
भोजन की जान है, रसोईघर की शान है
और, हर कुशल गृहिणी के लिये वरदान है।
ज़रा रुचि की चटखारेदार खूबियों पर
नज़र डालिये:

- रुचि दानेदार है।
- रुचि से बना भोजन आसानी से पचता है।
- रुचि अधिक पौष्टिक और सफ़ेद है।
- सर्वोत्तम क्वालिटी का रुचि शुद्ध दानेदार वनस्पति भारत के अत्याधुनिकतम प्लांट में बना है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रसना प्रस्तुत
गर्मी का मज़ा दुगना

गर्मियाँ आईं... रसना का मज़ा पाने का सही समय लाईं. रसना आपके लिए हर पैक में लाता है ढेर सारे ग्लास ठंडा, शीतल रसना.

स्वादभरा, मज़ेदार, प्यास बुझानेवाला रसना. गर्मी का मज़ा उठाइए, रसना पीजिए पिलाइए. आपका मनभाता रसना.

ग्यारह मनभाते रसना स्वाद

- ☐ ऑरेंज ☐ लाइम
- ☐ पाइनएपल ☐ मेंगो राइप
- ☐ कल खस ☐ शाही गुलाब
- ☐ टूटी फ्रूटी ☐ काला खट्टा
- ☐ मसाला सोडा (जल जीरा)
- ☐ ग्रेप ग्लोरी ☐ केसर इलायची

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करता है
शीतल स्वाद-भरा रसना!

आइ लव यू रसना

रसना

Mudra:A:PI:4149Hin

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरों से कर्जा ले कर तो यह मकान खरीदा है. फिर भी कोई खुश नहीं है. इस से तो बेहतर यही था कि किराए के मकानों में रहते और मकानमालिकों की झिड़कियां सहन करते रहते.''

रीता को क्रोध में देख कर बच्चे खामोश हो गए. सुनीता, अनीता झाड़ू उठा कर मकान की सफाई में जुट गईं. बहनों के साथ मिल कर घरेलू काम करने वाला अनुज कब पीछे रहने वाला था, वह अपने छोटेछोटे हाथों से अलमारियों की सफाई करने लगा.

रीता बंडल खोलखोल कर सारा सामान एक ओर रखती जा रही थी. एकाएक अनुज की चीख कानों में पड़ते ही वह उस की तरफ दौड़ पड़ी. देखा, एक अलमारी की दीवार में बने सुराख में से बहुत बड़े सांप की एक केंचुली झांक रही थी. अनुज उसे सांप समझ रहा था और घबरा कर चीखे जा रहा था.

रीता सहम उठी. पुराना मकान था, सांप तो होंगे ही. उस ने अनुज को सांत्वना दे कर उस का ध्यान दूर करने का प्रयास किया और उसे घर की सफाई करने से रोक दिया. क्या पता कहीं सांप ही न निकल आए. उस ने सांप की केंचुली लकड़ी के टुकड़े से निकाल कर कूड़े की टोकरी में फेंक दी.

दोनों बेटियां भी बारबार घबरा उठती थीं. पुराने सीलन भरे कमरों में मकड़ियों के जालों और चूहों की भरमार थी. पता नहीं कब से मकान की पुताई और सफाई नहीं हुई थी. कई टोकरे कूड़ा इकट्ठा हो गया था, जिस में कई बिच्छू और कनखजूरे रेंग रहे थे. बेटियां तो डर कर एक ओर खड़ी हो गईं, कूड़ा मकान से बाहर फेंकने का काम अब रीता के जिम्मे ही आ पड़ा था.

वह टोकरे भरभर के बाहर फेंकने लगी तो गली में रहने वाले एतराज उठाने लगे कि गली में इतना कूड़ा डाल कर गंदगी मत फैलाओ.

लेकिन गली साफ ही कब थी. चारों ओर तो कूड़े के ढेर लगे थे. नालियों का पानी गली में बह रहा था.

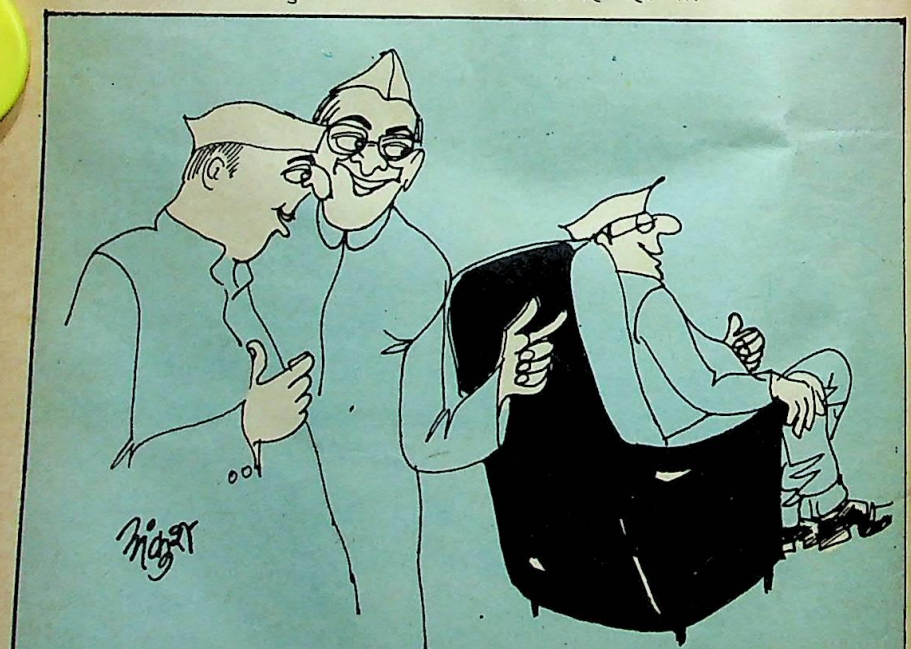

''...अगर इन्हें मुख्य मंत्री बना दिया जाए तो राज्य की गरीबी दूर हो सकती है! क्योंकि जब ये सहकारी समिति के अध्यक्ष थे... तब इन्होंने अपने पूरे कुनबे की गरीबी दूर कर दी थी!!''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वेरका

देसी घी

100%

शुद्ध

वेरका देसी घी। स्वाद, शुद्धता व उत्तमता में लाजवाब। वेरका के बिना आपका भोजन अधूरा है।

मिल्कफ़ैड का एक उत्तम उत्पादन

MILKFED

दी पंजाब स्टेट कोआप्रेटिव मिल्क प्रोड्यूसर्ज़ फ़ेडरेशन लिमिटेड, एस० सी० ओ० नं० 3015-16 सैक्टर 22-डी, चण्डीगढ़ -160 022

OPERATION FLOOD

UNION-2288

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुलामी

मनुष्य अपनी ही कमजोरी से अपनी स्वतंत्रता खोता है. —महात्मा गांधी

गृह प्रवेश में ही इतनी अधिक जटिलताएं कदमकदम पर आ रही थीं कि रीता और अधिक झंझलाती जा रही थी. आखिर उस ने हजारों रुपए खर्च कर के मकान खरीदा था. फिर भी मानसिक अशांति हाथ आई थी. पलट कर उस ने जवाब दे दिया, "कूड़ा गली में न डालें तो क्या संदूकों में भर कर रख लें. गली के दूसरे लोग भी तो बाहर कूड़ा फेंकते हैं. फिर हम क्यों नहीं फेंक सकते."

घर के एक स्टोर के कोने में हड्डी का एक टुकड़ा निकल आया तो तीनों बच्चों में उसे ले कर बहस छिड़ गई. अनुज उसे किसी मुरदे का पंजा बता रहा था तो दोनों बेटियों का विचार था कि इस मकान में अवश्य ही किसी इनसान का खून हुआ था. वह हड्डी का टुकड़ा उसी बदनसीब प्राणी का होगा.

"यह हड्डी किसी जानवर की भी तो हो सकती है," कह कर रीता ने बच्चों की बहस समाप्त कर दी और झाड़ू से उठा कर हड्डी का टुकड़ा दरवाजे से बाहर कूड़े के ढेर पर उछाल दिया.

लेकिन हड्डी का टुकड़ा कूड़े के ढेर पर न गिर कर सामने वाले पड़ोसी के मकान के चबूतरे पर जा गिरा था.

रीता ने उसे गंभीरता से नहीं लिया और घर का दरवाजा अंदर से बंद कर लिया. अंधेरा फैल चुका था, पूरा दिन घर की सफाई करते हुए ही बीत चुका था. सब के कपड़े और हाथपैर गंदे चीकट हो रहे थे.

बच्चे स्नान करने के लिए स्नानघर में घुसने ही वाले थे कि रीता ने टोक दिया, "पहले मुझे नहा लेने दो, बाद में तुम सब घंटों तक नहाते रहना."

नहाधो कर रीता रसोईघर में जुट गई. मिर्चमसाले के डब्बे तो इधरउधर हो रहे थे आलू काफी थे पर चावल नहीं मिला तो रीता खिचड़ी ही बना डाली और अचार के सा सब को परोस दी.

वीरेंद्र हमेशा की तरह देर से दुका बंद कर के घर में आया और खिचड़ी खा क सो गया. उस का स्वभाव घर के मामलों दखल देने का नहीं था. इसलिए उस ने बच्च की ढेर सारी शिकायतों को सुन कर भी को टिप्पणी नहीं की.

रीता बिस्तर पर लेटी तो थकावट उस के शरीर की पोरपोर दुख रही थी फिर भी वह सुबह जल्दी उठ गई और रसोईघर व्यवस्थित करने लगी. वीरे सुबह 10 बजे भोजन कर के दुकान पर चल जाया करता था. उस के लिए भोजन तैया करना था.

बच्चे घोड़े बेच कर सो रहे थे. उ दिन रविवार जो था. इसलिए रीता ने उ की नींद में खलल डालना उचित नहीं समझ और बिना आवाज किए सामान लगाती रही.

अचानक किसी महिला का घबराया हुआ आक्रोशपूर्ण स्वर उस के कानों में टकराया, "अरे सुनो, आज फिर टोटक डाल गई, यह बांझ हमें चैन से नहीं रहने देती."

"दीदी, यह मसान की हड्डी लगती है इसे छूना मत, जमादारनी से कह कर कहीं फिंकवा देना. नहीं तो भारी मुसीबत टू पड़ेगी."

फिर तरहतरह की गालीगलौज और तूतू मैंमैं की आवाजें गली में गूंजने लगी थीं बच्चे हड़बड़ा कर जाग गए और छत पर ज कर देखने लगे.

रीता ने भी काम छोड़ दिया और दरवाजा खोल कर बाहर झांकने लगी अजीब हंगामा था. वह हड्डी का टुकड़ा जो कल उस ने घर से बाहर फेंका था, उसी को टोटका समझ कर बहुत से लोग आपस में लड़ रहे थे.

रीता ने सोचा कि वह लोगों को उस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नया ओनिडा.
इसे छू पाये तो बस एक ईर्षा भरी नज़र!

ईर्ष्या में जब भी ईर्ष्या के रंग घुल जाये, और हाथ अनजाने में ही पत्थर उठाले, तब जानिये, फिर एक नया ओनिडा तशरीफ़ लाया होगा! बेशक़! नया ओनिडा हाज़िर है अपने अछूते 'किउब लुक' के साथ। अत्याधुनिक कारीगरी का जादू एक पूरी तरह से 'मोल्डेड' कैबिनेट और अनोखे काले ट्यूब में समाये हुये - मनमोहक रूप-रंग और आने वाले कल की अदा लिये - आ बसा है नया ओनिडा आप के इशारों के इन्तज़ार में! लेकिन, पहले इसके कि आप इसमें बेखबर खो जायें, भूलिये मत कि ईर्ष्या मंडराती है आसपास। याद रखिये वो सावधान-वाणीः अपने पड़ोसियोंसे नाता ज़रूर जोड़िये, पर अपने ओनिडा को अकेला मत छोड़िये।

ओनिडा. पड़ोसियों की जलै जान, आपकी बढ़े शान.

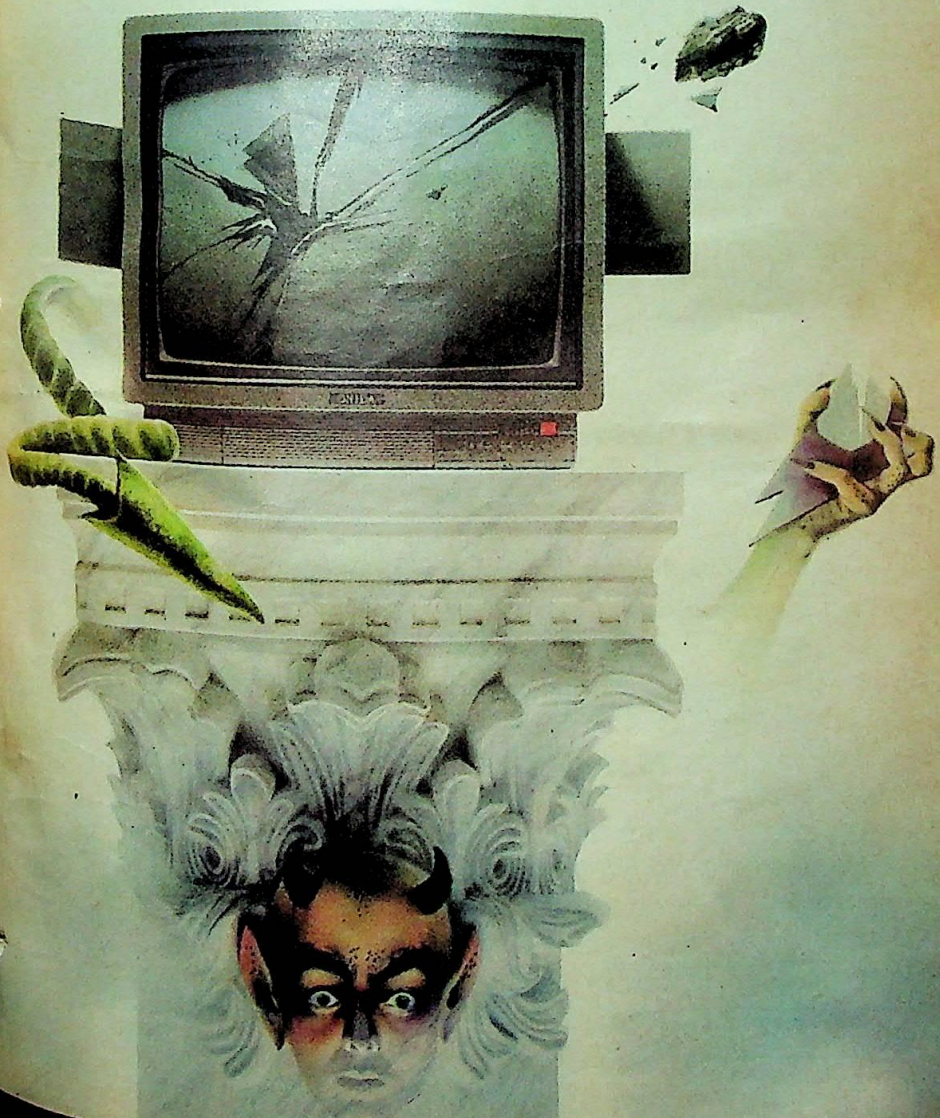

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

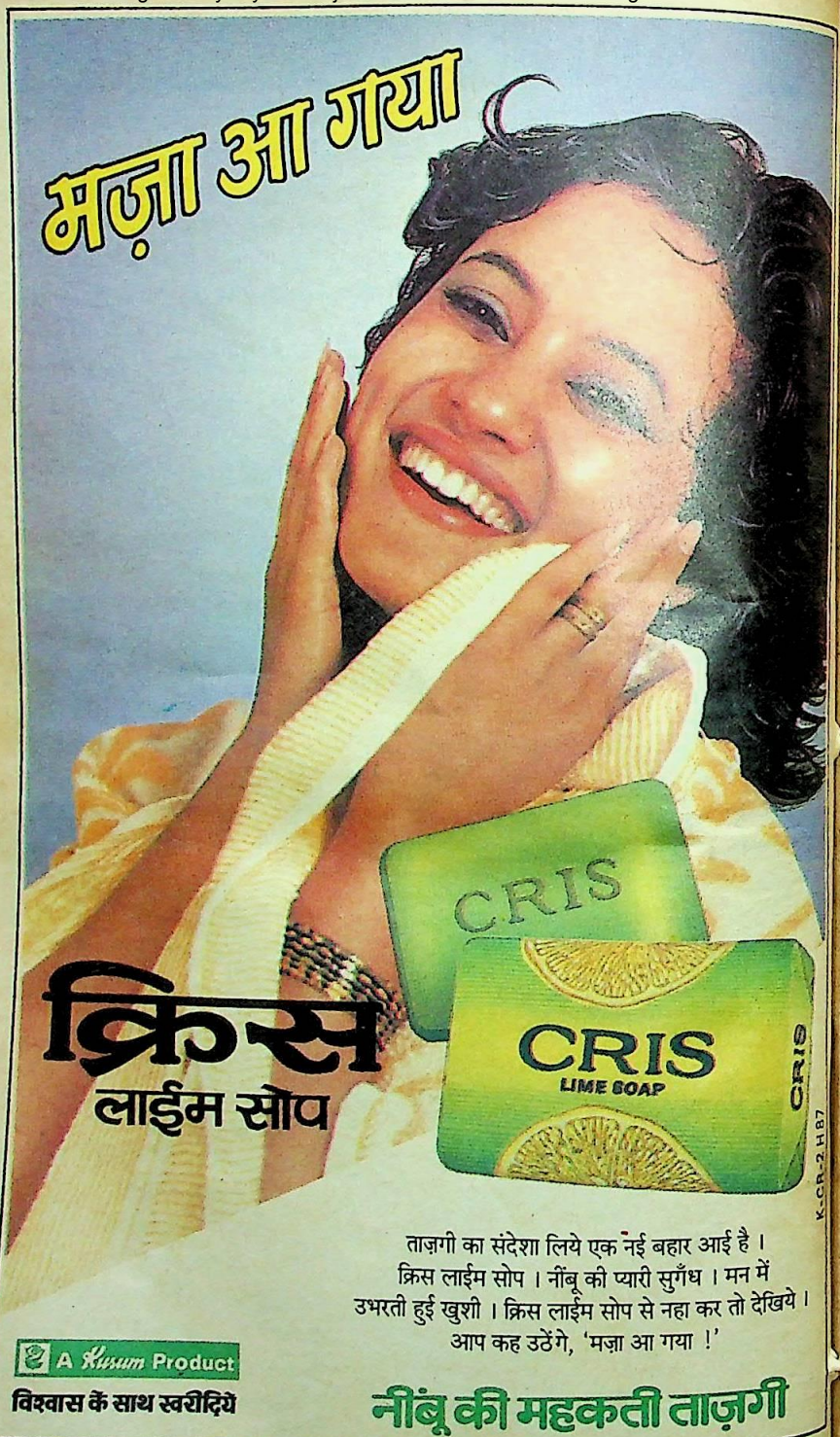

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हड्डी के टुकड़े की असलियत बतला दे. परंतु उस का साहस नहीं हुआ. .

उस ने दरवाजा बंद कर के वीरेंद्र को दबे स्वर में हड्डी के टुकड़े के बारे में विस्तार से बतलाया तो वह खूब हंसा, "बड़े अजीब लोग हैं. 21वीं सदी में जाने वाले हैं और विचारधारा 15वीं सदी के पिछड़े हुए लोगों की तरह है. .

"बड़े खतरनाक भी हैं." रीता ने ठंडी सांस ली.

"खैर, धीरेधीरे सब ठीक हो जाएगा. अभी हम नए आए हैं. जानपहचान हो जाएगी तो सब हमारे मित्र बन जाएंगे."

वीरेंद्र ने स्नान करने के बाद भोजन किया फिर वह साइकिल उठा कर अपनी दुकान पर चला गया. रीता चबूतरे पर निकल आई.

झगड़े ने उग्र रूप धारण कर लिया था. पूरी गली स्त्रीपुरुष और बच्चों से खचाखच भरी पड़ी थी. भीड़ में बीच में से दो महिलाएं, एक महिला को दबोचते हुए कठोर स्वर में कह रही थीं, "बोल, हमारे बच्चों पर जादूटोना करेगी. हमारे घर में टोटके डालेगी."

पिटाई के डर से थरथर कांपती हुई वह बीमारकमजोर, निरीह सी महिला कंपकंपाते स्वर में कह रही थी, "माफ कर दो, बहन. अब कभी कोई ऐसावैसा काम नहीं करूंगी. कभी टोटका नहीं करूंगी."

"हुं, अब आई रास्ते पर. थोड़ी देर पहले तो बड़ी भोली बन रही थी कि मैं हड्डी के टुकड़े के बारे में कुछ नहीं जानती. अब कर लिया न अपना जुर्म कुबूल." भीड़ में से कोई बोला.

"इस बांझ औरत को महल्ले में से निकाल देना चाहिए."

"यह डायन है."

"मनहूस है."

भीड़ में से अनेक आवाजें उभर रही थीं. एक निर्दोष महिला को अकारण दोषी बनाए जाते देख कर रीता के मन को बड़ा धक्का लगा था. पर वह कर भी क्या सकती थी. असहाय खड़ी देखती रही. उस ने सोचा कि जब उन लोगों का क्रोध शांत हो जाएगा तो वह सब को हड्डी के टुकड़े की वास्तविकता बतला कर इन सब का अंधविश्वास दूर करने का प्रयत्न करेगी.

भीड़ काफी देर तक उस बेबस महिला को लताड़ती रही, कोसती रही. वह महिला अपराधिनी की भांति सिर झुकाए रोती हुई, सभी के आक्षेप बरदाश्त करती रही. फिर किसी ने महिला के पति को पुकारा तो सहमा हुआ सा एक अधेड़ पुरुष भीड़ को चीरता हुआ वहां आ कर खड़ा हो गया. फिर वह सैकड़ों व्यंग्य वाक्यों से बिंधता हुआ अपनी पत्नी को सहारा दे कर लिवा ले गया.

बाद में वह हड्डी का टुकड़ा, मसान की हड्डी समझ कर, जमादारनी से श्मशान में भेज कर जमीन में गड़वा दिया गया. इस काम के लिए जमादारनी ने पूरे सौ रुपए मांगे, जो उस बीमार, निरीह सी महिला के पति को देने पड़े. इस झमेले के कारण रीता किराए के मकान में पड़ा बाकी का सामान लेने नहीं जा पाई.

फिर घर का पूरा काम पड़ा था. चार दिनों के बाद होली थी. तैयारी करनी थी. गुझियां. पापड़, नमकीन बनाने थे. चाट-पकौड़ी तैयार करनी थी. प्रत्येक होली पर शहर में रहने वाले रिश्तेदार और मित्र रीता के घर पर होली खेलने अवश्य आया करते थे. और इस बार तो खास तौर पर उन्हें बुला कर उन की दावत करनी थी.

वीरेंद्र का, बच्चों का सभी का यही प्रस्ताव था कि अब तो अपना मकान हो ही चुका है. इसलिए इस बार की होली पहले की अपेक्षा अधिक धूमधाम से मनानी चाहिए और सभी रिश्तेदारों को बुलाना चाहिए. इस बहाने मकान का मुहूर्त भी हो जाएगा.

पत्र डाल कर दूर के रिश्तेदारों को निमंत्रित करने का वक्त नहीं रह गया था. पर रीता शहर में रहने वाले रिश्तेदारों एवं मित्रों को होली की दावत दे आई थी. लौटते हुए वह बाजार से थैले भरभर कर सामान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी खरीद लाई थी.

फिर घर में तरहतरह के व्यंजन बनने शुरू हो गए. होली की छुट्टियां थीं, इसलिए बच्चे पूरा सहयोग दे रहे थे. होली के उल्लास में बच्चों का ध्यान मकान की कमियों और पड़ोसियों की ओर से हट चुका था. इस बीच पड़ोस के कुछ बच्चों का साथ मिल जाने के कारण बच्चों का मन भी लगने लगा था.

होली के दो दिन पहले से महल्ले के उद्दंड लड़कों का हंगामा शुरू हो गया. वे होली का चंदा इकट्ठा करने के लिए राह चलते लोगों को भी परेशान करने लग गए. शोर मचाती हुई टोली रीता के घर भी आ पहुंची और पूरे 25 रुपए ले कर टली.

शाम को रीता कुछ आवश्यक सामान खरीदने निकली तो यह देख कर हैरान रह गई कि लड़कों की टोली का नेतृत्व वही बड़ीबड़ी मूंछों वाला गुंडा कर रहा था. उस के इशारे पर लड़के कारों को रोकने के लिए सड़क पर लेट जाते थे. मजबूरन कारों को रोक कर, कार वालों को चंदा देना पड़ता था. जो चंदा नहीं देता था, लड़के उस की कार के शीशे तोड़ दिया करते थे.

चंदा मांगने का यह भी कोई तरीका हुआ? कार में गंभीर मरीज भी हो सकते हैं, प्रसवावस्था की महिलाएं भी हो सकती हैं. देर हो जाने की वजह से लोगों की गाड़ी छूट सकती है. सैकड़ों समस्याएं पैदा हो सकती हैं. रीता सोचती ही रह गई. उस से रहा नहीं गया तो उस ने गुंडे से यह सब रोक देने के लिए कहा. गुंडा उस के अवरोध उत्पन्न करने से चिढ़ गया. चंदे के रुपयों से उस की जेब गरम हो रही थी. वह अकड़ कर बोला, "बहनजी, जाओजाओ, अपने रास्ते लगो. यह कोई स्कूल नहीं है कि तुम्हारे उपदेश माने जाएंगे. वर्षों से यही सब होता आ रहा है इस महल्ले में."

"लेकिन भैया, बुरे काम का नतीजा बुरा ही हुआ करता है. दूसरों को सताना ठीक नहीं होता."

उस के समझाने का किसी पर असर नहीं पड़ा. उस के आगे बढ़ते ही लड़के उपेक्षा से हंस पड़े. गुंडे ने एक भद्दी सी गाली दे कर कहा, "दादागीरी दिखा रही है, जानती नहीं इस महल्ले में पीढ़ी दर पीढ़ी से हमारा रोब चलता आ रहा है. किसी में इतनी हिम्मत नहीं है कि हमारी आंखों से आंखें मिला कर बात कर सके."

गुंडे के शब्द रीता के कानों में पिघले सीसे जैसे पड़े. पर उस ने अब खामोश रहना ही बेहतर समझा. वह बाजार की ओर बढ़ गई.

रीता खरीदारी कर के लौटी तो चौक में लोगों की भीड़ लगी हुई थी. पता लगा कि गुंडे की टोली का एक लड़का कार रुकवाने के चक्कर में चोट खा बैठा था. उस के माथे से खून बह रहा था. एक हाथ की हड्डी टूट चुकी थी.

'शायद अब उन लोगों को अक्ल आ जाए,' रीता ने सोचा. लेकिन लड़कों की उद्दंडता चरम सीमा पर थी. जिन लोगों ने चंदे नहीं दिए थे, लड़के उन के घरों के किवाड़ तोड़ कर और पेड़ काट कर होली में जलाने के लिए ले गए. किसी को अपने घायल साथी की चिंता नहीं थी.

होली के दिन से एक दिन पहले ही कई व्यंजन बन कर तैयार हो गए. वीरेंद्र गुलाब जामुन के दो डब्बे बाजार से खरीद लाया. इस प्रकार बाजार की मिठाई की कमी भी पूरी हो गई.

होली के दिन सुबह से ही पूरे जोरशोर से दावत की तैयारियां शुरू कर दी गईं. रीता ने गरमगरम छोले और दही बड़े बना कर अलगअलग तश्तरियों में लगा कर रख दिए. गुझिया, पापड़ी, गुलाबजामुन, बरफी, नमकीन वगैरह सारी खाद्य सामग्री भी ड्राइंगरूम में सजा दी गई. सब के आने के बाद तो बातों का लंबा सिलसिला शुरू हो जाना था. फिर कहां यह सब काम करने की फुरसत मिलती.

बच्चों ने होली खेलने के लिए रंग भरे

अरिता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हाऽऽ!

साँस साँस में ताज़गी
साँस साँस में आत्मविश्वास

सिबाका टॉप का विशेष फैलनेवाला तत्व फ़ौरन आपके पूरे मुँह में फैलकर दांतो में सड़न पैदा करनेवाले कीटाणुओं का नाश करता है और साँस की दुर्गंध को रोकता है — आपके मुँह और दांतों को पूरी तरह साफ़ करते हुए आपकी साँसों को भरपूर ताज़गी से भर देता है.

यानी, सिबाका टॉप से — साँस साँस में ताज़गी साँस साँस में आत्मविश्वास. ऐसे - हा!!!

सिबाका टॉप
दूधपेस्ट

क्वालिटी उत्पादनों के निर्माता
हिन्दुस्तान सीबा-गायगी लिमिटेड

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

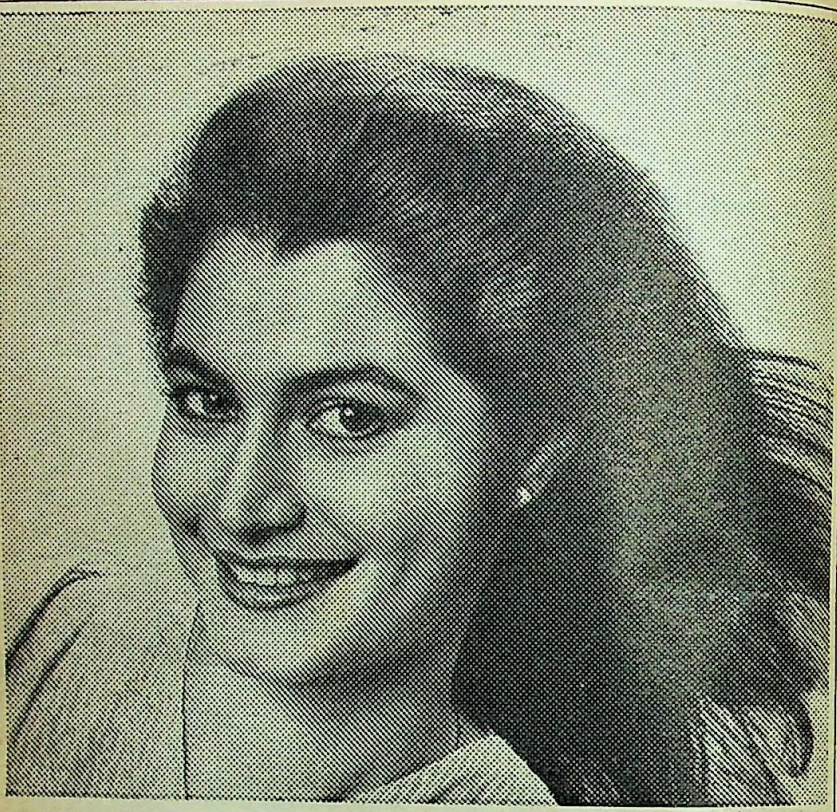

सनी! होम्योपैथिक शैम्पू है जो आपके बालों के लिए प्रकृति का अनोखा उपहार प्रदान करती है : आर्निका– एक ऐसी बूटी जो बालों को साफ करने के साथ ही उन्हें पुष्ट भी बनाती है। बालों का झड़ना रोकती है, रूसी दूर करती है – सहज भाव से, कुदरती ढंग से।

और सबसे बड़ी बात यह है कि सनी का कंडिशनर बालों की उलझनें सुलझा देता है। इससे आपके बाल हो जाते हैं रेशमी मुलायम और सवारने में आसान। सनी की खास फ्रांसीसी सुगंध आपका मन मोह लेगी।

सबसे अच्छे उपयोग के लिए पहले सिर में **सनी आर्निका हेयर ऑयल** की मालिश कीजिए। 1-2 घंटे तक छोड़ दीजिए। गीले बालों में **सनी आर्निका शैम्पू** लगाइए। झाग बनाइए और अच्छी तरह धो डालिए।

अपनाइए

सनी

आर्निका शैम्पू

और लाइए अपने बालों में फिर से निखार...

सभी प्रमुख दुकानों पर उपलब्ध है

सनी आर्निका शैम्पू विथ कंडिशनर

कोमल और कुदरती –
जो है देन केवल होम्योपैथी की

निर्माता
बेकसन होम्यो फार्मेसी प्राईवेट लिमिटेड
121, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज-1
नई दिल्ली-110 020.

R K SWAMY/BHP/4925R

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुब्बारे, रंग से भरी बालटियां और पिचकारियां दरवाजों के पीछे छिपा कर रख लीं. पुराने साथियों से मिलने और रंग खेलने का मौका जो हाथ आने वाला था.

पर जब शाम ढलने तक भी कोई मिलने वाला नहीं आया तो रीता का माथा ठनक उठा. क्या इतनी मेहनत और लागत से बने व्यंजन बेकार चले जाएंगे. ऐसा तो पहले कभी नहीं हुआ था. इस बार लोग क्यों नहीं आए? क्या सब एक ही साथ नाराज हो गए या फिर किसी को घर का रास्ता नहीं मिला?

सभी अचरज में थे. वीरेंद्र यह सोच कर बाहर निकल गया कि चौक तक देख कर आएगा, वस्तुस्थिति क्या है? क्या मालूम, कोई पूर्व परिचित हमारे मकान को तलाश करता हुआ ही मिल जाए.

रीता दरवाजे से लगी खड़ी रही. काफी देर बाद हांफताकांपता वीरेंद्र लौटा तो उस के कपड़े फटे हुए थे और बदन कीचड़ व गोबर से लथपथ था, सिर के बालों में और चेहरे पर भी कीचड़ लिथड़ा हुआ था.

वह जल्दीजल्दी बोला, "जो लोग चंदा मांग रहे थे, वे अब चंदे में मिली रकम से खूब शराब पी रहे हैं और सब के ऊपर कीचड़, गोबर फेंक रहे हैं. अश्लील हरकतें कर रहे हैं. क्या मालूम हमारे यहां आने वालों के साथ भी इन्होंने यही सब हरकतें की हों. इसी से परेशान हो कर वे सब वापस...

वीरेंद्र की बात अभी पूरी भी नहीं हो पाई थी कि पता नहीं किधर से वह गुंडा और शराबियों की टोली वहां आ पहुंची.

घबरा कर वीरेंद्र और रीता ने दरवाजा बंद करने के लिए पूरा जोर लगा दिया, पर भीड़ के दबाव के कारण दरवाजा बंद नहीं हो पाया. दोनों को धकेल कर भीड़ घर में घुस पड़ी.

रीता को और तो कुछ सूझा नहीं, वह शराबियों से बचने के लिए बच्चों को ले कर एक कोठरी में बंद हो गई. वीरेंद्र स्नानघर में जा कर छिप गया.

उस गुंडे का व्यंग्य भरा कड़कता स्वर पूरे घर में गूंज रहा था, "बहनजी, हमें उपदेश दे रही थीं. जरा इन्हें बता दो कि हम कैसे होली खेलते हैं. उपदेश देने वाले मास्टरों का क्या हाल करते हैं?"

सारे घर में कोलाहल और धड़ामधड़ाम के शब्द गूंजते रहे. वीरेंद्र, रीता और बच्चों का दिल दहलता रहा. घर में दरवाजे पुराने और कमजोर थे. अगर गुंडों ने कोठरी का दरवाजा तोड़ डाला तो क्या हाल होगा?

पर शराबियों का ध्यान उधर नहीं गया था. वे तोड़फोड़ करने में व्यस्त थे. काफी समय के बाद जब बिलकुल सन्नाटा हो गया तो रीता ने कोठरी का दरवाजा खोल दिया और दबे पैरों बाहर आ कर देखा तो उस के होश उड़ गए.

जैसे घर में भूकंप आ गया था. पूरा सामान टूटाफूटा बिखरा पड़ा था. ड्राइंगरूम व रसोईघर में खानेपीने की वस्तुएं, सभी

विषहीन जीवाणु

केलीफोरनिया के वैज्ञानिकों ने कुदरती रूप से पाए जाने वाले 'बेसिलस थूरिनजएंसि' (बी.टी.) नामक एक ऐसे विषहीन जीवाणु का पता लगाया है, जो फसलों को नुकसान पहुंचाने वाले कीटपतंगों पर नियंत्रण रखता है.

यह जीवाणु कीटपतंगों की पाचन शक्ति को क्षीण बना कर धीरेधीरे उन की संख्या में कमी करता है. विषहीन होने के कारण अन्य जीवों पर इस का कोई असर नहीं होता है.

कीटपतंगों के कारण केलीफोरनिया के वनों में गंभीर खतरा पैदा हो गया था. जब 88,000 एकड़ क्षेत्र में बी.टी. कीटनाशक को छिड़का गया तो एक वर्ष के भीतर ही कीटपतंगों की आबादी 29 प्रतिशत कम हो गई. एक वर्ष बाद कीटपतंगों के अंडों की संख्या पिछले वर्ष की संख्या का 2 प्रतिशत रह गई.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यंजन दहीबड़े वगैरह सफाचट थे. सारा राशन भी गायब था. लग रहा था जैसे डाकू घर लूट कर ले गए हों. दीवार पर टंगी घड़ी और रेडियो भी गायब था. रीता को तो गश आने लगा. वह माथा पकड़ कर बैठ गई.

कीचड़ और गोबर धो कर और नहाने के बाद वीरेंद्र बाहर आया तो उस का सिर चकरा रहा था, कीचड़ की बदबू अभी तक उसे बेचैन किए दे रही थी.

घर की हालत देख कर हमेशा खामोश रहने वाला वीरेंद्र भी खामोश नहीं रह सका था. वह रीता पर बरस पड़ा, "असभ्यों, जाहिलों के बीच में क्या एक यही मकान बचा था शहर में तुम्हारे लिए. अब यहां एक दिन भी नहीं रहेंगे, सामान बांध लो. सुबह दिन निकलने से पहले ही यहां से चल देना है."

सामान बांधने को रह ही क्या गया था? कोई भी वस्तु तो सहीसलामत नहीं बची थी. उन गुंडे शराबियों से जान बच गई थी, यह ही बहुत बड़ी बात थी. रीता रो पड़ी थी.

बचाखुचा सामान रात में ही बांध लिया गया. किसी ने भोजन नहीं किया. पकाने के लिए कुछ बचा ही नहीं था. जो था, वह जमीन पर बिखर कर गंदा हो चुका था.

उन्होंने अपने मकान का मोह त्याग दिया, ताले बंद कर के और सामान रिकशों पर लाद कर, जब सब वापस जा रहे थे तो वह गुंडा मूंछों को मरोड़ता हुआ चबूतरे पर खड़ा व्यंग्य से हंस रहा था.

लौट कर किराए के मकान में आ गए. बच्चों ने इस तरह चैन की सांस ली, जैसे जेल से छूट कर आ रहे हों. वीरेंद्र ने उसी दिन मकानों के दलाल के पास जा कर कह दिया, "हमें ऐसा मकान नहीं चाहिए, इसे बिकवा कर हमारा पैसा वापस करा दो."

दलाल सफाई में बोला, "मैं ने तो बहनजी से पहले ही कह दिया था कि मकान खूब देखभाल कर लो."

"पड़ोसियों के मन में घुस कर कौन देख सकता है." वीरेंद्र ने मकान की चाबी दलाल के सामने पटक दी.

रीता और वीरेंद्र को होली के दिन हुए असभ्य व्यवहार के लिए सभी मित्रों और रिश्तेदारों से क्षमा मांगनी पड़ी. उसे गहरा पश्चात्ताप था कि उस ने गलत महल्ले का मकान पसंद कर लिया था.

बच्चों की वार्षिक परीक्षाएं शुरू होने वाली थीं. इसलिए रीता मकान के बारे में सोचना बंद कर के बच्चों की पढ़ाई में व्यस्त हो गई.

जीवन पहले की तरह ढर्रे पर चल निकला, मन में रह गईं कुछ कड़वी यादें. कभीकभी दलाल यह कहने के लिए आ जाता था कि उस मकान के लिए कोई ग्राहक ही नहीं मिल पा रहा है.

एक दिन रीता रिकशे में बैठी हुई एक सहेली से मिलने उस के घर जा रही थी कि उस ने एक स्थान पर लोगों की भीड़ देखी. कोई व्यक्ति ट्रक से कुचल गया था. घटनास्थल से ट्रक लापता था, सिर्फ घायल व्यक्ति खून से लथपथ बेहोश पड़ा था.

उस व्यक्ति का चेहरा देख कर रीता चौंक उठी क्योंकि वह वही बड़ीबड़ी मूंछों वाला गुंडा था, जिस ने उन का जीना मुशकिल कर दिया था और अपना मकान छोड़ने के लिए विवश कर दिया था.

पुलिस के झमेले में पड़ने के भय से कोई भी उसे हस्पताल नहीं ले जा रहा था. गुंडे की दशा क्षण प्रतिक्षण गंभीर होती जा रही थी. अत्यधिक रक्तस्राव के कारण वह किसी भी क्षण मौत की गोद में जा सकता था.

रिकशा रुकवा कर रीता किंकर्तव्यविमूढ़ सी खड़ी सोचती रह गई. उस की निगाहों के सम्मुख गुंडे की अनपढ़ पत्नी और छोटेछोटे आधा दर्जन बच्चों की शक्लें घूम रही थीं, 'अगर यह मर गया तो इस के बीवीबच्चों का पेट कौन भरेगा? आर्थिक अभाव के कारण इस के बच्चों की शिक्षा किस प्रकार से हो पाएगी? शिक्षा से वंचित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस पल जब आप इसे पढ़ रही हैं... त्वचा को नर्म बनाने वाली ज़रूरी नमी आपके चेहरे से गायब होती जा रही है !

इस नमी को बचाने के लिए आप कुछ कर रही हैं?

यदि नहीं, तो शायद आप इस बात से पूरी तरह अनजान हैं कि त्वचा को सजीव बनाने, इसमें कोमलता जगाने के लिए नमी कितनी ज़रूरी है. या फिर... आपकी त्वचा थकी, रूखी और बेजान ही क्यों न नज़र आए... आपको इसकी कोई चिन्ता ही नहीं!

किशोरावस्था में आपकी त्वचा में नमी खुद-ब-खुद पैदा होती है. लेकिन जैसे-जैसे उम्र बढ़ती है, ऐसा नहीं होता. यानी आपकी त्वचा से धूप, धूल, आदि के कारण नमी गायब तो बड़ी तेज़ी से होती है, लेकिन उतनी ही तेज़ी से पैदा नहीं हो पाती... और तभी आपको चाहिए एक ऐसी चीज़ जो आपकी त्वचा की नमी भी बरक़रार रखे और इसे नर्म व कोमल बनाए.

यानी आपको चाहिए लॅक्मे मैक्ज़ीमम मॉइस्चराइज़िंग लोशन. पानी और त्वचा को मुलायम बनाने वाले विशेष तत्वों का कोमल मिश्रण. यह आपकी त्वचा के भीतर समाकर, न केवल आपकी खोई हुई नमी वापस लाता है बल्कि त्वचा को आवश्यक पोषण भी प्रदान करता है.

इसमें चिकनाहट का नामो-निशान ही नहीं, और यह इतना हलका है कि चेहरे पर इसके होने का अहसास ही नहीं होता... लेकिन फिर भी आपकी त्वचा हर पल ताज़गी से खिली रहती है!

लॅक्मे मैक्ज़ीमम मॉइस्चराइज़िंग लोशन में ऐसे अनोखे पदार्थ हैं जो हर तरह की त्वचा की ज़रूरत के अनुसार त्वचा में समा जाते हैं. आंखों और मुंह के आसपास की सूखी त्वचा में अधिक और नाक जैसी तेल-युक्त त्वचा में कम. इसलिए आपकी त्वचा चाहे सूखी हो या तेल-युक्त... सामान्य या मिली-जुली, लॅक्मे मैक्ज़ीमम मॉइस्चराइज़िंग लोशन हर तरह की त्वचा को से नर्म और कोमल बनाता है.

लॅक्मे मैक्ज़ीमम मॉइस्चराइज़िंग लोशन
नर्म, मुलायम और खूबसूरत त्वचा के लिए.

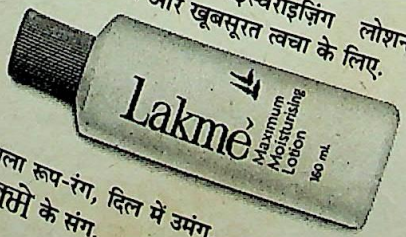

खिला रूप-रंग, दिल में उमंग,
लॅक्मे के संग.

Rediffusion/L/5226 c HN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
RADEUS/PAH/8-87 R3

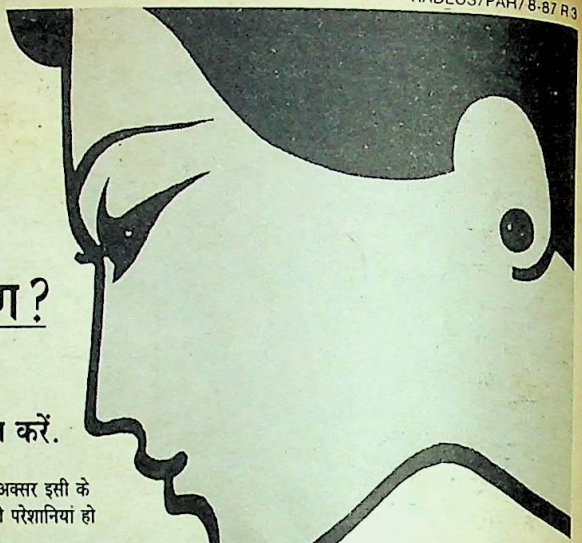

तैलीय त्वचा मुहांसों का कारण?

नीमल –
प्युमा नीम फ़ेस पैक इस्तेमाल करें.

त्वचा का तेलियापन एक आम शिकायत है. अक्सर इसी के कारण मुंहासों और ब्लैक हैड्स जैसी त्वचा की परेशानियां हो जाती हैं. इसीलिए इसका इलाज ज़रूरी है.

नीमल – सुरक्षित आयुर्वेदिक हर्बल इलाज

प्युमा का नीमल आयुर्वेदिक नुस्खे से बना पावडर (चूर्ण) है जो नीम व अन्य औषधि-जड़ी-बूटियों से बनाया जाता है. नीमल त्वचा के अधिक तेल को सोख कर मामूली फुंसियों का इलाज व रोक-थाम करता है. यह त्वचा की देख-भाल करके नई आभा भी जगाता है. नीमल में किसी भी प्रकार का सिंथेटिक फिलर शामिल नहीं है. नीमल के इस्तेमाल से किसी भी प्रकार के साइड एफ़ेक्ट्स नहीं होते यानी यह पूरी तरह से सुरक्षित है. इसे पुरुष और महिलायें दोनों इस्तेमाल कर सकते हैं.

नीमल – इस्तेमाल में आसान

नीमल को पानी में मिला कर पतला पेस्ट बना कर चेहरे व गले पर लगाएं. इस काम में बस दो मिनट लगेंगे. इसके बाद आप अपना काम करें और जड़ी-बूटियों को त्वचा पर अपना काम करने दें. २०-३० मिनट बाद ठंडे पानी से धो कर साफ़ कर लें. (साबुन या नींबू इस्तेमाल न करें)

नीमल – कम ख़र्चीला घर पे किया जानेवाला फ़ेशियल

नीमल के २० ग्राम के पैक की क़ीमत १२ रुपये ६५ पैसे है जिससे आपको मिलेंगे ६-८ फ़ेशियल अर्थात लग-भग २ रुपये प्रति फ़ेशियल. मुंहासे और फुंसियां होने पर नीमल रोज़ाना वर्ना सप्ताह में दो या तीन बार इस्तेमाल करें.

मुंहासों के जल्द इलाज के लिए पिम्पलेक्स – प्युमा एन्टी पिम्पल हर्बल पावडर (२० ग्राम – रु. १२.४०) भी इस्तेमाल करें. सूखे मुंहासों और ब्लैक हैड्स के कारण पड़े धब्बों को मिटाने के लिए ज़िराका – प्युमा हर्बल रेमेडी फ़ॉर फ़ेशियल ब्लेमिशेस (२० ग्राम – रु. १५/–) इस्तेमाल करें.

प्युमा उत्पादन चुनिंदा शहरों के बड़े कैमिस्टों, जनरल स्टोरों और ब्युटी पार्लरों में उपलब्ध हैं.

डाक द्वारा पार्सल मंगाने के लिए उत्पादन की क़ीमत का (प्युमा आयुर्वेदिक हर्बल प्रायवेट लिमिटेड के नाम से) डिमांड ड्राफ़्ट या मनी ऑर्डर भेजें. डाक ख़र्च वी. पी. पी. द्वारा देय होगा.

प्युमा **प्युमा आयुर्वेदिक हर्बल इलाज**

प्युमा आयुर्वेदिक हर्बल प्रायवेट लिमिटेड, किंग्सवे, नागपुर – ४४० ००१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो कर, क्या मालूम इस के बच्चे भी बड़े हो कर इसी की तरह अपराधिक प्रवृत्ति के बन जाएं?'

रीता का मन कांप उठा. वह रिकशे से उतर कर खून के सैलाब में डूबे गुंडे की ओर बढ़ गई और लोगों से कहने लगी, "इस घायल को रिकशे में लिटाने में सहायता करें. मैं इसे हस्पताल ले कर जाऊंगी."

रिकशे वाले ने टोका, "बहनजी, तुम औरत हो कर इस झंझट में क्यों पड़ रही हो. तुम नहीं जानतीं, पुलिस कितना परेशान करती है."

रीता ने बड़ी कठिनाई से बारबार आग्रह कर के कुछ लोगों को सहायता प्रदान करने के लिए तैयार कर लिया. वे लोग गुंडे को रिकशे में पटक कर यह कहते हुए चले गए, "बहनजी, यह समाज सेवा का काम तुम अकेली ही करो, हमें अपने कामधंधे से ही फुरसत नहीं है."

रीता ने अपनी साड़ी का आंचल फाड़ कर गुंडे के सिर पर लगे जख्म पर लपेट दिया और उसे संभालती हुई रिकशे में बैठ गई.

रिकशे वाले ने पूरी ताकत लगा कर, तेजी से रिकशा दौड़ा दिया. फिर नजदीक के ही एक सरकारी हस्पताल में ले गया.

हस्पताल में डाक्टरों, नर्सों का समुचित प्रबंध था. वहां शीघ्रता के साथ गुंडे की उचित देखभाल की जाने लगी. रीता ने अपने गले में पहनी हुई सोने की चेन उतार कर डाक्टर के सामने मेज पर रख दी. बोली, "यह रख कर आप दवाएं, आवश्यक इंजेक्शन और खून की बोतलों का इंतजाम कर लीजिए. मैं रुपयों का प्रबंध करने जा रही हूं."

फिर वह उस रिकशे में बैठ कर गुंडे के घर उस की पत्नी को सूचना देने चली गई, महल्ले के लोग रीता की कर्तव्यपरायणता देख कर अवाक रह गए थे. तब रीता को पता चला कि उस गुंडे का नाम हरी था.

सरिता

सरिता में विज्ञापन दीजिए
अपनी बिक्री बढ़ाइए

उच्च व मध्य वर्ग के 3,00,000 से भी अधिक धनी व समृद्ध परिवारों द्वारा खरीदी जाती है और इस के 80 लाख से भी अधिक पाठक हैं. यद्यपि 'सरिता' महिलाओं में विशेष रूप से लोकप्रिय है, पर परिवार का कोई भी सदस्य इसे पढ़े बिना नहीं छोड़ता.

यदि आप की निर्मित वस्तुएं एवं उत्पादन संपन्न परिवारों द्वारा खरीदे जाते हैं तो 'सरिता' में विज्ञापन दीजिए और बिक्री बढ़ाइए.

विज्ञापन दर अपेक्षाकृत कम व अन्य पत्रपत्रिकाओं से कहीं अधिक आकर्षक लिखें :

विज्ञापन व्यवस्थापक
सरिता रानी झांसी रोड. नई दिल्ली-55

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रीता हरी की पत्नी को हस्पताल ले आई और उस अनपढ़ स्त्री की कदमकदम पर सहायता की.

वीरेंद्र रीता को ताने देता रहा कि उस ने एक गलत आदमी का जीवन बचाने के लिए अपना एकमात्र आभूषण (सोने की चेन) भी गंवा दी. जीवन भर की जमापूंजी और वर्षों से एकत्रित किया हुआ सामान तो पहले ही उस मकान की भेंट चढ़ चुका था. अब तो लोगों का कर्ज चुकाना ही बाकी रह गया था, जिस के लिए वह दिनरात कोल्हू के बैल की भांति जुटा रहता था.

जब हरी पूरी तरह स्वस्थ हो गया तो रीता ने हस्पताल में जाना बंद कर दिया. उसे यह सोच कर संतोष होता था कि सोने की चेन गंवा कर उस ने एक परिवार को उजड़ने से बचाया है. कुछ बुरा नहीं किया है. सोने की चेन की कीमत किसी की जान से अधिक कीमती नहीं हुआ करती है.

मकान बिकवाने का सिलसिला अब भी जारी था. पर काफी प्रयत्न करने पर भी कोई ग्राहक नहीं मिल पा रहा था.

एक दिन रीता हतप्रभ रह गई, जब उस के घर में हरी और उस की पत्नी ने प्रवेश किया.

हरी की पत्नी राधा उस के पैरों पर झुक गई. भर्राए कंठ से बोली, "बहनजी, आप ने मेरे सुहाग की रक्षा की है. मैं मरते दम तक आप का एहसान नहीं भूल पाऊंगी."

हरी सिर झुकाए लज्जित सा बोला, "आप ने मुझे जीवनदान दिया है, बहनजी. अब मेरा जीवन आप का है. मैं आप से अपनी गलतियों की क्षमा मांगने आया हूं."

रीता के होंठ मुसकरा उठे, "सिर्फ क्षमा मांगने से काम नहीं चलेगा, भैया. एक वादा भी करना पड़ेगा."

"मैं आप की सारी बातें मानने के लिए तैयार हूं, बहनजी."

"तो वादा करो, अब कभी किसी को नहीं सताओगे, शराब नहीं पीओगे, महल्ले में गंदगी नहीं फैलाओगे, तोड़फोड़ नहीं करोगे. और हां, कभी कीचड़ और गोबर से होली नहीं खेलोगे."

हरी स्वीकृति में सिर हिलाता रहा. फिर भर्राए स्वर में बोला, "आप ने मुझे न केवल नया जीवन दिया है, बल्कि मेरे मन को भी बदल कर रख दिया. अब मैं गुंडा नहीं, एक शरीफ इनसान बन कर जीना चाहता हूं. आप की तरह दूसरों की सहायता करना चाहता हूं. अब आप अपने महल्ले में, अपने मकान में चलिए, बहनजी."

"अपना मकान..." रीता ने ठंडी सांस ली.

"शर्मिंदा मत कीजिए, बहनजी. अभी चलिए. हम गाड़ी साथ ले कर आए हैं."

रीता के इनकार करने पर भी राधा ने जबरन रीता को बाहर खड़ी टैक्सी में लिया और मकान मालकिन से कह दिया कि इस बीच बच्चों और घर की देखभाल करती रहे.

फिर अपने घर को देख कर रीता की आंखें फटी रह गईं. लगा जैसे किसी दूसरे के घर में आ गई हो.

पूरा मकान साफसुथरा, रंगरोगन किया हुआ सुसज्जित सा दमदमा रहा था. सामान करीने से लगा हुआ था. घर में नया रेडियो, दीवार घड़ी, बिजली के पंखे, सोफे, बर्तन, पलंग पर नए बिस्तर, नई चादरें, नए तकिए नजर आ रहे थे. वह चकित सी आंखें फाड़फाड़ कर देखती रह गई.

"यह सब महल्ले के नौजवानों ने मिल कर किया है, बहनजी. हम ने सोच लिया है, बल्कि पक्का फैसला कर लिया है कि अपनी शक्ति का दुरुपयोग न कर के सदुपयोग करेंगे. देश और समाज का निर्माण करेंगे. अपने महल्ले को साफसुथरा एक आदर्श महल्ला बनाएंगे, सब को लिखाएंगेपढ़ाएंगे, किसी को अनपढ़ नहीं रहने देंगे."

रीता को ऐसा लग रहा था जैसे उस के चारों ओर फूल बरस रहे हों. भीनीभीनी सी सुगंध उड़ रही हो.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अशोक राणा

कहानी• चंद्रशेखर दुबे

अपने दल के प्रांतीय अधिवेशन में प्रतिनिधि के रूप में सम्मिलित होने का निमंत्रण पाते ही अशोक प्रसन्न हो उठा. उस निमंत्रण पत्र को वह पूरे गांव में बताता फिरा. जो भी सामने मिला उसी से उस ने कहा, "देखो, यह भोपाल का निमंत्रण. उन लोगों ने मुझे प्रतिनिधि बनाया है."

लोगों ने सहज ही पूछा, "जाएगा भोपाल?"

अशोक ने मुसकराते हुए जवाब दिया, "काम बना तो जरूर जाऊंगा."

लोगों को अशोक ने भले ही इस तरह का अनिश्चयात्मक उत्तर दिया था, मगर अपने मन में तो उस ने ठान ली थी कि वह इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बार प्रांतीय अधिवेशन में अवश्य जाएगा. राज्यभर के नेताओं से मिलेगा. इस तरह मिलने से ही परिचय बढ़ता है. पिछली बार जिले के अधिवेशन में वह इंदौर गया था तो बहुत से लोगों से परिचय हुआ था. उन लोगों ने उस का नाम ही राणा रख दिया था—अशोक राणा. प्रतिनिधि का वह निमंत्रण भी अशोक राणा के नाम से ही आया था. पार्टी के हलकों में वह राणा ही बन गया था. पार्टी का जो भी कार्यकर्ता कहीं भी मिलता तो वह उसे 'राणाजी' कह कर बुलाता था. जिलाध्यक्ष महाशय तो कितनी विनम्रता से 'आइए राणाजी' कहते थे. छोटेबड़े सभी नेता, कार्यकर्ता उस से कितने प्रेम और आदर से बोलते थे.

पार्टी में ये ही मजे थे. वहां कोई भेदभाव नहीं था. छोटेबड़े का विचार नहीं था. जैसे सब एक जाति के, एक परिवार के हों. अधिवेशनों और जलसों में तो बिलकुल घर जैसा वातावरण हो जाता था. साथसाथ

निमंत्रण आया है या नहीं. उसे जब विश्वास हो गया कि इस बार उन्हें प्रतिनिधि नहीं बनाया गया है तो वह फूल कर जैसे कुप्पा हो गया. उस ने अपनेआप से कहा, 'लो बेटा, अब तुम्हारी कदर होने लगेगी पार्टी में. पटेल बा जैसे पुराने कार्यकर्ता का पत्ता इस बार कट गया और तुम्हारा रंग जम गया. पार्टी वाले जानते हैं कि कौन सच्चा कार्यकर्ता है और कौन मिट्टी का माधो है. इतने दिनों तक लोगों का काम किया तो वह अब रंग लाया. रंगबिरंगा, रेशमी बड़ा सा बिल्ला लगा के पंडाल में सब से आगे ठाठ से बैठे. हरएक प्रतिनिधि से हाथ मिलाते हुए कहो 'मैं अशोक राणा, फलाने गांव का प्रतिनिधि.'

'वाह रे बेटा, राणा. बिना राज के ही राणा बन गया. अब एक बार भाषण भी झाड़ दो, तो अखबारों में फोटो छप जाए. जो देखे वह कहे, 'अरे, यह तो अपना असोकिया है, इस का फोटो छप गया?'

गांव का 'असोकिया' जिले की एक राजनीतिक पार्टी में गांव का प्रतिनिधि 'अशोक राणा' बन गया था. छोटे बड़े सभी अधिकारी उसे 'राणाजी' कहते थे. मगर पटेल बा की नजरों में वह नीची जाति का 'असोकिया' ही था. लेकिन एक दिन पटेल बा को भी उसे राणा कहना ही पड़ा.

बैठना, साथसाथ खाना, साथसाथ रहना. कोई फर्क नहीं होता था. सारा फर्क तो गांवों में ही होता है. यहां आदमी की कदर जाति से होती है. छोटी जाति वालों को यहां आदर मिलता ही नहीं. बड़े लोग हमेशा अपने से छोटों को नीची नजर से देखते हैं. पटेल बा को ही देखो. वहां अधिवेशन में भी मुझे 'असोकिया' कह कर ही आवाज लगाते हैं. महाशयजी जैसे बड़ेबड़े नेता मेरे कंधे पर हाथ रख कर मुझे 'राणाजी' कहते हैं. मगर उन पटेल बा की आदत जाती ही नहीं. वह तो पार्टी को भी अपना गांव ही समझते हैं.

इसी लिए अशोक ने पता लगाया था कि पटेल बा को भी प्रतिनिधि के रूप में

'देखते जाओ अभी तो अशोक राणा ने शुरुआत ही की है. शुरुआत में ही बड़ेबड़े अफसरों को पसीना ला दिया है. गांव में भले ही लोग असोकिया कहें, मगर वहां दफ्तरों में तो अफसर लोग इसी असोकिया को कुरसी पर बैठाते हैं. कमिश्नर, एस.डी.ओ., कलक्टर, तहसीलदार, नायब तहसीलदार, गिरदावर, थानेदार अशोक राणा को मानते हैं. वे लोग अशोक राणा की जाति नहीं देखते हैं, पार्टी देखते हैं.

'जाति की बीमारी तो गांव में ही है. यहां पर तो बस सब को यही दिखाई देता है कि अशोक राणा नीची जाति का है. नीची जाति का है तो भी काम तो ऊंचा करता है. पटेल बा ने तो पार्टी के नाम पर अपना ही भला किया. दूसरों का भला उन से कभी हुआ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तुझे तो चुनाव का नशा चढ़ गया है, लेकिन ध्यान रखना, राजनीति बड़ा टेढ़ा खेल है. यह तेरे जैसे गरीबों के बस की बात नहीं." पटेल बा बोले.

ही नहीं. उस से तो यह अशोक राणा भला. यह गांव भर की समस्याएं ले कर दौड़ादौड़ा फिरा. घर में खाने को दाने नहीं हैं, फिर भी गांव के भले के लिए दौड़ रहे हैं. घर के लोग नाराज हो रहे हैं कि अपना कामधाम छोड़ के क्यों दौड़ते फिरते हो? गांव वाले क्या तुम्हें पगड़ी बांध देंगे?

'गांव वालों ने तो पगड़ी नहीं बंधाई, मगर पार्टी ने तो बंधा दी, प्रतिनिधि बना दिया. उठ से जाओ भोपाल. नारे लगाओ. जिंदाबाद, मुर्दाबाद. पार्टी का काम अगर नहीं किया होता तो इस असोकिया को कौन पूछता, कौन बनाता राणा?'

अशोक इसी तरह इतरा रहा था कि के भीतर से ही जैसे किसी ने कांटा सा चुभाते हुए कहा, "राणाजी, अधिवेशन कोई बरात नहीं है, जो चले जाओगे. अंटी में कुछ रकम भी है? जानते हो कि भोपाल पास नहीं है. आनेजाने में खजूर छाप पत्ता लगेगा. इतना खर्च करने के बाद तुम्हें मिलेगा क्या? सिर्फ वाहवाही. कोरी वाहवाही से पेट भरता है क्या?"

इस तीखे स्वर से खीज कर अशोक चीख पड़ा, "हां, भरता है. पेट भले ही न भरे पर मन तो भरता है. मन की शांति के लिए मैं जाऊंगा."

भीतर का स्वर फिर भी खामोश नहीं हुआ. वह पूछता ही रहा, "कैसे जाओगे?"

अशोक ने जवाब दिया, "कैसे भी जाऊंगा. कुछ भी कर के जाऊंगा. पार्टी वालों से कहूंगा कि मेरा खर्चा उठाओ."

भीतर वाला स्वर ठठा कर हंसता हुआ बोला, "तुम में ऐसे कौन से हीरेमोती जड़े हैं, जो पार्टी तुम्हारा खर्च उठाएगी? तुम्हारे जैसे पचासों कार्यकर्ता हैं पार्टी के पास. पार्टी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अगर सब को खर्च उठाए तो उस का तो दिवाला ही निकल जाए. इसलिए मेरा कहना मानो और अपने घर बैठो. सामर्थ्यवानों को ही ये घुंघरू शोभा देते हैं. राजनीति कंगलों का खेल नहीं है, मत जाओ.'

अशोक चीख पड़ा, "नहीं, मैं जाऊंगा. हर हालत में जाऊंगा."

अधिवेशन की तारीखें ज्योंज्यों नजदीक आने लगीं, त्योंत्यों भीतर का द्वंद्व तीव्र से तीव्रतर होने लगा. दो पाटों के बीच में जैसे वह पिसने सा लगा. दो विपरीत दिशाओं में जैसे कोई उसे खींचने लगा. इन सब बातों से परेशान हो कर वह पास के कसबे में गया. मगर अपनी व्यथा वह कसबे के साथी कार्यकर्ताओं से कह नहीं पाया. आत्म सम्मान ने उस का मुंह बंद कर दिया.

कसबे से निराश हो कर उस ने अपने गांव में ही प्रयास किए. दोतीन लोगों के सामने उस ने हाथ पसारे. अधिवेशन का महत्त्व समझाया. मगर उन लोगों ने उस की कोई सहायता नहीं की. वे अपना ही रोना ले बैठे.

अशोक ने फिर भी हिम्मत नहीं हारी. वह उन लोगों के पास पहुंचा, जिन के अड़े काम उस ने अपनी कोशिशों से निबटाए थे. मगर उन लोगों ने भी काम निकल जाने के बाद अब दूसरे लोगों की तरह आंखें फेर ली थीं.

संकट की उस घड़ी में केवल एक किसान ही 50 रुपए उधार देने को राजी हुआ. उस किसान का नामांतरण का एक प्रकरण तहसील कार्यालय में उलझा हुआ था. इसी लिए उस ने यह उदारता दिखाई थी. रकम देने के पहले उस ने अशोक से बारबार आश्वासन लिया था कि वह उस प्रकरण में मदद करेगा.

50 रुपए हाथ में आते ही अशोक को जैसे पंख लग गए. वह भोपाल उड़ने के लिए बेताब हो गया. जब देखो तब वह इसी नशे में झूमने लगा. इसी दौरान जब उस के पास यह संदेशा आया कि पार्टी ने रिआयत टिकट की व्यवस्था की है तो वह खुशी से झूम उठा.

अभी वह झूम ही रहा था कि गांव के मुखियाजी यानी पटेल बा ने एक दिन उस से पूछा, "असोकिया, भोपाल जाएगा न?"

अशोक ने गर्व से कहा, "हां पटेल बा विचार तो है?"

"अभी विचार ही चल रहा है, पक्का फैसला नहीं हुआ?"

"बस, हुआ ही समझो."

"मतलब यह कि जाएगा."

"हां."

"तब तो अपना साथ रहेगा."

अशोक का माथा ठनका. वह तो अभी तक यही समझे बैठा था कि पटेल बा भोपाल नहीं जा रहे हैं. मगर पटेल बा की इस बात से उस के हाथों के तोते जैसे उड़ गए. उस ने घबरा कर पूछा, "आप भी चलोगे, पटेल बा?"

"हां, मैं ने तो मना कर दिया था. मगर महाशयजी, सोलंकीजी और सभी लोग कहने लगे कि नहीं आप को आना पड़ेगा. मैं ने उन से कहा कि हमारे गांव में असोकिया नया नेता बन ही गया है. वह आएगा ही, मुझे छुट्टी दो. मगर उन लोगों ने विशेष निमंत्रित में मुझे बुला लिया. अब चलना ही पड़ेगा. रेल का टिकट भी भेज दिया उन लोगों ने. तेरे पास टिकट आया या नहीं?

अशोक झूठ बोला, "आ गया."

पटेल बा के इस फैसले से अशोक के उत्साह पर जैसे पानी फिर गया. अपनी औकात उसे मालूम पड़ गई. उस के भीतर का वह आलोचक बड़े तल्ख स्वर में बोल पड़ा, "कहो प्रतिनिधिजी, आप के पास टिकट नहीं आया और पटेल बा के पास आ गया. पार्टी में आप की हैसियत की पोल खुल गई. अब किस मुंह से जाओगे अधिवेशन में?"

इस गुस्ताख अंतर्मन का मुंह बंद करते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के लिए अशोक ने अपना निश्चय व्यक्त किया, "कहा न कि मैं हर हालत में जाऊंगा."

फिर प्रश्न हुआ, "पटेल बा सिर पर बैठेंगे?"

अशोक ने उत्तर दिया, "बैठने दो."

इस के बाद तो प्रश्नों का सिलसिला ही चल पड़ा.

"वह असोकिया कह कर पुकारेंगे?"

"पुकारने दो."

"वह अपना झोला उठवाएंगे?"

"उठवाने दो."

"वह पग चंपी करवाएंगे?"

"कर दूंगा."

"वह सब के बीच में इज्जत हलकी करेंगे?"

"करने दो."

"वह तुम्हें राणा नहीं कहेंगे?"

"जानता हूं."

"फिर भी जाने के लिए दीवाने हो रहे हो?"

"हां."

"ऐसे वहां कौन से लड्डू मिलने हैं जो...?"

"तुम नहीं समझोगे."

"तुम तो समझ गए?"

"हां, समझ गया."

"बाद में पछताओगे?"

"पछता लूंगा."

भीतर के इस द्वंद्व से विचलित हो कर अशोक एक रोज पटेल बा के पास जा पहुंचा और उन से पूछा, "टिकट रद्द हो सकता है या नहीं?"

"क्यों? रद्द कराने की क्या जरूरत आ गई?"

"मेरा जाना नहीं होगा."

"क्यों? अभी तक तो खूब कूद रहा था, अब क्या हो गया है? पैसों का इंतजाम नहीं हुआ क्या?"

"पैसों का इंतजाम भी हो गया."

"फिर क्या दिक्कत आ गई?"

आंचल में इंद्रधनुष

"सोचता हूं फुजूल के खर्च में क्यों पड़ूं? वहां अधिवेशन में कौन से लड्डू मिल जाएंगे? घर फूंक तमाशा है यह तो."

"मैं तो तेरे से कहता ही रहता हूं कि पार्टीबाजी वे ही कर सकते हैं, जिन के घर में आटा है. तेरे जैसे गरीबों के वश की बात नहीं है पार्टीबाजी, पर तुझे तो चुनाव के समय से ही इस का नशा चढ़ गया. उन लोगों ने तुझे जीप में बैठा लिया, तेरे कंधे पर हाथ रख के मीठीमीठी बातें कर लीं. तुझे राणा कह दिया तो तू चने के झाड़ पर ही चढ़ गया. बेटा, राजनीति बड़ी टेढ़ी खीर है."

"इसी लिए सोचता हूं, पटेल बा, कि पार्टी से हाथ खींच लूं?"

"जुम्माजुम्मा आठ दिन में ही थक गया.

"हम तो कई बरसों से रमे हुए हैं."

"आप की बात दूसरी है. कहां राजा भोज, कहां गंगू तेली."

"अब आई अक्ल, अभी तक बहुत हवा में उड़ा तू."

अशोक जब चलने लगा तो पटेल बा ने पूछा, "फिर चलने का क्या तय रहा."

"सोचेंगे."

"सोच, खूब सोच."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अगर सब का खर्च उठाए तो उस का तो दिवाला ही निकल जाए. इसलिए मेरा कहना मानो और अपने घर बैठो. सामर्थ्यवानों को ही ये घुंघरू शोभा देते हैं. राजनीति कंगलों का खेल नहीं है, मत जाओ.'

अशोक चीख पड़ा, "नहीं, मैं जाऊंगा. हर हालत में जाऊंगा."

अधिवेशन की तारीखें ज्योंज्यों नजदीक आने लगीं, त्योंत्यों भीतर का द्वंद्व तीव्र से तीव्रतर होने लगा. दो पाटों के बीच में जैसे वह पिसने सा लगा. दो विपरीत दिशाओं में जैसे कोई उसे खींचने लगा. इन सब बातों से परेशान हो कर वह पास के कसबे में गया मगर अपनी व्यथा वह कसबे के कार्यकर्ताओं से कह नहीं पाया. आ

"क्या मतलब?"

"मतलब यह कि आप मुझे 'असोकिया' कहते हो, इसलिए मैं ने आप का साथ छोड़ा."

"अच्छा."

"हां, पटेल बा. अब मुझे य असोकिया मत कहना."

"फिर क्या कहूं?"

"दूसरे लोग जो कहते हैं, वही कहो गांव की बात गांव में ही रहने दो. यहां अशोक राणा हूं."

आसपास खड़े सभी कार्यकर्ताओं अशोक की बात का समर्थन किया. पटेल ह हक्केबक्के से रह गए. वह अशोक की पी थपथपाते हुए बोले, "वाह रे, राणा. अब व गया तू पक्का नेता."

अशोक ने मुसकराते हुए कहा, "आ का आशीर्वाद इसी तरह मिलता रहा त और पक्का बन जाऊंगा."

सभी कार्यकर्ता ठठा कर हंस पड़े.

तभी गाड़ी आ गई. अपनाअपना झोलाझंडा उठा कर सभी लोग तैयार हो गए पटेल बा ने भी अपना झोला उठा लिया.

अशोक उन के पास ही था. मगर उस से झोला उठाने के लिए आज उन्होंने नहीं कहा.

नन्हें मुन्नों की रंगीन पाक्षिक पत्रिका

चंपक के हर अंक में सुंदर मनमोहक सचित्र कहानियां, शिक्षाप्रद लेख, व्यंग्य चित्र और चित्र पहेलियां प्रकाशित होती हैं जो आकार्षक रंगों में छपी होती हैं.

हर महीने में दो बार बच्चे चीकू चंचू और पप्पू के साहसिक कारनामों का आनंद उठाते हैं.

चंपक की सामग्री आपके बच्चों के लिए ज्ञान के नए मार्ग खोलती है, बच्चों का चरित्र बनाती है, उनका स्वस्थ मनोरंजन करती है.

चंपक

अपने बच्चों को आज ही एक प्रति लेकर दें.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आंचल में इंद्रधनुष

बहकी है फागुन की तरुणाई
रंगों से देह यह नहाई.

गालों पर अबीर और होंठों पर छंद,
बिखर गई केशराशि महकी है गंध.
आंचल में इंद्रधनुष
आंक रही पुरवाई.

चुपके से प्रेम पत्र मुसकानें लिखती हैं,
आंखों में शरारत की कलियां सी खिलती हैं.
आसपास कानों के
बजती शहनाई.

फूलों के आलिंगन बांहों ने बांध लिए,
वासंती अनुभव के दो पल जो साथ जिए
अंगअंग फड़क उठे
बौर गई अमराई.

–श्यामसुंदर दुबे

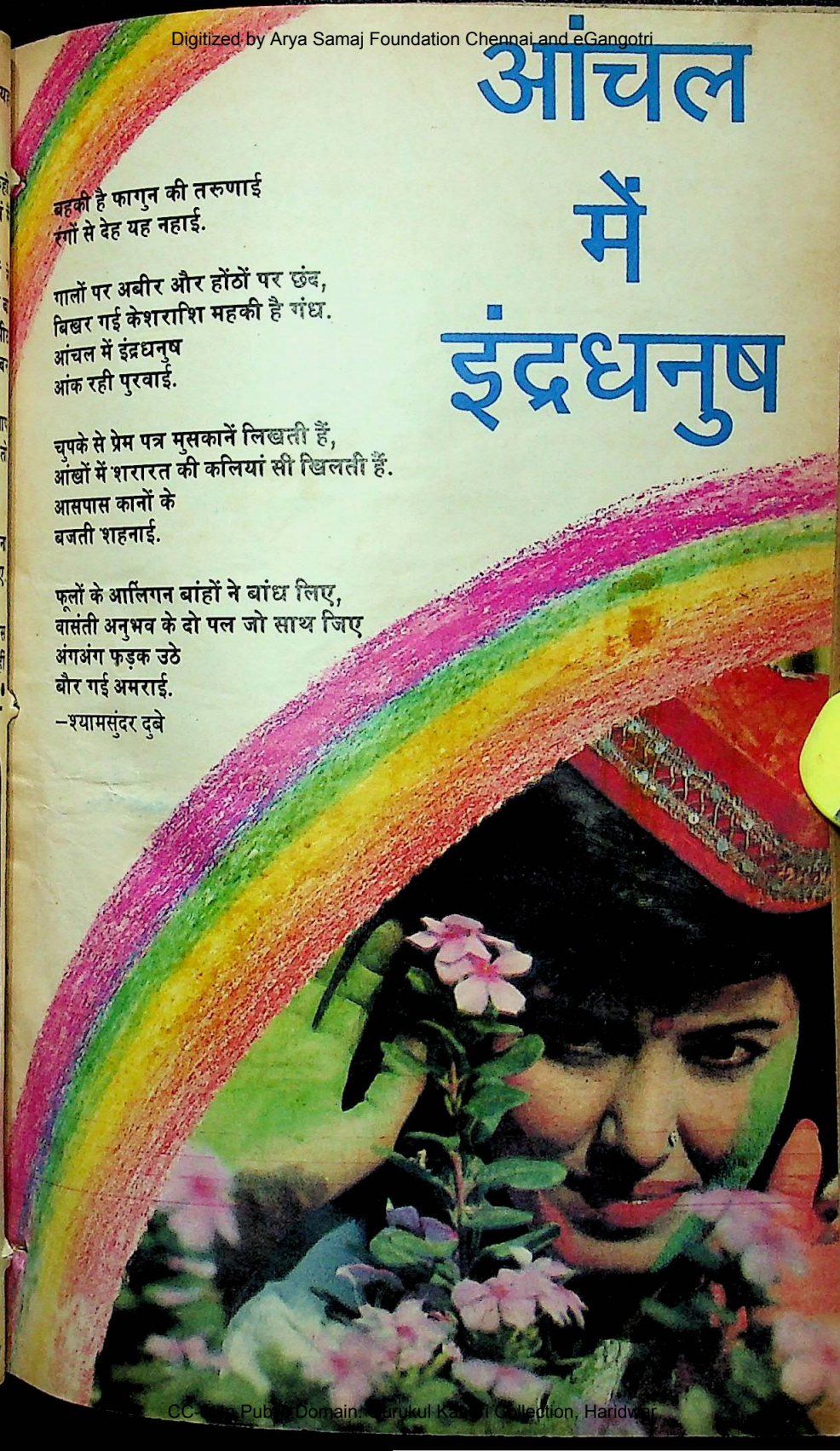

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जी-हां, अब आ गया, आ गया खेतान! 100% खेतान!

खेतान लाया है, आपके लिए भरपूर आराम... तरह-तरह के घरेलू सामान! इलेक्ट्रिक आयरन, गीज़र से लेकर किचन-मशीन, रूम हीटर; यहाँ तक कि कपड़ों की धुलाई-मशीन भी! हर निर्माण —100% खेतान!

यही तो बात है। बाज़ार में ऐसी बहुत-सी जानी-मानी कम्पनियाँ हैं, जिनका नाम बस, एक लेबल भर है। लेकिन खेतान सिर्फ एक लेबल नहीं, जो किसी भी ऐरी-गैरी कंपनी द्वारा निर्मित सामानों पर ठप्पे की तरह जड़ दिया गया हो। 'खेतान' अंकित सामान खेतान के निजी आधुनिक प्लांट में ही बनाये जाते हैं—सुयोग्य विशेषज्ञों की देख-रेख में, शुरू से अन्त तक क्वालिटी पर कड़ी नजर रखते हुए।

खेतान के सभी उत्पादन २३०० से भी अधिक डीलरों के यहाँ उपलब्ध हैं। बिक्री-पश्चात उत्तम सेवा भी सुलभ!

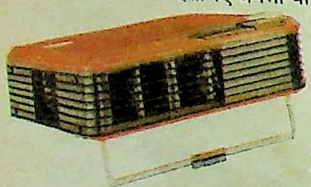

इसलिए अगली बार जब आप घर के लिए कोई उपकरण खरीदें, तो 100% से कम में समझौता क्यों करें? खेतान ही खरीदें और अपने रुपयों की भरपूर क़ीमत वसूल करें।

अब कम, क्यों करें स्वीकार?
100% खेतान के बनें खरीददार।

Khaitan®

बस, नाम ही काफी है।

Rediffusion C/K/2

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या आप होली खेलने जा रही हैं?

लेख • ओम मिश्रा

पिछली होली में मेरी पड़ोसिन आठदस अन्य औरतों के साथ गली में होली खेल रही थी. इसी बीच मेरी पड़ोसिन से सभी महिलाएं नाचने का आग्रह करने लगीं. वह पहले तो नखरे दिखाती रही, फिर उस गली से गुजरने वाली पुरुषों की एक टोली को दूर से ही आता देख कर वह पुरुषों से वाहवाही लूटने के चक्कर में अपना ठुमकेदार उत्तेजक नाच नाचने लगी. पहले तो पुरुषों ने वाहवाही करते हुए कुछ अश्लील फबतियां कसीं, फिर नशे में धुत्त एकदो युवक उसी के साथ नाचते हुए उस के यौवनांगों को छेड़ने लगे. यह तमाशा देख कर साथ वाली महिलाएं तो अपनेअपने घरों में जा छिपीं मगर बेचारी पड़ोसिन की उस रोज जो दुर्गति हुई वह आज तक सभी को याद है.

होली है तो इस का मतलब यह तो नहीं है कि आप नारी सुलभ मर्यादाओं को ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भुला बैठें. होली के अवसर पर महिलाओं को अपनी मर्यादाओं का पूरा ध्यान रखना चाहिए क्योंकि यदि महिलाएं अमर्यादित हुईं तो पुरुष वर्ग तो अशोभनीय हरकतें करने से नहीं चूकेगा. भले ही आप अकेली नहीं हैं, आप के साथ 20-25 महिलाएं हैं तो भी आप अपनी सीमाओं में रहते हुए ही होली खेलें तो पुरुष समुदाय भी अपनी सीमाओं का कुछ ध्यान रखेगा. अन्यथा एक न एक दिन आप देवर, जीजा अथवा पति के शरारती मित्रों की मानसिक विकृतियों का शिकार हो जाएं तो कोई आश्चर्य नहीं.

वस्त्रों का चयन जरूरी

आप को होली ही तो खेलनी है, कोई भी वस्त्र पहन लें, चलेगा, यह धारणा आज के संदर्भ में उपयुक्त नहीं है. पहले होली में मर्यादा थी, आजकल जैसी बेहूदगी नहीं. तब न छीनाझपटी थी और न ही आजकल जैसी खींचातानी. लिहाजा आप जैसे कपड़े पहनना चाहें पहन सकती थीं. लेकिन अब तो होली के नाम पर चेहरे से ले कर कपड़ों तक की जो दुर्गति बनती है, उस ने होली के दिन पहने जाने वाले वस्त्रों की ओर ध्यान देना कुछ ज्यादा ही जरूरी कर दिया है.

होली के दिन नए वस्त्र तो साधारणतया पहने ही नहीं जाते. लेकिन पुराने के चक्कर में महिलाएं अकसर इतने पुराने और सड़ेगले वस्त्र पहन लेती हैं कि देखने में ही वे बेमेल से नजर आते हैं और जरा सी खींचातानी होते ही आप की इज्जतआबरू का सार्वजनिक प्रदर्शन करने में जरा भी संकोच नहीं करते. लिहाजा होली के दिन वस्त्र नए भले ही न पहनें लेकिन इतने पुराने भी न पहनें कि आप के कपड़ों के बारे में ही लोग ठीकठाक राय कायम करना शुरू कर दें. पुराने कपड़ों की मजबूती तो देख ही लें, साथ ही उन्हें धो कर एवं इस्तिरी कर के ही पहनें. यह नहीं कि होली में कपड़ों की सफाई अथवा इस्तिरी भला कौन देखता है.

होली के दिन पतले अथवा पारदर्शी वस्त्र पहनना भी अनुपयुक्त होगा. रंग अथवा पानी से भरी एक बालटी में ही झीने वस्त्र आप को वस्त्रहीन दिखाने में जरा भी चूक नहीं करेंगे. पतले किस्म के वस्त्रों का होली खेलते अथवा भागदौड़ करते समय फटने का भय भी बराबर बना रहता है. कुछ ऐसी ही स्थिति बहुत अधिक चुस्त वस्त्रों की भी होती है. रंग या पानी से भीगते ही चुस्त वस्त्र और भी ज्यादा चुस्त हो जाते हैं और यदि कोई समवयस्क शालीनता छोड़ कर छीनाझपटी कर बैठे तो चुस्त वस्त्रों को फटने में जरा भी देर नहीं लगती. नई समस्या तो तब पैदा होती है जब जरा से फटे हुए वस्त्रों को शरारतवश अन्य महिलाएं और फाड़ती जाती हैं, तब आप असहाय और लाचार सी बनी अपने वस्त्रों को कोसती, बदन छिपाती फिरती हैं.

आधुनिकता न ओढ़ें

एक घटना याद आ रही है नीलम बहनजी की. नीलम अपनेआप को प्रगतिशील विचारधारा की आधुनिका मानती है. इसी वजह से स्वयं ही अपने सभी सहयोगियों से दो हाथ आगे बढ़ कर हंसतीइठलाती हुई होली खेलती रही और सहयोगी भी उस के खुले विचारों की तारीफ करते हुए उस के कपड़ों में छिपे हुए अंगों को भी रंगते रहे. लेकिन नीलम को यही आधुनिकता तब भारी पड़ी जब उस की जवान लड़की के

होली खेलने जाने से पहले होली खेलने की पूरी तैयारी भी कर लें, ताकि बाद में आप का मजा किरकिरा न हो.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे रहते आप उत्तर प्रदेश में कहीं भी बेघर नहीं हैं

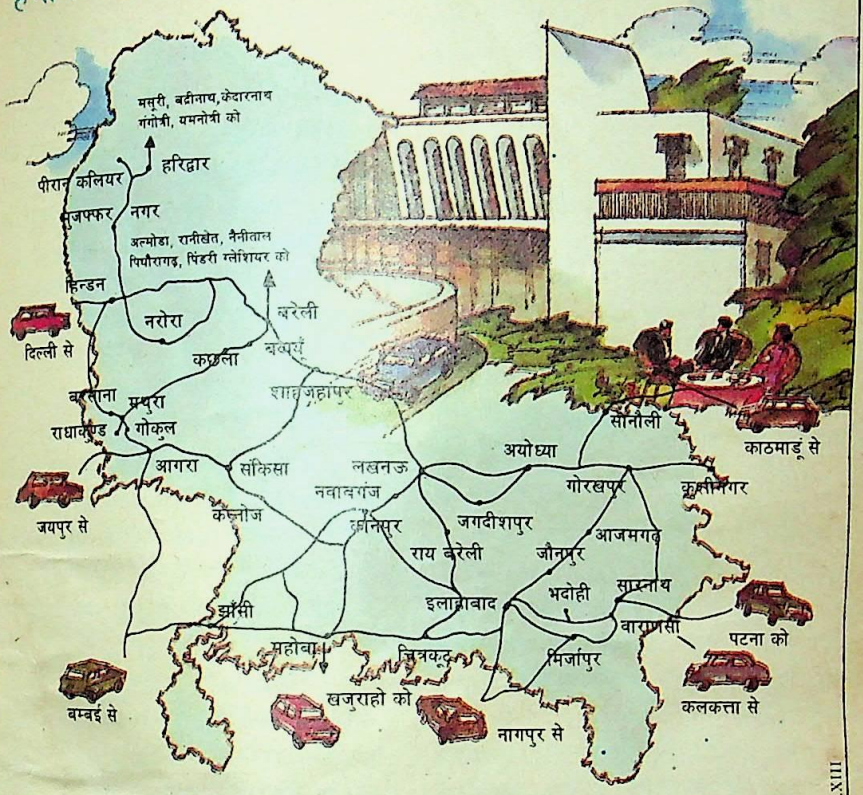

.... सुविधाजनक पड़ावों पर 35 विश्राम गृहों में आपको अपने घर सा अपनापन मिलेगा।

उत्तर या दक्षिण, पूर्व या पश्चिम जिधर भी जाना चाहें यात्रा पर निकल पड़िये। घूमते-टहलते यदि थकान महसूस हो तो उत्तर प्रदेश पर्यटन के विश्राम गृहों पर पड़ाव डालिए। राह में सुविधाजनक 35 स्थलों पर निर्मित ये विश्राम गृह यात्रा की थकान को मिटाने के लिये बहुत ही आरामदायक वातावरण प्रदान करते हैं। ठहरने, नहाने-धोने, खाने-पीने की पूर्ण व्यवस्था से सुसज्जित उपयोगी विश्रामस्थल जहाँ उत्तर प्रदेश की आतिथ्य परम्परा आपको सुखद एवं निजीपन की अनुभूति देगी।

* आगरा * अयोध्या * इलाहाबाद * कछला
* कन्नोज * कुशीनगर * गोकुल * गोरखपुर
* चित्रकूट * जगदीशपुर * झाँसी * नरोरा
* नवाबगंज * पीरान कलियर * बदायूँ
* बरसाना * बरेली * भदोही * मिर्जापुर
* मुजफ्फरनगर * मथुरा * महोबा * राधाकुण्ड
* राय बरेली * लखनऊ * वाराणसी
* शाहजहांपुर * सकिसा * सोनौली * सारनाथ
* हरिद्वार * हिन्डन

उत्तर प्रदेश में हर जगह जहाँ आप ठहरना चाहें।

इस कूपन को काटकर हमें भेज दें।

F.N.XIII

कृपया अपने आवास गृहों से सम्बंधित सम्पूर्ण जानकारी दें।

नाम : .....

पता : .....

इच्छित भाषा: अंग्रेजी/हिन्दी

उत्तर प्रदेश पर्यटन

चित्रहार भवन, 3-नवल किशोर मार्ग,
लखनऊ226001 उ. प्र.
फोन : 48349, 45252, 47749
* तत्कालिक आरक्षण केन्द्र, चन्द्रलोक भवन,
36, जनपथ, नई दिल्ली-110001 फोन: 322251.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

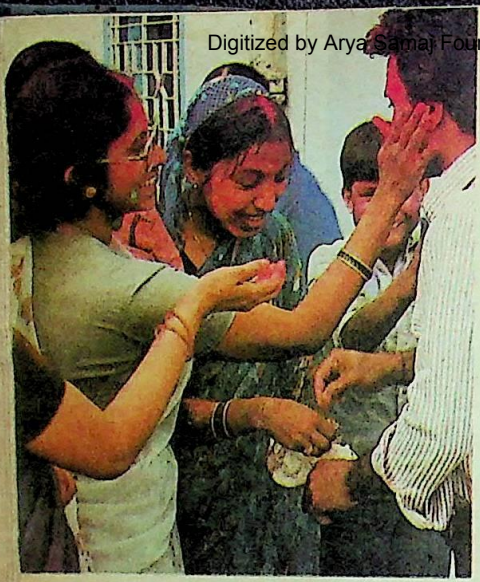

होली खेलने में नारी सुलभ मर्यादाओं का ध्यान रखना भी जरूरी है.

साथ भी वे उसी तरह होली खेलने पर उतर आए और तब भेड़ियों के हाथों में कसमसाती बेटी को छुड़ाने के लिए नीलम चीखने लगी.

यदि आप अपनेआप को दकियानूसी न मान कर प्रगतिवादी अथवा आधुनिक मानती हैं तो इस त्योहार पर अपनी यह मानसिकता कुछ देर के लिए अवश्य बदल लें. ऐसे अवसरों पर जहां पुरुष समुदाय पहले से ही निर्लज्ज हुआ बैठा हो, वह आप की आधुनिकता की बखिया उधेड़ने से बाज आ जाए, ऐसा तो संभव नहीं है. आप की प्रगतिवादी विचारधारा के प्रदर्शन के लिए ढेरों अवसर और मंच उपलब्ध होते ही रहते हैं, फिर इन दोचार घंटों के लिए इस विचार को त्याग देने में भला क्या हर्ज?

एक बात और. होली पर अपरिचितों के सामने इतना अधिक न खुलें कि वे अनचाहा मनचाहा कर सकें. अकसर देखने में आया है कि महिला की जरा सी शह मिलते ही अल्प परिचित अथवा अपरिचित पुरुष भी रंगगुलाल मलने की आड़ में उस के यौवनांगों से छेड़छाड़ करने का मोह संवरण नहीं कर पाता है. अत: सामने वाले को इतनी छूट न दें कि वह कुछ अनुचित हरकत कर सके.

यदि आप की जवान लड़कियां हैं तो उन का भी पूरा खयाल रखिए. यह नहीं कि "अरे, होली ही तो खेल रही है. साल भर में एक ही तो दिन आता है ऐसा हंसनेकूदने का." आप का ऐसा सोचना गलत है. उन्हें होली के समय उद्दंड पुरुष मित्रों के बीच अकेला भूल कर भी न छोड़ें, वरना संभव है, वे उन की कुत्सित वृत्ति का शिकार हो जाएं. आप की उपस्थिति से उन की इतनी हिम्मत नहीं पड़ेगी.

कुछ अन्य बातें

होली में आप की मरजी नहीं चलती है. अत: पूरी तैयारी के साथ ही होली खेलने घर से बाहर निकलें. घर से बाहर निकलने से पूर्व थोड़ाबहुत नाश्ता आदि अवश्य कर लें. खाली पेट होली खेलना स्वास्थ्य के लिए हितकर नहीं होता.

यदि आप को सर्दीजुकाम हो रहा है तो होली के दिन बिस्तर से भी नीचे न उतरें. इस के लिए तबीयत ज्यादा खराब होने का नाटक भी करना पड़े तो अनुचित न होगा. सर्दी लगने के बाद यदि आप रंगों और बालटी भरे पानी से दोतीन बार ही सराबोर हो लीं तो निमोनिया होते देर नहीं लगेगी और इस तरह से जरा सी असावधानी से आप लंबी बीमारी की गिरफ्त में फंस जाएंगी.

होली खेलते समय मेजबान के घर नमकीनमिष्ठान खाइए जरूर, मगर खाने से पहले इस बात की पूरी तसल्ली कर लें कि उस में भांग तो नहीं है. इस दिन मेजबान इस तरह का मजाक अकसर मेहमान के साथ कर बैठता है. मेजबान तो मजाक करता है, मगर इस का खमियाजा आप को तब भुगतना पड़ता है, जब भांग आप के सिर पर चढ़ कर बोलती है और आप तरंग में आ कर सार्वजनिक तौर पर उलटासीधा कर के उपहास का पात्र बन जाती हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सेविका अथवा पाटरी बनी, पंक्तिबद्ध खड़ी अन्नदाता को रिझाने के लिए सपरिश्रम मांगपट्टी न करने लगे तो देख लेना. हम ने भी पहलेपहल इसी तरह फड़फड़ा कर क्या कम चोंचले किए थे?''

पर उन्हें ज्ञात न था कि मैं सचमुच असाधारण थी. मेरे मातापिता, अड़ोसी-पड़ोसी और सहेलियों ने मुझे जलती हुई चिनगारी का नाम दे दिया था. वे सुलगती लौ अथवा लाल अंगार से मेरी तुलना करते थे.

मुझे गर्व था कि जनानी ड्योढ़ी के सातों रावलों (भाग) में कोई भी युवती मेरे समान सुंदर न थी. प्रत्येक से मैं ने पहले ही दिन अपने रूप की प्रशंसा सुन ली थी. गुलाब की पंखड़ियों जैसी अपने तन की कोमलता व दूधिया चांदनी जैसे उजले गाल पर कई बार

मैं सोचती थी कि मेरा पति कोई बांका, छबीला, अलमस्त नौजवान होगा, किंतु परिस्थितियों ने मेरी खुशियों को अलवर के राजघराने में कैद कर के रख दिया था. कैसे मुक्त हो सकी मैं इस गुलामी से? कैसे अपने हठ की रक्षा की?

तो मैं स्वयं ही मुग्ध हो उठती थी. मेरे बड़े बड़े नयनों की सुंदरता की बलैंया मेरी परिचारिकाएं ले रही थीं, जबकि उन पर

''तुम्हारा दास उपस्थित है, हृदयेश्वरी. कहो, क्या आज्ञा है?'' अलवरनरेश घिघियाते हुए बोला.

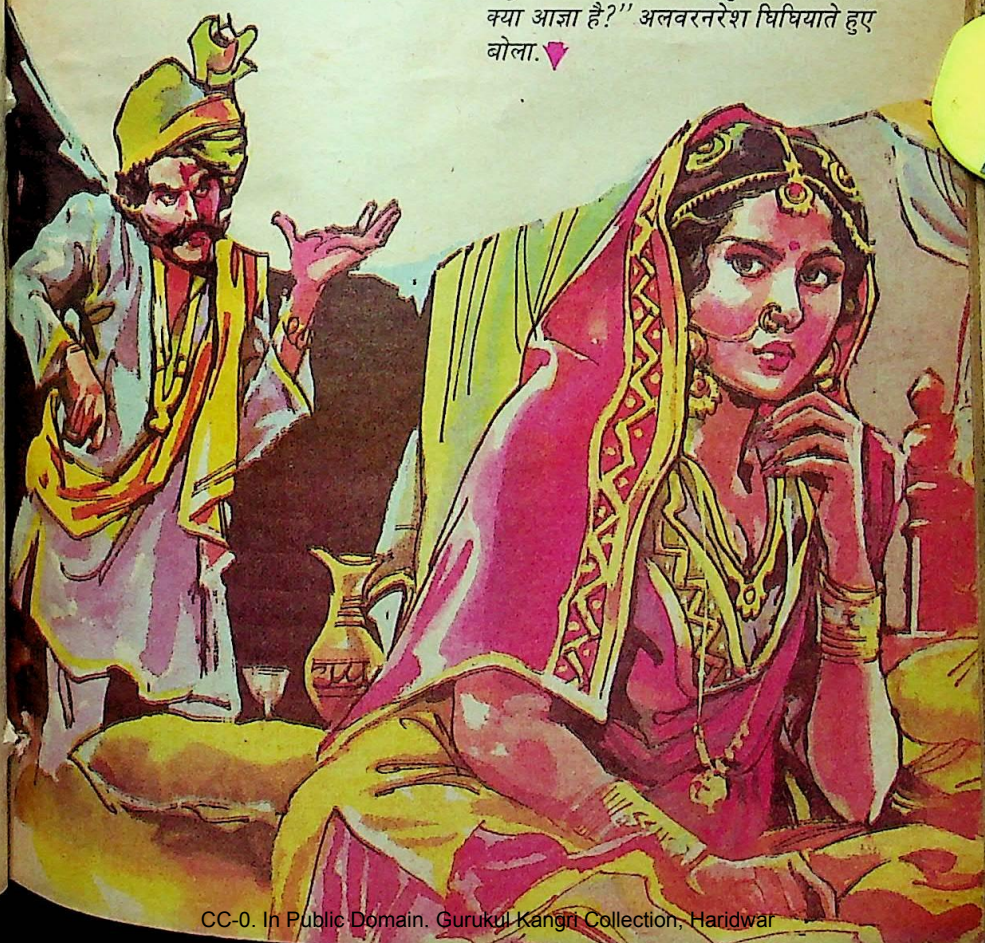

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब चढ़ी है तू मेरे हत्थे. नए अन्नदाता से कह कर तेरी बोटियां काटकाट कर चीलकौओं को खिलाऊंगा,'' नादिर की यह बात सुनते ही लाड़कंवर ने बंदूक की नली उस की ओर कर दी.

छाई उतनी ही बड़ी पलकों को देख कर मेरी सहेलियां बस ''हाय'' करने लगती थीं. मेरे कंधों पर बिखरी लंबी, काली व भारी केशराशि में तो, मैं ने जैसा सुना, रास्ता चलते लोगों का दिल अटक जाता था. सारे रावलों में मेरे रूपार्कषण, तीखी नासिका, पतले रतनारे होंठों, मोरनी जैसी गर्वीली ग्रीवा व पुष्ट यौवन की चर्चा थी. 'राजाजी' की कौन कहे, मेरी पालकी को ले कर आने वाले सेवक, यहां तक कि नादिर भी, मेरे रूप के प्रभाव से ठगा खड़ा रह गया था.

अपने जीवन में यौवन की प्रथम आहट मात्र से मैं, लाड़कंवर, रोमांचित हो उठी थी. रुपहले स्वप्न मेरे 14 वर्षीय, कुंआरे नेत्रों को प्रतिपल आच्छन्न करने लगे थे. कल्पना के रथ पर आरूढ मेरा मन इंद्रधनुषी लोक में विचरण करने लगा था. मेरे मानस पटल पर अपने काल्पनिक जीवनसाथी की आकृति सदैव बनतीबिगड़ती रहती थी, यद्यपि उस का स्वरूप अभी तक स्पष्ट नहीं था. मैं केवल इतना जानती थी कि मेरा होने वाला पति कोई बांका, छबीला, अलमस्त नौजवान होगा क्योंकि मेरे मातापिता ने मुझे बड़े लाड़दुलार व नखरों से पाला था. अतः वे मेरे लिए किसी गबरू युवक का ही चयन करेंगे. मैं ने निश्चित कर लिया था कि ऐसे युवक की मीठी प्यार भरी बातों पर सर्वस्व न्यौछावर कर दूंगी – लाज से स्वयं ही लाल बहूटी बन कर अपनी गुलाबी हथेलियों से अपने नेत्र मूंद लेती.

नारायणपुर, विराट नगर की राजधानी में इन मीठे स्वप्नों के तानेबाने बुनते एक दिन जब मैं संध्या के झुटपुटे में, विचारों में निमग्न, अपनी विशाल हवेली के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कॉफ़ी का बेमिसाल अंदाज़...

सर्वोत्तम 100% शुद्ध इन्स्टैंट कॉफ़ी का शानदार स्वाद। ख़ास चुने हुये कॉफ़ी बीन्स से तैयार और भरपूर फ़्लेवर युक्त यह लाजवाब कॉफ़ी आप सब का दिल जीत लेगी।

आज ही गोल्ड कैफ़े लाइये और अपने परिवार के साथ आनन्द लीजिए। आप स्वयं कहेंगे "वाह! कॉफ़ी का बेमिसाल अन्दाज!"

GOLD CAFE

सर्वोत्तम 100% शुद्ध कॉफ़ी

इन्सटैंट कॉफ़ी

कॉफ़ी का बेमिसाल अंदाज़!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

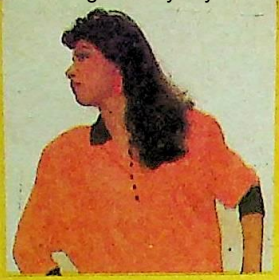

आभास

गुलाब की टहनी का हर पुष्प
चेहरा तुम्हारा याद दिलाता है,
खिला हो ऐसे ही जैसे,
मुझे यह आभास दिलाता है.

–देवदत्त शर्मा

बगीचे में हवाखोरी कर रही थी, अचानक बापू ने सिर झुकाए प्रवेश किया. पालकी से उतर कर मुख्य द्वार तक उन्होंने अपने स्वभाव के विपरीत पल भर के लिए भी इधरउधर नहीं ताका.

"क्या बात है जी, आज बड़े गंभीर हो?" मैं ने अपनी मां को कहते सुना.

"ले जाओ, मुझे तनिक भूखप्यास नहीं है." पिताजी ने मिठाई, ठंडाई व बादाम का शर्बत ले कर उपस्थित होने वाली सेविकाओं को उंगली के इंगित से उलटे पांव लौटा दिया.

"क्यों, तबीयत ठीक नहीं है क्या, जी? लाइए, आप के हाथपैर दबा दूं."

"ठकुरानी, मेरे हाथपैर पूरी तरह सलामत हैं. बस, एकांत की आवश्यकता है."

मेरी मां के आदेश पर सब सेवक सेविकाओं ने कक्ष खाली कर दिया.

अपने बापू को चिंतित मुद्रा में देख कर मैं अत्यधिक दुखी थी. वह तो सदैव अपनी चुहलबाजी व हंसीठहाकों से सारी हवेली को सिर पर उठाए रहते थे. फिर आज ...? मैं ने दीवार पर कान लगा दिए. "ठकुरानी", अचानक मेरे बापू ने मां को संबोधित करते हुए कहा, "आज की मत्स्य नगरी में मैं लाललाल रुधिर की नदियां बहा दूंगा. राजा जयसिंह का इतना दुस्साहस?"

मां मौन थीं. वह बेचारी बोलती भी क्या, जब कुछ जानती ही नहीं थीं.

"आप ने पूछा नहीं, ठकुरानी, कि बात क्या हुई?"

"जब आप कुछ बताना ही नहीं चाहते तो अनधिकार चेष्टा क्यों करूं?" मां का संक्षिप्त उत्तर था.

"तो सुनिए. आप की लाड़ली बेटी लाड़कंवर का डोला मंगाया है अलवर राजघराने वालों ने..." बापू के आक्रोशपूर्ण स्वर को सुन कर मैं आसमान से जैसे धरती पर गिर पड़ी. मां का मुख सफेद पड गया.

"पर धर्मावतार तो हमारी बेटी का विवाह किसी सुंदर राजकुमार से कराने का वचन दे चुके हैं..."

"आप को क्या अलवर महाराज जयसिंह सुंदर नजर नहीं आते?" पिताजी व्यंग्य से बोले, "उन का थुलथुल शरीर, सफेद बाल, पोपला मुख, जर्जर हाथपैर, गड्ढों में धंसी आंखें, सभी कुछ क्या उन की उफनती तरुणाई के प्रमाण नहीं हैं?"

"ओह..." मां फफक कर रो पड़ीं.

मैं ने अपनी रुलाई को रोकते हुए, व्याकुल हो कर, जैसे ही भाग कर गद्दे में अपना मुख छिपाना चाहा, मां के प्रश्न ने जैसे मेरे पैरों में जंजीर डाल दी.

"फिर आप ने क्या उत्तर दिया?"

"मुझे यही तो दुख है कि मैं कुछ उत्तर दिए बिना मौन वहां से लौट आया. मेरे हाथ तलवार की मूठ पर क्यों नहीं गए, मुझे आश्चर्य है." पिताजी अन्यमनस्क हो उठे.

"उस से क्या समस्या हल हो जाती? जोश में होश खो कर ही तो हमारी जाति आज तक पतनोन्मुख रही है. मेरा कहना मानें तो पृथ्वीवल्लभ को संदेश भेज दीजिए कि लाड़कंवर केवल पटरानी बन कर बालगढ़ के जय महल में प्रवेश कर सकती है..."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

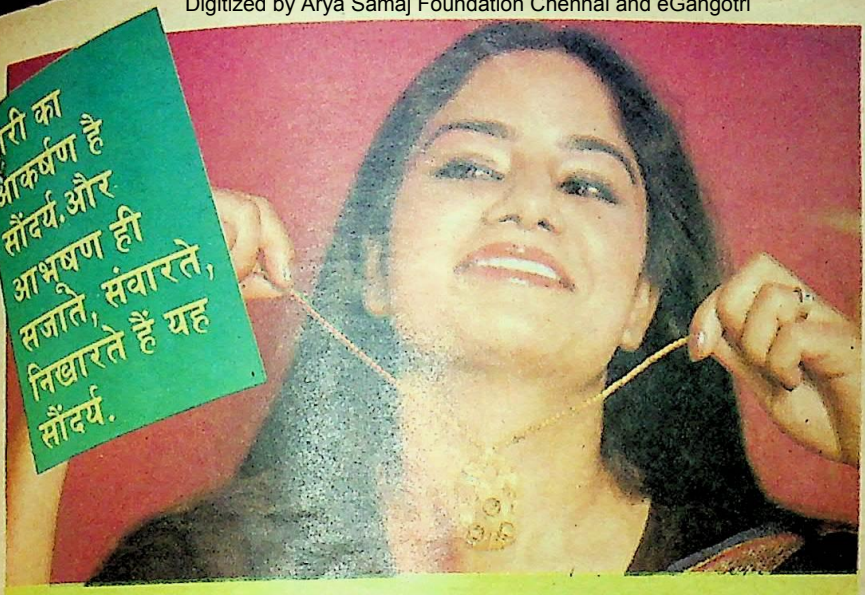

गहने नकली हों या असली पर जब रूप पर सजते हैं तो सौंदर्य की लकदक और बढ़ जाती है.

किन अवसरों पर कैसे गहने, आभूषण पहनें, खरीदें या बनवाएं कि आप प्रियतम की चहेती बनी रहें और महफिल में हर किसी की अजीज.

इस सारी जानकारी से भरापूरा होगा मार्च, 1988

गृहशोभा

आभूषण विशेषांक

इस के अलावा रोचक कहानियां, स्वास्थ्य, सौंदर्य और पारिवारिक उलझनों का उचित समाधान. देशविदेश के सचित्र समाचार, पकवान और सभी स्थायी स्तंभ,

युवा महिलाओं की चहेती पत्रिका.

अपनी प्रति के लिए आज ही अपने समाचार पत्र विक्रेता से कहें.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इस से पूर्व तो मैं लाडो को काट कर हवेली में ही दबा दूंगा. और सुन लो, इस विषय में मुझ से कभी बात मत करना. यह मेरा अंतिम निर्णय है कि लाड़कंवर माछेरी के राजमहलों में नहीं जाएगी."

बापू के प्रति मेरे मन में अपार श्रद्धा उमड़ पड़ी. मैं उन्हें प्राणों से अधिक चाहती थी. पर अब तो मैं उन की अभ्यर्थना ही करने को उत्सुक थी. वैसे तो प्रत्येक बेटी अपने पिता को चाहती है, पर मैं तो उन्हीं के कारण आज जीवित हूं...

बात को और अधिक स्पष्ट करूं तो मेरी तीन बड़ी बहनें थीं, पर राजपूती परंपरा के अनुसार मेरी मां ने उन के पैदा होते ही उन के हलक में तंबाकू ठूंस कर उन्हें मार डाला था. बेटी को अभिशाप मान कर. मैं जब पैदा हुई तो मुझे भी मां मार डालने की तैयारी कर रही थीं.

अचानक घोड़े की बीमारी के कारण बापू को बाहर से लौट आने को बाध्य होना पड़ा. मुझे देख कर बापू ने मुझे जीवित रखने का संकल्प कर लिया. यदि वह लौट न आ तो मेरा अंत भी मेरी बहनों जैसा हो जा इसी लिए मैं बापू को बहुत अधिक चाह थी. आज सोचती हूं कि यदि वह अचानक लौटते तो ही अच्छा रहता. मैं तिलतिल क तो न मरती...

उपर्युक्त बात अर्थात मेरे डोले मांग के एक सप्ताह के ही भीतर मेरे का सदमे से देहांत हो गया. इस संताप मां सहन नहीं कर सकीं और एक माह वह भी चल बसीं. मेरे रुपहले स्वप्न ज कर राख हो गए. मेरी सारी कल्पनाओं पाला पड़ गया. स्पष्ट था कि अलव महाराज मेरा विवाह अब मेवाड़ कुमार साथ नहीं होने देंगे, जिन की बहादु पराक्रम व प्रभावशाली व्यक्तित्व के कार पिताजी ने मेरे लिए चयन किया था. मैं सोचा कि निर्लज्ज बन कर मैं स्वयं मेवा कुमार के पास विवाह का प्रस्ताव भेज दूं. प तब तक....

मेरे दूर के काकाकाकी ने आ कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केवल हमारी हवेली पर ही अधिकार कर लिया बल्कि मेरी इच्छा के विपरीत मेरा डोला भी मत्स्य देश के बालागढ़ में भेज दिया. जिस राजघराने ने मेरी प्रसन्नता पर दुखों का भारीभरकम पहाड़ लुढ़का दिया उस से प्रतिकार लेने का मैं ने निश्चय कर लिया.

मेरी चुनौती का पूरा प्रभाव पड़ा. 'जनरक्षक,' 'पृथ्वीपति', 'बापजी' 'माई बाप' व 'परमपरमेश्वर' के नाम से विख्यात, अलवरपति दौड़ेदौड़े मेरे कक्ष में चले आए.

"तुम्हारा दास तुम्हारे सम्मुख उपस्थित है. हृदयेश्वरी, बोलो, क्या आज्ञा है?" 42 वर्षीय पर 50 के लगने वाले, अपने बापू की आयु से कहीं बड़े व्यक्ति को इस प्रकार घिघियाते देख कर वितृष्णा मेरे रोएंरोएं में व्याप्त हो उठी. मेरी इच्छा हुई कि अपनी दारुण समस्या के जनक का मैं आगे बढ़ कर टेंटुआ दबा दूं.

"आइए, महाप्रभु, इस कक्ष में मैं, आप का स्वागत करती हूं." मन ही मन क्रोध पर नियंत्रण करते हुए मैं बोल उठी.

"अरे, स्वागत ही करना है हमारा तो हमारे निकट आओ." लड़खड़ाते हुए महाराजा जयसिंह ने हाथ बढ़ा कर मुझे पकड़ना चाहा, पर मैं बोल उठी, "माईबाप, तनिक धैर्य रखिए..."

पर मैं जब तक अपना वाक्य पूर्ण करूं, राजाजी लड़खड़ा कर धरती पर गिर पड़े. मैं ने आगे बढ़ कर उन का कंधा पकड़ कर जैसे ही उठाना चाहा, शराब की दुर्गंध से मेरा माथा भन्ना गया. मेरे बापू मेरे इस स्वभाव से परिचित थे, इसी लिए कभी भी उन्होंने सुरा पान कर मेरे सामने आने की चेष्टा नहीं की थी.

गहन वितृष्णा से उद्वेलित हो कर मैं जैसे ही अपना कर्तव्य निश्चित करने लगी, प्रजापालक धरती पर पड़ेपड़े चिल्लाए, "अरे कमबख्तो, कहां मर गए सब? देखते नहीं, हम जमीन पर गिरे पड़े हैं? नादिर..."

"जी हुकुम, संसारपति."

आज्ञा की देर थी, पल भर में ही चार

हिंसा

हिंसा में पड़ कर विचार अविचार हो जाता है और फिर अविचारी वर्ग विचारवान को अलग सरका कर आंदोलन की बागडोर अपने हाथ कर लेता है.

—जैनेंद्रकुमार

नग्नप्राय युवतियों ने मेरे कक्ष में प्रवेश किया.

"गद्दा बाई, हमें सहारा दो."

महाराजा जयसिंह के आदेश पर उन में से एक राजाजी की कमर के पीछे जा कर लेट गई. राजाजी ने अपनी कमर उस की छाती पर टिका दी.

"मसनदबाई और तकियाबाई, तुम किस का इंतजार कर रही हो?

एक के कंधों व गरदन पर उन्होंने अपना सिर रख लिया, जबकि मसनद बनी पासवान को उन्होंने अपनी बगल में दबाते हुए उस पर अपनी कोहनी स्थिर कर ली. इस बीच 'बगलीबाई' की पीठ पर उन्होंने अपने पैर सीधे कर लिए थे.

एक बार तो मेरी इच्छा हुई कि उन चारों युवतियों के झोंटे पकड़ कर मैं उन्हें अपने कक्ष से बाहर फेंक दूं, पर गंभीरतापूर्वक चिंतन के पश्चात उन की इस दयनीय स्थिति का दोषी भी मैं ने इस बुढ़ऊ खूसट को पाया, जो मुझ से अभिसार रचाने आया था. एकएक कदम फूंक कर, बुद्धिमानी से मैं उस से प्रतिकर लेना चाहती थी.

"आलीजाह, लीजिए नोश फरमाए," नारायणपुर के कारिंदे, सुल्तान मोहम्मद से सीखी नफीस उर्दू का प्रयोग करते हुए मैं मधुर स्वर में बोली. अपने हाथों से चांदी के गिलास में लबालब सुरा डाल कर राजाजी को मैं ने गटागट पिला दी.

"मेरे रहते हुए किसी की कोई आवश्यकता नहीं है यहां. तुम सब जाओ, और जब तक मैं आज्ञा न दूं इस कक्ष में कभी प्रवेश मत करना." मेरे तीखे स्वर पर वे चारों युवतियां उठ कर भाग गईं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपना सौन्दर्य निखारिए एस्कमेल अपनाइए

एस्कमेल पिम्पल क्रीम

की ल मुंहासों की परेशानी अब क्यों
सताए जब आप सही क्रीम अपनाएं. जी हां,
एस्कमेल – एक ख़ास फ़ार्मूलेवाली क्रीम,
जो मुंहासे होने न दे, भद्दे दाग़ पड़ने न दे.
एस्कमेल आपका सौन्दर्य निखारे. हरदम.

एस्कमेल सुन्दरी बनिए

© Eskayef Limited, Licensed user of Regd. Trade Mark ®

HTA 1987

SKOF — एक एसकेएफ उत्पादन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हुजूरे आला, लौंडी आपकी खिदमत के लिए मौजूद है." मैं अपने मीठे शब्दों के जाल में फंसा कर मत्स्य शासक को लगातार सुरापान कराती रही. परिणाम वही हुआ कि रात्रि के प्रथम पहर से पूर्व ही राजा उर्यासिह ने खर्राटे भरने प्रारंभ कर दिए. अर्द्धरात्रि को मैं ने नादिर को बुला कर बस के मालिक को इस कक्ष से कहीं भी ले जाने का आदेश दिया. नादिर मेरे विचित्र आदेश पर पहले मुंह बाए खड़ा रहा, फिर मेरे शब्दों की गंभीरता समझ कर उस ने तुरंत आदेश का पालन किया.

अन्नदाता से मेरा यह प्रथम साक्षात्कार एक ओर मेरी प्रतिष्ठा को बढ़ाने में सहायक हुआ तो दूसरी ओर भविष्य की मेरी सफलताएं इसी के कारण संभव हो सकीं. दूसरे दिन से मैं ने दोतरफा मोर्चाबंदी प्रारंभ कर दी. मैं जानती थी कि नादिर, जनानी ड्योढ़ी का सर्वेसर्वा, विषय वासनाओं से तो पूर्णतया अपरिचित था पर रुपएपैसों की भूख उसे भी थी. अपनी मुंह लगी परिचारिका छिम्मा के हाथों मैं ने नादिर को बहुमूल्य भेंट भेजनी प्रारंभ कर दी.

छिम्मा ने नादिर को जा कर बताया, "मेरी मालकिन बड़ी विचित्र स्त्री है. अपने अचूक निशाने की वह प्रतिदिन कई कहानियां सुनाती रहती हैं. उन्होंने अपने कक्ष की दीवार पर पीहर से लाई भरी हुई बंदूक टांग रखी है. उन का कहना है कि जैसे वह जंगल में शिकार किया करती थीं, उसी भांति वह किसी भी आतताई का सिर पल भर में उड़ा देंगी!" बेचारा नादिर, बंदूक की गोली के आगे अपने सोटे व चाबुक को भूला बैठा. परिणामस्वरूप जबजब 'दाताजी' ने मुझे बुलाने की चेष्टा की, नादिर ने उन्हें भी बंदूक से भयभीत कर उन की वासना पर पानी उड़ेल दिया.

तीन वर्ष के पश्चात एक दिन अत्यधिक विषयवासनाओं व अनियंत्रित सुरापान में लिप्त रहने के कारण श्रीजी का देहांत हो गया तो सारा अलवर घड़ियाली आंसू बहा रहा था और मैं भविष्य की योजनाओं में मग्न थी. उसी रात्रि को दस पासवानों व पाटरियों को अपनी बंदूक द्वारा यदि मैं मुक्त न करा लेती तो प्रातः 'महाप्रभु' की चिता के साथ उन सब को भी जीवित जला दिया जाता.

बड़े दाता के देहावसान के बाद जनाने महल का नेतृत्व धीरेधीरे मेरे हाथों में सिमटता गया. मैं गुप्त रूप से आवासिनियों को उन की विपन्नावस्था से उबरने की प्रेरणा देती रही.

बाला दुर्ग की परिधि में स्थित जनानी ड्योढ़ी किसी बड़े बंदीगृह के सदृश थी. इस के भीतर बागबानी, फव्वारे, भित्ति चित्र सभी कुछ हैं. पतंगखाना, पोथीखाना, रथखाना, बग्घी व पीलखाना तथा तोपखाना इस की विशालता के कुछ प्रमाण हैं. रामलीला, नाटक, चौपड़, शतरंज, पूजा-

विश्व खेलों के इतिहास का सब से महंगा टिकट

पिछले दिनों भारत और पाकिस्तान के बीच खेले गए उद्घाटन मैच में प्रधान मंत्री राजीव गांधी के बगल वाली सीट पर बैठने का सम्मान प्राप्त करने के लिए देश के कई अतिविशिष्ट व्यक्ति उत्सुक थे. प्रतियोगिता के प्रायोजक रिलायंस के कार्यकारी निदेशक अनिल अंबानी के पास उन इच्छुक व्यक्तियों के इतने फोन आए कि तंग आ कर उन्होंने फोन सुनना ही बंद कर दिया था.

पर एक प्रस्ताव ऐसा आया, जिसे नकारना आयोजकों के लिए असंभव हो गया. यह प्रस्ताव उद्योगपति विजय मल्लया का था. उन्होंने प्रधान मंत्री कोष के लिए 25 लाख रुपए दे कर सीट हथिला ली. इस तरह यह सीट विश्व खेलों के इतिहास में सब से महंगी सीट बन गई.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठ, पतंगबाजी आदि हमारे मनोरंजन के कई साधन भी इस में जुटाए जाते थे. पर एक बार इस में प्रवेश पा लेने वाली युवती जीवनपर्यंत इस का त्याग नहीं कर सकतीं. जीवंती, श्वेता, मुश्कक व अष्ट जैसे विषैले वृक्षों व बेलों से जनानी ड्योढ़ी को घेरा जाता था. इस के चारों ओर की गहरी खाई व ऊंची दीवार इसे दृढ़ सुरक्षा प्रदान करती थी. जीवन की समस्त सुविधाएं यहां उपलब्ध हो सकती थीं पर 'मुक्ति' शब्द का उच्चारण भी यहां अपराध था.

"आइए, महादेवी, सब सो रहे हैं इस समय," फुसफुसा कर छिम्मा ने रात्रि के तीसरे पहर में मुझे सूचना दी.

"क्या नादिर भी?"

"जी हां, उसे मैं स्वयं खूब शराब पिला कर धुत्त कर आई हूं."

"पर तुझे ज्ञात तो है न...?"

"आप मुझ पर विश्वास तो कीजिए."

"ठीक है, चल, आगेआगे."

मैं ने अपनी बंदूक उठाई और बिना पदचाप किए कक्ष के बाहर निकल आई. एकएक कर के 10 आवासिनियां भी अपने स्थानों से निकल कर मेरे साथ हो लीं. हम सब निःशब्द चली जा रही थीं. मेरे आदेश पर उन सब ने काले वस्त्र धारण कर लिए थे, जिस से रात्रि में भागने में सुविधा हो.

एक कक्ष में दीवार से लगी लकड़ी की अलमारी को हटा कर छिम्मा ने गुप्त द्वार को धीरे से खोला नीचे कई सीढ़ियां चली गई थीं.

"छिम्मा, पीछे का द्वार बंद कर आ, जिस से शत्रु हम तक नहीं पहुंच सके."

"ठीक है, बाईजी. अब आप लोग मेरे पीछेपीछे चली आइए. मैं मशाल दूसरे द्वार पर पहुंच कर ही जलाऊंगी." हम सब एक घंटे तक मौन उस सुरंग में चलती रहीं. अचानक एक झरोखे से ठंडी हवा का एक झोंका हम सब को शीतल शांति प्रदान कर गया.

"बाई सा, अब हम पहाड़ की तलहटी में पहुंच गई हैं, यह हवा का झोंका इसी बात का प्रमाण है. बस हमें आठदस मील और चलना है."

मुझे उस की बात सुनाई नहीं दे रही थी. मैं तो इस बात पर आश्चर्य कर रही थी कि सुरंग में धूलधक्कड़, जालों व चमगादड़ों का कहीं नामनिशान भी नहीं था. तो क्या सुरंग का प्रयोग लगातार होता रहा है? इस प्रश्न ने मुझे असमंजस में डाल दिया था. मेरी छठी इंद्रिय धीरेधीरे सक्रिय होती जा रही थी. हृदय में एक मंथन मेरी चेतना को और भी अधिक जागृत किए जा रहा था.

मैं ने पीछे आती दसों आवासिनियों को आगे बढ़ने से रोकते हुए अचानक एक के हाथ से मशाल खींच कर जलाते हुए बंदूक की नली छिम्मा पर अड़ा दी. मैं गरज उठी, "कहां ले जा रही है तू हमें, सचसच बता."

"बाईजी... यह सुरंग विजय मंदिर महल के निकट जा कर निकलेगी..."

इसी बीच सामने से आती कुछ पदचापों को सुन कर मैं चौंक उठी.

"शाबाश छिम्मा, तूने इन सब को जाल में खूब फंसाया. बड़ी बुद्धिमान व चतुर बनती थी यह लाड़कंवर. अब चढ़ी है मेरे हत्थे. नए अन्नदाता से कह कर इस की बोटियां काटकाट कर मैं चीलकौवों को खिलाऊंगा. और तुम सब भी जनानी ड्योढ़ी को नष्ट करने पर तुल गईं? ऐसी सजा दूंगा कि आगे से कोई ड्योढ़ी के बाहर तक झांकने में हिचकिचाएगी तुम सब की पेड़ों पर टंगी लाशों को देख कर. आश्चर्य यह है कि इस चतुरा ने तेरी बात का विश्वास कैसे कर लिया कि तूने मुझे शराब पिला कर धुत्त कर दिया है? देवीजी, याद रखो कोई भी नादिर कभी शराब नहीं पीता..." वह बढ़ता हुआ मेरे निकट आ गया.

अचानक मेरे नथुनों में चिरपरिचित दुर्गंध भर आई. शराब के भभके से मेरा माथा भन्ना गया. मैं ने आव देखा न ताव, बंदूक की नली का घोड़ा दबा दिया. उस का झूठ मुझ से छिपा नहीं रहा था.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब दर्द से मुक्ति!

पेन एड. पीठ और जोड़ों के दर्द से पल-भर में मुक्ति दिलानेवाली हर्बल स्प्रे

क्या आप किसी ऐसी दर्द या पीड़ा के शिकार हैं जिसपर कोई भी दवा कारगर साबित नहीं होती?

अब पेन एड आज़माइये. आपका दर्द कितना भी पुराना क्यों न हो—इधर स्प्रे की, उधर दर्द गायब.

दर्द-निवारक

हर्बल पेन एड स्प्रे करते ही पीड़ित भाग पर असर करती है. इसे मलने की भी ज़रूरत नहीं. इसकी गुणकारी शक्ति मांसपेशियों के भीतर तक जा कर दर्द को तुरन्त खींच निकालती है. और आपको घन्टों तक आराम बना रहता है.

कोई हानिकारक प्रभाव नहीं

पूर्णतः जड़ी बूटियों के गुणकारी तत्त्वों से बनी होने के कारण पेन एड कोमल से कोमल त्वचा पर भी कोई हानिकारक प्रभाव नहीं छोड़ती. न कोई खाज, न खुजली. (उपयोग से पहले आपको इसके परीक्षण की भी ज़रूरत नहीं).

अब पीठ के दर्द, साइटिका व लम्बैगो की पीड़ा, गठिया अथवा जोड़ों के दर्द, मोच या मांसपेशियों के दर्द की परेशानी भूल जाइये.

पेन एड स्प्रे लगाइये और देखते ही देखते दर्द से छुटकारा पाइये. आपको लगेगा जैसे दर्द कभी था ही नहीं.

RKB HERBALS

पेन एड का काम— घन्टों तक दर्द से आराम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सही दुल्हन की तलाश...
सौ साल पहले.

लाला दौनदयाल, हैदराबाद के एल्बम से: सौ साल से भी अधिक पुरानी तस्वीर

जिसकी जीती-जागती याद आज भी हमारे साथ है.
शुक्रिया ब्लैक एंड व्हाइट फ़ोटोग्राफ़ी का!

अपने पारिवारिक एल्बम के कुछ पन्ने पलटाकर देखिए...
जिनमें सजी हैं बरसों पुरानी यादों को संजोए चंद तस्वीरें!
ब्लैक एण्ड व्हाइट में साठ, सत्तर, अस्सी बरस... या शायद इससे
भी पुरानी, पर आज भी नज़र आती हैं उतनी ही साफ़-स्पष्ट और ज्यों की त्यों.
इसलिए जब भी आप किसी नाज़ुक लम्हे की मीठी याद कैमरे में
कैद करना चाहें तो ब्लैक एंड व्हाइट फ़िल्म ही इस्तेमाल करें.
जिन्हें एक बार खींचकर, आप बरसों नाज़ करेंगे.

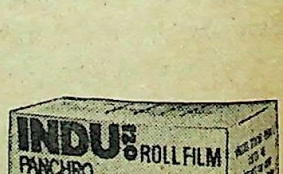

वक़्त, यादों को भले ही धुंधला कर दे...
पर ब्लैक एंड व्हाइट तस्वीरें कभी धुंधली नहीं होतीं.

INDU

इंदु ब्लैक एंड व्हाइट
रोल फ़िल्म और ब्रोमाइड.

Sista's-HPF.835.87-HIN-A

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आ..." एक स्वर गूंजा. नादिर सुरंग की छत तक उछल कर, गिरा और ढेर हो गया.

"चल छिम्मा, आगे का रास्ता बता."

"ओह बाईजी" छिम्मा मेरे पैरों पर गिरती हुई बोली, "मैं तो सोच रही थी कि आप इस दुष्ट की बातों में आ कर मुझे गोली से उड़ा देंगी."

"तेरा समय अच्छा है कि शराब की दुर्गंध मैं सहन नहीं कर सकती." मैं खिलखिला उठी. दसों आवासिनियां खड़ी खड़ी, टुकुरटुकुर मुझे ताक रही थीं. उन्हें पता ही न चला कि पल भर में सब कुछ कैसे घटित हो गया?

"लाड़ बाई सा, मुझे लगता है कि बंदूक की आवाज सुन कर नादिर के और साथी भी सामने से आ रहे हैं. आप सुन रही हैं उन की आवाजें? पर उन का भी छिम्मा से पाला पड़ा है. मैं विश्वास की हत्या नहीं होने दूंगी. जल्दी दौड़िए मेरे साथ."

उस ने नादिर के मृत तन पर पैर रखते हुए अपनी गति बढ़ा दी. एकएक कर 11 जोड़े पैरों ने नादिर, परतंत्रता के प्रतीक को कुचला और हम सब पीछे मुड़ कर भागने लगीं. सुरंग में आधे मील पीछे लौट कर छिम्मा ने एक चौकोर पत्थर को मिल कर हटाने का हम से अनुरोध किया. हम आंखें फाड़ कर ताकती रहीं. एक सीधा सपाट रास्ता सीढ़ी के नीचे जा रहा था.

"ठहरिए, इस पत्थर को वापस अपनी जगह लगा कर ही हमें आगे बढ़ना है. शत्रु की गति में इस से व्यवधान होगा."

तेज गति से चल कर, एक घंटे के पश्चात हम सब जयसमंद झील के तट पर आ खड़ी हुईं.

"मैं ने अपने भावी जीवनसाथी चंदन को भेज कर यहां एक नाव छिपा कर रखा दी थी. मैं अभी उसे ढूंढ़ निकालती हूं."

"ठीक है, अपने चंदन को भी साथ में ले लेना..."

"मेरा चंदन...? ओह, लाड़ीजी, वह

प्रकाश

अंधकार में विलाप ध्वनि इतनी आशाजनक नहीं होती, जितनी प्रकाश की एक झलक.

—प्रेमचंद

मुझे ड्योढ़ी से स्वतंत्र करा के मुझ से विवाह रचाना चाहता था, पर नाव छिपा कर वापस लौटते हुए संदेह में वह पकड़ा गया. इसी नादिर ने, जिसे अभी आप ने गोली मारी, चंदन को मार कर उस पेड़ पर लटका दिया जो मेरी कोठरी के सामने पड़ता है. मैं अभी आई नाव ढूंढ़ कर."

जब तक छिम्मा वापस नहीं आई, हम सब मौन खड़ी रहीं. मन ही मन हम उस के अदम्य साहस के सम्मुख नतमस्तक थीं.

"तो बहूजी, यही है मेरी छोटी सी कहानी." लगभग 70 वर्षीया लाड़कंवर अचानक मौन हो गई. तलवार और उन की पत्नी वृद्धा के सम्मुख चुपचाप बैठे थे.

"आप कहते न थे कि मांजी को इस उम्र में बिना काम के ही हमें रुपए दे देने चाहिए, पर वह राजपूतानी इस उम्र में भी बैठेबैठे हम से कुछ स्वीकार करने को तैयार नहीं है. न जाने ईश्वर ने इस का तन भी कितना नाजुक बनाया है कि तनिक धूप में इस का बदन अलाइयों से भर जाता है. इसे सुनाई कम देता है. हाथपैर इस के जवाब दे रहे हैं, पर परिश्रम से यह आज भी जी नहीं चुराती." तलवार की पत्नी अपने पति को संबोधित करते हुए बोली.

"अच्छा बाबूजी, चलती हूं. पिछले कई वर्षों से मैं, छिम्मा और अन्य आवासिनियां, घरघर बरतनबुहारी कर रही हैं. पर सच मानिए, गुलामी की उस ऊंची अट्टालिका से स्वतंत्रता की रूखीसूखी जिन्दगी में हम संतुष्ट हैं, सुखी हैं."

"मांजी, यह सब्जी बची है, ले जाइए." तलवार की पत्नी ने लाड़कंवर के हाथों में एक डोंगा थमा दिया. तलवार तो एकटक उस साहस के आगार को ही ताक रहे थे. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बंदर मामा

बंदर मामा ने यह सोचा,
चल कर खेलें रंग.
पिचकारी में फिर भरा,
पक्का लाल रंग.
रास्ते में जिसे देखते,
उस पर डालते रंग.
लाललाल रंग देख कर,
फिर होते खूब मगन.
इसी बीच बाजार जब
पहुंचे खेलते रंग
लोमड़दादा ने उन पर
डाला बालटी भर रंग.
बुरी तरह भीग जाने से
होश हो गया गुम.
तुरंत उछल कर भागे,
दबा कर अपनी दुम.
फेंकी अपनी पिचकारी,
किया मन में तय,
अब नहीं खेलेंगे,
फिर कभी रंग.
—विनयकुमार मालवीय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

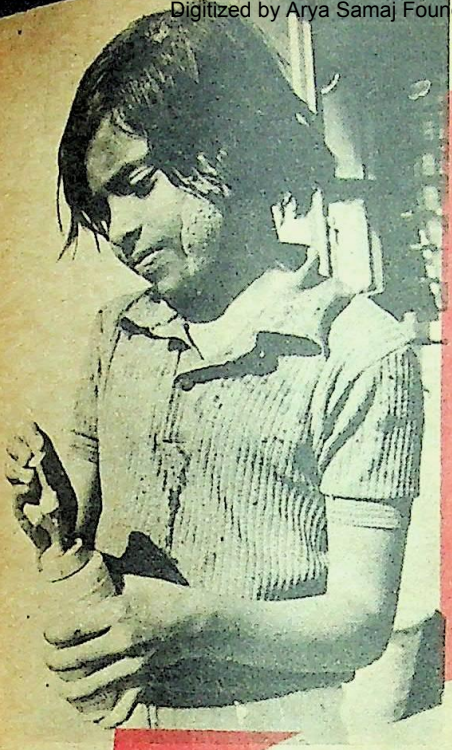

बच्चों को होली खेलने से न रोकें

लेख • सरस्वती माथुर

होली का दिन था. घर के कामकाज से निबट कर मैं ने अपनी सखी सुधा को फोन किया, यह जानने के लिए कि शाम को 'जय क्लब' में होने वाला 'होली मिलन समारोह' कितने बजे होगा. सुधा की बेटी स्वीटी ने फोन उठाया. मुझे इंतजार करने को कह कर वह चोंगा रख कर मां को आवाज लगाने लगी.

मैं टेलीफोन का चोंगा कान से लगाए सुधा का इंतजार कर रही थी, दूसरी ओर से खुले चोंगे से हो कर शोर मेरे कानों में टकराने लगा. मैं ने ध्यान से सुना, सुधा की ही आवाज थी. वह अपने लड़के बोबी पर चिल्ला रही थी, "खबरदार, जो घर के बाहर कदम रखा, टांगें तोड़ दूंगी. मुझे यह त्योहार पसंद नहीं, समझे."

बोबी के गिड़गिड़ाने का स्वर भी मेरे कानों से टकरा रहा था, "मां, खेलने दो न होली. देखो, मेरे सारे दोस्त खेल रहे हैं. मैं सिर्फ गुलाल से खेलूंगा.

लेकिन सुधा जोर से बोली, "एक बार कह दिया न, नहीं."

जब सुधा ने फोन उठाया तो बिना किसी संबोधन के मैं ने सीधे उस से कहा, "क्यों रो रहा है बोबी? तुम भी बस जिद्दी हो सुधा. यह तो त्योहार ही बच्चों का है, क्यों नहीं खेलने देतीं उसे होली?"

"तुम नहीं जानती, कितने कपड़े

होली हासपरिहास का रंगीला त्योहार ही नहीं, भावात्मक एकता का प्रतीक पर्व भी है. चंद कपड़ों के खराब होने और बंदर सी शक्ल बन जाने के भय से बच्चों को होली खेलने से न रोकें.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खराब कर लेते हैं. कपड़ों की भी बात नहीं, शक्ल बंदर जैसी बना लेते हैं. यह भी कोई त्योहार हुआ. मुझे तो बिलकुल पसंद नहीं. मैं ने तो बाहर दरवाजे पर भी ताला लगा रखा है ताकि आने वाला बाहर से ही लौट जाए."

ये थे सुधा के विचार. सुधा जैसी और भी कई महिलाएं होंगी जो इस त्योहार को पसंद नहीं करतीं और अपने बच्चों को होली खेलने से रोकती हैं. वे भूल जाती हैं कि वे अपने बच्चों की छोटीछोटी खुशियों पर अंकुश लगा कर उन की बालसुलभ भावनाओं के साथ कितना बड़ा अन्याय कर रही हैं.

होली हासपरिहास का एक रंगबिरंगा त्योहार होता है. रंग, अबीर, पिचकारी लिए बच्चे खूब धमाचौकड़ी मचाते हैं. आनेजाने वालों पर रंगबिरंगा पानी फेंक कर कब किसे कार्टून बना देंगे, कुछ पता नहीं. यह त्योहार हिंदू, मुसलिम, सिख, ईसाई के भेद मिटा कर एकता के बीज बोता है. आज के दिन बच्चे आपसी बैर भुला कर निष्कपट भाव से आपस में खेलते हैं.

बच्चों को होली खेलने से मना कर के आप अनजाने में उन का बहुत बड़ा नुकसान करते हैं. बच्चों के कोमल हृदय पर बहुत प्रभाव पड़ता है. वे दूसरे बच्चों को होली खेलते देखते हैं तो उन के कोमल मानस पर यह प्रश्न रेंगने लगता है कि अमुक बच्चा खेल सकता है तो फिर मैं क्यों नहीं खेल सकता?

खिड़की पर जाली से नाक सटाए पड़ोस का सोनू अपने दोस्त को कह रहा था, "यार, मेरी मां बड़ी हिटलर औरत है. खेलने ही नहीं देती."

खिड़की से बाहर उस का दोस्त रंग की पुड़िया और पिचकारी लिए खड़ा आश्चर्य से उस की बात सुन रहा था. उस की समझ में यह नहीं आ रहा था कि सोनू की मां रोज तो उसे खेलने देती हैं, आज क्यों नहीं. सोनू की मां को क्या मालूम था कि वह अपने बच्चे में अलगाव और दुराव की प्रवृत्ति को जन्म दे रही है.

काश, वह समझ सकती कि यह आपसी बैर को खत्म करने वाला ऐसा रंगीला त्योहार है जिस की बुनियाद एकता पर खड़ी है.

बच्चों को इस भावनात्मक एकता के पुण्य पर्व की बेला में विनोदप्रिय बनने से न रोकें, बल्कि समानता की भावना से अपनेआप को सराबोर कर होली पर्व का उन्हें भी आनंद लेने दें.

शीला की मां को जब अपने बेटे से मैं ने यह कहते सुना कि यह गंदा त्योहार है इसे खेलने से बहुत सी बीमारियां हो जाती हैं तो मैं अपनी हंसी न रोक सकी. अगर वह यह जानती कि शिशिर और बसंत ऋतु के संधिकाल का यह समय बच्चों में कई मौसमी रोगों को जन्म देने वाला होता है और रंगों के रसायन में ऐसे गुण होते हैं कि वह रोगाणुओं को नष्ट कर देता है, तो क्या वह अपने बेटे से ऐसी बात कहती.

मेरे पिताजी होली के रंगों के संदर्भ में कई बातें बतलाते थे. वह इस उत्सव के वैज्ञानिक रहस्य को जो इस रंग छिड़कने की प्रथा के पीछे छिपा हुआ है, बड़े अच्छे ढंग से समझाते थे.

वह कहते थे कि प्राचीन काल में (आधुनिक काल में होली ने बड़ा विकृत रूप ले लिया है) होली के अवसर पर कई दिन पहले से टेसू के फूल मिट्टी के मटकों में भिगोए जाते थे और उस रंग में थोड़ा चूना भी मिलाया जाता था. टेसू के फूल चूने के संपर्क में आते ही अपनी लाली (लाल रंग) छोड़ देते थे. फिर इस रंग को कपड़ों से छान कर बड़ेबड़े कलशों व भगोनों में भर कर पिचकारियों से लोगों पर छिड़का जाता था.

अरिता

मन

मन ही मन का बोधक होता है, मन ही मन का साधक होता है. मन ही मन का घातक होता है. मन को बांधने का प्रयास कीजिए उस में ही कल्याण है.

—यादवेंद्रनाथ शर्मा 'चंद्र'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निष्कपट भाव से होली खेलने से बहुत सी कटुताएं भी बह सकती हैं.

कपड़े रंग से एकदम सराबोर हो जाया करते थे. इस से स्वास्थ्य की रक्षा होती थी. कैसे? चैत्र मास में प्रायः शीतला रोग (चेचक) का प्रकोप होता है और चेचक से बचने के लिए आयुर्वेद के विज्ञानाचार्यों ने टेसू के फूलों के जल में स्नान करना लाभकारी बतलाया है. पिचकारी से चलाए गए टेसू से फूलों से बने रंगीन जल से तर वस्त्रों की वजह से चेचक निकलने का भय दूर हो जाता था.

परंतु आजकल तो टेसू के फूलों से बने रंगों का कोई उपयोग नहीं करता, बल्कि रासायनिक रंग घोल कर काम में लाए जाते हैं. इन रंगों में विषाक्त पदार्थों का सम्मिश्रण इतनी अधिक मात्रा में होने लगा है कि ये लाभ के बदले नुकसान ही करते हैं.

रंगों के चयन में मातापिता को बच्चों की मदद करनी चाहिए. जहां तक हो सके, उन्हें समझाएं कि होली गुलाल से खेलें, रंग सावधानी से लगाएं, ताकि किसी के आंखमुंह में न जा सके.

हमारे पूर्वजों ने होली पर गुलाल लगाने की प्रथा इसलिए प्रचलित की थी कि चैत्र माह में जबकि चक्षुरोग खूब फैलता है, गुलाल के प्रभाव से नेत्ररोग का भय नहीं रहता. यह भी होली के वैज्ञानिक महत्त्व की पुष्टि करने वाला तथ्य है.

होली बच्चों को विशेष प्रिय होती है. इसलिए उन्हें खेलने से मना न करें, बल्कि उन्हें समझा दें कि कीचड़, पक्के रंग न लगाएं. तरीके से खेलें. हास्यविनोद करें, हंसे और हंसाएं. होली के वर्तमान विकृत रूप को छोड़ें और इस की अच्छाइयों को अपनाएं. गालीगलौज और अश्लील गीतों एवं अन्य कुरीतियों ने हमारे इस फागुन पूर्णिमा के महोत्सव की इंद्रधनुषी छवि पर ग्रहण की गर्हित छाया छोड़ दी है. इस छाया से बचना है हमें, तभी इस पर्व का आनंद ले सकेंगे. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोहिनूर

सर्द हवा के झोंके और यह अनजान दुनिया
कितना भला लगता है तब तुम्हारी निगाहों का अपनापन
घेर लेता है यह और फिर मुझे ठंड महसूस नहीं होती।
छलकता है तुम्हारा प्यार इन अनगिनत रंगों में।

अब
दस के किफ़ायती
पॅक में भी।

KOHINOOR®
एलेक्ट्रॉनिक जांच द्वारा
सुरक्षित और लुब्रिकेट किया
हुआ सुखदायक गुलाबी कॉन्डोम।

LRC उत्पादन

MAA (S) LRC 6E HIN 86

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजस्वला से जुड़ी धार्मिक कुरीतियां

लेख • सरल जैन

किशोरावस्था आते ही कन्याओं में मासिक धर्म प्रारंभ हो जाता है और यह एक सामान्य प्रक्रिया के रूप में विभिन्न जातियों, वर्गों एवं समुदायों में स्वीकारा जाता है. मासिक धर्म सामान्य स्वास्थ्य वाली लड़की एवं महिला में हर अट्ठाइसवें दिन से ले कर सवा माह के भीतर हो जाता है.

कई संप्रदायों, खासकर दक्षिण भारत में लड़की के पहली बार रजस्वला होने का दिन उत्सव के रूप में मनाया जाता है.

लड़की के बड़ी हो जाने पर खुशी तो हर मांबाप को होती है, होनी भी चाहिए, यह सोच कर कि उन की लड़की पूर्णरूपेण स्वस्थ है. जो लड़कियां अठारह बसंत देख लेने के बाद भी रजस्वला नहीं होतीं, वे मांबाप के लिए चिंता का विषय बन जाती हैं. उन्हें डाक्टरों की शरण में जाना पड़ता है. अशिक्षित व अनपढ़ मांबाप ऐसी स्थिति में झाड़फूंक करने वालों के चक्कर लगाने लगते हैं क्योंकि ऐसी लड़कियां आगे चल कर उन लोगों के लिए भारी समस्या बन जाती हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किशोरावस्था में लड़कियों में मासिक धर्म का प्रारंभ एक सामान्य शारीरिक प्रक्रिया है. लेकिन इस साधारण सी बात को मूर्खतापूर्ण धार्मिक कुरीतियों में जकड़कर अनेक असामान्य परिस्थितियों को जन्म देना क्या मानसिक संकीर्णता का परिचायक नहीं?

एक ओर तो नारी का रजस्वला होना जरूरी समझा जाता है और दूसरी ओर कुछ भारतीय परिवारों एवं जातियों में रजस्वला हुई कन्या अथवा स्त्री को हेय दृष्टि से देखा जाता है. पुराणपंथी परिवारों में तो मासिक धर्म के दिनों में बहुओं तक की स्थिति बड़ी दयनीय हो जाती है और उन से अछूतों जैसा व्यवहार किया जाता है.

मैं एक परिवार को जानती हूं. उस परिवार में घर पर ही पापड़ बनाए जाते हैं. दोतीन बार ऐसा हुआ कि जबजब पापड़ बेलने शुरू हुए बेचारी बहू को मासिक धर्म शुरू हो गया. बस, सास का पारा गरम हो जाता. वह ताना देते नहीं अघातीं. हर व्यंग्य बाण के पीछे एक ही निशाना होता कि बहाना करती है, जबकि मासिक धर्म के दौरान पापड़ न बेलने का नियम उन्हीं का था. वह तो यहां तक करती थीं कि बहू को वहां से गुजरने भी नहीं देती थीं, यह कह कर कि पापड़ खराब हो जाएंगे.

सच तो यह है कि मासिक धर्म के दौरान पापड़, बड़ी, अचार वगैरह बनाने से वे कतई खराब नहीं होते. हां, कोई भी चीज़ बनाते समय स्वच्छता और उस के निर्माण में प्रयुक्त होने वाली सामग्री के सही अनुपात का ध्यान रखना जरूरी है.

मैं ने स्वयं जानबूझ कर ऐसे दिनों में प्रयोग करके अचार डाले हैं. मैं गृह विज्ञान की प्राध्यापिका हूं. खाद्य सामग्री के संरक्षण की कक्षाएं लेती हूं. मुझे कभी ऐसी स्थिति का सामना नहीं करना पड़ा कि अचार खराब हो गया हो, जबकि 70-80 लड़कियों वाली कक्षा में कोई न कोई तो अवश्य ही रजस्वला रहती होगी.

जैन, मारवाड़ी और दक्षिण भारतीय महिलाओं का कहना है कि मासिक धर्म के समय नारी शरीर अपवित्र हो जाता है. इसलिए उसे एक निर्धारित स्थान पर ही बैठे रहना चाहिए और किसी दूसरी वस्तु को नहीं छूना चाहिए, फिर चाहे वे कपड़े हों अथवा भोज्य पदार्थ. इन लोगों के घरों में रसोईघर में जाना तो बिलकुल ही वर्जित होता है. उस के हाथ का छुआ खानापीना बुरा समझा जाता है.

ऐसी पुराणपंथी महिलाओं का कहना है कि ऐसी स्त्रियां या लड़कियों के हाथ का खानेपीने से पुरुषों की उम्र घटती है. यह मानना विज्ञान के मुंह पर तमाचा मारना है. मेरे खयाल से न कभी ऐसी घटना घटी है, न भविष्य में घटने की कोई संभावना है.

मुझे उन महिलाओं पर हंसी आती है, जो ऐसी स्थिति में मासिक धर्म वाली स्त्री को

एकल परिवार की गृहिणियां मूर्खतापूर्ण रूढ़ियों के कारण कब तक घर का कामकाज रोक सकती हैं.

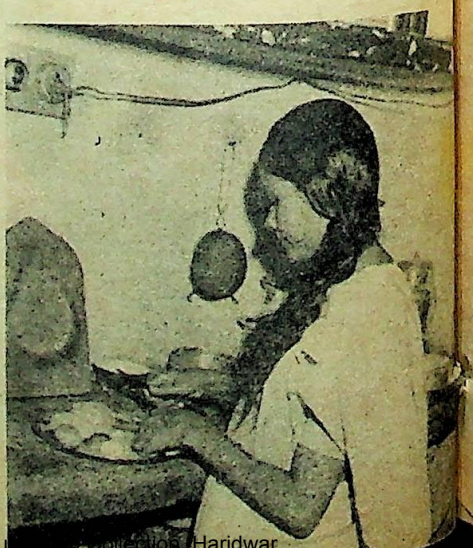

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हेय दृष्टि से देखती हैं. अगर उस से कोई कपड़ा छू जाए तो तुरंत धुलवाती हैं, उस के छुए भोजन को किसी को खाने नहीं देतीं. उसे अलग बिस्तर में सुलाती हैं. अलग बरतन में खाना देती हैं. उस के जूठे बरतनों को उसे स्वयं मांजना पड़ता है.

मजे की बात यह है कि घर के अन्य भारी काम जैसे कपड़े धुलवाना, बरतन मंजवाना आदि उसी से करवाए जाते हैं. अगर रजस्वला बहूबेटी काम पर जाती है तो ऐसी अवस्था में उस का काम पर जाना उन्हें बुरा नहीं लगता (पैसे जो आते हैं). आखिर यह अवसरवादी नीति किस लिए?

आज के युग में ऐसा कोई भी क्षेत्र नहीं बचा है, जहां भारतीय नारियों ने अपनी सफलता के झंडे न गाड़े हों. आज की महिलाएं जहां एक ओर योग में पारंगत हो रही हैं तो दूसरी ओर खिलाड़ी के रूप में ख्याति अर्जित कर रही हैं. जूडोकराटे आज सिर्फ युवकों का क्षेत्र नहीं रह गया है. सैन्य विज्ञान, एन.सी.सी., पैराशूट से कूदना, घुड़सवारी, साइकिल दौड़ आदि सभी क्षेत्रों में स्त्रियां नाम कमा रही हैं. पर्वतारोहण भी उन के लिए आज मामूली बात हो गई है. प्रत्येक क्षेत्र में कीर्ति स्तंभ स्थापित करने वाली लड़कियां, महिलाएं यदि मासिक धर्म को बंधन समझतीं तो कुछ भी न कर पातीं.

तैराकी इत्यादि आज स्त्रियों के लिए मनोरंजन का विषय हो गया है.

अगर महिलाएं ये सब प्रशिक्षण अपने मासिक धर्म को देखते हुए अपनी सुविधा के अनुसार चाहतीं तो कभी कुछ न सीख पातीं. उन्हें तो दिन तारीख और समय के अनुसार चलना होता है.

आज का चिकित्सा विज्ञान भी इन दिनों की परवाह नहीं करता. फिर अपवाद तो हर जगह मिल ही जाते हैं. हो सकता है कि किसी स्त्री को पीड़ा के इन दिनों में कोई काम करने में विशेष असुविधा होती हो. लेकिन किसी एक की समस्या को सब पर थोपना ठीक नहीं है.

पांच प्रतिशत ही ऐसी महिलाएं होंगी जिन्हें कष्टप्रद स्राव होता हो अथवा इन दिनों में अत्यधिक तकलीफ होती हो. मगर तकलीफ का आराम से ताल्लुक होना चाहिए, न कि छुआछूत से. जिन परिवारों में छुआछूत पर ज्यादा बल दिया जाता है, उन में नारी की स्थिति बड़ी ही दयनीय हो जाती है. मासिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धर्म के दिनों में छुआछूत के भय से और उस के आने के समय से पहले ही रजस्वला हो जाने के भय से उसे असामान्य परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है. इस प्रकार वह महीने में पंदरह दिन मानसिक तनावों में घिरी रहती है.

अंधविश्वासपूर्ण बातें

इसी तरह एक बार मेरी भेंट एक जैन साध्वी से हुई. संयोगवश वह साध्वी बी.ए. प्रथम वर्ष की परीक्षा दे रही थी. उस ने मेरे कालिज का केंद्र भरा था. मगर आजकल तो परीक्षाएं मार्च में प्रारंभ होती हैं तो अप्रैल में खत्म. और अगर अप्रैल में प्रारंभ होती हैं तो मई में जा कर खत्म होती हैं. बस, फिर क्या था. बेचारी साध्वी को मासिक धर्म न होने देने वाली गोलियां खा कर परीक्षा देनी पड़ी. वरना मासिक धर्म के दिनों में वह परीक्षा ही न दे पाती. उस के नियमानुसार रजस्वला होने के समय कागजकलम छूना भी पाप होता है, पढ़ना तो दूर की बात है.

आज विश्व में अनेक महिलाएं पढ़लिख रही हैं, शोध कार्य में लगी हैं, उन में से किसी की भी मति भ्रष्ट नहीं होती, न ही सभी को चश्मा चढ़ता है. फिर धर्म की आड़ में गलत परंपराओं, कुरीतियों को प्रश्रय देना समाज को गुमराह करना नहीं है तो और क्या है?

वैज्ञानिक दृष्टि से जो बात सही है, वह सिर्फ इतनी है कि मासिक धर्म के समय स्त्री को अपनी देह की सफाई का, विशेष रूप से गुप्तांग की सफाई का, पूरापूरा खयाल रखना चाहिए. कभी भीं गंदा पैड या कपड़ा इस्तेमाल नहीं करना चाहिए. जहां तक हो सके सेनिटरी तौलिए व्यवहार में लाने चाहिए. फेंकने की समस्या हो तो नरम कपड़े डिटोल डले गरम पानी में साबुन डाल कर साफ कर के व्यवहार में लाने चाहिए. गीले पैड कभी भी इस्तेमाल नहीं करने चाहिए वरना यौन रोग होने की संभावना बढ़ जाती है. चुस्तदुरुस्त रहने के लिए अंदर पहने जाने वाले कपड़ों का इस्तेमाल भी अवश्य करना चाहिए ताकि कहीं भी आप आराम से उठबैठ सकें, खून के दाग आप के ऊपर के कपड़ों एवं बैठने की जगह पर न लगें.

साथ ही विवाहित महिलाओं को ऐसे दिनों में सहवास से दूर रहना चाहिए. रक्त की गरमी से संक्रमण होने की संभावना रहती है. अगर किसी भी पक्ष को संक्रामक बीमारी हो तो उस समय बच्चेदानी का द्वार खुला होने के कारण रोग के कीटाणु बच्चेदानी में चले जाने की पूरी संभावना रहती है. फिर भी अगर एक भी पक्ष अपनी इच्छाओं को रोक पाने में इन दिनों असमर्थ रहता हो तो निरोध का इस्तेमाल बचाव का सर्वोत्तम तरीका है. निरोध का इस्तेमाल किया जा सकता है.

इनीगिनी लड़कियों एवं महिलाओं को मासिक धर्म के समय पेट एवं टांगों में असहनीय तकलीफ होती है. उन्हें अवश्य ही बिना किसी झिझक के डाक्टर (अगर महिला डाक्टर हो तो सर्वोत्तम) की सलाह लेनी चाहिए, ताकि कोई खराबी हो तो उस का ठीक समय पर उचित इलाज हो सके.

संक्षेप में आज के मशीनी युग में नारी को नारी के द्वारा एक मुसीबत मान कर अछूत बना देना उचित नहीं है, बल्कि इन दिनों में चाहिए कि एकदूसरे से सहानुभूतिपूर्वक व्यवहार कर के रजस्वला का मनोबल बढ़ाएं.

गलत तरीके से मिली जानकारी के कारण कई लड़कियां भय का शिकार हो जाती हैं. कुछ तो बुरी तरह घबरा जाती हैं. ऐसी स्थिति में उन से बहुत ही प्यार से पेश आना चाहिए. बातों ही बातों में समझाने की कोशिश करनी चाहिए कि मासिक धर्म किसी भी अर्थ में कन्याओं के लिए हौआ नहीं है. बल्कि उन्हें तो यह महसूस कर के गौरवान्वित होना चाहिए कि वे एक पूर्ण तथा स्वस्थ किशोरी बन चुकी हैं.

किसी भी क्रिया की सचाई पर नजर रखनी चाहिए. धार्मिक कुरीतियों, रूढ़ियों और परंपराओं की शिकार हो कर महीने के कुछ दिनों नारी पर प्रतिबंध लगाना मानसिक संकीर्णता का परिचय देना है. इसलिए स्वास्थ्य एवं खुशहाल जीवन के लिए मानसिक विकृतियों को त्यागते हुए स्वस्थ मानसिकता की बुनियाद रखनी चाहिए.

सरिता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मायके में पति की उपेक्षा मत कीजिए

लेख • कुमद सिंह

मायके का आकर्षण हर लड़की के लिए कमजोरी होती है. चाहे उस की शादी को कम वर्ष हुए हों या ज्यादा, वह हमेशा मायके जाने को उत्सुक रहती है. मांबाप, भाईबहनों का अपनत्व, घर का वातावरण उसे बरबस मोह लेता है, बुलावा देता है. इसी लिए वह मायके जाना चाहती है. इस से मानो एक बार फिर उस का बचपन, यौवन कुछ दिनों के लिए वापस आ जाता है.

मायके में जा कर प्रायः लड़कियों का व्यवहार कुछ बदल सा जाता है. या यों समझिए कि मांबाप की छत्रछाया में पहुंच कर वे पुनः एकबारगी सारी जिम्मेदारियों से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुक्त हो जाती है. ऐसा वे जानबूझ कर नहीं करती नहीं हैं, अनायास ही उन का व्यवहार बदल जाता है. और उन के इस अप्रत्याशित परिवर्तन को देख कर उन के पति का मूड उखड़ जाना स्वाभाविक ही होता है. कारण, वह अपनी पत्नी के इस बदले व्यवहार की अपेक्षा जो नहीं करता? वह तो अपनी पत्नी से वैसा ही चाहता है, जैसा वह उस के साथ करती है.

उखड़े मूड के कारण और पत्नी के बदले व्यवहार के कारण मायके में ही पतिपत्नी न चाहते हुए भी लड़ बैठते हैं, जिस से मांबाप का परेशान होना स्वाभाविक ही है. वे तो दामाद और लड़की के आने पर हंसीखुशी का ही वातावरण चाहते हैं. कभीकभी तो ये झगड़े, जो किसी छोटी सी बात पर ही होते हैं, इतना अधिक उग्र रूप ले लेते हैं कि पड़ोसियों तक के कान खड़े हो जाते हैं और फिर दोनों की ही बदनामी होने लगती है.

कुछ दिनों पहले की बात है. हम लोग चाय पी रहे थे कि सामने वाले घर से जोरजोर से चिल्लाने के कारण आवाजें बाहर तक सुनाई दे रही थीं. झगड़े में दोनों ने एकदूसरे के मांबाप तक को भी नहीं छोड़ा. यह बहुत ही अशोभनीय बात थी. झगड़े की उग्रता को देख कर लड़की के मांबाप ने किसी प्रकार से झगड़ा शांत करवाया. पर दामाद साहब इतना गुस्से में थे कि उसी रात वह अपने घर के लिए रवाना हो गए. किसी से बोले तक नहीं, जबकि मांबाप काफी देर तक समझाते रहे, मनाते रहे.

झगड़े के बाद लड़की कुछ दिन और रही. पर घर का वातावरण अशांत हो गया था और सभी का मूड उखड़ चुका था. कुछ दिनों बाद जब लड़की वहां गई तो फिर दोनों में सुलह हो गई और राखी पर फिर दोनों साथसाथ आए. आखिर झगड़ा किस पतिपत्नी में नहीं होता है. पर उसे इतना उग्र रूप तो नहीं लेने देना चाहिए. परिवेश को तो समझना चाहिए, जिस से कोई कहसुन न सके.

मैं सोचती रही कि क्या उन्हें इस प्रकार मायके में झगड़ा करना चाहिए था. वैसे मायके में मेरा भी कई बार अपने पति से झगड़ा हो जाता है. पर हम दोनों का झगड़ा किसी को पता नहीं चलता है. यह बात अलग है कि मेरे मूड से भले ही कोई कुछ समझ जाए. पर मैं स्वयं किसी को कोई बात नहीं बताती.

वैसे यह कोई आवश्यक नहीं है कि हर लड़की अपने मायके जा कर पति से झगड़ा ही करती हो, पर प्रायः देखने में यही आता है कि मायके में आ कर लड़कियां किसी न किसी बात पर अपने पति से झगड़ा कर बैठती हैं, भले ही बाद में उन्हें अपनी गलती का एहसास हो जाए. जानबूझ कर तो कोई भी लड़की मायके में पति से झगड़ा कर के उन का मूड खराब नहीं करना चाहती है, जिस से घर का वातावरण खराब हो. पर कोई बात ऐसी आ जाती है, जिसे वह वहां सहन नहीं कर पाती है और फिर झगड़ा हो जाता है. इसलिए आइए, जरा उन बातों पर ध्यान दें, जिन के कारण आप दोनों में झगड़ा हो सकता है और मायके में सब लोगों का मूड खराब हो जाता है.

यह बात तो शतप्रतिशत सही है कि मायके में आ कर कुछ दिनों के लिए हर लड़की स्वतंत्र रहना चाहती है, जैसे वह शादी के पहले रहा करती थी बेफिक्र, मस्त. जिन बंधनों से मुक्ति पाने के लिए लड़की मायके भागती है, वही बंधन अगर उसे

आप कुछ समय के लिए गृहस्थी के बंधनों से मुक्ति पाने के लिए मायके जाना चाहती हैं लेकिन वहां पति की उपेक्षा कर आप अपने दांपत्य जीवन में झगड़े के बीज बो सकती हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पतिपत्नी के विवाद में सास की बीच में आने से स्थिति और भी खराब हो सकती है.

मायके में पति के कारण फिर से झेलने पड़ते हैं तो फिर उसे खीज, झुंझलाहट सी होती है, वह तनावग्रस्त हो जाती है. उस का यही तनाव पति से झगड़े का कारण भी बनता है.

अकसर देखा जाता है कि लड़की के मायके आने पर उस के ससुराल वाले रोजरोज आ जाते हैं. अगर ससुराल उसी शहर में हो तो ऐसा जरूर होता है. कभी देवर, कभी ननदें, तो फिर कभी सासससुर ही पोतेपोतियों को देखने के बहाने, हालचाल जानने के बहाने आ जाते हैं. इस रोजरोज के आनेजाने से लड़की ऊब जाती है. और इन्हीं बातों पर उस का अपने पति से झगड़ा हो जाता है. कारण, मायके में आने पर उसे ही उन सब की देखभाल करनी होती है. तब फिर उस को मायके आने से लाभ ही क्या हुआ? इस से तो यही अच्छा था कि वह ससुराल में ही बनी रहती, कम से कम आनेजाने का कष्ट तो नहीं होता.

वैसे यह आवश्यक नहीं है कि ससुराल वाले रोजरोज ही आ कर खड़े हों या सब की ससुराल उसी शहर में ही हो. समझदार ससुराल वाले इस प्रकार का व्यवहार नहीं करते हैं. वे जानते हैं कि लड़की कुछ दिन आराम करना चाहती है, इसलिए उसे क्यों परेशान किया जाए?

यदि ससुराल वाले नहीं आते हैं तो फिर पति महोदय किसी न किसी बहाने से चक्कर काटते रहते हैं. जब पत्नी न रहे तो शायद पति महोदय ससुराल की तरफ रुख करना भी उचित नहीं समझते हैं. लेकिन पत्नी के पहुंच जाने पर वह भी पहुंचने लगते हैं और फिर पति का आनाजाना लड़की के लिए एक अनावश्यक सिरदर्द बन जाता है. मायके में होने के कारण वह अपने मांबाप की परेशानी, उन की सीमाएं समझती है. इसलिए वह उन्हीं के अनुरूप रहना चाहती है. पति के आ जाने पर उस के चायनाश्ते का प्रबंध करना आवश्यक हो जाता है, और रोजरोज बढ़िया नाश्ते की व्यवस्था कर पाना कैसे संभव हो. इसी कारण पति के आ जाने से लड़की को खीज होना स्वाभाविक ही है.

पति से झगड़ा होने के कारण यह भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होता है कि पति के आ जाने के कारण उसे पति की इच्छानुसार ही काम करना पड़ता है. वह अपनी इच्छानुसार इधरउधर नहीं जा पाती है. उस का मन टेलीविजन पर आ रही फिल्म देखने को हो रहा है लेकिन पति के आ जाने के कारण वह चाह कर भी फिल्म नहीं देख सकती है. अपनी बहन के साथ खरीदारी करने या चाट खाने का कार्यक्रम बनाया है. ऐसे समय अगर पति आ टपके तो फिर सारा कार्यक्रम धरा का धरा ही रह जाएगा. तब फिर उस का मन खराब होगा या नहीं? और फिर इसी झुंझलाहट में वह मायके में भी झगड़ा करने पर विवश हो जाती है.

सुखी दांपत्य जीवन की पहचान

खैर झगड़े का कारण कुछ भी रहे, जरा सोचिए कि मायके में आप का पति से झगड़ना क्या उचित कहा जा सकता है? कदापि नहीं. मायके में आप को झगड़ता देख कर सब से अधिक दुख आप के मांबाप को ही होता है. हर मां बाप अपने बच्चों को विवाहोपरांत सुखी और प्रसन्न ही देखना चाहते हैं. यही उन की प्रमुख अभिलाषा होती है. पर जब झगड़े होते हैं तो वे अंदर ही अंदर टूटने लगते हैं और फिर उन का स्वास्थ्य गिरने लगता है. आप के झगड़े के बारे में जब अड़ोसपड़ोस वाले सुनते हैं तो वे तो जम कर आप का मजाक ही उड़ाते हैं, भले ही वे स्वयं भी ऐसा ही करते हों.

इसलिए अच्छा यही है कि झगड़े का अवसर ही नहीं आने दिया जाए. यह एक सुखी दांपत्य जीवन की पहचान है. यदि आप चाहती हैं कि मायके में आप का अपने पति से झगड़ा न हो तो फिर निम्नलिखित बातों पर ध्यान देने का प्रयास करें:

विवाह के बाद पतिपत्नी में समर्पण निष्ठा के कारण जो स्नेह, प्यार व लगाव पैदा हो जाता है उसे तो आप अच्छी तरह महसूस करती ही हैं. इसी लिए जहां भी आप जाती हैं वहां पर कुछ समय या दिन के बाद आप के पीछेपीछे पति महोदय भी आ जाते हैं क्योंकि विवाह के बाद पति अलगाव सहन नहीं कर पाते हैं. इस का प्रमुख कारण यह है कि विवाह होते ही घर के सभी सदस्य पति महोदय के कामों से हाथ खींच लेते हैं और पति महोदय स्वयं भी सारे कामों के लिए पत्नी का ही मुंह देखा करते हैं.

इस प्रकार पति अपने छोटेमोटे कामों के लिए भी अपनी पत्नी पर ही आश्रित हो जाता है. ऐसे में उसे अपनी पत्नी का मायके जाना खलने लगता है. और इसी लिए वह पत्नी के मायके जाते ही, अगर मायका शहर में है तो फिर वहां रोजरोज जाना प्रारंभ कर दे तो क्या आश्चर्य.

इसी लिए मायके आने के पूर्व एक दिन जब उन का मूड रंगीनी भरा हो तो फिर आप उन्हें रोजरोज न आने की हिदायत अवश्य दे दें. आप उन्हें प्यार से समझा दें कि रोजरोज आप का वहां आना उचित नहीं होगा. रोजरोज आने से कभी भी आप के मानसम्मान को ठेस पहुंच सकती है और फिर वहां पर मेरा आप को समय दे पाना संभव नहीं है. आप स्वयं ही समझदार हैं. कुछ दिनों का यह विछोह सहन कर के तो देखिए. आप के इस प्रकार से समझाने से उन पर अवश्य प्रभाव पड़ेगा. अगर आप उचित समझें तो फिर पति को अपने मातापिता की आर्थिक स्थिति से भी अवगत करा दें जिस से वह स्वयं ही आने का निश्चय बदल देंगे.

मायके आने से पहले

प्रायः यह देखा जाता है कि पति जानबूझ कर पत्नी के मायके के चक्कर नहीं काटना चाहते. पर कभीकभी कोई काम या बात ऐसी आ जाती है जिस के कारण उन्हें मायके में रह रही पत्नी के पास जाना पड़ जाता है. अकसर पति अपने सभी महत्त्वपूर्ण कागज, तनख्वाह आदि ला कर पत्नी को थमा देते हैं, फिर पत्नी ही उसे अपनी सुविधानुसार रखती है. आवश्यकता पड़ने पर वे तलाश करते हैं, तो नहीं ढूंढ़ पाते हैं. इसलिए मायके आने से पहले आप उन सब महत्त्वपूर्ण कागजों को उन्हें सौंप दें. रुपए

सरिता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पैसों की जानकारी भी उन्हें करा दें, जिस से वे जरूरत पड़ने पर आसानी से मिल जाएं. तब फिर वे अनावश्यक रूप से परेशान करने, झगड़ा करने मायके नहीं पहुंचेंगे.

अगर पति महोदय अपने परिवार के साथ रहते हों तो फिर कोई बात नहीं. अन्यथा आप उन के सुबह शाम के नाश्ते के लिए उन की मनपसंद कुछ मीठी, नमकीन चीजें बना कर रख दें, जिस से कुछ दिन तक वह अपना काम चला सकें. कपड़ों आदि के बारे में भी उन्हें बता दें, जिस से वह इधरउधर खोजते न फिरें. आप की अनुपस्थिति में उन्हें कौनकौन से महत्त्वपूर्ण काम करने हैं, यह भी बता दें.

एक बात जो हर पत्नी को सब से अधिक ध्यान में रखनी चाहिए, वह यह है कि आते समय अपने पति को बता दें कि वह मायके जा कर इतनाइतना रुपया खर्च करना चाहेगी, जिस से पति उसे ले कर लड़ाई न कर बैठें. अधिकांश पति मायके में अनावश्यक खर्च को बरदाश्त नहीं करते. जब उन्हें ऐसे खर्चों का पता चलता है तो फिर वे मायके में ही लड़ाई कर बैठते हैं. पूछ लेने से पति को जानकारी बनी रहती है, फिर वे झगड़ा नहीं करते हैं.

पत्नियों को मायके आने से पहले अपनेअपने मनःस्थिति का ध्यान रखना चाहिए और उसी के अनुरूप काम करना चाहिए. बहुत से पति रंगीन तबीयत के होते हैं.अगर पति का स्वभाव रोमांटिक है तो फिर चलने से पूर्व आप उन की इच्छापूर्ति अवश्य कर दें, जिस से वह इस ओर से भी संतुष्ट रहें. अन्यथा उन का मूड खराब होते देर नहीं लगेगी. और वह आप के पास भागे आएंगे. मायके में ठीक व्यवस्था न होने के कारण वह आप से झगड़ा कर बैठेंगे.

आप उन्हें अपने आनेजाने का सारा कार्यक्रम विस्तार से बता दें. वापस आने के निश्चित दिन और समय पर अवश्य आएं क्योंकि पति आप की बेसब्री से प्रतीक्षा कर रहे होंगे, अन्यथा झगड़ा हो जाएगा.

मायके आते समय उन्हें एक बात और भली भांति समझा दें कि रोजरोज वहां आने से न आप को मेरी कमी का एहसास होगा और न ही मुझे आप की कमी का. वैवाहिक जीवन को सुखद बनाने के लिए कुछ दिनों का विछोह सहना भी आवश्यक है. इस से दांपत्य में प्रगाढ़ता आती है. ललक बढ़ती है. इस से पतिपत्नी एकदूसरे की आतुरता से प्रतीक्षा करते हैं. आप के इस प्रकार समझा देने पर पति महोदय आप की बातों पर ध्यान देंगे.

यह सच है कि कुछ दिनों के विछोह के बाद ही दोनों एकदूसरे का अभाव महसूस कर पाते हैं. और स्वयं ही मिलने के लिए आतुर होते हैं. इस बीच जो प्यार पनपता है, वही जीवन का सच्चा प्यार होता है, कारण दोनों ही एकदूसरे की कमी को अच्छी तरह से समझ चुके होते हैं. इसी लिए कुछ दिन उन्हें अपने से दूर रहने का आग्रह अवश्य करें.

अगर आप उपर्युक्त बातों को ध्यान में रख कर मायके जाएंगी तो फिर संभव है, वहां पर आ कर पति द्वारा झगड़ा किए जाने से आप बच जाएंगी. और मायके वाले भी उन को अपने बीच में पा कर हर्षित होंगे क्योंकि वह उन के एक सम्मानित मेहमान जो हैं. ●

वरवधू ढूंढ़ने की समस्या सरिता में वैवाहिक विज्ञापन दे कर हल कीजिए

सरिता सारे भारत में समृद्ध, सजग व सुशिक्षित परिवारों में पढ़ी जाती है. इस प्रकार सरिता में वैवाहिक विज्ञापन आप को वरवधू ढूंढ़ने में बहुत सहायक सिद्ध होगा. दैनिक पत्र तो केवल अपने शहर या इलाके में पढ़े जाते हैं, लेकिन सरिता का क्षेत्र सारा भारत है. इन विज्ञापनों का शुल्क भी सरिता के पाठकों के लिए नाम मात्र रखा गया है.

विस्तृत जनकारी के लिए निम्नलिखित पते पर पत्रव्यवहार करिए :

विज्ञापन व्यवस्थापक, सरिता,
नई दिल्ली - 110055.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चेहरा

सरिता, 20 साल पहले,
मार्च (प्रथम) 1988

पालकी के दरवाजे पर आते ही औरतों ने गाना शुरू कर दिया: "हंसतखिलत मोरे बाबू गइलें, मन बेदिल काहे अइलें..."

मैं पालकी में बैठेबैठे ऊब सा गया था और गरमी के कारण काफी घुटन महसूस कर रहा था, इसलिए पालकी के जमीन पर रखते ही मैं उस में से उतर कर खड़ा हो गया और सामने दादी व मां को खड़ा देखा. उन के पीछे आसपड़ोस की और भी बड़ीबूढ़ी औरतें थीं, जो जोरजोर से गीत गा रही थीं. औरतों के गोल से पड़ोस की पंडिताइन की आवाज आई, "बबुआ, अपने से बड़ों के पांव छुओ जात है."

मैं भी समझता था कि मैं शादी कर के लौटा हूं और यह एक बहुत बड़ी खुशी की बात है. इसलिए अपने से बड़ों के पांव छूछू कर अपनी खुशी व्यक्त करनी चाहिए. लेकिन उस समय मुझे अपनी उस दशा में किसी का पांव छूना बनावटी और नाटकीय

कहानी • राजनारायण 'रुद्र'

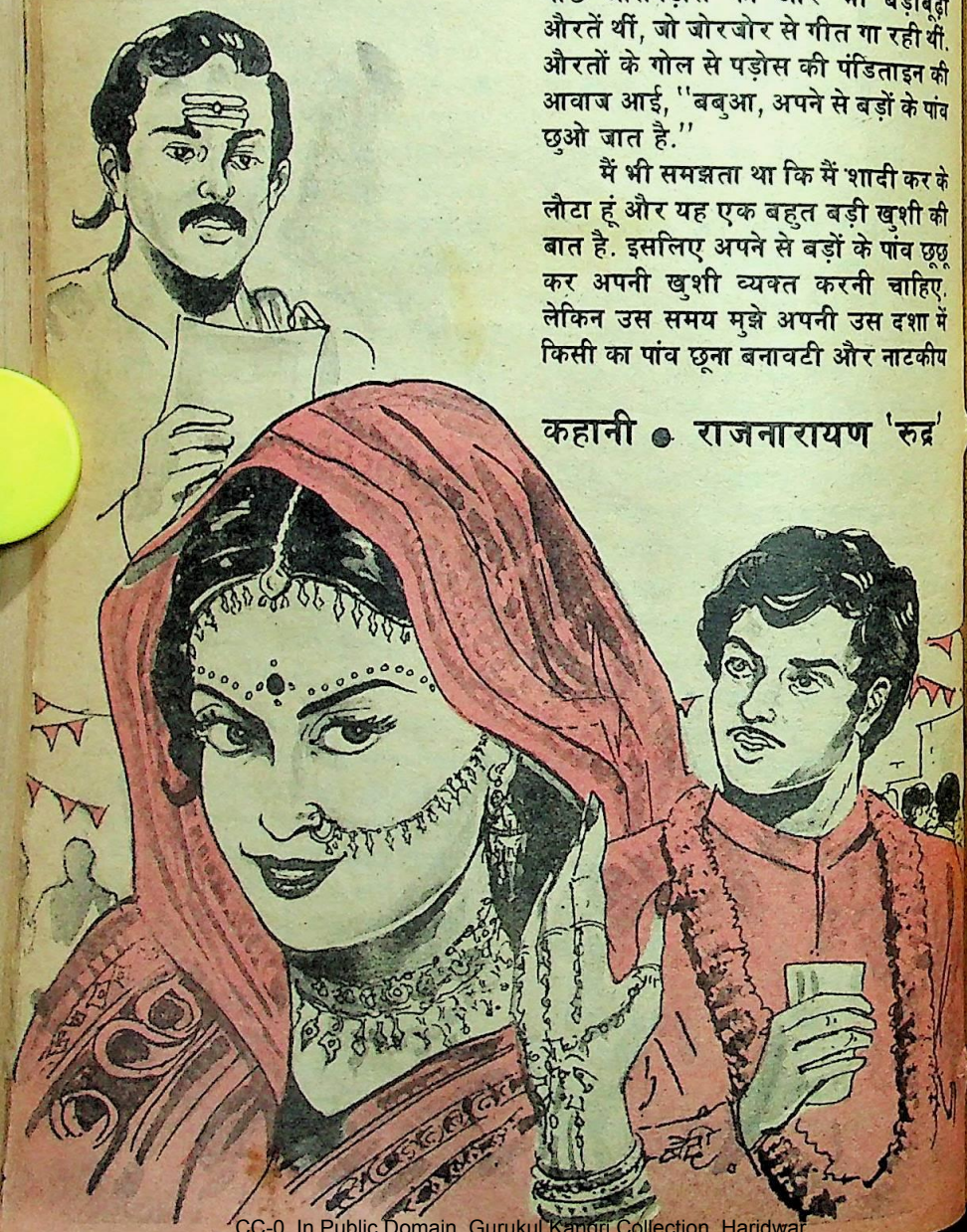

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लग रहा था क्योंकि मैं रामलीला के रामलक्ष्मण जैसा वेश धारण किए हुए था. न तो मेरे कार्यकलाप में स्वतंत्रता थी और न स्वाभाविकता. मैं तो शादी के दौरान यंत्रचालित मशीन की तरह हो गया था. हर काम दूसरों की मरजी से करना पड़ता था, इसलिए मुझे ऊब सी हो गई थी और किसी का कुछ सिखाना अच्छा नहीं लग रहा था.

मैं कहने पर भी जब किसी के पांव छूने के लिए नहीं झुका तो औरतों में फुसफुस होने लगी, पर इस में भला किसी की क्या चलने वाली थी.

मेरी पालकी के साथ ही मेरी नवविवाहिता पत्नी की पालकी भी आई थी और दरवाजे से पांच गज की दूरी पर आगेपीछे दोनों पालकियां रख कर कहार तटस्थ हो गए थे. मैं तो खुद पालकी से उतर गया था, पर दुलहन खुद कैसे पालकी से उतरे? उस को उतारने के लिए औरतें उस की ओर बढ़ीं तो दूसरा गाना सुनाई दिया:

"हलबल दुलहिनिया चले हर जोता के जामलि रे,
धीरेधीरे मारे बाबू चले बादशाहे के जामलि रे."

गाना सुन कर मुझे हंसी आ गई, पर मैं हंसा नहीं, मन ही मन मुसकराया. दादी और मां के साथ औरतों ने जब मेरी नवविवाहिता पत्नी को पालकी से उतारा तो मैं ने हलके गुलाबी नायलोन की साड़ी पहने, सलमेसितारों वाली चादर के घूंघट में लिपटी हुई अपनी पत्नी को कनखियों से देखा. जब वह धीरेधीरे कदम बढ़ाने लगी, तो उस का चलना देख कर मुझे ऐसा लगा कि

मेरे पड़ोसी तो दोदो रुपयों में मेरी पत्नी का चेहरा देख गए थे, मगर मैं अपनी पत्नी का चेहरा देखने की लालसा सुहागरात को भी पूरी न कर सका.

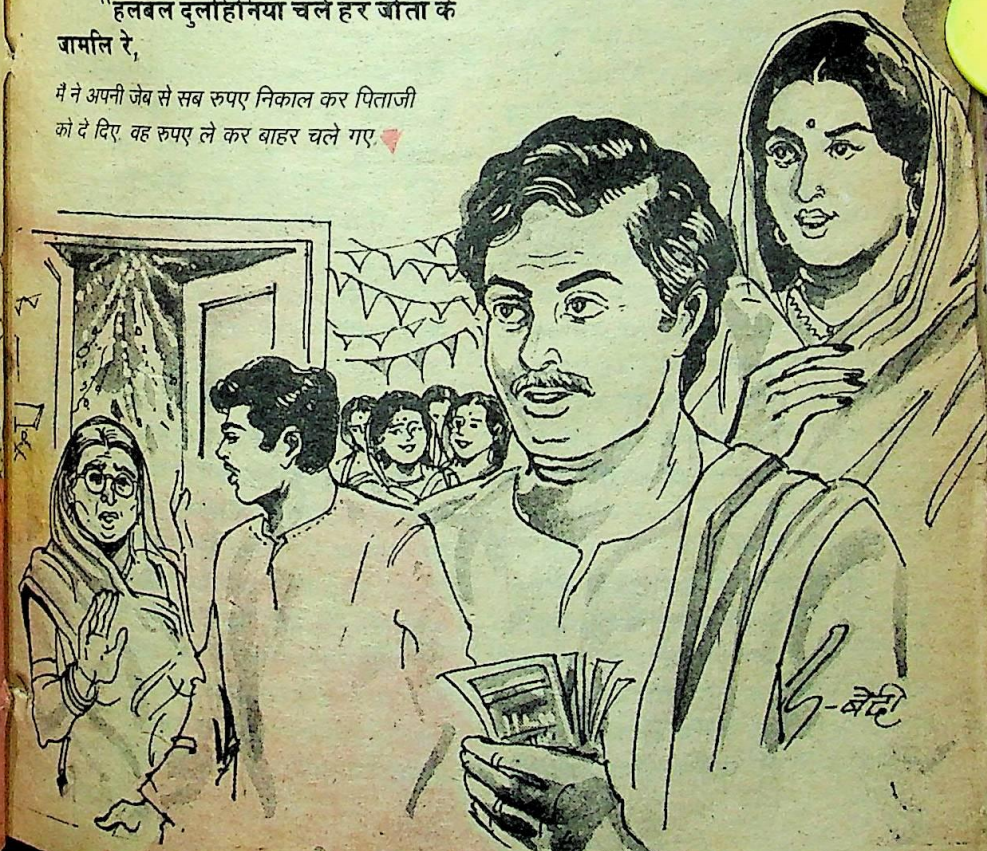

मैं ने अपनी जेब से सब रुपए निकाल कर पिताजी को दे दिए. वह रुपए ले कर बाहर चले गए.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आसमान की परी जमीन पर चलना जानती ही न हो.

मैं ने अपनी दुलहन कही जाने वाली पत्नी की सजीव सूरत नहीं देखी थी, शादी की चर्चा चलते समय एक बार उस का निर्जीव फोटो मैं ने अवश्य देखा था.

हालांकि शादी करने की मेरी कोई खास इच्छा नहीं थी क्योंकि मुझे अभी एम. ए. करना था और मैं सोच रहा था कि एम. ए. करने के बाद जब कहीं जम जाऊंगा तो अपने मन से शादी करूंगा, पर पिताजी ने भिखमंगों की तरह इतनी जिद पकड़ ली थी कि उन की बात टालना मुशकिल हो गया. कहने लगे, "इंदर, तुम समझते हो कि मैं तुम्हारे ऊपर कोई बोझ लाद रहा हूं, पर बात ऐसी नहीं है. मैं भी तुम्हारी मरजी के मुताबिक ही काम करना चाहता हूं. तुम बी. ए. कर ही चुके हो. मैं ने रुपएपैसे के लोभ में पड़ कर तुम्हारी शादी तय नहीं की है, बल्कि शरीफ खानदान की पढ़ीलिखी लड़की देख कर तुम्हारी शादी तय की है."

मैं कुछ बोला नहीं. मुझे पता था कि पिताजी ने मुख्य रूप से दहेज के लोभ में पड़ कर ही मेरी शादी तय की थी क्योंकि एक लंबी रकम दहेज के लिए तय हुई थी. यदि मैं शादी करने से इनकार कर देता तो उन की एक नहीं चलने वाली थी, पर शादी के लिए मेरी स्वीकृति देने का खास कारण यह था कि लड़की का जो फोटो मैं ने देखा था, उस में उस का चेहरा व नाकनक्श सुंदर लगा था. इसी लिए मैं ने सोचा कि जब एक न एक दिन शादी करनी ही है तो अभी क्यों न कर ली जाए. पहले तो सुंदर लड़की का होना जरूरी है और चीजें बाद में.

मैं राजी हो गया था.

मेरी पत्नी के मेरे पास आते ही औरतों ने झट उस की चादर का खूंट मेरे अंगोछे से जोड़ दिया. यह दूसरा गठजोड़ था. मुझे यह सब ठीक नहीं लगा, पर मैं ने इस का कोई प्रतिवाद नहीं किया क्योंकि इस में कोई खास परेशानी नहीं थी. दादीजी ने कमांडर की तरह भीतर चलने का इशारा किया. आगेआगे मैं और मेरे पीछे मेरी पत्नी भीतर के एक कमरे में गए. दरवाजे पर 'कोहबर' लिख कर औरतों ने उस कमरे को 'कोहबर' की संज्ञा दे दी थी. वहां पर मुझे दही और शक्कर खाने को दिया गया पर मैं ने खाया नहीं. इस पर भी औरतों में काफी खुसुरफुसुर हुई. वहां जब गठजोड़ खोल दिया गया तो मैं आजाद हो गया और तुरंत बाहर निकल कर आंगन में चला आया. आंगन में भी औरतें थीं और मुझे एकांत न मिलने के कारण काफी झुंझलाहट हो रही थी, अतः बाहर के ओसारे में चला आया. पर यहां भी मुझे चैन मिलना संभव नहीं था. मेरे पास आ कर एक भाट ने कवित्त कहना शुरू कर दिया:

"माथे पर मुकुट और कानों में कुंडल सोहे,
सोने की अंगूठी श्याम सांवरो नगीना है."

स्पष्ट था कि भाट कुछ पाने के लालच से कवित्त कह रहा था, पर देनेलेने के मालिक तो पिताजी थे, जो अभी आए नहीं थे. वह बरातियों के साथ आ रहे थे. ससुराल के मिले हुए रुपए मेरे पास ही थे, इसलिए मैं ने सोचा कि भाट को कुछ दे कर क्यों न निबटा दूं और मैं ने दो रुपए निकाल कर भाट से कहा, "लीजिए, कविराजजी..."

मैं ने देखा, भाट का हाथ रुपए लेने के लिए हिला तक नहीं. उत्तर मिला "बबुआजी, आप के ब्याह में अगर कोई चिह्न न मिला तो क्या मिला."

अब मेरा माथा ठनका. मैं ने सोचा व्यर्थ में जहालत मोल ले ली. मेरा स्वभाव है कि इच्छा के विरुद्ध कोई काम करना पड़ता है तो काफी परेशानी महसूस होती है. भाट का मतलब स्पष्ट था कि वह कोई चिह्न अर्थात कोई चीज मांगना चाहता था और कोई भी दी जाने वाली चीज महंगाई के जमाने में दस रुपए से कम की क्या हो सकती है! मेरे मन में आया कि भाट से कह दूं 'आओ, तांबे का लाल पैसा आग में गरम कर के तुम्हारे शरीर में दाग दूं, ताकि जिंदगी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

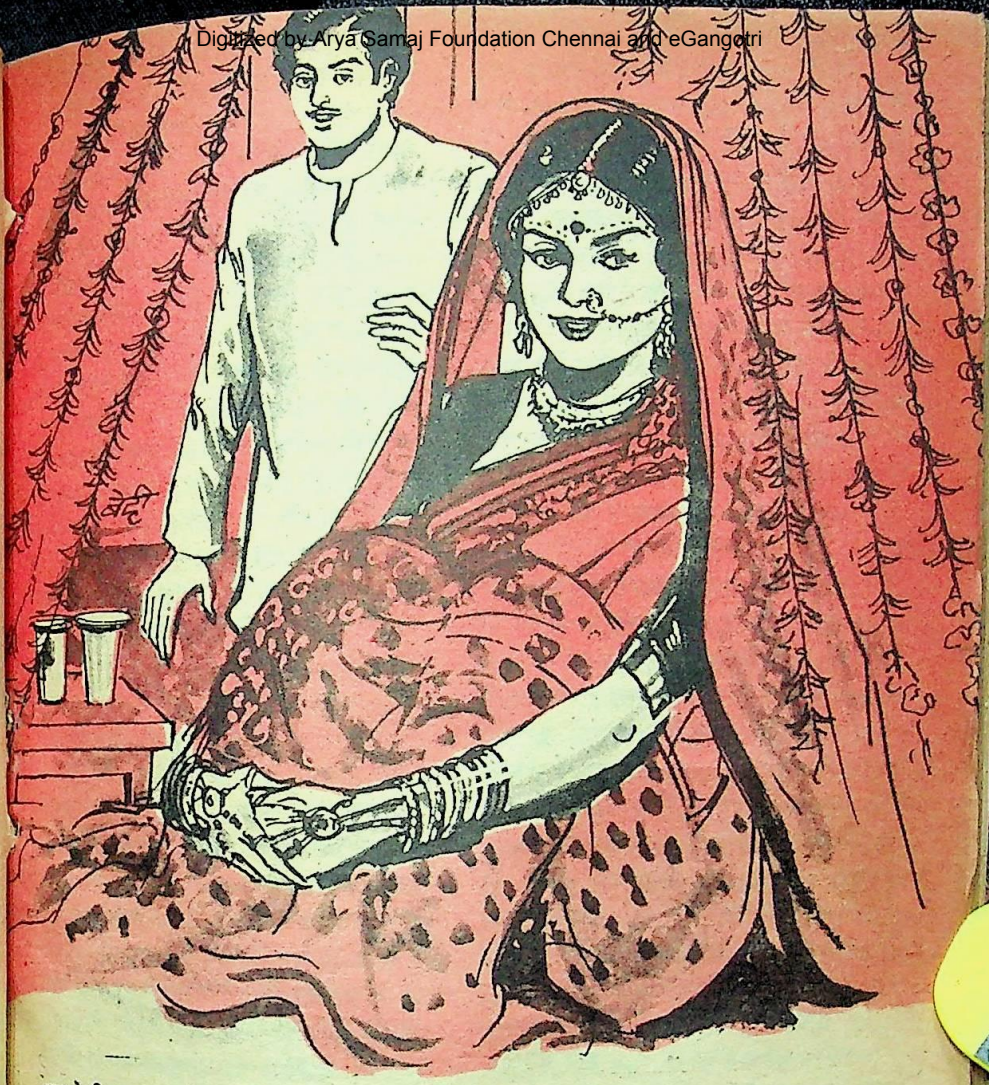

मैं सहमतेसहमते कमरे में चला गया. मेरी पत्नी झीने आवरण में पलंग पर बैठी थी.

भर के लिए तुम्हारे पास चिह्न हो जाए.' लेकिन मैं ने इस मजाक को अपने मन तक ही सीमित रखा और कहा, "कविराजजी, ब्याह करना कोई खेल नहीं है. आप का ब्याह होता तो आप को पता चलता कि क्या मुसीबत सामने आती है."

"बबुआजी, ब्याह नहीं किया है तो बरातें तो की हैं. खुशी की बात है, जो कुछ भी दे दीजिए, मंजूर है."

भाट अब संतोषवृत्ति पर आ गया था और उस के मुंहतोड़ जवाब का भी मैं कायल हो गया था जो निस्संदेह एक दिलचस्प जवाब था. आखिर वह भाट ही तो था, बात की रोटी खाने वाला. मैं उसे एक रुपया और देने से अपने को नहीं रोक सका और कुल तीन रुपए दे कर मैं ने अपना पीछा छुड़ाया. तीन रुपए पा कर भाट की बाछें खिल गईं.

यों शाम हो गई थी पर गरमी की शाम जाड़े की दोपहर से भी तेज होती है, इसलिए धुंधलका होने में अभी काफी देर थी. मैं पालकी से आया था और कहारों के तेज चलने के कारण पहले पहुंच गया था. पिताजी बरातियों के साथ पैदल आ रहे थे.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सब को पिताजी के आने की प्रतीक्षा थी.

मैं जिस ओसारे में बैठा था, उस के बाजू में एक कोठरी थी, जो कई प्रकार के सामानों से भरी थी. ओसारे में चूंकि जगह काफी थी, इसलिए उस में चारपाइयां पड़ी थीं. मैं ने सोचा कि कपड़े उतार कर थोड़ा आराम ही कर लूं. यह सोच कर मैं ने अपने गले में लिपटा अंगोछा अलग रख दिया और गले की शुष्क फूलमाला निकाल कर कुरता निकालने लगा. तभी एक आवाज मेरे कानों में पड़ी, "अरे...रे...रे... यह क्या करते हो... अभी कपड़ा नहीं निकाला जाता. कम से कम कंगन छूटने तक तो पहने ही रहो."

यह पिताजी की आवाज थी. वह आ गए थे. उन के साथ मामाजी के अतिरिक्त और भी तीनचार रिश्तेदार थे, जिन की सूरत मैं ने बस अपनी शादी के समय ही देखी थी. इस के पहले न तो कभी उन की सूरत देखी थी और न जानता ही था कि ये मेरे रिश्तेदार लगते हैं. पिताजी का इस प्रकार ऐन मौके पर कपड़े उतारने से रोकना मुझे बहुत खला. सोचा, सिर मुंड़ाते ही ओले पड़े. मैं ने उन का विरोध करना उचित नहीं समझा, इसलिए कुछ कहा नहीं. फिर भी अपनी मुखमुद्रा से इतना तो जता ही दिया कि मुझे उन का इस प्रकार रोकना अच्छा नहीं लगा है.

ओसारे के आगे जो मैदाननुमा जगह थी, उस में भी अब काफी भीड़ लग गई थी. सभी तरह के नेग मांगने वालों ने न जाने कहांकहां से आ कर पिताजी को गिद्ध की तरह घेर लिया. नाई, धोबी, दर्जी, कुम्हार, नचनिया, बजनिया और न जाने कौनकौन... एक अच्छीखासी भीड़ के बीच से निकल कर पिताजी ओसारे में चले आए और चारपाई पर बैठ कर बोले, "मुझे पानी भी पीने दोगे कि नहीं. रास्ते का थकामांदा आ रहा हूं और तुम लोग जान खाने के लिए चढ़ बैठे."

"हां, हां, मालिक, जुड़ा लो फिर हम लोगों को निबटाओ." उन में से कइयों की आवाज आई और पिताजी उसी मुद्रा में उठ कर भीतर चले गए.

मामाजी के अतिरिक्त जो अन्य रिश्तेदार थे, वे सब ओसारे में ही बैठ गए और मुझे ऐसा लगने लगा कि मैं फिर बरातियों के बीच घिर गया हूं. तभी मेरा छोटा भाई सुरेश आ कर बोला, "पिताजी बुला रहे हैं."

मैं पिताजी की अंतर्दशा से अच्छी तरह परिचित हूं. उन का इस मौके पर रुपया मांगने का मतलब यही था कि मुझे ससुराल से जो रुपए मिले हैं, वे शायद बाद में मैं उन को न दूं और कहीं खर्च न कर डालूं. मुझे उन के दिमाग की यह संकीर्णता हरदम सताती रही है और उस समय भी यह अच्छा नहीं लगा. मैं ने अपनी जेब से सब रुपए निकाल कर उन के हाथ में रख दिए और एक लंबी सांस ली. रुपए ले कर पिताजी बाहर चले गए और मैं आंगन में चला गया.

आंगन की शोभा दर्शनीय थी. एक लंबी सी दरी बिछी हुई थी और उस पर मेरी ससुराल से मिली हुई चीजों की मिलिट्री जैसी 'परेड' की गई थी. सुरेश उन के पास इस प्रकार बैठा था, मानो सामान की रखवाली कर रहा हो. मेरी पत्नी घर में थी और दादीअम्मां घर के दरवाजे पर मेरी दुलहन की मुंह दिखाई के रुपए वसूल करने के लिए बैठी थीं. मेरे सामने ही पड़ोस की औरतें मेरी पत्नी का मुंह देखने भीतर गईं तो उन के साथ ही दादीअम्मां भी भीतर चली गईं और भीतर से निकलीं तो उन के हाथ में कई रुपए थे.

मुंह देखने के समय रुपए देनेलेने के रिवाज से मुझे सख्त नफरत है. किसी भी नववधू का मुंह देखने को यदि पुरुषों को भी स्वीकृति दे दी जाए तो यह वृत्ति दूसरे प्रकार के धंधे की जड़ पकड़ लेगी. इसी समय एक बात और मेरे दिमाग में आई. किसी नवजात शिशु को पहलेपहल गोद में लेने पर रुपए देने का रिवाज है. मैं ने सोचा कि यदि मेरा भी बच्चा पैदा होगा तो निजी लोग, जो उसे पहलेपहल गोद में लेने आएंगे, रुपए देंगे. यह ऐसा रिवाज है कि आदमी को बिना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वजह रुपए देते समय झेंप महसूस होती है.

एक बार मैं अपने एक मित्र के साथ उस के एक संबंधी के घर चला गया था. वहां एक बच्चे ने जन्म लिया था. उस बच्चे को गोद में लेते समय मेरे मित्र ने झेंपते हुए दो रुपए का नोट उस के हाथ में पकड़ा दिया था. पर बच्चा अभी एक माह से भी कम का था, इसलिए कुछ पकड़ना जानता ही नहीं था. वह नोट उस के हाथ से जमीन पर गिर गया तो उस के संबंधी ने उसे झट उठा लिया था. मेरे मित्र ने बच्चे को मेरी गोद में दिया. पर मेरे पास तो रुपए थे नहीं और रहते भी तो मैं इस रिवाज के विरुद्ध था, इसलिए मैं रुपए देने वाला नहीं था. मैं ने बच्चे को गोद में ले लिया पर जब रुपए नहीं दिए तो मैं ने देखा कि मेरे मित्र और उस के संबंधी को यह बहुत खला था. खैर...

गोधूलि हो आई थी. थोड़ी देर में अंधेरा होने वाला था. शुक्ल पक्ष की चौथ थी, इसलिए चार घड़ी तक तो चांदनी रहने वाली थी. मैं ने सोचा कि सुहागरात मनाने का मौका तो बाद में आएगा, यदि आज अपनी दुलहन की सूरत ही अच्छी तरह देखने को मिल जाए तो काफी है. पर जिस दुलहन का चेहरा अन्य लोग दोदो रुपए दे कर देख सकते थे, उस को आज किसी भी कीमत पर देखना मेरे लिए संभव नहीं था.

देखता तो कैसे देखता? वैसे तो मेरी पालकी के साथ ही उस की पालकी भी आई थी, लेकिन परदा लगी पालकी में रास्ते में कहारों के सामने उस को देखना या उस से बातचीत करना संभव नहीं हो सका था और यह काम अभी तक बाकी था. मुझे एक उपाय सूझा. "मैं खाना खाऊंगा," कहता हुआ मैं उसी कमरे की ओर जाने लगा जिस में मेरी पत्नी थी. पर दादीअम्मां डाइन की तरह दरवाजे के पास बैठी थीं. वह चूकने वाली नहीं थीं. उन्होंने झट किवाड़ बंद करते हुए कहा, "आंगन में ही बैठ जाओ, बबुआ. अभी गझबेर (गोधूलि) का टेम है. थोड़ी देर में खाना."

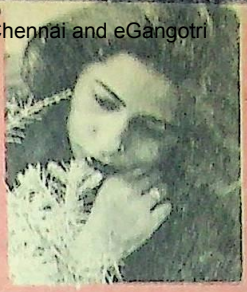

मजबूरी

चुराते हैं नजर तुम से
तो सहज मजबूरी के कारण,
डरते हैं, मेरी आंखों में
तेरा नाम न पढ़ ले कोई.

—निर्मला सुरेंद्रन

"मैं अभी खाऊंगा," मैं ने कहा. मुझे क्रोध चढ़ आया था. मैं पैर पटकता हुआ लौट कर आंगन में ही दरी पर बैठ गया. इस पर मेरी मां ने आ कर मुझे प्यार से समझाया.

"नाराज नहीं हुआ जात, बबुआ, देखत हो कि शादीविवाह को मौका है, और तू छोटेछोटे लड़कन जइसा जिद्द करत हो."

मुझे खाने के लिए बैठता देख कर मां ने रसोईघर में से पूरी, कचौरी, लड्डू आदि थाली में ला कर रख दिए. मैं ने खाना शुरू तो किया पर मेरी मनोकामना पूरी न होने के कारण खाना बेस्वाद लगा.

मैं यही सोच रहा था कि शायद रात को ही चोरी से मौका लग जाए अपनी दुलहन से मिलने का. पर साथ ही यह भी बात दिमाग में आई कि उस का नाम अहल्या है और मेरा नाम इंदर. यद्यपि उस का ब्याह मुझ से ही हुआ है पर उस का मालिक अभी मैं नहीं बन पाया हूं. इसलिए फिलहाल वह मेरी नहीं है, मेरे घर वालों की है. यदि मैं चोरी से उस से मिलने जाऊं तो कहीं गौतम ऋषि वाली स्थिति सामने न आ जाए. घर के सभी लोग तो उस की रखवाली पर बैठे हैं. मेरे ऊपर किसी का शाप तो नहीं पड़ेगा पर गौतम ऋषि की मृगछाला की तरह दादीअम्मां ने अपना डंडा चलाया तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चोट लगने से मेरे शरीर पर वार अवश्य पड़ जाएगा.

चंद्रमा की सहायता से ही इंद्र गौतम की पत्नी से मिल पाए थे, इसलिए उस का दंड चंद्रमा को भुगतना पड़ा और मार खानी पड़ी थी. ऐसा सोच कर मुझे कुछ हंसी सी आई मन ही मन. यह मात्र एक मनोभावना थी जो गौतम ऋषि वाली कहानी जानने के कारण उस समय मेरे दिमाग में आ गई थी. फिर भी यह बात मुझे कचोट रही थी कि अपनी पत्नी का मुंह देखना आज मेरे लिए इतना दुर्लभ है कि उस के लिए मैं न जाने क्याक्या सोच रहा हूं.

इसी प्रकार मनुष्य की इच्छा जब पूरी नहीं होती तो वह तरहतरह के पाप करने को उतारू हो जाता है, जैसे कि मैं चोरी से अपनी पत्नी से मिलने की सोच रहा हूं. इस में दोष किस का है? हमारी रूढिग्रस्त परंपराओं का ही तो, जिन की वजह से तरहतरह की कठिनाइयां सामने आती हैं.

मैं सोचविचार में इतना खो गया था कि थाली की सभी चीजें साफ हो गईं, फिर भी मैं हाथ से थाली टटोल रहा था. अब मेरा थाली की ओर ध्यान गया और स्थिति समझ में आई: चूंकि मैं और अधिक कुछ नहीं खाना चाहता था, इसलिए लोटे में रखा पानी उठा कर पी लिया और उठ कर चलता बना. अब अंधेरा होना शुरू हो गया था और मैं बाहर जा कर सब लोगों की उपस्थिति में ही खाली चारपाई पर लेट गया.

उस समय मेरा लेटना देख कर पिताजी को अवश्य बुरा लगा था. मैं ने एक बार उन की ओर देख कर यह ताड़ लिया था. लेकिन मुझे अब किसी की कोई चिंता नहीं थी. कोई कुछ कहता भी तो मैं उस के कहने पर अमल करने वाला नहीं था. गनीमत यह रही कि पिताजी ने कुछ टोकटाक नहीं की और अन्य किसी ने भी मुझे कुछ नहीं कहा. हो सकता था कि मुझे थका जान कर आराम करने देने के लिए उन लोगों ने मुझ पर यह कृपा की हो. थोड़ी देर में मैं सो गया. फिर उन लोगों का क्या कार्यक्रम रहा, मैं नहीं जान सका. सवेरे सवेरे और उन के साथ अन्य रिश्तेदारों की विदाई हो जाने पर मैं ने यह सोच कर कि 'चलो बला टली' कुछ चैन की सांस ली.

अब मेरे घर पर कोई बाहरी लोग नहीं रह गए थे. बस टोलेमहल्ले के ही एकदो लोग आतेजाते दिखाई देते थे. मैं ने अपनी कलाई घड़ी, जो ससुराल से मिली थी, में समय देखा तो आठ बज रहे थे. उसी समय बगल में पोथीपत्रा दबाए, सिर पर पीली पगड़ी बांधे, मिरजई धोती पहने और ललाट पर त्रिपुंड का टीका (जिस को 111 नंबर का टीका कहना ज्यादा अच्छा होगा) लगाए हुए अपने कुलपुरोहित पंडित भरतलाल को आते हुए देखा. नजदीक आने पर मैं ने उन को हाथ जोड़ कर प्रणाम किया और वह "आयुष्मान! आयुष्मान!" कहते हुए पंजाब मेल की तरह बेधड़क भीतर चले गए.

पंडितजी को भीतर जाते देख कर मेरी उत्सुकता बढ़ी कि वह क्या करने आए हैं? शायद सुहागरात का मुहूर्त वगैरह देखने आए हों. इसलिए मन में विचार आया कि भीतर जाऊं और उठ कर धीरेधीरे उधर की ओर कदम बढ़ाने लगा. अभी बाहर का दरवाजा लांघ कर भीतर की ओर बढ़ा ही था कि प्रहरी की तरह तैनात मिठुआ हिजड़ा उंगली चमका कर बोल उठा, "दुलहिन बिना चैन कैसे परो रे बाबा, अभी उधरे रहो दुलहाजी."

मिठुआ के मुंह से इतना सुनना था कि मेरे दिमाग का पारा चढ़ गया और मन में आया कि जोर की चपत उस के गाल पर रसीद कर दूं, पर कुछ सोच कर मैं उलटे पांव लौट आया. लौटते समय मुझे भीतर आंगन में उपस्थित लोगों के हंसने की मिलीजुली आवाज भी सुनाई दी. काफी शर्म भी महसूस हुई.

पता नहीं मिठुआ कब से भीतर घुसा था. उस की उमर तो चालीस के करीब है, पर वह औरतों जैसी केशसज्जा करता है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और साड़ी पहनता है. दाढ़ी मूंछ तो है नहीं उस के. उस का काम है लोगों के घर ब्याहशादी के अवसर पर नाचगा कर कुछ पैसा कमाना और खाली समय में कुछ लोगों के घर पानी भरना या ऐसा ही कुछ दूसरा काम करना. उस को छोटेबड़े सभी 'भाभी' कह कर चिढ़ाते हैं. यहां तक कि मैं ने अपने पिता को भी उस को 'भाभी' कहते हुए सुना है. मैं कभी नहीं बोलता उस से.

मैं बाहर ओसारे में आ कर चारपाई पर पड़ा रहा. थोड़ी देर बाद पंडितजी भीतर से निकलते हुए दिखाई दिए पर मैं ने अपनी उस हालत में उन को नमस्कार नहीं किया. वह चले गए. मेरा छोटा भाई जब भीतर से निकला तो उस से पूछने पर मालूम हुआ कि पंडितजी कंगन छूटने का मुहूर्त देखने आए थे. शाम को पांच बजे कंगन छूटेगा. मैं ने उस से पूछा, "तुम्हारी भाभी कैसी है?" तो वह "अच्छी है" कह कर हंसता हुआ भाग गया और मैं आश्चर्यचकित रह गया.

कंगन छूटने का मतलब था मेरे हाथ में बंधे हुए धागे का निकल जाना. धागे को हाथ से निकलवाने के लिए मुझे काफी परेशानी उठानी पड़ी. दादीअम्मां की आज्ञा मिलने पर मुझे उन के और मां सहित महल्ले भर की औरतों के हुजूम के साथसाथ हाथ में छाता ले कर अड़ोसपड़ोस के सभी मंदिरों तक जाना पड़ा. दादीअम्मां ने मुझे अपने हाथ में कजरौटा लेने का भी आदेश दिया था पर मैं ने भद्दा लगने के कारण उसे हाथ में लेने से इनकार कर दिया. इस पर वह कुछ गुस्सा भी हुईं और उन्होंने उसे खुद हाथ में ले लिया. पूजापाठ का सामान मिठुआ ने एक बांस की टोकरी में धर कर सिर पर ले रखा था.

देवीदेवताओं के पास पहुंचने पर उन के आगे सिर पटक कर उन्हें नमस्कार करने के लिए दादीअम्मां की आज्ञा होती, पर मैं उन को केवल ऊपर से ही सिर झुका कर इसलिए नमस्कार कर लेता कि कहीं पत्थर पर सिर पटकतेपटकते मेरा सिर न फूट

घृणा

घृणा को सिर्फ प्रेम से जीता जा सकता है. घृणा के सामने घृणा दिखाने से वह और भी फैलती और गहरी होती है.

—महात्मा गांधी

जाए. हालांकि इस पर औरतों में काफी कानाफूसी होती, पर मैं ने इसी तरह अपना काम निकाला. हिंदुओं में देवीदेवताओं की संख्या इतनी ज्यादा है कि उन का हिसाब लगाने पर पूरी जनसंख्या में से फी आदमी ढाई देवता हिस्से में पड़ते हैं. इसी लिए मुझे पचासों देवताओं के पास जाना पड़ा. यह काफी परेशानी की बात थी. हां, देवताओं के पास जाते समय औरतों के तरहतरह के गीत गाने का क्रम जारी रहता था, जो एक अच्छाखासा मनोरंजन था. देवताओं को सिर नवाते वक्त गाया जाने वाला गीत काफी मजेदार था:

"देहू ना 'अहल्या' देवी अंचरा पसार रे,
लेहू ना 'इंदर' दुलहा पटुका पसार रे,
सब के असीसवा झरिअ झरि जाए रे.
अमुक देवता के असीसवा जनम एह बात रे."

अमुक शब्द उस देवीदेवता के नाम में परिवर्तित हो जाता था, जिस के यहां यह गाना गाया जाता था. मेरी पत्नी का नाम ले कर गीत अवश्य गाया जाता था पर वह तो मेरे साथ थी नहीं. शायद उस की जगह पर कजरौटा ही ले लिया गया था. दादीअम्मां और मां भी देवीदेवताओं के आगे सिर पटकपटक कर उन को नमस्कार करती थीं और उन को जलअक्षत आदि चढ़ाती थीं. इस प्रकार, अंत में घर लौटने पर दादीअम्मां द्वारा मेरे हाथ का धागा खोल कर न जाने कहां गायब कर दिया गया, मैं ने जानने की कोशिश भी नहीं की.

दूसरे दिन से मैं दूल्हा के वेश में नहीं रह गया और सामान्य रूप में आ गया. शादी का कुरता आदि निकाल कर रख दिया. मुझे ऐसा लगता था कि मुझे मेरे घर या बाहर के जो भी लोग देखते, उन की आंखों में कुछ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बोलता रहता. मैं असली लक्ष्य था कि मैं अपनी पत्नी से कब मिलूं और उस के संपर्क में आ कर कब अपने को धन्य समझूं? पर इस का कोई आसार ही नजर नहीं आता था.

मैं देखता कि पिताजी जब घर में भीतर जाते हैं तो मुझे दिखा कर विशेष रूप से खांसते हैं और तब भीतर कदम रखते हैं. शायद इसलिए कि उन की तरह मैं भी खांसते हुए भीतर जाऊं, ताकि भीतर मेरी पत्नी आंगन में खुलेआम बैठी हो तो छिप जाए. लेकिन मैं ऐसा कर के क्यों जाऊं. मैं तो सीधा भीतर चला जाता. मेरी पत्नी पर दादीअम्मां का कड़ा पहरा लगा रहता.

इधर मुझे खानापीना देने के लिए मेरी मां तैयार ही रहती थीं. इसलिए मैं खापी कर बाहर आ जाता. मां और दादीअम्मां मुझ से कुछ विशेष बात भी नहीं करतीं और मुझे भी उन से कुछ बात करने में अरुचि हो गई थी. मेरे दिल में एक उत्कट इच्छा बराबर बनी रहती कि पत्नी से कैसे मिलूं और उस का चेहरा कैसे देखूं, लेकिन यही मजबूरी हो गई थी मेरे लिए...बिलकुल मजबूरी.

लेटर प्रेस व आफसेट पर
कम लागत व उत्तम छपाई
के लिए प्रयोग करें

सात दिन इसी तरह बीत गए. ये सात दिन मुझे सात युग से भी अधिक लगे. इतने दिनों में मैं किसी प्रकार भी अपनी पत्नी को नहीं देख सका. अब मैं इतना व्याकुल हो गया था जिस की कोई सीमा नहीं थी. मैं काफी उदास भी रहने लगा था.

आठवें दिन जब मैं ओसारे में ही बैठ मन बहलाने के लिए एक उपन्यास पढ़ रहा था, तो मिठुआ धीरे से दाखिल हुआ और जब मैं ने उस की ओर निगाह डाली तो उस ने आंख नचा कर कहा, "आज रात में मुहूर्त है."

मुझे उस हिजड़े की बात समझते देर न लगी. वह मेरी सुहागरात का मुहूर्त बता रहा था, पर मैं ने स्पष्ट जानने के लिए उस को कुरेदा, "सुहागरात का?"

"हां, हां उसी का."

"तुम को कैसे मालूम?"

"मुझ को नहीं मालूम होगा तो किस को मालूम होगा. कोई आप की भाभी थोड़े बैठी है." वह मुसकरा रहा था. मैं ने उस से ज्यादा कुछ नहीं पूछा और यह समझ लिया कि मेरी कोई अपनी भाभी नहीं है तो भाभी का पार्ट मिठुआ ही अदा कर रहा है. मैं ने सोचा चलो अच्छा ही है, इस के अवलंब से भी तो मुझे अपनी पत्नी से मिलने का मौका मिलेगा.

मैं ने पहले ही सुन रखा था कि ऐसे अवसर पर भाभी की आवश्यकता पड़ती है. औरतें भी खूब हैं कि हिजड़ों से तो हर तरह की बात कर लेती हैं. लेकिन पुरुषों से उन का परदा रहता है.

मुझे उस दिन काफी उकताहट हो गई. मैं बारबार भीतर जाने की सोचता और जाता भी, लेकिन भीतर का शासन प्रबंध दूर से ही देख कर लौट आता, पत्नी का दर्शन करना तो दूर रहा. पहले दिनों जैसा खाना भी खायापिया, लेकिन उस दिन मुझ से उकताहट में या खुशी में ज्यादा कुछ नहीं खाया जा सका.

जैसेजैसे रात हुई, मैं बाहर ओसारे के सामने खाली जगह में चारपाई डाल कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

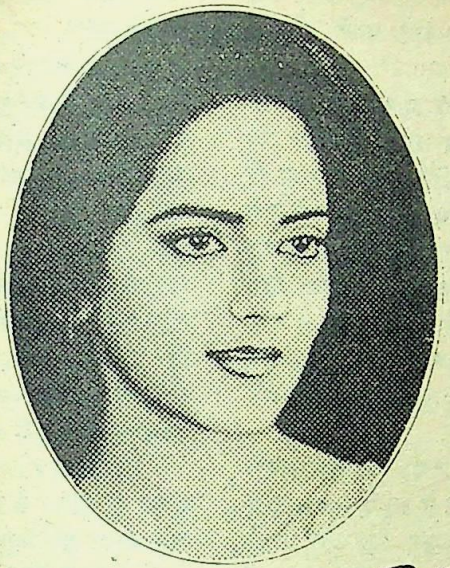

मोहक त्वचा! साफ़ी त्वचा!

कील-मुहासे, फोड़े-फुंसियां तथा त्वचा के अन्य रोग रक्त में विकार के चिन्ह हैं। रक्त के विकार से स्वास्थ्य में विभिन्न प्रकार की व्याधियाँ उत्पन्न हो जाती हैं। ऐसे में आपको साफ़ी के स्वास्थ्यदायक तत्वों की अत्यन्त आवश्यकता होती है।

साइन्टिफ़िक रिसर्च ने भी सिद्ध कर दिया है कि साफ़ी एक हानि-रहित रक्तशोधक औषधि और कीटाणु-नाशक है, और यह त्वचा को साफ़ और सुन्दर बनाती हैं तथा अच्छा स्वास्थ्य सुनिश्चित करती है।

निःसंदेह, साफ़ी पचास वर्षों से अधिक समय से एक सुप्रसिद्ध रक्तशोधक औषधि है।

२४ अत्यावश्यक रक्तशोधक तत्वों और जड़ी-बूटियों का अनोखा मिश्रण

हमदर्द

साफ़ी

रक्त को साफ़ करती है। त्वचा को निखारती है।

HTA-5048BH

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेटा. पिताजी उस दिन कहां चले गए थे. शायद इसी लिए मैं रात में बाहर से उठ कर भीतर जाने में लज्जा न महसूस करूं. मुझे बेचैनी थी और नींद नहीं आती थी. मैं बारबार घड़ी देखता.

जब दस बज गए और कुछ सन्नाटा हुआ तो मैं यह समझ कर कि बाहर का दरवाजा खुला होगा, धीरेधीरे वहां गया. मैं ने जब किवाड़ को हाथ से दबाया तो उसे भीतर से बंद पाया. मुझ पर घड़ों पानी पड़ गया. हाय रे, मेरी दुर्दशा! मैं ने सोचा और गुस्से में भारी कदमों से वापस आ कर निढाल पड़ा रहा. सोचता रहा... सोचता रहा... सोचता रहा ... नींद नहीं आती थी.

मुझे नींद आ गई और यह मुझे तब मालूम पड़ा जब मिठुआ ने आ कर मेरा हाथ झकझोरा. मैं हड़बड़ा कर उठा और अभी उसे पहचान ही पाया था कि तब तक वह भाग खड़ा हुआ. मैं ने घड़ी देखी, दो बज रहे थे.

अब मेरी समझ में आया कि मेरे साथ यह नाटक खेला जा रहा है. अब पत्नी से मधुर मिलन का मौका दिया गया है. मैं अब उठ कर चला. जा कर देखा तो बाहर का दरवाजा खुला था. मैं धीरेधीरे भीतर जाने लगा. आंगन में कोई नहीं था. गरमी का मौसम होते हुए भी दादीअम्मां और मां, सुरेश सहित सभी भीतर सोई हुई थीं और सभी दरवाजे बंद थे. केवल सामने का एक दरवाजा खुला था जिस में मेरी पत्नी थी.

मैं सहमतेसहमते कमरे में चला गया और मेरी पत्नी, जो झीने आवरण में पलंग पर घूंघट काढ़े बैठी थी, मेरे आने की आहट पा कर खट से जमीन पर उतर कर बैठ गई.

'अच्छी मुसीबत रही,' मैं ने सोचा और गद्देदार पलंग पर बैठ गया. मैं यह भी जानता था कि मेरी पत्नी पढ़ीलिखी है और सिनेमा वगैरह भी उस ने अवश्य देखा होगा. साथ ही मैं भी सिनेमा के दृश्यों में पतिपत्नी का मधुर मिलन देख चुका था कि किस प्रकार पतिपत्नी एकदूसरे से मिलते हैं और उस समय कोई लाजशरम के लक्षण नहीं दिखाई देते उन में. लेकिन जब वही चीज अपने मत्थे पड़ी तो दूसरा ही नजारा वहां सामने आया.

मैं ने भीतर से सांकल लगा दी थी, अंदर आधुनिक युग की लालटेन का मद्धिम प्रकाश भी था. लेकिन मेरी पत्नी तो मुझ से कुछ बोलती ही नहीं थी और पलंग से उतर कर नीचे बैठ गई थी. मैं सोच रहा था कि कैसे बोलूं, क्या बोलूं? और बस इसी ऊहापोह में बैठेबैठे काफी समय बीत गया और चार बजने को हो आए. अंत में मैं ने हिम्मत की, "ऊपर बैठो. मैं समझता हूं कि मेरे आने पर तुम को नीचे बैठने की आवश्यकता नहीं थी."

कुछ क्षण तक वह चुप रही, फिर घूंघट के भीतर से ही बोली, "जरूर बैठूंगी, जब आज्ञा होगी तो."

'हद हो गई आज्ञा की' मैं ने सोचा और धीरे से उस की बांह पकड़ कर ऊपर बैठने को सहारा दिया तो वह छुईमुई की तरह लजातीसकुचाती ऊपर आ कर मेरे पायताने बैठ गई. फिर मौन... देर तक गहरा मौन...

अब मैं क्या बोलूं, समझ में नहीं आ रहा था. बहुत देर तक मैं भी चुप और वह भी चुप. पसीने से लथपथ. फिर मैं ने साहस करना चाहा और धड़कते दिल से उस के पास खिसक कर उस का घूंघट हटाने के लिए हाथ बढ़ाया. मैं ने अभी घूंघटपट छुआ ही था कि बाहर से दरवाजे की सांकल बजने की आवाज आई. खड़ ...खड़...खड़...

बस, मेरे हाथ से उस का घूंघट छूट गया और आंगन में दादीअम्मां की प्रभाती सुनाई दी, "उठ जाग मुसाफिर भोर भयो, अब रैन कहां जो सोवत है."

मैं ने घड़ी देखी, पांच बज रहे थे. अब मैं कैसे वहां रुकता? क्रोध के मारे मैं तुरंत उठ खड़ा हुआ और उतने दिन से पत्नी का चेहरा देखने की मन में पाली हुई लालसा को क्षारक्षार होते देख, किवाड़ खोल कर झटके से बाहर निकल गया. भिनसारे की ठंडी हवा शरीर में झुरझुरी पैदा कर रही थी. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वे उस दिन कई महीनों तक पत्रव्यवहार के बाद गोद लेने के कागजों पर हस्ताक्षर करने आए थे. बच्चा बाद में पासपोर्ट बनवा कर लेने आने वाले थे. उस दिन वे केवल औपचारिकता पूरी करने आए थे. समाचार तोड़मरोड़ कर शिशुभवन की किसी दाई द्वारा बाहर पहुंच गया था. फलस्वरूप भीड़ बच्चे को बचाने के लिए जमा हो गई थी.

हिंसा की आशंका होने से शिशु भवन के प्रबंधकों ने स्वीडन के दंपती को पीछे के दरवाजे से पहले ही भेज दिया था. उन्हें स्वप्न में भी आशा नहीं थी कि ऐसी स्थिति का सामना करना पड़ेगा. न केवल एक बच्चे को पालने का, बल्कि वह भी भारत के बच्चे को गोद लेने का उन्हें इतना आकर्षण था कि वे रुपया खर्च कर के सात समुद्र पार भारत आए थे.

भवन की छत पर आ कर भीड़ को संबोधित करते हुए प्रबंधक ने पूछा, "आप लोग क्या चाहते हैं?"

भोला दो वर्ष का एक अनाथ बच्चा था, जिसे एक स्वीडिश दंपती गोद ले कर विज्ञान का विशेषज्ञ बनाना चाहते थे, लेकिन भारतीय धर्म के धंधेबाजों ने अड़ंगेबाजी लगा कर उसे क्या बना दिया.

एकसाथ इतनी सारी आवाजें आईं कि उन का कुछ मतलब निकालना कठिन था.

प्रबंधक ने कहा, "आप सब लोग एकसाथ बोल रहे हैं, कुछ समझ में नहीं आता. केवल एक बोलें."

सब लोग फिर एकसाथ बोल पड़े

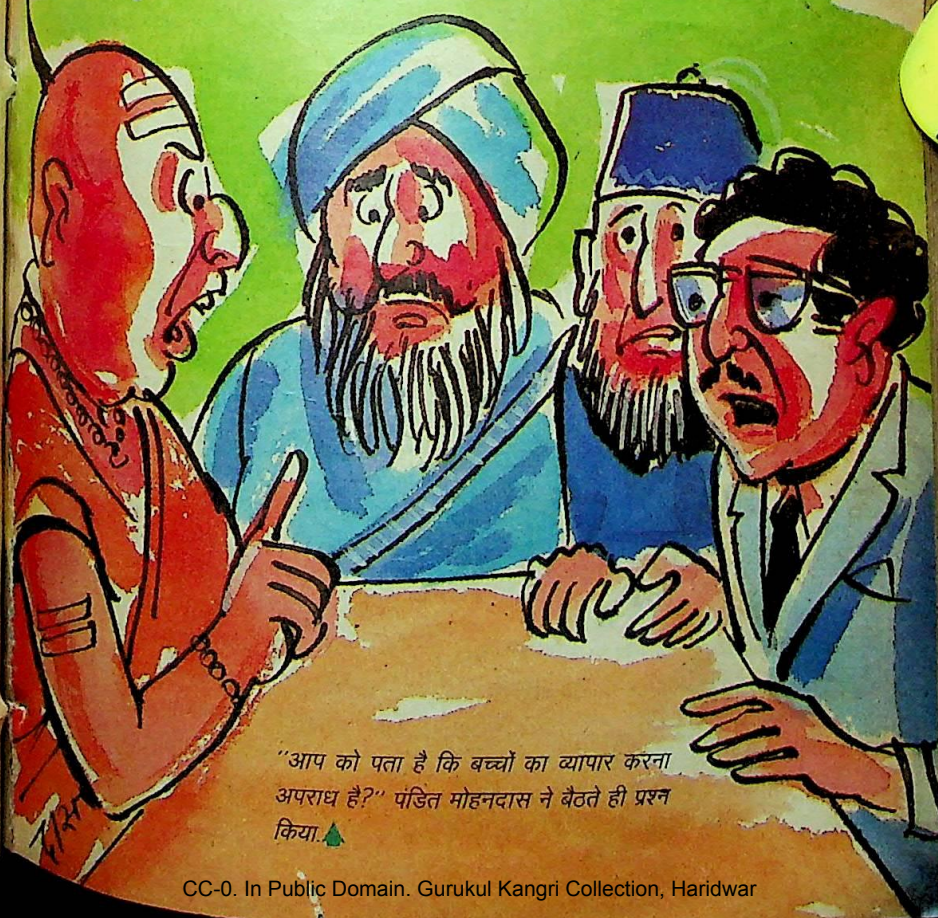

"आप को पता है कि बच्चों का व्यापार करना अपराध है?" पंडित मोहनदास ने बैठते ही प्रश्न किया.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पीछे से नारेबाजी भी हो रही थी, जिस में अब मुरदाबाद भी जुड़ गया था. इतने में ही एक मजे हुए नेताओं जैसी शक्लसूरत के आदमी ने एक नारा और उछाल दिया "महात्मा गांधी, जिंदाबाद... भारत माता की, जय."

इन अतिरिक्त नारों से वह भीड़ बहुमुखी हो गई और थोड़ी ही देर में सब एकदूसरे से पूछने लगे, "क्यों, क्या हुआ?"

"क्या बात है?"

अशांत और बेसब्र भीड़ का लाभ उठा कर एक गुंडे ने वह पत्थर उछाल ही दिया, जिस की पुलिस को प्रतीक्षा थी. उप अधीक्षक पुलिस और मजिस्ट्रेट दोनों मौजूद थे. भगदड़ को देखते हुए उन्होंने एक इंस्पेक्टर को इशारा किया.

उस ने जीप में लगे भोंपू से एलान किया, "आप लोग शांति से अपने घर चले जाएं. इस स्थान पर धारा 144 लग चुकी है."

तब किसी ने गरज कर कहा, "हमें गोलाबारूद से कोई डर नहीं है. हम न्याय मांगने आए हैं. न्याय ले कर ही जाएंगे."

यह सुन कर तितरबितर होती भीड़ रुक गई.

कुछ लोगों ने पुलिस की उस जीप को घेर लिया, जिस में मजिस्ट्रेट बैठा था.

"जो लोग बच्चों का व्यापार करते हैं, उन्हें तो आप अपने संरक्षण में लेते हैं. जो इस घृणित कर्म को रोकने आए हैं, उन पर गोली चलाने की धमकी देते हैं. यह तो सरासर अन्याय है," एक लुंगीधारी ने क्रोध से कहा.

मजिस्ट्रेट ने शांति से कहा, "आप को जो कुछ शिकायत है, लिख कर दें. इस तरह कानून को हाथ में लेने से क्या होगा? इस तरह तो अराजकता फैलती है."

"लिखनेपढ़ने से कोई सुनवाई नहीं होती. जब तक कानून हाथ में नहीं लो, किसी के कान पर जूं भी नहीं रेंगती."

"आप लोग यहीं शांति से ठहरिए. मैं प्रबंधक से बात करता हूं. किसी को हिंसा पर उतारू होने की आवश्यकता नहीं है. सामने से हटिए, रास्ता छोड़िए."

भीड़ में से किसी ने पुलिस और मजिस्ट्रेट को गालियां दीं, परंतु इस पर ध्यान न देते हुए मजिस्ट्रेट भवन के अंदर चला गया. प्रबंधक ने मजिस्ट्रेट को सारी बातें समझाईं और कहा, "यहां गैरकानूनी कोई काम नहीं होता. वैसे भी यह शिशु भवन सरकारी सहायता से चलता है. कोई निजी संस्थान नहीं है."

मजिस्ट्रेट की सलाह मान कर प्रबंधक ने भीड़ के कुछ प्रतिनिधियों से मिल कर बात करना स्वीकार कर लिया.

बाहर आ कर मजिस्ट्रेट ने भोंपू से एलान करवा दिया कि वे तीन या चार प्रतिनिधि चुन कर प्रबंधक से बातें करने के लिए भेज दें.

भीड़ में एक अजीब शांति फैल गई. सारे लोगों में तीनचार को चुनना क्या आसान काम है? सब लोग आपस में बातें करने लगे और लड़के झगड़ने लगे. कुछ ही देर में स्थिति काबू से बाहर हो गई.

मजिस्ट्रेट ने 10-15 मिनट के बाद भी जब कुछ प्रगति नहीं देखी तो फिर एलान किया, "अगर आप 10 मिनट में अपने प्रतिनिधि नहीं चुन सकते तो चुपचाप अपने घर चले जाएं."

इस एलान से फिर सरगर्मी शुरू हो गई. एक के बाद एक नाम हवा में फेंके जाने लगे. जिस तेजी से नाम आने लगे, उसी तेजी से नाम वापस होने लगे. जब कोई निर्णय होता नहीं दिखाई दिया तो मजिस्ट्रेट ने फिर से धमकी दी. इस बार बड़ी कठिनाई से तीन नाम आए.

पहला नाम था मुहम्मद अली का. मुहम्मद अली महल्ले की मसजिद के इमाम थे और पिछली नगरपालिका के सदस्य भी रह चुके थे. दूसरा नाम था पंडित मोहनदास का. पंडितजी संस्कृत के विद्वान थे. स्कूल में पढ़ाते भी थे और पुरोहिताई भी करते थे. तीसरे प्रतिनिधि थे तारासिंह. वह गरुद्वारे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घात से बचिए!

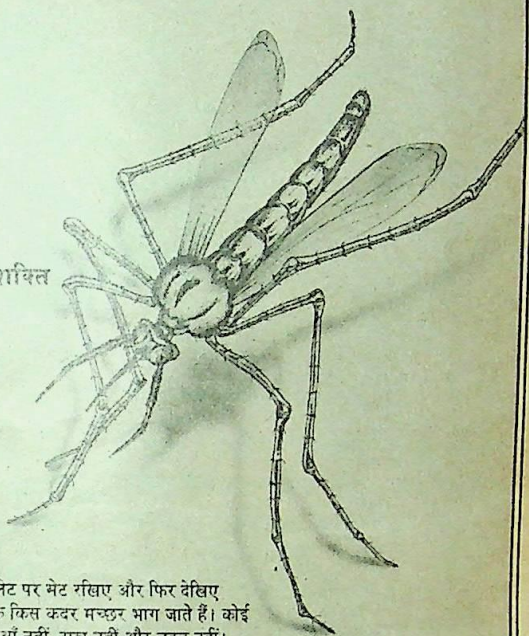

जेट मॉस्किटो रिपेलर की अदृश्य शक्ति मच्छरों के उपद्रव से आपको और आपके बच्चों को बचाती है!

आपके बच्चे जो बड़े नाज़ुक हैं, जब भी सोते हैं, मच्छरों का उपद्रव उन पर हो सकता है। ये उनके स्वास्थ्य के लिए नुक़सानदेह हो सकते हैं। मच्छर ऐसे ख़ौफ़नाक रोग भी फैलाते हैं, जिनका असर जीवनभर रहता है। इनमें से कुछ तो बच्चों के लिए विशेषरूप से घातक होते हैं।

प्लेट पर मेट रखिए और फिर देखिए कि किस क़दर मच्छर भाग जाते हैं। कोई धुआँ नहीं, राख नहीं और बदबू नहीं। आप और आपके बच्चे आरामदेह, शान्तिपूर्ण और स्वास्थ्यवर्धक नींद में विलीन हो जाते हैं।

नया डबल एक्शन जेट भारत में पहली बार.

आप इस अव्वल दर्जे के दुश्मन से अपने बच्चों को बचाइए। जेट मॉस्किटो रिपेलर को प्लग में लगाइए और बटन दबाइए, गर्म

दिनभर की खुशबू और मच्छरों से रहित आरामदेह रात के लिए.

जेट डोमेस्टिक मॉडल, चार्जेबल लैम्प के साथ.

जेट ट्रावेलर मॉडल, बैटरी वाले नाइट लैम्प के साथ.

सोनिक इलेक्ट्रोकेम प्रा. लि.
३८, पटेल नगर, इन्दौर-४५२ ००१.

Jet

जेट की अदृश्य शक्ति, जो, मच्छरों को मार भगाती है!

Interact:SE: 16 :Hin

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

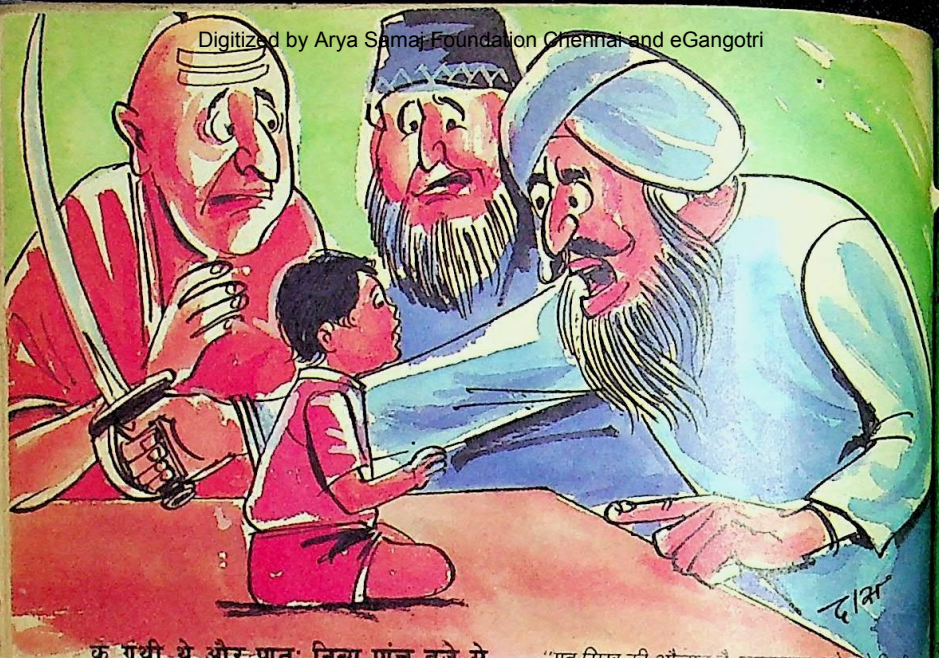

"यह सिख की औलाद है. खबरदार, जो इसे किसी ने हाथ लगाया." तारासिंह ने कृपाण हाथ में ले कर कहा.

क ग्रंथी थे और प्रातः नित्य पांच बजे से गुरुद्वारे के बाहर लगे चार लाउडस्पीकरों से उन के सबद कीर्तन का सब को आनंद उठाना पढ़ता था.

मजिस्ट्रेट व्यंग्य से मुसकराया. यहां सब पलायनवादी हैं. जैसे ही कोई निर्णय लेने की घड़ी आती है, धर्म के परदे के पीछे छिप जाते हैं. खैर, उसे इस से क्या लेनादेना था. तीनों को आगे कर के वह उन के साथ प्रबंधक के दफ्तर में चला गया.

प्रबंधक ने उन का स्वागत किया और कुरसियों पर बैठने के लिए आमंत्रित किया.

बैठतेबैठते पंडित मोहनदास ने प्रश्न किया, "आप को मालूम है कि बच्चों का व्यापार करना एक अपराध है?"

"आप को शायद भ्रम है. यह बच्चों के व्यापार की जगह नहीं है. यहां पर अनाथ बच्चों का पालनपोषण होता है. इस काम के लिए हमें सरकारी सहायता भी मिलती है. सड़क पर पड़े बच्चों को हम जीवन दान देते हैं. साथ ही यह भी कोशिश करते हैं कि नागरिक आगे आएं और उन बच्चों को गोद ले कर उन के अंधेरे जीवन में रोशनी दें."

"लेकिन हमें ऐसी सूचना मिली है कि आप बच्चों को विदेश भेजते हैं. जहां उन्हें अनैतिक कार्यों में लगा दिया जाता है."

"आप शायद ठीक कहते हैं, पर हमारी संस्था ऐसा घृणित काम नहीं करती है. हर ऐसा दंपती जो गोद लेने के लिए आता है, उस की पूरी जांच की जाती है. और पूरी तरह संतुष्ट होने के बाद ही उसे बच्चा गोद दिया जाता है. वैसे इस काम के लिए सरकारी कानून है, जिस का पूरी तरह से पालन किया जाता है."

तारासिंह ने पूछा, "इस की क्या जमानत है कि गोद दे दिए जाने के बाद उस बच्चे के साथ कोई बदसलूकी नहीं होगी?"

"बच्चे और उसे गोद लेने वाले मांबाप से हम पूरा संपर्क रखते हैं और बच्चे की प्रगति व भविष्य के बारे में बराबर पूछताछ करते रहते हैं. कई बच्चे इस समय इंजीनियरी, डाक्टरी और दूसरी उच्च शिक्षाओं में तालीम हासिल कर रहे हैं. अगर उन्हें गोद नहीं लिया जाता तो शायद जिस गंदी नाली से हम उन्हें उठा लाए थे, वे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहली बार!

शुद्धता ही शुद्धता.
कभी न मिली ऐसी सुविधा

इन्डाना का नया १० किलो पैक

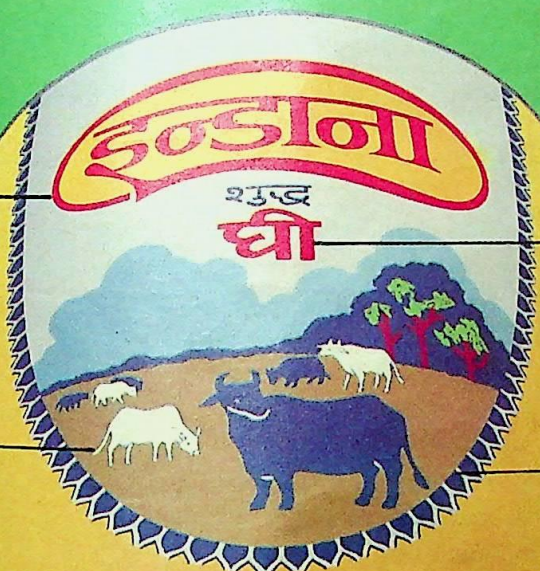

मुनाफे का
सौदा और
बचत ही व

१००% श
१००% स

फोरमोस्ट इन्डस्ट्रीज़ (इंडिया) लिमिटेड
१३८-१४१, इंन्डस्ट्रीअल ईस्टेट, कांदीवली (वेस्ट) बम्बई
फैक्टरी : सहारनपुर (उ. प्र.)

इन्डाना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खबर

वो हैं कि रूठ के
गुमसुम से बने बैठे हैं,
शायद मेरे मरने की
खबर चौंका दे उन्हें.
–'अदा' देहलवी

वहां के बादशाह होते," प्रबंधक ने उत्तेजित हो कर कहा.

"खैर," मुहम्मद अली ने लापरवाही की मुद्रा में कहा, "इस वक्त तो हम उस बच्चे को देखने आए हैं, जिस का सौदा आप कर रहे थे."

"उस बच्चे के भविष्य के बीच में आ कर आप लोग केवल उस का सर्वनाश कर रहे हैं."

"यह आप का अपना खयाल है. हम एक हिंदुस्तानी बच्चे को इस तरह हरगिज नहीं बेचने दे सकते." मुहम्मद अली के स्वर में उग्रता थी.

"आप उसे पालने की जिम्मेदारी लेते हैं?" प्रबंधक ने पूछा.

"मैं?" मुहम्मद अली ने अचकचा कर कहा, "मैं क्यों पालूंगा? आप किस लिए हैं?"

"मैं एक संस्था हूं, मांबाप नहीं. आप बताइए पंडितजी, आप उसे मांबाप का प्यार दे कर एक सफल नागरिक बना सकते हैं?"

लगभग चीखते हुए मोहनदास ने कहा, "मैं क्यों पालूंगा? पता नहीं किस जाति का है? किस का पाप है? और क्या मेरे अपने बच्चे नहीं हैं?"

"तारासिंहजी, आप बोलिए, आप बच्चे को पालेंगे?" प्रबंधक ने चुनौती दी.

तारासिंह ने मूंछ मरोड़ते हुए कहा, "अजी, हमें मूर्ख समझ रखा है क्या हम बच्चा पालने आए हैं या आप की पोल खोलने आए हैं? जाने कितने बच्चों को विदेशों में बेच चुके हैं. हमें बताइए बच्चा कहां है?"

तारासिंह ने अचानक जैसे मार्गदर्शन कर दिया, मोहनदास ने उठ कर मेज पर घूंसा मारते हुए कहा, "बच्चा कहां है? उलटीसीधी बात कर के हमें झांसा मत दीजिए."

मुहम्मद अली ने छत की तरफ देखते हुए कहा, "या खुदा इतना घिनौना व्यापार करते हैं और हमें बेवकूफ बना रहे हैं? पहले बताइए, बच्चा कहां है?"

प्रबंधक ने देखा कि उन धर्म के ठेकेदारों से तर्क करने का कोई लाभ नहीं. उस ने उठते हुए कहा, "चलिए, आप को बता दूं. यह बच्चा बड़ा मासूम है. अभी दो साल का है. जब कोई इसे हमारे दरवाजे पर डाल गया था, उस समय कुछ दिन का ही था. इतना भोला है कि उस का नाम ही हम ने भोला रख दिया है. होशियार और तीव्र बुद्धि का है. बहुत जल्दी सीखता है. जो विदेशी दंपती आए हैं, वे इस से बहुत प्रभावित हुए थे. वे इसे परमाणु विज्ञान का विशेषज्ञ बनाना चाहते हैं. क्या आप में से कोई उसे 10 वीं कक्षा तक पढ़ाने की भी जिम्मेदारी ले सकता है?"

"फिर आप ने उलझाने वाली बातें करनी शुरू कर दीं?" मुहम्मद अली ने घुड़क कर कहा.

प्रबंधक ने कुछ नहीं कहा. फिर से अपनी कुरसी पर बैठ गया. घंटी बजाई. एक दाई ने आ कर प्रश्नसूचक दृष्टि से देखा.

"जाओ, भोला को ले कर आओ."

दाई, भोला को ले कर कमरे में छोड़ गई. छोटा सा बच्चा, लगभग दोढाई साल का सहमी दृष्टि से सब को देख रहा था. नादान, मासूम बिना मांबाप का.

अरिता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चॉकलेट अब एक नए रंग-रूप, नए स्वाद में!

दूधिया सफ़ेद चॉकलेट आज़माइए! स्वादभरा मज़ेदार फ़र्क पाइए. ऐसा लाजवाब स्वाद आपको और कहीं नहीं मिल सकता. कैम्पको व्हाइट क्रीमी चॉकलेट... चखकर देखिए, मान जाएंगे!!

भारत के सबसे बड़े सबसे आधुनिक प्लांट में निर्मित.

Campco

कैम्पको लिमिटेड
मैंगलोर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुहम्द अली ने देखते ही कहा, "यह तो मुसलमान का बच्चा लगता है. ठीक है, इसे मैं ले जाऊंगा. मसजिद में पड़ा रहेगा. खुदा की इबादत करेगा. इंशाअल्लाह, एक दिन इनसान भी बन जाएगा."

मोहनदास ने बच्चे को खींचते हुए कहा, "वाह मुल्लाजी, हिंदू बच्चे को मुसलमान बना रहे हो? देखा नहीं, इस के मस्तक पर दो लकीरें हैं? यह तो भगवान ने ही रामनामी टीका लगा दिया है, जिस से कोई इस का धर्म भ्रष्ट न कर सके. कोई बात नहीं, मंदिर में पड़ा रहेगा. मैं इसे संस्कृत पढ़ाऊंगा. भगवान ने चाहा तो मंदिर का पुजारी अवश्य बन जाएगा."

तारासिंह ने कृपाण निकालते हुए कहा, "यह सिख की औलाद है इस की नाम देखो, इस के नयननक्श देखो. वाहे गुरु, क्या कमाल है. खबरदार किसी ने इसे हाथ लगाया. गुरुद्वारे में लाखों लोग खा कर चले जाते हैं. भोला भूखा नहीं रहेगा. चल, पुत्तर."

प्रबंधक ने भोला को अपने पास खींच लिया. भोला उस से चिपट गया.

"क्षमा कीजिएगा. आप लोग भूल कर रहे हैं, मुझे मंदिर, मसजिद, गुरुद्वारे—इसे कहीं भी नहीं देना है. मैं केवल इस के लिए मांबाप ढूंढ़ रहा हूं. जो इसे वह प्यार व शिक्षा दे सके, जिस पर इस का अधिकार है और इसे मिलना चाहिए. मुझे केवल इस बात का उत्तर दीजिए कि आप में से कौन इस का मांबाप बनने की जिम्मेदारी उठा सकते हैं?"

तीनों मौन हो गए.

"जाइए, आप वापस उस बाहर खड़ी भीड़ के पास जाइए और उन से पूछिए कि कौन इस मासूम बच्चे को घर में रख कर मातापिता का प्यार दे सकता है?"

घूरते हुए मुहम्मद अली ने कहा, "यह हिंदुस्तानी बच्चा है. हिंदुस्तान में रहेगा. इस जमीन पर पैदा हुआ है और इसी जमीन पर मरेगा. कोई फिरंगी इस की मिट्टी खराब नहीं करेगा."

तारासिंह ने मूछ पर हाथ फेरते हुए कहा, "अभी गुरु का कमाल नहीं देखा है. जो मजहब में दखलअंदाजी करता है, वह नेस्तनाबूद हो जाता है."

मोहनदास ने उठते हुए कहा, "चलो भाइयो, हम लोग मिल कर एक नागरिक समिति का निर्माण करते हैं. हमें मिलजुल कर इस अनैतिक व्यापार को बंद करना होगा. जिस देश में बच्चों और लड़कियों का निर्यात किया जाता हो, वह देश रसातल में अवश्य जाएगा. वह संस्था बंद करानी होगी."

धमकी देते हुए सब चले गए. कुछ देर में भीड़ भी छंट गई. मजिस्ट्रेट भी चला गया और पुलिस भी.

शिशुभवन के आगे कई दिनों तक रोज कुछ लोग आ कर नारे लगाते रहे. "बच्चों का निर्यात बंद करो. बच्चों का व्यापार बंद करो."

तीनों प्रतिनिधि इस बात पर एकमत हो सके कि बच्चा किस धर्म का है. परंतु इस बात पर सहमत थे कि वह बाहर न जाए, चाहे उसे शिक्षा मिले या न मिले और उसे मांबाप का सरंक्षण और प्यार प्राप्त हो या न हो.

आखिर नागरिक समिति के लगातार तंग करने से वह संस्था बंद हो गई. सब लोग कहां चले गए, कुछ पता नहीं चला. हां, आज कई साल बाद शहर के चौराहे पर एक कोने में एक लड़का बैठता है, जो जूते चमकाता है. अपने लकड़ी के डब्बे पर ब्रुश मारमार कर आनेजाने वालों का ध्यान आकर्षित करता है. रोज उस के सामने से न जाने कितने मुहम्मद अली, मोहनदास और तारासिंह निकल जाते हैं, पर उसे कोई नहीं पहचानता.

पर वही भोला है, जिसे स्वीडन के जोड़े को गोद लेने से रोक दिया गया था और जिस में कभी हिंदू, मुसलमान व सिख तीनों धर्म सिमट आए थे, पर उन में से कोई भी उस का मांबाप नहीं बन सका था. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आखिर क्यों ज्यादा से ज्यादा लोग शादी-ब्याह के अवसर पर बीनाटोन क्वार्ट्ज टी.वी. ही उपहार में दे रहे हैं... ।

...सामंजस्य के लिए जिसकी गारंटी है।

अपने प्रिय से प्रिय व्यक्ति को दीजिए वह उपहार जो सर्वोत्तम हो। और अनूठे बीनाटोन क्वार्ट्ज टी वी से बेहतर उपहार भला क्या हो सकता है। रंगों की मोहकता तथा तस्वीर की स्पष्टता का बेमिसाल सामंजस्य और पिक्चर ट्यूब पर 3 साल की गारंटी भी। अपने निकटतम रंगीन/ब्लैक ऐण्ड व्हाइट टी वी के डीलर के यहां बीनाटोन के विविधतम मॉडलों को देखिए।

एक ऐसा उपहार जिसके लिए आप हमेशा याद किये जाएंगे।

बीनाटोन के सभी उत्पादनों को मास्टरकेयर का सहारा प्राप्त है जो बस एक फोन करते ही देशव्यापी बिक्री-बाद-सेवा प्रदान करते हैं।

Binatone

बनावट बेमिसाल, साथ निभाए सालोंसाल

बीनाटोन इलेक्ट्रॉनिक्स प्राइवेट लि. 23/4788-90 अंसारी रोड, दरियागंज, नयी दिल्ली-110002.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

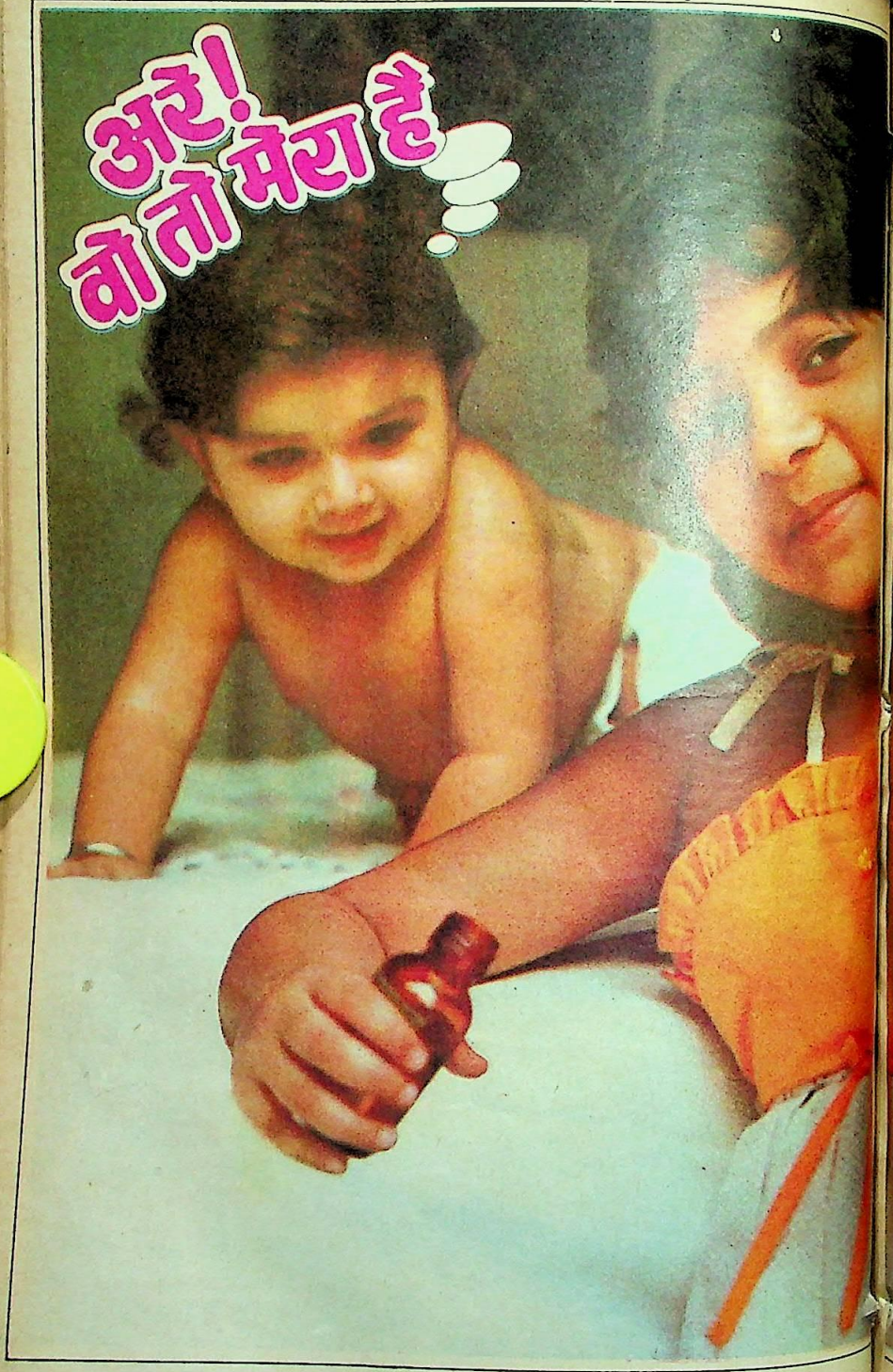

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हाँ, हाँ, तुम्हारा ही है!
लेकिन केयो-कार्पिन बेबी ऑयल
तुम्हारी बहन के लिये भी बहुत अच्छा है।"

विटामिन ए, डी और ई से समृद्ध केयो-कार्पिन बेबी ऑयल से अपने बच्चों की मालिश कीजिये—और देखिये वे कितने स्वस्थ और ताक़तवर हो उठते हैं।

केयो-कार्पिन बेबी ऑयल आपके बच्चों को रिकेट्स से बचाता है

केयो-कार्पिन बेबी ऑयल से रोज़ अपने बच्चों की मालिश कीजिये। विटामिन डी की कमी से हड्डी में होने वाली अस्वाभाविकताओं से यह आपके बच्चे की सुरक्षा करता है।

केयो-कार्पिन बेबी ऑयल विटामिन ई की कमी नहीं होने देता है

केयो-कार्पिन बेबी ऑयल की रोज़ाना मालिश से विटामिन ई कम होने की संभावना दूर हो जाती है और 'मस्क्युलर डिस्ट्रॉफी' जैसे रोग से सुरक्षा मिलती है।

केयो-कार्पिन बेबी ऑयल विटामिन ए का अभाव नहीं होने देता है

विटामिन ए का अभाव होने पर शिशुओं और बढ़ते हुए बच्चों, दोनों को विभिन्न प्रकार के त्वचा रोग हो जाते हैं। लेकिन नियमित रूप से केयो-कार्पिन बेबी ऑयल की मालिश आपके बच्चे को पर्याप्त विटामिन ए प्रदान करती है और इस तरह के त्वचा रोगों का इलाज करती है।

केयो-कार्पिन बेबी ऑयल में हैं नीम और चंदन के गुण

केयो-कार्पिन बेबी ऑयल नीम, चंदन और अन्य गुणकारी उपादानों से भरपूर होने के कारण शिशुओं और बढ़ते हुए बच्चों के लिये अपरिहार्य है।
आज ही एक शीशी खरीदिये और देखिये, आपका बच्चा सारे साल कितना स्वस्थ रहता है।

आपके बच्चे को चाहिये—
विटामिनयुक्त
मालिश

केयो-कार्पिन
बेबी ऑयल

Dey's®
दे'ज मेडिकल
की संभाल, आपका भरोसा

★ यह शृंगार सामग्री नहीं है।

DMB02

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

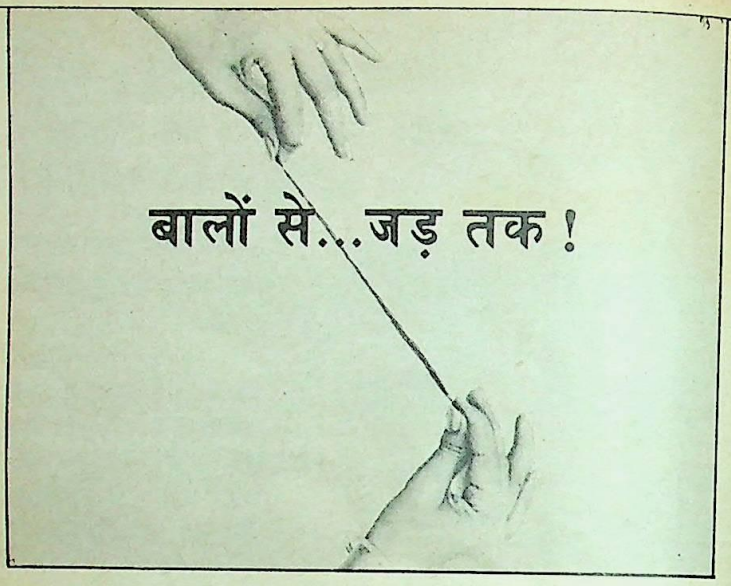

स्वस्थ बाल

सिर की त्वचा की भीतरी पर्तों के नीचे ग्रंथियों (ग्लैंडज़) में निर्मित तेल केशों का आहार है। जब कभी इस आहार में कमी होती है, तभी मुसीबत आती है। बाल बेहद रूखे, निस्तेज और बेजान नज़र आने लगते हैं। लम्बे बालों के सिरे फट जाते हैं। बालों को स्वस्थ और सतेज रखने के लिये मल्का क्लिओपेट्रा के ज़माने से 'कैंथारिस बीट्ल' का रस बड़ा उपयोगी माना गया है। इसीलिए आज भी बालों की जड़ो में हर रोज़ कैंथराइडिन की मालिश जादू-सा असर करती है और क्यूटिकल यानी बालों की ऊपरी पर्त को रेशम-सा मुलायम, और मज़बूत बनाती है। भीतरी तहों के 'कौर्टेक्स' में रगं-कोष की कमी भी पूरी कर देती है और बाल जल्दी सफेद भी नही होते।

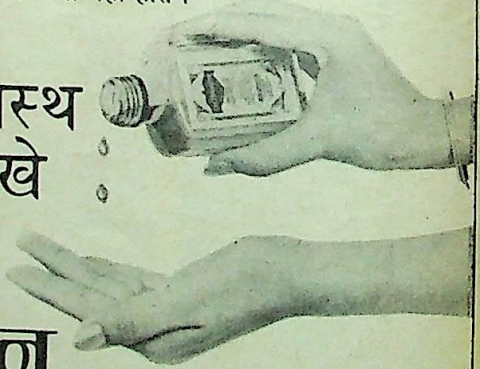

बालों का स्वास्थ
अटूट रखे
आज भी

कैंथराइडिन

हल्का, पतला तेल
चिपचिपाहट-मुक्त

हेयर ऑयल

बेंगॉल केमिकल
भारत सरकार संस्था

ARTIG 479

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रंग प्रीत का

रंग प्रीत का तुम न लगाते,
तो फागुन कोरा रह जाता.
रतनारी आंखों से छलके
रंग शबाबी हर पल,
उपवन की कलियों के देखो
अधर जवाबी हर पल,
श्याम रंग यदि तुम न चढ़ाते,
तो तनमन गोरा रह जाता.

आलिंगन करती आआ कर
मदमाती बहार फागुन की,
इंद्रधनुष बनबन कर निखरी
धूप वसंती हर आंगन की.
ऐसे में यदि तुम न आते,
तो फागुन कोरा रह जाता.

—चक्रधर शुक्ल

ARTIG 479

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

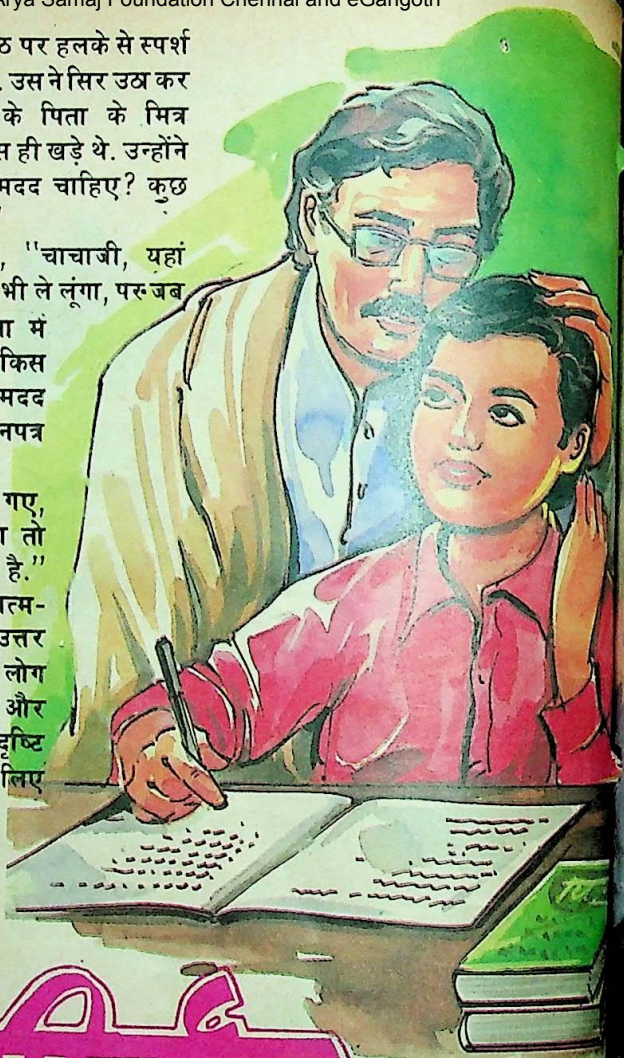

आशीर्वाद

कहानी • 'मयंक

नकुल ने अपनी पीठ पर हलके से स्पर्श का अनुभव किया. उस ने सिर उठा कर देखा तो उस के पिता के मित्र अध्यापक उदयभानु पास ही खड़े थे. उन्होंने धीमे से पूछा, "कुछ मदद चाहिए? कुछ पूछना हो तो पूछ लो."

मुसकराया नकुल, "चाचाजी, यहां आप से पूछ लूंगा, मदद भी ले लूंगा, परंतु जब प्रतियोगिता की परीक्षा में शामिल होऊंगा तो वहां किस से पूछूंगा? किस से मदद लूंगा? वैसे चाचाजी, प्रश्नपत्र सरल है."

उदयभानु चकरा से गए, "सरल है? अन्य लोग तो कहते हैं कि कठिन है."

नकुल ने पूरे आत्म-विश्वास से उत्तर दिया, "चाचाजी, जो लोग साल भर पाठ्य पुस्तकों और पाठ्य सामग्री की ओर दृष्टि ही नहीं डालेंगे, उन के लिए सरल प्रश्नपत्र भी कठिन होता है."

उदयभानु के चेहरे से लगा कि नकुल के उस वाक्य ने उन के दिल में एक स्नेहिल वात्सल्य सा भर दिया. नकुल के पिता उन के परिचित थे. चाहे जैसा अध्यापक हो, चाहे जैसी भावनाएं हों, पर प्रतिभाशाली एवं विनम्र छात्र के लिए उस के हृदय में एक विशेष स्थान होता ही है.

परीक्षा केंद्र पर हाई स्कूल एवं इंटर की परीक्षाएं चल रही थीं. छात्र छात्राओं के पास लिखे हुए परचे (कारतूस) थे. कुछ छात्र तो अपने वस्त्रों पर ही उत्तर लिख लाए थे. छात्राएं भी पीछे नहीं थीं. उन की शलवार और दुपट्टों पर संभावित प्रश्नों के उत्तर लिखे थे.

कक्ष निरीक्षक सजग थे, पर लाचार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परीक्षक ने परीक्षार्थी नकुल पर नकल का आरोप लगाते हुए उस की उत्तर पुस्तिका छीन ली. लेकिन नकुल ने अपने लिए जिस सजा की मांग की, उसे सुन कर परीक्षक विस्मित रह गए, साथ ही उन के मुंह से आशीर्वाद के असंख्य बोल फूट पड़े.

थे. कक्ष में अधिकांश परीक्षार्थी तो ऐसे थे जो जम कर नकल कर रहे थे. अधिकांश के पिता प्रभावशाली थें, जैसे भी हो बेटा उत्तीर्ण होना चाहिए.

नकुल हाई स्कूल की परीक्षा विज्ञान के छात्र के रूप में दे रहा था. एक वही छात्र ऐसा था जो प्रश्नपत्र पा कर उसे पढ़ता था. फिर तेजी से उत्तर पुस्तिका पर लिखना शुरू कर देता था. वह सिर उठा कर भी इधरउधर नहीं देखता था.

परीक्षा शुरू हुए ढाई घंटे बीत चुके थे. प्रश्नपत्र हल कर के नकुल उत्तर पुस्तिका को दोहराने लगा. उस के पिता ने सिखाया था कि एक बार हल लिखने के बाद उन्हें

"तुम चूक गए तो बहाना गढ़ रहे हो." यह कह कर उपनिरीक्षक ने नकुल से उत्तर पुस्तिका ले ली.

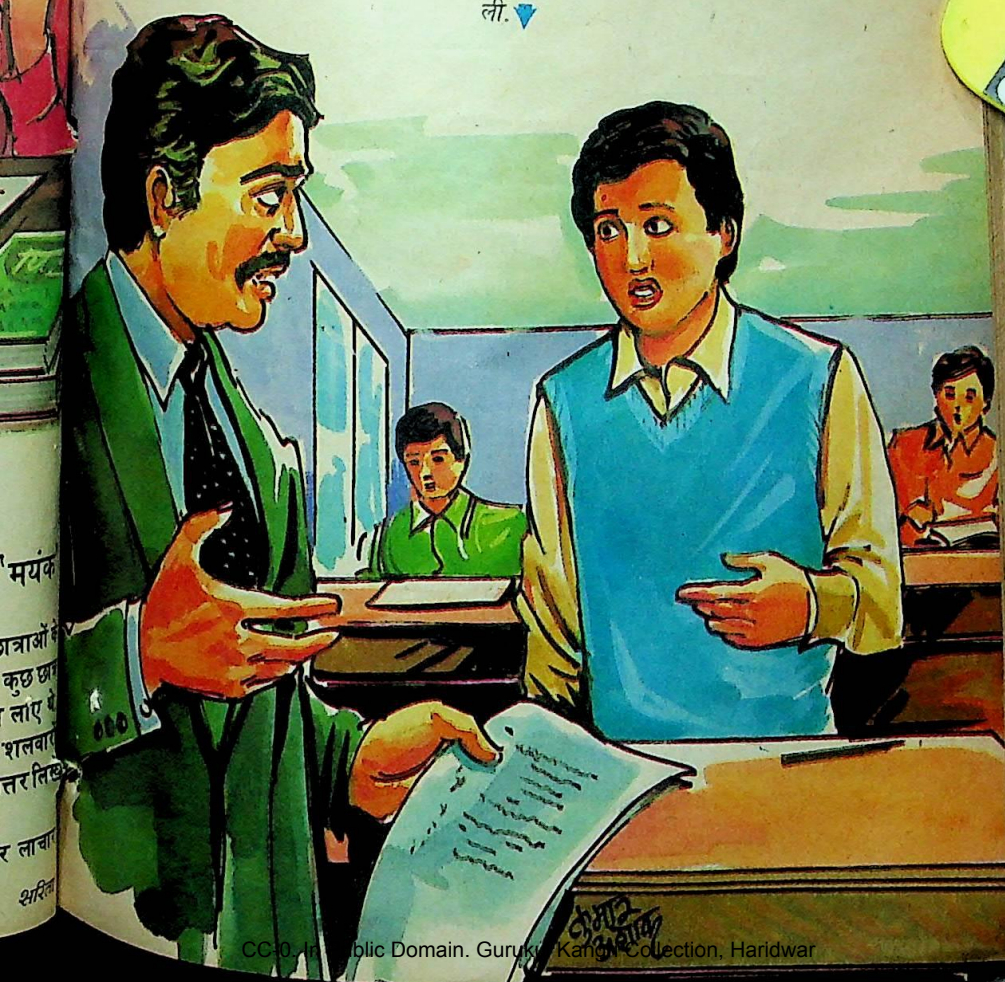

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

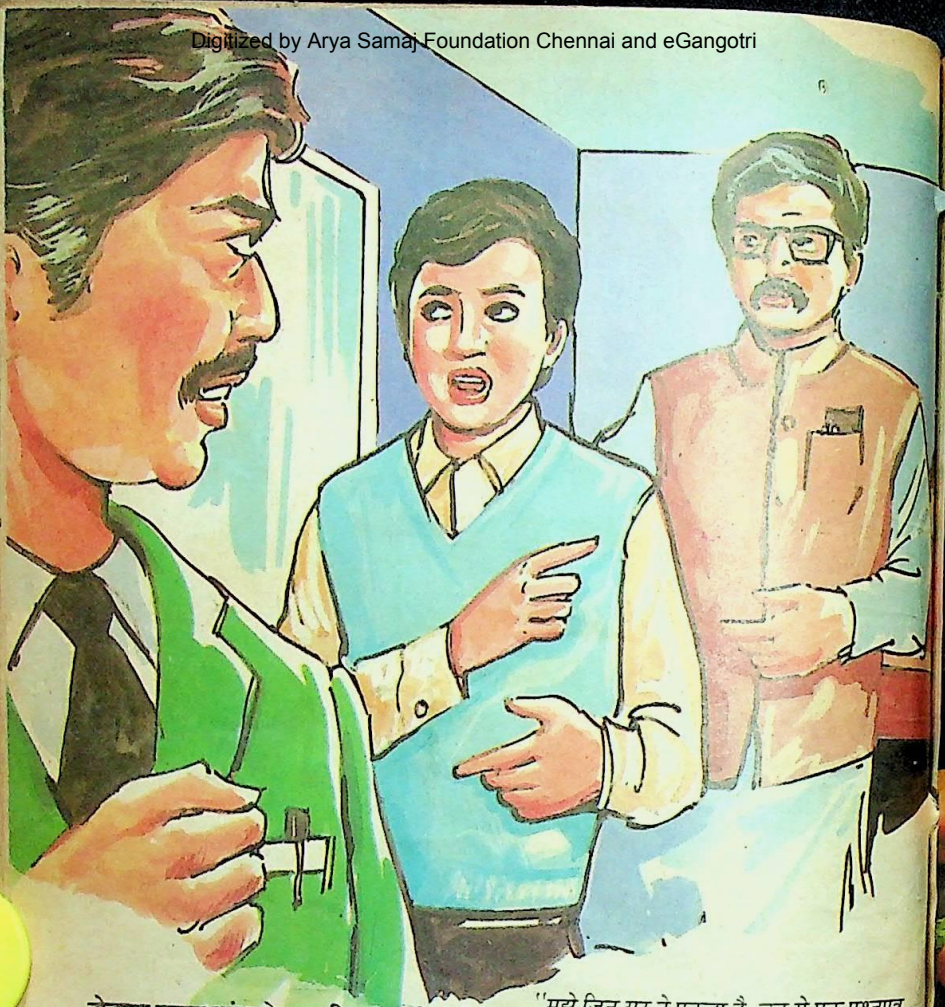

दोबारा जरूर जांच लेना चाहिए. कभीकभी जल्दबाजी में छूटा हुआ एक शब्द, एक अक्षर अर्थ का अनर्थ कर देता है.

एकाएक कक्ष में उथलपुथल सी मच गई. किताबें, कुंजियां, कागज के परचे इधरउधर फेंके जाने लगे. अधिकांश चीजें खुली खिड़की के बाहर चली गईं. स्कूल के दोनों चपरासी सजग थे. वे फेंकी गई पुस्तकों, पुरजों और कापियों आदि को एकत्र कर लेते थे. परीक्षा के उपरांत बेकार समझ कर छोड़ दी गई पुस्तकों को भी उठा लेते थे. फिर हर दूसरे दिन एक बोरा रद्दी का बेच देते थे.

शोर बिलकुल न हुआ. पर नकल के लगभग तमाम साधन परीक्षा कक्ष के बाहर पहुंच गए. चल निरीक्षक दल के निरीक्षक कक्ष के अंदर आ गए. लाख सावधानी बरतने के बावजूद नकल करने वालों को उन के आगमन की सूचना मिल ही जाती थी और वे उस का लाभ उठा लेते थे.

"मुझे जिन सर ने पकड़ा है, उन से एक प्रश्नपत्र इसी विषय का बनवा दीजिए, आप के सामने बैठ कर हल कर दूं तो मुझे निर्दोष समझ लीजिए." नकुल ने जगमोहननाथ जी से कहा.

एक परीक्षार्थी ने परचा फेंका तो वह खिड़की के बाहर न जा कर नकुल के पास ही आ गिरा. चूंकि उस की डेस्क जहां थी, उसी के पास ही खिड़की थी, इसलिए उक्त परचा बाहर जाने के बजाए उस की डेस्क के नीचे आ गिरा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

याद

तनहाई के आलम में जब भी
वक्त पुराना याद आया,
कुछ तेरी कहानी याद आई
कुछ अपना फसाना याद आया.

—विक्की नागर

नकुल उत्तरपुस्तिका के संशोधन में व्यस्त था. उस ने उधर ध्यान ही नहीं दिया. 'जब चोरी करना नहीं, तब डरना क्या' के सिद्धांत वाली उस की भावना थी. वह जवाबों को दोहराने में जुटा रहा.

चल दल के साथ आए एक निरीक्षक ने उक्त परचा उठा लिया. उसे देखा और नकुल से बोला, "नकल कर रहे थे?"

इस बीच केंद्र व्यवस्थापक और कक्ष निरीक्षक उदयभानु पास आ गए. वह बोले, "यह लड़का नकल नहीं कर सकता."

चल दल के साथ आए शिक्षा उपनिरीक्षक को उदयभानु का हस्तक्षेप करना बुरा लगा. वह अपनी बात रखने के लिए अड़ गए, "यह मैं नहीं जानता. यह कागज का परचा इस की मेज के नीचे ही मिला है."

नकुल संभला. उस झूठे आरोप का उत्तर दिया उस ने, "खिड़की मेरे हाथ के पास है. अगर नकल करता होता तो मैं भी हाथ बढ़ा कर बाहर फेंक देता."

उपनिरीक्षक महेंद्र ने सपाट उत्तर दिया, "तुम चूक गए तो बहाना गढ़ रहे हो. उठो, उत्तर पुस्तिका मुझे दो."

नकुल अपने निर्दोष होने की सफाई देता रहा, पर उसे पकड़ने वाले महेंद्र साहब उस पर उसी प्रकार आरोप लगा रहे थे जैसे कोई पुलिस का थानेदार किसी अपराध की छानबीन में जुटा हो.

चूंकि केंद्र व्यवस्थापक एवं उदयभानु की सहानुभूति नकुल के साथ थी, इसलिए महेंद्र उत्तर पुस्तिका पर कुछ लिख न सके. मामला चल दल के मुख्य अधिकारी के पास पहुंचा. उन्होंने सारी बातें सुनीं. वह अपने सहायक महेंद्र के तर्कों को झुठला नहीं पाए. केंद्र व्यवस्थापक एवं उदयभानु किंकर्तव्य-विमूढ़ हो गए. उन की निगाहों के सामने एक निर्दोष पर दोष मढ़ा जा रहा था. दूसरे की गलती और अपराध को उस पर आरोपित किया जा रहा था. बिना अपराध के दंड मिलने की संभावना हो गई थी. उन्होंने लिखाई न मिलने के तर्क तक को अस्वीकार कर दिया. उन का तर्क था कि अकसर नकल करने वाले छात्र ऐसे परचे दूसरों से लिखवा कर लाते हैं, ताकि पकड़े जाने पर खुद को निर्दोष सिद्ध कर सकें.

नकुल ने पूरे आत्मविश्वास के साथ सिर उठाया, "महोदय, आप सफाई का सिर्फ एक मौका मुझे दे दें. मैं सफल न होऊं तो जो दंड आप देंगे, मुझे स्वीकार होगा."

मुख्य अधिकारी जगमोहननाथ काफी दिनों तक अध्यापक रहे थे और पदोन्नति पा कर जिला विद्यालय निरीक्षक हुए थे. उन्हें छात्रों से विशेष लगाव था. वह कुछ पसीज गए. उन्हें लगा कि नकुल को मौका दिया जाना चाहिए. उन के मन में यह विचार आया कि अगर इस स्थान पर उन का पुत्र होता तो. वह बोले, "बताओ, क्या सफाई देना चाहते हो?"

नकुल ने उत्तर दिया, "मुझे जिन सर ने पकड़ा है, उन से एक प्रश्नपत्र इसी विषय का बनवा दीजिए. आप के सामने बैठ कर हल कर दूं तो मुझे दोषहीन समझ लीजिए. अगर न कर पाऊं तो जो मन चाहे दंड दीजिए."

नकुल पर आरोप लगाने वाले महेंद्र साहब भी चकरा गए. नकुल के आत्म-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वो बातें, वो मुलाकातें!

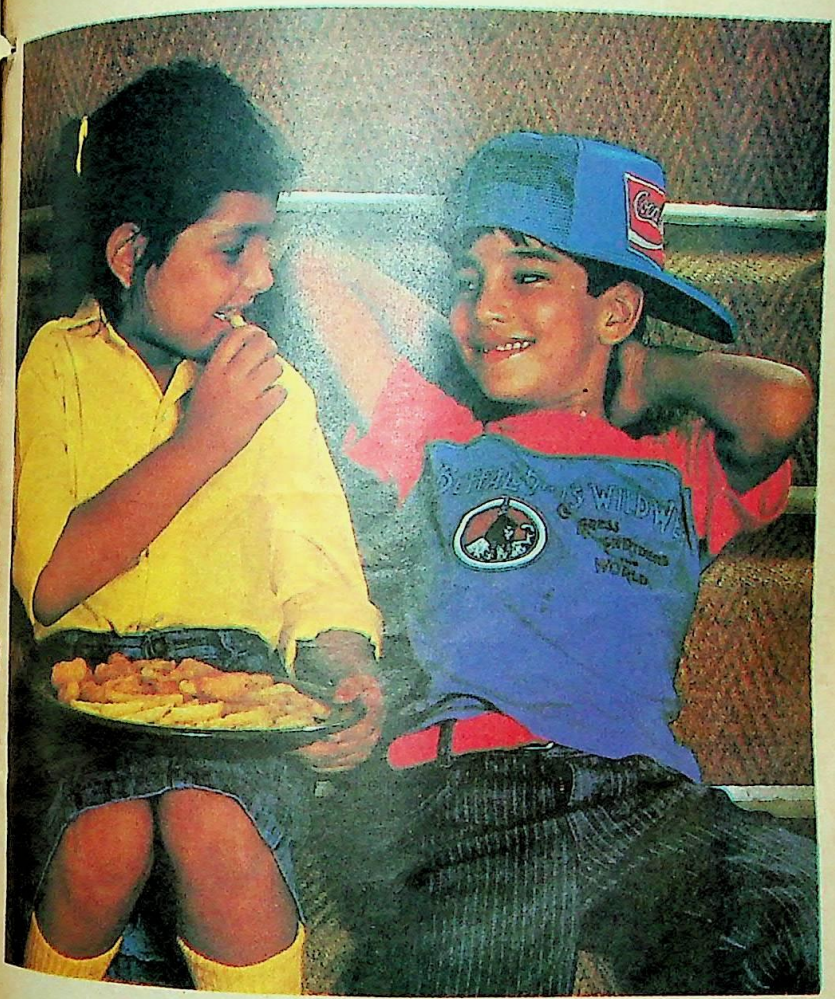

.....और पोटेटोज़

अब गर्मागर्म फ्रेंच फ्राइज़ क्रोकेट्स्
और पैटीज़, चुटकी बजाते तैयार।

बस तलने के लिए तैयार,
पोटेटोज़ को 'फ्रीज़र' से निकालिए
और गर्म तेल में चन्द मिनट तलिए,
या फिर अपने ग्रिलर में ग्रिल कीजिए।
गर्मागर्म परोसिए, चटनी के साथ।
एक बार चखकर तो देखिए
—आपका मन मोह लेंगे ये पोटेटोज़!

पहले से पके। स्वादिष्ट। फौरन तैयार।
फ्रेंच फ्राइज़ • क्रोकेट्स् • पैटीज़

इधर चाहा, उधर तैयार!

Shems/4712

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्वास के सामने उन के तर्क बौने पड़ने लगे.

उस दिन जीव विज्ञान का प्रश्नपत्र था. मुख्य अधिकारी जीव विज्ञान के ही प्रवक्ता रहे थे.

उन्हें नकुल की बात पंसद आई. महेंद्र साहब भी इनसान थे. नकुल से उन की कोई व्यक्तिगत लागडाट तो थी नहीं.

मुख्य अधिकारी जगमोहननाथ ने कागज पर पांच प्रश्न लिख दिए. उसे नकुल को दे कर एक उत्तर पुस्तिका दिला दी. आदेश दिया, "इन में से किन्हीं दो का उत्तर लिख डालो."

नकुल उन्हीं के सामने बैठ गया. 15 मिनट में उस ने दो प्रश्न हल कर के उत्तर पुस्तिका प्रस्तुत कर दी.

जगमोहननाथ ने उत्तर पुस्तिका देखी. खुशी उन के चेहरे से फूट पड़ी. बोले, "महेंद्रजी, यह छात्र अपनी इस सफाई की परीक्षा में शतप्रतिशत सफल रहा. दोनों प्रश्नों के उत्तर इतने सटीक हैं कि प्रथम श्रेणी के ऊपर अंक मिलेंगे. ऐसे छात्र को नकल करने की क्या जरूरत है. जरूर गलतफहमी हुई है. यह बच्चा सही है."

महेंद्र भी गदगद हो उठे, "मुझे किसी बच्चे से बैर थोड़े ही है. इस बच्चे के आत्मविश्वास ने मुझे एक बहुत बड़े अन्याय से बचा लिया."

उदयभानु बोल पड़े, "मैं ने इस से पूछा था, कोई मदद चाहिए तो इस ने उत्तर दिया था कि यहां मुझ से पूछ लेगा, किसी की मदद भी ले लेगा, पर प्रतियोगिताओं की परीक्षाओं में कौन इस की मदद करेगा?"

जगमोहननाथ गदगद हो गए, "शाबाश बेटे, तुम आरोप मुक्त हो. मैं तुम्हें आशीर्वाद देता हूं कि जिस प्रतियोगिता में बैठोगे, सफल रहोगे."

महेंद्र ने बड़े स्नेह से नकुल की पीठ थपथपाई, "बेटे, मुझे अपनी गलती का एहसास हो गया है. मैं दिल से आशीर्वाद देता हूं कि तुम जीवन के हर क्षेत्र में सफल रहो."

"आप के राज्य में सूखा है तो आप सूखा रंग लगा दो. हमारे राज्य में तो भयंकर बाढ़ आई थी."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आप का पर्स

भानुमती का पिटारा

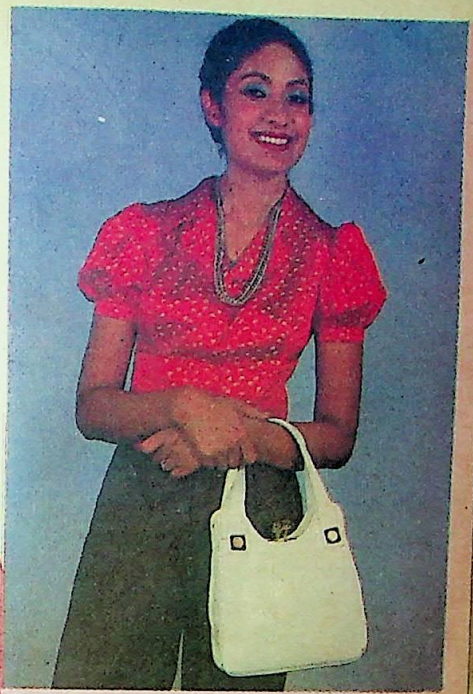

हैंडबैग का चुनाव अपनी आवश्यकता और व्यवसाय के अनुरूप करें.

बारिश के मौसम में छतरी हैंडबैग में सबसे ऊपर होनी चाहिए, ताकि जरूरत पड़ने पर फौरन निकाली जा सके.

लेख • शम्मी टंडन

कल जब मैं सब्जी खरीदने गई तो एक और महिला भी साथ थीं. उन्होंने सब्जी खरीदने के बाद जब पैसे देने के लिए पर्स खोला तो पैसे नहीं मिल पाए. काफी कोशिश की, लेकिन वह ढूंढ़ ही नहीं पा रही थीं. हार कर उन्हें अपने पर्स का सब सामान उलटना पड़ा, तब कहीं जा कर पैसों के दर्शन हुए. इस खोजबीन में समय तो बरबाद हुआ ही, साथ ही सब का ध्यान भी उन की ओर आकर्षित हो गया.

आजकल पर्स का प्रचलन बहुत अधिक हो गया है. यदि आप सब्जी खरीदने जा रही हैं तो हाथ में टोकरी या प्लास्टिक बैग होना आवश्यक है, उसी प्रकार पर्स के बिना तो अब घर से बाहर निकला ही नहीं जा सकता है.

पर्स (जिसे पहले बटुआ कहा जाता था) के संबंध में यह आम धारणा पाई जाती थी कि यह एक ऐसी थैली है जिस में पैसे रखे जाते हैं. किंतु अब पर्स ने काफी विस्तृत रूप धारण कर लिया है. अब तो यह एक ऐसा हैंडबैग बन गया है, जिस में पैसों के साथसाथ मेकअप का सामान, कांपेक्ट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिपस्टिक, कंघा, साथ ही डायरी, पेन आदि भी रखे जाते हैं.

जहां पहले यह माना जाता था कि पर्स सिर्फ उच्च वर्ग की फैशन करने वाली महिलाएं ही रखती हैं, वहां अब ऐसा नहीं है. आजकल घरेलू महिलाएं हों या नौकरीपेशा, सभी पर्स रखती हैं. यहां तक कि कालिजस्कूल में जाने वाली लड़कियां भी पर्स या हैंडबैग साथ रखती हैं.

लेकिन पर्स लेने का सलीका सब में नहीं होता. अकसर देखा जाता है कि पर्स या तो आवश्यकता से अधिक भरा होता है या फिर खाली होता है. किसी की सिलाई निकली होती है तो किसी पर्स पर मैल जमा होता है. यह सब न केवल भद्दा लगता है, बल्कि आप की लापरवाही का भी सुबूत देता है. इसलिए यह जरूरी है कि पर्स को सही रूप से प्रयोग करें.

पर्स खरीदते वक्त कुछ बातों का ध्यान रखना जरूरी है, ताकि सही पर्स चुना जा सके. इस के लिए तीन बातें याद रखनी चाहिए :

सामग्री : आम तौर पर पर्स तीन प्रकार की वस्तुओं से बनते हैं. चमड़ा, रैक्सीन और कपड़ा. इन में सब से ज्यादा टिकाऊ पर्स चमड़े के होते हैं, पर उन की कीमत काफी ज्यादा होती है. यह कीमत जानवर की खाल के ऊपर निर्भर करती है. उदाहरण के लिए सांप के चमड़े के पर्स बहुत महंगे होते हैं.

आजकल पर्स केवल फैशन ही नहीं, आवश्यकता भी है. इसलिए ध्यान दीजिए कि पर्स कैसा खरीदा जाए और बाद में उस का उपयोग किस प्रकार किया जाए, जिस से वह अधिक समय तक आकर्षक व टिकाऊ बना रह सके.

यही कारण है कि बाजार में रैक्सीन के पर्स ही अधिक मिलते हैं क्योंकि वे सब के बजट में समा जाते हैं.

कपड़े के पर्स या बैग, भले ही वेलवेट के हों या खद्दर के, अपेक्षाकृत कम टिकाऊ होते हैं क्योंकि उन पर गंदगी ज्यादा चमकती है, धूल भी अधिक जमती है. अब यदि उन्हें सफाई के लिए बारबार धोया जाए तो वे खराब भी हो सकते हैं.

इसलिए रोजमर्रा के प्रयोग के लिए चमड़े या रैक्सीन के पर्स खरीदने चाहिए. हां, विशेष अवसरों के लिए सुनहरे, रुपहले फैंसी पर्स भी खरीदे जा सकते हैं.

गुंजाइश : पर्स का चुनाव अपने व्यवसाय या आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए करना चाहिए, ताकि आप सही आकार का पर्स ले सकें. उदाहरण के लिए यदि आप नौकरीपेशा हैं तो बड़े आकार का ऐसा पर्स लें, जिस में टिफिन, कागज, पैसे, मेकअप का थोड़ा बहुत सामान ठीक तरह आ जाए. यदि आप कालिज में पढ़ने जाती हैं तो भी बड़े आकार का हैंडबैग लें, जिस में टिफिन, कागजात, पैसे के साथसाथ किताबें भी आ जाएं. यदि आप का बच्चा छोटा है तो बच्चे के दूध की बोतल, निपल, नैपीज, बिब आदिआदि के लिए अतिरिक्त जगह चाहिए. इसलिए बड़े आकार का बैग ठीक रहेगा.

लेकिन अगर आप सिर्फ खरीदारी के लिए जाती हैं तो छोटा पर्स भी चलेगा क्योंकि आप को उस में सिर्फ पैसे, रूमाल आदि ही रखने हैं.

पार्टी में जाने के लिए फैंसी पर्स भी लिए जा सकते हैं. लेकिन उन में भी दो खाने तो होने ही चाहिएं, ताकि मेकअप का सामान आदि ठीक तरह से रखा जा सके.

अवस्था : पर्स खरीदते वक्त उस की अवस्था का भी ध्यान रखना जरूरी है यानी सिलाई आदि उधड़ी हुई न हो, कोई दागधब्बा न हो. जिप की अच्छी तरह परख कर लें क्योंकि कई दुकानदार सस्ती जिप लगा देते हैं, जो ठीक तरह से बंद नहीं होती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कभीकभी पार्टियों में फैंसी पर्स ले जाना आप के गौरव को बढ़ा सकता है.

और अटकती रहती है. ऐसी जिप खराब हो जाती है. इसलिए पर्स खरीदते वक्त जिप को तीनचार बार खोलें, बंद करें. यदि जिप बीच में अटकती हो तो न लें.

पर्स खरीदते वक्त रंग का भी ध्यान रखें क्योंकि हलके रंग के पर्स जल्दी मैले हो जाते हैं, जबकि काले या गहरे भूरे रंग के पर्स जल्दी खराब नहीं होते हैं. इसलिए रोजमर्रा के प्रयोग के लिए क्रीम, सफेद जैसे हलके रंग के पर्स न खरीदें.

पर्स को व्यवस्थित रखें

कुछ महिलाएं पर्स खरीदने में तो काफी पैसा खर्च करती हैं, पर उन्हें उस के रखरखाव की जरा परवाह नहीं होती है. सफाई की बात तो दूर है, वे तो पर्स को व्यवस्थित भी नहीं रखती हैं. भानुमती के पिटारे की तरह वे पर्स में सारा सामान जैसे नैपकिन, कंघा, डायरी, बच्चे का सामान, पत्रपत्रिकाएं आदि इस तरह बेतरतीबी से ठूंस लेती हैं कि आवश्यकता पड़ने पर उन्हें एक चीज निकालने के लिए पूरा पर्स उलटना पड़ता है, तब कहीं जा कर कुछ मिल पाता है.

कई बार देखा जाता है कि महिलाओं के पास रेजगारी होती तो है, पर वे उस का उपयोग नहीं कर पाती हैं क्योंकि वह नोटों के नीचे दबी होती है. यदि वे बस में सफर कर रही हैं तो वे कंडक्टर को नोट थमा देती हैं. यदि कंडक्टर रेजगारी के लिए जिद करे तो उन्हें पर्स का सारा सामान उलटना पड़ता है, तब कहीं जा कर 50 पैसे के सिक्के के दर्शन होते हैं.

इस का परिणाम यह होता है कि चोरउचक्कों की निगाह नोटों पर पड़ती है और वे इस तरह स्वयं अपने लिए खतरा मोल ले लेती हैं. इसलिए इस आदत से बचने की कोशिश कीजिए. यदि आप अपने कपड़े रखने की अलमारी को संवारने के लिए यानी पेटीकोट, ब्लाउज, साड़ियां आदि ठीक तरह अलगअलग रखने के लिए एक घंटे का समय दे सकती हैं तो पर्स का सामान ठीक तरह रखने के लिए कम से कम पांच मिनट तो लगाइए. इस प्रकार आप का जो वक्त सामान ढूंढ़ने में बरबाद होगा, वह बच जाएगा.

खरीदते वक्त ध्यान रखें

आप को जिस वस्तु की आवश्यकता अधिक पड़ती है, उसे ऊपर रखें. उदाहरण के लिए यदि बस में जाना है तो पैसे, यदि बच्चे के साथ हैं तो नैपकिन ऊपर रखें. यदि गरमी में जा रही हैं तो धूप का चश्मा व रूमाल ऊपर हो और यदि बारिश का मौसम हो तो छतरी आप के हैंडबैग में सब से ऊपर रखी होनी चाहिए, ताकि आवश्यकता पड़ने पर फौरन निकाली जा सके.

पैसों के लिए एक छोटा पर्स रखना ठीक रहता है, ताकि पैसे ढूंढ़ने में मुशकिल न हो. इस में भी यदि छोटेछोटे खाने हों तो ठीक रहता है, ताकि रेजगारी अलग, छोटे नोट अलग और बड़े नोट अलग रखे जा सकें.

पिन क्लिप जैसी छोटी वस्तुएं किसी अलग डब्बी में रखना ठीक होगा. उसी प्रकार खाद्य पदार्थ किसी प्लास्टिक की थैली में रखें, ताकि पर्स या उस में रखी चीजें खराब न हों. चाबियां सेफ्टीपिन के द्वारा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टांकना इसलिए ठीक रहता है क्योंकि वे आसानी से मिल जाती हैं.

पर्स की सफाई भी जरूरी है

आप का पर्स भले ही किसी भी वस्तु का बना हो और कितनी भी कीमत का हो, उस की सफाई करना जरूरी है क्योंकि सफाई के द्वारा न केवल वह अधिक अच्छा लगेगा, बल्कि उस की उम्र भी बढ़ जाएगी. इसलिए पर्स की सफाई भी करती रहें.

चमड़े या रैक्सीन के पर्स को यदि रोज मलमल कर सूखे कपड़े से पोंछती रहें तो उस पर मिट्टी नहीं जमेगी. पर यदि कोई दाग, धब्बा या मैल जम गया है तो साबुन का एक पतला घोल बनाइए. एक अलग बरतन में साफ पानी लीजिए. अब मलमल के कपड़े को पहले साबुन में डुबो कर पर्स को पोंछिए, फिर साफ पानी में मलमल भिगो कर पोंछिए और अंत में सूखे कपड़े से पोंछिए. पर्स चमक उठेगा. मलमल का कपड़ा इसलिए प्रयोग करना चाहिए क्योंकि वह मुलायम होता है और उस से कोई खरोच नहीं आती.

यदि कपड़े का हैंडबैग है तो उसे आम कपड़ों की तरह धोया जा सकता है. यदि पर्स बहुत कीमती है और आप उसे घर में साफ करने का ख़तरा मोल लेना नहीं चाहती हैं तो किसी ड्राइक्लीनर से साफ करा लें.

यदि आप का पर्स सुनहरा, रुपहला या अधिक कीमती है तो उसे प्रयोग के बाद प्लास्टिक की थैली में बंद कर के रख दें, ताकि उस पर धूल न जमे.

यदि आप के पर्स में हैंडल लगा है तो हैंडल की सफाई का भी ध्यान रखें. हैंडल दो प्रकार के होते हैं. प्लास्टिक के और धातु के. प्लास्टिक का हैंडल तो गीले कपड़े से ही साफ हो जाएगा.

धातु के हैंडल की चमक बनाए रखने के लिए यह नुसखा अपनाइए. सादे रंग की नेलपालिश की एक तह हैंडिल पर जमाइए. हैंडल चमचमाता रहेगा.

अकसर अखबारों में आता है कि गुंडे फलां युवती का पर्स छीन कर भाग गए. इस में सिर्फ गुंडों का हाथ नहीं है, बल्कि दोषी पर्स ले कर जाने वाली भी है, क्योंकि उसे पर्स संभालने का सही तरीका नहीं आता है.

यदि आप पर्स ले कर जा रही हैं और सुरक्षा चाहती हैं तो निम्नलिखित बातों का ध्यान रखें, ताकि आप पर आंच न आए :

पर्स और सुरक्षा

यदि आप बस में सफर कर रही हैं और आप को खड़े हो कर सफर करना हो या भीड़भाड़ के इलाके में जाना हो तो तनी वाला हैंडबैग प्रयोग करें. ऐसे अवसर पर यदि आप बगल में दबने वाला पर्स उठाएंगी तो वह कब खिंच जाएगा, आप को पता भी नहीं चलेगा. लेकिन यदि किसी कारण आप हैंडबैग नहीं उठाना चाहती हैं तो दूसरे पर्स को बगल में दबा कर न चलें, बल्कि हाथ में पकड़े रहें. इस प्रकार पर्स आप की पकड़ में रहेगा. कोई उसे छीन नहीं सकेगा.

अधिक पैसे ले कर न चलें. पर यदि आप को कभी अधिक नोट ले कर जाने ही हों तो बड़े नोट पर्स की अंदरूनी जेब में रखें, ताकि वे सब की नजरों में न आएं.

यदि आप बहुत छोटा पर्स प्रयोग करती हैं तो उसे अपनी चोली में न रखें, जैसा आमतौर पर महिलाएं करती हैं. जब महिलाओं का हाथ पैसे निकालने के लिए चोली के अंदर जाता है तो आसपास के लोगों का ध्यान उन की तरफ आकर्षित हो जाता है. यह स्थिति न केवल हास्यास्पद होती है, बल्कि गुंडों को भी आप की ओर आकर्षित कर सकती है. इसलिए चोली में कुछ न रखें. पर्स हाथ में ही पकड़ें.

यदि आप सुनसान इलाके से जाती हैं तो पर्स में थोड़ी सी लाल मिर्च भी रखें, ताकि यदि गुंडे पीछे पड़ जाएं तो आप चकमा दे कर उन की आंखों में मिर्च डाल दें और भाग खड़ी हों.

यदि आप उपर्युक्त बातों का ध्यान रखती हैं तो आप के पर्स में भले ही कितने नोट हों, आप को कोई खतरा नहीं होगा.●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

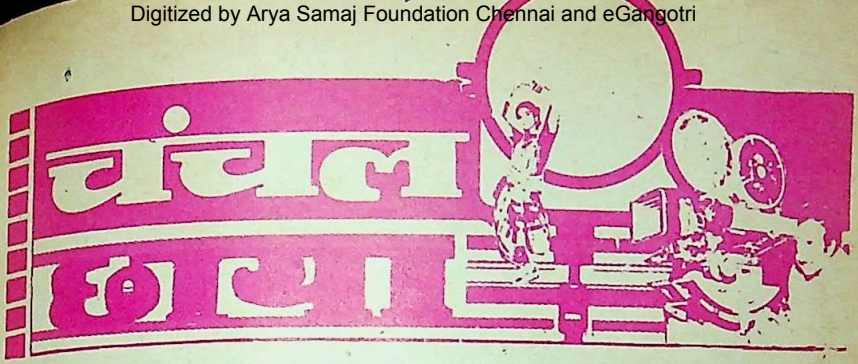

★★★★अति उत्तम ★★★ उत्तम ★★ मध्यम ★ साधारण ○ बेकार

★ भवानी जंक्शन

निर्माता: दीपक शिवदासानी
निर्देशक: दिनेश
संगीत: जैनेंद्र जैन
मुख्य कलाकार: शशि कपूर, शत्रुघ्न सिन्हा, जीनत अमान, रति अग्निहोत्री, प्रेम चोपड़ा, शरत सक्सेना, देवन वर्मा, मजहर खान और महेश आनंद.

फिल्म 'भवानी जंक्शन' दो बड़े आदमियों के बीच घिरी जंग पर आधारित है. एक रियासत का राजा है तो दूसरा सुपरिंटेंडेंट पुलिस. कहानी की दृष्टि से काफी लचर होते हुए भी इस फिल्म की यह जंग कुछ हद तक दर्शकों को बांधे रखने में सफल रहती है.

पुलिस सुपरिंटेंडेंट राम (शत्रुघ्न सिन्हा) की पत्नी शकुन (रति अग्निहोत्री) के साथ बलात्कार होता है, फलस्वरूप वह आत्महत्या कर लेती है. बलात्कारियों द्वारा छोड़े गए सुबूत के बल पर राम नेपाल स्थित भवानी जंक्शन पहुंचता है. भवानी जंक्शन का राजा भवानीप्रताप राम का आदरसत्कार करता है और बलात्कारियों को ढूंढ़ने में उस की मदद करता है, लेकिन जब उसे मालूम पड़ता है कि वह कुकृत्य उस के बेटे रिक्की (मजहर खान) और उस के दोस्त ने किया है तो सवाल इज्जत का बन जाता है. वह अपने बेटे को गिरफ्तार होने नहीं देना चाहता. उधर राम रिक्की को हथकड़ी पहना कर ले जाना चाहता है. दोनों में घमासान लड़ाई होती है. राम की मदद करती है नाचने वाली रेशमा (जीनत अमान). अंततः राम की गोली भवानी प्रताप को लगती है और जंग खत्म हो जाती है. भवानीप्रताप राम को कहता है कि रिक्की को अपने देश ले जा कर कानून के हवाले कर दो.

जैनेंद्र जैन द्वारा लिखी फिल्म की कहानी में बिलकुल भी दम नहीं है. कहानी के शुरू का भाग काफी बोरियत भरा है. नायक अपने सहयोगियों से एक केस पर लंबी बहस कर रहा है, जो बोर करती है. उस के बाद बलात्कारियों द्वारा नायिका को दौड़ादौड़ा कर बेहाल करने का दृश्य भी बहुत लंबा है. लेकिन इस के बाद फिल्म में पकड़ बननी शुरू हो जाती है. इस का श्रेय निर्देशक को जाता है. उस ने अच्छा निर्देशन दिया है. फिल्म का प्रस्तुतीकरण भी अच्छा है. फिल्म के संवाद भी कुछ हद तक अच्छे कहे जा सकते हैं. दोनों महारथियों के बीच बोले गए संवाद ही दर्शकों को उठने नहीं देते.

फिल्म अपने माहौल के अनुरूप है. फिल्म में जो दिखाया गया है कि भारत से अपराध कर के अपराधी नेपाल में जा कर छिप जाते हैं, वह सही है.

फिल्म का संपादन ठीक ढंग से नहीं हुआ है. निर्देशक को चाहिए था कि वह शुरू के हिस्से को थोड़ा और छोटा करता, जिस से दर्शकों की शुरू की उकताहट कुछ कम हो पाती. फिल्म का छायांकन ठीकठाक है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

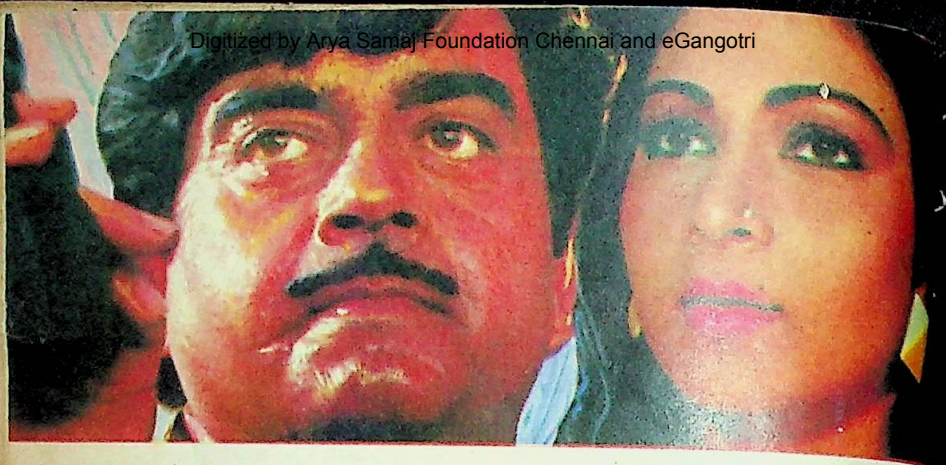

'भवानी जंक्शन' में शत्रुघ्न सिन्हा और रति अग्निहोत्री : नायिका की मौत का बदला. ▲

यह फिल्म काफी अरसे से रुकी पड़ी थी. इस का अंदाजा फिल्म में रति अग्निहोत्री को देख कर लगता है. रति अग्निहोत्री को फिल्म छोड़े काफी समय हो चुका है.

अभिनय की दृष्टि से शशि कपूर और शत्रुघ्न सिन्हा का काम ही अच्छा कहा जा सकता है. अन्य कलाकार साधारण हैं. फिल्म के गीत फारूक कैसर ने लिखे हैं. एक गीत अंगरेजी धुन पर आधारित है और अच्छा लगता है.

○ हम फरिश्ते नहीं

निर्माता : दीपक सेठ
निर्देशक : जतिनकुमार
संगीत : मनोज ज्ञान
मुख्य कलाकार : राज बब्बर, ओम पुरी, दीपक सेठ, पूनम ढिल्लों, स्मिता पाटिल, रामेश्वरी, अमरीश पुरी, कुलभूषण खरबंदा और सुषमा सेठ.

दो भागों में विभाजित यह फिल्म मध्यांतर से पहले तो तीन चोरों की कहानी से शुरू होती है, मगर बाद में चरस और हेरोइन के एक बड़े तस्कर द्वारा एक उद्योगपति को फंसा कर उसे ब्लैकमेल करने में परिवर्तित हो जाती है. ऐसे फिल्मों की कहानियां अकसर जानीपहचानी होती हैं, जिन में कोई नवीनता नहीं होती.

राजा (राज बब्बर), गोपी (ओम पुरी) और बलदेव (दीपक सेठ) जेल तोड़ कर भागते हैं और एक नाचने वाली कोमल (रामेश्वरी) के यहां शरण लेते हैं. तीनों सेठ शिवनाथ (कुलभूषण खरबंदा) के घर चोरी करने की योजना बनाते हैं. उधर एक नामीगरामी तस्कर पुरुषोत्तम (अमरीश पुरी) शिवनाथ को अपने जाल में फंसा लेता है. वह उस के गोदाम में चरस आदि रखवा कर उसे ब्लैकमेल करना चाहता है तथा उस की बेटी सुनीता (पूनम ढिल्लों) से अपने बेटे की शादी कराना चाहता है. सेठ शिवनाथ को बरबाद होता देख राजा, गोपी और बलदेव तीनों की चोरी करने का इरादा बदल जाता है और वे शिवनाथ की मदद करते हैं. अंत में जब पुरुषोत्तम खूनखराबे पर उतर आता है तो ये तीनों ही सेठ शिवनाथ के परिवार को बचाते हैं और पुरुषोत्तम को पुलिस के हवाले करते हैं.

मध्यांतर से पहले फिल्म काफी धीमी है. इस भाग में तीनों चोरों को सिर्फ चोरी की योजना बनाते हुए ही दिखाया गया है. इस बात का पहले ही आभास हो जाता है कि इन चोरों का हृदय परिवर्तन हो जाएगा और होता भी वही है.

फिल्म का निर्देशन साधारण है, कहींकहीं त्रुटिपूर्ण भी है. माना कि एक बड़ा उद्योगपति तस्कर के जाल में फंस जाता है,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मगर जिस तरह वह आंख मूंद कर कागजों पर हस्ताक्षर करता जाता है, वह सब देख कर लगता है कि वह उद्योगपति कम, एक नौसिखिया अधिक है. फिल्म में तीनों चोरों को फक्कड़ बताया गया है. फिर उन के पास पैसा कहां से आ जाता है. बड़ीबड़ी मोटरसाइकिलें कहां से आ जाती हैं, रिवाल्वर कहां से आ जाते हैं? वास्तव में फिल्म निर्माता ने तर्क की सब बातों को ताक पर रख कर इस फिल्म का निर्माण कर डाला है.

अभिनय की दृष्टि से अमरीश पुरी का चरित्र उभर कर सामने आया है. राज बब्बर जम नहीं सका है. ओम पुरी ने मारधाड़ के दृश्य अच्छे दिए हैं. 'दुलहन वही जो पिया मन भाए' की रामेश्वरी ने कुछ खास कर नहीं दिखाया.

रामेश्वरी का पति तथा इस फिल्म का निर्माता दीपक सेठ अभिनय की दृष्टि से शून्य रहा है. अन्य कलाकार साधारण हैं. फिल्म का गीतसंगीत पक्ष भी साधारण है.

○ आखिरी निश्चय

निर्माता: जयराम चावला
निर्देशक: के.सी.अग्रवाल
गीतसंगीत: रवींद्र जैन
मुख्य कलाकार: शेखर सुमन, साधना (साउथ), यूनुस परवेज, सुधीर दलवी व सुरेंद्रपाल.

वर्षों पहले हालीवुड में 'डैथ विश' के नाम से एक फिल्म बनी थी और बेहद सफल रही थी. इसी फिल्म के कथानक के आधार पर, इधरउधर से कुछ जोड़घटा कर, कम से कम आधा दर्जन फिल्में तो बंबई में बन चुकी हैं. फिल्म 'आखिरी निश्चय' भी उसी शृंखला की अगली कड़ी है.

एक जमीन के टुकड़े के झगड़े में खलनायक यूनुस परवेज व उस के आदमी नायक शेखर सुमन की बहन के साथ बलात्कार कर के उसे कत्ल कर देते हैं तथा बाप को भी जान से मार डालते हैं. अब चूंकि फिल्म वालों के हिसाब से इस देश में पुलिस और कानून नाम की कोई चीज तो है नहीं, अतः नायक स्वयं ही अपराधियों को एक के बाद एक खत्म करना शुरू कर देता है. उस की पुलिस इंस्पेक्टर प्रेमिका उसे पकड़ने की कोशिश भी करती है परंतु जैसा कि होना चाहिए, तब ही पकड़ पाती है जब वह आखिरी अपराधी को खत्म कर देता है.

नायक द्वारा राबिनहुड स्टाइल में एक के बाद एक अपराधी को खत्म करने का फार्मूला अब इतना पुराना पड़ चुका है कि इस पर आधारित किसी भी फिल्म का चल पाना लगभग असंभव है. निर्माता पूर्णचंद्रराव (फिल्म आखिरी रास्ता फेम) ने इसी फिल्म विषय पर आधारित, अमिताभ अभिनीत, डेढ़ करोड़ की लागत से बनी एक अधूरी फिल्म इसी कारण से नष्ट कर दी थी.

फिल्म उद्योग के लिए यह एक अच्छी बात है कि इस तरह की छोटे सितारों तथा कम लागत वाली फिल्में बन रही हैं. परंतु आवश्यक है कि इन फिल्मों का दर्शकों द्वारा स्वीकार किया जाना, और उस के लिए आवश्यकता है कि ऐसी फिल्मों की कथा में एक नयापन, शानदार अभिनय तथा कसा हुआ निर्देशन हो. परंतु इस फिल्म में इन तीनों चीजों का अभाव है. फिल्म 'अंकुश' इस बात का शानदार उदाहरण थी कि छोटी तथा कम लागत वाली फिल्म किस तरह बनाई जाती है.

शेखर सुमन को कम से कम इस फिल्म के बाद तो समझ ही जाना चाहिए कि सिर्फ अमिताभ की नकल के बल पर वह सफल नहीं हो सकता. साधना की यह पहली फिल्म है तथा उस ने चिरपरिचित मद्रासी शैली में अपना किरदार निभाया है. बाकी कलाकारों का अभिनय बेहद साधारण है.

फिल्म की इनडोर फोटो ग्राफी बेहद धुंधली है. रवींद्र जैन का गीतसंगीत बिलकुल बेकार है. फिल्म लगभग सवा साल तक सेंसर में फंसी रही थी. इसी कारण उत्तेजक दृश्यों में सेंसर का हस्तक्षेप स्पष्ट रूप से नजर आता है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

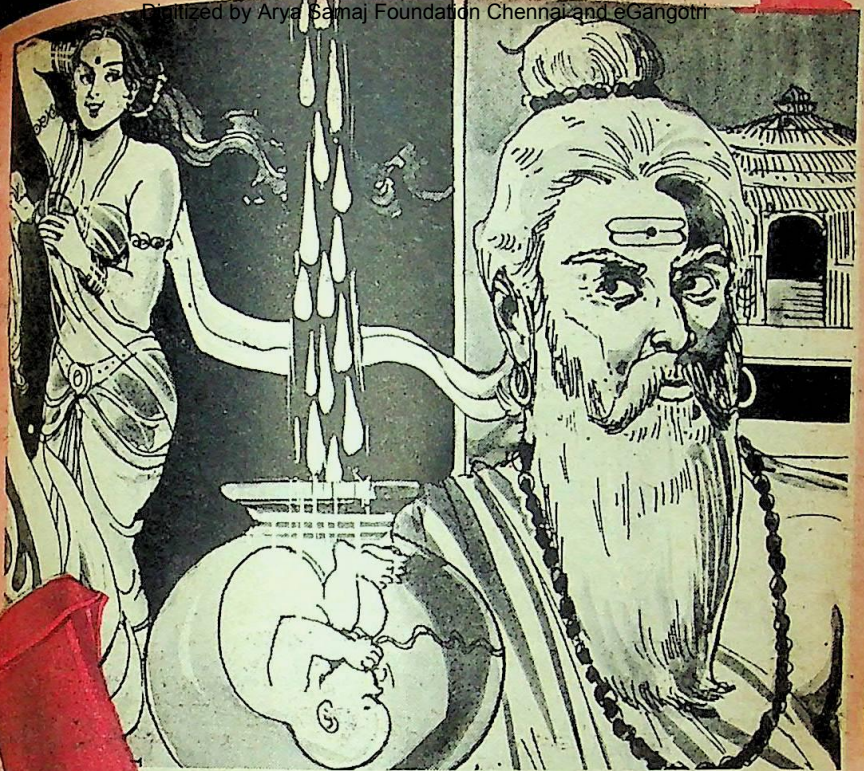

टेस्टट्यूब बेबी और हिंदू धर्मग्रंथ

लेख • सुरेंद्रकुमार शर्मा 'अज्ञात'

इस देश में एक बहुत बड़ा वर्ग ऐसे लोगों का है, जो विज्ञान के प्रत्येक आधुनिक आविष्कार के बाद यह दावा करने लगता है कि इस का आविष्कार तो उन के पूर्वजों ने बहुत पहले ही कर लिया था और इस के लिए वे वेदोंपुराणों तक सरपट दौड़ लगाने लगते हैं.

जब से आधुनिक वैज्ञानिकों ने टेस्ट ट्यूब में से बच्चे को पैदा किया है, तब से ये लोग यह सिद्ध करने के लिए हाथपैर मार रहे हैं कि उन के पूर्वजों ने यह चमत्कार तो हजारों वर्ष पहले ही कर दिखाया था.

इस के लिए वे वेदों, पुराणों आदि की बेसिरपैर की काल्पनिक एवं असंभाव्य किस्से-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लकड़ी, सरकंडा, दोना, घड़ा, आग, खत, खार, नाक, जांघ, भुजा आदि से मानवशिशुओं के जन्म की असंगत और बेसिरपैर की पौराणिक कथाओं को आधुनिक परखनली शिशु के प्रमाण स्वरूप पेश करना एक प्रकार का बेतुकापन, बेहूदापन और पागलपन ही नहीं है, अपने अज्ञान पर झूठा गर्व करने की गलत प्रवृत्ति भी है.

कहानियों को वैज्ञानिक शब्दावली के पैबंद लगा कर पेश कर रहे हैं और इस तरह के लेख कई पत्रपत्रिकाओं ने बड़े जोरशोर से प्रकाशित किए हैं.

इस से पहले कि हम उन किस्सेकहानियों को उद्धृत कर उन पर विचार करें, हमें यह स्पष्ट हो जाना चाहिए कि 'टेस्ट ट्यूब बेबी' (परखनली शिशु) है क्या और उस की उत्पत्ति की प्रक्रिया क्या है.

मनु ने छींक मारी और एक बच्चा उस के सामने आ गिरा. यह बेहूदी कल्पना है, विज्ञान नहीं.

इस प्रक्रिया को अंगरेजी में 'इन विट्रो फरटेलाइजेशन एंड एंब्रियो ट्रांसफर' (आई.वी.एफ.ई.टी.) कहते हैं. जिस का अर्थ है—परखनली में उपजाऊपन और गर्भ का स्थानांतरण.

इस प्रक्रिया में क्या किया जाता है? इस में स्त्री के डिंबाशय में हारमोनों द्वारा डिंब को परिपक्व किया जाता है, तब उसे वहां से निकाला जाता है.

डिंबाशय से डिंब को निकालने के लिए अब 'अल्ट्रा साउंड तरंगों' का उपयोग किया जाने लगा है. जब तरंगें महिला के गर्भ में छोड़ी जाती हैं तो डिंबाशय के डिंब अल्ट्रा साउंड यंत्र के परदे पर उभरने लगते हैं. इन डिंबों को एस्पाइरेटर द्वारा निकाल लिया जाता है.

(इस क्रिया में न तो स्त्री को बेहोश किया जाता है और न ही ज्यादा देर लगती है. पूरी क्रिया में मरीज को एक सूई चुभोई जाती है.)

इन निकाले गए डिंबों का सूक्ष्मदर्शी यंत्र से निरीक्षण करने के बाद उन्हें 'पेट्री डिश' में रखा जाता है, जिस में जीवाणुरहित पोषक द्रव्य होता है.

उक्त विधि से प्राप्त डिंबों को छः घंटे तक तथा नर शुक्राणुओं को 30 मिनट तक 37 डिगरी सेंटीग्रेड पर इनक्यूबेटर में रख कर गतिशील किया जाता है.

पूर्वोक्त 'पेट्री डिश' में डिंबों और शुक्राणुओं को मिला कर फिर इसी इनक्यूबेटर में रख दिया जाता है. दो दिन बाद ये भ्रूण में बदलना शुरू कर देते हैं. इन भ्रूणों को एक नली द्वारा हवा के दबाव से महिला के गर्भ में आरोपित कर दिया जाता है और उचित

सरिता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

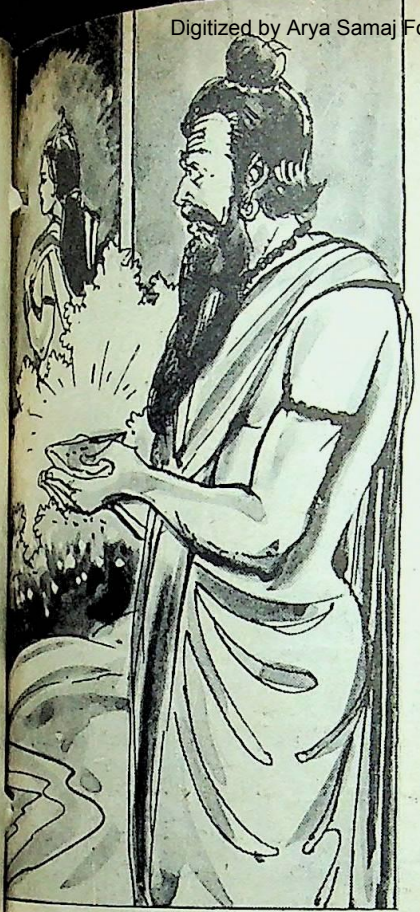

स्खलित वीर्य को भरद्वाज ने दोने में ले लिया, जिस से एक बच्चे का जन्म हुआ : क्या डिंब के संयोग के बिना भी शिशु जन्म संभव है?

समय पर स्त्री बच्चे को जन्म देती है.

संक्षेप में यह है परखनली में शिशु. यहां हम ने पेचीदा डाक्टरी शब्दावली के स्थान पर सरल शब्दावली में सारी प्रक्रिया प्रस्तुत कर दी है, जिसे आम आदमी भी आसानी से समझ सकता है.

अब हमें यह देखना है कि हिंदू धर्मग्रंथों में किस तरह के किस्सेकहानियां हैं जिन्हें अतीतवादी हिंदू 'परखनली में जन्मे शिशुओं' के उदाहरण के तौर पर प्रस्तुत करते नहीं अघाते.

प्रस्तुत हैं ऐसे कुछ उदाहरण और उन के विषयों में विभिन्न ग्रंथों के विवरण:

घड़े से अगस्त्य और वसिष्ठ

ऋग्वेद में आता है कि मित्र और वरुण देवता उर्वशी नामक अप्सरा को देख कर कामपीड़ित हुए. उन का वीर्य स्खलित हो गया, जिसे उन्होंने यज्ञ के कलश में डाल दिया. उसी कलश से अगस्त्य और वसिष्ठ उत्पन्न हुए: उतासि मैत्रावरुणो वसिष्ठोर्वश्या ब्रह्मन् मनसोधि जातः, द्रप्सं स्कन्नं ब्रह्मणा दैव्येन विश्वे देवाः पुस्करे त्वाददंतः. सत्रे ह जाताविषिता नमोभिः कुंभे रेतः सिषिचतुः समानम्, ततो ह मान उदियाय मध्यात्ततो जातमृषिमाहुर्वसिष्ठम् (ऋग्वेद 7.33.13).

अर्थात "हे वसिष्ठ, तुम मित्र और वरुण के पुत्र हो. हे ब्रह्मन्, तुम उर्वशी के मन से उत्पन्न हो. उस समय मित्र और वरुण का वीर्य स्खलन हुआ था. विश्वदेवगण ने दैव्य स्तोत्र द्वारा पुष्कर के बीच तुम्हें धारण किया था. यज्ञ में दीक्षित मित्र और वरुण ने स्तुति द्वारा प्रार्थित हो कर कुंभ के बीच एकसाथ ही रेत (वीर्य) स्खलन किया था. अनंतर मान (अगस्त्य) उत्पन्न हुए. लोग कहते हैं कि ऋषि वसिष्ठ उसी कुंभ से जन्मे थे."

कार्तिकेय की उत्पत्ति

वाल्मीकीय रामायण में आता है कि अग्नि देवता ने गंगा को गर्भवती किया. जब वह उसे धारण करने में कठिनाई अनुभव करने लगीं तो उस ने उसे हिमालय के पास एक जंगल में फेंक दिया. उस फेंके हुए गर्भ से जो बालक उत्पन्न हुआ, वह कार्तिकेय (शिव का दूसरा पुत्र) कहलाया.

देवतानां प्रतिज्ञाय गंगामभ्येत्य पावकः, गर्भ धारय वै देवि देवतानामिदं प्रियम् समंततस्य देवीमभ्यर्षिचत पावकः. तमुवाच ततो गंगा सर्वदेवपुरोगमम्. शक्ता धारणे देव तेजस्तव समुद्धतम्. गंगा तं गर्भमति-भास्वरम्. उत्ससर्ज महातेजाः स्रोतेभ्यो हि तदानद्य. निक्षिप्त मात्रे गर्भे तु तेजोभिर-भिरंजितम. तं कुमारं ततो जातम् (1.37. 14-15, 17-18, 21, 23)

अर्थात "देवताओं के पास प्रतिज्ञा कर के अग्नि देवता गंगा के पास आया और बोला,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'हे देवी, तुम मुझ से गर्भधारण करो. देवताओं की यह इच्छा है.' तब अग्नि ने उसे सींच दिया अर्थात गर्भवती कर दिया. वह उस के तेजोमय गर्भ को धारण करने में कठिनाई अनुभव करने लगी. गंगा ने उस गर्भ को फेंक दिया. उस के फेंकने पर एक तेजस्वी बालक पैदा हुआ."

साठ हजार पुत्र

वाल्मीकीय रामायण के बालकांड में एक अन्य कथा आती है, जिस में बताया गया है कि राजा सगर की दो रानियां थीं—केशिनी और सुमति. केशिनी ने एक पुत्र को जन्म दिया, लेकिन सुमति के गर्भ से एक तूंबा निकला. उस के फटने से साठ हजार पुत्र उस से निकले.

सुमतिस्तु नरव्याघ्र गर्भतुंबं व्यजायत, षष्टिः पुत्रसहस्राणि तुंबभेदाद् विनिःसृताः. घृतपूर्णेषु कुंभेषु धात्र्यस्तान् समवर्धयन्, कालेन महता सर्वे यौवनं प्रतिपेदिरे (38. 17-18).

अर्थात "सुमति ने एक तूंबे को जन्म दिया. उसे फाड़ कर साठ हजार पुत्र निकले. उन्हें धायाओं ने घी के घड़ों में डाल दिया. काफी समय के बाद वे सब बड़े हो गए.

ब्रह्मांडपुराण में इस कथा के कुछ अन्य सूक्ष्म भाग भी दिए गए हैं. उस में आता है:

सुमतिश्चापि तत्काले गर्भालाबुम-सूयत. भगवानौर्वस्तत्रागच्छद् यदृच्छया, तमुवाच त्वरान्वितः. गर्भलाबुरयं राजन्न त्यक्तुं भवतार्हति, पुत्राणां षष्टिसहस्रबीज-भूतो यतस्तव. तस्मात्तत्सकलीकृत्य घृतकुंभेषु यत्नतः, निःक्षिप्य सपिधानेषु रक्षणीयं पृथक्पृथक्. काले पूर्णे ततः कुंभान् भित्त्वा निर्याति ते पृथक्, एवं ते षष्टिसाहस्रं पुत्राणां जायते नृप. राजा च तत्तथा चक्रे. ततः संवत्सरे पूर्णे घृतकुंभात्-क्रमेण ते, भित्वाभित्वा पुनर्जग्मुः सहसैवानुसारम्. (ब्रह्मांडपुराण, उपो. वाद, 51.39-46).

अर्थात "सुमति ने तब एक गर्भ तूंबे को जन्म दिया. तभी वहां और्व ऋषि अकस्मात आ पहुंचा. उस ने राजा को कहा कि इस तूंबे को फेंको नहीं. इस में तेरे साठ हजार पुत्रों का बीज निहित है. इसे काट कर साठ हजार टुकड़े करो और प्रत्येक घृत के एकएक घड़े में रख कर ऊपर से ढक दो. समय पूरा होने पर वे उन घड़ों को तोड़ कर अपनेआप बाहर आ जाएंगे. राजा ने ऐसा ही किया. एक वर्ष के बाद वे प्रतिदिन एकएक घड़े को तोड़ कर बाहर निकलने शुरू हो गए."

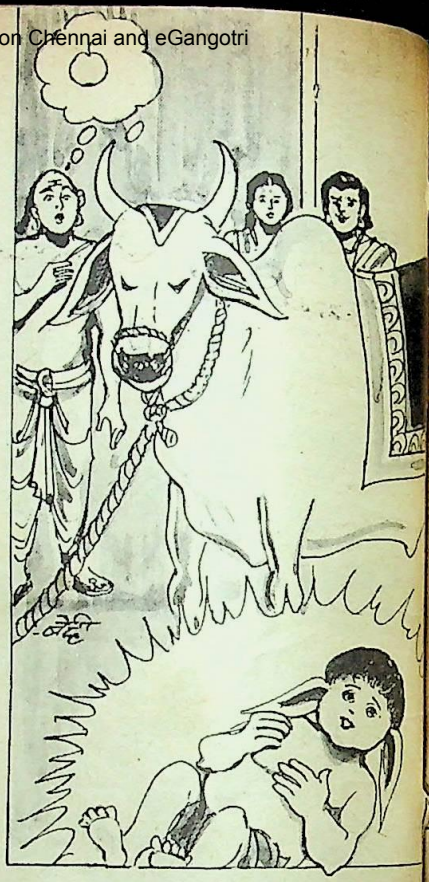

एक फल खाने से गाय ने तीन महीनों में मानव शिशु को जन्म दिया : क्या इसे विज्ञान सम्मत कहा जा सकता है?

नाक से बच्चा

विष्णु पुराण में आता है मनु ने छींक मारी और एक बच्चा उस के सामने आ गिरा.

क्षुतवतश्त मनोरिक्ष्वाकुः पुत्रो जज्ञे घ्राणतः (विष्णुपुराण 4/2/11.)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अर्थात "छींकने के समय मनु की नाक से इक्ष्वाकु नामक पुत्र का जन्म हुआ."

गोद में गिरे वीर्य से बच्चे

शिव पुराण में आता है कि शिव और पार्वती के विवाह में जब पार्वती ने अभी चार प्रदक्षिणाएं की थीं, ब्रह्मा को पार्वती का अंगूठा दिख गया. उसे देखते ही वह कामोन्मत्त हो गया और उस का वीर्य स्खलित हो गया. वह वीर्य ब्रह्मा की गोद में गिरा. उस ने उसे छिपाना चाहा, लेकिन उस से असंख्य ब्रह्मचारी पैदा हो गए.

प्रदक्षिणं तथा चाग्नेश्चतुर्धा च कृतं तदा, ब्रह्मणः स्खलनं जातं शिवांगुष्ठ-दर्शनात्. तद् गोपितं तदा तेन हृयुत्संगे पतितं च यत्, ततो जातास्त्वसंख्याता बटुका ब्रह्मसूत्रकाः. (शिवपुराण, ज्ञानसंहिता 18).

मछली द्वारा वीर्यपान और दो शिशुओं का जन्मः है न करिश्मा. पर बारबार ऐसा क्यों नहीं हुआ?

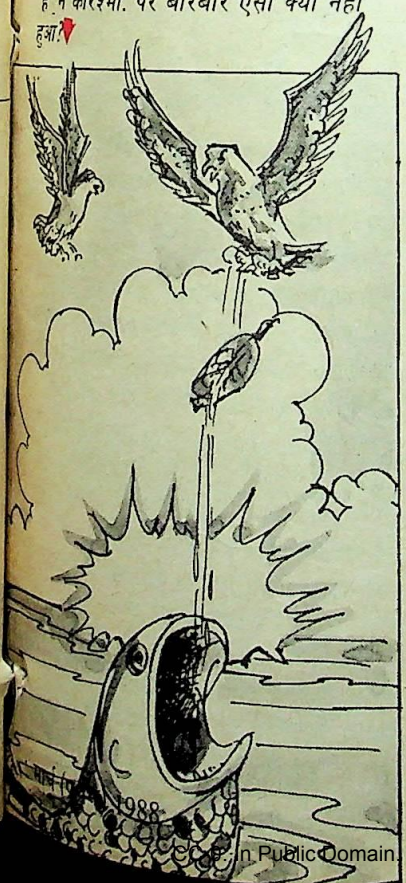

गिरे वीर्य से हजार वर्ष बाद बच्चा

ब्रह्मवैवर्तपुराण में आता है कि कृष्ण का वीर्य स्खलित होने पर उस ने उसे लज्जावश पानी में मिला दिया. उस से एक हजार वर्ष उपरांत एक बच्चा उत्पन्न हुआ.

कृष्णस्य कामबाणेन रेतः पातो बभूव ह, जले तद्रेचनं चक्रे लज्जया सुरसंसदि. सहस्रवत्सरांते तड् डिंभरूपं बभूव ह, ततो महान् विराड् जज्ञे (ब्रह्मवैवर्तपुराण, ब्रह्मखण्ड, 4.23-24).

अर्थात "काम वशीभूत हुए कृष्ण का वीर्य स्खलित हो गया. उन्होंने देव सभा में लज्जावश उसे छिपाते हुए पानी में गिरा दिया. एक हजार वर्ष के पश्चात वह डिंभ बन गया और उस से महान विराट का जन्म हुआ.

लकड़ी से पुत्र

देवी भागवत पुराण में आता है कि एक बार वेदव्यास यज्ञ के लिए आग जलाने के उद्देश्य से अरणी मंथन (बांस की छड़ियों को रगड़ना) कर रहे थे तभी घृताची नामक अप्सरा को देख कर कामोन्मत्त हो गए.उन का वीर्यपात हो गया, जो अरणी पर गिरा. उस से एक व्यास समान आकृतिवाला पुत्र उत्पन्न हुआ जो शुकदेव कहलाया.

कामस्तु देहे व्यासस्य दर्शनादेव संगतः. बहुशो गृह्यमाणं च घृताच्या मोहितं मनः, मथनं कुर्वतस्तस्य मुनेरग्निचिकीर्षया, अरण्यामेव सहसा तस्य शुक्रमथापतत्. सोविचिंत्य तथा पातं ममंथारणिमेव च, तस्माच्छुकः समुद्भूतो व्यासाकृतिमनोहर. (देवीभागवतपुराण 1.14.4-8).

अर्थात "उसे (घृताची अप्सरा को) देखते ही व्यास कामवश हो गया. घृताची ने उस का मन हर लिया. आग पैदा करने के लिए अरणी मंथन करते मुनि का वीर्य अरणी पर ही गिर गया. उस की परवाह न करते हुए वह अरणी मंथन करता रहा. उस से व्याससदृश आकृति वाला शुक नामक बालक पैदा हुआ.

श्रीमद्भागवतपुराण में आता है कि अपने बड़े भाई उतथ्य की गर्भवती पत्नी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ममता के साथ बृहस्पति ने बलात्कारपूर्वक संभोग किया और उस के वीर्य से भरद्वाज नामक पुत्र उत्पन्न हुआ.

अंतर्वत्न्यां भ्रातृपत्न्यां मैथुनाय बृहस्पतिः, प्रवृत्तो वारितो गर्भं शप्त्वा वीर्यमवासृजत. तं त्यक्तुकामां ममतां भर्तृत्यागविशंकिताम्, नामनिर्वचनं तस्य श्लोकमेन सुरा जगुः मूढे भर द्वाजमिमं भर द्वाजं बृहस्पते, यातौ तदुक्त्वा पितरौ भरद्वाजस्ततस्त्वयम्. चोद्यमाना सुरैरवं मत्वा वितथमात्मजम्, व्यसृजत्. (श्रीमद्भागवत-पुराण, 9.20.36-39).

अर्थात, "बृहस्पति गर्भवती भावज से संभोग में प्रवृत्त हुआ. उसे रोका. वह गर्भ को शाप दे कर संभोगरत हुआ और उस का वीर्य स्खलित हुआ. उस वीर्य को भावज फेंकना चाहती थी ताकि उस का पति उस से नाराज हो कर उसे त्याग न दे. तब देवताओं ने कहाः हे मूर्ख औरत, इस द्वाज (वीर्य) को भर (धारण किए रह).उस ने उसे धारण किया और इस पुत्र को जन्म दिया जो 'भरद्वाज' कहलाया.

दोने से द्रोणाचार्य

यही भरद्वाज एक बार गंगास्नान को गया. वहां उस ने स्नान कर के कपड़े बदल रही घृताची नामक अप्सरा को देखा. उस के शरीर के एक भाग से उस का कपड़ा सरक गया. उसे देख भरद्वाज का वीर्य स्खलित हो गया, जिसे उस ने एक द्रोण (दोने) में रख दिया, उस से एक बालक उत्पन्न हुआ, जो द्रोण से उपजने के कारण 'द्रोण' कहलाया.

गंगाद्वारं प्रतिमहान् बभूव भगवानृषिः भरद्वाज इति ख्यातः. ददर्शाप्सरसं साक्षाद् घृताचीमाप्लुतामृषिः, रूपयौवनसम्पन्नां मददृप्तां मदालसाम्. तस्या पुनर्नदीतीरे वसनं पर्यवर्तत, व्यपकृष्टांबरां दृष्टवां तामृषिश्चकमे ततः. तत्र संसक्तमनसो भरद्वाजस्य धीमतः, ततो Sस्य रेतश्चस्कंद तदृषिद्रोण आदधे. ततः समभवतद् द्रोणः कलशे तस्य धीमतः. (महाभारत आदिपर्व, (129.33-38.)

सरकंडे से कृपाचार्य

महाभारत बताता है कि शरद्वान् ऋषि ने जानपदी नामक अप्सरा को वन में जब एकवसना देखा तो उस का वीर्यपात हो गया जो एक सरकंडे के गुच्छे पर गिरा. उस से कृप नामक बालक पैदा हुआ जो कौरवों और पांडवों का धनुर्वेद का आचार्य बना.

महाभारत लिखता हैः ततो जानपदी नाम देवकन्यां सुरेश्वरः प्राहिणोत्. तामेकवसनां दृष्टवा गौतमोSप्सरसं वने, प्रोत्फुल्लनयनोSभवत्. धनुश्च हि शरास्तस्य कराभ्यामपतन् भुवि, वेपथुश्चापि तां दृष्टवा शरीर समजायत. तेन सुस्राव रेतोऽस्य. रेतस्तत् तस्य शरस्तंबे पपात च. तस्याथ मिथुनंजज्ञे गौतमस्य शरद्वतः, मृगयां चरतो राज्ञः शंतनोस्तु. स राज्ञे दर्शयामास मिथुनं सशरं धनुः. कृपया यन्मया बालाविभौ संवर्धिताविति. तस्मात् तयोर्नाम चक्रे तदेव स महीपतिः. (आदिपर्व, 129.6-20)

अर्थात "तब इंद्र ने जानपदी नाम की अप्सरा को भेजा. उसे वन में एक वस्त्र पहने देख कर शरद्वान की आंखें फट गईं. उस के हाथ से धनुष बाण गिर गए. शरीर कांपने लगा . उस का वीर्य स्खलित हो गया. वह वीर्य सरकंडे के गुच्छे पर गिर गया.उस से दो बच्चे (एक लड़का और एक लड़की) उत्पन्न हुए. शिकार को निकले राजा शांतनु को उस के एक आदमी ने ये बच्चे दिखाए. वह उन्हें घर ले आया. उस ने क्योंकि उन पर कृपा कर के उन्हें पालापोसा था, अतः उन के नाम भी वैसे ही रखे कृप और कृपी.

आदमी की कोख से लड़का

श्रीमद्भागवतपुराण में आता है कि राजा युवनाश्व ने एक बार इंद्रयज्ञ रचा. रात को प्यास से पीड़ित हो कर वह यज्ञशाला में पहुंचा. वहां पुरोहितों को सोते देख कर वह एक घड़े में से पानी ले कर पी गया. उस पानी को पुत्रोत्पन्न करने वाले मंत्रों से अभिमंत्रित किया हुआ था, अतः राजा के पेट में से कुछ समय बाद उस की दाईं कोख को फाड़ कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

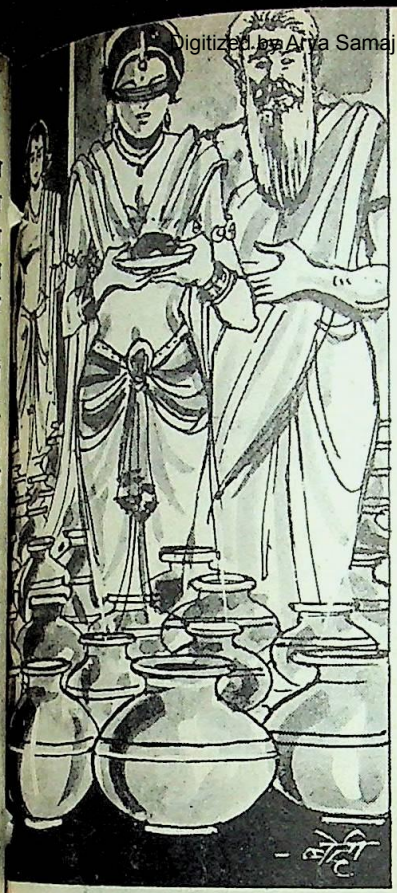

दो वर्ष बाद गिरे गर्भ के लोथड़े के 101 टुकड़े कर के घृतपूर्ण घड़ों में रखने से तीन महीनों में 101 शिशुओं का जन्म. ऐसी बेतुकी बातों पर हम कब तक गर्व करते रहेंगे.

निम्ननासाग्रो रक्ताक्षस्ताम्रमूर्धजः. स निषादस्ततोऽभवत्. (श्रीमद् भागवतपुराण 4.14.43-45.

अर्थात "ऋषियों ने मृत राजा वेन की जंघा का बहुत तेजी से मंथन किया. उस से एक आदमी निकला. उस का कौए जैसा काला रंग था. वह छोटे अंगों, छोटी भुजाओं, बड़ी ठुड्डी, छोटे हाथों, आगे से नीची नासिका, लाल आंखों और तांबई केशों वाला था. वह निषाद कहलाया."

फिर उसी मृत राजा की भुजाओं को रगड़ा गया. उन से एक लड़का और एक लड़की पैदा हुए.

अथ तस्य पुनर्विप्रैरपुत्रस्य महीपतेः, बाहुभ्यां मथ्यमानाभ्यां मिथुनं समपद्यत. तद् दृष्ट्वा मिथुनं जातमृषयो ब्रह्मवादिनः ऊचुः. अयं तु पृथुर्नाम महाराजो भविष्यति पृथुश्रवाः. इयं च सुदती देवी अर्चिर्नाम वराहोरा (4.15.1-5.)

अर्थात "फिर उस पुत्रहीन राजा के शव की भुजाओं का विप्रों ने मंथन किया. उन से एक लड़का और एक लड़की उपजे. उन्हें देख कर ब्रह्मवेत्ता ऋषियों ने कहा, यह लड़का पृथु नाम से विख्यात होगा और महाराजा बनेगा तथा लड़की अर्चि नाम से जानी जाएगी."

गाय से मानव शिशु

पद्मपुराण में आता है कि आत्माराम नामक निस्संतान ब्राह्मण को एक महात्मा ने एक बार ऐसा फल दिया जिस के खाने से अपनेआप गर्भ ठहर सकता था. ब्राह्मण ने यह फल खुद न खा कर अपनी गाय को खिला दिया.

त्रिमासे निर्गते चाथ सा धेनुः सुषुवेऽर्भकम्, सर्वांगसुंदरं दिव्यं निर्मलं कनकप्रभम्. भाग्योदयोऽधुना जात आत्मदेवस्य पश्यत, धेन्वा बालः प्रसूतस्तु,

एक बालक उत्पन्न हुआ जो बाद में मांधाता नाम का चक्रवर्ती राजा हुआ.

इष्टिं स्म वर्तयांचक्रुरैंद्रीं ते सुसमाहिताः. राजा तद् यज्ञसदनं प्रविष्टो निशि तर्षितः, दृष्ट्वा शयानान् विप्रांस्तान् पपौ मन्त्रजलं स्वयम् ततः काल उपावृत्ते कुक्षिं निर्भिद्य दक्षिणम्, युवनाश्वस्य तनयश्चक्रवर्ती जजान ह. मांधाता (श्रीमद्भागवतपुराण 9.6.26.31.)

जंघाओं और भुजाओं से बच्चे

इसी पुराण में अन्यत्र आता है कि राजा वेन के मर जाने पर ऋषियों ने उस की जांघ का मंथन किया और उस से निषाद नामक पुत्र उत्पन्न हुआ.

ऋषयो विपन्नस्य महीपतेः, ममन्थरूरुं तरसा तत्रासीद् बाहुको नरः. काककृष्णोऽतिह्रस्वांगो ह्रस्वबाहुर्महाहनुः, ह्रस्वपाव-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देवरूपीति कौतुकम्. गोकर्ण त सुत दृष्ट्वा गोकर्ण नाम चाकरोत्. (पद्मपुराण, उत्तरखंड, 4.62-65)

अर्थात "तीन महीने के बाद गाय ने एक सुंदर दिव्य और स्वर्ण की तरह चमक रहे बालक को जन्म दिया. लोग कौतुकवश कहने लगे, देखो आज आत्मदेव की किस्मत जागी है. उस बच्चे के कान गाय के कानों के समान थे. अतः आत्मदेव ने बालक का नाम 'गोकर्ण' ही रख दिया.

लोथड़े से 101 बच्चे

महाभारत के आदि पर्व में आता है कि धृतराष्ट्र की पत्नी गांधारी के पेट में दो साल तक गर्भ ठहरा रहा,जबकि उधर कुंती ने एक सुंदर पुत्र को जन्म दिया. इस से खिन्न हो कर उस ने अपने गर्भ को एक दिन बहुत पीटा, जिस से उस का पात हो गया. उस गिरे मांस के लोथड़े को वह उठा कर बाहर फेंकना चाहती थी कि तभी वहां व्यास उपस्थित हुआ. उस ने कहा कि इस के सौ टुकड़े कर के उन्हें घृतपूर्ण घड़ों में जल्दी से रख दो. उस ने अंगूठे की पोर के परिमाण के एक सौ एक टुकड़े कर के उन्हें घृतकुंभों में सुरक्षित कर के रख दिया. तीन महीनों में उन घड़ों से सौ पुत्र और एक लड़की उत्पन्न हुई.

संवत्सर द्वयं तं तु गांधारी गर्भ-माहितम्. श्रुत्वा कुंतीसुतं जातं सोदरं घातयामास गांधारी दुःखमूर्च्छिता, ततो यज्ञे मांसपेशी लोहाष्ठीलेव संहता. तामुत्स्रष्टुं प्रचक्रमे, अथ द्वैपायनो त्वरितः समुपागमत्. घृतपूर्ण कुंडशतं क्षिप्रमेव विधीयताम्. सुगुप्तेषु च देशेषु रक्षा चैव विधीयताम्. अंगुष्ठपर्वमात्राणां पृथगेव तु. एकाधिकशतं पूर्ण यथायोगं विशांपते. ततस्तांस्तेषु कुंडेषु गर्भानवदधे तदा. ततः पुत्रशतं पूर्ण धृतराष्ट्रस्य पार्थिव. मासत्रयेण संजज्ञे कन्या चैका शताधिका. (महाभारत, आदिपर्व, 114.9-13, 18-22, 40-41)

आग से दो बच्चे

महाभारत का कहना है कि राजा द्रुपद के पुत्रेष्टि यज्ञ में रानी को खिलाने के लिए एक विशेष तरह का पदार्थ तैयार किया गया था. उसे रानी ने यज्ञशाला में उपस्थित हो कर ग्रहण करना था, परंतु ऋतुमती होने के कारण वह यज्ञशाला में उपस्थित हो कर उसे ग्रहण न कर सकी. तब याज नामक पुरोहित ने वह पदार्थ अग्नि में फेंक दिया.

एवमुक्त्वा तु याजेन हुते हविषि संस्कृते, उत्तस्थौ पावकात् तस्मात् कुमारो देवसंनिभः. कुमारी चापि पांचाली वेदीमध्यात् समुत्थिता, सुभगा दर्शनीयांगी. (महाभारत आदिपर्व, 166. 39 व 44)

अर्थात याज ने इस प्रकार कह कर उस पदार्थ को, हवन सामग्री को, जल रहे हवन कुंड में फेंक दिया. उस में से एक लड़का निकला, जो देवताओं के समान था. उस से द्रौपदी नामक एक लड़की भी निकली जो बहुत सुंदर अंगों वाली थी. यह लड़का धृष्टद्युम्न कहलाया जो पांडवों का महाभारत युद्ध में सेनापति बना.

मछली के पेट से मानव

महाभारत में राजा उपरिचर की कथा आती है जिस में कहा गया है कि उक्त राजा का एक बार जंगल में वीर्यपात हो गया. उस ने उसे उठा कर पत्ते पर रखा और उसे बाज के हाथ अपनी पत्नी के पास उसे धारण करने के लिए भेज दिया. जब वह पक्षी उसे ले जा रहा था तब उस पर दूसरा बाज झपट पड़ा जिस से वह वीर्य नीचे नदी में गिर गया और उसे एक मछली बनी हुई अप्सरा निगल गई. दस महीनों के बाद वह मछली पकड़ी गई उस के पेट से मछेरों को एक लड़का और एक लड़की मिले. राजा उपरिचर ने लड़के का नाम 'मत्स्य' रखा और उसे अपना लिया, जबकि लड़की मछेरों को सौंप दी, जो बाद में सत्यवती नाम से प्रसिद्ध हुई और पराशर के पुत्र व्यास की मां बनी.

राजोपरिचरेत्येवं नाम तस्याथ विश्रुतम्. तस्य रेतः प्रचस्कंद चरतो गहने वने. स्कन्नमात्रं च तद् रेतो वृक्षपत्रेण भूमिपः

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रतिजग्राह. श्येनं ततोऽबवीत् मत्प्रियार्थमिदं सौम्य शुक्रं मम गृह नय. अभ्यद्रवच्च तं सद्यो दृष्टवैवामिषशंकया. श्येनपादपरिभ्रष्टं तद् वीर्यमथ वासवम्. जग्राह तरसोपेत्य साद्रिका मत्स्यरूपिणी, कदाचिदापि मत्सीं तां बबंधुर्मत्स्यजीविनः. मासे च दशमे प्राप्ते तदा भरतसत्तम, उज्जह्रुरुदरात् तस्याः स्त्रीं पुमांसं च मानुषम्. तयो पुमांसं जग्राह राजो परिचरस्तदा, स मत्स्यो नाम राजासीद् धार्मिकः. सा कन्या दुहिता तस्या मत्स्या, राज्ञा दत्ता दाशाय. द्वैपायनो जज्ञे. सत्यवत्यां पराशरात्. (महाभारत, आदिपर्व, (63.35, 49/50, 54. 57, 59, 60, 61, 63, 67, 86)

खीर से गर्भ

राम और उन के भाइयों की उत्पत्ति के विषय में वाल्मीकीय रामायण में लिखा है कि जब राजा दशरथ की उम्र साठ हजार वर्ष की हो गई तो उन्होंने एक यज्ञ का आयोजन किया.

ततो वै यजमानस्य पावकादतुलप्रभवम्, प्रादुर्भूतं महद् भूतं महावीर्यं महाबलम्. दिव्य पायससंपूर्णां पात्रीं पत्नीमिव प्रियाम् प्रगृह्य विपुलां दोर्भ्यां स्वयं मायामयीमिव. समवेक्ष्याब्रवीद वाक्यमिदं दशरथं नृपम्. भार्याणामनुरूपाणामश्नीतेति प्रयच्छ वै, तासु त्वं लप्स्यसे पुत्रान् यदर्थं यजसे नृप. ततस्तु ताः प्राश्य तमुत्तमस्त्रियो महीपतेरुत्तमपायसं पृथक्, हुताशनादित्यसमानतेजसोऽचिरेण गर्भान् प्रतिपेदिरे तथा. (बालकाण्ड, 16.11.15-20,30)

अर्थात "उस यज्ञ के अग्निकुंड में से एक पुरुष निकला. उस के हाथों में खीर से भरा एक पात्र था. उस ने वह पात्र दशरथ को देते हुए कहा, "राजन, इस खीर को तुम अपनी पत्नियों को खाने को दो इस से तुम्हें पुत्रों की प्राप्ति होगी." रानियों ने उसे खाया और गर्भवती हो गईं. उचित समय पर उन्होंने चार पुत्रों को जन्म दिया.

खेत में मानवशिशु

सीता के विषय में रामायण का कहना है

कुछ तुम्हारी कुछ हमारी
पसन्द है लाजवाब
चुटकी पान मसाला
खाईऐ जनाब

सौंफ इलायची छुआरे वाला
चुटकी
पान मसाला

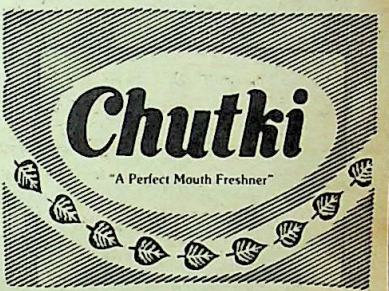

CHUTKI

के० के० कार्यालय का
उत्कृष्ट उत्पादन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि जब राजा जनक खेतों में हल चला रहा था तब वह उसे खेतों में से मिली थी. जनक ने क्योंकि उसे जमीन से उठाया था, अतः वह अयोनिजा (स्त्री के पेट से न पैदा हुई) कही गई.

अथ मे कृथतः क्षेत्रं लांगलादुत्थिता ततः.क्षेत्रं शोधयता लब्धा सीतेति विश्रुता, भूतलादुत्थिता सा तु व्यवर्धत ममात्मजा. वीर्य शुक्लेति मे कन्या स्थापितेयमयोनिजा (बालकांड, 66. 13-15)

अर्थात "जनक का कथन है कि जब मैं हल चला रहा था तब यह हल के फाले से ऊपर को आई थी. इस का नाम सीता है. यह धरती से पैदा हुई मेरी पुत्री है. यह किसी मानवी के पेट से उत्पन्न नहीं हुई."

ये कहानियां मुख्यतः दो भागों में विभक्त की जा सकती हैं–1 अज्ञानजन्य 2. बेसिरपैर की.

अज्ञानजन्य कहानियों को पुनः चार उपशीर्षकों में विभक्त किया जा सकता है.

क. ऐसी कहानियां जो इस अज्ञानवश पेश की जाती हैं कि बच्चा परखनली में ही जन्मता है जबकि वास्तव में ऐसा नहीं जैसा कि पहले हम ने देखा है. जिन कहानियों में घड़ों में से बच्चे जन्मते दिखाए गए हैं उन्हें पेश करने वाले लोग इसी अज्ञानता के शिकार हैं.

ख. ऐसी कहानियां जो पेट और गर्भाशय के अंतर को न समझने के कारण पेश की जाती हैं. बच्चा गर्भाशय में विकसित होता है, न कि पेट में. इसी अज्ञान के कारण मुंह से निकाले वीर्य से पेट में बच्चे विकसित होते हैं और इस तरह की कहानियों को परखनली शिशु के प्रतिरूप बताने वाले इसी प्रकार की अज्ञानता के शिकार हैं.

ग: ऐसी कहानियां जो वीर्य के कीटाणुओं की प्रकृति से परिचित न होने के कारण पेश की जाती हैं. इन में वीर्य को ऐसे पदार्थ के रूप में पेश किया जाता है जिस पर दूसरे जीवाणुओं, तापमान की कमीबेशी आदि का कोई प्रभाव नहीं पड़ता और उस की कार्यक्षमता वैसी की वैसी ही रहती है, जबकि असलियत यह है कि एक निश्चित तापमान से कम या अधिक होने पर उस के जीवाणु नष्ट हो जाते हैं और उन की उत्पादन क्षमता समाप्त हो जाती है.

जिन कहानियों में वीर्य को लकड़ी पर गिरा हुआ, पत्तों आदि पर पड़ा हुआ दिखाया गया है, उन्हें पेश करने वाले लोग वीर्य के प्रकृति विषयक अज्ञान के शिकार है.

घ. ऐसी कहानियां जिन्हें भ्रूण की प्रकृति के विषय में अज्ञानता के कारण पेश किया जाता है. भ्रूण को तरल नाइट्रोजन में रख कर (नाइट्रोजन 270 सेंटीग्रेड पर तरल होती है) सुरक्षित रखा जा सकता है. उस में दो साल तक भ्रूण रह सकता है परंतु जिन कहानियों में भ्रूण के सौ या साठ हजार टुकड़े करके उन्हें घृतकुंभों में रखा जाना चित्रित है और जिन में उन घड़ों से तीन महीने के अंदर बच्चे जन्मते दिखाए गए हैं, उन्हें पेश करने वाले लोग भ्रूण संबंधी ज्ञान के अभाव में ऐसा कर रहे हैं.

शेष सब कहानियां जिन में आग की लपटों से बच्चे जन्मते हैं, गाय और घोड़े मानव शिशुओं को जन्म देते हैं, नाक, जंघा व भुजाओं में से बच्चे निकलते हैं, उन्हें परखनली शिशु के प्रमाण स्वरूप पेश करना न केवल अज्ञानता का ढिंढोरा पीटना है बल्कि बेतुकापन, बेहूदापन, पागलपन और बेसिर-पैर की हांकना भी है.

संक्षेप में कहा जा सकता है कि इन सब धर्मग्रंथों की कहानियों का विज्ञान की अपेक्षा अज्ञान से संबंध है. इस तरह लालबुझक्कड़ों की भांति दूर की अनमिली कड़ियों को खींचखींच कर मिलाने के प्रयासों से न हिंदू धर्मग्रंथों की झूठी महिमा बढ़ सकती है और न खुद हिंदू समाज का ही कल्याण हो सकता है. हां, इस से केवल वैज्ञानिक विचारधारा के पनपने के रास्ते में बाधा अवश्य खड़ी हो सकती है.

जरूरत है वैज्ञानिक विचारधारा को अपनाने और इस तरह हीनभावनाग्रस्त एवं पलायनवादी मानसिकता को त्यागने की. इसी में हिंदू समाज और समूचे देश का कल्याण है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने शिशु को दीजिए सेरेलॅक का अनूठा लाभ

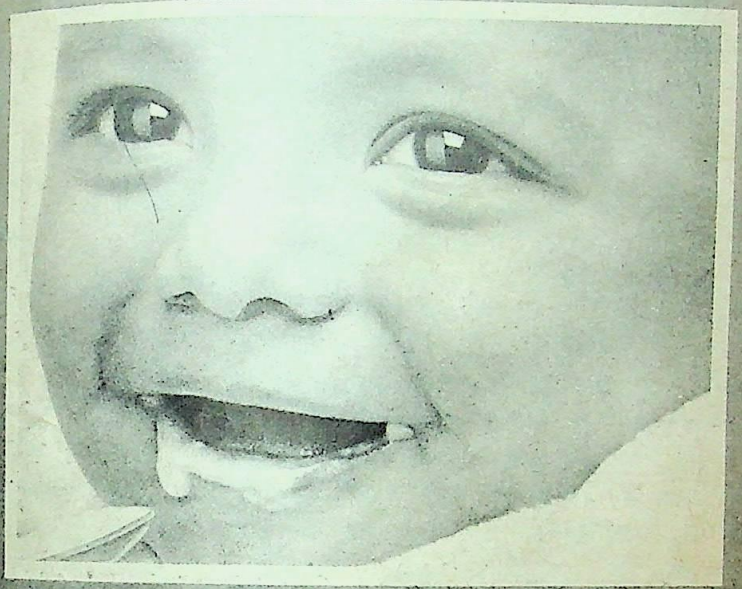

कीजिए ठोस आहार की आदर्श शुरुआत

लगभग ४ महीने की उम्र से आपके शिशु को दूध के साथ-साथ ठोस आहार की भी ज़रूरत होती है. यही समय है उसे सेरेलॅक का अनूठा लाभ देने का.

पौष्टिकता का लाभ: सेरेलॅक का प्रत्येक आहार आपके शिशु को सारे पौष्टिक तत्व प्रदान करता है-प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, फैट,विटामिन तथा मिनरल. सेरेलॅक में शिशु की विशेष आवश्यकताओं के अनुसार सब कुछ संतुलित और सही रूप में है-यानि संपूर्ण पोषाहार!

स्वाद का लाभ: सेरेलॅक पौष्टिक होने के साथ-साथ स्वादिष्ट भी है. इसका निराला स्वाद शिशुओं को बहुत भाता है.

समय का लाभ: सेरेलॅक पहले से ही पकाया हुआ है और इसमें दूध और चीनी मौजूद है. इसे उबाले हुए गुनगुने पानी में मिलाइए और बस शिशु को खिलाइए.

पसंद का लाभ: आहार में शिशु को और आनंद आए, इसके लिए सेरेलॅक के दो-दो स्वाद-शिशु को चौथे महीने से दीजिए सेरेलॅक व्हीट छठे महीने से दीजिए सेरेलॅक एपॅल.

कृपया डिब्बे पर दिए गए निर्देशों का सावधानी से पालन कीजिए ताकि इसके बनाने में स्वच्छता रहे और आपके शिशु को मिले स्वस्थ और संतुलित पोषाहार.

मुफ़्त
शिशु के स्वास्थ्य की रिकॉर्ड पुस्तिका
लिखिए:
सेरेलॅक
पोस्ट बॉक्स नं. 3
नई दिल्ली-110008

Nestlé

सेरेलॅक का वादा: स्वाद भरा संपूर्ण पोषाहार

RKSWAMY/FSL/4757 HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चिंता

कहानी • बलदेवसिंह महरोक

बुधवार का सारा दिन लता अपने पति के लौटने की प्रतीक्षा करती रही. घर के मुख्यद्वार पर जरा सी आहट होने पर उस की निगाहें खुद ब खुद बाहर की ओर उठ जाती थीं. एक बार तो उसे यों लगा जैसे कोई दरवाजे पर दस्तक दे रहा हो. आशा भरे मन से उस ने दरवाजा खोला. देखा तो एक पिल्ला दरवाजे से अंदर घुसने का व्यर्थ प्रयास कर रहा था, जिस के कारण खटखट की आवाज हो रही थी. देख कर लता के होंठों पर मुसकराहट तैर गई. अगले ही पल निराश हो कर वह फिर अंदर लौट आई.

पिछले शनिवार को उस के पति इलाहाबाद गए थे. उस दिन अचानक उन्हें अपने मुख्य अधिकारी की ओर से इलाहाबाद जाने का आदेश प्राप्त हुआ था. कुछ गोपनीय कागजात सुबह तक वहां जरूरी पहुंचाए जाने थे. इसलिए वह रात की गाड़ी से ही रवाना हो गए थे. लता को यह बता कर गए थे कि एकदो दिन का ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लता के पति घर से क्या गए उस का मन दुश्चिंताओं से भर गया. क्या वे दुर्घटनाग्रस्त हो गए? किसी ने उन का सब कुछ छीन लिया? या कहीं वे किसी दूसरी औरत के चक्कर में पड़ गए? अब उस का क्या होगा? युवा आयु, छोटे बच्चे... ओफ्फोह! कितनी चिंताएं...

काम है. मंगलवार को वह हर हालत में वापस लौट आएंगे.

मंगलवार की शाम तक तो लता को अधिक फिक्र नहीं थी. परंतु जब बुधवार की शाम तक भी उस के पति नहीं लौटे तो उसे चिंता सताने लगी. उसे लगा, जैसे उन्हें घर से गए महीनों बीत गए हों. जब देर रात गए तक भी पति महोदय नहीं आए तो उस के मन में बुरेबुरे विचार आने लगे. वह सोने का असफल प्रयास करने लगी. कभी एक ओर

सुशील के साथ कश्मीर में हनीमून मनाने और छेड़छाड़ इत्यादि के बारे में सोच कर लता मन ही मन रोमांचित हो उठी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करवट लेती तो कभी दूसरी ओर. पर नींद जैसे उस से कोसों दूर थी.

'कहां रुक सकते हैं वह.' लता सोचने लगी, 'कहीं गाड़ी न छूट गई हो. लेकिन अगर गाड़ी छूट गई होती तो अगली गाड़ी भी पकड़ सकते थे. कल न सही आज तो आ ही सकते थे.

'हो सकता है उन की जेब कट गई हो और सभी पैसे निकल गए हों. ऐसे में उन्हें बड़ी मुशकिल हो गई होगी. वापसी पर टिकट लेने के लिए उन के सामने विकट समस्या खड़ी हो गई होगी.'

पर दूसरे ही क्षण लता उस का समाधान भी खोजने लगी, 'इस के बावजूद तो कई उपाय थे. वहां स्थित अपने कार्यालय के शाखा अधिकारी को अपनी समस्या बता कर पैसे उधार मांग सकते थे. वहां के शाखा अधिकारी यहीं से तो स्थानांतरित हो कर गए हैं और उन के अच्छे दोस्त भी हैं. हां, उन की कलाई पर घड़ी भी तो बंधी है. उसे बेच सकते हैं. नहीं, उन की जेब नहीं कटी होगी. अब तक न आ सकने का कोई और ही कारण रहा होगा.

'हो सकता है स्टेशन पर उन का सामान चुरा लिया गया हो. तब तो बड़ी मुसीबत में फंस गए होंगे. उन के ब्रीफकेस में तो दफ्तर के बहुत सारे महत्त्वपूर्ण कागज थे. यदि ऐसा हो गया तो अनर्थ हो जाएगा. फिर तो उन्हें नौकरी से निकाल दिया जाएगा. अपनी नौकरी के बचाव के लिए अधिकारियों के सामने गिड़गिड़ाना पड़ेगा. कैसी भयावह स्थिति होगी वह?'

यह सोच कर लता की आंखों के सामने कई प्रकार के भयानक दृश्य घूमने लगे.

'नौकरी छूट गई तो दरदर भटकना पड़ेगा. आजकल दूसरी नौकरी कहां मिलती है? हर महीने मिलने वाला वेतन एकदम बंद हो जाएगा. तनख्वाह के बिना गुजारा कैसे चलेगा? मकान का किराया कहां से देंगे? बच्चों की फीस, किताबें, घर का अन्य खर्च—इतना सब कुछ. कटकटा कर उन्हें हर मास 2,200 रुपए तनख्वाह मिलती है. सब का सब घर के अंदर व्यय हो जाता है. लेकिन अगर यह पैसा भी मिलना बंद हो गया तो कहां से करेंगे ये सब खर्च?

'यदि ऐसी नौबत आ गई तो कोई अन्य उपाय करना होगा...हां, अपने मायके से कुछ मदद लेनी होगी. पर वह भी आखिर कब तक हमारी सहायता करेंगे? बाबूजी, मां, भैया, भाभी और उन के छोटेछोटे बच्चे, उन का भी भरापूरा परिवार है. उन के अपने भी तो बहुत सारे खर्चे हैं. अंत में तो उन्हें खुद ही कुछ न कुछ अपनी आमदनी का उपाय करना होगा.

'हां, एक बात हो सकती है,' लता को उपाय सूझा, 'मैं अपने पिताजी से कहसुन कर उन्हें कोई छोटीमोटी दुकान खुलवा दूंगी. कितने कष्टदायक दिन होंगे वे भी. क्या हमारे लिए दूसरों का मोहताज बनने की नौबत आ जाएगी.'

लता सोचतेसोचते एक बार फिर वर्तमान में लौट आई. दोनों बच्चे चारपाई पर हर बात से बेखबर गहरी नींद सो रहे थे. वह सोचने लगी, 'काश वह खुद भी एक बच्ची होती.'

बाहर घुप अंधेरा छाया हुआ था. दूर कहीं से कुत्ते भूंकने की आवाज रात के सन्नाटे को तोड़ रही थी. उस ने अनुमान लगाया कि रात के 12 बज चुके होंगे. उस ने सिर को झटका दिया, 'मैं तो यों ही जाने क्याक्या सोचने लगी हूं. बाहर जाने वाले को किसी कारण ज्यादा दिन भी तो लग सकते हैं.'

लता ने अपने मन को समझाने की पूरीपूरी कोशिश की. दुश्चिंताएं उस का पीछा नहीं छोड़ रही थीं. न चाहते हुए भी उसे तरहतरह के खयाल सताने लगते थे.

'नहीं, उन का सामान चोरी नहीं हुआ होगा. तो फिर वह अभी तक लौटे क्यों नहीं थे? कल तो उन्हें जरूर आ जाना चाहिए.' और तब लता को पति पर रहरह कर गुस्सा आने लगा, अगर ज्यादा ही दिन लगाने थे तो कम से कम तार द्वारा तो सूचना दे ही सकते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सामने खड़े मुसकराते पति को देख कर लता दौड़ कर उन से लिपट गई.

वे फोन पर भी बता सकते थे कि वह अभी नहीं आ सकेंगे...आ जाएं एक बार, खूब खबर लूंगी उन की. आएंगे तो दरवाजा ही नहीं खोलूंगी. पर दरवाजा तो खोलना ही होगा. मैं उन से बात ही नहीं करूंगी. बेशक, कितना जी चाहे मनाते रहें. खूब तंग करूंगी. चाय तक के लिए नहीं पूछूंगी. वह समझते क्या हैं अपनेआप को. पता नहीं, जनाब वहां क्या गुलछर्रे उड़ा रहे होंगे. उन्हें क्या पता यहां उन की चिंता में कोई दिनरात घुले जा रहा है.'

अगले क्षण उसे किसी अज्ञात भय ने घेर लिया, 'कहीं वह किसी औरत वगैरह के चक्कर में न पड़ गए हों. आजकल बड़ेबड़े शहरों में कई पेशेवर औरतें केवल अजनबी व्यक्तियों को फंसाने के चक्कर में रहती हैं. जरूर ऐसा ही हुआ होगा. उन्हें फंसा कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन का सब कुछ लूट लिया होगा. पर ऐसा नहीं हो सकता. वह आसानी से किसी के चंगुल में फंसने वाले नहीं हैं. जरूर कोई अन्य कारण रहा होगा.' लता के दिलदिमाग में अजीब तर्कवितर्क चल रहे थे.

ऐसी कौन सी वजह हो सकती है जो वह अभी तक नहीं लौटे . कहीं कोई दुर्घटना वगैरह तो नहीं हो गई? नहीं, नहीं... लता एक बार तो भीतर तक कांप उठी.

'रिकशा से स्टेशन आते समय कोई दुर्घटना ... नहीं, नहीं... बस दुर्घटना या रेलगाड़ी दुर्घटनाग्रस्त हो गई हो. अगर चोट लगी होगी तो किसी हस्पताल में पड़े कराह रहे होंगे, नहीं, नहीं, 'उन्हें कुछ नहीं हो सकता'. लता मन ही मन पति की सलामती के लिए कामना करने लगी.

'अगर ऐसी कोई दुर्घटना हुई होती तो अब तक अखबार, रेडियो या टेलीविजन पर खबर आ जाती.'

लता चारपाई से उठी और अलमारी में से पिछले तीनचार दिन के समाचारपत्र ढूंढ़ कर ले आई. उस ने अखबारों के सभी पन्ने उलटपुलट कर एकएक खबर देख डाली. इलाहाबाद की किसी भी दुर्घटना की खबर नहीं थी.

'यह मैं क्या उलटासीधा सोचने लगी. कितनी मूर्ख हूं मैं,' लता ने अपनेआप को चिंता के भंवर से मुक्त करना चाहा. पर उस का व्याकुल मन उसे घेरघार कर फिर वहीं ले आता. उसे लगता, जैसे उस के पति हस्पताल में पड़े मौत से जूझ रहे हों.

'वहां तो उन की देखभाल करने वाला कोई भी नहीं होगा. बेहोशी की हालत में वह अपना अतापता भी नहीं बता पाए होंगे. कहीं वह वहीं पर दम न तोड़ गए हों. नहीं, नहीं, उन का लावारिस शव... यह सोच कर वह अंदर तक सिहर उठी. उस ने पाया कि उस की आंखें गीली हो गई हैं और आंसुओं की बूंदें उस के गालों पर लुढ़क आईं. अपनी नादान सोच पर उसे हंसी भी आई और गुस्सा भी.

'यह मुझे क्या होता जा रहा है. जागते हुए भी मुझे कैसेकैसे बुरे सपने आने लगे हैं.' लता कल्पना की आंखों से देख रही थी कि कुछ लोग उस के पति के शव को गाड़ी पर लाद कर ले आए हैं. घर पर भीड़ जमा हो गई है. चारों ओर हंगामा मचा हुआ है. लोग उस से सहानुभूति जता रहे हैं.'

उस ने एक बार फिर उन विचारों को अपने दुखी मन से झटक देना चाहा, पर विचारों की उड़ान पर किस का वश चलता है.

'उन के मरने के बाद मेरा क्या होगा? उन के अभाव में यह पहाड़ सी जिंदगी किस तरह कटेगी,' लता के विचारों की शृंखला लंबी होती जा रही थी.

'नहीं, नहीं, ऐसा नहीं हो सकता. ऐसे में दूसरी शादी ...नहीं, नहीं, किस से शादी करूंगी मैं? इस उम्र में कौन थामेगा मेरा हाथ. क्या कोई व्यक्ति उस के दोनों बच्चों को अपनाने के लिए राजी हो जाएगा. कौन करेगा इतना त्याग, पर मैं अभी इतनी बूढ़ी तो नहीं हो गई हूं कि कोई मुझे पसंद न करे. 24 वर्ष की उम्र ही क्या होती है. दो बच्चों को जन्म देने के बाद भी मैं सुंदर व अल्हड़ युवती सी दिखाई देती हूं. उस दिन पड़ोस वाली कमला चाची कह रही थीं, 'लता, लगता ही नहीं तुम दो बच्चों की मां हो. अगर मांग में बच्चे न हों और मांग में सिंदूर न हो तो कोई पहचान ही नहीं सकता कि तुम विवाहिता हो.'''

फिर एकाएक लता को सुशील का ध्यान हो आया, 'सुशील अविवाहित है. कई बार मैं ने सुशील को प्यार भरी नजरों से अपनी ओर निहारते पाया है. वह अकसर मेरे बनाए खाने की तारीफ किया करता है. मुझे खुद भी तो सुशील बहुत अच्छा लगता है. सुशील सुदर्शन है, सभ्य है, मनमोहक व्यक्तित्व वाला है. वह उन का दोस्त भी है. यहां घर पर आता जाता रहता है. मैं किसी के माध्यम से उस के दिल को टोहने का प्रयत्न करूंगी. यदि वह मान गया तो उस के साथ मेरा जीवन खूब सुखमय रहेगा. वह उन से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपका विश्वसनीय वाटरबरीज़ कम्पाउण्ड रेड लेबल अब खूबसूरत नये रूप में. ज़्यादा पतली, ज़्यादा आकर्षक.

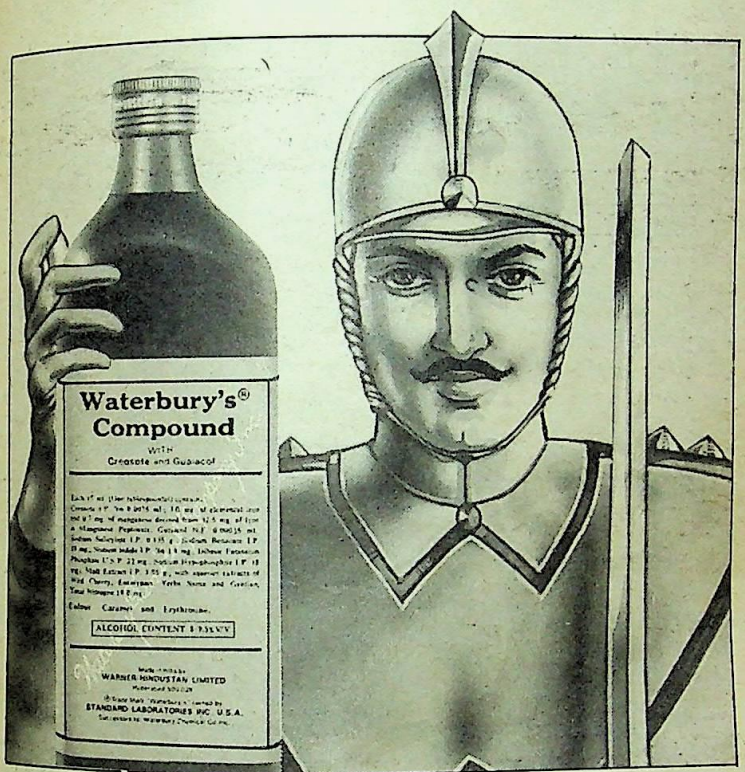

वाटरबरीज़ रेड लेबल, सर्दी और खांसी का मुकाबला करने का आज़माया हुआ वही जाना-माना अचूक फ़ार्मूला अब नयी खूबसूरत बोतल में. पहले से ज़्यादा पतली, ज़्यादा खूबसूरत बोतल में.

वाटरबरीज़ रेड लेबल में सर्दी के असर को बेअसर करने वाले मिनरल्स, विटामिन्स और आयरन हैं. साथ ही इसमें खांसी से राहत दिलाने के लिए है— क्रिओसोट और गायकॉल.

तो, आप भी अपने परिवार को वाटरबरीज़ रेड लेबल की सुरक्षा दीजिए.

वाटरबरीज़ रेड लेबल

सर्दी और खांसी के लिए आपका विश्वसनीय रक्षक.

LINTAS WHL WHL FZ 1811 HI

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऊंचे पद पर भी है. आय भी अच्छी है. उस के पास कार, बंगला सब कुछ है. वह जरूर मुझ से विवाह कर लेगा,' लता अनायास मन ही मन खुद को सुशील के साथ जोड़ने लगी.

'यह मैं क्या सोचने लगी,' लता ने अपने आप को धिक्कारा पर उस की चिंता बारबार उस के विचारों के भंवर में धकेल देती थी.

'मैं सुशील के साथ हनीमून भी मनाने जाऊंगी. वह मुझे कशमीर ले जाने के लिए कहेगा. मैं ने कभी कशमीर नहीं देखा है. उन्होंने कभी मुझे कशमीर नहीं दिखाया. कितनी बार उन से अनुरोध किया कि कभी कशमीर घुमा लाओ, पर वह हमेशा टालते रहे हैं. पर मुन्ना और मुन्नी? उन को मैं यहीं उन के नानानानी के पास छोड़ जाऊंगी.'

सुशील के साथ प्रेम क्रीडा, छेड़छाड़ इत्यादि क्षण भर में ही लता कई बातें अनर्गल सोच गई.

कशमीर का काल्पनिक दृश्य, तसवीरों में देखी डल झील, शिकारे, हाउस बोट, निशात बाग, शालीमार बाग, गुलमर्ग इत्यादि के बारे में सोच कर उस का मन रोमांचित हो उठा.

एकाएक उस की तंद्रा भंग हो गई. बाहर दरवाजे पर दस्तक हो रही थी. लता कल्पनाओं के संसार से मुक्त हो कर एकाएक वास्तविकता के धरातल पर लौट आई. अपने ऊटपटांग विचारों को स्मरण कर के वह ग्लानि से भर गई, 'कितने नीच विचार हैं मेरे. क्या मैं इतना गिर गई हूं? क्या इतनी ही पतिव्रता हूं मैं?' लता को लगा जैसे अभीअभी उस ने कोई भयंकर सपना देखा हो.

बाहर कोई अब भी दरवाजा खटखटा रहा था. 'इतनी रात गए कौन हो सकता है?' लता सोचती हुई उठी और आंगन में आ गई. दरवाजा खोला. देखा तो उस के पति ब्रीफकेस हाथ में लिए सामने खड़े मुसकरा रहे थे. वह दौड़ कर उन से लिपट गई.

प्रसन्नता के मारे उस की आंखों से आंसुओं की धाराएं बहने लगीं. ●

"आप अंदर जा कर आराम कीजिए. आप का दिल पहले से ही कमजोर है. डाक्टर ने भी बुरी खबरें सुनने से मना किया है."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आ गया टेली-जगत में अनदेखी विशेषताओं का अस्त्र शस्त्र लेकर...

टेली-तकनीक की नयी सीमाओं को लाघता, आ पहुंचा है रोबोटेक्स – एक ऐसा कलर टीवी जो उन्नत विशिष्टताओं के शस्त्रागार की ताकत पर टेली-जगत में अपना विजय-पताका फहरा रहा है।

रोबोटेक्स... तकनीकी जादूगरी और नये रूप-औ-अदाज का बेजोड़ समन्वय जिसे आप, एक 28 बटन वाले रिमोट कंट्रोल यंत्र के जरिये, दूर बैठे, उंगली मात्र के स्पर्श से जागृत कर सकते हैं

- अपने आप चालू व बंद होने की सुविधा ताकि आप अपने पसंदीदा कार्यक्रम देखना न भूलें.
- स्क्रीन पर सुबह-शाम का वक्त दर्शाने वाला विशेष डिजिटल घड़ी.
- स्क्रीन पर 6 रंगों में 11 टीवी कार्यों का डिसप्ले – जैसे ट्यूनिंग की बारीकी, चालू व बंद होने का समय, तथा आवाज़, चमक, रंग-संतुलन व कॉन्ट्रास्ट लेवल आदि.
- स्लीप-टाइमर सुविधा, जिस से, अगर आप चाहें तो टीवी खुद-ब-खुद 90, 80, 70, 60, 50, 40, 30, 20, या 10 मिनट के बाद बंद हो सकता है।
- अती-आधुनिक, 28 निर्देशों वाला रिमोट-नियंत्रण यंत्र जिस से टीवी आपके इशारों पर चले.
- दो-तर्फा डबल स्पीकर.
- पैनल-लॉक, जिसके प्रयोग से आप पूर्व-व्यवस्थित कंट्रोल्स को अनचाहे छेड़-छाड़ से सुरक्षित कर सकते हैं.

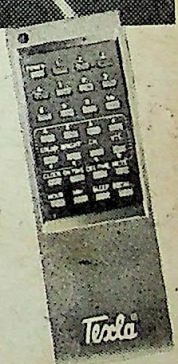

रोबोटेक्स
...कुछ ख़ास, कुछ अलग!

Texla®
सही पसंद

naa/ND/TX-88

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वाद चाँद आपके लिए!

बॉन बॉन न्यूट्रीन की

स्वादिष्ट, क्रीमवाली, फ्रूटी टाफियाँ
चार मज़ेदार स्वादों में

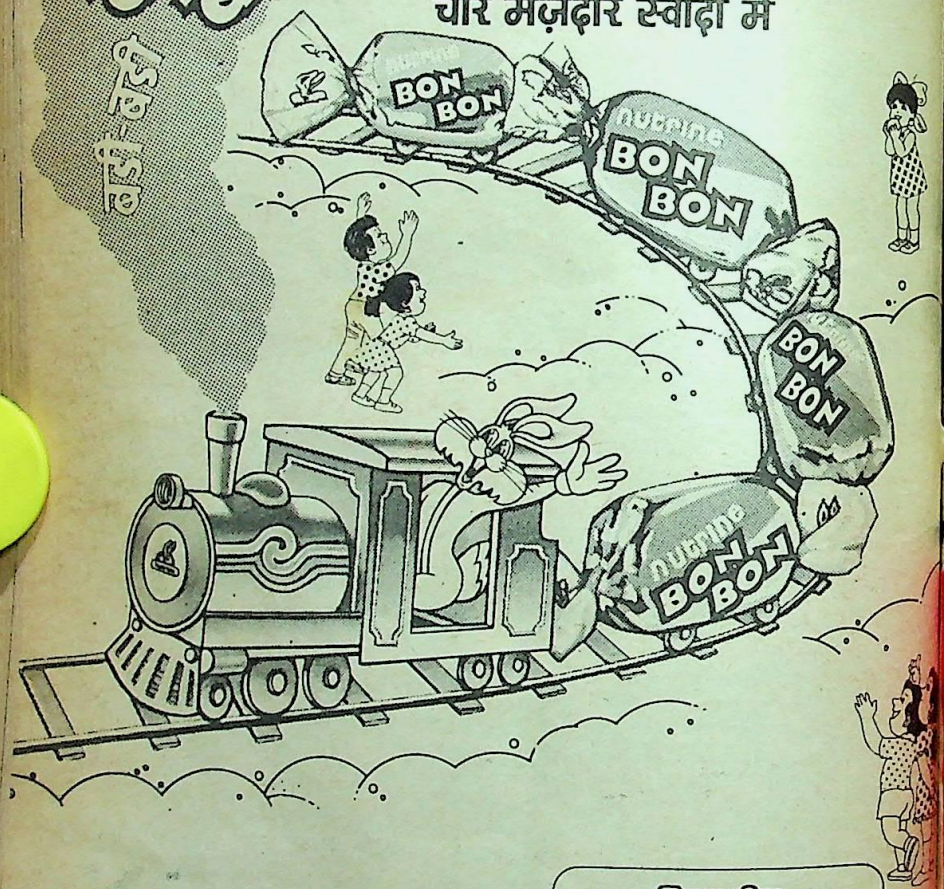

मिल्क क्रीम
लैमन कोकोनट
फ्रूटी·चाकोमिंट

लाजवाब नई बॉन बॉन
न्यूट्रीन की ही स्वाभाविक रूप से!

utrine भारत में सबसे ज़्यादा बिकनेवाला चॉकलेट
ट्रीन कन्फ़ेक्शनरी कं. प्रा. लि. ठाणे

न्यूट्रीन
बॉन बॉन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

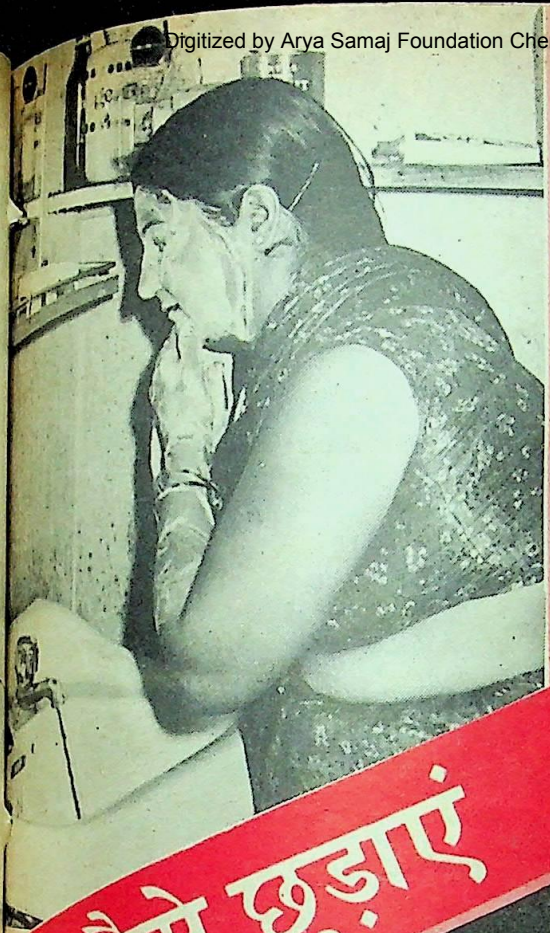

रंग छुड़ाने के लिए चेहरे को पहले साफ पानी से अच्छी तरह धोएं. फिर नहाने वाला साबुन लगाएं.

बाद जब होली खेलना बंद हुआ तो अशोक परिवार के तीनों सदस्यों ने अपनाअपना चेहरा साफ करने के लिए पहले पानी गरम किया और फिर कपड़े धोने के अधिक कास्टिक वाले साबुन से रंगों को धोना शुरू किया. लेकिन रंग ऐसे थे कि वे कुछ फीके तो पड़े गए लेकिन उतरने का नाम नहीं ले रहे थे. तब उन्होंने दही का प्रयोग किया.

कैसे छुड़ाएं होली के रंग

लेख • राजेंद्र शर्मा

गत वर्ष के होली दिन सुमन तथा उन के पति अशोक ने अपने पड़ोसियों और मित्रों के साथ जम कर होली खेली. इस काम में उन का बेटा दीपक भी पीछे नहीं रहा. उस दिन दोपहर होने तक तीनों के चेहरे विभिन्न रंगों से इतने रंगबिरंगे हो गए थे कि देखते ही उन पर तरस आता था.

होली के दिन ऐसी स्थिति हम में से कई लोगों की हो जाती हैं. उस दिन दोपहर लेकिन इस से भी कोई लाभ नहीं हुआ. फिर बारी आई चेहरे पर मिट्टी का तेल लगाने की. वह भी बेकार ही सिद्ध हुआ.

इस परिवार के सदस्यों के चेहरे पर लगे रंगों को देख कर ऐसा लगता था जैसे कि वे रंग प्राकृतिक न हो कर कृत्रिम हों. ऐसे कृत्रिम रासायनिक रंगों को वस्त्र उद्योग में रेशमी, सूती तथा ऊनी वस्त्रों को रंगने के लिए इस्तेमाल किया जाता है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फूल जैसा चेहरा, मोहक, मासूम, आपको भी चाहिये.
पर फोडे - फुन्सीयोंको फोडिये नहीं.
सिर्फ गरम पानीसे चेहरा धोइये, पोछिये. हररोज़
कैलास जीवन का चिकना लेप बनाइए, फिर देखिये.
आपका वही चेहरा फुल जैसा निखरा, तरोताजा बनेगा.
क्यों कि कैलास जीवन का मतलब है,
खुशबूदार चंदन, शीतल कपूर तथा
आयुर्वेदीय औषधीयोंका समतुल्य मिलाप.
वह देह में भिद जाएगा और अनचाही गर्मी का मुकाबला करेगा.

कैलास जीवन

मल्टिपर्पज आयुर्वेदिक क्रीम

आसम् पुणे २

"जब कभी रसोई में मुझे ज्यादा देर काम करना पड़ता है,
तो आँखों में जलन और खुजलाहट होने लगती है
अतः मैं हफ्ते में तीन बार सिनेरारिया श्वाबे डालती हूँ"

सिनेरारिया श्वाबे –
आँखों की जलन की रामबाण दवा

सिनेरारिया मैरिटिमा सक्कस श्वाबे एक भरोसेमंद होमियोपैथिक औषधि है जो दर्द, जलन, खुजलाहट जैसी आँखों की आम तकलीफों में बहुत फायदेमंद है और मोतियाबिंद रोकने में मदद करती है।

दुनिया भर में घर परिवारों में पिछले 20 सालों से इसका उपयोग किया जा रहा है।

* परिवार के हर सदस्य के लिये उपयोगी
* आँखों को स्वस्थ रखती है
* आँखें दुखने व मोतियाबिंद की आजमायी हुई औषधि

डा० बिलिमर श्वाबे आफ वेस्ट जर्मनी की देन
दवाईयों की सभी बडी दुकानों पर उपलब्ध

SCHWABE **श्वाबे**

सिनेरारिया मैरिटिमा सक्कस

विश्वस्नीय चक्षु उपचार जिनकी राय मानिये
जिन्होंने इससे फ़ायदा पाया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रंगों से पुते चेहरे को साफ करने के लिए आप तरहतरह के उपाय करती हैं जिस से आप की त्वचा को नुकसान भी पहुंच सकता है. तो लीजिए पेश है रंग छुड़ाने के कुछ उपाय, जिन से आप की त्वचा का सौंदर्य भी बना रहेगा और रंग भी जल्दी छूटेगा.

होली के दिन वह प्राकृतिक रंग जो कुछ वर्ष पहले तक लोग पतंग नाम के पेड़ की छल को कूट कर सुखा कर बनाया करते थे, अब बाजार में कम ही देखने को मिलता है. उस की जगह गुलाल में आजकल एसिड स्कारलेट या सोडामिन जैसे रसायन प्रयोग किए जाते हैं. ऐसे रंगों से खेलते समय आप अगर कुछ बातों को ध्यान में रखें तो एक तो आप के चेहरे से ये रंग जल्दी उतर जाएंगे तथा दूसरे आप की त्वचा का सौंदर्य भी बना रहेगा.

होली खेलने के समय आप को चाहिए कि आप रंग लगने के तुरंत बाद या जितनी जल्दी हो सके अपने रंग लगे भाग को साफ सूती कपड़े से पोंछ डालें. आप की त्वचा पर लगा सारा रंग दोतीन बार पोंछने से ही हट जाएगा.

जिन की त्वचा ज्यादा संवेदन शील होता है, उन्हें त्वचा पर रंग लगने से जलन या खुजली सी होने लगती है. इसे त्वचा रोग विशेषज्ञ 'इरिटेंट डर्मेटाइटिस' भी कहते हैं. त्वचा पर खुजली होने के बाद उस स्थान पर सफेद से चकते उभरने शुरू हो जाते हैं. ऐसी संवेदनशील त्वचा वाले व्यक्तियों को चाहिए कि वे रंग लगने के बाद धूप में बिलकुल भी न जाएं क्योंकि त्वचा पर लगे ये कृत्रिम रंग धूप में त्वचा को और भी खराब कर देते हैं. इसलिए ऐसी अवस्था में अपनी त्वचा को किसी सूखे कपड़े से पोंछ कर साधारण पानी से तीनचार बार तुरंत धो लेना चाहिए. इस से यह समस्या नहीं होगी.

चेहरे पर या हाथ पर लगे रंगों को कभी भी गरम पानी से नहीं धोना चाहिए. यह एक भ्रामक धारणा है कि चेहरे को गरम पानी से धोने पर रंग जल्दी उतर जाते हैं. बल्कि वास्तविकता यह है कि गरम पानी के प्रयोग से कृत्रिम रंग त्वचा को और भी पक्का रंग देते हैं.

कुछ लोगों का यह मानना है कि कपड़े धोने वाला साबुन (अधिक कास्टिक वाला) रंगों को जल्दी उतारता है. लेकिन ऐसा नहीं है. चेहरे पर लगी ग्रीस या तेल को तो यह जल्दी उतारता है, लेकिन रंगों को नहीं. इस लिए चेहरे को या हाथों को सब से पहले साफ साधारण पानी से खूब धोना चाहिए. उस के बाद हलके नहाने के साबुन से धोना अच्छा रहता है.

कुछ महिलाएं अपने चेहरे पर लगे रंगों को दही या मिट्टी के तेल से धो कर छुड़ाती देखी गई हैं. यह भी एक गलत तरीका है क्योंकि दही से कुछ रंग त्वचा पर और भी पक्के हो जाते हैं जबकि मिट्टी का तेल तो त्वचा के लिए बहुत ही हानिकारक होता है. इसी तरह, जो लोग हलके चूने का पानी प्रयोग करते हैं, वे भी अपनी त्वचा को नुकसान ही पहुंचाते हैं.

कपड़े से पोंछने व कोरे पानी या फिर हलके साबुन से धोने पर भी आप की त्वचा से रंग नहीं उतरता तो इस से घबराएं नहीं क्योंकि त्वचा पर लगा रंग स्वयं ही कुछ दिनों में उस स्थान की कोशिकाओं के भर जाने पर नई कोशिकाओं के आने से उतर जाएगा. आप को तो होली खेलने के समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि कहीं रंग गलती से आप के मुंह में या फिर आंखों में न चले जाएं क्योंकि मुंह में जाने से मृत्यु भी हो सकती है, जबकि आंखों में जाने से कंजक्टिवाइटिस रोग हो जाता है. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत में प्रजातंत्र

(पृष्ठ 34 का शेषांश)

न्यायालय की लखनऊ पीठ ने वह याचिका खारिज कर दी. केवल कुछ प्रश्न इस संबंध में पूछे गए कि याचिका के नोटिस कब और किस अधिकारी पर तामील हुए थे.

अपने घर, पासपड़ोस तथा नगर की, समाज के एक अंग के रूप में स्वयं देखरेख करना हर व्यक्ति का वह अधिकार है, जिसे नागरिकता का मूल रूप कहा जाता है. सभ्यता की यह पहली पहचान है. प्राचीन काल में मिस्र, सुमेर, चीन और उत्तर भारत में सभ्यता का आरंभ ही स्वायत्तशासी नगर राज्यों के रूप में हुआ था. कालांतर में नगर राज्यों का आदर्श देश यूनान बना. इन स्वतंत्र नगर राज्यों की प्रशासन परंपरा आज भी इंगलैंड में अस्तित्व में है. प्रति तीन वर्ष बाद इन महानगर परिषदों के चुनाव होते हैं. योर्क, चेस्टर, लिवरपूल आदि 16 रोमन-कालीन प्राचीन महानगरों में परिषद के हर नए चुनाव के बाद, इंगलैंड का राजा या रानी स्वयं नगर के मेयर और शेरिफ को शासन का नया चार्टर देने आता है.

यूनान में नगरपरिषदों का विनाश हुआ. नागरिकों के पारस्परिक मतभेदों का लाभ उठा कर संपन्न व्यापारी वर्ग द्वारा उन पर हावी हो जाने से ऐसे व्यक्ति को यूनानी 'टाइरेंट' (निरंकुश) कहते थे. टायर युद्ध का देवता था. कालांतर में यह शब्द ऐसे राजा का पर्यायवाची बना, जो संवैधानिक तरीके से अपने अधिकार प्राप्त किए बिना लोगों पर मनमाने कर लगाता था. उत्तर प्रदेश की वर्तमान सरकार क्या उसी प्रकार की 'टाइरेंट' नहीं? यह निरंकुशता अशांति, उद्वेलन, हलचल और कभीकभी तोड़फोड़ को जन्म दे रही है.

देश तथा काल की जिस परिस्थिति में आज हम रह रहे हैं, उस परिस्थिति को गंभीरतापूर्वक ग्रहण नहीं किया जा रहा है. सत्ताधारी चुनाव से बचने और अपनी कुरसी बचाए रखने की असंवैधानिकता करते रहेंगे तो चुनावों के बाद भी फिलिपींस के भूतपूर्व अध्यक्ष मारकौस के चुनाव जीतने के बाद उत्पन्न हुई स्थिति भारत में भी आएगी. आज बंगला देश उसी परेशानी में फंसा है. दक्षिण कोरिया में भी सत्ता लोलुपता अशांति का कारण बन गई है.

दिल्ली में नगर परिषद तथा महानगर संकायों का चुनाव इस बहाने टाला गया है कि प्रशासनिक सुधारों पर विचार करने के लिए एक समिति गठित की जा चुकी है और उस समिति की रिपोर्ट आने पर चुनाव कराए जाएंगे. यह एकदम लचर तर्क है. स्वयं लोक सभा के सांसद (जिन में सत्ताधारी दल के लोग भी हैं) यह निर्णय ले चुके हैं कि दिल्ली को एक राज्य का दरजा मिलना चाहिए. ऐसी स्थिति में किसी प्रशासनिक सुधार समिति का गठन कोई अर्थ नहीं रखता है. उचित तो यही था कि दोनों स्थानीय निकायों के चुनाव करा के निर्वाचित सदस्यों को ही दिल्ली राज्य विधान सभा के विधायकों के रूप में शपथ दिलाई जाती.

प्रजातंत्र के आधारभूत मूल्यों और सिद्धांतों को ताक पर रख कर भारत सरकार ने संसद के अधिवेशन के बाद एक अध्यादेश जारी किया और नागरिकों के अधिकारों पर यह प्रहार किया. दिल्ली नगर निगम और महानगर परिषद के चुनावों को एक वर्ष के लिए मात्र टाला ही नहीं गया, बल्कि नगर निगम एक्ट, 1957 तथा महानगर परिषद एक्ट, 1966 में संशोधन कर के यह अध्यादेश जारी कर दिया कि भविष्य में दिल्ली के इन निकायों के चुनाव तीन वर्ष तक भी टाले जा सकते हैं. इस का अर्थ यह हुआ कि विश्व में सब से बड़े लोकतंत्र भारत की राजधानी के निवासियों के नागरिक स्वायत्तता के अधिकारों को ठीक वैसे समाप्त कर दिया जाएगा जैसे उत्तर प्रदेश में किया गया है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनी आय बढ़ाइए – आयकर नहीं

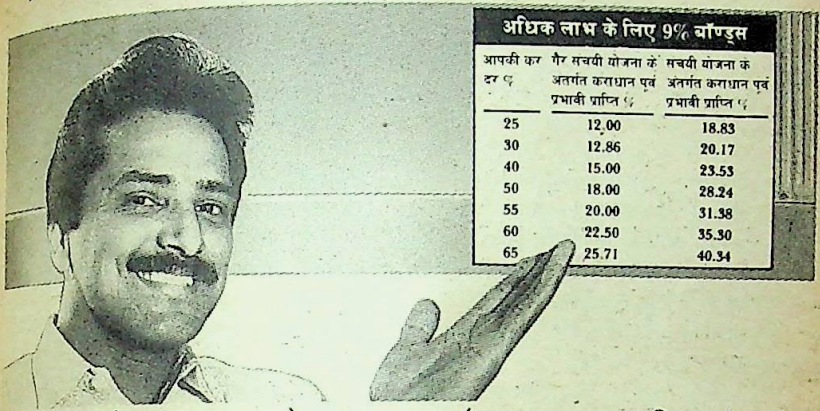

अधिक लाभ के लिए 9% बॉण्ड्स

आपकी कर दर %	गैर सचयी योजना के अंतर्गत कराधान पूर्व प्रभावी प्राप्ति %	सचयी योजना के अंतर्गत कराधान पूर्व प्रभावी प्राप्ति %
25	12.00	18.83
30	12.86	20.17
40	15.00	23.53
50	18.00	28.24
55	20.00	31.38
60	22.50	35.30
65	25.71	40.34

9% (कर-मुक्त) व 13% (कर छूट सहित) एन.टी.पी.सी. पावर बॉण्ड्स

9% (कर-मुक्त) बॉण्ड्स

- सभी करदाताओं के लिए ब्याज बिना सीमा के आयकर मुक्त
- संचयी योजना के अन्तर्गत कुल ब्याज रु. 1412/- वार्षिक प्राप्ति दर 14.12%
- आबंटन तिथि के तीन वर्ष बाद छोटे निवेशकों से सममूल्य पर वापस क्रय की सुविधा
- 10 वर्ष बाद सममूल्य पर विमोचन

साथ ही पेश हैं – 13% बॉण्ड्स

- आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80L के अन्तर्गत ब्याज कर-मुक्त
- संचयी योजना के अन्तर्गत कुल ब्याज रु. 1415/- वार्षिक प्राप्ति दर 20.21%
- आबंटन तिथि के एक वर्ष बाद छोटे निवेशकों से सममूल्य पर वापस क्रय की सुविधा
- 7 वर्ष बाद सममूल्य पर विमोचन

और अनेक समान विशेषताएं

- निवेश पूर्णतया सम्पत्ति कर से मुक्त
- स्रोत पर आयकर की कटौती नहीं
- खैराती एवं धार्मिक निधियों को आयकर में विशेष लाभ
- ब्याज की दो योजनाएं: संचयी एवं गैर-संचयी
- संचयी योजना के अन्तर्गत ब्याज छमाही जोड़ा जाएगा
- गैर-सचयी योजना के अन्तर्गत बॉण्ड्स के साथ ही छमाही, उत्तर-दिनांकित ब्याज वारंट पेशगी भेजे जाएंगे जिनका स्वतः ही निर्धारित तिथि पर भुगतान लिया जा सकता है
- आवेदन पत्र के साथ प्राप्त धन की वसूली की तारीख ही ब्याज देय
- पृष्ठांकन और सुपुर्दगी द्वारा आसानी से हस्तान्तरणीय
- हस्तांतरण स्टैम्प ड्यूटी से मुक्त
- देश के 7 प्रमुख स्टॉक एक्सचेंजों की सूची में दर्ज
- कंपनी की सम्पत्तियों द्वारा पूर्णतया सुरक्षित
- बोली गारंटियों/बयाना एवं जमानत के तौर पर एन.टी.पी.सी. द्वारा स्वीकार्य

40,00,000 सिक्योर रिडिमेबल, रु. 1000 प्रत्येक के 9% (कर-मुक्त) एवं 13% बॉण्ड्स (कर छूट सहित) का सममूल्य पर सार्वजनिक निर्गम – कुल राशि रु. 400 करोड़

निर्गम आरम्भ : 10 मार्च 1988
निर्गम समाप्ति : 19 मार्च 1988

निर्गम के प्रबंधक

कैनबैंक फ़ाइनेन्शियल सर्विसेज़ लि.

NTPC
नेशनल थर्मल पावर कॉरपोरेशन

नेशनल थर्मल पावर कॉरपोरेशन लि.
(भारत सरकार का उद्यम)
पंजीकृत कार्यालय : एन.टी.पी.सी. स्वायर, 62-63, नेहरू प्लेस, नई दिल्ली-110 019

Sobhagya/42/88/H

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यक्तिगत विज्ञापन
वैवाहिक विज्ञापन
वर चाहिए

24, 165 सें.मी., शाहू वैश्य, सुंदर, गौरवर्ण, ग्रेजुएट, डिप्लोमा इलेक्ट्रोनिक्स, रेडियो इंजीनियर और 22, 170 सें.मी., गौरवर्ण,सुंदर, आयुर्वेदिक पांचवां वर्ष, कन्याओं हेतु सजातीय, डाक्टर, सी.ए., इंजीनियर, कार्यरत, शिक्षित वर चाहिए. गुजरात में प्रथम पसंदगी. लिखें: वि.नं. 8970, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जांगिड़, 24, 154 सें.मी., गरीब, बुद्धिमान, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु कार्यरत, शिक्षित वर चाहिए. गोत्र सहित लिखें: वि.नं. 8971, सरिता, नई दिल्ली-110055.

मेरठ निवासी, हिंदू जाट, 20 वर्षीया, 157 सें.मी., बी.एससी., गेहुआं रंग, सुशील, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु सजातीय, शासकीय सेवारत, शाकाहारी वर चाहिए. पिता शासकीय कर्मचारी, दहेज नहीं. शीघ्र विवाह. लिखें: वि.नं. 8972, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी, 26 वर्षीया, 154 सें.मी., सुंदर, गौरवर्णीय, समझदार, उच्च शिक्षित, कुंआरी कन्या, जिस का निर्दोष परिस्थिति में पूर्वपति की पौरुषहीनता के कारण कोर्ट से विवाह विच्छेद हुआ है, के पुनः विवाह हेतु सुलझे व प्रगतिशील, माहेश्वरी/अग्रवाल, उच्च परिवार में संबंध आमंत्रित. कम उम्र निस्संतान विधुर भी विचारणीय. लिखें: वि.नं. 8973, सरिता, नई दिल्ली-110055.

30, 155 सें.मी., वकील, मध्यप्रदेशीय, संपन्न, अग्रवाल परिवारीय, सुंदर कन्या हेतु उपयुक्त वर चाहिए. उत्तम विवाह. जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 8974, सरिता, नई दिल्ली-110055.

35, 56/158 सें.मी., जाट कन्या, एम.ए., बी.एड., स्मार्ट, 1,500/-, सेवारत शिक्षिका, आकर्षक, गेहुआं रंग, स्वावलंबी, बड़ौदा निवासी हेतु सेवारत, 35-39, अपरिणीत, निस्संतान, विधुर अथवा तलाकशुदा, सुयोग्य, शिक्षित वर चाहिए. म.प्र., गुजरात, राजस्थान निवासी को प्राथमिकता. प्रथम बार में पूर्ण विवरण लिखें: वि.नं. 8975, सरिता, नई दिल्ली-110055.

मध्य प्रदेश, भोपाल निवासी, हैहय क्षत्रिय (कलवार), 21, 154 सें.मी., बी.एससी., बी.एड., गौरवर्ण कन्या हेतु वर. लिखें: वि.नं. 8982, सरिता, नई दिल्ली-110055.

30, 157 सें.मी. कानवेंट शिक्षित, ग्रेजुएट, संभ्रांत अग्रवाल परिवारीय, सुंदर, स्लिम, तलाकशुदा कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 8983, सरिता, नई दिल्ली-110055.

मध्यप्रदेशीय, 23, 160 सें.मी., बी.एससी., एलएल.बी. तृतीय वर्ष (अध्ययनरत), अति सुंदर, गोरी, ब्यूटीशियन, गृहकार्यदक्ष, बिश्नोई वैश्य कन्या हेतु डाक्टर, इंजीनियर, उच्च व्यापारी वर चाहिए. सरकारी सेवारत को प्राथमिकता. अग्रवाल भी संपर्क करें. लिखें: वि.नं. 8984, सरिता, नई दिल्ली-110055.

बी.ए.एम.एस., 26 वर्षीया, मेडिकल आफिसर एवं 30 वर्षीया, डबल एम. ए., वार्ष्णेय कन्याओं हेतु सुयोग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9070, सरिता, नई दिल्ली-110055.

बीसा, अग्रवाल, मंगली, गृहकार्यदक्ष, सुंदर, एम.ए., 25 वर्षीया, 163 सें.मी. कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. उत्तम विवाह. लिखें: वि.नं. 9086, सरिता, नई दिल्ली-110055.

36 वर्षीया, माहेश्वरी, गृहकार्यदक्ष, साफ रंग, सुशील, स्वस्थ, निस्संतान, परित्यक्ता लड़की हेतु आत्मनिर्भर, माहेश्वरी, अग्रवाल वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9087, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सनाढ्य ब्राह्मण, 23, 166 सें.मी., बी.एससी., बी.एड., गेहुआं रंग, आकर्षक नाकनक्श, छरहरी, विनम्र, व्यवहारकुशल, पूना स्थित कन्या हेतु इंजीनियर वर चाहिए. उत्तम विवाह. लिखें: वि.नं. 9088, सरिता, नई दिल्ली-110055.

31 वर्षीया, बंगाली कायस्थ, सरकारी क्लर्क (पटना), साफ रंग, हेतु बंगाली में जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 9089, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24, 150 सें.मी., एम.ए., बी.एड., कुर्मि क्षत्रिय, गोरी कन्या (माता खत्री) हेतु सुशिक्षित, नौकरी, व्यवसाय में संलग्न वर चाहिए. जातिबंधन नहीं. सजातीय या खत्री को वरीयता. लिखें: वि.नं. 9090, सरिता, नई दिल्ली-110055.

30 वर्षीया, 150 सें.मी., कनौजिया (छोबी), एम.ए., बी.एड., रंग गेहुआं, मध्यमवर्गीय हेतु सजातीय, शिक्षित, सेवारत वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9091, सरिता, नई दिल्ली-110055.

22, 150 सें.मी., मित्तल अग्रवाल, गेहुआं रंग, ग्रेजुएट, सिलाई, गृहकार्यदक्ष, मध्यमवर्गीय कन्या हेतु वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9092, सरिता, नई दिल्ली-110055.

34 वर्षीया, मित्तल अग्रवाल, 158 सें.मी., संभ्रांत परिवार की गृहकार्य में दक्ष कन्या हेतु सुयोग्य, स्वावलंबी वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9093, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27 वर्षीया, 150 सें.मी., जायसवाल, एम.ए.-गेहुआं रंग, सरकारी प्रतिष्ठान अधिकारी, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु उपयुक्त वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9094, सरिता, नई दिल्ली-110055.

30, 162 सें.मी., मध्यमवर्गीय, (मधुमेह ग्रस्त) कन्या हेतु तलाकशुदा, विधुर वर भी लिखें: वि.नं. 9095, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25½, 157 सें.मी., ड्रेस मेकिंग/डिजाईनिंग डिप्लोमा प्राप्त, दिल्ली नगर निगम कार्यरत, सुंदर, सुशील गौरवर्ण, गृहकार्यदक्ष, बी.ए. अध्ययनरत, जैन कन्या हेतु जैन/वैश्य वर चाहिए. शीघ्र उत्तम विवाह. प्रथम बार

सरिता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूर्ण विवरण. लिखें: वि.नं. 9096, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26, वर्षीया, 157 सें.मी., हायर सेकंडरी एवं नर्स डिप्लोमा, रंग साफ, सुंदर, सुशील, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु सुयोग्य तथा दहेज न मांगने वाला वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9097, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सुंदर, स्लिम, 23, 148 सें.मी., एम.एससी., पंजाबी अरोड़ा कन्या हेतु डाक्टर, इंजीनियर, सी.ए. या आर्मी आफिसर वर चाहिए. शीघ्र, उत्तम विवाह. लिखें: वि.नं. 9098, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जाटव, 27 वर्षीया, 154 सें.मी., सुंदर, गेहुआं रंग, बी.एससी., एम.ए., बी.एड. (अध्ययनरत) कन्या हेतु सुयोग्य, सजातीय वर. लिखें: वि.नं. 9099, सरिता, नई दिल्ली-110055.

32 वर्षीया, 152 सें.मी., बी.ए., आंगनबाड़ी सुपरवाइजर, गृहकार्यनिपुण, पंजाबी मुलतानी कन्या हेतु स्वावलंबी, दिल्लीवासी वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9100, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26 वर्षीया, 158 सें.मी, एम.एससी. (प्रथम श्रेणी), 2,200/-, काशी हिंदू विश्वविद्यालय बनारस में सेवारत, पंजाबी अरोड़ा, सुंदर कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9101, सरिता, नई दिल्ली-110055.

22 वर्षीया, जाट सिख, चहल गोत्र, सुंदर, साफ रंग, प्राइवेट सेवारत, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु सेवारत या व्यवसायरत, सजातीय वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9102, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26, 152 सें.मी., कुर्मि क्षत्रिय, सुंदर, गृहकार्यदक्ष, राजनीतिशास्त्र में पीएच.डी. कर रही, सुशिक्षित परिवारीय कन्या हेतु सजातीय, शासकीय सेवारत वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9103, सरिता, नई दिल्ली-110055.

22 वर्षीया, 164 सें.मी., कान्यकुब्ज, ब्राह्मण, एम.एससी. (फिजिक्स) सदैव प्रथम श्रेणी, कन्या हेतु ब्राह्मण, इंजीनियर, वैज्ञानिक वर. कान्यकुब्ज विदेश स्थित, कंप्यूटर स्पेशलिस्ट को प्राथमिकता. शीघ्र विवाह. सविवरण लिखें: वि.नं. 9104, सरिता, नई दिल्ली-110055.

21, 152 सें.मी., बी.ए. अध्ययनरत, जाटव, स्वस्थ, सुंदर कन्या हेतु सरकारी सेवारत वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9105, सरिता, नई दिल्ली-110055.

मध्यप्रदेशीय जायसवाल, 24 और 28 वर्षीया, उच्चशिक्षित, शासकीय सेवारत, गृहकार्यदक्ष कन्याओं हेतु योग्य वरों की आवश्यकता है. लिखें: वि.नं. 9106, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24 वर्षीया, 168 सें.मी., मांगलिक, राजपूत (राठौर), बी.एससी., एम.ए. समाजशास्त्र, रंग साफ, एल.सी.सी. ट्रेड, संगीत, पेंटिंग, कुकरी में डिप्लोमा एवं 22 वर्षीया, 166 सें.मी., एम.एससी. प्राणिशास्त्र, रंग सरकारी स्कूल, गृहकार्यदक्ष कन्याओं हेतु सजातीय वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9107, सरिता, नई

दिल्ली-110055.

20 वर्षीया, कान्यकुब्ज ब्राह्मण, सुंदर, गोरी, बी.ए. पास, एक आंख कृत्रिम, कन्या हेतु सजातीय, आत्मनिर्भर वर चाहिए. दहेज नहीं. लिखें: वि.नं. 9108, सरिता, नई दिल्ली-110055.

संभ्रांत सोलंकी राजपूत परिवार की, सुशील, सुंदर, आकर्षक, 20½, 152 सें.मी., सामान्य, मंगली, एम.ए. कन्या के लिए सुयोग्य, सुस्थापित, सजातीय वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9109, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गढ़वाली ब्राह्मण, 26 वर्षीया, 167 सें.मी., एम.ए., रंग गेहुआं, सुंदर, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु सजातीय, सुयोग्य वर चाहिए. लिखें: वि.न. 9110, सरिता, नई दिल्ली-110055.

उच्च अधिकारी, सजातीय, कार्यरत, ग्रेजुएट, इंजीनियर वर चाहिए. कन्या एम.एससी. 22, 158 सें.मी., गौरवर्ण, स्मार्ट, सूर्यवंशी क्षत्रिय (राजपूत). पिता उच्च अधिकारी. लिखें: वि.नं. 9111, सरिता, नई दिल्ली-110055.

164 सें.मी., गौरवर्ण, सुंदर, कानवेंट शिक्षित, एम.बी.बी.एस., 23 वर्षीया, प्रतिष्ठित माहेश्वरी परिवार की सुशील कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. विज्ञापन उत्तम चयन हेतु. लिखें: वि.नं. 9112, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जातिबंधन नहीं. कायस्थ सक्सेना, प्रतिष्ठित परिवार, देहरादून निवासी, अपनी पुत्री, स्मार्ट, स्लिम, गोरी, सुंदर, 24 वर्षीया, 160 सें.मी., प्रोफेशनली शिक्षित, बी.काम., पोस्ट ग्रेजुएट, डिप्लोमा टूरिज्म, प्रसिद्ध पब्लिक अंडरटेकिंग देहरादून में कार्यरत, अच्छा पद, हेतु योग्य वर चाहिए. भाई इंजीनियर, पिता प्रशासनिक सेवानिवृत्त, माता वरिष्ठ अध्यापिका, देहरादून/गढ़वाल रीजन/पश्चिम उत्तरप्रदेशीय कार्यरत वर को प्राथमिकता. लिखें: वि.नं. 9113, सरिता, नई दिल्ली-110055.

30 वर्षीया, सुंदर, अरोड़ा संतानोपत्ति में असमर्थ कन्या हेतु सजातीय, विधुर वर चाहिए. बच्चे समेत मान्य. लिखें: वि.नं. 9114, सरिता, नई दिल्ली-110055.

35 वर्षीया, गुजराती ब्राह्मण, स्नातकोत्तर, शिक्षिका युवती के लिए सजातीय अथवा योग्य ब्राह्मण वर की. मध्यप्रदेश निवासी को प्राथमिकता लिखें: वि.नं. 9115, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24½ वर्षीया, 162 सें.मी., बी.काम., सुंदर, गृहकार्यदक्ष, माहेश्वरी कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. शीघ्र उत्तम विवाह. लिखें: वि.नं. 9116, सरिता, नई दिल्ली-110055.

प्रतिष्ठित खटीक परिवारीय, एम.ए., बी.एड., सुंदर, सुशील गृहकार्यदक्ष कन्या, 26, 148 सें.मी., 2,100/-, सरकारी स्कूल में अध्यापिका हेतु सेवारत, योग्य, सजातीय वर चाहिए. कन्या के भाई आई.ए.एस. (अलाइड सर्विस) बैंक अधिकारी, शीघ्र विवाह. लिखें: वि.नं. 9117, सरिता, नई दिल्ली-110055.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized By Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गौड़ ब्राह्मण, 34, बी.एससी., बी.एड., गोरा रंग, गुजरात स्थित, स्वस्थ, सुशील, गृहकार्यकुशल कन्या हेतु वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9185, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कोटा निवासी, 26, 150 सें.मी., एम.ए., बी.एड., तथा आरेखन एवं पेंटिंग में पोस्ट एम.ए. डिप्लोमा प्राप्त, राजपूत कन्या हेतु सजातीय, उच्च सेवारत/व्यवसायरत, शिक्षित, योग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9186, सरिता, नई दिल्ली-110055.

छत्तीसगढ़ निवासी, 25 वर्षीया, तंबोली कन्या, एम.एससी. बायोकेमेस्ट्री हेतु सुयोग्य, सजातीय/विजातीय वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9187, सरिता, नई दिल्ली-110055.

रामगढ़िया सिख पंजाबी, बी.ए., गेहुआं रंग, केंद्रीय सरकार कर्मचारी, 27 वर्षीया, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु सुशिक्षित, सरकारी सेवारत या व्यवसायरत, सजातीय, सुयोग्य वर चाहिए, लिखें: वि.नं. 9188, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गुजराती ब्राह्मण, 28 वर्षीया, 165 सें.मी., कानवेंट शिक्षित, एम.ए. सायकोलोजी प्रथम श्रेणी, सुंदर, गौरवर्ण कन्या हेतु कार्यरत, डाक्टर, इंजीनियर, सी.ए., प्रोफेशनल वर चाहिए. जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 9189, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24, 155 सें.मी., मैथिल ब्राह्मण, सांडिल्य गोत्रीय, मेडिको, एम.एस. (ज.सर्जरी) अध्ययनरत, गौरवर्णीय, सुंदर,गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु योग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9190, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुशवाहा राजपूत, 23, 163 सें.मीं., पोस्ट ग्रेजुएट होमसाइंस, व्याख्याता, मांगलिक कन्या हेतु सजातीय, मांगलिक वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9191, सरिता, नई दिल्ली-110055.

श्रीवास्तव, मांगलिक, 24½ वर्षीया, 156 सें.मी., बी.काम. (परीक्षाफल प्रतीक्षित), गेहुआं वर्ण, आकर्षक, सुंदर, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु सजातीय, सुयोग्य वर चाहिए. शीघ्र उत्तम विवाह. लिखें: वि.नं. 9192, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माथुर कायस्थ, 23 वर्षीया, 154 सें.मी., गोरी, सुंदर, एम.ए. (प्रथम श्रेणी), पीएच. डी. अध्ययनरत, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु सुस्थापित, सजातीय वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9193, सरिता, नई दिल्ली-110055.

उत्तरप्रदेशीय ब्राह्मण कन्या, एम.ए. अंगरेजी (द्वितीय) बी.एड., 21, 158 सें.मी., हेतु सुस्थापित, सजातीय वर. मातापिता प्रोफेसर. लिखें: वि.नं. 9194, सरिता, नई दिल्ली-110055.

22, 164 सें.मी., कुर्मि क्षत्रिय, सशील, अति सुंदर, कुलीन आकर्षक व्यक्तित्व वाली, मेधावी, एम.ए., बी.एड. प्रथम श्रेणी, शोधकार्य कर रही कन्या हेतु सजातीय, आई.ए.एस., आई.एफ.एस., आई.पी.एस., पी.सी.एस. (उ.प्र.), डाक्टर, इंजीनियर, प्रथम श्रेणी वर चाहिए. लिखें: 9195, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मी सरन, 29, 162 सें.मी., बी.काम., संभ्रांत परिवार की सुशील, गृहकार्यदक्ष, सुंदर, स्लिम कन्या हेतु शासकीय सेवारत, इंजीनियर, सजातीय, सुयोग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9196, सरिता, नई दिल्ली-110055.

31 वर्षीया, 155 सें.मी., एम.एससी., सुंदर, कायस्थ, राष्ट्रीयकृत बैंक में सेवारत, तलाकशुदा, निस्संतान लड़की हेतु वर. कोई बंधन नहीं. प्रथम बार पूर्ण विवरण लिखें: वि. नं. 9197, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुशवाहा, 25 वर्षीया, 160 सें.मी., रंग गोरा, सरकारी सेवारत, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु अच्छे पद पर कार्यरत, सुयोग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9198, सरिता, नई दिल्ली-110055.

उत्तरप्रदेश निवासी, 25, 150 सें.मी., साहू (तेली), एम.एससी. (फाइनल), गोरा रंग, कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9199, सरिता, नई दिल्ली-110055.

वधू चाहिए

40 वर्षीय, विधुर, मारवाड़ी अग्रवाल, कलकत्ता निवासी, उद्योगपति, उच्च संभ्रांत परिवार से संबंधित, उत्तम स्वास्थ्य, 3 बच्चे (1 कन्या विवाहिता, 1 कन्या कालिज में अध्ययनरत और 14 वर्षीय एक पुत्र) उच्चस्तरीय रहनसहन, हेतु अग्रवाल, माहेश्वरी या गुजराती से उम्र लगभग 35 वर्षीया प्रस्ताव आमंत्रित है. विधवा को वरीयता. लिखें: वि.नं. 8988, सरिता, नई दिल्ली-110055.

महाराष्ट्रीयन भावसार, 32, 162 सें.मी., स्वव्यवसायरत (मध्यप्रदेश), 2,000/-, दहेजविरोधी हेतु सुयोग्य वधू, दिल्ली, मध्य प्रदेश विदर्भ को प्राथमिकता. सविवरण सहित लिखें: वि.नं. 9025, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24, 168 सें.मी., बी.काम., केंद्रीय सेवारत हेतु सुंदर वधू चाहिए. दहेज, जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 9026, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26 वर्षीय 165 सें.मी., राजपूत, कार्यरत, बी.ई. इंजीनियर हेतु सुंदर, प्रतिष्ठित घराने की सजातीय कन्या चाहिए. सविवरण लिखें: वि.नं. 9027, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27 वर्षीय, बंगाली कायस्थ, गौरवर्ण, स्मार्ट, इंटरमीडिएट, दिल्ली निकट फरीदाबाद (हरियाणा) में बेसरकारी विख्यात संस्था (सरकारी उपक्रम) में कार्यरत, 1,400/-, हेतु सुंदर, गोरी, शिक्षित, बंगाली कन्या आवश्यकता. जातिबंधन विरोधी. लिखें: वि.नं. 9028, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अमरीकन नागरिक, 29 वर्षीय, कुर्मि क्षत्रिय मेडिकल डाक्टर हेतु मेडिकल या उच्च शिक्षा प्राप्त वधू चाहिए. दहेज, जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 9029, सरिता, नई दिल्ली-110055.

33 वर्षीय, गोयल, अविवाहित, सुंदर, बैंक में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार्यरत, आय 2,900/-, दोनों मकान/व्यवसाय में हिस्सेदार, सभी सुविधाओं से संपन्न, उच्च मध्यम वर्गीय परिवार) युवक हेतु 28 वर्ष से कम सुंदर कमजोरी महसूस करता है) युवक हेतु 28 वर्ष से अधिक वैश्य/जैन, अविवाहित, घरेलू स्वस्थ कन्या चाहिए. दहेजबंधन नहीं. लड़की स्वयं भी पत्रव्यवहार कर सकती है. लिखें: वि.नं. 9030, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कर्मी क्षत्रिय, इंजीनियर, 24, 178 सें.मी., राजस्थान सरकार सेवारत, प्रतिष्ठित परिवार, हेतु सुंदर कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 9043, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल मित्तल, 24, 173 सें.मी., 5,000/-, हायर सेकंडरी एवं बंसल 21, 170 सें.मी., 4,000/-, अंडरग्रेजुएट, स्वव्यवसायी युवकों हेतु प्रतिष्ठित, संपन्न परिवारीय कन्याएं. लिखें: वि.नं. 9044, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल मित्तल, 29, 175 सें.मी., 5,000/-, स्नातक, स्वव्यवसायी, विधुर (दो बच्चियां) युवकार्थ गरीब परिवारीय, सुंदर, कुंआरी नवयुवतियां लिखें: वि.नं. 9045, सरिता, नई दिल्ली-110055.

मध्यप्रदेशीय, विश्नोई वैश्य, 26, 167 सें.मी., बोर्डकल स्टोर्स प्रोप्राइटर, अति सुंदर, गोरा, स्वस्थ, स्मार्ट युवक हेतु अति सुंदर, स्मार्ट, गोरी, स्लिमबाडी वधू की आवश्यकता है. शीघ्र विवाह. पूर्ण विवरण के साथ लिखें. रेप्पवाल भी मान्य. लिखें: वि.नं. 9046, सरिता, नई दिल्ली-110055.

राजपूत (कहार) कश्यप, 25, 156 सें.मी., एम.काम., 2,000/-, निजी व्यवसाय/मकान (लखनऊ) युवक हेतु सजातीय, सुंदर, सुयोग्य वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 9051, सरिता, नई दिल्ली-110055.

मुसलिम, 30, एम.ए., सेवारत, 1,800/-, युवक हेतु सुशील, गृहकार्यदक्ष, सेवारत (राजस्थान) वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 9052, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कर्मी क्षत्रिय, 29, 167 सें.मी., मध्यप्रदेशीय, बी.डी.ओ., अर्धशासकीय संस्थान में कार्यरत युवक हेतु डाक्टर लड़की चाहिए. लिखें: वि.नं. 9053, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सिख (क्लीन शेवन), स्मार्ट, 27, 167 सें.मी, 2,300/-, ग्रेजुएट, जूनियर इंजीनियर (मैकेनिकल) केंद्रीय सेवारत, विदेश बसने का इच्छुक, युवक हेतु सात्विक सुंदर, स्मार्ट, शिक्षित वधू चाहिए. मिलिटरी सर्विस को प्राथमिकता, कोई बंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 9060, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26½, 166 सें.मी., सुंदर, ग्रेजुएट (सिविल इंजी.) चौहान, जू.इंजी., केंद्रीय सेवारत हेतु अति सुंदर, उच्च कुलीन, सुशिक्षित वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 9063, सरिता, नई दिल्ली-110055.

45 वर्षीय, विधुर, कुशवाहा, मासिक वेतन 3,500/-, हेतु सजातीय, 30 साल से ऊपर विधवा, बांझ वधू चाहिए. अंतर्जातीय विचारणीय. लिखें: वि.नं. 9118, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25, 168 सें.मी., गौड़ (पंजाब), शिक्षित, सुंदर, (गौरवर्ण) प्रतिष्ठित, पंपिंगसेट व्यवसायी (स्वयं का निजी व्यवसाय), पूर्वी उ.प्र. निवासी (वाराणसी मंडल) हेतु सुंदर, सुशील व गृहकार्यदक्ष, घरेलू कन्या चाहिए. शादी शीघ्र, प्रथम बार में ही पूर्ण विवरण दें. लिखें: वि.नं. 9119, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल, 29, 170 सें.मी., 3,500/-, एम.ए., कानूनन तलाकशुदा, बैंक सेवारत, मेरठ, हेतु सुंदर कुंआरी कन्या चाहिए. दहेज नहीं. साधारण शादी. लिखें: वि.नं. 9120, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26 वर्षीय, उच्चवर्णीय, ठाकुर, टेहरी गढ़वाल की बोली, दिल्लीगाजियाबाद में उत्तम व्यवसाय, टेहरी में अच्छी संपत्ति, युवक हेतु मामूली मंगली एवं बी.काम., सजातीय कन्या चाहिए, जो निजी व्यवसाय संभालने में समर्थ हो. लिखें: वि.नं. 9121, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28, 168 सें.मी., ग्रेजुएट, प्रभावशाली व्यक्तित्व, संपन्न प्रतिष्ठित परिवार, शाकाहारी, आर्यसमाजी, ट्रांसपोर्ट व्यवसाय, रु. 6,000/- मासिक, हैदराबाद, युवक हेतु ग्रेजुएट, अति सुंदर, स्मार्ट, स्लिम, गौरवर्ण, वधू चाहिए. शीघ्र विवाह. जाति, दहेजबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 9122, सरिता, नई दिल्ली-110055.

इज्जतदार (चाहे गरीब) परिवार की, शिक्षित (कम से कम ग्यारहवीं तक अवश्य पढ़ी), सुंदर, मधुर स्वभाव वाली, समझदार, गृहकार्यदक्ष, घर बनाने वाली, मृदुभाषी कन्या, अमरीका बसे पंजाबी, 30 वर्षीय, 178 सें.मी., आकर्षक, पांच अंकीय आय वाले पुत्र हेतु चाहिए. शीघ्र, साधारण विवाह. कोई बंधन नहीं. कन्या स्वयं भी लिख सकती है. प्रथम बार ही कन्या का नाम, कद, सही जन्मतिथि, शिक्षा, ताजा खिंचा फोटो, संपूर्ण पारिवारिक जानकारी सहित निस्संकोच भेजें: 1103, CULLOM STREET, APT-9, BIRMINGHAM, AL 35205, U.S.A.

36 वर्षीय, 176 सें.मी., स्वस्थ, उच्च शिक्षित, निजी व्यवसाय, मकान, कार, हेतु सुंदर, सुशिक्षित, निस्संतान, एकाकी, विधवा, तलाकशुदा, संतान की अनिच्छुक जीवनसंगिनी चाहिए. कोई बंधन नहीं. लिखें: MAGELHAENLAAN 265 3526 C6 UTRECHT, HOLLAND.

चौरसिया, स्नातक, 27, बी.ए., कार्यरत (दिल्ली) युवक हेतु सुंदर, सुयोग्य, शिक्षित, सजातीय वधू चाहिए. कार्यरत को वरीयता. पूर्ण विवरण सहित लिखें: वि.नं. 9123, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26½ वर्षीय, 180 सें.मी., धीमान, बी.एससी., बी.फार्मा., निजी कैमिस्ट दुकान, युवक हेतु दिल्लीवासी, सुंदर, सरकारी सेवारत (अध्यापिका को प्राथमिकता) कन्या चाहिए. जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 9124, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28 वर्षीय, खन्ना खत्री, सरकारी सेवारत, वेतन 2,000/-, दिल्ली में निजी मकान, विकलांग युवक हेतु वधू चाहिए. विकलांग भी विचारणीय. लिखें: वि.नं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

9125, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28, 173 सें.मी., एम.ए., 1,600/-, एअरफोर्स इलेक्ट्रानिक आपरेटर, मांगलिक, सनाढ्य ब्राह्मण हेतु सुयोग्य वधू चाहिए. निस्संतान विधवा भी मान्य. कोई बंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 9126, सरिता, नई दिल्ली-110055.

21, 164 सें.मी., सीनियर सेकंडरी, सिंघल अग्रवाल, निजी व्यवसाय, आय पांच अंक, युवक हेतु सुंदर, सुयोग्य वधू चाहिए. दिल्लीवासी को प्राथमिकता. लिखें: वि.नं. 9127, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28 वर्षीया, जाटव, बैंक कार्यरत, मासिक आय 2,000/-, हेतु सरकारी कार्यरत वधू चाहिए. दहेज, जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 9128, सरिता, नई दिल्ली-110055.

यादव, सुयोग्य, सुशिक्षित, 28, 175 सें.मी., 3,000/-, युवक हेतु सुंदर, सुशिक्षित कन्या अपेक्षित. लिखें: वि.नं. 9129, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24 वर्षीय, बी.ए., मित्तल अग्रवाल, व्यवसायरत हेतु गृहकार्यनिपुण, सुंदर वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 9130, सरिता, नई दिल्ली-110055.

दिल्ली निवासी, 40 वर्षीय, इंजीनियर, उच्च व्यवसाय, अग्रवाल, तलाकशुदा, हेतु दिल्ली निवासी सुंदर, शिक्षित वधू चाहिए. तलाकशुदा, विधवा भी विचारणीय. कोई बंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 9131, सरिता, नई दिल्ली-110055.

35 वर्षीय, 170 सें.मी., स्मार्ट, अग्रवाल, निजी व्यवसाय, वाहन, आवास, सेल्फ मेड, अच्छी आय, अविवाहित, दायां हाथ कृत्रिम पर काम करने में पूर्ण सक्षम, अकेले युवक हेतु आकर्षक, सुशिक्षित, जीवनसंगिनी चाहिए. कोई बंधन नहीं. विवाह इच्छुक लड़कियां स्वयं भी पत्रव्यवहार कर सकती हैं. पूर्ण विवरण सहित लिखें: वि.नं. 9132, सरिता, नई दिल्ली-110055.

21 वर्षीय, स्नातकोत्तर, 170 सें.मी., निजी प्रापर्टी एवं फार्मिंग, अच्छी आय, स्मार्ट, जाट युवक हेतु सुंदर, गृहकार्यदक्ष, शिक्षित वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 9133, सरिता, नई दिल्ली-110055.

29 वर्षीय (धोबी), 187 सें.मी., एम.काम., एम.ए., बैंक सेवारत हेतु सुंदर, लंबी, ग्रेजुएट, सजातीय वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 9134, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गर्ग, 25, 164 सें.मी., बी.एससी., ला ग्रेजुएट, 1,800/-, मासिक, बरेली में सेवारत हेतु ग्रेजुएट, गौरवर्ण, स्लिम, रूपवती कन्या चाहिए. विज्ञापन केवल उत्तम चयन हेतु. लिखें: वि.न. 9135, सरिता, नई दिल्ली-110055.

44, 175 सें.मी., बंबईवासी, विधुर हेतु वधू. जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 9136, सरिता, नई दिल्ली-110055.

प्रतिष्ठित जैन परिवार के रूपवान, डाक्टर, 29,175 सें.मी., अमरीका में कार्यरत, ग्रीनकार्ड धारी, कानूनन [illegible] युवक हेतु सुंदर, इकहरी, लंबी, कानवेंट शिक्षित, कामर्स अथवा साइंस में ग्रेजुएट, पोस्टग्रेजुएट वधू अपेक्षित है. जातिबंधन नहीं. कन्या के गुण और पारिवारिक पृष्ठभूमि ही विचारणीय. लिखें: वि.नं. 9137, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25 वर्षीय, 170 सें.मी., अग्रवाल, गर्ग गोत्र, जनियर इंजीनियर, आय 1,500/-, हेतु सजातीय कन्या चाहिए. पिता सरकारी उच्च अधिकारी. लिखें: वि.नं. 9138, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28 वर्षीय, उच्च सेवारत, यौन संबंधों में असमर्थ (समय से पूर्व स्खलन), सुंदर युवक हेतु यौन संबंध अनिच्छुक या इसी प्रकार की रोगग्रस्त जीवनसाथी चाहिए. लिखें: वि.नं. 9139, सरिता, नई दिल्ली-110055.

पश्चिमी उत्तरप्रदेशीय, 60, पंजाबी, स्मार्ट, विधुर, संपन्न, शाकाहारी, केमिकल मेन्युफेक्चर्स, आय चार अंकीय, हेतु चरित्रवान, भावभक्त, निष्कपट, शांत स्वभाव, सुशील, सुलझे विचारों की आनंदित, उत्साही जीवन जीने, पर्यटन की इच्छुक, 45 तक की निस्संतान जीवनसाथी चाहिए. भविष्य जीवन की गारंटी. पत्राचार हिंदी में लिखें: वि.नं. 9140, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26, 175 सें.मी., 1,600/-, एक्जीक्यूटिव के लिए वधू चाहिए. जाति, प्रांत के बंधनों को न मानने वाले बंगाली परिवार की कार्यरत कन्या को प्राथमिकता. दहेज बंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 9141, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26, 168 सें.मी., मध्यप्रदेशीय बंजारा, आकर्षक, असिस्टेंट प्रोफेसर अंगरेजी, मासिक आय 2,000/-, हेतु आकर्षक एवं सुशील वधू. कोई बंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 9142, सरिता, नई दिल्ली-110055.

मित्तल, 25, 168 सें.मी., दिगंबर जैन, केंद्रीय सेवारत, प्रथम श्रेणी सिविल इंजीनियर हेतु सजातीय वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 9143, सरिता, नई दिल्ली-110055.

राजपूत, मेडिकल आफिसर, 28,172 सें.मी., सुंदर, सुशील, केंद्रीय सेवारत, 3,500/-, प्रतिष्ठित परिवारीय युवक हेतु अति सुंदर, सजातीय, एम.बी.बी.एस. वधू चाहिए. शीघ्र विवाह. लिखें: वि.नं. 9144, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25 वर्षीय, 160 सें.मी., 1,600/-, इंटरमीडिएट, सरकारी प्रतिष्ठान में सेवारत, चमार (बलिया यू.पी.), दिल्लीवासी युवक हेतु गोरी, सुंदर, चरित्रवान वधू चाहिए. शीघ्र विवाह. लिखें: वि.नं. 9145, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कंप्यूटर कार्यरत, प्रतिष्ठित गर्ग परिवारीय, 2[illegible] वर्षीय, 155 सें.मी., हेतु पढ़ीलिखी, स्वजातीय सुंदर कन्या चाहिए, लिखें: वि.नं. 9146, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी, 24, 170 सें.मी., बी.ए., जीवनबीमा एजेंट, 3,800/-, मांगलिक हेतु मांगलिक, ग्रेजुएट कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 9147, सरिता, नई दिल्ली-110055.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

37½ वर्षीय, 170 सें.मी., स्मार्ट, एम.बी.बी.एस., पंजाबी ब्राह्मण, डाक्टर, निजी अच्छी प्रैक्टिस, प्रतिष्ठित [illegible] एवं आर्मी आफीसर, युवक हेतु [illegible] सरिता, नई दिल्ली-110055.

[illegible] 69 सें.मी., 60 कि.ग्रा., कान्यकुब्ज [illegible] त्राय, छत्तीसगढ़ निवासी, एम.ए., [illegible] रोजगार, मासिक आय 4,000/-, युवक हेतु सुंदर, गौरवर्ण, स्लिम, सुशिक्षित, सजातीय कन्या चाहिए. प्रथम बार में जन्मपत्रिका और संपूर्ण विवरण लिखें: वि.नं. 9149, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23, वायुसेना में शिक्षा अनुदेशक, युवक हेतु सुंदर, सुशिक्षित, सुयोग्य वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 9150, सरिता, नई दिल्ली-110055.

राजस्थानी प्रतिष्ठित माहेश्वरी, 37 वर्षीय, पोस्ट ग्रेजुएट, स्वस्थ, कार्यरत, विधुर हेतु शिक्षित, सुंदर, सुयोग्य, सजातीय वधू लिखें: वि.नं. 9151, सरिता, नई दिल्ली-110055.

33 वर्षीय, 166 सें.मी., 3,625/- मासिक, दृष्टिहीन प्राध्यापक, दिल्ली विश्वविद्यालय, हेतु सुशिक्षित वधू चाहिए. जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 9152, सरिता, नई दिल्ली-110055.

पंजाबी बंसल, 40, 160 सें.मी., विधुर दो बच्चे (कोई रोक), निजी व्यवसाय, हेतु सुयोग्य वधू चाहिए. निस्संतान [illegible] विधवा भी मान्य. लिखें: वि.नं. 9153, सरिता, [illegible] 110055.

28 वर्षीय, 164 सें.मी., पंजाबी हिंदू, मैट्रिक, बिजनेसमैन हेतु सुंदर, सुशील, सुशिक्षित कन्या चाहिए. जातिबंधन और दहेज नहीं. प्रथम बार फोटो सहित लिखें. S. BADAR, P.O. BOX 5956, SHARJAH (U.A.E.)

दिल्लीवासी जैन, 48, 168 सें.मी., ग्रेजुएट, उच्च व्यापारी, उत्तरदायित्वमुक्त, सभी सुविधा हेतु शिक्षित, कोई निस्संतान विधवा, तलाकशुदा जीवनसंगिनी चाहिए. लिखें: वि.नं. 9154, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27 वर्षीय, बी.काम., अग्रवाल गोयल, मारवाड़ी, [illegible] में इंपोर्ट एक्सपोर्ट व्यवसाय, हेतु सुंदर, घरेलू कन्या चाहिए. विज्ञापन उत्तम चयन हेतु. लिखें: वि.नं. 9155, सरिता, नई दिल्ली-110055.

विश्वकर्मा, 29, 173 सें.मी., बी.ए., एलएल.बी., केंद्रीय सरकार में अच्छे पद पर कार्यरत वर हेतु सुंदर, सुशिक्षित, आकर्षक, सजातीय वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 9156, सरिता, नई दिल्ली-110055.

[illegible] राजपूत (स्वर्णकार), बी.ए.एम. एस.एम.डी., डाक्टर, 31, 173 सें.मी. हेतु सुंदर, सजातीय, मेडिको कोर्स चाहिए. निजी घर, क्लिनिक एक्सरे पैथोलाजी लैब संपूर्ण विवरण पहली बार. लिखें: वि.नं. 9157 सरिता, नई दिल्ली-110055.

सीमा अग्रवाल बंसल, 25, 157 सें.मी., एम.काम., चार अंकों में मासिक आय, हेतु सुंदर, सुशील, शिक्षित वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 9158, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28 वर्षीय, साहू (ब्राह्मण), एम.ए. अध्ययनरत, केंद्रीय सेवारत (भुवनेश्वर) हेतु सरकारी, अर्धसरकारी सेवारत, सजातीय वधू. जो जरूरत पड़ने पर भुवनेश्वर ट्रांसफर पर आना चाहती हो. लिखें: वि.नं. 9159, सरिता, नई दिल्ली-110055.

क्षत्रिय सेंगर, राजपूत, 32, 170 सें.मी., साफ रंग, आय 1,500/-, नौकरी, स्वतः निर्भर हेतु सुंदर, स्वस्थ कन्या चाहिए. दहेज, जातिबंधन नहीं. सादा विवाह. शादी अति शीघ्र. लिखें: वि.नं. 9160, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गुजराती ब्राह्मण भाई, स्नातक 25 एवं 28, व्यापारी हेतु शिक्षित, सुंदर, गोरी, सुदर्शन, आयु 20 से 25, घरेलू कन्याओं से प्रस्ताव आमंत्रित. जाति, धर्म, दहेजबंधन नहीं. पूर्ण विवरण सहित लिखें: वि.नं. 9161, सरिता, नई दिल्ली-110055.

प्रतिष्ठित, सुसंपन्न, पंजाबी खत्री, 29, 175 सें.मी., 2,500/-, बी.काम., एलएल.बी., डी.सी.एल.एल., स्टेट बैंक सेवारत नवयुवक हेतु सुंदर, सुसंस्कृत, सुशील और कुलीन कन्या. चाहिए. दहेज, जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 9162, सरिता, नई दिल्ली-110055.

दिगंबर जैन, 27, 170 सें.मी., एम.काम., निजी होजरी उत्पादनकर्ता, आय मासिक पांच अंकीय, हेतु सुंदर, शिक्षित, उच्च व्यवसायी वर्गीय कन्या चाहिए. दिल्लीवासी को प्राथमिकता. घरदामाद बनना भी स्वीकार्य. लिखें: वि.नं. 9163, सरिता, नई दिल्ली-110055.

राजपूत, विधुर, 52, डबल स्नातकोत्तर, केंद्रीय राजपत्रित पदाधिकारी, मासिक 4,000/-, संतानगण विवाहित, सुस्थापित, हेतु शिक्षित, संतान अनिच्छुक, लगभग 40-50 वर्षीया, सजातीय वधू चाहिए. विशेष परिस्थिति में निस्संतान विधवा, तलाकशुदा एवं अंतर्जातीय भी विचारणीय. प्रथम बार ही सविवरण लिखें: वि.नं. 9164, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कनौजिया, 23, 170 सें.मी., बी.काम., प्रतिष्ठित परिवार, व्यापार में संलग्न, सुंदर युवक हेतु सुंदर, सुशील, सुशिक्षित, सजातीय वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 9165, सरिता, नई दिल्ली-110055.

प्रतिष्ठित गुप्ता, कान्यकुब्ज परिवार के 25 वर्षीय, 163 सें.मी., आई.सी.डब्ल्यू.ए. वर हेतु उपयुक्त कन्या चाहिए. लिखें: वि. नं. 9166, सरिता, नई दिल्ली-110055.

साव (तैलिक वैश्य) जमशेदपुर, प्रतिष्ठित परिवार, 26½ वर्षीय, 167 सें.मी., 56 कि. ग्रा., साफ रंग, बी.काम., निर्व्यसनी, शाकाहारी, सहृदय, व्यापारदक्ष, स्मार्ट युवक हेतु शिक्षित, गोरी, वास्तविक सुंदर, संपन्न वधू पक्ष सविवरण लिखें, शीघ्रविवाह. लिखें: वि.नं. 9167, सरिता, नई दिल्ली-110055.

45 वर्षीय, संपन्न, संभ्रांत, परित्यक्त डाक्टर हेतु शिक्षित, गृहिणी की तलाश. कोई बंधन नहीं. लिखें:

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वि.नं. 9168, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल जैन, 29½, 167 सें.मी. एवं 24, 163 सें.मी., स्मार्ट, शिक्षित, प्रतिष्ठित, आयकरदाता, व्यवसायी भाइयों हेतु सुंदर, सुसंस्कृत, गृहकार्यदक्ष, पारिवारिक वधुएं चाहिए. शीघ्र विवाह. लिखें: वि.नं. 9169, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जैन, 28 वर्षीय, 174 सें.मी., डी.आर्थ., एम.एस. (सर्जरी) अध्ययनरत, उच्च व्यवसायी परिवार हेतु सजातीय, मेडिको वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 9175, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कोरी, 30 वर्षीय, 154 सें.मी., सरकारी सेवारत, आय 4,500/-, हेतु मेडिको/नानमेडिको वधू चाहिए. जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 9176, सरिता, नई दिल्ली-110055.

32 वर्षीय, शिक्षित, स्वस्थ, सुंदर, निज का मकान व दुकान, मध्यमवर्गीय प्रोटेस्टेंट युवक हेतु घरेलू, गरीब अथवा अनाथ कम पढ़ीलिखी, स्वस्थ, प्रोटेस्टेंट कन्या चाहिए. लिखें: वि. नं. 9177, सरिता, नई दिल्ली-110055.

उच्चकुलीन, कान्यकुब्ज ब्राह्मण, 32 वर्षीय, 175 सें.मी., बी.एससी., गेहुआं रंग, स्वव्यवसायरत, औसत आय पांच अंकीय, हेतु सुंदर, सुशील, सुशिक्षित गृहकार्यदक्ष, ब्राह्मण वधू.यू.पी., एम.पी., बिहारवासी को प्राथमिकता. लिखें: वि.नं. 9178, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25, 160 सें.मी., एम.बी.बी.एस., पी.जी. करने का इच्छुक, राजपूत (पनवर) युवक हेतु सुयोग्य, सुशील, एम.बी.बी.एस. कर चुकी या कर रही, सुंदर कन्या चाहिए. लिखें: वि. नं. 9179, सरिता, नई दिल्ली-110055.

भूमिहार ब्राह्मण, 37, 168 सें.मी., स्वस्थ, सुंदर, कैमिस्ट (बिहार सरकार) 2,200/- मासिक, अपना मकान एवं कृषि, पिता अवर मुख्य अभियंता, एकलौता पुत्र, विधुर, तीन बच्चे (उम्र 14, 9 एवं 7 साल), हेतु जातिबंधन रहित सुंदर, शिक्षित, गरीब, बेसहारा या निस्संतान विधवा जीवनसाथी चाहिए. संतानोत्पत्ति में असमर्थ, अनिच्छुक को प्राथमिकता. लिखें: वि.नं. 9180, सरिता, नई दिल्ली-110055.

ब्राह्मण, नेत्रहीन युवक, 25, 157 सें.मी., केंद्रीय विद्यालय में संगीत अध्यापक, वेतन 1,500/-, हेतु शिक्षित कन्या चाहिए. विकलांग, तलाकशुदा, विधवा भी. जाति, दहेजबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 9181, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जैन, 24, 178 सें.मी., [illegible]जुएट 10055. [illegible] मैक. (फर्स्ट क्लास कैरियर), उत्तम व्यापारी गोत्र, [illegible] सुस्थापित (बंबई), शिक्षित परिवार के लिए आकर्षक सुंदर, गौरवर्ण, गृहकार्यदक्ष, सुसंस्कृत, सुशिक्षित (प्रोफेशनल शिक्षा को वरीयता), प्रतिष्ठित परिवारीय, सुयोग्य, सजतीय वधू चाहिए. विज्ञापन उत्तम चयन हेतु संपूर्ण विवरण सहित लिखें: वि.नं. 9182, सरिता, नई दिल्ली-110055.

31 वर्षीय, सरयूपारीण, शांडिल्य गोत्रीय, उत्तर-प्रदेशीय, ब्राह्मण, असिस्टेंट इंजीनियर सिविल, के.लो.नि.वि. कार्यरत हेतु शाकाहारी, शांत, सुशील वधू चाहिए. प्रथम बार स[illegible] लिखें: वि. न. 9183, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गौड़ ब्राह्मण, 26, आटो इंजीनीयर, गेहुआं रंग, गुजरात स्थित, स्वस्थ युवक हेतु सुशील कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 9184, सरिता, नई दिल्ली-110055.

वरवधू चाहिए

सुन्नी मुसलिम यूसुफ [illegible] पठान, 24 वर्षीय, [illegible] सें.मी., रंग गोरा, साधन सं[illegible] परिवारीय युवक एवं बहन द्वितीय वर्ष अध्ययनरत [illegible], 152 सें.मी. रंग गोरा हेतु वरवधू. लिखें: वि.नं. 9170, सरिता, नई दिल्ली-110055.

रिक्त स्थान

व्यक्तिगत सचिव, स्वास्थ्य परिचारिका हेतु बेसहारा, निस्संतान विधवा की आवश्यकता. भोजन आवास सुविधा सहित 500/- रु. मासिक, शिक्षित को प्राथमिकता. लिखें: वि. नं. 9171, सरिता, नई दिल्ली-110055.

दो सदस्यों और दो छोटे बच्चों के अमरीका निवासी परिवार में बालिका की देखभाल और घरेलू कामकाज हेतु 45-50 वर्ष के लगभग, स्वस्थ महिला चाहिए. सभी सुविधाएं, आनेजाने का खर्च, वेतन, पारिवारिक वातावरण. कम से कम दो वर्ष का अनुबंध. आयु, शिक्षा, पारिवारिक पृष्ठभूमि सहित पूरा विवरण लिखें: वि.नं. 9172, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गोद चाहिए

उम्र 16 साल से ऊपर एक धर्म भाई चाहिए जिस की कोई बहन न हो. पूर्ण विवरण सहित लिखें: वि.नं. 9173, सरिता, नई दिल्ली-110055.

8 वर्षीय, कुशाग्र बुद्धि, सांवला रंग, द्वितीय क्लास बच्चे को गोद हेतु सुसंपन्न, शिक्षित, निस्संतान दंपती आमंत्रित. लिखें वि. नं. 9174, सरिता, नई दिल्ली-110055.

व्यक्तिगत विज्ञापनों की दरें

सरिता : 3.50 रु. प्रति शब्द
वूमंस ईरा : 1.50 रु. प्रति शब्द
सरिता व वूमंस ईरा : 4.00 रु. प्रति शब्द.

पूर्ण विवरण के लिए लिखें :

मुख्य विज्ञापन कार्यालय

दिल्ली प्रेस पत्रिका विभाग,
एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001.
फोन नं. : 351313.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

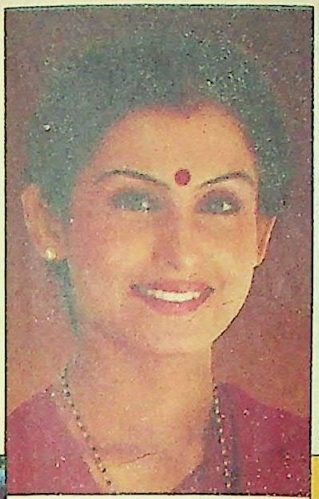

प्यार भरा स्पर्श

घर संसार में चारों ओर फैली मुस्कान, आपकी भी एक अलग पहचान

प्यार एक मीठा अहसास है उसकी हर मुस्कान का रंग अलग है। जब मैं मां को दुनिया की सबसे अच्छी मां कहा मेरी मां ने बनायी है। उनकी बनायी हर चीज़ कमाल की होती है। चाहे खेल हो या खाना, मां तुम तो बस कमाल हो।''

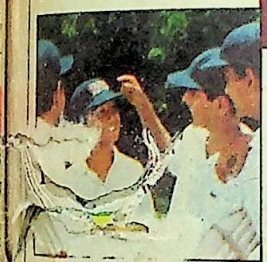

रवि को ये अभिमान भरा चेहरा ही मेरे प्यार का आधार है, उसके प्रति अपने प्यार को जताने के मैं हज़ार तरीके ढूँढ ही तो लेती हूँ। उसके लिये किये गये हर काम में वही चीज़ें उपयोग में लाती हूँ जो अच्छी से अच्छी हों। खाना बनाने में भी रथ वनस्पति का ही इस्तेमाल करती हूँ। जानती जो हूँ, रथ में बने आहार में छिपा है रवि की मुस्कान का उपहार।

कहकर शाबाशी देता है, तो लगता है घर-भर में रोशनी के बादल छा गये हों।

कल ही की बात है, मेरा बेटा रवि क्रिकेट खेल कर बड़ा खुश घर लौटा। दरवाजे से ही अपनी कैप लहराता बोला, ''वाह! मां वाह! इस क्रिकेट कैप पर 'रवि' काढ़ कर तुमने कमाल कर दिया। आज पूरी टीम में मैं सबसे स्पेशल नज़र आ रहा था। सब पूछने लगे इतनी प्यारी कैप किसने बनायी है, मैंने

रथ वनस्पति

आखिर प्यार है नारी संसार

सी एम का उत्कृष्ट उत्पादन

OBM/10954/A

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गर्मागर्म खाना परोसने का मज़ा बार-बार गर्म किये बि

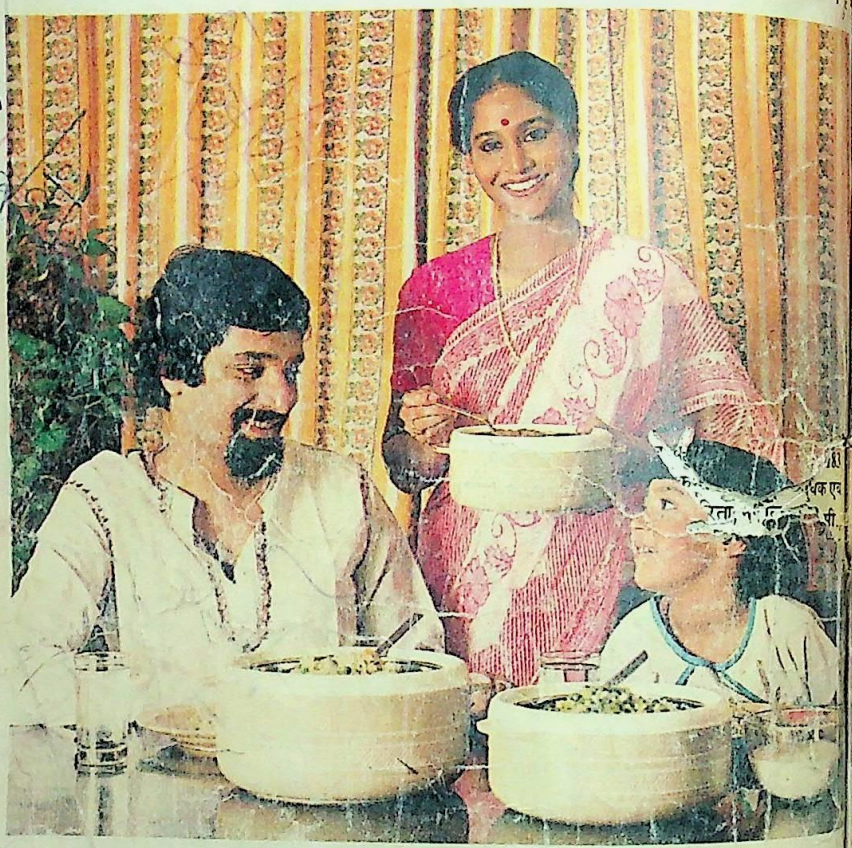

बार-बार खाना गर्म करने से खाने का असली स्वाद तो जाता ही है, पैसे का खर्च भी बढ़ जाता है, इतना ही नहीं आपके खाने के पोषक तत्व भी कम हो जाते हैं.

लेकिन बार-बार खाना गर्म करने से आपको जो वक्त और मेहनत खर्च करनी पड़ती है, उसका शायद आपकी नज़र में कोई इलाज नहीं. इस चक्कर में आपको अपने मनपसंद टीवी प्रोग्राम छोड़ने पड़ते हैं, घर आये मेहमानों को अकेला छोड़ना पड़ता है. लेकिन क्या खाना बार-बार गर्म करने के लिए रसोई में जाना बहुत ज़रूरी समझती हैं आप?

सेलो कैसेरोल आपको बार-बार खाना गर्म करने के झंझट से शर्तिया छुटकारा दिलायेगा.

सेलो कैसेरोल खाने को देर तक गर्म रखते हैं और खाने का असली स्वाद और पौष्टिक तत्व भी बरकरार रखते हैं. वक्त बचाते हैं, ईंधन बचाते हैं, धोये जा सकते हैं और टूटते भी नहीं.

सेलो कैसेरोल ढेर सारे रंगों और साइज़ों में मिलते हैं कोई भी चुन लीजिए— अपने लिए या किसी अपने को उपहार में देने के लिए.

खाने को ज्यादा से ज्यादा देर तक गर्म रखने के लिए कैसेरोल को पूरा भरिए.

Cello®

सेलो कैसेरोल

बार-बार खाना गर्म करने से छुटकारा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरिता

बच्चे और शिक्षा

विशेष परिशिष्ट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"35 साल पहले
उषा फैशनप्रिय महिलाओं की
पहली पसंद थी."

दीना पाठक

"मैंने हाल ही में उषा ली
वह आज भी फैशनप्रिय
नारियों के लिये सबसे अच्छ
सिलाई मशीन है."

सुप्रिया

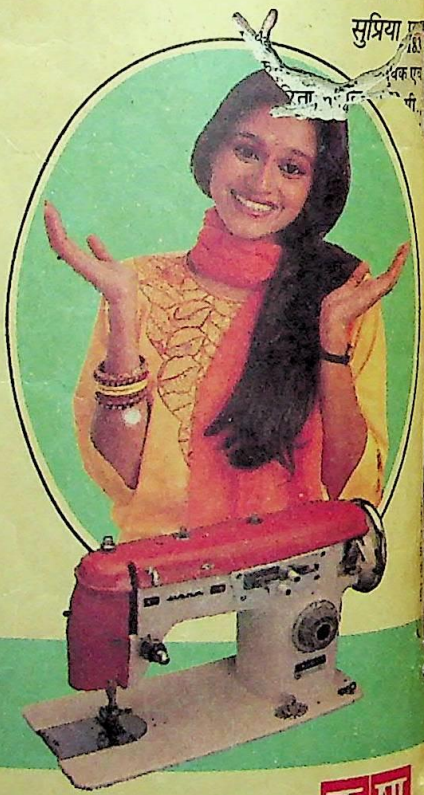

कढ़ाई... खास किस्म के टाँके.... सिलाई के कई आसान तरीके... सालों से उषा फैशनप्रिय औरतों की सबसे चहेती सिलाई मशीन रही है.

एक दोष-रहित, टिकाऊ और अनेक पहलुओं वाली सिलाई मशीनों की श्रृंखला जो आपके हर डिज़ाइन को साकार बना दे.

उषा. आधुनिक सिलाई मशीनें जो आपके रहन-सहन में चार चाँद लगा दें.

ष सिलाई मशीनें
ियों से, सबकी पहली पसंद.

उषा
भरोसेमंद की पहचान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अनोखा नया सनसिल्क शैम्पू प्लस कंडीशनर : आप अपने बालों में नयी ज़िन्दगी की लहर देख और महसूस कर सकती हैं"

—कहती हैं जानी-मानी फ़िल्म हेयर स्टाइलिस्ट नैना बलसावर.

पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार
27/3/88

बड़े अप[illegible] की बात है कि कई महिलाएँ– यहाँ [illegible] कि सुप्रसिद्ध सुंदरियाँ [illegible]र साधारण शैम्पू का इ[illegible] अपने बालों की कुदरती खूबियाँ और चमक धो डालती हैं.

लाजवाब नया सनसिल्क शैम्पू प्लस कंडीशनर

शूटिंग के दौरान बालों की कुदरती खूबियाँ उभारना मेरा काम है. इसीलिए मैं नया सनसिल्क शैम्पू प्लस कंडीशनर इस्तेमाल करती हूँ. यह असाधारण रूप से भिन्न है. इसमें है सौम्य शैम्पू जो बालों को साफ़ रखे और एक्स्ट्रा रिच कंडीशनर जो बालों को मुलायम बनाये व उन्हें नयी ज़िंदगी दे– न कोई उलझाव, न ही टूटने का डर; फिर तो आप गीले बालों में भी आसानी से कंघी कर सकती हैं.

आपके बालों के लिए नयी ज़िंदगी की लहर

देखिए, सूख जाने पर आपके बाल कितने सीधे, सरल और नयी ज़िंदगी से भरे-भरे दीखते हैं. खुद महसूस कीजिए कि आपके बाल कितने सुलझे और मृदु-मुलायम हैं. अपने बालों में नयी ज़िंदगी की लहर देखिए और महसूस कीजिए.

नया सनसिल्क लगातार इस्तेमाल कीजिए और धीरे-धीरे आपके बालों की सुन्दरता बढ़ती जाएगी.

जिस तरह के हों आपके बाल.... नया सनसिल्क वैसा ही करें इस्तेमाल.

अगर आपके बाल आम बालों जैसे हैं और आप उन्हें अक्सर धोती रहती हैं तो आपके लिए सही होगा– नारंगी रंग का सनसिल्क, पतले और नाज़ुक बालों के लिए लीज़िए मोतिया पीला सनसिल्क और रूखे-रूखे बालों के लिए गुलाबी सनसिल्क. हर एक शैम्पू में है मनमोहक नयी अंतर्राष्ट्रीय सुगंध.

दुनियाभर में लाखों सुंदरियों ने नये सनसिल्क शैम्पू प्लस कंडीशनर से अपने बालों में जगायी है नयी ज़िंदगी की लहर.

HTA 1950

नया

सनसिल्क

शैम्पू प्लस कंडीशनर

साफ़ रखे व कंडीशन करे– ख़ूबसूरती से.

हिन्दुस्तान लीवर लिमिटेड का एक उत्कृष्ट उत्पादन.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरिता

सामाजिक व पारिवारिक
की पाक्षिक त्रि

संपादक व प्रकाशक : विश्वनाथ अंक : 790 मार्च (द्वितीय) 1988

कथा साहित्य

40 **लाली**
आदिवासी स्त्री का प्रणय निवेदन

54 **धर्म का धंधा**
व्यापारी और पंडित की मिलीभगत

73 **मन का मिला न मीत**
ऐयाश पति को त्यागने वाली पत्नी

86 **पांचवीं**
लड़के की आस में छटपटाती मां

134 **मधुमक्खियां**
पूर्व प्रेमीप्रेमिका का पुनर्विवाह

142 **राधेराधे बोलो पानी को रो लो**
धर्मस्थलों में पानी की किल्लत

158 **मैं लौटना चाहती हूं**
दंभी लड़की का मोहभंग

172 **चुंबन**
प्रेयसी को धोखा देने वाला प्रेमी

लेख

22 **आयकर संशोधन कानून**
सरकार की तुगलकी नीति

28 **तमस**
विवादों के घेरे में दूरदर्शन धारावाहिक

65 **दहेज**
उत्तरदायी कौन?

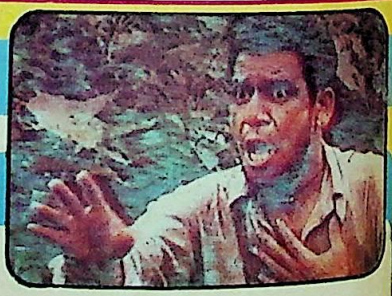

97 **टी.वी. और कुशन कवर**
सजावट के लिए एक बढ़िया नमूना

121 **विवाह पूर्व संबंध**
पत्नी को न बताएं

126 **रुद्राक्ष में कोई शक्ति नहीं है**
धर्म के धंधेबाजों की एक और दुकान

152 **लंदन के भिखमंगे**
उद्योग प्रधान देश में बढ़ती कामचोरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिशिष्ट

...चों को पढ़ाई के लिए प्रेरित करें
बच्चों के सुंदर भविष्य के लिए

103 **बच्चा स्कूल जाने से कतराता है?**
समस्याओं का मनोवैज्ञानिक समाधान

107 **बच्चों का बस्ता भी देखें**
बुराइयों पर निगाह रखने के लिए

111 **बच्चों को स्कूल जल्दी न भेजें**
मातापिता के लिए कुछ सुझाव

115 **स्कूल जाने वाले बच्चे का आहार**
पौष्टिक आहार का महत्त्व

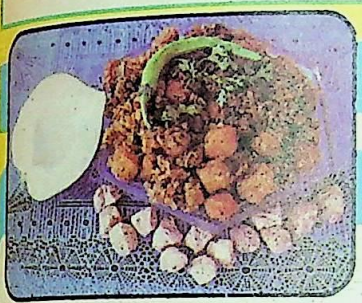

स्तंभ

110 बच्चों के मुख से
132 नए फैशन
147 चंचल छाया
164 पाठकों की समस्याएं
168 ये पति
169 शून्यकाल
181 दिनदहाड़े
186 यह भी खूब रही

6 आप के पत्र
12 हमारी बेटियां
... सरित प्र...
38 वेदों में क्या है?
84 नए पकवान
98 मुझे शिकायत है

कविताएं

37 पंचवर्षीय योजनाओं का अंधा सफर
51 और समय ठहर जाए
83 सितारे जड़े स्वप्न
101 आओ कोई अच्छा काम करें
121 बांसती छंद

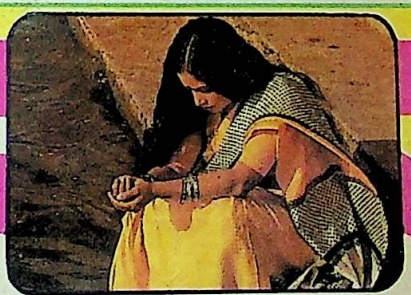

संपादकीय, विज्ञापन व प्रकाशन कार्यालय :
दिल्ली प्रेस भवन, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.
दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन प्रा. लि. के लिए विश्वनाथ द्वारा प्रकाशित तथा दिल्ली प्रेस समाचार पत्र प्रा.लि. साहिबाबाद/गाजियाबाद में मुद्रित.
अन्य कार्यालय : अहमदाबाद : 503, नारायण चैंबर्स, आश्रम रोड, अहमदाबाद-380009.
बंगलौर : 302-बी, 'ए' क्वींस कारनर एपार्टमेंट्स, 3, क्वींस रोड, बंगलौर-560001. बंबई : 79-ए मित्तल चैंबर्स, नरीमन पाइंट, बंबई-400021.कलकत्ता : तीसरी मंजिल, पोद्दार पाइंट, 113, पार्क स्ट्रीट, कलकत्ता-700016, मद्रास : 14, पहली मंजिल, सीसंस कांप्लेक्स, 150/82, मांटीअथ रोड, मद्रास-600008., लखनऊ : 9, दुर्गा भवन, कपूर लेन, महात्मा गांधी रोड, लखनऊ-226001. सिकंदराबाद : 122, पहली मंजिल, चिनाय ट्रेड सेंटर लेन, 116, पार्क लेन, सिकंदराबाद-500003.

© दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन प्रा. लि. बिना आज्ञा कोई रचना किसी प्रकार उद्धृत नहीं की जानी चाहिए.

सरिता में प्रकाशित कथा साहित्य में नाम, स्थान, घटनाएं व संस्थाएं काल्पनिक हैं और वास्तविक व्यक्तियों, स्थानों, घटनाओं या संस्थाओं से उन की किसी भी प्रकार की समानता संयोग मात्र है.

वैधानिक विज्ञापन विभाग : एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001.
वार्षिक मूल्य केवल ड्राफ्ट/मनी आर्डर द्वारा 'सरिता' के नाम से ई-3, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-110055 को ही भेजें. चैक व वी.पी.पी. स्वीकार नहीं किए जाते.
मूल्य विदेशों में (समुद्री डाक से) 240 रु., (हवाई डाक से) 636 रु.

मूल्य : एक प्रति 5.00 रुपए वार्षिक : 120 रुपए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरित प्रवाह/फरवरी/द्वितीय

तमिलनाडु के संबंध में आप के विचारों से मैं पूर्णतः सहमत हूं.

27 जनवरी को तमिलनाडु विधान सभा में जो कुछ हुआ, उस ने लोकतंत्रीय परंपराओं के मुंह पर कालिख पोत दी है. कुरसी हासिल करने के लिए जनता के प्रतिनिधि पशुता की सीमा तक असंयमित हो उठे थे. राजीव कांग्रेस भले ही इन घटनाओं के लिए अन्नाद्रमुक जानकी गुट को दोषी ठहराए, पर वास्तव में वह भी इस के लिए बराबर की दोषी है.

अगर कांग्रेस नेता पहले ही अपने समर्थन की घोषणा कर देते तो भारतीय लोकतंत्र को यह काला दिन न देखना पड़ता. लेकिन बात बिगाड़े बिना राजीव कांग्रेस को चैन कहां आता है?

इन घटनाओं ने एक बार फिर सिद्ध कर दिया है कि जनता द्वारा चुने गए प्रतिनिधि कुरसी के लिए बेहूदगी की हद को पार कर सकते हैं, भले ही इस के लिए उन्हें पेपरवेट, माइक या चप्पलजूतों से मारपीट करनी पड़े.

—दिनेशकुमार चटकारा

फिल्मों का सही मूल्यांकन

लेख '1987 की फिल्मों का लेखाजोखा' (फरवरी/प्रथम) में गत वर्ष की फिल्मों का सही मूल्यांकन किया गया है.

कुछ निर्माता तो सिर्फ मारधाड़, सेक्स, अंधविश्वास आदि का सहारा ले कर ही उद्देश्यहीन फिल्में बनाते हैं, जो न केवल भावी युवा पीढ़ी को भ्रमित करती हैं, बल्कि दर्शकों की मानसिकता को भी विकृत करती हैं, उन्हें गुमराह करती हैं.

क्या ये निर्माता छोटे बजट की ऐसी फिल्में नहीं बना सकते, जो दर्शकों पर अपनी सार्थकता की छाप छोड़ सकें.

लेख में फिल्म 'मजाल' पर [illegible] 0055. सदाशिव अमरापुरकर को खलनायक बताया गया, जबकि इस फिल्म में खलनायक अमरीशपुरी था.

—अंजली परिहार

*

अधूरी सी कहानी

कहानी 'दरार' (फरवरी/प्रथम) निरुद्देश्य एवं अधूरी सी लगती है.

समझ में नहीं आता कि रिनी को ले कर पितापुत्र की अनबन द्वारा लेखिका क्या कहना चाहती थी. अधिक अच्छा तो यह होता कि पिता की स्वीकृति से अमर और रिनी को मिला दिया जाता.

—ताराचंद कर्मचंदानी

*

हृदयस्पर्शी कहानी

कहानी 'एक और आकाश' (फरवरी/प्रथम) दिल को छू लेती है.

सचमुच पुरुषप्रधान समाज में ज्योति जैसी लड़कियां जीवित नहीं रह सकतीं. उन में अगर जीने की चाह हो तो भी समाज उन्हें ताने देदे कर मरने पर मजबूर कर देता है.

ऐसी परिस्थितियों में ज्योति ने स्वाभिमान की रक्षा कर अपनी खोई प्रतिष्ठा पुनः प्राप्त कर समाज के लिए एक आदर्श प्रस्तुत किया है. -ममता श्रीमाल

*

बहन के वियोग में भाई का शादी न करना, मानवीय हृदय की उच्च स्तरीय भावनाओं का सच्चा प्रतीक है. -बलदेव अमृतसरी

*

मातापिता का कठोर अनुशासन

कहानी 'कौन अपना कौन पराया' (जनवरी/द्वितीय) के जरिए आज की माड संस्कृति को लक्ष्य कर चलने वाले परिवारों के लिए एक अच्छे मनोवैज्ञानिक ढंग का उदाहरण पेश किया गया है.

प्रायः मातापिता अपने बच्चों की भावनाओं को न समझ कर कठोर अनुशासन और हृदय विदारक बातों से अपने बच्चे को इतना कठोर बना देते हैं कि वे इसे विपरीत परिस्थिति या मातापिता का स्वार्थ समझने लगते हैं. -डा. अशोककुमार राय

सरिता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खाओ गगन, रहो मगन!

पाव-भाजी

सामग्री :– आलू –4½ कप (उबाल कर काटे हुये), टमाटर –1 कप (कटे हुये), शेष सब्जियाँ – मटर, शिमला मिर्च, गोभी (मौसम के अनुसार – अन्दाज से), अदरक –15 ग्राम, अदरक पेस्ट – 1 छोटा चम्मच, लहसुन पेस्ट – 1 छोटा चम्मच, हरा धनिया –⅓ कप (बारीक कटा हुआ), नींबू रस –2 बड़े चम्मच, नमक –स्वादानुसार, गर्म मसाला –2 छोटे चम्मच, साबुत लाल मिर्च –4 (कूट कर), हरी मिर्च –4, मक्खन –5 बड़े चम्मच, बनस –4, गगन वनस्पति –½ कप

विधि

1. सभी सब्जियों को बारीक काट लीजिये।
2. अब एक बड़े तवे पर गगन वनस्पति गर्म कीजिये और हरी मिर्च, लाल मिर्च, टमाटर, अदरक, आलू और शेष सब्जियों को अच्छी तरह भून लीजिये। स्वादानुसार नमक मिलाइये। फिर 6 बड़े चम्मच पानी में अदरक और लहसुन का पेस्ट घोल कर भाजी में मिलाइये तथा थोड़ी देर और पकाइये।
3. अब भाजी को धीमी आँच पर रखिये और इसमें 2 चम्मच मक्खन, गर्म मसाला, नींबू रस और हरा धनिया मिलाइये।
4. बनस को लम्बाई में काटिये, मक्खन लगाइये और सुनहरा होने तक सेकिये। अब इस पाव को भाजी के साथ परोसिये।

हमारी अन्य आकर्षक व्यंजन-विधियों का इन्तज़ार कीजिए।

अत्यंत आधुनिक फ़ैक्टरी में शुद्ध और स्वच्छ गगन वनस्पति का उत्पादन

विश्वसनीय
गगन
वनस्पति

अमृत वनस्पति कम्पनी का एक उत्कृष्ट उत्पादन

HTA 5149 HIN A

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

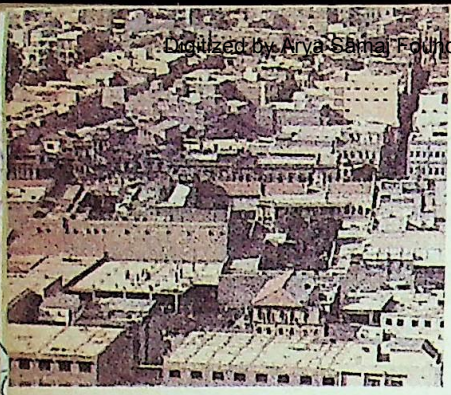

खुशहाल नहीं, पिछड़ा हुआ

लेख 'कराची : जो बारबार याद आता है', (जनवरी/द्वितीय) के इस तथ्य से मैं सहमत नहीं कि पाकिस्तान आज खुशहाली और प्रगति की दौड़ में बहुत आगे निकल गया है.

वास्तविकता यह है कि पाकिस्तान आज भी सभी क्षेत्रों, जैसे शिक्षा, उद्योग, अनुशासन आदि में पिछड़ा हुआ है. खुशहाली के बारे में तो इतना ही कहूंगा कि वहां हिंदू आज भी तनावग्रस्त हैं. उन्हें सब तरह की सुविधाएं तथा नौकरियां नहीं मिलतीं और न ही वे पूर्णतः सुरक्षित हैं. वहां आए दिन अपहरण और लूटमार होती रहती है. -राजन मंघवानी

*

अंधविश्वासों के शिकार गणितज्ञ रामानुजम

लेख 'प्राचीन भारत में आयुर्विज्ञान' (जनवरी/द्वितीय) तथ्यपरक लगा.

प्रसिद्ध गणितज्ञ रामानुजम भी अंधविश्वासों से घिरे रहने के कारण असमय में ही कालग्रस्त हो गए थे. पहले तो तत्कालीन समाज ने उन के विदेशगमन पर बंदिश लगा दी थी. बाद में जब वह विदेश गए भी तो इस हिदायत के साथ कि परंपरानुसार खुले बदन घंटों पूजन करना पड़ेगा.

ब्रिटेन के ठंडे मौसम में घंटों खुले बदन पूजापाठ करने से वह बीमार पड़ गए, जिस से जल्दी ही उन का देहांत हो गया. -रोजश्वरसिंह 'राज'

*

सीखभरी कहानी

कहानी 'घर और घाट' (जनवरी/द्वितीय) से उन लड़कियों की शिक्षा लेनी चाहिए, जो अपने से ऊंचे घराने में पहुंच कर हवा में उड़ने लगती हैं.

-स.किस्मतसिंह 'दीवाना'

*

सटीक समीक्षा के कारण

स्तंभ 'चंचल छाया' (जनवरी/द्वितीय) के अंतर्गत पिछले 12 महीनों के बारे में पढ़ कर यह संतोष हुआ कि पिछले वर्ष मैं ने एक भी बेकार फिल्म नहीं देखी. इस का श्रेय 'सरिता' को ही जाता है, क्योंकि फिल्मों की सटीक समीक्षा से सहज ही फ़िल्म के स्तर का पता चल जाता है -प्रकाशचंद्र कनेरिया

*

आलोचना कीजिए किंतु सलीके से

लेख 'काम कीजिए किंतु तरीके से' (जनवरी/द्वितीय) पढ़ कर यदि कोई टिप्पणी की जा सकती है तो वह है 'आलोचना कीजिए किंतु सलीके से.'

लगता है लेखक पूर्वाग्रह से ग्रसित है. उसे शाखा स्तर के कार्य, विशेषतः ग्रामीण बैंकिंग का ज्ञान बिलकुल नहीं है. एक चपरासी की यह कह कर कि 'वह रिकशा किराए के नाम पर' तीनचार रुपए कमा लेता है, आलोचना करने वाले लेखक अधिकारी क्या यह जवाब देंगे कि वह मंडल कार्यालय में पदस्थ रह कर 'पब्लिक कानटेक्ट' (जनसंपर्क) के नाम पर 250 रुपए मासिक ईंधन भत्ता क्यों डकारते हैं? शाखा में तो ठीक है, पर मंडल कार्यालय में किस बात का जनसंपर्क होता है?

विडंबना तो देखिए कि अधिकारी लेखक संस्थान के प्रति अपना लगाव और दायित्व किस खूबी से निभा रहे हैं कि मंडल कार्यालय में पदस्थ रह कर, बिना कोई लेखा कार्य किए 300 रुपए वार्षिक ले रहे हैं, जब कि लिपिक वर्ग आज भी स्वेच्छा से देर रात तक अधिक काम कर अपना सहयोग दे रहा है. -जितेंद्रकुमार श्रीवास्तव

*

'सरिता' की साजसज्जा में निखार

सरिता/जनवरी/द्वितीय को अब नए रंगरूप में देख कर प्रसन्नता हुई. 'विषय सूची,' 'आप के पत्र,' 'सरित प्रवाह' आदि में विषय से संबंधित रंगीन चित्रों ने उस की रूपसज्जा को काफी निखारा है.

-महेंद्रसिंह मोना

*

'रायपुर विकास प्राधिकरण भी समस्याग्रस्त

लेख 'दिल्ली विकास प्राधिकरण' (जनवरी / प्रथम) काफी सार्थक लगा.

हमारे नगर में भी 'रायपुर विकास प्राधिकरण' में व्याप्त ऐसी ही समस्याओं के कारण नगरवासियों ने अपना विश्वास एवं सहयोग गैरसरकारी भवन निर्माण समितियों को दिया. परंतु अनुपम नगर समिति में ऐसी अव्यवस्था भले न हो, पर किसी को आबंटित भूखंड किसी और को भी आबंटित करने की एक ऐसी समस्या है, जिस में वैमनस्य उत्पन्न होता है. फलतः आपसी झड़पें स्वाभाविक हैं. पदाधिकारियों के अनियमित कार्यों पर पुलिस अथवा न्यायालय उचित निर्णय इस लिए नहीं दे पाता, क्योंकि उन की पीठ पर राजनीतिबाजों का हाथ है. -मोहन भया

*

समस्या का दूसरा पहलू

लेख 'आप की पत्नी चिड़चिड़ी क्यों है?' (जनवरी/द्वितीय) से मैं सहमत नहीं हूं.

लेख में समस्या के एक ही पहलू पर विचार किया गया है. वास्तविकता यह है कि आज की अधिकतर औरतें आरामपरस्त होती हैं. वे दिनभर निठल्ली रह कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गर्मागर्म खाना परोसने का मज़ा बार-बार गर्म किये बिना!

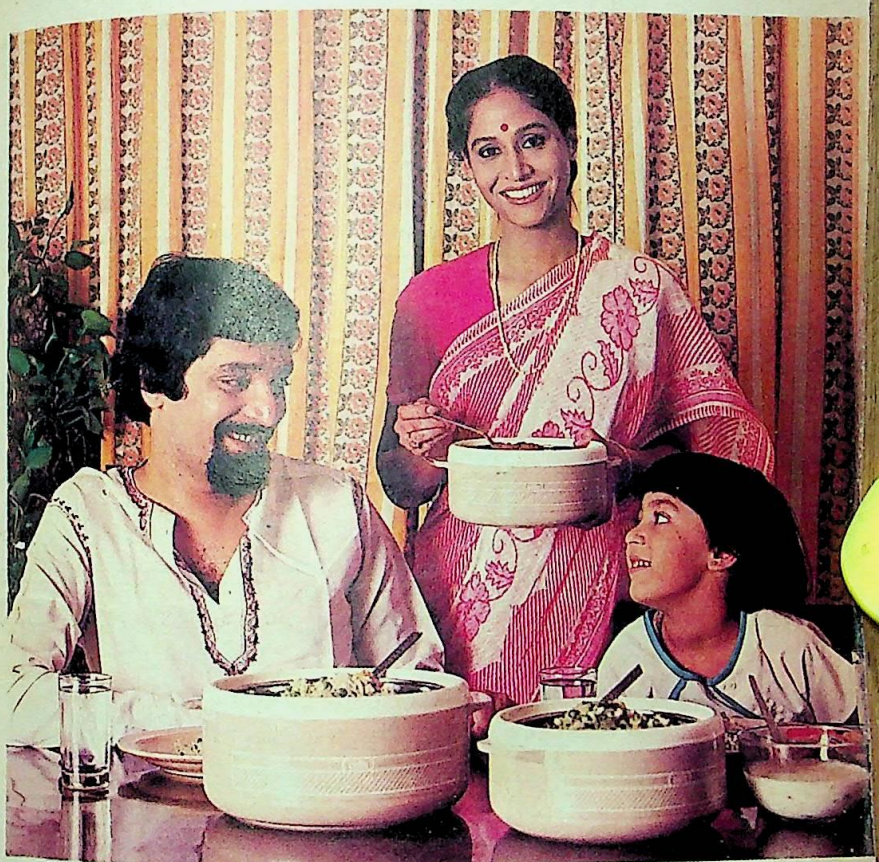

बार-बार खाना गर्म करने से खाने का असली स्वाद तो जाता ही है, गैस का खर्च भी बढ़ जाता है. इतना ही नहीं आपके खाने के पोषक तत्व भी कम हो जाते हैं.

लेकिन बार-बार खाना गर्म करने से आपको जो वक्त और मेहनत खर्च करनी पड़ती है, उसका शायद आपकी नज़र में कोई इलाज नहीं. इस चक्कर में आपको अपने मनपसंद टीवी प्रोग्राम छोड़ने पड़ते हैं, घर आये मेहमानों को अकेला छोड़ना पड़ता है. लेकिन क्या खाना बार-बार गर्म करने के लिए रसोई में जाना बहुत ज़रूरी समझती हैं आप?

सेलो कैसेरोल आपको बार-बार खाना गर्म करने के झंझट से शर्तिया छुटकारा दिलायेगा.

सेलो कैसेरोल खाने को घंटों गर्म रखते हैं और खाने का असली स्वाद और पोषक तत्व भी बनाये रखते हैं. वक्त बचाते हैं, ईंधन बचाते हैं, धोये जा सकते हैं और टूटते भी नहीं.

सेलो कैसेरोल ढेर सारे रंगों और साइज़ों में मिलते हैं. कोई भी चुन लीजिए— अपने लिए या किसी अपने को उपहार में देने के लिए.

खाने को ज्यादा से ज्यादा देर तक गर्म रखने के लिए कैसेरोल को पूरा भरिए.

cello®

सेलो कैसेरोल

बार-बार खाना गर्म करने से छुटकारा.

उत्पादक : **विमको पेन कम्पनी** (थर्मोवेअर डिवीज़न), ११ मेहता इंडस्ट्रियल एस्टेट, आइ. बी. पटेल रोड, गोरेगांव (पूर्व), बम्बई ४०० ०६३. फ़ोन : ६९२६९४, ६९५३६९. टेलेक्स : 011-78253 CELO IN.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पति के कामों में मीनमेख निकलती है. पति की आय से असंतुष्ट रहती हैं.

ऐसे में पति महोदय झल्लाएंगे नहीं तो क्या करेंगे, भले ही पत्नी चिड़चिड़ी होती रहे.

—रविशंकर अग्रवाल

*

चिकनपाक्स के दाने

लेख 'छोटी माता' (चिकनपाक्स) से घबराइए नहीं' (जनवरी/द्वितीय) के अंतर्गत चिकनपाक्स के लक्षणों में बच्चे को तेज बुखार के साथ चेहरा बिलकुल लाल हो जाने, श्वास लेने में कठिनाई होने, दाने सर्वप्रथम सीने व पेट पर नजर आने का उल्लेख है, लेकिन अगर दाने शरीर पर बाहर से नजर न आते हों तो मुंह में तालु पर इन दानों को देखना चाहिए. —सी.के.हर्षवाल

*

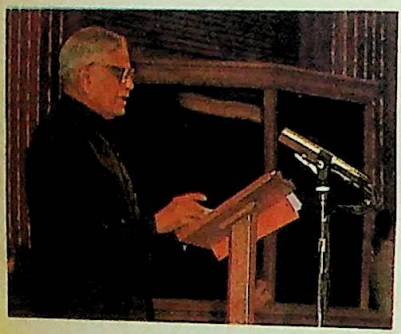

राष्ट्रभाषा की विडंबना

गणतंत्र दिवस की पूर्व संध्या पर राष्ट्रपति रामास्वामी वेंकट रमन ने राष्ट्र के नाम अपना संदेश अंगरेजी भाषा में प्रसारित कर अपना अंगरेजी प्रेम ही प्रदर्शित किया है.

भूतपूर्व राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह की तरह क्या वर्तमान राष्ट्रपति भी हिंदी और अंगरेजी दोनों भाषाओं में राष्ट्र के नाम संदेश नहीं दे सकते थे.

—ओमप्रकाश क्षत्रिय 'प्रकाश'

*

पगड़ी की समस्या

पिछले दिनों जयपुर में एक महिला का देहांत हो गया. उस के पति व पुत्र जीवित थे. तेरहवीं के दिन 'पगड़ी' के सवाल पर पति ने कहा कि मां की मौत पर पिता के रहते बेटे को पगड़ी कैसे पहनाई जा सकती है. वहां 'पगड़ी' का अर्थ था परिवार का अगला 'कर्ता' नियुक्त होना. पिता के जीवित रहते क्या पुत्र को मुखिया बनाया जा सकता हैं?

कुछ दिनों बाद लखनऊ में ऐसी ही परिस्थितियों में संस्कार एकदम भिन्न थे. वहां पिता के रहते एक नहीं, तीनतीन पगड़ियां बांधी गईं तीनों पुत्रों को यही नहीं, दावत भी हुई.

समान परिस्थितियों में भिन्न संस्कार देख कर अनेक प्रश्न उठाए जा सकते हैं. जैसे:

क्या पिता के रहते पुत्र को परिवार का मुखिया स्वीकार कर 'पगड़ी' बांधनी चाहिए?

क्या एक परिवार में एक से अधिक मुखिया हो सकते हैं?

महिला मुखिया की मौत पर परिवार के उस अंग का मुखिया पुत्र होगा या पुत्रवधू? सास का पारिवारिक वारिस सही माने में पुत्रवधू हो सकती है, पुत्र नहीं. ऐसे अवसर पर बहू को ही चुन्नी/साड़ी पहना कर आदर और मान्यता देनी चाहिए.

मौत शोक का प्रतीक है. क्या ऐसे मौके पर बुलावा और दावत उचित है? यह रिवाज हटना चाहिए.

पगड़ी के समय उस के साथ रुपयों का लेनदेन भी बंद होना चाहिए. पगड़ी पहचान और उत्तरदायित्व की प्रतीक है.

—मनमाहन अग्रवाल

*

सीता बनाम दीपिका

फिल्म समीक्षा 'रात के अंधेरे में' (चंचल छाया/जनवरी/प्रथम) के अंतर्गत नायिका दीपिका को 'सीता माता' कह कर उस के चरित्र पर व्यंग्य किया गया है. यह उस के अभिनय के मूल्यांकन के प्रति अन्याय है.

आदर्श नारी का अभिनय करने से क्या आप यह अपेक्षा करते हैं कि वह अभिनेत्री वास्तविक जीवन में भी एक आदर्श नारी ही बने, कुछ अन्य नहीं. अन्य फिल्मों में वह दूसरी भूमिकाएं अदा करने के लिए स्वतंत्र है.

-सतीश कुमार बांसल

जब दीपिका सीता का वेश धारण कर के सीता की कोई बात नहीं सीख सकी तो धारावाहिक 'रामायण' किसे प्रभावित कर सकेगा? संपादक

*

सरित प्रवाह/नवंबर/द्वितीय

दुर्गा व गणेश स्थापना की आलोचना करते हुए आप ने दूसरे पहलुओं पर विचार नहीं किया कि इस से देश में लाखों लोगों को रोजगार मिलता है क्योंकि इस के लिए रसीदें छपती हैं. कारीगर प्रतिमाएं बनाते हैं. साजसज्जा होती है अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम होते हैं. नेताओं को काम मिल जाता है. पुलिस सक्रिय हो जाती है.

इस प्रकार के कार्यक्रमों में जितना खर्च होता है, उस की पूर्ति भी हो जाती है. लाखों की आरती में कुछ बचत भी हो जाती होगी.

और सब से बड़ी बात यह है कि भक्ति के साथसाथ मनोरंजन हो जाता है. —रामपालन मिश्र

इसी धन को किसी अच्छे उपयोगी, स्थायी महत्त्व के काम में लगा कर, मूर्तियां बनाने, डुबोने आदि से भी अधिक रोजगार उपलब्ध कराया जा सकता है.

जहां तक भक्ति का प्रश्न है, वह तो घर बैठ कर भी हो सकती है और स्थायी मूर्तियां बना कर हर वर्ष उन्हीं का उपयोग कर के भी. —संपादक●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारी बेड़ियां

मेरे मित्र की मां अंधविश्वास के कारण प्रति वर्ष गंगास्नान के लिए जाती हैं. पिछले महीने उन्हें मियादी बुखार हो गया. डाक्टर ने इलाज के दौरान उन्हें ठंडे पानी से नहाने को मना कर दिया. लेकिन उन्होंने डाक्टर की सलाह पर ध्यान नहीं दिया और गंगास्नान करने की जिद करने लगीं. हार कर मेरा मित्र उन्हें गंगास्नान कराने ले गया.

सुबह 4 बजे कड़कड़ाती सर्दी में उन्होंने गंगास्नान किया. कमजोरी के कारण उन की हालत गंभीर हो गई. फलस्वरूप मित्र को उन्हें फौरन हस्पताल में भरती कराना पड़ा. डाक्टरों के अथक प्रयास से उन का जीवन तो बच गया, किंतु मित्र की आर्थिक स्थिति काफी बिगड़ गई.

-जगदीश जायसवाल

*

हमारे यहां शादी के दूसरे दिन वरवधू को नदी में 'वक्षस्थल' तक जल में खड़े होकर सूर्य को देवता मान कर उस की आराधना करनी पड़ती है.

पिछले वर्ष प्रथा के अनुसार हमारे एक रिश्तेदार की बेटी की शादी में वरवधू दोनों पास ही की नदी में सूर्य आराधना हेतु गए. नदी में बरसात के कारण बाढ़ आई हुई थी. जैसे ही वह थोड़ा आगे बढ़े, दुलहन का पैर फिसल गया. तेज धारा बहने के कारण उस की मृत्यु हो गई.

जब दुलहन के मायके वालों को यह दुखद समाचार मिला तो उन्होंने पुलिस में "ससुराल वालों द्वारा हत्या" की शिकायत लिखवा दी. दोहरे गम के कारण लड़के पर बुरा असर पड़ा. आज कल उस की मानसिक स्थिति ठीक नहीं है.

-सुरेंद्र श्रीवास्तव

हमारे गांव में ब्राह्मण परिवार के लोग शुद्ध शाकाहारी हैं. वे प्याज और लहसुन तक नहीं खाते.

एक बार उन के यहां एक व्यक्ति को निम्न रक्तचाप की बीमारी हुई. डाक्टर ने उसे सुबहसुबह कच्चा लहसुन खाने की सलाह दी. परंतु उस ने अपनी मान्यता के खिलाफ कार्य करना स्वीकार नहीं किया और लहसुन का सेवन नहीं किया. नतीजा यह हुआ कि एक बार उसे दिल का दौरा पड़ा, जिस से तत्काल उस की मौत हो गई.

—राजीव रंजन तिवारी

*

हमारे यहां लड़की के विवाह से कुछ दिन पहले घर की बहू और ननद के बीच एक ही ओखली में धान कूटने की प्रतियोगिता होती है.

मेरी बहन के विवाह के समय मेरी चाची और बूआ के बीच यही प्रतियोगिता हुई. दोनों धान कूटने लगीं. काफी समय बीत गया, पर दोनों में से कोई भी पीछे हटने को तैयार नहीं थी.

बूआजी काफी थक चुकी थीं, लेकिन फिर भी उन्होंने हार नहीं मानी. परिणामस्वरूप उन के हाथ से मूसल छूट गया और हाथ ओखली में चला गया, जिस से उन के हाथ में काफी चोटें आईं. काफी उपचार के बाद ही वह ठीक हो पाईं.

—रविकांत 'रवि'

इस स्तंभ के लिए अपने तथा अपने संबंधियों के अनुभव भेजिए. प्रत्येक प्रकाशित अनुभव पर 30 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. अपने अनुभव इस पते पर भेजें. संपादकीय विभाग, सरिता, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चंपक पाक्षिक.....

चंपक के हर अंक में आकर्षक रंगों में छपी हुई सुंदर मनमोहक सचित्र कहानियां, शिक्षाप्रद लेख, कार्टून और चित्र पहेलियां प्रकाशित होती हैं.

चंपक से हर महीने में दो बार बच्चे "चीकू", "चुंचू", "डिंकू", "पप्पू" और बंदरकुमार के साहसिक कारनामों का आनंद उठाते हैं.

चंपक की सामग्री आप के बच्चों के लिए ज्ञान के नए मार्ग खोलती है, बच्चों का चरित्र बनाती है, उन का स्वस्थ मनोरंजन करती है.

अपने बच्चों को आज ही एक प्रति ले कर दें

इन के अलावा
- अंगरेजी
- गुजराती
- मराठी

में भी प्रकाशित होता है.

दिल्ली प्रेस प्रकाशन

वि.वि./च.-215

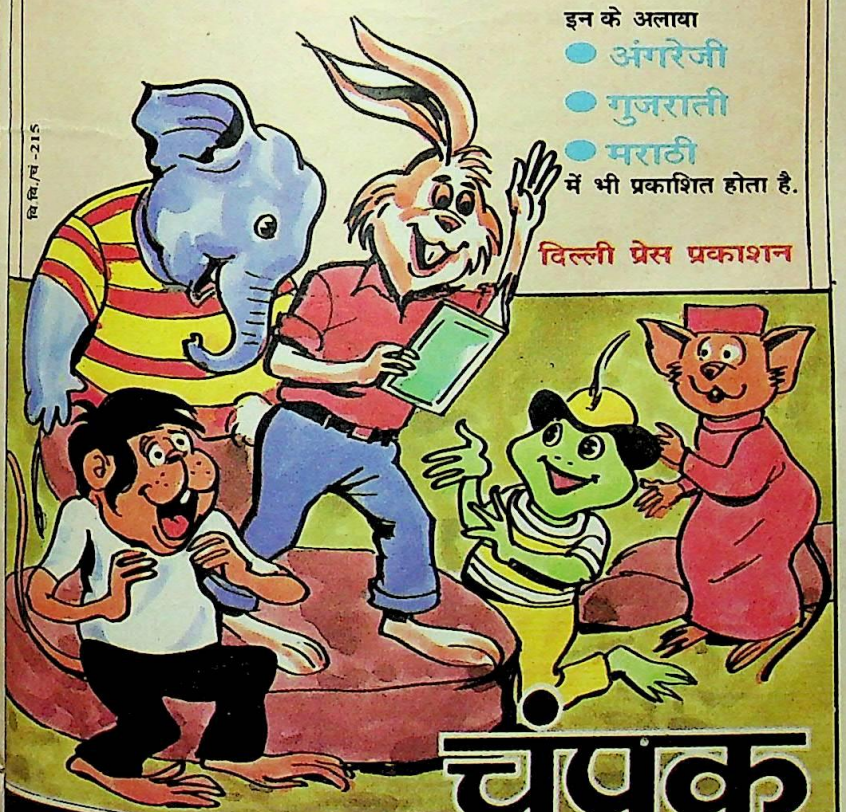

चंपक

नन्हे मुन्नों की रंगीन हिन्दी पाक्षिक पत्रिका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

© J&J 1986

मुन्ने को मां ही बेहतर जाने... या फिर ज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Sगमग पग-पग, पग-पग डगमग
हंसना रोना और किलकना
तुझे निहारूं, हर दिन, हर पल
खुशियों से महके मेरा अंगना

तेरे अनमोल प्यार पर निछावर ...सौ बरसों की देखभाल

आपके लाड़ले का संसार यानी कोमल... नाज़ुक... प्यार और ममता का सलोना संसार! इस दुनिया की हर चीज़ को चाहिए ख़ास एहतियात-भरी देखभाल. आज सौ सालों से नन्हें-मुन्नों की त्वचा की देखभाल करते आ रहे हैं केवल जॉन्सन एंड जॉन्सन. हम ही जानते हैं कि इनकी त्वचा कितनी कोमल और कितनी नाज़ुक है. और इसीलिए तो हम नन्हें-मुन्नों के लिए ख़ास उत्पादन तैयार करते हैं. इनमें होते हैं सबसे शुद्ध तत्त्व... और हर बैच के प्रत्येक उत्पादन का कड़ा परीक्षण किया जाता है, ताकि आपके लाड़ले को मिले सर्वोत्तम कोमलता का एहसास!

क्या अपने लाड़ले की देखभाल के लिए आप किसी और पर भरोसा करेंगी... क्या आप ऐसा कर सकती हैं?

बच्चे की मुफ़्त देखभाल पुस्तिका के लिए यहां लिखें :
बेबी-केयर सलाहकार, जॉन्सन एंड जॉन्सन,
पो. ऑ. बॉक्स ९३०१, बम्बई ४०० ०३६.

फिर जॉन्सन एंड जॉन्सन

LINTAS JJC 6 2720 HI R

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कपड़ों में
नई चमक

दीप्त तरल डिटरजैंट

आपके सूती, ऊनी, रेशमी व कृत्रिम धागों के कपड़ों की संपूर्ण, सुरक्षा धुलाई के लिए.

सुरक्षित • किफायती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्व बाल साहित्य

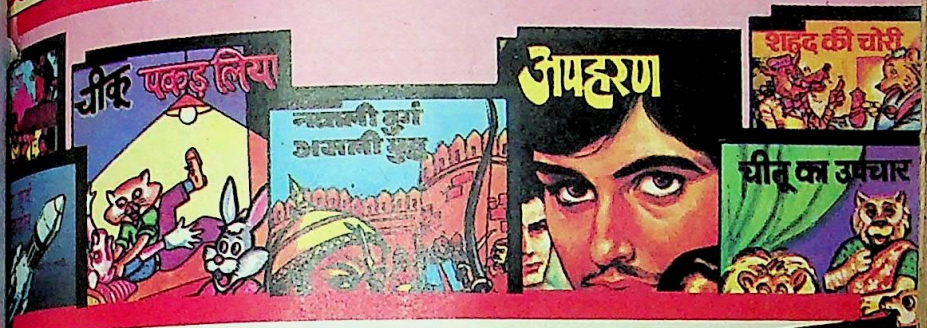

इन पुस्तकों की मनोरंजक व ज्ञानवर्द्धक पाठ्य सामग्री बच्चों का स्वस्थ मनोरंजन और विकास करती है और यही विशेषता है विश्वबाल पुस्तकों में. ये पुस्तकें बच्चों को जीवन में बढ़ कर कुछ कर दिखाने की प्रेरणा तथा देशभक्ति की भावना भी जाग्रत करती हैं.

इन की आकर्षक रंगीन छपाई बच्चों का मन मोह लेती है. लुभावने चित्रों में चीकू, चुंचू, पप्पू, पिंटू व मोती के कारनामों का रोचक वर्णन देर तक बच्चों के मन को गुदगुदाता है.

प्रत्येक रु. 2.00

दीपू और मोती
अंधेर नगरी
सोन चिरैया
पप्पू का दोस्त
साहसी चालू

प्रत्येक रु. 2.50

नटखट बंदर
पिंटू और मोती
तेनाली और कुत्ते की दुम
चुंचू घोड़े की सवारी
चुंचू गड्ढे से निकला
चीतू का उपचार
मां को बता देना
नकली दुर्ग असली युद्ध
शेर और बैल
नन्हा घड़ियाल

प्रत्येक रु. 3.00

अनोखा मित्र
शहद की चोरी
बूटल
राकेट एवं मिसाइल

प्रत्येक रु. 4.00

अपहरण
स्वतंत्रता के सेनानी
अनमोल शंख
घमंडी भैंसा

प्रत्येक रु. 5.00

नए द्वीप का रहस्य
चीकू पकड़ लिया
दुष्ट का अंत
साहसी बालक

प्राप्ति स्थल : दिल्ली बुक कंपनी, एम -12, कनाट सर्कस, नई दिल्ली -110001

66 रुपए मूल्य अग्रिम भेजने पर डाक खर्च केवल 2 रुपए वी.पी.पी. से चुनी हुई पुस्तकें मंगवाने पर 10 रुपए अग्रिम भेजें. डाक खर्च अतिरिक्त. चैक नहीं. बैंक ड्राफ्ट पोस्टल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अरित प्रवाह

वित्त मंत्री नारायणदत्त तिवारी ने 29 फरवरी को जो केंद्रीय सरकार का 1988-89 का बजट पेश किया, उस के लिए दावा किया कि यह बजट गरीबों, किसानों के हित में है. पर वास्तविक रूप में यह एक झांसे, दिखावट और कुछ हद तक बेईमानी का बजट है.

बेईमानी इसलिए कि जो नए कर या भार बजट में लगने चाहिए, वे बजट पेश करने से पहले ही रेल, डाक, तार, टेलीफोन, इस्पात, कोयला, पेट्रोल, डीजल इत्यादि के मूल्य बढ़ा कर, जिन का भार लगभग 3,300 करोड़ रुपए होगा, लगा दिए गए, ताकि यह तोहमत बजट और बजट पेश करने वाले के सिर न लगे.

झांसा इसलिए कि ऊपर से यहांवहां सजावट के लिए उत्पादन शुल्क व आयात शुल्क कुछ कम कर दिए गए हैं. पर दूसरी जगह उन से अधिक थोप दिए गए हैं. जब सरकारी बुनियादी सामान के दाम पहले ही बढ़ा दिए गए हैं तो इन हेरफेरों से क्या राहत मिल सकती है?

उदाहरण के लिए स्टील के बरतनों पर से उत्पाद शुल्क हटा दिया गया है. पर इस्पात के दाम तो आप ने पहले ही बढ़ा दिए हैं, बरतन पहले की अपेक्षा सस्ते होंगे या महंगे?

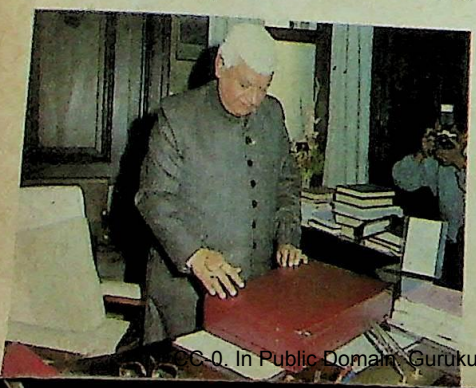

असली बात तो यह है कि सरकारी आंकड़ों के ही अनुसार उत्पाद शुल्क में घटाबढ़ी के बाद पिछले वर्ष की अपेक्षा 23[illegible] करोड़ रुपए अधिक वसूल किए जाएंगे. राहत किसे दी गई?

फिर अंत में 7,500 करोड़ के फर्जी नोट छाप कर लोगों को भुलावे/झांसे में डाल कर उन से उन की सेवाएं, मालसामान खींच लिया जाएगा. इस प्रकार जनता से लगभग 11,000 करोड़ रुपया अधिक वसूल कर अधिकांश सरकारी अमले, सरकारी ठेकेदारों और राजनीतिबाजों की जेबों में पहुंचेगा.

जनता अब यह जान गई है कि मूल्य व्यापारी या उद्योगचालक नहीं बढ़ाता, सरकारी टैक्स और नए नोट बढ़ाते हैं. मूल्यों को स्थिर रखने, महंगाई को कम करने के लिए आवश्यक है कि सरकारी खर्च कम किया जाए, सरकारी अफसरों और कर्मचारियों की संख्या कम की जाए.

सरकारी खर्च में सब से बड़ी मद रक्षा, फौजी खर्च की है जो अगले वर्ष 13,000 करोड़ रुपए हो जाएगा. इस मद में रिश्वत और नष्टीकरण का बोलबाला है. बजाए इसे घटाने के पिछले वर्ष की अपेक्षा इसे बढ़ा दिया गया है. इस के बारे में विवरण भी किसी को नहीं दिया जाता ताकि मनमानी

अरिता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की जा सके–बोफोर्स, जरमन पनडुब्बी, रेगुआर हवाई जहाज, वेस्टलैंड हेलीकाप्टर सब इसी मद में ही तो आते हैं.

*

किसान नेता महेंद्रसिंह टिकैत ने 25 दिन के आंदोलन के बाद मेरठ के कमिश्नर के घर का घेराव समाप्त कर दिया और अपने अनुयायियों को घर लौटने का आदेश दिया. इस घेराव में न तो टिकैत को, न किसानों को कोई नई रियायत या सुविधा मिली. उलटे, उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्री, वीरबहादुर सिंह की बहादुरी में थोड़ी बढ़ोतरी हो गई और उन की मुख्य मंत्री की कुरसी थोड़े दिनों के लिए और सुरक्षित हो गई. राजीव गांधी भी अवश्य कुछ संतुष्ट हो गए होंगे; उन्हें कोई समझौता नहीं करना पड़ा और उन का नारा कि हम दबाव में आ कर कुछ नहीं देंगे, यहां सच्चा साबित हो गया.

पर इस आंदोलन में एक बात जो स्पष्ट दिखाई दी वह यह कि टिकैत ने कहा था कि हम कोई हिंसात्मक काररवाई नहीं होने देंगे, वह सच निकली. आजकल शांतिपूर्ण आंदोलन शीघ्र ही हिंसा का पल्ला पकड़ लेते हैं और तोड़फोड़, हत्याएं होती हैं. गोलियां चलती हैं, जांच कमीशन बैठाए जाते हैं.

किसानों की कुछ मांगें अतिशयोक्तिपूर्ण हो सकती हैं, शायद थीं भी. पर अधिकांश में वे सही व उचित थीं. जब तक देश का किसान समृद्ध नहीं हो जाता, देश समृद्ध नहीं हो सकता. समृद्ध का मतलब यहां लखपती या करोड़पती बनने से नहीं है क्योंकि वह तो वह कभी हो ही नहीं सकता, खेती की सीमाबंदी होने के कारण. पर इतना समृद्ध तो होना ही चाहिए कि वह कर्ज में डूबा न हो. एक दो फसल संपूर्ण नष्ट हो भी जाए तो वह यह हानि संभाल ले और सरकार के आगे सहायता या ऋण के लिए हाथ न फैलाए. उस का मकान पक्का हो. बच्चों को पढ़ालिखा सके. दो समय की रोटी खा सके.

आज, सरकार के प्रचार के बावजूद बड़े से बड़े किसान को यह सब मुशकिल से मिलता है. सरकार कृषि उद्योग के लिए जो सहायता बिजली, पानी, खाद इत्यादि में देती है, और जिस का रोना शहरी सरकारी अफसर और अर्थशास्त्री रोते रहते हैं, वह वास्तव में शहरी आबादी को मिलती है, किसान को नहीं. यदि ये छूटें न मिलें तो खेती की उपज के दाम बढ़ाने ही होंगे और फिर शहरी लोग चूंचूं करेंगे. किसान तो वहीं का वहीं रहेगा.

शहरी लोगों को कितनी सरकारी सहायता (सबसिडी) मिलती है, इस का अंदाजा दिल्ली परिवहन निगम के वार्षिक घाटे से लगाया जा सकता है–अब तक वह लगभग 100 करोड़ रुपए वार्षिक था. इस वर्ष अंदाजा है 200 करोड़ रुपए से बढ़ जाएगा. यह घाटा लागत से कम टिकटों का दाम वसूल करने के कारण होता है.

*

महेंद्रसिंह टिकैत का यह मेरठ घेराव उन्हें सोचनेसमझने पर अवश्य मजबूर करेगा. अहिंसात्मक आंदोलनों को सफल बनाने के लिए बहुत सूझबूझ की आवश्यकता होती है. उस के लिए मुद्दे भी सोचसमझ कर उठने पड़ते हैं, जिन से काफी लोग सहमत हों, और जो प्राप्त करने संभव हों. इस आंदोलन में मेरठ कमिश्नर के घर का घेराव करने से सरकार को कोई असुविधा नहीं हुई, न जनता को. फिर सफलता कैसे मिलती? यह तो केवल एक तमाशा बन कर रह गया.

अब जो कार्यक्रम टिकैत ने बनाया है, वह भी बहुत कारगर होगा, इस में संदेह है. सरकारी कर्मचारियों को गांवों में न आनेजाने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देने से सरकार का क्या बिगड़ेगा? लगान वैसे ही मामूली होता है, और सरकार उसे छोड़ती रहती है. बिजली का पैसा न देने से बिजली केंद्र से ही कट सकती है. गांवों के झगड़े सरकारी अदालतों में न जाएं, इस में सिवा वकीलों के किसी को कोई हानि नहीं होती. सरकारी बैंकों के ऋण नहीं लौटाए जाएंगे, तो आगे पैसा मिलना बंद हो जाएगा.

इस समय सब से बड़ी आवश्यकता है किसानों की कठिनाइयों का प्रचार करना, देश के लिए उन की सेवाओं के महत्त्व से हर वर्ग को परिचित कराना, शहरी अर्थशास्त्रियों की गलत धारणाओं का खंडन करना और इस सब से ऊपर किसानों व खेतिहर मजदूरों का संगठन करना.

आज शहरी अधिकारी खेतिहर मजदूरों का वास्ता दे कर किसानों को तरहतरह की गालियां देते हैं. और ग्रामीण मजदूरों को शहरी औद्योगिक मजदूरों की तरह यूनियनों में जकड़ना चाहते हैं और किसानों को इंस्पेक्टर राज के शिकंजे में. इस से पहले कि ये लोग खेतिहर मजदूरों को बरगला सकें, किसानों को इन्हें अपने साथ लेना होगा और समझाना होगा कि बिना किसान समृद्ध हुए मजदूर समृद्ध नहीं हो सकते. जब तक किसान की उपज की कीमतें नहीं बढ़ेंगी, उस की आय में वृद्धि नहीं होगी, खेतिहर मजदूर भी आय नहीं बढ़ा सकता.

शहरी अधिकारियों व अर्थशास्त्रियों के आक्रमण को निरस्त करने के लिए किसानों को 'शहरों पर खर्च कम हों' का नारा लगाना चाहिए और इस का व्यापक प्रचार करना चाहिए.

*

पिछले महीने, 22 फरवरी को राज्यसभा में, कांग्रेस के वरिष्ठ नेता व भूतपूर्व अध्यक्ष, देश के उपराष्ट्रपति और राज्य सभा के सभापति का जिस प्रकार सत्तारूढ कांग्रेस दल ने, प्रधान मंत्री राजीव गांधी की शह पर, अपमान किया, उन को जलील किया, वह संसद के इतिहास में एक अविस्मरणीय घटना थी.

बात सिर्फ इतनी सी थी कि सभापति शंकरदयाल शर्मा ने राज्य सभा में तेलगूदेशम के सदस्य उपेंद्र को आंध्र प्रदेश की राज्यपाल कुमुद बेन जोशी द्वारा बजट से अधिक धन उड़ाने के बारे में जिक्र करने के लिए अनुमति दे दी. कांग्रेसी यह मुद्दा उठवाना नहीं चाहते थे और उन्होंने इस पर सभापति की अवहेलना करनी शुरू की, उन्हें बोलने नहीं दिया. यहां तक कि उपसभापति को आगे कर के उन की कुरसी पर अधिकार जमाने तक का प्रयत्न किया.

इस बेइज्जती पर शंकरदयाल शर्मा इतने विचलित हुए कि रूंधे गले और आंखों में आंसू लिए उन्हें यह कहने पर मजबूर होना पड़ा कि यदि आप मुझे नहीं चाहते तो मैं तत्काल हाथ जोड़ कर त्यागपत्र देने को तैयार हूं, पर सदन की गरिमा व अधिकार का हनन नहीं होने दूंगा.

सभापति की बेइज्जती करने में कांग्रेस दल के साधारण सदस्य ही नहीं, वित्त मंत्री नारायणदत्त तिवारी और उपगृह मंत्री चिदबरम भी शामिल थे, जो राजीव गांधी के मौन समर्थन से प्रोत्साहित हो कर बढ़चढ़ कर शंकरदयाल शर्मा को कहसुन रहे थे.

अंत में, सभापति को सदन छोड़ कर जाना पड़ा और उन के दिलदिमाग पर इतना असर पड़ा कि उन्हें हस्पताल ले जाना पड़ा.

बाद में कहा गया कि प्रधान मंत्री ने उन के घर जा कर सफाई दी या माफी मांगी. पर इस का पूरा विवरण प्राप्त नहीं है.

सत्तारूढ कांग्रेस अपने ही वरिष्ठ नेता की, जिस को उस ने स्वयं उपराष्ट्रपति चुना, इस प्रकार बेइज्जती करती है, इस में कोई आश्चर्य नहीं होना चाहिए. धीरेधीरे

सरिता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कांग्रेसी अब किसी तरह की तहजीब, अनुशासन, नैतिकता, सभ्य आचरण से दूर हटते जा रहे हैं. वे अब साफ, खुलेआम सत्ता और धन के दीवाने बन गए हैं. जिस तरह भी हो, ये दोनों प्राप्त करना ही उन का उद्देश्य बन गया है और इस के लिए वे सब तरह की मर्यादा को तोड़ देने के लिए तैयार हैं.

*

सार्वजनिक जमीन और सड़कों, पटरियों पर आजकल हर शहर, कसबे, गांव में अनधिकृत कब्जा धड़ल्ले से हो रहा है. जिस की इच्छा होती है वह इस जमीन पर अपने मकान, दुकान या झोपड़ी बना लेता है. बस उसे केवल दो जगह रिश्वत देनी होती है. एक पुलिस को, जिस का काम सार्वजनिक संपत्ति, जमीन की देखरेख करना होता है, चलने वालों के लिए रास्ता साफ रखना होता है, पर जो हाथ गरम होने पर आंखें दूसरी ओर कर लेती है. दूसरे, उसे स्थानीय नगरपालिका, पंचायत या समिति के अधिकारियों या संबंधित राजनीतिबाजों को खुश रखना होता है. इन की 'पूजा' आप करते रहिए, आराम से बैठ कर जमीन का फायदा उठाते जाइए.

पुलिस का काम तो हर काम में पैसा बनाना ही है, पर उस का हाथ इस दिशा में राजनीतिबाज या स्थानीय निकायों के अधिकारी भी बंटाते हैं. राजनीतिबाज जब सत्ता में होता है तो पैसा तो वह वसूल करता ही है, उसे वोट की भी फिक्र होती है. इस प्रकार नाजायज कब्जा होने देने से उस के दोनों मंतव्य पूरे हो जाते हैं—पैसा भी मिलता है, वोट भी. जब ऊपर का राजनीतिबाज स्वयं रिश्वत लेता है तो नीचे वाले क्यों आती हुई आमदनी को छोड़ दें?

इस संबंध में न्यायालयों की भी कुछ भूमिका है. बंबई शहर में जब पटरियों पर बनाई झोपड़ियों, खोखों को और उन में स्थायी रूप से रहने वालों को एक ईमानदार निगम अधिकारी ने हटाना चाहा तो उच्च न्यायालय ने निषेधाज्ञा जारी कर दी कि पटरियों पर रहने वालों को बदले में दूसरा स्थान दिए बिना नहीं हटाया जा सकता. यह तो ऐसा ही हुआ जैसे कोई आपका माल लूट ले और न्यायालय कहे कि आप का माल तभी मिलेगा जब आप उस लूट का मुआवजा दें!

पटरियां और सड़कें राहगीरों के चलने के लिए, सार्वजनिक उपयोग के लिए होती हैं न कि मकान बना कर रहने या अपना माल रखने का गोदाम बनाने के लिए. कोई भी सरकार सब नागरिकों को मकान, रहने का स्थान देने का वायदा न करती है, न कर सकती है. सरकार के पास न असीमित रूपया है, न जमीन. जो रुपया और जमीन है

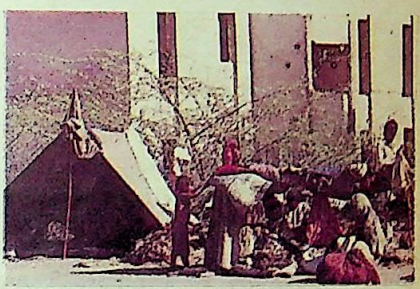

भी, वह भी नागरिकों द्वारा सामूहिक रूप से काम में लाने के लिए दी हुई है. किसी धींगामुस्ती करने वाले द्वारा, गरीबी या अमीरी के बल पर, हथियाने के लिए नहीं.

बड़े शहरों में ऐसी जमीन पर झोपड़ी बना कर रहने या कब्जा कर के मकान बनाने का हक न पैसे वाले को मिलना चाहिए, न गरीबी का रोना रोने वाले को. दोनों का इस विषय में कोई मौलिक अधिकार नहीं है. शहरों की उफनती हुई आबादी और बढ़ते हुए यातायात को देखते हुए सार्वजनिक जमीन, पटरियों पर से अनधिकृत कब्जे को हटाना पुलिस और स्थानीय अधिकारियों का पहला कर्तव्य होना चाहिए.

अमीर अपने धन से उचित मूल्य दे कर जमीन खरीद सकता है. जहां तक गरीब का संबंध है, गरीब तो सारा देश ही है. सभी को शहरों, कसबों में इस प्रकार कैसे बसने दिया जा सकता है. और जब सभी को नहीं तो कुछ को भी क्यों? ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आयकर संशोधन

बनाम सरकार की तुगलकी

लेख• सोमराज अग्रवाल

प्रत्यक्ष कर (संशोधन) अधिनियम, 1987 आज पूरे देश और खास तौर से व्यापार जगत में चर्चा एवं विवाद का कारण बना हुआ है. इस के द्वारा आयकर अधिनियम, 1961 में 126 खंडों के माध्यम से भारी फेरबदल कर आयकर कानून का

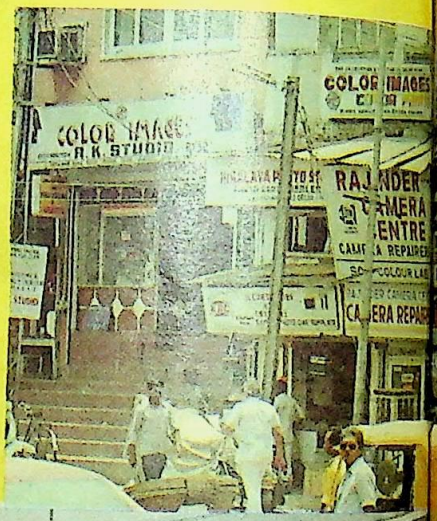

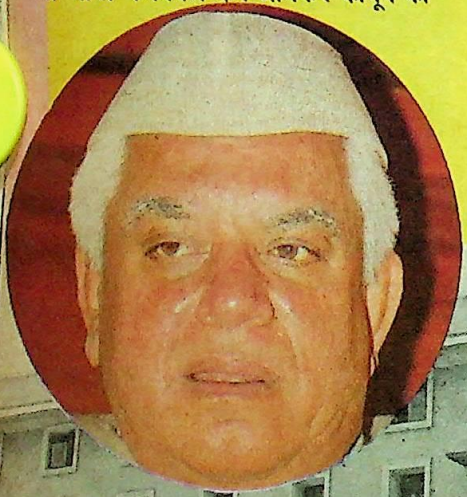

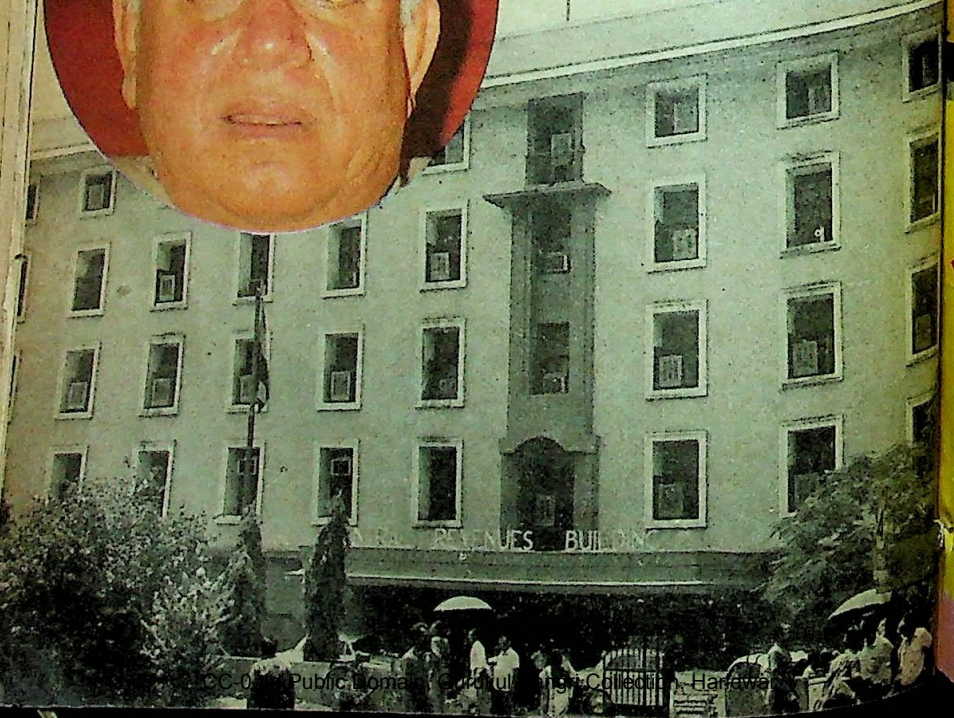

CC-0. Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कानून नीति

नाम दिया जा रहा है, जबकि हकीकत यह है कि इन संशोधनों से आयकर कानून और अधिक जटिल एवं पेचीदा हो गया है. यदि वास्तव में इन संशोधित प्रावधानों से आयकर कानून का सरलीकरण हो जाता तो देशभर में इतने व्यापक स्तर पर इन संशोधनों का विरोध नहीं होता. वास्तविकता यह है कि इन का आम करदाता पर काफी गहरा और प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा. इन संशोधनों में कुछ ऐसे विवादास्पद एवं कड़े

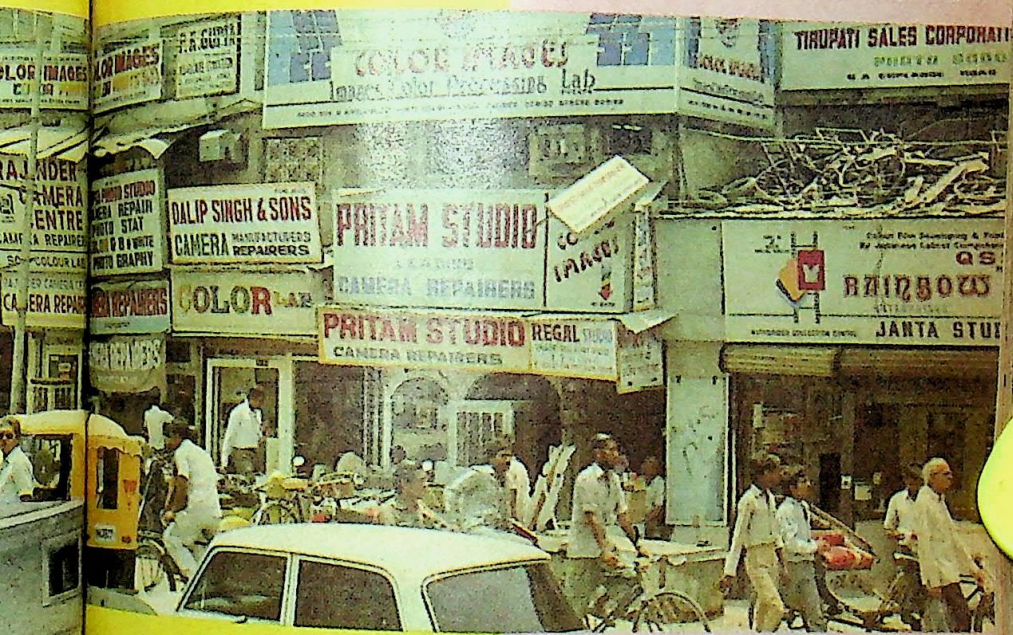

नारायण दत्त तिवारी : नागरिकों पर कर अधिकारियों की मनमानी कर लोकतंत्र का मखौल. (एकदम बाएं). करों का बोझ बढ़ा कर सरकार खुदबखुद आयकर विभाग में भ्रष्टाचार को बढ़ावा दे रही है.

ढांचा ही बदल दिया गया है. आयकर अधिनियम, 1961 के प्रभावी होने के पश्चात पिछले लगभग 26-27 सालों में संभवतः इतने बड़े पैमाने पर और इतने विवादास्पद एवं उलझनपूर्ण संशोधन पहली बार किए गए हैं.

आश्चर्य एवं दुख की बात है कि इन संशोधनों को कर कानून के सरलीकरण का

जनतंत्र की दुहाई दे कर, नागरिकों के लिए सरलीकरण के नाम पर बनाया गया आयकर संशोधन कानून आम जनता को उलझनों और भ्रष्टाचार के शिकंजे में कसने का षड्यंत्र है. तभी तो उसे गुपचुप तरीके से दोनों सदनों से पास कराया गया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रावधान किए गए हैं, जिन से आम करदाता की उलझनें और परेशानियां घटने की बजाए बढ़ेंगी एवं कानून अपेक्षाकृत ज्यादा जटिल और पेचीदा होगा. फलतः भ्रष्टाचार के दलदल में डूबे हुए आयकर विभाग में भ्रष्टाचार और बढ़ेगा.

यह एक विडंबना ही है कि इतने बड़े पैमाने पर और देश के समस्त व्यापारउद्योग को बुरी तरह प्रभावित करने और झकझोरने वाले आयकर संशोधन कानून को काफी नाटकीय ढंग से प्रस्तुत कर इतनी जल्दबाजी में और जबरदस्ती से पारित करवाया गया कि हर व्यक्ति हैरान रह गया.

इस तरह की नाटकीयता एवं जल्दबाजी की हरकत पर जब रोष प्रकट किया गया तो वित्त मंत्री ने यह गलत बात कह कर विरोधकर्ताओं को चुप कराने की नाकाम कोशिश की कि ये प्रस्तावित संशोधन काफी अरसे से जनता को मालूम थे. जबकि हकीकत यह है कि तत्कालीन वित्त मंत्री ने 14 अगस्त, 1986 को एक चर्चापत्र (डिस्कशन पेपर) लोकसभा में रखा था, किंतु संशोधित कानून कई दृष्टियों से उस चर्चापत्र में प्रस्तावित संशोधनों से हट कर एवं उलझनें बढ़ाने वाला है.

बहुमत की लाठी

इतने महत्त्वपूर्ण और व्यापक संशोधनों वाले विधेयक को पारित करने से पूर्व यह आवश्यक था कि इस पर संसद में एवं बाहर भी बहस की जाती और इसे काफी सोचविचार कर पारित किया जाता. किंतु कांग्रेस सरकार के पास भारी बहुमत की लाठी है और 'जिस की लाठी उसी की भैंस' के अनुरूप वह अपनी मनमरजी से आम जनता पर भारी करों का बोझ डाले जा रही है.

कांगेस सरकार ने शुरू से ही आम जनता की भावनाओं और उन के मौलिक अधिकारों के साथ खिलवाड़ किया है. हमारे देश के लिए सब से अधिक सोचनीय विषय तो यह है कि शासक वर्ग के अधिकांश विधायक और सांसद केवल चुनाव लड़ने और येनकेन प्रकारेण चुनाव जीतने, मुफ्त में आम जनता के पैसों पर गुलछर्रे उड़ाने और अपने नेता को खुश रखने या उस की चाटुकारिता करने में ही मशगूल रहते हैं. उन के पास कानूनों और खास तौर से इस तरह के महत्त्वपूर्ण, जटिल एवं दूरगामी परिणाम वाले कानूनों को सोचनेसमझने की न तो फुरसत है और न क्षमता ही देश के लिए बड़े अफसोस की बात यह है कि यदि शासक वर्ग के कुछ गिनेचुने सोचनेसमझने वाले विधायक, सांसद कुछ कहते भी हैं तो उन की आवाज या तो फौरन दबा दी जाती है अथवा उन्हें पार्टी से ही निष्कासित कर दिया जाता है.

संसद में विपक्षी पार्टियां भी मजबूत नहीं हैं. फलतः उन की आवाज नक्कारखाने में तूती की तरह होती है. विपक्षी पार्टियों एवं अपने ही दल के कुछ समझदार निर्भीक सांसदों, विधायकों की आवाज को दबा कर, उन की अवहेलना कर, भारी बहुमत के जोर पर शासक दल जो कुछ स्याहसफेद कर रहा है, उसे जनता का समर्थन कह कर जनता पर जबरदस्ती लादना लोकतंत्र का मजाक उड़ाने के अलावा कुछ नहीं है.

विपक्षी पार्टियों ने इतनी जल्दबाजी में इस महत्त्वपूर्ण विधेयक को पारित किए जाने के विरोध में जबरदस्त रोष व्यक्त किया और राज्य सभा में इसी रोष को प्रकट करते हुए सदन त्याग भी किया. विपक्ष इस महत्त्वपूर्ण विधेयक को पारित करने से पूर्व प्रस्तावित संशोधनों को पढ़ने एवं उन पर विचार करने के लिए समय चाहता था, किंतु सरकार ने इस के लिए कोई समय देना भी ठीक नहीं समझा क्योंकि सत्ता पक्ष के पास आज इतना जबरदस्त बहुमत है कि वह संसद को भी रबर की मुहर ही समझ रहा है. फलतः सरकार जैसा और जिस रूप में चाहती है, वैसा ही नागरिकों की भावनाओं के साथ खिलवाड़ कर रही है. इस पर विडंबना यह है कि नागरिकों के साथ इस प्रकार की ज्यादती जनतंत्र के नाम पर और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जनतंत्र की जबरदस्त दुहाई देते हुए की जा रही है.

केंद्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड के अध्यक्ष सी.के. टिक्कू ने इस संशोधन विधेयक के संबंध में कहा कि इस विधेयक का उद्देश्य जहां एक ओर कर कानूनों को सरल एवं प्रभावकारी बनाना है, वहीं दूसरी ओर अब कर की चोरी करने वालों को उस की कीमत अधिक चुकानी होगी.

इस कथन से एक बार पुनः यह बात साफ जाहिर होती है कि हमारे देश के भ्रष्ट नौकरशाह और मुफ्तखोर राजनीतिबाज देश की भारी दुर्दशा करने के बावजूद केवल व्यापारियों और आम करदाताओं (या आम जनता) को 'चोर' कह कर अपना दामन बचाने की नाकाम और नापाक कोशिश कर रहे हैं. और यही कारण है कि सरकार एवं उस के नौकरशाह समयसमय पर तर्कहीन, असंगत एवं पेचीदे कानूनों को बना कर उस में आम जनता को उलझाने एवं कसने का काम करते रहते हैं.

देश के जानेमाने कर कानून विशेषज्ञ एन.ए. पालकीवाला एवं नौवें वित्त आयोग के अध्यक्ष तथा कांग्रेसी सांसद एन.के.पी. साल्वे तक ने इन संशोधनों की काफी खुल कर आलोचना की है.

कांग्रेसी सांसद एन.के.पी. साल्वे ने भी आयकर संशोधन कानून की आलोचना की.

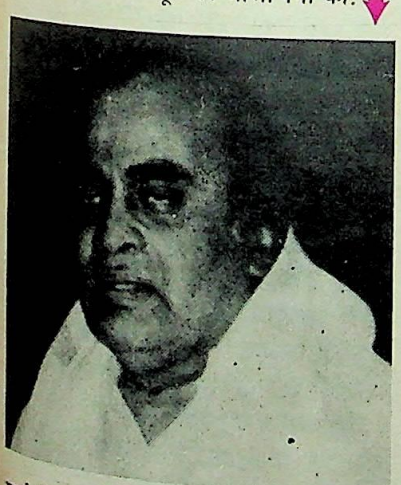

सरकार ने इस विधेयक को जिस जल्दबाजी और नाटकीय ढंग से पारित करवाया है उस ने एक बार फिर यह बात स्पष्ट कर दी है कि सरकार की नजरों में कानून और लोकतंत्र महज एक खिलौना है. और भारी बहुमत के आधार पर सरकार अपनी मनमरजी और अदूरदर्शितापूर्ण निर्णयों से आम जनता को मदारी के बंदर की तरह चाहे जैसे नचा सकती है.

सरकार का यह दावा एकदम खोखला एवं बेकार है कि इन संशोधनों के द्वारा शासन आम करदाताओं पर विश्वास प्रकट किया है. इस के विपरीत, वास्तविकता यह है कि इस भूलभुलैया में आम करदाताओं को निरर्थक एवं असंगत अर्थदंडों एवं जुर्मानों के शिकंजे में कसा गया है. हकीकत यह है कि इस लचीलेपन के नाम पर करदाता के सिर पर हर समय कठोर जुर्मानों की तलवार लटकती रहेगी.

छोटीछोटी भूलों एवं गलतियों के लिए करदाताओं को भारी अर्थदंड, जुर्माने एवं कारावास तक की सजाएं दी जा सकेंगी. उदाहरण के लिए, धारा 139-क के अंतर्गत स्थायी खाता नंबर से संबंधित प्रावधान को ही लें. इस धारा के प्रावधान बिलकुल असंगत, अनुचित एवं निरर्थक हैं. साथ ही, इस धारा के प्रावधान व्यावहारिक दृष्टि से कोई खास महत्त्व भी नहीं रखते. इस के बावजूद इस धारा के प्रावधानों के पालन न करने पर प्रत्येक ऐसी गलती या चूक के लिए दंड की राशि कम से कम 500 रुपए और अधिकतम 10 हजार रुपए रखी गई है. यदि आयकर प्राधिकारियों ने इस धारा के प्रावधानों का पालन न करने पर धारा 272-क की उपधारा (1) खंड घ के अंतर्गत जुर्माना लगाना शुरू कर दिया तो यह निश्चित है कि अधिकांश छोटेछोटे दुकानदार अपने व्यवसाय को बंद करने के लिए मजबूर हो जाएंगे.

सरकार ने अध्याय 14-ख जोड़ कर उस के अंतर्गत धारा 158-ख के अनुसार अतिरिक्त आयकर के रूप में 30% के भारी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

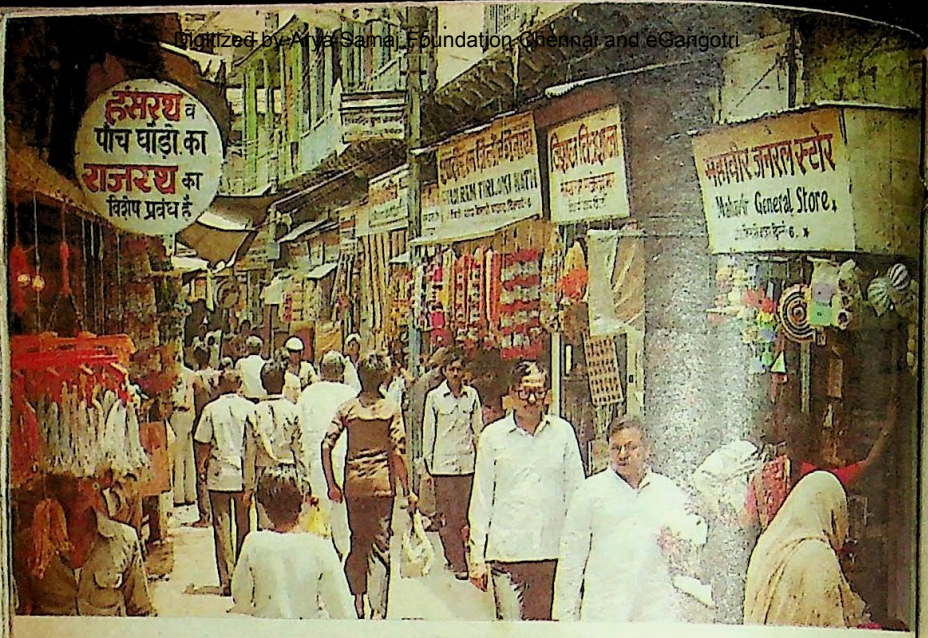

करों के बोझ से दबा आम करदाता सरकार की इस चोट को कैसे सहन कर पाएगा?

अर्थदंड का प्रावधान कर के व्यावहारिक दृष्टि से कर प्राधिकारियों के अधिकारों को बढ़ा दिया है और इस प्रकार आयकर विभाग में भ्रष्टाचार के फैलाव में जोरदार योगदान देने का काम किया है. यदि आयकर प्राधिकारियों को घूस में मोटी रकम नहीं मिली तो वह यह कह सकता है कि करदाता की कुल आय विवरणी में दिखलाई गई आय से अधिक है और वह इस आधार पर करदाता पर निर्धारित आय और विवरणी में दरशाई गई आय के अंतर की राशि पर 30% तक जुर्माना लगा सकता है.

इसी प्रकार एक अत्यंत बेमानी किंतु दिलचस्प प्रावधान यह भी है कि यदि किसी करदाता ने हानि की विवरणी दाखिल की है और नियमित कर निर्धारण में यदि ऐसी हानि की राशि घटा कर कम कर दी जाती है तो हानि की ऐसी घटाई गई राशि पर 30% का अतिरिक्त आयकर लगेगा. यह कितनी बेढंगी बात है कि अब हानि होने पर भी अतिरिक्त आयकर लगेगा.

यह बात सर्वविदित ही है कि कर अधिकारी प्रायः कर निर्धारण के समय आय को बगैर किसी ठोस आधार के बढ़ाते रहते हैं. यह बात इसी तथ्य से स्पष्ट हो जाती है कि वाणिज्य मंडल (चैंबर आफ कामर्स) के एक अध्ययन के अनुसार 10 वर्ष के न्यायालयीन निर्णयों के संदर्भ में कर विभाग ने ऐसे 76% मामलों में मुंह की खाई है जिन में उस ने आय को बढ़ा कर कर निर्धारण किया था.

अतः 30% के अतिरिक्त आयकर के रूप में जो असंगत, अव्यावहारिक, जटिल एवं कठोर प्रावधान किए गए हैं, वे केवल भ्रष्टाचार को बढ़ावा देने के अलावा और किसी उद्देश्य की पूर्ति करने में नाकामयाब ही रहेंगे.

इसी प्रकार, साझेदारी फर्मों से संबंधित संशोधन भी बोझिल और बेकार की कानूनी दिक्कतें पैदा करने वाले ही नहीं, बल्कि छोटी एवं मध्यम श्रेणी की फर्मों पर कहर बन कर गिरने के साथसाथ अनुचित एवं गैरकानूनी भी हैं. यही कारण है कि करदाताओं में, फर्म पर पिछली तारीखों से लागू किए गए आयकर की दर 50% सुन कर एक खलबली सी मच गई है.

किसी कर कानून को पीछे की तारीख

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ले प्रभावी बना कर करदाता पर कर का भार नहीं बढ़ाया जाना चाहिए. चूंकि फर्मों के संबंध में कर की दरें, जो छूट सीमा से अधिक आय होने पर विभिन्न आय खंडों पर 4% एवं 5% से ले कर 22% एवं 24% थीं, अब बगैर किसी करमुक्त सीमा के सीधे कुल आय पर 50% कर दी गई हैं. अतः इस तरह कर का भार बढ़ाने वाले कानून को कानून बनने से पहले की तारीख से किसी प्रकार भी लागू नहीं किया जा सकता. अनुचित प्रावधानों से छोटी एवं मध्यम श्रेणी की फर्में करभार की दृष्टि से किस बुरी तरह से प्रभावित होंगी, यह इस तालिका में दिए गए उदाहरणों से स्पष्ट हो जाता है:

इस तालिका को देखने से यह स्पष्ट हो जाता है कि प्रथम उदाहरण के अनुसार जहां छोटी फर्म पर कर के भार में 300% की भारी वृद्धि हो रही है वहीं द्वितीय एवं तृतीय उदाहरण के अनुसार मध्यम श्रेणी की फर्मों पर क्रमशः 125% और 21.51% की वृद्धि

तालिका

उदाहरण	भागीदारों की संख्या	पूर्णकालीन कार्यरत भागीदार	फर्म में भागीदारों की बराबर-बराबर लगी हुई कुल पूंजी	वार्षिक आय	फर्म एवं भागीदारों पर लगने वाली कर की राशि रुपयों में	
					संशोधन से पूर्व	संशोधन के पश्चात
प्रथम	2	2	10,000	25,000	750	3,000
द्वितीय	3	3	50,000	50,000	2,500	5,625
तृतीय	3	2	1,00,000	1,00,000	19,750	23,998
चतुर्थ	5	5	5,00,000	10,00,000	5,09,250	413, 750
				जोड़	5,32,250	4,46,373

फलतः यह कहना कि जिन फर्मों के बहीखाते जुलाई से जून वर्ष के आधार पर रखे जाते हैं, उन पर 1 जुलाई, 1987 एवं दीवाली वर्ष के आधार पर बहीखाते रखने वाली फर्मों पर ये प्रावधान दीवाली 1987 से ही लागू माने जाएंगे, सरासर अनुचित है. और यह बात किसी तरह से भी समझ में नहीं आती. लेकिन सरकार ने इन संशोधनों द्वारा यह कर ही दिखाया है. इस से आम नागरिकों के मौलिक अधिकारों का एक बार फिर से हनन हुआ है.

सरकार की इस मनमानी एवं गैरकानूनी हरकत ने आम करदाताओं एवं नागरिकों के मन में भारी डर पैदा कर दिया है. साथ ही आम जनता यह सोचने के लिए मजबूर हो गई है कि क्या वोट रूपी भारी वरदान दे कर उस ने कांग्रेस रूपी भस्मासुर को तो नहीं पाल लिया है.

फर्मों से संबंधित अटपटे, असंगत एवं हो रही है. जबकि उपेक्षाकृत बड़ी फर्म पर कर के भार में चतुर्थ उदाहरण के अनुसार 18.76% की कमी की गई है. करभार में अंतर विभिन्न परिस्थितियों में भिन्नभिन्न होगा. कुल मिला कर यह कहा जा सकता है कि जहां छोटी एवं मध्यम श्रेणी की फर्मों पर कानूनी उलझनों के अलावा करभार में भारी वृद्धि कर के अन्याय किया गया है. वहीं कानूनी उलझनों और पेचीदगियों के कारण अपेक्षाकृत बड़ी फर्में भी इस प्रकार के जटिल एवं विवादास्पद संशोधनों से खुश नहीं हैं.

दूसरी ओर, सरकार को भी इस प्रकार के निरर्थक एवं बेतुके प्रावधानों से राजस्व में वृद्धि होने के बजाए कमी होने की ही अधिक संभावना है. उपर्युक्त तालिका के चारों उदाहरणों में संशोधन से पूर्व एवं संशोधन के पश्चात प्राप्त कुल राजस्व की तुलना के आधार पर सरकार के राजस्व में 16.14%

(शेष पृष्ठ 150 पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विवादों के घेरे में तमस

लेख • प्रशांत वेदालंकार

जब से भीष्म साहनी का उपन्यास 'तमस' दूरदर्शन पर धारावाहिक रूप से दिखाया जाने लगा, तब से वह बहुत चर्चित साहित्यकार हो गए हैं. उन्होंने 'तमस' में स्वतंत्रता प्राप्ति से कुछ सप्ताह पूर्व के 'अंधकारपूर्ण इतिहास' को वर्णित किया है.

एक अनावश्यक विवाद खड़ा हो गया है कि 'तमस' को स्वाधीनता पूर्व भारत का इतिहास कहें या उस पर आधारित एक उपन्यास. निश्चय ही यह ऐतिहासिक उपन्यास नहीं है क्योंकि ऐतिहासिक उपन्यासों में पात्रों के नाम सर्वथा ऐतिहासिक होते हैं, और इस में एक भी पात्र ऐतिहासिक नहीं है. प्रमुख घटनाएं भी ऐतिहासिक होती हैं. इस में कुछ घटनाएं यथार्थ हो सकती हैं.

लेखक के अनुसार, स्वयं उस ने इन

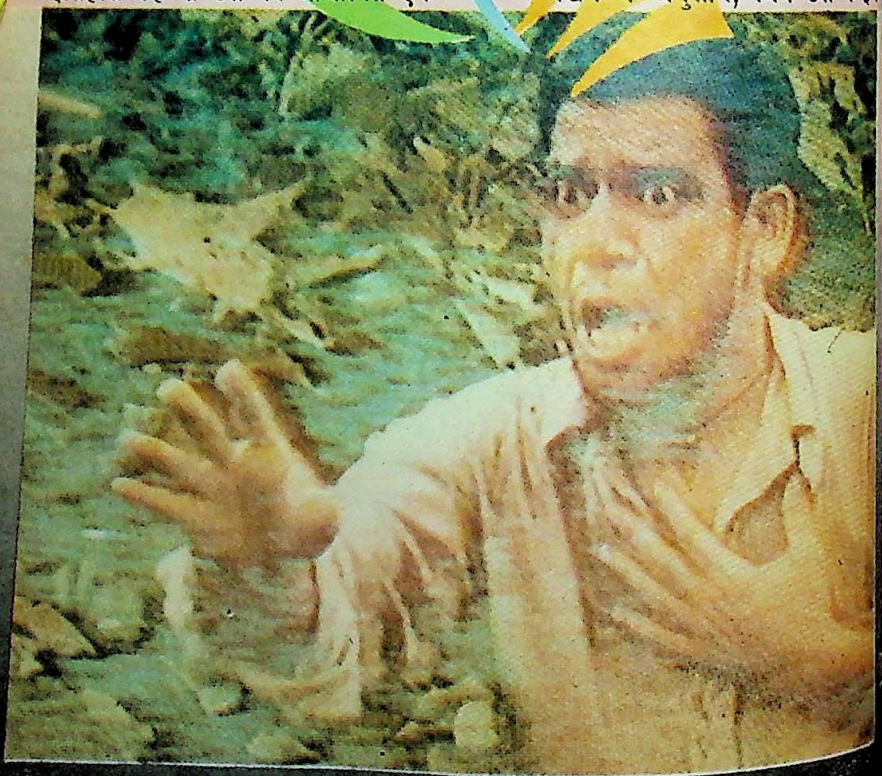

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. Handwa...

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

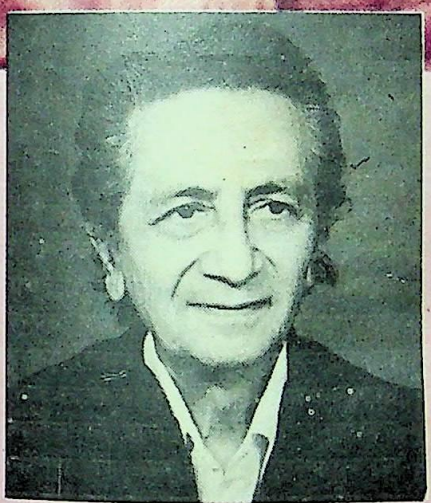

ओम पुरी : प्रसव वेदना से पीड़ित पत्नी को मदद पहुंचाने में असमर्थ (बाएं). भीष्म साहनी और दीना पाठक : अपना घरबार त्यागने पर मजबूर (ऊपर). भीष्म साहनी : तमस उपन्यास के लेखक व कम्यूनिस्ट के लेखक महासंघ के महासचिव (दाएं).

देश का विभाजन और देश में हुए सांप्रदायिक झगड़े—ये दो ऐसी घटनाएं हैं, जो ऐतिहासिक हैं और हमारे देश के इतिहास में एक कलंक हैं. देश की इन दो घटनाओं के आधार पर भीष्म साहनी ने यह उपन्यास लिखा है. इस में लेखक ने देश के

घटनाओं को घटित होते देखा है पर उन का स्वतंत्रता प्राप्ति के इतिहास में कोई स्थान नहीं है क्योंकि वे किसी प्रख्यात व्यक्ति के साथ जुड़ी हुई नहीं हैं, फिर भी इस में इतिहास है.

इतिहास के उस अंधकारपूर्ण अध्याय का वर्णन किया है. ऊपर से ऐसा प्रतीत होता है कि इस उपन्यास में कुछ यथार्थ घटनाओं का चित्रण है, पर वस्तुतः लेखक ने विभाजन व धार्मिक झगड़ों के कारणों की मीमांसा की है.

1975 में साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त तमस यद्यपि धार्मिक कठमुल्लेपन का परदाफाश करता है, लेकिन चूंकि लेखक स्वयं किसी विचारधारा विशेष से प्रतिबद्ध है, इसलिए वह उपन्यास को भी इस दोष से बचा नहीं पाया है. उपन्यास न केवल एकपक्षीय हो कर रह गया है, बल्कि कहींकहीं तो सत्य पर से जानबूझ कर परदा नहीं हटाया गया है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अवतारकृष्ण हगल व मनोहर सिंह : कांग्रेसी व मुसलिम लीगी नेता की गुपचुप.

ऐतिहासिक घटनाओं की मीमांसा के कारण ही इसे उपन्यास के साथसाथ इतिहास भी कहा जा रहा है.

ऐसिहासिक घटनाओं के कारणों के विश्लेषण में भी इतिहासकार कभी एकमत नहीं होते. प्रत्येक इतिहासकार प्रत्येक घटना को अपनेअपने ढंग से प्रस्तुत करता है. और यदि इतिहासकार किसी विचारधारा विशेष से प्रतिबद्ध हो तो उस का विवेचन कभी निष्पक्ष नहीं होता. भीष्म साहनी राष्ट्रीय प्रगतिशील लेखक महासंघ के महासचिव हैं. वह 1957 से सात वर्षों तक मास्को में विदेशी भाषा प्रकाशन गृह में अनुवादक के रूप में कार्य करते रहे हैं. वह हिंदी साहित्य में वामपंथी विचारों के साहित्य का सृजन करने की दृष्टि से विख्यात हैं अतः उन के साहित्य में तथ्यों का निष्पक्ष विवेचन न हो कर एक पक्षीय होना स्वाभाविक है.

यद्यपि तमस पर सन 1975 में साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुआ, कुछ विश्वविद्यालयों में इस का पठनपाठन भी होता है, इस का उद्देश्य यथार्थ चित्रण के आधार पर सांप्रदायिक दूषित वृत्तियों का परदाफाश करना बताया जाता है तो भी इस से इनकार नहीं किया जा सकता कि उपन्यासकार निष्पक्ष नहीं हैं. इस में कम्यूनिस्ट पात्रों को इस रूप में चित्रित किया है कि केवल वे ही अंगरेजों की 'फूट डालो और राज्य करो' की नीति को समझ रहे थे. सांप्रदायिक उन्माद के विरुद्ध केवल वे ही प्रयत्नशील थे, देश में केवल वे ही थे जो सुखशांति और अमन चाहते थे, शेष सभी हिंदू (सिख भी), मुसलमान राष्ट्र को डुबा रहे थे. सांप्रदायिकता के तमस में आकंठ निमग्न थे और ये सभी यहां तक कि कांग्रेस भी देश के विभाजन के लिए जिम्मेदार है.

देवदत्त (हिंदू), सोहनसिंह (सिख) तथा मीरदाद (मुसलमान) अपनेअपने संप्रदाय में दूसरे संप्रदाय से समझौता कर के शांति स्थापित करने का प्रयत्न करते हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपन्यास में देवदत्त स्पष्टतः कम्यूनिस्ट पात्र है. स्वयं भीष्म साहनी कहते हैं कि 'तमस' में सिर्फ एक ही चरित्र है—एक कम्यूनिस्ट. पर प्रगतिशील आलोचकों ने सोहनसिंह और मीरदाद को भी कम्यूनिस्ट मान लिया है. ये तीनों अमन पसंद दिखाए गए हैं और सांप्रदायिक उन्माद को रोकने का अपनेअपने ढंग से प्रयत्न करते हैं. अपने प्रयत्न में इन को असफल दिखा कर लेखक ने इस तथ्य को प्रकट करना चाहा है कि उस समय सांप्रदायिक उन्माद इतना प्रबल था कि 'कम्युनिस्टों' की अच्छी नीयत और उन के सत्प्रयत्न भी काम नहीं आए.

सोहनसिंह सिखों को समझाता है, "हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि हम लोगों को मुसलमानों के खिलाफ भड़काया जा रहा है और मुसलमानों को हमारे खिलाफ भड़काया जा रहा है. हम झूठी अफवाहें सुनसुन कर एकदूसरे के खिलाफ तैश में आ रहे हैं. हमें अपनी तरफ से पूरी कोशिश करनी चाहिए कि गांव में फसाद न हों."

इसी तरह मीरदाद मुसलमानों को समझाता है, "अगर हिंदू, मुसलमान, सिख मिल जाते हैं, उन में इत्तिहाद हो जाता है तो अंगरेज की हालत कमजोर पड़ जाती है. अगर हम आपस में लड़ते रहते हैं तो उस की हालत मजबूत बनी रहती है." पर इस का उत्तर मोटा कसाई देता है, "सुन ओए मीरदाद, लड़ाई हिंदू मुसलमान की है, इस में अंगरेज का दखल नहीं है. तू इधर बकबक मत कर.... चला जा यहां से खुदा कसम नहीं तो मुझ से बुरा कोई न होगा."

लेखक का पक्षपात

वामपंथी आलोचकों की धारणा है कि देवदत्त आदि कम्यूनिस्ट हारे हुए पात्र हैं और लेखक उन्हीं पराजित पात्रों के साथ है क्योंकि ये पात्र लेखक के साथ हैं, इसलिए हार कर भी विजयी हैं और अपनी पहचान स्थापित करते हैं. वस्तुतः यही लेखक का पक्षपात है. यदि पाठक को स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व की कम्युनिस्टों की गलत भूमिका की जानकारी न हो तो वह इन से प्रभावित हो सकता है. कम्युनिस्टों की यह मान्यता रही है कि भारत भूखंड में जितनी भाषाएं हैं, उतने ही राष्ट्र हैं. इस प्रकार 'पृथकता' उन की नीति रही है. दूसरे कूटनीतिक कारणों से वे अंगरेजों का भी समर्थन करते रहे हैं. इस प्रकार इस उपन्यास में भीष्म साहनी ने इतिहास के साथ खिलवाड़ किया है.

कम्यूनिज्म एक अन्य रूप में भी इस उपन्यास में प्रस्तुत हुआ है. भीष्म साहनी ने अपने उपन्यास में यह भी प्रदर्शित किया है कि सांप्रदायिक झगड़ों में केवल निरीह व दयनीय हिंदूमुसलमान ही मरते हैं. धनी व संपन्न हिंदू और मुसलमानों का बाल भी बांका नहीं होता. इत्र बेचने वाला मुसलमान, जरनैल, मिलाखी, इकबाल, आदर्शवादी सोहनसिंह, मीरदाद ये सब इसी उन्माद के शिकार हुए हैं. रघुनाथ, तेजसिंह, लक्ष्मीनारायण जैसे समर्थ लोगों का बाल भी बांका नहीं हुआ. इस के वितरीत, हृदय में सांप्रदायिकता का विष होने के बावजूद वे एकदूसरे की सहायता करते हैं. उक्त स्थापना यथार्थ पर आधारित हो सकती है. पर ऐसी स्थापनाएं उपन्यास का स्वाभाविक अंश नहीं बन सकीं. कामरेड देवदत्त की रुचि इस बात में नहीं है कि कितने लोग मरे, इस बात में अधिक है कि कितने धनी और कितने निर्धन मरे हैं. ये वर्णन उपन्यास के कथ्य के अनुकूल प्रतीत नहीं होते. ये लेखक के किसी मत विशेष के प्रति पक्षपात को ही सूचित करते हैं.

लेखक की मंशा का आधार

इस उपन्यास में कांग्रेस पर अच्छी चोट की गई है. नेतृत्व की भूख, दल में रह कर अपना उल्लू सीधा करने, एकदूसरे को नीचा दिखाने, पैसा खाने, तामीरी (रचनात्मक) काम का नाटक करने, खादी के पाजामे में रेशमी नाड़ा डालने, टिकट प्राप्त करने की कोशिश करने आदि के वर्णनों के साथ यह भी कह दिया गया है कि कांग्रेस में बीमा एजेंट व गुंडे ही आते हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दीना पाठक व सुरेखा सीकरी : गुरुद्वारे में मांबेटी का मिलन.

धारावाहिक में मुसलिम लीग ने विभाजन की सारी जिम्मेदारी कांग्रेस पर डाल दी है. महात्मा गांधी के इस वाक्य का कि 'पाकिस्तान मेरी लाश पर बनेगा,' खूब हंसी उड़ाई गई है. मौलाना आजाद को गांधी के पीछे दुम हिलाने वाला कुत्ता कहा गया है. इन कांग्रेसियों को सदैव यह खतरा रहता है कि अंगरेजों के जाने पर सत्ता हिंदू महासभा, मुसलिम लीग या कम्यूनिस्ट न हथिया लें. सारा स्वार्थ संघर्ष यहीं टिका है.

कांग्रेस और अपने को भारत राष्ट्र के साथ एकनिष्ठ बताने वाले संगठन सदा सही साबित रहे हैं कि भारत में सांप्रदायिकता का विष और उस के परिणामस्वरूप देश का विभाजन अंगरेजों की 'फूट डालो और राज्य करो' की कूटनीति का आवश्यक दुष्परिणाम थे. वस्तुतः यह भी इतिहास की ढंग से की हुई व्याख्या है. वास्तविकता यह है कि जब अंगरेजों ने देखा कि यह देश अनेक संप्रदायों व जातियों में विभक्त है, इन में ईर्ष्या, द्वेष व पारस्परिक तनाव है, इन में क्षेत्रीय संघर्ष हैं तो उन्होंने इस दुर्बलता का लाभ उठाया. इस दृष्टि से तमस की यह स्थापना भी एकांगी है कि 'लगता है, जैसे कोई अनिवार्य घटनाचक्र चल रहा है. जिस पर किसी का बस नहीं, न किसी के हाथ में कोई निर्णय है, न संचालन की क्षमता, कठपुतलियों की तरह सभी घूम रहे थे.'

यह बात निरीह भारतीय जनता के लिए भले ही सत्य हो, पर इस बात से कौन इनकार कर सकता है कि अनेक लोग विभाजन में अपना राजनीतिक लाभ देख रहे थे और सांप्रदायिक झगड़े उन के हृदय की दुर्भावना का आवश्यक परिणाम थे. इस दृष्टि से बख्शी का यह कथन अर्द्धसत्य है, 'फसाद करवाने वाला भी अंगरेज, फसाद रोकने वाला भी अंगरेज, भूखों मारने वाला भी अंगरेज, रोटी देने वाला भी अंगरेज, घर से बेघर करने वाला भी अंगरेज, घरों में बसाने वाला भी अंगरेज...' जब से फसाद शुरू हुए थे बख्शीजी के दिमाग में धूल सी उड़ने लगी थी. बस इतना भर ही वह बारबार कहते रहे, अंगरेज फिर बाजी ले गया.

वस्तुतः सत्य इस से थोड़ा भिन्न है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्य यह है कि अंगरेज भारतीयों की पृथकतावादी वृत्ति का केवल राजनीतिक लाभ उठा रहा था. इस स्थिति का वास्तविक चित्रण अंगरेज सरकार के प्रतिनिधि रिचर्ड के निम्नलिखित कथन से होता है.

"हुकूमत करने वाले यह नहीं देखते कि प्रजा में कौन सी समानता पाई जाती है. उन की दिलचस्पी तो यह देखने में होती है कि वे किनकिन बातों में एकदूसरे से अलग हैं." उस ने एक अन्य स्थान पर अपनी पत्नी से कहा, "वे धर्म के नाम पर आपस में लड़ते हैं, देश के नाम पर हमारे साथ लड़ते हैं."

रिचर्ड की यह नीति कि हम इन के धर्म के झगड़े में दखल क्यों दें, एक कूटनीति थी, जिस ने मूर्ख सांप्रदायिकों को परस्पर लड़ने दिया. इस प्रकार अंगरेज केवल भारतीयों की दुर्बलता का कूटनीतिक लाभ उठा रहा था. उस ने 'उचित' समय पर कर्फ्यू न लगा कर सांप्रदायिक उन्माद को बढ़ने दिया.

पारस्परिक वैमनस्य

यह सत्य है कि अंगरेज यदि चाहता तो हिंदू व मुसलमान की सांप्रदायिक वृत्ति पर अंकुश लगा देता, जिस से उन में इतना खूनखराबा न होता. जब उस ने चाहा तभी यह उन्माद थम गया. 'जिसजिस गांव पर से हवाई जहाज उड़ता गया, वहीं पर...नारे लगाए जाने बंद हो गए. आगजनी और लूटमार बंद हो गई और माहौल बदलने लगा.' यदि अंगरेज ऐसा न चाहता तो मूर्ख भारतीय परस्पर झगड़ कर ही मर जाते. उन के हृदयों में पारस्परिक वैमनस्य की खाई गहरे तक पहुंची हुई थी.

भीष्म साहनी ने सांप्रदायिक झगड़ों का कारण अंगरेज बताया है, यह प्रकारांतर से द्विराष्ट्रवाद का विरोध करने के लिए है.

तमस में भारतीयों की दुर्बलता एक अन्य रूप में भी प्रकट हुई है. यह जानते हुए भी कि अंगरेज भारत का दुश्मन है, अंगरेजों को इस देश से बाहर करने के लिए जीतोड़ कोशिशें हो रही हैं, कुछ भारतीय अंगरेजों का साथ दे रहे थे. मनुष्य स्वार्थ में कितना अंधा होता है कि वह व्यक्तिगत सुख और उत्कर्ष के लिए जातीय व राष्ट्रीय हितों को तिलांजलि दे देता है. इस उपन्यास का आरंभ इसी दुखद स्थिति से होता है.

उपन्यास में मुरादअली चौधरी एक मुसलमान है, पर धारावाहिक में उसे केवल चौधरी कह कर उस के हिंदू होने का भ्रम पैदा किया गया है. वस्तुतः वह हिंदू या मुसलमान कोई भी हो सकता है. और सच यह है कि वह न हिंदू है, न मुसलमान. वह केवल अंगरेज सरकार का पिट्ठू है. देशद्रोही है. यदि स्वतंत्रता आंदोलन के समय ये देशद्रोही भारतीय न होते तो अंगरेज की एक न चलती. कमजोरी भारतीयों की है, अंगरेज तो इन की कमजोरी का केवल राजनीतिक लाभ उठा रहा है. यही मुरादअली शांति स्थापित होने पर अमन कमेटी की गाड़ी पर सब से आगे बैठा है.

तमस का 9 जनवरी को धारावाहिक के रूप में दूरदर्शन पर प्रदर्शन आरंभ हुआ तो इस के विरुद्ध आंदोलन हुए. जावेद सिद्दीकी नामक एक मुसलमान ने बंबई उच्च न्यायालय का दरवाजा खटखटाया, पर न्यायालय ने एक न सुनी. बंबई के एक एडवोकेट रमेशचंद्र ने एस.सी. देशपांडे द्वारा उच्चतम न्यायालय में फरियाद की, पर उसे भी वहां मुंह की खानी पड़ी. इधर कुछ हिंदू संगठनों ने जिन में एक राजनीतिक दल भी शामिल था, दूरदर्शन पर इस के विरुद्ध प्रदर्शन किए और इसे दूरदर्शन पर न दिखाने की मांग की. इन की मांग नहीं मानी गई.

विरोध का एक बड़ा कारण यह था कि इस में स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व के अंधकारमय दिनों की सांप्रदायिक हिंसा का चित्रण है. इसे दिखाने से सांप्रदायिकता फिर से भड़क सकती है. पर बंबई उच्च न्यायालय व दिल्ली में उच्चतम न्यायालय ने भी इस दलील को स्वीकार नहीं किया. न्यायालयों का स्पष्ट कथन है कि अपनी संपूर्णता में यह धारावाहिक सांप्रदायिक उन्माद की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निरर्थकता और मनुष्य की मूलभूत अच्छाई की विजय का संदेश देता है और तत्कालीन सूचना प्रसारणमंत्री अजीत पांजा का भी कथन था कि अधिकांश संगठन तमस को दिखाए जाने के पक्ष में थे.

भीष्म साहनी समर्थक प्रगतिशील संस्थाओं का कहना था कि इस में भारत विभाजन के पूर्व की सांप्रदायिक विकृति को चित्रित किया है और पाठकों को बताया है कि जिस प्रकार कुछ समाजविरोधी शक्तियां, जातिपांति, धर्म, संस्कृति, परंपरा, इतिहास और राजनीति की आड़ में देश व समाज में हिंसा, आगजनी, लूटमार और दंगेफसाद अपने निजी स्वार्थों की पूर्ति के लिए कराते हैं. समाज को ऐसे तत्त्वों का शिकार नहीं बनना चाहिए, बल्कि उन का परदाफाश करना चाहिए. ये लोग तमस जैसे अन्य धारावाहिकों की मांग कर रहे हैं ताकि भारत में एकता, सद्भावना और भाईचारा बढ़े.

हम यहां इस विवाद में नहीं पड़ेंगे कि 'तमस' का पाठकों पर क्या प्रभाव पड़ा है. अनेक बार एक ही लेखक की कृति से दो पाठक अलगअलग प्रभाव ग्रहण करते हैं. कोईकोई पाठक वह प्रभाव ग्रहण नहीं कर पाते जो लेखक उस कृति से उत्पन्न करना चाहता है.

पर तमस का पक्ष और उस का विरोध करने वालों में जो विवाद छिड़ गया है वह बहुत हद तक राजनीति द्वारा प्रेरित है, कृति के साहित्यिक प्रभाव द्वारा नहीं. तमस का विरोध केवल वे ही कर रहे हैं जो अपने को 'राष्ट्रवादी' कहते हैं. सामान्य सहृदय वर्ग को तमस के पक्ष या विरोध से कुछ लेनादेना नहीं है. पर इस विरोध व पक्ष का मनन की समीक्षा अनिवार्य है.

ऊपर यह प्रतिपादित किया जा चुका है कि लेखक मार्क्सवादी है और इसलिए मार्क्सवादी चरित्रों के प्रति इस कृति में उस का पक्षपात प्रकट हुआ है. पर किसी मार्क्सवादी ने तमस का पक्ष लेते हुए यह बताने की कोशिश नहीं की कि वे पाकिस्तान स्वतंत्रतापूर्व के कम्युनिस्टों की विचारधारा को किस प्रकार व्यक्त करते हैं?

तमस का विरोध करने वालों का आरोप है कि तमस के प्रदर्शन से ऐसा विचार व्यक्त किया गया है कि सांप्रदायिक झगड़ों का प्रारंभ हिंदुओं ने किया था. वस्तुतः जानेअनजाने लेखक और तमस के निर्देशक गोविंद निहलानी भी हिंदुओं को सिखों को मंच पर हिंसक के रूप में प्रस्तुत करते हैं जब कि मुसलमानों की हिंसक वृत्ति परदे के पीछे झलकती हुई दिखलाई देती है.

हिंदी साहित्य के प्रसिद्ध आलोचक और पत्रकार डा. महीपसिंह का कहना है कि 'लेखक ने मुसलमानों के हाथ में कैमरा बहुत थोड़ी स्थितियों में और बहुत थोड़ी देर के लिए दिया. इस दृष्टि से वह अतिरिक्त रूप से सतर्क और सजग है और अपनी सीमा जानता है. परिणामस्वरूप सारे उपन्यास

मुक्ता

नए लेखकों के लिए कहानी प्रतियोगिता नए अंकुर

एकदम उभरते रचनाकारों को प्रकाश में लाने के लिए आयोजित इस निरंतर चलने वाली प्रतियोगिता में वे रचनाकार भाग ले सकते हैं, जिन की कोई रचना कहीं नहीं प्रकाशित हुई है. प्रकाशित रचना पर पारिश्रमिक दिया जाता है और वर्ष के अंत में पुनः विचार कर तीन पुरस्कार दिए जाते हैं जो, पारिश्रमिक से अलग होते हैं.
प्रतियोगिता की कोई अंतिम तिथि नहीं है.

विस्तृत जानकारी के लिए मुक्ता का नया अंक देखें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुसलिम पक्ष एकांगी और अटपटा है. अधिकांश मुसलमानों से हमारा परिचय व्यक्ति रूप से ही हो पाता है उन का व्यक्तिचरित्र तो उभरता है, पर समूहचरित्र नहीं उभरता.

डा. महीपसिंह द्वारा की गई तमस की यह समीक्षा सन 1975 में प्रकाशित पुस्तक से उद्धृत की गई है, अतः यह नहीं कहा जा सकता कि वह किसी राजनीति से प्रेरित हो कर यह सब कह रहे हैं. सारे उपन्यास में केवल एक ही दृश्य है जिस में मुसलमानों का घिनौना रूप प्रकट हुआ है, वह है अत्यंत क्रूर तरीके से इकबाल सिंह को इकबाल अहमद बनाने का. धारावाहिक में यह दृश्य भी नहीं है.

यह बात नहीं कि मुसलमानों के वीभत्स रूप का चित्रण इस उपन्यास में नहीं है, पर वह केवल सूचनाओं के रूप में ही रह गया है. उन की लूटमार, बलात्कार, हिंसा आदि के केवल समाचार ही हम विभिन्न पात्रों से सुन पाते हैं. गुरुद्वारे से निकल कर महिलाओं के कुएं में आ कर कूद जाने से उन की विशालता, उन का सतीत्व, उन की धर्मनिष्ठा ही अधिक प्रकट होती है. केवल यही ज्ञात होता है कि गुरुद्वारे में असला समाप्त हो गया है. इस से भी मुसलमानों की शक्ति का केवल अनुमान होता है. उन की पाशविकता वहां भी प्रकट नहीं होती है. वे पाकिस्तान जिंदाबाद तथा कायदे आजम जिंदाबाद के नारे दूर से लगाते रहे. सामने आ कर उन के जुनून को दिखाने का साहस लेखक नहीं जुटा सका.

दूसरी ओर हिंदुओं के क्रूर रूप को रंगमंच पर प्रत्यक्ष रूप से लेखक ने चित्रित किया है. आर्यसमाज में हवन के उपरांत जानप्रस्थजी का मुसलमानों से सावधान रहने के लिए तेल के कड़ाहे व पत्थर अपनी छत पर रखने के निर्देश व मास्टर देवव्रत द्वारा हिंदू युवकों को स्वर्णिम अतीत का इस प्रकार से स्मरण कराना जिस से इन के मन में मुसलिमों के प्रति घृणा भड़के आदि वर्णनों में हिंदुओं की सांप्रदायिक व हिंसक वृत्ति को

बिलकुल मेल खाती!

बढ़िया लेस से सजी ब्रा और पैंटी मनमोहक व आकर्षक फूलों वाले नमूनों में एकदम आप के नाप के अनुसार बनीं बढ़िया क्वालिटी, उत्तम फिटिंग और लाजवाब कारीगरी ही इन की पहचान है. ब्राइडल फोर्म ब्रा और पैंटी पहनिए और दिन भर महिलोचित आनंद का अनुभव कीजिए.

BRIDAL FORM®

ब्रा और पैंटी उपहार योग्य आकर्षक पैकेट में उपलब्ध

निर्माता:–
के.आर. विट्ठल, 13 त्रिकमजी पिया मार्ग, मुंबई-400 002. फोन : 317 919
वी.पी. से भी माल मंगवा सकते हैं. मुफ्त मूल्य सूची के लिए लिखिए.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्पष्ट चित्रित किया है. फिर रणवीर की दीक्षा का समय आता है. मास्टर देवव्रत उसे एक निर्जन स्थान पर ले जाता है. 'इधर दीवार के पास बैठ जाओ' रणवीर. और इस मुरगी को काटो.दीक्षा से पहले तुम्हें अपनी मानसिक दृढ़ता का परिचय देना होगा.'

मास्टर देवव्रत ने रणवीर को बाजू से पकड़ा और उसे आगे खींच लिया. 'आर्य युवकों के लिए मनसा वाचा कर्मणा तीनों प्रकार की दृढ़ता की जरूरत है. छुरी हाथ में लो और उधर बैठ जाओ.' जैसेजैसे रणवीर परीक्षा में उत्तीर्ण होता जाता है उसे और दीक्षा मिलती जाती है. इस दीक्षा का निशाना बना एक गरीब इत्रफुलेल बेचने वाला म्लेच्छ.

गोविंद निहलानी ने किशोर आयु वाले हिंदुओं को 'निकर' पहना कर उन की म्लेच्छों से घृणा व हिंसक वृत्ति को प्रमुखता से प्रदर्शित किया है. परिणामतः इसी वर्ग के हिंदुओं को 'तमस' खटक गया और उस के विरुद्ध आंदोलन हुए.

लेखक को 'तमस' उपन्यास के पक्ष व विपक्ष में किए गए आंदोलनों में अधिक रुचि नहीं रही है. उस के मत में आंदोलनों से कभी कृति का मूल्यांकन या अवमूल्यन नहीं होता. उस की यह मान्यता है कि तमस में जिस सांप्रदायिक उन्माद का चित्रण है वह केवल उपन्यास में वर्णित पांच दिनों का उन्माद नहीं है. पिछली कई शताब्दियों से जो विष था, वही फोड़ा बन कर स्वतंत्रता से पूर्व बाहर फूट पड़ा. देश का विभाजन हो जाने के बाद भी वह विष समाप्त नहीं हुआ. जिस कारण सन 1974 में भीष्म साहनी को उस का स्मरण कराना पड़ा. भीष्म साहनी का कहना है, 'सांप्रदायिकता की समस्या बंटवारे के साथ खत्म नहीं हो पाई. वह मनोवृत्ति, वह रवैया आज भी हमारे समाज में रहरह कर अपना भयावह रूप दिखाता है.'

भीष्म साहनी ने सांप्रदायिक उन्माद के वर्णन व उस के बीभत्स रूप से पाठकों को अवगत करा कर उस से बचने की प्रेरणा प्रदान करने का एक प्रयत्न किया है. पर यह शिक्षा देने की ऋणात्मक पद्धति है. इस उपन्यास का एक रचनात्मक पक्ष भी है. कुछ व्यक्तियों के हृदय में मानवता, दया व सहानुभूति की भावनाएं दिखा कर लेखक ने प्रतिपादित करना चाहा है कि संसार में कुछ विवेकशील प्राणी ऐसे भी हैं जो घृणा व हिंसा के विरुद्ध हैं, जिन के हृदय में सहानुभूति व करुणा की शीतल धारा प्रवाहित रहती है. उन्होंने रमजान जैसे लीगी व क्रूर व्यक्ति को भी, जो हरनामसिंह को और उस की बीबी को मारने जा रहा था, हाथ सेकते हुए दिखलाया है. 'दोतीन बार रमजान ने कुल्हाड़ी उठाने की कोशिश की, पर कुल्हाड़ी हाथ में रहते भी उसे उठा नहीं पाया.

मानवता की शिक्षा

काफिर को मारना और बात है, अपने घर के अंदर जानपहचान के पनाहगजीन को मारना दूसरी बात. उस का खून करना हिमालय पहाड़ की चोटी पार करने से भी ज्यादा कठिन हो रहा था. मजहबी जुनून और नफरत के इस माहौल में एक पतली सी रेखा कहीं पर अभी भी खिंची थी जिसे पार करना बहुत ही मुशकिल था. उसे रमजान भी पार नहीं कर पा रहा था.' प्रकारांतर से भीष्म साहनी ने इसी मानवता की शिक्षा प्रत्येक संप्रदाय के व्यक्ति को दी है पर यह व्यक्ति विशेष के भाव समूह या किसी वर्ग विशेष के कैसे बन जाएं, इस विषय में भीष्म साहनी कुछ नहीं कह सके.

भीष्म साहनी त्रुटियों के होने पर भी इस उपन्यास की रचना के लिए उल्लेखनीय रहेंगे. उन्होंने इस के माध्यम से स्वतंत्रता से पूर्व घटित 'महाभारत' के कारणों पर सोचने की सामग्री प्रदान की है तथा वर्तमान काल में व्याप्त सांप्रदायिकता के प्रति सावधान रहने का निर्देश दिया है. यह सचुमच विचार का प्रश्न है कि आज अंगरेज नहीं हैं तो भी ये सांप्रदायिक झगड़े क्यों होते हैं?

शरिता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंचवर्षीय योजनाओं का अंधा सफर

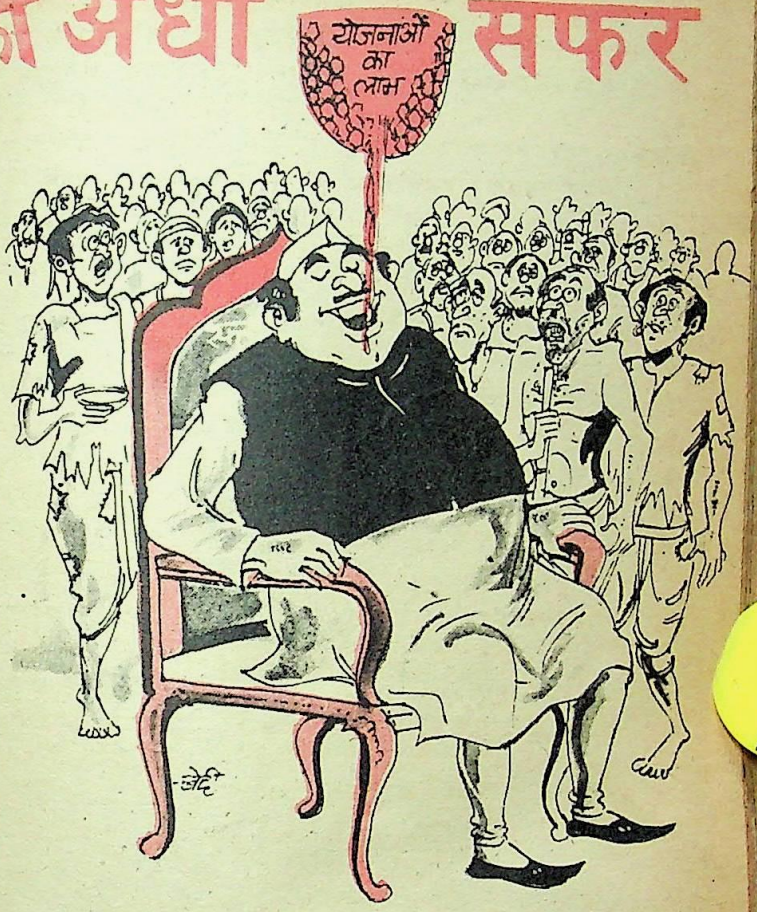

प्रथम पंचवर्षीय योजना में
हम
विकास का बीज
बो गए
गरीबी की दौड़ में
प्रथम हो गए.

दूसरी योजना के देवता
गरीबों को
बुला दे गए
उस के लाभ
दूसरे
ले गए.

तीसरी योजना में
जनता
गमगीन हुई
कौड़ी की
तीन हुई.

चौथी योजना में
कुरसी पर
बैठ कर
वे
फूलते रहे
चौथ
वसूलते रहे.

पांचवीं योजना में
उन को
सारी नियामत
फ्री में थी
पांचों
घी में थीं.

छठी योजना में
महंगाई ने
कहर बरसाया
छठी का दूध
याद दिलाया.

सातवीं पंचवर्षीय योजना
में लोग बिलखते
सड़कों पर,
शासक रहते
सात परदों में.

—मिश्रीलाल जायसवाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वेदों में क्या है?

जनसाधारण को वेदों के विषय में सही जानकारी देने के लिए सरिता में इस स्तंभ में हर बार ऋग्वेद के एक सूत्र का (सायण भाष्य पर आधारित) अविकल अनुवाद (अनुवादक डा. गंगासहाय शर्मा, एम.ए. (हिंदीसंस्कृत), पीएच.डी., व्याकरणाचार्य) प्रकाशित किया जा रहा है.

सूक्त–१६९ प्रथम मंडल **देवता–इंद्र**

हे इंद्र! तुम रक्षा करने वाले महान् मरुतों को नहीं छोड़ते हो, इसलिए तुम निश्चित रूप से महान् हो. हे मरुतों को बुलाने वाले! तुम हमारे प्रति अनुग्रह कर के हमें अत्यंत प्रिय सुख प्रदान करो. (१)

हे इंद्र! सब मनुष्यों के स्वामी, मनुष्यों के कल्याण केलिए जल बरसाने वाले एवं विद्वान् मरुद्गण तुम्हारे साथ मिलें. मरुतों की सेना उस युद्ध में विजय पाने के लिए हंसती हुई सदा आगे बढ़ी है जो सुख पाने के हेतु लड़ा जाता है. (२)

हे इंद्र! तुम्हारा विशेष आयुध वज्र हमारी उन्नति केलिए बादलों के पास पहुंचता है. मरुत भी चिरकाल से एकत्र किए हुए जल को धरती पर बरसा देते हैं. अग्नि भी महान यज्ञ केलिए दीप्त हुए हैं. जिस प्रकार जल द्वीपों को धारण करता है, उसी प्रकार अग्नि हव्य को धारण करता है. (३)

हे दाता इंद्र! तुम वह धन हमें दो जो तुम्हारे देने योग्य है, जिस प्रकार यजमान अधिक दक्षिणा देकर ऋत्विज को प्रसन्न करता है, उसी प्रकार मैं भी तुम्हें प्रसन्न करूंगा. स्तोता शीघ्र वर देने वाले तुम्हारी स्तुति करना चाहते हैं. जिस प्रकार लोग दूध पाने केलिए नारी के स्तन को पुष्ट करते हैं, उसी प्रकार हम तुम्हें अन्न देकर पुष्ट करेंगे. (४)

हे इंद्र! तुम्हारा धन परम संतोषदाता एवं यजमान के यज्ञ को पूरा करने वाला है. वे मरुद्गण हमें प्रसन्न करें जो पहले ही यज्ञ में आने केलिए तत्पर हैं. (५)

हे इंद्र! तुम जल बरसाने वाले विश्व के नेता एवं महान् मेघों के सम्मुख जाओ एवं अंतरिक्ष में स्थित रहकर प्रयत्न करो. जिस प्रकार युद्धक्षेत्र में राजा की सेनाएं ठहरती हैं, उसी प्रकार मरुतों के चौड़े खुरों वाले घोड़े स्थित होते हैं. (६)

हे इंद्र! भयानक, काले रंग वाले एवं गमनशील मरुतों के आने का शब्द सुनाई दे रहा है. जिस प्रकार अधम शत्रु को पीड़ा देकर उसका धन छीनते हैं, उसी प्रकार मरुद्गण अपने रक्षणोपायों द्वारा अपने शत्रु मेघ को गिरा लेते हैं (७)

हे समस्त प्राणियों के जन्म देने वाले इंद्र! तुम मरुतों के साथ आओ और अपनी प्रतिष्ठा बढ़ाने केलिए शोकनाशिनी एवं जलधारण करने वाली घटा को विदीर्ण करो. हे देव! स्तुति किए जाते हुए देवगण तुम्हारी स्तुति करते हैं. हमें अन्न, बल और दीर्घ आयु दो. (८)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

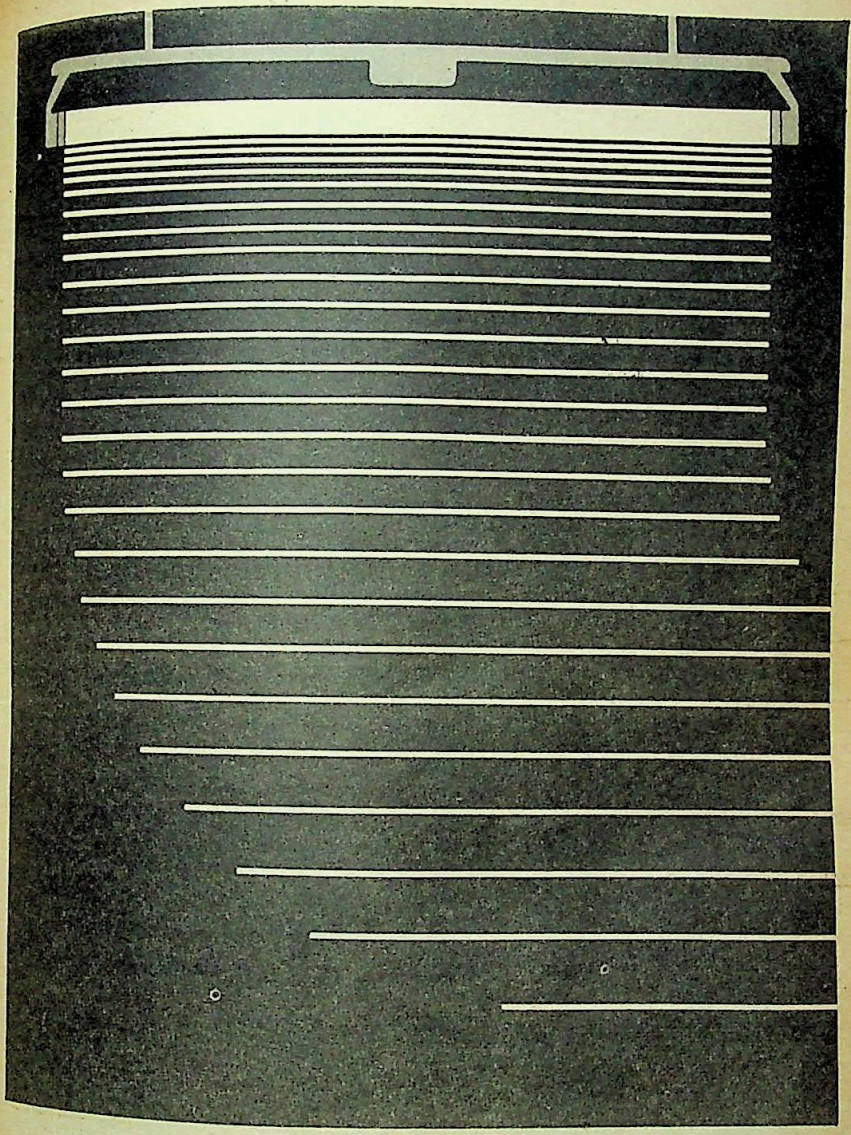

बजाज 'सिल्वरलाइट' पट्टी में किफ़ायती 'बेलास्ट' और सही किस्म का अन्य सामान लगे होने के कारण यह फ़्लोरोसेंट ट्यूब को भरपूर कुशलता से काम करने में सहायता देती है. ताकि आपको बिजली का खर्च कम आए और रोशनी ज़्यादा मिले. बजाज 'सिल्वरलाइट' पट्टी और बजाज फ़्लोरोसेंट ट्यूब की जोड़ी बेजोड़ है. और किफ़ायती भी. बरसों तक बगैर तकलीफ़ के काम देती है.

बजाज पट्टी और ट्यूब bajaj

सही रोशनी के लिए सही जोड़ी

Hero's BE 874 HN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लाली

कहानी • गोपालकृष्ण भनोत

वर्षों बाद मैं उस इलाके में दोबारा आया था. 20 साल पहले मैं उस क्षेत्र का एस. डी.ओ. यानी परगना अधिकारी, उप जिलाधीश था. उस समय वहां सड़क तो नाममात्र की थी. जंगल घने थे. अधिकतर पलास के पेड़ थे. जिला मुख्यालय से वहां तक पहुंचने में कई नदी व नाले पार करने पड़ते थे. बरसात में उस क्षेत्र में पहुंचना बहुत ही कठिन था क्योंकि बरसात काफी होने से नदीनाले भर जाते थे. पुल थे नहीं.

इस बार जब मैं वहां गया तो सड़क तो पक्की हो चुकी थी, पर बड़ी नदियों पर पुल अब भी नहीं थे. इसलिए बरसात में आवागमन कई बार एक सप्ताह तक के लिए रुक जाता था. जंगल तो अब नाममात्र के ही थे. राजनीतिक और सरकारीतंत्र की मिलीभगत से, धन कमाने के लालच में जंगल बुरी तरह कट कर अस्तव्यस्त हो गए थे. तब भी पलास के पेड़ कई स्थानों पर अपनी लाल छटा दिखा रहे थे. लेकिन वह शव पर पड़े लाल कपड़े वाली छटा लगती थी. साथ ही उन के शोक में सेमल लाल रंग नहीं जैसे रक्त बहा रहे हों.

वहां अधिकांश अनुसूचित जनजाति के ही लोग थे—असली अनुसूचित जनजाति के, जो 20 वर्ष पहले तो पूर्णतया पुराने रीतिरिवाजों में ही लिप्त थी. कई स्थानों पर तो स्त्रियां नग्न वक्षस्थल लिए बिना किसी लज्जा के घूमती थीं और कामकाज में व्यस्त रहती थीं.

इस बार समय ने काफी कुछ बदल दिया था. स्त्रियां अब निर्वस्त्र नहीं थीं. काफी स्थानों पर खेती करने के चिह्न दिखाई दे रहे थे. पहले उन जातियों का गुजारा वन उपज पर निर्भर था. अब ऐसा लगता था कि इलाका कृषि प्रधान बन रहा है. कहींकहीं किसी बड़े गांव में छोटामोटा उद्योग भी दिखाई दे रहा था. लोग भी पहले से कुछ तंदुरुस्त लग रहे थे.

इस बार मैं वहां क्षेत्रीय खंडीय कमिश्नर की हैसियत से जा रहा था. साथ में कलक्टर, पुलिस अधीक्षक तथा कुछ अन्य अधिकारी भी थे. एक उप तहसील का मुआयना करना था, जिसे 20 साल पहले मैं

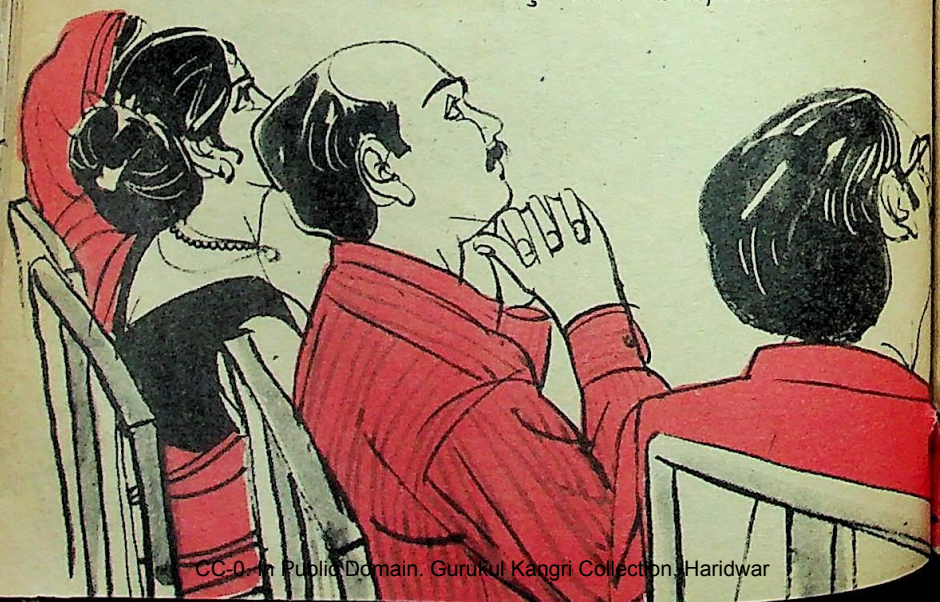

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तीन आदिवासी स्त्रियां नृत्य कर रही थीं जिन में एक के नैननक्श आदिवासियों से भिन्न. लग रहे थे

20 वर्ष बाद जब मैं उसी आदिवासी क्षेत्र में कमिश्नर की हैसियत से गया तो लाली को ढूंढे बिना रह न सका. इस बार उस ने जो कुछ बताया उसे सुन कर मुझे अपनी दुनिया डोलती नजर आने लगी.

ने ही देखा था और अब मैं ही दोबारा मुआयना करने जा रहा था. जैसा ऐसे दौरों पर कभीकभी होता है, स्थानीय अधिकारियों ने वहीं के कलाकारों की कला प्रदर्शनी का इंतजाम किया हुआ था. चूंकि मुझे आदिवासियों के नृत्य देखने व गाना सुनने का शौक भी था, इसलिए यह जानते हुए कला प्रदर्शन का विशेष इंतजाम किया गया था.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संध्या काल का समय था. एक पुराने स्कूल की इमारत के एक बड़े कमरे में यह आयोजन किया गया था. हम लोगों के बैठने के लिए कमरे के एक ओर कुछ गद्दे लगाए थे. उन पर सफेद चादरें बिछी थीं. कलाकारों की कला दिखाने के कमरे का आधा भाग खुला छोड़ा हुआ था.

कार्यक्रम में पहले दो युवकों ने मिल कर स्थानीय भाषा (जो हिंदी से ही मिलती-जुलती थी) में एक गाना सुनाया. उस के बाद ही आदिवासी स्त्रियों ने अपनी भाषा में गीत गाया. 20 वर्ष में उन के गाने के तरीके में कोई अंतर नहीं पड़ा था. वही कहरवा की ताल और सीधासादा गाना. कोई पेच नहीं, कोई मुरकी नहीं. लेकिन तब भी प्रभावशाली. एक गाना तो हंसीखुशी का था, उस की ताल तेज थी. दूसरा उदास गाना था. बोल न समझते हुए भी आवाज की उदासी सुन कर आंखों में आंसू भर आए.

उस के बाद एक आदिवासी नृत्य था. तीन स्त्रियां नाच रही थीं. एक तो 40-42 वर्ष की सांवले रंग की थी, पर बड़े नयनों और उन्नत उरोज वाली. दूसरी 30 वर्ष की थी. लंबी, पर छरहरे बदन की. तीसरी पर नजर टिकती थी. वह 20 वर्ष की नवयौवना थी, मझले कद की. रंग ज्यादा सांवला नहीं था, कुछ साफ था. पर उस के नयननक्श आदिवासियों जैसे न हो कर, तीखे थे. मुख भी सुंदर था. वह भी दुबलीपतली थी, पर नृत्य से उस का शरीर सुघड़ हो गया था और शरीर में लोच था.

वे तीनों तो नाच रही थीं. शेष स्त्रियां गाना गा रही थीं. एक के पास एक थाली थी, जिस पर चम्मच से वह ताल दे रही थी. नाच सीधासादा था. थोड़ी बहुत हाथों की हरकत थी. कुछ सीधीसीधी मुद्राएं वे हाथों से बनाती थीं, पांव भी सीधेसीधे तरीके से ही उठते थे. पर नृत्य की विशेषता थी—चक्कर लेना. कत्थक नृत्य की तरह ज्यादा चक्कर नहीं थे. वे शरीर को एक तरफ झुका कर चक्कर लेती थीं. वक्षस्थल फर्श के समानांतर हो जाता था और तब वे एकदम उसे फर्श के समानांतर कर देती थीं. यह विशेष मुद्रा थी, जिसे तीनों बारबार क्रियान्वित करती थीं—पहले धीरेधीरे, फिर तेजी से. उन तीनों के शरीर तेजी से घूम रहे थे. सूर्य छिपने वाला था. किसी ने कुछ लालटेनें जला कर रख दी थीं. बहुत ही रोमांचभरा वातावरण था. मैं दत्तचित्त नृत्य देख रहा था. शेष कमरे में कौन हैं, क्या हो रहा है-यह सब भी भूल गया था. 20 वर्ष एकदम जैसे उड़ गए थे. वह कमरा भी आंखों से ओझल हो गया था. 20 वर्ष पहले भी ऐसा ही नृत्य हुआ था, पर वह चांदनी रात व घने जंगल में एक खुले स्थान पर झोंपड़ियों के बीच हुआ था. मैं फिर से जैसे उसी चांदनी रात के नृत्य को देख रहा था.

एकाएक मुझे लगा कि अधेड़ आयु वाली नर्तकी, नाचते हुए मुझे बारबार देख रही है. नर्तकियां नाचते हुए दर्शकों की प्रतिक्रिया जानने को कभीकभी ऐसा करती ही हैं. पर वह मुझे कुछ विशेष प्रकार का देखना लगा, जैसे उस में कुछ उत्सुकता हो, कुछ अधीरता हो, कुछ उतावलापन हो. मेरा मन 20 साल पहले वाले जंगल से तेजी से उस कमरे में आ गया और मैं उस नर्तकी को गौर से देखने लगा. चेहरा चक्करों में तेजी से घूम रहा था. फिर भी मुझे ऐसा लगा कि मैं ने पहले उसे कहीं देखा है. चेहरा कुछ परिचित सा लगा. कुछ पता करूं, उस से पहले ही नृत्य समाप्त हो गया. साथ ही कार्यक्रम भी. कलाकार उठ गए.

अंधेरा हो चला था. मैं उठ कर, सुस्ताने के लिए स्कूल की इमारत से बाहर चला आया. कई और अधिकारी पीछेपीछे आ रहे थे. मैं ने उन्हें इशारे से आने को मना कर दिया.

स्कूल के चारों ओर खुला स्थान था. कुछ पेड़ लगे थे. गांव के घर कुछ दूर थे. स्कूल से कुछ दूरी पर जाते ही, मुझे ऐसा लगा जैसे मैं अंधेरे में जंगल में खो रहा हूं.

अचानक मुझे पीछे किसी के आने की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यदि आपका जन्म १९६३ से पहले हुआ है
तो इस विज्ञापन को ध्यान से पढ़िए

२५ साल से अधिक उम्र वाले १० में से ९ लोगों के बाल झड़ रहे हैं.... लेकिन उन्हें इसका पता नहीं!

क्या आप उन ९ लोगों में से एक हैं? तब तो आज ही यह परीक्षण कीजिए

अपने बालों को ज़ोरों से कंघी कीजिए. अगर कंघी पर बाल उतर आएं तो समझ लीजिए आपके बाल झड़ रहे हैं.

इसका हल है — प्योर सिल्विक्रिन

बालों के झड़ने का कारण है —ज़रूरी अमिनो एसिड्स की कमी — जो आपके बालों की कुदरती खुराक है. केवल प्योर सिल्विक्रिन में ही वैज्ञानिक अनुसंधान से बना वह फार्मूला है जो इस कमी को पूरा करता है.

इसके कारण हैं :

१. प्योर सिल्विक्रिन १७ अमिनो एसिड्स का अनोखा मिश्रण है — आपके बालों की कुदरती खुराक.

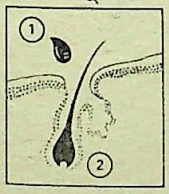

२. नोबेल पुरस्कार विजेता अनुसंधान तकनीक यह प्रमाणित करती है कि प्योर सिल्विक्रिन बालों की जड़ों तक बहुत जल्दी पहुंचता है, बालों में कुदरती ख़ुराक की कमी पूरी करता है और बालों को फिर से स्वस्थ बनाता है.

उत्तम परिणाम के लिए प्योर सिल्विक्रिन को सर की त्वचा पर तब तक प्रतिदिन दो बार मलिए जब तक आपके बालों का स्वास्थ्य सामान्य नहीं हो जाता.

प्योर सिल्विक्रिन असरदार है — नोबेल पुरस्कार विजेता अनुसंधान तकनीक का प्रमाण.

OBM571/HIN

प्योर सिल्विक्रिन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरी आवश्यकताएं बिल्कुल सादा, पर मेरा काम बहुत ज़्यादा।

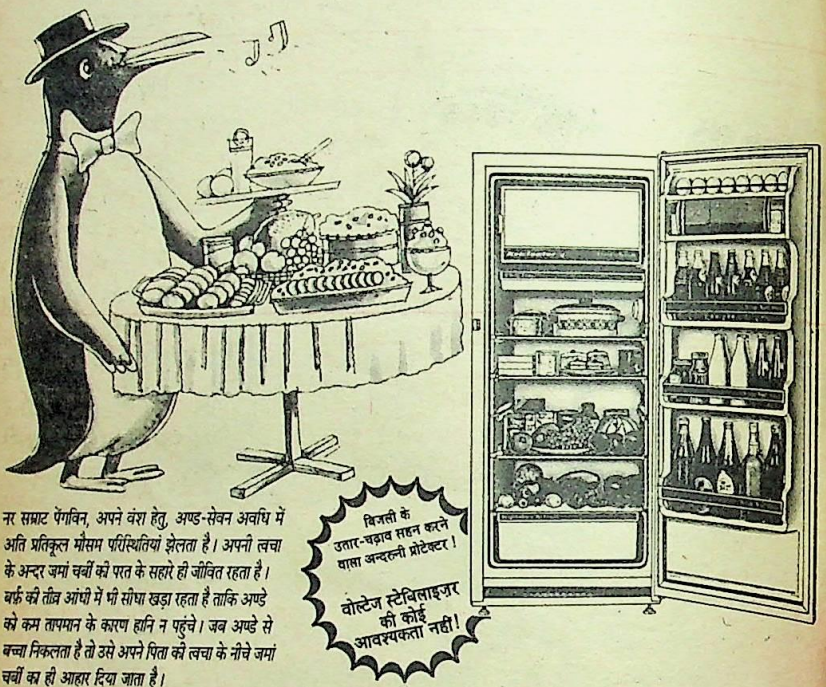

नर सम्राट पेंगविन, अपने वंश हेतु, अण्ड-सेवन अवधि में अति प्रतिकूल मौसम परिस्थितियां झेलता है। अपनी त्वचा के अन्दर जमा चर्बी की परत के सहारे ही जीवित रहता है। बर्फ़ की तीव्र आंधी में भी सीधा खड़ा रहता है ताकि अण्डे को कम तापमान के कारण हानि न पहुंचे। जब अण्डे से बच्चा निकलता है तो उसे अपने पिता की त्वचा के नीचे जमा चर्बी का ही आहार दिया जाता है।

संदर्भ : रीडर्स डाइजैस्ट की एन्टार्कटिका तथा बर्ड्स ऑफ़ दि वर्ल्ड. लेखक ऑलिवर एल. ऑस्टिन जूनियर
प्रकाशक : ऑप्टिमम

286 लिटर तथा 165 लिटर मॉडल डी जी एस एण्ड डी रेट कॉन्टरैक्ट पर भी उपलब्ध

केल्विनेटर रेफ्रिजरेटर कुशलतापूर्वक कार्य करता है। बिना थके। बिना रुके। वर्षों आपकी विश्वसनीय सेवा करता है। बहुत ही कम बिजली की खपत द्वारा।

इसके कार्य-कौशल का श्रेय पात्र है इसका विश्वविख्यात 'पावर-सेवर' कम्प्रैसर। अत्यंत किफ़ायती, न्यूनतम बिजली की खपत। उच्च व्यापक तापमान में भी तेजी से ठंड़ा करता है तथा विस्तृत वोल्टेज उतार-चढ़ाव सहन करता है।

विशेष खूबियाँ :

* पूर्ण इन्सूलेशन, कैबिनेट तापमान को बेहतर बनाती है।
* मज़बूत ए बी एस लाइनर।
* सर्विस में विश्वसनीय।
* बिजली की खपत में अत्यंत किफ़ायती।
* विशाल स्टोरेज क्षमता।
* टिकाऊ। * सुन्दर एवं सुदृढ़।
* विभिन्न बाहरी फ़िनिश तथा मनभावन अन्दरूनी रंगों में उपलब्ध।
* अनेक मॉडल।

केल्विनेटर
रेफ्रिजरेटर
"इसकी ठण्डक...बेमिसाल!"

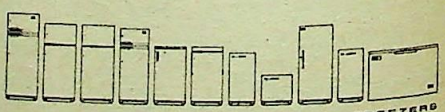

Mutual-4610CH-N

बिक्री एवं सर्विस के लिए :
एक्स्पो मशीनरी लिमिटेड
प्रगति टावर, 26 राजिन्द्रा प्लेस,
नई दिल्ली-110 008.

केल्विनेटर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आज बीस साल बाद लाली मुझ से मिली तो मुझे पुरानी घटना याद हो आई.

आवाज आई. पलट कर देखा, कोई आदिवासी स्त्री आ रही थी. मैं ने समझा, शायद वह अनजाने में अकेला स्थान समझ कर उस ओर आ रही है. मैं कुछ खांसा. पर वह रुकी नहीं, मेरी ओर बढ़ती ही आई और मेरे पास आ कर खड़ी हो गई. मुझे कुछ क्रोध आ गया. थोड़ा गुस्से में ऊंची आवाज में बोला, "कौन हो? क्या बात है?" उस ने धीमे स्वर में कहा, "साहिब, पहिचाना नहीं?" करीब होने से उस का मुख, कुछ स्पष्ट दिखाई दे रहा था.यह वही अधेड़ नर्तकी थी, जो नाचते हुए बारबार अजीब नजरों से देख रही थी.

मैं ने कहा, "मैं ने नहीं पहचाना. कौन हो तुम?"

"साहब, मैं लाली हूं. दानापुर की लाली."

एक झटके में 20 वर्ष लुप्त हो गए. दूसरे ही पल मैं दानापुर के जंगल में था, जहां चांदनी रात में झोंपड़ियों के बीच नृत्य हो रहा था. लाली भी एक नर्तकी थी—20 वर्ष की. उस समय भी सुडौल, उभरे हुए वक्षस्थल वाली, सुंदर.

वह रात भी क्या थी. मैं उस समय अविवाहित था.

उस क्षेत्र में आने का अर्थ था— एक सप्ताह के लिए शेष संसार से अलग. कोई टेलीफोन नहीं, कोई डाक नहीं, कोई तार नहीं, बिजली का उस समय प्रश्न ही नहीं था. नृत्य मशालों की रोशनी में होता था. चूंकि जंगल भरेपूरे थे, पेड़ों के झुरमुटों से हवा सरसरा कर चलती थी. बीचबीच में किसी जंगली जानवर की आवाज भी कभी दूर से, कभी पास से आ जाती थी.

नृत्य समाप्त हुआ. आदिवासी बहुत खातिर करते थे. अधनंगे, गरीब होते हुए भी उन में प्रेम भावना बहुत प्रबल थी और मैं स्थानीय एस.डी.ओ. ठहरा. उन के लिए राजा की तरह था. द्विन भर उन के मुखिया के संग कामकाज में बिताया था. उन की कई समस्याओं का वहीं निदान कर दिया था. अतः वे सब बहुत ही प्रसन्न थे और इसी कारण शायद उन्होंने नृत्य व उस के बाद की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दावत का इंतजाम किया था.

दावत खत्म हुई. मेरे सोने का प्रबंध भी एक झोंपड़ी में किया गया था, जो कुछ बड़ी थी और थोड़ी अलग थी. मैं विदा ले कर सोने चला गया. फिर कपड़े बदल कर बिस्तर में लेट गया. कुछ गर्मी थी. अतः मैं ने कुर्ता उतार रखा था और सिर्फ पाजामा पहन कर ही लेटा था.

धीरेधीरे आंखें बंद हो रही थीं. चारों ओर जंगल से एक भीनीभीनी महक उस झोंपड़ी में समा रही थी और मैं उस महक में डूबा जा रहा था. सहसा मुझे ऐसा लगा जैसे झोंपड़ी में कोई है. मैं उठ कर बैठ गया और बोला, "कौन है?"

मैं ने दिया बुझा दिया था. अंधेरा था. एक काली छाया सी मेरे पलंग की ओर बढ़ी. चमेली की गंध मेरी नाक में समाने लगी. छाया बोली, "मैं लाली हूं"

"लाली"! मैं ने चौंक कर कहा, "तुम यहां इतनी रात गए क्यों आई हो? क्या करने आई हो?"

वह मेरे पलंग पर बैठ गई और बोली, "एक लड़की मर्द के पास रात को अकेले क्यों आती है, साहब? आप हमारे गांव के मेहमान हैं, मालिक हैं. मुझे पटेल ने आप की सेवा के लिए भेजा है."

मैं तिलमिला उठा और बोला, "पटेल की यह हिम्मत, उसे बुलाओ."

लाली ने अपना हाथ मेरे कंधे पर रख दिया. मैं सिहर उठा. एक गुदगुदी सी, एक कंपन सी हुई. वह बोली, "पटेल जी को क्यों बुला रहे हैं? क्या मैं इतनी बुरी लगती हूं? क्या मैं जवान नहीं हूं? क्या मैं सुंदर नहीं हूं?" लाली मेरे से सट गई. मुझे धक्का सा लगा. वह बिलकुल नग्न थी. मैं ने हड़बड़ा कर खाट से उठने की कोशिश की. लेकिन तब तक उस ने मेरे गले में बाहें डाल दी थीं. उस के होंठ मेरे गले पर थे. तेज सांसों की आवाजें सुनाई दे रही थीं.

एकाएक दो आंसू मेरे कंधे पर गिरे. साथ ही लाली रुंधे स्वर से बोली, "साहब, मुझे दुतकारिए मत. वरना पटेलजी और गांव वाले समझेंगे कि मुझ में कोई कमी है. है पूरी स्त्री नहीं हूं. पत्नी बनने के लायक नहीं हूं."

सुबह के समय वह वहां नहीं थी. झोंपड़ी खाली थी. चारों ओर सन्नाटा था. जंगल की सादकता खत्म हो चुकी थी.

दूसरे ही दिन मैं जिला मुख्यालय पर वापस आ गया और कुछ दिनों बाद मेरा वहां से तबादला हो गया.

वह रात और 20 वर्ष बाद आज की रात. उसी क्षेत्र में, वही लाली, वह बिलकुल पास खड़ी थी, पर सट कर नहीं. हाथ बढ़ा कर मैं उसे छू सकता था, पर छुआ नहीं. मेरी आवाज धीमी हो गई. मैं ने धीरे से कहा, "हां लाली, सब याद आ गया. तुम कैसी हो? आजकल क्या करती हो?"

वह बोली, "मैं तो ठीक हूं. जैसे हम आदिवासी ठीक होते हैं. बूढ़ी होने लगी हूं. उतना कामकाज अब नहीं होता. आप कैसे हैं, साहब? इतने वर्षों बाद आना हुआ. मैं ने तो देखते ही पहचान लिया था. कभी याद ही नहीं किया. कभी सुधबुध ही नहीं ली."

"लाली, मैं बहुत दूर चला गया था. एक जमाना बीत गया है. इस बीच मेरी शादी हो गई. दो बच्चे भी हो गए. छोड़ो इन बातों को. मुझे अच्छा लगा है कि तुम फिर मिल गईं. वह रात मैं कभी नहीं भुला सका. तुम्हें देखते ही वह पूरी रात मानो फिर से जवान हो गई है. तुम गजब की सुंदरी थीं."

लाली जमीन की ओर देख रही थी चुपचाप. सब ओर शांति थी. मुझे एकाएक खयाल आया कि हम दोनों गलत स्थान पर, गलत दुनिया में खो रहे हैं. मैं ने अपनेआप को झकझोरा और लाली से कहा, "चलो, स्कूल में वापस चलें. सब लोग इंतजार कर रहे होंगे. कोई देख लेगा तो क्या कहेगा?"

वह निश्चल खड़ी रही. थोड़ी प्रतीक्षा के बाद मैं स्कूल की ओर जाने को घूमा. उस ने मेरा हाथ पकड़ लिया और बोली, "माफ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रंगे हाथों पकड़ लिया ना!
पर, आपको अपने बचपन की वो घड़ी याद है, बरसों पुरानी?

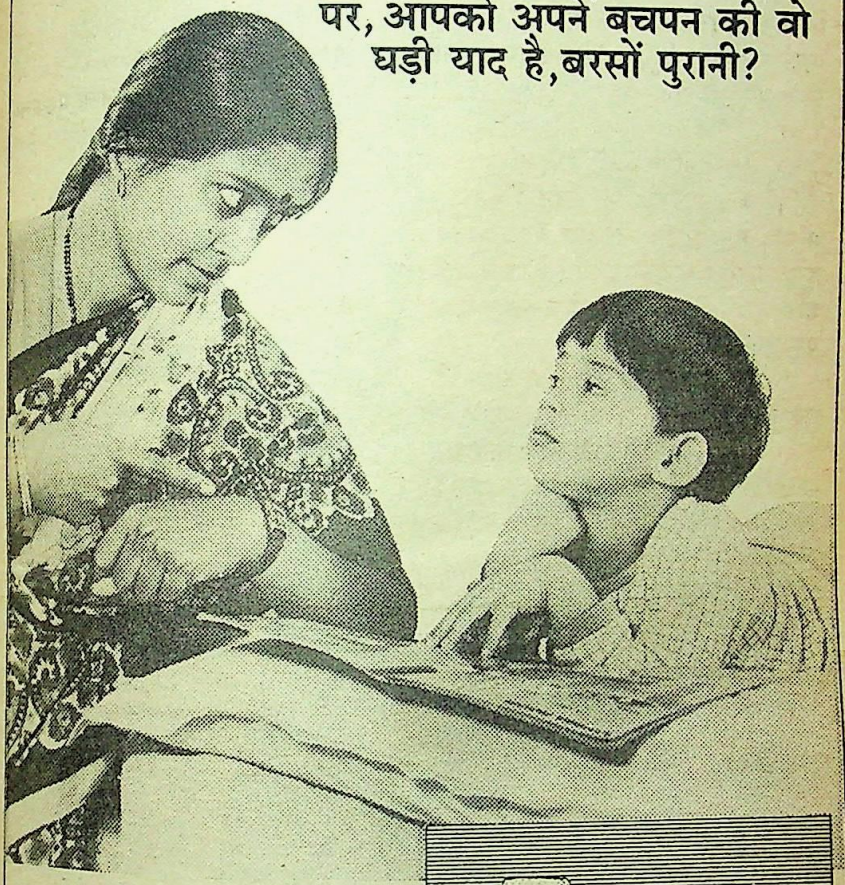

ज़रा याद कीजिए वो ज़माना ... बचपन में कहानियाँ पढ़ना-पढ़ाना. क्या हसीन घड़ियाँ थीं वे. वे ही घडियाँ आज भी हैं.

जी हाँ, कुछ चीज़ें कभी नहीं बदलती. जैसे कि ४५० लाख लोगों की ये हमसफर घड़ियाँ. साथ दें ... हर पल, हर घड़ी.

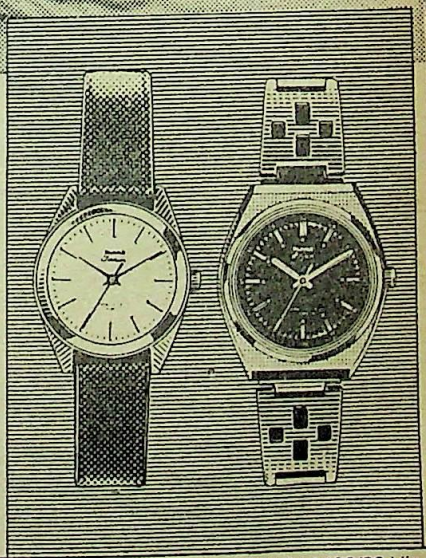

HMT
घड़ियां
राष्ट्र के समय प्रहरी

Sista's-1483/88 Hin
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

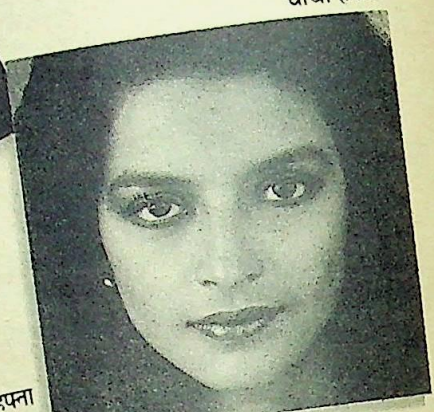

देखिए! सिर्फ़ ६ हफ़्तों में अनोखा गोरापन

छटा हफ्ता

क्लियर·टोन गोरेपन प्लान का कमाल

आप अक्सर अपने सजीले सलोने प्राकृतिक रंग रूप की कल्पना करते हैं. क्लियर·टोन गोरेपन की क्रीम आपकी त्वचा में नैसर्गिक निखार लाकर आपकी कल्पना को साकार करती है.

दिन मे दो बार हल्के-हल्के क्लियर·टोन लगाइये. इसकी नर्म क्रीम आपकी त्वचा में जज़्ब ही समा जाएगी. रह जाएगी सिर्फ़ इसकी भीनी भीनी फ्रेंच सुगन्ध. बस इसी समय इसका चौतरफ़ा असर भी शुरू हो जाएगा.

एक अनोखा गोरेपन का तत्व (जो सिर्फ़ इसी क्रीम में है) आपके रोम-रोम में जादू उभारकर आपकी त्वचा को नैसर्गिक सुन्दरता प्रदान करेगा.

एक विशेष सन-स्क्रीन जो दिन भर न सिर्फ़ आपकी त्वचा को सूरज की तपती किरणों से बचाएगा वरन् आपकी त्वचा को काली पड़ने से भी रोकेगा.

भरपूर माइश्चराइज़र जो आपकी त्वचा को तरोताज़ा बनाकर आप में यौवन की मादकता छलकाएगा.

दाग धब्बे सब खत्म इन चन्द हफ़्तों में छः हफ़्ते बाद आप खुद क्लियर·टोन का कमाल महसूस करेंगी... ठीक उसी तरह जैसे भारत की और बहुत सी नारियां पहले से ही कर रही हैं.

अब तो आपको भी चाहिए न क्लियर·टोन का गोरापन?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करना, साहब. आप से एक बात कहनी है. समझ में नहीं आता कि कैसे कहूं. पर आप को बताना जरूरी है."

मैं ठिठका और मुड़ कर उसे देखने लगा. अंधेरे से अभ्यस्त होने के कारण अब उस का चेहरा स्पष्ट दिखाई दे रहा था. अब भी उस में कोमलता थी, भोलापन था.

वह बोली, "मेरी और आप की बेटी पुतली, भीतर स्कूल में है."

मैं पथरा कर वहीं गड़ा रह गया–किंकर्तव्यविमूढ़ सा. आवाज ही न निकली.

पर थोड़ी देर बाद मैं कुछ तेजी से बोला, "मेरी और तुम्हारी लड़की! यह कैसे हो सकता है? तुम झूठ बोल रही हो. मुझ से फरेब कर रही हो. मुझे बदनाम करना चाहती हो."

शांत स्वर में लाली ने कहा, "साहब, उस रात के बाद तो मैं आप की हो ही गई. मन से अब भी आप की ही हूं. मेरी शादी हो चुकी है. मेरे और भी बच्चे हैं. पर वह बच्ची हमारी और आप की ही है."

"जब तुम्हारी शादी हो चुकी है तो फिर तुम ऐसा कैसे कह सकती हो?" मैं ने कहा.

"उस रात के सात मास बाद मेरा विवाह किया गया. उस रात के बाद सात मास तक मैं किसी पुरुष के पास नहीं गई. उस रात के कुछ मास बाद जब पता लगा कि मेरे बच्चा होने वाला है तो रिवाज के मुताबिक पटेलजी ने मेरी शादी रचा दी. शादी के दो मास बाद यह बच्ची हुई. बच्ची मेरी और आप की ही है."

"तो अब तक तुम ने मुझे इस की सूचना क्यों नहीं दी? अब तक चुप क्यों रहीं? आज ही बताने की जरूरत क्यों पड़ी?"

"इतने वर्ष वह लड़की आदिवासियों की तरह पल रही थी. मेरे पति ने उसे बाकी बच्चों की तरह अपनी संतान माना. आप का पता मुझे तो मालूम नहीं था, पर पटेलजी पता लगा सकते थे. मैं ने कोशिश ही नहीं की. बताने की जरूरत ही नहीं समझी. आज जब आप को देखा तो मैं भी यादों की बाढ़ में बह गई. हमारी लड़की पुतली भी मेरे साथ नाच रही थी."

मैं फिर चौंका, "वह छोकरी, वह हमारी लड़की है? वह तो बिलकुल आदिवासी लगती है."

पर मुझे कुछ शक होने लगा. उस का रंग साफ था. उस के नैननक्श आदिवासियों जैसे नहीं थे.

वह बोली, "आदिवासियों में पली बढ़ी है. यहीं रह रही है. आदिवासी नहीं लगेगी तो और क्या लगेगी? मैं ने उसे दूध पिलाया है. मुझे गर्व है कि आप उसे आदिवासी समझते हैं."

मेरे मन में हलचल थी, तूफान था. मेरी दुनिया उजड़ती दीख रही थी. यदि मेरी बीवी, बच्चों को इस बात का पता लग गया तो? यदि मेरे सरकारी अफसरों को पता लग गया तो? यदि सरकार को पता लग गया तो?

पास में एक पेड़ था, मुझे उस का सहारा लेना पड़ा. थोड़ी देर बाद मैं ने कहा, "लाली, थोड़ी देर के लिए मान लूं कि तुम ठीक कहती हो, हालांकि तुम्हारी बात और कोई नहीं मानेगा. पर मुझे अब यह बात बताने से तुम्हारा मतलब?"

"आप को देख कर मैं रह नहीं सकी. बच्ची भी साथ ही नाच रही थी. किसी और को यह सब मालूम नहीं है. पटेल को भी नहीं. मैं ने सोचा कि हम ने एक रात प्रेम किया है, उस प्रेम का यह उपहार है. आप को मालूम तो होना चाहिए कि वह आप की निशानी है."

"लाली, तुम ने मेरे लिए एक भारी समस्या खड़ी कर दी है, मैं विवाहित हूं. मेरे बच्चे हैं. मैं यहां का कमिश्नर हूं. यदि किसी को भी यह बात मालूम पड़ गई तो मैं कहीं का नहीं रहूंगा. न घर में मुंह दिखा सकूंगा, न साथियों को. मेरी सारी दुनिया ही उजड़ जाएगी," यह कह कर मैं ने हाथों से अपना मुंह ढक लिया.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह मेरे करीब आई और मेरे मुंह से हाथ हटा कर बोली, "साहब, मैं ने आप को परेशान करने को थोड़ा ही यह सब बताया है. दुनिया में किसी और को भी क्यों बताऊंगी. मैं सीधीसादी आदिवासी हूं. मन में आया आप को बतला दूं, बता दिया. बात खत्म हो गई. चलिए, अब वापस चलें."

मैं वहीं खड़ा रहा. मेरी तेज सांसें अब धीमी हो रही थीं. लाली की बात सुन कर मन शांत हो गया था. मैं ने लाली की दोनों बांहों को पकड़ कर कहा, "लाली, तुम ने बात बता कर खत्म कर दी. पर यह यहीं कैसे खत्म हो सकती है? जब पुतली मेरी बेटी है तो मेरी भी तो उस के लिए जिम्मेदारी है. लेकिन क्या करना होगा, यह समझ में नहीं आ रहा है. मालूम पड़ने पर कि वह मेरी बेटी है, मैं चुप कैसे रह सकता हूं? उस को यहीं कैसे छोड़ सकता हूं?"

लाली शांत स्वर में बोली, "साहब, आप को कुछ करने के लिए मैं ने यह बात आप को नहीं बताई. पुतली 20 साल मेरे पास रही है. आदिवासियों के रंगढंग में ढली है. वह आप के साथ बंगले पर, आप के शहर में, आप के समाज में कैसे रह सकती है? आप कितना सिखाएंगे उसे? आदिवासी का जीवन उस के जीवन का अंग बन चुका है. जहां भी रहेगी, वह आदिवासी संस्कार छोड़ नहीं सकती, भुला नहीं सकती. वह तो यहां रहेगी, यहीं शादी करेगी, यहीं मरेगी. और कोई चारा नहीं है. वह और किसी प्रकार से अब जीवन व्यतीत नहीं कर सकती."

थोड़ी देर चुप रह कर मैं ने कहा, "पर लाली, मेरा कोई कर्तव्य नहीं है क्या? यह सही है कि मैं सीधे उसे अपने घर, अपने समाज, अपने संसार में नहीं ले जा सकता."

"फिर मैं क्या करूं?"

लाली स्कूल की ओर मुड़ी और गरदन घुमा कर मेरी ओर देख कर बोली, "इस समस्या का हल मेरे पास नहीं है. अब तो मुझे अफसोस हो रहा है कि मैं ने यह सब आप को क्यों बताया. मेरी दुनिया, बेटी की दुनिया, आप की दुनिया, अलगअलग ही ठीक चल रही थी. क्यों मैं ने यह टकराव पैदा किया? आप को न बताना ही अच्छा था."

मैं ने लाली का हाथ पकड़ कर उसे रोका और कहा, "नहीं लाली, तुम दुखी मत हो. वह मेरी बेटी है. तुम्हें यह बताना ही चाहिए था—चाहे कोई भी समस्या पैदा हो. मैं तुम्हारा आभारी हूं. मन के एक कोने में प्रसन्नता व संतोष का आभास भी होता है कि उस सुंदरतम रात की कोई निशानी है और वह बेटी के रूप में है. लेकिन मैं उस से बाप के रूप में मिल नहीं सकता. पता लगते ही उसकी दुनिया में उथलपुथल मच जाएगी. उस की स्थिरता खत्म हो जाएगी. नया संसार उसे मिलेगा नहीं, भाएगा नहीं. वह उस में अपरिचित ही रहेगी. आदिवासी संसार उस का नष्ट हो जाएगा. नहीं लाली, पुतली को पता भी नहीं लगना चाहिए कि मैं उस का बाप हूं. मैं उसे दूर से, अपरिचित की तरह, कभीकभी देख लूंगा. तुम से उस के बारे में पूछता रहूंगा. लेकिन लाली, एक बात तुम्हें माननी पड़ेगी."

"वह क्या?" लाली ने पूछा.

"लाली, वह मेरी बेटी है. कुछ तो आदिवासी स्तर से उसे ऊपर उठाना होगा, अलग करना होगा. मैं चाहता हूं कि वह पढ़े और खूब पढ़े. बड़ी हो गई है, पर कोई बात नहीं. जल्दी ही सीख जाएगी. गांव में अध्यापक तो हैं. नहीं तो मैं इंतजाम करा दूंगा. धीरेधीरे उसे दूसरे रिवाज भी सीखने होंगे. फिर शादी भी अच्छे लड़के से करनी पड़ेगी. इस के लिए पैसे की जरूरत पड़ेगी. लाली, तुम न मत करना. मैं कुछ रुपया तुम्हारे नाम से बैंक में जमा करा दूंगा. उस का ब्याज तुम्हें हर मास मिलता रहेगा. यह कोई अच्छा हल नहीं है. पर अभी इतना ही सोच पाया हूं. बोलो, न तो नहीं करोगी?"

लाली ने कोई उत्तर नहीं दिया. वह बिना कुछ कहे, गर्व से सिर उठाए, स्कूल की ओर चल दी और कुछ ही देर में अंधेरे में विलीन हो गई. मैं पथराया सा डरासहमा—यों खड़ा रहा जैसे मेरा गुनाह अंधेरे बन कर मेरे चारों ओर फैलता जा रहा हो.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और समय ठहर जाए

नदिया के तट पर चुपचाप
सकुची, शरमायी सी
कुछ अलसायी सी
बैठी रहो तुम.
...और समय ठहर जाए.

मन की उमंगों में
इंद्रधनुषी रंगों में
जल की कलकल में
सपनों के गहन तल में
खोई रहो तुम,
...और मौसम मचल जाए.

बादल के आंगन में
प्रिय के सावन में
ममता की छांव में
समर्पण के भाव में
अंतर तलाशती रहो तुम,
...और सफर कट जाए.

जीवन के पड़ावों पर
दोहरी नावों पर
समायोजन को तत्पर
पतवारों को निरंतर
खेती रहो तुम,
...और किनारा आ जाए.

—अतुल चतुर्वेदी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ठीक है, कल हम सारे शहर में इस के गंदे बोर्डों पर कालिख पोतेंगे और इस सिनेमाघर में किसी को नहीं जाने देंगे.

ठीक है!

रात में

खाना खा कर सैर न करूं तो मुझे ठीक से नींद ही नहीं आती.

सिनेमा

अरे, वह तो हमारे पड़ोसी पतिपत्नी हैं. कहीं यह प्रदर्शन का पूर्वाभ्यास करके तो नहीं लौट रहे?

नहीं, शायद फिल्म देखकर आ रहे हैं.

श्रीमतीजी, फिल्म देखकर मजा आ गया. क्या निर्देशन है!

फोटोग्राफी का भी जवाब नहीं!

अब कहानी की मांग पर एकदो ऐसेवैसे दृश्य आवश्यक हों तो क्या हर्ज है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी • सुरेशकुमार शर्मा

धर्म का धंधा

बाहर बरामदे में हंसराज पंडितजी से जाने क्याक्या बातें कर रहे थे. इधर रसोई में उन की पत्नी कोकिला देवी जलभुन रही थी, 'जाने यह पंडित कब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

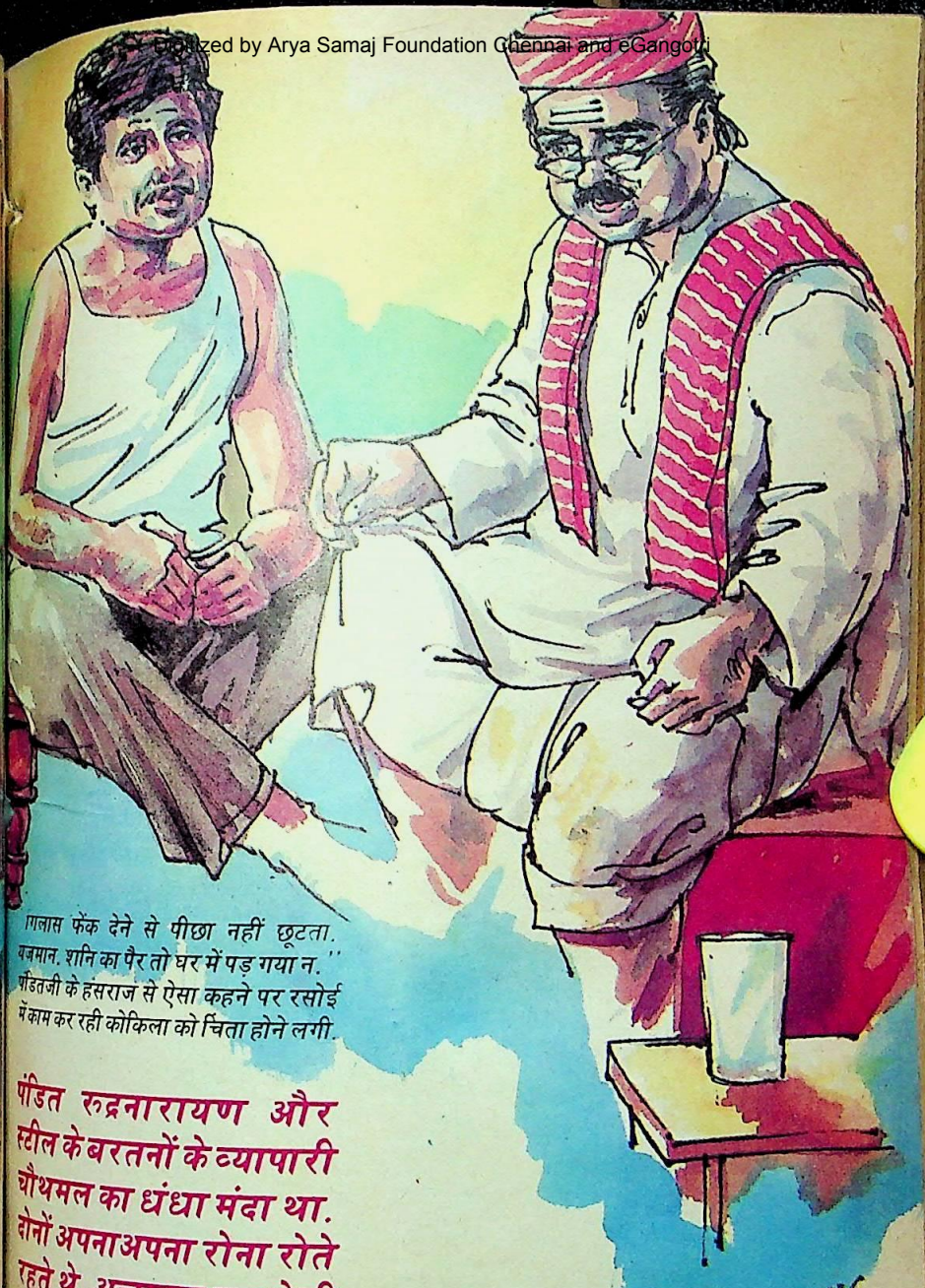

गिलास फेंक देने से पीछा नहीं छूटता. यजमान, शनि का पैर तो घर में पड़ गया न.'' पंडितजी के हंसराज से ऐसा कहने पर रसोई में काम कर रही कोकिला को चिंता होने लगी.

पंडित रुद्रनारायण और स्टील के बरतनों के व्यापारी चौथमल का धंधा मंदा था. दोनों अपना अपना रोना रोते रहते थे. अचानक एक ऐसी तरकीब सूझी कि दोनों का धंधा चल निकला.

...करेगा? अड़ जाता है मालगाड़ी की तरह.'

बाहर से हंसराज ने पुकारा, ''सुनो तो मुन्ना की मां, जरा पानी तो लाओ, भई.''

कोकिला अनमनी सी उठी. वह समझ गई थी, ''जरा पानी तो लाओ'' का मतलब ''चाय से पहले पानी ले आओ'' था. पानी का गिलास ले कर गई तो हंसराज ने कहा, ''बड़ी देर कर दी. पंडितजी तो कब से आए हैं. चाय में देर है क्या?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

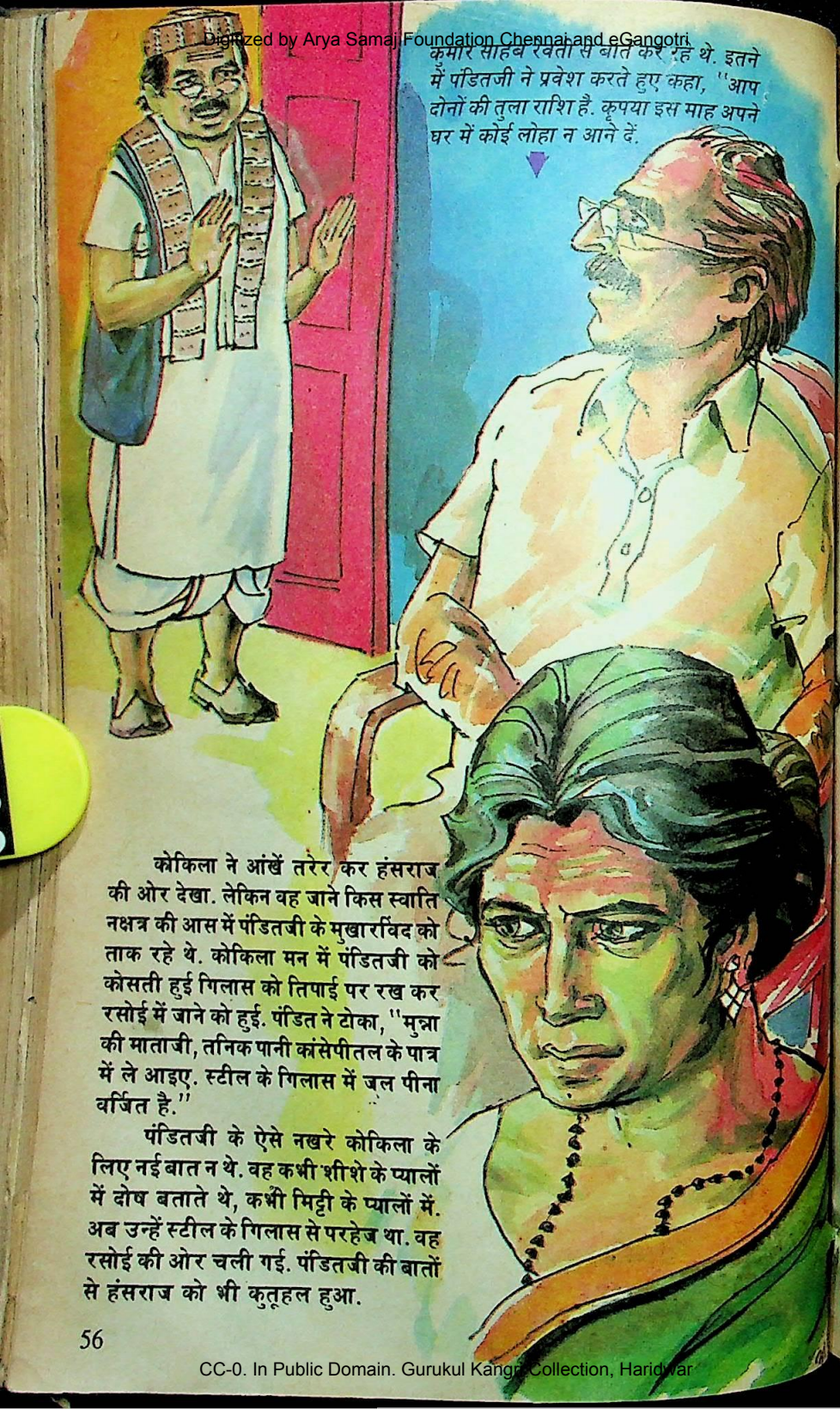

कुमार साहब रवेता से बातें कर रहे थे. इतने में पंडितजी ने प्रवेश करते हुए कहा, "आप दोनों की तुला राशि है. कृपया इस माह अपने घर में कोई लोहा न आने दें.

कोकिला ने आंखें तरेर कर हंसराज की ओर देखा. लेकिन वह जाने किस स्वाति नक्षत्र की आस में पंडितजी के मुखारविंद को ताक रहे थे. कोकिला मन में पंडितजी को कोसती हुई गिलास को तिपाई पर रख कर रसोई में जाने को हुई. पंडित ने टोका, "मुन्ना की माताजी, तनिक पानी कांसेपीतल के पात्र में ले आइए. स्टील के गिलास में जल पीना वर्जित है."

पंडितजी के ऐसे नखरे कोकिला के लिए नई बात न थे. वह कभी शीशे के प्यालों में दोष बताते थे, कभी मिट्टी के प्यालों में. अब उन्हें स्टील के गिलास से परहेज था. वह रसोई की ओर चली गई. पंडितजी की बातों से हंसराज को भी कुतूहल हुआ.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुमन सौरभ

मई-
1988

क्या आप को अपना कैरियर संवारना है?

लड़कपन की उम्र अभिलाषाओं को सजा कर रखने की होती है. आप अपनी आशाओं, अभिलाषाओं को सहेजिए, किशोर सपने देखते हैं और पालक उनके भविष्य के लिए उत्सुक होते हैं. इस सुखद चिंता में हम भी उनके साथ हैं. इसीलिए अब प्रस्तुत है.

देखिए, नीचे दिए गए विषयों में से आप किस में अपना उज्ज्वल भविष्य सुरक्षित देख रहे हैं.

कैरियर गाइड विशेषांक

- अध्यापन
- चिकित्सा
- खेल
- इंजीनियरिंग
- पत्रकारिता/लेखन
- प्रशासन नौकरियां
- कंप्यूटर सर्विसेज
- कला व मासमीडिया क्षेत्र
- व्यापार
- उद्योग
- चार्टर्ड अकाउंटेंसी
- वकालत
- ठेकेदारी
- विमान चालक
- सिनेमा कलाकार
- फोटोग्राफर
- होटल प्रबंधक
- सैनिक व असैनिक राज सेवाएं

उपरोक्त व्यवसायों के संबंध में कहां, क्या, कैसे इत्यादि मुद्दों पर तथ्यप्रद जानकारी व देश विदेश के ट्रेनिंग, शिक्षा एवं भर्ती संस्थाओं का ब्योरा. साथ ही अनेक प्रेरक, मार्गबोधक कहानियां, कविताएं व सभी स्तंभ.

अंक अतिशीघ्र आपके हाथों में होगा. ● अपनी प्रति के लिए आज ही विक्रेता से कह दें.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

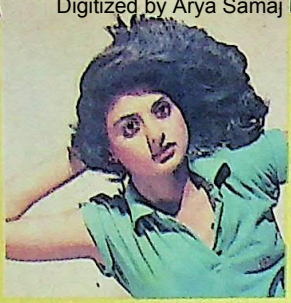

अंधेरा

अकेलेपन के अंधेरे में
कहीं जल उठता है एक दीप,
अंधेरा झुंझलाता है
आ जाता है मेरे और करीब.
–निर्मला जौहरी

पंडितजी ने झुक कर तिपाई पर रखे हुए गिलास को गौर से देखा. चश्मे के बाहर आंखें फाड़ कर सस्वर पढ़ने लगे, "गोविंद प्रसाद की ओर से चिरंजीव अतुल की वर्षगांठ पर..."

एक रहस्यमयी मुसकान उन के चेहरे पर उभरी, "वाह, जवाब नहीं गोविंद प्रसाद का. किस तरकीब से पीछा छुड़वाया है शनिदेव से, वाह."

"क्या हुआ, महाराज?"

"क्या बताएं, हंसराज? यजमान तो यह भी है हमारा और तुम भी. गोविंद प्रसाद को साढ़े साती लगी थी. बड़े उपाय किए, पर कष्ट कम नहीं हुआ. एक उपाय हम ने भी बताया था. शनि का संकट लोहे का भार होता है. लोहे का दान करना पड़ता है. बस, बांट दिया लोहा बरतन के रूप में. शनि घर से बाहर."

"मगर ये गिलास तो उन्होंने अपने पोते के जन्म दिवस पर बांटे थे, महाराज."

"बड़े भोले हो, हंसराज. तभी तो संभरण विभाग में रह कर भी घर में सिगड़ी जलती है अब तक. चाय में कुछ देर है क्या? हां, तो क्या कह रहा था मैं? बड़े भोले हो. गिलास बंटते हैं या ठीकरे पीपनी, गुब्बारे?"

कोकिला रसोई में थी, लेकिन कथा रिमोट कंट्रोल पद्धति से बैठक में हो रही बातों को बराबर सुन रहे थे. सोचने लगे 'मरा पंडित है तो गप्पी, पर कभीकभी काम पते की कर जाता है. गोविंद प्रसाद ने पोते के जन्मदिन पर गिलास बांटे थे, तब तो मैं ने राजीखुशी ले आई थी. तब कहां सोचा था कि आगे हो कर खुद शनिदेव को न्योता दिया है. तब से ही तो घर में किल्लत, खड़ा घाटा, कुछ न कुछ टंटा लगा रहता है.'

कोकिला चाय ले कर कमरे में गई, तो पंडितजी से हंसराज पूछ रहे थे, "पंडितजी, इस गिलास का क्या करें, फेंक दें?"

"फेंक देने से पीछा नहीं छूटता यजमान. शनि का पैर तो घर में पड़ गया न."

"हाय तब?" कोकिला को चिंता होने लगी.

"तुम भी इस गिलास के बदले सात, चौदह या इक्कीस गिलास बांट दो."

हंसराज विचार करने लगे, "हम ने बच्चों का जन्मदिन कभी मनाया नहीं. उस में खर्चा भी तगड़ा बैठता है."

"फिर क्या करें?" कोकिला ने पूछा.

"करना क्या है, कथा करा लो. हम बांच देंगे." पंडितजी ने प्रस्ताव रखा.

दोनों को पंडितजी की बात जंच गई.

अगले दिन हंसराज की छत पर लाउडस्पीकर भक्तिरस की अति वृष्टि करने लगा. कथा के बाद प्रसाद वितरण हुआ. कुछ भक्तों को दोनों में, कुछ को स्टील के गिलासों में खीर बांटी गई.

इस प्रकार 14 गिलास महल्ले के 14 घरों में पहुंच गए. हंसराज की धर्मप्राण प्रवृत्ति का डंका बजने लगा.

कुमार साहब की पत्नी रेवती गठिया की मरीज थी. वह हंसराज के घर कथा सुनने नहीं जा सकी थी. बहू को टी.वी. से फुरसत न थी. उस के घर प्रसाद और खीर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

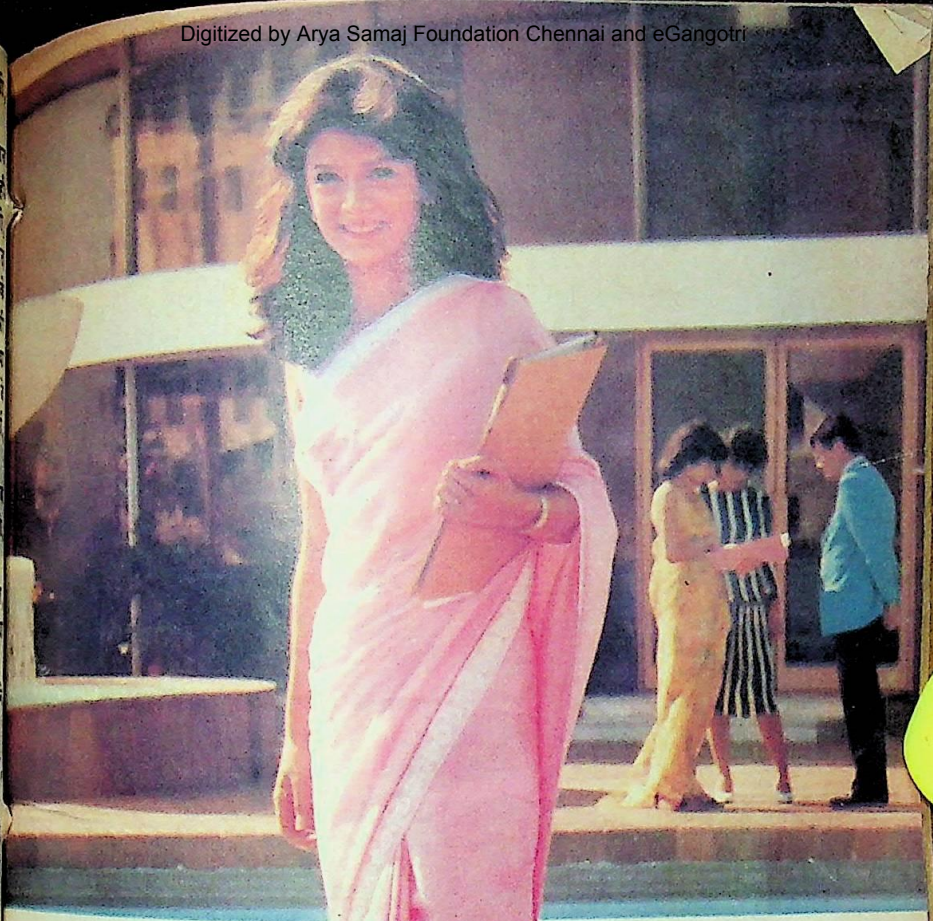

आज की कामकाजी ज़िन्दगी के लिए स्टेफ़ी बॅल्टलेंस सैनिटरी नैपकिन का भला कौन मुकाबला कर सकता है. इस स्टेफ़ी के साथ न बॅल्ट की जरूरत न सुस्ती-नाड़े या पिन की.

स्टेफ़ी में सोखने की भी क्षमता ज्यादा है जिससे हरदम सूखेपन और आराम का एहसास रहता है. और इन दिनों भी महीनों के और दिनों की तरह मैं आज़ाद और बेफ़िक्र रहती हूँ.

अधिक क्षय के दिनों में मुझे भरोसा है तो सिर्फ स्टेफ़ी सुपर पर क्योंकि आकार बड़ा होने के कारण यह ज़्यादा बचाव करता है पूरी सुरक्षा देता है.

अब स्टेफ़ी डियोडरेन्ट भी उपलब्ध है. डियोडरेन्ट सैनिटरी नैपकिन वास्तव में मासिक की गंध को कम करते हैं. इसलिए मुझे स्वच्छता का पूरा एहसास रहता है और जो भी मैं करना चाहूँ पूरे विश्वास से कर सकती हूँ.

इसलिए तो मैं हमेशा स्टेफ़ी का इस्तेमाल करती हूँ. यह मुझमें आत्मविश्वास जगाता है! है न कितना उपयोगी!

स्टेफ़ी सुरक्षा के प्रकार

- **रेगुलर** — पूरा बचाव और पूरी सुरक्षा के लिए.
- **सुपर** — ज्यादा स्वाव के दिनों में अधिक सुरक्षित और रात के इस्तेमाल के लिए भी.
- **डियोडरेन्ट** — पूरी सुरक्षा तथा डियोडरेन्ट की ताज़गी और स्वच्छता के लिए.

बस निकालिए और काम में लाइए

तिगुनी ताकत से चिपकने वाली इसकी पट्टियों को अपनी पे[illegible] की भीतरी तहों से चिपकाइए... नैपकिन अपनी जगह पर [illegible] रहेगी, न हिलेगी, न सरकेगी और न गिरेगी.

स्टेफ़ी* ...आज़ादी का वही एहसास, जो आप चाहती हैं

* स्टेफ़ी जॉन्सन एंड जॉन्सन यू.एस.ए. का ट्रेडमार्क है.

जॉन्सन एन्ड जॉन्

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का गिलास ले कर कोकिला खुद पहुंची थी. जाने लगी तो रेवती बोली, "कोकिला बहन, यह गिलास...?

"गिलास खीर सहित आप का ही है, बहन," कोकिला ने प्यार जताया.

रेवती ने पढ़ा: "सप्रेम भेंट सत्यदेव की जय."

रेवती गिलास वितरण के विषय में सुन चुकी थी. खुद के न जा सकने का अफसोस अब नहीं था, लेकिन मन में कोई अज्ञात वेदना उमड़ने लगी. बहू को सुना कर बड़बड़ाने लगी, "सब करमभाग से होता है. इस घर में तो धर्म की लुटिया ही डूब गई. किसी को धंधे से फुरसत नहीं तो किसी को फैशन से. मरूं तो मैं, खटूं तो मैं. आग लगे ऐसे जीवन को..."

डाक्टर कुमार ने घर में घुसते ही यह राग सुना तो समझ गए कि कुछ न कुछ गड़बड़ जरूर है. बहू भी टी.वी. बंद कर के कभी की रसोईघर में घुस गई थी. कुमार ने अपना झोलाडंडा कोने में रखा और भीगी बिल्ली की तरह रेवती के सामने कुरसी पर बैठ गए. उन को देख कर ऐसा लगता था, मानो अमरीका में किसी मृत्युदंड पाने वाले को बिजली की कुरसी पर बैठा दिया गया हो.

रेवती का कोप जारी था, "यह देखो, संभरण का अदना सा बाबू हंसराज, वह भी दानधर्म कर रहा है. एक इस घर में सब को अपनी पड़ी है. सब हाय पैसा, हाय पैसा में लगे हैं. तभी तो पति डाक्टर और पत्नी खाट पर. धर्म को तो ताले लगा दिए."

"अरे, कुछ बताओ भी. दान, धर्म, पैसा—हंसराज ने ऐसा क्या कर डाला. तुम भी करो न दान, तुम्हें किस ने रोका है?"

"करो दान, अरे, करूं कैसे? हाथपैर काट कर बांट दूं क्या?"

कुमार सकते में आ गए. अब तो कुरसी में बिजली जरूरी दौड़ेगी. बचने का कोई रास्ता न था. इतने में पंडितजी आ गए. कुशलक्षेम के बाद पंडितजी ने कहा, "मेरे आने से व्यवधान तो नहीं हुआ आप को?"

"नहीं, हमारे तो प्राण बच गए. पर आप ने आज कैसे कष्ट किया?"

"एक निवेदन करने आया था. तुला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

असहयोग

असहयोग आत्मा की पीड़ा को प्रगट करने का अत्यंत शक्तिशाली साधन है और एक बुरे राज्य के जारी रहने का जोरदार विरोध है. —महात्मा गांधी

राशि है आप की और तुला राशि है भाभीजी की. तुला पर शनि का विशेष भार है. कृपया इस माह में कोई लोहा न आने दें अपने घर में.''

''लोहा कहां से आएगा, महाराज? मैं तो पैदल ही हस्पताल जाता हूं कि कहीं स्कूटर के पहिए में कील घुस कर घर न आ जाए,'' कुमार साहब ने हंसते हुए कहा.

''सो तो ठीक है, यजमान. बस, फिर कोई हानि, भय नहीं. तो अब चलूं?''

''वाह, इतनी जल्दी. चाय नहीं पिएंगे?''

''आज नहीं.''

पंडितजी को संशय था कि वह इस घर में गलत तो नहीं आ गए? उन्होंने दोबारा पासा फेंका, ''डाक्टर साहब, इतना ध्यान रहे कि कोई लोहा घर में न आए. विशेष कर इस पखवाड़े में, क्योंकि हंसराजजी इस चपेट में आ गए थे, बेचारे. बड़े जतन से स्टील के 14 गिलास बांटे तब जा कर शनि शांत हुआ.''

''क्या 14 गिलास.'' रेवती चौंक पड़ी सब उस की ओर देखने लगे, ''सर्वनाश! तभी वह नवेली खीर का गिलास दे गई.''

वह तेजी से रसोईघर में गई और कोकिला वाला गिलास ला कर मेज पर पटक दिया.

छन... न...की आवाज हुई और गिलास फर्श पर गिरा. कुमार साहब अपनी गठियाग्रस्त स्त्री की यह चुस्ती देख कर दंग थे. पंडितजी अपनी सफलता पर मुसकराने लगे. वह मीठी छुरी जैसी अपनी बातें रेवती के पेट में उतारते रहे. शनि का पराक्रम, उद्भव, विकास और जाने क्याक्या कहते रहे, समझाते रहे. अंत में एक ही उपाय बताया, ''तुला के चार पलड़े हैं इस घर में. सो 28 लौह पात्र आप शनिवार को बांट दीजिए चुपचाप.''

''मगर शनिवार को लोगों को संदेह नहीं होगा?''

''कैसा संदेह? इस गिलास पर हंसराजजी ने लिखाया 'जय सत्यदेव' शनिदेव लिखवाते तो कौन लेता? इसी प्रकार आप शनिवार को निकाल कर रख दीजिए. फिर सोम, मंगल, बुध, बृहस्पति जब इच्छा हो बांट दीजिए.''

''लेकिन गिलास तो स्टील के होते हैं, पंडितजी, यह तो एलोय है,'' कुमार साहब की पुत्रवधू बोली. उस ने बी.एस.सी. पास की थी.

''बेटी, लोहा और स्टील एक ही वस्तु है. धातु विज्ञान और ज्योतिषज्ञान सब एक हैं.''

दो दिन बाद डाक्टर साहब के बेटे की शादी की वर्षगांठ के उपलक्ष्य में छत पर लाउडस्पीकर गूंजा. पंडितजी की युक्ति के अनुसार स्टील की 28 कटोरियों में लड्डू बांट कर रेवती ने चैन की सांस ली.

महल्ले में कानोकान यह खबर भी फैली कि कहां तो डाक्टर कुमार और उन के बेटे में बनती ही नहीं थी, अदालत में जा कर उस ने शादी की थी और कहां अब यह महोदय अपने बेटे की शादी की वर्षगांठ पर लड्डू बांटते फिर रहे हैं. इस खबर के पीछेपीछे पंडित रुद्रनारायणजी का शनिदेव संबंधी स्पष्टीकरण भी फुसफुसाया जाने लगा.

जिन के घरों में कटोरियां पहुंचीं, उन में से कुछ तो इस 'पोंगापंथी' पर हंस कर रह गए, लेकिन अधिकतर घबराए. पंडितजी ने ऐसे ही मूर्ख भक्तों के संकट का निवारण किया. रोज कभी इस के घर, कभी उस के घर भोंपू बजने लगा. फिर वह धर्म ध्वनि महल्ले के बाहर पूरे कसबे में गूंजने लगी.

भेरू नाई, रतन धोबी, मदन तेली और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुरन्त! प्रकृति का प्यार-भरा उपचार दें

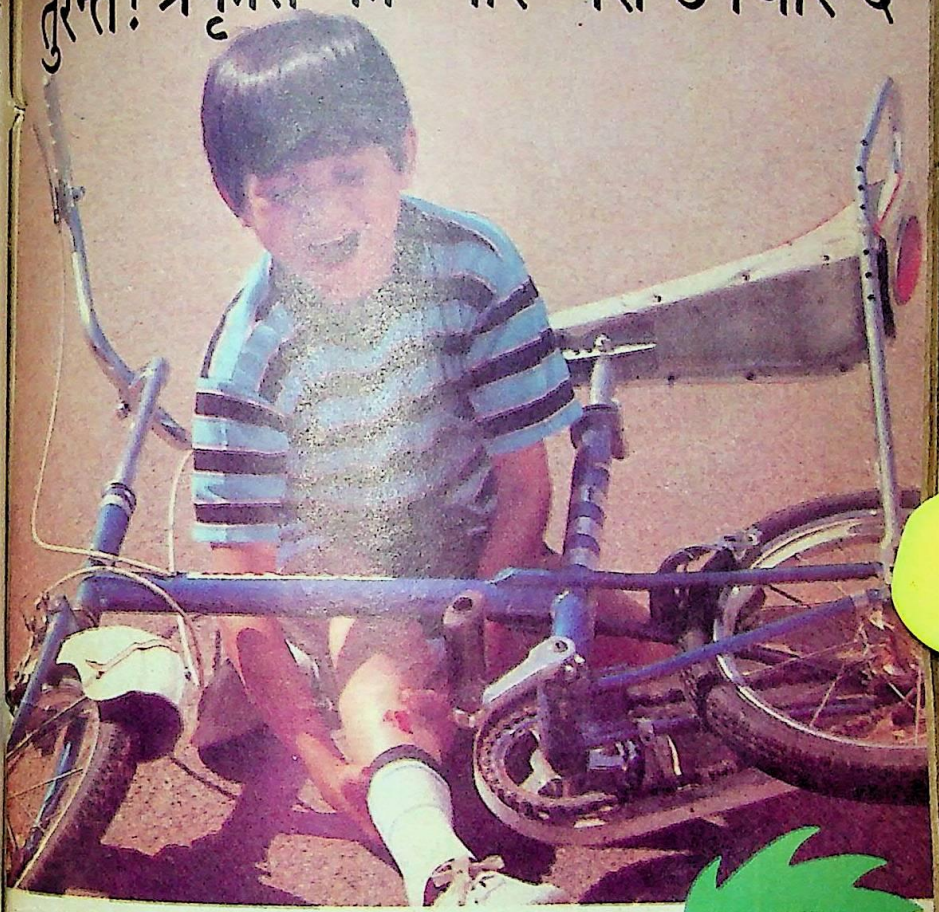

ब्रूज़+एड —बंद चोट के लिये

उंगली कहीं दरवाज़े में फंस जाये या क्रिकेट की गेंद अचानक बदन को आ लगे तो ख़ासी दर्दनाक बंद चोट पड़ जाती है.

अब पहली बार आप इसका सहज उपचार कर सकेंगे. उस जगह पर ब्रूज़ एड स्प्रे कीजिये. इसमें मिली जड़ी-बूटियां फ़ौरन काम करने लगती हैं. और जानलेवा दर्द बंद करके उस जगह को सूजने व नीला पड़ने से रोकती हैं.

बर्न+एड —जलन के लिये

बर्न एड में ऐसी औषधियां हैं जो पानी से भी कई गुना अधिक ठंडक पहुंचाती है.

इसकी जड़ी-बूटियों से न केवल जली त्वचा को ठंडक पहुंचती है, बल्कि त्वचा के अंदर तक जलन को राहत मिलती है जिससे फ़ायदा देर तक बना रहता है.

और जली त्वचा भी बहुत जल्द अच्छी हो जाती है. बिना एक छाला तक पड़े अगर जलने के बाद तुरन्त बर्न एड लगा दें.

घर में या सफ़र पर, आप जहां कहीं भी हों, राहत के इन तीन उपचारों वाला क्विक-एड-किट अपने पास रखें. ताकि इस बात का इत्मीनान रहे कि कहीं कोई हादसा हो भी जाये तो उससे निबटने के लिये आप तैयार हैं.

क्विक एड किट **RKB** प्रकृति का प्यार-भरा उपचार

HERBALS

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गोपाल पकौड़ी वाले से ले कर पटवारी, बड़ बाबू और वकील साहब तक के घरों में पंडितजी की गायन और प्रवचन कला का प्रदर्शन हो रहा था.

प्राथमिक पाठशाला का चपरासी मोहन पंडितजी के साथ ढोलक पर संगत करता था. वह इन दिनों इतना व्यस्त हो गया था कि स्कूल से गायब रहने लगा था. पंडितजी तो अभिनेता जितेंद्र की तरह तीनतीन शिफ्टों में व्यस्त रहने लगे थे.

एक दिन चौथमल घर पर खाना खाने आया. कसबे में उस की दुकान थी. 'लक्ष्मी स्टेशनरी' नाम का बोर्ड लगा था, पर किताबों का धंधा अगस्त में ही दम तोड़ चुका था. उन दिनों उस ने स्टील के बरतनों का व्यापार शुरू किया था.

चौथमल की पत्नी भी पंडितजी का राग अलापने लगी, "सुनो जी, इस पूनम के दिन हम भी कथा करा लें और कुछ लोहा दान कर दें. मुझे बड़ी चिंता हो रही है. कहीं दुकान न बैठ जाए अपनी."

चौथमल इतमीनान से खाना खाता रहा.

"हंसराज की पत्नी ने आग लगाई है सब. गिलासों में खीर दे गई. फिर डाक्टरनी कटोरी में लड्डू धर लाई. सोनी की बहू, गोपाल की भाभी, मुन्नी की ताई, सब चालाक निकलीं और अपने घर का शनि मेरे घर में धर गईं. अब तो एक ही उपाय है और वह यह कि पंडितजी से कथा करा लें और 21 तश्तरियां बांट दें."

"तुम तो निरी मूर्ख हो. भला हमें शनि लगे या हम शनि को लगें. अरे, पंडित क्या उपाय करेगा? वह तो देवशयनी एकादशी के बाद खुद फाके मारने लगा था. कथा उस से कौन कराता था. पंडित पैरोडीदास के चटकारेदार भजनों के आगे उस को कौन पूछता था."

"यह सब तो ठीक है, पर..."

"पर वर कुछ नहीं. तुम हो स्त्री, तुम्हारे पेट में बात पचेगी नहीं. इसलिए मैं कुछ कहना नहीं चाहता," कहतेकहते चौथमल चुप हो गया.

उस की पत्नी ने गौर से उस की ओर देखा, फिर जैसे कुछ समझती हुई बोली, "कसम ले लो, किसी से न कहूंगी. पर इस शनिदेव के प्रचार में कहीं आप का भी तो..."

"बस, बस, अब समझ गई तुम. एक दिन मैं और पंडितजी अपनाअपना रोना रो रहे थे कि यह तरकीब सूझ गई. नतीजा सामने है. हम दोनों का धंधा चल निकला है. तुम्हीं कहो, हम स्टील के बरतन बांटने लगें तो बेचेंगे क्या? कसबे में एक ही तो दुकान है," कहतेकहते वह खिलखिलाने लगा. ●

सरिता

पाठकों की सेवा में:

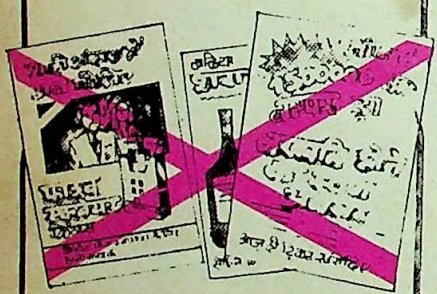

सरिता

में

सिगरेट, शराब, लाटरी (सरकारी जुआ/धोखाधड़ी) बोगस पत्राचार शिक्षण संस्थाओं के विज्ञापन प्रकाशित नहीं किए जाते और न ही जनभ्रामक ज्योतिष की साप्ताहिक या पाक्षिक तथाकथित भविष्यवाणियां.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दहेज के लिए उत्तरदायी कौन ?

लेख • कुमुद सिंह

अगर गंभीरता से देखा जाए तो हमारे समाज में लड़के की नौकरी के साथ-साथ लड़की के विवाह का सवाल जटिल तथा नाजुक समस्या बनता जा रहा है. जिस परिवार में भी तीनचार लड़कियां हैं उन के मातापिता की मनोदशा का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है. आखिर वे कौन से कारण हैं जिन से लड़की वालों की नींद उड़ जाती है? वे घर में लड़की के जन्म लेते ही उस के लिए क्यों पैसा एकत्र करना प्रारंभ कर देते हैं?

आज विवाह की समस्या कोई नई तो जन्मी नहीं है. विवाह तो पहले भी होते थे. पर तब आज जैसी परेशानियों का सामना नहीं करना पड़ता था. इस का मतलब है कि परेशानियां तो पहले भी होती थीं. फिर अब ऐसी कौन सी परेशानी हो गई है, जिस से विवाह एक भारी समस्या बनता जा रहा है? उस परेशानी को आप सब जानते हैं और वह है—दहेज.

आज हमारा समाज पहले से कहीं अधिक शिक्षित है और बुराइयों के प्रति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जागरूक होने का दावा करता है, इस के बावजूद दहेज की बुराई ने इसे बुरी तरह जकड़ रखा है. इस की जड़ें इतनी गहरी हो चुकी हैं कि लगता है, दहेज कभी खत्म होने वाला नहीं है.

यों कहने को दहेज को ले कर आए दिन नएनए कठोर से कठोर कानून बनते जा रहे हैं. संसद, विधान सभाओं तथा अखबारों में इस पर चर्चाएं होती रहती हैं, लेख छपते रहते हैं. पर इस पर भी दहेज का रोग बढ़ता ही जा रहा है. रोज दहेज को ले कर प्रताड़ित की जाने वाली और जलाई जाने वाली बहुएं इस का जीताजागता उदाहरण हैं.

यह बात शतप्रतिशत सही है कि आज समाज का हर वर्ग, हर जाति दहेज के रोग से अछूती नहीं है. हर लड़के वाला विवाह तय करते समय ढेर सारे दहेज और नकद राशि की मांग करता है. उस समय वह यह भूल जाता है कि कल उसे भी अपनी लड़की की शादी करनी है,तब उसे भी भारी दहेज देना होगा.

कन्या पक्ष वाला कितना ही अपनी असमर्थता क्यों न बताए, वर पक्ष वाले पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता. वह टस से मस नहीं होता. जरा भी नहीं पसीजता, कारण? उस के पड़ोसी के लड़के या रिश्तेदार के लड़के को भी तो लंबाचौड़ा दहेज मिला है. अब उस का नंबर आया है तो वह क्यों पीछे रहे? इस सुनहरी अवसर को वह क्यों छोड़ दे?

वर पक्ष के कुछ समझदार आदमी तो इस प्रकार से बातें करते हैं जिस से उन के पास प्रस्ताव ले जाने वाला स्वयं ही अपनी स्थिति बता दे, "अमुक लड़की वाले तो शादी में रंगीन टी.वी., स्कूटर आदि तक देने को तैयार हैं, लेकिन हमारे पास सब कुछ है. हमें कुछ भी नहीं चाहिए."

पर साथ ही उसी सांस में कहेंगे, "मैं ने तो अपनी लड़की की शादी में सब कुछ दिया था. लड़के का घर भर दिया था."

अगर आप की आर्थिक स्थिति अच्छी है, आप ने अच्छा दहेज दे दिया तो फिर दूसरे से क्यों अपेक्षा करते हैं? उस की चर्चा क्यों करते हैं? उस की बातों का मतलब स्पष्ट है यानी अब आप भी अपना अंदाजा बताते जाइए. अगर अंदाजा कम है तो फिर आप दूसरा घर तलाश कीजिए, यहां पर आप का काम नहीं बनने वाला है. एक लड़की वाला तो उन्हें सब कुछ दे रहा है. फिर आप भी तो लड़की वाले हैं. आप भी उन के बराबर दीजिए.

बहुत से पुरातनपंथी, रूढिवादी परिवारों में तो शादी के बाद भी साल भर के सारे त्योहारों पर भी कुछ न कुछ देने को बाध्य करते रहते हैं. क्या लड़की वाला मात्र लुटने के लिए ही है? छोटेछोटे त्योहारों पर उन का इस प्रकार मुंह फाड़ कर मांगना क्या उचित लगता है? उन की मांगने की यह आदत तो उन घरेलू नौकरों से मिलतीजुलती है जो आप से आए दिन किसी न किसी बहाने से मांगा करते हैं.

अहम प्रश्न तो यह है कि आखिर समाज में फैली इस विषबेल को प्रोत्साहन कहां से मिलता है? किसी ने भी दहेज के इस पहलू की तरफ ध्यान नहीं दिया है. अगर बारीकी से देखा जाए तो आप यह जान कर दंग रह जाएंगे कि इस सामाजिक बुराई को बढ़ावा देने वाले खुद लड़की वाले ही हैं. लड़की वाले अपनी लड़की की शादी करने के लिए उसे

दहेज को ले कर घटने वाली घटनाओं के लिए प्रायः लड़के वालों को ही दोषी ठहराया जाता है. परंतु मनपसंद वर खरीदने के लिए अपनी चादर से बाहर आ कर लड़के वालों को झूठी शान दिखाने तथा हर संभव लालच देने वाले कन्या पक्ष के लोग भी क्या कम उत्तरदायी नहीं?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवन के रंग अजीब...

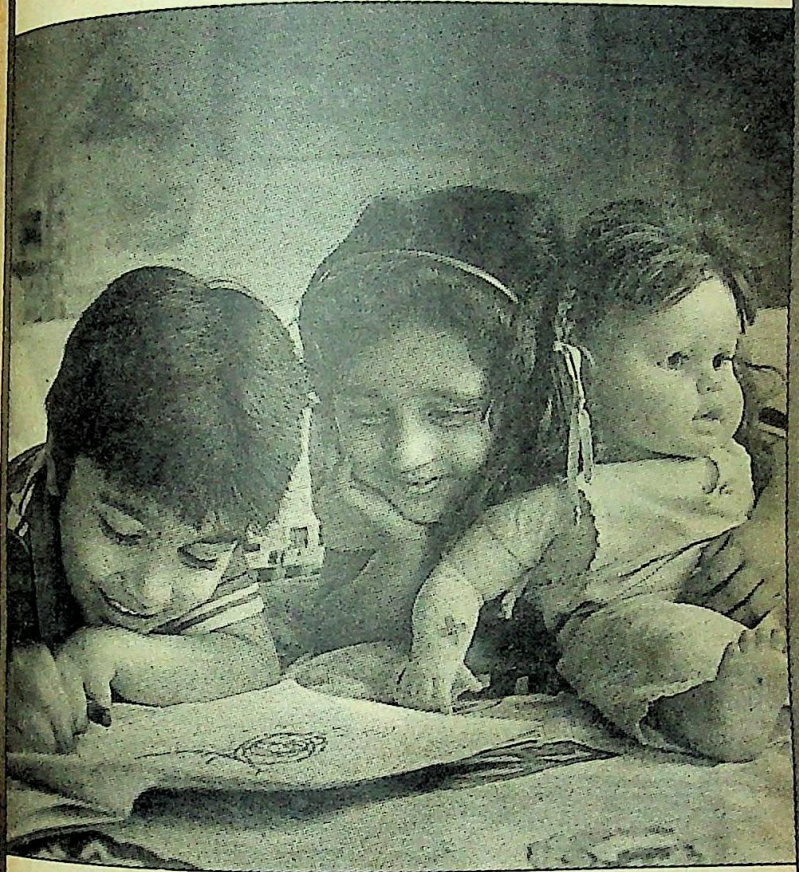

शुक्र है बोरोलीन करीब

सुगन्धित ऐन्टिसेप्टिक क्रीम

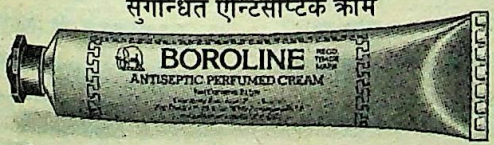

सूखी त्वचा और साधारण कटने-छिलने पर अनोखा असर

साठ साल पहले अव्वल आज भी अव्वल

बोरोलीन प्रसाधन सामग्री नहीं

जी डी फार्मास्युटिकल्स
कलकत्ता ७०००५३

Response 1033

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

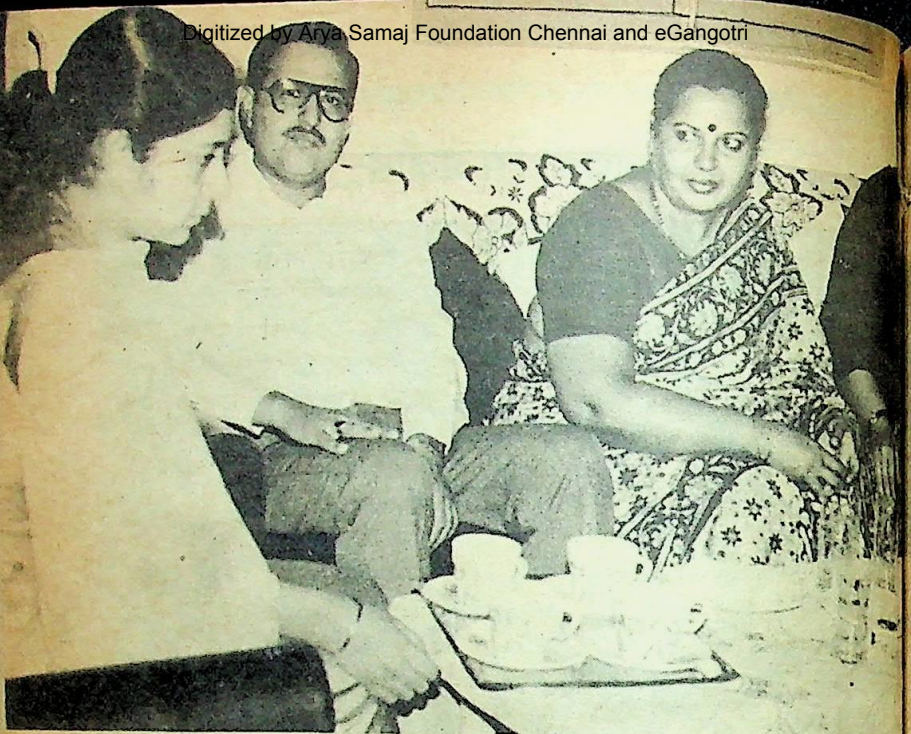

शादी के समय सब वस्तुएं उपलब्ध कराने को उतारू रहते हैं ताकि शादी के बाद उन की लड़की को किसी प्रकार की परेशानी न होने पाए. सोचने का सही ढंग अब लड़की वालों के लिए सिरदर्द बनता जा रहा है. वर पक्ष वाला उन की इसी कमजोरी का लाभ उठाता है.

अब तो लड़के वालों ने दहेज को अपना अधिकार समझ लिया है. हम अपने परिचितों, रिश्तेदारों को अकसर यह कहते सुना करते हैं कि उस लड़की की शादी मात्र एक फ्रिज या स्कूटर के न मिलने से रुक गई. कारण? अगर दूसरी लड़की वाला भी स्कूटर देने के लिए तैयार नहीं होता, तब वे कहां से स्कूटर पाते?

पर दूसरी लड़की वाले ने अपनी बेटी की शादी के लिए उधार लेना तक स्वीकार कर लिया. ऐसा करना उचित नहीं है.

इस संबंध में एक ताजा उदाहरण स्वयं लेखिका की छोटी बहन की शादी का है. एक जगह उस की शादी की बातचीत अंतिम दौर में थी. तभी उन्होंने एक नई शर्त रख दी, "लड़के को स्कूटर चाहिए."

और यह मांग लड़के की बहन ने रखवाई लड़केवालों के आने पर किसी प्रकार का लालच देने का प्रयास न करें.

थी. बस, शादी की बात यहीं पर टूट गई.

जब उन की लड़की इस तरह की मां रख सकती है तो फिर वहां पर शादी करने बाद आए दिन झगड़ा लगा रहेगा. ऐसी जग शादी न करना ही अधिक उचित है. क किसी लड़की को ऐसी मांग रखना शोभा दे है? उसे तो लड़की वालों के साथ सहानुभ रखनी चाहिए. पर नहीं, वह जानती है यही समय है लड़की वालों से अपनी मनमा मांगें मनवाने का. हम नहीं देंगे तो कोई न क लड़की वाला दे ही जाएगा.

बहुत से लड़की वाले अपनी लड़की सुखसुविधाओं की सभी वस्तुएं उपलब्ध कराते हैं और लड़के वालों को झूठी शा दिखाते हैं कि हम ने यह दिया है वह दिया नहीं तो तुम्हारे पास था ही क्या.

जब आप स्वयं ही सारा सामान उपलब्ध कराने को तत्पर हैं तो फिर लड़के वालों को उसे लेने में क्या शर्म है?

लड़की वाला जब भी शादी की बा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तय करने के लिए जाता है तो वह मन ही मन अपनी शादी का बजट बना कर जाता है. अगर लड़के वाले इस में नहीं मानते हैं तो फिर वह पांचछः हजार रुपए और बढ़ा देता है. बतलाइए यह कि लालच देता है. आखिर घर अच्छा है. लड़का भी बैंक में है. अच्छी तनख्वाह मिलती है. फिर लड़की की शादी तो करनी ही है, यहां हो जाए तो अच्छा है.

अब आप ही बताइए, जब आप खुद ही लंबाचौड़ा बजट सोच कर लड़के वालों के यहां जाते हैं तो फिर उन्हें दसपांच हजार अधिक मांग लेने में क्या संकोच हो सकता है? घर आई लक्ष्मी को कौन ठुकराता है? फिर आप की तरह दूसरे लड़की वाले भी तो हैं जिन की आर्थिक स्थिति अच्छी है—शायद बच्चे कम होने के कारण, पद अच्छा होने के कारण, सुनियोजित खर्च होने के कारण या फिर नंबर दो की आमदनी के कारण.

फिर वर पक्ष वाले आप के द्वारा बताई गई राशि में वृद्धि कर देते हैं और बात कहां से कहां जा पहुंचती है आप समझ सकते हैं. अगर आप शादी की बात करते समय अपने दिमाग से यह बात एकदम निकाल कर ही जाते तो फिर कितना अच्छा होता. पर नहीं, आप पर तो अपनी सामर्थ्य भर बेटी को सब कुछ देने का नशा सवार था जिस का लाभ लड़के वाले ने उठा लिया.

दहेज को बढ़ावा मिलने के पीछे एक कारण और भी है और वह यह कि लड़की वाले सदैव अपनी लड़कियों को घर बैठा कर उच्च शिक्षा की डिगरियां दिलवा देते हैं. उस के बाद वे सोचते हैं कि हमारी लड़की इतनी अधिक पढ़ीलिखी है इसलिए अब इस की शादी भी किसी ऊंचे अधिकारी, इंजीनियर या फिर डाक्टर से करनी चाहिए जिस से जोड़ा बराबर रहे, कोई हीनता की भावना उत्पन्न न होने पाए.

लिहाजा वे ऐसा ही वर तलाश करते रहते हैं. यहीं पर आ कर वे धोखा खा जाते हैं कारण? अधिकारी, इंजीनियर या डाक्टर तो गिनेचुने होते हैं. उस के मुकाबले में लड़की वाले अनेक होते हैं. फिर हर एक की पसंद भी अलगअलग होती है.

कोई पदाधिकारी अपने समकक्ष पत्नी चाहता है तो एक डाक्टर डाक्टर पत्नी की कामना करता है ताकि वे दोनों हाथों से कमा सकें. इसलिए लड़की वाले रिश्तों की बोली लगाने पर आमादा हो जाते हैं, जो सरासर गलत है.

अगर मध्यमवर्गीय परिवार अपनी लड़की को ले कर इतने ऊंचे सपने न देखे तो फिर इतनी परेशानी न हो. अगर वे किसी क्लर्क या अन्य पद पर कार्यरत लड़के के साथ अपनी लड़की की शादी कर दें तो इस में क्या बुराई है?

अपने स्तर का घर

आखिर शादी तो उस लड़के की भी होगी ही. पत्नी का रचनात्मक सहयोग पा कर वह लड़का भी तेजी से प्रगति कर सकता है. उच्च शिक्षित लड़की भी नौकरी कर के अपने परिवार की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ कर सकती है, अपने पति को सहयोग दे सकती है. फिर पदाधिकारी, इंजीनियर या डाक्टर का स्तर दूसरा होगा, जिस में दिखावा ही दिखावा होगा. उस स्तर को बनाए रखने में पदाधिकारी बुरी तरह परेशान हो जाता है. इसलिए उस से भी छुटकारा मिलेगा. मध्यमवर्ग का अपना अलग स्तर होता है, जिसे पत्नी और पति के सहयोग से आसानी से कायम रखा जा सकता है.

उच्च शिक्षित लड़की तो अपनेआप में ही एक अच्छाखासा दहेज है. जब आप की शादी हुई थी, उस समय आप क्या वर्तमान पद पर थे? क्या आप की सारी सुखसुविधाएं आप के पास थीं? उस समय तो आप के पास कुछ भी नहीं था, पर आप ने अपने परिश्रम से, खर्चों में आवश्यक तालमेल बैठा कर परिवार के लिए टी.वी., फ्रिज, डबलबेड, सोफा आदि खरीद लिया है. अब आप का स्तर ऊंचा हो गया है.

यही बात आप अपनी लड़की के बारे में सोचिए. क्यों आप अपनी लड़की के लिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

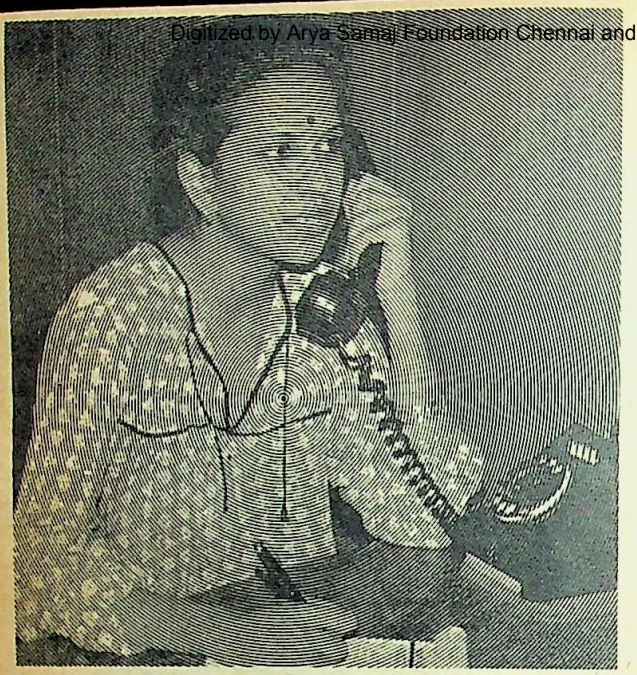

पढ़ीलिखी नौकरीपेशा लड़की स्वयं में एक अमूल्य दहेज है. उस के लिए वर खरीदने की बात सोचना ही बेहद लज्जाप्रद है.

तो फिर लड़के वाले दहेज मिले पैसे से अपनी बेटी शादी में भी सहायता लेंगे. कितना नेक विचार हलदी लगे न फिटकरी रंग भी चोखा आए. लड़ वालों के हौसले यहां तक गए हैं कि वे अब तो अप बेटियों के लिए आभूष तक भी मांगने लगे हैं लड़की वाले शादी करने लिए देने को तैयार हो जा हैं.

सब सुखसुविधाएं जुटाने की सोच रहे हैं? अपने सारे खर्चे रोक कर, इच्छाओं, आकांक्षाओं का दमन कर के लड़की के लिए सुखसुविधाएं जुटाना कहां तक न्यायसंगत है? सोचिए, फिर इस की क्या जमानत है कि वे सुखसुविधाएं आजीवन आप की बेटी का साथ देती रहेंगी?

लड़की वालों का हौसला

आजकल पतिपत्नी दोनों के नौकरी करने के कारण कुछ परिवारों के पास अच्छाखासा पैसा है. इस पैसे के कारण वे शान से कहतेफिरते हैं, "हम अपनी लड़की की शादी में तो 80 हजार तक खर्च कर सकते हैं. बस लड़का अफसर होना चाहिए."

अब आप ही बताइए, क्या आप के इस प्रकार खुल्लमखुल्ला कहने से लड़के वालों के हौसले नहीं बढ़ते? क्या इस से दहेज को प्रोत्साहन नहीं मिलता?

महंगाई के इस जमाने में इतना रुपया मिल जाने पर लड़के वालों को अपने आप से कुछ भी खर्च नहीं करना पड़ेगा. उन के लड़के की शादी तो मुफ्त में हो जाएगी. संभव हुआ और लड़का आज्ञाकारी हुआ

दहेज के अलावा लड़की वाले अपन झूठी शान दिखाने और अपने पैसे प्रदर्शन करने के चक्कर में और दूसरा सामान भी देने से नहीं चूकते.

एक दिन मेरे एक परिचित अपने भा की शादी में शामिल हो कर आए थे. उन हाथ में नई घड़ी चमक रही थी. मैं उत्सुकता से पूछ ही लिया, "यह घड़ी क कलेवे में मिली है?"

उन्होंने बड़े गर्व से कहा, "हां, हम स छोटे भाइयों को उन लोगों ने कलेवे के सम दी हैं."

अब आप ही बताइए. पांचछः घड़ि बांटना क्या आसान काम है? वह भी त जब दुनिया भर के अन्य खर्चे भी करने हो हैं. एक ने अगर कुछ दे दिया है तो दूसरे क भी देना पड़ता है. एक परंपरा सी बन जा है. यह लेनदेन लड़की वाले की मजबूरी ब जाता है. शादी में तो वैसे भी बहुत खर्च होते हैं. कहां से इतने पैसे का प्रबंध कर पा हैं, यह तो कन्या पक्ष वाले ही जान सकते हैं इसलिए शादी के समय अपनेआप को बहुत ही संतुलित रखने का प्रयास कीजिए और लालच मत दीजिए.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक अद्भुत, आकर्षक दुनिया में आपका स्वागत है।

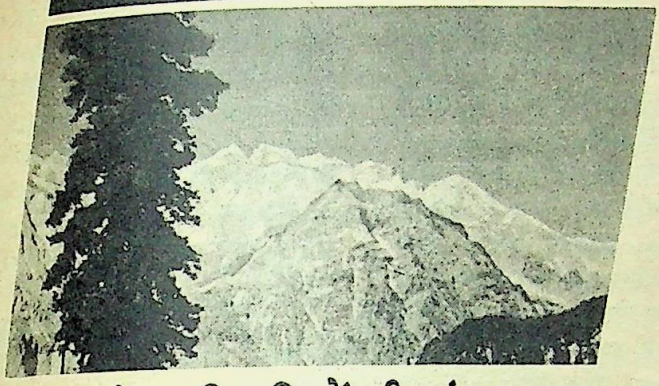

हिमाचल के आदिवासियों की शांत-एकान्त और मनोरम दुनिया।

हिमल की उन खूबसूरत वादियों में आइए
जहां आदिवासियों का जनजीवन आपको मंत्र-मुग्ध कर देगा, जहां समय एक सौम्य और शान्त, स्वच्छ वातावरण में रुक सा गया लगता है। एक ऐसी जीवनशैली जो अभी भी अक्षुण्ण की गतिशीलता से बची हुई है। और जहां प्रकृति आज भी अपने प्राकृतिक रूप में है — मनोरम छटा से मन को मोह लेने वाली सुन्दरता के साथ।

दूरवर्ती किन्नौर, भारमौर, लाहुल-स्पिती और पांगी घाटी का पर्यटन कीजिए। यहां के कबीलों और बंजारों के रंग-बिरंगे जीवन और रोचक रीति-रिवाजों को इतना पढ़िए। और साथ ही अनुभव कीजिए, गद्दी, किन्नर और गुज्जर आदिवासियों की पारम्परागत लोक संस्कृति।

अति सुन्दर! आपकी दुनिया से दूर, एक अनोखी दुनिया।

कैसे पहुंचें :

दिल्ली या चण्डीगढ़ से हवाई जहाज़/सड़क मार्ग द्वारा कुल्लू पहुँचिए। फिर, कौलांग तक बस द्वारा।

हवाई जहाज़/सड़क/रेलगाड़ी द्वारा शिमला पधारिए। फिर बस द्वारा किन्नौर पहुँचिए।

रेलगाड़ी/सड़क मार्ग से पठानकोट पहुँचिए। यहां से बस द्वारा चम्बा/भारमौर।

अपने सुझावों के लिए लिखें या सम्पर्क करें :

कमिश्नर–टूरिज्म,
हिमाचल प्रदेश,
डेज़ी बैंक एस्टेट, शिमला-171 001, फ़ोन : 2028, 3136

अधिक जानकारी के लिए कृपया हि. प्र. पर्यटक कार्यालयों से सम्पर्क करें :

- नई दिल्ली : चन्द्रलोक बिल्डिंग, 36 जनपथ, फ़ोन : 3325320, 3324764
  पर्यटक सूचना कार्यालय : हिमाचल भवन, 27 सिकंदरा रोड, फ़ोन : 387473
- बम्बई : 36 वर्ल्ड ट्रेड सेन्टर, कफ़ परेड, फ़ोन : 219191/284
- कलकत्ता : 25 कैमैक स्ट्रीट, फ़ोन : 446867
- मद्रास : 28 कमान्डर-इन-चीफ़ रोड, फ़ोन : 472966
- चण्डीगढ़ : एस.सी.ओ. 1048/49, सैक्टर 22 बी, फ़ोन : 26494
- शिमला : दि मल, फ़ोन : 3311; पंचायत भवन, कार्ट रोड, फ़ोन : 4589
- बैंगलूर : मैनेजर, हिमाचल एम्पोरियम, गणेश कम्पलेक्स, 13, सूबेदार चत्रम रोड, फ़ोन : 76591

हिमाचल टूरिज़्म

Compacta

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ सीमा तक तो यह बात सच है कि कोई भी मातापिता अपने से गिरी हुई आर्थिक स्थिति वाले परिवार में या फिर कम पढ़ेलिखे लड़के से अपनी बेटी का विवाह नहीं करना चाहते. यहां आ कर हर मांबाप यह भूल जाते हैं कि आदमी नीचे से ही ऊपर की ओर उठता है.

आज अगर आप अफसर हैं तो अपना अतीत मत भूल जाइए जिस से आप ने शुरुआत की है. इसलिए विवाह जैसा पवित्र मानवीय रिश्ता बराबर वालों में ही करना समझदारी होती है. हीनता का बोध नहीं होने पाता है. मात्र भौतिकता पर या पैसे के बल पर आधारित संबंध ज्यादातर खोखले होते हैं और पतिपत्नी के बीच अनेक तनावों को जन्म देते हैं. कारण? दोनों सुखसुविधाओं के बीच पले होते हैं. वे समझौता करना नहीं जानते. इस से परिवार विघटन की कगार पर आ खड़ा होता है.

जीवन के सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण फैसले में जब तक आप अपनी सीमा से आगे जा कर बातें करते रहेंगे, प्रलोभन देते रहेंगे तब तक दहेज की समस्या कभी खत्म नहीं हो पाएगी. उचित यही रहेगा कि शादी करते समय आप अपनी लड़की के विचार भी जानने का प्रयास करें. शादी का उत्तरदायित्व तो आप का है ही. पर उस से पूछना भी आवश्यक है जिस से शादी के बाद वह आप को दोषी न ठहराए.

अधिकांश लड़कियां लंबेचौड़े दहेज के कारण किसी पदाधिकारी की पत्नी न बन कर ऐसे अल्प वेतनभोगी, साधारण आदमी की पत्नी बनना कहीं अधिक अच्छा समझती हैं जो उन की भावनाओं और इच्छाओं का ध्यान रखे. वे अपने जीवन के स्वप्निल क्षणों को नष्ट नहीं करना चाहती हैं. आप इस मर्म को नहीं समझ सकते और उस के लिए अफसर लड़का तलाश करते रहते हैं.

अपनी आकांक्षाओं और सपनों को लड़कियां आप से संकोचवश नहीं कह पातीं, लेकिन वे अपने मन के एक कोने में अपने जीवनसाथी को ले कर सपने बुना करती हैं, इसलिए आप भी उन के सपनों को पूरा करने में सहयोग दीजिए. उन के कोमल सपनों को धूमिल मत होने दीजिए. यही अभिभावक होने के नाते आप का कर्तव्य है.

लड़की वालों को अपने विचारों में परिवर्तन लाना चाहिए. उन्हें लड़की को हर वस्तु शादी के समय ही उपलब्ध कराने का पक्षधर नहीं बनना चाहिए. शादी के बाद वे लोग स्वयं अपनी पसंद और जरूरत की वस्तुएं एकएक कर के एकत्र कर लेंगे. अपनी कमाई से खरीदी गई वस्तुओं से लगाव अधिक होता है.

एक बात और, जब आप का समय आए यानी जब आप के लड़के की शादी हो तब भी आप यही स्वस्थ दृष्टिकोण अपनाएं. तभी समाज में परिवर्तन आ पाएगा, वरना नहीं. लड़का कम शिक्षित हो, तब भी आप झिझकें शरमाएं नहीं. लड़के का मूल्यांकन उस की शिक्षा से न कर के उस की योग्यता यानी नौकरी, व्यवहार वगैरह से कीजिए, इन्हीं से जीवन और परिवार चलता है.

बुरा मत मानिए, आप को अपनेआप को प्रलोभन देने से बचाना ही होगा. नहीं तो आगे चल कर भी लड़कियों की शादियां इसी प्रकार समस्याएं बनती जाएंगी और बहुएं दहेज के लिए जलाई जाती रहेंगी.●

फूल ज्यादा जिया करेंगे

अब गुलदस्तों में सजाए गए फूलों को 10 दिन तक ताजा रखा जा सकेगा. पिछले दिनों कृषि विज्ञान विश्वविद्यालय (बंगलौर) में डा. जे. बी. नारायणन गौड़ तथा आर. जयंती द्वारा किए गए अनुसंधान के अनुसार गुलदस्ते के पानी में एल्यूमीनियम सल्फेट मिला देने पर फूल 6 से 10 दिनों तक ताजे रह सकते हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मन का मिला न मीत

कहानी • विमल भटनागर

राका ने जब अपना निश्चय सुना दिया तो मां ने सिर पीट लिया, पिता हाथों में सिर थाम कर रह गए, भाई ने संतोष की सांस ली और भाभी निर्लिप्त भाव से घर के कामकाज में जुटी रहीं. हां, छोटा गिरीश सब के चक्कर काट आता और सब के भारीभारी मुंह देख कर उदास मां के पास जा बैठता, फिर बारीकी से बूआ का मुंह देखता, निराशा से हताश हो उठता. कोई हाथ बढ़ा कर गोद न लेता, कोई प्यार से मुंह चूम कर खट्टामिट्ठा न पूछता. न कोई उसे चिढ़ाता या खिजाता ही. इस नएपन

"राका, तुम्हारा भला इसी में है जैसा सब कह रहे हैं वैसा करो. बेकार हठ करने से क्या लाभ?" मीना गंभीर हो कर बोली.

सरिता बीस साल पहले
मार्च (द्वितीय) 1968

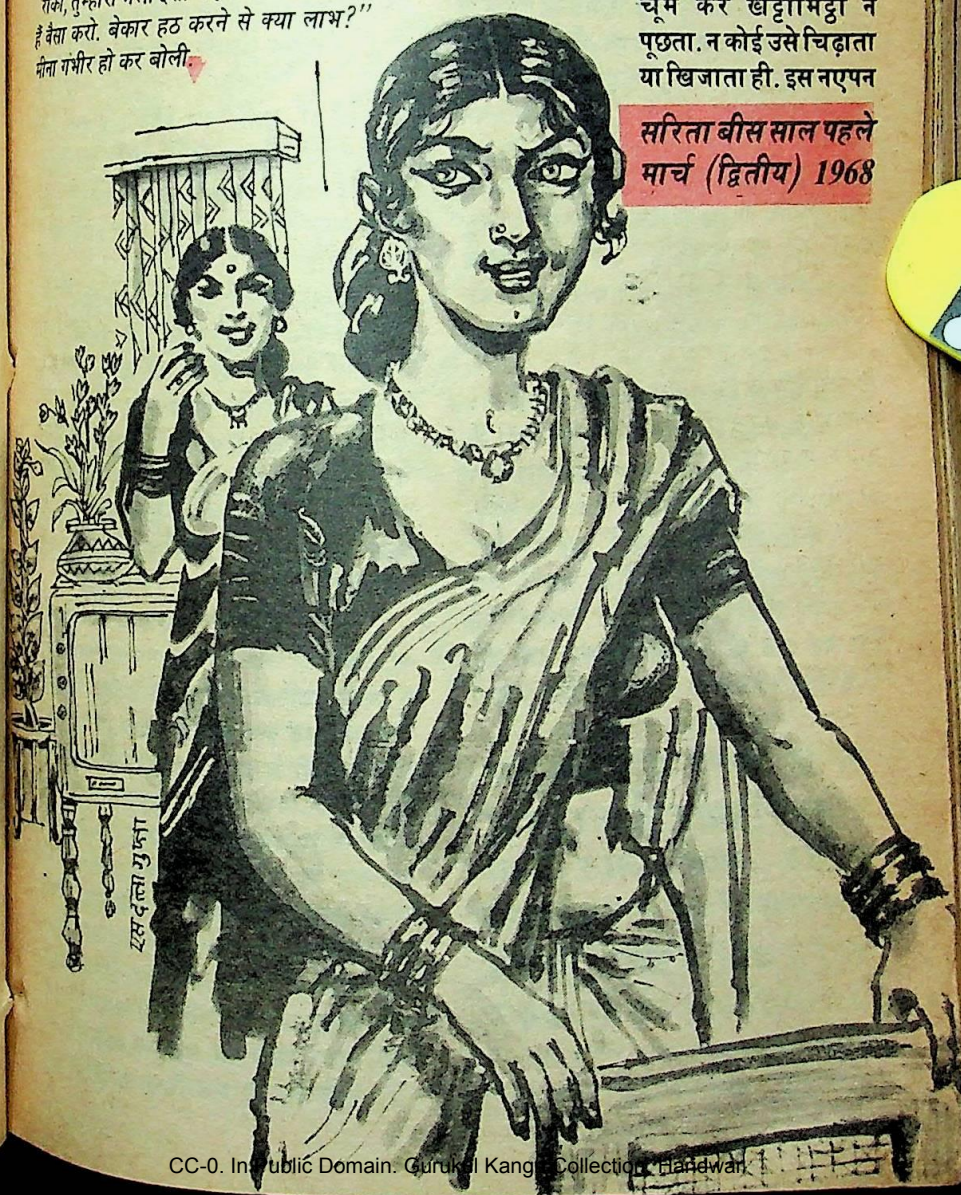

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से सहमासहमा वह मां और बूआ का मुंह देख कर रोतेरोते भी रुक जाता.

मां जब बहुत देर तक माथाछाती कूट, सिर धुनधुन कर बड़बड़ा चुकीं तो धीरे से चादर खूंटी से कंधों पर डाल बाहर निकल गईं. दम साधे राका और सांस रोके बहू देखती रहीं पर कुछ बोलने की हिम्मत न हुई. पर डेढ़दो घंटे के बाद जब राका की अभिन्न सहेली मीना के साथ उन्होंने प्रवेश किया तो जैसे सब की रुकती सांसें चलने लगीं. बहू के हाथ जल्दीजल्दी चलने लगे और राका के स्वेटर की सलाइयां. पिता ने एक बार सिर उठा कर देखा और पुस्तक में मुंह गड़ा दिया. भाई थोड़ा मुसकरा कर कमरे में चले गए. मां मीना को ले कर अपने कमरे में चली गईं. और घंटे डेढ़ घंटे के बाद मीना जब वहां से निकली तो अस्पष्ट स्वर में सुनाई पड़ा, "तुम से कहे जाती हूं, चाची, राका को मैं जानती हूं, उस का निश्चय अटल होता है. बहुत सोचविचार कर ही वह अपना निश्चय प्रकट करती है."

मां गहरी सांस खींच कर रह गई. वह क्या यह बात नहीं जानतीं? तभी तो सारी चिंता है. यदि वह कहती कुछ और करती कुछ तो चिंता किस बात की थी!

मीना राका के कमरे में आई तो गहरे दुख और असीम गांभीर्य में भी उस के मुख पर हास्य की एक करुण रेखा खिंच ही गई जैसे वह उस की प्रतीक्षा ही कर रही हो. मीना ने भूमिका बांध कर एक धौल जमाते

मां के काफी जोर देने पर राका ने विवाह तो कर लिया लेकिन मात्र आठ दिन ससुराल में रह कर दोबारा वहां न जाने के उस के निर्णय ने पूरे परिवार को हिला कर रख दिया.

हुए कहा, "सच है, लड़कियों को शिक्षा देना ही पाप है. तुलसी बाबा ने ठीक ही कहा है, "जिमि स्वतंत्र होइ बिगरहिं नारी." यह उस आधुनिक स्वतंत्रता का ही परिणाम है कि मेंढकी को भी जुकाम होने लगा है. भला सुनूं तो कौन से सुर्खाब के पर लगे हैं, आप में!"

"ओ हो ! आप जैसे, जानती ही नहीं, सुर्खाब के पर ही नहीं सींग भी लगे हैं, समझी ! दूर बैठ, नहीं तो पंख फड़फड़ा कर सींग मार दूंगी."

"अच्छा ! सींग के साथ दुम भी लगी है न !" मीना ने भयभीता जैसी मुद्रा बना कर कहा.

"जी, नहीं, हम लोग दुम नहीं सींग और पर ही रखते हैं जो मारते भी हैं और उड़ा कर भी ले जाते हैं. दुम तो बला है बला, फंस जाए तो जान से भी हाथ धोने पड़ें," राका मुसकराई.

"अच्छा, श्रीमतीजी ! मजाक छोड़िए और गंभीर होइए. चाची का हुकुम है कि यह सब बचपना छोड़ कर, जैसा दुनिया में होता आया है, वैसा ही करिए. क्यों कुल पर कलंक लगा कर नाक कटाने जैसी बात करने पर तुली हैं आप ! नारी की एक ही गति है, पति. और उस पति के द्वार पर आप को जाना ही पड़ेगा, हंस कर या रो कर, समझीं!"

मीना की बात में मजाक का पूरा पुट था. फिर भी उस की बात सुन कर राका हंस न सकी, बल्कि गंभीर हो उठी, "अच्छा, खूब पाठ पढ़ कर आई हैं, आप. पर, मीना, अपनी चाची से कह दे कि नारी की क्या गति है, यह समझाने की अब आवश्यकता नहीं. अपनी गति वह आप ही खूब समझती है. अब वह मिट्टी का निरा लोंदा नहीं है कि जिधर चाहा, वहां उठा कर फेंक दिया, जिस ने चाहा वैसा रूप गढ़ लिया, मन आया खेल लिया नहीं तो तोड़ कर फेंक दिया. आज नारी अपना रूप गढ़ने में आप समर्थ है. उसे किसी गढ़ने वाले की जरूरत नहीं."

"ओ हो, तो अब विधाता से भी बढ़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तुम्हें नहीं मालूम चाची, राका ने सेवाकार्य के लिए अपना जीवन दान कर दिया है. उसी के प्रशिक्षण के लिए जा रही है वह." मीना बोली.

गई नारी. सृष्टिकर्ता एक ही बार रूप, गुण, भाग्यदुर्भाग्य गढ़लिख कर रख देता है. अब नारी मनचाहा रूप गढ़ सकती है, क्यों?" मीना ने उसी मजाक भरे, पर गंभीर लहजे में कहा, जैसे सुन कर सचमुच उसे आश्चर्य हुआ हो.

"तुझे जो कहना हो कह. नारी क्या कर सकती है और क्या नहीं, यह जानने और सुनने की तुझे कोई आवश्यकता नहीं. किसी दूसरे युग की नहीं है तू. सीधे से यह बता कि क्या गुरुमंत्र सीखपढ़ आई है?"

मीना इस बार सचमुच गंभीर हो गई,

"सच, राका, चाची को बड़ा सदमा पहुंचा है तेरे निश्चय से. ऐसा निश्चय हम अबला कही जाने वाली नारियों को शोभा नहीं देता. हम तो मातापिता की धरोहर हैं जिसे चाहे सौंप दें, हमारा वश भी क्या है ! अब तुम्हारा भला इसी में है, जैसा सब कह रहे हैं वैसा ही करो. हठ करने से क्या लाभ ! आखिर वह तुम्हारा पति ही तो है ! विवाह हुआ है उस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का तुम्हारे साथ !"

राका के चेहरे पर घृणा उभर आई, "मेरा पति नहीं है वह, मैं ने उसे कभी पति नहीं माना. मैं ऐसे नराधम को पति मान भी कैसे सकती हूं ! पति बनने से पहले वह इनसान तो बन जाता. नहीं, मीना, मैं ने कभी उसे अपना पति नहीं समझा. मैं उस से प्रेम नहीं, घृणा करती हूं. ऐसी घृणा जो शायद कोई पशु से भी न करता होगा."

"पशु को क्यों घसीटती हो, राका ! पशु तो कई अर्थों में इनसान से कहीं बेहतर है. बेचारा सीधासादा सा जीव."

"तो क्यों तुम सब मुझे ऐसे प्राणी के पास भेजने पर तुली हो जो न पशु है, न इनसान, राक्षस भी शायद नहीं ! मीना, मैं वहां किसी तरह भी न जा सकूंगी. मां से कह दे, उसे मुझे देने को दो रोटियां भारी पड़ती हों तो मैं अपना इंतजाम आप कर लूंगी. मेरे पिता ने मुझे इस योग्य बना दिया है कि मैं किसी की मुहताज बन कर भार नहीं बनूंगी. मेरी अच्छी, मीना, मां को समझा दे, ऐसा हठ न करे जो उन की बेटी के प्राणों को ही ले बैठे. पर मैं मरूंगी नहीं.

"मीना, मैं मरना नहीं चाहती. मैं दुनिया को दिखा देना चाहती हूं, सबक देना चाहती हूं कि नारी के प्राण इतने सस्ते नहीं हैं कि दूसरे की बेहूदी खुशी या नाखुशी के लिए वह जीवन गड्ढे में डाल दे या खुदकुशी कर ले. सच मीना, मैं अगर मरना चाहती तो अब तक मर चुकी होती. मरने से मुझे कोई रोक नहीं सकता था. पर मैं जीना चाहती हूं. वह भी कुत्ता या बिल्ली बन कर नहीं, आदमी बन कर." आवेश में राका बोल तो गई पर फिर आंसुओं का वेग रोकने में सफल न हो कर फफक कर रो पड़ी.

मीना हतबुद्धि सी उसे देखती रही. फिर उसे छाती से चिपटा कर उस की पीठ पर प्यार से हाथ फेरने लगी. उस की समझ में नहीं आ रहा था कि इस कठिन कार्य के लिए चाची ने उसे ही क्यों चुना? राका का विगत इतिहास उस की आंखों के आगे घूम गया. कैसे उस की इच्छा के विरुद्ध, भाई की इच्छा के विरुद्ध सास ने अपार धनराशि देख कर ऐसे व्यक्ति के साथ उस का विवाह कर दिया था, जिस के पहले ही दो विवाह हो चुके थे और एक पत्नी तब भी जीवित थी. संतान की लालसा का ढोंग रच कर जो मात्र काम साधना के निमित्त एक खिलते पुष्प को झटकने में नहीं चूका था.

संतान नहीं थी तो क्या हुआ? बिना संतान भी तो लोग दुनिया में रहते हैं. पर जिन का मन दिनरात काम वासना की पूर्ति में लगा रहता हो, उन से जितेंद्रिय होने की आशा करना बबूल से आम निकालने के समान है.

उसे याद आ रहा था कि राका जब पहली बार ससुराल से लौट कर आई थी, तभी उस ने बता दिया था कि इस बार तो मां को प्रसन्न करने के लिए और कुल की लाज रखने के लिए उस ने अपने को बलिदान कर दिया, पर आगे मां उस से कुछ और चाहेगी तो वह न हो सकेगा. उन्हें बेटी की मांग में सिंदूर, हाथों में चूड़ियां देखने की लालसा थी, देख चुकीं. अब अपनी ही आंखों से बेटी का सिंदूर पुंछते भी देख लें. यह कह कर उस ने अपने ही हाथों अपना सुहाग मिटा दिया था. हां, टीका वह पहले से ही लगाती थी इसलिए आगे भी लगाती रही.

मांग में सिंदूर उस ने उस दिन से फिर न दिया. कहने वाले कहकह कर हार गए, वह कहती, "विवाह मन का होता है, मैं ने मन से विवाह किया ही नहीं, तो विवाह कैसा! यह तो एक बलात्कार था, जैसे कोई निर्दोष बालिका किसी चांडाल के कुचक्र में पड़ कर कौमार्य गंवाने को मजबूर हो जाए."

मन से वह अपने को अब भी कुमारी ही मानती. और इसी से मांग का सिंदूर पोंछ कर भी माथे पर टीका और हाथों में चूड़ियां कुमारी जीवन की भांति ही धारण करती है. मां इसी को गनीमत समझ कर चुप थीं. पर अब जब उसे बुलाने का पत्र आया और राका ने वहां न जाने का अटल निश्चय सुना दिया तो मां पर मानो पहाड़ फट पड़ा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन की कोख से नागिन पैदा होगी, यह न सोचा था. नहीं तो पैदा होते ही गला घोट देती. गला तो खैर अब भी घुट सकता था पर मुशकिल यह थी कि राका मरने को तैयार नहीं थी. फिर यह जगहंसाई वह कैसे सहन करें? कहीं मुंह दिखाने के लायक भी न रहेंगी वह उस की बात मान कर. फिर वही क्या अनोखी लड़की है? इसी दुनिया में क्या मर्दों ने तीनतीन, चारचार ब्याह नहीं किए? लोगों ने जो रखैलें रखीं वे सब भी क्या लड़कियां नहीं थीं! दोदो ब्याह तो अभी हाल तक होते रहे हैं. संतान नहीं हो तो इनसान दूसरा ब्याह करता ही है. ये सब दलीलें थीं जो वह रोज दिया करती थीं, पर राका के मन तक एक भी न पहुंच पाती.

मीना व्यथा से भरी बैठी थी. समझ नहीं पा रही थी कि क्या कह कर राका को समझाए. उस का दुख, उस की पीड़ा वह खूब समझती थी. लड़की ही तो थी वह भी. पर मां भी न जाने कैसी औरत हैं जो नारी हो कर भी नारी की भावना पहचान नहीं पातीं. यही क्षोभ होता था उसे. तभी राका बोल उठी, "देख, मीना, मां से कह दे कि वह अपनी बेटी को गलत न समझें. उन की बेटी कभी कोई ऐसा कदम नहीं उठाएगी कि मां को नीचा देखना पड़े. अपनी कुलमर्यादा को वह भी खूब जानती है. लकीर पीटने से क्या लाभ. मीना, जब तक पुरुषों को सेर पर सवा सेर न मिले वे अपनी बुद्धि से कभी न चेतेंगे. 'नारी का भी हृदय होता है,' ऐसा तो वे सोचते ही नहीं. अपने पुरुषत्व का बड़ा गुमान होता है पुरुषों को, लेकिन केवल नारी को कुचलने में ही. पर मैं अपने को उन की इस कुप्रवृत्ति का शिकार नहीं बनने दूंगी, मीना."

"पर, राका, चाची का कहना है कि समय सदा एक सा नहीं रहता, न कभी किसी का मन एक सा रहता है. कभी तेरा मन फिसल गया और पैर गलत पड़ गया तो क्या होगा, सोच तो!"

"होगा क्या, कुछ भी नहीं. जब मेरा मन फिसलेगा, जिस पर फिसलेगा उस से शादी कर लूंगी पर याद रख मीना, नारी का

आग

रहे जिंदगी भर
उसी में झुलसते
लगी आग दिल में
जो इक ही दफा थी.
—'अदा' देहलवी

मन पुरुष का मन नहीं है जो जहांतहां फिसलता फिरे, और न पैर ही ऐसे नासमझ हैं कि यों ही गलतसलत पड़ते रहें. नारी के मन में दृढ़ता व संयम हो तो उसे फिसलाने वाला खुद ही औंधे मुंह गिर पड़ता है. नारी के पैरों में वह शक्ति है कि गिरतेगिरते भी वह संभल जाती है. मेरा मन कमजोर नहीं है, मीना. फिर भी मैं मां को विश्वास दिलाती हूं यदि कभी ऐसा हुआ तो मैं मां को अपना काला मुंह दिखाने नहीं आऊंगी."

"पर राका, यदि शादी से पहले तू ने बलपूर्वक 'ना' किया होता तो यह दिन देखना न पड़ता. ऐसा हठ तो तुझे तब भी कुरबानी से बचा सकता था."

"तू समझती नहीं, मीना. उस समय हठ करने से कुछ भी लाभ न होता. विवाह तो मां करतीं ही. उस के साथ नहीं तो उस जैसा कोई दूसरा मिल जाता. ज्यादा दहेज देने का सामर्थ्य तो था नहीं, फिर वर की योग्यताअयोग्यता के बारे में मां का विचार क्या मैं नहीं जानती! उन की दृष्टि में सभी योग्य वर थे. उन्हें हाथ पीले करने की चिंता थी जिस से कुल की मर्यादा नष्ट न हो. हाथ उन्होंने पीले कर दिए, बेटी के माथे से अनब्याही का कलंक मिट गया. अब वह मरे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

या जिए, कोई बात नहीं. अब उन्हें कोई कहेगा तो नहीं कि कुंआरी लड़की घर में बिठा रखी है.

"बहुत सोचविचार कर ही मैं इस निश्चय पर पहुंची थी कि हो जाने दो एक बार मां के मन की. और सच कहूं, मीना, होने वाले पति के बारे में इतने बुरे खयाल भी नहीं थे मेरे. सोचती थी, हो सकता है कि मैं गलत होऊं, मां का रास्ता ही ठीक हो. पर एक बार जा कर उस घृणित वातावरण को देख कर ही कह नहीं सकती कितनी घृणा भर गई मेरे मन में. सच, मीना, उस नरपशु के साथ भेजने के बदले में मां मुझे किसी हिंसक पशु के पल्ले बांध देतीं तो इतना दुख न होता. शरीर के साथसाथ पेट की क्षुधा भी शांत करने का सुयोग पा जाती मैं. पर कम से कम इस जीवित नरक में तो न जलना पड़ता."

इतना कह कर राका चुप हो गई, फिर कुछ सोच कर खुद ही बोली, "यही नहीं, तुझे बताया था कि नहीं? शायद मौका ही न लगा तब से और भीतर ही भीतर कचोटती रहीं वे सब बातें. उस घर में, मीना, मेरी सच्ची प्रीति और सहानुभूति किसी से है तो बेचारी रेवा से. कहने को तो वह मेरी सौत थी पर जैसा सरल निश्छल स्नेह उस ने मुझे दिया, शायद मां भी न दे पातीं. और मैं सोचती हूं, ऐसी शांत, सौम्य, उदार, सीधी पत्नी पा कर भी जो उस का, केवल उस का न हो सका, वह क्या किसी का हो सकता है! मेरे जाते ही उस ने हाथोहाथ मुझे ऐसा लिया जैसे मैं सौत नहीं पुत्रवधू हूं.

"जब तक मैं रही, बहन के समान ही मेरा स्नेह, आदर करती रही. सच मीना, इन आठ दिनों में ऐसा स्नेह हो गया है उस से कि कभीकभी दुखी हो उठती हूं उस के लिए. शायद उस साध्वी की सिधाई ही घातक बनी उस के लिए. उस जैसे लफंगे पति को जब पत्नी भी उस जैसी ही मिलती तभी अक्ल ठिकाने लगती वरना एक तो बलि चढ़ गई, दूसरी चढ़ रही है और तीसरी को चढ़ाने की योजना बन रही है. और भी न जाने कितनों की बलि होगी?"

"पर आखिर कारण भी तो होगा," सहसा बोल उठी मीना.

"वही तो बता रही हूं मैं तुझे. मैं रही तो केवल आठ दिन पर इतना कुछ जान सकी हूं, जितना वह बेचारी वर्षों में भी न जान पाई होगी. एक दिन ऊपर के शोरगुल से बचने के लिए एकांत की चाह में नीचे के कमरे में एक पुस्तक लिए चली गई. पढ़तेपढ़ते कुछ खुसफुसाहट सुनाई पड़ी : "यहां क्या कर रही थी, धनिया?"

"क्या करूं, चंपा, मैं आराम करने उस कोठरी में लेट गई थी, जाने मुआ कहां से आ निकला, जैसे मौका ही ताक रहा हो. जब देखो अकेले में छेड़ता रहता है. अकेला देख कर भीतर घुस आया तो मैं डर गई. अच्छा हुआ भगवान ने तुझे भेज दिया. इज्जत बच गई मेरी, नहीं तो न जाने क्या होता."

"मैं सांस रोके सुन रही थी. समझ में नहीं आ रहा था कि बात किस के लिए थी. तभी फिर सुनाई पड़ा : "सच री? सच कहती है, तू, जिस के फूल सी दोदो महरियां हैं वह भी यों कुर्मीकहारों पर नजर डालता फिरे. तू ने लगाया क्यों नहीं दोनों गालों पर! इज्जत बड़ी चीज है. हम छोटे हैं तो क्या हमारी इज्जत भी छोटी है! मेरी मां ठीक ही कहती है, पहली मालकिन मौत से थोड़े मरी थीं, दो बरस में ही देखसुन चुकी थीं. जब सहा नहीं गया तो कुछ खा लिया. चार माह भी न बीते थे यह दूसरी ब्याह लाया. इसे पांच साल हो गए. कोई बच्चा न हुआ तो फिर एक और ब्याह लाया."

इस बीच भी न जाने कितनों को खराब किया हो. आदमी नहीं है राक्षस है, राक्षस. और देख तो, धनिया, नई बहुरिया कैसी सलोनी है. उसे पता लग जाए तो क्या कुछ न कर ले. इसे न लाज है, न शरम."

"हां, री, और बड़ी बहू भी कैसी गऊ है बिलकुल गऊ. उन्होंने तो अपना मन पूजापाठ में लगा लिया है, जैसे इस से मतलब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही न हो. मैं तो सोचूं हूं धनिया, उन का मन डर गया उस से, तभी तो इस शादी में दीवपड़ भी न की."

"कर के भी क्या करती ! उसे तो पैसे की गरमी है. पर देख न नई बहुरिया इसे ठीक कर देगी. दिखती भी ठनकदार है."

"बात समझ में आ चुकी थी. मन जाने कैसा हो रहा था. यह सोचसोच कर कि कैसे व्यक्ति के साथ मैं ने चार दिन बिताए हैं, मेरे सारे बदन में अंगारे जल उठे थे, मीना, और उन की जलन मैं आज तक भी अनुभव कर रही हूं. आगे चार दिन मैं वहां रही जरूर पर रेवा बहन की छाया में ही मैं ने वे चार दिन बिता दिए. उसे तो पास भी नहीं फटकने दिया. उस का वह अभद्र भाव तो मैं भूल ही नहीं पाती हूं जो विवाह में आई एक तरुणी के साथ मैं ने अचानक ही देख लिया. पहले तो मैं ने उस पर कुछ गौर नहीं किया, यद्यपि बड़ा अस्वाभाविक लगा था मुझे, पर पीछे तो राज खुल गया सारा. अब बता तू किस का मन चाहेगा कि ऐसे घृणित व्यक्ति के साथ रहे ?"

"पर मर्दों में ऐसे कितने मिलते हैं दूध के धोए, री ? उन की स्वच्छंद प्रवृत्ति ही उन्हें इन दुष्कृत्यों की ओर प्रेरित करती है. तू चाहे तो उसे राह पर लगा सकती है."

"चाहती तो थी मैं भी ऐसा, पर, मीना, मुझे तो उस के नाम से ही झुरझुरी आने लगती है. मैं तो एक पल भी नहीं बिता सकती उस के साथ. जाने वह रेवा बहन कैसे रहती है उस के साथ."

"तुझे नहीं मालूम कि इस देश में ऐसी भी स्त्रियां हो चुकी हैं जो कोढ़ी पति को भी कामतृप्ति के लिए दूसरों के दरवाजे तक ढो कर ले जाती थीं. सभी क्या तेरी जैसी हैं !"

"हां, बहन, हमारे देश की इन झूठीसच्ची कहानियों ने ही तो रेड़ मार दी है नारी जाति की. यदि ऐसी कहानियां हमारे साहित्य से निकाल दी जाएं तो कितना भला हो इस देश का !"

"और तुझ जैसी भर दी जाएं, क्यों ?"

"और क्या, पुरुषों को सोचने का दूसरा मार्ग तो मिले."

"अच्छा, तो कर श्रीगणेश तू. मैं चाची से कहे देती हूं कि हमारी श्रीमती, नहींनहीं कुमारीजी, नया साहित्य सृजन कर रही हैं. पति का घर उन के लिए किसी कूड़े के टब से कम नहीं. पर परसों श्रीमानजी जो विदा कराने आ रहे हैं, सो उस बारे में क्या उपाय सोचा है आप ने?"

"सुनेगी, तो ले देख," कह कर बक्स से एक लिफाफा निकाल कर राका ने उसे दे दिया.

"ओहो, तो श्रीमतीजी, जब पत्राचार शुरू हो गया तो प्रेमाचार भी हुआ ही समझो." मीना मुसकराई.

"बकवास बंद कर, पत्र पढ़ डाल पहले."

पत्र समाप्त कर मीना ने गर्व भरी आंखों से राका को देखा और फिर खिलखिलाई, "अच्छा, अभी तक इस देश में पति नारी का गुरु जाना जाता था, अब पत्नी पति की गुरु बनने लगी है. कैसा उलटा जमाना आ गया है, भई ! मुझे तो लगता है, पृथ्वी अब हिली, तब हिली."

राका मुसकराई, "घबरा मत, तू मरेगी नहीं इस भूकंप में. कुछ कमीवेशी हो तो पूरी कर दे."

"अब रहा ही क्या है पूरा करने को ! हजरत जब पढ़ेंगे तो छठी का दूध याद आ जाएगा और ब्याह करने का सुफल भी सामने ही. पर पहुंचेगा कैसे ? कल ही तो चल पड़ेंगे वह."

"हां, और मैं यह भी जानती हूं कि मेरे लाख विरोध करने के बावजूद मां विदा की सब तैयारियां कर रही हैं, जैसे उन्हें

मानवशक्ति

मानवशक्ति अविजेय और सर्वोपरि है, शेष शक्तियां उस के उपयोग के लिए रह जाती हैं. —जैनेंद्रकुमार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्वास हो सब के कहनेसुनने या बल प्रयोग से मैं झुक जाऊंगी. पर मुझे दुख है, मीना, हमेशा की तरह मैं इस बार मां का कहना न मान सकूंगी. जीवन का ही नहीं, मीना, यह सिद्धांत का भी सवाल है. मैं सिद्धांतों को मां की अनुचित आज्ञा पर होम न होने दूंगी."

राका कुछ खोजती हुई भैया के कमरे की ओर बढ़ी. एक छोटा सा पत्र पड़ा था. पढ़ कर उस का मन हलका हो गया. विदा की तिथि पांच दिन और बढ़ गई थी पर जिस की उसे खोज थी, वह उसे मिला नहीं.

चौथे दिन पिता के अनुरोध पर भैया को स्टेशन जाना पड़ा मेहमान को लेने. इधर राका प्रसन्न थी और उसे अपनी तैयारी में व्यस्त देख कर मां भी खुश थीं कि चलो, मौके पर समझ आ गई लड़की को.

पांचवें दिन विदा का मुहूर्त बनता था संध्या पांच बजे का. राका सुबह से ही जल्दी मचा कर नौकरों पर खीझ रही थी. मां को उस की निर्लज्जता पर आश्चर्य भी हुआ और क्रोध भी आया, पर वह चुप रहीं.

मां का संदेश पा कर मीना जब आई तो उस समय राका ऊपर अपने कमरे में थी. आंगन में मां से भेंट हुई. उसे देखते ही बड़ी प्रसन्न मुद्रा में मां बोलीं, "आ गई, बेटी! बड़े मौके से आई. मैं अभी तुझे याद ही कर रही थी. ले ये नई चूड़ियां ले जा, राका को पहना दे और नाइन मरी जाने कब आए, क्या ठीक. यह महावर भी ले जा, सुंदर सा लगा दीजो."

आश्चर्य से भरी मीना राका के कमरे में गई तो बिस्तर बंधा तैयार था. राका अपना बकसा ठीक करने में लगी थी. ठगी सी मीना सोचती रही कि हिमालय सी अटल राका को हिलाने वाली कौन सी आणविक शक्ति पैदा हो गई इन चार दिनों में? राका की पीठ इस ओर थी और उस का प्रतिबिंब पड़ रहा था सामने टंगे आइने में. मीना ने देखा, वह प्रसन्न थी, चेहरे पर दुख की कहीं छाया भी न थी, उस दुख को जो पांच दिन पहले वह देख गई थी. तभी उसे हंसी आ गई और वह गुनगुना उठी, "चली दुलहनिया पिया से मिलने कपड़े का बकसा संभाल के."

चिहुंक कर राका ने मीना को देखा तो बरस उठी, "अच्छा, अब फुरसत मिली है महारानी को! मैं ने तो सोचा था कि किसी महामारी की कृपा हो गई देवीजी पर या यमराज ने निमंत्रण भेज दिया."

"महामारी की कृपा हो मेरे दुश्मनों पर. मैं तो अपने हाथों अपनी सहेली का डोला सजाऊंगी," चूड़ियां और महावर छिपाए वह हंस पड़ी. राका के मुख पर एक बार फिर पीड़ा उभर आई, पर वह संभल कर बोली, "अच्छा हुआ, मीनू तू आ गई. बस, दो घंटे और हैं. फिर जाने कब मिलना होगा." और उस का गला रुंध आया.

मीना भी व्यथित हो उठी. यह रहस्य, जो उस की समझ में नहीं आ रहा था, जानने की इच्छा से अवरुद्ध कंठ को संभाल कर बोली, "अच्छा, ला, बढ़ा हाथ. मैं तेरी गोरीगोरी कलाइयों में रंगबिरंगी सुंदरसुंदर चूड़ियां पहना दूं जिस से देखते ही सांवरिया की आंखों में रस और मुंह में पानी भर आए." और उस ने हाथ बढ़ा कर राका का हाथ थाम लिया, "देख, कितनी सुंदर चूड़ियां हैं!"

चूड़ियां सचमुच बहुत ही सुंदर थीं, पर राका का मन जाने कैसा हो आया, उस ने हाथ खींच लिया और कहा, "रहने दे, तुझे हर समय मसखरी ही सूझती है." और उस की आंखों से आंसू झरझर टपकने लगे. मीना ने देखा तो उस की भी पलकें भीग आईं पर इस समय उस की शोखी, चंचलता कुंआरेपन की थी. उस ने चुपके से महावर निकाला और बोली, "जाने दे, अब हाथ मुझे क्यों पकड़ाएगी! अच्छा जाने दे मैं पहले पैर ही रंगे डालती हूं. हाथों के ढके रहने से हो सकता है, नजर पहले पैरों पर ही पड़ जाए."

उस के पैर छूते ही तड़प कर राका दो कदम पीछे हट गई, "होश में आ, मीना, तुझे क्या हुआ है! क्या तू नहीं जानती तेरी राका परदेश जा रही है पर उस परदेश नहीं जहां जाने में सब लड़कियां अजीब गर्व व गौरव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब पेश है लिंक तालों के निर्माता की ओर से !

लिंक प्रेशर कुकर

Adfield

3, 4, 5, 6.5 लीटर में उपलब्ध

निर्माता :- लिंक लॉक्स प्रा० लि० (प्रेशर कुकर डिविज़न)
बदर बाग़ अलीगढ़-202001 (इंडिया)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का अनुभव किया करती हैं. हां, मेरा परदेश भी कुछ ऐसावैसा नहीं है." और आंसू की धाराएं सखी का कंधा भिगोने लगीं.

मीना कुछकुछ क्या, सब कुछ ही समझ गई. रोती हुई बोली, "तू ने अभी तक छिपाया क्यों, दुष्ट ! मैं भी तो कहूं, ऊसर में धान कहां से लहरा गए."

"छिपाया कहां ! तू आई भी उस दिन से ? मेरा तो कलेजा फटा जा रहा था तुझे बताने को और तू थी कि एकदम ही गोल हो गई."

दोनों सखियों में जब बड़ी देर तक प्रेम भरी बातें हो चुकीं तो मीना ने राका का हाथ थाम लिया, "अच्छा, ये चूड़ियां तो तुझे पहना ही दूं."

राका ने हाथ बढ़ा दिया, "हां, चूड़ियां तो मुझे बहुत पसंद हैं. पर महावर तो रख ले. जब साजन के घर जइयो, इसे लगा कर जइयो. यह है मेरी भेंट."

दो बजे जब तांगा आ कर खड़ा हो गया और मीना ने चाची से जा कर कहा कि "राका जा रही है, चाची, उसे आशीर्वाद देने चलो. वह तुम्हें बुला रही है," तो मां आश्चर्यचकित हो गईं. साथ ही उन्होंने कहा, "पर उस की गाड़ी तो पांच बजे जाएगी. अभी से कहां जा रही है वह?"

"तुम्हें नहीं मालूम, चाची, उस ने सेवा कार्य के लिए अपना जीवन दान कर दिया है उसी के प्रशिक्षण के लिए जा रही है वह."

मां पर मानो वज्र गिर पड़ा. सब की खुसरफुसर से उस के मन में शंकाओं का धुआं तो उठ रहा था पर उन्होंने नहीं सोचा था कि उन्हीं की बेटी उन्हें छलेगी. उन का मन भारी हो आया. बड़े चाव से उन्होंने विदा में देने को पकवान बनाए थे. और भी जाने कितनी तैयारियां की थीं. यदि वह उन्हें पहले बता देती तो भी वह उस का क्या कर सकती थीं.

उन का धीरज टूट गया और वह फूटफूट कर रोने लगीं. मीना ने समझाया, "रोओ मत, चाची, चलो उसे विदा कर दो. उस का यह जीवन उस जीवन से कहीं श्रेष्ठ होगा."

मां को कुछ न सूझा. पकवान की डलिया और उस का बकसा मंगा कर वह राका के कमरे की ओर बढ़ीं. मां को देख कर राका अपने को संभाल न सकी, दौड़ कर छाती से जा लगी. रोधो कर जब दोनों शांत हुईं तो मां चुप न रह सकीं, "पर तू ने पहले से ही बता दिया होता, लाड़ो, तो मैं उन को न आने का पत्र डलवा देती. घर आए मेहमान का इस तरह अपमान तो न होता !"

राका फिर तमक उठी, "इस में अपमान क्या? खैर, घबराओ मत, तुम्हें कुछ नहीं करना पड़ेगा. मैं ने उन के और तुम्हारे सम्मान की रक्षा का प्रबंध ही कर दिया है."

"क्या किया है? जरा मैं भी तो सुनूं."

"मैं ने मीना के हाथों उन तक अपना सब संदेश पहुंचा दिया है और उन के लिए भी राह निर्दिष्ट कर दी है. यदि वह सुपथ अपनाना चाहें तो मेरा श्रम सफल होगा. खैर, मेरा जीवन तो अब सफल होने जा रहा है. मां, मुझे चलते समय आशीर्वाद तो दोगी न?"

मां ने बढ़ कर बेटी को गले लगा लिया, "मुझ से गलती हुई, बिटिया, मैं अंत तक तुझे समझ न सकी."

मां के बहुतेरा कहने पर भी राका ने उन कीमती वस्त्रों को अनावश्यक बता कर ले जाना स्वीकार नहीं किया पर मां के प्रबल आग्रह को देख कर पकवानों की डलिया उसे साथ रखनी ही पड़ी. और मां का आशीर्वाद और पिता का स्नेह पा कर जैसे ही वह तांगे में बैठी, वैसे ही अनायास उस की आंखें बैठक के दूसरे द्वार पर खड़े भुवन बाबू से जा टकराईं. पल भर को उस के अंतर में एक हिलोर उठी, दूसरे ही क्षण प्रत्युत्तर में उन के हाथ जुड़ गए, जैसे याचक को क्षमायाचना मिल रही हो. तभी तांगा चल पड़ा. चल पड़ी राका एकाकिनी, पति को ठुकरा और पिता के घर को छोड़, अपने निर्दिष्ट पथ पर. उस के नेत्र बरस रहे थे पर हृदय दृढ़ था और वह चली जा रही थी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सितारे जड़े स्वप्न

सामने उन के साए खड़े हो गए
याद के दायरे कुछ बड़े हो गए.
फिर खयालों में खुशबू सी आने लगी
स्वप्न सारे सितारे जड़े हो गए.

गुनगुनाहट सी ठंडी हवाओं में है
कसमसाहट सी सारी फिजाओं में है
बिन बजाए कोई बांसुरी बज रही
मन पुरानी परी की कथाओं में है,
दर्द छोटी से छोटी सी बातों के भी
देखतेदेखते ही बड़े हो गए.

आईना हो गया है मेरा मन अभी
झिलमिलाती हैं साजन की परछाइयां.
हाय, हमतुम ये मौसम ये शामे हरम
ये उफनती नदी और ये तनहाइयां,
कल तलक आंसुओं से भरे थे जिन्हें
आज सारे वे ठंडे घड़े हो गए.

दर्द पिघला तो पत्थर से पानी हुआ
बह चला जिंदगी की ख्वानी हुआ,
क्या मजा है जुदाई का पूछो उसे
वह जो लैला के मजनूं के मानी हुआ,
जो जमाने के पांवों पड़े थे कभी
अब जमाने के वह सिर चढ़े हो गए.

—विश्वेश्वर शर्मा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ नए सुस्वादु व्यंजन

पपीते का कीमा न्यूट्रेला के संग

पपीते का कीमा न्यूट्रेला के संग

सामग्री : 500 ग्राम पपीता (कच्चा), 100 ग्राम न्यूट्रेला की टुकड़ियां, बड़े आकार के 2 प्याज, 1 गांठ लहसुन, 1 इंच अदरक का टुकड़ा, 4-5 हरी मिर्चें, 1 छोटा चम्मच काली मिर्च (पिसी), 2-4 लौंग, 1 चम्मच हल्दी, नमक इच्छानुसार, आधी कलछी रिफाइंड तेल, हरी धनिया (कटी हुई).

विधि : नमक डालकर थोड़ा सा पानी उबालें और उस में न्यूट्रेला की टुकड़ियों को भिगो दें.

पपीते को छील कर उस के बीज निकाल दें. फिर उस के कीमे की तरह बहुत बारीक टुकड़े कर लें.

वेजीटेबल ग्रेवी के साथ चोप सुई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्याज, अदरक, लहसुन, लौंग व हरी मिर्चों को बारीक पीस लें. तेल को गरम करें व पपीते के कीमे को गुलाबी होने तक तलें. उस के पश्चात उसे छलनी से निकाल लें. फिर उसी तेल में पिसे हुए प्याज, अदरक, आदि को भूरा होने तक भूनें.

इस में न्यूट्रेला की टुकड़ियां, पपीते का कीमा, हलदी, काली मिर्च तथा नमक डाल कर सारे मिश्रण को अच्छी तरह हिलाएं तथा पांचसात मिनट तक धीमी आंच पर पकाएं.

कटी हरी धनिया बुरक कर चपाती, नान अथवा पूरी के साथ दोपहर अथवा रात के भोजन में परोसें. —शोभा छुटानी

वेजीटेबल ग्रेवी के साथ चोपसुई

मटका आलू

सामग्री: चोपसुई के लिए: 250 ग्राम मक्की का आटा, 400 ग्राम गेहूं का आटा, 1 छोटा टुकड़ा अदरक, 5-6 कलियां लहसुन, नमक व लाल मिर्च स्वादानुसार, तलने के लिए तेल.

वेजीटेबल ग्रेवी के लिए: 1½ किलोग्राम मिलीजुली मौसमी सब्जियां, 1 प्याला इमली का पानी (रस), लाल मिर्च, गरम मसाला हलदी व नमक स्वादानुसार, ½ छोटा चम्मच जीरा ½ छोटा चम्मच सरसों (दाना) ½ छोटा चम्मच मेथीदाना, 5-6 करीपत्ते, छौंकने के लिए तेल.

(शेष पृष्ठ 184 पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पांचवीं

कहानी • नरेंद्रकौर छाबड़ा

नौवें महीने का आखिरी सप्ताह चल रहा था, कैलेंडर का भी और यशोदा का भी. पता नहीं इस बार कितना समय लगना था? पहली तीन बेटियों के समय तो लगभग इतने दिनों में वह निवृत्त हो चुकी होती थी. लेकिन लड़के के समय आठ दिन ऊपर लग गए थे. यह विचार आते ही मन अतीत के उन चुनिंदा आनंदमय दिनों की याद में खो गया था.

कितनी खुशियां मनाई थीं. सास पोते का मुंह देखने को तरसती रही थीं. वह हर लड़की के पैदा होने पर यशोदा को कोसती थीं. वह यशोदा के पुत्र को जन्म देने पर कितनी चहक उठी थीं, "मैं न कहती थी, इस बार बेटा होगा."

लेकिन उन सभी की खुशियों पर उस वक्त तुषारापात हो गया था जब 20 दिन का मुन्ना सब को छोड़ कर अकाल मृत्यु को

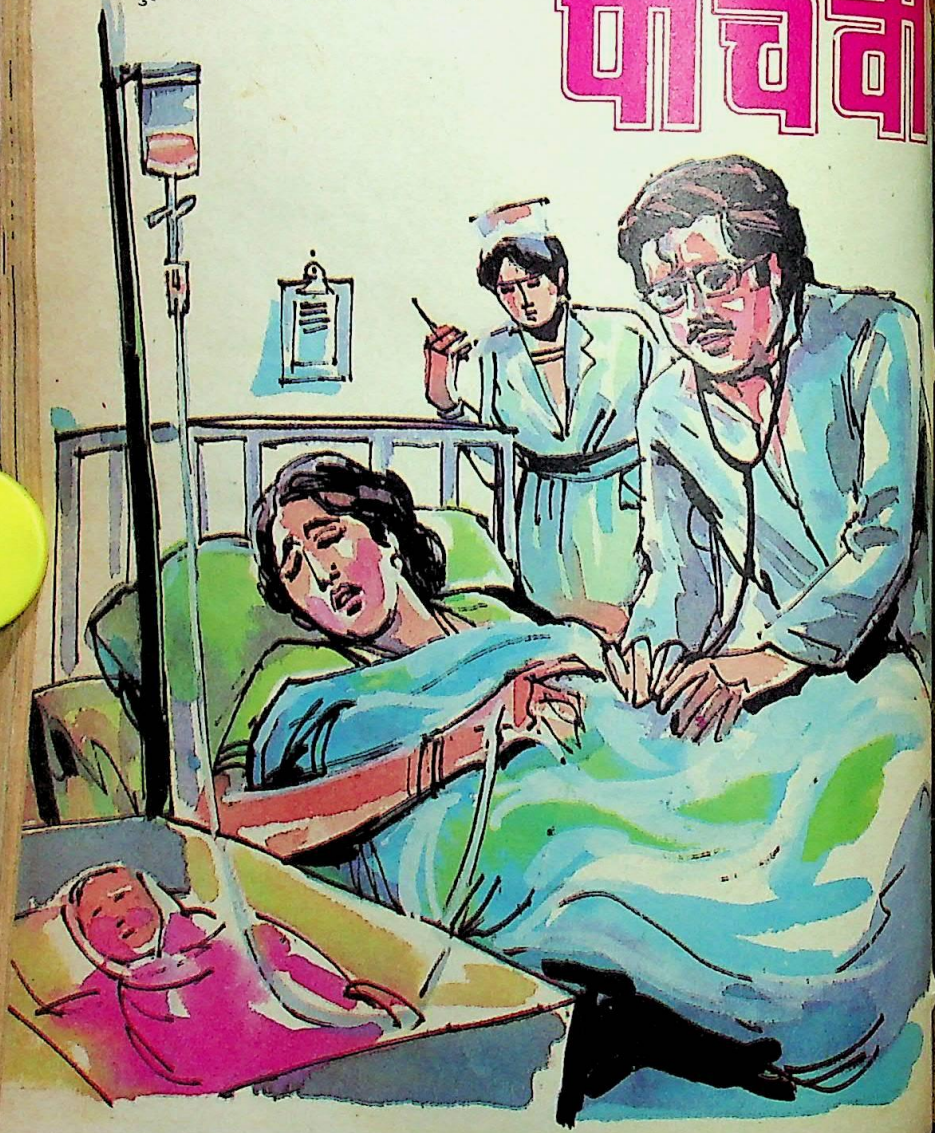

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

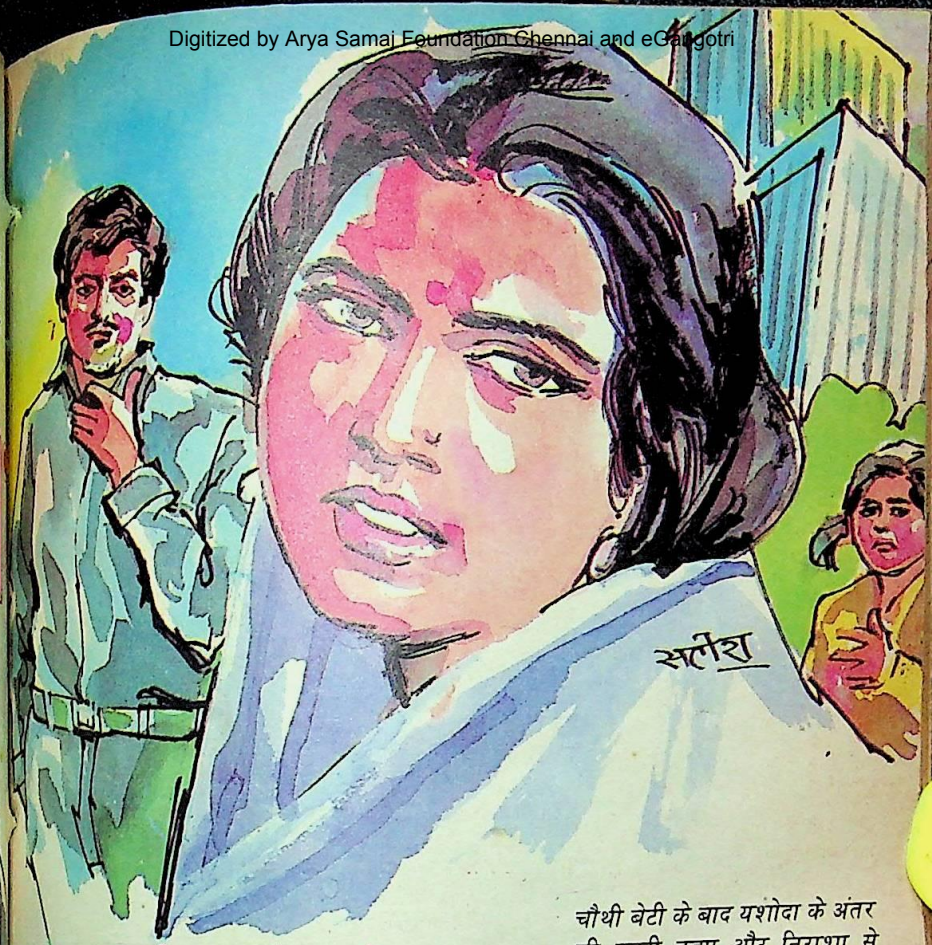

चौथी बेटी के बाद यशोदा के अंतर की गहरी तड़प और निराशा से महेश भी परेशान हो उठा.

पुत्र का मोह यशोदा के दिलदिमाग पर इस कदर हावी हो गया था कि वह अपने पति महेश की दलील को भी बेरहमी से ठुकरा देती. लेकिन जब पांचवी का जन्म हुआ तब तो वह पागलपन की हद तक ही जा पहुंची.

गोद में समा गया था. उसे टिटनेस हो गया था. वह तो यशोदा भी नहीं जान पाई थी कि वह सब लिंग जानने के लिए भ्रूण परीक्षण की क्रिया के प्रतिकूल असर से हुआ था या लखनऊ से मंगाई दवा खाने से, जिस पर लिखा हुआ था शर्तिया पुत्ररत्न की प्राप्ति. अपनी सहेली से मंगवा कर यह दवा यशोदा ने भी खाई थी.

पुत्ररत्न तो मिला था, लेकिन वह सुख व खुशी की एक क्षणिक झलक दिखा कर लुप्त हो गया था. कई दिनों तक यशोदा की मानसिक स्थिति विक्षिप्तों सी बनी रही थी. सास कहती, "तेरे जीवन में शायद पुत्र का सुख ही नहीं, तभी तो पुत्र आया भी और बिछुड़ भी गया."

एक वर्ष बाद जब सास ने यशोदा से कहा कि पुत्र के लिए वह फिर से मां बने तो यह बात पति महेश तक पहुंची. महेश ने यशोदा को बहुत समझाया था और कहा था, "मैं तो लड़केलड़की में कोई फर्क नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

rya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"बेअक्ल, हाथों में जान है या नहीं?..." दूसरी के हाथ से प्लेट टूट जाने पर यशोदा आपे से बाहर हो कर बड़बड़ाने लगी.

समझता. लड़के की कामना लोग इसी लिए करते हैं कि बुढ़ापे में वह उन का सहारा बने, पर क्या आज की युवा पीढ़ी से ऐसी उम्मीदें करना हवा में महल बनाने जैसा नहीं है? अनेक किस्से हम पढ़सुन चुके हैं कि बेटों ने किस तरह मांबाप की बुढ़ापे में मिट्टी पलीद की. अगर हम लड़कियों को योग्य बना दें तो उन से भी वे सुख, सम्मान और खुशियां प्राप्त कर सकते हैं, जिन की उम्मीदें लड़कों से ही की जाती हैं."

इतना सुनने के बाद यशोदा ने एक ही वाक्य में अपनी आशंका जाहिर कर दी, "पर लड़कियों से वंश तो नहीं चल सकता."

पुत्र की तीव्र चाह यशोदा के मनमस्तिष्क पर बुरी तरह हावी हो चुकी थी. बेटा प्राप्त करने के लिए न तो उसे अपने कमजोर शरीर ही की फिक्र थी और न ही परिवार बढ़ने से उत्पन्न होने वाली समस्याओं का ही खयाल था. उसे तो सिर्फ बेटे की ललक थी.

उस की हठ के आगे महेश को झुकना पड़ा और समय पूरा होने पर उसे हस्पताल जाना पड़ा. पिछली बार के कटु अनुभव के कारण इस बार यशोदा ने पुत्र प्राप्ति के लिए कोई दवा तो नहीं खाई थी, लेकिन आरंभ के तीन महीनों में जिस किसी ने जो भी सलाह दी, वह उस ने मान ली. गाय के दूध में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नया ओनिडा.
इसे घूर पाये तो बस एक ईर्षा भरी नज़र!

ईर्ष्या में जब भी ईर्ष्या के रंग घुल जाये, और हाथ अनजाने में ही पत्थर उठा ले, तब जानिये, फिर एक नया ओनिडा तशरीफ़ लाया होगा! बेशक़! नया ओनिडा हाज़िर है अपने अछूते 'क्युब लुक' के साथ। अत्याधुनिक कारीगरी का जादू एक पूरी तरह से 'मोल्डेड' कैबिनेट और अनोखे काले ट्यूब में समाये हुये - मनमोहक रूप-रंग और आने वाले कल की अदा लिये - आ बसा है नया ओनिडा आप के इशारों के इन्तज़ार में! लेकिन, पहले इसके कि आप इसमें बेखबर खो जायें, भूलिये मत कि ईर्षा मंडराती है आसपास। याद रखिये वो सावधान-वाणीः अपने पड़ोसियोंसे नाता ज़रूर जोड़िये, पर अपने ओनिडा को अकेला मत छोड़िये।

ओनिडा. पड़ोसियों की जले जान, आपकी बढ़े शान.

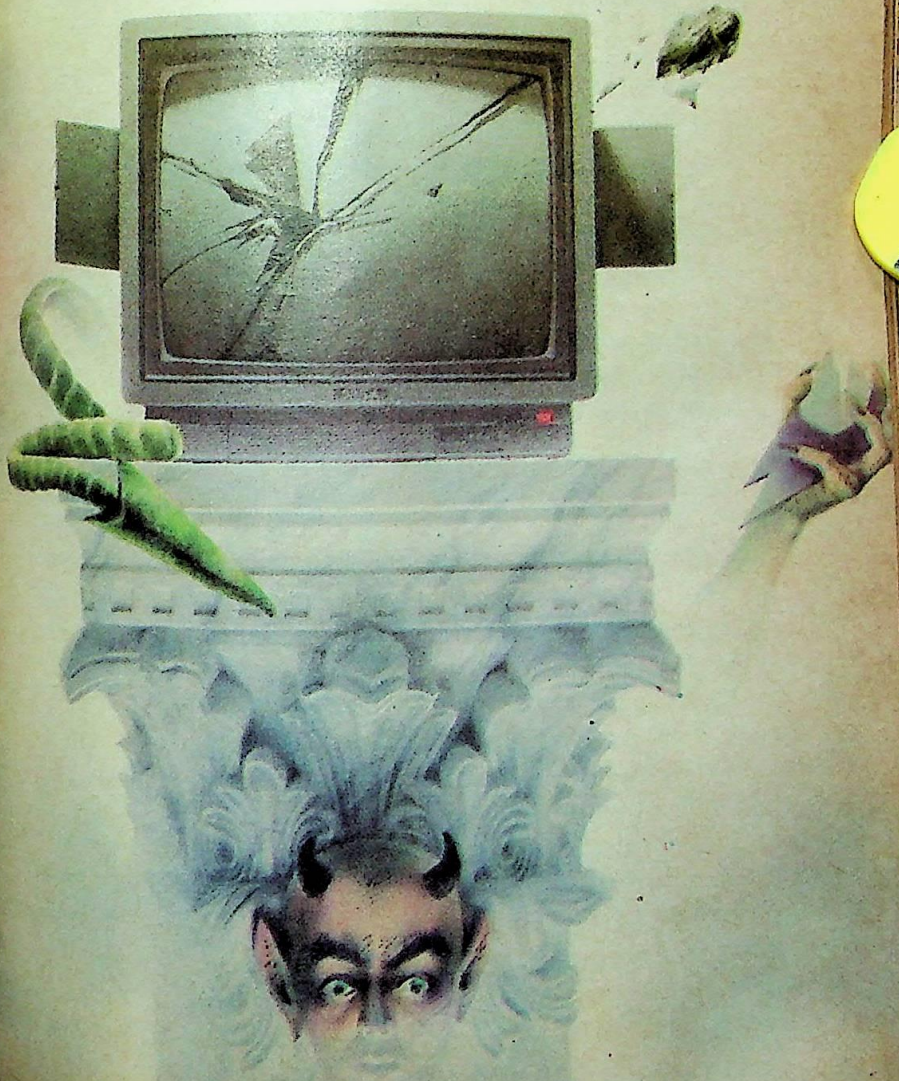

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चंचल

चंचल नयन मुसकराते होंठ,
देख उन को यूं न मचल,
न देख उन को बारबार,
वो क्या जानें दिल की लगन.
—मोहन भया

मोरपंख का मध्य भाग पीसने के बाद मिला कर खाना, कोई विशेष फल खाना, मंदिरों में मनौतियां, कथित बाबाओंओझाओं के आशीर्वाद, किसी किताब में पढ़ कर अधिक नमकीन खाना, लौकी के बीज व मिस्री पीस कर खाना आदि.

कुछ तो मानसिक तनाव से और कुछ नमक की अधिकता से उस बार यशोदा का रक्तचाप काफी बढ़ गया था. डाक्टरों ने समय पर ही संभाल लिया था. उस बार भी लड़की हुई थी, यह जान कर यशोदा का रक्तचाप और अधिक तेजी से बढ़ने लगा था. तत्काल उसे आपातकालीन कक्ष में ले जाया गया, जहां 24 घंटे तक उस की लगातार देखभाल की गई. मौत के चंगुल से छूट गई थी वह. होश आने पर जारजार रोई थी.

यशोदा सोचती, कितना अजीब है जिंदगी का रुख. यह जिस पर मेहरबान हो जाती है तो उस की कृपा का छोर नहीं होता. हर ओर सफलताएं और आनंद पलकें बिछाए बैठे रहते हैं. लेकिन जिस से खफा हो जाती है, उसे पगपग पर ठोकरें, निराशा, गमों का दरिया ही नजर आता है. व्यक्ति बेबस सा न चाहते हुए भी जीता है घिसटघिसट कर.

क्या मेरे ही हिस्से में बेटा नहीं? क्या महेश के वंश का नामनिशान मिट जाएगा? मुझे तो बेटे के अभाव में अपना ममत्व ही अधूरा लगने लगा है?'

बेटियां मां की दुर्दशा देखतीं तो डर सी जातीं. दोष तो किसी का भी नहीं था. क्या वे अपनी मरजी से लड़कियां बनी थीं? लेकिन उन के दिलों में एक अपराध बोध अवश्य घर कर गया था. बड़ी लड़की अब कुछ समझदार हो गई थी. इसलिए वह मां से कुछ खुल कर बोल लेती थी. छोटी तीनों तो डरीडरी सी रहती थीं. क्या पता कब मां का मन उखड़ जाए और उन्हें कोसने लगें. वह कई बार देख चुकी थी कि अच्छी भली हंसती बोलती मां को न जाने क्या हो जाता था. वह अचानक चुप हो जाती थीं और फिर बेवजह किसी को कोसने लगती थीं तो किसी को पीटने लगती थीं.

उस दिन तीसरी का जन्मदिन था. आयोजन का तो प्रश्न ही नहीं उठता था, लेकिन बड़ी के जोर देने पर यशोदा केक व नाश्ता लाने के लिए तैयार हो गई थी. शाम को मां, बाबूजी, दादी व बहनों की उपस्थिति में तीसरी ने केक काटा था.

नाश्ते के बरतन धोते समय ही अचानक दूसरी के हाथ से प्लेट छूट गई. टूटने की आवाज सुन कर यशोदा दौड़ती हुई आई. राहुल से मंगवाए विदेशी सेट की प्लेट टूटने से वह आपे से बाहर हो गई. एक तमाचा जड़ दिया, "बेअक्ल, हाथों में जान है या नहीं? खाखा कर इतनी बड़ी हो गई, पर अक्ल नाम को नहीं आई. मेरी छाती पर मूंग दलने इकट्ठी हो गई हैं सब . और कोई घर नहीं मिला था जो सारी की सारी यहीं खपने आ गईं."

सभी बेटियां सहम गई थीं. हिम्मत बटोर कर बड़ी बोली थी, "मां, तुम हमेशा हमें कोसती रहती हो. क्या हम अपनी मरजी से आई हैं?"

गुस्से से भरी बैठी यशोदा ने एक तमाचा उसे भी जड़ दिया था. अवाक सी वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपके केयो-कार्पिन बालों के इस स्टाइल को देखकर सभी मुग्ध हो जायेंगे

देख लीजिए, बालों का यह स्टाइल कैसे बनता है:

सिर के बाईं ओर, कान से थोड़ा ऊपर मांग काढ़िए।

बालों में हल्का सा ब्रश चलाइए और उन्हें दाहिने कंधे पर लाइए।

मांग के ठीक नीचे, बाईं ओर के बालों को भी दाईं ओर खींच कर लाइए।

सिर के बाईं ओर, छः फूल पिन द्वारा खूबसूरती से लगा दीजिए।

बालों की संपूर्ण देखभाल के लिए हर रोज इस्तेमाल कीजिए चिपचिपाहट-रहित भीनी-भीनी खुशबूवाला केयो-कार्पिन केश तेल। यह आपके बालों को स्वस्थ, सजा-सँवरा और सुन्दर बनाये रखेगा।

और फिर बालों को मनचाहे स्टाइल में सजाइए-सँवारिए। हर रूप में आपका रूप मनभावन लगेगा।

केयो-कार्पिन

भीनी-भीनी सुगंधयुक्त चिपचिपाहट-रहित केश तेल।

स्वस्थ केश।
सुन्दर केश।
केयो-कार्पिन
केश।

Dey's® दे'ज मेडिकल
की संभाल, आपका भरोसा

DMHO-16

c Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मां को देखती रह गई थी. कुछ क्षणों के लिए बना खुशी का माहौल पानी पर बने बुलबुले की तरह गायब हो चुका था.

सास और पति महेश मूक दर्शक से बने रह गए थे. उन्हें पता था कि यशोदा को कुछ समझाने की गरज से दो शब्द भी कहेंगे तो वह बिफर पड़ेगी, "हां,हां, सभी मुझे ही दोषी मानेंगे. खोट मेरा ही है. मैं निपूती जो ठहरी. एक बेटा होता तो देखती, कैसे कोई मुझे दबाता है?"

बात बढ़ जाने के डर से वे चुप रह गए थे. हालांकि महेश को यशोदा की इस हरकत पर क्रोध तो बहुत आया था.

बड़ी बेटी ममता का मैट्रिक का नतीजा काफी अच्छा रहा था. घर में सभी प्रसन्न थे. यशोदा भी अपनी खुशी प्रकट कर रही थी. तभी दूसरी बेटी नेहा ने कहा, "मां, दीदी के नंबर बहुत अच्छे आए हैं, उसे डाक्टर बनाएंगे."

एकाएक यशोदा के चेहरे का रंग बदलने लगा. कुछ खीजती हुई सी बोली, "बड़ी आई डाक्टर बनने वाली. अरे, मुझे क्या फायदा इस के डाक्टर बनने से? आखिर में तो एक दिन इसे ससुराल में जा कर रोटियां ही सेंकनी हैं. कोई आला लगा कर हस्पताल की ड्यूटी थोड़ी ही करनी है. काश! एक बेटा इस के स्थान पर होता तो मैं उसे कितना बड़ा आदमी बनाती— डाक्टर, अफसर, इंजीनियर या प्रशासनिक अधिकारी पर यह सब मेरे हिस्से में कहां? यहां तो एक के बाद एक लड़कियों की कतार लगती जा रही है."

ममता के मनमस्तिष्क पर कितनी बड़ी चोट पहुंची होगी ऐसी बातों से, यशोदा को कोई सरोकार नहीं था. उस का सारा उत्साह ठंडा पड़ गया था. छोटी बेटियां कब चुपचाप वहां से खिसक गई थीं. मां के व्यवहार से ममता अंदर तक विचलित हो गई थी.

"दीदी, देखो, मुझे बैडमिंटन चैंपियनशिप के लिए यह शील्ड मिली है." प्रसन्नता से पुलकती नेहा हाथ में बड़ी सी शील्ड लिए चहक रही थी.

दोनों छोटी बहनें भी दौड़ी आईं. शील्ड देख कर वे खुशी से नाचने लगीं और मां को बुला लाईं.

एक क्षण के लिए यशोदा के चेहरे पर प्रसन्नता के भाव दिखाई दिए, लेकिन तत्क्षण वह मरी सी आवाज में बोली, "पता नहीं तुझे क्यों लड़कों के कामों में रुचि है? स्कूल की पढ़ाई और घर के काम में ही ध्यान रखा करो. इन व्यर्थ के खेलों में क्या रखा है? अगर तू लड़का होती तो और बात थी."

ममता झट बोल पड़ी, "मां, तुम भी कमाल करती हो. क्या वह खुद लड़की बनी अपनी मरजी से?"

पांडव विवाह परंपरा जारी है

राजस्थान के सरिस्का अभयारण्य का क्षेत्र अपने प्राकृतिक सौंदर्य और शांत वातावरण के लिए काफी प्रसिद्ध है. लेकिन बहुत कम लोग जानते हैं कि इस इलाके में आज भी प्राचीन पांडव विवाह परंपरा जारी है. यहां आज भी कई भाई मिल कर एक ही पत्नी रखते हैं.

इस तथ्य का रहस्योद्घाटन आज से 12 वर्ष पूर्व एक पत्रकार द्वारा किया गया था. उक्त पत्रकार ने जब वहां के लोगों से परिवार नियोजन की प्रगति के बारे में जानना चाहा तो उन्होंने बताया कि यहां तो कई भाइयों के बीच एक ही पत्नी होती है. इसलिए परिवार अपनेआप ही नियोजित रहते हैं. कहा जाता है कि यहां के पांडुपोल और भीमताल जैसे स्थानों पर पांडवों ने अज्ञातवास किया था.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने लाडलों दुलारों के लिए ही तो है

अत्यंत कोमल, मुलायम टाइनीकेयर नैपीज़ !

Tinycare® NAPPIES

- सोखने की ज़्यादा क्षमता
- आरोग्यप्रद
- आरामदायक

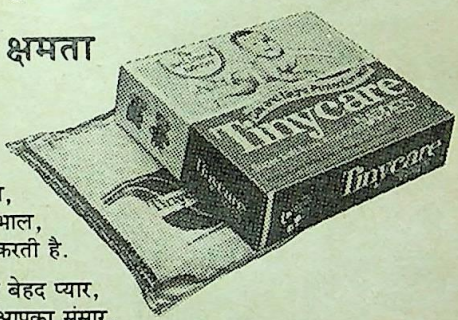

आपकी सन्तान. आपकी आखों का तारा, खुशियों का संसार है. दिनरात उसकी देखभाल, उस पर प्यार की बौछार ही तो आप करती है.

टाइनीकेयर, क्योंकि आपको है उनसे बेहद प्यार, क्योंकि आपका बच्चा है आपका संसार. उसे आप हमेशा सर्वोत्तम ही देना चाहेंगे.

टाइनीकेयर...कितना मुलायम है इसका स्पर्श, आपका प्यार सा कोमल, आपके लाडले की नर्म त्वचा के लिए उत्तम. टाइनीकेयर... बच्चे को खुश और आराम से रखे. दोहरी परत और ठीक फिटिंगवाले नैपीज़ के आकार. १००% सूती. टाइनीकेयर अनेक डिज़ाइनों और आकारों में उपलब्ध. नवजात शिशु से घुटनों के बल चलनेवाले बच्चों के लिए अलग अलग साइज़ों में इन्हें बदलना भी आसान.

टाइनीकेयर डिसपोज़ेबल भी उपलब्ध है.

सुचिता इंडस्ट्रीज़ का उत्कृष्ट उत्पादन

बंगलोर - ५६० ००२.

टाइनीकेयर नैपीज़– माँ-बच्चों दोनों की खुशी.

Dattaram SI-Hin-1/88

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"चुप," यशोदा का क्रोध से तमतमाता चेहरा देख कर लड़कियां सहम गईं और चुपचाप अपने कमरे में चली गईं.

रिश्तेदारों एवं परिचितों में जब यशोदा सम्मिलित होती तो सभी उस की दुखती रग छेड़ देते.

"बेचारी, कैसी तरस रही है एक बेटे के लिए. कोई निपूता न कहाए."

उस की पुत्रप्राप्ति की ललक और बलवती हो जाती. संबंधी जबतब उसे अपने आजमाए नुसखों से भी अवगत कराते रहते थे, जिस से उसे पुनः पुत्र की उम्मीद बंध जाती.

चौथी बेटी जब तीन साल की हो गई तो एक दिन यशोदा महेश से बोली, "सुनो, ग्वालियर में एक होमियोपैथिक डाक्टर हैं. उन की दवा से शर्तिया लड़का होता है. मुझे ऐसी जानकारी मिली है. क्यों न हम भी उन्हें आजमा लें?"

"यशोदा, तुम्हें कितनी बार समझाया है कि इन लड़कियों को ही लड़का समझो. बेवजह परिवार बढ़ाने से परेशानियां ही बढ़ेंगी. अगर तुम यह जिद भी पूरी करने के बाद बेटा न पा सकीं तो?"

"आप तो बेकार की बहस ले कर बैठ जाते हैं. 99% लड़के होते हैं उस डाक्टर की दवा से." काफी आत्मविश्वास झलक रहा था यशोदा की आंखों में.

"और अगर बच रहा एक प्रतिशत हमारे ही हिस्से में आ गया तो?"

"आप तो हमेशा बुरा पहलू ही अपने लिए सोचते हैं. मेरी सहेली ने बताया है कि अभी तक उन के परिचितों में इस दवा से सभी को लड़के हुए हैं. क्या आप को सचमुच

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बेटे की चाह नहीं? लेकिन मैं क्या करूं, मुझे तो बेटे के बिना ममता अधूरी लगती है.'' अंतर की गहरी तड़प, निराशा, वेदना उभर आई थी यशोदा के चेहरे पर. जैसे दयनीयता से बेटे की भीख मांग रही हो. पुत्र का मोह मां के दिलोदिमाग को घुन की तरह लग सकता है, यह पहली बार जाना था महेश ने.

छः माह बाद यशोदा फिर से गर्भवती हुई तो महेश से दवा के बारे में बात की. दोनों उसी सहेली के घर पहुंचे, जिस ने उस डाक्टर के बारे में जानकारी दी थी. पता लगा कि दवा खाने के लिए गर्भवती स्त्री को स्वयं जाना पड़ता है. पूरी जानकारी के बाद ही वह डाक्टर दवा खिलाता था.

उन्हीं दिनों यशोदा के मायके से केसर छिड़की चिट्ठी आई. उस के छोटे भाई की शादी थी. कुछ क्षणों के लिए वह पुलकित हो उठी.

अचानक जैसे बिजली का तार छू गया हो. हिसाब लगाया, उन्हीं दिनों तो उसे दवा खाने के लिए ग्वालियर पहुंचना था. अब क्या करे? यह तो जटिल समस्या आ खड़ी हुई थी. शादी पर जाए या ग्वालियर? नहीं, ग्वालियर तो जाना ही होगा. उस के जीवन की सब से अहम ख्वाहिश का सवाल है.

महेश से विचारविमर्श के बाद तय यह हुआ कि ग्वालियर से सीधे शादी के स्वागत समारोह में वे लोग शामिल हो जाएंगे. उस के पहले के रिवाजों में वे शामिल नहीं हो सकते थे. चिट्ठी डाल कर बहाना गढ़ा गया कि दफ्तर का अत्यावश्यक दौरा आने के कारण वे आखिरी दिन ही पहुंच पाएंगे.

20 घंटे के लंबे सफर की थकान से जब मुक्ति मिली तो यशोदा ने चैन की सांस ली. यह भी गनीमत थी कि ग्वालियर में कोई रिश्तेदार नहीं था, वरना कहीं नजर पड़ जाती तो चोरी पकड़ी जाती.

डाक्टर ने विस्तृत जानकारी लेने के बाद दवा की खुराक दी. डाक्टर की बातों व तसल्ली से तथा डाक से मिले सैकड़ों धन्यवाद के पत्र (जो लड़के के पैदा होने पर लोगों द्वारा लिखे गए थे) देख कर यशोदा को लगभग पूर्ण विश्वास हो गया था कि इस बार तो जरूर बेटा ही होगा.

इंतजार की घड़ियां काटते हुए उस ने हिसाब लगाया. इस बार तो समय भी अधिक हो गया था. पहले बेटे के समय भी ऐसा ही हुआ था. कुछकुछ दूसरे लक्षण भी लगभग वैसे ही थे. दिल को तसल्ली देती, जैसे किसी इच्छित वस्तु को पाने के लिए व्यक्ति मन को झूठी तसल्ली दे कर कल्पनालोक में विचरण कर के उसे पा लेता है तो सुख के समुद्र में गोते लगाने लगता है. लगभग यही हाल यशोदा का भी था.

पूरे समय के बाद यशोदा हस्पताल पहुंची. डाक्टर ने जांच कर के बताया कि शिशु स्वस्थ है. शायद आपरेशन करना पड़े. पुत्र की ललक में यशोदा सारी पीड़, कष्ट चुपचाप सहन करती रही.

दो घंटे के आपरेशन के बाद बेटी का जन्म हुआ था. बिलकुल रबर की गुड़िया, फूलों जैसी, गोरीचिट्टी.

होश आने पर यशोदा को जब पता चला कि इस बार फिर बेटी हुई है तो वह अपने बाल नोचने लगी थी. चीखते हुए बोली, ''मार डालो इसे, मुझे नहीं चाहिए. बेईमान डाक्टर कहता था कि लड़का होगा...''

बांह में लगी ग्लूकोज की सूई यशोदा ने निकाल फेंकी. पालने में पड़ी बेटी की तरफ इस तरह झपटी, मानो तत्काल उस का गला घोंट देगी. डाक्टर ने फौरन हाथ थाम कर बलपूर्वक उसे पलंग पर लिटाया. किसी नर्स ने उस के हाथ पकड़े, किसी ने पैर. डाक्टर ने फौरन उसे नींद का इंजेक्शन लगा दिया, ताकि विक्षिप्त सी हालत से कुछ समय के लिए ही सही, राहत पा सके.

समीप खड़ा महेश यशोदा की नादानी पर जहां खीज रहा था, वहीं दूसरी ओर समय आने पर यशोदा से किस तरह पेश आना है, इस के लिए अपनेआप को तैयार भी कर रहा था.

अरिता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

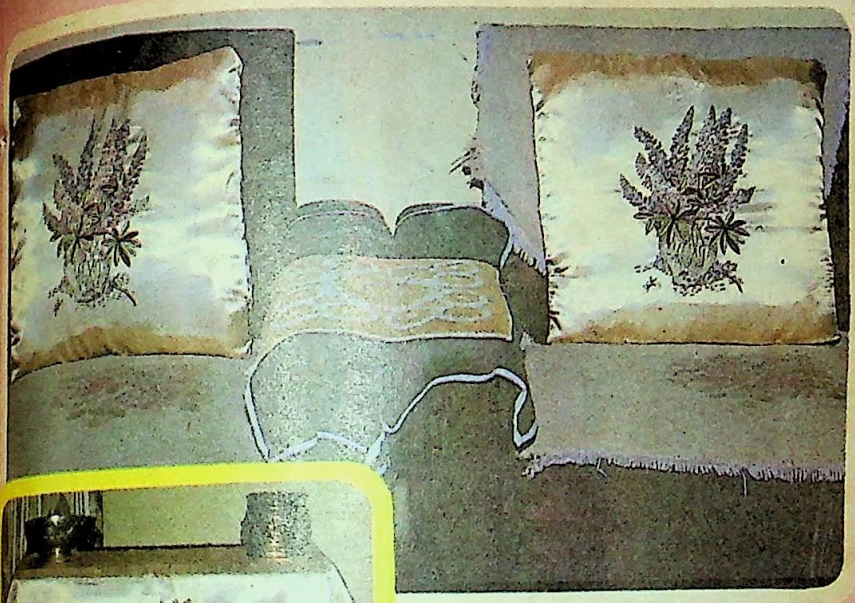

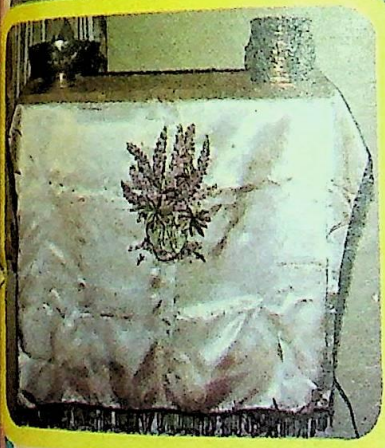

सुंदर टी.वी. और कुशन कवर

आप के ड्राइंग रूम के लिए लाए हैं कुशन-कवर, सुंदर कढ़ाई वाला मेजपोश और कुशनकवर. आप भी इन्हें बना कर के अपने ड्राइंग रूम को सुशोभित कीजिए. इन्हें बनाने के लिए आवश्यक सामग्री नीचे दी जा रही है:

सामग्री: 1 मीटर मनपसंद कपड़ा मेजपोश के लिए, प्रत्येक कुशन के लिए ½-½ मीटर कपड़ा ले लीजिए. कढ़ाई के लिए हरे, गुलाबी, भूरे, बैंगनी, नीले रंग के सभी हलके और गहरे रंग के धागे, अनुरेखण (ट्रेस) का सामान, पतली सूई.

विधि: मेजपोश और कुशनकवर के बीचोबीच चित्र की मदद से ट्रेस कर लें. पूरे में उलटा बखिया, साटिन स्टिच और चेन स्टिच से कढ़ाई करें. चित्र की सहायता से रंग डालें.

कढ़ाई हो जाने के बाद पीछे वाले हिस्से के बीच दो टुकड़े कर के बटन पट्टी बना लें. दोनों परदों को चारों तरफ से सी लें. चाहें तो मेजपोश के चारों तरफ सुंदर लेस लगा लें. इस से सुंदरता और बढ़ जाएगी.

—सुधा जुरिया सिंगानी ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुझे शिकायत है

इन प्रकाशित शिकायतों को काट कर संबंधित व्यक्तियों को भेजिए या उपयुक्त स्थान पर चिपकाइए ताकि इन्हें पढ़ने वाले अपनी त्रुटियों को पहचान कर उन्हें दूर कर सकें.

मुझे शिकायत है उन वाहन चालकों से, जो साइलेंसर फट जाने के बावजूद तेज रफ्तार से वाहन चलाते हैं और तेज आवाज से लोगों को परेशान करते हैं. -सजयकुमार

मुझे शिकायत है उन लोगों से जो बिना दस्तक दिए कमरे में घुस आते हैं और घंटों बातचीत कर दूसरों का वक्त बरबाद करते हैं.
-भरत सिंधवाली

मुझे शिकायत है उन धर्म-भीरुओं से जो नदियों में सिक्के फेंक कर देश में रेजगारी का संकट पैदा करते हैं और अंधविश्वासों को बढ़ावा देते हैं.
-शैलेश चौहान 'आजाद

मुझे शिकायत है उन दंपतियों से जो अपने बच्चों को सड़क पर खेलने देते हैं तथा दुर्घटनाओं में सहायक बनते हैं. -पदमेंद्र कुमार शर्मा

मुझे शिकायत है उन परीक्षार्थियों से जो परीक्षाकक्ष में इधर-उधर ताकझांक कर के दूसरों का ध्यान बंटाते हैं और अपना भविष्य भी अंधकारमय करते हैं.
-अनिल बतरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बच्चों को पढ़ाई के लिए कैसे प्रेरित करें?

लेख • राजेंद्र शर्मा

किसी भी बच्चे की प्रथम पाठशाला उस का घर ही होता है. अपने घर में ही वह अपना अधिक से अधिक समय बिताता है. इस घर की दिनचर्या तथा उस के अभिभावकों की आदतें उस के बनने या बिगड़ने में काफी हद तक सहायक होती हैं.

'जैसा बाप वैसा बेटा' यह कहावत काफी हद तक हर बच्चे पर खरी उतरती है. इस का मतलब यह नहीं कि मां के व्यक्तित्व तथा आदतों का बच्चे पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता, बल्कि इस बारे में अगर यह कहा जाए कि एक बच्चा अपने मांबाप से ही जीवन में कुछ बनने की प्रेरणा पाता है तो यह गलत न होगा. जैसे अगर आप की रुचि पुस्तकें या अखबार पढ़ कर बाहरी दुनिया के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बच्चे को स्कूल भेजते समय यह ध्यान रखना जरूरी है कि वास्तव में उस की उम्र स्कूल जाने लायक है भी या नहीं. बच्चे को बहुत कम उम्र में स्कूल भेजने से उस में अनेक मानसिक विकृतियां उत्पन्न हो सकती हैं.

बारे में जानने की है तो आप के इस उत्साह का प्रभाव आप के बच्चों पर भी जरूर पड़ेगा, जिस से वे भी आप की इन अच्छी आदतों को आप से सीखेंगे.

इस के अलावा ऐसे भी कई उपाय हैं, जिन्हें अपना कर आप अपने बच्चों को पढ़ाई के लिए प्रेरित कर सकते हैं, जैसे जब कभी आप के बच्चे आप से कोई प्रश्न पूछें तो आप उसे उत्तर अवश्य दें, चाहे वह उत्तर कैसा भी कठिन क्यों न हो. अगर आप उस के किसी प्रश्न का उत्तर न भी जानते हों तो इस के लिए आप कुछ समय लगा कर उस का सही उत्तर तलाश करें, चाहे वह आप को किसी अध्यापक या विशेषज्ञ से ही क्यों न पूछना पड़े. बच्चों को गलत या भ्रामक जानकारी भूल कर भी न दें.

जब कभी आप के बच्चे किसी वस्तु, स्थान या किसी विशेष विषय में अपनी रुचि दिखाएं तो आप उन के व्यवहार को सम्मान दे कर पुरस्कृत करें. साथ ही आप उन की प्रशंसा करते हुए उन्हें उत्साहित भी करें.

आप अपने बचपन के पढ़ाई के अनुभवों को भी उन्हें बताएं, जिस में आप अपने उन अध्यापकों तथा मित्रों के बारे में बताएं जो आप को पढ़ाई के लिए बढ़ावा देते थे. उन से संबंधित कुछ विशेष घटनाओं के बारे में भी बताएं, जो उन के लिए उपयोगी हों.

बच्चों के साथ आप को ऐसे खेल भी खेलने चाहिए, जो उन की पढ़ाई में सहायक हों. ऐसे कुछ खेल क्रोस पजल, शब्दों की अंताक्षरी आदि.

बच्चों को उन जानकारी स्रोतों से पुस्तकालय, संग्रहालय तथा नाटकघर में अपने साथ ले जा कर उन में शुरू से ही के प्रति रुचि उत्पन्न करें.

उन्हें बातचीत करने का बढ़ावा दें बात की परवाह किए बिना कि वे कि विषय पर बात कर रहे हैं. आप हमेशा की बातों को ध्यान से सुनें.

आज के जीवन में न केवल हम तनाव ग्रस्त होते हैं, बल्कि बच्चे भी अक तनाव ग्रस्त हो जाते हैं. इसलिए उन में हो वाले तनावों को जानने की भी कोशिश क इस के साथ ही यह भी जरूरी है कि वे आप अपने कार्यों में कितने ही व्यस्त क्यों हों, उन्हें किसी भी ऐसी अनजान घटना अपने आसपास के माहौल के बारे में ज बताएं, जिस से वे प्रभावित हो सकते हैं.

मारेंपीटें नहीं

अपने बच्चों के गुणों की प्रशं अवश्य करें. इस से वे अच्छी तरह तथा से सीखते हैं. कभी भी बच्चों को उन लेखन में हुई गलती या फिर अंकगणित में किसी भी और विषय में की गई गलती कारण, पीटना या डांटना नहीं चाहि क्योंकि इस से उन में नकारात्मक भाव जन्म लेती है और वह भविष्य में पढ़ाई मन चुराने लग जाते हैं.

आप बच्चों के सामने हमेशा प्रसन्न चित्त रहें. उन्हें कुछ भी सिखाने को ए विकट समस्या न समझ कर खेल भावना उन्हें वह हंसीखुशी समझा दें. उन की कि भी मिथ्या धारणा पर हंसने के बजाए उ सही बात समझाएं तथा उन का उत्सा बढ़ाएं.

आप एक बात हमेशा याद रखें कि अगर आप अनुशासित हैं तो आप के बच्चे में भी यह आदत अवश्य आएगी, जो सफलता के लिए जरूरी है. इस अनुशासन को आप उस पर किसी तरह का दबाव डाल कर बल्कि स्वयं ही एक इस का उदाहरण बन कर जाग्रत करें.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आओ कोई अच्छा काम करें

खेलखेल में लड़ते हैं
बातबात पे झगड़ते हैं.
सारा दिन होहल्ला कर
नाक में दम हम करते हैं.
चलो, मम्मी को हैरान करें
आज न उन्हें परेशान करें
आओ, कोई अच्छा काम करें.
छोटों को हम धमकाते है
बड़ों की बात टाल जाते हैं
घर में आए मेहमानों की
छिप कर खिल्ली उड़ाते हैं.
चलो, हम सब से प्यार करें.
सब का आदर सत्कार करें.
आओ, कोई अच्छा काम करें

—धर्मपाल सभरवाल

उत्तर: अ. कंगारू, ब. एकीडना.
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपका विश्वसनीय वाटरबरीज़ कम्पाउण्ड रेड लेबल अब खूबसूरत नये रूप में. ज़्यादा पतली, ज़्यादा आकर्षक.

वाटरबरीज़ रेड लेबल, सर्दी और खांसी का मुकाबला करने का आज़माया हुआ वही जाना-माना अचूक फ़ार्मूला अब नयी खूबसूरत बोतल में. पहले से ज़्यादा पतली, ज़्यादा खूबसूरत बोतल में.

वाटरबरीज़ रेड लेबल में सर्दी के असर को बेअसर करने वाले मिनरल्स, विटामिन्स और आयरन हैं. साथ ही इसमें खांसी से राहत दिलाने के लिए है— क्रिओसोट और गायकॉल.

तो, आप भी अपने परिवार को वाटरबरीज़ रेड लेबल की सुरक्षा दीजिए.

वाटरबरीज़ रेड लेबल

सर्दी और खांसी के लिए आपका विश्वसनीय रक्षक.

LINTAS WHL WRL P2 1811 HI

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बच्चा स्कूल जाने से कतराता क्यों है?

लेख • कैलाश जैन

प्रदीप अपने चार वर्षीय पुत्र बबलू को ले कर बहुत परेशान थे. उन की समस्या यह थी कि बबलू स्कूल नहीं जाना चाहता था. उन्होंने उसे स्कूल भेजने के लिए सभी स्तर पर प्रयास कर लिए. प्यार से, समझाबुझा कर, खिलौनों का प्रलोभन दे कर—यहां तक कि डांटडपट और पिटाई जैसे हथियारों का भी इस्तेमाल कर के देख लिया. लेकिन कोई अपेक्षित परिणाम नहीं निकला.

प्रदीप ने मुझे अपनी समस्या बताई. मैं ने प्रदीप को सुझाव दिया, "फिलहाल आप अपने बेटे पर स्कूल जाने के लिए दबाव न डालें, उसे प्यार से उस के मानसिक स्तर पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समझाइए तथा धीरेधीरे उन वजहों का पता लगाने का प्रयास कीजिए, जिन से उस के बालमन में स्कूल के प्रति एक अज्ञात खौफ सा समा गया है.''

प्रदीप ने मेरी राय पर अमल कर के उन कारणों की खोज की तो पाया कि बबलू के एक अध्यापक अत्यंत क्रोधी स्वभाव के हैं तथा बातबेबात बच्चों की पिटाई करते रहते हैं. उन्होंने एकदो बार बबलू को भी पीटा और बबलू के मन में उन अध्यापक महोदय के प्रति एक अनजाना भय सा समा गया. उसे हर बार लगता था कि चाहे उस की कोई गलती हो या न हो, अमुक अध्यापक उसे जरूर पीटेंगे.

प्रदीप ने व्यक्तिगत रूप से उन अध्यापक महोदय से भेंट कर के उन्हें बबलू की परेशानी से अवगत कराया. फिर प्रदीप उन्हें ले कर घर आए और खुद अध्यापक ने प्यार से बबलू को समझाया और आश्वस्त किया कि उसे नहीं पीटा जाएगा. अब बबलू खुशीखुशी स्कूल जाता है. वह अध्यापक महोदय भी उसे खासतौर पर प्यार से बतियाते हैं.

यह तो एक मिसाल हुई. अकसर यह सुनने को मिलता है, ''क्या बताएं, हमारा बच्चा तो कभी खुशी से स्कूल जाना नहीं चाहता है.'' आजकल आधुनिक समाज में ढाईतीन साल के बच्चे को स्कूल में दाखिल कराने की परंपरा सी चल गई है. दरअसल यह उम्र पढ़ाई या स्कूल के कार्य का बोझ उठाने की नहीं है. इस उम्र में बच्चा अपने घर और आसपास के परिवेश को समझने तथा नईनई चीजों से पहचान स्थापित करने का प्रयास कर रहा होता है. इस उम्र में उसे स्कूल भेजना एक प्रकार की निर्ममता तो है ही, साथ ही उस की सेहत की दृष्टि से भी अनुचित है.

एक सर्वेक्षण के अनुसार तीनचार साल के बच्चे को लिखना सिखाने से उस की कोमल आंखों पर अनावश्यक बोझ पड़ता है तथा स्थायी दृष्टि दोष उत्पन्न होने की संभावना रहती है. उस की उंगलियों की कच्ची मांसपेशियां भी पेंसिल पकड़ने के लिए अनुपयुक्त रहती हैं. मानसिक स्तर पर भी वह पढ़नेलिखने के काबिल नहीं होता है.

विकसित देशों में बच्चों की शिक्षा

सभी विकसित देशों अमरीका, इंगलैंड, रूस, जरमनी आदि में छः वर्ष से कम आयु के बच्चों को लिखना नहीं सिखाया जाता, सिर्फ बोलना और अधिक से अधिक अक्षरों की पहचान कराई जाती है. यही बच्चे के लिए पर्याप्त भी है. इस के पीछे यह मनोवैज्ञानिक तर्क है कि जब बच्चा ठीक से अक्षरों को पहचानना सीख लेगा तो छः वर्ष की आयु में वह आसानी से बिना अधिक सिखाए, लिखना भी सीख लेगा. इसलिए बच्चों को कम आयु में स्कूल में प्रवेश दिलवाना, उन के साथ मानसिक क्रूरता तो है ही, साथ ही शारीरिक विकास में भी अवरोध उत्पन्न करता है.

उचित उम्र के बच्चे को स्कूल भेजने से पूर्व अभिभावकों की जिम्मेदारी बहुत नाजुक है. अधिकांश मातापिता बच्चों को स्कूल में दाखिल करा के अपने कर्तव्य की इतिश्री समझ लेते हैं.

स्कूल में प्रवेश पा कर बच्चा जीवन संग्राम की शुरुआत करता है. अब तक उसे अपने घर में परिवारजनों के बीच रहना होता था, जहां वह अपने को सुरक्षित

बच्चे स्कूल जाने से न कतराएं इसलिए उन के सामने स्कूल की डरावनी और खौफनाक तसवीर पेश न कर के उन बातों का पता लगाना और उन्हें दूर करना जरूरी है, जिन की वजह से वे ऐसा करते हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

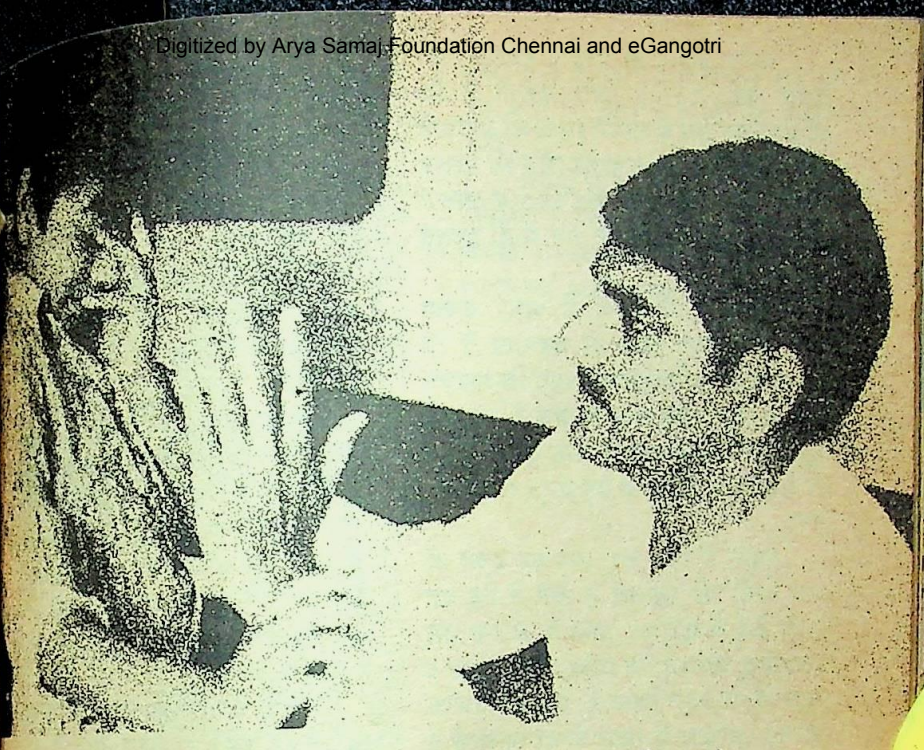

बच्चे को मारपीट कर नहीं, प्यार से समझाबुझा कर स्कूल भेजिए.

महसूस करता था. जब बच्चा पहली बार अपने मांबाप और घर से दूर अजनबी लोगों और वातावरण के साथ रहने के लिए अपने नन्हे कदम बाहर रखता है तो उस के बालमन में हो रहे अंतर्द्वंद्व और उस की मानसिक स्थिति की कल्पना कीजिए. बच्चा स्वयं को अकेला, असुरक्षित और अजनबियों से घिरा हुआ महसूस न करे, इस के लिए अभिभावकों का दायित्व है कि बच्चे को स्कूल भेजने से पूर्व उस के मन में स्कूल जाने के प्रति सहज रुचि जागृत करें. उसे स्कूल के नए वातावरण से परिचित कराएं.

इस के लिए जरूरी है कि बच्चे को स्कूल में दाखिल कराने से पूर्व ही उसे आत्मनिर्भर बनाने की दृष्टि से दिन भर में एकदो घंटे उसे अपने से अलग रखें. धीरेधीरे इस अवधि को बढ़ाएं. इस से यह लाभ होगा कि वह आप के बिना भी खुश हो कर समय व्यतीय करने का अभ्यस्त हो जाएगा और उस की यह आदत उस के स्कूल जाने के समय उपयोगी सिद्ध होगी. साथ ही, समयसमय पर उस का परिचय अजनबी लोगों से कराते रहिए. उसे महल्ले के बच्चों के साथ खेलनेकूदने दें, ताकि वह अन्य लोगों के बीच सामंजस्य स्थापित करने और जीवन की रोजमर्रा की बातों को स्वयं ग्रहण करने में समर्थ हो सके.

स्कूल या अध्यापकों के बारे में बच्चों के दिमाग में कभी भी डर पैदा करने की नासमझी न कीजिए. जैसे अनेक माताएं बच्चों की शरारतों से तंग आ कर उन से कहती रहती हैं, "तुम अपनी शैतानियों से बाज नहीं आओगे तो मैं तुम्हें स्कूल में भरती करा दूंगी. जब मास्टरजी पिटाई करेंगे तो तुम सारी शैतानी भूल जाओगे."

बच्चों के अपरिपक्व व संवेदनशील मस्तिष्क पर इन बातों का बड़ा गहरा और प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है. वह अनजाने में मन ही मन स्कूल और मास्टरजी के प्रति एक अज्ञात भय की धारणा बना लेता है और स्कूल जाने से कतराने लगता है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बच्चा स्कूल को कोई यातनागृह नहीं समझ बैठे, इस के लिए जरूरी है कि अभिभावक उस के सामने स्कूल की डरावनी और खौफ पैदा करने वाली छवि भी प्रस्तुत न करें. उस के सामने स्कूल को एक आदर्श और आवश्यक संस्था के रूप में ही प्रस्तुत कीजिए.

शुरुआत के दिनों में अगर बच्चा स्कूल में अकेला बैठने से घबराता है तो माताएं उसे यह विश्वास दिलाएं कि वह घर में ही है. और उसे कक्षा में भेज दें. स्कूल में छुट्टी होने के बाद शुरू के दिनों में आप बच्चे को लेने स्कूल पहुंचें तो वह बहुत प्रफुल्लित होगा.

स्कूल से लौट कर आने पर बच्चे को ऐसा कभी भी महसूस न होने दें कि वह किसी कैद से छूट कर आया है, बल्कि उसे उत्साहित कीजिए कि स्कूल जा कर उस ने बहुत अच्छा काम किया है. उस की प्रशंसा कीजिए. भविष्य में स्कूल के कार्यकलापों में और अधिक रुचि लेने के वास्ते उसे प्रेरित कीजिए.

अभिभावक का दायित्व

अभिभावकों का दायित्व है कि अपने बच्चे की पढ़ाईलिखाई के संबंध में वे नियमित रूप से उस के स्कूल जा कर उस के शिक्षकों से मिलते रहें. इस से बच्चे की प्रगति के बारे में आप को जानकारी मिलती रहेगी और आप बच्चे की समस्याओं से भी अवगत होते रहेंगे.

आज की तेज रफ्तार जिंदगी में व्यक्ति के पास अपने परिवार व बच्चों के लिए समय का अभाव सा रहता है. लेकिन अभिभावकों का यह महत्त्वपूर्ण दायित्व है कि वे अपने बच्चों के लिए समय निकालें, वरना बच्चे भावनात्मक स्तर पर उन से कट जाएंगे और मातापिता के लाड़दुलार के अभाव में बच्चा खुद को असुरक्षित और अकेला महसूस करने लगेगा.

बच्चों से उन के मानसिक स्तर के अनुरूप जुड़े रहें. उस से उस के स्कूल, दोस्तों, अध्यापकों आदि के बारे में रुचि ले कर बातचीत करें. यह जानने का प्रयास करें कि वह अपने स्कूल में किसी चीज को ले असंतुष्ट तो नहीं है. यदि ऐसा है तो उस की समस्या दूर करें. आप अपने बच्चों का विश्वास अर्जित करें, ताकि वे आप को अपना मित्र मान कर अपनी सारी समस्या खुल कर बता सकें. आप अपने स्तर पर उन की समस्याओं को हल करने का प्रयास जरूर करें.

बच्चों को प्रेरणा देने का सर्वश्रेष्ठ उपाय है—आप उस की प्रशंसा करें. प्रशंसा से बच्चे को प्रोत्साहन मिलता है और उस का आत्मविश्वास बढ़ता है. बच्चे की उपलब्धियों के लिए उसे समयसमय पर पुरस्कृत करें. उस की गलतियों पर झुंझलाइए नहीं, बल्कि उसे प्रेम से समझाइए कि वह भविष्य में ऐसी गलती न करे.

स्कूल भेजते समय बच्चों को यथासंभव साफसुथरे कपड़े पहनाइए. साथ ही उस के थैले में सभी आवश्यक वस्तुएं तथा स्केल, पेंसिल, रबड़, कापी आदि रखना न भूलें. यह भी याद रखें कि स्कूल जाने से पूर्व वह अपना गृहकार्य (जो स्कूल में दिया गया था) पूरा कर ले, वरना उसे स्कूल में दंडित किया जा सकता है, जिस से उस के मन में हीन भावना और डर पैदा होने की आशंका है और वह स्कूल जाने से कतरा सकता है.

बच्चे मनमौजी होते हैं. हो सकता है कभी स्कूल न जाने की जिद कर ही बैठें. ऐसे में कभी सख्ती से काम मत लीजिए और बच्चे को जबरन स्कूल भेजने की कोशिश मत कीजिए. साल में तीनचार दिन स्कूल न जाने से यों भी कोई खास अंतर नहीं पड़ता.

बच्चों की सारी समस्याओं को उन के मानसिक स्तर और दृष्टिकोण से देख कर उन का मनोवैज्ञानिक समाधान करने का प्रयास कीजिए. स्कूल न जाने के मूल कारणों की जांचपड़ताल किए बिना बच्चे को डांटना और उस को मारनापीटना अनुचित है. इस से आप के बच्चे का भविष्य संवरने के स्थान पर बिगड़ सकता है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बच्चों का बस्ता भी देखें

लेख • शीला सलूजा

"अरे, तुम्हारी हिंदी के तो चार पाठ ही गायब हैं. सब किताबों का क्या हाल बना रखा है तुम ने? इन में अंगरेजी की किताब तो है ही नहीं."

"अरे, रिंकू, तुम्हारे बस्ते में कच्ची इमली के टुकड़े! क्या स्कूल में यही खाते हो? इसी लिए तो तुम्हारी खांसी ठीक नहीं होती. ये कच्चे बेर कहां से आए? आज से तुम्हारा जेबखर्च बंद. तुम स्कूल में ऐसी ही चीजें ले कर खाते हो ना?"

"यह कापी तो सुनीता की है. तुम्हारे बस्ते में कैसे आई? सुनीता इसे तीन दिन से ढूंढ़ रही है और तुम हो कि बताते ही नहीं..."

बच्चों के बस्तों के संबंध में ये कुछ ऐसे 'रहस्य' हैं, जिन्हें जानने के लिए आप को बच्चों के बस्तों का कभीकभी आकस्मिक निरीक्षण करना चाहिए. इस प्रकार का निरीक्षण न केवल बच्चों के हित में होगा, बल्कि बच्चों में पड़ रहे गलत संस्कारों को भी घर नहीं करने देगा और बच्चे पढ़ाई में नहीं पिछड़ने पाएंगे.

बच्चों का बस्ता जहां उन के पढ़नेलिखने में सहायक होता है, वहीं उन की कलात्मक सुरुचियों का परिचायक भी है. जो बच्चे अपनी कापीकितबें संभाल कर रखते हैं, उन की रुचि पढ़नेलिखने में अधिक होती है. वे बस्ते के अलावा अपनी किताबों की अलमारी भी संभाल कर करीने से रखते हैं.

बच्चों के बस्ते का निरीक्षण करने के पीछे यही उद्देश्य है कि आप बच्चों को उत्साहित करें कि वे अपनी कापीकिताबों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

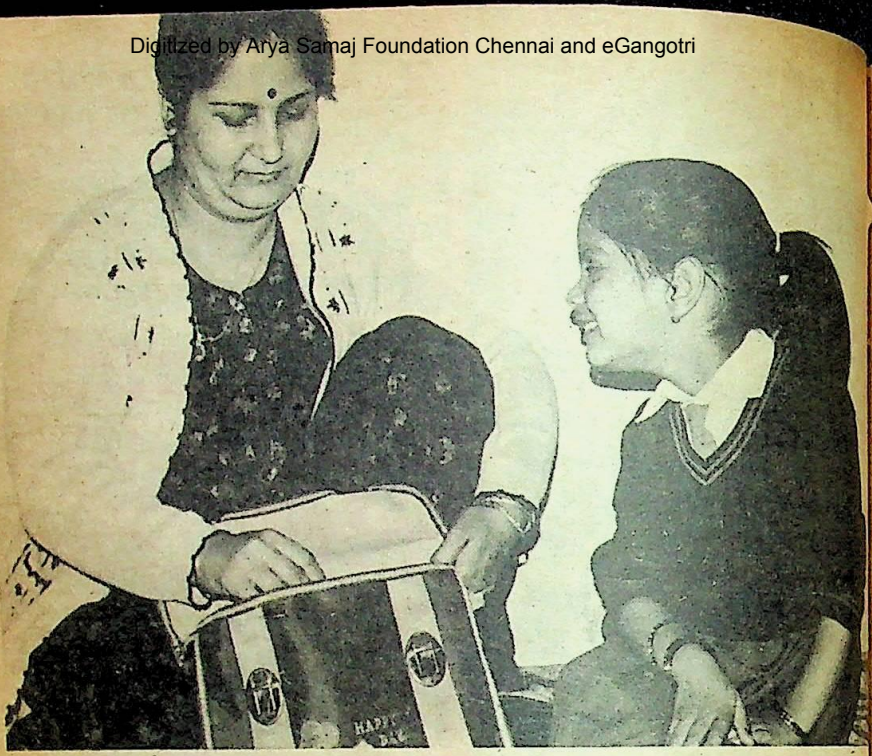

कभीकभी अपने बच्चे का बस्ता अवश्य देखिए : उस की कापीकिताबें कहीं अव्यवस्थित तो नहीं हैं.

को संभाल कर रखें. उन पर जिल्द चढ़ा कर रखें. उन पर उलटासीधा कुछ न लिखें. उन पर आपत्तिजनक चित्रों का आवरण न चढ़ाएं, न ही उन की कापीकिताबें फटी हों. यदि किताब का कोई पृष्ठ फट गया हो तो उसे चिपका दें क्योंकि यदि एक भी पन्ना फट गया और उसे नहीं चिपकाया गया तो एक के बाद दूसरा पन्ना फटता चला जाएगा. और फिर बच्चा इन फटे हुए पन्नों के बारे में कुछ भी नहीं जान सकेगा.

इस प्रकार की आदत बच्चों को अपने कर्तव्यों के प्रति जागरूक बनाएगी और बच्चे भावी जीवन में भी अपनी दैनिक उपयोग की वस्तुओं को संभाल कर रखना सीखेंगे.

कुछ बच्चे कापी में से पन्ने फाड़ने के आदी होते हैं. बच्चों की इस आदत को भी आप रोक सकती हैं. बच्चों के बस्तों में कभीकभी आप को कुछ अवांछित वस्तुएं जैसे सस्ते बाजारू उपन्यास, पत्रपत्रिकाएं, चित्र आदि भी मिल सकते हैं. कभीकभी बच्चे अपनी किताबों में नोट, पत्र, चित्र आदि रख देते हैं, जिन्हें वे घर वालों से छिपाना चाहते हैं. ऐसे पत्र, फोटो आदि यदि

बच्चों के बस्ते का समयसमय पर निरीक्षण करना केवल इसलिए ही जरूरी नहीं है कि वे अपनी चीजों को संभाल कर रखना सीखें, बल्कि इसलिए भी जरूरी है कि कहीं वे किसी गलत चक्कर में पड़ कर कोई आपत्तिजनक चीज तो नहीं रखने लगे हैं.

अरिता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन के साथी लड़कों के हाथ में पड़ जाएं तो वे इन का अनुचित प्रयोग भी कर सकते हैं.

इसलिए आप यह देखें कि बच्चे इस प्रकार की आदतें न पालें और न ही ऐसी बातों की ओर उन्मुख हों. जब आप की दृष्टि बच्चों के बस्ते पर होगी तो बच्चे स्वयं ही हतोत्साहित होंगे और ऐसी समस्याएं पैदा ही नहीं होंगी.

जब भी आप बच्चों के बस्ते में कुछ ऐसी चीजें देखें, जिन्हें बच्चे आप से छिपाना चाहते हों तो समझ लें कि दाल में कुछ काला है. फिर आप इस प्रकार के संदेहों की सचाई जानें तथा बच्चों को मना करें कि वे ऐसी कोई वस्तु (भले ही वह किसी अन्य की हो) अपने बस्ते में न रखें क्योंकि चोरी अथवा हेराफेरी करने में बच्चों का बस्ता ही सहायक होता है. इस प्रकार की चोरी में संलग्न बच्चे डरपोक, भीरु और कमजोर हो जाते हैं. वे साहस के साथ किसी भी परिस्थिति का सामना नहीं कर पाते.

रजनी काफी रात तक पढ़ती थी. घर पर ट्यूटर का भी प्रबंध कर दिया गया था. लेकिन स्कूल की प्रगति रिपोर्ट पर हमेशा यही टिप्पणी लिखी आती: "आप बच्ची की पढ़ाई पर ध्यान नहीं दे रहे हैं."

आखिर एक दिन उस की मां ने उस की अनुपस्थिति में उस का बस्ता देखा तो सारी बात समझ में आ गई. कापियों और किताबों के बीच चित्रकथाएं और फिल्मी पत्र-पत्रिकाएं इस प्रकार सिली हुई मिलीं कि ऊपर से सरसरी तौर पर देखने से पता ही नहीं चल सकता था.

मतलब यह कि छोटी उम्र के बच्चे तो अपना भलाबुरा समझते नहीं, इसलिए किशोरावस्था तक के बच्चों पर तो आप को हर प्रकार से 'नजर' रखनी चाहिए.

नीटू अपनी कक्षा के किसी बच्चे की किताब केवल उसे परेशान करने के लिए अपने बस्ते में रख कर ले आया. उस का उद्देश्य चोरी करना नहीं था, लेकिन उस ने केवल इसलिए वापस नहीं की कि अन्य छात्र उसे 'चोर' कहेंगे, चिढ़ाएंगे. बस, उस का डर खुल गया. तब से वह अन्य छात्रों की कापियां, किताबें, पेन आदि मौका देख कर अपने बस्ते में ले आता है. अब तो उसे हेराफेरी की आदत ही पड़ गई है.

बच्चों को अपना बस्ता साफसुथरा रखने की आदत डालें. स्वयं स्कूल जाने से पहले बच्चे अपने बस्ते को संभाल कर लगाएं. स्कूल जाने से पहले वे यह भी देख लें कि उस में उस दिन काम आने वाली सभी किताबें, गृहकार्य आदि की कापियां, पेन आदि हैं अथवा नहीं. इस प्रकार की आदत उसे स्कूल में अन्य बच्चों के सामने अपमानित न होने देगी और वे अध्ययन के प्रति उत्साही, जागरूक और तत्पर रहेंगे. इस प्रकार की तत्परता उन्हें नईनई बातें सीखने के लिए उत्साहित करेगी और बच्चे आप का सहयोग पा कर सदैव आगे बढ़ेंगे.

अपने छोटे बच्चों को

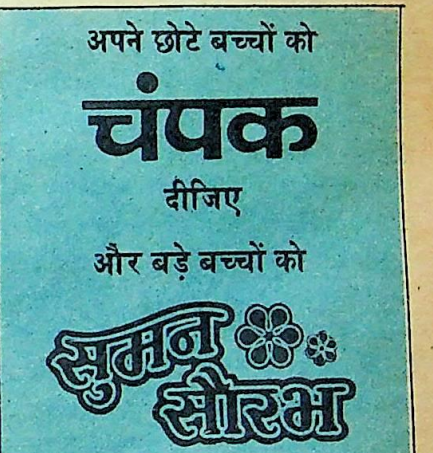

दीजिए

और बड़े बच्चों को

चंपक व सुमन सौरभ में भूतप्रेतों, राक्षसों, देवीदेवताओं, चमत्कारों और श्रापों के कारनामे, जादूटोने, अंधविश्वास की कहानियां प्रकाशित नहीं की जातीं.

दोनों पत्रिकाओं में रचनात्मक चरित्र निर्माण करने वाली, ज्ञान बढ़ाने वाली मनोरंजक कहानियां व लेख प्रकाशित किए जाते हैं. जिस से कल व आज के बच्चे जागरूक, स्वाभिमानी, देशप्रेमी नागरिक बन सकें.

नमूने की प्रति के लिए लिखें : दिल्ली प्रेस, नई दिल्ली - 110055.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बच्चोंके मुखसे

एक बार मैं अपने चार वर्षीय भाई का गृहकार्य करवा रहा था. उस ने 12 के स्थान पर 21 लिख दिया. मैं ने उसे समझाया कि पहले 1 और बाद में 2 लिखा जाता है.

लेकिन वह मेरी बात मानने के लिए तैयार नहीं हुआ. तब मैं ने उसे डांटते हुए कहा, "तुम्हें अधिक मालूम है या मुझे?"

इस पर उस ने बड़े भोलेपन से कहा, "भैया, आप ने गिनती बचपन में सीखी थी, इसी लिए शायद आप भूल रहे हैं."

– धनंजय सिंह

*

एक बार हमारे परिवार के कुछ लोग एक फिल्म देखने जा रहे थे. हमारी 10 वर्षीया भतीजी फिल्म देखने की जिद कर रही थी. फिल्म केवल वयस्कों के लिए थी. इसलिए उसे बताया गया कि फिल्म गंदी है. पर वह नहीं मानी और ज्यादा जिद करने लगी. आखिर उसे ले जाना पड़ा.

फिल्म देख कर लौटने पर उस ने अपनी मां से कहा, "देखो, मां, मुझे जानबूझ कर ये लोग फिल्म दिखाने नहीं ले जा रहे थे, जबकि फिल्म में कोई गंदगी नहीं थी."

गंदगी से उस का मतलब कूड़े से था.

– ललिता मिश्र

*

मेरा 4 वर्षीय भतीजा क्रिकेट का बहुत शौकीन है. एक बार जब भाई साहब उसे ले कर उस के स्कूल गए तो उस के अध्यापक ने कहा, "यह रोज नईनई कापियां तो लाता है, लेकिन उन में लिखता कुछ नहीं है."

घर आ कर जब भाई साहब उसे डांटने लगे तो वह भोलेपन से बोला, "पापा, हर आदमी आल राउंडर तो होता नहीं, अब आप मनिंदर को ही देखिए, वह केवल गेंद फेंकता है, खेल बिलकुल नहीं सकता. मैं भी पढ़ तो सब लेता हूं, लेकिन लिख नहीं सकता."

– हीरालाल मेंधवानी

*

एक बार मैं अपने 6 वर्षीय भतीजे को स्कूटर पर बैठा कर एक मंदिर जा रहा था. रास्ते में उस ने मुझ से पूछा, "चाचाजी, आप मंदिर क्यों जा रहे हैं?"

मैं ने कहा, "मंदिर जाने से भगवान मुझे बड़ा अफसर बनाएंगे."

तभी सामने एक अन्य मंदिर देख कर बोला, "चाचाजी, गाड़ी रोको, मंदिर आ गया."

मैं ने उसे बताया कि हम दूसरे मंदिर में जा रहे हैं."

तब वह बड़ी हैरानी से बोला, "तो क्या इस मंदिर के भगवान बड़ा अफसर नहीं बनाते?"

उस की बात से मुझे एक नई दिशा मिल गई.

– नाजनी खानम

*

मेरी पांच वर्षीया भतीजी बहुत ही नटखट है. एक दिन वह जब मुझे परेशान करने लगी तो मैं ने गुस्से में आ कर कहा, "अगर तुम मर जाओ तो मैं सवा रुपए का प्रसाद बांटूंगा."

मेरी बात सुनते ही वह तपाक से बोली, "चाचाजी, सब से ज्यादा मुझे देना."

– कृष्णकुमार यादव ●

इस स्तंभ के लिए आप अपने बच्चों, मित्रों व संबंधियों के बच्चों के मुख से कही गई बात भेज सकते हैं. प्रत्येक प्रकाशित संस्मरण पर 30 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. अपने संस्मरण इस पते पर भेजें : संपादकीय विभाग, सरिता, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेख • दामोदार अग्रवाल

बच्चों को स्कूल भेजने में जल्दी न करें

बच्चों के ढाईतीन साल के होते ही मातापिता या अभिभावकों में उन्हें जल्दी से जल्दी किसी स्कूल में प्रवेश दिलाने की हड़बड़ी मचने लगती है और वे इधरउधर पूछताछ भी शुरू कर देते हैं. फिर जल्दबाजी में अकसर छोटी उम्र में ही उन्हें स्कूल में डाल भी देते हैं. और जब तक उन्हें अपनी भूल मालूम होती है, तब तक बहुत देर हो चुकी होती है. अकसर ऐसी भी स्थितियां आ जाती हैं कि बच्चों को स्कूल से अचानक निकालना भी पड़ जाता है. डेढ़दो साल बाद जब बच्चा कुछ और बड़ा हो जाता है, तब फिर उसे किसी अच्छे स्कूल में दाखिला दिलाने की कोशिश की जाती है.

बच्चों को जल्दी से जल्दी स्कूल भेजने की मातापिता की इच्छा के पीछे एक डर तो यह रहता है कि कहीं वे पीछे न रह जाएं. दूसरी भावना यह रहती है कि यदि पड़ोसी के बच्चे स्कूल जा रहे हैं तो उन के ही क्यों पीछे रहें? ये दोनों ही खतरनाक स्थितियां हैं, जो बच्चों के भविष्य के लिए घातक हो सकती हैं. फिर हर शहर में, खासकर बड़े शहरों में, अड़ोसपड़ोस में इतने आकर्षक नर्सरी स्कूल खुलते जाते हैं कि वहां बच्चों को न भेजने के लोभ का संवरण कर पाना मुशकिल हो जाता है, चाहे वे स्कूल मालिकों के निजी लाभ के लिए ही क्यों न हों. विदेश जाने के समान उन स्कूलों में बच्चों को पढ़ाना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी परिवार के लिए एक 'स्टेटस' या सामाजिक प्रतिष्ठा की बात हो जाती है.

एक अंदाजे के अनुसार दिल्ली की नई बस्तियों में ऐसे कोई साढ़े तीन हजार नर्सरी स्कूल हैं. ये स्कूल ढाईतीन साल के बच्चों को भी अपने यहां दाखिला देते हैं. वे यह नहीं देखते हैं कि इतने छोटे बच्चों को स्कूल में ले कर वे उन के मन और भावनाओं के साथ कितना बड़ा खिलवाड़ कर रहे हैं. ऐसे स्कूलों का एकमात्र लक्ष्य होता है पैसे कमाना. छोटेछोटे फ्लैटों या घरों में खोले गए ये स्कूल बच्चों के मानसिक विकास के लिए घातक होते हैं. अभिभावकों को आकर्षित करने के लिए इन स्कूलों के मालिक हर तरह के हथकंडे अपनाते हैं और यह झूठा भरोसा भी दिलाते हैं कि वे दूसरी तीसरी कक्षा के बाद उन के बच्चों को किसी बड़े स्कूल में दाखिला दिलवा देंगे. मोटीमोटी फीस लेने वाले ऐसे स्कूलों से बचना चाहिए.

वैसे भी बहुत छोटी उम्र में ही बच्चों को स्कूलों के भारी प्रतियोगितापूर्ण वातावरण में डालना उन के बालमन और कोमल भावनाओं को जानबूझ कर क्षति पहुंचाना है. यह ऐसे ही है जैसे बगीचे से कलियों को तोड़ कर बैठक में रख दिया जाए. उन का रंगरूप, गंध महक सब मरने लगेंगे. उन की स्वाभाविकता समाप्त हो जाएगी और बड़े हो कर स्वस्थ और प्रसन्न रहने की उन की अंदरूनी ताकत खत्म हो जाएगी.

बच्चे पढ़ाई में मन लगाएं और अनुशासित रहें, इस के लिए आप स्वयं ही काफी कुछ कर सकते हैं. छोटीछोटी बातों और छोटे पुरस्कारों के माध्यम से आप उनका भविष्य उज्ज्वल कर सकते हैं.

बच्चों को जल्दी और गलत स्कूलों में डालने से कुछ दूसरी मनोवैज्ञानिक समस्याएं भी उत्पन्न हो सकती हैं. अध्यापक या अध्यापिका चाहे जितने भी निष्पक्ष हों, उन के मन में दूसरे बच्चों की अपेक्षा कुछ बच्चों के लिए अधिक स्नेह या चिंता होती ही है. कोई बच्चा अच्छा लगता है, कोई नहीं. किसी पर ध्यान अधिक जाता है, किसी पर कम. अध्यापिका के इस भावनात्मक पक्षपात को बड़ा बच्चा तो सह लेता है, (हालांकि उसे भी यह मतभेद अंदर ही अंदर बहुत कचोटता है) पर तीनचार साल के बच्चों के लिए यह असहनीय हो जाता है. वह कुछ कह तो सकता नहीं है, इसलिए अंदर ही अंदर कुढ़ता और खीजता रहता है. धीरेधीरे यही उस के व्यक्तित्व की मूल विशेषता हो जाती है और बड़ा होतेहोते वह अनेक प्रकार की कुंठाओं का शिकार हो जाता है.

बाल मनोवैज्ञानिक इस बात पर एकमत हैं कि बच्चों को स्कूल जल्दी नहीं भेजना चाहिए. उन की पांच साल तक की आयु उन के सहज मानसिक विकास की होती है और उन पर कोई बाहरी बोझ डालना अनुचित होता है. इस से उन की कल्पनाशक्ति क्षीण होती है और स्वाभाविक अनुभव प्रक्रिया में बाधा पड़ती है. यह उम्र होती है देख कर सीखने की. ऐसे में उन के ऊपर किताबों, किताबी बातों का बोझ लादना या गणित व वर्णमाला के चक्रव्यूह में उन्हें फंसाना ठीक नहीं है. उन्हें तोतों की तरह रटाना भी, चाहे वह रोचक 'नर्सरी राइम' ही क्यों न हो, उन की मौलिकता पर रोक लगाने के समान है.

अकसर देखा गया है कि 10 से 15 साल के बच्चों में अनेक प्रकार की मानसिक विकृतियां, असंतुलन अथवा असामाजिकता पैदा हो जाती है. विश्लेषण कीजिए तो अधिकतर ये बच्चे वे ही होते हैं, जिन्हें आयु से पहले स्कूल भेज कर उन के विकास की सहज प्रक्रिया को रोक दिया जाता है. शोध के आधार पर अनेक पाश्चात्य देशों में इसे साबित भी किया जा चुका है. हिंसा की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

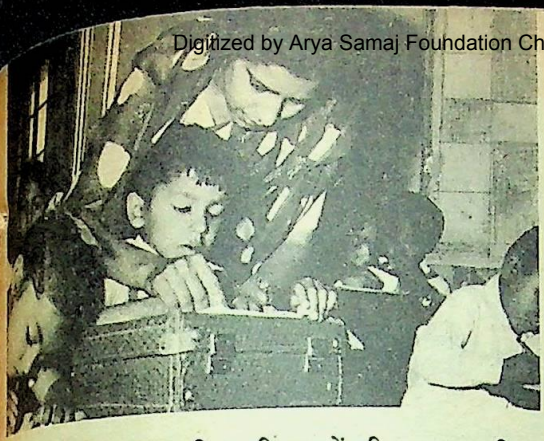

कक्षा के एक बच्चे को समझाती हुई अध्यापिका : क्या अन्य बच्चों की कोमल भावनाओं को इस से ठेस नहीं लगेगी.

प्रवृत्ति, हकलाहट तथा जिद की आदतें भी अकसर इसी के कारण पैदा होती हैं. ऐसे बच्चों के सामने आते ही एहसास हो जाता है कि इन के साथ शुरूशुरू में कोई न कोई गड़बड़ी जरूर रही होगी क्योंकि उन के व्यवहार और बातों में पूरी तरह से स्वस्थ प्रसन्नता और संतुलित बाल व्यक्तित्व का अभाव नजर आता है.

घर को स्कूल बना लेना भी ठीक नहीं है. बच्चों को हर घड़ी कुछ बताते या सिखाते रहने की कोशिश करना भी अनुचित है. हर वक्त नियमों और अनुशासन के पाठ पढ़ाते रहना भी ठीक नहीं है. बच्चे को परम आदर्श बालक बनाने की अपनी प्रबल इच्छा को भी रोकिए. इस से बच्चा गढ़ागढ़ा, संवरासंवरा तो जरूर लगने लगेगा, पर उस की मौलिकता और स्वाभाविकता समाप्त हो जाएगी. उस के अंदर धीरेधीरे हिंसा और विद्रोह की भावना भी पैदा होने लगेगी. वह अपने परिवार और परिवेश के प्रति नफरत का भाव ले कर बड़ा होगा. उस के अंदर छिपाव तथा दुराव की प्रवृत्ति भी पैदा हो सकती है. बच्चों की योग्यता को नापने का यह पैमाना भी तोड़ना पड़ेगा कि वही बच्चा अच्छा है, जो परीक्षाओं में अंक अच्छे लाए.

अब प्रश्न यह है कि बच्चों को पांच साल से कम की आयु में स्कूल न भेजें तो क्या नर्सरी स्कूलों को समाप्त कर देना चाहिए. समाप्त तो न करें, पर उन्हें घर का ही एक बड़ा रूप बना कर चलें. वे खेलकूद तथा स्नेहसद्भावना की बाल वाटिकाओं के रूप में काम करें, तभी उन की सार्थकता होगी. कठिनाई यह है कि इन स्कूलों में किताबी पढ़ाई, अंगरेजी और गणित पर ही ज्यादा जोर रहता है, ताकि वहां से निकले बच्चे बड़े स्कूलों में प्रवेश प्राप्त कर सकें.

विज्ञान तथा सामाजिक इतिहास की प्रक्रिया में संयुक्त परिवारों की सार्थकता टूटी है और लोग छोटेछोटे परिवारों में बंट गए हैं.

ऐसे में बच्चों के भविष्य की दिशा में मातापिता की जिम्मेदारियों का दायरा बढ़ा है. उन में बच्चों के सही विकास की चेतना भी पैदा हुई है. साथ ही उन्हें यह भी देखना होगा कि तीन वर्ष की आयु में ही बच्चों को स्कूल भेज कर वे उन्हें अपने से अलग तो नहीं कर रहे हैं. ऐसे में बच्चा अपने को कितना अकेला महसूस करने लगेगा और 'अंतर्मुखी' हो कर आगे बढ़ेगा.

बच्चे के साथ हर तरह के खेल खेलें, बाहर घूमनेफिरने भी जाएं. घर में खिलौनों आदि का प्रबंध कर के उसे व्यस्त रखें और दूसरे बच्चों से मिलनेजुलने को बढ़ावा दें. उसे सब से अनोखा बच्चा मान कर दूसरे बच्चों से दूर रखना भी उस के लिए घातक होगा.

उस की गलतियों की रोकथाम के लिए भी अपना कोई दंड विधान न बनाएं. उस का असर उलटा होगा. बच्चा साढ़े चार या पांच साल तक घर में ही सहज ढंग से बढ़े तो उस के बाद स्कूल जा कर वह प्रसन्न भी होगा. साथ ही बच्चे को स्कूल भेजने के पहले यह भी देख लें कि स्कूल मान्यता प्राप्त है या नहीं. स्कूल किस कक्षा तक है और उस में आगे चल कर स्कूल शिक्षा की तीनों मुख्य धाराओं (वाणिज्य, मानविकी एवं विज्ञान) की पढ़ाई का प्रबंध है या नहीं. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपना सौन्दर्य निखारिए एस्कमेल अपनाइए

एस्कमेल पिम्पल क्रीम

कील मुंहासों की परेशानी अब क्यों
सताए जब आप सही क्रीम अपनाएं. जी हां,
एस्कमेल – एक ख़ास फ़ार्मूलेवाली क्रीम,
जो मुंहासे होने न दे, भद्दे दाग़ पड़ने न दे.
एस्कमेल आपका सौन्दर्य निखारे. हरदम.

एस्कमेल सुन्दरी बनिए

© Eskayef Limited, Licensed user of Regd. Trade Mark ®

HTA 1897

SKF — एक एसकेएफ उत्पादन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्कूल जाने वाले बच्चे का आहार

लेख• शोभा छुटानी

"अभिनव, जल्दीजल्दी चलो. स्कूल बस निकल जाएगी." सुनीता अभिनव का स्कूल बैग कंधे पर डाले जल्दीजल्दी बड़े कदम उठाती हुई बस स्टाप की ओर बढ़ रही थी. कभी वह अभिनव को गोद में उठाती तो कभी उसे पैदल चलाती. वह हांफतीहाफंती बस स्टाप तक पहुंच ही गई.

"आज चार दिन बाद दिखाई दी. क्या अभिनव फिर बीमार हो गया था?" बस की प्रतीक्षा में खड़ी सौरभ की मां मालती ने सुनीता से पूछा.

"हां बहन, एक तो तबीयत ठीक नहीं रहती है अभिनव की, उस पर इतना सारा स्कूल का काम घर पर करने के लिए मिलता है. मुझे तो खुद भी समझ नहीं आता क्या करूं. यदि अधिक पढ़ाती हूं तो बीमार हो जाता है. बस, फिर छुट्टियां करनी पड़ती हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधिक पढ़ाई पर ध्यान देना होता है. इस प्रकार से वह सिलसिला बना रहता है. इस का स्वास्थ्य गिरता जा रहा है. स्वस्थ हो ही नहीं पाता है." सुनीता ने उत्तर दिया.

मालती ने फिर कहा, "लगता है, तुम अभिनव की खुराक का खयाल नहीं रखती हो या फिर खाना समय से नहीं खिलाती हो. शायद इसी लिए यह जल्दीजल्दी बीमार पड़ जाता है."

"नहीं बहन, ऐसी कोई बात नहीं है. मैं तो बहुत खयाल रखती हूं. देखो, अभी दोपहर 11.30 बजे मैं स्कूल में इस के लिए दूध की बोतल भी ले कर जाऊंगी."

"अरे, क्या अभी तक दूध बोतल से पीता है?"

"हां बहन, एक दूध ही तो ताकत की चीज है. अगर बोतल छुड़ा दूं तो दूध छूट जाएगा. फिर इस के शरीर में ताकत कहां से आएगी. तुम ही बताओ मैं क्या करूं. कुछ सलाह दो."

"वह देखो, स्कूल बस आ गई है," मालती ने कहा. दोनों ने बच्चों को बस पर चढ़ा दिया. मालती ने सुनीता से फिर कहा, "तुम घर का काम समेट कर करीब 10 बजे मेरे घर आना. आज मैं तुम्हें स्कूल जाने वाले बच्चे को स्कूल जाने से पहले तथा बाद में दी जाने वाली खुराक के बारे में बताऊंगी, जिस से बच्चे में खेलने तथा पढ़ने की शक्ति बराबर बनी रहेगी."

सुनीता जल्दी से घर का काम समेट कर मालती के घर पहुंच गई. मालती ने सुनीता से कहा, "10 मिनट तक तुम कोई पत्रिका पढ़ो. मैं अभी आती हूं."

सुनीता का मन पत्रिका में नहीं लगा. वह सोचती रही थी कि वह हरदम डाक्टरों से संपर्क रखती है. पर अभिनव को खिलानेपिलाने का ध्यान रखती है तब भी अभिनव न तो मोटा होता है और न ही स्वस्थ रहता है. डाक्टर भी जितनी फीस मांगते हैं, दे देती हूं. लेकिन मालती को मैं ने कभी डाक्टर के घर जाते नहीं देखा. न ही वह कोई दवा बाजार से खरीदती है. फिर भी इस का पुत्र सौरभ खेलने में चुस्त रहता है और पढ़ने में भी सब से आगे रहता है. न जाने यह क्या खिलाती है.

"सुनीता, देर तो नहीं हो गई. सूप बना रही थी, बस बन गया. सौरभ बड़े शौक से पीता है. इसलिए मैं ने सोचा, हम बातें करने बैठेंगे तो बच्चे का खाना पहले ही बना दूं. हां तो सुनीता, तुम बताओ, क्या पूछना चाहती हो. यही न कि तुम्हारा बेटा रोज बीमार हो जाता है. आज मैं तुम्हें कुछ विशेष बातें बताती हूं.

"माताएं उस दिन की प्रतीक्षा में होती हैं कि कब उन का बालक या बालिका स्कूल जाए. वैसे भी आजकल कम बच्चे पैदा करने का रिवाज है और फिर एक या दो बच्चे ही पैदा करने हैं तो उन को पढ़ाना भी अच्छे स्कूल में है, अच्छा खिलाना है. महंगाई है. महंगाई को देखते हुए पौष्टिक पदार्थ भी बच्चों को देने हैं.

"पहले जमाने में पांच वर्ष तक बच्चे को घर पर ही रखा जाता था. किंतु आजकल ढाई वर्ष के बालक को नरसरी स्कूल में भेज देते हैं. इसी हिसाब से माताओं को चाहिए बच्चों के बौद्धिक विकास का खयाल रखें तथा उन के खानपान का भी.

"अब तुम्हीं देखो, अभिनव चार वर्ष का है. चार वर्ष का ही मेरा सौरभ है. इतना तो बच्चों का स्वयं का बोझ न होगा, जितना उन की पुस्तकों का है. यही उम्र है जब बच्चों को खेलना भी है और पढ़ना भी.

आप का छोटा बच्चा स्कूल जाता है और कमजोर है. आप उस के स्वास्थ्य के प्रति बेहद चिंतित और परेशान रहती हैं, तो प्रस्तुत हैं उस के लिए सस्ते पौष्टिक आहार. जिन्हें आप घर में ही बना सकती हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

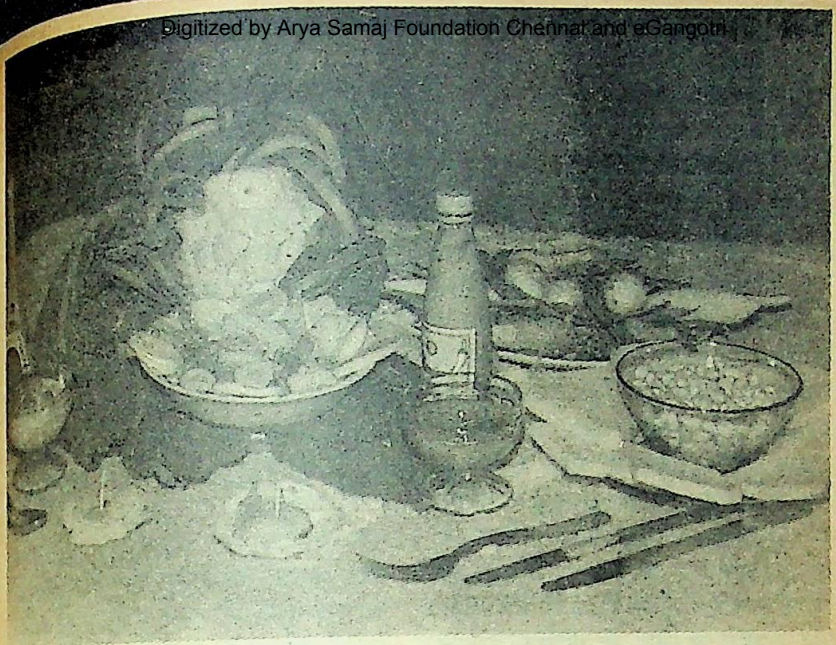

भोजन में हरी सब्जियां तथा सलाद का होना आवश्यक है.

"इस प्रकार माताओं को चाहिए कि बच्चे के शारीरिक तथा बौद्धिक दोनों तरह के विकास का ध्यान रखते हुए उन्हें पौष्टिक खुराक दें.

"बच्चे को गिलास से दूध पीने की आदत एक वर्ष के भीतर ही डाल देनी चाहिए, यानी दूध तो पिलाना चाहिए, मगर बोतल से नहीं. बोतल का भी एक नशा सा बन जाता है. और बच्चा ठोस पदार्थ खाने की ओर आकर्षित नहीं होता. इस से उस के शारीरिक विकास में बाधा आती है. धीरेधीरे दूध छुड़ा कर ठोस पदार्थ की मात्रा बढ़ाएं ताकि दूध छोड़ते समय बच्चे के विकास में रुकावट न आए.

"स्कूल भेजने पर क्रमशः तीन वर्ष से पांच वर्ष तक की आयु के बच्चों को प्रोटीन, कार्बोहाईड्रेट, विटामिन, खनिज और लवण उन के दैनिक भोजन में अवश्य मिलने चाहिए.

"अब प्रोटीन को लीजिए. अंडे, दूध, मछली, मांस, दाल, चना आदि में प्रोटीन मिलेगी. पश्चिमी देशों में अकसर माताएं अंडे, मांस मछली पर ही बच्चों की खुराक केंद्रित रखती हैं. फलस्वरूप पश्चिमी देशों के बच्चे चुस्त एवं गठीले होते हैं. भारतीय माताएं अकसर तली हुई मांड़ीदार चीजों पर जोर देती हैं. फलस्वरूप भारतीय बच्चे अकसर सुस्त, दुर्बल तथा चिड़चिड़े रहते हैं.

"अब यह आवश्यक नहीं कि आप अंडे, मांस या महंगे भोजन बच्चों को दें. आप दाल, दलिया, खिचड़ी आदि भांतिभांति रूप में बना कर उन्हें खिला सकती हैं. अलगअलग ढंग से बनाने व परोसने से भी बच्चों को ये चीजें अच्छी लगती हैं.

"कार्बोहाईड्रेट भी अत्यंत आवश्यक तत्त्व है. इस से शरीर में ऊर्जा (शक्ति) उत्पन्न होती है. प्रोटीन के साथसाथ कार्बोहाईड्रेट यदि शरीर में जाए तो शरीर सुंदर व सुडौल रहता है. यह तत्त्व आलू, अनाज, शक्कर इत्यादि से मिलता है. हरे पत्ते वाली सब्जियां पालक, मेथी, गाजर चुकंदर, सलाद के पत्ते भोजन के साथ खाने से पाचन क्रिया तेज होती है.

"वसा भी बच्चों के लिए उतनी ही आवश्यक है जितने बाकी सब तत्त्व. वसा वैसे तो शरीर को मोटा करती है, लेकिन यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खेलने वाले बच्चों पर कोई असर नहीं करती. घी, मक्खन, मांस में सब से अधिक वसा मिलेगी. बच्चे वसायुक्त वस्तुएं अकसर खाते हैं और खेलकूद कर हजम कर लेते हैं. इसलिए खाने में वसा का भी होना आवश्यक है.

"विटामिन भी शरीर के लिए बहुत, जरूरी हैं. हरी सब्जियां, गाजर, आम में विटामिन बहुत होते हैं. चावल, मूंग, साबुत अनाज में विटामिन 'बी' मिलता है. विटामिन 'सी' नीबू, दाल के अंकुर, आंवला,अमरूद, बंदगोभी, संतरे में मिलता है. कलेजी, दूध, मछली के तेल में विटामिन 'डी' मिलेगा. अकसर सर्दी के दिनों में अधिक भागदौड़ करने वाले बच्चों का थकान से शरीर दुखने लगता है. उस समय शुद्ध मछली के तेल से मालिश करनी चाहिए.

"आजकल बच्चे मातापिता के साथ टेलीविजन देखने बैठते हैं. जिन खाने की चीजों के विज्ञापन देखते है, उन्हें खाने के लिए जिद करते हैं, जैसे मैदे की बनी चीजें, बिस्कुट, शीतलपेय, शरबत, पानमसाला, मैदे के नूडल्स, मसाले इत्यादि. इन सब चीजों को काफी दिनों तक ठीक रखने के लिए इन में कुछ पदार्थ मिलाए जाते हैं, जो ज्यादा तादाद में खानेपीने से बच्चों के शरीर में खून बनने की क्रिया में रुकावट पैदा करते हैं.

"इसलिए कोशिश कर के बिस्कुट घर में बनाएं. नीबू, संतरे तथा गुलाब का शरबत भी घर पर ही तैयार करें. उन में प्रीजर्वेटिव न डालें. टमाटर सास भी घर की बनी, बिना प्रीजर्वेटिव के फ्रिज में महीने भर रह सकती है. डबलरोटी भी महीन आटे की खुद बनाएं. बच्चों को बाजार की डबलरोटी बहुत कम खिलाएं. यदि बच्चा जिद करे तो सेंक कर दें. बच्चों को ताजा फल तथा फलों के रस की आदत डालें.

"अब मैं तुम्हें कुछ बातें नाश्ते, दोपहर के खाने तथा शाम व रात के खाने के बारे में बताऊंगी. जरूरी नहीं कि तुम बच्चे को महंगा खाना ही खिलाओ. साधारण लेकिन संतुलित खाना बना कर खिला सकती हो.

पौष्टिक आहार घर में ही बनाएं

सोयाबीन का दूध: सोयाबीन को भिगो दीजिए. मसल कर उस के छिलके उतार दीजिए. थोड़ा पानी मिला कर मिक्सी में चलाएं और छान लें. गरम या ठंडा पिलाएं.

नारियल का दूध : ¼ नारियल (ताजा) एक गिलास पानी मिक्सी में डाल कर चलाएं. पिस जाने पर छान लें. इच्छानुसार चीनी व छोटी इलायची डाल कर पिलाएं.

खसखस, चार मगज,सफेद तिल का दूध: एक चम्मच सफेद तिल, एक चम्मच चार मगज, दो छोटी इलायची, तीन छोटे चम्मच चीनी लें. पहले खसखस को बारीक छलनी से छान लें. मिट्टी झड़ जाएगी. जितने पानी में डूब जाए उतने में खसखस भिगो दें. इसी प्रकार चार मगज तथा तिल भी रात भर के लिए भिगो दें. सब को एक साथ सिल पर बारीक पीस कर तीन छोटे गिलास पानी मिलाएं. पौष्टिक दूध तैयार है. स्वाद के लिए छोटी इलायची तथा चीनी मिला लें.

दाल के आटे की रोटी : उड़द, चना या मूंग की धुली हुई दाल बना लें या खाने में बच जाए उस का इस्तेमाल कर लें. दाल में आटा गूंध लें. पानी न मिलाएं. थोड़ी हरी धनियां, प्याज कुतर कर नमक, काली मिर्च मिला कर धीमी आंच पर रोटी बनाएं. घी लगा कर खाएं.

पौष्टिक खिचड़ी : आधी कटोरी चावल, आधी कटोरी मूंग की धुली दाल, 50 ग्राम पत्ता गोभी बारीक कुतरी, दो बारीक कुतरी हुई गाजर, 50 ग्राम मटर छिली हुई, दो छोटे टमाटर, एक छोटा प्याज, इच्छानुसार नमक, काली मिर्च.

सब को मिला कर थोड़े से पानी में खिचड़ी बनाएं. जब एक कनी रह जाए तो एक प्याला दूध, दो बड़े चम्मच मक्खन डाल कर पकाएं. ठंडा कर के दही के साथ परोसें. इच्छानुसार एक अंडा फेंट कर या सोयाबीन का दूध मिला सकते हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

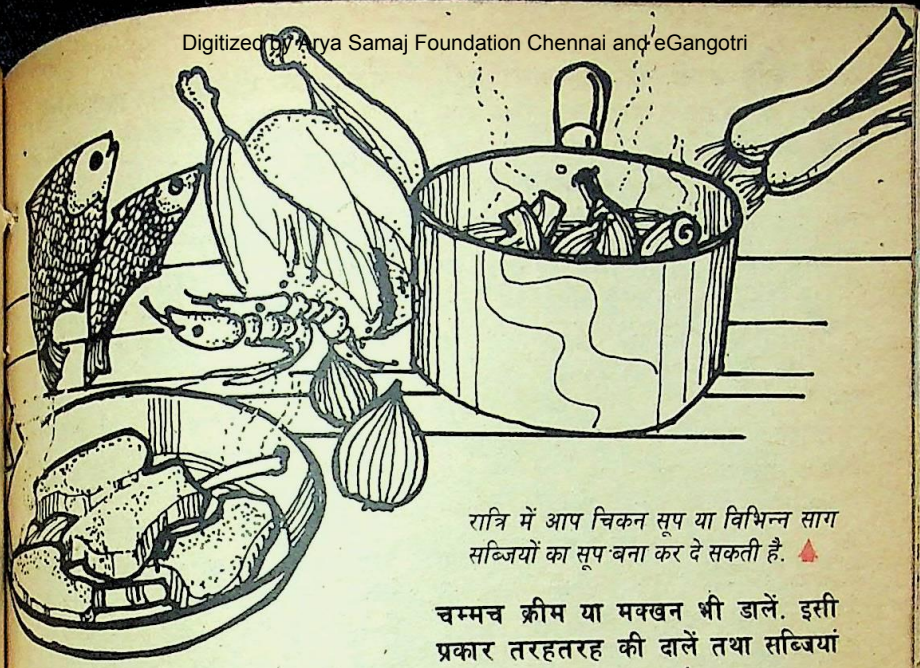

रात्रि में आप चिकन सूप या विभिन्न साग सब्जियों का सूप बना कर दे सकती है.

पौष्टिक रोटी : तीन या चार उबले, आलू, पनीर का पानी, हरी धनिया, प्याज. इच्छा हो तो अंडा भी डालें. 250 ग्राम आटे में अंडा, आलू डाल कर पनीर के पानी से गूंधें. फिर पौष्टिक रोटी बनाएं.

पौष्टिक भाजी : 100 ग्राम फ्रेंचबीन, 100 ग्राम गाजर, 100 ग्राम आलू, 100 ग्राम पनीर, 50 ग्राम मक्खन, 20 ग्राम खुंबी, 10-10 ग्राम पालक, मेथी. सब सब्जियों को बारीक काट कर प्रेशर कुकर में 5 मिनट तक भाप दें. अब उस में पनीर मिला दें. यदि बच्चा पनीर न खाए तो अंडा फेंट कर मिला दें. अब गरमगरम सब्जी में मक्खन डाल कर परोसें. नमक, काली मिर्च मिला दें. इसी प्रकार दालें तथा सब्जियां बनाएं, जिन्हें अधिक भूनना या तलना न पड़े.

पौष्टिक सूप : एक बड़ा चम्मच दाल या काले चने का पानी, एक उबला आलू, एक गाजर, 25 ग्राम घीया, यदि इच्छा हो तो एक अंडा, दो टमाटर.

काले चने रात को भिगो दें. उबाल कर उसी पानी में बाकी सब्जियां डाल कर भाप दें. मिक्सी में डाल कर चलाएं. नमक, काली मिर्च डाल कर पौष्टिक सूप परोसें. एक चम्मच क्रीम या मक्खन भी डालें. इसी प्रकार तरहतरह की दालें तथा सब्जियां अदलबदल कर सूप बनाएं.

पनीर का पानी यदि बच जाए तो दाल पनीर के पानी में पकाएं.

खाने के समय, हरा खीरा, खरबूजा, पपीता, मूली, प्याज, गाजर, सलाद के पत्ते का सलाद अवश्य दें.

आइसक्रीम : तीन अंडे, एक प्याला मलाई, छः बड़े चम्मच चीनी, एक चीकू, आधा आम, एक केला, आधा संतरा.

अंडे तोड़ कर चीनी मिला कर फेंटिएं. सारा फल बारीकबारीक काट कर मिला दें. अब मलाई डाल कर मिलाएं. दस मिनट तक फ्रीजर में रखें. फलदार आइसक्रीम तैयार है.

पौष्टिक खीर : एक लीटर दूध, ¼ कटोरी चावल, तीन गाजर, एक कटोरी चीनी, किशमिश, बादाम इच्छानुसार.

दूध में चावल पका लीजिए. गाजर कद्दूकस कर के मिला दीजिए. अब चीनी मिला दीजिए. किशमिश, बादाम मिला कर परोसिए.

अब आप को महंगे व सस्ते भोजन की छोटी सी तालिका बना कर दिखाते हैं. आप स्वयं ही निर्णय कर लेंगे कौन सा भोजन ठीक है. वैसे दोनों ही एक जैसे पौष्टिक हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महंगे व सस्ते भोजन का तुलनात्मक अध्ययन

महंगा	सस्ता
सुबह का नाश्ता भीगे हुए दो बादाम सिल पर रगड़ कर एक चम्मच शहद में दें. ऊपर से दूध का गिलास कार्न फ्लेक्स, घी में भून कर दलिया और दूध भी दे सकते हैं.	**सुबह का नाश्ता** आधी कटोरी अंकुरित काले चने तथा दो चम्मच गुड़ का चूरा मिला कर दें. यदि गुड़ अच्छा न लगे तो शहद दें. सर्दी में दो खजूर दें. सोयाबीन या नारियल का दूध दें. अंकुरित अनाज में लोबिया, साबुत मूंग मोठ, मंगूफली, अदलबदल कर दें.
स्कूल में भोजन (आधी छुट्टी में) एक छोटा परांठा, एक अंडे की भुजिया या एक तरफ सिका आमलेट, कोई भी मौसमी फल जैसे संतरा, सेब, चीकू, नाशपाती, केला.	**स्कूल में भोजन (आधी छुट्टी में)** दाल के आटे का परांठा या पनीर आलू का परांठा, बेसन में दही मिला कर बेसन का चिलड़ा, कच्ची गाजर खुंबी की भुजिया, उबले आलू की भाजी.
घर पर दोपहर का भोजन फलों का ताजा रस, कोई भी मांसाहारी भाजी, दूध, अंडे की खिचड़ी, दही, लस्सी, चावल, दाल, हरी सब्जियों की पौष्टिक खिचड़ी या ड्राई फ्रूट की खिचड़ी.	**घर पर दोपहर का भोजन** गाजर, टमाटर का रस, नीबू की शिकंजी अनन्नास, संतरे या गुलाब का शरबत. सर्दी में चने का सूप, साबुत दानों में पकी पौष्टिक खिचड़ी, दाल, चावल, सोयाबीन तथा गेहूं के मिश्रित आटे की रोटी.
शाम को दूध के साथ दूध के साथ गाजर, आंवले का मुरब्बा या घर के बने बिस्कुट.	**शाम को दूध के साथ** नारियल, चार मगज या सोया, दूध के साथ खजूर या केला व बिस्कुट.
रात्रि में चिकन सूप, मटन सूप, आलू अंडे के मिश्रण से तैयार कोई भी भाजी, रायता दही का, चावल, रोटी, आइसक्रीम. मौसमी फलों के साथ सलाद.	**रात्रि में** दाल के पानी में तैयार सब्जियों का मिश्रित सूप, हरी सब्जियां, आलू अरबी की चाट, फ्रेंचबीन, घीया, खुंबी की सब्जी. पपीता, खीरा, गाजर, मूली, सलाद के पत्ते.

"आप इस तालिका से अदलबदल कर भोजन को स्वादिष्ट बना कर बच्चों को खिलाएं. घर में स्वयं स्क्वैश जैम आदि बनाएं. कम से कम डबल रोटी (बाजारी) दें. इस प्रकार हलके तथा पौष्टिक आहार से बच्चे मानसिक तथा शारीरिक रूप से हृष्टपुष्ट रहेंगे. जिगर ठीक से काम करेगा. खून भी बनेगा. वे बीमारी से बचेंगे. फुरतीले व गठीले बनेंगे."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेख •

नीता श्रीवास्तव

विवाह पूर्व के संबंध पत्नी को न बताएं

ज्यादातर लड़कियों को उन के बड़े बुजुर्गों अथवा सहेलियों द्वारा यह हिदायत दी जाती है कि वे न तो पति के सामने अपने अतीत का जिक्र छेड़ें, न ही अपने सहपाठियों की चर्चा करें. अगर किसी मर्द दोस्त या लड़के से कभी कोई मामूली से संबंध रहे भी हों तो पति के सामने कभी भूल कर भी उन्हें न स्वीकारें तथा पूर्ण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समर्पण की भावना से पति के साथ गृहस्थ जीवन में प्रवेश करें. फिर पति को संपूर्ण सहयोग दे कर उसे ज्यादा से ज्यादा सुख देने का प्रयास करें.

और आम तौर पर लड़कियों को इस सीख पर अक्षरशः अमल करते ही पाया गया है.

लेकिन अफसोस इस बात का है कि इस संबंध में हमारे यहां पुरुष को न तो उस के परिवार और न ही उस की मित्रमंडली द्वारा कोई सलाह दी जाती है, जबकि इस बात को अच्छी तरह समझा जाता है कि नारी पुरुष से ज्यादा संवेदनशील है, उस का भी दिल है. वह भी पति से पूर्ण समर्पण की चाह रखती है. उस की भी तमन्ना होती है कि उस के पति के जीवन में वह प्रथम स्त्री के रूप में प्रवेश करे और पति के प्रेम पर उस का एकाधिकार हो.

मगर पुरुष आज भी स्वच्छंद है. वह कुछ भी करे, उस पर पत्नी का कोई भी कानून लागू नहीं होगा. पति यही मानता है और पति की यही धारणा अधिकांश दुखी विवाहित जीवनों का मूलभूत कारण है.

आज जहां एक तरफ विवाह करने की उम्र बढ़ गई है, वहीं दूसरी तरफ युवकयुवतियों का संपर्क क्षेत्र भी बढ़ा है. इस दशा में आपसी आकर्षण या लगाव हो जाना आश्चर्य की बात नहीं है. फिर भी इन संबंधों को विवाह की सीमा तक ले जाना अकसर संभव नहीं हो पाता. कुछ न कुछ अड़चनें आ ही जाती हैं और लड़के को अपने अभिभावकों द्वारा पसंद की हुई लड़की से ही शादी करनी पड़ती है. ऐसी दशा में उस के लिए बीती बातों का दिल से निकाल देना ही बेहतर होता है.

पर होता है इस से एकदम उलटा. वह विवाह के बाद पहली मुलाकात में ही अपनी पत्नी के सामने अपने पूर्व संबंधों को प्रेमलीला बना कर पेश करना शुरू कर देता है. किस तरह उस से दूसरी लड़की प्यार करती थी, पर फलांफलां मजबूरी के कारण उसे उस विवाह के लिए सहमति देनी पड़ी.

लड़की जो दुलहन बनी न जाने कैसेकैसे सपने आंखों में संजोए बैठी होती है, पति के मुंह से उस की प्रेमकथा सुनते ही उस के सपनों का राजकुमार गायब हो जाता है और सुहागरात को ही उस के दिल के आंगन में अंधेरा छा जाता है.

मंजु जब ससुराल से विदा हो कर आई तो वीरान चेहरा लिए एकदम उदास थी. मैं उसे उस दशा में देख कर हैरान रह गई और सोचने लगी, मेरी हंसमुख सहेली को क्या हो गया है?

एक दिन मौका पा कर मैं ने उसे कुरेदना चाहा, "बड़ी उदास बैठी है. क्या अपने उन की याद आ रही है?"

मेरी बात सुन कर वह न तो शरमाई, न ही मुसकराई, बल्कि झुंझला पड़ी, "न तो मुझे उन की याद आती है, न उन पर प्यार आता है, बल्कि मुझे तो उन पर सिर्फ दया आती है. घरवालों की खुशी की खातिर बेचारे का दिल टूट गया."

सोचिए, क्या इन स्थितियों में दांपत्य सुख मिल सकता है? शारीरिक भूख तो जानवर भी शांत कर लेते हैं. कम से कम इनसान होने के नाते एक पति को अपनी पत्नी के प्रति अपने फर्ज को हमेशा याद रखना चाहिए. प्यार किया लड़के ने. कायरता दिखाई लड़के ने. लालच कर के स्वार्थ पूरा किया लड़के ने. और सजा भुगते निर्दोष

प्रायः पत्नी के समक्ष विवाह पूर्व के अपने प्रेम संबंधों की बढ़ाचढ़ा कर चर्चा कर के पुरुष अपनेआप को गौरवान्वित समझते हैं. ये चर्चाएं पतिपत्नी के बीच दीवार खड़ी कर सकती हैं, जिस से वैवाहिक जीवन दूभर हो सकता है. इन राजों को राज ही रहने दें तो अच्छा है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

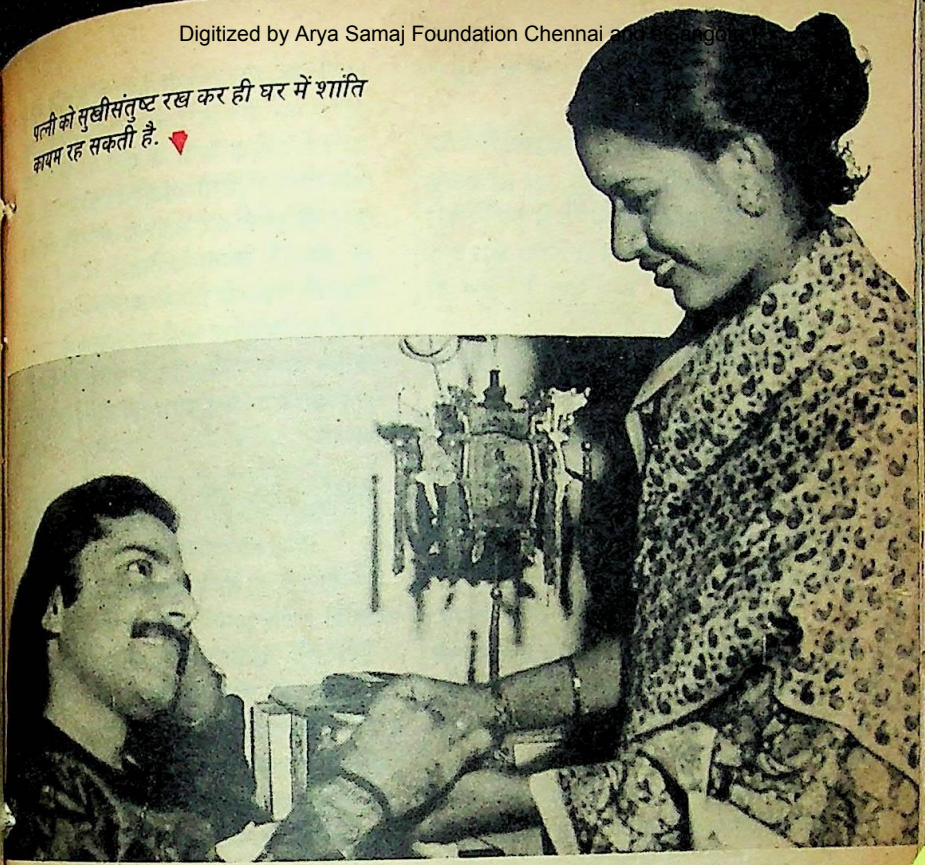

पत्नी को सुखीसंतुष्ट रख कर ही घर में शांति कायम रह सकती है.

लड़की, वह भी मन ही मन घुटते हुए. पति की अनचाही पत्नी बन कर भी वह पति की सेवा क्यों करती रहे? कभी वह विद्रोह कर दे तो?

कई बार लड़का समझदार होता है. वह विवाह वेदी पर बैठ कर पुराने प्रेम संबंधों की आहुति डाल देता है और पत्नी के प्रति वफादार होने के लिए वचनबद्ध भी हो जाता है. पर उस के घर वाले शादी के बाद दुलहन को चैन से नहीं जीने देते.

मेरे चचेरे भाई को कुंआरी बहन का वास्ता दे कर चाची ने प्रेम विवाह करने से रोक दिया और बिरादरी की लड़की से तुरतफुरत विवाह कर दिया. भाभी के रूप व व्यवहार से प्रभावित हो कर भैया भाभी का काफी ध्यान रखने लगे. फलस्वरूप बेचारी भाभी को उठतेबैठते चाची के ताने मिलने लगे, "हमारी जिद से आ पाई हो इस घर में. वरना उसे तो शानो ही शानो नजर आती थी."

भाभी परेशान. वह सोचती, "आखिर ये सब पुरानी बातें करकर के हमें दूर क्यों करना चाहते हैं? आए दिन देखने में आता है कि ससुराल वाले लड़के की किसी दोस्त लड़की या सहकर्मियों की चटपटी चर्चाएं कर कर के यह सिद्ध करने की कोशिशें करते हैं, "आप से तो मजबूरी में शादी की है वरना इसे तो वह पसंद थी."

और पतिपत्नी के बीच मनमुटाव करने की रहीसही कसर दोस्त पूरी कर देते हैं. मेरे पति बहुत ही अच्छा गाते हैं. खास तौर से विरह गीत.

अकसर उन के एक दोस्त से मैं यही सुनती रही, "आप तो चोट खाए हुए हैं" या "लेबोरेटरी में दो ही तो असफल प्रेमी हैं – एक आप और एक प्रपन्न."

इसी तरह की ऊटपटांग बातें सुन कर मैं सोचने पर मजबूर हो गई, क्या इन का यह कहना वाकई सच है कि "तुम से पहले मैं प्रेम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विवाह आदि के बारे में सोचने की फुरसत ही नहीं निकाल पाया."

इन के गंभीर स्वभाव के कारण मैं स्पष्ट रूप से कुछ भी नहीं पूछ पाती. वह तो अच्छा हुआ कि मेरी असाधारण चुप्पी से इन्होंने मेरी गलतफहमी का अंदाजा लगा लिया और एक दिन पूछ ही लिया, "बात क्या है? तुम यों गुमसुम क्यों रहती हो?"

मैं ने इन के दोस्त से सुनी बातें दोहरा दीं. यह मुझे बच्चों की तरह दिलासा देने लगे, "पागल, ऐसी कोई बात नहीं है. बकवास करते हैं वे तो. मैं कोई असफल प्रेमी नहीं हूं. बल्कि मैं तो सफलतम प्रेमी हूं. मैं ने तुम्हें जो पा लिया है. तुम्हीं मेरी पहली और आखिरी प्रेमिका हो."

सचाई में ताकत थी. मुझे जिंदगी पुनः प्यारीप्यारी लगने लगी. पर ऐसा सच बोलने का साहस कितने पति करते हैं? कितने पति अपनी पत्नी के साथ ऐसा बराबरी का उदार व्यवहार करते हैं?

अधिकतर देखा गया है कि पुरुष पत्नी के सामने एक से अधिक प्रेमिकाओं के साथ रहे अपने संबंधों को इस तरह बखानते हैं, मानो पौरुष की एकमात्र यही कसौटी है.

देरसवेर पत्नी के सेवाभाव और समग्र समर्पण से पति का हृदय उस से बंध ही जाता है. इसलिए यह सोचना कि शादी से पहले की किसी प्रेमिका का खयाल मन में उसी शिद्दत से बना रहेगा, गलत है. पुरुष के शादी करते ही पूर्व प्रेमिका भी अपना स्थायी सहारा खोज लेती है. उस दशा में तो पुरुष न घर का रहता है, न घाट का.

यह भ्रम पालना कि पुरुष होने के कारण चाहे जहां संबंध जोड़ सकता है, गलत है. संबंधों की भी एक मर्यादा, एक हद होती है. अनैतिक संबंध सजाओं से भरा होता है. जो बेइज्जत व गिरा हुआ आदमी होता है, वही ऐसे संबंधों में दिलचस्पी लेता है. कहीं भी जाइए, लौट कर घर ही आना है पत्नी की बांहों में. फिर यह व्यर्थ की भटकन और पतन क्यों?

जो कल था, वह बीत गया. आगे की सारी जिंदगी तो पत्नी के साथ ही गुजारनी है. शादी कर के पति पत्नी पर कोई एहसान नहीं करता, बल्कि पत्नी के आने पर ही पति की वास्तविक जिंदगी व्यवस्थित होती है. लड़की खुद भी शादी कर के पुरुष को बहुत कुछ देती है. वह भी अपना व्यक्तित्व ले कर उस की जिंदगी का एक हिस्सा बनती है तो पति का फर्ज बनता है कि पत्नी को खुश रखे और उसे अपना भरपूर अनुराग दे जहां तक हो सके, मन को मार कर स्वयं को पत्नी के अनुकूल बनाए.

पत्नी को संतुष्ट रखें

पति को सोचना चाहिए कि मात्र नारी हो जाने से ही तो पत्नी निकृष्ट नहीं हो जाती. आज पुराने जमाने की गाय सरीखी स्त्री तो रही नहीं. अगर पत्नी विद्रोह पर उतर आए तो पति का जीना हराम कर दे.

जब कोई भावुक पत्नी विद्रोह पर उतारू हुई है तो उस परिवार को कोई नहीं बचा पाया है. इसलिए शादी से पहले मांबाप को लड़के की होने वाली पत्नी के प्रति पूरी तरह आश्वस्त हो जाना चाहिए कि वह उस से शादी कर के वास्तव में खुश होगा.

घर वालों को लड़के को यह यकीन दिला देना चाहिए कि वह पत्नी को कभी भी अपने से नीचे दरजे का न माने, क्योंकि वह खुद सुख के क्षणों में नहीं चाहेगा कि पत्नी दबी सहमी रहे. अपमानित या हीन करार दी गई पत्नी के साथ स्वप्न में भी दांपत्य सुख की कल्पना करना हास्यास्पद होगा. स्त्री से जबरदस्ती प्रेम कभी भी नहीं कराया जा सकता और बिना प्रेम के पतिपत्नी के संबंध का कोई अर्थ नहीं रह जाता.

कुंआरा जीवन अपरिपक्व और फक्कड़ जीवन होता है. पर इस वक्त तक पुरुष का सर्वांगीण विकास हो चुका होता है. उस की अपनी प्रतिष्ठा, मान तथा पद होता है. पति स्वयं जानता है कि पत्नी उस के घर की इज्जत है और अगर वह अपनी पत्नी को असंतुष्ट रखता है तो उसी की हंसी होगी. विवाह के बाद अधिकांश भारतीय पतियों की धुरी तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पत्नी ही होती है, इसलिए उसे मानसिक तनाव देने से क्या फायदा?

किसी भी पति को अपनी पत्नी को संपूर्ण समर्पण भाव से स्वीकारना चाहिए. जो बीत गया है उसे भुलाने में ही भलाई है. जिसे प्रेम समझा जा कर ढिंढोरा पीटा जा रहा है, वह मात्र आकर्षण होता है. इसलिए विवाह के बाद स्वयं तो कभी भूल कर भी विवाह पूर्व के संबंध पत्नी को न बताएं, बल्कि अगर आप के रिश्तेदार, परिवार वाले या दोस्त भी आप की पत्नी के सामने आप के पूर्व संबंधों का जिक्र करें तो आप सख्ती से उन का विरोध करें. साथ ही स्पष्ट कर दें कि पतिपत्नी के बीच दीवार खड़ी करने की कोशिश न करें.

पत्नी भी भावनामयी है. अगर पति के सुख के क्षणों में पत्नी उसे सहयोग करने को राजी न हो तो पति पर क्या गुजरेगी? इसलिए पत्नी को जीतना है तो हृदय से जीतिए. मान कि पति के विवाह पूर्व संबंधों को जान कर भी पत्नी न तो उसे घर से निकाल सकती है और न ही खुद उस का घर छोड़ कर जा सकती है पर उस के मन में पति की जो उजली छवि होती है, वह हमेशा के लिए धुंधला जाती है. वह घर में रह कर भी मन से पति के पास कभी नहीं रह पाएगी. इस दशा में पत्नी से कुछ पाने या मांगने की उम्मीद करना मूर्खता नहीं तो और क्या है?

हमेशा यह मान कर चलिए कि मुसीबत में आप के पैसे और आप की पत्नी के सिवा कोई भी साथ निभाने वाला नहीं है. इसलिए इतने प्यारे सहारे पर मात्र झूठा रोब जमाने के लिए विवाह पूर्व प्रेम की सच्ची झूठी कहानियां सुनाते रहने से क्या फायदा?

आप पत्नी को सुखी संतुष्ट रख कर ही घर की शांति पा सकते हैं. कभी भूल कर भी आप पत्नी के मुंह से परपुरुष का जिक्र नहीं सुनना चाहेंगे तो आप भी पत्नी के सामने शादी से पहले के संबंधों को न दोहराएं. अतीत को भूल कर पूरी ईमानदारी के साथ पत्नी को, सिर्फ अपनी पत्नी को प्यार कीजिए फिर देखिए, जिंदगी कितनी खूबसूरत बन जाती है. ●

गर्भावस्था के दौरान बवासीर

ठीक उसी वक्त, जब आपको अपनी सेहत की ख़ास देखभाल करनी चाहिये, आपको बवासीर की शिकायत हो सकती है, जोकि गर्भावस्था में आमतौर से हो जाती है.

बवासीर के पहले लक्षण हैं जलन, खुजली, शौच के समय दर्द, और कभी-कभी खून आना.

इन सभी लक्षणों को बिना दर्द के, जल्द और असरदार ढंग से दूर करता है प्रिपरेशन एच.

प्रिपरेशन एच के अनोखे फ़ॉर्म्युला में सिर्फ़ प्राकृतिक तत्व हैं, जिनसे किसी भी साइड इफ़ेक्ट या नुक्सान की आशंका नहीं होती. ख़ास तौर से इस नाजुक समय में, जब आप किसी प्रकार का ख़तरा नहीं चाहतीं.

माँ बनने के सुख में कोई भी बाधा न आने दीजिये.

GM-132/87 HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रुद्राक्ष में कोई शक्ति नहीं है

लेख●ब्रजगोपाल राय 'चंचल'

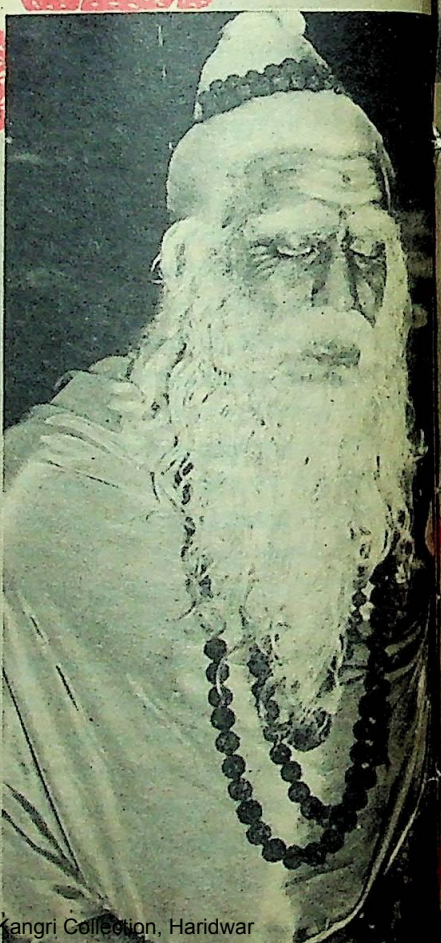

हमारे देश में अंधविश्वास ही अंधविश्वास है. बिल्ली के रास्ता काट जाने और छींक देने से अपशकुन माना जाता है. दायां अंग फड़कने और मुरदा देख लेने से यात्रा शुभ होने के शकुन माने जाते हैं. ऐसे ही अंधविश्वासों की यदि सूची तैयार की जाए तो एक महाग्रंथ तैयार हो सकता है. ये सभी अंधविश्वास हर युग में, हर देश में थे और आज भी हैं.

अंधविश्वास मनुष्य के बौद्धिक और वैज्ञानिक विकास के साथसाथ कम होते जाते हैं. प्रत्येक अंधविश्वास को तोड़ने और समाप्त करने में वैज्ञानिकों, खासतौर पर समाज सुधारकों को उस की भारी कीमत चुकानी पड़ी है. हालांकि पश्चिमी देश भी आज पूरी तरह अंधविश्वासों से मुक्त नहीं हुए हैं, फिर भी हमारा देश, विशेष रूप से हिंदू समाज अंधविश्वासों के मामले में अभी भी पुरानी मान्यताओं को अपनाए हुए हैं.

वृक्ष, सर्प, मूर्ति, समाधि एवं खंडहरों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

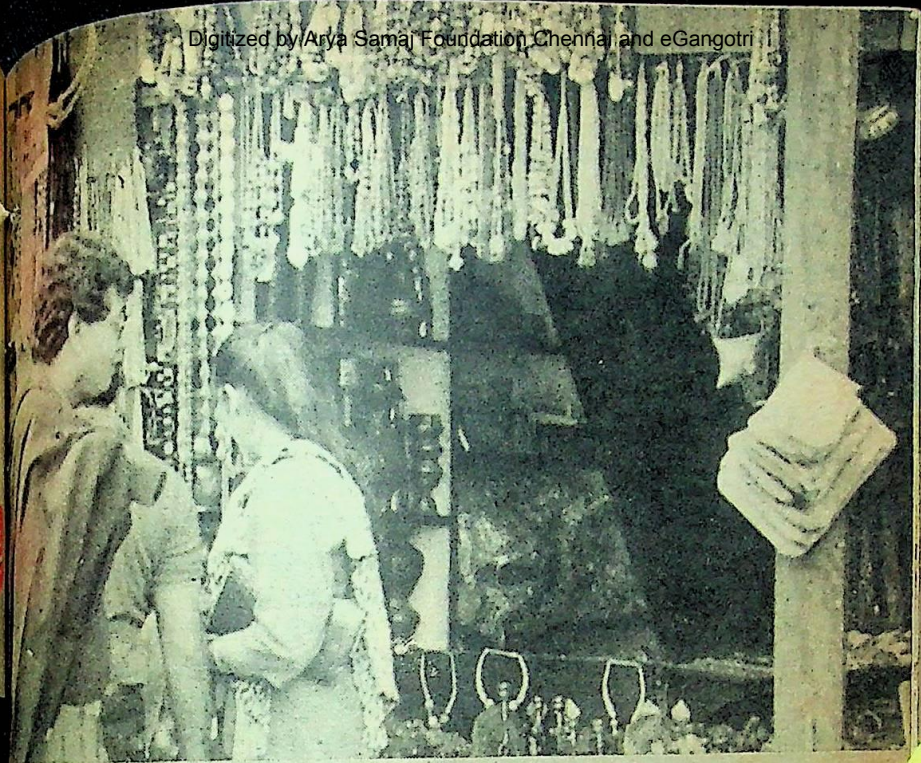

रुद्राक्ष की दुकान : इस के व्यापार में फायदा ही फायदा जरूरत है सिर्फ मनगढ़ंत किस्से कहानियां सुना कर ग्राहक को ठगने की. (ऊपर).

रुद्राक्ष धारण किए हुए साधु : इच्छाओं पर विजय प्राप्त करने का दावा करने वालों की भी कोई इच्छा शेष रह गई है? (बाएं)

वृक्षों में वट, पीपल, अशोक, नीम और तुलसी की झाड़ी के प्रति अंधभक्ति पुराणों तथा संस्कृत के नाटकों तक में मिलती है. चरक, सुश्रुत संहिता, माधव निदान, निघंटु एवं अष्टांगहृदयम् जैसे आयुर्वेदिक ग्रंथों में वृक्षों की औषधीय महत्ता दर्शाने वाले कई अतिरंजनात्मक (बल्कि अविश्वासपूर्ण) वर्णन हैं.

वृक्षों का मानव जीवन में निरंतर उपयोग उन की उपयोगिता का परिचायक है. किंतु वृक्षों के साथ हमारा प्राण संबंध होते हुए भी उस के लिए बहुत ज्यादा अंधविश्वास भरी

वृक्षादि को पूजने का अंधविश्वास हजारों वर्ष प्राचीन है. "वृक्षों में देवताओं का निवास है" यह धारणा वैदिक युग से हमारे देश में चली आ रही है और वेदों में ऐसे कई मंत्र भी हैं.

श्रम किए बगैर धन कमाने की कला हमारे धर्म के धंधेबाजों को विरासत में मिली है और इस में उन्हें महारत भी हासिल है. रोज नएनए तरीके ईजाद कर लोगों को बेवकूफ बनाया जाता है. सब मनोरथों को पूर्ण करने वाले रुद्राक्ष का धंधा नया तो नहीं पर इसी शृंखला की एक कड़ी है जिस में बड़ेबड़े फंस जाते हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विचारधारा निश्चय ही जहालत है.

इसी तरह रुद्राक्ष के प्रति भी हमारे समाज में बहुत ज्यादा अंधविश्वास हैं. यहां तक कि रुद्राक्ष की अंधभक्ति की हमारी दिवंगत प्रधान मंत्री इंदिरा गांधी तक शिकार रही हैं. वह आनंदमयी मां द्वारा प्रदत्त एक रुद्राक्ष माला को आखिरी वक्त तक गले में पहने रही थीं.

इस संदर्भ में दूसरी चौंका देने वाली बात यह है कि बाबाओं, संन्यासियों, धर्माचार्यों, गुरुओं एवं झाड़नेफूंकने वालों के निरंतर प्रचारप्रसार के कारण इस मामूली वृक्ष के बीज से करोड़ों रुपयों का व्यवसाय धर्म के धंधेबाज कर रहे हैं. धर्म के धंधेबाजों द्वारा जनता की खूनपसीने से कमाई दौलत के हड़पने से भी अधिक निंदनीय बात यह है कि वे समाज में अंधविश्वास का विष फैला रहे हैं.

रुद्राक्ष 'रुद्र' और 'अक्ष' इन दो शब्दों से मिल कर बना है. धार्मिक मान्यताओं के अनुसार रुद्र शिव का पर्याय है. 'अक्ष' शब्द का अर्थ आंसू है.

'संवत्सर प्रदीप' एवं 'देवी भागवत पुराण' (11/4) के अनुसार शिव द्वारा त्रिपुर नामक असुर का वध करने के पश्चात उन के नेत्रों से जो आंसू गिरे, उन से रुद्राक्ष की उत्पत्ति हुई.

एक अन्य संस्कृत ग्रंथ 'वृहज्जाबालोपनिषद' तथा 'विधेश्वर संहिता' (25 अध्याय) में भी ऐसे प्रसंग आए हैं.

धार्मिक मान्यताओं के अनुसार रुद्राक्ष श्वेत, लाल, पीले और काले चार रंगों एवं 14 मुख के रूप में माने गए हैं. रुद्राक्ष के बीज में जो धारियां होती हैं, उन्हें ही 'मुख' कहते हैं. देवी भागवत में बड़े ही अविवेकी ढंग से इन रंगों को ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र रूपों में माना गया है. रुद्राक्ष का यह जातिभेद हमारी अंधजातिवादिता को स्पष्ट करता है. (देखें देवी भाग. 11/4)

देवी भागवत का 11वां स्कंध रुद्राक्ष की स्तुति एवं उस के दर्शन, धारण एवं उस की माला से जप करने से मिलने वाले कथित पुण्य के फल वर्णन से भरा पड़ा है. देखिए.

फलस्य दर्शने पुण्यं स्पर्शात् कोटि गुणं भवेत्.
शत कोटि गुण्यं पुण्यं धारणाल्लभते नरः.
लक्षकोटि सहस्राणि लक्षकोटि शतानिच.
जपाच्च लभते नित्यं नात्र कार्या विचारणा. (दे.भा. 11/5)

अर्थात रुद्राक्ष के दर्शन मात्र से ही जो पुण्य लाभ होता है, उस से करोड़ों गुना स्पर्श से पुण्य होता है तथा इस से असंख्य गुना पुण्य लाभ उसे धारण करने से होता है. लक्षकोटि से भी सैकड़ों गुना पुण्य का फल रुद्राक्ष की माला से जप करने वाला व्यक्ति निस्संदेह प्राप्त करता है.

शिवमहापुराण (25/16-21) एवं पद्म पुराण में वर्णन किया गया है कि रुद्राक्ष को धारण करने वाला शिवलोक जाता है. यदि कुत्ते के शरीर पर रुद्राक्ष बंधा है तो वह भी मरणोपरांत रुद्रपद को प्राप्त करता है. जो इन्हें हाथों, गले, कान, मस्तक, शिखा तथा हृदय में धारण करता है, वह साक्षात शिव हो जाता है.

देवी भागवत तो ऐसे अंधविश्वासों की अति ही करती है. 11वें स्कंध के तीसरे अध्याय में तो यहां तक लिख दिया गया है कि

भूतपूर्व प्रधान मंत्री इंदिरा गांधी रुद्राक्ष माला पहने : जब देश का सर्वोच्च नेता ही ढोंग का प्रचार करे तो अनपढ़ जनता क्या करेगी?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

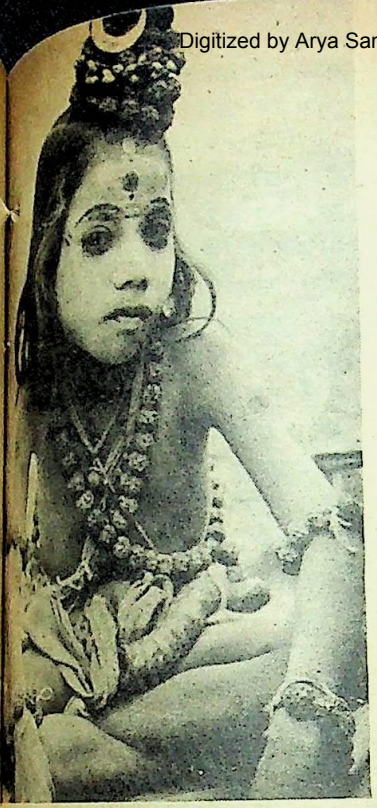

साधुवेश में रुद्राक्ष धारण किए एक किशोर : यह उम्र खेलनेकूदने, सीखसाख कर कुछ बनने की है, न कि जंगल में जा कर धूनी रमाने की.

रुद्राक्षधारी व्यक्ति के चरणों को धो कर उस का जल पीने से व्यक्ति सभी पापों से मुक्त हो जाता है और शिवलोक चला जाता है.

स्कंद पुराण के मुताबिक बिना रुद्राक्ष के यज्ञ निष्फल हैं तो 'एकादशी तत्त्वम्' नामक एक धर्मशास्त्र के अनुसार रुद्राक्ष धारण करने से मूर्ख अक्लमंद बन जाता है. 'देवी भागवत' ने रुद्राक्ष की स्तुति में एक जगह तो यहां तक कह दिया है कि यदि स्नान, दान, जप, पूजन प्रायश्चित्त, श्राद्ध और यज्ञ बिना रुद्राक्ष किया गया तो कर्ता नरक में जाएगा.

इस प्रकार रुद्राक्ष के बारे में धर्म के आचार्यों ने एक पूरा शास्त्रीय पाखंड रचा हुआ है. धर्मग्रंथों में तो यहां तक विवेचन किया गया है कि रुद्राक्ष को कौन धारण करे, कैसे धारण करे, कौन सी जाति का व्यक्ति कितने मुखों का रुद्राक्ष कब धारण करे, क्या मंत्र पढ़े, कितने मनकों की माला पहने, कहांकहां पहने. एक से ले कर 14 मुखी (किसीकिसी शास्त्र में तो 27 मुखी तक कहा है) तक. प्रत्येक के गुण और उस के पुण्य फल बताए हैं. एक मुखी धारण करने से ब्रह्महत्या दूर होती है तो दो मुखी से गोहत्या का पाप. तीन मुखी से भ्रूण हत्या का पाप खत्म होता है तो दस मुखी से सांप का विष उतर जाता है आदिआदि 27 मनकों की माला से मनुष्य करोड़ों गुणों से युक्त होता है तो 25 मनकों की माला मुक्ति प्रदायिनी है. 108 की माला सर्वमनोरथपूर्ण कही गई है. इन का जप करने की विधि का भी पूरा विधान ग्रंथों में है. माला को मंत्र, जल, चंदन से शुद्ध करने का भी उल्लेख है.

कहने का आशय यह है कि हमारे अंधविश्वासी समाज को मूर्ख बनाने के लिए धर्माचार्यों ने जो पाखंड रचा है, उस का कोई ओरछोर नहीं है. जब केवल रुद्राक्ष ही इतना पुण्यदायक है (धर्मग्रंथों में पुण्य दिलाने के लिए सैकड़ों उपाय बताए हैं) तो फिर भारत के हजारोंलाखों रुद्राक्षधारियों के पुण्यप्रताप से इस देश की कायापलट क्यों नहीं हो जाती? धर्मग्रंथों में तो कई स्थानों पर रुद्राक्ष को ही साक्षात शिव माना है. जब इतने शिव इस देश में ही मौजूद हैं और लोगों के गलों, हाथों और बाजुओं पर लटक रहे हैं तो नित नए शिवालय खोलने की क्या जरूरत है? शायद अब तो पाठकों को एहसास हो गया होगा कि रुद्राक्ष हमारे प्राचीन प्रचलित अंधविश्वासों के पहाड़ में से एक मामूली से कण का उदाहरण है.

डी. ब्रैंडीज नामक एक वनस्पति शास्त्री ने 'इंडियन ट्रीज' नामक अपने ग्रंथ में रुद्राक्ष को 'इलीआकारपस' नामक वर्ग की वनस्पति भर बताया है. यह लगभग 40-50 फुट की ऊंचाई तक का वट तथा जामुन जैसा वृक्ष होता है. पत्ते 3-6 इंच लंबे और अंडाकार होते हैं. इस के वृक्ष पर सफेद फूल होते हैं. इन्हीं का फल सूख जाने पर छिलका रहित रुद्राक्ष बन जाता है. विश्व में रुद्राक्ष की 123 किस्में हैं और अकेले भारत में ही 25 किस्में पाई जाती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं. भारत में यह सब से ज्यादा बंगाल, बिहार, असम, मध्य प्रदेश में पाया जाता है.

आयुर्वेद में इसे गरम, तर और ठंडा तीनों रूपों में माना गया है. वातविकार को दूर करने वाले, कृमिनाशक, कास (खांसी) नाशक तथा प्रसूति में लाभदायक कहा गया है. अपस्मार एवं मानसिक व्याधि में भी इसे देने को कहते हैं. हृदय रोग में भी इसे आयुर्वेदिक औषधि के रूप में घिस कर शहद के साथ चटाने का चलन है. फिर भी आयुर्वेदिक ग्रंथों में इस का कोई विशेष महत्त्व नहीं बताया गया है.

ऐसा मालूम देता है कि आधुनिक चिकित्सा के प्रणयन से बहुत पूर्व हमारे अंधविश्वासी समाज में आंवले की तरह ही रुद्राक्ष का (इस के सर्वसुलभ होने के कारण) महत्त्व रहा होगा. वे उसे सर्वरोगों की एक दवा के टोटके के रूप में इस्तेमाल करते रहे होंगे.

आदिवासियों के गहने

आदिवासी संस्कृति में गुठलियों, फलों, कांच, हड्डी और सींग के आभूषणों, मालाओं को पहनने की परंपरा प्रत्येक देश में रही है. रुद्राक्ष आदिवासियों की प्रिय, सस्ती और सुलभ शृंगारमाला रही होगी. यों भी शिव आदिवासियों के ही देवता रहे हैं. आदिवासियों से यह परंपरा विकसित हुई होगी. आज भी आदिवासी शेर का मांस अपने बच्चों को चटाते हैं और शेर या रीछ का नाखून (प्रेतबाधा से बचाने के लिए) गले में बांध देते हैं. इसलिए रुद्राक्ष भी यदि उसी कड़ी का एक रूप है तो यह आश्चर्यजनक नहीं है.

रुद्राक्ष के पीछे एक अजीब किंवदंती के बारे में लगभग प्रत्येक रुद्राक्ष या इसी किस्म के कंकड़पत्थर बेचने वाला पटरी का दुकानदार आप को बता देगा कि रुद्राक्ष का एक वृक्ष नेपाल में है जो वर्ष में केवल दो फल देता है. उस के एक मुखी रुद्राक्ष होते हैं. वहीं का राजा एक रुद्राक्ष मंदिर में चढ़ा देता है और दूसरे को सवा सौ मन लड्डुओं में से किसी एक लड्डू में रख कर साधुओं को बांट देता है. जिस साधु को वह रुद्राक्ष मिलता है, उस का अभिषेक होता है और साधु को महान 'सौभाग्यशाली' माना जाता है. जनता को ठगने वाले साधु शब्दजाल से स्वयं को अपने शिष्य को वही 'साधु' घोषित कर के मामूली रुद्राक्ष के बीज को सैकड़ों रुपयों में 'बेच' जाते हैं.

रुद्राक्ष में कुछ रासायनिक तत्त्व हों, आंशिक या पूर्ण रूप से ही वह किसी बीमारी में औषधि के रूप में काम आता हो, यह एक अलग बात है (हालांकि अभी तक किसी विश्वसनीय चिकित्साशास्त्री ने ऐसा कोई उल्लेख नहीं किया है), फिर भी यह धारणा तो नितांत निर्मूल और पूरी तरह अंधविश्वास से भरी है कि रुद्राक्ष शिव का रूप है या उस को धारण करने से कथित पुण्य आदि मिलता है. रुद्राक्ष धारण करने से हृदय रोग पर नियंत्रण होने या राजनीतिक, व्यापारिक लाभ होने की अवधारणा भी एक घोर अंधविश्वास है.

रुद्राक्ष का अंधविश्वास फैलाने में जहां पत्रपत्रिकाएं, बाबा, साधु भागीदार हैं, वहां वे प्रकाशक भी कम दोषी नहीं हैं, जो रुद्राक्ष के बारे में निहायत बेहूदा बातें पुस्तक रूप में बढ़ाचढ़ा कर छाप रहे हैं.

जयपुर, हरिद्वार और अयोध्या में कथित ज्योतिष केंद्रों तथा धार्मिक कर्मकांड के सामान विक्रेताओं ने बेर की गुठलियों, अन्य फलों के बीजों, यहां तक कि कृत्रिम रुद्राक्षों का भी उत्पादन भारी पैमाने पर शुरू कर दिया है.

वैसे भी भारत धर्म के व्यापार का सब से बड़ा देश है. अपना तथाकथित 'अध्यात्म' महंगे दामों पर बेचने की कला यहां के साधुओं योगियों को आती है. जिस देश में 'अध्यात्म की बातें' तक बिक जाती हों, 'भभूत' के नाम मिट्टी तक बेची जाती हो, वहां रुद्राक्ष नामक पेड़ का बीज बेच देना कौन सी आश्चर्य की बात है? आश्चर्य की बात तो यह है कि पढ़ेलिखे और सचाई को जानने वाले लोग भी अपनी जरा सी कमजोरी के कारण अंधविश्वास के इस मायाजाल में फंस जाते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

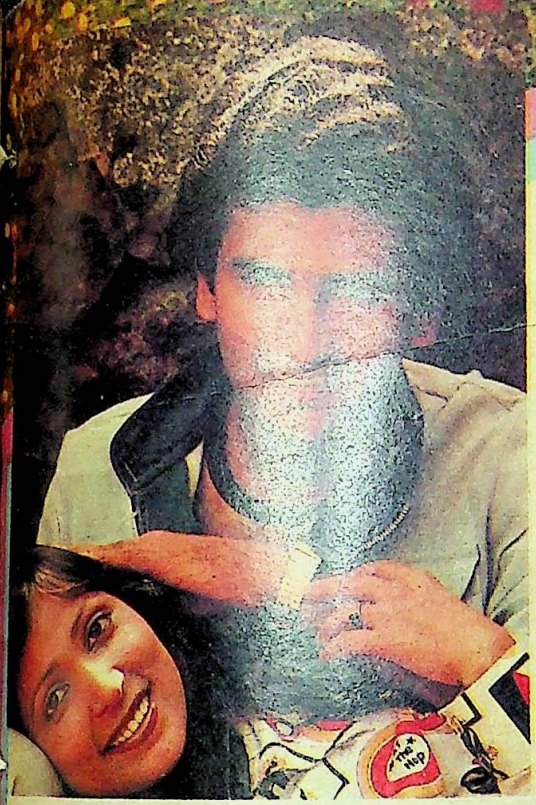

वासंती छंद

हवाओं में तैर रही
मदमाती गंध.
आज भीगा है तनमन
यौवन के तीर,
मिलन का मृगछौना भी
हो उठा अधीर.
लुटा रहे सुगंध सभी
वासंती छंद,
हवाओं में तैर रही
मदमाती गंध.
पोरपोर नहाया है
चितवन में डूब,
मुसकान से दूर हुई,
सभी थकन, ऊब.
घड़ी आज निभाने की
ली जो सौंगंध
हवाओं में तैर रही,
मदमाती गंध.
मस्तियों में झूमझूम,
बहक उठे पांव
अछूता रहा न कोई,
शहर और गांव.
भूल रहे बंधन आज,
सारे अनुबंध.
हवाओं में तैर रही
मदमाती गंध.

—रमाकांत दीक्षित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नए फैशन

चुलबुले बच्चों के शोख

लाल रंग की निकर के साथ सफेद और लाल रंग का टाप पहन कर आप की नन्ही बेटी का मन मयूर सा नाच उठेगा.

गहरे लाल रंग की बिब वाली पैंट के साथ सफेद फ्रिल वाला टाप आप की बिटिया को और भी चुस्त बना देगा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिधान

गाढ़े नील रंग की स्टोनवाश जींस और बिना बाजू वाली जैकेट की इस आधुनिक पोशाक में आप का लाड़ला बरबस ही सब का मन मोह लेगा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मधुमक्खियां

कहानी • कुमुद भटनागर

अपने जन्मदिन की उत्साह से तैयारी करती जूही राधा को रामदीन माली से जल्दी आने के लिए कहते सुन कर एकदम बिफर पड़ी, "नहीं, रामदीन मेरे जन्मदिन की दावत में बिलकुल नहीं आएगा."

राधा और रामदीन के साथ ही शिखा भी हंस पड़ी. जूही और भी चिढ़ गई.

"हम को दावत के काम करने के लिए नहीं बुला रहे हैं?" रामदीन ने हंसते हुए पूछा.

"नहीं, नहीं," जूही चिल्लाई, "तुम मेरे जन्मदिन की दावत का काम नहीं करोगे. तुम कल यहां आओगे भी नहीं."

"फिर तुम्हारी दावत कैसे होगी? काम कौन करेगा?" रामदीन ने चिढ़ाने के स्वर में प्रश्न किए.

"कोई भी करे, तुम्हें क्या. तुम नहीं आओगे. जाओ यहां से." और जूही उसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जूही की जिंदगी में पिता का और विक्की की जिंदगी में मां का अभाव था. इस दुख को वे एकदूसरे से मिल कर बांटा करते थे.

अपने छोटछोटे हाथों से बाहर धकेलने लगी.

शिखा ने रामदीन को बाहर जाने का इशारा किया और जूही से बोली, "मगर रामदीन तो राधा के साथ काम करेगा. उस से तुम्हें क्या फर्क पड़ता है?"

"वह मुझे चिढ़ाता है, इसलिए मुझे अच्छा नहीं लगता. उसे कल मेरे जन्मदिन पर नहीं आने देना, मां" जूही ने मिन्नत के स्वर में कहा.

शिखा ने प्यार से उस का सिर सहलाया, "मगर, बेटी, रामदीन नहीं आएगा तो तुम्हारे गुब्बारे कौन फुलाएगा, स्टूल पर चढ़ कर झालरें कौन लटकाएगा."

"आप बस गुब्बारे और झालरें ला कर रख दीजिए. कमरा विक्की सजाएगा. वह कहता था वह चार बजे ही आ जाएगा."

"यह विक्की कौन है भई?" शिखा ने उत्सुकता से पूछा.

"विक्की यानी विक्रम. मेरे स्कूल में पढ़ता है. मेरे साथ ही बस में जाता है. राधा उसे पहचानती है."

"अरे, वह गोरागोरा लड़का, जो तुम्हें हाथ पकड़ कर बस में चढ़ाता है, लेकिन वह 11-12 बरस का लड़का स्टूल पर चढ़ कर झालरें लटका पाएगा या तुम्हारे दरजनों गुब्बारे फुला सकेगा?" राधा ने पूछा.

"क्यों नहीं, वह कहता है उसे बहुत अच्छा कमरा सजाना आता है. और जानती

शिखा और गुंजन केवल सहपाठी ही नहीं, एकदूसरे के बहुत निकट भी थे. लेकिन महत्त्वाकांक्षी गुंजन के विदेश चले जाने पर यह निकटता दूरियों में बदल गई. अचानक जूही और विक्की ने दोनों को फिर से निकट ला दिया, इतना निकट कि वे दोनों एक ही डोर में बंध गए.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

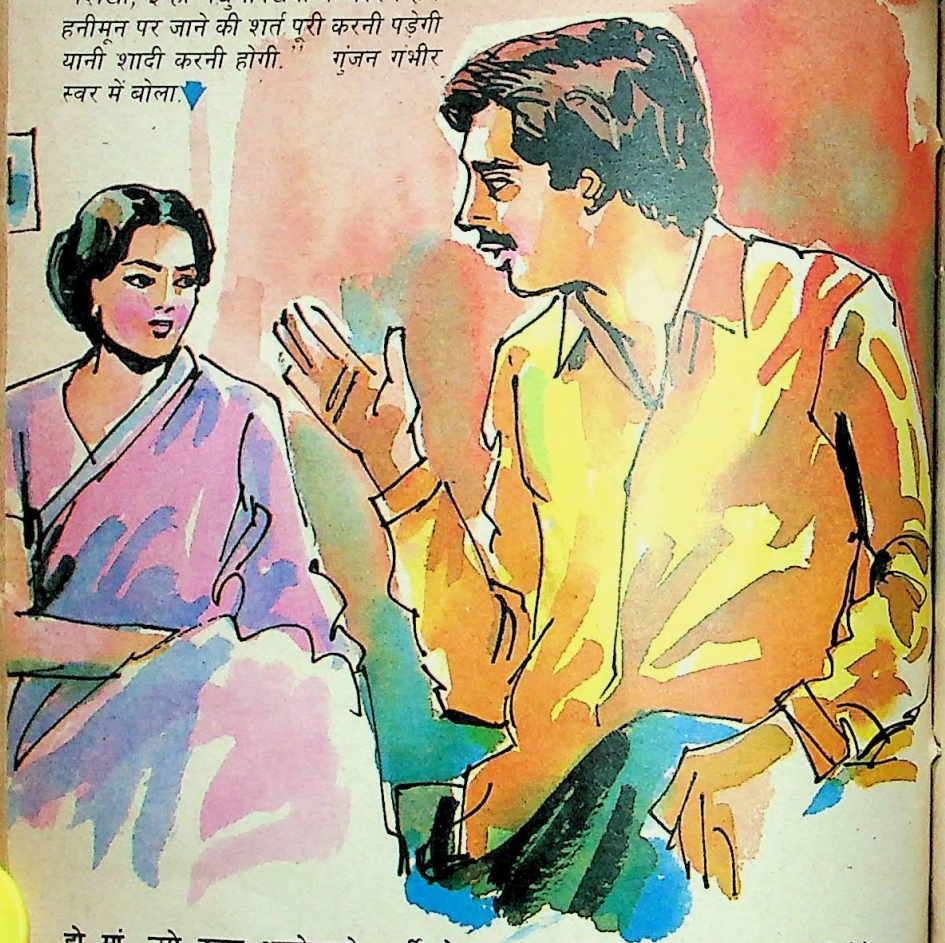

हो मां, उसे बहुत अच्छेअच्छे पार्टी के सामूहिक खेल भी आते हैं, खूब मजा आएगा न?" शिखा ने ताली बजा कर पूछा.

"हां, बेटा..."

"बीबी जी, मजा तो तब आएगा जब हम और आप गुब्बारे फुलाफुला कर मुंह दुखाएंगे और स्टूल पर चढ़ कर हाथपैर तोड़ेंगे," राधा ने बात काट कर कहा.

"तू फिक्र मत कर, राधा. तेरी मदद को मैं गंगाराम चपरासी को बुला लूंगी रामदीन को मना कर दे. कल जूही का जन्मदिन है. सब कुछ इस की खुशी का होना चाहिए," शिखा बोली, "हां, तो जूही बेटी, अपनी स्कूल बस में जाने वाले और कितने बच्चों को बुलाया है आप ने?"

"किसी को भी नहीं. विक्की मेरे साथ ही सीट पर बैठता है. उस को बताया था कि कल मेरा जन्मदिन है, पार्टी होगी. वह बोला, वह भी आएगा. पार्टी का कमरा सजाएगा. पार्टी के खेल सिखलाएगा. सच, मां, बहुत मजा आएगा."

"जरूर आएगा, बेटे. तुम्हें विक्की का फोन नंबर मालूम है?"

जूही ने इनकार में सिर हिलाया, "नहीं तो, क्यों?"

"मैं उस की मां को फोन कर के विक्की को भेजने को कह देती."

"विक्की ने कहा है कि वह जरूर आएगा. और फिर उस की मां तो है ही नहीं."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर्यटन के रंग सरिता के संग

सरिता

मई (प्रथम) व मई (द्वितीय)

पर्यटन विशेषांक

इन छुट्टियों को सुखद और मनोरंजक बनाइए. देश भर के विभिन्न पर्यटन स्थलों की संपूर्ण जानकारी.

पर्यटन विशेषांकों में आप को पर्यटन स्थलों पर पहुंचने, रहने, घूमनेफिरने की जानकारी तो होगी ही, रंगीन लुभावने चित्रों सहित उन के सौंदर्य का वर्णन भी होगा. यदि आप कहीं नहीं भी जा रहे तो घर बैठे ही पूरे देश का भ्रमण कर सकेंगे.

मई (प्रथम) अंक में पूर्व आर्य भारत के पर्यटन स्थलों पर लेख होंगे. इन में मुख्य हैं : हरिद्वार, देहरादून, ऋषिकेश, मसूरी, कुकरनाथ, नैनीताल, आगरा, बनारस, लखनऊ, नगरकोट, खजुराहो, जबलपुर, पुरी, कोणार्क, पटना, महावलीपुरम, मदुरै आदि.

मई (द्वितीय) अंक में पश्चिम आर्य भारत के पर्यटन स्थलों पर लेख होंगे. जम्मू, कश्मीर, बड़ा बलराम, रत्नमौजी, रामशाला, खुल्लूवाला, शिमला, चैल, दिल्ली, आबू, उदयपुर, जयपुर, अहमदाबाद, सोमनाथ, बंबई, खंडाला, लोनावला, महाबलेश्वर, पाथेरान, अजंता, एलोरा, इंदौर, उज्जैन, मैसूर, ऊटी, कोडाइकैनाल, गोवा, पेरियार, त्रिवेंद्रम, कन्याकुमारी, रामेश्वरम आदि.

इन में निकलते समय सरिता के पर्यटन अंक लेना न भूलें.

इस के अतिरिक्त यात्रा को सफल बनाने के लिए बहुत सी जानकारी भी होगी. साथ ही हर अंक की तरह कहानियां, लेख, कविताएं, स्तंभ, फिल्म समीक्षाएं आदि.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेहरबानी

आजकल कुछ ज्यादा ही
मेहरबान है वे हम पर,
रोज टकरा जाते हैं कहीं
हमारा गम बढ़ाने के लिए
—केशव यादव 'निर्दोष'

"ओह," इतना ही कह सकी शिखा, 'उस ने सोचा तो यह राज था एक पांचछः साल की बच्ची और 11-12 साल के लड़के के बीच आत्मीयता का. उस की मां नहीं है, इस का बाप नहीं है. शायद दोनों मिल कर एकदूसरे का अभाव बांटते हैं.'

शिखा की आंखें गीली हो गईं. लेकिन वह समय उदास होने का नहीं था. जूही अपने जन्मदिन की पूर्व संध्या को उत्साह से भरी हुई थी. उस की खुशी खराब नहीं करनी थी.

"चलो, बेटी, तैयार हो जाओ. बाजार चलेंगे."

और शिखा जल्दी से स्नानघर में घुस गई.

अगले रोज विक्की चार बजे ही आ गया. उसे देखते ही शिखा को लगा जैसे उसे पहले कहीं देखा हो. चेहरा तो बहुत जानापहचाना सा था, लेकिन हलकी नीली आंखें एकदम अजनबी थीं.

"आओ, विक्की, तुम्हारा ही इंतजार हो रहा था. जूही किसी को कमरा नहीं सजाने दे रही कि तुम आ कर सजाओगे," शिखा ने कहा.

"हां, मैं ने इस से वादा किया था. आप को अगर मैं भी मां कहूं तो कैसा लगेगा?" विक्की ने हिचकिचाते हुए पूछा.

"बहुत अच्छा," शिखा मुसकराई.

उस के बाद विक्की ने झटपट गंगाराम की सहायता से कमरा सजा दिया.

"मां, यह छोटामोटा सजावट का सामान इस मेज पर से हटा देते हैं. एक तो छोटे बच्चों के तोड़ने का डर नहीं रहेगा, दूसरे मेज जूही के उपहार रखने के काम आएगी," शिखा के चेहरे पर असमंजस के भाव देख कर उस ने जोड़ा, "आप फिक्र मत कीजिए, मैं दोबारा ये सब चीजें मेज पर रख दूंगा, क्योंकि मुझे तो आठनौ बजे तक यहां रुकना ही होगा, भाई उसी समय नर्सिंग होम से लौटते हैं. सो तभी वह मुझे ले कर जाएंगे."

"तुम्हारे बड़े भाई डाक्टर हैं?" शिखा ने पूछा.

विक्की अचकचाया, "ऐसा है मां, घर में उन्हें सब लोग भाई कहते थे, सो मैं भी वही कहने लगा. वैसे वह मेरे पिता हैं."

इस से पहले कि शिखा कुछ और पूछती, बच्चे आने शुरू हो गए. विक्की के सहयोग से पार्टी धूमधड़ाके से खत्म हुई.

सब बच्चों के जाने के बाद विक्की जूही के उपहार खोलने बैठ गया. बीचबीच में उन पर टिप्पणी कर के शिखा को हंसाने भी लगा.

"क्या मैं अंदर आ सकता हूं?"

किसी की आवाज पर शिखा ने पीछे मुड़ कर देखा और चौंक कर बोली, "अरे, गुंजन तुम?"

"ओह, शिखा, यह तुम्हारा घर है?" आगंतुक हर्ष मिश्रित आश्चर्य से बोला.

"आप दोनों एकदूसरे को जानते हैं क्या?" विक्की ने दोनों की ओर देखते हुए पूछा.

"हां, बेटे, बहुत अच्छी तरह. हम दोनों सहपाठी थे. आइए, जन्मदिन वाली शहजादी साहिबा." गुंजन ने जूही को गोद में उठा कर प्यार किया.

"फिर तो आप मेरे जन्मदिन का केक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिर्फ़ एक किलो सागर स्किम्ड मिल्क पाउडर से आपको

इतना स्किम्ड मिल्क मिलता है कि आप बना सकते हैं-

६४ कप चाय,

१५ कटोरी दही,

४० गुलाब जामुन, ४८ कप कॉफी,

३२ स्कूप आइस्क्रीम... और इसके बाद भी

२ गिलास दूध बच जाता है.

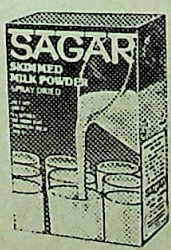

सागर
स्किम्ड मिल्क पाउडर
५०० ग्राम के पैक में उपलब्ध.
हर ५०० ग्राम के पैक से बनता है
५ १/४ लीटर स्किम्ड मिल्क.

बिक्री व्यवस्था : गुजरात को-ऑपरेटिव्ह मिल्क मार्केटिंग फेडरेशन लिमिटेड, आणंद.

OPERATION FLOOD

ASP-SSMP-1/88 HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खाए बिना नहीं जाएंगे न, कुछ न कुछ.''

''केक ही नहीं और भी जो कुछ है वह भी खाएंगे और सब से ज्यादा खाएंगे तुम्हारी मां का भेजा.''

''तुम बिलकुल नहीं बदले, गुंजन.'' शिखा हंसी.

''शायद. मगर जिंदगी तो बहुत बदल गई. खैर, पहले कुछ खिलाओपिलाओ फिर यह बताओ, तुम यहां कैसे?''

''मैं तो कहीं गई ही नहीं थी. पढ़ाई खत्म होने के बाद मुझे मेडिकल कालिज में लेक्चरर की जगह मिल गई. तब से बस यहीं हूं. और यहीं से प्रिंसिपल या डीन बन कर सेवानिवृत्ति लूंगी,'' शिखा ने गुंजन की ओर नाश्ते की प्लेट बढ़ाते हुए कहा, ''मगर तुम कहो, तुम यहां कैसे? तुम तो अमरीका में बस गए थे?''

''अमरीका ही नहीं और भी कई जगह बसने की कोशिश की, मगर जाने क्यों दिल इसी शहर में आ कर लगा. डा. हरिशरण के नर्सिंग होम में काम करता हूं,'' गुंजन ने बताया, ''लेकिन यह कमाल की बात है कि उम्र के फर्क के बावजूद भी हमारे बच्चों में इतनी दोस्ती है.''

''शायद इसलिए कि दोनों की जिंदगी में एक अभाव है. विक्की की जिंदगी में मां का और जूही की जिंदगी में बाप का.''

''क्या?'' गुंजन ने सिहर कर शिखा की ओर देखा. और फिर संभल कर बोला, ''मगर आज बच्चों की खुशी का दिन है. अपने दुखदर्द आज नहीं. हम फिर भी मिल सकते हैं न?''

''क्यों नहीं, भूल गए क्या? हम बगैर किसी वादे के इसलिए बिछुड़े थे कि फिर कभी दोबारा मिलें तो बगैर किसी कड़वाहट या शिकवेशिकायत के.''

''बगैर किसी पूर्वाग्रह के तो कह सकती हो, मगर शिकवेशिकायत तो हैं ही.'' गुंजन शरारत से मुसकराया.

''अगर तुम मुझे उस वक्त जाने से रोक लेतीं तो आज जिंदगी में कोई कड़वाहट

(शेष पृष्ठ 182 पर)

बात ऐसे बनी

हमारे छात्रावास का एक साथी बहुत कंजूस था. लेकिन उसे शादी करने की बहुत तमन्ना थी. उसे सबक सिखाने के उद्देश्य से हम लोगों ने एक योजना बनाई.

योजना के अनुसार हम ने उसे बताया कि कुछ लोग उस के रिश्ते की बात करने के लिए छात्रावास आ रहे हैं. उस ने मेहमानों की आवभगत के लिए तीस रुपए दे दिए.

शाम को हम दो अजनबी व्यक्तियों को सारा नाटक समझा कर उस के कमरे में ले आए. कमरे में बैठ कर हम लोग नाश्ता करने लगे और अजनबी लोग हमारे मित्र से तरहतरह के सवाल पूछने लगे. हम किसी तरह अपनी हंसी नहीं रोक पा रहे थे.

जब मित्र को असलियत का पता चला तो उस का चेहरा देखने लायक था.

—महावीर प्रसाद राठौर

हमारे शहर में कालिज न होने के कारण हम सभी छात्र प्रतिदिन रेलगाड़ी से गंगानगर के एक विद्यालय में पढ़ने जाते थे.

एक दिन हमारे डब्बे में एक नवदंपती आ कर बैठे. उन के सामने की सीट पर बैठा एक व्यक्ति बारबार अपनी सिगरेट और माचिस नीचे गिरा कर घूंघट में से दुलहन का चेहरा देखने का असफल प्रयास कर रहा था.

दुलहन का पति काफी देर से उस युवक की हरकतें देख रहा था. जब उस से नहीं रहा गया तो उस ने अपनी पत्नी के सिर से घूंघट हटाते हुए कहा, ''बेचारा कब से तुम्हारी शक्ल देखने को तरस रहा है. अपनी शक्ल तो इसे दिखा ही दो.''

इतना सुनना था कि गाड़ी में बैठे सभी यात्री ठहाका लगा कर हंस पड़े. फिर वह युवक शर्मिंदा हो कर अगले ही स्टेशन पर दूसरे डब्बे में चला गया.

—दर्शनकुमार गर्ग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

1 रु. 50 पैसे की छूट

डिप्पीज़ जैम की हर बोतल पर

सुनते ही मुँह में पानी भर आये. डिप्पीज़ जैम. जैसे-मिक्स्ड फ्रूट, पाइनएप्पल, ऑरेंज मारमलेड्, मैंगो, स्ट्राबेरी और गुवावा जैली. हर बोतल में भरी है खादिष्ट फलों की प्राकृतिक उत्तमता. और अब, आप विश्वास नहीं करेंगे कि इतने अच्छे जैमों पर 1रु.50 पैसे की छूट मिल रही है।

जल्दी कीजिये! यह छूट 31.3.88 तक. चंद शहरों में।

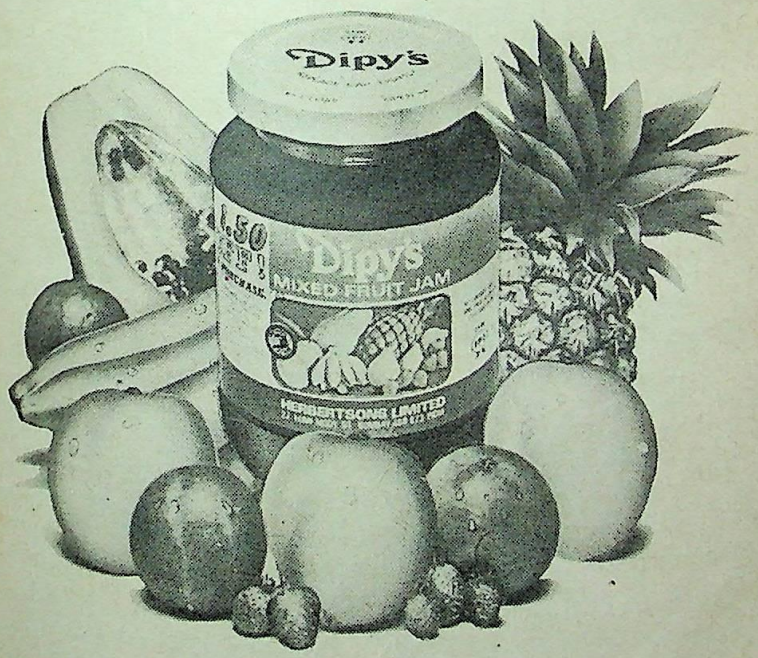

OBM 2674 HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राधे राधे बोलो पानी को रो लो

व्यंग्य ● गंगा सहाय प्रेमी

प्रेमीजी, उन के व्यक्तित्व एवं उन की रूढिवादी मान्यताओं से कौन परिचित नहीं है? देव दर्शन, तीर्थ यात्रा, पवित्र जल स्नान आदि में प्रेमीजी की कितनी आस्था है, यह भी किसी से छिपी नहीं है. पत्नी के आग्रह पर प्रेमीजी ने इस वर्ष लगभग एक मास तक वृंदावन वास किया. उन्होंने हरियाली तीज, नागपंचमी, श्रावणी एवं जन्माष्टमी अब की बार वृंदावन में ही मनाई.

समस्त विश्व पत्नियों का महत्व पहले ही स्वीकार कर चुका था. इक्कीसवीं शताब्दी में प्रवेश के लिए तत्पर भारत के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

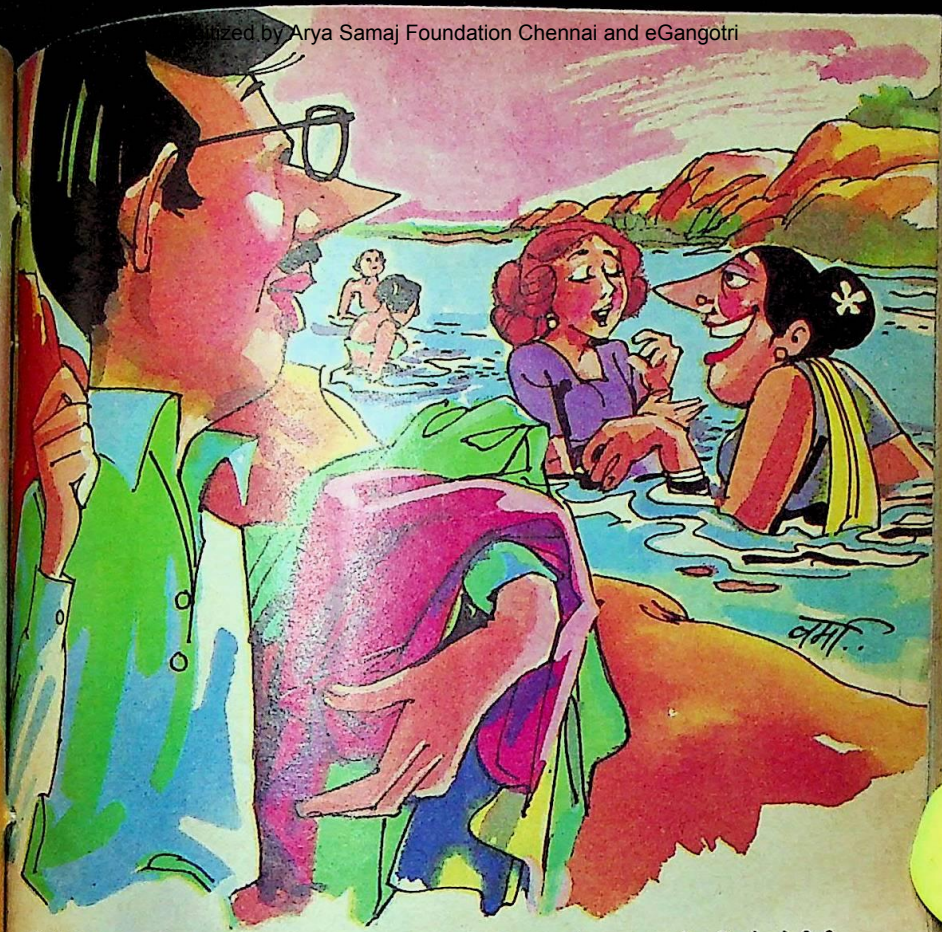

लोगों की समझ में भी पत्नी का महत्त्व आ चुका है. कभी प्रेमीजी का विश्वास था कि सुखमय जीवन के इच्छुक व्यक्ति को दो परहेज करने चाहिए. एक तो वह विवाह न करे, दूसरे, नौकरी न करे. प्रेमीजी को बाद में क्रमशः ये दोनों ही काम करने पड़े. पहले पत्नी आई बाद में उस का पल्लू पकड़ कर नौकरी आ गई. अब अधेड़ अवस्था. अब न दूसरी पत्नी मिलने की संभावना है और न ही दूसरी नौकरी की. मिर्जा गालिब के

पत्नी एवं पुत्री स्नान करती रहीं और प्रेमीजी उन के वस्त्रादि की देखभाल करते रहे.

शब्दों में प्रेमीजी ने स्वयं को परिस्थितियों के अनुकूल बना लिया है.

जिंदगी रास आ गई हम को,
अब वह आहोफुगां नहीं होती.

पत्नी उच्च रक्तचाप की मरीज थी (उच्च कुल की अभिमानिनी को निम्न रक्तचाप भला हो भी कैसे सकता था). अन्य

'राधेराधे बोलो, वृंदावन में डोलो'– यह नारा है वृंदावन में तीर्थ यात्रियों का, लेकिन प्रेमीजी के अनुभवों से परिचित हो कर आप निस्संदेह इस नारे को यों कहने पर विवश हो जाएंगे– 'राधेराधे बोलो, पानी को रो लो.'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

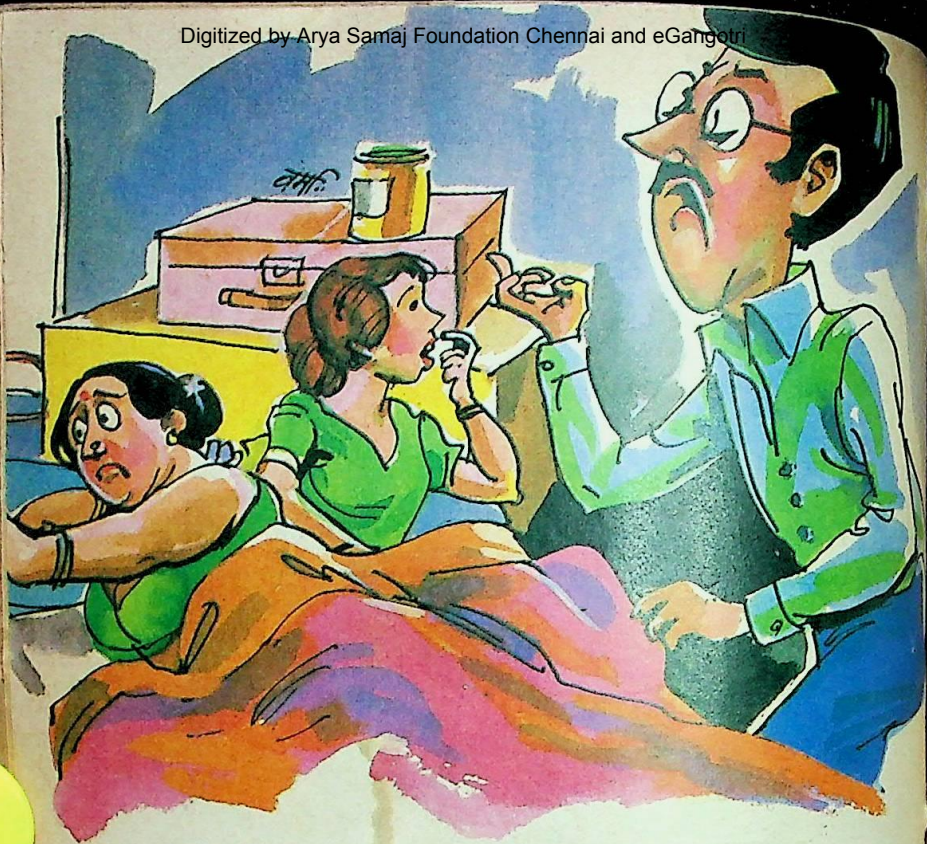

पानी की कमी को देखते हुए प्रेमीजी ने पत्नी एवं पुत्री को नहाने के लिए जल्दी उठा दिया.

चिकित्साओं की अपेक्षा प्रेमीजी को पत्नी की इच्छापूर्ति ही सरल एवं सस्ती जान पड़ती है. इसलिए प्रेमीजी के वृंदावन वास पर किसी को आश्चर्य नहीं होना चाहिए. प्रेमीजी की मौलिकता असंदिग्ध है. वह जैसे थे वैसे ही हैं और वैसे ही रहेंगे.

वृंदावन में तीर्थ यात्री चलतेचलते एक नारा लगाते हैं.

'राधे राधे बोलो वृंदावन में डोलो.' प्रेमीजी को इस नारे में परिवर्तन करने को विवश होना पड़ा. प्रेमीजी के अनुसार नारा इस प्रकार होना चाहिए –

'राधेराधे बोलो पानी को रो लो.'

प्रेमीजी के अनुभव से परिचित होने के पश्चात आप भी इस परिवर्तित नारे से निस्संदेह सहमत हो जाएंगे.

प्रेमीजी सपरिवार एक धर्मशाला में ठहरे. वह तो बेचारे सामान्य परिवार में जनमे हैं, इसलिए जल्दी उठ जाते हैं, पर उच्चकुलाभिमानिनी उन की पत्नी देर तक सोने की अभ्यस्त हैं. प्रेमीजी तो जल्दी उठ कर नहा लिए, पर पत्नीजी जब तक नहाने की मुद्रा में आईं, तब तक नल बंद हो गया. समीप ही खारे पानी का एक हैंडपंप था. प्रेमीजी ने उस से पानी खींच कर लाने का प्रस्ताव किया तो पत्नीजी भड़क उठीं, "मैं इस मरे खारी पानी से नहाऊंगी. सारा शरीर दिनभर चिपचिप करता है. बाल बुरी तरह चिकट जाते हैं. टंकी का पानी न केवल मीठा होता है, अपितु जमुनाजी से आता है. इसलिए उससे स्नान तो यमुना स्नान के तुल्य है. पर इस खारे पानी से नहाने की क्या तुक है?"

प्रेमीजी ने अपना प्रस्ताव सहर्ष वापस ले लिया. हर्ष इस बात का था कि वह पानी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हींचने के श्रम से बच गए. अब स्नान का एक ही साधन था यमुनाजी तक जाना. पत्नी ने बुरी तरह मुंह बिचकाया और अपनी समझ से घटियातम वस्त्र पहन कर चल दीं. पत्नीजी, प्रेमीजी एवं उन की कनिष्ठ संतान कुमारी इतिका यह काफिला यमुना स्नान करने चला. प्रेमीजी को यमुना स्नान नहीं करना था पर भीड़ में वस्त्र एवं चप्पलों की रखवाली के लिए उन का जाना आवश्यक समझा गया.

उच्चकुलाभिमानिनी पत्नीजी कच्चे घाट पर कैसे स्नान करतीं और वृंदावन में यमुना केवल एक ही पक्के घाट पर है. वह है केशी घाट. इसलिए स्नान हेतु वहीं जाने का निश्चय किया गया. प्रेमीजी ने पुनः प्रस्ताव परोसा रिकशे से केशी घाट जाने का. पत्नीजी प्रेमीजी का खारे पानी से स्नान करने का प्रस्ताव ठुकरा चुकी थीं. इसलिए यह प्रस्ताव भी उन्होंने अमान्य कर दिया, "नहीं पैदल ही चले चलेंगे. कोई भी घाट अधिक दूर तो नहीं होना चाहिए. थोड़ा घूमनाफिरना भी हो लेगा." पूछने पर किसी ने बता दिया कि केशी घाट यहां से अधिक दूर नहीं है. इस से पत्नीजी का पैदल यमुना स्नान का निश्चय अधिक सशक्त हो गया.

प्रेमीजी की दृष्टि में रिकशे से कहीं जाने का एक लाभ यह भी है कि बारबार रास्ता नहीं पूछना पड़ता. उन्होंने दबी जबान से कहा, "केशी घाट का मार्ग तुम्हें मालूम है?" पत्नी ने प्रेमी जी की नासमझी पर तरस खा कर कहा, "मार्ग का क्या जानना? बाहर से आए लोग जिधर स्नान करने जा रहे हैं जिधर से स्नान करके लोग लौट रहे हैं, समझो वही केशी घाट का मार्ग है."

पत्नीजी आगेआगे एवं प्रेमीजी पुत्री सहित पीछेपीछे चले. मार्ग संगम आने पर पत्नी जिस ओर से भीड़ का आनाजाना देखती, उधर ही मुड़ जातीं. चलतेचलते जब लगभग एक घंटा हो गया एवं वृंदावन की आबादी का अंत आ गया तो प्रेमीजी से बिना बोले नहीं रहा गया, "लगता है, हम मार्ग भूल गए हैं. अब भीड़ न आ रही है और न जा रही है. किसी से पूछना चाहिए." पत्नी संभवतः पहली बार प्रेमी से सहमत हुई और बोली, "लगता है, आप की बात सही है, मैं भी कुछ ऐसा ही सोच रही हूं"

एक व्यक्ति से केशी घाट के विषय में पूछा तो उस ने उत्तर दिया, "केशी घाट तो यहां से कई मील दूर है. यहां तो कोई सवारी भी नहीं मिलेगी. एक कच्चा घाट यहां से आधा मील दूर है.आप चाहें तो वहीं स्नान कर लें. उस से थोड़ी दूर पर रिकशे भी मिल सकते हैं."

प्रेमीजी ही नहीं, उन की पत्नीजी भी चलतेचलते बुरी तरह थक चुकी थीं. लगभग 11 बज चुके थे. बरसात की तेज धूप ने पसीनापसीना कर दिया था. पत्नीजी को यही उचित एवं सुखद प्रतीत हुआ कि जल्दी से जल्दी स्नान कर के थकान और गरमी से मुक्ति पाई जाए. अस्तु, थोड़ा और चल कर तीन स्नानार्थियों का यह काफिला एक कच्चे घाट पर पहुंचा. रास्ते भर गंदगी के मारे बुरा हाल रहा. रपटीली ऊंचाई से नीचे उतरने में छरहरे दुबले प्रेमीजी एवं उन की किशोरी पुत्री को तो कोई असुविधा नहीं हुई. हां गर्विणीगुर्वी पत्नी को पहाड़ी यात्रा का स्मरण अवश्य हो आया. पत्नी

पीड़ा

मन पीड़ित, है अति पीड़ित,
चलताफिरता तन है जीवित,
कुछ भूलूं फिर याद करूं
इस पीड़ा में आनंद अमित.

—प्रसून

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एवं पुत्री स्नानादि कर रही थीं और प्रेमीजी उन के वस्त्रादि देखते रहे. वह स्नान कर के ऊपर आई ही थीं कि एक स्त्री जोरजोर से रोती हुई अपने बूढ़े ससुर एवं अंधी सास को कोसने लगी, "मैं तुम्हारे हाथ में झोला दे कर इन माताजी को स्नान कराने गई थी. हाय, झोला कौन ले गया. उसी में मेरे दोनों ब्लाउज और धोती थी. उसी में रुपए थे. हाय, मैं घर कैसे पहुंचूंगी?"

पत्नीजी ने मन ही मन अपनी सूझ को साधुवाद दिया कि वह प्रेमीजी को साथ ले आई थीं, नहीं तो उन के कपड़ों का भी यही हाल होता. जैसेतैसे रिकशे में बैठ कर सब लोग धर्मशाला आए. 12 बज चुके थे. अपने हाथ से भोजन बनाने की सोची गई तो पता चला कि खाना बनाने के पानी के लिए एक टंकी है जो रात में भर जाती है. लगभग सभी लोग खाना बना कर उसे खाली कर चुके हैं.

सब ओर से निराश हो कर प्रेमीजी धर्मशाला के मैनेजर की शरण में गए. पहले तो उस ने एक जोरदार भाषण पिलाया, आप लोगों को जल्दी उठ जाना चाहिए था. यहां तीर्थ में क्या सोने के लिए आए हैं? वृंदावन में पानी की समस्या है. आप को अपना प्रबंध स्वयं करना चाहिए." बाद में धीरे से बोला, "आप उस कमरे में चौकीदार के पास चले जाइए. शायद वह आप की सहायता कर सके."

प्रेमीजी चौकीदार की शरण में गए. चौकीदार बोला, "पानी मैं ने अपने लिए भरा है. आप ले जाइए. मुझे मोल लेना पड़ेगा. यहां मीठा पानी दो रुपए का एक बड़ी बाल्टी मिलता है." प्रेमीजी चुपचाप दो रुपए दे कर उस का पानी बाल्टी सहित ले आए, और फिर किसी प्रकार भोजन बना.

प्रेमीजी प्लास्टिक की एक बाल्टी खरीद कर अगले दिन के लिए निश्चिंत थे. पत्नी एवं पुत्री को भी उन्होंने अगले दिन जल्दी उठा दिया. सोचा था, सब लोग नहा लेंगे और खाना बनाने के लिए एक बाल्टी पानी भर कर रख लेंगे. मैनेजर की घोषणा सुनाई दी, आज कोई भी यहां नहीं नहाएगा और न कपड़े धोएगा. आज पानी बहुत कम आया है. सिर्फ खाना बनाने और पीने को पानी मिलेगा."

उच्चवर्ग के संस्कारों से ग्रसित पत्नी कल यमुना के बरसाती गंदले पानी में धुले हुए कपड़ों को सर्फ से धोने हेतु कृतसंकल्प थीं और कहां आज अच्छे वाले कपड़े भी गंदे करने पड़ेंगे.

धर्मशाला के मैनेजर ने तीसरे दिन नम्रतापूर्वक निवेदन किया, "यहां तीन दिन ही ठहरने की मालिक की आज्ञा है. आप कोई दूसरी धर्मशाला देख लीजिए." प्रेमीजी बेचारे जगहजगह घूमे. श्रावणी समीप आ रही थी. सारी धर्मशालाएं भरी हुई थीं. अब तक पानी की चिंता थी. अब निवासस्थान की चिंता सताने लगी. घर चल देना उन्हें सभी चिंताओं एवं समस्याओं का समाधान प्रतीत हो रहा था. पर पत्नी जन्माष्टमी से पूर्व वृंदावन छोड़ने पर सहमत नहीं थीं.

बहुत ढूंढ़ने पर एक तृतीय श्रेणी की छोटी सी धर्मशाला मिली. उस में नीचे स्थायी किराएदार रहते थे. ऊपर कुछ कमरे यात्रियों के लिए सुरक्षित थे. मैनेजर ने कहा, "अभी अलमारी में सामान रख लो. रात को बरामदे में या छत पर सो जाना. कल एक कमरा खाली हो जाएगा तो आप को मिल जाएगा. एक बात पहले बता देता हूं. यहां पानी की परेशानी है. नहाना और कपड़े धोना यहां नहीं हो सकेगा. इस के लिए यमुना जाना पड़ेगा. सवेरे शाम नल आता है, जिस से पीने और खाना बनाने भर को ही पानी मिल सकता है. वैसे आप जब तक चाहें रह सकते हैं."

प्रेमीजी को मैनेजर का अंतिम वाक्य वरदान प्रतीत हुआ. नई धर्मशाला खोजने की चिंता गई. घर पर साबुन रगड़ कर घंटों स्नान करने वाली उन की सुरुचिसंपन्न पत्नी यमुना में एक डुबकी लगा कर संतोष करती रहीं एवं कपड़े ड्राइक्लीन होते रहे. कुछ समय पश्चात पत्नी भी प्रेमीजी के साथ कहने लगीं : राधेराधे बोलो, पानी को रो लो.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

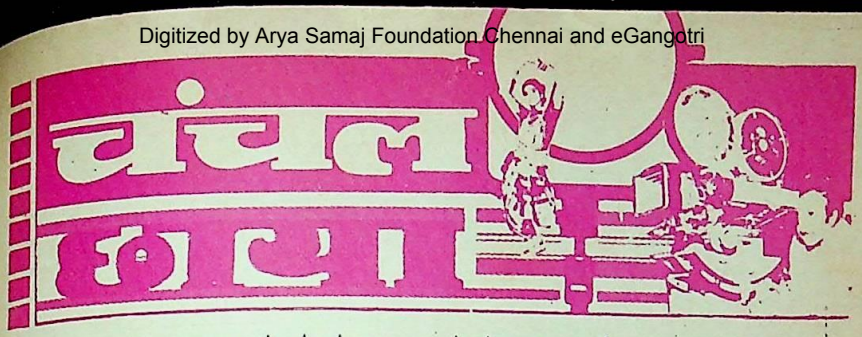

★★★अति उत्तम ★★उत्तम ★★मध्यम ★ साधारण ○ बेकार

★ कालचक्र

निर्माता: मंगल
लेखकनिर्देशक: दिलीप शंकर
संगीत: विजय बटालवी
मुख्य कलाकार: मदन जैन, सदाशिव अमरापुरकर, सुरेश ओबराय, प्रिया तेंदुलकर, रजा मुराद.

वहशत भरे बलात्कार, दहशत भरी हत्याएं तथा पुलिस, गुंडों व राजनीतिबाजों के जाल में छटपटाती आम जनता, इन सब को बेहद मुखर व गंभीर अंदाज में पेश किया है फिल्म 'कालचक्र' में.

सरसरी नजर से देखा जाए तो यह फिल्म 'अंकुश' व 'प्रतिघात' का एक और संस्करण नजर आती है. परंतु उन फिल्मों में 'हिंसा का जवाब हिंसा' के नारे को महिमामंडित किया गया था. किया इस फिल्म में भी यही गया है, परंतु अंत तक पहुंचतेपहुंचते यह भी बता दिया गया है कि जो कुछ किया गया, गलत किया गया.

इस फिल्म की कहानी को चंद शब्दों में समेटना कठिन है, फिर भी संक्षेप में इस प्रकार है:

भूषण थापा नामक गुंडे को पुलिस व राजनीतिबाजों का संरक्षण प्राप्त है. वह मदन जैन की बहन प्रिया तेंदुलकर को बलात्कार के बाद कत्ल कर देता है. प्रतिरोध करने पर भ्रष्ट इंस्पेक्टर सदाशिव अमरापुरकर की 'मेहरबानी' से तथा ईमानदार सब इंस्पेक्टर सुरेश ओबराय की सभी कोशिशों के बावजूद, मदन जैन को पांच वर्ष की कैद हो जाती है. जेल में वह एक अन्य बड़े गुंडे रजा मुराद की सहायता से भूषण थापा का कत्ल कर देता है. जेल से बाहर आने पर वह स्वयं भी दादागीरी शुरू कर देता है, परंतु जल्द ही उसे एहसास होता है कि वह दूसरा 'भूषण थापा' बनने जा रहा है और वह शरीफ इनसान बनने का फैसला कर लेता है. परंतु तब तक देर हो चुकी होती है. उस का अपना एक साथी उसे गोली मार देता है. बुनियादी तौर पर वह जुल्म का सामना करना चाहता था, परंतु डरपोक था. उस का बेटा डरपोक नहीं है तथा वह जुल्म के खिलाफ जंग जारी रखेगा.

लगभग सभी कलाकारों ने अपनी-अपनी भूमिका के साथ न्याय किया है. सदाशिव अमरापुरकर के चेहरे के भाव तो देखते ही बनते हैं. लगता है, इस कलाकार को संवादों की आवश्यकता ही नहीं.

यों तो फिल्म में लगभग सभी बाक्स आफिस फार्मूलों का सहारा लिया गया है परंतु पटकथा अपने विषय से भटकती नहीं है. इकबाल दुर्रानी ने बहुत ही तीखे दिमाग को झनझना देने वाले संवाद लिखे हैं.

विजय बटालवी ने कोई बहुत अच्छा संगीत तो नहीं दिया है, फिर भी कम से कम दो धुनें गुनगुनाने लायक अवश्य हैं.

फिल्म में जगहजगह गणपति की महिमा गाई गई है जो रेशम में टाट के पैबंद के समान लगती है. राजनीतिबाज के रूप में 'कात्रे' का किरदार भी बेहद 'सिमटा' हुआ है. इसे अन्य किरदारों की तरह ठीक से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रेखांकित नहीं किया गया है.

फिल्म के निर्देशन स्तर के बारे में इतना ही कहा जा सकता है कि यह फिल्म बंबई के तथाकथित 'टिकट खिड़की बादशाह' निर्देशकों के लिए चेतावनी है: सावधान, निर्देशक दिलीप शंकर के रूप में बाक्स आफिस के नए बाजीगर का जन्म हो चुका है.

चूंकि फिल्म पर कम लागत लगी है. साधारण व्यवसाय करने से भी यह अपने निर्माता तथा वितरकों के लिए फायदे का सौदा साबित होनी ही चाहिए.

★ शहंशाह

निर्मातानिर्देशक: टीनू आनंद
संगीत: अमर उत्पल
मुख्य कलाकार: अमिताभ बच्चन, मीनाक्षी शेषाद्रि, अमरीश पुरी, कादर खान, प्रेम चोपड़ा, प्राण, अरुणा ईरानी, सुप्रिया पाठक रोहिणी हट्टंगड़ी और जगदीप.

बहुत शोर था इस फिल्म का. काफी प्रचार कराया अमिताभ ने. कभी फिल्म के प्रदर्शन की तारीखें बढ़ाई गईं तो कभी ज्योतिषियों से शुभ मुहूर्त निकलवाए गए कभी फिल्म की कीमतें बढ़ाई गईं तो कभी इस फिल्म के प्रदर्शन के विरोध में प्रदर्शन कराने की बातें कही गईं बहरहाल फिल्म प्रदर्शित हो गई. फिल्म देखने पर पता चला कि खामखां इतना शोर मचाया गया. असल में फिल्म में जो कुछ है उस के बारे में तो यही कहा जा सकता है कि खोदा पहाड़ और निकली चुहिया.

जिस फिल्म की बुनियाद ही अपराधों पर रखी जाए, उस का अंजाम क्या होता है, यह सभी जानते हैं. फिल्म 'शहंशाह' की कहानी, जिसे अमिताभ बच्चन की पत्नी जया बच्चन ने लिखा है, अपराध जगत के मशहूर व्यक्ति जे.के. (अमरीश पुरी) की कहानी है जो अफीम, चरस, हेरोइन और ब्राउन शुगर का धंधा करता है. वह एक चाल चल कर एक ईमानदार पुलिस अफसर (कादर खान) को आत्महत्या करने पर मजबूर कर देता है. इस ईमानदार अफसर का बेटा होता है विजय श्रीवास्तव (अमिताभ) जो बड़ा हो कर पिता की तरह पुलिस इंस्पेक्टर बनता है. वह अपराधियों से रिश्वत ले कर उन के अड्डों तक पहुंचता है. रात में वह शहंशाह का रूप धारण कर बदमाशों से भिड़ता है और उन्हें लोहे के चने चबवाता है. अंत में वह असली अपराधी जे.के. को दबोच लेता है और अदालत में ही उसे मार डालता है.

फिल्म की यह कहानी कितनी अस्वाभाविक है? चूंकि फिल्म का नायक अमिताभ बच्चन है, इसलिए इस फिल्म को जोरशोर से बड़े पैमाने पर फिल्माया गया. इस में ऐसी घटनाएं डाली गई हैं जो निरक्षरों को शायद पसंद आएं. मसलन, अमिताभ द्वारा 11 किलोग्राम की ढाल पहन कर अंधाधुंध मारपिटाई करना. इलाहाबादी स्टाइल में पान खाना और मुंह बना कर बोलना, नायिका का अति नाटकीय चुलबुलापन, झुग्गीझोंपड़ियों पर बुलडोजर चलाना इत्यादि.

पूरी फिल्म अमिताभ बच्चन पर ही केंद्रित है. इस फिल्म में वह दो रूपों में पर्दे पर आया है. एक तो पुलिस इंस्पेक्टर के रूप में और दूसरा शहंशाह के रूप में. शहंशाह के रूप में उस के कुल मिला कर पांच दृश्य हैं, दो मध्यांतर से पहले और तीन मध्यांतर के बाद. इन्हीं दृश्यों में वह थोड़ा जमा है. बाकी पूरी फिल्म में वह पुलिस इंस्पेक्टर के रूप में है, जो कभी तो नायिका से इश्क लड़ाता है तो कभी चेहरे पर कालिख पोत कर 'ओ मेरी बहना' का गाना गाता है तो कभी थाने में बैठ कर (खाई के पान बनारस वाला स्टाइल में) मसखरी करता है.

इस फिल्म में शहंशाह के रूप में अमिताभ बच्चन की जो कल्पना की गई है वह न सिर्फ अविश्वसनीय लगती है बल्कि मूर्खतापूर्ण भी. जिस तरह शहंशाह अदालत में जे.के. को गले में रस्सी डाल कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिल्म 'शहंशाह' के एक दृश्य में अमिताभ बच्चन और मीनाक्षी शेषाद्रि : जिम्मेदार पुलिस अफसर की ओछी हरकत.

घसीटता हुआ लाता है और अदालत में कहता है, "मैं खुद कानून हूं," "मैं खुद अदालत हूं," उसे देख कर लगता है कि देश में एक व्यक्ति ही कानून है. जो अदालतें और जज हैं वे सब मुरदा हैं. शायद उसे अपने राजनीतिक दोस्त की शक्ति का नशा चढ़ रहा है. फिल्म के अंत में जिस तरह वह अदालत में जे.के. की पिटाई करता है और अदालत में तोड़फोड़ करता है, वह सब अति नाटकीय लगता है.

अमीर व्यक्ति के बंगले की गरीब लोगों द्वारा तोड़फोड़ करा कर अमिताभ बच्चन ने पूंजीपतियों पर आरोप लगाए हैं. चूंकि कहानी जया बच्चन की है, सवाल पूछा जा सकता है कि यह नारेबाजी क्यों? जब कि ये लोग जनता के करोड़ों रुपए छुट्टियों पर बरबाद करने में झिझकते नहीं. इस के अलावा, उस ने लोगों को यह भी बताया है कि "मैं इलाहाबाद का रहने वाला हूं" यानी कि इलाहाबाद के रहने वाले लोग रिश्वत लेते ही नहीं. जो बातें उसे संसद में कहनी चाहिए थीं, वे बातें उस ने फिल्म के माध्यम से कह दी हैं.

फिल्म के संवाद कहींकहीं अच्छे हैं. कुछ सेट भी भव्य हैं. खासकर जे.के. के बंगले का सेट. अमिताभ बच्चन के व्यक्तित्व को उभारने में छायाकार अरुण मिस्त्री, तपन बासु और चंदू शंकर का योगदान सराहनीय है, जिन्होंने अच्छी फोटोग्राफी द्वारा शहंशाह के चरित्र को उभारा है.

फिल्म का संगीत भी अच्छा है.

अमिताभ बच्चन के चेहरे पर थकान के चिह्न साफ नजर आते हैं, गले की नसें भी साफ उभरती नजर आती हैं. फिल्म में मीनाक्षी शेषाद्रि का काम सिर्फ नाचनागाना और इश्क लड़ाना ही है. अमरीश पुरी की जो भूमिका इस फिल्म में है वह दर्शक दर्जनों बार पहले भी देख चुके हैं. कादर खान और प्राण की भूमिका व्यर्थ में बेकार कर दी गई है. प्रेम चोपड़ा का अभिनय बेकार है. अन्य कलाकार साधारण हैं. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आयकर संशोधन कानून

(पृष्ठ 27का शेषांश)

की कमी हो रही है. संक्षेप में, इस प्रकार के अदूरदर्शितापूर्ण संशोधन केवल सरकार की तुगलकी नीति के ही द्योतक कहे जा सकते हैं.

यद्यपि यह बात नहीं है कि सरकार ने पहली बार इस तरह के तुगलकी कानून बनाए हों, बल्कि इस से पहले भी वह ऐसे बेतुके कानून बनाती रही है. उदाहरण के लिए, 19 सितंबर, 1987 को केंद्रीय सरकार द्वारा घोषित अध्यादेश एवं बाद में अध्यादेश के स्थान पर पारित कानून के अनुसार करदाता की 50,000 रुपए से अधिक आय होने पर 5% अधिभार लगाने का जो प्रावधान किया गया है, वह पूर्णतः अनुचित एवं असंगत है.

कितनी विचित्र एवं हास्यास्पद बात है कि एक करदाता जिस की कुल आय 50,000 रुपए है, उस के पास आयकर देने के बाद 40,750 रुपए बचेंगे, जबकि दूसरे करदाता, जिस की कुल आय 50,100 रुपए है उस के पास आयकर और उपर्युक्त 5% का अधिभार देने के बाद केवल 40,345 रुपए बचेंगे. करदाता प्रथम एवं करदाता द्वितीय की कुल आय के संदर्भ में तालिका नं. 2 देखिए.

इस तालिका को देखने से यह स्पष्ट हो जाता है कि सरकार की यह कितनी विचित्र एवं बेढंगी व्यवस्था है. मात्र 100 रुपए अधिक कमाने पर करदाता द्वितीय को 505 रुपए (अर्थात 9,290-9,250= 40 रुपए + 465 रुपए)का अतिरिक्त कर देना पड़ रहा है या यों कहिए कि 100 रुपए की कमाई पर 505 रुपए का कर कितनी निराली एवं लाजवाब व्यवस्था है. क्या इस तरह के अनुचित प्रावधान एवं कानून बना कर कांग्रेसी सरकार तुगलकी नीतियों पर नहीं चल रही है?

वित्त मंत्री नारायणदत्त तिवारी ने लोकतंत्र की दुहाई देते हुए कहा है कि कानून बन जाने के बाद भी सरकार इन संशोधित कानूनों में पुनः संशोधन करने पर विचार कर रही है. वास्तव में, इस तरह की बातें कर के सरकार यह दरशाना चाहती है कि कानून सरकार के हाथों का खिलौना मात्र है. किंतु कानून के साथ इस तरह छेड़छाड़ या मजाक करना देश के लिए कभी भी घातक सिद्ध हो सकता है.

तालिका-2

	करदाता प्रथम रुपए	करदाता द्वितीय रुपए
कुल आय	50,000	50,100
कुल आय पर आयकर	9,250	9,290
	40,750	40,810
आयकर पर 5% अधिभार	शून्य	465
आयकर (एवं आयकर पर अधिभार)देने के बाद शेष राशि	40,750	40,345

वस्तुस्थिति यह है कि सरकार ने नाटकीय ढंग से जल्दबाजी और जबरदस्ती से प्रत्यक्ष कर संशोधन विधेयक को पारित करवा कर एक बहुत बड़ी गलती, यहां तक कि अपराध किया है. अतः सरकार को चाहिए कि वह अविलंब संशोधित कानूनों में समुचित संशोधन करे. अन्यथा यह निश्चित है कि सरलीकरण के नाम पर बनाया गया यह संशोधित कानून काफी उलझनपूर्ण एवं पेचीदा सिद्ध होगा. मौलिक अधिकारों का प्रश्न पुनः उभरेगा. अनेक व्यावहारिक समस्याएं उठेंगी, और ये समस्याएं कभी समाप्त न होने वाले विवादों को जन्म देंगी. आयकर विभाग में भ्रष्टाचार तेजी से बढ़ेगा वह अलग.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मार्च 1988

सुमन सौरभ

ठिठोली विशेषांक

होली के मौके पर चुहल, शरारत, मस्ती और गुदगुदी के सतरंगे रंगों में आप को डुबोने के लिए प्रस्तुत है यह विशेष अंक, जिस का एकएक पन्ना हीरापन्ना से भी कीमती है और रंगीन पृष्ठों की लकदक के आगे तो इंद्रधनुष के रंग भी फीके पड़ जाएंगे.

इस अंक की एक झलक :

घासी राम अपने पड़ोसी राम प्रसाद का मुंडा हुआ सिर देख कर आश्चर्य में पड़ गए. उन का सिर एक तो पहले से ही मुंडा हुआ था, दूसरे, चमक पैदा करने के लिए उस पर बेतहाशा सरसों का तेल मला हुआ था. घासीराम ने शोक प्रकट किया तो रामप्रसाद बिगड़ कर बोले, "यह तो ट्रैफिक वालों को धोखा देने के लिए किया है..."

(व्यंग्य : हेलमेट का आतंक)

महामंत्री महाराज से बोला, "महाराज, प्रजा में हाहाकार है. यह नाम मैं पहली बार सुन रहा हूं. यह कार पहले मेरे पास होनी थी, प्रजा में कैसे पहुंच गई? भला सोचिए, मेरे पास हाहाकार न हो, कम से कम हीही कार तो हो..."

(हास्य एकांकी : होली दरबार)

साथ में चुलबुली कहानियां :

कंजूसराम की बीवी ● एक रुपए का घी ● झल्लू नाई का रोबोट ● होली का टैक्स ● वानर होली ● आसमान से गिरे ● जेट युग की होली... वगैरह.

रंगारंग लेख :

राजस्थानी होली ● साहसी बच्चों से साक्षात्कार ● लड़केलड़कियों की ठिठोलियां ● दीयासलाई की कहानी ● टेनिस सितारा रमेश कृष्णन... इत्यादि.

...और हंसाहंसा कर पेट पकड़ा देने वाली अनेक कहानियां, हंसोड़ कविताएं, सभी स्थायी स्तंभ, पांच चित्रकथाएं, धारावाहिक उपन्यास तथा साथ में मध्य पृष्ठीय रंगीन चित्र.

अपनी प्रति आज ही सुरक्षित करवाएं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

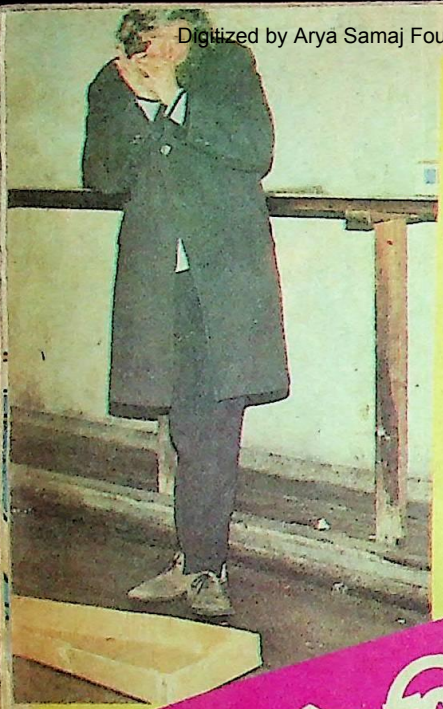

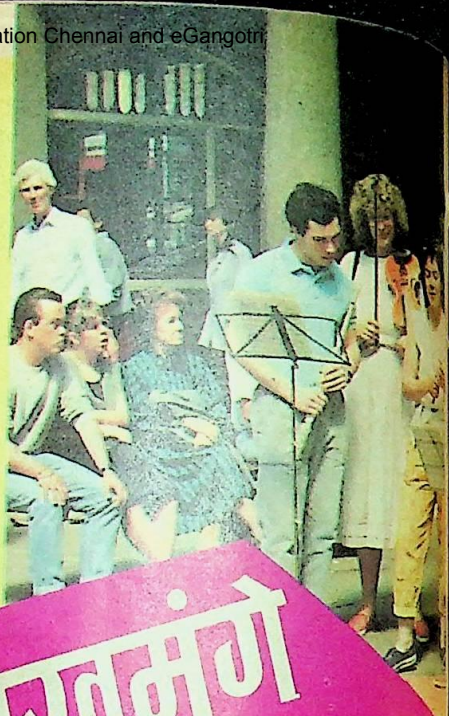

लंदन के भिखमंगे

लेख •

सुरेंद्रनाथ लाल

पिछले दिनों जब मैं भारत में था, तब कई बार मेरे मित्रों ने मुझ से पूछा था, "क्या लंदन में भी भिखमंगे हैं? क्या वहां भी घूसखोरी चलती है?" मेरा उत्तर होता था कि भिखमंगी, घूसखोरी, चोरी तथा शरीर व्यापार कुछ ऐसी आधारभूत मानवीय संस्थाएं हैं जिन से दुनिया का कोई भी बड़ा नगर अथवा देश बिलकुल मुक्त नहीं हो सकता. हां, उन की संख्या, उन के स्तर और उन के स्वरूप में जमीनआसमान का अंतर हो सकता है. उदाहरण के लिए, लंदन का कोई भी नौजवान जिस के पास कोई नियमित काम नहीं है, सरकार से कोई 30 पौंड (लगभग

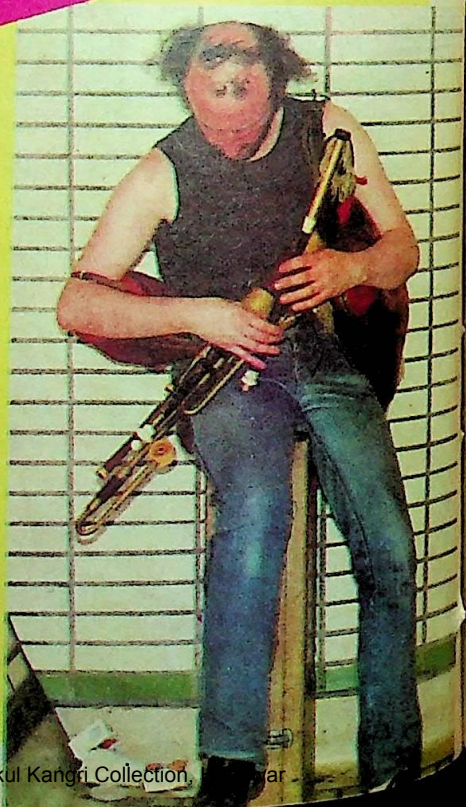

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दीनबंधु समाज के लिए चंदा इकट्ठा करता एक आर्केस्ट्रा समूह : भीख मांगने का एक तरीका यह भी.

मुझे बाद में पता चला कि वे लड़के वास्तव में भिखारी नहीं थे. दीवाली की तरह अंगरेज 5 नवंबर को 'गायफाक्स' रात्रि मनाते हैं. बच्चे होलिका दहन की तरह 'गायफाक्स' के पुतले जलाते हैं. इस खुशी में खूब पटाखे छूटते हैं और आतिशबाजी होती है.

परंपरा के अनसार बच्चे अपनीअपनी पसंद के पुतले बनाने और आतिशबाजी के लिए दोचार सप्ताह पूर्व से ही बड़ों से एकएक दोदो पैसे मांगा करते हैं. एकदो वर्ष बाद एक दिन स्वयं मुझे बहुत आश्चर्य हुआ था, जब मेरे बच्चों ने उत्साहपूर्वक मुझे बताया था कि उन्होंने स्वयं 'गायफाक्स' के लिए काफी पैसे इकट्ठे कर लिए थे.

इंगलैंड में भीख मांगना कानूनी जुर्म है, फिर भी वहां भीख मांगने वालों की संख्या बराबर बढ़ रही है. अमीरों के देश में निठल्ले, कामचोर लोगों की कमी नहीं है जो नएनए तरीकों से पैसा पाने की कोशिश करते हैं.

600 रुपए) प्रति सप्ताह भत्ता पाने का अधिकारी है. जो नौजवान भीख मांगते हैं वह इसलिए कि उन के कहने के अनुसार इतने से उन का गुजारा नहीं होता.

कोई 25 वर्ष पूर्व जब मैं पहली बार लंदन पहुंचा था, उस समय मुझे इस बात से बहुत निराशा हुई थी कि छोटेछोटे लड़के मुझे स्टेशनों पर रोक कर पैसे मांगा करते थे. परंतु तीनचार सप्ताह में उन का पैसा मांगना एकाएक बिलकुल बंद हो गया. यह

भूगर्भ स्टेशनों के कोनों में कला प्रदर्शन के नाम पर भीख मांगने वाला एक युवा जो इस तरह गुजारा चला ही लेता है.

अभी हाल तक लंदन में भीख मांगने वाले बहुत ही कम दिखाई पड़ते थे. ये भीख मांगने वाले रिवाज के अनुसार किसी प्रकार का बाजा बजाते रहते हैं या दियासलाई अथवा हजामत के ब्लेड जैसी मामूली चीज बेचते रहते हैं. जिप्सी (बनजारी) औरतें सफलता की कामना करती हुई जबरन एकआध फूल हाथ में थमा कर भीख मांगती हैं. कानून के अनुसार भीख मांगना जुर्म है और साबित होने पर 400 पौंड (8,000 रुपए) तक का जुर्माना हो सकता है. इसी कारण बाजा बजाने वाले अपनी कला का प्रदर्शन करने का बहाना बनाते हैं और दावा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करते हैं कि लोग उन्हें भीख नहीं बल्कि उन की कला से प्रसन्न हो कर पुरस्कार देते हैं.

हाल में भीख मांगने वाले कुछ अधिक दिखाई पड़ने लगे हैं. इस का कारण पिछले पांचसात साल से यहां बढ़ती हुई बेकारी है. इस वर्ष के प्रारंभ में लंदन में 25 वर्ष से कम आयु वाले पंजीकृत बेकारों की संख्या सवा लाख से ऊपर है. पहले सरकार बेकारों को बेकारी के भत्ते (30 पौंड साप्ताहिक) के अतिरिक्त, अनिश्चित अवधि के लिए आवास भत्ता भी देती थी. बहुत से लोगों ने इस सुविधा का दुरुपयोग करना प्रारंभ कर दिया. लंदन वैसे भी सारे देश के युवकों के लिए चुंबक का काम करता है. जब सरकार मुफ्त में यहां रहने और खानेपीने को देती है तो देश के किसी और हिस्से में जाने की क्या आवश्यकता है.

लंदन आवास सहायता केंद्र के आंकड़ों के अनुसार एक अकेले व्यक्ति के खाने और रहने की व्यवस्था करने के ऊपर सरकार का खर्च कोई 4,000 पौंड (80,000 रुपए) प्रति वर्ष बैठता है. पिछले वर्ष एक प्रश्न का उत्तर देते हुए स्वास्थ्य मंत्री टोनी न्यूटन ने बताया था कि 16 से 25 वर्ष तक की आयु वर्ग के सरकारी खर्च पर रहने और खाने वालों की संख्या मई और जुलाई 1985 के बीच केवल लंदन में 24,900 थी. लोग सरकारी खर्च पर लगातार लंदन या किसी अन्य बढ़िया नगर में ही टिके न रहें, इसलिए पिछले दो साल से सरकार ने यह नियम बनाया है कि बेकार युवक और युवतियों को किसी एक नगर में आठ सप्ताह से अधिक आवास भत्ता नहीं दिया जाएगा.

लंदन प्रेमी फिर भी लंदन नहीं छोड़ते. खानेपीने के लिए तो सरकार 30 पौंड प्रति सप्ताह प्रति व्यक्ति हर हालत में देती है परंतु बिना आवास भत्ते के इतने पैसों में ही जीवनयापन करना लंदन में असंभव सा है. इसी कारण हाल में भीख मांगने वालों की संख्या में कुछ बढ़ोतरी हुई है. ये भीख मांगने वाले अधिकतर भूगर्भ स्थित स्टेशनों के भीतर दिखाई पड़ते हैं. इन में से कुछ बाजारों

और अन्य भीड़भाड़ की जगहों पर भी खड़े रहते हैं.

छठे और सातवें दशक में जब बेकारी बहुत कम थी, पुलिस इन बाजा बजाने वालों को मुस्तैदी से पकड़ लेती थी. परंतु वर्तमान आर्थिक वातावरण में वह जानबूझ कर इन भीख मांगने वालों की ओर ध्यान नहीं देती है. यदि इन के ऊपर जुर्माना किया जाए तो ये जुर्माना तो भर नहीं सकते फिर इन्हें हवालात या जेल में रखना पड़ेगा. जुर्मों में असामान्य वृद्धि के कारण आजकल जेलें बड़े अपराधियों से इस प्रकार भरी पड़ी हैं कि कोई न्यायाधीश भीख मांगने वालों को जेल में डालने की मूर्खता नहीं कर सकता.

यद्यपि अकेले अथवा विवाहित जोड़ों को आवास देने की कोई कानूनी जिम्मेदारी सरकार पर नहीं है परंतु साथ में बच्चा होने पर पूरे परिवार के आवास की व्यवस्था करने की जिम्मेदारी तुरंत सरकार पर आती है. बहुत से भारतीय, पाकिस्तानी अथवा बंगलादेशी जो इंगलैंड में बस गए हैं जब अपना परिवार यहां बुलाते हैं तो इसी कानून के अंदर स्थानीय अधिकारियों से आवास प्राप्त करते हैं. यदि तुरंत समुचित मकान उपलब्ध न हों तो उन्हें महंगे होटलों में ठहराया जाता है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

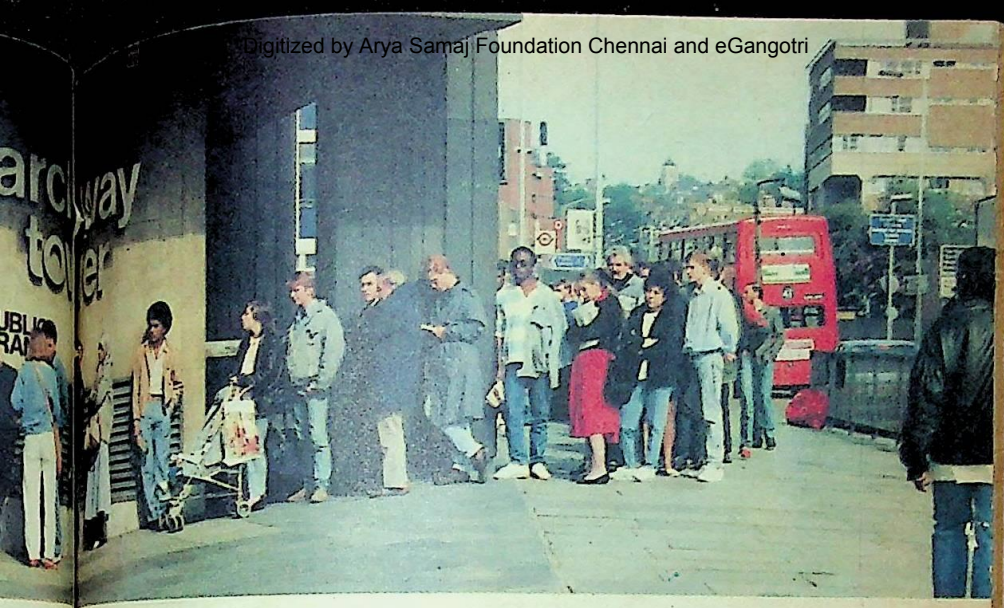

स्वास्थ्य और समाज सुरक्षा विभाग के एक कार्यालय के बाहर बेकारी भत्ता (डोल) पाने के लिए लगी पंक्ति : भीख मांगने के लिए सरकारी प्रोत्साहन दिए बिना गुजारा नहीं.

अभी तक यहां यह नौबत नहीं आई है कि लोग भारत की तरह पटरियों पर सोएं. पर कुछ बेकारों के लिए आवास की समस्या बहुत गंभीर है. लंदन में पांच सौ रुपए प्रति सप्ताह से कम में कोई कमरा किराए पर मिलना संभव नहीं है. इतना पैसा छोटेमोटे काम करने वाले भी आसानी से नहीं दे पाएंगे. फिर बेकार लोग कहां से समर्थ हो सकते हैं.

एक विचित्र कानून के अंतर्गत किसी खाली मकान में घुस कर उस पर अस्थायी रूप से कब्जा कर लेना और वहां रहने लगना इंगलैंड में अवैध नहीं है. इसे स्थानीय भाषा में 'स्क्वाटिंग' कहते हैं. यदि वास्तविक मकान मालिक जबरदस्ती ऐसे लोगों को अपने मकान से निकाले तो उलटा उस पर ही मुकदमे लगेंगे. बहुत से बेकार लोग ऐसे ही 'स्क्वाटों' में मुफ्त रहते हैं.

'शेल्टर' (शरणागृह) जैसी एकआध धार्मिक संस्थाएं भी आवासरहित लोगों से सहानुभूति रखती हैं. उन के कार्यकर्ता घूमघूम कर ऐसे स्थानों का पता लगाया करते हैं. संकट उपस्थित होने पर वे कानूनी सहायता भी प्रदान करते हैं. इस समय लंदन में स्क्वाट करने वालों की संख्या अनुमानतः 30,000 से 35,000 के बीच है. इन में से लगभग सभी की आयु 30 वर्ष से भी कम है. भीख मांगने वाले भी ऐसे स्क्वाटों में रहते हैं.

गरमियों में बहुत से आवासरहित लोग पार्कों में सोते हैं. दक्षिण लंदन में बहुत से थियेटर आदि के आसपास की जगहें रात में बिलकुल सुनसान हो जाती हैं. कुछ लोग वहां भी सोते हैं. ये लोग सर्दियों में ठंड से बचने के लिए बड़ेबड़े कार्ड बोर्ड के बक्सों और अखबारों का उपयोग करते हैं.

भीख मांगने वाले अधिकतर पुरुष ही होते हैं. लड़कियां कभीकभी अपने दोस्तों (ब्वाय फ्रेंड) के साथ भीख मांगती हैं. लड़का बाजा बजाता है रहता है और लड़की टोपी हाथ में लिए पैसे इकट्ठे करती रहती है. वैसे, वेशभूषा से ये लोग बिलकुल अन्य स्थानीय युवकयुवतियों जैसे ही होते हैं. गंदे अथवा फटे कपड़े नहीं पहने होते. उन के प्रदर्शन से लगता है, उन्हें संगीत का अच्छा ज्ञान है. कइयों के वाद्ययंत्र भी बहुत कीमती होते हैं.

अन्य पेशों की तरह कलाकार भी आजकल बहुत बेकार हैं. कलाकार श्रोताओं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के भूखे होते हैं. जब उन्हें और कहीं काम नहीं मिलता तो जहां कहीं भी संभव हो जनसमुदाय के सामने अपनी कला का प्रदर्शन करने में उन्हें एक प्रकार का सुख सा मिलता है. साथ में कुछ पैसे भी मिल जाएं तो और भी अच्छा है. कभीकभी उन्हें प्रति घंटे चारपांच पौंड तक मिल जाते हैं. कभी बहुत कम मिलता है. पर जो कुछ भी मिलता है वह उन की एक प्रकार से ऊपरी आमदनी है. भीख मांगना कुछ अर्थों में शरीर का व्यापार करने के समान है. पहले थोड़ी सी झिझक होती है. फिर एक सामान्य पेशे जैसा जीविकोपार्जन का साधन बन जाता है.

लड़कियों को अकेले भीख मांगते हुए मैंने बहुत ही कम देखा है. यदाकदा 'प्रैम' में बच्चे को साथ लिए हुए उन्हीं के नाम पर 'सहायता' मांगने वालों से टकराया हूं. ऐसा वह क्यों करती हैं? समझ में आना कठिन है.

यदि किसी कारण से कोई अपने बच्चे की समुचित देखभाल न कर सके तो उस से उस का बच्चा छीन लिया जाता है और सरकार के संरक्षण में ले लिया जाता है. बच्चे वाली मां के रहने और खाने की व्यवस्था सरकार को तुरंत करनी पड़ती है. हर बच्चे के लिए अतिरिक्त भत्ता भी अमीरगरीब सब को मिलता है, ठीक उसी प्रकार हर बूढ़ेबूढ़ियों को यहां 30-40 पौंड प्रति सप्ताह पेंशन मिलती है.

बच्चेबूढ़े और बेकारों की चिकित्सा और दवाईदारू भी यहां मुफ्त है. अकेले भीख मांगने वाली लड़कियां बहुत शीघ्र किसी को दोस्त बना लेती हैं. या बेझिझक शरीर का व्यापार करने लगती हैं.

यद्यपि जीवनयापन के लिए समुचित राशि सरकार सब को देती है परंतु उतने से ही सब का काम नहीं चल पाता. सिगरेट और शराब की लत लगभग सभी को है. युवकयुवतियों को थोड़ा बहुत मनोरंजन और मेलजोल के लिए भी अतिरिक्त पैसा चाहिए. बूढ़ों को जाड़ों में अपना मकान गरम रखने के लिए काफी पैसा चाहिए. अधिक पीने वालों की तो अलग समस्या है. वे अपने सारे भत्ते और पेंशन की शराब ही पी जाते हैं.

काहिलीपन को बढ़ावा

जिस बढ़ती हुई बेकारी के कारण भिखमंगी को प्रोत्साहन मिल रहा है उस का स्वरूप भी ब्रिटेन में कुछ अजीब सा है. आंकड़ों के अनुसार यहां कोई 30 लाख के ऊपर लोग बेकार हैं, परंतु हाल की एक रिपोर्ट के अनुसार वास्तविक बेकार 10 लाख से अधिक नहीं हैं. उस के अनुसार बहुत से लोग इसलिए बेकार हैं क्योंकि वे निरे आलसी हैं और काम करना ही नहीं चाहते.

सरकार ने युवाओं को तरहतरह के कामों का प्रशिक्षण देने की योजना बना रखी है. परंतु अधिकांश युवा लोग इस में भाग नहीं लेते क्योंकि इस के अंतर्गत उन्हें मेहनत अधिक करनी पड़ती है और पैसे विशेष अधिक नहीं मिलते.

एक खासी संख्या ऐसे लोगों की भी है जो बेकार होने के बहाने दोहरी आमदनी करते हैं. बेकारी भत्ता भी लेते हैं और साथ ही अनधिकृत रूप से मेहनतमजदूरी करते हैं या किसी मित्र की दुकान आदि की देखभाल करते हैं. कुछ लोग ऐसे हैं जो स्वेच्छा से अवकाश ग्रहण कर चुके हैं. उन का काम करने का कोई इरादा नहीं है. केवल कुछ अतिरिक्त आय के लिए बेकारों में अपना नाम दर्ज कराए हुए हैं.

सरकार ऐसे विरोधाभासों को दूर करना चाहती है. परंतु राजनीतिक कारणों से कड़े कदम उठाने में असमर्थ है. विरोधी काफी शोर मचा सकते हैं. फिर यह भी सही है कि एक कल्याणकारी समाज में किसी की दशा में कुछ ऐसे लोग रहेंगे ही जो सामाजिक सुविधाओं का दुरुपयोग करें. उन के प्रति काररवाई करने से संभव है कि जो लोग सही मानों में सहायता करने के अधिकारी हैं और जिन की संख्या काफी बड़ी है, उन्हें अनावश्यक रूप से कठिनाइयों का सामना करना पड़े.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बेटी की मां बनना एक बहुत बड़ी जिम्मेदारी है. अकसर माताओं के सामने यह समस्या खड़ी रहती है कि वे अपनी बड़ी होती बेटी का सही मार्गदर्शन कैसे करें? माताओं की इसी समस्या के समाधान के लिए प्रस्तुत है:

सरिता

मां बेटी व्यवहार विशेषांक

अप्रैल (प्रथम) 1988

यह अनूठा विशेषांक न सिर्फ माताओं की समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करेगा बल्कि युवावस्था की ओर अग्रसर बेटियों के लिए भी मार्गदर्शक व प्रेरणादायक सामग्री लिए होगा.

कुछ विशेष आकर्षण:

- मांबेटी व्यवहार : तलवार की धार.
- मां बेटी : विवाद पुराने और नए का.
- मांबेटी और यौन समस्याएं.
- अपनी बेटी को आलसी मत बनाइए.
- किशोर उम्र की बेटी और मां का व्यवहार.
- अपनी बेटी को अंधविश्वासों से मुक्त रखें.
- बेटी को घरेलू कामों की ओर प्रेरित करें.
- क्या आप की कुंआरी बेटी गर्भवती हो गई है.

सिर्फ मां बेटियों के लिए ही नहीं, परिवार के अन्य सदस्यों के मनोरंजन के लिए भी भरपूर सामग्री: 9 कहानियां, कई अन्य लेख, कविताएं, फिल्म समीक्षाएं तथा सभी स्तंभ.

अपनी प्रति आज ही सुरक्षित करा लें

मूल्य वही 5.00

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं लौटना चाहती हूं

कहानी • ऊषा मेहता 'दीपा'

मन बहुत दिनों से बारबार उकसा रहा था कि मैं दानु को पत्र लिख दूं. कितनी बार अपने अहं की दीवार को फलांगने के लिए कलम उठाई थी हाथ में, पर अहं की वह दीवार न जाने कहां से आ खड़ी हुई थी हर बार सामने. पहले तीन, फिर चार और अब पांचवां वर्ष. पांच वर्षों की एक भयानक खाई सामने मुंह खोले खड़ी थी. मेरे अहं को ढेरों बार मेरे अपनों द्वारा झकझोरा भी गया था. एक बार मां ने आहें भरते हुए कहा था, "बेटियां मायके की दहलीज पर नहीं, ससुराल की दहलीज पर भी शोभा पाती हैं."

अनेक बार भाभी के शब्दों ने कचोटा था, "समझौते के लिए अपने को मारना पड़ता है."

"क्या वास्तव में मैं ने समझौते के लिए

आगे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बड़ी ननद की शादी में मिली महत्त्वपूर्ण जिम्मेदारियों ने मुझ में यह वहम पैदा कर दिया था कि मैं और दानु अगर बैसाखियां न बनें तो ससुराल के लोग एक कदम भी नहीं चल सकते. मेरा यह वहम तो तब टूटा जब मैं रूठ कर मायके चली आई.

अपनेआप को नहीं मारा था?''यह प्रश्न रात के भयानक सन्नाटों में मुझ से मेरे ही मन ने सैकड़ों बार पूछा था. छः वर्ष पूर्व हुई थी मेरी शादी. आई. ए. एस. लड़का लाई थी मेरी भाभी अपनी गुणसंपन्न भतीजी के लिए. जाने प्रशंसा के कितने पुलों को अपनी चटपटी जबान से बांधा था भाभी ने दानु के सामने. देखने आना तो बस एक औपचारिकता थी. साधारण रूपरंग की मालिक थी मैं. पर दानु एक गुणवान लड़की का सपना संजोए थे. तभी तो देखने की औपचारिकता को पूरा करने के एकदम बाद ही तो शादी की तैयारियां जोरशोर से शुरू हो गई थीं.

उन्हीं हंगामों के दौरान बड़ी दीदी ने एक दिन कहा था, ''नेहा, पति वश में होना चाहिए फिर तो किसी की परवाह नहीं. देखो, अपने जीजा को, सास इनकार करती रही कि इस छोटे को ले कर इतनी जल्दी न मचाऊं मैं मायके आने की. पर मैं ने इन्हें मना लिया तो भूंकती रही सास.''

''दीदी, सास के लिए ऐसा कह रही हो... छिः...''

''तुम्हें मां के हाथपांव सेंकने चाहिए हर शाम. अब भाभी को थोड़ी राहत दो.'' दानु ने नेहा से सहज भाव से कहा.

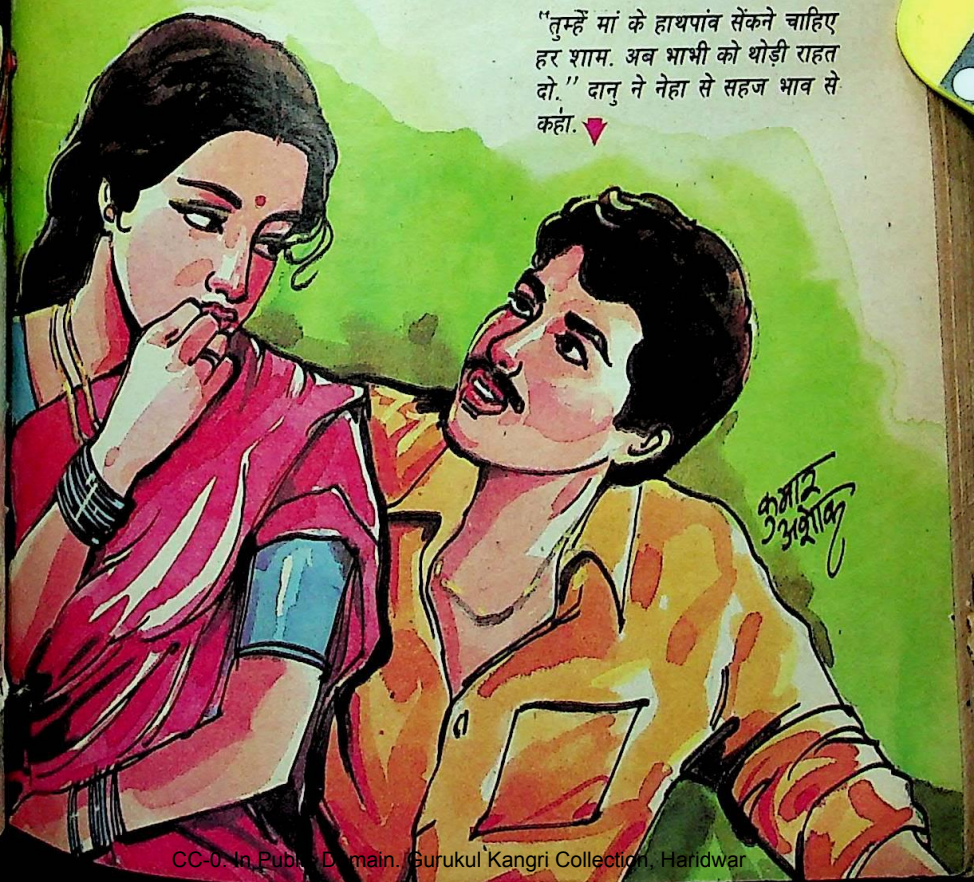

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अरे, पगली, चंद दिनों बाद पूछूंगी तुझ से कि सास क्या होती है."

मेरे ऊपर सभी को जैसे गुमान, साथ ही ईर्ष्या भी होने लगी थी और सब लड़कियों की तरह.

'घर जा अपने' का एहसास दिलाते हुए वे औपचारिकता निभा रही थीं. "मायके से डोली में जा रही हो, ससुराल से अर्थी में निकलना," कहते हुए उन्होंने धक्का दे दिया था मुझे.

अपना घर, हर लड़की की तरह संजोया गया सपना मेरे भीतर भी तो था. अपना घर और उस घर के हर शख्स के चेहरे पर बिछी खुशी की परतें देखी थीं मैं ने, तो मुझे भी अनायास गर्व हो उठा था अपनेआप पर. सासु मां से ननदों तक और देवर से भतीजियों तक के चेहरे पर परत दर परत बिछी खुशियों का अंबार समेटे हुए वह रात घिर आई थी, जिस के बाद लड़की एक पूर्ण औरत समझने लगती है खुद को.

मैं पत्ते की तरह कांपने लगी थी. जब मैं ने दानु को कमरे के भीतर आते देखा था और उन के दोस्तों की खिलखिलाहट से वातावरण को महकते महसूस किया था.

दानु स्नेहिल और एक ऐसे पुरुष थे, जिन्हें सही अर्थों में पुरुष कहा जाता है समझदार पुरुष. उन की सूझबूझ की कायल हुए बिना न रही थी मैं. पुरुष कामुक होता है, भेड़िया होता है...ऐसा सब कुछ सुन रखा था, लेकिन वहां तो ऐसा कुछ नहीं था. बड़े

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सहज भाव से दानु ने अपनी बांहों में समेटा था मुझे. और फिर हमारी सारी रात अच्छे दोस्तों की तरह बतियाते गुजर गई थी. भोर ने जब दरवाजे पर मधुर सी दस्तक दी तो दानु बोले थे, "अरे, नेहा, देखो रंगीन उजाले फैल आए हैं." और झट ढेरों चुंबन ले लिए थे दानु ने.

दरवाजे पर धीमी दस्तक हुई थी.

"उठो नेहा, दरवाजा खोलो, भाभी होंगी. पांव छूना उन के."

दरवाजे पर भाभी ही थीं ट्रे में दो प्याले लिए. पांव छूते ही उन्होंने आशीर्वाद की झड़ी लगाई थी और मैं शर्म से लाल हो गई थी.

"आइए न अंदर," चाय थामते हुए मैं ने कहा था.

"यह साहबजादे क्या नाटक कर रहे हैं

"भाभी बुखार में तप रही हैं और तुम यहां पड़ीपड़ी उपन्यास पढ़ रही हो." दानु दूर से लौटते ही नेहा पर बरस पडे

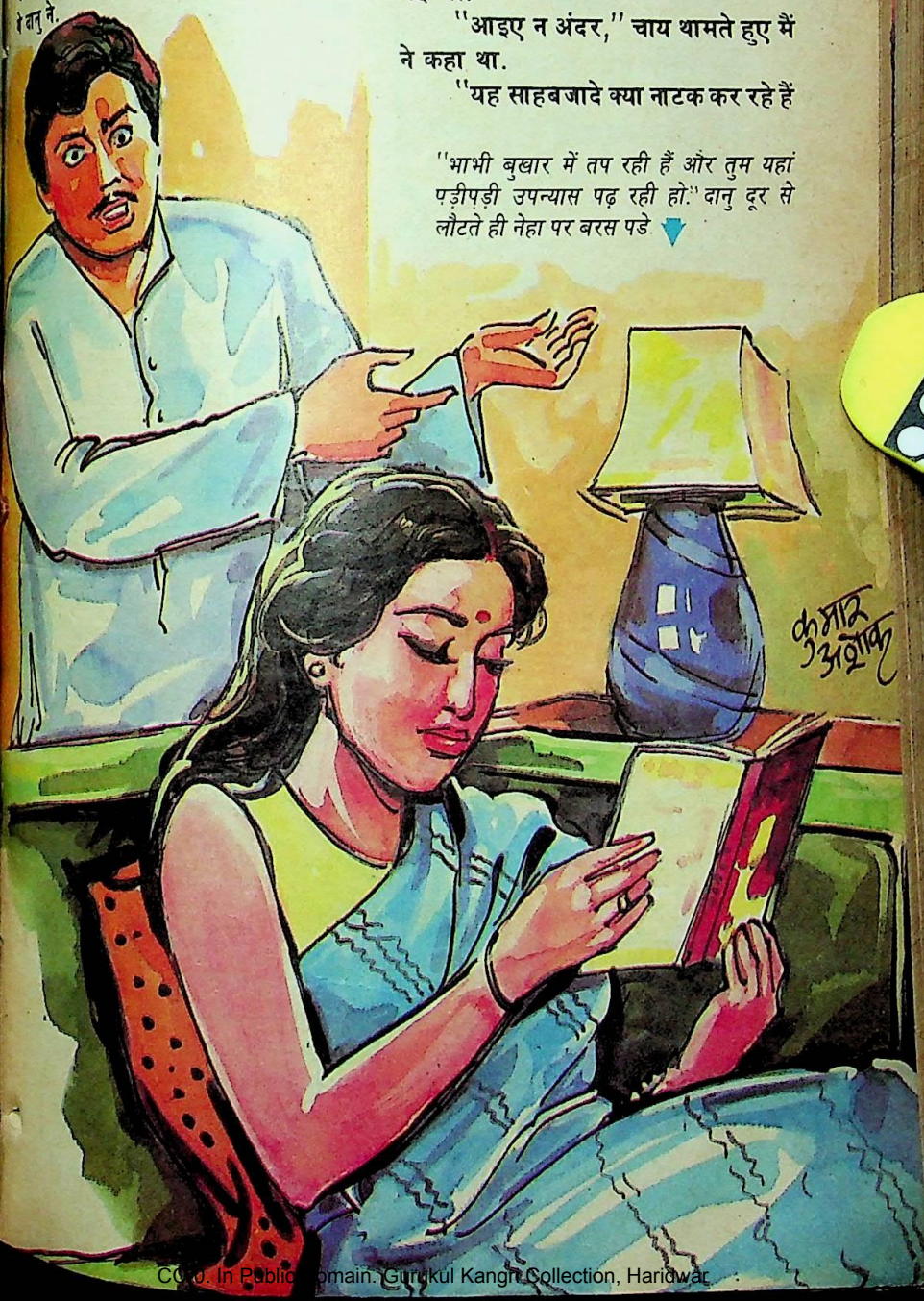

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्पर्श

तेरे स्पर्श से नशा सा छा गया,
शरीर में एक ज्वार सा आ गया,
जैसे कोई मन के तारों को छेड़ गया,
कोई उर की गहराइयों को छू गया.
–रेनू श्रीवास्तव

सोने का," भाभी दानु की नाक पकड़ते हुए बोली थीं.

दानु ने झट उठ कर भाभी के पांव छुए थे और फिर उन के गले में झूलते हुए कहा था, "भाभी, आज का दिन तो सो लेने देतीं."

"चल, शरीर कहीं का. अब बीवी वाला हो गया है. यह नौटंकी छोड़. कल को एक बच्चे का बाप बनेगा तो क्या तब भी यों ही बचपना करेगा."

भाभी के प्रति दानु का ऐसा स्नेह देख कर मुझे सुबहसुबह दीदी की बात याद हो आई थी, "पति वश में होना चाहिए, फिर तो किसी की परवाह नहीं."

दानु का रात वाला व्यवहार मुझ पर भारी हो उठा था, 'कितने अच्छे हैं, दानु. पर यह भाभी से ऐसा बचपना.'

विचारों को भंग कर दिया था दानु की गुहार ने, "नेहा..."

"जी...जी"

"क्या सोच रही हो?"

"कक... कुछ भी तो नहीं."

"कुछ तो है. मैं बताऊं...?"

मैं खामोश रही.

"तुम यह सोच रही हो न कि भाभी से मैं इतना खुला क्यों हूं? जानेमन, औरतों में शक का माद्दा कूटकूट कर भरा होता है."

दानु ने बच्चों की तरह हाथ हिलाए थे कूटने का अभिनय करने के लिए. फिर आगे बोले थे, "कभी ऐसा मत सोचना. यह भाभी मेरी मां हैं. तुम्हें पता है न कि इन का कोई बेटा नहीं है. भैया की अकस्मात मौत के बाद इन्होंने ही बेटे की तरह पाला है मुझे. आज मैं जो कुछ भी हूं, इन्हीं भाभी की देन हूं जानेमन. तुम्हारा पति, तुम्हारी इसी जेठानी रूपी भाभी मां की देन है."

दानु ने फिर अपनी बातों में खींच कर अपने सीने में समेट लिया था मुझे और मैं फिर सब भूल गई थी.

सासु मां बिस्तर से बहुत कम उठ पाती थीं. उन्हें गठिया की शिकायत थी. घर की चाबियां भाभी के हाथ में थीं. घर का हर शख्स उन्हीं के इशारों पर चलता था. वह घर का सारा काम बड़ी चुस्ती से निभाते हुए भी इस बात का पूरापूरा ध्यान रखती थीं कि किसे, कब, क्या चाहिए.

कई दिनों तक उन्होंने मुझे काम को हाथ तक न लगाने दिया था. सुबह से ही मुझे गुड़िया की तरह सजासंवार कर ड्राइंग रूम में बैठा दिया करती थीं. आने वाली औरतों के सामने मेरी प्रशंसा के पुल बांधा करती थीं.

इसी तरह महीनों बीत गए थे. मजे से जिंदगी बीत रही थी. पर मेरे भीतर कहीं एक शक था, जो कभीकभी नाग की तरह फन उठा लिया करता था उस सुखी गृहस्थी को डसने के लिए. पर मैं उस नाग के फन उठाते ही उस के जहरीले दांत को तोड़ दिया करती थी.

"भाभी, मेरा तौलिया. भाभी, मेरे कपड़े."

दानु की इस गुहार पर भाभी ने आंखें तरेरते हुए कहा था, "सुनीष, अब तो नेहा को सौंप दिया है मैं ने. भई, अब उसी से मांगा करो ये सारा सामान. मेरा भी थोड़ा बोझ कम करो."

"तुम ने भाभी से कुछ कहा था क्या?"

"क्या मैं ने? नहीं तो, कुछ नहीं कहा मैं ने तो, क्यों?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"नहीं, कुछ नहीं, यों ही पूछ लिया मैं ने."

दानु ने दफ्तर जातेजाते यह प्रश्न दागा था. मैं दिन भर यही सोचती रही थी कि भाभी से कुछ भी नहीं कहा था मैं ने. फिर भाभी ने यह चुगली क्यों खाई थी.

दिन भर मेरा मन उदास और होंठ खामोश रहे थे. जेठानी ने बारबार उदासी का कारण जानना चाहा था, लेकिन मैं टालती रही थी.

"सुनीष, नेहा उदास है. उसे चंद रोज के लिए मायके ले जाओ. बेचारी मांबाप के बिना सूनासूना महसूस कर रही है."

सुनीष किसी आज्ञाकारी बेटे की तरह शाम को ही अवकाश ले कर आ गए थे. मैं फिर से सब कुंठाएं भूल कर मायके जाने की तैयारी में जुट गई थी.

"यह साड़ी रखो, वह सूट डालो..." ये सब कपड़े दानु ने अपनी पसंद के रखवाए थे. ढेरों हाथ हमारी विदाई के लिए हिलते रहे थे और मैं मायके आ गई थी. कोई शख्स उस गली और घर का ऐसा न था, जो मुझ से मिलने न आया हो और उस की निगाहों में गर्वीलापन न हो.

"तुम तो वी.आई.पी. हो गई हो, भई." दानु ने चुटकी ली थी.

"तुम्हारी वजह से," मैं ने तर्क दिया था.

"मेरी वजह से नहीं, तुम्हारी अपनी कुशलता है यह तो,"

"नहीं."

हम देर तक इस विषय पर बहस करते रहे थे और पिताजी ने हमारा झगड़ा सुलझाया था. "ठीक ही तो कह रही है नेहा. बेटा, औरत आज भी ऐसी नाजुक लता है, जिसे पुरुष रूपी वृक्ष का सहारा अगर मिल जाए तो वह आकाश छू लेती है और अगर यह सहारा न हो तो वह जमीन पर गिर जाती है और पांवों तले रौंदी जाती है."

पिताजी का भाषण लंबा न हो जाए, यही सोच कर मैं ने खाना लग जाने का ऐलान कर दिया था.

"तुम यहां इतना चहक रही हो. पर अपने घर में तो तुम अधिकांश चुप, खामोश ही रहती हो," दानु ने पूछा था, "क्या तुम वहां प्रसन्न नहीं?"

"कौन कहता है?"

"कहता तो कोई नहीं, मैं स्वयं देखता हूं."

"अरे, नहीं, यहां जिंदगी का आरंभ हुआ है और मांबाप का घर तो... तुम नहीं समझ पाओगे."

बात खत्म तो मैं ने जरूर कर दी थी उस दिन, पर भीतर ही कहीं एक कुंठा फन उठाने लगी थी. दानु का अपनी भाभी से, अपनी बहनों और भाइयों से इतना ज्यादा जुड़ा रहना मुझे भीतर ही भीतर अखरता सा लग रहा था. एक धीमीधीमी ईर्ष्या की आंच सी सुलग रही थी भीतर कि दानु सिर्फ मेरा हो.

अब मैं भाईभाभी को जब अपने से बेरुखी का व्यवहार करते देखती हूं तो मुझे दुख होता है. तब क्यों नहीं मैं ने एक बेटी, बहन या भाभी बन कर सोचा कि उन लोगों पर क्या गुजरती यदि उन के मन रूपी घरों का स्तंभ दानु अपनी जगह से हिल जाता.

मैं घर लौट आने पर चंद दिनों में फिर से सामान्य हो गई थी, लेकिन भीतर जो एक विष वृक्ष ईर्ष्या का रोप गया था, वह अपनी जड़ें मन रूपी धरती पर फैलाता ही जा रहा था.

"तुम्हें मां के हाथपांव सेंकने चाहिए हर शाम. अब भाभी को थोड़ी राहत दो.

सहारा

साहसी पुरुष को कोई सहारा नहीं होता तो वह चोरी करता है. कायर पुरुष को कोई सहारा नहीं होता तो वह भीख मांगता है. लेकिन स्त्री को कोई सहारा नहीं होता तो वह लज्जाहीन हो जाती है.

—प्रेमचंद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सारी उम्र हमारी सेवा करते ही हो गई उन्हें," दानु ने सहज भाव से कहा था.

"भाभी की राहत की इतनी ही चिंता है तो अपनी बहनों को क्यों नहीं कहते भाभी की मदद के लिए."

"बहनें घर के कामों में तो हाथ बंटा देती हैं, पर तुम जानती हो, हम लोगों में, बेटियां, मां बाप तो क्या, अपने बड़ों के पांवों को हाथ नहीं लगा सकती हैं."

"तुम क्या सोचते हो कि मैं घर का काम नहीं करती?"

"करती हो, जानेमन. खूब करती हो. तुम्हारे गुणों ने ही तो मुझे बांधा था. यों तो दफ्तर में मेरे लिए लड़कियों की कमी न थी."

"नहीं थी कमी, तो क्यों न कर ली शादी उन्हीं से..."

"तुम जो मेरे संयोग में लिखी थीं. भला मैं कैसे किसी और से शादी कर लेता." दानु ने अपनी ओर प्यार से खींचा था, लेकिन मैं रोष जताती हुई झटके से अलग हो गई थी. मुझे दीदी की नसीहत याद आ गई थी, 'मेरा यों असहज हो जाना दानु को बुरा लगेगा और वह मेरे पीछेपीछे आएंगे तो मैं नारी चरित्र पर अमल कर...'

लेकिन ऐसा नहीं हुआ था. दानु उठ कर बाहर चले गए थे. अवकाश था न उस रोज. सारे घर में चहलपहल थी. सेहन में कुरसियां डाले बैठे थे सब. मुझे बारबार पुकारा गया था, पर मैं न गई थी बाहर. अंत में भाभी स्वयं आ कर मुझे बाहर ले गई थीं, "क्यों सुनीष, क्यों खफा कर रखा है नेहा को?"

"नहीं भाभी, भला मैं क्यों खफा करूंगा?"

कई दिनों तक हम लोगों के बीच बातचीत बंद रही थी. सुनीष पुकारते रहते और मैं करवट बदल कर सोने का नाटक करती रहती थी. चारपांच दिन तो किसी तरह सुनीष ने सहन किया, परंतु फिर वह मां के पास बैठे रहते थे और देर से कमरे में आने लगे थे.

पाठकों की समस्याएं

मैं पढ़ीलिखी सुंदर युवती हूं. समस्या यह है कि सामने वाला दांत खराब है. क्या दूसरा दांत लग सकता है?

बिलकुल लग सकता है. किसी दंत चिकित्सक को दिखा दीजिए. वह आप की समस्या चुटकियों में सुलझा देगा.

मैं 50 वर्षीय शुद्ध शाकाहारी व्यक्ति हूं. घर वाली का स्वर्गवास हो गया है. किसी नारी निकेतन की लड़की से विवाह करना चाहता हूं. जो घर व मुझे संभाले. कृपया पता बता दीजिए.

नारी निकेतन
तिहाड़ जेल के समीप, जेल रोड, नई दिल्ली.

मैं एक 18 वर्षीय युवक हूं. हमारे घर में पतिपत्नी का जोड़ा रहता है. पत्नी मुझे कहती है कि उस के पति से बच्चा नहीं हो सकता. मैं उस के साथ सहवास करूं. क्या करूं?

आप तनिक भी इस पचड़े में पड़ कर गैरकानूनी व असामाजिक कार्य न करें. भूल कर भी एकांत में उस महिला से न मिलें. वह महिला ठीक नहीं है. आप तो अपनी पढ़ाई में ध्यान लगाएं.

मैं एक राजकीय सेवा में डाक्टर व दो बच्चियों का पिता हूं. एक तलाकशुदा युवती से प्यार करता हूं. मैं उसे रखैल बना कर नहीं रखना चाहता. शादी करना चाहता हूं. क्या करूं?

निश्चित रूप से अमानवीय व्यवहार है आप का. आप गैरकानूनी व असामाजिक कार्य तो कर ही रहे हैं, साथ ही अपनी बीवी, बच्चियों पर जुल्म भी कर रहे हैं. उस युवती को भी इस विषय में सोचना चाहिए. उस का एक जगह तलाक हो चुका, वह गलत था. अब आप के साथ वह बहुत गलत बात कर रही है. उसे एकदम भूल कर अपने बच्चों व परिवार में ध्यान लगाइए. आप एक पढ़ेलिखे व्यक्ति हैं. मन में दृढ़ निश्चय कर के सब कुछ कर सकते हैं.

मैं एक युवा छात्र हूं. क्या मैं किसी पुरानी पत्रिका या उपन्यास आदि से चीजें निकाल कर उन्हें संकलित कर के प्रकाशित करा सकता हूं. कहीं कानूनन अपराधी तो न हो जाऊंगा? दूसरे दूरदर्शन के धारावाहिकों के निर्माताओं से मिलना चाहता हूं. कहीं गलत तो नहीं फंस जाऊंगा?

समझ में नहीं आता, आप क्या करना चाहते हैं. आप कानूनन किसी भी पुस्तक से कोई अंश ले कर कहीं प्रकाशित नहीं करा सकते. अगर कहीं कुछ शब्द लेना चाहते हैं तो संपादक व लेखक की अनुमति लेना जरूरी है.

दूसरे, दूरदर्शन धारावाहिकों के निर्माताओं से क्यों मिलना चाहते हैं? सब बातें सोच लीजिए. हां, यों ही गलत चक्कर में मत पड़िए. अकसर असली निर्माता तो बिना बात मिलते भी नहीं.

—कंचन

'अर्चिता'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन की इस हरकत से मेरी खीज बढ़ गई थी. उस रात मैं अपने कमरे से उठ कर साथ वाले ड्राइंग रूम में जा लेटी थी. दानु मुझे कमरे में न पा कर दबेपांव ड्राइंग रूम तक आ गए थे.

"तुम...यहां? अरे, खफा हो. चलो, हमें माफ कर दो न. बड़ी के लिए लड़का देखा है न. मां से उस के लिए तभी तो विचार कर रहा था. देर हुई."

"आज तो तभी देर हुई और इतने दिनों?"

"इस का मतलब है कि तुम खफा हो."

दानु मुझे बांहों में उठा कर बेडरूम में ले आए थे. मेरा रोष उस स्पर्श से ही घुल गया था.

बड़ी ननद की शादी की व्यस्तता में महीनों गुजर गए. और फिर एक और राहत की परत बिछ गई सभी के चेहरों पर. लेकिन उस शादी में भाभी ने एक और महत्त्व मेरी झोली में डाला था. हर काम में मुझे अग्रणी रख कर मेरे भीतर एक और विष वृक्ष बीजा था. मेरी अल्पबुद्धि यह मान बैठी थी कि मैं उन सब से कहीं ज्यादा श्रेष्ठ हूं और मेरे पति के बिना तो वे लोग एक कदम नहीं हिल सकेंगे. यह एक वहम पल गया था कि यदि मैं और दानु उन की बैसाखियां न बनें तो वे लोग एक कदम न चल पाएं.

इसी अभिमान के नाग को पाल कर मैं बातबात पर घर के हर सदस्य को अपनी इच्छा से चलाने की कामना संजोने लगी थी. मैं भूला बैठी थी कि यों मैं घर की नींवों को धीरेधीरे कुरेदने लगी थी, अस्तव्यस्त करने लगी थी एक हरेभरे उपवन को.

"भाभी, आप ने अभी तक रसोई में क्या गंद डाल रखा है? बड़ी निकम्मी और बदतमीज हैं आप की बेटियां."

यानी हर वह बात जो मुझे नहीं कहनी चाहिए थी, दानु की गैरमौजूदगी में कह जाती थी. सब लोग इसलिए खामोशी की परतें चढ़ाए रहते थे, क्योंकि वे नहीं चाहते थे कि दानु और मुझ में किसी तरह का झगड़ा हो. पर मेरी बदतमीजियां उन की खामोशी से और बढ़ती चली गईं.

अब तो मैं दानु के कान भी भरने लगी थी. लेकिन दानु सब कुछ खामोशी से सिर्फ सुना ही करते थे. किसी तरह की प्रतिक्रिया उन के चेहरे या बातों में न आती. लेकिन अब वह भाभी की तरह थोड़ा चुप रहने लगे थे. उन सब की चुप्पी को अपने आधिपत्य की स्वीकृति मान मैं दिन प्रतिदिन उद्दंड होती चली गई थी.

दानु को भाभी ने मेरे गुण तो जरूर गिनाए होंगे, लेकिन यह छिपा गई थीं कि मैं बड़ी गुस्सैल और ईर्ष्यालु स्वभाव की लड़की थी. अपना असल रूप मैं ने एक बार जो नंगा किया तो फिर उसे ढक न पाई.

"भाभी बीमार हैं, बुखार में तप रही हैं, और तुम यहां पड़ीपड़ी उपन्यास पढ़ रही हो. कम से कम उन के पास ही बैठ जातीं. डाक्टर को फोन कर के बुला लेतीं," दानु दौरे पर से उस दोपहर को लौटे थे और आते ही मुझ पर बरस पड़े थे.

"तुम्हारी भाभी को तो नखरे करने की आदत है. उपन्यास सुबह से नहीं पढ़ रही हूं. अभीअभी आई हूं उन सब के नखरे उठा कर और सारे काम निबटा कर, उन सब को सब कुछ बनाबनाया मिल रहा है. तभी तो ये रंगढंग हैं. बहुत नाज जो उठाए जाते हैं उन के."

'चटाख!'

दानु का चांटा मेरे गाल पर निशान छोड़ता चला गया था. दानु बिना खाना खाए ही भाभी को गाड़ी में डाल कर डाक्टर के यहां ले गए थे. फिर भाभी को घर भेज कर स्वयं रात देर गए लौटे थे, हलके से नशे में. वह खाना खाए बिना सो गए थे.

दूसरे दिन दानु ने मुझे पास खींचने के लिए हाथ बढ़ाया था, "जानु, सुनो तो."

मैं ने दूर सरकते हुए कहा था, "तंग मत करो. नींद आ रही है मुझे."

दानु का हाथ दूर सरक गया था. मेरा आक्रोश कुछ ठंडा पड़ गया था. सो तो मैं भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मुझे तो आप जानते ही हैं. जब आयोडेक्सवालों ने मुझसे कहा कि मैं इस नये सरदर्द के बाम की सिफ़ारिश आपसे करूँ, तो मैंने कहा 'माफ़ कीजिये'."

"परन्तु कुछ दिनों बाद जब मेरे सर में भयन्कर दर्द उठा तो मैने संजीवनी बाम की नमूनेवाली बोतल आज़माई। बोतल खोलते ही बाम की तेज़ असरदार महक से मेरा आधा सरदर्द गायब हो गया और बाम लगाते ही एक गरम राहत मेरे सर में समाकर तनाव और दर्द को हटाने लगी। मेरे पति भी अपने पीठ और कमर के दर्द में इससे बड़ी राहत पाते हैं। अब यह मेरे घर में हरदम मौजूद रहता है और मैं तो आपसे कहूँगी, कि इसे अपने घर में भी हमेशा रखिये। पता नहीं, कब किसे दर्द उठे?"

संजीवनी बाम कैसे असर करता है।

संजीवनी बाम खास तौर से तैयार किया तेज़-असर बाम है। इसमें हैं विन्टर ग्रीन का तेल और पुदीने का फूल जैसी जानी-परखी औषधियाँ। संजीवनी बाम की गर्मी तेज़ी से त्वचा में समा कर राहत देती है क्योंकि इसका दर्द-नाशक तत्व फ़ौरन त्वचा में सोख कर दर्द को खींच निकालता है, और सरदर्द बदन, जोड़ों, या कमर के दर्द और नस चढ़ने में फ़ौरन राहत देता है।

नवीन
संजीवनी
स्ट्रॉंग बाम

एस्केएफ़ का एक बेहतरीन उत्पादन।

EL-117-87 HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं पाई थी. लेकिन दानु को करवटें बदलते और बारबार जग से पानी पीते देख कर मेरा मन चाहा था कि अभिमान की समस्त दीवारें फांद कर मैं उन की छाती में समा जाऊं. लेकिन कुछ नहीं हो पाया था, बल्कि उन के पास आने पर मैं ने उलटा कह दिया था, "तुम अलग हो जाओ, वरना मैं कल ही मायके चली जाऊंगी."

"किस से अलग हो जाऊं? मां से या विधवा भाभी से. सोचो जरा नेहा, हठ मत करो." बहुत चिरौरियां की थीं दानु ने. लेकिन मैं किसी तरह भी न मानी थी. मैं ने सोचा था कि मायके जाने का नाम लेने पर दानु हिल जाएंगे. पर ऐसा कुछ न हुआ था. दानु ने अपना फैसला सुना दिया था, "मुझे नहीं होना अलग किसी से भी. तुम चाहो तो मायके जा सकती हो. ड्राइवर तुम्हें छोड़ आएगा."

सन्न रह गई थी मैं दानु का फैसला सुन कर. फिर चोट खाई नागिन सी फन फैलाए तैयार हो गई थी मायके जाने के लिए. उस घर के लोगों के चेहरों का मुरझायापन, उन की चिरौरियां, आग्रह कोई भी मेरे अभिमान के आगे टिक न पाया था और मैं फिर मांबाप की उस दहलीज पर जा खड़ी हुई थी, जहां से मुझे ढेरों उपदेश और इज्जत का वास्ता दे कर विदा किया गया था.

"सुनीष क्यों नहीं आया, बेटी?" बेटी को अकेला और भारी सामान साथ देख कर मां ने अपने भीतर उगी शंका को उखाड़ने के लिए ही पूछा था.

"वह दौरे पर गए हैं."

"देवर को साथ ले आती." मां आश्वस्त नहीं हो पाई थीं.

"उस की परीक्षाएं हैं."

"बेटी, सब तो ठीक है न?" मां ने खाना परोसते हुए पूछा था.

"कोई नहीं मरा, मां."

मेरे बोलने के अंदाज से ही मां की अनुभवी आंखों ने ताड़ लिया था कि उन की गुणसंपन्न लेकिन गुस्सैल बेटी कुछ जरूर कर आई है. धीरेधीरे सब पर राज खुल गया था.

"नेहा लड़ कर आई है ससुराल से."

मेरे सामने सब की हमदर्दी मेरे साथ रहती थी. मेरी सास, जेठनी को कोसा जाता था. लेकिन मेरी पीठ पीछे मुझे ही धिक्कारा जाता था. किसकिस के मुंह पर हाथ धरती. एहसास तो मुझे भी था, लेकिन कौन स्वीकारता है अपनी गलतियां.

सास मां के खत आए, लेकिन मैं जाने को राजी न हुई. यहां तक कि मातापिता से भी यही कहा कि अगर उन्हें बोझ लगती हूं तो अलग रह जाऊंगी.

जानती थी कि विवाहिता बेटी का बोझ मांबाप की दहलीज नहीं उठा पाती है. समाज के भय का बादल हमेशा उन की आंखों में तैरा करता है.

मां ने दानु को खत लिखा था तो दानु का उत्तर आया था :

"स्वयं गई है स्वयं लौट आए."

मैं अपमान से भर गई थी. फिर मैं ने नौकरी करने का फैसला कर लिया था. छोटी ननंद, देवर की शादी के कार्ड मुझे मिले थे. सास मां की मौत का समाचार भी आया था.

मां ने कहा था, "नेहा, बहुत अच्छा मौका है. तू अब भी लौट जा अपने घर. दानु बहुत अच्छा लड़का है."

लेकिन मैं तब भी न लौट पाई थी.

अपने घर, अपने हमसफर और उस घर में अपने अस्तित्व का एहसास मुझे अपने भाई पावन की शादी के समय हुआ था. दीदी और मेरी भतीजियां आदि सब अपने पतियों के साथ आई थीं. हंसीठिठोली के बीच गर्व से सीना ताने अपने पतियों के पहलुओं में चलती उन गर्विताओं को देख कर मैं विधवा और सधवा की रस्सी पर कमर से फांसी लगी भीतर ही भीतर छटपटाने लगी थी. फिर जब बरात की विदाई हो रही थी तो पावन की ससुराल की ओर से किसी ने मेरी पीठ के पीछे फुसफुसा कर कहा था, "यह है पावन की बहन, जो ससुराल छोड़ आई है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यहीं रहती है अब. पता नहीं, हमारी बेटी को क्याक्या कष्ट देगी यह."

घर आ कर कमरा बंद कर के खूब रोई थी मैं. मन में खुद को धिक्कारा भी था, 'नेहा, आज दानु के साथ होतीं तुम भी तो किसी की हिम्मत थी यह सब कहने की?'

वास्तव में कितना उपेक्षित महसूस किया था मैं ने उस रोज अपनेआप को.

पावन दनदनाता आया था, "मां, कहां है नेहा की बच्ची."

"अरे, दीदी है तेरी. यह क्या बक रहा है तू."

"बक नहीं रहा हूं मां. वह घर छोड़ आई है तो अब क्या हमारा बाहर निकलना भी बंद करवा देगी."

"हुआ क्या है?"

"वह आज अपने दफ्तर के एक युवक के साथ रेस्तरां में थी और..."

मैं ऊपर की छत से उतरी थी, "आगे कहो पावन."

"..."

"चुप क्यों हो? दफ्तर के युवक के साथ मैं तनहा नहीं थी. मेरे दफ्तर के अधिकांश लोग थे. यह जरूर है कि सब जोड़े थे और मैं तनहा. जब तुम उस रेस्तरां में अपनी महिला मित्र के साथ आए तो दफ्तर के उस युवक अरुण की पत्नी उस समय स्नानघर में गई हुई थी. और कुछ?"

वहां तो खामोशी छा गई थी. पर मेरे मन में तूफान उठ चुका था और मैं ने उसी समय फैसला कर लिया था. दानु को खत लिख दिया था कि वह मुझे आ कर ले जाएं. मुझे पूरा यकीन था, मेरा खत मिलते ही दानु चले आएंगे और मैं लौट कर बता दूंगी कि विरह और उपेक्षा की आग में से मैं कुंदन बन कर निकली हूं. ●

ये पति

मेरे पति अकसर मुझे 'बंदरिया' कह कर चिढ़ाते थे. एक बार हमारे बेटे के जन्मदिन पर बहुत से मेहमान घर में आए हुए थे. केक काटते समय मैं ने तीन बार मोमबत्ती जलाने के लिए माचिस की तीली जलाने की कोशिश की, परंतु वह हर बार बुझ जाती थी.

इस पर मेरे पति ने मुझ से कहा, "ओ बंदरिया, तुम से एक तीली भी नहीं जल रही है."

मैं ने भी नाराज हो कर कहा, "मैं बंदरिया हूं तो आप कौन हैं?"

"मैं तो मदारी हूं" वह झट बोले.

—रश्मि अरोड़ा

*

अकसर हम दोनों पतिपत्नी के बीच में नोकझोंक होती रहती है. कभीकभी मुझे भी क्रोध आ जाता है. एक दिन हम दोनों गुस्से में थे. मैं ने कहा, "सचमुच मैं बहुत मूर्ख थी जो तुम से शादी की."

इतना सुनते ही वह तपाक से बोले, "मैं जानता था. लेकिन सोचा था शायद तुम यहां आ कर सुधर जाओगी."—उमेश कुमार पटेल

*

मेरे पति शुलक्कड़ तो हैं ही, साथ ही उन्होंने स्वभाव भी बड़ा तीखा पाया है. घर में किसी चीज का नुकसान हो जाने पर तो गुस्से के मारे वह पूरा घर सिर पर उठा लेते हैं.

एक बार वह शाम को दफ्तर से घर आए. तो हमेशा की तरह बच्चों से पूछा, "आज क्या नुकसान हुआ? क्या टूटाफूटा?"

मेरे छोटे बेटे ने जवाब दिया, "तेल की शीशी."

बस, इतना सुनते ही उन का पारा सातवें आसमान पर पहुंच गया. वह गुस्से से उबल पड़ा, "40 रुपए की खरीद कर लाया था. तोड़ने वाले का क्या जाता है?"

मगर जब उन्होंने देखा कि उन के गुस्से को देख कर सब अपनी हंसी दबा रहे थे तो वह सोच में पड़ गए. तभी छोटे बेटे ने स्पष्ट किया, "पिताजी, सुबह आप ने ही तो शीशी तोड़ी थी."

इतना सुनते ही वह झेंप कर दूसरे कमरे में चले गए. उस दिन के बाद उन्होंने कभी गुस्सा नहीं किया. -निर्मला सक्सेना ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शून्यकाल का शून्यालाप

इस स्तंभ में कुछ ऐसे प्रश्न पूछे जाते हैं जो संसद में पूछे नहीं जाते, पर पूछे जाने चाहिए. यहां प्रस्तुत हैं इस प्रकार के कुछ महत्त्वपूर्ण प्रश्न और उन के संभावित उत्तर.

त्रिपुरा में आप की पार्टी कैसे बन गई?

तथा अन्य प्रश्न...

सदस्य: श्रीलंका के शिकंजे में फंसा भारतीय सेना का पांव बाहर कब निकलेगा?

मंत्री: आप विपक्ष वालों में सब से बड़ी कमी यही है कि आप में धैर्य नहीं है. आप लोग सत्ता प्राप्त करने के लिए भी अधीर रहते हैं. सत्ता प्राप्त करने के लिए हमारी उन नीतियों को अपना लेते हैं, जो असफल हो चुकी होती हैं. पहले तो आप लोग ही अधीर हो रहे थे कि भारतीय सेना श्रीलंका में क्यों नहीं जाती है. अब चली गई है तो उसे वापस बुलाने की जल्दबाजी मचाई जा रही है. बिना पूरी तरह थके सेना वहां से वापस नहीं आएगी. समस्या का समाधान होना या न होना महत्त्वपूर्ण नहीं है.

सदस्य: गत दो माह पंजाब में अनेक हत्याकांड हुए हैं. भूतपूर्व मुख्य मंत्री सुरजीतसिंह बरनाला कांख बजा रहे हैं कि मेरे शासनकाल में इतनी हत्याएं कभी नहीं हुईं. क्या आप बदनाम नहीं हो रहे हैं?

मंत्री: जमाना बड़ा बुरा आ गया है. पहले हम किसी काम की तारीफ करते थे तो फायदा होता था. अब हम यदि यह कहें कि पंजाब के उत्तरी इलाके में शांति है तो अगले ही दिन वहां धमाका हो जाता है. यदि हम यह कहें कि हालात काबू में हैं तो अभी हमारे बयान की गूंज ठंडी नहीं पड़ती है कि उग्रवाद का लावा फूट पड़ता है. कहते हैं कि प्रधान मंत्री ने कुछ दिन पहले बुलंद आवाज में राज्यपाल सिद्धार्थशंकर राय की कारर्वाई और नीतियों की प्रशंसा की थी, परिणामस्वरूप हत्याओं की लहर चल पड़ी.

जहां तक बरनाला का सवाल है, हम ने तो विज्ञापन निकाल रखा है कि जो हत्याएं कम करने में सक्षम हो, वह आए और पंजाब में सत्ता संभाल ले. इस शर्त पर कोई शासन संभालने के लिए तैयार नहीं हैं.

सदस्य: बहाने गढ़ने में भी आप का कोई जवाब नहीं है.

मंत्री: नहीं, हमें ऐसे अधिकारी की भी जरूरत है जो चलने लायक बहाने हमारे लिए तैयार कर सके. हत्याओं में वृद्धि के लिए हम ने एक बहाना प्रसारित किया था कि उच्च न्यायालय द्वारा नए कानून की कुछ धाराओं को अवैध ठहराए जाने के कारण हमें 700 से ज्यादा उग्रवादी छोड़ने पड़े. लेकिन लोगों ने यह पूछना शुरू कर दिया कि संदिग्ध व्यक्ति पर नजर रखने से तो न्यायालय नहीं रोकता है. पुलिस प्रशासन को सतर्क रहने से तो उच्च न्यायालय ने मना नहीं किया है. इसलिए हमें कुछ शानदार बहाने चाहिए. वैसे पंजाब के बारे में हमारी राय है कि एक दिन ये उग्रवादी थक जाएंगे और समस्या अपनेआप हल हो जाएगी. जरूरत है धैर्य रखने की.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या आप अपनी बीवी को प्यार करते हैं ?

ठहरिए ठहरिए, बुरा मत मानिए। मैं समझाता हूँ। मामला प्रेशर कुकर का है और आपकी बीवी की सुरक्षा का। मान लीजिए आप अपनी बीवी को थोड़ा चाहते हैं तो कोई भी प्रेशर कुकर खरीद देंगे। उनसे ज़रा ज़्यादा लगाव है जनाब तो थोड़ा अच्छा कुकर लेकर देंगे आप। लेकिन अगर जान से भी प्यारी है उनकी जान तो फिर नया प्रेस्टीज ही लेकर देंगे श्रीमान!

100% SAFE

अब पूछिए प्रेस्टीज ही क्यों ?

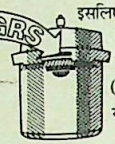

इसलिए कि सिर्फ नया प्रेस्टीज ही १००% सुरक्षित है — गास्केट रिलीस सिस्टेम (GRS) की वजह से। यह अनोखा गास्केट रिलीस सिस्टेम (GRS) इस तरह काम करता है। जब कोई दाने वेट वेट में फंस जाते हैं तो साधारण प्रेशर कुकर में प्रेशर ज़रूरत से ज़्यादा हो जाने से खतरा पैदा हो सकता है। पर नये प्रेस्टीज में गास्केट रिलीस सिस्टेम (GRS) की वजह से, सेफ्टी प्लग चाहे जैसा भी लगा हो, भाप सुरक्षित रूप से बाहर की ओर छूट जाती है। इसलिए नए प्रेस्टीज में कभी कोई खतरा नहीं रहता।

जो बीवी से सचमुच करते प्यार वह प्रेस्टीज से कैसे करे इन्कार

प्रेस्टीज

Prestige 25 SILVER JUBILEE 1984-85

टी.टी.के. उत्पादन

सिर्फ़ प्रेस्टीज ही १००% सुरक्षित है, सिर्फ़ प्रेस्टीज ही में जी. आर. एस. है

MAA (S) TTP 3P HIN 85

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सदस्य: त्रिपुरा में आप की पार्टी की सरकार कैसे बन गई?

मंत्री: आप ने हमारी मंत्रिपरिषद के एक सदस्य का यह बयान नहीं सुना कि त्रिपुरा में कांग्रेस की जीत एक ऐतिहासिक क्रांति है? हालांकि इस शानदार कथन को अखबारों ने तो महत्त्व नहीं दिया पर दूरदर्शन और आकाशवाणी ने तो प्रसारित किया ही है. बावजूद हमारी अच्छीअच्छी बातों के, लोग यही कहते हैं कि त्रिपुरा को गड़बड़ग्रस्त घोषित करने और वहां सेना तैनात करने के कारण हम विजयी हुए हैं.

लोगों को चाहिए कि यह बात वे बारबार न कहें. सेना भेज कर जीतने का चसका हमें लग गया तो उन्हें ही मुशकिल होगी.

सदस्य:गोरखालैंड समस्या के हल के लिए आप क्या कर रहे हैं?

मंत्री: वार्त्ताएं कर रहे हैं. और क्या करें? किसी भी ऐसे प्रदेश में, जहां हमारे दल का शासन हो, स्वायत्तता की मांग उठते ही हम सक्रिय हो जाते हैं. वार्त्ताओं के दौर शुरू हो जाते हैं. हमारा हर टोटका ऐसा होता है कि अगले चुनाव में हमें लाभ दे. अभीअभी समाचार मिला है कि असम में एक जाति ने स्वायत्त प्रदेश की मांग की है. यह सुनते ही हम गदगद हो गए और हमारे दो केंद्रीय मंत्री उन से बातचीत करने के लिए उन के पहाड़ी क्षेत्र में जा रहे हैं. ऐसी जगह हम तुरंत चले जाते हैं. हमें तो पंजाब जाते हुए डर लगता है.

सदस्य: राजस्थान के मुख्य मंत्री को क्यों हटा दिया गया ?

मंत्री: हरिदेव जोशी ने अपने व्यवहार से अनेक विधायकों को अपने पक्ष में कर लिया था. उन्हें यह लगने लगा था कि उन्हें मुख्य मंत्री विधायकों ने बना रखा है. वह दिल्ली के हाथ को भूल गए थे. उन्हें हटा कर दिल्ली वालों ने जता दिया है कि मुख्यमंत्री बनने के लिए विधायकों का समर्थन कोई मूल्य नहीं रखता, दिल्ली का आशीर्वाद जरूरी है. राजस्थान में भयंकर सूखा पड़ा हुआ है. ऐसे में शिवचरण माथुर और उन के साथी सूखापीड़ित से एक कोने में पड़े थे. उन्हें भी सूखा पीड़ितों की सेवा कर के पुण्य कमाने का अवसर देना जरूरी था.

जनमोरचे का घमंड तोड़ना भी जरूरी था. कहते हैं कि अरुण नेहरू के प्रति हरिदेव जोशी के दिल में मैत्रीभाव था, इसलिए अरुण नेहरू के आदमी को हटाना जरूरी हो गया. उधर विश्वनाथप्रताप सिंह सोचते थे कि उन्होंने अमिताभ बच्चन का अवमूल्यन कर दिया है. बच्चन के अपने आदमी को मुख्य मंत्री बना कर हम ने मालिक के बालसखा को प्रतिष्ठा दिलवाई है.

सदस्य: तमिलनाडु में आप ने यह क्या नाटक खेला?

मंत्री: हमें उम्मीद थी कि एम.जी. रामचंद्रन के बाद फारूख अब्दुल्ला की तरह जानकी रामचंद्रन और उन की पार्टी हमारी हथेली के नीचे आ जाएगी, पर उन्होंने हमारे ही विधायक तोड़ने शुरू कर दिए. उन की इस गुस्ताखी का दंड देने के लिए जानकी रामचंद्रन को सत्ता से हटाने की हम ने सोची, राज्यपाल तो हमारा आदमी होता ही है.

सदस्य: अब आप क्या करेंगे?

मंत्री: सत्ता में हिस्सा पाने के लिए सब कुछ करेंगे. किसी भी गुट के साथ समझौता करेंगे. मतदाताओं को वे घाव दिखाएंगे जो विधान सभा में पुलिस के डंडों से मिले और वे घाव भी जो हमारे विधायकों के दलबदली से हुए.

सदस्य: किसी व्यक्ति को राज्यपाल नियुक्त करते समय आप क्या योग्यता देखते हैं?

मंत्री: जो व्यक्ति प्रदेश में हमारे द्वारा नियुक्त मुख्य मंत्रियों को तंग करता है, जो अधिकारी सेवानिवृत्त होने के बाद हमें तंग कर सकता है, उसे हम राज्यपाल या राजदूत बना देते हैं. कुछ पात्र व्यक्तियों को भी राज्यपाल या राजदूत बना देते हैं, ताकि हमारा चयन ढका रहे.

—गोविंद शर्मा ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चुभन

आधी रात को एक ऐसा धमाका हुआ कि सरला का सर्वस्व हिल गया. एक बजा था. करीब 11.30 बजे वह सोई थी कि फोन की घंटी बज उठी. रात की नीरवता में घंटी की चीख बड़ी भयानक सी लग रही थी.

उस ने फोन उठाया. अवश्य गलत नंबर होगा, वरना इतनी रात गए कौन सताएगा उन्हें. चोंगा कान से लगाते ही जैसे जलतरंग बज उठी. सूखे धान वर्षा की प्रथम फुहार से लहलहा उठे.

"मां, मैं बंबई की रात को 11.55 पर एअर इंडिया की फ्लाइट नंबर 108 से दिल्ली पहुंच रहा हूं."

"तू कैसा है, अशोक?" सरला का ममत्व लहक उठा.

"मां, मैं बहुत खुश हूं. आप कैसी हैं? पिताजी कैसे हैं? और इला का क्या हाल है?"

"सब ठीक हैं, बेटा," ममता के आधिक्य से सरला का स्वर भर्रा गया, तीन साल बाद उस का एकमात्र बेटा अमरीका से लौट रहा था.

"मां, एक खुशखबरी सुनाऊं? मैं अपने साथ आप की बहू को भी ला रहा हूं."

"क्या? क्या तू ने वहां शादी कर ली? किस से? भारतीय है या अमरीकी?"

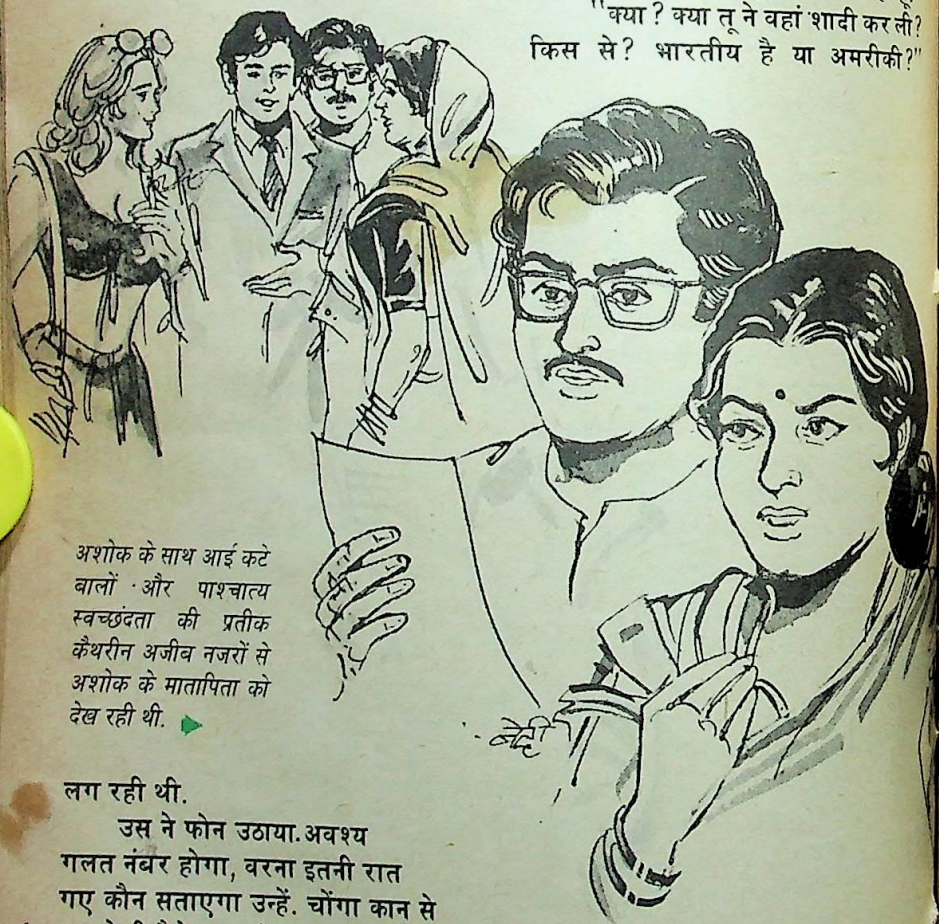

अशोक के साथ आई कटे बालों और पाश्चात्य स्वच्छंदता की प्रतीक कैथरीन अजीब नजरों से अशोक के मातापिता को देख रही थी. ▶

कहानी ● कुसुम गुप्ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरला इस अप्रत्याशित समाचार से कुछ कह कर स्तब्ध रह गई.

"मां, फोन पर विस्तार से क्या बताऊं? तीन दिन बाद तो मैं पहुंच ही रहा हूं. मिलने पर सारी बातें बताऊंगा. और हां, आप लोग हवाई अड्डे न आएं. आधी रात को फ्लाइट पहुंचने का समय है. देरसबेर हो सकती है."

"कार है, आ जाएंगे."

"नहीं, मां, आप लोग व्यर्थ में परेशान न हों. अच्छा मां, बंद करता हूं."

सरला ने ठंडी सांस लेते हुए चोंगा रख दिया.

"अशोक आ रहा है?" पास लेटे नरेन ने पूछा.

अशोक ने अपनी प्रेयसी से शादी का वास्ता दे कर उस से समर्पण करा लिया था. लेकिन अमरीका जा कर सब कुछ भूल गया. आखिर वहां की रंगीनियों में भी उसे चैन क्यों नहीं मिल पाया?

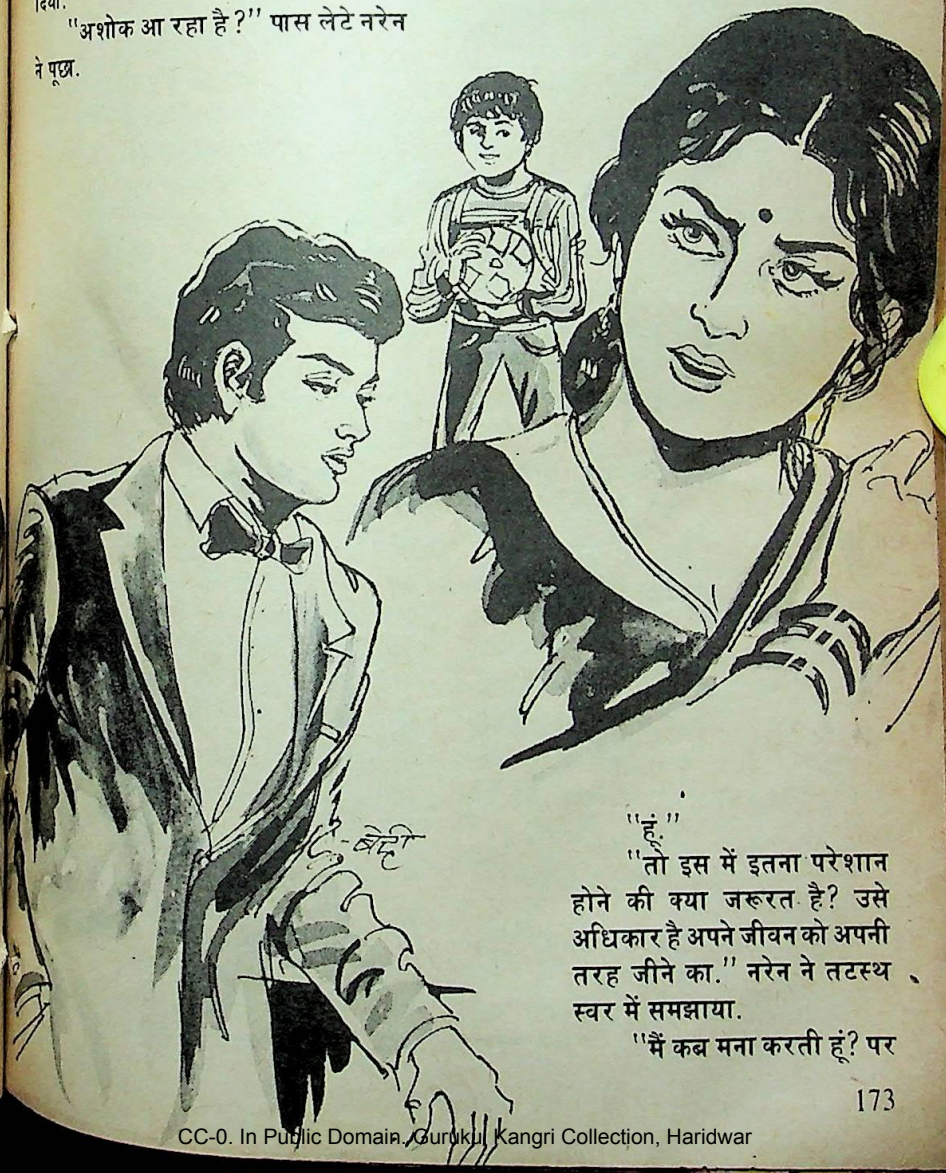

"हूं."

"तो इस में इतना परेशान होने की क्या जरूरत है? उसे अधिकार है अपने जीवन को अपनी तरह जीने का." नरेन ने तटस्थ स्वर में समझाया.

"मैं कब मना करती हूं? पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या उस का यह फर्ज नहीं बनता था कि वह अपने मांबाप से अनुमति ले लेता? चलो, अनुमति न सही, सूचना तो दे सकता था. फिर क्या जरूरत है मांबाप की? अपने पांवों पर खड़े होते ही मांबाप तो एकदम रद्दी अखबारों की तरह फालतू हो जाते हैं," सरला का स्वर करुणा से भीग गया.

पूरी रात पतिपत्नी अतीत की यादों भरी गलियों में भटकते रहे. दो बच्चे थे. बड़ी लड़की की इंजीनियर के साथ शादी कर दी. उस की नियुक्ति हुई बंगलौर में. वह यों गई.

एकमात्र बेटा था अशोक. वह इंजीनियरिंग की उच्च शिक्षा के लिए अमरीका गया था. दो वर्ष की पढ़ाई के बाद वह नार्थ कैरोलिना ए एंड टी स्टेट यूनिवर्सिटी में सहायक प्राध्यापक लग गया था.

वे दोनों पतिपत्नी निपट अकेले रह गए थे. नरेन के सेवानिवृत्त होने के बाद तो समय जैसे थम गया था. अड़ोसपड़ोस में वे हमउम्र लोगों को नातीपोतों के साथ खेलते देखते थे तो उन की छाती पर जैसे सांप लोटने लगता था. उन के हिस्से में यह सुख कहां आया था.

उन्होंने कितनी चिट्ठियां डाली थीं अशोक को भारत लौटने के लिए. उस का एक ही उत्तर होता था, "मां, नई नौकरी है. अभी छुट्टी नहीं मिलने वाली. जरा जम जाऊं, फिर आऊंगा भारत फुरसत में."

और अब अशोक आ रहा था. किसे ले कर? उन की पुत्रवधू को.

8 मार्च की पूरी रात वे लोग जागते रहे थे. पर अशोक घर नहीं पहुंचा था. उन्होंने हवाईअड्डे फोन किया था तो पता चला कि फ्लाइट दो बजे आ गई थी. तब पांच बजे थे. हो सकता था कि कस्टम आदि की काररवाई में समय लग गया हो.

सुबह के 8 बजे तो सरला बेहद चिंतित हो गई. कहीं मार्ग में कोई दुर्घटनावुर्घटना तो नहीं हो गई? वह दुश्चिंताओं से घिर गई.

पर नरेन सहज और सामान्य थे. वह वस्तुस्थिति को ताड़ गए थे. उन्होंने सरला से केवल इतना ही कहा था, "लंच के आसपास आएगा अशोक."

"तुम तो साईं बाबा की तरह भविष्यवाणी कर रहे हो."

"अरे सरला, अमरीकन बीवी को ले कर दिल्ली की इन गलियों में स्थित इस गंदे मकान में टिका जा सकता है?"

"तुम्हारे खयाल से वह किसी होटलवोटल में..."

"बिलकुल."

करीब 12 बजे अशोक आया. साथ में थी कैथरीन. लगभग 30 वर्षीया, अर्द्धनग्न, कटे बाल, पाश्चात्य स्वच्छंदता एवं नारी मुक्ति आंदोलन की प्रवर्तक सी. वह स्तंभित सी घर और उस में रहने वाले अशोक के मांबाप नामक जीवों को देख रही थी. साथ ही वह अशोक से अंगरेजी में पूछ रही थी, "अशोक, इस गंदी गली और टूटेफूटे मकान में ये लोग कैसे रह पाते हैं?"

सरला ने महसूस किया था कि अशोक ने उस के तथा नरेन के चरण स्पर्श नहीं किए थे. कैथरीन ने भी अभिवादन में केवल हाथ बढ़ाया था. दोनों खाली हाथ आए थे. आते ही अशोक ने उन्हें बताया था कि वह एक पांच सितारा होटल में ठहर गया है. कैथरीन को ले कर यहां घर में ठहरना असंभव था. यही नहीं, उस ने एक छपा हुआ कार्यक्रम मांबाप की ओर बढ़ा दिया था.

अशोक छः हफ्ते के लिए भारत आया था. उस का मुख्य उद्देश्य था कैथरीन को भारत के दर्शनीय पर्यटन स्थलों की सैर कराना. उस का भ्रमण कार्यक्रम पूर्व निश्चित था. उस में कश्मीर, आगरा से ले कर बंबई, मद्रास तक सब कुछ सम्मिलित थे.

"तो तू भारत दर्शन करने आया है, मांबाप के साथ रहने नहीं?"

"रहूंगा. चार दिन निर्धारित किए हैं इस के लिए."

अरिता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तू ने शादी कब की?"

"अभी कहां की है, मां? अभी तो कोर्टशिप चल रही है. यहां से लौट कर अगले साल शादी कर लेंगे हम दोनों."

"क्या तेरा वहीं बस रहने का इरादा है हमेशा के लिए?"

"हां, मां."

सरला का अंतर कसक गया. एकदम ऐसे ही जैसे उस की कोई बहुमूल्य वस्तु खो गई हो. यह अशोक ऐसा तो नहीं था. फिर उस की पसंद? सरला ने तीक्ष्ण खोजी दृष्टि से कैथरीन का परीक्षण किया. वह उस की कसौटी पर खरी नहीं उतरी थी. 'यह महिला कभी भी मेरे बेटे को पत्नी का सुख नहीं दे सकती, यही निष्कर्ष निकाला सरला ने.

उस ने जल्दीजल्दी अशोक का मनपसंद खाना बनाया, खीर, पनीर-पकौड़े की सब्जी, राजमां, शिमला की भरवां मिर्चे, केसरी पुलाव.

"तुम्हारे प्रश्न का उत्तर यह बच्चा है." सुमन ने अशोक से कहा.

पर कुछ नहीं खाया दोनों ने. "बहुत तेज...बहुत तेज..." करते रहे थे. यह भी सच था क्योंकि दोनों की आंखों में आंसू आ गए थे मिर्चमसालों के कारण.

पर सरला की आंखें भी भीग गई थीं. कारण, खाना बनाने का श्रम सार्थक नहीं हुआ था. क्या सचमुच यही कारण था? शायद नहीं, वास्तविक कारण था एक चुभनभरी कसक, एक छटपटाने वाली अनुभूति.

उस का बेटा सदा के लिए पराया हो गया था, वह भी एक विदेशी युवती के कारण, 'कितनी निर्लज्ज है यह. हमारे सामने अशोक का चुंबन लेती है. हाथ में हाथ डाले घूमती है. अशोक पर रोब जमाती है और अशोक कैसे बंधुआ मजदूर सा उस की जीहुजूरी कर रहा है!'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'लगता है, यह लड़की समस्त मानवीय संवदेनशीलता से शून्य है. एक बार भी इस ने आत्मीयतापूर्वक अपने भावी सासससुर से उन के बारे में कुछ नहीं पूछा. यह तो एकदम महारानी की तरह व्यवहार कर रही है और अशोक इस की प्रजा बन कर इस की गुलामी कर रहा है.

किसी दुःस्वप्न की भांति वे छः सप्ताह बीत गए. जिस भांति अशोक खाली हाथ और रिक्त हृदय आया था, वैसा ही वह अपनी वाग्दत्ता को ले कर वापस लौट गया था. छोड़ गया था अपने पीछे उस असंभावित धक्के से जर्जर मांबाप को. उन के जीवन का शून्य और एकाकीपन कई गुना बढ़ गया था.

'एक बार भी नहीं कहा कि मांपिताजी आप लोग अमरीका सैर करने आएं.'

एक दिन सरला के धैर्य का बांध टूट गया. अंतर की बाढ़ का पानी उफन कर बाहर बह निकला.

"चल पगली," नरेन ने उसे अपने अंक में समेट लिया और बोले, "इच्छाएं और आकांक्षाएं ही तो हमारे समस्त दुखों का मूल कारण हैं. क्यों इच्छा करती है? इच्छा को त्याग और सुखी रह."

नरेन की ठंडी तटस्थता ही तो सरला का संबल थी, वरना वह तो कभी की टूट गई होती. अशोक की भारत यात्रा एक दुःस्वप्न था. आया और डरादहला कर चला गया.

फिर बीत गए कुछ महीने...

अशोक के तीनचार पत्र आए थे, पर किसी में भी विवाह की सूचना नहीं थी. हां, उस के पत्रों से यह आभास होने लगा था जैसे वह उदास था और उस का मन वहां से उखड़ गया था.

एक बार तो चार महीने तक अशोक का कोई पत्र ही नहीं मिला था. सरला ने चिंता करना छोड़ दिया था. वह नरेन से सहमत हो गई थी– जो नहीं है, उस के लिए चिंतित होने से लाभ?

लगभग दो वर्ष बीत गए इसी तरह.

एक रात फिर फोन की घंटी बजी थी. अशोक ही बोल रहा था न्यूयार्क से. उस ने एक संक्षिप्त सी सूचना दी थी कि वह भारत आ रहा है. तारीख, दिन, समय, फ्लाइट संख्या, सारी सूचनाएं दे कर वह बोला, "मां, हवाईअड्डे पर आ जाना. तकलीफ तो होगी."

"क्यों होटल में नहीं ठहरेगा इस बार?" फोन पर एक पल के लिए शीत मौन छा गया. सरला ने ही पूछा, "अकेला ही आ रहा है?"

"हां."

"क्या उस से तलाक हो गया?

"आ कर सारी बातें विस्तार से बताऊंगा?"

'वही पुरानी आदत. व्यर्थ का रहस्यरोमांच उत्पन्न करना. अरे, जो बताना है वह बताबुत कर खत्म कर. पर नहीं, कौन बाज आता है अपनी आदत से.'

नियत दिन अशोक आ गया. वे हवाईअड्डे जा कर उसे घर ले आए. फ्लाइट सुबह चार बजे पहुंची. घर ला कर, सरला ने उस के लिए उस का मनचाहा नाश्ता बनाया. इस बार अशोक ने खूब मन से नाश्ता किया. आंखों में आंसू भी नहीं आए. उस ने मां के हाथ के खाने की प्रशंसा भी की.

परिवर्तन तो उन लोगों ने हवाईअड्डे पर ही देख लिया था. कस्टम की औपचारिकता से निबट कर बाहर आते ही उस ने मांबाप के चरणस्पर्श किए थे. वह बड़ा बुझाबुझा, टूटाटूटा, उदास सा लग रहा था. तब उन लोगों ने उसे कुरेदना उचित नहीं समझा था.

नाश्ते के बाद अशोक सो गया था.

शाम को अशोक उठा तो काफी ताजा, स्वस्थ और सामान्य सा लग रहा था.

"इस बार कितने हफ्ते के लिए आया है?" सरला ने पूछ लिया.

"हमेशा के लिए आ गया हूं, मां," शांत स्वर में अशोक बोला.

"सच?" सरला खुशी से खिल उठी मन ही मन.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हां, मां. मैं ने यहां कई जगह प्रार्थनापत्र भेजे थे. मुझे उम्मीद है कि कहीं न कहीं काम मिल ही जाएगा. न मिला तो मैं अपना ही कोई छोटामोटा उद्योग शुरू कर दूंगा, पैसा मेरे पास है."

अशोक ने अपनी भावी योजना की संक्षिप्त रूपरेखा उन्हें बता दी.

"मेरे खयाल से तुम्हारा यह निर्णय बुद्धिमत्तापूर्ण है," नरेन ने टिप्पणी जड़ दी.

"और उस कैथरीन का क्या हुआ? उस से तलाक ले लिया?" सरला ने उसे कुरेदा.

"तलाक का सवाल ही नहीं उठा. उस से शादी ही नहीं की." अशोक के स्वर में दर्द था.

"क्यों?"

"मां, कैथरीन बड़ी नीच लड़की निकली. उस का परिवार भी बड़ी निम्नकोटि का था. वह एक शराबखाने में नौकरी करती थी. मेरे साथसाथ उस ने दोतीन और भारतीय नवयुवक फंसाए हुए थी. वह मुझ से शादी थोड़े ही करना चाहती थी."

"फिर?"

"वह तो उस ने भारत की सैर करने के उद्देश्य से मुझे प्रेम का झांसा दे कर फंसा रखा था. बाद में उस का भडाफोड़ हो गया. तीन बार तो वह गर्भपात करा चुकी थी. मुझे तो कैथरीन के इस अनुभव ने सचमुच हिला कर रख दिया, मां."

सरला को दुख नहीं हुआ यह सब सुन कर. उस का अंतर तो एक अनिर्वचनीय सुखसंतोष से भर गया. उस ने तो पहली दृष्टि में ही उस छोकरी की असलियत परख ली थी. पर अशोक की आंखों पर तो रंगीन चश्मा चढ़ा हुआ था. अब ठोकर खा कर अवश्य अक्ल आ गई होगी.

"ठीक है, भूल जा उस को. यहीं कोई अच्छी सी लड़की देख कर शादी कर ले." सरला ने सुझाव दिया.

"मां, मैं शादी नहीं करूंगा."

"क्या?" सरला चौंकी. उस ने हैरानी से पूछा, "तो क्या आजन्म कुंआरा रहेगा? एक हरजाई के कारण तू अपना जीवन क्यों बरबाद करने लगा?"

अशोक ने कोई उत्तर नहीं दिया. क्या कहता? एक नहीं, दोदो कटु अनुभव उसे कचोटते रहते थे. पहले उस ने किसी को धोखा दिया था. अब उसे किसी ने धोखा दिया था. यों तो हिसाबकिताब बराबर हो गया, पर मन में एक चुभन सी बनी रही, क्या ये प्रेम संबंध हमेशा धोखे पर ही आधारित होते हैं?

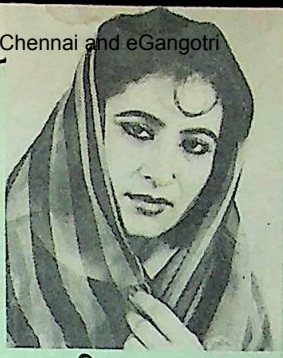

शिकायत

क्यूं लम्हे लगते हैं अब बरस,
कहां गया वो जमाना,
जब बरसों से शिकायत थी तुम्हें
कि वो लम्हों की तरह गुजर जाते हैं.
—ज्योति गोगिया 'उम्मीद'

उस दिन वर्षों के बाद अशोक को सुमन की याद आ गई. यों वह उसे भूला ही कब था? याद तो वह हमेशा रही थी, पर अमरीकी जीवन की भौतिकता में उस ने उसे जानबूझ कर भुला दिया था.

"अशोक, तू सुंदर, सुशिक्षित, समृद्ध और नवयुवकीय जोश से ओतप्रोत है. तेरे लिए तो लड़की वालों की लाइन लग जाएगी," सरला ने ही दीर्घ मौन को तोड़ा था.

"तुम क्या दहेज के चक्कर में हो, मां?" अशोक ने यों ही पूछ लिया था.

"भाड़ में गया दहेज. हमारे पास सब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ है. हमें उसे नहीं, लड़की को देखना चाहिए," सरला ने दृढ़तापूर्वक कहा.

अशोक एक बार फिर खो गया था अपने दिवास्वप्न में. दो वर्ष तक लगातार वे दोनों प्रणय व्यापार में अपनी सारी भावनात्मक पूंजी लगाए रहे थे. पर अंत में व्यापार में घाटा ही रहा था.

सुमन ने तो कहा था कि वह शादी कर के उसे भी अमरीका साथ ले चले. पर उसे वह सुझाव व्यावहारिक नहीं लगा था.

उस ने सुमन को दो वर्ष बाद अमरीका से लौट कर आने पर विवाह करने का आश्वासन दिया था. उसी आश्वासन के आधार पर वह अपनी प्रेयसी से समर्पण करा लेने में सफल हो गया था.

जब अशोक अमरीका जाने लगा था तो सुमन फूटफूट कर रोई थी. अशोक ने अपने रूमाल से उस के आंसुओं को पोंछा था. अपने अंक में भर कर उस ने सुमन को आश्वस्त किया था, "सुमन, तुम मेरी हो और हमेशा मेरी ही रहोगी."

"पता नहीं क्यों, मेरा दिल घबरा रहा है. अशोक, मुझे ऐसा लग रहा है जैसे मैं तुम्हें हमेशा के लिए खोने जा रही हूं."

"ऐसा मत सोचो, सुमन."

अशोक अमरीका चला गया था. दो वर्ष का अथक परिश्रम, नया देश, नया परिवेश, नई समस्याएं, अनिश्चित भविष्य. इन सब के बीच रोमांस का भूत उतर गया था. शुरू में सुमन को दोतीन पत्र लिखने के बाद उस ने उसे भुला दिया था—किशोर जीवन की एक मामूली प्रणय कथा की तरह.

पर अब? कितनी तीव्रता से उसे वह सब याद आता रहा था. कैथरीन की तुलना में सुमन कितनी महान हो गई थी. इन पांच वर्षों में जाने उस के साथ क्या बीती थी?

अनायास अशोक उठा. वह अपनी टेलीफोन डायरी उठा लाया. उस में लिखा था सुमन का नंबर. क्यों न उस से संपर्क कर के पता किया जाए उस की वर्तमान स्थिति के बारे में? क्या वह अभी भी अविवाहित फिर भी पता करने में क्या हर्ज था?

अशोक ने मां से कहा, "मां, जरा फोन उठा देना."

"क्या? किसे करना है?" सरला ने उत्सुकता दिखाई.

"मां, तुम्हें सुमन की याद है?" अशोक ने सकुचाते हुए पूछा.

"हां, खूब अच्छी तरह याद है. बड़ी अच्छी लड़की थी, बेचारी, पर बड़ी बुरी बीती उस गरीब पर."

"क्या हुआ?" अशोक ने आशंका मिश्रित उत्सुकता से पूछा.

"तेरे जाने के एक महीने के बाद ही उस के मांबाप ने उस के हाथ पीले कर दिए, पर उस की पति से न पट सकी. बमुशकिल दो साल तक गाड़ी घिसटी. उस के बाद दोनों में संबंध विच्छेद हो गया."

"क्या हुआ था?"

"यह तो मुझे नहीं पता."

अशोक अपराध भावना से ग्रस्त सा बैठा रहा. उसे लगा, सुमन की उस दुर्दशा के लिए वह स्वयं उत्तरदायी था. लड़की का प्रथम प्यार ही सच्चा होता है. यदि लड़का उसे धोखा दे दे तो लड़की टूट कर बिखर जाती है. फिर किसी के साथ घर बसाना इतना सरल नहीं होता.

बिजली की सी गति से अशोक ने एक महत्त्वपूर्ण निर्णय कर लिया. वह सुमन से संपर्क करेगा. यदि उस के जीवन में उत्पन्न कटुता और अलगाव के लिए वह स्वयं उत्तरदायी है तो वह इस स्थिति का प्रतिकार करेगा.

वह उठा. फोन के पास गया.

"क्या करेगा उसे फोन कर के?" सरला के अंदर नारकीय उत्सुकता जन्म ले चुकी थी.

अशोक ने मां के प्रश्न का उत्तर नहीं दिया. उस ने पुराने नंबर को डायल किया तो पता चला कि सुमन वहां नहीं रहती है. हां, वहां से उसे सुमन के नए घर का पता अवश्य मिल गया.

'शरिता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अगले दिन शाम को बिना किसी पूर्व सूचना के अशोक सुमन के घर पहुंच गया. जनकपुरी जैसे सुदूर क्षेत्र में दो कमरों के एक छोटे से घर में रह रही थी सुमन. उस ने घंटी बजाई. दरवाजा खुला. सामने सुमन खड़ी थी.

कितना बदलाव आ गया था सुमन में. पहले वाली ताजगी, चंचलता, उत्साह कपूर की तरह उड़ गए थे. कितनी सौम्य, शांत, तटस्थ तथा निश्चल सी लग रही थी.

अशोक को यों अचानक आया देख कर सुमन स्तब्ध रह गई. वह दरवाजे ही में जड़ हो कर खड़ी थी.

"अंदर आने के लिए नहीं कहोगी?" अशोक ने अपने दोनों हाथों से सुमन के कंधों को झकझोरा.

सुमन की जैसे चेतना लौट आई. वह चौंक कर बोली, "तुम? आंखों पर विश्वास नहीं हो रहा है."

अशोक अंदर पहुंचा. सामान्य, साधारण सा कमरा. एक पलंग, दो कुरसियां, एक पढ़ने की मेज.

वह कुरसी पर बैठ गया. अप्रत्याशित भेंट की हैरानी से उबर कर सुमन ने पूछा, "अमरीका से कब आए? तुम्हारी वह अमरीकन पत्नी कहां है?"

अशोक मुसकराया, 'सुमन मेरी गतिविधियों से अनजान नहीं है.' उस ने संक्षेप में आपबीती सुना दी. सुमन सुन कर संतुष्ट सी हुई, पर पूरी तरह नहीं. उस ने पूछा, "क्या तुम हमेशा के लिए अमरीका छोड़ आए हो? तुम्हारे ग्रीन कार्ड वगैरह का क्या होगा?"

"वे सब मैं ने विमान से प्रशांत महासागर में फेंक दिए."

"खिड़की से?" सुमन ने हंस कर पूछा.

"टायलेट के जरिए," अशोक ने गंभीर स्वर में उत्तर दिया.

"ऊब गए वहां की जिंदगी से."

"यही समझ लो. पर सुमन, मैं तो तुम्हारे बारे में सब कुछ जानना चाहता था. मां कह रही थीं कि तुम पर बड़ी बुरी बीती."

"शुरू में ऐसा ही लगा था कि यह

धूम्रपान विरोधी स्तंभ

अमरीका के स्टीवन एडम साइमन ने धूम्रपान तथा नशीले पदार्थों के कुप्रभाव के प्रति लोगों को जागरूक बनाने के लिए 45.36 किलोग्राम भार का 3.35 मीटर ऊंचा तथा 49.5 सें. मी. व्यास का एक स्तंभ बनाया है. सिगरेट की खाली डब्बियों को कूट कर उन्हें गोद से चिपका कर इस स्तंभ का आकार देने में साइमन को 1500 घंटे तक कड़ी मेहनत करनी पड़ी, जबकि सिगरेट की खाली डब्बियां इकट्ठी करने में लगा 7 वर्ष का समय इस में शामिल नहीं है.

धूम्रपान विरोधी इस अभियान को छेड़ने की प्रेरणा साइमन को अपने दादा की असामयिक मृत्यु से मिली थी. लगातार सिगरेट पीने वाले दादाजी के फेफड़ों में कैसर हो गया था. अपने विद्यार्थी जीवन में भी साइमन अपने साथियों को सिगरेट की डब्बियों की गेंद बना कर दिया करता था जिस पर धूम्रपान विरोधी संदेश लिखे होते थे. जब साइमन की नौकरी लगी तो उस ने दफ्तर की कचरा पेटियों में सिगरेट की खाली ड़ब्बियां प्रतिदिन बटोरनी शुरू कर दीं. इन डब्बियों को जोड़ कर कुछ दिनों में उस ने सवा मीटर ऊंची सिगरेट बना दी. इस सिगरेट को देख कर दफ्तर वालों को एहसास हुआ कि वे धूम्रपान में कितना धन और स्वास्थ्य गंवा रहे हैं. अब साइमन इस नायाब ऐतिहासिक स्तंभ को 50 हजार डालर में बेचना चाहता है तथा इस राशि का उपयोग फेफड़ों के कैंसर के उपचार के लिए शोधकार्य में करना चाहता है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टूटन, घुटन, अलगाव, अकेलेपन से नहीं पाएगा. पर अब सब ठीक हो गया है. यहां टायनी टाट स्कूल में अंगरेजी पढ़ाती हूं. शाम को दो ट्यूशनें कर ली हैं, आर्थिक संकटों से मुक्ति स्वतंत्रता की पहली शर्त है. इस क्षेत्र में अब कोई समस्या नहीं है. घर वालों ने समझा कि मैं देव को छोड़ कर आई हूं तो शायद जीवन भर उन पर बोझ बनी रहूंगी.

"शायद वे ठीक थे. कौन मांबाप अपनी तलाकशुदा बेटी का जीवन भर भार उठा सकते हैं."

"वह तो ठीक है, सुमन, पर देव से तुम्हारी पटी क्यों नहीं? तुम जैसी लड़की तो किसी के साथ भी..."

अशोक का प्रश्न पूरा होने से पूर्व ही एक चार वर्षीय बालक बाहर से दौड़ता हुआ आया और सुमन की गोद में चढ़ गया.

"तुम्हारे प्रश्न का उत्तर यह है." सुमन ने बालक की ओर संकेत किया.

"तुम्हारा बेटा है?"

"तुम्हारा नहीं, हमारा," सुमन ने शांत स्वर में कहा.

अशोक चौंक पड़ा. उस ने गौर से बालक को देखा. सच, वह उसी की प्रतिमूर्ति सा लग रहा था.

"मां, यह कौन है?" बालक ने सुमन से पूछा.

सुमन ने कोई उत्तर नहीं दिया. संबंध स्थापित ही कहां हुआ था. बाप को वह चाचा नहीं बनाना चाहती थी.

"अशोक, 7 मार्च की वह होली की रात याद है, जब तुम मुझे अपने घर ले गए थे. तुम्हारे मांबाप घर पर नहीं थे. तुम ने कहा था कि सुमन शादी तो हमारी होगी ही, दो वर्ष बाद सही. मैं ने घुटने टेक दिए थे, तुम्हारी राजाज्ञा के सामने."

अशोक को सब कुछ याद था. वह रासरंग में भीगी अनुभूति उस के जीवन की अमूल्य धरोहर थी.

"इसी के कारण मैं ने देव से विवाह कर लिया था. मैं तुम्हारे प्रेम के उपहार को नष्ट नहीं करना चाहती थी." सुमन ने कहा.

'वही मूर्खता कर बैठीं तुम, सुमन.' अशोक ने सोचा.

"विवाह और रिंकू के जन्म के बीच समय या अवधि में कोई विशेष असंतुलन नहीं था. फिर भी देव को इस तथ्य का आभास हो गया कि रिंकू उस का बेटा नहीं है. बस, इसी मुद्दे को ले कर हमारे बीच अलगाव की खाई चौड़ी होती चली गई."

अशोक उस पूरे कांड की मीमांसा कर रहा था. उस में देव को ज्यादा दोष नहीं दिया जा सकता था. कौन पुरुष अपनी पत्नी की अवैध संतान को स्वीकारेगा? नहीं, यह सरासर सुमन की मूर्खता थी. उसे यह सब नहीं करना चाहिए था, पर उस ने ऐसा किया क्यों? उस के प्रेम की ही खातिर तो. फिर अब उसे वह प्यार लौटाना चाहिए.

बस, अशोक ने अपने अंतिम निर्णय की घोषणा कर दी.

"सुमन, मुझे अफसोस है कि मेरी

लेटर प्रेस व आफसेट पर
कम लागत व उत्तम छपाई
के लिए प्रयोग करें

चंपक मुद्रण स्याही
चंपक इंक्स
ई-3, झंडेवालान, नई दिल्ली-110055.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वजह से तुम्हें इतने कष्ट उठाने पड़े. अब मैं आ गया हूं. हम दोनों शादी कर लेंगे."

"अशोक, अब मैं शादी के झंझट में नहीं पड़ना चाहती. मैं जानती हूं, तुम्हारा यह निर्णय प्यार से प्रेरित नहीं, बल्कि मेरे प्रति दया पर आधारित है. मैं अपनी वर्तमान स्थिति से खुश हूं, मैं नहीं चाहती कि तुम मेरे साथ विवाह कर के समस्याओं से घिर जाओ," सुमन ने स्पष्ट स्वर में कह दिया.

"कैसी समस्याएं?" अशोक ने उलझ कर पूछा.

"ठंडे दिमाग से सोचो, खुद ब खुद उन समस्याओं का पता चल जाएगा."

बेटे को गोद में ले के प्यार करने के बाद सुमन के बालों को सहला कर अशोक लौट आया.

उस ने रात के खाने के दौरान जब अपने निर्णय की घोषणा की तो सरला हिल गई. वह तमक कर बोली, "ऐसे क्या लाल जड़े हैं उस में. एक तो तलाकशुदा, ऊपर से एक लड़के की मां. तू सोचता है कि तुझे उस से अच्छी लड़की नहीं मिल सकती?"

"प्रश्न अच्छी या बुरी लड़की का नहीं है, मां. वह मेरा पहला प्यार है. मेरे ही कारण उस ने अपनी जिंदगी की यह दुर्दशा कर रखी है. उस के साथ विवाह करना मेरा नैतिक दायित्व ही नहीं, सामाजिक न्याय भी होगा," अशोक ने निर्णायक स्वर में कहा.

घर में शीत युद्ध चलता रहा मां बेटे के बीच, कई दिनों तक. अंत में नरेन की मध्यस्थता से दोनों पक्षों के बीच समझौता हो गया. सरला को ही झुकना पड़ा.

अशोक ने कुछ दिनों बाद सुमन को भी झुका लिया. जिस दिन सरला ने रिंकू को देखा, उन के मुंह से अनायास निकल गया, "अब समझी, एकदम तुझ पर गया है रे."

7 मार्च को अशोक और सुमन विवाह सूत्र में बंध गए. पिछले कई वर्षों से अशोक के मन की जो फांस उसे व्यथित करती रहती थी, अब उस की चुभन समाप्त हो चुकी थी. ●

दिनदहाड़े

बात पिछली गरमियों की है. मैं और मेरा मित्र मोटरसाइकिल से एक शवयात्रा में शामिल होने के लिए जा रहे थे. अचानक एक गांव में मोटरसाइकिल में पेट्रोल खत्म हो गया. तभी एक व्यक्ति ने हमें बताया कि यहां से पेट्रोल पंप काफी दूर है. आप लोग यहां एक पेड़ के नीचे आराम करें, मैं आप के लिए पेट्रोल ला देता हूं.

यह कह कर वह हम से 100 रुपए ले कर चला गया.

—कुमारनीलाभ बाल्मीक

*

मुझे कानपुर से झांसी जाना था. रेलवे स्टेशन पर मैं साबरमती एक्सप्रेस के एक डब्बे में बैठ गया. तभी एक युवक घबराया हुआ सा आकर मुझ से पूछने लगा, "अभी यहां एक वृद्ध व्यक्ति बैठा था वह कहां चला गया?"

मैं ने अनभिज्ञता प्रकट कर के जब उस की घबराहट का कारण पूछा तो उस ने बताया, "लखनऊ से एक वृद्ध व्यक्ति मेरे साथ वाली सीट पर बैठा था, उसे झांसी जाना था. रास्ते में हमारा अच्छा परिचय हो गया था. कानपुर आने पर उस ने 5 रुपए दे कर मुझे सिगरेट लाने भेज दिया और खुद मेरा सामान ले कर फरार हो गया.

—शरदनारायण खरे

*

एक दिन एक व्यक्ति ने हमारे घर आ कर बताया, "तुम्हारे मामाजी इधर से हो कर कहीं जा रहे हैं और करीब एक घंटा बस अड्डे पर रहेंगे. इसलिए उन्होंने आप सब लोगों को वहीं बुलाया है."

घर पर ताला लगा कर हम सभी बस अड्डे पर गए. लेकिन बहुत ढूंढ़ने पर भी वहां मामाजी नहीं मिले. जब हम घर वापस आए तो देखा घर का सारा कीमती सामान गायब है.

—सुदीपकुमार ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मधुमक्खियां

पृष्ठ 140 का शेष

या अभाव नहीं होता."

"शिकायत भी दुखदर्द के अंतर्गत ही आती है, गुंजन. और तुम ने खुद ही कहा है कि आज उस की बात नहीं करेंगे," शिखा हंसी और फिर बात बदलने को पूछने लगी, "अच्छा, यह बताओ, तुम ने अपने नाम के आगे कितनी डिगरियों की कतार लगा ली है?"

दोनों जाने कितनी देर तक बातें करते रहते, अगर बच्चों को नींद न आने लगती. दो रोज बाद इतवार था. जूही ने गुंजन से वादा ले लिया कि वह विक्की को ले कर छुट्टी के दिन जरूर उन के घर आएगा.

गुंजन विक्की को ले कर चला गया. मगर शिखा उस रात सो नहीं सकी. कालिज के बेफिक्री व मस्त भरे दिन चलचित्र की तरह उस की आंखों के आगे तैरते रहे.

मेडिकल कालिज कीछात्रछात्राएं हर दिन मानव शरीर की चीरफाड़ और अंगप्रत्यंग की बनावट का विश्लेषण करने के बाद लड़केलड़कियों की परिधि से ऊपर उठ कर एकदूसरे से सामान्य व्यक्ति का सा व्यवहार करने लगते हैं. गुंजन और शिखा की भी खूब पटती थी. कालिज और हस्पताल में तो दोनों इकट्ठे होते ही थे, उस के बाद भी गुंजन छात्रावास के कमरे में कम और टेलीफोन के पास अधिक दिखाई देता था. शिखा को फोन करता हुआ या उस के फोन का इंतजार करता हुआ. छुट्टी के दिन तो उस का खानापीना शिखा के परिवार के साथ ही होता था, मगर इस सब के बावजूद दोनों में प्यार मुहब्बत के कोई कौलकरार नहीं थे.

इंटर्नशिप के दौरान गुंजन ने आगे पढ़ाई के लिए कई विदेशी विश्वविद्यालयों के फार्म मंगवाए थे. मगर शिखा ने वे फार्म

पढ़ने से इनकार कर दिया था, "घर वाले तो शायद मान भी जाएं, मगर मैं स्वयं ही अपना शहर, अपना परिवार छोड़ कर एक नए परिवेश में नहीं जाना चाहती. सीखने के लिए अभी यहां ही बहुत कुछ है."

"लेकिन मेरे घर वाले मुझे बाहर भेजना चाहते हैं. और मिलता मौका छोड़ना मैं मूर्खता समझता हूं," गुंजन ने हिचकिचाते हुए कहा था, "लेकिन इतने बरसों से हम दोनों ने जो भी पढ़ा या सीखा है इकट्ठे ही सीखा है. अब तुम्हारे बगैर जाना अच्छा नहीं लगेगा. तुम चल कर तो देखो, शायद वह दुनिया और भी अच्छी लगे."

"मगर मैं अपनी इसी दुनिया से संतुष्ट हूं. अभी इसे ही ठीक तरह से जानासमझा नहीं है."

"तुम ने तो शायद मुझे भी जाननेसमझने की कोशिश नहीं की है..."

शिखा ने गुंजन की बात काटी, "तुम बेहद महत्त्वाकांक्षी हो, गुंजन, तुम्हारी महत्त्वाकांक्षाओं की कोई सीमा नहीं है, एक बहते दरिया की तरह. और मैं एक दायरे में सिमट कर आराम से जीना चाहती हूं."

"रेशम के कीड़े की तरह," गुंजन हंसा, "क्यों नहीं तुम भी बहते पानी में कूद पड़तीं, शिखा?"

"जैसे बहता पानी एक परिधि में बंध कर सड़ जाएगा वैसे ही रेशम का कीड़ा भी बहते पानी में तैर नहीं पाएगा," शिखा ने मुसकरा कर कहा, "हम बरसों से अभिन्न मित्र रहे हैं. केवल इसलिए कि कभी भी हम ने अपना दृष्टिकोण एकदूसरे पर थोपने की कोशिश नहीं की और अब भी नहीं करनी चाहिए."

"मगर मैं तो बाहर अवश्य जाऊंगा और यह भी नहीं कह सकता कि वापस कब लौटूंगा."

"न तुम जल्दी वापस लौटने का वादा करो, न ही मैं इंतजार करने का, ताकि जब भी तुम लौटो, हम इसी अभिन्नता और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आत्मीयता से मिलें," शिखा ने सुझाव दिया.

और कुछ समय बाद गुंजन चला गया था. उस के जाने के बाद शिखा को लगा था कि कैसे जीवन में सब कुछ होते हुए भी एक अजीब सा अवसाद, एक अजीब सा खालीपन भर गया हो. वह खालीपन उस वक्त और भी गहरा हो जाता था, जब गुंजन का पत्र आता था, क्योंकि उस में भी नए परिवेश से जुड़ने के असफल प्रयास और अकेलेपन का रोना ही होता था.

शिखा को लगा कि अगर वे दोनों पत्रों द्वारा एकदूसरे से जुड़े रहे तो कभी भी हालात से समझौता नहीं कर पाएंगे और वह अकेलापन दोनों का जीवन पर्यंत पीछा नहीं छोड़ेगा. उस ने गुंजन के पत्र का उत्तर नहीं दिया, न ही फिर उस के बाद गुंजन ने कोई पत्र लिखा. और इस तरह दोनों के बीच की अभिन्नता की डोर जाने कहां खो गई.

उस रात बरसों बाद दोनों का आमनासामना हुआ था, अतीत की सनदों यानी बच्चों के माध्यम से.

रविवार को गुंजन विक्की के साथ आया. बातोंबातों में शिखा ने बताया कि कैसे उस की एक सहकर्मी अखिल से घनिष्ठता और शादी हुई. कैसे शादी के छह सप्ताह बाद ही एक सड़क दुर्घटना में अखिल की मृत्यु हो गई और तब से वह अकेली उस सरकारी क्वाटर में रह रही थी.

"लेकिन शादी तो तुम ने घर वालों की इजाजत से की होगी?" गुंजन ने पूछा.

"इजाजत क्या, उन के दबाव में ही शादी की थी. अखिल शोभा दीदी का देवर था. इसी लिए उस से अनौपचारिक बातचीत हो जाती थी. फिर जब सब कहने लगे कि उस से शादी कर लो तो मुझे भी इनकार करने की कोई वजह नजर नहीं आई."

"फिर अखिल के न रहने के बाद तुम इस तरह अकेली क्यों रहती हो? रेशम के कीड़े ने अपना खोल कैसे छोड़ दिया?"

शिखा हंस पड़ी, "खोल कहां छोड़ा, गुंजन, बल्कि उस में जूही को भी समेट लिया है. तब तक तो यानी ऐसे और अखिल के घर वालों को मेरे गर्भ के बारे में मालूम पड़ा तो सभी लगे एक स्वर से शोर मचाने कि गर्भपात कराओ. अखिल के साथ गुजारे चंद सप्ताह के सहारे तुम सारा जीवन नहीं बिता सकतीं. तुम्हें नए सिरे से जीवन शुरू करना होगा और उस में यह बच्चा बाधक बनेगा. तुम ठहरीं नौकरी वाली, नातजुरबेकार, तुम से तो बच्चा संभलेगा नहीं, मुसीबत हमें ही पड़ेगी, और न जाने क्याक्या.

"यह बात मुझे खटक गई और मैं ने फैसला किया कि मैं अपने और अखिल के प्यार की निशानी को बगैर किसी की सहायता के पालूंगी. वैसे अखिल के परिवार का भी मेरे साथ बड़ा स्नेहभरा व्यवहार है. लेकिन मैं ने कभी भी उन्हें या अपने परिवार वालों को जूही के सुखदुख में शामिल नहीं किया. हालांकि मैं सब से मिलतीजुलती हूं."

"कमाल है, शिखा. बड़ी हिम्मत है तुम्हारी कि औरत हो कर भी अकेले ही बेटी पाल रही हो. मैं मर्द हो कर भी सोचता था कि अगर कोई विक्की को मांगे तो तुरंत दे दूं. अब तो खैर नहीं, अब तो यह बड़ा हो गया है. मेरे भी कई काम कर देता है, लेकिन जब यह छोटा था तो बहुत कोशिश की कि इस की मां या नानी इसे रखने को तैयार हो जाएं."

"क्या मतलब? तुम्हारा तलाक हुआ है?" शिखा ने चौंक कर पूछा.

"तलाक नहीं, अलगाव कह सकती हो रूथ से मेरी शादी नहीं हुई थी. उस का बाप संयुक्त राष्ट्र के किसी विशेष मिशन पर लीबिया गया हुआ था. रूथ उसी के आने शादी करना चाहती थी. मगर उस के आने से पहले ही विक्की हो चुका था. इस के पालनपोषण को ले कर मेरे और रूथ के बीच मतभेद होने लगे थे.

"एक रोज ऐसे ही मतभेद के बाद विक्की को मुझे पकड़ा कर वह हमेशा के लिए चली गई. काफी मनाने की कोशिश की, मगर उस का दिल मुझ से भर चुका था."

"सो यह भेद है विक्की की नीली आंखों का?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"नीली आंखों का ही नहीं, मां के स्नेह की भूख होने का भी. कई साल घर में रहने और इतना प्यारा बच्चा होने के बावजूद, इसे किसी का प्यारदुलार नहीं मिला," गुंजन एक आह भर कर बोला, "मेरे घर वालों की नजरों में तो विक्की गुनाह का फल है."

"क्या बात करते हो, गुंजन. आज के समाज में यह सब कौन मानता है."

"औरों का तो मालूम नहीं, मगर मेरे घर वाले तो मानते हैं. तभी तो वहां की जमीजमाई प्रेक्टिस छोड़ कर यहां चला आया."

"एक ओर तो हम अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर बच्चों के वर्ष मनाते हैं, उन के कल्याण के लिए हजारों समितियां चलाते हैं. दूसरी

कुछ नए सुस्वादु व्यंजन

(पृष्ठ 85 का शेषांश)

चोपसुई बनाने की विधिः दोनों प्रकार का आटा भलीभांति मिला लें.

अदरक व लहसुन को पानी डाल कर पीस लें व छान लें.

फिर इस पानी से सख्त आटा गूंथें. इस आटे की छोटी गोल लोइयां बना कर पूरियां बेल लें. प्रत्येक पूरी में से 2-½ इंच लंबी व ½ इंच चौड़ी टुकड़ियां (पारे) काट लें. इन टुकड़ियों को कपड़े पर फैला दें.

तेल गरम करें. टुकड़ियों को उस में कुरकुरा होने तक तलें. ये चोपसुई तैयार हैं.

वेजीटेबल ग्रेवी बनाने की विधिः सभी सब्जियों को बारीकबारीक काट लें. पानी में नमक डाल कर उस में कटी सब्जियां उबाल लें. भलीभांति गल जाने पर घोटनी से घोट लें. कड़ाही में ½ प्याला तेल डाल कर गरम करें. उस में जीरा, सरसों तथा मेथीदाना तथा करीपत्ता डाल कर हलका भूरा कर लें. मसाले मिला दें.

अच्छी तरह हिला कर उस में पकी हुई सब्जियां मिलाएं. इमली का पानी (रस) डालें. आवश्यकता हो तो और थोड़ा पानी डाल लें और 15-20 मिनट तक पकाएं. फिर आंच से उतार कर हरी धनिया बुरक दें.

परोसते समय प्लेट में वेजीटेबल ग्रेवी एक तरफ रखें और कुछ टुकड़ियां अलग से दूसरी ओर. कुरकुरे और गरम चोपसुई का आनंद लें.

—पुष्पा मेहता

मटका आलू

सामग्रीः 6 मध्यम आकार के आलू, घर में बना हुआ पनीर (अंदाज से), 1 स्लाइस ब्रेड, ½ छोटी चम्मच काली मिर्च (पिसी हुई), 1 बड़ा प्याज, नमक स्वादानुसार, तलने के लिए घी, 1½ गिलास पानी.

शोरबे के लिए सामग्रीः बड़े आकार के 4 टमाटर, 2 प्याज (बड़े) 2 छोटे चम्मच खसखस, ¼ प्याला क्रीम, सजाने के लिए थोड़ी हरी धनिया, ½ कलछी घी, नमक तथा लाल मिर्च इच्छानुसार.

विधिः आलुओं को छीलें. किसी तेज चाकू से छेद कर के प्रत्येक आलू के बीच का गूदा निकाल लें. फिर आलुओं को तल कर एक तरफ रख लें.

प्याज को पीस कर उस में पनीर, ब्रेड (चूरा कर के) और काली मिर्च तथा नमक मिला दें. इस मिश्रण को भली प्रकार मिला लें और आलुओं में (छेदों में) भर लें.

प्याज और टमाटर को काट कर पीस लें और घी में भून लें. इस में खसखस व क्रीम मिला दें. लगातार कलछी से हिलाते हुए भूनें. उस के बाद 1½ गिलास पानी डाल कर 10 मिनट तक धीमी आंच पर पकाएं. तत्पश्चात भरे हुए आलू उस में डाल दें और फिर 10 मिनट तक पकाएं. परोसते समय हरी धनिया से सजाएं.

ध्यान दें: आलुओं के बीच से निकला गूदा भी शोरबे को गाढ़ा करने के लिए (प्याज आदि के साथ पीस कर) मिलाया जा सकता है.

—शोभा छुटानी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और उन के पैदा होने के पहले ही उन्हें मार देना चाहते हैं या उन्हें गुनाह का फल कह कर उन का तिरस्कार करते हैं." शिखा एक आह भर कर बोली, "समझ नहीं आते इस दुनिया के गोरखधंधे."

"गोरखधंधे में फंसो ही मत, शिखा. मैं ने तो सब को छेड़ दिया है. अपने काम से काम रखता हूं या विक्की की खुशी के लिए जीता हूं. विक्की हंसमुख और मिलनसार है. इसे लोगों से मिलनाजुलना पसंद है. खैर तुम्हारे मिलने से विक्की की यह समस्या तो हल हो गई," गुंजन ने राहत की सांस ले कर कहा.

"यही क्यों, और भी कई परेशानियां हल हो गई हैं, गुंजन. जैसे तुम्हारे और मेरे अकेलेपन की, जूही के पुरुष स्नेह की. और भी जाने कितनी समस्याएं हल हो जाएंगी धीरेधीरे, देखते चलो."

"लेकिन जिस एक नई समस्या का सामना तुम्हें करना पड़ेगा, शायद उस के बारे में तो तुम ने सोचा ही नहीं है." गुंजन हंसा, "लोग मुझे अकसर तुम्हारे घर आते देख कर उंगली नहीं उठाएंगे क्या?"

"उठनी तो नहीं चाहिए. हम कोई बहकने वाली उम्र के किशोरकिशोरी तो हैं नहीं. अधेड़ावस्था की ओर बढ़ते हमपेशा लोग हैं. फिर हमारे बच्चों में दोस्ती है, उन्हें एकदूसरे के यहां छोड़नेलिवाने तो हमें जाना ही होगा. इस पर भी अगर लोग उंगली उठाते हैं तो उठाएं, मुझे कुछ फर्क नहीं पड़ता," शिखा ने लापरवाही से कहा.

"यह हुई न बात तो अब जब जी चाहे बेखटके आ सकता हूं?" गुंजन ने उत्साह से पूछा.

"कभी भी," शिखा ने मुसकरा कर आश्वासन दिया.

पर ज्यादा आनेजाने का तो दोनों के पास ही समय नहीं था. दोनों ही व्यस्त थे, पर छुट्टी के रोज का बेसब्री से इंतजार रहता था. गुंजन और विक्की के साथ गुजारे क्षण मरुस्थल पर पड़े छींटों के समान लगते थे. जी चाहता था कि उन लोगों से और अधिक मिले. मगर ज्यादा आने का गुंजन के पास समय ही कहां होता था. वह चाहती थी कि उस की व्यस्तता बांट ले. मगर एक बार चोट खाने के बाद गुंजन तैयार होगा?

और फिर स्वयं शिखा ने भी तो एक बार उस का अप्रत्यक्ष प्रस्ताव ठुकराया ही था महज विक्की और जूही के स्नेह के कारण. नहीं तो स्त्रियों में उस की कोई रुचि नहीं लगती.

इसी द्विविधा में कई महीने बीत गए. एक रोज वह जूही के साथ गुंजन के घर गई. विक्की कुछ परेशान सा लग रहा था. पूछने पर बोला, "क्या बताऊं, मां, कल एक निबंध लिखना है-'पहाड़ों की मौज'. मगर मैं ने तो कभी पहाड़ देखा ही नहीं है. मैं कैसे लिखूं?"

"मैं ने भी कभी पहाड़ नहीं देखा," जूही बोली, "मां, कभी ले कर ही नहीं गईं."

"अब अकेले कहां ले कर जाती, बेटी," शिखा एक उसांस ले कर बोली, "अपनी कापी दो, विक्की, मैं कुछ संकेत दे देती हूं. तुम उन्हें प्रस्ताव में बदल लेना."

"धन्यवाद, मां," विक्की कापी पकड़ाते हुए बोला, "मेरे सहपाठी तो हर साल कहीं न कहीं जाते हैं. इसलिए वे सब तो विषय को ले कर बहुत खुश थे."

"एक बात सुनो, शिखा. तुम्हारी तो गरमियों की छुट्टियां होने वाली हैं. तुम दोनों बच्चों को किसी पहाड़ पर घुमा लाओ न,"

"न बाबा न. मैं नई जगह पर अकेले इन दो बंदरों को नहीं संभाल सकती. तुम साथ

सदाचार

हुकूमतों की अपनी सेना शक्ति चाहे तो अंतरंग प्रश्न कह कर मर्यादा लांघ सकती है और मानव संकट उपस्थित कर सकती है, किंतु राजकीय सदाचार दूसरे राष्ट्रों को इस परिस्थिति में कुछ कर पाने से लाचार और नपुंसक बनाए रहता है.

—जैनेंद्रकुमार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चलो. तुम्हारी तो छुट्टियां भी काफी जमा हो गई होंगी?"

"छुट्टियां तो जमा हैं, मगर जानती हो डाक्टर लोग कब छुट्टी लेते हैं?" गुंजन ने उस की आंखों में झांकते हुए कहा, "जब हनीमून पर जाना हो."

"ओह ! तो हम लोग हनीमून पर जाएंगे इन मधुमक्खियों को साथ ले कर?" शिखा ने बच्चों की तरफ इशारा कर के पूछा.

गुंजन हंस पड़ा. फिर गंभीर स्वर में बोला, "लेकिन, शिखा, इन्हीं मधुमक्खियों के कारण हमें हनीमून पर जाने की शर्त पूरी करनी पड़ेगी यानी शादी करनी होगी. इन्हें परंपरागत परिवार का सुख देना होगा. वरना जूही और विक्की को घरपरिवार या पारिवारिक बंधन क्या होते हैं, मालूम ही नहीं पड़ेंगे. और ये आज की मधुमक्खियां, कल की तितली और भौंरे में बदल जाएंगी."

शिखा सिहर उठी, "नहीं, नहीं, गुंजन ऐसा कैसे होने देंगे. हम इन्हें अच्छी शिक्षा देंगे, अच्छे मूल्य और आदर्श देंगे."

"यही आदर्श न कि मैं और तुम बगैर किसी रिश्ते के एकदूसरे के साथ मजे में घूमतेफिरते हैं. दुनिया की न सही..."

"अपने बच्चों की परवाह तो हमें करनी ही होगी. यही कहना चाह रहे हो न?" शिखा ने बीच में ही गुंजन की बात उचक ली.

"हां, कुछ गलत कह रहा हूं क्या?"

"नहीं, बल्कि यह तो हमें पहले ही सोचना चाहिए था."

"अब भी देर नहीं हुई है तुम कहो तो कर दूं छुट्टी के लिए आवेदन?"

"छुट्टी ही के लिए नहीं, रजिस्ट्रार के दफ्तर में शादी के लिए भी," शिखा ने कहा और किसी नईनवेली दुलहन की तरह शरमा गई. ●

यह भी खूब रही

मेरे देवर मत्स्य विभाग में अफसर हैं. शरीर से दुबलेपतले होने के कारण वह मात्र 20-21 वर्ष के युवक लगते हैं.

एक बार एक ग्रामीण उन के पास आया और बोला, "मुझे साहब से मिलना है." मेरे देवर ने पूछा, "कहो, क्या काम है?"

वह व्यक्ति बोला, "आप से नहीं, आप के पिताजी से काम है." इतना सुनते ही पास खड़े देवर के दोस्त हंसने लगे.

जब उस व्यक्ति को असलियत का पता चला तो वह बहुत शर्मिंदा हुआ.

—रामकुमारी श्रीवास्तव

*

मेरा चचेरा भाई राह चलती लड़कियों से छेड़छाड़ करता था. इसलिए मेरी सहेलियां हमारे घर आने से कतराती थीं.

एक दिन उसे सबक सिखाने के उद्देश्य से मैं बुर्का पहन कर कुछ सहेलियों के साथ उस के सामने से निकली. उस ने तुरंत मेरा हाथ पकड़ कर कहा, "कहो, प्रिये, कैसी हो?"

मेरी सारी सहेलियां ठहाका लगा कर हंस पड़ीं और मैं ने बुर्का ऊपर कर दिया.

मुझे देखते ही उस का चेहरा सफेद पड़ गया. फिर उस ने कभी किसी लड़की को न छेड़ने की कसम खाई. —सुनीता गोडेजा

*

मेरे एक मित्र को हर बात में "ऐसा तो रोज होता है" कहने की आदत थी.

उसे सबक सिखाने के उद्देश्य से एक दिन सब मित्रों के सामने मैं ने उस से कहा, "मैं ने कल आप को आप की पत्नी के साथ बरतन साफ करते हुए देखा था."

मित्र अपनी आदत के अनुसार बोले, "ऐसा तो रोज होता है."

जब हंसी का एक ठहाका हम मित्रों के बीच गूंज उठा तो उन्हें अपनी गलती का एहसास हुआ. —देवेंद्र सोनी ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यक्तिगत विज्ञापन

वैवाहिक विज्ञापन

वर चाहिए

सुंदर, स्लिम, 23, 148 सें.मी., एम.एससी., पंजाबी अरोड़ा कन्या हेतु डाक्टर, इंजीनियर, सी.ए. या आर्मी आफिसर वर चाहिए. शीघ्र, उत्तम विवाह. लिखें: वि.नं. 9098, सरिता, नई दिल्ली-110055.

उच्च अधिकारी, सजातीय, कार्यरत, ग्रेजुएट, इंजीनियर वर चाहिए. कन्या एम.एससी., 22, 158 सें.मी., गौरवर्ण, स्मार्ट, सूर्यवंशी क्षत्रिय (राजपूत). पिता उच्च अधिकारी. लिखें: वि.नं. 9111, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुशवाहा राजपूत, 23, 163 सें.मी., पोस्ट ग्रेजुएट, होम साइंस व्याख्याता, मांगलिक कन्या हेतु सजातीय, मांगलिक वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9191, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माथुर कायस्थ, 23 वर्षीया, 154 सें.मी., गोरी, सुंदर, एम.ए. (प्रथम श्रेणी), पीएच.डी. अध्ययनरत, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु सुस्थापित, सजातीय वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9193, सरिता, नई दिल्ली-110055.

उत्तरप्रदेशीय ब्राह्मण कन्या, एम.ए., अंगरेजी (द्वितीय), बी.एड., 21, 158 सें.मी., हेतु सुस्थापित, सजातीय वर. मातापिता प्रोफेसर. लिखें: वि.नं. 9194, सरिता, नई दिल्ली-110055.

22, 164 सें.मी., कुर्मि क्षत्रिय, सुशील, अति सुंदर, कुलीन, आकर्षक व्यक्तित्व वाली, मेधावी, एम.ए., बी.एड. प्रथम श्रेणी, शोधकार्य कर रही कन्या हेतु सजातीय, आई.ए.एस., आई.एफ.एस., आई.पी.एस., पी.सी.एस. (उ.प्र.), डाक्टर, इंजीनियर, प्रथम श्रेणी वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9195, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मि क्षत्रिय, 21, 162 सें.मी., बी.काम., संभ्रांत परिवार की सुशील, गृहकार्यदक्ष, सुंदर, स्लिम कन्या हेतु शासकीय सेवारत, इंजीनियर, सजातीय, सुयोग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9196, सरिता, नई दिल्ली-110055.

31 वर्षीया, 155 सें.मी., एम.एससी., सुंदर, कायस्थ, राष्ट्रीयकृत बैंक में सेवारत, तलाकशुदा निस्संतान लड़की हेतु वर. कोई बंधन नहीं. प्रथम बार पूर्ण विवरण लिखें: वि.नं. 9197, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुशवाहा, 25 वर्षीया, 160 सें.मी., रंग गोरा, सरकारी सेवारत, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु अच्छे पद पर कार्यरत, सुयोग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9198, सरिता, नई दिल्ली-110055.

उत्तर प्रदेश निवासी, 25, 150 सें.मी., साहु (तेली), एम.एससी. (फाइनल), गोरा रंग कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9199, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24, 165 सें.मी., शाहू वैश्य, सुंदर, गौरवर्ण, ग्रेजुएट, डिप्लोमा इलेक्ट्रोनिक्स रेडियो इंजीनियर और 22, 170 सें मी., गौरवर्ण, सुंदर, आयुर्वेदिक पांचवां वर्ष, कन्याओं हेतु सजातीय, डाक्टर, सी.ए., इंजीनियर, कार्यरत, शिक्षित वर चाहिए. गुजरात में प्रथम पसंदगी. लिखें: वि.नं. 9214, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जांगिड़, 24, 154 सें.मी., गरीब बुद्धिमान, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु कार्यरत, शिक्षित वर चाहिए. गोत्र सहित लिखें: वि.नं. 9215, सरिता, नई दिल्ली-110055.

मेरठ निवासी, हिंदू, जाट, 20 वर्षीया, 157 सें.मी., बी.एससी., गेहुआं रंग, सुशील, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु सजातीय, शासकीय सेवारत, शाकाहारी वर चाहिए. पिता शासकीय कर्मचारी, दहेज नहीं, शीघ्र विवाह. लिखें: वि.नं. 9216, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी, 26 वर्षीया, 154 सें मी., सुंदर, गौरवर्णीय, समझदार, उच्च शिक्षित, कुंआरी कन्या जिस का निर्दोष परिस्थिति में पूर्व पति की पौरुषहीनता के कारण कोर्ट से विवाह विच्छेद हुआ है, के पुनः विवाह हेतु सुलझे व प्रगतिशील माहेश्वरी अग्रवाल, उच्च परिवार में संबंध आमंत्रित. कम उम्र निस्संतान विधुर भी विचारणीय. लिखें: वि.नं. 9217, सरिता, नई दिल्ली-110055.

30, 155 सें.मी., वकील, मध्यप्रदेशीय, संपन्न अग्रवाल परिवारीय सुंदर कन्या हेतु उपयुक्त वर चाहिए. उत्तम विवाह. जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 9218, सरिता, नई दिल्ली-110055.

35, 56/158 सें.मी., जाट कन्या, एम.ए., बी.एड., स्मार्ट 1,500/-, सेवारत शिक्षिका, आकर्षक, गेहुआं रंग, स्वावलंबी, बड़ौदा निवासी हेतु सेवारत, 35-39, अपरिणीत, निस्संतान विधुर अथवा तलाकशुदा, सुयोग्य, शिक्षित वर चाहिए. म.प्र., गुजरात, राजस्थान निवासी को प्राथमिकता. प्रथम बार में पूर्ण विवरण लिखें: वि.नं. 9219, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जायसवाल, 35, 152 सें.मी, बी.ए., 1,000 रु., सरकारी नौकरी (बरेली), तलाकशुदा कन्या हेतु सुयोग्य, कार्यरत, सजातीय वर चाहिए. दहेज नहीं, तलाकशुदा मान्य. लिखें: वि.नं. 9229, सरिता, नई दिल्ली-110055.

धोबी, शिक्षित परिवारीय, 26, 150 सें.मी., एम.ए., बी.एड, रंग साफ, सुंदर, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9221, सरिता, नई दिल्ली-110055.

मंगली, कुशवाह राजपूत, 26, 165 सें.मी., रंग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आकर्षक, अध्यापिका पब्लिक हाई स्कूल, हेतु सजातीय वर. पिता डाक्टर. लिखें: वि.नं. 9222, सरिता, नई दिल्ली-110055.

22 वर्षीया, 154 सें.मी., विश्वकर्मा, एम.एससी., (प्राणीविज्ञान) अंतिम वर्ष अध्ययनरत, गृहकार्यदक्ष, प्रतिष्ठित परिवारीय कन्या हेतु सजातीय योग्य वर चाहिए. मातापिता डाक्टर. लिखें: वि.नं. 9223, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23 वर्षीया, एम.ए., 160 सें.मी., गोरी, सुंदर, सुशील, गृहकार्यदक्ष, कपूर खत्री कन्या हेतु सजातीय वर चाहिए. दहेज इच्छुक कष्ट न करें. अति आकर्षक, विज्ञापन उत्तम चयन हेतु. पिता इनकमटैक्स एडवोकेट लिखें: वि.नं. 9224, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी 25, 157 सें.मी., बी.ए., गौरवर्ण, गृहकार्यदक्ष, बैंक सेवारत, कन्या हेतु सजातीय वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9225, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जाटव, 21½, 163 सें.मी., गेहुआं, सुंदर, सुडौल, शाकाहारी, बी.ए., एम.एड., कन्या हेतु वर. दहेजबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 9226, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25 वर्षीया, 157 सें.मी., रंग गोरा, गृहकार्यदक्ष, क्षत्रिय, स्नातक कन्या हेतु सजातीय, दहेज विरोधी वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9227, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुमाऊंनी दो कन्याएं, 23, 150 सें.मी., बी.ए. व 21, 150 सें.मी., हाई स्कूल, सुंदर, गोरी, हेतु योग्य, कार्यरत वर चाहिए. पिता अवकाशप्राप्त सैनिक, भाई सेना में मेजर, कोई जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 9228, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23 वर्षीया, सिंधी, एम.ए., गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु सेवारत, सजातीय वर चाहिए. लिखें: वि.नं 9229, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अंगरेजी तथा इतिहास से एम.ए.उत्तीर्ण, 24½ वर्षीया, इकहरी, गौरवर्ण, सुंदर, गृहकार्यदक्ष, सुशील, वार्ष्णेय वैश्य परिवारीय कन्या हेतु सजातीय/अग्रवाल वंशज सुस्थापित, शिक्षित, शाकाहारी वर चाहिए. शीघ्र विवाह. लिखें: वि.नं. 9230, सरिता, नई दिल्ली-110055.

राजपूत तोमर, एम.ए., बी.एड., 25, 154 सें.मी., स्लिम, गृहकार्य में दक्ष, केंद्रीय विद्यालय में शिक्षिका हेतु सजातीय वर चाहिए. शीघ्र उत्तम विवाह. लिखें: वि.नं. 9231, सरिता, नई दिल्ली-110055.

20 वर्षीया 156 सें.मी., गौड़ ब्राह्मण, गोरी, सुंदर, बी.ए., तृतीय वर्ष, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु डाक्टर, इंजीनियर, अधिकारी वर चाहिए. पिता लेखक अभियंता. उपजातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 9232, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27, दिगंबर जैन, 163 सें.मी., एम.बी.बी.एस., एम.एस., गौरवर्ण, सुंदर, स्लिम, मृदुभाषी हेतु डाक्टर सजातीय वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9233, सरिता, नई दिल्ली-110055.

20, 160 सें.मी., वैश्य (वार्ष्णेय), स्नातक, स्लिम, आकर्षक, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु वैश्य, शाकाहारी, सुस्थापित वर. लिखें: वि.नं. 9234, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गर्ग वैश्य, सुंदर, ग्रेजुएट, सेवारत, 22, दिल्ली निवासी कन्या जिस के ल्यूकोडर्मा है, हेतु वर चाहिए. जातिबंधन नहीं. उत्तम विवाह, पिता व भाई इंजीनियर. लिखें: वि.नं. 9235, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26, 153 सें.मी., बी.एससी., केंद्रीय कर्मचारी, 1,800/-, गोरी, सुंदर, पंजाबी, एक टांग दुर्बल, कन्या हेतु सुशिक्षित, दिल्ली कार्यरत, शाकाहारी वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9236, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24 वर्षीया, 159 सें.मी., गौरवर्ण, कानवेंट शिक्षित, एम.बी.बी.एस., पी.जी. अध्ययनरत, कर्मि क्षत्रिय, डाक्टर कन्या हेतु सजातीय डाक्टर वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9237, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी, 24 वर्षीया, 152 सें.मी., सुंदर, गौरवर्णीय, ग्रेजुएट, अत्यंत समझदार तथा मेधावी, सुसंस्कृत, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु शिक्षित, सजातीय वर चाहिए. शीघ्र, उत्तम विवाह. सविवरण लिखें: वि.नं. 9238, सरिता, नई दिल्ली-110055.

बिहारी विश्वकर्मा, 23, 163 सें.मी., एम.ए., बी.टी., एलएल.बी., सरकारी शिक्षिका, सुंदर, कुलीन कन्या हेतु अनुकूल सेवारत, दहेजविरोधी वर चाहिए. शीघ्र विवाह. लिखें: वि.नं. 9239, सरिता, नई दिल्ली-110055.

प्रतिष्ठित एवं संपन्न परिवारीय, सुंदर, सुशील, गृहकार्यकुशल, 25 वर्षीया, 150 सें.मी., डबल एम.ए., मधुर, सुरुचिपूर्ण व्यक्तित्व वाली वैश्य परिवार की कन्या हेतु वर (डाक्टर, इंजीनियर, सी.ए., उच्च अधिकारी) चाहिए. शीघ्र संपर्क करें. लिखें: वि.नं. 9240, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अति सुंदर, 28, 160 सें.मी., 2,400/-, असिस्टेंट, धोबी, हिंदू कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 9241, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23 वर्षीया, 172 सें.मी., सरयूपारीण कश्यप गोत्र ब्राह्मण, बंबईवासी, अंडर ग्रेजुएट, कार्यरत, आकर्षक व्यक्तित्व, गेहुआं रंग, उत्तर भारतीय, तलाकशुदा (दहेज के कारण शादी के दो माह बाद) कन्या हेतु बंबईवासी, आत्मनिर्भर, व्यवस्थित, विचारवान, ब्राह्मण वर चाहिए. सविवरण लिखें: वि.नं. 9242, सरिता, नई दिल्ली-110055.

यादव (बिहारी), 23, 162 सें.मी., स्नातक,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गोरी, सुंदर कन्या हेतु नियोजित/उद्यमी, शादी वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9243, सरिता, नई दिल्ली-110055.

29 वर्षीया, कुर्मी क्षत्रिय, एम.ए., उत्तर प्रदेश निवासी कन्या हेतु योग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं 9244, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गौड़ ब्राह्मण कन्या, एम.ए. (अंगरेजी), 21, 149.5 सें.मी., 42.5 कि.ग्रा., गृहकार्यदक्ष हेतु सुस्थापित, सजातीय वर चाहिए. पिता उ.प्र. सेवा में अवर अभियंता, शादी उत्तम. लिखें: वि.नं. 9245, सरिता, नई दिल्ली-110055.

मध्य प्रदेश, भोपाल निवासी, हैहय क्षत्रिय (कलवार), 21, 154 सें.मी., बी.एससी., बी.एड., गौरवर्ण कन्या हेतु वर लिखें: वि.नं. 9246, सरिता, नई दिल्ली-110055.

30, 157 सें.मी., कानवेंट शिक्षित, ग्रेजुएट, संभ्रांत, अग्रवाल परिवारीय, सुंदर, स्लिम, तलाकशुदा कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9247, सरिता, नई दिल्ली-110055.

मध्यप्रदेशीय, 23, 160 सें.मी., बी.एससी., एलएल.बी., तृतीय वर्ष (अध्ययनरत), अति सुंदर, गोरी, ब्यूटीशियन, गृहकार्यदक्ष, विश्नोई वैश्य कन्या हेतु डाक्टर, इंजीनियर, उच्च व्यापारी वर चाहिए. सरकारी सेवारत को प्राथमिकता. अग्रवाल भी संपर्क करें. लिखें: वि.नं. 9248, सरिता, नई दिल्ली-110055.

बी.ए.एम.एस., 26 वर्षीया, मेडिकल आफिसर एवं 30 वर्षीया, डबल एम.ए., वार्ष्णेय कन्याओं हेतु सुयोग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9249, सरिता, नई दिल्ली-110055.

हिंदू नाई (पीढ़ियों से व्यवसाय नहीं), 26, 155 सें.मी., एम.ए., बी.एड., साधारण गौरवर्ण, स्मार्ट, प्रतिष्ठित व सुशिक्षित, पारिवारिक, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु वर. शीघ्र उत्तम विवाह. लिखें: वि.नं. 9250, सरिता, नई दिल्ली-110055.

एम.बी.बी.एस. फाइनल अध्ययनरत, राजस्थान निवासी, 21 वर्षीया, 164 सें.मी., गौरवर्ण, अति सुंदर कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. महेश्वरी डाक्टर को प्राथमिकता (पलोड़ व मालपानी खांप को छोड़ कर) सविवरण लिखें: वि.नं. 9251, सरिता, नई दिल्ली-110055.

ब्राह्मण, 28, 150 सें.मी., हायर सेकंडरी, सुंदर इकहरी, सुशील, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु सुयोग्य, सजातीय वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9252, सरिता, नई दिल्ली-110055.

22, 150 सें.मी., सक्सेना, एम.ए., बी.एड., गोरी, सुंदर कन्या हेतु डाक्टर, इंजीनियर आफिसर (सिविल/डिफेंस), कायस्थ वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9253, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28 वर्षीया, 152 सें.मी., ग्रेजुएट, पासी (अ.जा.), कार्यरत, आय 1,800/-, सुंदर कन्या हेतु सुयोग्य वर. लिखें: वि.नं. 9254, सरिता, नई दिल्ली-110055.

22½ वर्षीया, 158 सें.मी., अग्रवाल 'बंसल,' एम.ए. (समाजशास्त्र), सुंदर, सुशील, गृहकार्यनिपुण, गौरवर्ण कन्या, इंदौर निवासी हेतु सजातीय, योग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9255, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27 वर्षीया, 155 सें.मी., राठौड़ राजपूत, सुंदर, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु योग्य वर चाहिए. राजपूत को प्राथमिकता. लिखें: वि.नं. 9256, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26 वर्षीया, सुंदर, सुशील, बंबई विश्वविद्यालय से 'एंडोक्रिनोलाजी' विषय में शोधरत, राजपूत कन्या हेतु देश अथवा विदेश में कार्यरत, सजातीय वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9257, सरिता, नई दिल्ली-110055.

चौरसिया 24, 157 सें.मी., एम.एससी. (Statistics), गेहुआं रंग, भारतीय जीवन बीमा निगम में कार्यरत, 1,500/- वेतन, कन्या हेतु सजातीय, योग्य वर चाहिए. विज्ञापन उत्तम चयन हेतु. लिखें: वि.नं. 9258, सरिता, नई दिल्ली-110055.

ग्रेजुएट, 25, 150 सें.मी., केंद्रीय सेवारत 1,800/-, गृहकार्यदक्ष, गेहुआं, स्वस्थ, साधारण कन्या (अनु.जा.) हेतु उपयुक्त वर चाहिए. उत्तम विवाह. लखनऊ कार्यरत को वरीयता. दहेजइच्छुक क्षमा करें. लिखें: वि.नं. 9259, सरिता, नई दिल्ली-110055.

एम.ए., 156 सें.मी. 27 वर्षीया, कुलीन, सुंदर, गृहकार्यदक्ष, पोरवाल (वैश्य) कन्या हेतु वैश्य, श्रेष्ठ अधिकारी, उच्च व्यवसायी वर. शादी उत्तम लिखें: वि. नं. 9260, सरिता, नई दिल्ली-110055.

21 वर्षीया, 160 सें.मी., छरहरी, कानवेंट शिक्षित, गोरी, सुंदर, एम.ए. की छात्रा हेतु परिगणित जाति के आई.ए.एस., आई.पी.एस., आई.ए.एस. (एलाइड), इंजीनियर, राजपत्रित अधिकारी, वर्ग ए वर चाहिए. अच्छी शादी. लिखें: वि.नं. 9261, सरिता, नई दिल्ली-110055.

राजपूत सिसोदिया, 19 वर्षीया (चश्मा लगता है), स्मार्ट, गौरवर्ण, साधारण रूपवती, एम.ए. में अध्ययनरत कन्या हेतु वर चाहिए. नगद, दहेज नहीं. विवाह गौरवमयी. लिखें: वि.नं. 9327, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी, 19, 160 सें.मी., बी.ए. अध्ययनरत, स्मार्ट, स्लिम, कानवेंट शिक्षित, गृहकार्यदक्ष, मधुर स्वभाव, सुंदर नाकनक्श, गौरवर्ण कन्या हेतु माहेश्वरी, सुशिक्षित, सुस्थापित, सुयोग्य वर अपेक्षित. सी.ए, इंजीनियर, कलकत्ता या नजदीक को प्राथमिकता. लिखें: वि.नं. 9328, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24, 152, सें.मी. 47 कि.ग्रा., इंटर व मास, आशुलिपि, टेलेक्स एवं सचिवालय कार्य में डिप्लोमा,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उ.प्र. खत्री कन्या, बंबईवासी हेतु सुस्थापित वर लिखें: वि.नं. 9329, सरिता, नई दिल्ली-110055.

प्रतिष्ठित बंसल गोत्रीय मारवाड़ी अग्रवाल, 29 वर्षीया, 163 सें.मी., बी.एससी. आनर्स, स्मार्ट, सुंदर, स्लिम, गृहकार्यदक्ष कन्या (पिता मेडिकल कालिज में रीडर), हेतु सजातीय, स्नातक (डाक्टर, इंजीनियर, सी.ए. को प्राथमिकता) वर चाहिए. उत्तम चयन हेतु संपूर्ण विवरण लिखें: वि.नं. 9330, सरिता, नई दिल्ली-110055.

20 वर्षीया, निर्धन साक्षर, गौरवर्ण, सुरूपा, मैथिल ब्राह्मणी कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. निस्संतान विधुर भी स्वीकार. पत्र व्यवहार करें. लिखें: वि.नं. 9331, सरिता, नई दिल्ली-110055.

34 वर्षीया, 150 सें.मी., पंजाबी, सुंदर, सुशील, सेवारत, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु अच्छी सेवा, व्यवसायरत, सजातीय वर चाहिए. निस्संतान, तलाकशुदा भी स्वीकार्य. लिखें: वि.नं. 9332, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23 वर्षीया, 156 सें.मी., पंजाबी, एम.ए., गौरवर्ण, सुंदर, स्मार्ट, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु सेवारत/व्यवसायरत, सजातीय वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9333, सरिता, नई दिल्ली-110055.

ओसवाल जैन 24 एवं 22 वर्षीया, एम.ए., अति सुंदर कन्याओं (पिता केंद्रीय सरकार के शीर्षस्थ अधिकारी) हेतु शिक्षित, सुयोग्य, कार्यरत एवं प्रतिष्ठित परिवारीय, सजातीय वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9334, सरिता, नई दिल्ली-110055.

बुलंदशहर निवासी, हिंदू जाटव, 147 सें.मी., 27 वर्षीया एम.ए., एलएल.बी., म.प्र. शासकीय सेवारत, आय चार अंकीय, सुंदर, सुशील, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु म. प्र. शासकीय सेवारत, सजातीय वर चाहिए. पिता म. प्र. शासकीय सेवक, विज्ञापन उत्तम चयन हेतु. शीघ्र विवाह. लिखें: वि.नं. 9335, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23 वर्षीया, 160 सें.मी., गोरी, एम.ए., गृहकार्यदक्ष कुर्मि क्षत्रिय कन्या हेतु सेवारत या व्यवसायरत वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9336, सरिता, नई दिल्ली-110055.

हिमाचली राजपूत, 26, 157 सें. मी., एम.ए., बी.एड., सुंदर, गोरी कन्या हेतु सजातीय व्यवसायरत या सेवारत वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9337, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कश्यप राजपूत (मेहरा/कहार/धीवर), 23, 21, 19, बी.ए. पास कन्याओं हेतु सुशिक्षित, कार्यरत वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9338, सरिता, नई दिल्ली-110055.

प्रतिष्ठित महेश्वरी, दिल्ली निवासी परिवार, [illegible] वर्षीया, 157 सें.मी., एम.काम., संतानोत्पत्ति असमर्थ कन्या हेतु ससंतान विधुर, समकक्ष आयु, सुशिक्षित, आधुनिक विचार, महेश्वरी, अग्रवाल वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9339, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कान्यकुब्ज कश्यप ब्राह्मण, 25,153 सें.मी., पीएच.डी. केमेस्ट्री, गोरी, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु केवल कान्यकुब्ज इंजीनियर/डाक्टर/प्रशासक/समकक्ष वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9340, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गोरी, स्लिम, 24, 150 सें.मी., बी.एससी., डिप्लोमा पैथोलोजी, पंजाबी अरोड़ा कन्या हेतु सजातीय, सेवारत वर लिखें: वि.नं. 9341, सरिता, नई दिल्ली-110055.

वधू चाहिए

पश्चिमी उत्तरप्रदेशीय, 60, पंजाबी, स्मार्ट विधुर, संपन्न, शाकाहारी, कैमिकल मैन्युफैक्चर्स, चार अंकीय, हेतु चरित्रवान, भावभक्त, निष्कपट, शांत स्वभाव, सुशील, सुलझे विचारों की आनंदित, उत्साही जीवन जीने, पर्यटन की इच्छुक, 45 तक की निस्संतान जीवनसाथी चाहिए. भविष्य जीवन की गारंटी, पत्राचार हिंदी में लिखें: वि.नं. 9140, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी, 24, 170 सें.मी., बी.ए., जीवन बीमा एजेंट, 3,800/-, मांगलिक हेतु मांगलिक, ग्रेजुएट कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 9147, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27½ वर्षीय, 170 सें.मी., स्मार्ट, एम.बी.बी.एस., पंजाबी ब्राह्मण, डाक्टर, निजी अच्छी प्रैक्टिस, प्रतिष्ठित परिवार, भाई डाक्टर एवं आर्मी अफसर युवक हेतु वधू. लिखें: वि.नं. 9148, सरिता, नई दिल्ली-110055.

साव (तैलिक वैश्य), जमशेदपुर, प्रतिष्ठित परिवार, 26½ वर्षीय, 167 सें.मी., 56 कि.ग्रा., साफ रंग, बी.काम., निर्व्यसनी, शाकाहारी, सहृदय, व्यापारदक्ष, स्मार्ट युवक हेतु शिक्षित, गोरी, वास्तविक सुंदर, संपन्न वधू पक्ष सविवरण. शीघ्र विवाह लिखें: वि.नं. 9167, सरिता, नई दिल्ली-110055.

45 वर्षीय, संपन्न संभ्रांत परित्यक्त डाक्टर हेतु शिक्षित गृहिणी की तलाश. कोई बंधन नहीं. लिखें: वि.नं.9168, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल जैन, 29½, 167 एवं 24, 163 सें.मी., स्मार्ट, शिक्षित, प्रतिष्ठित आयकरदाता, व्यवसायी भाइयों हेतु सुंदर, सुसंस्कृत, गृहकार्यदक्ष पारिवारिक वधुएं चाहिए. शीघ्र विवाह. लिखें: वि.नं. 9169, सरिता, नई दिल्ली-110055.

महाराष्ट्रीयन भावसार, [illegible], 162 सें.मी., स्वव्यवसायरत (मध्य प्रदेश), [illegible],000/-, दहेजविरोधी हेतु सुयोग्य वधू. दिल्ली, मध्य प्रदेश विदर्भ को प्राथमिकता. सविवरण सहित लिखें: वि.नं. 9262,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरिता, नई दिल्ली-110055.

24, 168 सें.मी., बी.काम., केंद्रीय सेवारत हेतु सुंदर वधू चाहिए. दहेज, जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 9263, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26 वर्षीय, 165 सें.मी., राजपूत, कार्यरत, बी.ई. इंजीनियर हेतु सुंदर, प्रतिष्ठित घराने की सजातीय कन्या चाहिए. सविवरण लिखें: वि.नं. 9264, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27 वर्षीय, बंगाली कायस्थ, गौरवर्ण, स्मार्ट, इंटरमीडिएट, दिल्ली निकट फरीदाबाद (हरियाणा) में बेसरकारी विख्यात संस्था (सरकारी उपक्रम) में कार्यरत, 1,400/-, हेतु सुंदर, गोरी, शिक्षित, बंगाली कन्या चाहिए. जातिबंधन विरोधी लिखें: वि.नं. 9265, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अमरीकन नागरिक, 29 वर्षीय, कुर्मि क्षत्रिय, मेडिकल डाक्टर हेतु मेडिकल या उच्च शिक्षा प्राप्त वधू चाहिए. दहेज, जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 9266, सरिता, नई दिल्ली-110055.

33 वर्षीय, गोयल, अविवाहित, सुंदर, बैंक में कार्यरत, आय 2,900/-, दो निजी मकान (पिछले दो वर्षों से सेक्सुअल कमजोरी महसूस करता है) युवक हेतु 28 वर्ष से अधिक, वैश्य/जैन, अविवाहित, घरेलू स्वस्थ जीवनसंगिनी चाहिए. दहेजबंधन नहीं. लड़की स्वयं भी पत्रव्यवहार कर सकती है. लिखें: वि.नं. 926[illegible], सरिता, नई दिल्ली-110055.

राजपूत (कहार), कश्यप, 25, 156 सें.मी., एम.काम., 2,000/-, निजी व्यवसाय/मकान (लखनऊ), युवक हेतु सजातीय, सुंदर, सुयोग्य वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 9268, सरिता, नई दिल्ली-110055.

मुसलिम, 30, एम.ए., सेवारत, 1,800/-, युवक हेतु सुशील, गृहकार्यदक्ष, सेवारत वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 9269, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मी क्षत्रिय, 29, 167 सें.मी., मध्यप्रदेशीय, डी.जी.ओ., अर्धशासकीय संस्थान में कार्यरत युवक हेतु डाक्टर लड़की चाहिए. लिखें: वि.नं. 9270, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27 वर्षीय, 165 सें.मी. गुप्ता (वैश्य), स्टेट बैंक कार्यरत, आय 2,100/- हेतु सजातीय/अग्रवाल, बैंक कार्यरत वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 9271, सरिता, नई दिल्ली-110055.

बंबई निवासी, 26, 167 सें.मी., बी.काम., सुंदर, स्मार्ट, स्वयं के कारोबार में लगे माहेश्वरी युवक हेतु सुंदर, सुशील, स्मार्ट, सजातीय वधू चाहिए. पत्रिका व पूर्ण विवरण सहित संपर्क करें. विज्ञापन उत्तम चयन हेतु. लिखें: वि.नं. 9272, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26, 1,500/-, सरकारी नौकरी, निजी मकान, [illegible] कटे युवक हेतु सुशील, गरीब, तलाकशुदा वधू चाहिए. कोई बंधन नहीं. लिखें वि.नं. 9273, सरिता, नई दिल्ली-110055.

31, 162 सें.मी., 2,00[illegible]-, टे.डी. पूर्णतः अनाथ हेतु समझदार वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 9274, सरिता, नई दिल्ली-110055.

38, वेतन 1,800/-, ब्रह्मचर्य अध्यात्म ब्रह्मकुमारीज आर्य विचारक जीवनसाथी स्नातक, विधवा स्वीकृत, दहेज, जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 9275, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28 वर्षीय, 172 सें.मी., अरोड़ा, अविवाहित, अपना अच्छा व्यवसाय, ग्रेजुएट, स्वस्थ परंतु सेक्सुअल कमजोर युवक हेतु अविवाहित वधू चाहिए. लड़की स्वयं भी पत्रव्यवहार कर सकती है. जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 9276, सरिता, नई दिल्ली-110055.

राजपूत विधुर, 36, दो बच्चे, 4,000/-, बैंक अधिकारी हेतु वधू चाहिए. कोई बंधन नहीं. विधवा स्वीकार्य. लिखें: वि.नं. 9277, सरिता, नई दिल्ली-110055.

वैष्णव ब्राह्मण, 31 वर्षीय, विधुर (तीन बच्चे) युवक राजपत्रित अधिकारी हेतु सुंदर, सुशील, सुशित, गृहकार्यदक्ष वधू चाहिए. उपजातिबंधन नहीं. विज्ञापन उत्तम चयन हेतु. संपूर्ण विवरण सहित लिखें: वि.नं. 9278, सरिता, नई दिल्ली-110055.

खरे कायस्थ, 27 वर्षीय, असिस्टेंट इंजीनियर युवक हेत एम.एससी., शासकीय सेवारत, मध्यप्रदेशीय कन्या चाहिए. उपजातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 9279, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सुंदर, अरोड़ा, मांगलिक, अपना व्यवसाय, 28, 180 सें.मी. युवक हेतु सजातीय, सुशिक्षित, लंबी, आकर्षक, घरेलू, मांगलिक वधू चाहिए. विवरण जन्मकुंडली सहित लिखें: वि.नं. 9280, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25, 162 सें.मी., कायस्थ, बी.ए., सरकारी सेवारत, एकमात्र संतान (चश्मा रहित) हेत् सुंदर वधू चाहिए. जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 9281, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कश्यप राजपूत (मेहरा कहार धीवर), मैकेनिकल इंजीनियर, 26, 165 सें.मी., दिल्लीवासी, मोटरपार्ट फैक्टरी मालिक, आयकरदाता हेतु सुंदर, सुशिक्षित स्लिम कन्या चाहिए. बंधनरहित लिखें: वि.नं. 9282, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24, 165 सें.मी., 2,500/- मासिक, मैढ़ राजपूत, स्वर्णकार, दिल्लीवासी युवक हेतु सुंदर, शिक्षित गृहकार्यदक्ष वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 9283, सरिता, नई दिल्ली-110055.

हिंदू नाई, 30 वर्षीय, 154 सें.मी., बी.एससी. (आनर्स), एलएल.बी., एडवोकेट, शिक्षित परिवार, उत्तर प्रदेश निवासी, गेहुआं रंग, हेतु सजातीय वधू चाहिए. सविवरण लिखें: वि.नं. 9284, सरिता, नई दिल्ली-110055.

50, विधुर, उत्तरदायित्वमुक्त, व्यापारी हेत निस्संतान जीवनसंगिनी चाहिए. लिखें: वि.नं. 92[illegible], सरिता, नई दिल्ली-110055.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौरसिया, 26, 168 सें.मी., गोरा, बी.एच.एम.एस. डा., मेडिकल कालिज में लेक्चरर, निजी क्लिनिक, मासिक आय 5,000/-, बंगला, कार, दुकानें, फार्म, पटना निवासी हेतु गोरी, लंबी, सुंदर, सुशील, शिक्षित, सजातीय वधू चाहिए. जन्मकुंडली भी भेजें. लिखें: वि.नं. 9286, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सिख युवक, 31 वर्षीय, 160 सें.मी., इंटरमीडिएट, तलाकशुदा (एक वर्षीया पुत्री), निजी व्यवसाय, मासिक आय चार अंकीय, हेतु चरित्रवान, कुंआरी, गरीब बेसहारा, गृहकार्यदक्ष, मध्यम कद की जीवनसंगिनी चाहिए. कोई बंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 9287, सरिता, नई दिल्ली-110055.

32, 166 सें.मी., स्नातक, तलाकशुदा, अग्रवाल, ससंतान व्यवसायी हेतु सजातीय, ममतामयी केवल अनाथ/गरीब, बांझ चाहिए. अच्छी आय, संतान दायित्व, सीमित परिवार, स्वयं निर्णायक लिखें: वि.नं. 9288, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28 वर्षीय, एम.काम., चौहान राजपूत युवक हेतु सुंदर, शिक्षित वधू चाहिए. बी.एड. को प्राथमिकता. लिखें: वि.नं. 9289, सरिता, नई दिल्ली-110055.

58 वर्षीय, राजपूत विधुर, सरकारी सेवा से निवृत्त, दो बच्चे (9 एवं 11), हेतु स्वस्थ, सुडौल, गौरवर्ण, आशावादी, खुशमिजाज, गृहकार्यदक्ष, 40 से 45 वर्षीया, शाकाहारी, भजनपूजन में विश्वास रखने वाली, कम से कम 10 तक पढ़ीलिखी, जो दोनों बच्चों को मां का प्यार देने में सक्षम हो. निस्संतान वधू चाहिए. राजपूत, ब्राह्मण, कायस्थ, महेश्वरी, वैश्य, जाट राजपूत, इंटर, हाई स्कूल को वरीयता तथा नर्स, अध्यापिका को विशेष प्राथमिकता. लिखें: वि.नं. 9290, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मि क्षत्रिय, इंजीनियर, 24, 178 सें.मी., राजस्थान सरकार सेवारत, प्रतिष्ठित परिवार, हेतु सुंदर कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 9291, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल मित्तल, 24, 173 सें.मी., 5,000/-, हायर सेकंडरी एवं बांसल, 21, 170 सें.मी., 4,000/-, अंडर ग्रेजुएट, स्वव्यवसायी युवकों हेतु प्रतिष्ठित, संपन्न परिवारीय कन्याएं लिखें: वि.नं. 9292, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल मित्तल, 29, 175 सें.मी., 5,000/-, स्नातक, स्वव्यवसायी, विधुर (दो बच्चियां), युवकार्थ गरीब परिवारीय, सुंदर कुंआरी नवयुवतियां लिखें: वि.नं. 9293, सरिता, नई दिल्ली-110055.

मध्यप्रदेशीय विश्नोई वैश्य, 26, 167 सें.मी., मेडिकल स्टोर्स प्रोप्राइटर, अति सुंदर, गोरा, स्वस्थ, स्मार्ट युवक हेतु अति सुंदर, स्मार्ट, गोरी, स्लिमबाडी वधू की आवश्यकता है. शीघ्र विवाह. पूर्ण विवरण के साथ लिखें. अग्रवाल भी मान्य. लिखें: वि.नं. 9294, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सिख (क्लीन शेवन), स्मार्ट, 27, 167 सें.मी., 2,300/-, ग्रेजुएट इंजीनियर (मैकेनिकल), केंद्रीय सेवारत, विदेश में बसने का इच्छुक, युवक हेतु नर्स को प्राथमिकता. कोई बंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 9295, सरिता, नई दिल्ली-110055.

30 वर्षीय, 2,500/-, सरकारी सेवारत, गृहकार्य स्वस्थ युवक हेतु संतानोत्पत्ति असमर्थ या अनिच्छुक आदर्श जीवनसाथी चाहिए. युवक वैवाहिक सुख देने में पूर्ण योग्य. लिखें: वि.नं. 9296, सरिता, नई दिल्ली-110055.

एकाकी, स्मार्ट, 23, 168 सें.मी., 2000/-, इलैक्ट्रानिक्स डिप्लोमा हेतु कार्यरत/केवल पुत्री वधू विधवा मान्य. कोई बंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 9297, सरिता, नई दिल्ली-110055.

खत्री, 25 वर्षीय, 170 सें.मी., एम.काम., बैंक सेवारत हेतु सुंदर, दुबली वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 9298, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28, 172 सें.मी., 2,700/-, बैंक मैनेजर, हेतु संतानोत्पत्ति में असमर्थ कन्या की आवश्यकता, दहेज, जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 9299, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जाट, 26, 168 सें.मी., डाक्टर, सुंदर युवक हेतु सुयोग्य, शिक्षित, सजातीय कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 9300, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25 वर्षीय, उत्तरप्रदेशीय, ब्रह्मभट्ट, अल्पभ्रातृ, मातापिता दिवंगत, 7 बीघे जमीन, एम.ए., एलएल.बी., बिहारवासी तथा निर्धन परिवार को वरीयता. लिखें: वि.नं. 9301, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24, 174 सें.मी., कहार, 1,000/- मासिक, लखनऊ निवासी युवक हेतु सुंदर, सुशिक्षित, सजातीय वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 9302, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28 वर्षीय (महार), शासकीय सेवारत, स्मार्ट, महाराष्ट्रीयन, इंजीनियर, हेतु सुंदर, सुशील, गृहकार्य में दक्ष, स्नातक, स्नातकोत्तर, सजातीय वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 9303, सरिता, नई दिल्ली-110055.

राजपूत, जमींदार परिवार, 26, 166 सें.मी., 1,400-2,600/-, पुस्तकालयाध्यक्ष हेतु केंद्रीय विद्यालय शिक्षिका या एम.एससी., बी.एड., प्रतिष्ठा संपन्न कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 9304, सरिता, नई दिल्ली-110055.

प्रतिष्ठित नाई समाज के 25, 157 सें.मी., एम.काम., केंद्रीय सेवारत, आय 2,500/-, हेतु गोरी, स्लिम, सुंदर, गृहकार्यदक्ष वधू चाहिए. विज्ञापन उत्तर चयन हेतु. प्रथम बार संपूर्ण जानकारी भेजें. लिखें: वि.नं. 9305, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27 वर्षीय, कान्यकुब्ज ब्राह्मण युवक, 177 सें.मी., एम.ई., यू.पी.एस.सी. सिलेक्ट, केंद्रीय सेवारत, प्रथम श्रेणी असिस्टेंट डिवीजनल इंजीनियर,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हेतु सुंदर, सुशिक्षित वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 9306, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26½, 170 सें.मी. चौहान राजपूत, बी.ए.एम.एस., मेडिकल प्रैक्टिशनर, 2,500/- प्रति माह, हेतु कन्या चाहिए जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 9307, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24 वर्षीय, सौदिया में कार्यरत युवक गवर्नमेंट सर्विस,सौदिया रहने की इच्छुक कन्या चाहिए. विधवा, बच्चे नहीं. लड़की की मरजी के मुताबिक रिहाईस. कुंआरी, तलाकशुदा, पढ़ीलिखी, जातिबंधन नहीं. लिखें: SALEEM, POST BOX NO. 708, TABUK (K. S. A.)

क्षत्रिय स्वर्णकार (राजपूत), 28, 173 सें.मी., 3,800/-, केंद्रीय प्रथम श्रेणी राजपत्रित अधिकारी, आकर्षक युवक हेतु अति सुंदर कन्या चाहिए. बैंक अधिकारी, केंद्रीय कार्यरत कन्या को प्राथमिकता, उपजाति बंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 9308, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27, 165 सें.मी., ठाकुर, एम.बी.बी.एस., केंद्रीय सरकार में चिकित्साधिकारी हेतु मेडिको वधू. जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 9309, सरिता, नई दिल्ली-110055.

उच्च जाति के स्मार्ट और उच्च शिक्षित, बी.काम., एम.बी.ए. (आई.आई.एम.), निजी व्यवसाय, वार्षिक आय छः अंकों में, 31, 173 सें.मी. गुजराती युवक हेतु सुसंस्कृत, स्लिम एवं अति सुंदर कन्या चाहिए. जातीय, प्रांतीय बंधन नहीं. विवरण सहित लिखें: वि.नं. 9310, सरिता, नई दिल्ली-110055.

40 वर्षीय ग्रेजुएट, गोयल तलाकशुदा, दो लाख सालाना आमदनी, हेतु अविवाहित गोरी कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 9311, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24, 160 सें.मी., वैश्य अग्रवाल, संपन्न, प्रतिष्ठित, डिप्लोमा इंजीनियर, निजी व्यवसाय, तीन हजार माहवार, तीन सदस्य परिवार, हेतु वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 9312, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28 वर्षीय, 173 सें.मी., बी.एससी., ग्रामीण बैंक, निर्व्यसनी धार्मिक प्रवृत्ति दिगंबर जैन, मध्यम-वर्गीय, परिवारीय, जिला फर्रूखाबाद हेतु सेवारत वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 9313, सरिता, नई दिल्ली-110055.

नागपुरवासी, श्वेतांबर, गुजराती जैन, 25, 180 सें.मी., बी.काम., स्वयं का घर, धंधा, मासिक आय 5,000/-, हेतु 160 सें.मी. से अधिक उंचाई वाली अति सुंदर, स्लिम कन्या चाहिए. जाति, दहेजबंधन नहीं. केवल अच्छी पसंद. पूर्ण विवरण सहित लिखें: वि.नं. 9314, सरिता, नई दिल्ली-110055.

बबइवासा, स[illegible] अग्रवाल, कार्यरत, चार्टर्ड एकाउंटेंड पुत्र हेतु अग्रवाल/माहेश्वरी, असाधारण, सुंदर, गृहकार्यदक्ष वधू चाहिए. दहेजबंधन नहीं, केवल गुण विचारणीय. लिखें: वि.नं. 9315, सरिता, नई दिल्ली-110055.

दिल्ली प्रेस पत्रिकाओं के वितरण/बिक्री केंद्र

अहमदाबाद

दिल्ली प्रकाशन, 503, नारायण चैंबर्स, आश्रम रोड, फोन: 77845

बंगलौर

दिल्ली प्रकाशन, 302—बी, क्वींस कार्नर अपार्टमैंट्स, 3 क्वींस रोड, फोन: 258091

कलकत्ता

दिल्ली प्रकाशन
113, पार्क स्ट्रीट,
फोन: 298981

मद्रास

दिल्ली प्रकाशन
14, पहली मंजिल, सीसंस कंप्लैक्स,
150-82. मांटीअथ रोड
फोन: 88138

30 वर्षीय, राठौर, 172 सें.मी., सेना में सेवारत युवक हेतु वधू की आवश्यकता है. विधवा, तलाकशुदा, परित्यक्ता भी मान्य. परिवार में केवल मां. घरजमाई बनाने के इच्छुक भी लिखें. जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 9316, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल 28, 181 सें.मी., ग्रेजुएट, व्यवसायरत युवक हेतु सुंदर, शिक्षित, लंबी कन्या चाहिए. संपूर्ण विवरण सहित लिखें: वि.नं. 9317, सरिता, नई दिल्ली-110055.

केंद्रीय कर्मचारी, 25½, 1,500/-, विज्ञान स्नातक, विकलांग हेतु वधू चाहिए. दहेज, जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 9318, सरिता, नई दिल्ली—110055.

अग्रवाल, 29, 170 सें.मी., 3,570/-, एम.ए., कानूनन तलाकशुदा, बैंक सेवारत, मेरठ, हेतु सुंदर, कुंआरी कन्या चाहिए. दहेज नहीं. साधारण शादी. लिखें: वि.नं. 9319, सरिता, नई दिल्ली-110055.

बीसा ओसवाल जैन, उम्र 31, कद 160 सें.मी., आटोमोबाइल इंजीनियर लड़के के लिए सुंदर, सुशील, गोरी लड़की चाहिए. लिखें: वि.नं. 9320, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल सिघल 24, 180 सें.मी., एलएल.बी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यक्तिगत विज्ञापनों की दरें

सरिता: 3.50 रु. प्रति शब्द
वूमंस ईरा: 1.50 रु. प्रति शब्द
सरिता व वूमंस ईरा: 4.00 रु. प्रति शब्द

मूल विज्ञापन के साथ लिखें: 'वि. नं.–सरिता, नई दिल्ली-110055' इन 6 शब्दों का मूल्य देना आवश्यक है. विज्ञापनदाता के 'निजी पते वाले' (विदेशों को छोड़ कर) व 'फोटो सहित' शब्द वाले विज्ञापन स्वीकार नहीं किए जाते. डाक व्यय 15 रुपए अतिरिक्त है.

पूर्ण विवरण के लिए लिखें:

मुख्य विज्ञापन कार्यालय:

दिल्ली प्रेस प्रतिष्ठान विभाग,
एम–12, कनाट सरकस,
नई दिल्ली-110001.
फोन नं. –351313.

फाइनल, निजी व्यवसायी, स्वस्थ सुंदर, स्मार्ट, संपन्न प्रतिष्ठित छोटे परिवारीय युवक हेतु सुंदर, सुशिक्षित, मधुर व्यावहारिक, लंबी, गोरी, गृहकार्यदक्ष, संपन्न, गुणी पारिवारिक कन्या चाहिए. विज्ञापन उत्तम चयन हेतु. लिखें: वि.नं. 9321, सरिता, नई दिल्ली-110055.

46, अग्रवाल विधुर (चार बच्चे), आय 2,500/ -, हेतु सजातीय, विधवा, बांझ जीवनसंगिनी चाहिए, लिखें: वि.नं. 9322, सरिता, नई दिल्ली-110055.

30 वर्षीय, पंजाबी, अविवाहित, बैंक कर्मचारी हेतु निस्संतान, तलाकशुदा/विधवा वधू चाहिए. जाति, धर्म कोई बंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 9323, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27 वर्षीय, आंशिक दृष्टिहीन, पंजाबी हरियाणा में अपना व्यवसाय, मासिक आय 5,000/-, युवक हेतु शिक्षित वधू चाहिए. दहेजबंधन नहीं. लिखें: वि. नं. 9324, सरिता, नई दिल्ली-110055.

बिहार निवासी, 31 वर्षीय, अभियंता हेतु सुशिक्षित वधू चाहिए. धर्म, जाति, तिलक, दहेज का विरोध करने वाले ही संपर्क करें. लिखें: वि.नं. 9325, सरिता, नई दिल्ली-110055.

राजपूत भिसोदिया, 30 वर्षीय, निजी व्यवसाय, स्मार्ट, सुंदर युवक हेतु वधू चाहिए. दहेजबंधन नहीं. वर के गुण तथा व्यवहार ही कसौटी. लिखें: वि. नं. 9326, सरिता, नई दिल्ली-110055.

वरवधू चाहिए

जैन श्वेतांबर बीसा ओसवाल प्रतिष्ठित परिवारीय, 22 वर्षीया, 161 सें.मी., एम.कम. फाइनल, गोरी, सुंदर, सुशील, गृहकार्यदक्ष, आकर्षक व्यक्तित्व कन्या हेतु डाक्टर, सी.ए., इंजीनियर, आई.ए.एस., उच्च व्यवसाय एवं हायर सेकेंडरी, सुंदर, स्मार्ट, निजी व्यवसायरत, 25 वर्षीय, 178 सें.मी. युवक हेतु अति सुंदर सुशील, शिक्षित, सजातीय वरवधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 9342, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28 वर्षीय, कुमाऊंनी ब्राह्मण युवक, कार्मिक अधिकारी तथा 22 वर्षीया. ए म. ए. कन्या हेतु सुयोग्य वरवधू चाहिए. लिखें: वि. नं. 9343, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जायसवाल, 26, 170 सें.मी., बी.ए., निजी व्यवसाय, आय 7,000/- प्रतिमाह, सुंदर, आकर्षक व्यक्तित्व युवक हेतु सुंदर, गोरी जीवनसाथी एवं 24, 155 सें.मी., बी.ए., बी.एड., सुंदर, रंग गेहुंआं. कन्या हेतु उपयुक्त वर चाहिए.लिखें: वि.नं. 9344, सरिता, नई दिल्ली-110055.

राजपूत, 180 सें.मी., 32, एडवोकेट, मांगलिक युवक एवं 165 सें.मी., 28, गोरी, सुंदर, ग्रेजुएट कन्या हेतु सुंदर सुशिक्षित वरवधू चाहिए. शीघ्र विवाह. लिखें: वि.नं. 9345, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माथुर कायस्थ, 23, 159 सें.मी., एम.एससी., बी.एड. अध्ययनरत, गृहकार्यनिपुण कन्या एवं 24, 162 सें.मी. 1,400/-, सरकारी सेवारत, बी.कम., नवयुवक हेतु सजातीय वरवधू लिखें: वि.नं. 9346, सरिता, नई दिल्ली-110055.

160 सें.मी. कुशवाहा, आई.ए., गेहुंआं रंग, गृहकार्यदक्ष, 20 वर्षीया कन्या हेतु कार्यरत/व्यवसायी वर एवं 25, 170 सें.मी., रंग गोरा, बी.कम. (आनर्स), कार्यरत, वेतन 1,500/-, हेतु सुंदर, सुशिक्षित वधू लिखें: वि. नं. 9347, सरिता, नई दिल्ली-110055.

रिक्त स्थान

आवश्यकता है बेसहारा शिक्षित महिला जो नर्सरी स्कूल में सहायता कर सके. वेतन, भोजन, निवास.माडर्न कैंब्रिज स्कूल 16बी/20, देवनगर, नई दिल्ली-5

बंबई स्थित अधिकारी को गृहप्रबंध के लिए समझदार व निष्ठावान, 25-30 वर्षीया सहायक की आवश्यकता है. घर के सदस्य का सा सम्मान. निस्संतान, बेसहारा महिला को प्राथमिकता. लिखें: वि.नं. 9348, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सरिता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मां का प्यार भरा स्पर्श

घर भर में फैली एक तृप्त मुस्कान

सयाने कहा करते हैं कि मर्द और बच्चे खाने व गाने से बड़ी आसानी से बहल जाते हैं। इसी लिए खाने में स्वाद की और गाने में सुर की कमी नहीं रखनी चाहिये। सयानों की यही कहावत मुन्नी और मुन्नी के पिता पर पूरी तरह से लागू होती है।

अब कल ही की बात लें, मुन्नी स्कूल से बड़ी खुश-खुश चहकती हुई घर लौटी। बोली, "वाह! मां वाह! तुम तो बस कमाल हो। आज स्कूल में तुम्हारे सिखाये गाने और तुम्हारे पकाये खाने की वो तारीफ हुई कि पूछो मत। मैंने जब तुम्हारा सिखाया गाना 'बगिया में रहती थी, एक नन्ही परी' गाया तो लड़कियाँ झूम उठीं। पूछने लगीं किसने सिखाया है ये गाना? मैंने कहा मेरी मां ने, और जब खाने के लिये पुलाव निकाला तो सब अंगुलियां चाटने लगीं। बोलीं, खाना किसने बनाया है? मैंने कहा मेरी मां ने। मां, खाना हो या गाना तुम तो बस कमाल हो।"

मुन्नी का ये अभिमान भरा चेहरा ही मेरे प्यार का आधार है। मैं उसके प्रति अपने प्यार को हज़ार तरीकों से जताती हूँ। उसके हर काम में वही चीज़ें उपयोग में लाती हूँ जो अच्छी से अच्छी हों। खाना बनाने में भी सबसे बेहतरीन रथ वनस्पति का इस्तेमाल करती हूँ, क्यूंकि जानती जो हूँ रथ में बनें पकवान में छिपी है, मुन्नी की मुस्कान।

रथ वनस्पति

आखिर प्यार है नारी संसार

OBM/10954

डी सी एम का उत्कृष्ट उत्पादन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कॉफ़ी, चाय...

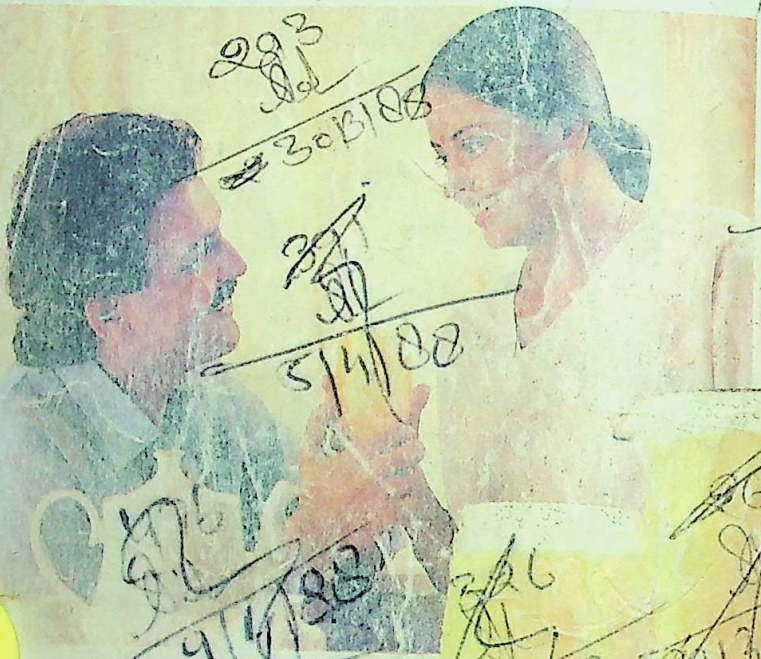

...या रसना?

गर्मी से घबराकर, पसीने से लथपथ जब वे घर आएं तो उन्हें चाहिए सिर्फ़ रसना... ठंडा-ठंडा रसना का गिलास, मज़ेदार! प्यास बुझानेवाला रसना! हर रसना पैक से पाइए ढेर सारे गिलास रसना! आपके परिवार और मित्रों का मनभाता रसना!

इस गर्मी में खूब मज़ेदार ग्यारह स्वादों में उपलब्ध

☐ ऑरेंज ☐ पाइनएपल ☐ लाइम ☐ शाही गुलाब
☐ काला-खट्टा ☐ फूल खस ☐ केसर इलायची
☐ मसाला सोडा (जीरा) ☐ टूटी फ्रूटी
☐ ग्रेप ग्लोरी ☐ [illegible]

आइ लव यू रसना

Rasna

रसना

भारत का सर्वाधिक बिकने वाला सॉफ्ट ड्रिंक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

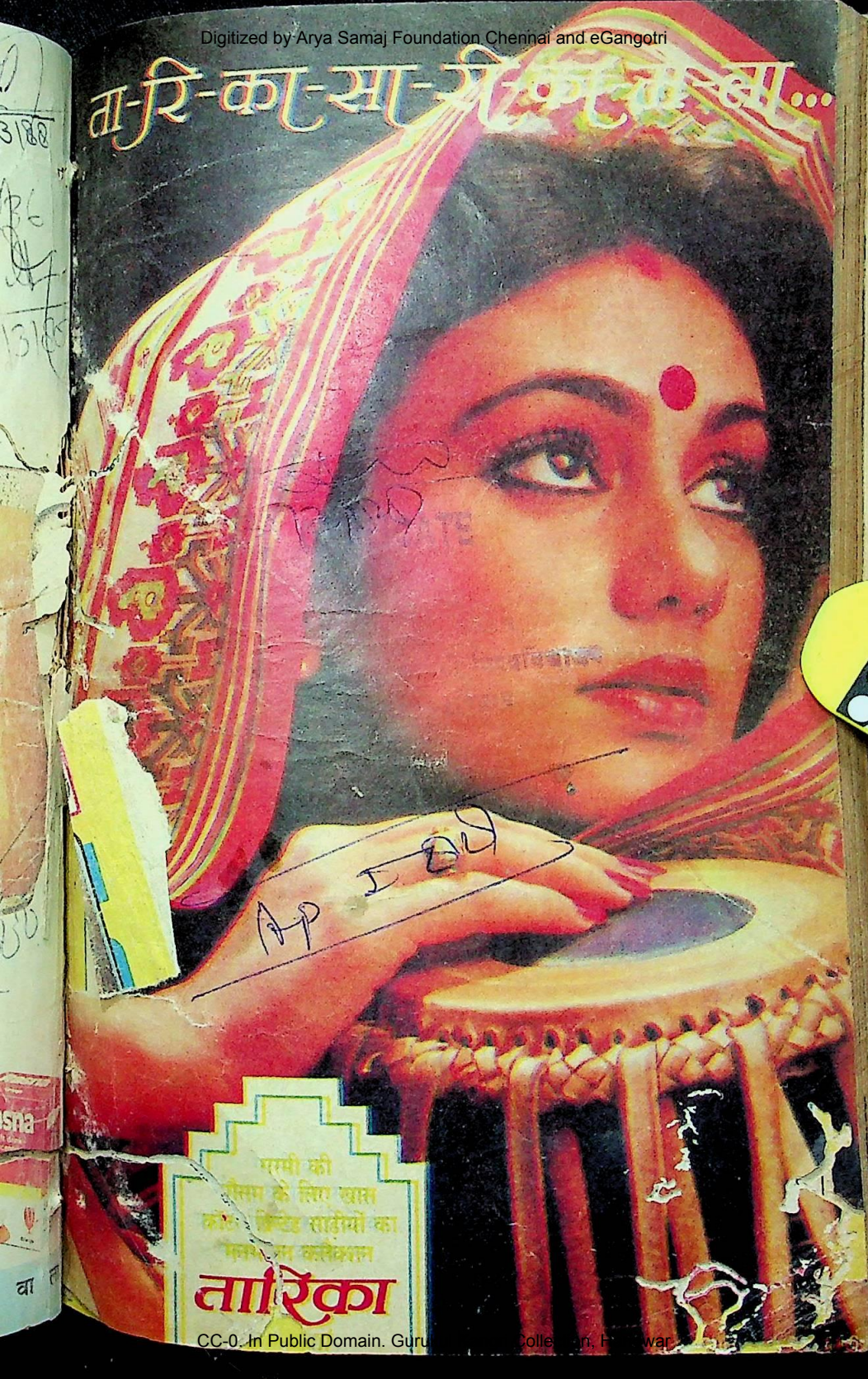

ता-रि-का-सा-री-का-ले-ला...

गर्मी की
मौसम के लिए खास
कॉटन प्रिंटेड साड़ियों का
मेनस्ट्रीम कलेक्शन

तारिका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरिता

सामाजिक व पारिवारिक पुनर्निर्माण की पाक्षिक पत्रिका

संपादक व प्रकाशक : विश्वनाथ अंक : 791 अप्रैल (प्रथम) 1988

कथा साहित्य

28 **स्वतंत्रता**
बेटी को काम न करने देने वाली मां

38 **मेरी बेटी**
देवरानी की बेटी को पालने की समस्या

57 **नानी मां**
बेटी को नानी के संरक्षण में छोड़ने वाली मां

88 **ढाल**
समाज की तंगदिली से बेटी की रक्षा

115 **मकान का चक्कर**
मकान मालिक की ऊलजलूल शर्तें

132 **भरोसा बेटी का**
बेटी पर अविश्वास करने वाली मां

158 **सच्ची मित्रता**
बेटी को सही सलाह देने वाली मां

172 **इश्क का भूत**
एक धनाढ्य किशोरी की नादानी

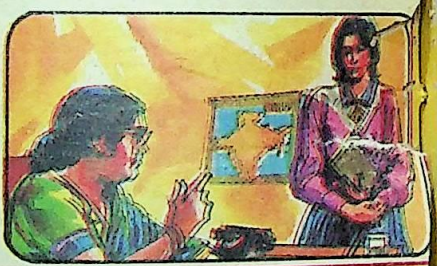

लेख

20 **केंद्रीय बजट**
मात्र एक छलावा

71 **मांबेटी**
विवाद पुराने और नए का

75 **मांबेटी व्यवहार**
तलवार की धार

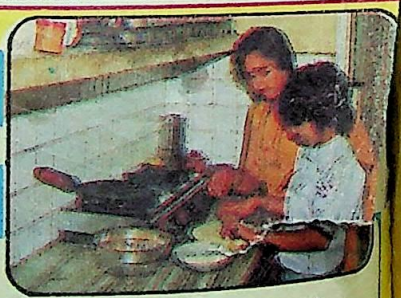

79 **बेटी को विवादों से बचाएं**
बेटी से जासूसी न कराएं

98 **सुंदर फूलों वाला फूलदान**
सजावट के लिए एक [illegible]

99 **कुंआरी बेटी का गर्भवती होना**
मातापिता के लिए आवश्यक निर्देश

107 **बेटी को भविष्य के लिए तैयार करें**
जवान होती बेटी को व्यावहारिक शिक्षा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

126 **धर्म की आड़ में उन्मुक्तता**
बुरे कार्यों पर धर्म की मुहर

141 **बेटी को आलसी न बनाएं**
बेटी को स्वावलंबी बनाने के सुझाव

144 **बेटी को अंधविश्वासी न बनाएं**
रूढ़िवादी विचारों के दुष्परिणाम

148 **किशोर बेटी और मां का व्यवहार**
मां के लिए कुछ खास निर्देश

153 **बेटी को घरेलू काम सिखाएं**
आत्मनिर्भर बनाने के लिए

168 **मांबेटी और यौन समस्याएं**
जवान होती बेटी को यौन शिक्षा

स्तंभ

8 आप के पत्र
12 जीवन की मुसकान
18 सरित प्रवाह
36 दिनदहाड़े
50 वेदों में क्या है?
54 नए फैशन
86 नए व्यंजन
94 यह भी खूब रही
130 हमारी बेड़ियां
136 बच्चों के मुख से
138 चंचल छाया
157 ये पत्नियां

कविताएं

37 श्रद्धा भी अंधी होती है
51 मन का पंछी
85 थम गई धड़कन
112 गुलदस्ते
131 खत कोरे आते रहे

संपादकीय, विज्ञापन व प्रकाशन कार्यालय :
दिल्ली प्रेस भवन, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.
दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन प्रा. लि. के लिए विश्वनाथ द्वारा प्रकाशित तथा दिल्ली प्रेस समाचार पत्र प्रा.लि. साहिबाबाद/गाजियाबाद में मुद्रित.
अन्य कार्यालय : अहमदाबाद : 503, नारायण चैंबर्स, आश्रम रोड, अहमदाबाद-380009.
बंगलौर : 302-बी. 'ए' क्वींस कारनर एपार्टमेंट्स, 3, क्वींस रोड, बंगलौर-560001. बंबई : 79-ए मित्तल चैंबर्स, नरीमन पाइंट, बंबई-400021. कलकत्ता : तीसरी मंजिल, पोद्दार पाइंट, 113, पार्क स्ट्रीट, कलकत्ता-700016, मद्रास : 14, पहली मंजिल, सीसंस कांप्लेक्स, 150/82, माटीअथ रोड, मद्रास-600008., लखनऊ : 9, दुर्गा भवन, कपूर लेन, महात्मा गांधी रोड, लखनऊ-226001. सिकंदराबाद : 122, पहली मंजिल, चिनाय ट्रेड सेंटर लेन, 116, पार्क लेन, सिकंदराबाद-500003.
* दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन प्रा. लि. बिना आज्ञा कोई रचना किसी प्रकार उद्धृत नहीं की जानी चाहिए.
सरिता में प्रकाशित कथा साहित्य में नाम, स्थान, घटनाएं व संस्थाएं काल्पनिक हैं और वास्तविक व्यक्तियों, स्थानों, घटनाओं या संस्थाओं से उन की किसी भी प्रकार की समानता संयोग मात्र है.
वैधानिक विज्ञापन विभाग : एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001.
वार्षिक मूल्य केवल ड्राफ्ट/मनी आर्डर द्वारा 'सरिता' के नाम से ई-3, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-110055 को भेजें. चैक व वी.पी.पी. स्वीकार नहीं किए जाते.
मूल्य विदेशों में (समुद्री डाक से) 240 रु., (हवाई डाक से) 636 रु.

मूल्य : एक प्रति 5.00 रुपए. वार्षिक : 120 रुपए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हाँ, हाँ, तुम्हारा ही है!
लेकिन केयो-कार्पिन बेबी ऑयल
तुम्हारी बहन के लिये भी बहुत अच्छा है।"

विटामिन ए, डी और ई से समृद्ध केयो-कार्पिन बेबी ऑयल से अपने बच्चों की मालिश कीजिये—और देखिये वे कितने स्वस्थ और ताक़तवर हो उठते हैं।

केयो-कार्पिन बेबी ऑयल आपके बच्चों को रिकेट्स से बचाता है

केयो-कार्पिन बेबी ऑयल से रोज़ अपने बच्चों की मालिश कीजिये। विटामिन डी की कमी से हड्डी में होने वाली अस्वाभाविकताओं से यह आपके बच्चे की सुरक्षा करता है।

केयो-कार्पिन बेबी ऑयल विटामिन ई की कमी नहीं होने देता है

केयो-कार्पिन बेबी ऑयल की रोज़ाना मालिश से विटामिन ई कम होने की संभावना दूर हो जाती है और 'मस्क्युलर डिस्ट्रॉफी' जैसे रोग से सुरक्षा मिलती है।

केयो-कार्पिन बेबी ऑयल विटामिन ए का अभाव नहीं होने देता है

विटामिन ए का अभाव होने पर शिशुओं और बढ़ते हुए बच्चों, दोनों को विभिन्न प्रकार के त्वचा रोग हो जाते हैं। लेकिन नियमित रूप से केयो-कार्पिन बेबी ऑयल की मालिश आपके बच्चे को पर्याप्त विटामिन ए प्रदान करती है और इस तरह के त्वचा रोगों का इलाज करती है।

केयो-कार्पिन बेबी ऑयल में हैं नीम और चंदन के गुण

केयो-कार्पिन बेबी ऑयल नीम, चंदन और अन्य गुणकारी उपादानों से भरपूर होने के कारण शिशुओं और बढ़ते हुए बच्चों के लिये अपरिहार्य है।

आज ही एक शीशी खरीदिये और देखिये, आपका बच्चा सारे साल कितना स्वस्थ रहता है।

आपके बच्चे को चाहिये—विटामिनयुक्त मालिश

केयो-कार्पिन बेबी ऑयल

Dey's®

दे'ज मेडिकल की संभाल, आपका भरोसा

★ यह श्रृंगार सामग्री नहीं है।

DMBO2

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरित प्रवाह/फरवरी/द्वितीय

पत्नी द्वारा पति को जलाए जाने की घटना के संबंध में आप के विचार सामयिक लगे.

आज नारी जागृति आंदोलन जोर पकड़ने लगा है. पुरुष के समान अधिकार दिए जाने पर भी जब संतोष नहीं हुआ तो स्त्री को पुरुष बनाने (पुरुष के गुण अपनाने) की कोशिश की जा रही है, जिस के कारण आज की स्त्री में स्त्रीत्व का ह्रास होता जा रहा है.

यह तो नारी जागरण नहीं है. नारी जागृति का तात्पर्य तो यह होना चाहिए कि नारी सुलभ गुणों की रक्षा एवं उन का समुचित विकास हो. सच तो यह है कि स्त्री अपने ही रूप में अच्छी लगती है.

—प्रणयकुमार मिश्र

*

सरित प्रवाह/फरवरी/प्रथम

वनों की अवैध कटाई और उन के उजड़ते स्वरूप के संबंध में संपादकीय सामयिक व जनहित में है.

किसी समय देश की धरोहर रहे वनों की अंधाधुंध कटाई से वायुमंडल में प्राणवायु की मात्रा निरंतर कम होती जा रही है, जिस से पर्यावरण प्रदूषित होने लगा है. साथ ही, अनेक घातक व जानलेवा रोग बढ़ते जा रहे हैं.

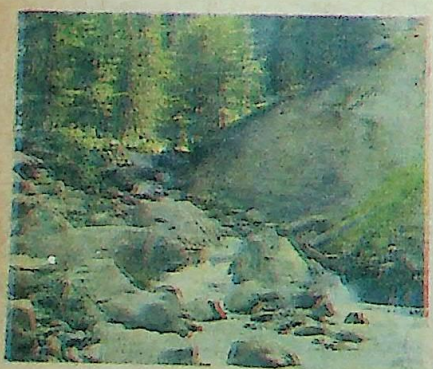

लकड़ी पर आधारित उद्योगों के सफल संचालन के लिए विदेशों से कच्चा माल न्यूनतम दरों पर आयात करना चाहिए. इस से वनों को उजाड़ने में सहयोगी सरकारी कर्मचारियों के भ्रष्टाचार पर भी कुछ अंकुश लग सकता है.

—डा. ललित फरक्या 'चितक'

*

पितापुत्र में मैत्री भाव

लेख 'पितापुत्र में टकराव' (फरवरी/द्वितीय) के संदर्भ में पहली बात तो यह है कि अधिकांश मातापिता अपने पुत्र को नाकारा व मूर्ख समझते हैं तथा बारबार उसे टोकते रहते हैं. यह गलत है.

दूसरी बात, उन्हें अपने बेरोजगार पुत्र के आत्मसम्मान को भी ठेस नहीं लगानी चाहिए.

—बालकिशन यादव

*

किशोरावस्था में पहुंच कर पुत्र पिता से एक मित्र के रूप में सहयोग चाहता है, जबकि उसे मिलते हैं ताने व उलटेसीधे आचरण के आरोप.

हर युवक अपनी तरह से अपना भविष्य संवारना चाहता है. इस के लिए यह आवश्यक है कि वह व्यवस्थित रूप में अपनी शिक्षा पूरी करे. लेकिन पिता की लापरवाही के कारण यदि शिक्षा का खर्च पुत्र को ही उठाना पड़े तो शिक्षा की अपेक्षा नौकरी पर अधिक ध्यान देना पड़ेगा. मांबाप के लिए यह कहना कितना सरल है कि 'अब पालपोस कर बड़ा कर दिया, अपना भरणपोषण स्वयं करो.'

पुत्र पिता के स्नेहपूर्ण सहयोग का तदनुरूप प्रतिफल देगा, इस पर पिता को विश्वास होना चाहिए.

—ललित सागर

*

कहां है आत्मा?

लेख 'तथ्य नहीं मात्र तर्क है आत्मा' (फरवरी/द्वितीय) आत्मापरमात्मा का अस्तित्व बता कर भोलीभाली जनता को ठगने वालों पर तीखा प्रहार है.

शरीर में आत्मा बताने वाले यह कभी नहीं बताते कि वह शरीर में है कहां. अगर आत्मा हो तो आंख, हृदय, गुरदे आदि अंगों की तरह उस का भी प्रत्यारोपण किया जा सके. साथ ही नेत्रदान, रक्तदान, गुरदादान आदि की भांति आत्मादान का भी अभियान आरंभ हो.

रही कृष्ण द्वारा आत्मा के अस्तित्व को ले कर 'गीता' में की गई विवेचना की बात. सो उसी की आड़ में उन्होंने अपने बहनोई के परिवार का शिकार खेला. कुरुक्षेत्र का युद्ध कृष्ण के चरित्र पर सब से बड़ा कलंक है क्योंकि, युद्ध के प्रणेता बन कर उन्होंने मानवता की हत्या कर दी.

—राजकुमार सांभरिया

*

परिशिष्ट

परिशिष्ट 'घरखर्च प्रबंध' (फरवरी/द्वितीय) के अंतर्गत गृहिणियों के लिए बेहद उपयोगी जानकारियां दी गई हैं.

लेख 'रसोईघर में समय और शक्ति की बचत' से जहां गृहिणी अपने समय व श्रम की बचत कर सकेगी, वहीं लेख 'मोलभाव तय करना भी कितना जरूरी' तथा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"डार्लिंग, लगता है जैसे मैं दफ़्तर में नहीं,
घर ही में खा रहा हूं. कमी है तो बस तुम्हारी."

"याद आता है वो दिन, जब उन्होने मुझे अचानक दफ़्तर से फोन किया था.
ये वो दिन था जब पहली बार मैने उन्हें खाना सेलो लंचपैक में दिया था.
वो दिन का खाना 'ठंडा' खायें, ये बात मेरे गले नहीं उतरती थी...
क्योंकि मै जानती थी कि गर्म खाने से उन्हें कितना प्यार है. ऐसे में
आया मेरा साथ निभाने सेलो लंचपैक, जिसमें घंटो तक खाना गर्म
रहता है और साथ ही खाने में मिला मेरा प्यार भी.
अब से मैंने 'उनके दिन के खाने की फिक्र सेलो पर छोड़ दी है.
मेरे प्यार का वादा निभाया सेलो तुमने."

cello
सेलो लंचपैक

घर का प्यार दफ़्तर में.

प्रस्तुतकः विमको पेन कम्पनी, ९९, महता इंडस्ट्रियल एस्टेट आइ. बी. पटेल रोड गोरेगांव (पूर्व) बम्बई ४०० ०६३. फोन: ६९२६९४, ६९५३६९

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'बजट बनाइए और कम खर्च में घर चलाइए' से वह अपने घर को सुचारू रूप से चला सकेगी.

—सुशीला कनेरिया

*

सरकारी उपक्रम

लेख 'सरकारी सफेद हाथी' (फरवरी/द्वितीय) वास्तविकता से परिपूर्ण लगा.

यदि केंद्र सरकार अपने कुछ उपक्रम बंद कर दे तो जनता का भला ही होगा. आखिरकार सरकार अपने इन उपक्रमों का घाटा जनता की खूनपसीने की कमाई से ही तो पूरा करती है. इन में व्याप्त भ्रष्टाचार एवं कामचोरी जगजाहिर है.

—रमाकांत मोहनलाल मिश्र

*

पुलिस: रक्षक या भक्षक

कहानी 'भक्षक' में पुलिस का नकाब अच्छी तरह हटाया गया है. लगता है, आजकल पुलिस आम लोगों के

लिए रक्षक न हो कर भक्षक बनती जा रही है. पुलिस वालों को ऐसे काम नहीं करने चाहिए, जो उन की सम्माननीय वरदी पर धब्बा लगाएं.

—रामरत्न विश्नोई

*

मार्मिक कहानी

कहानी 'एक और आकाश' (फरवरी/द्वितीय) अत्यंत मार्मिक है.

आज के परिवेश में इसी प्रकार की नीतिपरक और साहसपूर्ण सार्थक कहानियों की आवश्यकता है, जो युवा पीढ़ी को पश्चिमी सभ्यता की ओर अग्रसर होने से बचा कर उन का मार्ग प्रशस्त कर सकें.

—सुनील अग्रवाल 'कुमार'

*

जीवन बीमा निगम

लेख 'जीवन बीमा निगम की भ्रामक योजनाएं' (फरवरी/प्रथम) ने सरकार के कलुषित अर्थतंत्र का चौराहे पर भंडाफोड़ कर दिया है.

स्पष्ट है कि जब निगम अपने मूल उद्देश्य से हट चुका है तो उसे अपने अस्तित्व में बने रहने का कोई भी वैधानिक व नैतिक अधिकार नहीं होना चाहिए.

—श्याम तिवारी

*

लगता है, यह लेख 'लोक भविष्य निधि' का विज्ञापन मात्र है. 'थोड़ा जोखिम चाहे जरूर हो' कह कर लेखक ने जीवन बीमा निगम की सब से महत्त्वपूर्ण जिम्मेदारी को बिलकुल नजरअंदाज कर दिया है.

किसी व्यक्ति की दुर्घटना/मृत्यु पर लोक भविष्य निधि उसे क्या देती है? क्या लेखक किसी ऐसे बेसहारा व्यक्ति से मिला है जिसे जीवन बीमा निगम से 'क्षतिपूर्ति' मिली हो?

निगम द्वारा जब्त पालिसियों के बारे में उल्लेखनीय है कि वे मुख्यतः एजेंटों द्वारा अपनी एजेंसियां बचाने के लिए जमा की गई पालिसियां होती हैं. तीन वर्षों बाद पालिसी के मूल्य का 40% काट कर भुगतान करने को धन का हड़पना नहीं समझना चाहिए. 20 या 25 वर्षों के लिए पालिसी तय कर के तीन वर्ष बाद ही भुगतान ले लेना कहां तक न्यायसंगत है? यदि यही पालिसी तीन वर्षों के लिए ली जाती तो प्रीमियम कितना होता?

'मनी बैक' पालिसी के बारे में यह कहना कि बीमेदारों को भारी हानि होती है, सर्वथा अनुचित है क्योंकि यह पालिसी आज सर्वाधिक सुरक्षित एवं अधिकतम मांग वाली लाभदायक पालिसी है, जिस में बीमेदारों को जमा राशि का 60% हर पांचवें साल बिना किसी झंझट के मिल जाता है.

भारतीय जीवन बीमा निगम की आय का अधिकतम भाग राष्ट्र की अग्रणी निर्माण योजनाओं में विनियोजित है और ऐसी राष्ट्रीय योजना की आलोचना कदापि उचित नहीं है.

—जगदीशचंद्र अरोड़ा

*

अन्य पत्रिकाएं भी सामने आएं

आप 'सरिता' के माध्यम से तथाकथित धर्मों और उन के धंधेबाजों की पोल खोल कर प्रशंसनीय कार्य कर रहे हैं, लेकिन अन्य भारतीय भाषाओं की करीब 300 पत्रिकाओं में से एक भी इस मामले में दिलचस्पी नहीं रखती. ऊपर से हमारी सरकार दूरदर्शन द्वारा, उद्योगपति मंदिरों द्वारा और फिल्म निर्माता फिल्मों के द्वारा अंधविश्वासपूर्ण धर्म का प्रचार कर के जनता को बेवकूफ बनाने में लगे रहते हैं. ऐसे में अकेली 'सरिता' क्या कर सकती है. क्या अकेला चना कभी भाड़ फोड़ सकता है?

इसलिए आवश्यक है कि अन्य भारतीय भाषाओं की पत्रिकाएं भी आगे आ कर जनता में, विशेषतः ग्रामीण जनता में फैले अंधविश्वासों का निवारण कर सकें तो अच्छा है. वैसे, 'सरिता' स्वयं भी अन्य भारतीय भाषाओं में अपना प्रकाशन शुरू कर के कुछ और कदम आगे बढ़ सकती है.

—मुसद्दीलाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...सौंदर्य-साधन अब आपके देश में, आपके बिल्कुल करीब ... राज़ खोल रहा है... आपकी त्वचा से कुछ खूबसूरत बातें ... इसकी एक अनमोल बूंद ही काफी कुछ कहे... सुनिए. ...-गुलाबी नमी इतनी सहज कि आपकी त्वचा में आसानी से ... रोम-रोम में समाए. हर ढ़लता दिन आपकी त्वचा से कुछ ... उसे ये लौटाए.

क्योंकि ये आपकी त्वचा की परतों में प्राकृतिक नमी-तेल का नाज़ुक संतुलन बनाए रखे. त्वचा के रूखेपन को हटाए, ऐसी ताज़गी लाए कि हर छोटी से छोटी सिलवट अपने-आप ही मिट जाए. आपकी त्वचा में वही मुलायम एहसास लौट आए, कोमल चमक जग जाए... त्वचा में फिर बसंत खिल जाए. आइए इस अंतर्राष्ट्रीय सौंदर्य साधन के राज़ में शामिल हो जाइए. ऑइल ऑफ ओले अपनाइए... प्यारी सी सौंदर्य-रस्म निभाइए!

...सूम त्वचा पाने का राज़ जान जाइए!

...ऑफ ओले संसार भर में इन कई नामों से बिकता है. जैसे ऑइल ऑफ ऊले, ऑइल ऑफ ऊलान और ऑइल ऑफ ओलॅज़.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

everest/87/RHL/592 hn

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवन की मुसकान

एक बार मैं अपने पति के साथ एक विवाह समारोह से आ रही थी. एक सुनसान जगह पर हमारा स्कूटर खराब हो गया. काफी कोशिशों के बाद भी जब वह ठीक नहीं हुआ तो मैं बहुत घबराने लगी क्योंकि मैं ने सोने के कीमती आभूषण पहन रखे थे.

तभी उधर से एक स्कूटर गुजरा. हमारी स्थिति को देख कर स्कूटर पर सवार उस व्यक्ति ने अपना स्कूटर रोका और हमारे स्कूटर को ठीक करने में हमारी सहायता करने लगा. फिर भी स्कूटर ठीक न हो सका. तब उस ने अपना स्कूटर मेरे पति को देते हुए कहा कि पहले आप भाभीजी को घर छोड़ आएं और वापस लौटते हुए किसी मैकेनिक को साथ लेते आएं. तब तक मैं आप के स्कूटर के पास खड़ा रहूंगा.

—सुनीता सहाय

*

एक बार मैं रेलगाड़ी से बांदा जा रहा था. एक स्थल पर गाड़ी के धीमा होने पर दो बदमाश मेरा थैला छीन कर कूद पड़े. चूंकि थैले में मेरे कुछ जरूरी कागजात, रुपए और कपड़े थे, इसलिए मैं भी गाड़ी से कूद पड़ा. परंतु मैं कूदते ही गिर कर बेहोश हो गया.

कुछ समय बाद उधर से हो कर रेलवे स्टेशन जा रहे एक कर्मचारी ने मुझे बेहोश पड़े हुए देखा तो वह शीघ्र स्टेशन मास्टर व उस के सहयोगियों को ले आया. स्टेशन मास्टर ने अपने कमरे में ला कर मेरी चिकित्सा करवाई और अगले दिन होश में आने पर मुझे मेरे बताए हुए स्थान पर पहुंचा दिया.

यही नहीं, स्टेशन मास्टर ने दौड़धूप कर के मेरे जरूरी कागजात भी प्राप्त कर के मेरे पास भिजवा दिए. —एस.एस. चौहान

एक दिन स्कूल से आते समय मिरगी का दौरा पड़ने से मैं रास्ते में गिर पड़ी. जब मुझे होश आया तो मैं ने देखा कि मैं एक हस्पताल में हूं और एक अपरिचित सज्जन मेरे सिरहाने बैठे हैं.

उन्होंने मेरा पता पूछा और नर्स को मेरे पास छोड़ कर मेरे घरवालों को सूचित करने चले गए. यही नहीं, जाने से पहले वह मेरी दवाइयों का इंतजाम भी कर गए.

कुछ समय बाद जब मेरे घरवाले हस्पताल पहुंचे तो वह सज्जन उन के साथ नहीं थे. —किरण सिंह

*

मैं ट्रक के स्पेअर पार्ट्स खरीदने के लिए रात में वाराणसी पहुंचा. मेरे पास 12,000 रुपए नकद और 14,000 रुपए का ड्राफ्ट था.

अधिक रात हो जाने से कोई भी वाहन न मिल सका. मैं पैदल ही अपने मित्र के घर की ओर चल दिया जहां मुझे ठहरना था. कुछ दूर चलने पर 2-3 बदमाश मेरे पीछे लग गए. मैं खतरा समझ कर तेजी से दौड़ने लगा. मेरे पीछे बदमाशों को भागता देख कर एक रिकशा चालक ने स्थिति समझ ली और मेरे कुछ बोले बिना ही वह तेजी से रिकशा घुमा कर मेरी ओर ले आया और मुझे बिठा कर गंतव्य तक पहुंचा दिया.

जब मैं ने उसे पारिश्रमिक स्वरूप 20 रुपए देने चाहे तो उस ने इनकार कर दिया और केवल 2 रुपए अपना किराया ले कर चला गया. —लालबहादुर जायसवाल ●

इस स्तंभ के लिए अपने तथा अपने संबंधियों के अनुभव भेजिए. प्रत्येक प्रकाशित अनुभव पर 30 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. अपने अनुभव इस पते पर भेजें. संपादकीय विभाग, सरिता, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

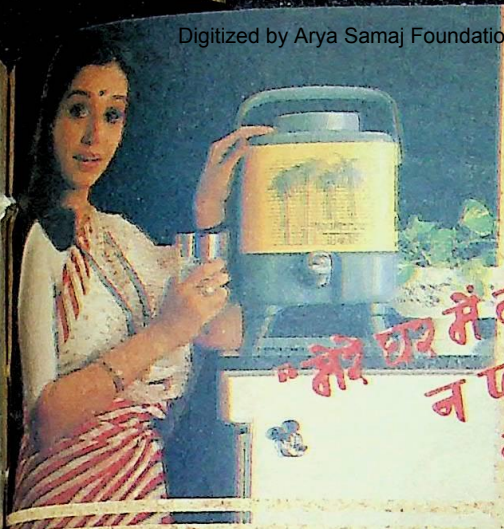

"मेरे घर में तो चाहिए, बस मिल्टन! न प्लास्टिक की गंध, न कोई झंझट!"

मिल्टन इंसुलेटेड वॉटर जग की भीतरी सतह विशेष फूड-ग्रेड लाइनिंग के कारण इसमें प्लास्टिक की नागवार बू नहीं आती. तभी तो मिल्टन वॉटर जग से आपको मिलता है केवल शुद्ध, ताज़ा, ठंडा-शीतल, पूरी तरह दुर्गंध रहित पीने का पानी–दिन भर

मिल्टन वॉटर जग के रंग धूप में कभी फीके नहीं पड़ते. और ये आपकी ज़रूरत के अनुरूप कई क्षमताओं और आकारों में मिलते हैं. दफ़्तर या दुकान, पैदलयात्रा, घर या बाहर.... हर जगह इस्तेमाल के लिए उपयुक्त.

❶ गहरा ढक्कन (कुछ ही मॉडलों में): ३ छोटे गिलास सहित.

❷ मज़बूत लचीली बॉडी

❸ थर्मल* इंसुलेशन: दिन-भर पानी ठंडा और ताज़ा रखता है

❹ विशेष फूड-ग्रेड लाइनिंग: ताकि इसमें रखे पेय गंधरहित रहें.

❺ माइक्रो-फ़िल्टर: नल के साधारण पानी को पीने योग्य शुद्ध बनाए.

*थर्मल-पॉलीयूरेथेन फ़ोम के लिए मिल्टन द्वारा दिया गया विशेष नाम है: जो एकमात्र अत्याधिक कार्यकुशल इंसुलेटिंग मटीरियल है.

MILTONAIRE
811, Raheja Centre, Nariman Point, Bombay-400 021. Tel. 233453, 224010

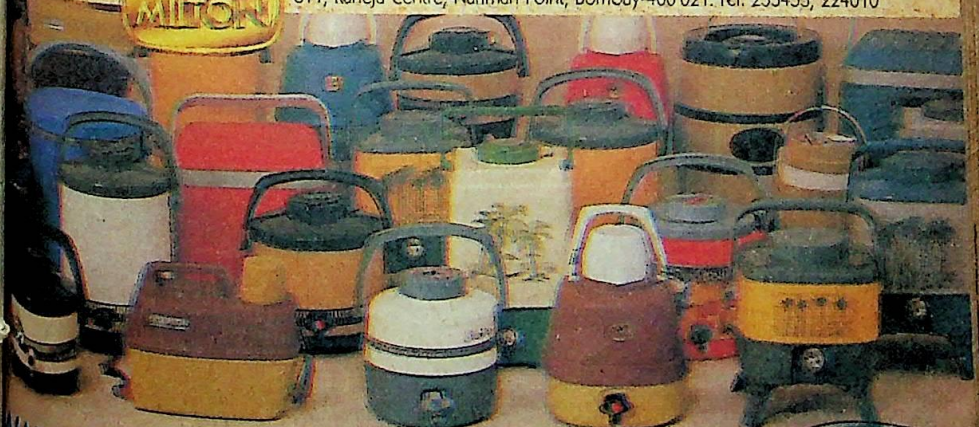

WATER JUGS FROM MILTON

ALL COLD NO SMELL

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

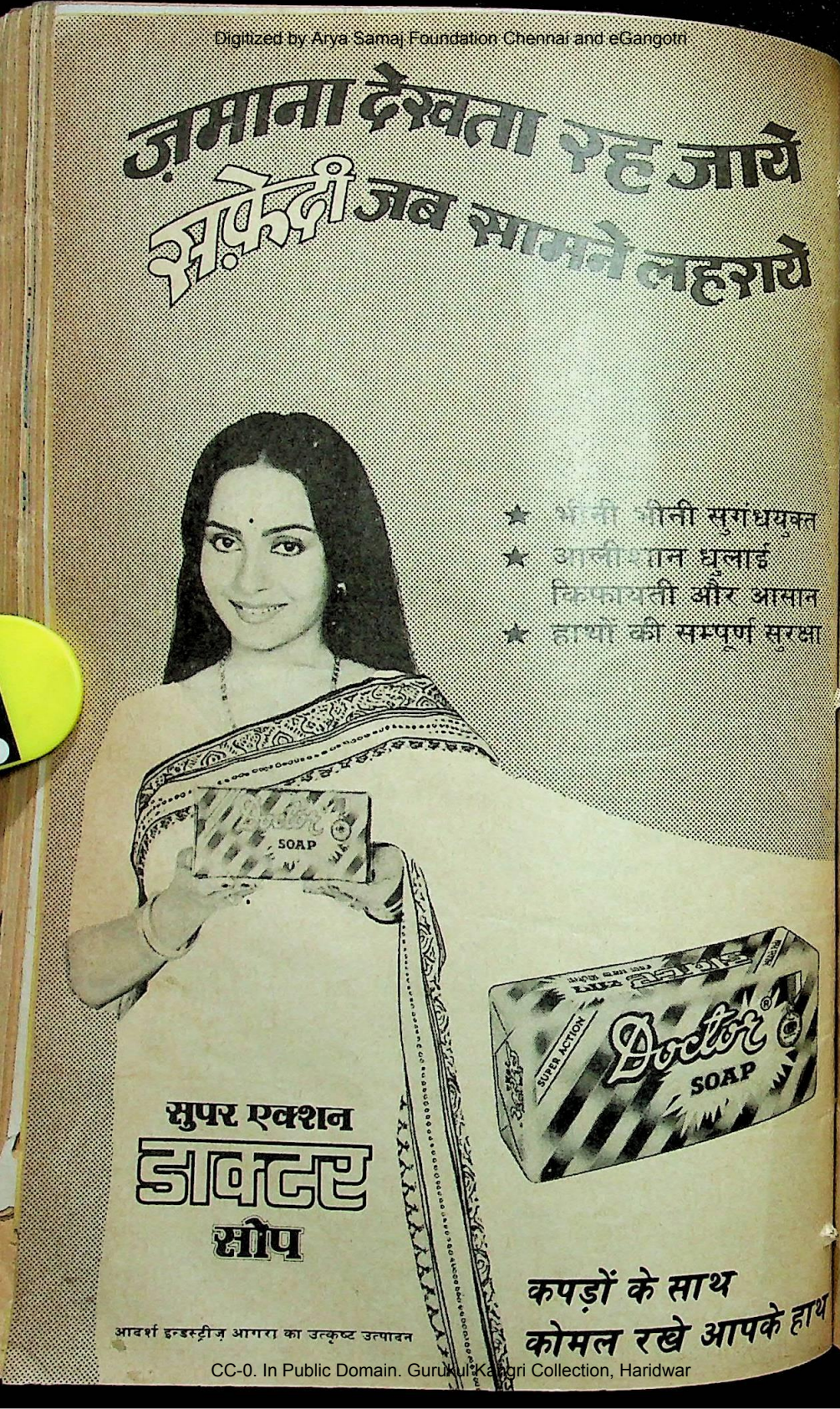
ज़माना देखता रह जाये
सफ़ेदी जब सामने लहराये
★ भीनी भीनी सुगंधयुक्त
★ आलीशान धुलाई
किफायती और आसान
★ हाथों की सम्पूर्ण सुरक्षा

सुपर एक्शन
डाक्टर
सोप
कपड़ों के साथ
कोमल रखे आपके हाथ
आदर्श इन्डस्ट्रीज़ आगरा का उत्कृष्ट उत्पादन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अरित प्रवाह

12 मार्च को राजीव गांधी सरकार ने महात्मा गांधी के 58 वर्ष पुराने दांडी मार्च व नमक सत्याग्रह की पुनरावृत्ति की. राजीव गांधी ने अहमदाबाद के साबरमती आश्रम से 80 युवकों द्वारा यह 25 दिन की 385 किलोमीटर की यात्रा प्रारंभ कराई और स्वयं भी दो मील तक इस में सम्मिलित हुए.

इस अवसर पर राजीव गांधी ने महात्मा गांधी के आदर्शों की भी लोगों को याद दिलाई और कहा कि आज देश के 75% लोग इस दांडी यात्रा के बाद उत्पन्न हुए हैं, इसलिए गांधीजी के सत्य और अहिंसा की बात उन तक पहुंचाना जरूरी है.

पर प्रश्न है कि क्या स्वयं राजीव गांधी और उन की सरकार व उन की कांग्रेस आज गांधीजी के किसी भी आदर्श को सही मान कर उन पर अमल करती है?

सब से पहले तो दांडी यात्रा को ही लें. गांधीजी ने वैसे तो यह यात्रा स्वतंत्रता संग्राम के एक अंग के रूप में सोची थी, पर इस विशेष अभियान का उद्देश्य था ब्रिटिश सरकार द्वारा नमक पर लगाए गए टैक्स को हटाने का. उस समय नमक का बनानाबेचना सरकारी एकाधिकार था; समुद्र तट पर रहने वालों को भी अधिकार नहीं था कि वे अपनी जरूरतों के लिए भी तट पर जमा नमक उठा कर खा सकें. नमक पर भारी उत्पाद कर भी था. गांधीजी का कहना था कि नमक जैसी आवश्यक वस्तु पर कोई कर नहीं होना चाहिए.

पर आज भारत में टैक्सों का क्या हाल है? यह ठीक है कि भारत सरकार गांधीजी के नमक सत्याग्रह को देखते हुए और लकीर पीटने के लिए नमक पर उत्पाद कर नहीं लगाती है, पर गरीबों के काम में आने वाली अन्य कौन सी चीज पर भारी उत्पाद कर, बिक्री कर, चुंगी कर नहीं है? भारत सरकार और राज्य सरकारों का रातदिन दोगुनाचौगुना बढ़ता हुआ सारा खर्च आयात, उत्पाद व बिक्री कर से ही तो पूरा होता है, और इन करों का असली और अधिकांश भार गरीब जनता पर पड़ता है, जिस को दो समय की रोटी भी मयस्सर नहीं होती.

जहां तक गांधीजी के सत्य और अहिंसा के सिद्धांतों की बात है, राजीव गांधी की कांग्रेस और सरकार तो जितनी इन दोनों सिद्धांतों का कचूमर निकालती है उतना और कोई भी नहीं निकालता. यदि गांधीजी आज जीवित होते तो उन्होंने आज की कांग्रेस और सरकार के कारनामे देख कर आत्महत्या कर ली होती.

इस यात्रा की पुनरावृत्ति के समय पर कुछ सिरफिरे लोगों के "नकली गांधी वापस जाओ! नकली यात्रा बंद करो!" के नारे लगाए. ये नारे कितने सही थे, कितने गलत थे, यह बुद्धिमान लोगों के सोचनेसमझने की बात है.

जिस प्रकार विभिन्न धर्मों और मजहबों ने नैतिकता और सामाजिक सद्व्यवहार का आवरण ओढ़ कर दुनियाभर के अपने अनुयायियों को अनाचार, अत्याचार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

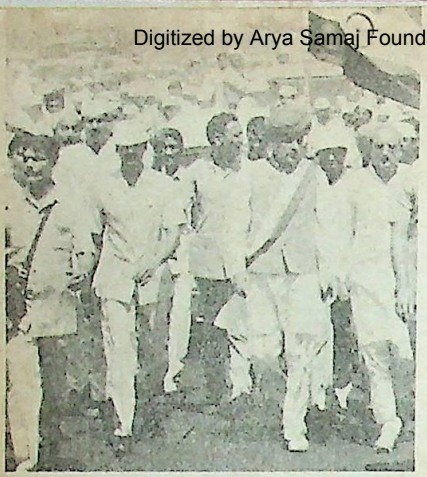

व हत्याओं की छूट दे रखी है, ठीक वैसा ही हाल गांधीजी के सिद्धांतों और कांग्रेस व कांग्रेस सरकार का है.

*

वामपंथी व कम्यूनिस्ट पार्टियों सहित गैरकांग्रेसी राजनीतक दलों ने 15 मार्च को भारत बंद का आह्वान किया. इस का विशेष प्रयोजन था 'भ्रष्ट राजीव गांधी को हटाओ,' क्योंकि सिवाए भारतीय जनता पार्टी के अन्य सभी विपक्षी दल इस बंद के समर्थक थे, इसलिए कांग्रेस व राजीव सरकार ने बंद को विफल कराने के लिए किसी प्रकार की कोई कसर नहीं छोड़ी.

आज रेडियो व टीवी सरकार का सब से बड़ा प्रचार माध्यम है. राजीव सरकार ने खुल कर इन का उपयोग (और विपक्ष के शब्दों में दुरुपयोग) किया. धुआंधार भाषण, पकड़ कर लाए गए विभिन्न वर्गों के लोगों से साक्षात्कार, सड़कों पर चलते, सामान बेचतेखरीदते व्यक्तियों से बंद के विरोध में बातचीत, कारटून, फिल्मों के टुकड़े—सब का इस्तेमाल किया गया.

इस पर विपक्षी, विशेषतः कम्यूनिस्ट दलों का बौखलाना स्वाभाविक ही था. उन्होंने संसद व समाचारपत्रों को दिए गए बयानों में राजीव सरकार के इस हथकंडे और रेडियो टीवी के दुरुपयोग की तीव्र भर्त्सना की.

पर जब सरकार के पास माध्यम है तो वह अपना अस्तित्व बनाए रखने के लिए उस का उपयोग क्यों न करे?

असली बात तो यह है कि रेडियो व टीवी सरकारी एकाधिकार में होने ही नहीं चाहिए. वास्तविक जनतंत्र के लिए आवश्यक है कि जैसे समाचारपत्र विभिन्न मतों और दलों के लिए खुले हुए हैं, जो चाहे प्रकाशित कर सकता है. उसी प्रकार यदि बहुत नहीं तो दो या तीन स्वतंत्र टीवी देश में होने ही चाहिए.

अमरीका, कनाडा, ब्रिटेन, फ्रांस, जरमनी आदि सभी जनतांत्रिक देशों में कई रेडियो टीवी कंपनियां हैं. ब्रिटेन में सरकारी बीबीसी है तो वहां स्वतंत्र टीवी भी है, जिस से सरकार विरोधी प्रसारण होता रहता है. जहां सरकारी एकाधिकार होगा वहां सत्तारूढ दल उस का दुरुपयोग करेगा ही.

भारत जैसे निरक्षर भट्टाचार्यों के देश में तो रेडियो टीवी का महत्त्व और भी बढ़ जाता है. यहां समाचारपत्र और पत्रिकाएं एक सीमित वर्ग तक ही पहुंच पाती हैं, जबकि रेडियो टीवी लगभग हर घर में नहीं तो हर बस्ती व महल्ले में तो हैं ही. इस से सत्तारूढ दल अपने विचार, अपना प्रोपेगैंडा तो बखूबी कर सकता है, पर विपक्ष हाथ मलता रह जाता है. उस के पास जलसे, जलूस और सभाओं के अलावा जनसंपर्क का सुलभ, सस्ता, व्यापक साधन नहीं रह जाता.

पर कठिनाई यह है कि विपक्ष में कम्यूनिस्ट, लोक दल व जनता पार्टी भी यह मांग नहीं कर रही है कि रेडियो टीवी पर एकाधिकार समाप्त हो. शायद इन विपक्षी दलों को भ्रम है कि यदि वे सत्ता में आ गए तो वे भी रेडियो टीवी का उपयोग कर सकेंगे.

शायद इस भारत बंद में रेडियो टीवी की भूमिका से उन्हें कुछ सबक मिले और वे निजी क्षेत्र में भी रेडियो टीवी होने की बात बोलने लगें. पर अभी तो सभी विपक्षी दलों में सरकारी क्षेत्र का प्रलोभन बाकी है और निजी क्षेत्र उन के लिए वैसा ही है जैसा धार्मिक हिंदू के लिए गोमांस.

शरिता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ये लोग कहते हैं कि रेडियो टीवी गैरसरकारी, निजी नागरिक क्षेत्र में होगा तो व्यवसायी लोग पैसे के लालच में इस माध्यम का दुरूपयोग करेंगे, तरहतरह के विज्ञापन प्रसारित करेंगे. पर आज आकाशवाणी व दूरदर्शन किस प्रकार व्यावसायिक रेडियो टीवी से भिन्न हैं? क्या वे अधिकांशतः बंबइया फिल्मों को नहीं बनाते, व्यापारिक विज्ञापन प्रसारित नहीं करते, भौंडे सीरियल पेश नहीं करते? उलटे, वे जो प्रसारित नहीं करते वह है विपक्ष का गैरसरकारी मत और समाचार. इन में तो केवल सत्तारूढ दल ही की वाहवाही होती है.

*

पिछले महीने लोकसभा में आल इंडिया अन्ना द्रविड़ मुन्नेत्र कड़गम (जानकी गुट) के सदस्य थंगरासु ने सनसनी पैदा कर दी जब उन्होंने सदन में नोटों से भरा एक बैग पेश किया जो, उन के अनुसार, उन्हें जयललिता गुट ने रिश्वत के तौर पर दिया, ताकि वह जानकी गुट छोड़ कर जयललिता गुट में आ जाएं. उन्होंने यह भी बतलाया कि उन्हें पहले खूब शराब पिलाई गई, फिर उन्हें जबरदस्ती यहांवहां ले जाया गया और फिर यह रुपया दिया गया. यह सब उन्होंने लोकसभा में शिकायत के तौर पर कहा और 5 लाख के नोटों से भरे बैग को अध्यक्ष बलराम जाखड़ की मेज पर पटक दिया.

भौचक्के हुए बलराम जाखड़ पहले तो सटपटाए. फिर उन्होंने आदेश दिया कि यह रुपया निकटतम पुलिस थाने में जमा करा दिया जाए और इस की जांच की जाए.

यह प्रदर्शन सनसनीखेज तो था, पर आश्चर्यजनक नहीं. आज सारे देश में विधायकों और सांसदों के बारे में तरहतरह की बातें कही जाती हैं. मुख्य मंत्री के गद्दी पर बने रहने, हाई कमान को किसी मुख्य या अन्य मंत्री के बारे में शिकायती पत्र देने, पार्टी का बहुमत बनाए रखने आदि के मामले में सदस्यों के मोलभाव होते ही रहते हैं.

विधायकों व संसद सदस्यों की खरीदफरोख्त की नीति, जो इंदिरा गांधी ने सत्ता में बने रहने के लिए शुरू की थी, आज बड़े जोरशोर से चल रही है. भूतपूर्व राष्ट्रपति जैलसिंह ने अभी हाल में कहा था कि उन्हें दोबारा चुनाव लड़ने के वास्ते वोट जमा करने के लिए कुछ लोगों ने 30-40 करोड़ रुपए तक खर्च करने की बात की थी.

आज देश की हर विधान सभा में असंतुष्ट सदस्यों को अपनी ओर बनाए रखने और विपक्ष को चुप कराने के लिए बड़े पैमाने पर धन खर्च किया जा रहा है. जैसा मौका या कठिनाई होती है, उसी दर से सदस्यों की बोली घटबढ़ जाती है.

ज्ञानी जैलसिंह के चुनाव के बारे में 30-40 करोड़ रुपए की बात कहने पर पहले तो राजीव गांधी तैश में आ कर फौरन जांच किए जाने का आदेश दे बैठे. पर जब उन्हें लोगों ने समझाया कि जांच दोधारी तलवार है और वार उलटा भी पड़ सकता है तो तत्काल मामला मीलों नीचे दबा दिया गया.

संसद सदस्य थंगरासु की प्रशंसा करनी चाहिए कि उन का चाहे जो उद्देश्य रहा हो, उन्होंने यह बात उजागर कर दी और लिखित में ला दी कि भारत में विधायक खरीदे और बेचे जाते हैं. और कोई इसे अनहोनी या आश्चर्यजनक बात नहीं कहता. सरकारें बनतीबिगड़ती हैं इन्हीं नोट भरे ब्रीफकेसों से.

*

पश्चिम बंगाल में सत्तारूढ वामपंथी मोरचे की पंचायत चुनावों में बड़े धड़ल्ले से जीत हो गई है. त्रिपुरा व मेघालय में अपनी संदिग्ध व पैसे व फौज के बल पर हासिल की गई जीत से राजीव कांग्रेस को कुछ उम्मीद हो गई थी कि वह पश्चिम बंगाल में भी ज्योति बसु के नेतृत्व वाले मोरचे को यदि पूरी तरह पीट नहीं सकेगी तो भी पहले से अच्छी स्थिति प्राप्त कर लेगी.

पर नतीजा उलटा हुआ, धुआंधार प्रचार और पैसे खर्च करने पर भी वामपंथी मोरचा जीत गया और कांग्रेस मुंह ताकती रह गई.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केरल में, जहां वामपंथी मोर्चे की सरकार है, कांग्रेस ने पंचायत, जिला परिषद चुनाव में अवश्य कुछ सफलता प्राप्त की थी. पर लगता है, अब जनता अच्छे शासन और बुरे शासन में पहचान करने लगी है और बेकार की नारेबाजी से प्रभावित नहीं होती.

पश्चिम बंगाल में ज्योति बसु ने, सब सहमत हैं, जनता को अच्छा प्रशासन दिया है. इसी लिए वह बारबार जीत रहे हैं. केरल में वामपंथी सरकार अनेक प्रकार के घोटालों में सनी हुई है इसलिए वहां वह हार गई.

*

महाराष्ट्र के विशुद्ध हिंदू संगठन शिवसेना के अध्यक्ष बाल ठाकरे ने गर्जना की है कि यदि 20 मार्च तक पंजाब में हत्याएं बंद न हुईं तो सारे देश के हिंदुओं को सिखों का सामाजिक बायकाट कर देना चाहिए.

खालिस्तान आतंकवादियों को इस घोषणा से कोई चिंता या परेशानी होने की कोई संभावना नहीं है, उलटे वे तो प्रसन्न होंगे कि एक हिंदू नेता ने उन का काम और आसान कर दिया. कारण? इस बायकाट के आह्वान से, यदि यह सफल हो जाए तो, नतीजा यह होगा कि पंजाब के बाहर के सिख अपनी जमीनजायदाद, नौकरी या कारोबार छोड़/बेच कर पंजाब में आएंगे और वहां के हिंदुओं को खदेड़ेंगे. बस पंजाब खालिस्तान बन गया—वहां सिखों का बाहुल्य, बहुमत होगा, हिंदू नामोनिशान को भी नहीं होंगे.

सब से बड़ा प्रश्न यह है कि हिंदू की परिभाषा क्या है?

हिंदू धर्म के जानेमाने धर्मग्रंथों में हिंदू शब्द का अस्तित्व तक नहीं है. वहां तो आर्य, अनार्य का ही जिक्र है. इसी कारण कुछ वर्ष पहले पटना में हुए विश्व हिंदू सम्मेलन में बहुत सोचविचार, वादविवाद के बाद हिंदू की परिभाषा यह बनाई थी—"हिंदू वह है जो अपने को हिंदू कहता हो, जो भारत में जन्मे किसी धर्म को मानता हो, भारत को पुण्यभूमि मानता हो."

इस सिलसिले में यह भी कहना होगा कि भारतीय कानून के अनुसार भारत में जन्मे सभी धर्मों के अनुयायी हिंदू कानूनों की परिधि में आते हैं. जैसे हिंदू विवाह कानून सभी हिंदुओं, सिखों, जैनियों व बौद्धों पर लागू होता है.

पिछले दिनों तक पंजाब में प्रायः हर हिंदू कुटुंब में एक लड़का सिख बन जाता था, और हिंदूसिख के बीच रोटीबेटी का व्यवहार साधारण बात थी.

यह ठीक है अकालियों व सिख पंथ के धंधेबाजों ने हिंदुओं और सिखों को आपस में लड़ाने की पूरी कोशिश की, और कर रहे हैं, पर क्या यह भी आवश्यक है कि हिंदुओं के हितों का दम भरने वाली शिवसेना भी इस आग में पेट्रोल छिड़के?

इस बारे में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का रुख सराहनीय है. इस के नेताओं ने हमेशा सिखों को हिंदू समाज का अंग माना है और खालिस्तानियों के हाथों में खेलने से इनकार कर दिया है. अन्यथा संघ भी बदले में सिखों का संहार कर सकता था. वह भी उतना ही संगठित, धर्म के प्रति उतना ही अनुरक्त है, जितने अकाली सिख आतंकवादी सिख धर्म के प्रति.

बाल ठाकरे ने पहले महाराष्ट्रीय और दक्षिण भारतीय हिंदुओं में बैर बढ़ाया था. फिर अभी हाल में उन्होंने स्वर्णों और शूद्रों की खाई चौड़ी की—डा. अंबेदकर की पुस्तक के अंशों को प्रकाशित न करने की मांग से. अब वह हिंदुओं और सिखों को एकदूसरे से अधिक अलग करने की कोशिश में हैं. धर्म और धर्म के धंधेबाजों का असली स्वरूप तो यही है.

सरिता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोक सभा को सरकार ने बतलाया कि दिल्ली में 1987 में 10,510 वाहनों के धुआं उगलने के अपराध में चालान किया गया. पर यह नहीं बतलाया गया कि इस संख्या में सरकारी एकाधिकार प्राप्त दिल्ली परिवहन निगम की (जो भारत सरकार के लगभग 100 करोड़ रुपए घाटे में खा जाता है) कितनी बसें थीं, जिन का चालान किया गया.

दिल्ली के नागरिक इस तथ्य से भलीभांति परिचित हैं कि सड़कों पर धुआं फैलाने में दिल्ली परिवहन की बसों का स्थान प्रथम है.

कुछ दिन पहले बड़े जोरशोर से केंद्रीय परिवहन मंत्री ने धमकी दी थी दिल्ली में 10-12 जगह वाहन परीक्षण केंद्र स्थापित किए जाएंगे और सड़कों पर जो वाहन धुआं उड़ाता जाएगा, उस का तत्काल परीक्षण किया जाएगा और उस के मालिक को दंड दिया जाएगा. पर यह धमकी बंदर की घुड़की ही साबित हुई क्योंकि उस के बाद इस बारे में कुछ सुनने में नहीं आया. कहा जा रहा है कि दिल्ली परिवहन के मंत्री महोदय को बतला दिया कि यदि इस धमकी पर अमल किया गया तो परिवहन निगम की तीनचौथाई बसें पकड़ में आ जाएंगी और दिल्ली का परिवहन ठप हो जाएगा.

जब सरकार स्वयं अपने वाहन ठीक नहीं चला सकती—देश को 100 करोड़ रुपए वार्षिक की चपत मार कर भी—तो जनसाधारण से क्या और क्यों अपेक्षा की जाए?

वैसे, प्रदूषण फैलाने के दोपहिया व तिपहिया स्कूटर भी बहुत अपराधी हैं. इन के पेट्रोल में मोबिलआइल साथ पड़ता है. इस से जो निकास होता है, वह मोटे तेल के धुएं से ओतप्रोत होता है. जब तक इस प्रकार के स्कूटरों के इंजन बिना मोबिलआइल के मिश्रण के चलने वाले न बनें, प्रदूषण पूरी तरह नहीं रुक सकता. वैसे बसों, ट्रकों पर नियंत्रण अवश्य किया जा सकता है और तुरंत करना भी चाहिए.

मजहब की पकड़ और जकड़ इतनी मजबूत है कि सोवियत रूस में भी धार्मिक दंगों की खबर मिली है.

अजरबेजान मध्य एशिया में सोवियत संघ का एक शिया मुसलिम प्रधान राज्य है. इस में एक छोटा सा टुकड़ा आरमीनियन ईसाइयों का है. ये आरमीनियन ईसाई इस बात की कोशिश में लगे हैं कि उन का यह छोटा सा आरमीनियनस्तान आरमीनिया राज्य में मिलाया जाए.

गोरबाचौफ के सत्ता में आने से पहले इस प्रकार की खबरों पर कठोर सेंसर रहता था. कोई अप्रिय या ऐसी घटना जिसे सत्तारूढ नेता नहीं प्रचारित होने देना चाहें, दबा दी जाती थी. बाहरवालों के लिए और स्वयं सोवियत नागरिकों को भी हमेशा स्वच्छ, धुलीधुलाई खबरें दी जाती थीं ताकि लोगों में, देश के अंदर और बाहर, यह भ्रम बना रहे कि सोवियत संघ मानव का स्वर्ग है, जहां न बेकारी है, न भुखमरी है, न कोई जुर्म होता है, न दंगेफसाद होते हैं. जहां न कोई मतभेद या मानव कमजोरी का अस्तित्व है.

पर गोरबाचौफ के 'ग्लासनोस्त' (खुलापन) के सिद्धांत के अनुसार अब सोवियत संघ से खबरें आने लगी हैं और लगने लगा है कि आखिर रूस में भी आदमी बसते हैं, देवता या फरिश्ते नहीं.

अजरबेजान के धार्मिक दंगों की खबर बहुत संक्षिप्त और दबी हुई है. पर जितनी भी प्राप्त हुई है, उस से पता चलता है कि यह ईसाई मुसलमान दंगा आसानी से दबेगा नहीं और आगे चल कर रंग लाएगा.

रूस के सामने एक समस्या और भी है. यद्यपि सोवियत संघ में इस समय असली रूसी लोग 51% हैं, पर मध्य एशिया के क्षेत्र में जो मुसलिम बहुल राज्य हैं, वहां की जनसंख्या बड़ी तेजी से बढ़ रही है, जबकि रूसियों की जनसंख्या लगभग स्थिर है. अगले 20-30 वर्षों में संभावना यही है कि रूसी अल्पसंख्यक हो जाएंगे और मध्य एशिया के मुसलिम धर्मावलंबी अपना बहुमत दावे के साथ पेश करने लगेंगे. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आम आदमी के लिए केंद्रीय बजट अब राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के महत्त्वपूर्ण दस्तावेज की शक्ल में नहीं, बल्कि ऐसे सालाना तमाशे के रूप में पेश होता है, जिस में अर्थव्यवस्था के तमाम पहलुओं पर आंकड़ों की बाजीगरी के साथसाथ कीमतों और करों की मार और भी तेज हो जाती है.

हमारे देश में कोई एक बजट तो है नहीं, कई बजट हैं. पहला बजट 28 या 29 फरवरी को पेश होता है. उस के छः महीने बाद पूरक बजट आता है. इस पूरक बजट में कई हजार करोड़ रुपयों की मांग होती है. फिर संशोधित बजट पेश होता है और जब अगले साल का बजट पेश होता है तो इसे वास्तविक बजट कहा जाता है. देश के आर्थिक रक्तचाप का मापदंड कहा जाने वाला यह बजट भी जीवन के संघर्ष से जूझ

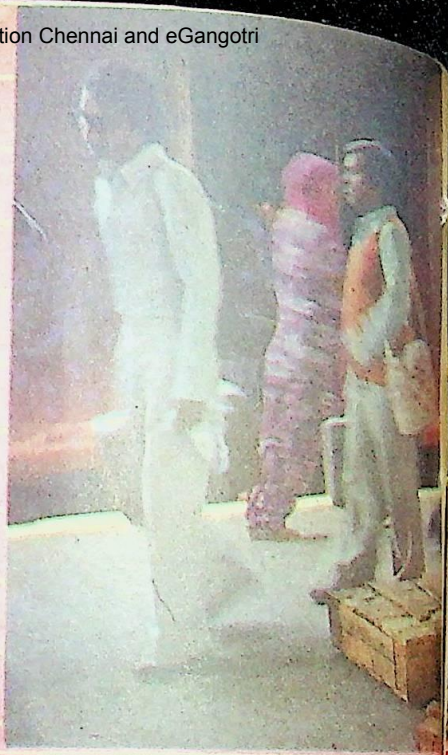

केंद्रीय बजट : एक छलावा

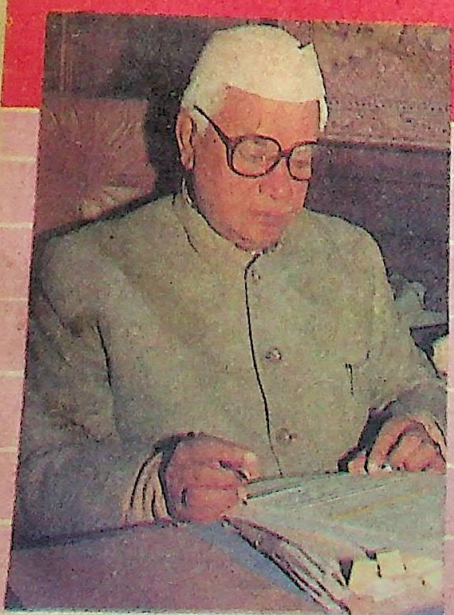

लेख • जगदीश चावला

रहे आम आदमी को अब उतना आश्वस्त नहीं करता, जितना कि आतंकित करता है. इस बजट द्वारा आम नागरिकों को उतनी राहतें नहीं मिल पातीं, जितनी कि उन की चिंताओं में बढ़ोतरी हो जाती है.

नारायण दत्त तिवारी : भले ही यह दावा करें कि उन का यह बजट समाजवादी है लेकिन वास्तविकता यह है कि जनता पर आर्थिक बोझ बढ़ा दिया गया है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

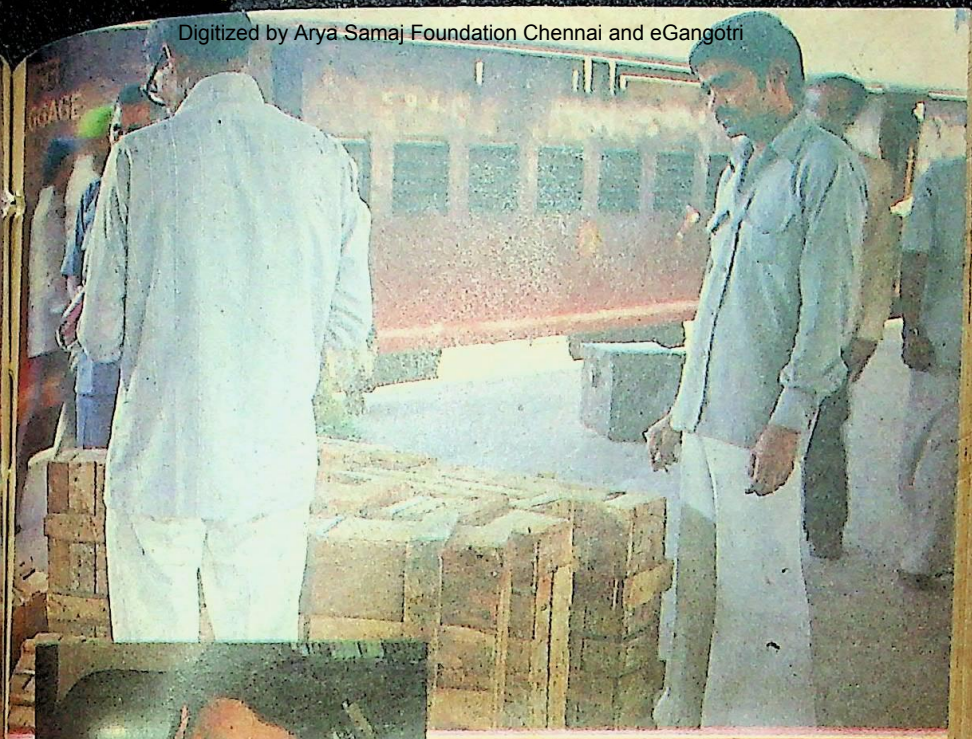

रेल भाड़ों में की गई वृद्धि के बावजूद प्लेटफार्म तथा प्रतीक्षालय की बदतर स्थिति में कोई सुधार नहीं हुआ (ऊपर)

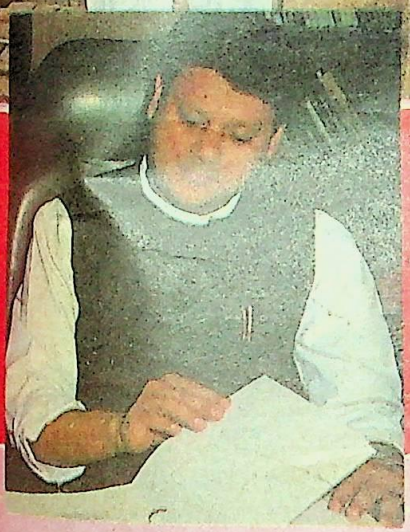

रेलमंत्री माधवराव सिंधिया किराए की वृद्धि के साथसाथ यदि रेलों की स्थिति में सुधार लाएं तो कोई बात बने (बाएं)

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 112 के तहत यह सरकार की संवैधानिक जिम्मेदारी है कि वह वर्ष भर के आयव्यय का अनुमानित लेखाजोखा सदन के सामने रखे ताकि उस के तमाम पहलुओं पर सदन की सही राय जानी व समझी जा सके. संसद में पेश हुए बजट में आयव्यय के सवालों पर संसद की प्रतिक्रिया जानने के पीछे

देश के आर्थिक रक्तचाप का मापदंड कहा जाने वाला केंद्रीय बजट अब अर्थशास्त्रियों का न हो कर राजनीतिबाजों के हाथों का एक खिलौना बन कर रह गया है जो आम जनता को एक छलावा सा महसूस होता है. हमारे राजनीतिबाज आखिर कब तक जनता को इस प्रकार छलते रहेंगे?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संवैधानिक मंशा भी यही होती है कि अर्थव्यवस्था में जनता के पैसे से जुड़े हर पहलू की गहरी पड़ताल की जाए.

मगर लगता है कि अब वह मंशा भी लोगों को रियायतें न दे कर मात्र दिलासा ही देती है. बजट के मामले में यह जानना जरूरी है कि बजट किस आर्थिक और राजनीतिक पृष्ठभूमि में तैयार किया गया है और कौन सी समस्याएं व चुनौतियां हैं जिन का समाधान सरकार को करना है क्योंकि बजट चुनौतियां से लड़ने का एक हथियार ही तो है.

लेकिन घाटे और मंदी से ज्यादा अपने वोटों की चिंता करने वाली सरकार अब बजट से पहले ही करोड़ों रुपए केअतिरिक्त कर लगा कर अपना कोटा पूरा कर लेती है. जैसे इस्पात, कोयले, तेल और रेल भाड़े व टेलीफोन और डाक आदि की दरों में बढ़ोतरी कर के सरकार पहले ही करीब 3,371 करोड़ रुपए जनता से ऐंठने के प्रबंध कर चुकी है. उस के मुकाबले यदि वित्त मंत्री आम बजट में 545 करोड़ रुपए के नए करों को 'मामूली' कह कर जनता पर थोपने की कोशिश करें तो वह सहजता से ऐसा कर सकते हैं.

उल्लेखनीय है कि बजट से पूर्व जब प्रशासन के आदेश से मूल्यवृद्धि की जाती है तो इस अतिरिक्त उगाही का कोई हिस्सा राज्यों को नहीं मिलता, बल्कि सारा का सारा केंद्र की जेब में ही जाता है. इस से बजट की अवधारणाएं निश्चय ही जहां ध्वस्त होती हैं, वहीं पर यह परिपाटी जनता को दबाने का भारी पत्थर भी जान पड़ती है.

दरअसल जब से सरकार ने कोयला व इस्पात आदि के दाम बढ़ाए थे तभी से यह आशंका थी कि रेल भाड़े भी बढ़ेंगे, जो बाद में रेल बजट से बढ़ भी गए. संसद में रेल बजट के समय यह बात तो खुद रेल मंत्री माधवराव सिंधिया ने ही स्वीकार की थी कि पिछले तीन महीनों के दौरान देश में 195 रेल दुर्घटनाएं हुईं. इन में 95 व्यक्तियों की मृत्यु हुई और 182 लोग घायल हुए. नवंबर से जनवरी के दौरान रेलगाड़ियों में 11 आपसी टक्करें हुईं. 154 बार गाड़ियां पटरी से उतरीं और क्रासिंग पर 25 दुर्घटनाएं हुईं तथा पांच बार गाड़ियों में आग लगी. जबकि भारतीय रेलों, स्टेशनों, प्लेटफार्मों, प्रतीक्षालयों, भोजनालयों व आरक्षण आदि में अब भी कोई सुधार नजर नहीं आता.

करोड़ों के बजट के बाद भी यदि भारतीय रेलें समय की पाबंद न हों, आरक्षण या टिकट बिक्री की प्रणाली कहींकहीं कंप्यूटरीकरण के बावजूद संतोषजनक न हो, प्लेटफार्म तथा प्रतीक्षालय साफसुथरे न हों और गाड़ी के अंदर तथा गाड़ी के बाहर खाना महंगा और खराब मिलता हो तथा यात्रियों की जानमाल की रक्षा का इंतजाम भी बदतर दिखाई दे तो रेल भाड़ों में की गई वृद्धि जनता को सरासर धोखा ही नजर आएगी. रेल मंत्री किरायों का सवाया कर दें पर रेलगाड़ियों को गर्व करने योग्य तो बनाएं.

सिर्फ यात्रा करना ही महंगा हुआ होता तो उसे जैसेतैसे जनता भी बरदाश्त कर लेती. मगर यहां तो अब चिट्ठी लिखना और टेलीफोन करना भी महंगा हो चुका है. अंतर्देशीय पत्र की कीमत 35 पैसे से 50 पैसे

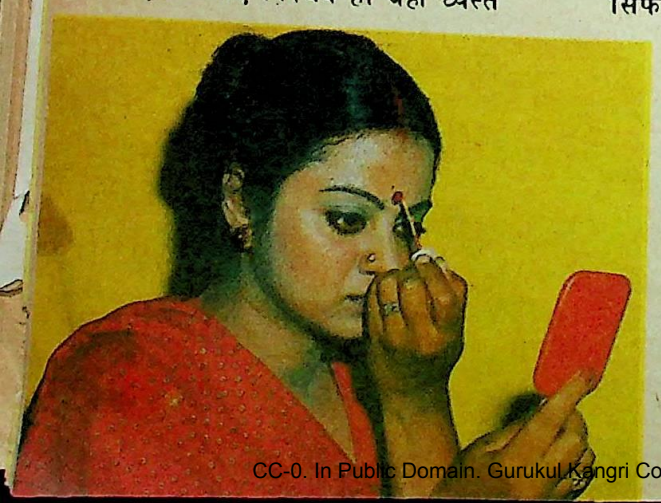

सिंदूर, बिंदी पर नाममात्र को छूट न दे कर यदि गृहिणी की आम जरूरतों पर छूट दी होती तो यह बजट उपयोगी होता.

अरिता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

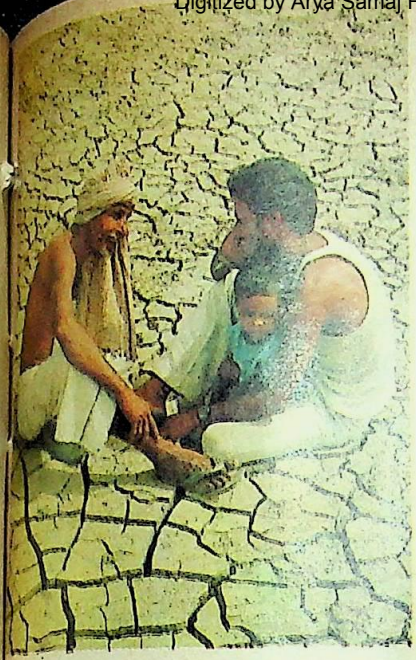

'किसान विकास पत्र' जैसी योजनाएं क्या सूखे से प्रभावित किसानों का पेट भर सकेंगी?

और लिफाफे पर स्टेशनरी शुल्क बढ़ा कर 15 पैसे कर देना, रजिस्ट्री में 50 पैसे बढ़ा देना, मनीआर्डर के शुल्क में वृद्धि कर देना दरअसल निचले तबके के साथ ज्यादती नहीं तो और क्या है? पूछा जा सकता है कि डाकदरों में बढ़ोतरी कर के क्या सरकार ने आम लोगों के बीच परस्पर संपर्क खत्म करने की चेष्ट नहीं की? इसी तरह टेलीफोन की दरों में वृद्धि कर के सरकार ने दूरसंचार विभाग को लोगों की आलोचनाओं का शिकार बना दिया है.

टेलीफोन सेवा की खस्ता हालत

कौन नहीं जानता कि हमारी टेलीफोन सेवाएं सिर्फ महानगरों में ही नहीं, छोटे एक्सचेंज वाले कसबों में भी खराब रहती हैं. विभागीय आंकड़े दरशाते हैं कि 1979 में हर माह प्रति 100 टेलीफोनों में से 42.10 टेलीफोन खराब रहते थे. और इन टेलीफोनों की औसत खराबी भी 5.35 घंटे रहती थी. 1985 तक इतनी प्रगति अवश्य हुई कि खराब टेलीफोनों का प्रतिशत घट कर 31.26 प्रति माह रह गया जबकि उन के खराब रहने की अवधि बढ़ कर 8.73 घंटे प्रति माह हो गई. बरसात में तो सारी टेलीफोन व्यवस्था ही ठप सी हो कर रह जाती है. टेलीफोन प्रणाली में अपेक्षित सुधार किए बिना उपभोक्ताओं को दूरसंचार की दरों में की गई बढ़ोतरियां भी अन्यायपूर्ण ही लगती हैं.

सरकार अब यही दलील दे कर चीजों के दाम बढ़ाती है कि उस का असर गरीबों पर नहीं पड़ेगा. लेकिन यह भी एक भ्रम है. यदि पेट्रोलियम महंगा होगा तो उस से यातायात का खर्च और पेट्रोलियम पदार्थ भी अवश्य प्रभावित होंगे. इसलिए ऐसी दलीलें जहां जनता को आंकड़ों की भूलभुलैया में डालती हैं, वहीं पर बजट की मर्यादाओं को भी ध्वस्त करने का सबब बनती हैं.

वैसे भी देखा जाए तो बजट से पहले कीमतें बढ़ाने का सिलसिला अलोकतांत्रिक है. इस के रहते बजट का सारा औचित्य ही खत्म सा हो जाता है. एक जमाना वह था, जब लोग केंद्रीय बजट का बड़ी उत्सुकता से इंतजार किया करते थे कि उन पर कितना बोझ बढ़ा या कम हुआ. तब विकास की सारी योजनाएं देश के आर्थिक मिजाज और अर्थव्यवस्था के तेवरों को देख कर ही बनाई जाती थीं.

मगर अब बजट से पूर्व उन तेवरों की समीक्षा तक नहीं होती. जिस से लगता है कि अब बजट भी अर्थशास्त्रियों का न हो कर राजनीतिबाजों का हो गया है, जो गरीबों को कपड़े मयस्सर कराने का लालच दे कर उन के तन से रहेसहे वस्त्र भी उतारने की चेष्टा करते हैं.महंगाई, गरीबी, भूख, शिक्षा, चिकित्सा जैसे अहम सवाल जहां अब पूरे तौर पर सरकार की मरजी और मनमानी पर छोड़ दिए गए हैं, वहीं पर बजट जैसे महत्त्वपूर्ण आर्थिक दस्तावेज से आम आदमी की लगातार बढ़ती दूरी और उदासीनता भी बजट के संपूर्ण आर्थिक महत्त्व को बराबर कम करती जा रही है. 1988-89 का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केंद्रीय बजट भी इसी सिलसिले की एक कड़ी है.

केंद्रीय वित्त मंत्री नारायणदत्त तिवारी ने इस बार संसद में जो बजट पेश किया, वह आजादी के बाद का 53 वां बजट था, जबकि स्वाधीन भारत का पहला बजट 26 नवंबर, 1947 को तत्कालीन वित्त मंत्री आर. के. षण्मुखम चेट्टी ने रखा था.

इस में कोई शक नहीं कि बतौर वित्त मंत्री नारायणदत्त तिवारी ने संसद में 1988-89 का बजट प्रस्तुत कर सदन के सत्तारूढ सांसदों की खूब वाहवाही लूटी और उस पर बजने वाली तालियों का नया कीर्तिमान स्थापित किया, मगर सदन के बाहर हुई प्रतिक्रियाओं पर सरकार के कानों पर जूं तक नहीं रेंगी. मौजूदा बजट को जहां नागरिकों ने महंगाई और मुद्रास्फीति बढ़ाने वाला बजट बताया, वहीं पर उन्होंने वित्त मंत्री के बजट भाषण को भी अर्थव्यवस्था के दिवालिएपन का जीवंत उदाहरण करार दिया.

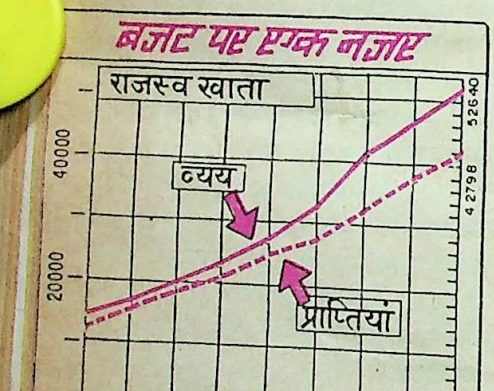

वित्त मंत्री ने नए बजट में जिस ढंग से स्टेनलेस स्टील के बरतनों, जीवन रक्षक दवाओं, सीमेंट, बाल फिल्मों, खिलौनों, हाथ के औजारों, रसोईघर के काम आने वाले कुछ बिजली के उपकरणों, दीवार घड़ियों तथा कवार्टस घड़ियों, छोटे बिजली के गणना उपकरणों, जैम, जैली, अचार, कांच के सामान, हथकरघे पर बने जनता कपड़ों और महिलाओं के काम आने वाले काजल, सिंदूर और अलतामहावर जैसे सौंदर्य प्रसाधनों में कुछ रियायतें कर समाज के सभी वर्गों को झुनझुने थमाए, उस से लगता है कि वर्तमान संकटों से ध्यान हटा कर रियायतों के जरिए राजनीतिक माहौल को सत्तारूढ दल के लिए अनुकूल बनाने की चेष्टा की गई है.

इसी तरह, आयातित कंप्यूटर सामग्री, कारों, रंगीन टेलीविजनों, बड़े एयर-कंडीशनरों तथा बादाम, किशमिश और छुहारों को महंगा कर के वित्त मंत्री भले ही यह दावा करें कि उन का बजट संतुलित और समाजवादी है, लेकिन वास्तविकता यही है कि जो रियायतें एक दरवाजे से दी गई हैं, उन्हें दूसरे दरवाजे से लेने की तैयारी भी साथसाथ की गई है. तभी तो नए बजट में 545.69 करोड़ रुपयों के नए करों के बोझ से जनता को फिर दबा दिया गया है.

हालांकि पिछले वर्ष बतौर वित्त मंत्री अपने बजट में प्रधान मंत्री राजीव गांधी ने 5,688 करोड़ रुपए का अनुमानित घाटा दिखा कर आश्वस्त किया था कि अगले वर्ष तक घाटा इस से अधिक नहीं बढ़ेगा. लेकिन मौजूदा वित्त मंत्री तो राजीव गांधी के उस आश्वासन को भी झुठलाते हुए दिखाई दिए, जब उन्होंने वर्ष 1987-88 का संशोधित घाटा 6080 करोड़ रुपए का बताया.

इस बार उन्होंने भी नए करों और रियायतों के बावजूद, अब 7,484 करोड़ रुपए का घाटा फिर खुला छोड़ दिया है. हर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

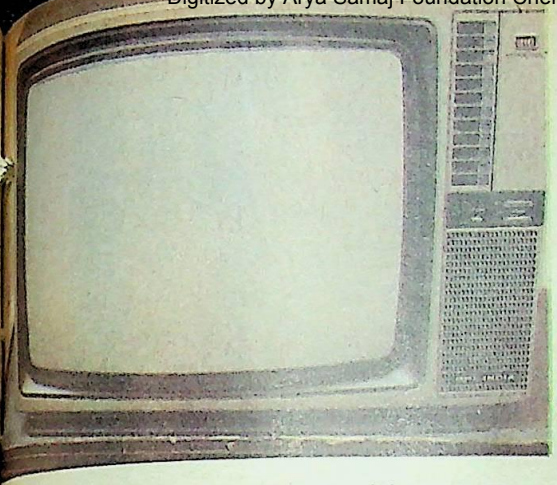

आम जरूरत की वस्तु टेलीविजन भी अब महंगे.

साल इसी प्रकार बढ़ता हुआ यह घाटा कैसे पूरा होगा, इस पर बजट और सरकार की खामोशी भी समझ से परे जान पड़ती है.

नए नोट छाप कर घाटा पूरा करने की नीति अपनाने के दो दुष्परिणाम होते हैं, पहला यह कि मुद्रास्फीति बढ़ती है. मूल्य सूचकांक में 10% की वृद्धि पहले हो ही गई है. इतने बड़े घाटे के बजट से मूल्यों में अभी और वृद्धि होने की आशंका है. दूसरा दुष्प्रभाव यह है कि देश पर ऋणों का भार बड़ी तेजी से बढ़ता है. बजट घाटा पूरा करने के लिए सरकार जो ऋण रिजर्व बैंक और व्यवसायी बैंकों से लेती है, उस पर उसे ब्याज देना होता है. इस ब्याज का भार 1987-88 के बजट अनुमानों के अनुसार 10,650 करोड़ रुपए था. संशोधित अनुमानों में यह बढ़ कर 11,450 करोड़ हो गया और 1988-89 के बजट में यह और बढ़ कर 14,100 करोड़ रुपए हो गया है. यह अनुमानित उधार 7,000 करोड़ रुपए से दोगुना है. देश आंतरिक ऋण जाल में जब इतना फंसा है और ऐसे ही विदेशी कर्ज उस के सिर पर चढ़ते जा रहे हैं तो इन कर्जों का बोझ ले कर वह आत्मनिर्भरता की ओर नहीं बढ़ सकता.

पिछले तीन सालों से राजीव गांधी देश को 21 वीं सदी की ओर ले जाने का शोर मचा रहे हैं, विज्ञान और टेक्नालोजी की गुहार लगा कर देश के उद्योगों को उन्नत बनाने का नारा दे रहे हैं. मगर हाल के आंकड़ों से पता चलता है कि 1 लाख 72 हजार कारखाने, जिन्हें सरकार बीमार कहती है, बंद कर दिए गए हैं और दूसरी तरफ सार्वजनिक क्षेत्र में चलने वाले उद्योगों पर देश का 62,000 करोड़ रुपया लग चुका है. लेकिन इन का नतीजा कभी संतोषजनक नहीं रहा.

आज देश में 3 करोड़ 5 लाख पंजीकृत बेरोजगार हैं. देहातों, कसबों के गैर पंजीकृत बेरोजगारों को शामिल करें तो यह संख्या 9 करोड़ के करीब हो जाती है. मौजूदा बजट में बेरोजगारी, भ्रष्टाचार और कालेधन से जूझने के लिए कोई योजना नहीं है, जबकि ग्रामीण इलाकों से लघु बचत के नाम पर पैसा खींचने के लिए 'किसान विकास पत्र' नाम की एक नई योजना का प्रावधान है.

देखा जाए तो सरकार ने सूखे की आड़ में किसानों को जो राहतें देने का दावा किया है, वह भी उन्हें भुलावा देने की एक दिलफरेब कोशिश है. वित्त मंत्री की ओर से यह कहा गया है कि पहली बार बजट में किसानों को महत्त्व मिला है. उन को दिए जाने वाले ऋणों की दरें घटा दी गई हैं. रासायनिक खाद के दाम कम किए जा रहे हैं और किसानों के फायदे के लिए कई योजनाएं शुरू हो रही हैं. मगर कृषि व्यय है ही कितना कि उस पर 40% वृद्धि का ढोल पीट कर दिखाया जाए. कृषि व्यय में की गई इस वृद्धि या किसानों को दी गई दूसरी रियायतों से न तो अकाल के मारे किसान जी उठेंगे और न ही खेती उन के लिए रातोरात लाभ का सौदा हो जाएगी.

सभी जानते हैं कि पिछले चार दशकों में देश की पैदावार भी लगातार घटी है, बढ़ी नहीं. और किसान के पास भी खेती के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

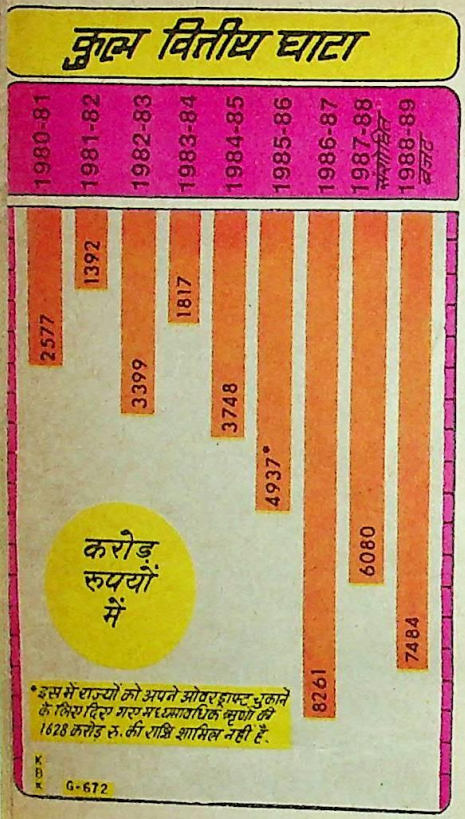

सदियों पुराने साधन हैं. खेती के मामले में बिजलीपानी की आपूर्ति भी असंतोषजनक है. ऐसे में किसान उतना उत्पादन नहीं कर सकता जितना कि वह सोचता है. फिर सूखे से प्रभावित किसान लगान, खाद, बीज और पानी की कीमतें चुका कर अंत में क्या पाएगा, यह बात तो वह खुद भी नहीं जानता.

देश में सूखे का असर कब तक प्रभावी रहेगा यह तो अगले मानसून से ही पता चल पाएगा, लेकिन फिलहाल किसान की रीढ़ सूखे ने ही दबोच रखी है. सूखे के रहते कौन सा किसान अपने पेट पर पट्टी बांध कर 'किसान विकास पत्र' जैसी योजना का पेट भरेगा. यह बात तो वित्त मंत्री ही बता सकते हैं.

राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार कार्यक्रम और ग्रामीण भूमिहीन गारंटी कार्यक्रम के अंतर्गत 10 लाख कुओं की खुदाई से अस्थायी रूप से तो कई लाख लोगों को रोजगार मिल सकता है, लेकिन वह समस्या कोई मुकम्मिल समाधान नहीं. नलकूपों और कुओं आदि की खुदाई वैसे भी कई बार कागजों पर हो कर रह जाती है.

इस तरह से जाहिर है कि नारायणदत्त तिवारी का उद्देश्य असल में किसानों को राहत देना नहीं है, बल्कि उन उद्योगों को राहत देना है जो सरकारी क्षेत्र में जैसेतैसे चलाए जा रहे हैं तथा जिन में मंत्रियों की दखलअंदाजी बहुत अधिक होती है. सरकारी उपक्रमों को चालू करते समय सरकार समझती थी कि ये उपक्रम पैसा कमा कर देंगे, जबकि ये उलटे अब घाटे का सबब बनते जा रहे हैं. देश, घाटे में चलने वाले इन सरकारी उपक्रमों के बोझ को अब और झेलने को राजी नहीं है, जबकि सरकार इन्हें घाटे की स्थिति में भी चालू रखने पर कृतसंकल्प है.

जाहिर है कि यदि घाटे में चल रहे सरकारी उपक्रमों के बारे में सरकार ने अपना दृष्टिकोण नहीं बदला तो किसी न किसी दिन समूची अर्थव्यवस्था ही चरमरा कर गिर जाएगी. 1987-88 के पूर्वार्द्ध में घाटा देने वाले सार्वजनिक क्षेत्र के उद्योगों में

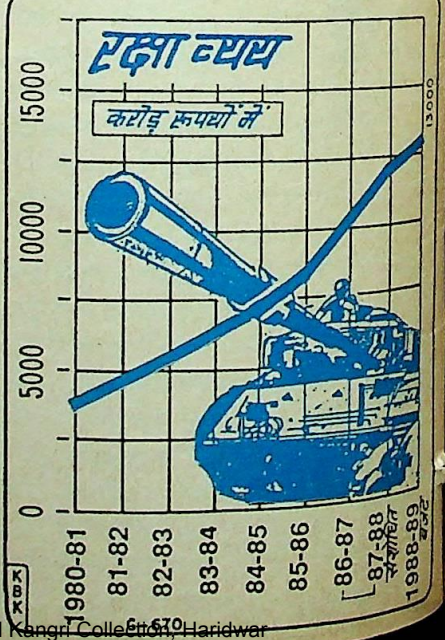

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

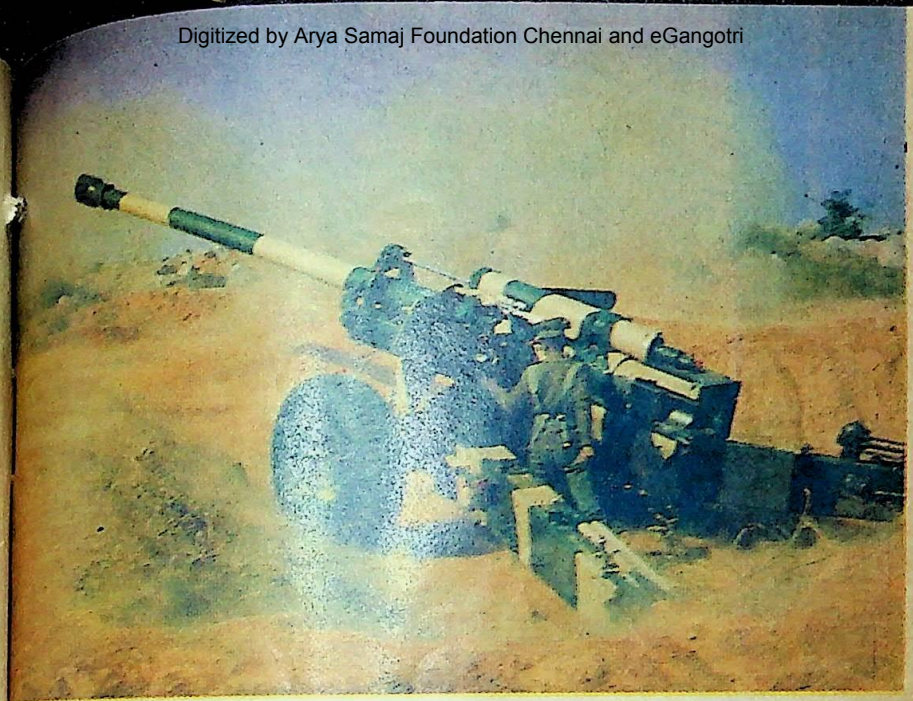

सरकार द्वारा रक्षा सामग्री पर आवश्यक खर्चों का बढ़ाया जाना जनता की जेब से जबरदस्ती पैसा छीनना नहीं तो और क्या है? ▲

और इजाफा हुआ है. ज्यादातर इस्पात, कोयला और राष्ट्रीयकृत कपड़े की मिलों ने 990 करोड़ से ले कर 1,352 करोड़ तक का घाटा दिखाया. इस हालत में क्या जरूरी है कि घाटा देने वाले उद्योगों को चालू रखा जाए? यह स्थिति मौजूदा अर्थव्यवस्था की बरदाश्त से बाहर है.

सूखे की स्थिति से सरकार कैसे निपट रही है, यह तो वही जानती है, लेकिन पिछले वर्ष सूखे की वजह से 50 हजार रुपए से अधिक करदेय आमदनी पर वित्त मंत्री ने जो 5% धनकर पर 44% और आवश्यक वस्तुओं को छोड़ कर अन्य वस्तुओं के आयात पर 5% सीमा शुल्क अधिभार लगाया था, उसे एक वर्ष और चालू रखने का प्रस्ताव रखा गया है.

इसी तरह वित्त मंत्री ने वेतन से होने वाली कर देय आय सीमा 30% से बढ़ा कर 33½ प्रतिशत कर दी और कम से कम देय रकम को 10 हजार से बढ़ा कर 12 हजार रुपए कर दिया. बढ़ती हुई महंगाई के लिहाज से यह सीमा अपर्याप्त है.

सरकार ने जहां वेतनभोगियों को निराश किया, वहीं पर उस ने विरासत में अत्यधिक धन पाने वाले ऐसे करदाताओं पर धनकर की पांच गुनी दर से कर लगाया है, जिस से धनाढ्य वर्ग भी इस नए कर से बिलबिला उठेगा.

बजट पर अपनी तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए एक महिला ने बताया कि "सिंदूर, बिंदी और महावर पर छूट न दे कर यदि सरकार हम गृहिणियों के लिए रसोई गैस, मिट्टी के तेल, वनस्पति घी और दालों आदि की कीमतें कम करने का यत्न करती तो हम समझतीं कि सरकार सचमुच महिलाओं का कल्याण चाहती है. इस लिहाज से यह बजट हमारे लिए तो उपयोगी नहीं है."

36 सेंटीमीटर से बड़ी स्क्रीन वाले रंगीन टेलीविजन पर उत्पादन शुल्क की बढ़ोतरी से रंगीन टेलीविजन की कीमत 250 रुपए बढ़ी. पर वास्तव में कुल मिला कर इस की कीमत में 500 रुपए की वृद्धि

(शेष पृष्ठ 113 पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केतकी अपनी बेटी दीक्षा को मन से चाहती थी. दीक्षा भी मन की गहराइयों से अपनी मां से जुड़ी थी. उन के मध्य कोई तीसरा भी नहीं था और तीसरे की कल्पना भी शायद अभी दोनों के मन में नहीं उभरी थी.

केतकी का प्यार अकसर एक स्वप्न देखता था—दीक्षा से बंध कर एक सुदृढ़ आधार पाने का स्वप्न. सुरक्षा और बुढ़ापे के आश्रय की गारंटी. उसी में वह जी रही थी. केतकी हर सांस में मात्र दीक्षा के लिए ही जी रही थी. वह दीक्षा के चारों तरफ कुछ इस

कहानी • डा. इंदु बाली

स्वतंत्रता

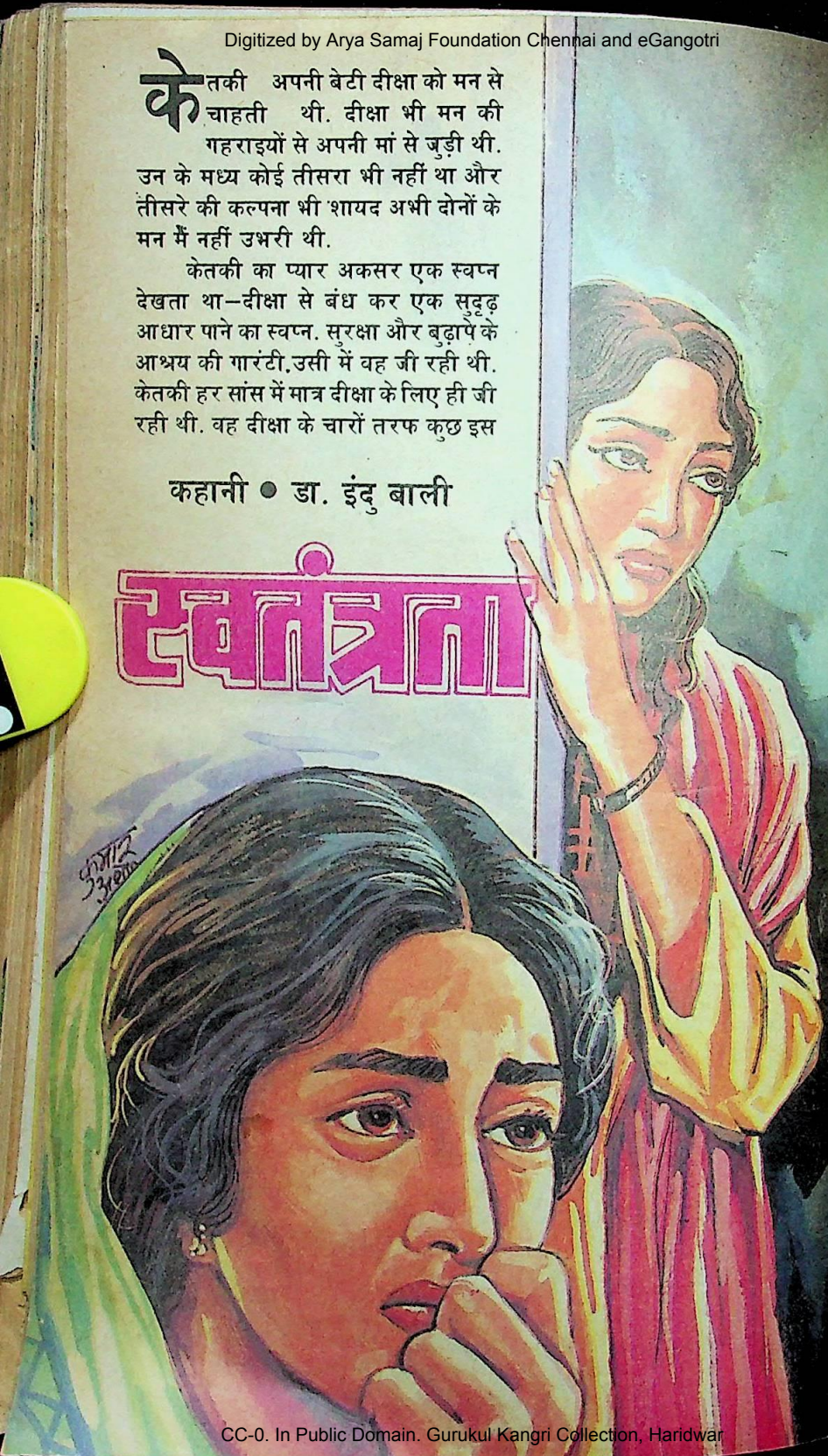

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहा कैसी थी कि दीक्षा न तो स्वयं उठ सकती थी, न ही नहा सकती थी. कंघी भी कर और खाना भी मां खिलाए.

बस, जैसेतैसे दीक्षा स्कूल जाती थी और लौट कर नन्हे बच्चे की तरह मां का मुंह ताकती रहती थी या उस से चिपकी रहती थी.

"मां, यह दे दो, मां यह कर दो... मां, सुना दो."

केतकी सारा दिन नाचती रहती थी. एक पल भी उस का अपना नहीं था, जब वह अपने लिए सोच पाए. दीक्षा का भी कोई पल ऐसा नहीं था, जब वह अपने बारे में स्वतंत्र रूप से सोच पाए. बस, हर पल उस की सोचें मां के आसपास ही घूमती रहती थीं. दोनों को देख कर ऐसा लगता था, जैसे जन्म के समय दाईमां नाल काटना भूल गई हो और अभी भी वह मांबेटी के बीच लटका हो. हर बात के लिए एकदूसरे पर आश्रित. बस, अंतर केवल इतना था कि गर्भ के समय वह मां के पेट में थी और अब बाहर.

समय भाग रहा था और दीक्षा बड़ी हो रही थी. मानसिक और शारीरिक तनाव उसे घेरने लगा था. मांबेटी के संबंधों में भी तनाव आने लगा था. स्कूल की बात और थी. अब दीक्षा कालिज में थी और उस के मित्र उसे 'मां बेटी' कह कर सताते थे. दीक्षा को अपनेआप कुछ भी करना न आता था.

केतकी की हर सोच का केंद्र उस की बेटी दीक्षा थी. उस के साए में दीक्षा का अस्तित्व सिमट कर रह गया था. लेकिन धीरेधीरे दीक्षा अपने अस्तित्व को पहचानने के लिए केतकी के साए से स्वतंत्र होना चाह रही थी? क्या उसे स्वतंत्र कर केतकी खुद भी स्वतंत्र हो पाई?

दीक्षा के सहपाठी उसे मांबेटी कह कर चिढ़ाते रहते थे.

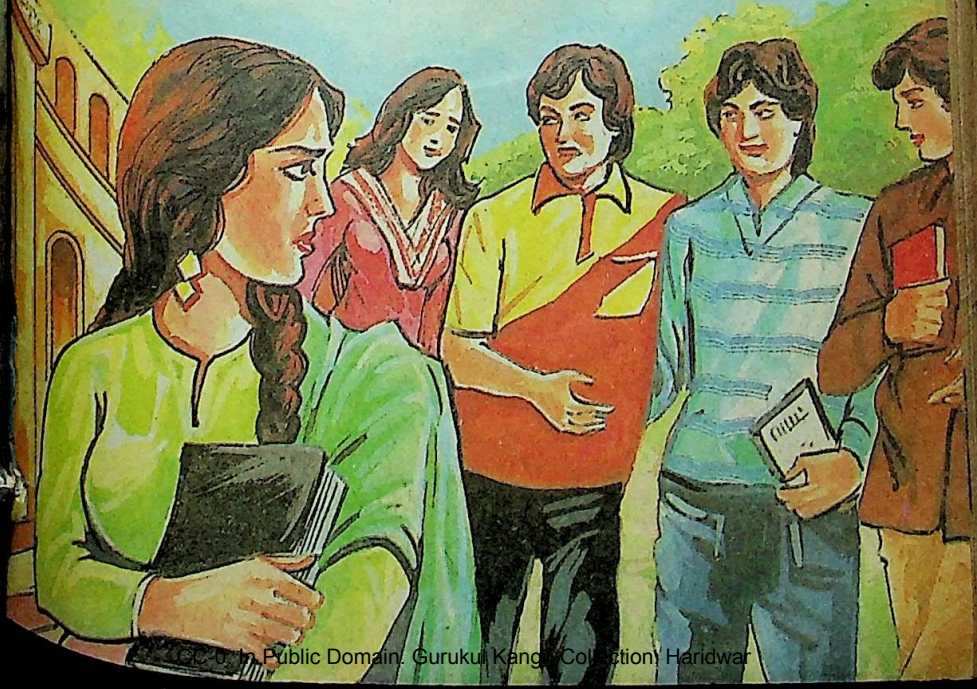

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक बार सहपाठियों के साथ वह सैर करने कालिज की ओर से दूसरे शहर चली गई. तब उस ने महसूस किया कि वह तो कुछ भी नहीं कर सकती. खैर, किसी तरह मुंह हाथ धो कर वह बाहर आई और अपनी प्यारी सहेली से अनुरोध किया कि वह उस के बाल बना दे. सहेली ने बाल बना तो दिए पर उसे काफी अजीब लगा कि इतनी बड़ी लड़की और बाल नहीं बना सकती. वह मौन रही.

अगले दिन दीक्षा ने उसे सलवार में नाड़ा डालने को कहा. सहेली ने डाल दिया. शाम को कमीज उधड़ गई और उस ने सीने को कहा, वह भी सी दी गई. खाना भी वह ढंग से नहीं खा पाई. उस की सहेलियां उसे अजीबअजीब नजरों से देखने लगीं.

उस के कपड़े इधरउधर फैले थे. वह चार दिन से नहाई भी नहीं थी. बिस्तर भी अस्तव्यस्त पड़ा था. दीक्षा को पहली बार यह महसूस हुआ कि वह मां पर बेहद निर्भर है. वह मां के बिना एकदम पंगु हो गई थी. सहेलियां काम तो कर देती थीं, पर धीरेधीरे उपहासजनक अंदाज में हंसती रहती थीं, कुछ कानाफूसी भी होती रहती थी. उसे लगने लगा जैसे वह उन सब के लिए अजनबी हो, अपनी उमर की लड़कियों से भिन्न. मां के प्रति उस का प्रेम आक्रोश में बदलने लगा था.

उधर केतकी का दीक्षा के बिना बुरा हाल था. उस के पास बेटी पर प्यार लुटाने के अलावा कोई काम ही नहीं था. उस ने पिछले 17 साल इस बारे में कभी सोचा ही न था. उस के सारे काम, सोचें और प्यार की धुरी केवल दीक्षा ही थी. एक सप्ताह बिताना उस के लिए इतना भारी हो गया कि न तो वह ढंग से खा पाई न सो पाई और अंत में बीमार हो गई. पड़ोस की औरतों ने उसे संभाला.

सभी ने सलाह दी कि जवान बेटी है. उसे तार दे कर बुला लो, तुम्हारी सेवा करेगी. केतकी परेशान थी. क्या होगा उसे बुला कर दीक्षा क्या कर पाएगी, बल्कि उसे ही उस का सारा काम करना पड़ेगा. केतकी ने अपने बारे में कभी सोचा ही न था. अब लग रहा था कि उस ने दीक्षा के बारे में कहां सोचा था. केतकी की मानसिकता भी अस्वस्थ होने लगी थी और उसी के जाल में वह उलझती चली गई थी.

वैसे देखा जाए तो कोई भी व्यक्ति पूरी तरह सामान्य नहीं होता. दैनिक जीवन की कठिनाइयों, उतारचढ़ावों में सभी को कभी निराशा, चिंता, बेचैनीघबराहट, उत्साह हताशा आदि की स्थितियों से गुजरना पड़ता है.

इन सब बातों का व्यक्ति के मन पर असर होता है. फिर केतकी की मानसिकता भी इसी ताने-बाने से बनी थी. वह दीक्षा को मां का नहीं, पिता, भाई, बहन सब का प्यार देना चाहती थी. कभी कोई अभाव न रह जाए, यही दुश्चिंता उसे घेरे रहती थी. उसे तरहतरह के भ्रामक विचार घेरते रहते थे.

पर मांबेटी का आपसी प्यारदुलार अब दोनों को क्यों भारी पड़ने लगा था? यह एक विराट प्रश्नचिह्न था. दीक्षा भी जब से लौटी थी, बहुत उदास थी. वह मां के नहलाते हाथ रोक लेती थी. खाना खिलाते, दुलारते हाथ झटक देती थी. मां के कंघी करते हाथ उसे पीड़ा देने लगते थे. वह मां के प्यार रूपी साए से दूर रह कर बढ़ने की चाह करने लगी थी. अब लोगों के व्यंग्य और हंसी उस से सहन नहीं होते थे.

उस दिन तो हद ही हो गई, जब तनुज ने कहा, "भई, दीक्षा तो उसी से शादी करेगी जो उसे ढंग से नहला सके, खाना खिला सके, कंघी कर सके इत्यादिइत्यादि."

सभी सहेलियां खिलखिला कर हंसने लगी थीं, पर दीक्षा को लगा था जैसे उस के सारे शरीर पर चाबुकें पड़ रही हों और मस्तिष्क में बिच्छू डंक मार रहे हों. उसे लगा जैसे उस की मां एक वटवृक्ष है जिस के नीचे जो भी उगेगा, वह बौना रह जाएगा, बड़ा नहीं हो पाएगा. फिर दीक्षा को तो उस ने जन्म दिया था, वह कैसे अलग हो पाएगी. दीक्षा वजहबेवजह इन्हीं विचारों में घिर कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

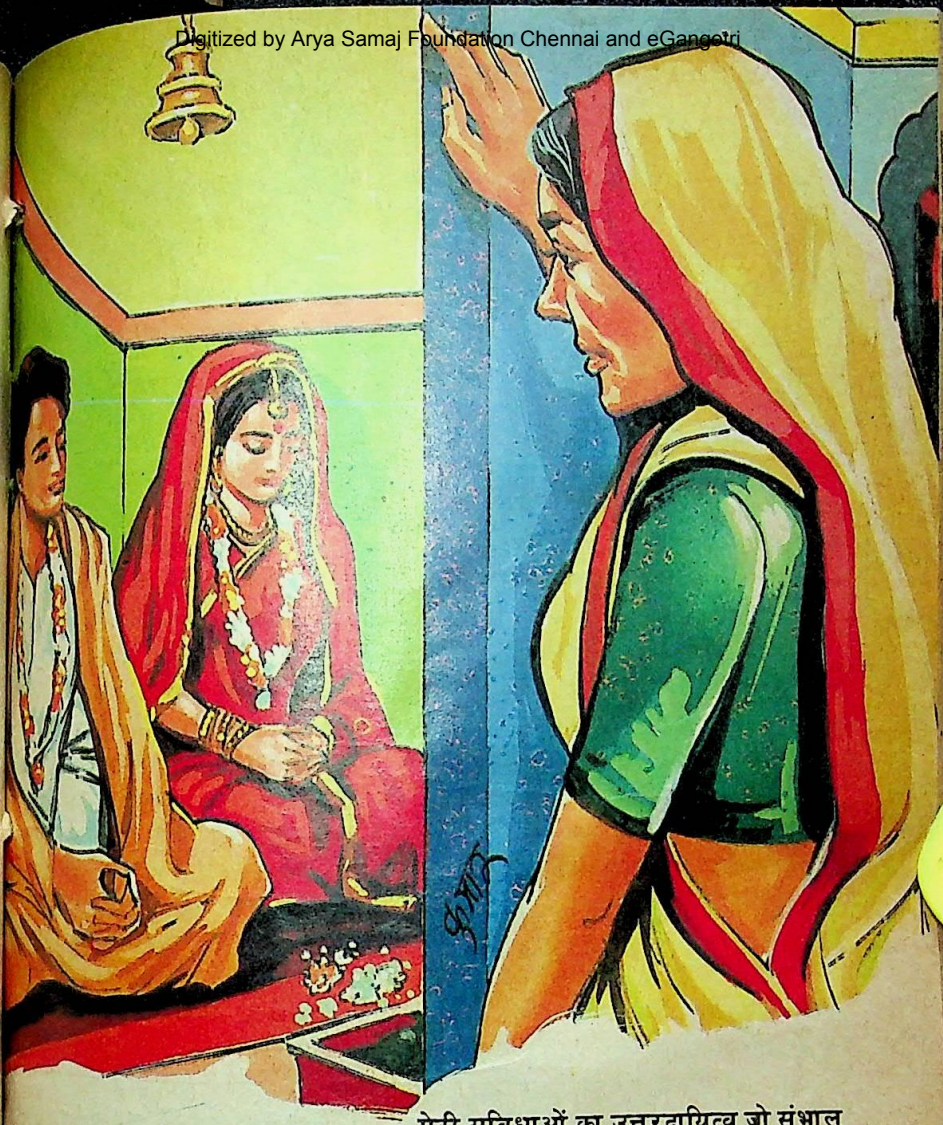

केतकी मौन हो कर अदालत में दीक्षा की शादी का कार्यक्रम देखती रही. ▲

नाव में जी रही थी.

एक दिन केतकी ने कहा, "दीक्षा, तुम्हारी शादी के लिए पैगाम आया है. तुम्हारे मामाजी लड़के के साथ आने वाले हैं. वह लड़का घरजमाई बनने के लिए भी मान गया है. ठीक रहेगा न?"

दीक्षा ने कड़वी निगाहों से मां की तरफ देख कर कहा, "मां, मेरे लिए प्रश्न केवल सुविधाओं का है, व्यक्ति का नहीं. मतलब मेरी सुविधाओं का उत्तरदायित्व जो संभाल सके तुम्हारी तरह. फिर चाहे वह जो भी हो, चलेगा."

"अरी, दीक्षा, मैं जो हूं. तुम दोनों को संभाल लूंगी. मुझे और क्या काम है? तुम चिंता क्यों करती हो?"

"हां, मां, जब मेरा व्यक्तित्व और अस्तित्व ही सब तुम तक आ कर खत्म हो जाता है यानी तुम से आरंभ, तुम में ही समाप्त, फिर मुझे चिंता कैसी?"

पैर पटकती वह अपने कमरे में चली गई थी.

एक थप्पड़ सा लगा था केतकी को.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तनहाई

आज हर ओर तनहाई का
आलम क्यूं है,
आज हर शख्स
भरी भीड़ में
तनहा क्यूं है!

–पद्मनाभ पांडेय

कारण यह था कि बेटी पर प्यार लुटाने और उस के जीवन को सुखद भरापूरा बनाने के अलावा उस ने कुछ सोचा ही न था. फिर और कोई काम करने या सोचने की फुरसत भी नहीं मिली थी. उस की हर सोच का केंद्र बिंदु तो केवल दीक्षा ही थी.

दीक्षा की बात सुन कर हैरान रह गई थी. सारी सामाजिक और पारिवारिक मान्यताओं को धकेल कर वह केवल मन के सहारे दीक्षा के लिए जीती रही थी. पति की मृत्यु के साथ ही शरीर कहीं दूर छूट गया था.

पर अब वह अपने को नितांत अकेला महसूस कर रही थी. लोरी गाती. बाल बांधती, खाना खिलाती, नहलाती, कहानियां सुनाती. अपने दिल से लगा कर रात भर खुद गीले में और उसे सूखे में सुलाती. केतकी को याद ही नहीं रहा था कि दीक्षा कब बड़ी हो गई और वह खुद बूढ़ी. वह स्मृतियों और रिश्तों की डोरी दीक्षा तक ही सीमित कर के जी रही थी.

अब वही दीक्षा इतनी खीज क्यों रही थी? वह खुद इतनी भीरु क्यों हो गई थी? उस की मुट्ठी भर पहचान यानी मां नाम ही क्यों शेष रह गया था?

अजीब तनाव था वातावरण में. दीक्षा जैसेजैसे अकेली बाहर आनेजाने लगी थी, उसे के व्यवहार में कटुता आने लगी थी. वह सोचती थी, जैसे मां का प्यार नहीं, बल्कि एक साजिश हो, जिस के तहत केतकी उसे केवल अपने सुख के लिए पंगु बना रही थी.

उधर केतकी यह भ्रम पालने की चेष्टा कर रही थी कि सब ठीक हो जाएगा. अपने भीतर से वह विवश थी, पर दीक्षा से क्या कहती? वह तो कुछ भी सुनने को तैयार नहीं थी.

कालिज का सालाना उत्सव था और दीक्षा घंटे भर से अंदर कंघी करने और साड़ी बांधने में उलझी थी. पर कुछ भी ढंग से नहीं हो पा रहा था. वह बिस्तर पर औंधी लेट कर रोने लगी. वह जानती थी कि अभी तनुज आएगा उसे लेने और उस के फूहड़पन और दयनीय दशा पर खिलखिला कर हंस देगा.

तभी केतकी ने अंदर आ कर कहा "दीक्षा, लाओ, मैं तुम्हारे बाल बना देती हूं तुम्हें देर हो रही है."

"नहीं," और दीक्षा सांप की तरह फुंफकारती हुई स्नानघर में घुस गई थी.

केतकी भौंचक्की सी खड़ी रह गई थी. वह तो सोचती थी कि उस का सारा जीवन दीक्षा के लिए था और दीक्षा के सहारे ही वह भी पार लग जाएगी. पर वह बीच में ही तूफान कैसा? दीक्षा के सिवा उस का कोई नहीं था. अगर थे भी तो वे सब धीरेधीरे छूट गए थे. केतकी का दोहरा शोषण हो रहा था. एक दीक्षा के व्यवहार और बेरुखी के कारण और दूसरा अतीत की विषैली हवा के कारण, जो उस के विवाहित जीवन को और अस्तित्व को विषाक्त बना गई थी.

केतकी का न तो अपना कोई दृष्टिकोण था, न ही व्यक्तित्व. संबंधों के प्रति उस का व बाबा आदम के जमाने का परंपरागत दृष्टिकोण था. प्रतिस्पर्धा, गलाघोंट प्रति योगिता और नारी के स्वतंत्र व्यक्तित्व और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अस्तित्व वाले इस युग से वह सरासर अपरिचित थी. सामाजिक और भौतिक उन्नति के इस युग में नारी पुरुष के कंधे से कंधा मिला कर चलना चाहती थी. दीक्षा कितना पीछे छूट गई थी, यह केतकी ने कभी महसूस ही नहीं किया था. फिर उस ने अपने या अपने भविष्य के बारे में भी कहां सोचा था. वह भी आत्मनिर्भर हो सकती थी. दीक्षा को भी अपने पांवों पर खड़ा कर सकती थी. पर वह पीड़ित और शोषित ही क्यों रह गई. उस ने जमाने की चुनौतियों से जूझना क्यों नहीं सीखा और सिखाया.

शायद इसलिए कि वह अपना सहीसही मूल्यांकन नहीं कर पाई. अपनेआप को पहचान नहीं कर पाई. सारे आधुनिक परिवेश में सांस लेने के बावजूद, वह गहरे परंपरागत संस्कारों से जुड़ी रही. दीक्षा का भावजगत ही उस की दुनिया थी. उस की दुनिया में ही वह अपनी जगह खोजती और स्थापित करती रही थी.

शायद केतकी की त्रासदी का मुख्य कारण यह भी था कि उस के व्यक्तित्व में निर्णय की क्षमता व अपने अस्तित्व के प्रति चेतना और जागरूकता का अभाव था. इसी लिए वह समझ नहीं पाती थी कि भीतर का शून्य और अलगाव ऐसे नहीं भर सकता. दीक्षा का अपना अलग दृष्टिकोण जागृत हुआ था. उस का अपना अलग जीवन और अस्तित्व था. दीक्षा पर प्यार लुटाना, सहयोग की पारस्परिक मांग को विकसित करना, उस के अवसर जुटाना केतकी के लिए तो संभव था, पर मां के प्रति बेटी का पूर्णतः समर्पण अपनी जीवन और अस्तित्व को एकदम भुला कर कैसे संभव होगा?

केतकी अपने विचारों के मंथन में काफी गहरे डूब गई थी. तभी केतकी ने देखा कि तनुज दरवाजे पर खड़ा था. दूसरे ही पल वह दीक्षा को साड़ी बांधना सिखा रहा था. और बालों को कस कर जूड़ा बनाती दीक्षा के चेहरे पर एक अजीब आत्मविश्वास की ललिमा उभर रही थी. फिर केतकी की तरफ बिना देखे वे दोनों सीढ़ियां उतर गए थे.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूचना

कई उपन्यासों में दिलचस्प बात तो यह सूचना होती है कि उपन्यास में सब पात्र काल्पनिक हैं.

—फ्रेंकालिन पी. एडम्स

निरुद्देश्य भटकती केतकी रूपी नारी स्वयं शोषित होने की उत्तरदायी बन रही थी, 'काश मैं किसी साधना को अपना स्वभाव और किसी सत्य को अपना जीवन बना लेती, तब दीक्षा मेरे लिए न तो महत्व का विषय रह जाती, न ही भय का कारण.'

दीक्षा का दिनोदिन का बदलता व्यवहार केतकी को घुन की तरह भीतर ही भीतर खोखला कर रहा था. दीक्षा अपनी मित्रमंडली के साथ मनोविनोद में उलझ गई.

दीक्षा अब अपने मित्रों के साथ नए पंख निकले पक्षी की तरह फुदकतीचहकती रहती थी. वह कब आती थी और कब जाती थी, केतकी को कुछ पता नहीं चलता था. दोनों के मध्य संवेदना के स्तर पर संवाद की स्थिति बन ही नहीं पाती थी. केतकी को लगता था कि मां होने के नाते वह ऊपर कहीं बढ़ी अवश्य है, पर भीतर से कहीं बौनी भी होती जा रही थी.

वह आतेजाते अपने मित्रों से उस का परिचय 'मेरी मां' कह कर अवश्य कराती थी. ऐसा करना वह कभी नहीं भूलती थी, बस, इस से अधिक कुछ नहीं. अब वह खुद नहाती थी, तैयार होती थी, खाना खाती थी और गर्व से सीना तान कर घर से बाहर चली जाती थी.

केतकी एकांत पा कर बिसूरती थी, रोती थी. महसूस करती थी कि वह सुखी नहीं है, उपेक्षित है. उसे हंसने और सुखी होने का नाटक करना पड़ता था. पर उस का अपना व्यक्तित्व और चिंतन उसे रातदिन कचोटता रहता था. उसे लगता था कि दीक्षा ने अपने जीवन को सुखी और सफल बनाने के लिए उस का एक सीढ़ी की तरह उपयोग किया था. और मंजिल पा लेने के बाद वह सीढ़ी की तरफ देखता है. जैसेजैसे दीक्षा को तनुज का प्यार और सहेलियों का साथ मिलता गया, केतकी बहुत पीछे छूट गई थी.

अब केतकी के हाथ में एक छोटा सा परचा था, जिस पर लिखा था:

"मां, मैं तनुज के साथ जा रही हूं. तुम्हें समझना मेरे बस की बात नहीं है. तुम्हारे साथ मैं और तनुज कठपुतली का जीवन जीने में असमर्थ हैं. आखिर, मैं एक भरीपूरी नारी हूं, भरपूर ढंग से जीना चाहती हूं. अपना अस्तित्व और व्यक्तित्व पहचानना चाहती हूं. मेरे मानसिक द्वंद्वों, परेशानियों से पंगु होते व्यक्तित्व और घातप्रतिघातों से तुम्हें कोई सरोकार नहीं. सत्य को पहचान सको तो अच्छा है. मैं तुम्हारी भावना का सम्मान करती हूं, तुम से प्यार करती हूं.

मां इसे सामाजिक प्रतिष्ठा के तराजू में रख कर मत तोलना. तुम्हारी प्रतिष्ठा पर प्रश्नचिह्न न लगे, इसी लिए यह पत्र लिख रही हूं. कल अदालत में हम शादी करेंगे. आशीर्वाद देने आ सको तो सारी प्रतिष्ठा और संबंध बच जाएंगे. आगे तुम्हारी इच्छा. अच्छा मां, विदा दो."

केतकी कब से यह परचा हाथ में दबाए मसल रही थी. तभी ऊपर पेड़ पर चिड़ियों के फड़फड़ाने और अपने बच्चों को चोंचों से मारमार कर घोंसले से बाहर निकालने का दृश्य उस ने देखा. वह हैरान थी कि कल तक तो वे चिड़िया और चिड़ा उन के अंडों को सहेजे थे फिर बच्चों ने अपने नन्हेनन्हे सिर बाहर निकाले थे. चिड़ा-चिड़िया दिन भर लंबीलंबी उड़ानें भर कर दाना लाते थे और बच्चों के मुंह में चोंच डालडाल कर दाना खिलाते थे. खुद भूखे रह कर भी बच्चों को भर पेट खिलाते थे.

परसों कितनी वर्षा हुई थी. रात भर बच्चों को बचाने के लिए और उन्हें सूखा रखने के लिए चिड़िया बच्चों पर अपने पंख फैलाए बैठी रही थी. खुद भीगती रही थी पर सवेरा होते ही सारी थकान भूल कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बच्चों के लिए दाना चुगने चली गई थी.

पर अब क्या हुआ था उसे जो चोंचें मारमार कर उन बच्चों को घोंसले से बाहर निकाल रही थी? कैसी मां थी वह?

तभी केतकी ने देखा कि बच्चे घोंसले से बाहर आ कर फुदकफुदक कर नाच रहे थे, चहचहा रहे थे. धरती पर अपने पैरों से चलते, धरती को कुरेदते, दाना चुगते वे कितने खुश थे. कुछ पल मां के पीछेपीछे चले थे और फिर उड़ान भरने लगे थे. अपनी चोंच से अपना दाना चुगते और अपने पंखों से उड़ते वे पक्षी अब बच्चे नहीं, बड़े हो गए थे. चिड़ा और चिड़िया एक निश्चित विश्वास से चुपचाप उन्हें दूसरी दिशा में उड़ते देख रहे थे, जो कुछ समय बाद अपना अलग घोंसला बनाएंगे और अपना अलग परिवार भी.

केतकी मौन हो कर सब देख रही थी. दीक्षा का पिछले कुछ महीनों का क्रम पूरा का पूरा बच्चों के साथ जुड़ गया था. बस, अंतर यह था कि वहां चिड़ाचिड़िया ने बच्चों को चोंचें मारमार कर घोंसले से बाहर निकाला था और यहां दीक्षा ने अपनी मां को. इसलिए नहीं की मां से उसे प्यार नहीं था, बल्कि इसलिए कि वह अपना जीवन अलग, अपने ढंग से जीना चाहती थी.

केतकी झटके के साथ उठी और अदालत में जा पहुंची. दीक्षा की शादी अभी आरंभ नहीं हुई थी. दीक्षा को गले लगा कर आशीर्वाद दिया. मौन हो कर शादी का कार्यक्रम देखती रही और खुद को काफी हलका महसूस करती रही, जैसे प्रसव पीड़ा से मुक्ति मिल गई हो और दाईमां ने नाल काट कर दीक्षा को अलग सांस लेने के योग्य बना दिया हो.

अब मांबेटी मुसकरा रही थीं. पहली बार स्वस्थ मन और दृष्टि से केतकी ने दीक्षा की ओर देखा था. कितनी सुंदर और जवान हो गई थी वह. उसे स्वतंत्रता का पूरा अधिकार था, ताकि वह अपने जीवन को ही सुंदर न बना सके, बल्कि अपने अस्तित्व को भी निखार सके. ●

नन्हे मुन्नों की रंगीन पाक्षिक पत्रिका

चंपक के हर अंक में सुंदर मनमोहक सचित्र कहानियां, शिक्षाप्रद लेख, व्यंग्य चित्र और चित्र पहेलियां प्रकाशित होती हैं जो आकर्षक रंगों में छपी होती हैं.

हर महीने में दो बार बच्चे चीक चंच और पप्पू के सांसिक कारनामों का आनंद उठाते हैं.

चंपक की सामग्री आपके बच्चों के लिए ज्ञान के नए मार्ग खोलती है, बच्चों का चरित्र बनाती है, उनका स्वस्थ मनोरंजन करती है.

चंपक

अपने बच्चों को आज ही एक प्रति लेकर दें.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिनदहाड़े

एक दिन एक अपरिचित व्यक्ति मेरे चाचाजी के पास आ कर बोला, "आप मेरी साइकिल गिरवी रख कर मुझे 300 रुपए दे दें, ताकि मैं अपनी बीमार मां का इलाज करा सकूं. कुछ दिन बाद आप के रुपए लौटा कर साइकिल ले जाऊंगा."

चाचाजी ने उसे 300 रुपए दे कर साइकिल रख ली. कुछ समय बाद पुलिस ने चाचाजी को चोरी की साइकिल रखने के आरोप में गिरफ्तार कर लिया.

फिर बड़ी मुशकिल से उन्होंने पुलिस से अपना पीछा छुड़वाया. —राजेश शर्मा

फरवरी 1982 में हमारा हाई स्कूल का दल रेलगाड़ी से मद्रास जा रहा था. हमारे संगीत के अध्यापक गाना तैयार कर रहे थे. तभी दो अनजान युवक भी हम लोगों में घुलमिल गए.

विजयवाड़ा स्टेशन पर हम उन्हें रखवाली के लिए छोड़ कर भोजन के लिए उतर गए. वापस आने पर देखा कि वे हमारे अध्यापक की अटैची जिस में 4,000 रुपए रखे थे, ले कर उतर गए.

—संजयकुमार सहरिया

*

पिछले दिनों हम अपने बरामदे में कबाड़ी वाले को रद्दी अखबार बेच रहे थे. तभी बारिश आ गई. भीगने से बचाने के लिए हम ने अखबार स्नानघर में रखवा दिए. बारिश खत्म हुई तो कबाड़ी हमें पैसा दे कर स्नानघर से रद्दी ले कर चला गया.

थोड़ी देर बाद मेरी माताजी ने स्नानघर से घड़ी लाने को कहा. स्नान करते वक्त वह अपनी घड़ी वहीं भूल आई थीं. लेकिन जब मैं स्नानघर में घड़ी लेने गई तो घड़ी वहां से गायब थी. —पूनम वर्मा

एक बार हम लोग हजारीबाग से कोडरमा जाने के लिए बस स्टैंड पर खड़ी एक मेटाडोर में बैठ गए. थोड़ी देर बाद एक व्यक्ति आया. उस ने अपनेआप को मेटाडोर का परिचालक बताया. हम से भाड़ा वसूल कर के वह यह कह कर चला गया कि वह अभी ड्राइवर को बुला कर ला रहा है.

थोड़ी देर बाद ड्राइवर के साथ एक दूसरा परिचालक आया और भाड़ा मांगने लगा.

जब हम ने बताया कि हम से एक दूसरा परिचालक भाड़ा वसूल कर ले गया है तब वे हैरान रह गए और हमें दोबारा किराया देना पड़ा.

—रत्नाकरकुमार 'दिनकर'

*

कुछ दिन पहले हमारे घर एक व्यक्ति ने आ कर कहा कि वह हमारी दीदी का रिश्तेदार है और उस ने बताया कि हमारी दीदी के पुत्र हुआ है. घर के सभी सदस्य इस खबर को सुन कर खुश हो गए और मेहमान की खूब आवभगत की गई.

दूसरे दिन सुबहसुबह जब वह चलने लगा तो उस ने अपनी जेब कट जाने की बात बता कर हम से 50 रुपए किराए के लिए मांग लिए. उस के जाने के दो दिन बाद हम ने पत्र के द्वारा तहकीकात की तो पता चला कि न तो दीदी के कोई संतान हुई है और न ही उस नाम का कोई व्यक्ति उन का रिश्तेदार ही है.

—दलपतराय ठाड़ा●

इस स्तंभ के लिए अपने तथा अपने संबंधियों के अनुभव भेजिए. प्रत्येक प्रकाशित अनुभव पर 30 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. अपने अनुभव इस पते पर भेजें. संपादकीय विभाग, सरिता, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

सरिता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रद्धा भी अंधी होती है

स्मृति, उपदेश, पुराणों में
यह पढ़ा
कि
कामक्रोध अंधा होता है
पर, मैं ने देखा यह
कि श्रद्धा भी अंधी होती है.
यह बात अलग
कि
उस में बाती विश्वास जलाता है,
पर यह विश्वास निगोड़ा
जनजन को ठगवाता है.
दिव्य नेत्र खोलेंगे,
आरक्षण स्वर्ग का होगा,
मोहक नारों का अंबार लगा होगा
मेरा यह उद्घोष कि
उन का यह इतिहास खोखला होगा.
पर,
यह भी एक सचाई
जो
जाती नहीं छिपाई
कि
श्रद्धा ने तो घरघर में डाका डाला है
कारतूस विश्वासों ने घाला है
घरघर के आंगनआंगन में
श्रद्धा ने चिता जलाई है
विश्वासों ने सदा
चिता में जम कर आग लगाई है.

—रामदत्त तिवारी 'अजेय'

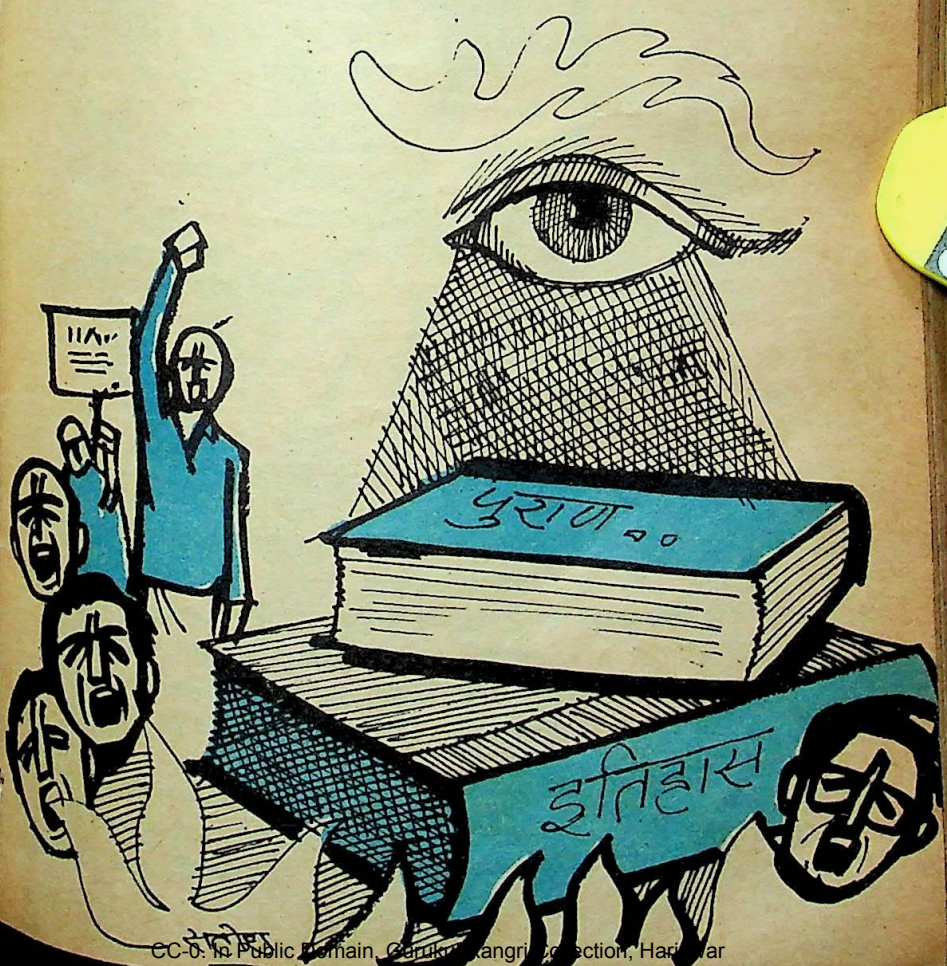

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरी बेटी

कहानी • रश्मि मेहता

बाहर से रोने की आवाज देर तक माधुरी के कानों में पड़ती रही. खीज कर माधुरी ने ऊनसिलाई पलंग पर रख दिए, 'यह मरती भी तो नहीं' माधुरी ने परेशान हो कर मन ही मन सोचा.

बाहर से सिसकने की आवाजें अब भी आ रही थीं और माधुरी की समझ में नहीं आ रहा था कि वह इस नागिन से कैसे पीछा छुड़ाए.

'नागिन? हां, ठीक ही तो है. नागिन की बेटी नागिन ही तो होगी,' माधुरी ने मन ही मन में सोचा, 'कितनी इतराती थी, रूपा. बड़ा घमंड था उसे अपने पति के धन, पद और सब से अधिक अपने सुहागन होने का.'

माधुरी को उस ने कभी अपने घर की नौकरानी से ज्यादा अहमियत नहीं दी थी. अतीत की याद आते ही माधुरी के मन में कड़वाहट घुल गई.

माधुरी 12 बरस पहले उस घर में बहू बन कर आई थी. सास तो थी नहीं, घर में बस ससुर, उस का पति और देवर ही थे.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माधुरी अपने बेटे के साथ रूपा का व्यवहार याद कर के उस की बेटी गुड़िया के साथ भी वैसा ही सुलूक करने लगी थी. उस के ससुर ने गुड़िया को गोद दे देने की तैयारी कर ली थी लेकिन ऐन मौके पर माधुरी का हृदय क्यों बदल गया?

माधुरी ने अपने ससुर और मेहमान को चाय दी और साथ ही साथ निश्चय कर लिया कि वह अपनी बेटी को किसी को गोद न देगी.

आते ही उस ने घर की जिम्मेदारियां संभाल ली थीं. पिता समान ससुर और छोटे भाई समान देवर की सेवा में भी उस ने कोई कसर नहीं छोड़ी थी. उस के ब्याह को अभी चार बरस भी नहीं हुए थे कि उस के पति दीपक का असमय देहांत हो गया. उस के जीवन में आई थोड़ी सी खुशियों को अपने साथ समेट कर वह उस से हमेशा के लिए दूर हो गया. पीछे छोड़ गया अपना बेटा, जिसे अब अपने पिता की सूरत तक याद नहीं थी.

साल बीततेबीतते उस ने देवर का रिश्ता एक अनाथ लड़की रूपा से कराया था, जो अपनी बहन के पास पल रही थी.

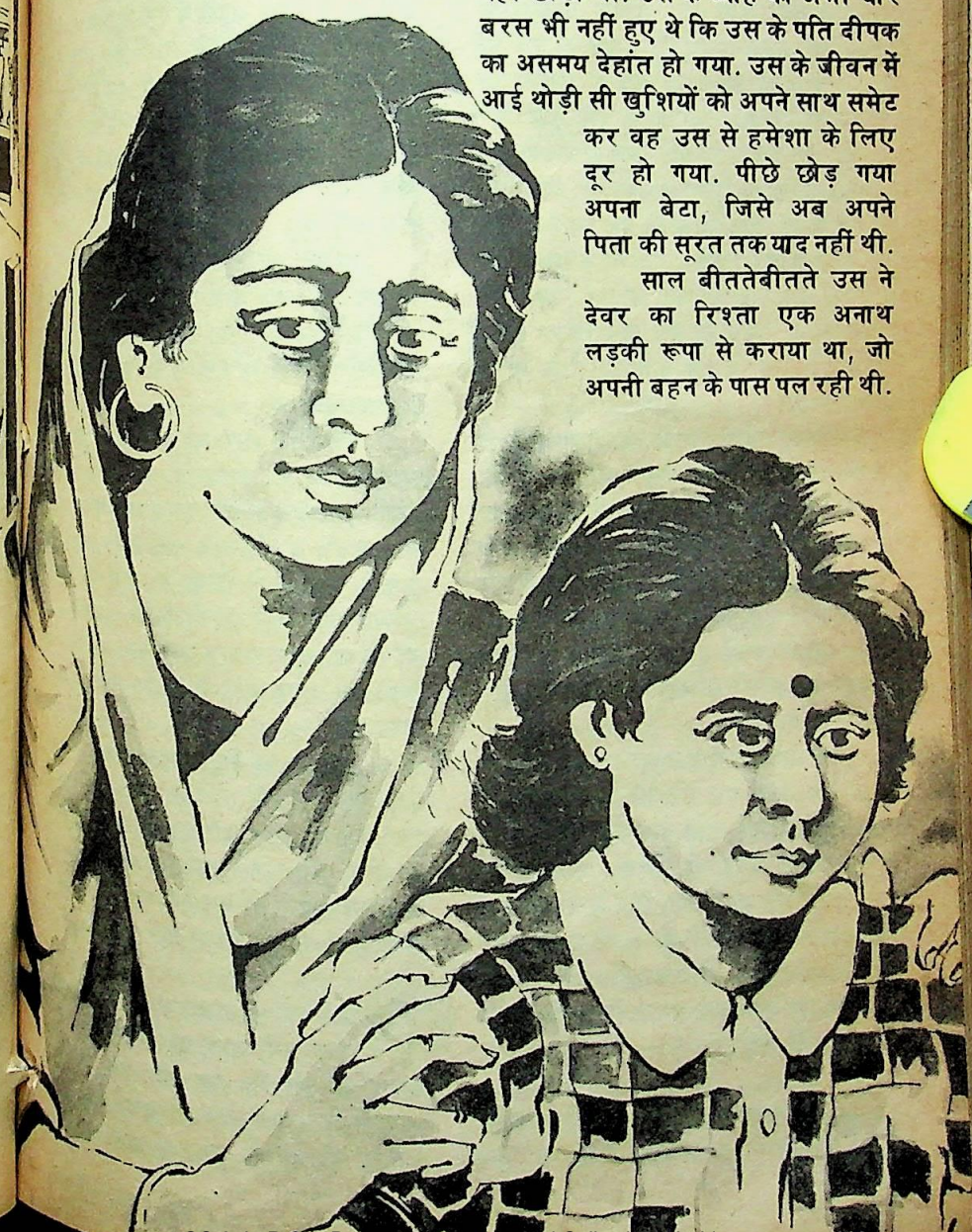

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुंदर, शिक्षित रूपा उस के इंजीनियर देवर अजय को एक ही नजर में भा गई थी और रूपा ब्याह कर उस घर में आ गई थी. अवकाशप्राप्त ससुर, माधुरी, अमित और अब रूपा का भी एकमात्र सहारा अजय ही था. अजय ने भी अपने दायित्व से कभी मुंह नहीं मोड़ा था. लेकिन रूपा का व्यवहार ब्याह के कुछ दिन बाद ही अपना रंग दिखलाने लगा. स्पष्ट रूप से तो उस ने अजय को कुछ नहीं कहा था, लेकिन माधुरी या अमित के ऊपर अजय की कमाई का एक भी पैसा खर्च होना उसे पसंद नहीं था. इस में उस के बचपन की असुरक्षा की भावना 'कारण' थी या वह स्वयं. लेकिन उस ने अपनी इस भावना को कभी छिपाया नहीं था. आए दिन अपनी बातों और तानों से वह स्वयं माधुरी को यह एहसास दिलाने में कभी न चूकती थी कि वह और उस का बेटा अमित 'उन' पर आश्रित हैं. माधुरी को अपमानित करने और उसे दुखी देखने में शायद उसे आनंद मिलता था.

किसी परिचित के सामने माधुरी को रूपा का उलटासीधा कहना पसंद नहीं था, लेकिन रूपा ने दूसरों के सामने भी उस का कभी कोई लिहाज नहीं किया था. कभीकभी रूपा का दुर्व्यवहार और अपने दुखों से तंग आ कर माधुरी का दिल करता था कि वह उस घर से कहीं दूर चली जाए या फिर मकान की ऊपरी मंजिल से एक बार छलांग ही लगा दे.

लेकिन ऐसे में उसे अमित का ध्यान हो आता था और वह बेटे को अपने स्नेह की छांव देने के लिए रूपा के व्यवहार की कड़ी धूप को झेल लेती थी. लेकिन अंदर से वह बुरी तरह टूट जाती थी. ऐसे में उसे सहारा देते उस के वृद्ध ससुर जो अपने बड़े पुत्र की मृत्यु के बाद स्वयं भी अंदर ही अंदर घुट रहे थे. रूपा का व्यवहार उन के लिए भी ज्यादा अच्छा नहीं था.

सातआठ बरस का होतेहोते अमित चाची की बातों को समझने लगा था. उस के पास तो वह नहीं फटकता था, लेकिन कभीकभी दफ्तर से अजय चाचा के आने पर वह उन के पास पहुंच जाता था तो रूपा झट उसे फटकार देती थी. ऐसे में माधुरी को बहुत दुख होता था.

गुड़िया के पैदा होने के बाद तो अजय पर जैसे रूपा और गुड़िया का ही अधिकार रह गया था. बदलते समय के साथ अजय भी बदल गया था. वह मजबूर था. बाहर घूमने जाते तो वे तीनों अच्छे कपड़े, अच्छा खाना, अच्छा रहनसहन मानो सिर्फ उन तीनों के लिए था. उन के अलावा भी घर में किसी और का अस्तित्व है, उन्हें इस की खबर ही कहां थी. उन की छोटी सी दुनिया में और कोई प्रवेश पा सके, इतना बड़ा हृदय उन के पास नहीं था.

अमित को दादा ही पूरा स्नेह देते थे. लेकिन पिता की कमी को पूरा करना उन के लिए आसान नहीं था. इसलिए पितृ स्नेह से वंचित वह मासूम कभीकभी चाचा के पास जा फटकता था.

उस दिन शाम को भी यही हुआ था. माधुरी को याद आया कि अमित अजय के दफ्तर से आने के बाद उस के पास चला गया था. अजय ने भी जाने क्या सोच कर उसे अपनी गोद में ले लिया था. इस पर रूपा अमित को डपटते हुए बोली थी, "अपने बाप को तो खा चुका राक्षस कहीं का, अब गोद में बैठने का शौक हुआ है तो जा बाप के पास चला जा."

माधुरी का दिल अंदर तक टूट गया था. और माधुरी उस दिन बरदाश्त नहीं कर पाई थी. उस दिन जेठानी देवरानी दोनों के बीच जम कर लड़ाई हुई थी, "अब आ कर देखें अपनी नागिन बेटी को, जो मां और बाप दोनों को ही सीधा डस गई."

पिछले माह ही अजय को दफ्तर के काम से जरमनी जाना पड़ा था. रूपा ने जिद पकड़ ली थी कि वह भी साथ जाएगी. माधुरी से झगड़ा होने की वजह से रूपा ने गुड़िया को अपनी बहन के पास छोड़ा था

शरिता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और स्वयं अजय के साथ जरमनी के लिए रवाना हो गई थी.

रास्ते में जहाज दुर्घटनाग्रस्त हो गया था और वे दोनों अपने पीछे मासूम गुड़िया को छोड़ कर चले गए थे.

दोतीन सप्ताह तो गुड़िया को रूपा की बहन ने अपने पास रखा था, फिर उस का बहनोई आ कर गुड़िया को माधुरी के यहां छोड़ गया था. कौन संभालता बिन मांबाप के बच्चे को, और वह भी लड़की.

अब पिछले सप्ताह से गुड़िया यहां थी. यानी उन के घर, उन पर आश्रित. गुड़िया से माधुरी को द्वेष नहीं था, लेकिन गुड़िया के साथ रूपा का अस्तित्व जुड़ा होने के कारण उसे गुड़िया से नफरत थी. इसलिए कभी भूलेभटके भी गुड़िया उस के पास आती थी तो वह उसे छिटक देती थी. ऐसे में गुड़िया को उस के ससुर संभालते.

माधुरी के पति दीपक की मृत्यु के बाद अजय और रूपा की दुर्घटना का गहरा आघात था, जो उन के वृद्ध तनमन पर जबरदस्त चिह्न अंकित कर गया था. वह स्वयं भी हृदय रोग से पीड़ित थे. फिर भी माधुरी के उपेक्षित भाव को भांप कर गुड़िया की देखभाल खुद ही करते थे. अपने खाने में से खाना खिलाना, उस के कपड़े बदलना, तैयार करना, उसे पास सुलाना—यह सब वही किया करते थे.

उन दिनों माधुरी का व्यवहार कुछ अजीब था. गुड़िया के साथ अपने व्यवहार की रूपरेखा वह निर्धारित नहीं कर पाती थी. शायद वह घृणा करती थी उस से. गुड़िया भी शायद ताई का रूप भांप गई थी इसलिए वह अपने दादा के आसपास ही रहती थी. लेकिन पिछले दो दिन से उन की हालत खराब होने की वजह से गुड़िया माधुरी के ऊपर पूर्णरूप से आश्रित हो गई थी.

"अपने बाप को तो खा चुका है, राक्षस कहीं का. अब गोद में बैठने का शौक हुआ तो जा बाप के पीछे चला जा." रूपा ने अजय की गोद में बैठने को इच्छुक अमित को फटकारते हुए कहा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुड़िया! रूपा की बेटी. माधुरी के मन में रूपा का खयाल आते ही गुस्सा फट पड़ता था, अब आ कर बचाए उस की मां. पहले तो कभी अमित उसे प्यार से उठता भी था तो रूपा आंधीतूफान की तरह आ कर गरजती, "खबरदार जो उस को हाथ लगाया." उस घमंडिन को क्या पता था कि वक्त की लाठी में कितना जोर है. जिस कमाई वाले पति पर घमंड था, वह गया. दूसरों के बच्चों को अनाथ कहती थी, अब उस की अपनी बेटी बिन मांबाप की हो गई है. कल तक हम उन की दया पर पल रहे थे, आज उस की बेटी एकएक दाने को हमारी मुहताज है.

माधुरी ने करवट बदली. बगल में अमित सोया हुआ था. माधुरी ने उस के सिर पर हाथ फेरा प्यार से. अचानक उसे गुड़िया का ध्यान हो आया. बाहर रोना बंद हो गया था.

दिल न चाहते हुए भी उस ने दरवाजा खोल कर झांका. इतनी सर्दी की रात में मासूम बच्ची सहमी सी ठंडे फर्श पर लेटी हुई थी. रोतेरोते शायद वह थक कर वहीं सो गई थी. माधुरी पलट कर दरवाजा बंद करने लगी, तभी ठिठक कर रुक गई.उस का मन नहीं माना. उस ने आगे बढ़ कर बच्ची को गोद में उठा लिया. ठंड के मारे छः वर्षीय बच्ची बुरी तरह अकड़ गई थी. माधुरी झट उसे अपने कमरे में ले गई.

अंदर ले जा कर उसे अपने साथ रजाई में लिटा लिया और एकटक उस के मासूम चेहरे को देखने लगी. जिंदगी में शायद प्रथम अवसर था, जब उस ने गुड़िया को मजबूरी से नहीं, शायद इच्छा से गोद में लिया था. बच्ची के सामीप्य ने रूपा की कड़वाहट कहीं दूर छुड़वा दी थी.

मासूम से चेहरे पर सूखे आंसुओं में रूपा का चेहरा उसे कहीं दिखाई नहीं दिया था. उसे अचानक बच्ची पर दया आने लगी और शायद प्यार भी. उस ने उसे जोर से अपने सीने से भींच लिया. उस के शरीर की गरमाहट पा कर गुड़िया नींद में उस से और भी जोर से चिमट गई. माधुरी के हृदय को गुड़िया की जकड़ में एक विचित्र आनंद मिल रहा था. उस के अंदर की ममता ने उस के लिए अमित और गुड़िया में कोई अंतर नहीं रखा था.

सुबह कब हुई इस का पता माधुरी को तब चला, जब गुड़िया ने नींद से जाग कर इधरउधर करवट ली. रात की ठंड से नीले हो रहे शरीर को देख कर माधुरी में जो स्नेह भाव उपजा था, वह गुड़िया के प्रसन्न चेहरे और संतुष्ट मन को देख कर फिर गायब हो गया. गुड़िया को उठा कर उस ने पलंग से नीचे खड़ा कर दिया.

ताई का रौद्ररूप देख कर गुड़िया सहम गई और खालीखाली नजरों से उसे देखने लगी. कुछ क्षण उसी प्रकार खड़ी रहने के बाद उस ने उचक कर फिर पलंग पर चढ़ने की कोशिश की तो माधुरी ने घुड़का, "चल, बाहर जा कर खेल."

गुड़िया चुपचाप सिर हिलाती हुई बाहर चली गई. माधुरी के अहम को तुष्टि मिली. उस ने पास सोते हुए अमित को जगा कर उसे स्कूल जाने के लिए तैयार होने को कहा और खुद रसोईघर में चली गई.

रसोईघर में उस ने चाय का पानी चढ़ाया और दीवार के सहारे सिर टिका कर खड़ी हो गई. उस का सिर दर्द के मारे फटा जा रहा था. शायद बुखार चढ़ रहा था. चाय का पानी उबल रहा था.

माधुरी ने झटपट चाय तैयार की और ससुर के कमरे की ओर चल दी. दिल का दौरा पड़ने की वजह से वह काफी कमजोर हो चुके थे.

चाय रख कर माधुरी चुपचाप जाने लगी तो ससुर की आवाज सुनाई दी, "बेटी, गुड़िया जाग गई हो तो उस बेचारी को भी कुछ खाने को दे देना. जाने वह गरीब किन कर्मों का फल भोग रही है," कहतेकहते उन का गला भर आया.

माधुरी का मन भी दुखी हो उठा, "कैसा दिल पाया है इन्होंने भी. सब का

शरिता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ख्याल रहता है इन को.'

रसोई में आ कर उस ने अमित के लिए दूध गरम किया. वह टोस्ट पर मलाई लगा कर लाई तो अमित स्कूल जाने के लिए तैयार हो चुका था. झटपट नाश्ता कर के वह स्कूल चला गया.

माधुरी का अपना कुछ खाने को दिल नहीं हुआ. गुड़िया पड़ोस में खेलने गई थी. शायद आ जाती तो वह भी कुछ खा लेती. वह बिस्तर पर लेट गई. माधुरी को नींद आने को थी कि ससुर की आवाज सुनाई दी. वह शायद उसे बुला रहे थे. सिर पर पल्लू ठीक करते हुए तेज कदमों से उन के कमरे में पहुंची. उन के सिरहाने गुड़िया बैठी थी. माधुरी को आया देख कर ससुर बोले, "बेटी, इसे भूख लगी है. कुछ खाने को दे दो."

माधुरी का चेहरा गुस्से से तमतमा उठा, 'बिलकुल अपनी मां के ऊपर गई है,' उस ने सोचा, 'खाना था तो सीधा मेरे पास आती, क्या मैं इसे न देती. इस की मां की तरह थोड़ी ही हूं, जो बच्चे को भूखा मार डालती. लेकिन नहीं, दादा की सिफारिश ले कर आई है. देख लूंगी इसे भी. सीधा न कर दिया तो मेरा नाम भी माधुरी नहीं.'

"बेटी," ससुर ने आवाज दे कर उसे विचारों के बंधन से मुक्त किया.

उसे शर्म आ गई, "अभी देती हूं, पिताजी."

उस ने गुड़िया की उंगली पकड़ी और कमरे से बाहर आने लगी तो उन्होंने फिर कहा, "इसे नाश्ता दे कर मेरे पास आना, बेटी."

"जी, अच्छा," कह के वह गुड़िया को ले कर रसोई में आ गई. मन में गुस्सा अभी भी था. इसलिए और तो कुछ हुआ नहीं, उस ने रात की बची रोटी और दूध की प्याली उस की ओर बढ़ा दी. खुद उठ कर ससुर के कमरे में आ गई.

ससुर ने उसे आया जान कर धीरे से आंखें खोलीं और फिर बोले, "बैठे, बेटी,"

फितरत

उन की फितरत तो देखिए
खुद से अनजान बने हुए हैं,
मुहब्बत में हम से सभी
चैन ओ सुकूं छीने हुए हैं.

—रईस अख्तर

फिर स्वयं उठने का प्रयास करते हुए कहने लगे, "अब तो शरीर में जान ही नहीं है. पता नहीं, कब मौत आ जाए. तुम्हारी चिंता होती है. अमित के बारे में सोचता हूं. उस के भविष्य का क्या होगा? देखता हूं कि मेरे जीवन की लौ बुझने में अधिक देर नहीं है. हो सके तो सामने वाले मोहन को कह कर वकील को बुला लो. तुम्हारे और अमित के नाम यह मकान और बाकी जो थोड़ा बहुत है लिख जाऊं." माधुरी को आश्चर्य हुआ.

"गुड़िया भी तो है," उस के मुंह से अचानक निकला.

"इसी लिए अपनी जानपहचान के एक जोड़े को बुलवाया है शाम को मैं ने. बड़े अच्छे लोग हैं. अपना कोई बच्चा नहीं है उन का. सोचता हूं, अगर गुड़िया को गोद ले लें तो अच्छा हो. आखिर, मैं कब तक रहूंगा. एक तो उस की उम्र, फिर लड़की जात. लड़का होता तो इधरउधर ठोकरें खा कर पल ही जाता. कौन संभालेगा उस की जिम्मेदारी? अच्छा खानदान है, अगर उन की छांव मिल जाए तो वह गरीब भी पल जाएगी."

उन के चेहरे पर फैली विषाद की रेखाएं माधुरी से सहन न हुईं. उस ने निगाहें झुका लीं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अजय के जाने के बाद गुड़िया के लिए भी मैं ने जीने की तमन्ना की थी. पर जाने क्यों लगता है मेरी कोई इच्छा पूरी नहीं होगी. बस, उस के भविष्य का फैसला हो जाए तो तीनचार दिन में तुम्हारे नाम वसीयत लिख दूं." कह कर वह खामोश हो गए. उन के हृदय का दुख और मायूसी उन के चेहरे पर स्पष्ट दिखाई दे रही थी.

माधुरी को भी दुख हुआ था, उस ने कभी ऐसी कल्पना भी नहीं की थी.

माधुरी कमरे से बाहर निकल कर रसोई में आ गई. गुड़िया बासी रोटी को छोटेछोटे दांतों से बड़ी कठिनता से चबाने की कोशिश कर रही थी. खाने में तल्लीन छोटी सी बच्ची के लिए माधुरी के हृदय में अनायास ही स्नेह भाव उपजा. माधुरी उस के पास आ कर बैठ गई. बच्ची की एकाग्रता भंग हुई. माधुरी को आया देख कर वह सहम गई. लेकिन माधुरी के मुखमंडल पर अपने लिए घृणा या रौद्रता न देख कर वह निश्चिंत हो गई और फिर खाने में जुट गई.

माधुरी ने प्यार से उस के बालों पर हाथ फेरा, "कितना मासूम चेहरा है? कितनी छोटी उम्र में बेचारी ने मांबाप को खो दिया."

एकाएक उसे अपनी तरह गुड़िया भी बेहद दुखी प्रतीत हुई. 'वक्त के क्रूर हाथों ने कितना बड़ा आघात दिया है,' उस ने सोचा. फिर वह स्वयं को कोसने लगी, "मैं भी कितनी बेरहम हूं. रात में बची बासी रोटी उस नन्ही सी बच्ची को दे डाली. रूपा को बुरा कहती थी. आज स्वयं भी वैसी ही बन गई हूं. स्नेह के लिए तरसती बच्ची के साथ कैसा व्यवहार किया मैं ने."

पश्चात्ताप की भावना में डूबी माधुरी को ध्यान ही नहीं रहा कि गुड़िया कब उस का प्यार पा कर उस की गोद में आ बैठी थी. माधुरी को लगा जैसे उस की गोद में उस की अपनी संतान बैठी हो. उस ने गुड़िया को अपने साथ चिपटा लिया और उस के मुख पर चुंबनों की झड़ी लगा दी. फिर उस के हाथों से बासी रोटी छीनते हुए बोली, "चल हट. तुझे हलवा बना दूं. यह कहां खा पाएगी तू."

हलवा खातेखाते गुड़िया के मुख पर मुसकराहट आ जाती. अचानक उस ने हलवे से भरा एक चम्मच माधुरी की ओर बढ़ा दिया. माधुरी का मन प्रसन्नता से भर उठा, "इस में रूपा की छाप कहां है."

उस ने गुड़िया को उठा लिया. अब उसे गुड़िया के लिए प्यार का नवीन स्रोत फूटता महसूस हुआ. उसे गुसलखाने में नहलाया. फिर कमरे में ले जा कर साफ कपड़े पहनाए और प्यार से उस के बालों में कंघी करने लगी, "सचमुच गुड़िया का रूप निखर आया है. लेकिन अब वह यहां और नहीं रहेगी. दोतीन दिन में तो पराई हो जाएगी."

नहाधो कर गुड़िया खेल में लग गई. माधुरी के सिर में दर्द और भी तेज हो गया था. वह पलंग पर लेट गई. "ताई," गुड़िया ने पुकारा.

"ताई नहीं. मुझे मां कह," माधुरी ने प्यार से कहा.

"मां कहूंगी तो तुम मां बन जाओगी?" गुड़िया ने भोलेपन से पूछा.

"हां." माधुरी ने जैसे उस से वादा किया.

गुड़िया ने झट उसे मां कह दिया. माधुरी का हृदय पुलकित हो उठा. स्नेह से बोली, "फिर कह."

गुड़िया रटे हुए तोते की तरह बारबार उसे मां कहती रही और बदले में वह गुड़िया को चुंबन देती रही. उस खेल में दोनों की तृप्ति हो रही थी. गुड़िया को खोया स्नेह मिल रहा था और माधुरी की ममता आज कुलांचे भर रही थी.

अमित स्कूल से पढ़ कर लौटा तो उस ने दोनों बच्चों के लिए खाना परोसा और उन को अपने हाथों से खिलाने लगी. दोनों बच्चों में उस के लिए उस समय कोई अंतर नहीं था. खाना खाने के बाद दोनों बच्चे खेलने लगे.

अरिता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हाऽऽ!

साँस साँस में ताज़गी
साँस साँस में आत्मविश्वास

सिबाका टॉप का विशेष फैलनेवाला तत्व फ़ौरन अपने पूरे मुँह में फैलकर दांतो में सड़न पैदा करनेवाले कीटाणुओं का नाश करता है और साँस की दुर्गन्ध को रोकता है— आपके मुँह और दांतों को पूरी तरह साफ़ करते हुए आपकी साँसों को भरपूर ताज़गी दे देता है.

सखी, सिबाका टॉप से—साँस साँस में ताज़गी साँस साँस में आत्मविश्वास. ऐसे-हा११!

सिबाका टॉप
टूथपेस्ट

क्वालिटी उत्पादनों के निर्माता
हिन्दुस्तान सीबा-गायगी लिमिटेड

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माधुरी का सिर बुरी तरह दर्द कर रहा था. वह पलंग पर लेट गई. शाम को पांच बजे नींद खुली तो उसे लगा कि उस का बुखार तेज हो गया है, लेकिन उस की परवाह किए बिना ही वह उठ गई. ससुर के लिए चाय बना कर देने गई तो उस का चेहरा देख कर उन्होंने पूछा, "तबीयत खराब है, बेटी?"

"कुछ खास नहीं, बाबूजी," कह कर वह सिर झुकाए बाहर निकल आई.

बच्चों को रात में बिस्कुट दे देगी. भूख तो उसे स्वयं भी थी. लेकिन कुछ बनाने की हिम्मत नहीं हुई. चुपचाप आ कर अपने कमरे में लेट गई. तबीयत बुरी तरह खराब थी. लेकिन कहती किस से? बीमार ससुर और परेशान हो जाते और बच्चे बहुत छोटे थे. बेकार घबरा जाएंगे. नींद तो नहीं आई. पर बिस्तर से उठने की भी इच्छा नहीं हुई. इतने में गुड़िया के रोने की आवाज आने लगी. शरीर की शिथिलता, थकान और बुखार के प्रभाव के कारण वह खीज उठी.

"जाने कैसा गला पाया है इस ने. इतनी ऊंची आवाज में रोती है." तभी अमित दौड़ता हुआ उस के पास आया और उसे पुकारने लगा, "मां, मां, उठ के देखो. गुड़िया का हाथ जल गया है."

माधुरी को जैसे बिजली का नंगा तार छू गया. वह झट बिस्तर से उठ कर भागती हुई रसोई में पहुंची. गुड़िया रोती हुई बाहर निकल रही थी. उस ने गुस्से में एक थप्पड़ गुड़िया को जड़ दिया और पूछने लगी, "रसोई में घुसने को किस ने कहा था?"

गुड़िया कुछ दर्द से और कुछ माधुरी की स्वर के कटुता भांपते हुए सहमी सी गुमसुम खड़ी हो गई. अमित आगे बढ़ कर बोला, "मां, दादाजी कह रहे थे, तुम्हारी तबीयत खराब है. मैं तुम्हारे लिए दवाई लाने वैद्य के पास गया था और गुड़िया तुम्हारे लिए दूध गरम कर रही थी कि इस का हाथ..."

आगे माधुरी कुछ न सुन सकी. उस के हृदय पर हथौड़े बरसने लगे, 'यह मासूम मेरे

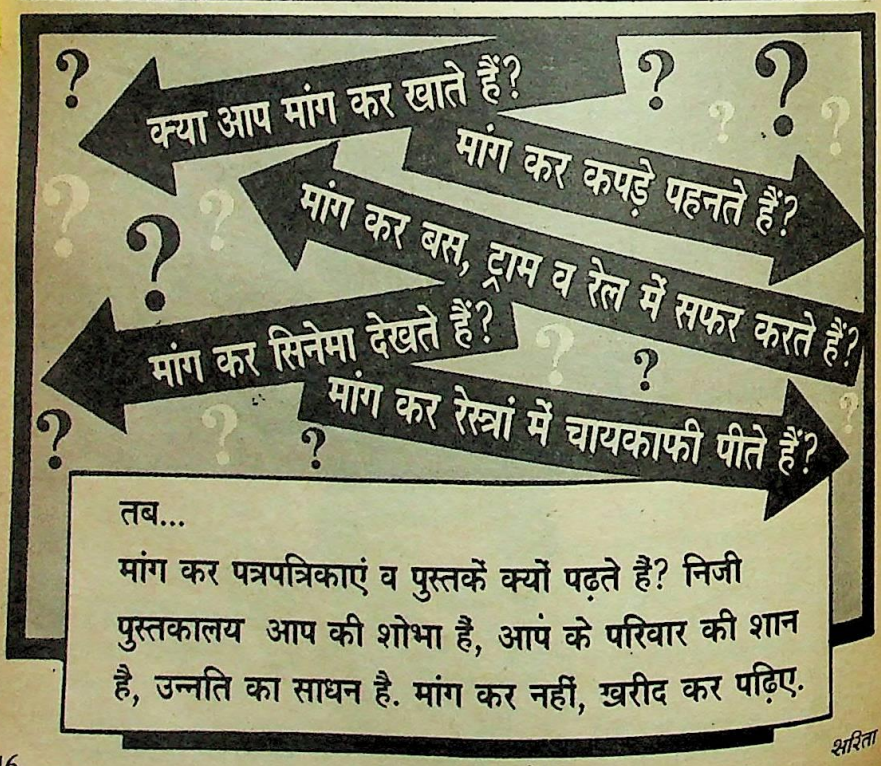

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

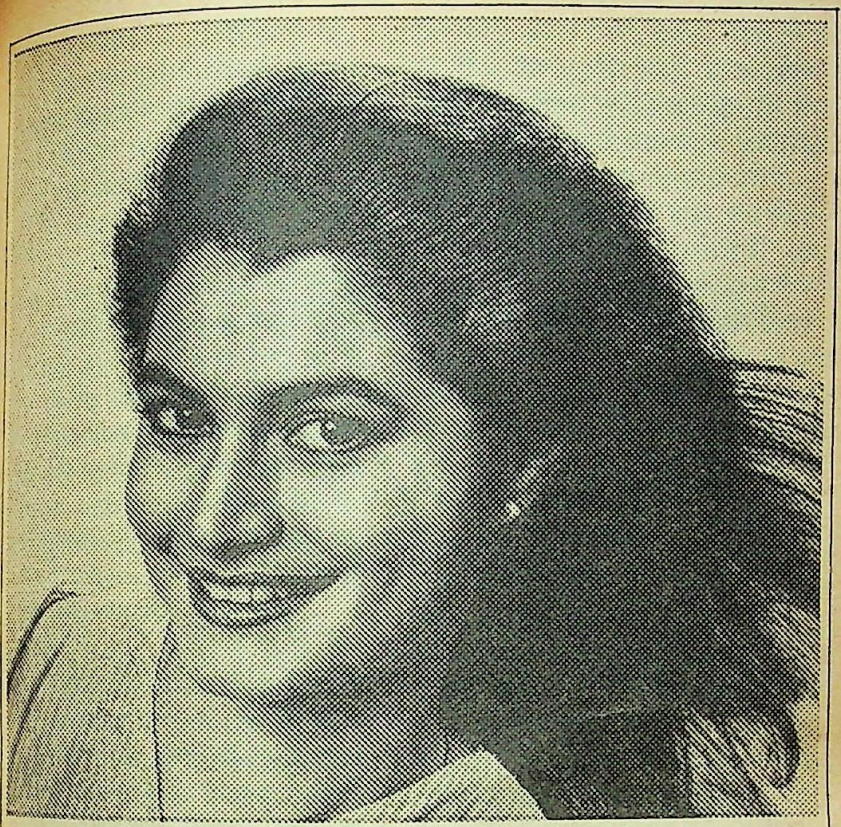

अपनाइए

सनी

आर्निका शैम्पू

और लाइए अपने
बालों में फिर से निखार

सभी प्रमुख दुकानों पर उपलब्ध है

नयी! होम्योपैथिक शैम्पू है जो आपके बालों के लिए प्रकृति का अनोखा उपहार प्रदान करती है. आर्निका– एक ऐसी बूटी जो बालों को साफ करने के साथ ही उन्हें पुष्ट भी बनाती है। बालों का झड़ना रोकती है, रूसी दूर करती है – सहज भाव से, कुदरती ढंग से।

और सबसे बड़ी बात यह है कि सनी का कंडिशनर बालों की उलझनें सुलझा देता है। इससे आपके बाल हो जाते हैं रेशमी मुलायम और सवारने में आसान। सनी की खास फ्रेगरेंसी मुग्ध आपका मन मोह लेगी।

सबसे अच्छे उपयोग के लिए पहले सिर में **सनी आर्निका हेयर ऑयल** की मालिश कीजिए। 1-2 घंटे तक छोड़ दीजिए। गीले बालों में **सनी आर्निका शैम्पू** लगाइए। झाग बनाइए और अच्छी तरह धो डालिए।

सनी आर्निका शैम्पू
विथ कंडिशनर

कोमल और कुदरती –
जो है देन केवल होम्योपैथी की

निर्माता
वोकहार्ट होम्यो फार्मेसी प्राईवेट लिमिटेड
121, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज-I
नई दिल्ली-110 020

R K SWAMY/BHP/4925R

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिए अपना हाथ तक जला बैठी और मैं ने इस को बदले में पीटा. कितना ध्यान रखा इस ने मेरा. अगर आज मेरी अपनी बेटी भी होती तो क्या वह इस से ज्यादा कर पाती. लेकिन मैं ने इस के साथ कैसा बरताव किया.'

पश्चात्ताप के आंसू माधुरी की आंखों से बहने लगे. उस ने गुड़िया को गोद में उठा लिया, "मेरे लिए इस नन्ही में इतना प्रेम है और मैं ने इस के प्रति कितनी संकीर्णता रखी है अपने अंदर." माधुरी रोती जाती और साथ ही गुड़िया को बरनोल लगाती जाती. गुड़िया के लिए उस का रोना अप्रत्याशित था. वह अपने आंसुओं को भूल कर माधुरी की गीली आंखें पोंछने लगी.

तभी अमित ने आ कर खबर दी, "मां, दादाजी से मिलने कई लोग आए हैं और दादाजी ने गुड़िया को बुला लाने को कहा है."

गुड़िया को गोद में उठाए वह बैठक की ओर चल दी. वे लोग गुड़िया को गोद लेने के लिए आए थे. वह समझ चुकी थी.

गुड़िया को आया देख कर उन लोगों ने उसे अपने पास बुलाया. गुड़िया ने उस की तरफ देखा, जैसे उन के पास जाने के लिए वह उस की स्वीकृति मांग रही हो. दादा ने प्यार से गुड़िया को मेहमानों के पास जाने के लिए कहा और माधुरी को उन लोगों के लिए चाय बना कर लाने को बोला. माधुरी मुड़ कर जाने को हुई तो गुड़िया ने उसे पुकारा, "मां."

आवाज को अनसुनी करते हुए वह चाय बनाने चली गई, "यह तो बेटी बन गई, लेकिन क्या मैं मां बन पाई. आज इस की मां होती तो क्या बेटी को इस तरह दूसरों के हाथ सौंप देती. अगर आज मेरी अपनी बेटी होती तो क्या मैं उसे इस तरह अपने से अलग कर पाती. इस छोटी सी उम्र में अपने घर से दूर, अपने खून को अजनबियों के हाथ सौंप पाती.

चाय तैयार हो गई थी. साथ ही माधुरी का मन और मस्तिष्क भी, 'गुड़िया रूपा का ही अंश सही, लेकिन आज उस पर मेरा अधिकार है. वह तो कच्ची मिट्टी के समान है, उस को जिस तरह ढालूंगी उसी तरह बनेगी. रूपा के संस्कारों की छाप भी इस पर न पड़ने दूंगी.'

वह चाय ले कर बैठक के दरवाजे के पास पहुंची.

बाहर से ही इशारा कर के उस ने ससुर और गुड़िया को बुलाया. चाय उन के हाथ में थमाते हुए बोली, "आप मेहमानों को चाय पिला दीजिए. लेकिन अपनी बेटी मैं उन्हें न दूंगी, यह अच्छी तरह समझ लीजिए," कह कर उस ने गुड़िया का हाथ थामा और अपने कमरे की ओर चल दी.

अरिता

लेखकों से निवेदन

प्रकाशनार्थ रचनाओं पर निर्णय लेने में चारछः सप्ताह लग जाते हैं. इस दौरान रचना के बारे में पत्रव्यवहार करने से कोई लाभ नहीं होता क्योंकि हम कुछ भी बताने में असमर्थ होते हैं. हम केवल स्वीकृत रचनाओं का हिसाब रखते हैं, अस्वीकृत का नहीं. स्वीकृत रचनाओं के बारे में सूचना चार से छः सप्ताह में दे दी जाती है.

टिकट लगे लिफाफे के साथ आई अस्वीकृत रचनाएं निर्णय के बाद तुरंत लौटा दी जाती हैं. अन्य अस्वीकृत रचनाएं नष्ट कर दी जाती हैं.

कविताओं और स्तंभों के साथ टिकट लगा पता लिखा लिफाफा न भेजें. छः सप्ताह तक यदि कोई सूचना प्राप्त नहीं होती तो कविताओं और स्तंभों को अस्वीकृत समझ लें. अस्वीकृत की गई कविताएं और स्तंभ लौटाए नहीं जाएंगे. अतः उन की एकएक प्रति अपने पास अवश्य रखें. इस संबंध में कोई पत्र-व्यवहार न करें.

यदि आप किसी ऐसे विषय पर लिखना चाहते हैं जिस में अधिक समय अथवा परिश्रम के लगने की संभावना है तो उस बारे में पूर्व सलाह लेना काफी लाभदायक होता है. —संपादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आज देश की सब से बड़ी आवश्यकता :

सीमाबंदी

• व्यक्ति के लिए—परिवार की सीमा

बच्चे उतने ही पैदा कीजिए, जितने आप भली भांति पाल सकें. जब तक आप का बच्चा स्वयं कमाने लायक होता है तब तक वह आप की लगभग एक चौथाई आमदनी खा जाता है. इसलिए अपने हित में, बच्चे के हित में और देश के हित में बच्चे सीमित संख्या में ही पैदा कीजिए. यह आप के अपने हाथ में है कि कितने बच्चे हों. भगवान इस विषय में बिलकुल शक्तिहीन है. नसबंदी के बाद भगवान लाख चाहे और अपनी सारी शक्ति भी लगा दे तो आप के बच्चा नहीं हो सकता.

• सरकार के लिए—कानूनों की सीमा

जितने अधिक कानून बनते हैं, उतना ही कानूनों का महत्त्व और उपयोगिता कम होती जाती है. जिस कानून का पालन नहीं कराया जा सकता, वह कानून, कानून न हो कर समाज का कलंक बन जाता है.

आज केंद्रीय व राज्य सरकारें, संसद और विधानसभाओं से नित नए कानून पास कराती हैं और नतीजा यह होता है कि रोज नए जुर्म उत्पन्न होते जाते हैं. जो काम कल तक वैध था, वह आज एकाएक जुर्म बन जाता है. इस से अदालतों में लाखों मुकदमे जमा होते हैं और वे बिना फैसले के बरसों पड़े रहते हैं. जो इन कानूनों की अवहेलना करते हुए सरकार की नजरों से बच जाते हैं, उन की तो गिनती ही नहीं.

ज्यादा कानून बनते हैं तो न वे ठीक तरह सोचसमझ कर लिखे जा सकते हैं, न उन पर पूरा गौर हो पाता है और न वे पूरी तरह मनवाए जा सकते हैं.

जितने अधिक कानून बनेंगे, उतना ही अधिक सरकारी अमला बढ़ेगा. उतनी ही अधिक अदालतें भी बनानी होंगी और इन सब का खर्च पूरा करने के लिए नित नए टैक्स लगाने पड़ेंगे.

जिस शक्ति और समय का उपयोग अधिक उत्पादन में होना चाहिए, वह कागजी कार्यवाही में, सरकारी अमले को संतुष्ट करने में, और कानून से बचने में लग जाता है. इस से अकसर ईमानदार नागरिक भी कानून तोड़ने वाला और अपराधी बन जाता है.

- व्यक्ति जीवन भर में दो या तीन बच्चे पैदा करें.
- संसद और विधान सभाएं साल में केवल दो या तीन कानून बनाएं.
- बच्चे कम तो गरीबी कम, कानून कम तो नए अपराध, नए अपराधी कम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वेदों में क्या है?

सूक्त—१७० प्रथम मंडल देवता—इंद्र

इंद्र ने कहा—"आज या कल वास्तव में कुछ नहीं है. जो कार्य विचित्र है, उसे कौन जानता है? अन्य लोगों का मन इतना चंचल होता है कि वे जो भी पढ़ते हैं, सो भूल जाते हैं." (१)

अगस्त्य बोले—"हे इंद्र! तुम क्या मुझे मारना चाहते हो? अपने भ्राता मरुतों के साथ जाकर तुम भली प्रकार यज्ञ के भागों का भोग करो. संग्राम में हमारी हत्या मत करना." (२)

इंद्र बोले—"हे भाई अगस्त्य! तुम मित्र होकर हमारा अपमान क्यों कर रहे हो? तुम्हारे मन में जो बात है, उसे हम जानते हैं. तुम हमें हव्य देना नहीं चाहते हो." (३)

हे ऋत्विजो! तुम वेदी को अलंकृत करो एवं हमारे सामने अग्नि को जलाओ. हम और तुम उस अग्नि में अमृत की सूचना देने वाला यज्ञ करेंगे." (४)

अगस्त्य ने कहा—"हे धन के अधिपति, मित्रों के मित्र, सब के स्वामी एवं आश्रय इंद्र! तुम मरुतों से कहो कि हमारा यज्ञ पूरा हो गया है. तुम ठीक समय पर आकर हमारा हव्य भक्षण करो. (५)

सूक्त—१७१ देवता—मरुद्गण

हे वेगशाली मरुतो! मैं अपना नमस्कार और स्तुति वचन लेकर तुम्हारे समीप आता हूं एवं तुम्हारी दया की याचना करता हूं. तुम स्तुतियों से चित प्रसन्न करो क्रोध त्यागो और घोड़ों को रथ से अलग कर दो. (१)

हे तेजस्वी मरुतो! तुम्हारे प्रति बोला जा रहा स्तोत्र अन्न सहित है. यह स्तोत्र तुम में श्रद्धा रखने वाली बुद्धि से निकला है, इसलिए हमारे प्रति कृपा करके मन से इसे सुनो एवं इसे स्वीकार करके शीघ्र आओ. तुम हविरूप अन्न की वृद्धि करने वाले हो. (२)

हे मरुतो! स्तुति सुनकर हमें सुखी करो. सर्वाधिक सुखदाता इंद्र हमें प्रसन्न करें. हे मरुतो! हम जितने दिन जीवित रहें, वे दिन सबसे अधिक उत्तम, चाहने योग्य एवं भोगपूर्ण हों. (३)

हे मरुतो! हम इस बलवान इंद्र के भय से कांपते हुए भागने लगे. हमने तुम्हारे लिए जो हवि तैयार किया था, उसे दूर कर लिया. तुम हमारी रक्षा करो. (४)

हे इंद्र! तुझ बलशाली के अनुग्रह से अभिमानपूर्ण किरणें नित्य प्रति उषाकाल होने पर प्राणियों को जगा देती हैं. हे कामवर्षी, उग्र, शत्रुओं को हराने वाले बल के दाता एवं पुरातन इंद्र! तुम परम बलशाली मरुतों के साथ मिलकर हमें अन्न दो. (५)

हे इंद्र! तुम मरुतों की रक्षा करो. तुम्हारी कृपा से ही वे अधिक शक्तिशाली बने हैं. मरुतों के साथसाथ हमारे प्रति भी क्रोधरहित बनो. शोभन बुद्धि वाले मरुतों के साथ मिलकर तुम शत्रुओं को हराते हुए हमारे प्रति कृपालु बनो. हम अन्न, बल और दीर्घ आय प्राप्त करें. (६)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मन का पंछी

नयन खुले पर यथार्थ में नहीं,
खोएखोए से
कहीं यादों के खंडहर में
कहीं भविष्य के प्रांगण में
मन का पंछी बस में नहीं,
उड़ता फिरता
'पर' मांग बातें पलों से
सपनों के असीमित गगन में
आधा आज बिलखता है
बीते कल की यादों में
और आधा महकता है
आने वाले के सपनों में.
बाकी जो बचता है,
जानलेवा
कमबख्त बहुत गुजरता है.

—जगमीत

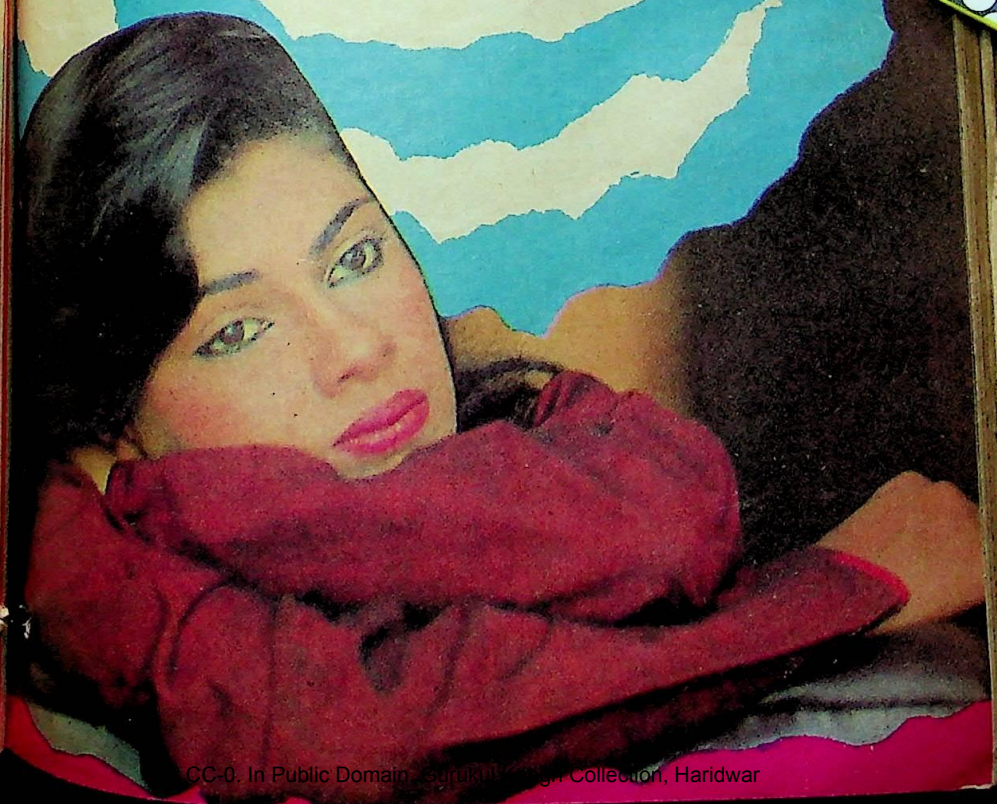

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गलती ?

मनुष्य गलतियों का पुतला है.

अगर हमें अपनी गलतियों का पता लग जाए तो हम उसे ठीक कर अपने व्यक्तित्व में सुधार ला सकते हैं.

वाह! क्या बात कही है. क्यों न हम दोनों एक-दूसरे को उस की गलतियां बता कर उसे सुधारें.

तुम छोटी छोटी बात पर अपने पति से मत झगड़ा करो.

श्रीमतीजी, तुम हरेक के मामले में टांग न अड़ाया करो.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नए फैशन

गरमियों के लिए सूती साड़ियां

मौसम करवट ले रहा है. गरमी के आने की आहट करीब आती जा रही है. तेज धूप और गर्म मौसम में हलकें रंगों की सूती साड़ियां ठंडक के एहसास के साथ आप की खूबसूरती में भी निखार लाएगी.

नीले रंग में हलकी सीधी धारियों व सुनहरे तथा काले रंग का बार्डर व पल्ले वाली साड़ी आप को आकर्षक बनाने के साथसाथ आप के सौंदर्य को भी महका रही है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हलंत का सा आभास देने वाली बंगाल की तांत वाली कढ़ाई के काले व सुनहरे रंग के बार्डर तथा चौड़े पल्ले वाली हलके पीले रंग की साड़ी पहने देख लोगों की निगाहें आप की ओर जरबस खिंची चली आएंगी.

प्रेमकला साड़ियां, कोयंबटूर

हलके हरे रंग की बंदिनी की साड़ी में सुनहरे बार्डर और पल्ले में सुनहरे तथा नीली अंबियों के मेल वाली साड़ी आप के यौवन को और भी मदमस्त बना देगी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इलायची के प्राकृतिक गुण, पारंपारिक और आधुनिक औषधियों में एक मूल्यवान घटक हैं. तथा दादी मां के घरेलू उपचार में यह एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है.

यह स्वास्थ्यप्रद हैः पानी में इलायची

सदियों पहले इसके गुण मालूम हो गए थे कि यह भोजन पचाने में मदद करती है, भूख बढ़ाती है, स्नायु प्रणाली को मज़बूत करती है, दृष्टि तेज़ करती है और श्वास को ताज़गी प्रदान करती है. इलायची सभी तरह के बदन-दर्द, गलें में खराश, सर्दी-ज़ुकाम में भी आराम पहुँचाती है.

यह स्वादिष्ट भी है

एक बर्तन पानी में सिर्फ़ एक इलायची डालिए और मज़ेदार स्वाद का आनंद लीजिए. अब आप आनंद के साथ अपनी प्यास बुझा सकते हैं.

अपने पीने के पानी में हर रोज़ एक इलायची मिलाइए और दादी मां की सदियों पुरानी विधि का आनंद उठाइए - ***अच्छे स्वास्थ्य और बेहतर स्वाद के लिए.***

अपने पीने के पानी को उबालिए

स्पाईसेस बोर्ड
SPICES BOARD
कोचिन ६८० ०१८
भारत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी • अश्विनीकुमार भटनागर

नानी मां

शोभा परेशान थी. उस दिन फिर मां का पत्र आया था. बिन्नी ठीक तरह से खाना नहीं खाती थी. पढ़ाई में भी कुछ पिछड़ती जा रही थी. अध्यापिका ने शिकायत की थी कि वह न तो गृहकार्य पूरा करती है और न कक्षा में ध्यान से सुनती है. अच्छा होगा कि उसे किसी बाल मनोचिकित्सक को दिखा कर परामर्श लिया जाए. एक मेधावी छात्रा इस प्रकार अकस्मात सिकुड़ कर अपने में सीमित हो जाए यह कुछ प्राकृतिक नहीं लगता था.

जब मिलती थी तो शोभा कहती भी थी और बारबार मां को लिखती भी थी कि वह बिन्नी को डांटा करे. या लाड़प्यार से तो वह ढीठ ही होती जा रही थी.

"मैं भी छोटी थी तो बहुत नखरे करती थी. खानेपीने में तुम्हें बहुत तंग करती थी," शोभा ने मां से पूछा था, "तब तुम क्या करती थीं?"

"मैं?" मां ने हंस कर कहा था, "जब तुम दोतीन बार में नहीं मानती थीं तो दो थप्पड़ रसीद करती थी."

शोभा ने बेध्यानी में यों गाल सहलाया, मानो थप्पड़ अभी पड़ा हो, बोली, "फिर

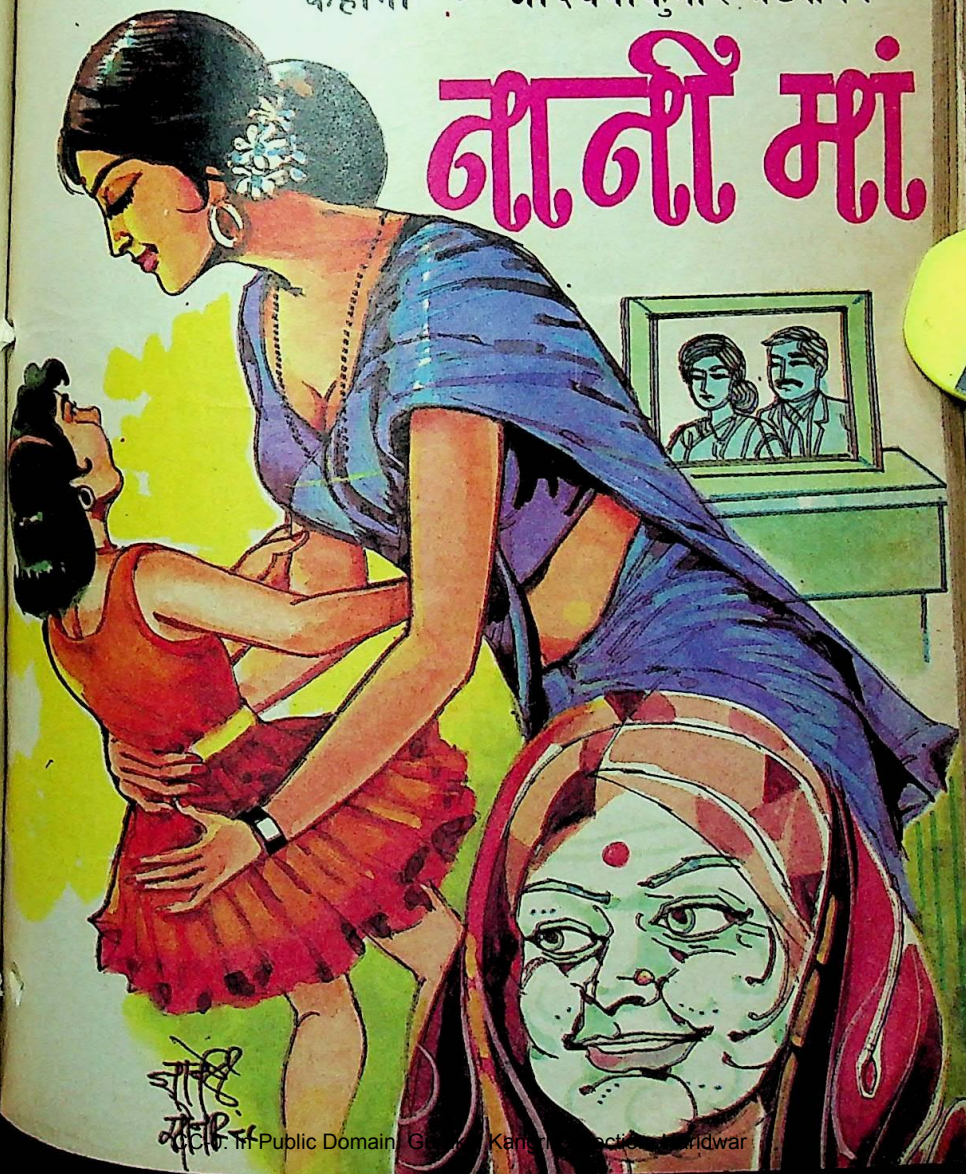

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनी स्वतंत्रता और चौधरी की खातिर शोभा अपने पति से अलग हो गई और अपनी बेटी को उस की नानी के संरक्षण में छोड़ दिया. पर अरसे बाद उसे यह महसूस करना पड़ा कि बेटी के लिए मां की जितनी आवश्यकता है, उतनी ही पिता की भी.

क्या मैं खा लेती थी?''

''एकदम सीधी हो जाती थी,'' मां फिर हंसीं.

शोभा ने गंभीर हो कर पूछा, ''तो तुम बिन्नी को क्यों नहीं मारतीं? उस के भी तो गाल पर थप्पड़ रसीद कर सकती हो?''

मां का चेहरा उदास हो गया था. हौले से बोली थी, ''मैं उस की मां थोड़े हूं, मैं तो नानी हूं. एक मां ही अपने बच्चे पर हाथ उठा सकती है.''

''ओह मां,'' शोभा ने खीज कर कहा था, ''पर तुम तो उस की मां की मां हो. तुम्हें उसे मारने का पूरापूरा अधिकार है.''

शोभा ने कह तो दिया था, पर मां की बात की सचाई की गहराई का भी एहसास हुआ था उसे. नानी तो होती ही लाड़प्यार करने के लिए है. पर उस ने अपना अधिकार कब छोड़ा था? वह तो हमेशा कहती और लिखती थी कि बिन्नी को ऐसे रखा करो, यह खिलाया करो, वह मत खिलाया करो, इस समय पढ़ाया करो, इतने समय सुलाया करो इत्यादि. जब वह इतनी सारी हिदायतें देती थी तो इस का एक ही मतलब था कि उसे अपनी मां पर पूरा विश्वास नहीं है और फिर नानी ही क्यों, वह स्वयं भी तो दुलार दिखादिखा कर बिन्नी को बिगाड़ती थी. होता यह था कि साल में एकदो बार उस का आना होता था, वह भी भागतेदौड़ते कुछही दिनों के लिए. इतने कम समय में वह सारा प्यार उड़ेल कर मानो अपनी अपराध भावना से समझौता करने की कोशिश करती थी.

जहां बचपन में शोभा के पास एक

शोभा छुट्टी ले कर घर आती बिन्नी उस से चिपक जाती, उसे छोड़ना ही नहीं चाहती.

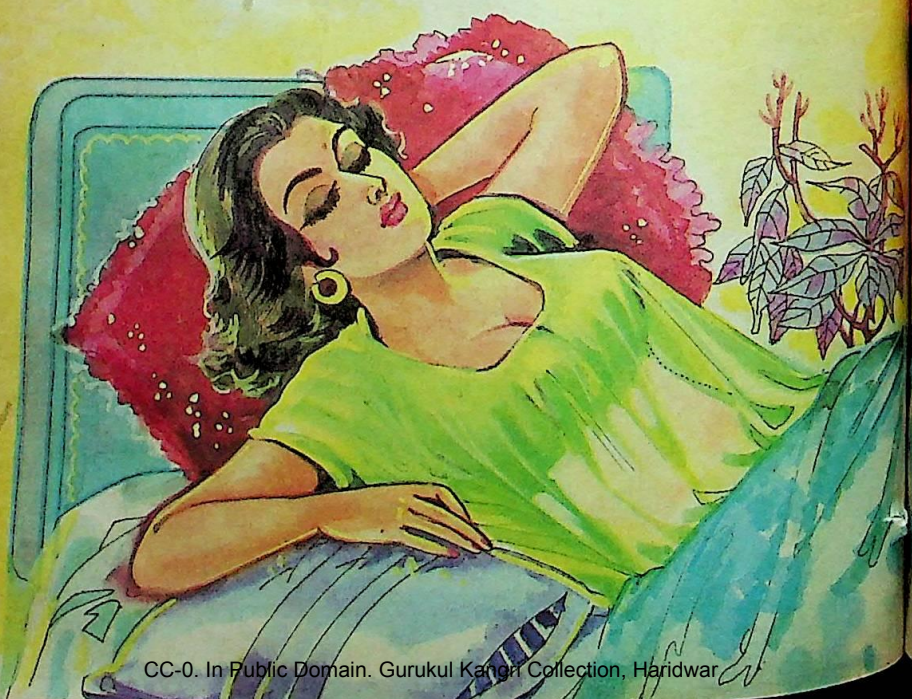

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खेलना था, जिसे वह बड़े यत्न से संभाल कर रखती थी, वहीं बिन्नी के पास दरजनों गुड़ियाएं और खिलौने थे, जिन्हें वह उपेक्षा से इधरउधर फेंक देती थी. एक तरफ तेवार फ्राकों में ही शोभा का सारा बचपन निकल गया था, दूसरी तरफ बिन्नी के पास तीनों कपड़े थे और उसे किसी में भी दिलचस्पी नहीं थी– कैसी विडंबना है.

जब वह कठिनाई से छुट्टी ले कर आती थी तो बिन्नी उस से चिपक जाती थी. उस का साथ ही नहीं छोड़ना चाहती थी.

सरकारी महौल में जाती और स्वतंत्र रहने वाली मां यानी शोभा को कुछ ही देर में बिन्नी का यों चिपकना या चिपटना अखरने लगता था. वह उसे हलका सा डांट देती थी और बिन्नी का संसार बिखर जाता था.

"अब तो मुझे छोड़ कर नहीं जाओगी न, मां?" बिन्नी पूछती थी.

"जाना तो पड़ेगा," शोभा मुसकरा कर उत्तर देती थी, "सरकारी नौकरी है न, हमेशा छुट्टी थोड़े मिलती है?"

"मुझे भी साथ ले चलो न. सच, मैं बिलकुल तंग नहीं करूंगी," बिन्नी गिड़गिड़ाती.

"पगली, पहले थोड़ी बड़ी तो हो जा. यहां कितने आराम से तो रहती है, नानी के पास. अच्छा बता, तुझे क्या पसंद है?"

बिन्नी रूठ कर कहती, "कुछ नहीं. ठीक है, जाओ, अब कभी मत आना."

शोभा हंस पड़ती, "रूठ गई? अच्छा अब जल्दी आऊंगी."

"हमेशा झूठ बोल कर जाती हो कि जल्दी आऊंगी, जल्दी आऊंगी. कभी आई भी हो जल्दी?" बिन्नी ने क्रोध से कहा.

इस बात को लगभग 10 महीने हो चुके थे और शोभा को एक दिन भी छुट्टी लेने का अवसर नहीं मिला था. वह पत्र लिख कर बिन्नी को समझाती रहती थी. पहले तो बिन्नी टूटीफूटी भाषा में पत्र का उत्तर भी देती थी. पर अब उस ने कुछ भी लिखना छोड़ दिया था. बिन्नी बहुत नाराज थी.

शोभा का विवाह असीम से अचानक और कुछ जल्दबाजी में हो गया था. दोनों के पिता एकदूसरे के बचपन के मित्र थे. बहुत समय के बाद एक होटल में एक सरकारी जलसे में दोनों की भेंट हो गई थी.पहचानने में कुछ ही क्षण लगे. शोभा के पिता अवधेशप्रताप सिंह घसीट कर श्यामकुमार को अपने घर ले गए और पुत्री व पत्नी से परिचय कराया. इतनी गहरी छनी कि एकदो घंटों में ही पिछले 25 वर्षों का निचोड़ निकाल लिया.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

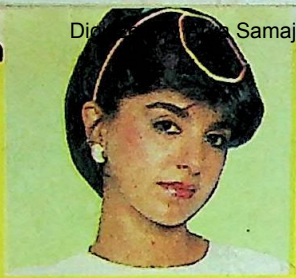

सवाल

सवाल थी हमारी नजर
उन की नजर जवाब हो गई,
नजरों ही नजरों में
बातें बेहिसाब हो गई.
—जयप्रकाशनारायण

"सच, शोभा तुम्हारी बड़ी होनहार लड़की है," श्यामकुमार ने प्रशंसा करते हुए कहा.

अवधेश ने पुलकित होते हुए कहा, "भारतीय प्रशासनिक सेवा की परीक्षा दी है. नतीजा आने ही वाला है."

"सच?" श्यामकुमार ने आंखें फाड़ते हुए कहा, "यह छोटी सी जान, अब हमारे ऊपर शासन भी करेगी? क्या समय आ गया है?"

अवधेशप्रताप सिंह ने गहरी सांस ले कर कहा, "पर दुख तो यह है कि लड़की को पढ़ालिखा कर कितना ही योग्य बना दो, बिना दहेज के फिर भी शादी नहीं होती. जहां कहीं बात चलाता हूं, मेरी पुरानी हवेली को देख कर लड़के वाले लाख दो लाख के सपने देखने लगते हैं. लड़की भी बहुत जिद्दी है. कहती है कि जहां दहेज मांगेंगे वहां शादी एकदम नहीं करेगी."

"ठीक ही तो कहती है," श्यामकुमार ने फिर प्रशंसा की, "वह तो स्वयं चलताफिरता दहेज है."

"वह तो ठीक है, पर मैं भी कोई इतना गयागुजरा तो नहीं कि ठीक से दहेज भी न दे सकूं. बस, मुंह फाड़ने वालों से कुछ घृणा होने लगती है."

"सुनो, एक बात कहूं," श्यामकुमार ने ठिठक कर कहा, "पर जाने दो... कहना बेकार है."

"अब कह भी डालो."

"मेरे लड़के से शादी कर दो. दहेज में एक फूटी कौड़ी भी नहीं चाहिए. पर मुशकिल यह है कि हम दोनों अलगअलग जाति के हैं. मुझे तो कोई आपत्ति नहीं है, पर तुम भाभी से पूछ कर देखो."

"लड़का करता क्या है?"

"वैज्ञानिक है. अभीअभी डाक्टर की उपाधि मिली है. भारतीय वैज्ञानिक अनुसंधान संस्थान में उपनियोजक है. बड़ा प्रखर है. एम.एससी. में स्वर्ण पदक लिया था."

इस तरह दोनों परिवार ही सपने देखने लगे. श्यामकुमार को तो शोभा इतनी पसंद आई थी कि भारतीय प्रशासनिक सेवा भी गौण हो गई. उधर अवधेशप्रताप सिंह को लगा कि एक उभरता वैज्ञानिक कब, किस ऊंचाई को छू ले, कोई नहीं कह सकता. परस्पर चुंबक की तरह आकर्षित हो गए. लड़के और लड़की का आपस में मिलना तो बस औपचारिकता मात्र था.

शोभा की मां का केवल एक ही कहना था कि जन्मपत्री मिलवा ली जाए. इस का समर्थन असीम की मां ने भी किया. आखिर, विवाह एक बंधन है, जुड़ने से पहले मन की तसल्ली तो अवश्य कर लेनी चाहिए. दोनों मित्रों को जन्मपत्री में कोई विश्वास न था, परंतु पत्नियों का मन रखने के लिए सहमत हो गए. शोभा मंगली निकली. असीम की मां का मुंह लटक गया. परंतु अच्छा यह हुआ कि असीम भी मंगली निकला. बस, फिर क्या था. पंडितों ने सारे ग्रह ठीक से बैठा दिए.

जब तक विवाह का समय आया, शोभा परीक्षा में सफल हो कर अपना प्रशिक्षण पूरा कर चुकी थी और असीम को एक पदोन्नति मिल चुकी थी. मांबाप को और चाहिए भी क्या था?

केवल एक बात अनुकूल नहीं हुई थी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पल पल कोमल एहसास, पल पल महकती खुशबू।
रहे संग संग, बरसों से बनी रही है
आपके परिवार की पहली पसंद...

पॉण्ड्स
ड्रीमफ्लॉवर
टैल्क

ऐसी महकी महकी ताज़गी मिले और कहां!

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फर्क

अमीर और गरीब का फर्क कितना नगण्य है. एक ही दिन की भूख और एक ही घंटे की प्यास दोनों को समान बना देती है.

—खलील जिब्रान

शोभा की नियुक्ति केरल में हुई और असीम दिल्ली में रह रहा था. साल भर निकल गया, आपस में तालमेल बैठते हुए, पर दोनों का ही अपनीअपनी जगह से हिलना बड़ा कठिन था. आरंभ में दोनों ने ही समझदारी से काम लिया. कुछ समय असीम त्रिवेंद्रम चला जाता था तो कुछ दिनों शोभा दिल्ली आ जाती थी. धीरेधीरे दोनों अपने कामों में इतने उलझ गए कि यह व्यवस्था भी टूटने लगी.

यह पृथकता तो शायद कभी न कभी दूर हो जाती या वे दोनों इस प्रकार के जीवन से समझौता भी कर लेते. परंतु एक और ऐसी बात थी, जिस का किसी के पास विकल्प न था. वे दोनों बुद्धिजीवी थे. दोनों में अपनी बुद्धि और प्रखरता का घमंड था. बहस में लग जाते तो घंटों बहस में लगे रहते और जब तक वातावरण एकदम कड़वा न हो जाता, एकदूसरे का पीछा न छोड़ते. इसी बौद्धिक उद्दंडता ने एक को दूसरे से हार मानने न दी और तब उन्हें लगा कि ऐसे दो अनमेल विचार रखने वाले व्यक्तियों का साथ रहना न केवल व्यर्थ था, बल्कि बेमानी भी था. वे अधिक से अधिक अपने कामों में व्यस्त रहने लगे थे. दूरी न केवल बढ़ने लगी थी, बल्कि कुछ घड़ी साथ रहना भी उन्हें खलने लगा था. वे एकदूसरे से विमुख हो गए थे.

ऐसे में शोभा को उड़ताउड़ता यह समाचार मिला कि असीम की एक प्रेमिका भी है. उस में सचाई कितनी थी. इस का तो पता नहीं चला. परंतु सीधा पूछने पर असीम ने कुछ ऐसे गोलमाल उत्तर दिया था कि शोभा का संदेह विश्वास में बदल गया. शोभा की कटु बातों से असीम ने भी उलटी उस पर तोहमत लगा दी. शोभा जल कर ही तो रह गई.

एक दिन असीम ने संबंध विच्छेद कर लिया. वह काफी अरसे से अमरीका जाने का प्रयत्न कर रहा था. वहां उस की प्रतिभा के पारखी बहुत थे और उसे भी अपने प्रयोगों को आगे बढ़ाने में सहायता मिलने की संभावना थी. भारत में रह कर वह कुछ अंकुश से दबा महसूस करता था. जब से शोभा के साथ उस के संबंधों में दरार बढ़ने लगी थी, उस ने विदेश जाने के प्रयत्न दोगुने कर दिए थे. जब वह संबंध विच्छेद कर के अमरीका गया तो शोभा को छः मास का गर्भ था.

दोनों की जन्मपत्रियां हंस रही थीं.

बिन्नी का जन्म शोभा की मां के यहां हुआ था और स्पष्ट था कि सिवा नानी के और कोई उसे रख भी नहीं सकता था. पिता को आधे शरीर का पक्षाघात हो गया था. इस कारण मां उन्हें छोड़ कर शोभा के साथ नहीं रह सकती थीं. जाने क्यों शोभा से भी यह न हुआ कि रुग्ण पिता को अपने पास बुला ले. जानती थी कि पास बुलाने से उसे सदा पिता की चिंता करनी पड़ेगी, जो उस की स्वतंत्रता में बाधक हो सकती थी. जब वह एक आया के सहारे बिन्नी को छोड़ सकने योग्य हो गई, तुरंत अपनी नौकरी पर वापस चली गई.

शोभा की उस दूरी से बिन्नी भी अंतर्मुखी हो गई थी. अब उसे मां से कुछ लगाव न रहा था. मां के निरंतर झूठ बोलने, जल्दीजल्दी न आने से और उसे अपने पास भी न रखने के कारण उस के दिल में न जाने कितनी गांठें पड़ गई थीं. एक विद्रोह पनपने लगा था, जो कभी किसी रूप में तो कभी और रूप में फूट पड़ता था. कभी वह चीख पड़ती थी तो कभी एकदम घुन्नी सी हो जाती थी. कभी खाना नहीं खाती थी तो कभी गृहकार्य न कर के अध्यापिका का कोपभाजन बनती थी. यह सब नाटक तो वह करती थी, परंतु उस के मन में कभी अपराध भावना जन्म न लेती थी. उसे सदा लगता था कि वह जो कुछ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नया ओनिडा.
इसे छू पाये तो बस एक ईर्षा भरी नज़र!

ईप्सा में जब भी ईर्ष्या के रंग घुल जाये, और हाथ अनजाने में ही पत्थर उठाले, तब जानिये, ...क नया ओनिडा तशरीफ़ लाया होगा! बेशक़! नया ओनिडा हाज़िर है अपने अछूते 'किउब लुक' के ...। अत्याधुनिक कारीगरी का जादू एक पूरी तरह से 'मोल्डेड' कैबिनेट और अनोखे काले ट्यूब में समाये ...मनमोहक रूप-रंग और आने वाले कल की अदा लिये – आ बसा है नया ओनिडा आप के इशारों ...नज़ार में! लेकिन, पहले इसके कि आप इसमें बेखबर खो जायें, भूलिये मत कि ईर्ष्या मंडराती है ...पास। याद रखिये वो सावधान-वाणी: अपने पड़ोसियोंसे नाता ज़रूर जोड़िये, पर अपने ओनिडा को ...ना मत छोड़िये।

ओनिडा. पड़ोसियों की जले जान, आपकी बढ़े शान.

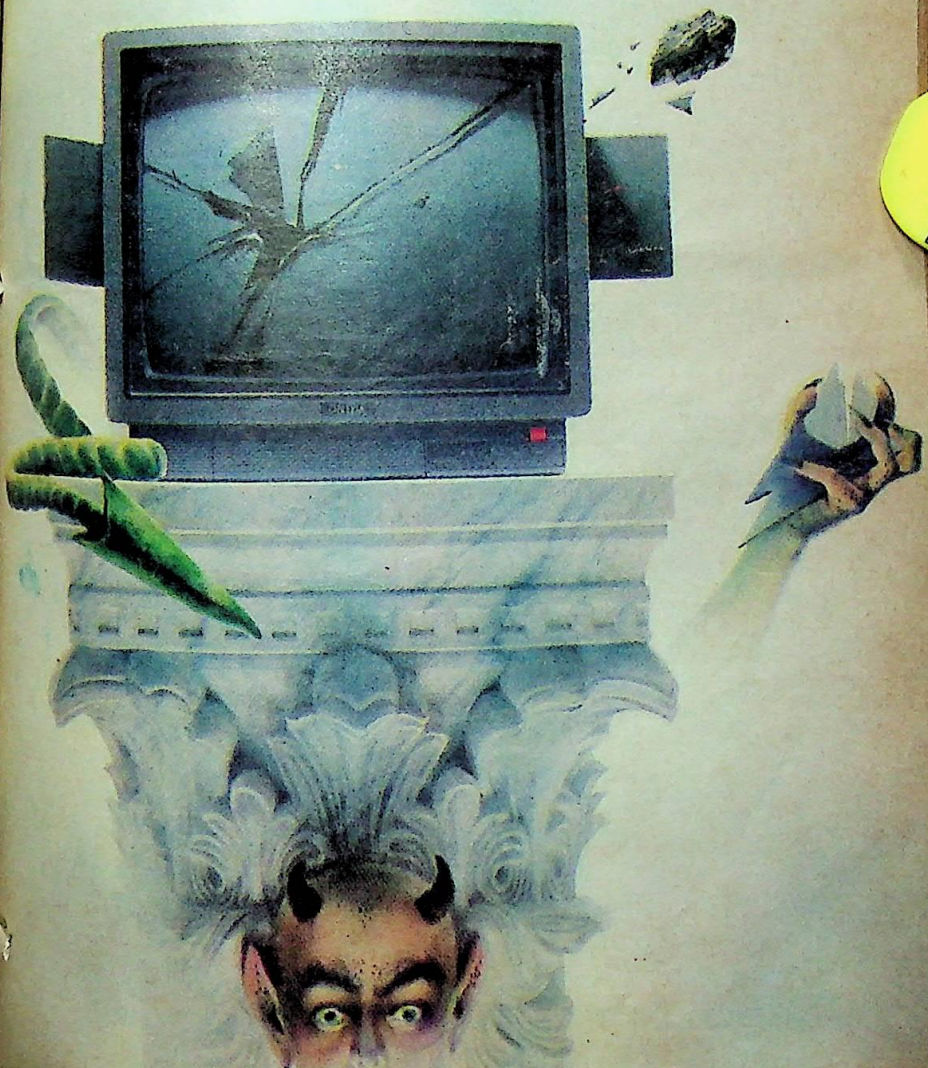

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर रही है, वह ठीक कर रही है.

और अब तो बिन्नी सोलहवां साल पार कर चुकी थी. वह भी स्वतंत्र व उद्दंड हो गई थी.

"बिन्नी कहां है?" शोभा ने अंदर आते ही पूछा था. उस की आंखें बिन्नी को ढूंढ़ रही थीं.वह शायद 10-11 महीने के बाद आई थी.

"अभी तो यहीं थी, " मां ने उत्तर दिया.

"उसे पता तो था न कि मैं आ रही हूं?"

"पता क्यों नहीं था. उसी ने तो चिट्ठी खोली थी. आती ही होगी, किसी सहेली ने रोक लिया होगा."

शोभा को बड़ी निराशा हुई थी. वह उसे प्यार करना चाहती थी. उसे एक खुशखबरी भी देना चाहती थी, मां से भी पहले. उस के आने की सूचना होने पर भी बिन्नी का घर में न होना उसे अच्छा न लगा. समझती थी कि वह जानबूझ कर चली गई है. जब से बिन्नी बड़ी हो गई थी, उस का रूप और यौवन खिलने लगा था, उस में एक आकर्षण आ गया था. उसे महसूस कर के शोभा को कुछ गर्व सा महसूस होने लगा था. बिन्नी बिलकुल उस का अपना प्रतिबिंब थी. पहले वह जितनी बिन्नी से अलग रहना चाहती थी, अब उतनी उस के पास आने को छटपटाती थी. उस की अपनी उम्र भी तो बढ़ रही थी. पर अब रात उलटी हो गई थी. अब बिन्नी उस से मिलने के लिए उतावली नहीं होती थी.

मां ने चाय बनाई थी. वह पड़ेपड़े ऐसे ही ठंडी हो गई थी.

कोई दो घंटे बाद बिन्नी आई थी. मां को देखा था. फिर उस ने हलके से मुसकरा कर कहा, "अच्छा, आप आई हैं."

शोभा का प्यार उमड़ आया. जल्दी से उठ कर उसे छाती से चिपका लिया और

तमिलनाडु में असफल पर्यावरण कार्यक्रम

तमिलनाडु के वन विभाग में इन दिनों 1,200 मगरों को ले कर समस्या खड़ी हो गई है. पांच वर्ष पूर्व कावेरी नदी के जल स्तर में अचानक कमी हो जाने के कारण उस में रहने वाले मगरों के समक्ष भारी संकट पैदा हो गया था. इसलिए भारत सरकार ने तमिलनाडु वन विभाग को निर्देश दिया कि बंधनावस्था में प्रजनन के माध्यम से मगरों की संख्या बढ़ाई जाए.

इस आदेश का पालन करते हुए वन विभाग ने 1983 में अंडे सेंकने की मशीन में अंडे रख कर मगर के बच्चे प्राप्त किए और इन्हें कावेरी में छोड़ने की योजना बनाई. लेकिन वहां के स्थानीय लोगों के विरोध के परिणामस्वरूप राज्य सरकार को अपनी यह योजना रद्द करनी पड़ी.

राज्य सरकार द्वारा दो वर्षों तक कोई भी विकल्प नहीं ढूंढ़ा गया तथा वर्ष 1985 से केंद्र सरकार द्वारा इस संबंध में दी जाने वाली आर्थिक सहायता भी बंद हो गई. आर्थिक सहयोग के अभाव में वन विभाग इन संरक्षित प्राणियों के रखरखाव की जिम्मेदारी पूरी नहीं कर पा रहा है. इसलिए इस स्थिति से निबटने के लिए वन विभाग के अधिकारियों ने उन मगरों की हत्या करने तथा प्रजनन के नियंत्रण की योजना बनाई है.

कुछ भी हो, जिस तरह तमिलनाडु का मगर प्रजनन और संरक्षण कार्यक्रम असफल हुआ है, वह पर्यावरण कार्यक्रम की असफलताओं का बुरे से बुरा उदाहरण है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वेरका

देसी घी 100% शुद्ध

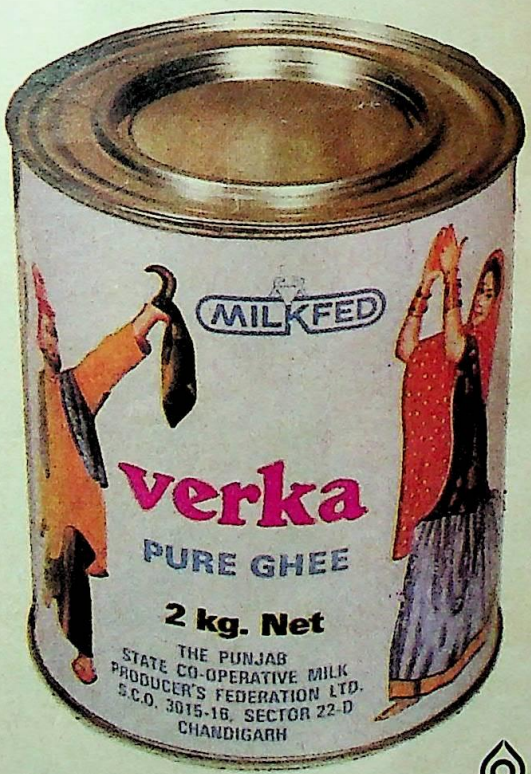

वेरका देसी घी। स्वाद, शुद्धता व उत्तमता में लाजवाब। वेरका के बिना आपका भोजन अधूरा है।

मिल्कफ़ेड का एक उत्तम उत्पादन

MILKFED

दी पंजाब स्टेट कोआपरेटिव मिल्क प्रोड्यूसर्ज़ फेडरेशन लिमिटेड, एस० सी० ओ० न० 3015-16 सैक्टर 22-डी, चण्डीगढ़ -160 022

UNION-2288

OPERATION FLOOD

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आ गया टेली-जगत में अनदेखी विशेषताओं का अस्त्र-शस्त्र लेकर...

टेली-तकनीक की नयी सीमाओं को लांघता, आ पहुँचा है रोबोटेक्स – एक ऐसा कलर टीवी जो उन्नत विशिष्टताओं के शस्त्रागार की ताकत पर टेली-जगत में अपना विजय-पताका फहरा रहा है।

रोबोटेक्स... तकनीकी जादूगरी और नये रूप-ओ-अंदाज़ का बेजोड़ समन्वय जिसे आप,एक 28 बटन वाले रिमोट कंट्रोल यंत्र के ज़रिये, दूर बैठे, उंगली मात्र के स्पर्श से जागृत कर सकते हैं.

- अपने आप चालू व बंद होने की सुविधा ताकि आप अपने पसंदीदा कार्यक्रम देखना न भूलें.
- स्क्रीन पर सुबह-शाम का वक्त दर्शाने वाला विशेष डिजिटल घड़ी.
- स्क्रीन पर 6 रंगों में 11 टीवी कार्यों का डिसप्ले – जैसे ट्यूनिंग की बारीकी, चालू व बंद होने का समय, तथा आवाज़, चमक, रंग-संतुलन व कॉन्ट्रास्ट लैवल आदि.
- स्लीप-टाइमर सुविधा, जिस से, अगर आप चाहें तो टीवी खुद-ब-खुद 90, 80, 70, 60, 50, 40, 30, 20, या 10 मिनट के बाद बंद हो सकता है।
- अती-आधुनिक, 28 निर्देशों वाला रिमोट-नियंत्रण यंत्र जिस से टीवी आपके इशारों पर चले.
- दो-तर्फ़ा डबल स्पीकर.
- पैनल-लॉक, जिसके प्रयोग से आप पूर्व-व्यवस्थित कंट्रोल्स को अनचाहे छेड़-छाड़ से सुरक्षित कर सकते हैं.

रोबोटेक्स

...कुछ ख़ास, कुछ अलग!

Texla
सही पसंद

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बांह चूम लिया, "कहां चली गई थी?"

बिन्नी ने अपने को अलग करते हुए कहा, "ओह मां, आप ने मेरे बाल खराब कर दिए. अभीअभी सैट करा के आ रही हूं. मुझे रात में एक सहेली की वर्षगांठ में जाना है."

शोभा का मुंह उतर गया. केवल 'ओह' कह सकी.

"सुनो," शोभा ने फिर से प्रयत्न किया, "मैं एक अच्छा समाचार लाई हूं."

व्यंग्य से हंस कर बिन्नी ने कहा, "आप के अच्छे समाचार सुनतेसुनते तो मैं भी अब बुढ़िया हो चली हूं. क्या मुझे साथ ले चलने आई हैं? अब तो मैं जा भी नहीं सकती."

"नहीं," शोभा ने उस का प्यार से गाल थपथपाने की इच्छा को नियंत्रण में रखते हुए कहा, "अब मैं ही यहां आ रही हूं. मेरा तबादला होने वाला है. दो महीने के अंदर आ जाऊंगी. बहुत लड़ाई करनी पड़ी अपनी बेटी की खातिर."

"ओह," बिन्नी का चेहरा भावशून्य था, मानो उस ने कुछ सुना ही नहीं.

"क्यों, क्या तुझे खुशी नहीं हुई?"

"क्यों नहीं, मैं बहुत खुश हूं."

"अब हम दोनों साथ रह सकेंगे."

अचानक बिन्नी ने पूछा, "मां, आप मेरे लिए कुछ तो अवश्य लाई होंगी?"

"हां, देखो न," शोभा ने सूटकेस में से सलवारकुर्ते का कपड़ा निकालते हुए कहा, "देखो, पसंद आया?"

"बहुत अच्छा है," बिन्नी ने खोल कर उलटपुलट कर देखते हुए कहा, "चलो मेरी एक दुविधा तो दूर हो गई."

"क्या मतलब?"

"नीना की वर्षगांठ है न. उसे कुछ न कुछ तो भेंट देनी ही थी. बहुत अच्छी सहेली है मेरी. उसे ही दे दूंगी. बुरा तो नहीं मानेंगी आप?"

शोभा का दिल बैठ गया. दस दुकानें देख कर विशेष रूप से बिन्नी के लिए चुन कर लाई थी. कितनी हसरत थी कि अपने सामने सिलवा कर उसे पहना कर देखेगी. यह भी शायद बिन्नी के विद्रोह की ही एक अदा थी.

"नहीं," शोभा ने बुझे मन से कहा, "मैं तुम्हें और ला दूंगी."

"रहने दो मां. मेरे पास तो भरे पड़े हैं. समझ ही नहीं आता कि क्याक्या पहनूं, अच्छा मैं तैयार हो कर आती हूं." फिर वह ठिठक कर बोली, "चाय तो पी ली है न आप ने?"

शोभा ने जाती हुई बिन्नी की पीठ को देखा और एक ठंडी सांस ले कर चुप हो गई.

दो महीने बाद शोभा दिल्ली आ गई थी. उसे सरकारी बंगला मिला था, इसलिए मां के पास रहने का तो कोई प्रश्न था ही नहीं. इस के अलावा वह बिन्नी को अब सदा अपने पास रखना चाहती थी. उस का किसी के साथ बंटवारा नहीं करना चाहती थी.

बिन्नी रहने के लिए आ तो गई थी परंतु बड़े बेमन से. उस की बेरुखी पलपल पर शोभा को खटकती थी. परंतु सदा यह सोच कर चुप हो जाती थी कि उसे न जाने क्याक्या प्रायश्चित्त करने पड़ेंगे. बिन्नी को पाने के लिए परीक्षा बिन्नी की नहीं उस की थी. इतना सब कुछ होने पर भी शोभा उसे पूरा समय नहीं दे पाती थी. उस का अपना आनेजाने का कोई ठिकाना न था.और फिर समयअसमय पर उस से मिलने स्त्रीपुरुष सब तरह के लोग आते रहते थे.

एक रात 9.30 बजे दोनों खाना खा कर उठे ही थे कि दरवाजे की घंटी बजी. बिन्नी ने लपक कर दरवाजा खोला. वह अपने मित्रों की प्रतीक्षा कर रही थी. एक लड़का था और दो लड़कियां.

"मां," बिन्नी ने कहा, "मैं एक डिस्को पार्टी में जा रही हूं. मेरे दोस्त आ गए हैं. आने में शायद देर हो जाएगी. आप सो जाना."

शोभा साबुन से हाथ धो रही थी. ठिठक कर रह गई.

बिना हाथ धोए तौलिए से पोंछते हुए बोली, "अब, इतनी रात में? यह क्या जाने का समय है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिन्नी ने हंस कर कहा, "चिंता मत करना, मां. मैं नशा नहीं करती. मैं बिलकुल अच्छी बच्ची हूं. थोड़ाबहुत नाचगाना, बस यही सब कुछ."

"पर पहले कुछ कहती तो सही."

"अब क्याक्या कहती फिरूं? आप को भी तो समय नहीं मिलता? और फिर यह तो स्त्री स्वतंत्रता का युग है. आप भी स्वतंत्र हो और मैं भी."

"पर... पर," शोभा ने हकलाते हुए कहा, "इतनी रात गए लड़कियों का बाहर रहना कुछ अच्छा नहीं."

"ओह, मां," बिन्नी ने खीज कर कहा, "आप भी कितनी दकियानूसी हैं. एकदम सौ साल प्राचीन अवशेष. अब तो हमें 21 वीं सदी में प्रवेश करना है. आप कहां 18 वीं सदी में ही घूम रही हैं? घबराइए मत, मुझे कुछ नहीं होगा. अच्छा, मैं जाती हूं."

"अरे सुन," शोभा ने संयत होते हुए पूछा, "जा कहां रही है. यह तो बता जा?"

ठठा कर हंसते हुए बिन्नी ने कहा, "इसलिए न कि आप पुलिस में रिपोर्ट कर सकें. कोई बात नहीं. सुनिए, पहले तो हम यहां से डिस्को रेस्तरां में जाएंगे. दो बजे के बाद नीना के यहां जाएंगे. उस के मातापिता सब चले गए हैं. घर में अकेली है. उस ने काफी की दावत दी है. उस के पास बहुत बढ़िया एकदम नए पाप संगीत के रिकार्ड हैं. बस, अब जितनी भी देर लग जाए..."

"जाएगी कैसे?"

"ओह मां, आप चिंता मत करो. सब के पास स्कूटर व मोटर साइकिलें हैं. अच्छा..."

दूसरे ही क्षण बिन्नी घर से बाहर थी.

शोभा को न जाने क्या सूझी, वह जैसी थी वैसी ही बाहर आ गई. कार पोर्टिको में खड़ी थी. तुरंत स्टार्ट की और बिन्नी और उस के साथियों का पीछा करने लगी. डिस्को रेस्तरां तक गई.

सब लड़केलड़कियां अंदर चले गए थे. वह लगभग आधा घंटा तक बाहर कार में बैठी रही थी और फिर उदास मन से वापस आ गई थी. एक बार मन चाहा भी था कि अंदर चली जाए, पर साहस न जुटा सकी थी.

वह सारी रात करवटें बदलती रही थी. एक क्षण को भी आंखें न झपक सकी थीं. यही सोचती रही थी कि कैसे बिन्नी पर नियंत्रणकर सकेगी? इस से पहले तो उसे अपने पर नियंत्राण करना होगा. और यह उस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब दर्द से मुक्ति!

पेन एड. पीठ और जोड़ों के दर्द से पल-भर में मुक्ति दिलानेवाली *हर्बल* स्प्रे

क्या आप किसी ऐसी दर्द या पीड़ा के शिकार हैं जिसपर कोई भी दवा कारगर साबित नहीं होती?

अब पेन एड आज़माइये. आपका दर्द कितना भी पुराना क्यों न हो—इधर स्प्रे की, उधर दर्द गायब.

दर्द-निवारक

हर्बल पेन एड स्प्रे करते ही पीड़ित भाग पर असर करती है. इसे मलने की भी ज़रूरत नहीं. इसकी गुणकारी शक्ति मांसपेशियों के भीतर तक जा कर दर्द को तुरन्त खींच निकालती है. और आपको घन्टों तक आराम बना रहता है.

कोई हानिकारक प्रभाव नहीं

पूर्णतः जड़ी बूटियों के गुणकारी तत्त्वों से बनी होने के कारण पेन एड कोमल से कोमल त्वचा पर भी कोई हानिकारक प्रभाव नहीं छोड़ती. न कोई खाज, न खुजली. (उपयोग से पहले आपको इसके परीक्षण की भी ज़रूरत नहीं).

अब पीठ के दर्द, साइटिका व लम्बैगो की पीड़ा, गठिया अथवा जोड़ों के दर्द, मोच या मांसपेशियों के दर्द की परेशानी भूल जाइये.

पेन एड स्प्रे लगाइये और देखते ही देखते दर्द से छुटकारा पाइये. आपको लगेगा जैसे दर्द कभी था ही नहीं.

RKB HERBALS

पेन एड का काम— घन्टों तक दर्द से आराम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ तुम्हारी कुछ हमारी
पसन्द है लाजवाब
चुटकी पान मसाला
खाईऐ जनाब

सौंफ इलायची छुआरे वाला
चुटकी
पान मसाला

Chutki
"A Perfect Mouth Freshner"

CHUTKI
चुटकी
चटकी
के॰के॰ कार्यालय का
उत्कृष्ट उत्पादन

के सामने एक बड़ा प्रश्न चिह्न था.

जब बिन्नी आई तो सुबह के चार बज रहे थे.

"बहुत देर कर दी?" शोभा ने आंखें मलते हुए पूछा.

"कहा तो था कि देर हो जाएगी. आप सोई क्यों नहीं?" बिन्नी ने उलाहना दिया.

शोभा ने कहा, "मां हूं न. मैं ने तो नीना के घर फोन भी किया था, किसी ने उठाया ही नहीं."

बिन्नी बिफर पड़ी, "क्या? आप ने फोन किया नीना के यहां? आप मेरी जासूसी करती हैं? आप को मेरे ऊपर विश्वास नहीं? ओह मां..." बिन्नी की आंखों से आंसू टपकने लगे. उस ने कमरे में जा कर अंदर से चटकनी लगा ली.

शोभा अवाक रह गई, "क्या वह नई पीढ़ी से इतना पिछड़ गई है?"

नाश्ते के समय बिन्नी मेज पर नहीं थी. शोभा ने सोचा, "सो रही होगी. प्याले में चाय ले कर उस के कमरे तक गई. दरवाजा खटखटाया, कोई उत्तर नहीं. खोला तो दरवाजा खुल गया. बिन्नी कमरे में नहीं थी. दिल धक से रह गया. चाय का प्याला मेज पर रख कर उस ने सारा घर छान मारा. बिन्नी घर में ही नहीं थी. आंखों में आंसू आ गए.

वह जल्दी से तैयार हो कर अपनी मां के यहां गई.

"बिन्नी है?" शोभा का स्वर भर्रा रहा था.

नानी मुसकराई, "सो रही है, मेरे बिस्तर पर."

शोभा ने एक गहरी सांस ली. धीरेधीरे जा कर देखा. सोती हुई बिन्नी कितनी सुंदर लग रही थी. छूने को मन हुआ. पर सोचा कि कहीं जग न जाए, बाहर आ कर सोफे पर आंख मूंद कर आधी लेट गई.

आज उस को पहली बार महसूस हुआ था कि बेटी को मां की ही नहीं पिता की भी आवश्यकता होती है. जिस संसार में एक की भी कमी हो, वह अधूरा होता है. ●

अरिता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मां बेटी: विवाद पुराने और नए का

लेख • रजनी माथुर

"मां, आप किस डिजाइन का सैंडल उठा लाईं, एकदम रद्दी और पुराने फैशन का!" पारुल ने कुछ ऊंची आवाज में चिल्लाते हुए कहा.

रसोई में काम करती रज्जू एकदम चौंक उठी और आटे से सने हाथ से इशारा करती चिल्ला कर बोली, "175 रुपए का इतना सुंदर सैंडल तुम्हें पसंद नहीं आया. देखा भी किस कंपनी का है? ओफ! मैं तो पागल हो जाऊंगी इन के नखरे सहसह कर. कुछ समझ में नहीं आता क्या करूं?"

तभी पारुल की छोटी बहन डिंपल ने तीर फेंका, "मां, आप को कुछ पता भी है आज के फैशन का? इस डिजाइन का सैंडल तो हमारी एक अध्यापिका पहन कर आती हैं जो उम्र में आप से भी बड़ी हैं."

दोनों तरफ से हुए वारों के बीच, जो रज्जू की किशोर बेटियां कर रही थीं, रज्जू बुरी तरह से घिर गई थी. समझ में नहीं आ रहा था, क्या करे. बेटियों की दलील थी कि कहीं कुछ खरीदने जाएं तो उन्हें साथ ले कर जाएं. पारुल यही चिल्ला रही थी, "मां, आप हर चीज को पैसे से तोलती हो. हमें बेशक सस्ता दिला दो, पर नए फैशन का होना चाहिए."

यही दलील डिंपल की भी थी. पर उन की मां रज्जू उस में टिकाऊपन देख रही थी.

तभी उस के पति उमेश ने प्रवेश किया. पर मां व बेटियों के इस विवाद से बचने के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिए वह कुछ देर को फिर बाहर चले गए ताकि वातावरण शांत हो जाए. ये दलीलें बस 15-20 मिनट की होती थीं. पर अकसर रज्जू को ही चुप होना पड़ता था. और फिर सब सामान्य हो जाता था और तब उस की बेटियां उस से हिलमिल कर बातें करती थीं और स्कूल के किस्से सुनाती थीं.

अब भी यदि रज्जू में क्रोध का कुछ अंश रहता तो झुंझला कर यही कहती, "मुझे कोई बात नहीं सुननी तुम्हारी. तुम अपनी मनमानी करती हो. मैं खुद सब फैशन जानती हूं, पर तुम तो घटिया चीजों को फैशन बताती हो. स्टोनवाश और एसिड वाश स्कर्टों के पीछे पड़ी रहती हो, जिन में लड़कियां एकदम बकवास लगती हैं. लगता है कि जैसे घिसेपिटे कपड़े पहन रही हों. मैं मखमल की स्कर्ट लाई तो तुम्हें वह सड़ियल लगी. समझ में नहीं आता, आखिर क्या करूं, कैसे करूं. लोग तुम्हें कुछ नहीं, मुझे ही तो कहेंगे."

"लोग कुछ नहीं कहेंगे. फिलहाल आप खाना खिला दो. भूख लगी है." कहती हुई पारुल व डिंपल जब रसोई में पतीले का ढक्कन हटा कर सब्जी देखने लगीं तो गोभी की सब्जी और मूंग की दाल देख कर सीधी बाहर भागीं. "मां, आज तो सच में आप को कुछ हुआ है जो खाना भी एकदम घटिया बनाया है."

फिर दोनों ही अलमारी से नूडल्स का पैकेट निकाल कर लाईं और स्वयं ही बनाने लगीं.

झगड़े की संभावना दोबार उठ खड़ी हुई थी. पर रज्जू ने स्थिति को भांपा और अपनी रोटी बना कर, दाल में बढ़िया सा छौंक लगा कर और गरमागरम सब्जी परोस कर जब बैठी, तब तक उस के पति भी लंच पर आ चुके थे. दोनों को खाना खाते हुए देख कर पारुल और डिंपल को भी लगा कि दाल कितनी बढ़िया है और सब्जी भी ठीक ही है. धीरेधीरे दोनों ने खाने का रुख किया और बाद में नूडल्स रज्जू को ही खाने पड़े. बात एक मोड़ पर आ कर शांत हो गई थी.

सब ने खाना खाया तो पारुल ने पेशकश की कि मांपिताजी के लिए वह चाय बनाएगी. तब रज्जू ने कहा, "न बाबा, तुम अभी रसोई में जाने लायक नहीं हो."

यह स्थिति लगभग सभी घरों में किशोर बेटियों के साथ आम तौर पर रहती है. किशोर सपने और बुढ़ाती जवानी के फैसले सदा आपस में टकराते ही रहे हैं. कहीं समझौते की गुंजाइश इसलिए नहीं रहती कि मां अभी स्वयं जवानी के दिनों को अपनेआप में ढाले रहती है.

किशोर मन भी तो एक नाजुक बौराया सा पौधा होता है. जो न जाने हवा के वेग से किधर मुड़ जाए और उस को सही मोड़ देने के लिए सब से बड़ी जिम्मेदारी मां की ही होती है. उस का संतुलित व्यवहार ही किशोरी मन में कहीं गहरे पैठ जाता है और किशोरियां जो भी मां का रूप देखती हैं. स्वयं को उसी में ढाल लेती हैं.

यहां इस प्रसंग में, रज्जू के परिवार को देखें तो रज्जू स्वयं एक आधुनिक, नए से नए फैशन को समझने वाली है. उस की बेटियां पारुल व डिंपल मां के फैशन को पुराना कहती हैं और पति उमेश को इन बातों से कोई लेनादेना नहीं है. वह अपनेआप में मस्त है. वह समझते हैं कि उस की पत्नी सब संभाल रही है. मांबेटियों का मामला है वे स्वयं ही

अत्यधिक स्वतंत्रता व अत्यधिक पाबंदियां—दोनों ही स्थितियां लड़की के स्वतंत्र विकास के लिए घातक हैं. अतः जवान होती बेटी पर इतना ही अंकुश रखें कि उस की चुभन उसे महसूस न हो. एकदूसरे को भलीभांति समझने का प्रयास ही विचारों में सामंजस्य ला सकता है.

शरिता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

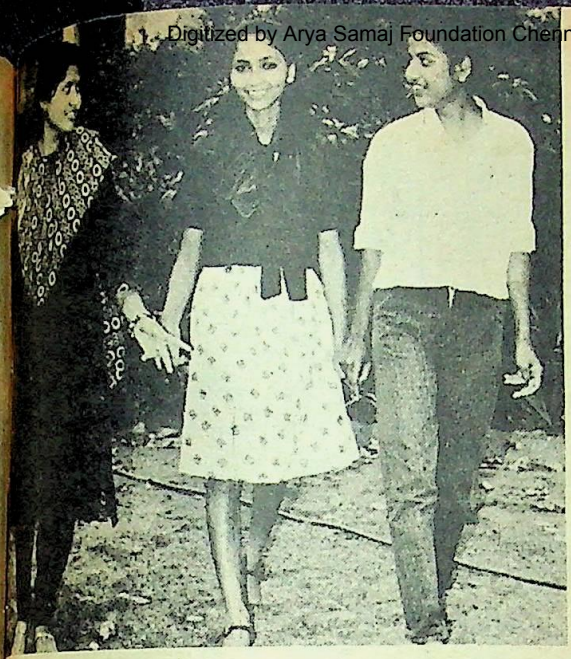

सुरक्षित जगह में सहेलियों के साथ घूमनेटहलने में कोई बुराई नहीं है. लेकिन ध्यान रखें कि आप का पहनावा भी शालीन हो.

फैशन उन पर फबेगा, क्या वह सभ्यता के अनुकूल है. मान लीजिए आज मिनी स्कर्ट का फैशन जोरों पर है. दोचार प्रतिशत लड़कियों ने उसे पहन भी लिया तो वे लड़कियां तमाम समाज का प्रतिनिधित्व तो नहीं करतीं. 'हाट पैंट' या अत्यधिक छोटी स्कर्ट पहनना क्या सम्मानजनक लगेगा? फिर जाहिर है, छेड़छाड़ की घटनाएं बढ़ेंगी. तब क्या कुंठाएं नहीं बढ़ेंगी? जो फैशन पश्चिमी सभ्यता की देन है, अकसर अजीबोगरीब होते हैं और वहां की धरती पर, वहां के माहौल में ही अच्छे लगते हैं और यहां उन की अंधी नकल हास्यास्पद ही बन जाती है.

किशोरियों को सोचना चाहिए कि सहीगलत का निर्णय उन की मां उन से अच्छा कर सकती हैं. उन को जितना अनुभव है, किशोरियों को नहीं. अब मान लीजिए, आप (किशोरी) एकदम दुबलेपतले शरीर की हैं और मां से जिद कर रही हैं एकदम चुस्त मिनी स्कर्ट के लिए. सोचा है, वह आप के शरीर पर कैसी लगेगी. अथवा आप किसी ऐसे फैशन की जिद कर रही हैं जो आप के व्यक्तित्व को हास्यास्पद बना देगा, तब आप की मां की नसीहत ही आप को मान लेनी चाहिए. मां तमाम समाज की ऊंचनीच देख कर आप को कपड़े पहनने का सुझाव देती हैं. वक्त की नजाकत समझ कर ही आप को आगे बढ़ना चाहिए.

अक्सर स्कूल में लड़कियों को कोई न कोई सहेली ऐसी मिल ही जाती है जो उसे सही रास्ता न दिखा कर गुमराह करती है. हो सकता है, आप के पढ़ाई में तेज होने पर वह आप से ईर्ष्या रखती हो. इसलिए आप को

निबटें और बात कोई गंभीर तो है नहीं, बस मांबेटियों की हलकी सी नोकझोंक है, जो लड़कियों के बड़े होते ही ठीक हो जाएगी. पर रज्जू में इतना धैर्य नहीं. वह सब कुछ झटपट सुलझा लेना चाहती है. पर हर रोज इसी रस्साकशी में और भी उलझती जाती है.

बात कुछ भी नहीं. हर घर की कहानी है. फिर भी एक सीमारेखा अवश्य खींची जानी चाहिए, ताकि मां और किशोरियां दोनों अपनी हद में रहें, कहीं कोई विवाद उत्पन्न न हो. जहां एक ओर मां का फर्ज है कि किशोर भावनाओं को समझ कर उन का अपने विचारों से तालमेल बिठा लें, वहीं दूसरी ओर, किशोरियों को भी यह बात भलीभांति समझ लेनी चाहिए कि मांबाप उन से ज्यादा अक्ल रखते हैं, और मां की पसंद को एक बार स्वीकार कर के तो देखें कि वास्तव में क्या सही है, क्या गलत. आज की नारी स्वयं घर की चारदीवारी से बाहर निकल कर कुछ कार्य कर रही है तो इतना तो समझ ही सकती है कि कौन सा फैशन उन की बेटियों के लिए ठीक रहेगा."

कई बार होता यह है कि फैशन की भौंडी नकल के पीछे किशोरियां भागती हैं और स्वयं यह नहीं देखतीं कि क्या फलां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरिता व मुक्ता में प्रकाशित लेखों के महत्त्वपूर्ण रिप्रिंट

सेट नं.- 34

- प्राचीन हिंदू संस्कृति
- शंबूक वध
- अतीत का मोह
- पुरोहितवाद
- गौ पूजा
- हमारी धार्मिक सहिष्णुता
- कृष्ण नीति: हमारा नैतिक पतन
- परलोकवाद
- राम का अंतर्द्वंद्व
- राम का अंतर्द्वंद्व: आ.व.आ.के उत्तर
- भारत में संस्कृति का ब्राह्मण नियंत्रित विस्तार
- हिंदू धर्म
- संस्कृत
- भारतीय नारी की धार्मिक यात्रा
- कर्ण
- भारतीय नारी की सामाजिक यात्रा
- तुलसी और वेद
- रामचरितमानस में ब्राह्मणशाही
- भारतीय नारी
- भ्रष्टाचार
- रामचरितमानस में नारी
- सत्यनारायण व्रत कथा
- क्या नास्तिक मूर्ख हैं?
- गांधीजी का बलिदान
- यज्ञोपवीत
- जंत्र तंत्र मंत्र
- कर्मयोग
- गरुड़पुराण
- ईश्वर, आत्मा और पाप
- कितना महंगा धर्म?

मूल्य 5 रुपए

50% की पुस्तकालयों, विद्यार्थियों व अध्यापकों के लिए विशेष छूट. रुपए अग्रिम भेजें.
वी.पी.पी. नहीं भेजी जाएगी.
सेट में लेखों का परिवर्तन कभी भी हो सकता है.

दिल्ली बुक कंपनी,
एम-12 कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001

गलत फैशन या आदत की ओर अग्रसर कर रही हो. शायद उसी से प्रभावित हो कर आप मां से झगड़ा मोल ले बैठीं. मत भूलिए कि आप की मां भी एक समझदार आधुनिका है. समाज में उस का ऊंचा स्थान है. आप का सही मार्गदर्शन उस के अलावा कोई नहीं कर सकता.

मान लीजिए, आप की मां ने आप के लिए कोई अच्छी चीज खरीदी. पर चूंकि आप की सहेली को उस की मां वह चीज नहीं ले कर दे रही है तो वह आप की चीज को पुरानी फैशन की बता कर आप के मन से उतार देगी और आप उसे अपनी अलमारी के एक कोने में फेंक देंगी. आप इस सूक्ष्म भेद को समझ लें तो मां से नोकझोंक का प्रश्न ही नहीं उठेगा.

माताओं को भी सिक्के का दूसरा पहलू देखना चाहिए. कहा जाता है कि जब मां का जूता बेटी के पांव में पूरा आने लगे तो समझ लेना चाहिए बेटी जवान हो गई है. तब उस से हर पहलू पर सोचसमझ कर व्यवहार करना चाहिए. एक नाजुक कली को सुंदर फूल के समान खिलाना चाहिए. बेटी पर अंकुश भी लगे पर इस खूबसूरती से कि उसे उस की चुभन महसूस न हो. वह आप से पूरा प्यार पाए और आप को ही अपना हमराज समझे. व्यवहार ऐसा हो कि न तो अत्यधिक स्वतंत्रता ही दें, न अत्यधिक पाबंदी ही. दोनों ही विनाश के मार्ग हैं. यदि आप की बेटी कोई खाना पसंद नहीं करती तो उस से कहिए कि पूरे हफ्ते का मीनू बना कर रसोई में लटका दे. इस से दोनों को ही सुविधा होगी.

अपना छिछोरापन बेटी पर न लादिए. कहीं आप चुलबुली या छम्मकछल्लो बन कर उन हरकतों को कर बैठें जो आप की बेटी पसंद न करती हो.

अपनी बेटी की हर बात को ध्यान से सुनिए. अपने कामकाज से छुट्टी पा कर उसे भी थोड़ा वक्त दीजिए, जिस से एक अनूठा रिश्ता कायम हो. आप एकदूसरे को भलीभांति समझ सकेंगी. तब पुराने और नए का कोई विवाद नहीं रहेगा. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

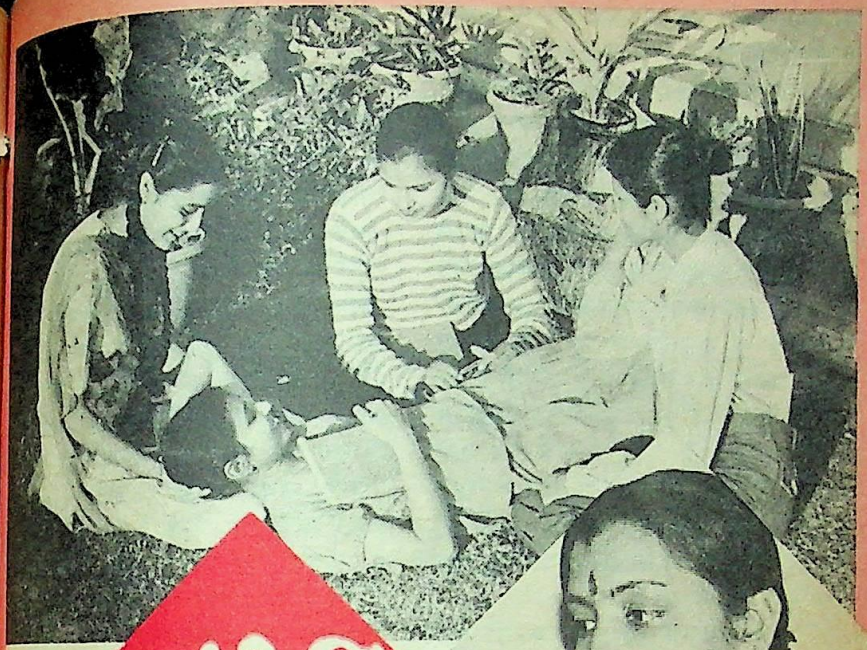

मांबेटी व्यवहार तलवार की धार

लेख • कमला वर्मा

एक समय था जब मांबेटी के पारस्परिक व्यवहार में कोई समस्या नहीं आती थी. युवती होने से पहले ही बेटी को ससुराल भेज दिया जाता था. जब कभी बेटी मां के पास आती तो आत्मीय मेहमान बन कर. ऐसे समय मां भी उदार रहने का प्रयत्न करती और बेटी विनम्र रहने का. कोई विचारभेद होता, तब भी वह किसी गंभीर समस्या के रूप में सामने नहीं आता था.

अब बेटियां पूर्ण युवती होने तक मातापिता के घर रहने लगी हैं. मांबेटी का संबंध ममतादुलार का न हो कर दो भिन्न व्यक्तित्व की औरतों का सा होता है. और यह एक मनोवैज्ञानिक सत्य है कि एक औरत दूसरी औरत में केवल कमियां देख कर ही संतुष्ट होती है. दो औरतों का परस्पर सहयोग एक दुर्लभ वस्तु है. मांबेटी के बीच

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी अज्ञात रूप से यही मनोवैज्ञानिक स्थिति काम करती है.

औरत की सब से बड़ी कमजोरी होती है कि वह स्वयं तो दूसरी औरत पर हावी होना चाहती है किंतु दूसरी औरत का अपने ऊपर हावी होना बिलकुल स्वीकार नहीं करती. बेटी जब किशोरावस्था पार करने के संधिकाल में आती है, तभी समस्या बनने लगती है. बेटी अपनी उमड़ती हुई भावनाओं के आवेश में कुछ विशेष तरह का जीवन जीना चाहती है, जब कि मां चाहती है कि बेटी उसी लीक पर चले जो कि मां की इच्छा के अनुसार बनी है. बस, तभी से मांबेटी में तकरार शुरू हो जाती है. मां अपने बड़प्पन के रोब से उसे दबा कर रखना चाहती है, जब कि बेटी को मां का ऐसा व्यवहार एक अत्याचार सा लगता है.

किशोरावस्था को पार करती हुई किसी बेटी से मिल कर देखिए. अपवाद रूप में ही बेटी अपनी मां की हृदय से प्रशंसा करती है या उसे अपना सही मार्गदर्शक समझती है. प्रायः सभी बेटियां मां के नाम से, मां के संपर्क से और मां की आज्ञाओं से चिढ़ती हैं. स्कूलकालिज में जल्दी छुट्टी होने पर लड़कियां घर जाना नापसंद करती हैं. इस के स्थान पर बाजार घूमना, सिनेमा देखना या कहीं बैठ कर गप्पें मारना उन्हें अधिक अच्छा लगता है. यह इस बात का प्रमाण है कि वे घर में मां के संपर्क से दूर ही रहना चाहती हैं.

बेटी की ऐसी हरकतें निश्चित रूप से मां को नाराज करती हैं और वह अपनी बेटी के प्रति उग्र व्यवहार करने को विवश हो जाती है. ऐसी माताएं वे होती हैं, जिन्होंने स्वयं अपनी किशोरावस्था में कड़े बंधन, कड़े परिश्रम का जीवन जिया था. उन्हें बेटी का स्वच्छंद, उन्मुक्त जीवन अच्छा नहीं लगता. इस के साथ ही, वे एक सामाजिक भय से भी पीड़ित होती हैं कि यदि बेटी ने कोई गलत कदम उठा लिया तो क्याक्या दुष्परिणाम भोगने पड़ जाएंगे. अतः मांबेटी के बीच तनाव, नोकझोंक व भेदभाव का व्यवहार होना आरंभ हो जाता है.

उमा की मां का विवाह दसवीं पास करते ही हो गया था. ससुराल में उस ने सासससुर व पति के बहुत अत्याचार सहे. उमा का जन्म होने के बाद जब स्थिति अधिक असहनीय हो गई तो वह उमा को ले कर अपने मातापिता की शरण में आ गई. फिर से पढ़ाई करना, नौकरी खोजना, उमा का पालनपोषण करना व साथ ही पति से संबंध विच्छेद करने की पीड़ादायक परेशानी से गुजरना आदि अनेक संघर्ष उस ने अपनी युवावस्था में किए थे. अब वह उमा, के प्रति बहुत संवेदशील हो गई है. चाहती है कि उमा, जो कि इस समय कालिज में प्रथम वर्ष की छात्रा है, मन लगा कर पढ़े एवं अपने व्यक्तित्व निर्माण में गंभीर रहे.

उमा की मानसिक स्थिति मां से प्रतिकूल है. वह तो मौजमस्ती का जीवन पसंद करती है. शीघ्र ही किसी सुंदर, संपन्न नवयुवक को पति के रूप में प्राप्त करने की कल्पना में खोई रहती है. वह अपनी मां को 'सनकी औरत' कहने में तनिक भी संकोच नहीं करती. कितनी दुखदायी स्थिति है! न तो मां बेटी का मनोवैज्ञानिक धरातल समझना चाहती है और न ही बेटी मां के अनुभवों का लाभ उठाना चाहती है.

विभा अपने मातापिता की सब से बड़ी संतान है. अधिक गंभीर हो कर पढ़ना

जवानी की दहलीज पर कदम रखती बेटी अपनी तरह का जीवन जीना चाहती तो मां उसे अपनी तरह चलाना पसंद करती है. ऐसे में बेटी विद्रोह पर भी उतारू हो सकती है. यहां मां द्वारा ही समझदारी से काम लेना दोनों के हित में है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

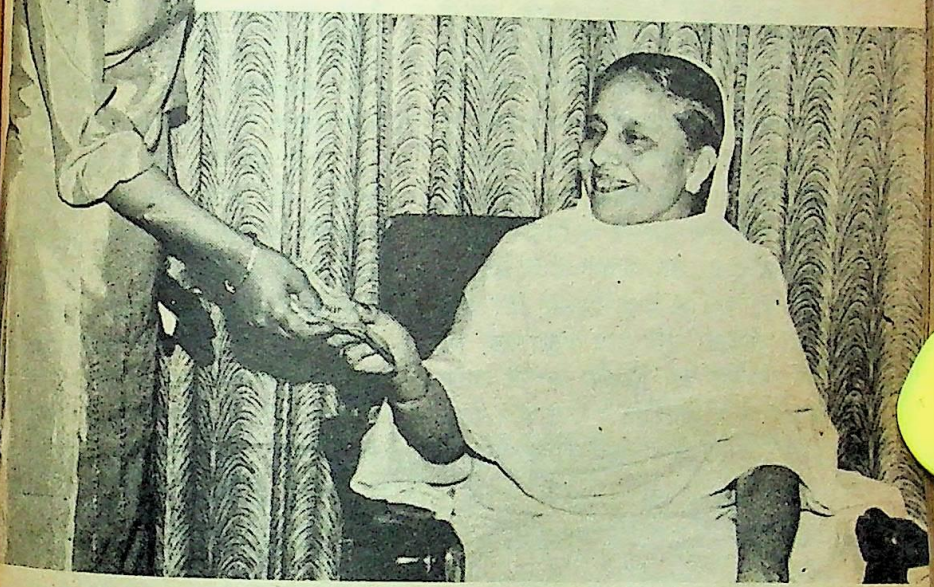

मां तो यही चाहती है कि बेटी अपनी सारी कमाई उसे देती रहे.

चाहती है, कुछ बनने की आकांक्षा रखती है. यहां भी समस्या मांबेटी के व्यवहार की है. मां का कहना है कि आखिर तो घर बसाना है सो घर का पूरा काम करो, समय निकाल कर पढ़ाई करते रहो. कालिज न जा कर प्राइवेट परीक्षा की तैयारी करो. पीछे दो भाईबहन और हैं तो क्या मां नौकरानी की तरह सारा काम संभालती रहेगी?

विभा ने जिद कर के कालिज में प्रवेश ले तो लिया है किंतु मां का असहयोग उसे एकाग्रचित्त हो कर अध्ययन करने में बाधा पहुंचा रहा है. मां अपने शारीरिक सुखों की ओर ध्यान देने में लगी रहती है, जब कि

संतान के पालनपोषण में मां को अपने कई सारे सुख भूलने पड़ते हैं. मां की इस वृत्ति के फलस्वरूप विभा को अपनी मां के प्रति तनिक भी श्रद्धा नहीं है. अकसर मांबेटी एकदूसरे को कोसती रहती हैं.

अनुराधा अच्छी नौकरी कर रही है. अभी तक विवाह नहीं हुआ है. उम्र लगभग 30 वर्ष की है.उसे अपने अनुकूल जीवनसाथी के मिलने की पूरी आशा व आकांक्षा है. जब कि मां का व्यवहार बताता है कि इतनी उम्र के बाद अब ब्याह रचाने की क्या आवश्यकता है? अनुराधा के वेतन का बड़ा हिस्सा तो दो छोटी बहनें व भतीजेभतीजी पर पहले से ही खर्च हो रहा है. जब कभी कोई बोनस या अन्य भत्ते आदि के रूप में अतिरिक्त राशि मिलती है तो मां चाहती है कि अनुराधा उसे भी मां को सौंप दे.

इस के अतिरिक्त, अनुराधा जब कभी कहीं घूमनेफिरने, अपने परिचितों से मिलने जाने का कोई कार्यक्रम बनाती है तो मां चाहती है कि वह व्यर्थ पैसा बरबाद न करे. यदि अनुराधा किसी को उपहार या सहायता के रूप में कुछ देती है तो यह मां को अच्छा नहीं लगता. मां स्पष्ट रूप से कह देती है कि उस ने बड़े दुख उठा कर उसे इतना पढ़ाया.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिखाया है सो उस का कर्तव्य है कि वह अपनी मां को पूर्ण संतुष्ट रखे. अनुराधा के लिए मातापिता का घर और परिवार के अन्य लोगों का साथ एक अपरिहार्य स्थिति की विवशता बन गए हैं. बिना विवाह मातापिता का घर छोड़ना सामाजिक दृष्टि से उचित भी तो नहीं.

मांबेटी के बीच इस प्रकार की अनेक समस्याओं का होना आज भी एक मुख्य समस्या बन गया है. मां की सूझबूझ, उस के हृदय का प्यार और अपने निजी सुख का त्याग, इन्हीं गुणों से मां अपनी बेटी की सच्ची हमदर्द व मार्गदर्शक बन सकती है.

बेटी की किशोरावस्था प्रारंभ होते ही मां को विशेष रूप से सतर्क होना पड़ता है. बेटी की मनोवृत्ति समझने का विशेष प्रयास करना पड़ता है. उसे भावनाओं के संतुलन का पाठ पढ़ाने में मां जैसा शिक्षक और कोई नहीं हो सकता. एक कम पढ़ीलिखी या अनपढ़ मां भी यह भूमिका अच्छी तरह निभा सकती है. किंतु इस के पीछे मां के दिल और दिमाग की ईमानदारी होनी चाहिए, बेटी के प्रति उस का सच्चा दुलार होना चाहिए.

मान लीजिए, बेटी ने कालिज में इसी साल प्रवेश लिया है और वहां सहशिक्षा है तो मां ही उसे यह बात समझा सकती है कि किसी भी लड़के से अधिक बोलचाल व कालिज में अधिक बनठन कर जाने के क्या दुष्परिणाम हो सकते हैं. यदि बेटी नौकरी कर रही है और विवाह की उम्र भी आ चुकी है तो उस समय भी मां का मार्गदर्शन ही उसे सही राह दिखा सकता है. आगामी जीवन के प्रति आशावान बनाए रखना मां की मानसिकता पर बहुत कुछ निर्भर करता है.

दुख की बात यह है कि पढ़ीलिखी माताएं भी अपने इस कर्तव्य को नहीं समझतीं. वे 'मां' की भूमिका भूल जाती हैं और मात्र एक 'औरत' की भूमिका ही निभाती हैं. यदि बेटी औरत बन कर मां के सामने मुकाबले के लिए खड़ी भी हो जाए तो एक समझदार मां उस के सामने मां बन कर ही पेश आएगी, औरत बन कर नहीं. इस मनोवैज्ञानिक सत्य को ध्यान में रखना बहुत आवश्यक है कि दो औरतें कभी भी एकदूसरे से सहयोग नहीं करतीं. मूल रूप में उन का व्यवहार एकदूसरे को नीचा दिखाने का ही होता है. मां केवल मां बन कर ही इस शोचनीय स्थिति से बच सकती है. और 'मां' का अर्थ बेटी पर रोबदाब रखना या शासन करना नहीं, मां का अर्थ है- सच्चा दुलार, सच्ची ममता और संतान के सुख को ही अपना सुख समझना.

निश्चित रूप से जवान बेटी से व्यवहार करते समय तलवार की धार पर चलने के समान मां को पूर्ण सजग, सतर्क व कुशल होना पड़ता है. अन्यथा संबंध जो बिगड़ते हैं तो फिर बिगड़ते ही चले जाते हैं, सुधरने की संभावना ही नहीं रहती. जो मां अपनी बेटी से संबंध बिगाड़ लेती है, बेटे से भी बना कर नहीं रख सकती. यह भी एक सत्य है. इसी लिए मां को अपना दुलार बेटेबेटी में समान रूप से बांटना है. तभी वह मां है.

वरवधू ढूंढ़ने की समस्या सरिता में वैवाहिक विज्ञापन दे कर हल कीजिए

सरिता सारे भारत में समृद्ध, सजग व सुशिक्षित परिवारों में पढ़ी जाती है. इस प्रकार सरिता में वैवाहिक विज्ञापन आप को वरवधू ढूंढ़ने में बहुत सहायक सिद्ध होगा. दैनिक पत्र तो केवल अपने शहर या इलाके में पढ़े जाते हैं, लेकिन सरिता का क्षेत्र सारा भारत है. इन विज्ञापनों का शुल्क भी सरिता के पाठकों के लिए नाम मात्र रखा गया है.

विस्तृत जानकारी के लिए निम्नलिखित पते पर पत्रव्यवहार करिए :

विज्ञापन व्यवस्थापक, सरिता,
नई दिल्ली - 110055.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बेटी को विवादों से बचाएं

लेख • शम्मी टंडन

"अरी सुन, आज दादी के घर में चाची आने वाली है. जरा बहाने से देख कर आना कि वह क्या कुछ ले कर आती है. और फिर मुझे आ कर सब बताना. मैं भी तो देखूं मांजी की लाड़ली बहू क्या लाती है मायके से.

शोभा ने अपनी बेटी रश्मि को जो अभी कालिज से आई थी, ये सब बातें सिखा कर दादी के घर भेज दिया.

शोभा चार साल सास के घर रही थी. बाद में मनमुटाव होने के कारण वह अलग हो गई. अब उस की देवरानी सास के घर रहती थी.

सास छोटी बहू की तारीफ करती थी और वह थी भी इसी तारीफ के लायक. सास का बहुत खयाल रखती थी. ऐसे ही कभी बातोंबातों में सास ने शोभा के सामने छोटी बहू के मायके की तारीफ कर दी जिसे शोभा बरदाश्त न कर सकी.

यही कारण था कि जब उसे पता चला कि छोटी बहू मायके से आने वाली है तो उस ने अपनी 17 वर्षीया बेटी रश्मि को बहाने से

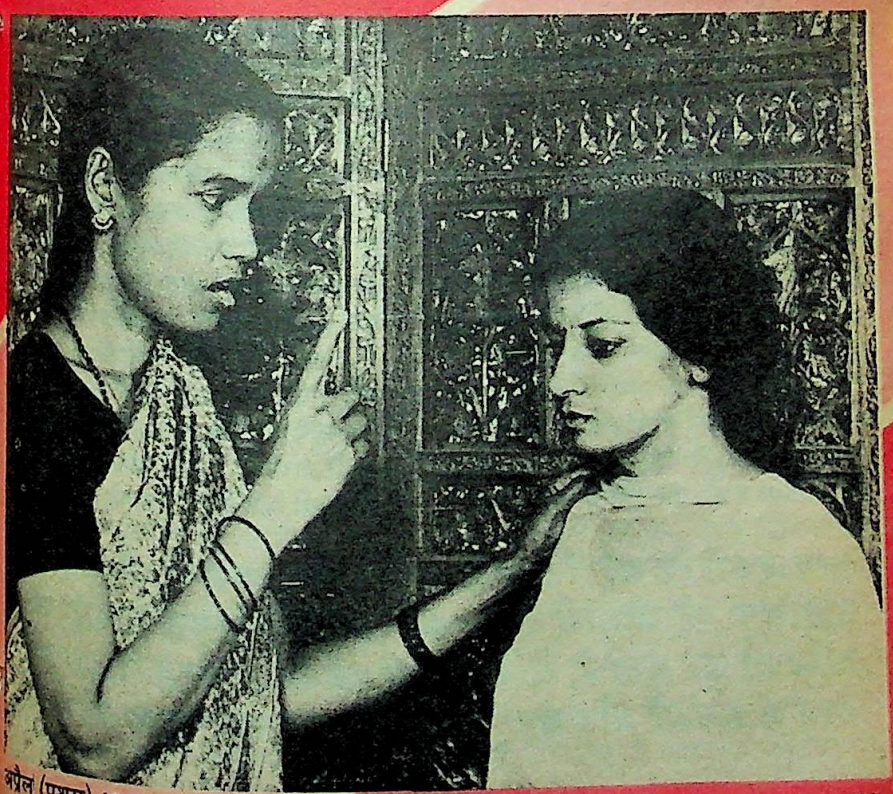

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दादी के घर भेज दिया ताकि पता चले कि वास्तव में छोटी बहू मायके से कितना सामान लाती है.

बेटी रश्मि भी जासूसी में बहुत होशियार थी. उसे उस की मां ने जासूसी का पूरी तरह प्रशिक्षण दिया था. मां जहां भी जासूसी करने के लिए कहती, रश्मि भागीभागी जाती और मां को आ कर पूरी रिपोर्ट देती. साथ में नमकमिर्च भी लगाती.

आज भी रश्मि को दादी के घर रवाना कर के शोभा अंदर आ कर बैठ गई और सोने की कोशिश करने लगी. लेकिन जब हृदय में डाह की आग लग रही हो तो भला किसी को नींद आ सकती है. यही हाल शोभा का था. हार कर वह बाहर आ कर बैठ गई.

दो घंटे बाद रश्मि वापस आई और आते ही शुरू हो गई, "मां, तुम ठीक ही कहती थीं. दादी ने तो चाची को ऐसे ही सिर चढ़ा रखा है. वह कुछ खास थोड़े ही लाई है. मिठाई के सिर्फ चार डब्बे, सेबों का एक टोकरा और एक बिस्कुट का डब्बा..."

रश्मि बोलती जा रही थी और शोभा के दिल पर छुरियां चल रही थीं. जब उस से बरदाश्त न हुआ तो रश्मि को चुप करा कर वह अंदर चली गई.

देखा आप ने किस तरह माताएं बेटियों से जासूसी कराती हैं. अपने स्वार्थ की खातिर वे बेटी को पराई आग में झोंक देती हैं. उन्हें इस बात की तनिक भी परवाह नहीं होती कि वे जो कुछ कर रही हैं, वह सही है या गलत या उस का बेटी पर क्या असर पड़ सकता है.

शेक्सपियर का कथन है कि "जेलसी दाई मेम इज वूमेन" यानी स्त्री का दूसरा नाम जलन है. शायद ही कोई स्त्री ऐसी हो जिस में यह भावना न हो. हर स्त्री में यह जलन की भावना स्वाभाविक रूप से होती है. किसी में कम, किसी में ज्यादा.

इस जलन का आलंबन यानी पात्र कोई भी हो सकता है. पड़ोसिन, सहेली, ननद, देवरानी, जेठानी तो शायद ही कोई ऐसी मिले, जो एकदूसरे से ईर्ष्या न करती हों.

लेकिन दुनियादारी निभाने के लिए मुंह पर तो मीठा बनना ही पड़ता है. अतः वे सामने तो अच्छी बनी रहती हैं, लेकिन अपनी ईर्ष्या की तुष्टि के लिए बच्चों को माध्यम बनाती हैं. विशेष रूप से बेटी को, क्योंकि बेटी मां की अधिक हमदर्द होती है. बेटियों के आगे अपने मन की ईर्ष्या जताना वे बुरा नहीं समझतीं.

यही कारण है कि वे बेटी से जासूसी कराने में भी नहीं हिचकिचातीं. बेटी के माध्यम से वे अपने प्रतिद्वंद्वी की सभी खबरें मालूम करती हैं. जब बेटी मामी के घर या बूआ के घर से आएगी तो उस से जरूर पूछेंगी, "बेटी, मामी ने क्या खिलाया, कैसा बरताव किया, घर कैसा रखती है" आदि.

लड़ें मगर बेटी के सामने नहीं

सब से बड़ी बेवकूफी तो यह है जब गृहिणियां बेटी के सामने ही लड़ने लगती हैं पड़ोसिन या देवरानीजेठानी से.

यही नहीं, जब कोई सहेली आती है तो वे अपनेअपने प्रतिद्वंद्वी की बुराई करने लगती हैं. उस वक्त वे यह भी भूल जाती हैं कि बेटी उन के पास बैठी है. अतः बेटी को जो कुछ नहीं पता लगना चाहिए, वह भी लग जाता है.

कई बार पति से भी किसी बात पर मनमुटाव हो जाता है और नौबत तूतूमैंमैं तक पहुंच जाती है. गुस्से और आवेश में बात काफी आगे बढ़ जाती है और यह सब बेटी के सामने हो, इस से मांबाप को कोई फर्क नहीं

आप अपनी किशोरी बेटी से सास, ननद, देवरानी, जेठानी या पड़ोसिनों की जासूसी करवा कर अपनी ईर्ष्यागत भावना की तुष्टि तो कर लेती हैं, लेकिन कभी यह भी सोचा है कि इस का आप के संबंधों और बेटी के भविष्य पर क्या असर पड़ेगा?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पड़ता. क्योंकि उस वक्त तो अपने आप पर काबू रखना कठिन होता है और ऐसे लड़ाईझगड़ों में उचितअनुचित का भी ध्यान नहीं रहता.

वस्तुतः बेटी को अपने विवादों में फंसाना ठीक नहीं है. इस से आप को और आप की बेटी दोनों को नुकसान हो सकता है.

सब से बड़ी बात तो यह है कि यदि आप बेटी से जासूसी करवाती हैं और उस की पोल खुल जाती है तो आप सब की नजरों में गिर जाएंगी.

हो सकता है कि आप की बेटी अभी तो इन कामों में रुचि ले रही हो, लेकिन यदि कभी मौका आए तो वह आप को 'ब्लैकमेल' कर सकती है. साथ ही, आप को भी खरीखोटी सुना सकती है.

यही नहीं, आप की बेटी के मन में आप की छवि लड़ाकू और ईर्ष्यालु नारी की होगी, जिस के परिणामस्वरूप उस के मन में आप के लिए जो इज्जत होनी चाहिए, वह कम हो सकती है. हो सकता है कि वह आप की उपेक्षा भी करने लगे. आप की किसी भी बात की परवाह न करे और आप का कहना भी न माने.

यह तो बात थी कि बेटी आप के बारे में

बेटी आप से जो कुछ भी कान में कह रही है, उस में सचाई कितनी है? हो सकता है कि आप को खुश करने के लिए वह बात को बढ़ाचढ़ा कर कह रही हो.

क्या सोचेगी या आप और बेटी के पारस्परिक संबंधों में इस से क्या फर्क पड़ सकता है.

लेकिन यदि इस को नजरअंदाज कर दिया जाए तो भी बेटी को अपने विवादों में फंसाना गलत है. उस के भविष्य में यह बात जहर घोल सकती है. वह इस आयु में ही सीख जाएगी कि आगे चल कर उसे क्या करना होगा. या फिर किस के साथ कैसे रिश्ते बनाने होंगे. जो कुछ उस ने आप के संबंध में देखा और सीखा है, वही सब आगे चल कर उस के संबंध में भी लागू हो सकता है. परिणामस्वरूप वह भी अपनी पारिवारिक शांति खो देगी.

बेटी का हर वक्त इन विवादों को सुनना, उसे वक्त से पहले सयानी भी बना सकता है. उसे किशोरावस्था से ही पता चल जाएगा कि बड़ों में आपस में प्यार नहीं होता, लड़ाईझगड़े होते हैं, ईर्ष्या होती है. ये अनुभव उस के मन में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिंदगी के प्रति गलत विचार पैदा कर सकते हैं. परिणामस्वरूप वह हर बात को शंका की दृष्टि से देखने लगेगी और अपनी सहेलियां या हमउम्र संबंधियों के साथ ईर्ष्या करने लगेगी. बुराई करते रहने की उसे भी आदत पड़ जाएगी. वह भी हर वक्त किसी न किसी की आलोचना करती रहेगी और दूसरे की गलतियां निकालती रहेगी.

वैसे भी, यदि आप बेटी के सामने अपने झगड़े करती हैं या बेटी को किसी प्रकार इन विवादों में डालती हैं तो आप अपने साथसाथ अपनी बेटी के मन में भी जहर घोलती हैं. जब वह आप के मुंह से हर वक्त अपनी चाची, मामी या दादी की बुराई सुनेगी तो क्या वह भी उन के बारे में वैसी धारणा नहीं बना लेगी, जैसी आप के मन में उन के प्रति है? और यदि ऐसा होता है तो वह उन्हें कैसे इज्जत और प्यार दे सकेगी जो उसे देना चाहिए. परिणामस्वरूप उन के साथ उस के संबंध भी मधुर नहीं रह सकेंगे.

और जब आप की पड़ोसिन, देवरानी या सास आदि को यह पता चलेगा कि आप अपनी बेटी को उन के खिलाफ भड़काती हैं तो वे आप के साथसाथ आप की बेटी की भी उपेक्षा करने लगेंगी. इस का परिणाम यह होगा कि आप की बेटी को उन से जो ममता या प्यार मिल रहा था, वह खत्म हो जाएगा.

अतः यह बहुत जरूरी है कि आप अपनी बेटी को अपने विवादों से दूर रखें. उसे किसी भी तरह इन से बचाएं. यदि आप किसी की बुराई या आलोचना करती हैं तो ध्यान रखें कि बेटी आप के पास न बैठी हो.

परिवारों में कई बार कलह और क्लेश की ऐसी स्थिति उत्पन्न हो जाती है, जिसे किसी भी हालत में दूर नहीं किया जा सकता है. ऐसे वक्त में इस बात का अवश्य ध्यान रखें कि आप की जवान बेटी आप के आसपास न हो. जहां तक संभव हो, उसे किसी बहाने घर से बाहर भेज दें, ताकि वह न तो कलह की कहानी जान सके और न ही इस में हिस्सा ले सके क्योंकि बड़ों की बातों में बच्चों का दखल किसी को सहन नहीं होता और 17-18 साल की बेटी भले ही जवान हो, लेकिन बड़ों की नजरों में वह बच्ची ही रहेगी.

बेटी के मन में यह बात अच्छी तरह बिठा दें कि वह स्वयं को विवादों से दूर रखे. घर में भी और बाहर भी, क्योंकि विवादों में फंसने से नुकसान ही होता है. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहली बार!

शुद्धता ही शुद्धता.
कभी न मिली ऐसी सुविधा

इंडाना का नया १० किलो पैक

इन्डाना
शुद्ध
घी

मुनाफे का
सौदा और
बचत ही बच

१००% शुद्ध
१००% संपू

फोरमोस्ट इन्डस्ट्रीज़ (इंडिया) लिमिटेड
१३८-१४१, इंन्डस्ट्रीअल ईस्टेट, कांदीवली (वेस्ट) बम्बई
फैक्टरी : सहारनपुर (उ. प्र.)

इन्डाना

CC-0. In Public Domain. Gurukul K

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर्यटन के रंग सरिता के संग

सरिता

मई (प्रथम) व
मई (द्वितीय)

पर्यटन विशेषांक

इन छुट्टियों को सुखद और मनोरंजक बनाइए. देश भर के विभिन्न पर्यटन स्थलों की संपूर्ण जानकारी.

पर्यटन विशेषांकों में आप को पर्यटन स्थलों पर पहुंचने, रहने, घूमने-फिरने की जानकारी तो होगी ही, रंगीन लुभावने चित्रों सहित उन के सौंदर्य का वर्णन भी होगा. यदि आप कहीं नहीं भी जा रहे तो घर बैठे ही पूरे देश का भ्रमण कर सकेंगे.

मई (प्रथम) अंक में पूर्व अर्ध भारत के पर्यटन स्थलों पर लेख होंगे, इन में मुख्य हैं : हरिद्वार, देहरादून, ऋषिकेश, मसूरी, केदारनाथ, नैनीताल, आगरा, बनारस, लखनऊ, गंगटोक, खजुराहो, पुरी, कोणार्क, मद्रास, महाबलीपुरम, आदि.

मई (द्वितीय) अंक में पश्चिम अर्ध भारत के पर्यटन स्थलों पर लेख होंगे, जम्मू, कश्मीर, लेह, डलहौजी, कुल्लूमनाली, शिमला, आबू, उदयपुर, जयपुर, अहमदाबाद, बंबई, खंडाला, लोनावला, अजंता, एलोरा, मैसूर, ऊटी, कोडाइकैनाल, गोवा, त्रिवेंद्रम, कन्याकुमारी, रामेश्वरम आदि.

घर से निकलते समय सरिता के पर्यटन अंक लेना न भूलें.

इस के अतिरिक्त यात्रा को सफल बनाने के लिए बहुत सी जानकारी भी होगी. साथ ही हर अंक की तरह कहानियां, लेख, कविताएं, स्तंभ, फिल्म समीक्षाएं आदि.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सांस में चंदन महक सी
आ रही है.

चांदी सी झिलमिल चमकती
भाल बेंदी,
देह पर हलदी, हथेली
शोख मेहंदी.
द्वार शहनाई मिलन स्वर
गा रही है.

प्यार पर फबने लगा है
रूप गहना,
नयन में खिलने लगा
रंगीन सपना.
कौन सी तसवीर मन को
भा रही है.

छूटता बचपन, जवानी
पास आई,
मान की बेला रुपहली
खास आई.
थम गई धड़कन नजर कुछ
पा रही है.
–रामसेवक शर्मा

थम गई धड़कन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बड़े की कांजी

सामग्री: 20 उड़द की दाल के बड़े (मध्य आकार), 2 चम्मच पिसी हुई राई, 100 ग्राम नमक, 2½ लीटर पानी, 1 छोटा चम्मच लाल मिर्च.

विधि: पानी को नमक डाल कर उबाल लें.ठंडा होने पर इस में मिर्च, पिसी राई व बड़े डाल कर मर्तबान में भर कर धूप में दो दिन के लिए रख दें. तीसरे दिन से खटास आनी शुरू हो जाएगी. इस के बाद प्रयोग करें.

काली गाजर की कांजी

सामग्री: 1 किलो ग्राम काली गाजर, 5 लीटर पानी, 100 ग्राम राई (पिसी), 200 ग्राम नमक, 1 चम्मच लाल मिर्च (पिसी).

विधि: गाजर को अच्छी तरह से धो कर लंबे पतले टुकड़ों में काट लें. पानी को नमक डाल कर उबाल आने तक ही पकाएं

चटपटी कांजी

काली गाजर की कांजी

बड़े की कांजी

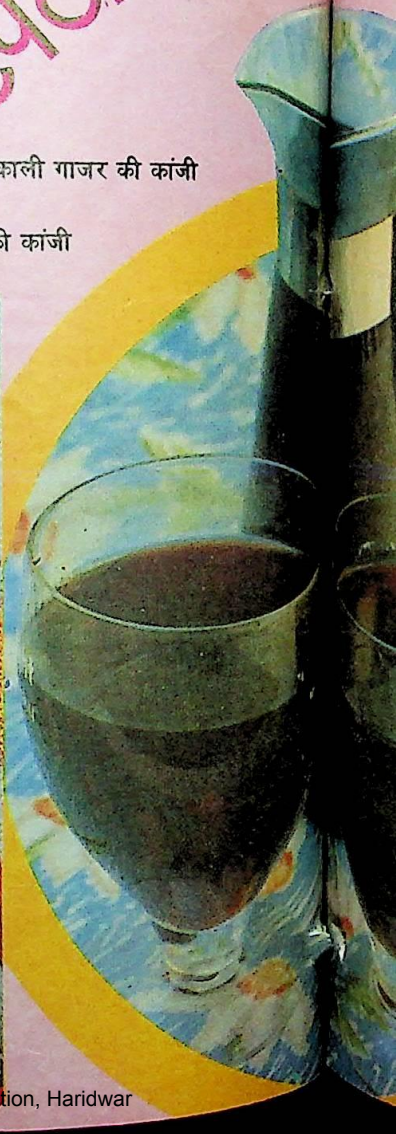

CC-0. In Public ... Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और ठंडा होने पर गाजर, मिर्च, पिसी राई मिला कर मर्तबान में भर दें और ढक्कन के ऊपर साफ कपड़ा बांध कर धूप में रख दें. तीन चार दिन में कांजी तैयार.

जलजीरा बूंदी वाला

सामग्री: 1 गुच्छी हरी धनिया, 1 गुच्छी पुदीना, 6 या 8 हरी मिर्च, 25 ग्राम के लगभग इमली, 100 ग्राम नमक, 1 छोटा चम्मच काला नमक, 1 बड़ा चम्मच सफेद जीरा, 1 नीबू, 1 प्याला बूंदी बेसन वाली, 2½ लीटर पानी.

विधि: हरी धनिया, पुदीना, हरी मिर्च, सफेद जीरा, नमक मिक्सी में या सिल पर बारीक पीस लें और पानी में मिला दें. बूंदी को गरम पानी में डाल कर छलनी से झार लें. धनिया, पुदीने वाले पानी में इमली का पानी घोल कर डाल दें तथा नीबू निचोड़ कर छानने के बाद काला नमक मिला दें. गिलास में एक बड़ा चम्मच बूंदी का डालें. इस के बाद जलजीरा डाल कर परोसें.

—विजया वासुदेव

जी और जलजीरा

जलजीरा बूंदी वाला

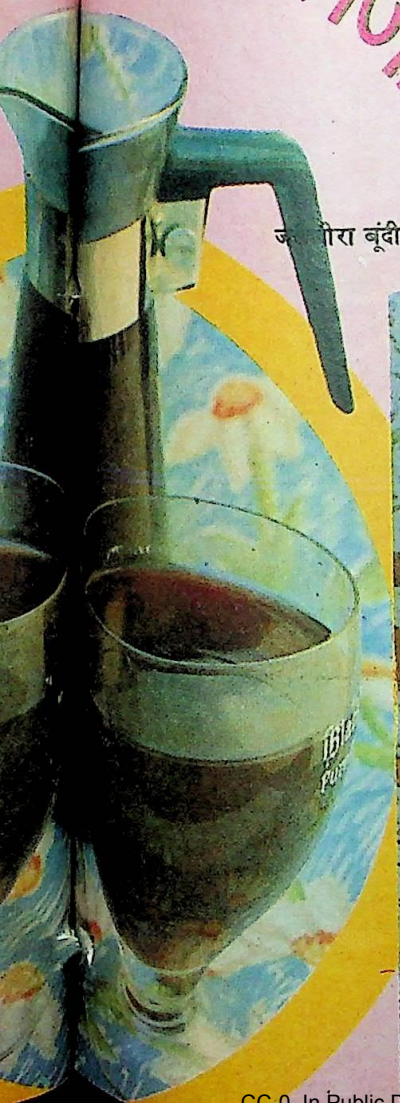

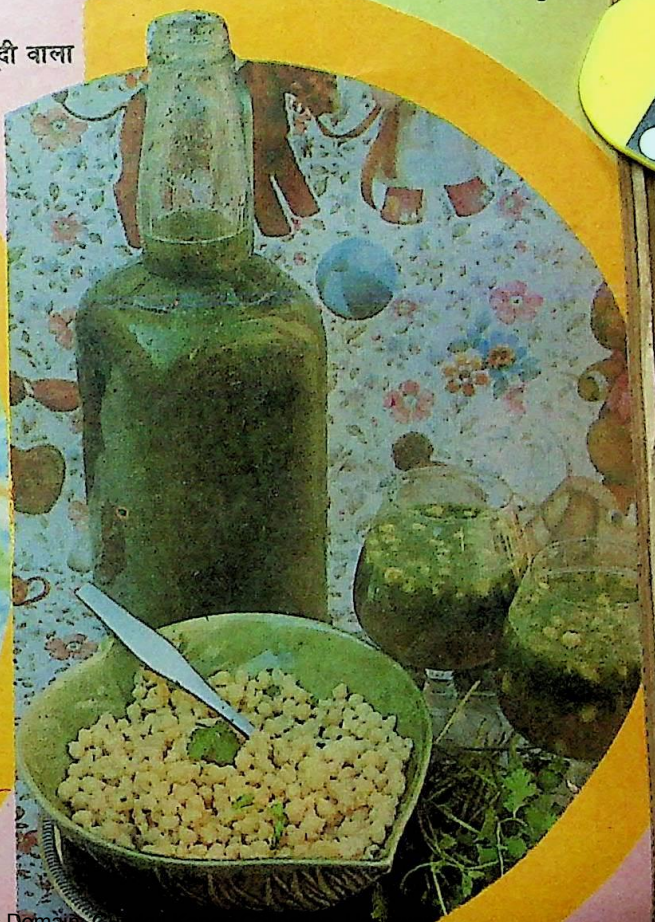

CC-0. In Public Domain. G

Foundation Chennai and eGangotri

ढाल

कहानी • इनायतबानो कायमखानी

अभी पहला पीरियड ही शुरू हुआ था कि चपरासिन आ गई. उस ने एक परची दी, जिसे अध्यापिकाजी ने पढ़ने के बाद एक छात्रा से कहा, "सलमा, खड़ी हो जाओ, तुम्हें मुख्याध्यापिकाजी से उन के कार्यालय में अभी मिलना है. तुम जा सकती हो."

सलमा का दिल धड़क उठा, 'मुख्याध्यापिका ने मुझे क्यों बुलाया है? बहुत सख्त औरत है वह. लड़कियों के प्रति कभी भी नर्म नहीं रही. बड़ी नकचढ़ी और मुंहफट है. जरूर कोई गंभीर बात है. वह जिसे तलब करती है, उस की शामत आई ही समझो.'

'तब ? कल दोपहर बाद मैं क्लास में नहीं थी, क्या उसे पता लग गया? कक्षाध्यापिका ने शिकायत कर दी होगी. मगर वह भी तो कल आकस्मिक छुट्टी पर थीं. फिर?'

सामने खड़ी सलमा को मुख्याध्यापिका ने गरदन उठा कर देखा. फिर चश्मा उतार कर साड़ी के पल्लू से पोंछा और मेज पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुसलिम समाज की तंगदिली को देखते हुए सलमा की अम्मी ने उसे हर कदम सोचसमझ कर उठाने को कहा, लेकिन उस की एक भूल पर परदा डाल कर उस की अम्मी ने उसे एक ऐसा सबक सिखाया जिसे वह जिंदगी भर नहीं भूल सकी.

बिछे शीशे पर रख दिया.

"हूं, तुम कल कहां थीं? मेरा मतलब है कल दोपहर के बाद." इस सवाल के साथ ही मुख्याध्यापिका का चेहरा तमतमा गया. बिना चश्मे के हमेशा लाल रहने वाली आंखें और लाल हो गईं. वह चश्मा लगा कर फिर से गुर्राई, "बोलो, कहां थीं?"

"जी," सलमा की घिग्घी बंध गई. वह चाह कर भी बोल न सकी.

"तुम एक लड़के के साथ सिनेमा देखने गई थीं. कितने दिन हो गए तुम्हें हमारी आंखों में यों धूल झोंकते हुए?"

मुख्याध्यापिका ने कुरसी पर पहलू बदल कर जो डांट पिलाई तो सलमा की आंखों में आंसू भर आए. उस का सिर झुक गया. उसे लगा कि उस की टांगें बुरी तरह कांप रही हैं.

बेशक वह सिनेमा देखने गई थी. हबीब उसे बहका कर ले गया था, वरना वह कभी इधरउधर नहीं जाती थी. अम्मी से बिना पूछे वह जो भी काम करती है, उलटा हो जाता है. उन से सलाह कर के चली जाती तो क्या बिगड़ जाता? महीने दो महीने में वह फिल्म देख आए तो अम्मी इनकार नहीं करतीं. पर उस ने तो हबीब को अपना हमदर्द माना. अब हो रही है न छीछालेदर. गधा कहीं का. खुद तो इस वक्त अपनी कक्षा में आराम से पढ़ रहा होगा, जबकि उस की खिंचाई हो रही है. तोबा, अब आगे यह जाने क्या करेगी.

"तुम एक लड़के के साथ सिनेमा देखने गई थीं. कितने दिन हो गए तुम्हें हमारी आंखों में यों धूल झोंकते हुए?" मुख्याध्यापिका ने गुस्से से सलमा से सवाल किया.

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

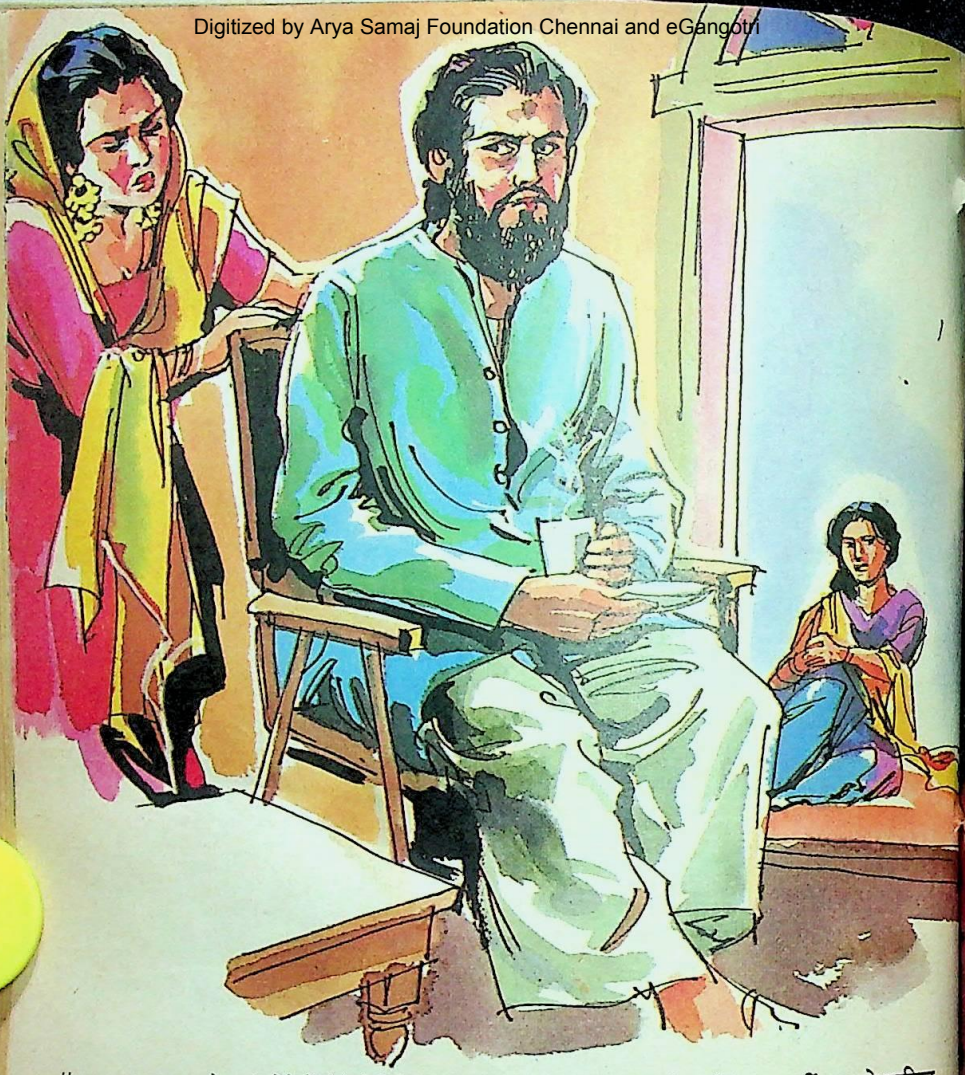

"यह इस वक्त सल्लो यहां कोने में कैसे बैठी है?" अब्बा ने अम्मी से पूछा.

चलो, दोचार चांटे मार ले. मगर मारेगी नहीं. यह हर काम लिखित में करती है. हर गलती पर अभिभावकों को शिकायत भेज देती है. और अगर अब्बा को कुछ भेज दिया तो उस की पढ़ाई ही छूटी समझो. अब्बा का गुस्सा इस मुख्याध्यापिका से उन्नीस नहीं इक्कीस ही है.

"तुम्हारी कक्षाध्यापिका ने तुम्हें कल सिनेमाघर में एक लड़के के साथ देखा था. इस छोटी सी उम्र में भी क्या कारनामे हैं तुम्हारे. मैं कतई माफ नहीं करूंगी. यह लो. 'गोपनीय पत्र' है. खोलना नहीं. अपने वालिद साहब को दे देना. जाओ." मुख्याध्यापिका ने उसे लिफाफा थमा दिया.

सलमा के चेहरे का रंग उड़ गया. उस ने उमड़ आए आंसुओं को पोंछा. फिर संभलते हुए उस गोपनीय पत्र को अपनी कापी में दबा कर जैसेतैसे बाहर निकल आई.

पूरे रास्ते सलमा के दिल में हलचल मची रही. यदि किसी लड़के के साथ सिनेमा जाना इतना बड़ा गुनाह है तो हबीब उसे ले कर ही क्यों गया? ये लड़के कैसे घुन्ने होते हैं, जो भावुक लड़कियों को मुसीबत में डाल देते हैं.

अब अब्बा जरूर तेजतेज बोलेंगे और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्यार

जिंदगी की धार में
प्यार के संसार में,
अधरों को सी लूंगा मैं
प्यार के अंगार में.

–बृजेशकुमार गुप्ता

कबीले वाली बड़ीबूढ़ियां सुनेंगी तो तिल का ताड़ बनाएंगी. उन्हें किसी लड़की का ऊंची पढ़ाई पढ़ना कब गवारा है. बात फिर मसजिद तक भी जाएगी और फिर मौलवी खफा होगा.

जब उस ने हाई स्कूल में दाखिला लिया था तो उसी बूढ़े मौलवी ने अब्बा पर ताने कसे थे. वह तो भला हो अम्मी का, जो बात संभाल ली थी. लेकिन अब अम्मी भी क्या करेंगी?

सलमा पछताने लगी कि अम्मी हर बार उस की गलती को संभालती हैं, जबकि वह फिर कोई न कोई भूल कर बैठती है. वह मांबेटी का व्यवहार निभने वाली बात तो नहीं है. सहयोग तो दोनों ओर से समान होना चाहिए. उसे अपने साथ बीती घटनाएं याद आने लगी थीं.

दो साल पहले एक दिन अब्बा ने छूटते ही कहा था, "सुनो, सल्लो अब 13 की हो गई, इस पर परदा लाजिम है."

"हां, हां, मैं ने इस के लिए नकाब बनवा लिया है," अम्मी ने एक बुरका ला कर अब्बा की गोद में डाल दिया था. "और सुनो, अब तो हमारी सल्लो नमाज भी पढ़ने लगी है."

"वाह भई, एकसाथ दोदो बंदिशें हमारी बेटी पर न लादो." अब्बा बहुत खुश हो रहे थे.

"देख लीजिए. फिर एक बंदिश रखना है तो क्या रखें, क्या छोड़ें?"

"नमाज, यह जरूरी है. परदा तो आंख का होता है?"

और अम्मी की चाल कामयाब रही थी. नमाज तो 'दीनदार' होने और दकियानूसी समाज में निभाने के लिए वैसे भी पढ़नी ही थी. उस का काम बन गया.

फिर उस का हाई स्कूल में आराम से दाखिला हो गया था. बातें बनानेवालियां देखती ही रह गई थीं. अब्बा ने किसी की कोई परवाह नहीं की थी.

सलमा को दूसरी घटना याद आई. वह बड़ी ही खराब बात थी. एक लड़के ने उस के नाम पत्र भेज दिया था. यह एक प्रेमपत्र था. अम्मी की हिदायत थी, "हर बात मुझ से सलाह ले कर करना. मैं तुम्हारी हमदर्द हूं. बेशक बेटी का किरदार मां की शख्सियत से जुड़ा होता है."

मैं ने खत को देखा तो पसीने छूटने लगे. फिर हिम्मत कर के वह पत्र मैं ने अम्मी के सामने रख दिया. अम्मी ने दिल खोल कर बातें की. मेरा दिल टटोला और फिर खत लिखने वाले महमूद को घर बुला कर वह खबर ली कि उसे तोबा करते ही बनी.

मां ने उस घटना के बाद कहा, "सलमा, मुसलिम समाज बड़ा तंगदिल और दकियानूसी है. पढ़ने वाली लड़की को खूब खबरदार रहना होता है."

सलमा ने पूछा, "इतना खबदार किस वास्ते, अम्मी?"

वह हंस दी थीं, "केवल इस वास्ते की कठमुल्लाओं को कोई मौका न मिले. कहीं जरा भी कोई ऐसीवैसी अफवाह उड़ गई तो वे अफवाह उदाहरण देदे कर दूसरी तरक्की पसंद, जहीन और जरूरतमंद लड़कियों की राहों में रोड़े अटका सकते हैं."

"आप ठीक कहती हैं, अम्मी." और

शरिता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सलमा ने पहली बार महसूस किया कि उस पर कितनी जिम्मेदारियां हैं.

पर दोतीन साल बाद ही उस से वह भूल हो गई. अब उस अम्मी को, जो उस की परम सहेली भी थी, वह क्या मुंह दिखाएगी? फिर अब्बा को तो समझाना ही मुशकिल होगा. इस बार किसी तरह अम्मी बात संभाल भी लेंगी तो वह आइंदा पूरी तरह सतर्क रहेगी. सिर्फ पढ़ाई से वास्ता रखेगी.

सलमा ने अपनी अम्मी रमजानी को पूरी बात बता दी थी. सुन कर वह बहुत बिगड़ीं. "सुना, इस गोपनीय पत्र में क्या लिखा है?"

सलमा ने लिफाफा खोल कर पढ़ सुनाया.

रमजानी बहुत बिगड़ी. "अब तेरी आगे की पढ़ाई गई भाड़ में. तू ने खता की है, इस की तुझे सजा मिलेगी. जा कोने में बैठ जा."

शाम हुई. अब्बा आए. कपड़े बदल कर उन्होंने चाय मांगी, फिर चौंक उठे, "यह इस वक्त सल्लो यहां कोने में कैसे बैठी है?"

"यह मेरा हुक्म है. उस के लिए सजा तजवीज की है मैं ने."

"बेटी के लिए सजा?"

"हां, हां, यह देखो. खर्रा." सलमा की अम्मी गोपनीय पत्र देतेदेते रुक गई, 'लेकिन नहीं. इसे गोपनीय रहने दो. मैं ही बता देती हूं.'

और सलमा का कलेजा गले में आ अटका था.

"...वह बात यह है कि अपनी सल्लो की मुख्याध्यापिका नीम पागल औरत है," अम्मी ने कहा था.

"क्या मतलब?"

"मतलब यह कि मसजिद के मौलवी से भी अधिक दकियानूसी और वहमी औरत."

"बात क्या हो गई?"

"...वह बात यह है कि मैं ने सल्लो से कहा था, अच्छी फिल्म लगी है. जा कर दिख

यह भी खूब रही

उन दिनों हम पंजाब में नएनए आए थे. हमें पंजाबी बोलनी ठीक से नहीं आती थी.

एक बार हमारे पिताजी बस से कहीं जा रहे थे. एक जगह बस रुकी तो एक व्यक्ति उन से बोला, "भाई साहब, जरा यह अटैची फड़ाना."

पंजाबी न जानने की वजह से वह बोले, "फड़ानी है तो किसी और से फड़वाओ, मैं क्यों तुम्हारी अटैची फाडूं?"

उन का इतना कहना था कि बस में एक हंसी की लहर दौड़ गई, लेकिन उन का चेहरा देखने लायक हो गया.

—एस. सी. चौधरी.

*

मेरे एक दोस्त के विवाह के अवसर पर हवनकुंड का सारा धुआं बारबार उस के चेहरे की ओर आ रहा था. अंत में उस ने झल्ला कर कहा, "इतना धुआं क्यों हो रहा है? सारा धुआं मेरी ही तरफ आ रहा है."

इस पर मेरा एक अन्य दोस्त बोल उठा, "आप को धुएं का आदी बनाया जा रहा है ताकि शादी के बाद खाना बनाने में आप को कोई परेशानी न हो."

—रमजान अली

*

पिछले साल मेरी दीदी और उन के जेठ ने हिंदी में स्नातकोत्तर उपाधि पाने के लिए परीक्षा दी. संयोग से दोनों की सीटें साथसाथ पड़ गईं. चूंकि मेरी दीदी जेठ से परदा करती थीं, इसलिए उन्हें लिखने में परेशानी होने लगी. उन के जेठजी को जब इस समस्या का पता चला तो वह उलटी तरफ कुरसी घुमा कर लिखने लगे.

कक्ष निरीक्षक ने जब उन्हें उलटा बैठे देखा तो वह उन पर नाराज होने लगे, लेकिन जब उन्हें इस का कारण पता चला तो वह भी हंसे बिना नहीं रह सके. बाद में उन्हें पीछे वाली सीट पर बैठाया गया. —मनीषा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आखिर क्यों ज्यादा से ज्यादा लोग शादी-ब्याह के अवसर पर बीनाटोन क्वार्ट्ज टी.वी. ही उपहार में दे रहे हैं... ।

...सामंजस्य के लिए जिसकी गारंटी है।

अपने प्रिय से प्रिय व्यक्ति को दीजिए वह उपहार जो सर्वोत्तम हो। और अनूठे बीनाटोन क्वार्ट्ज टी वी से बेहतर उपहार भला क्या हो सकता है। रंगों की मोहकता तथा तस्वीर की स्पष्टता का बेमिसाल सामंजस्य और पिक्चर ट्यूब पर 3 साल की गारंटी भी। अपने निकटतम रंगीन/ब्लैक ऐण्ड व्हाइट टी वी के डीलर के यहां बीनाटोन के विविधतम मॉडलों को देखिए।

एक ऐसा उपहार जिसके लिए आप हमेशा याद किये जाएंगे।

बीनाटोन के सभी उत्पादनों को मास्टरकेयर का सहारा प्राप्त है जो बस एक फोन करते ही देशव्यापी बिक्री-बाद-सेवा प्रदान करते हैं।

Binatone

बनावट बेमिसाल, साथ निभाए सालोंसाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

बीनाटोन इलेक्ट्रानिक्स प्राइवेट लि., 23/4788-90 अंसारी रोड, दरियागंज, नयी दिल्ली-110002

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को देख आना. अकेली नहीं, हबीब को साथ ले जाना. उसे बड़ी मुशकिल से भेजा. और बेचारी गई तो उस की कक्षाध्यापिका ने, जो खुद वहां फिल्म देख रही थी, इस की शिकायत मुख्याध्यापिका से कर दी कि एक लड़के के साथ सलमा स्कूल के वक्त फिल्म देख रही थी."

"लड़का? कौन लड़का?" अब्बा का पारा चढ़ने लगा.

उधर अम्मी बेहद होशियार थीं. झट बात संभाल ली, "लड़का कैसा ! वह मेरी खाला है न, उस का बेटा हबीब. गाजीपुर वाली खाला को आप नहीं जानते . मुझ पर बड़ी मेहरबान हैं," अम्मी सरासर झूठ बोल रही थीं.

"अच्छा, अच्छा," अब मर्द किसकिस को जानें, अब्बा ने हथियार डाल दिए.

बात बनती दिखाई दी तो अम्मी अब्बा पर हावी हो गईं, "अच्छा क्या खाक? उस फूहड़ ने हमारी सल्लो को गलत समझ कर यह 'गोपनीय पत्र' भेज दिया. बेचारी कितनी परेशान है. आप इसे पढ़ेंगे?"

"शाबाश, वाह मेरी अम्मी,' सलमा सुखद आश्चर्य से झूम उठी. अम्मी बिगड़ी बात यों बना लेंगी, उसे सपने में भी उम्मीद न थी, 'बहुत प्यारी हैं, अम्मी.'

सलमा ने मन ही मन अम्मी की प्रशंसा की, कमाल का भेजा पाया है अम्मी ने. वैसे भेजा तो सब के पास है, मगर लोग हैं कि काम में ही नहीं लेते. खैर, अब आगे जो भी होगा, ठीक ही होगा. अम्मी ढाल बन कर जो खड़ी रहती हैं अपनी बेटी के लिए.

शायद अब्बा ने खत पढ़ना ही नहीं चाहा. बोले, "रमजानी, वह औरत सनकी नहीं है. दरअसल मैं ने ही उन मास्टरनियों को कह रखा है कि सलमा का खयाल रखें. वैसे कल मैं उन से मिल लूंगा."

"तोबा है. आप भी वहमी हैं, कैसे दकियानूसी. बेचारी सल्लो.."

"छोड़ो भी, उसे बुलाओ, चाय तो बने."

"वह तो बहुत दुखी है. आई है जब से कोने में बैठी रो रही है. आप खुद ही जा कर मनाओ. कह रही थी मुख्याध्यापिका ने शक ही क्यों किया?"

"मैं मनाता हूं".

और शेर मुहम्मद ने अपनी सयानी बेटी को उस दिन जिस स्नेह और दुलार से मनाया, उसे देख कर सलमा अम्मी की व्यवहारकुशलता की तारीफ करती हुई मन ही मन सोच रही थी, 'आइंदा फिर कभी ऐसी भूल नहीं होनी चाहिए.'

और सलमा यों अपने चारों ओर फैली दकियानूसी रिवायतों की धुंध से जूझती हुई आगे बढ़ी तो अब वह कालिज की एक बेदाग सफल और शिष्ट छात्रा है. उस के इर्दगिर्द उठी आंधियां, मांबेटी के व्यवहार के तालमेल के आगे कभी की शांत हो गईं.●

शरिता

इनसान के पूर्वज सचमुच बंदर थे?

इनसान के पूर्वज बंदर थे, इस बात से इनकार करने वाले लोगों के लिए यह खबर अवश्य चौंकाने वाली हो सकती है कि मद्रास में आज भी डारविन के सिद्धांत पर आधारित कथन के अनुरूप तीन व्यक्तियों से मिला जा सकता है और इस बात की एक बार फिर से पुष्टि की जा सकती है कि आदमी के पूर्वज बंदर ही थे.

मद्रास में रहने वाले सगादेवन और उन की पत्नी कामाच्छी अमाल के यहां आठ संतानें हुईं. इन में से तीन बंदरों की शक्ल की हैं. एक की तो छोटी सी पूंछ भी है.

वे अब लगभग 35, 31 और 29 वर्ष के हो चुके हैं. उन तीन भाइयों को कोई भाषा भी समझ में नहीं आती है. इतनी उम्र होने के बावजूद उन की पशु प्रवृत्ति उन पर अभी तक हावी है. मौका मिलते ही वे कपड़े उतार कर भाग खड़े होते हैं. अगर उन का आपस में झगड़ा हो जाए तो उन्हें संभालना बहुत ही मुशकिल है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुंदर घर का सपना हुआ साकार
टैक्टर पेंट से जब निखरी हर दीवार

ADROIT/AP-12/87 HIN

ट्रैक्टर... पूरे भारत में सबका मनपसंद...
धुलने वाली मुलायम सतह और
गजब का टिकाऊपन...हर बजट के मुताबिक दाम भी बहुत कम!
ट्रैक्टर...हर दिल को छूती—रंगों में पसंद अनूठी!
हल्के रंगों की खामोशी प्यारी और गहरे रंगों की शोखी न्यारी!
ट्रैक्टर सिंथेटिक और ट्रैक्टर एक्रेलिक डिस्टेंपर...
रंगों की बहार ले आये, आपके घर के अंदर!

दीवारों पर रईसी शान
बिल्कुल किफायती दाम

ट्रैक्टर
भारत में सबसे ज़्यादा बिकने वाला डिस्टेंपर

एशियन पेण्ट्स

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुंदर फूलों वाला फूलदान

आजकल सभी चीजें महंगी हो रही हैं. सजावट का सामान भी बहुत महंगा है. तो क्यों न हम घर में पड़ी चीजों से घर सजाएं. आइए, हम सुंदर फूलों से सजा फुलदान बनाएं.

सामग्री: मन चाहे रंगों वाली पोलीथिन की थैलियां, कुछ आलपिनें, फूल झाड़ू की कुछ सींकें, खाली जैम की शीशी, पुराने सुंदर ग्रिटिंग कार्ड.

विधि: आजकल पोलीथीन की थैलियों में घर में सामान आता है. कुछ लाल, गुलाबी व हरे रंग की थैलियां छांटिए. उन्हें दो तरफ से काट कर इकहरी कर लीजिए. अब इस में से दोदो इंच चौड़ी पट्टियां काटिए. इन्हें चारपांच तहों में मोड़िए. अब दोनों तरफ खुले सिरों को पासपास आधेआधे इंच की गहराई तक कई बार काटिए. काटते वक्त ध्यान रहे कि ये कट कर अलग न हो जाएं. काटते समय पत्तियों को आकार दीजिए. अब एकएक पट्टी खोल कर एक सिरे से दूसरे सिरे तक आलपिनों में पिरोइए. फिर थोड़ा घुमा कर फूल का आकार दीजिए.

इसी तरह, हरी पट्टियों को झाड़ू की सींकों में लपेटिए. सिरों को गोंद से चिपका दीजिए. इसी तरह कई टहनियां बना कर फूल उन में सजाइए. आलपिनें फूल के साथ ही डालियों में लगा दीजिए.

अब एक खाली जैम की शीशी में थोड़ी मिट्टी भर कर डालियां उस में करीने से लगा दीजिए. शीशी के ऊपर कोई सुंदर या ग्रिटिंग कार्ड लपेट दीजिए. अब आप की बैठक के लिए गुलदस्ता तैयार है. इसे किसी मेज पर रख दीजिए.

—रजनी चतुर्वेदी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection,-Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या आप की कुंआरी बेटी गर्भवती हो गई है?

लेख • सूरजकुमार सिंह

"अजी सुनते हो. तुम्हारी बेटी फेल हो गई है. जब छमाही परीक्षा का यह नतीजा है तो सालाना परीक्षा में क्या होगा? हाई स्कूल में दाखिला मिलना मुशकिल हो जाएगा," सरोज की मां लीलावती ने कहा.

सरोज के पिता गणेश हमेशा की भांति हड़बड़ी में टाई और बेल्ट बांधते हुए बोले, "कितनी बार कहा है, कोई ट्यूटर रख लो."

इसी तरह बात आईगई हो गई. सुबह नौ बजतेबजते दोनों पतिपत्नी दफ्तर के लिए निकल पड़ते हैं. जब लौटते हैं तो बेचारी सरोज इंतजार करतेकरते ऊंघने लगती है. लेकिन इस बार लीलावती ने स्वयं ही पति पर जोर डाला तो एक दिन की

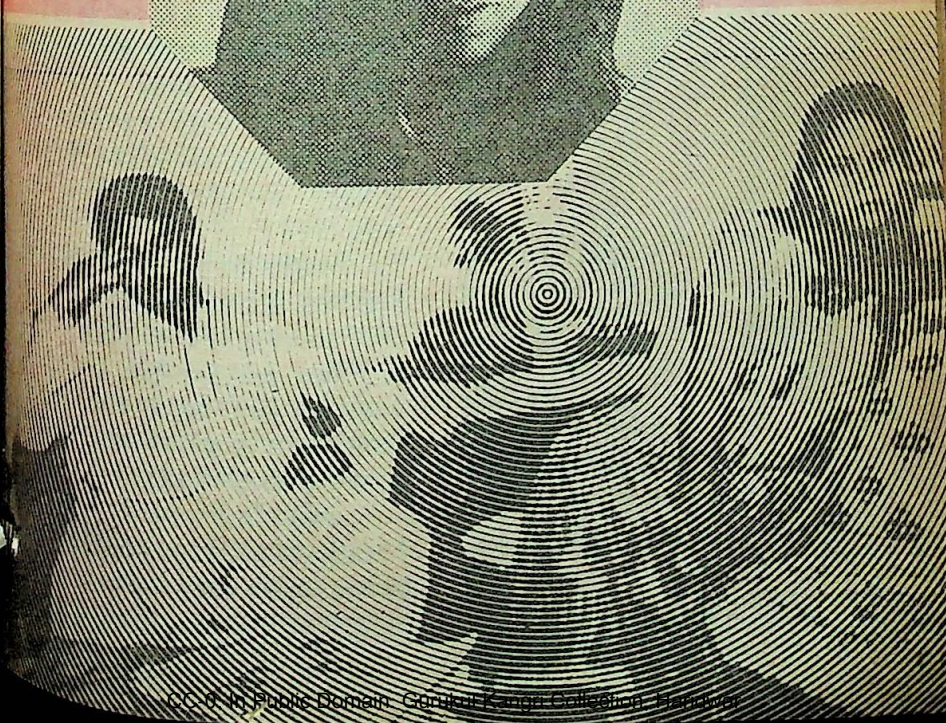

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यौन ज्ञान की कमी और युवावस्था के जोश के कारण कई किशोरियों को पता नहीं चल पाता कि वे कब गर्भवती हो गईं. जब पता चलता है तब तक पानी सिर से ऊपर जा चुका होता है. ऐसे नाजुक दौर में मां का क्या कर्तव्य हो जाता है.

छुट्टी ले कर सरोज के लिए हिंदी के अध्यापक से बातचीत की. वह अगले दिन से घर पर पढ़ाने के लिए आने लगा.

डेढ़ सौ रुपए महीने का खर्च बेटी के लिए बढ़ा कर पतिपत्नी दोनों ने चैन की सांस ली और सब कुछ फिर पहले ही की तरह चलने लगा.

लेकिन वार्षिक परीक्षा के ऐन पहले सरोज बीमार पड़ गई. डाक्टर को बुलाया गया. उस ने जो कुछ बताया, उसे सुन कर

हस्पताल में बेटी के इंतजार में बैठी मां: अगर पहले से ही ध्यान रखतीं तो आज हस्पताल का मुंह नहीं देखना पड़ता.

लीलावती और गणेश के पैरों तले की जमीन खिसक गई. सरोज गर्भवती थी.

एक अन्य घटना है. कलकत्ता के एक दैनिक अखबार में कार्यरत रमेश के परिवार में उन की शिक्षिका पत्नी और दो बच्चे हैं. बड़ी लड़की का नाम शशिप्रभा और छोटे लड़के का नाम कुणाल है. बेटी शशि 8वीं कक्षा की छात्रा है. पढ़ाई और खेलकूद दोनों ही क्षेत्रों में बड़ी प्रतिभावान है वह.

अचानक एक दिन वह कै करने लगी. मां का मन शंकित हो उठा. पूछने पर शशि ने बताया कि पिछले दो महीनों से उसे मासिक धर्म भी नहीं आया. यह सुनना था कि मां ने बेटी को पीटना शुरू कर दिया, "बोल, यह क्या किया तू ने? किस के साथ किया? बात कल बाहर फैलेगी तो हम कहीं मुंह दिखाने लायक नहीं रहेंगे."

रात को रमेश ने सुना तो सन्न रह गए. शोर मचाने के बदले उन्होंने डाक्टर से सलाह लेना उचित समझा.

महात्मा गांधी रोड स्थित एक क्लिनिक में उन्होंने संपर्क किया तो डाक्टर ने कहा, "केस उलझा हुआ है. दो हजार रुपए लगेंगे."

हालांकि रकम बहुत बड़ी थी. लेकिन दिए बिना कोई चारा भी नहीं था.

डाक्टर ने शशि को दोतीन इंजेक्शन दिए, फिर आपरेशन चैंबर में ले जा कर बेहोश कर दिया. उस के मांबाप से कहा, "आप बेफिक्र हो कर घर जाइए. शाम को आ कर बच्ची को ले जाइएगा."

अगले माह से शशि को मासिक स्राव नियमित रूप से होने लगा. सब कुछ सामान्य हो गया. लेकिन मांबाप ने फिर उसे स्कूल

शरिता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

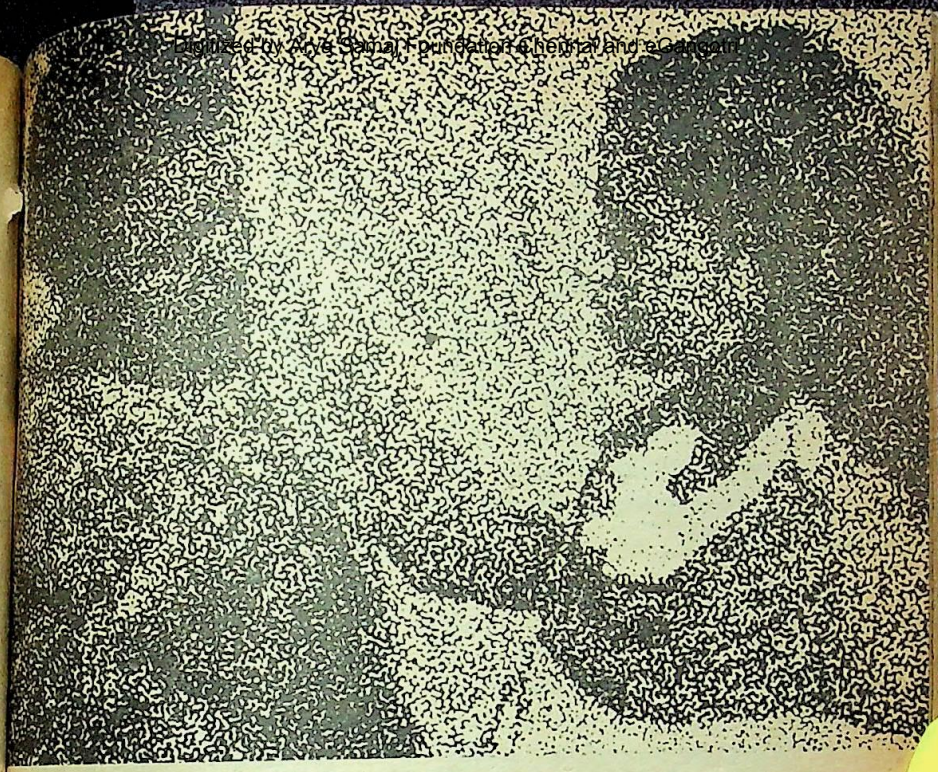

नहीं भेजा. घर की दीवारों में ही कैद कर दिया.

इस तरह एक बेचारी कली खिलने से पहले ही मुरझा गई. बेचारी इसलिए कि वह कभी गर्भवती थी ही नहीं. गर्भ के जो लक्षण दिखाई पड़े थे, वे अन्य कारणों से थे. मातापिता की अज्ञानता का डाक्टर ने खूब फायदा उठाया. बेटी सारी उम्र के लिए मांबाप की नजरों में गिर गई, सो अलग.

तीसरा मामला कलकत्ता के निकट रेलनगरी, खड़गपुर का है. वहां आई. आई. टी. (भारतीय तकनीकी संस्थान) के एक प्रोफेसर के घर पर सिर्फ उन की बेटी रहती है. पुत्री सीमा की उम्र 15 वर्ष है. मांबाप दोनों ही काम पर चले जाते हैं. स्कूल से आ कर सीमा घर पर अकेली ही रहती है.

प्रोफेसर की कालोनी के दरबान की उम्र 50 वर्ष है. वह छः संतानों का पिता है. उस का सारा परिवार 'देस' में है.

एक दिन उस ने सीमा को किसी बहाने अपने कमरे में बुला लिया और उस के साथ सो गया. पहले तो सीमा को डर लगा, लेकिन बाद में उस को अच्छा लगने लगा. उस के बाद वह स्वयं दरबान के कमरे में जाने लगी.

तीनचार माह बाद मां को बेटी के बढ़ते हुए पेट को देख कर कुछ संदेह हुआ और उस ने डाक्टर से संपर्क किया.

लेकिन गलती से डाक्टर ने जांच करने के बाद गर्भाशय का ट्यूमर बता दिया और 'एक्सरे' कर दिया. उस में भी उन्हें भ्रूण पिंड नहीं दिखाई पड़ा. उस समय भ्रूण में हड्डियां न होने के कारण ट्यूमर ही लगता रहा.

आम तौर पर यह धारणा है कि महिला के गर्भवती होने पर वह कै करेगी अथवा उबकाई आएगी. खाने के प्रति अरुचि तथा हर वक्त आलस रहेगा. ऋतु स्राव बंद होने के साथसाथ यदि उपर्युक्त लक्षण दिखाई पड़ते हैं तो समझा जाता है कि बहू, पत्नी या बेटी गर्भवती हो गई है.

किंतु किशोरियों के गर्भवती होने पर

बेटी से पूछताछ करती मां: गर्भवती होने के लक्षण का पता चलते ही बेटी से प्यार से पूछें, डांटडपट कर नहीं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ये लक्षण अधिकांश मामलों में दिखाई नहीं देते. वास्तव में जब महिला या लड़की को अपने गर्भवती होने का भान होता है, तभी उपर्युक्त लक्षण प्रकट होते हैं. लेकिन ज्ञान की कमी और अनुभवहीनता के कारण कोईकोई किशोरी यह जानती ही नहीं है कि संसर्ग करने से गर्भ में बच्चा आ सकता है, और उसे अपने गर्भवती होने का मासिक धर्म रुकने के बाद भी पता नहीं चलता है. इसलिए ये लक्षण भी प्रकट नहीं होते हैं.

इसी ज्ञान की कमी के कारण 'कुंआरी माताओं' की संख्या में लगातार वृद्धि हो रही है और गर्भपात करने वाले डाक्टरों की चांदी हो रही है.

यौन शिक्षा की आवश्यकता

किशोरी मातृत्व की समस्या को ले कर मैं ने कई डाक्टरों व समाजशास्त्रियों से बातचीत की. उन सभी के कहने का तात्पर्य यह है कि आजकल सिनेमा, टी.वी., पोस्टरों व विज्ञापनों में यौन उत्तेजक दृश्यों की भरमार होती है. वयःसंधि पार कर रहे लड़केलड़कियों में इन के प्रति सहज ही एक आकर्षण पैदा होता है. लेकिन दूसरी ओर यौन शिक्षा के अभाव के कारण ऐसे संबंधों के परिणामों और सावधानियों के बारे में वे नहीं जान पाते. परिणाम यह होता है कि किशोरियां गर्भवती हो जाती हैं. यदि उन्हें यौन शिक्षा मिले तो वे कम से कम अपने भविष्य को अंधकारमय होने से तो बचा सकती हैं.

किशोरियों के गर्भवती होने की सब से ज्यादा जिम्मेदार उन की माताएं होती हैं. पश्चिमी तथा यूरोपीय देशों में माता दूध के साथ बेटी को स्वयं ही पिल्स (गर्भ निरोधक गोली) देती हैं, जिस से गर्भपात की समस्या ही पैदा नहीं होती. लेकिन हमारे यहां बेटी को ताले में बंद कर दिया जाता है.

हमारे देश में विवाहपूर्व यौन संबंधों में पिछले दिनों काफी बढ़ोतरी हुई है. लेकिन यौन शिक्षा अभी भी यहां दूर की बात है. बल्कि ऐसी बातों से परहेज किया जाता है. आर्थिक कारणों से लड़कियों का विवाह देर से होता है. लेकिन यौन पिपासा तो उन्हें समय आते सताने लगती है.

1971 में गर्भपात को कानून सम्मत बना दिया गया था. कोई भी स्त्री स्वेच्छा से किसी भी मान्यता प्राप्त क्लिनिक में गर्भपात करा सकती है. बशर्ते कि गर्भ तीन माह से ज्यादा का न हो. कुंआरी, विधवा अथवा विवाहिता किसी के लिए भी कानूनी बाधा नहीं है.

गर्भपात को कानूनी मान्यता

महानगर कलकत्ता के मान्यता प्राप्त क्लिनिकों में होने वाले गर्भपातों की संख्या वर्ष में 600 बताई जाती है. इस के अलावा प्राइवेट तथा गैरकानूनी क्लिनिकों में होने वाले गर्भपातों की संख्या भी बहुत बड़ी है. सब को मिला कर कलकत्ता में 1,200 से 1,500 तक प्रतिमाह गर्भपात होते हैं.

एक अनुमान के अनुसार सारे भारत में प्रतिमाह करीब चार से पांच लाख गर्भपात होते हैं. इन में से करीब एक लाख ही मान्यता प्राप्त क्लिनिकों में होते हैं. उन में से 15% गर्भपात कुंआरियों के होते हैं. यानी देश में प्रति माह लगभग 75,000 कुंआरियां गर्भपात कराती हैं. जिन कुंआरियों की गर्भवती होने के बाद शादी कर दी जाती है, उन की संख्या अलग है.

गर्भपात को कानूनी मान्यता मिलने के बाद से अब स्थिति यह है कि हर शहर में, विशेषकर महानगरों में इस उद्देश्य से अनगिनत क्लिनिक खुल गए हैं. बिजली के खंभों पर तथा पेशाब घरों, बसों, गाड़ियों पर तरहतरह के विज्ञापन चिपके नजर आते हैं. जैसे 'बंद मासिक 9 मिनटों में चालू,' 'वैज्ञानिक ढंग से कम से कम खर्च में स्वास्थ्य लाभ' आदि इन में गर्भपात शब्द का कहीं भी उल्लेख नहीं मिलेगा. लेकिन कोई भी सहज ही समझ सकता है कि ये गर्भपात कराने का आमंत्रण दे रहे हैं.

इन क्लिनिकों का हाल भी बड़ा दिलचस्प होता है. खंभे पर चिपके एक ऐसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घमौरियों से आराम के लिए टाल्कम पाउडर नहीं, नायसिल चाहिए.

नायसिल लगाइए. घमौरियों से जल्द आराम पाइए.

नायसिल एक **औषधियुक्त** पाउडर है. घमौरियों की हर परेशानी से फ़ौरन आराम दिलाने के लिए खास तौर पर तैयार किया गया. खुजली, जलन और चुनचुनाहट से तुरंत आराम दिलाता है और घमौरियों को फैलने व बढ़ने से रोकता है, जो टाल्कम पाउडर से संभव नहीं.

नायसिल–घमौरियों से आराम पाने का सबसे सुरक्षित और भरोसेमंद उपाय.

1. अत्यधिक पसीने को रोकता है.
2. पसीने को सोखता है.
3. बदबू पैदा करनेवाले कीटाणुओं का नाश करता है.
4. त्वचा को आराम पहुँचाता है.

HTA 1961

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही परचे को देख कर मैं उत्तरी कलकत्ता के श्यामबरन चटर्जी लेन के एक क्लिनिक में पहुंचा.

वह मटमैली दीवारों वाला लकड़ी का बना छोटा सा केबिन था. क्लिनिक के बाहर गली में तख्ती पर नाम लिखा था—डाक्टर सुशील कुमार, एम.बी.

अंदर पुरानी चार कुरसियां और एक मेज वगैरह पड़े थे. पहले तो डाक्टर महोदय कुछ भी बताने से इनकार करते रहे. बाद में उन्होंने स्वीकार किया कि वह कुंआरी लड़कियों का गर्भपात करते हैं, बशर्ते कि उन के साथ का व्यक्ति और मरीज बांड पर हस्ताक्षर कर दें.

यहां 100 रुपए सिर्फ इंजेक्शन के और 'खाली' करने के 200 रुपए तक वसूल किए जाते थे. यदि लड़की में दो घंटों तक बिस्तर छोड़ने की शक्ति नहीं रहती थी तो वह वहां अधिक समय तक रुक सकती थी, लेकिन प्रति घंटा 20 रुपए उस से अधिक वसूल कर लिया जाता था. पैड, रुई व इंजेक्शन आदि भी लड़की या उस को लाने वालों से मंगवाए जाते थे. जाते समय नर्सों को बख्शीश अलग से देनी पड़ती थी.

यही स्थिति सरकारी हस्पतालों की भी है. सरकारी हस्पतालों में तो साधारण आदमी को कानून वगैरह की झूठी धमकी दे कर मोटी रकम वसूल की जाती है.

कलकत्ता मेडिकल कालिज के प्रसूति विभाग के एक डाक्टर ने बातचीत के दौरान बताया, "गर्भपात कराने के लिए हमारे पास आने वालों में 25% की उम्र 20 वर्ष से कम होती है. कानून को मानते हुए मैं 20 सप्ताह से ज्यादा समय के गर्भ को खत्म नहीं करता हूं और कुंआरियों के पहले गर्भ को तो मैं गिराता ही नहीं हूं. मैं उन्हें पूरी अवधि पर अपने क्लिनिक में प्रसव करने पर ही जोर देता हूं. ऐसी संतानों को मदर टेरेसा की संस्थाओं या गोद लेने वाले शिशुपालन संस्थान को सौंप देता हूं."

मतलब यह है कि गर्भपात कानून सम्मत हो चुका है और उसे कराने के लिए ज्यादा परेशानियां भी नहीं उठनी पड़तीं हैं. लेकिन समझदारी इसी में है कि ऐसी 'स्थिति' से बचा जाए और शुरू से ही लड़केलड़कियों को यौन शिक्षा दे कर ऐसी जानकारी दी जाए कि वे किसी 'चक्कर' में पड़ कर अपना जीवन बरबाद न करें. फिर भी कुंआरी बेटी गर्भवती हो ही जाती है तो समय रहते उसे इस मुसीबत से छुटकारा दिला कर उस के जीवन को सुखी बनाने की कोशिश करें.

अरिता

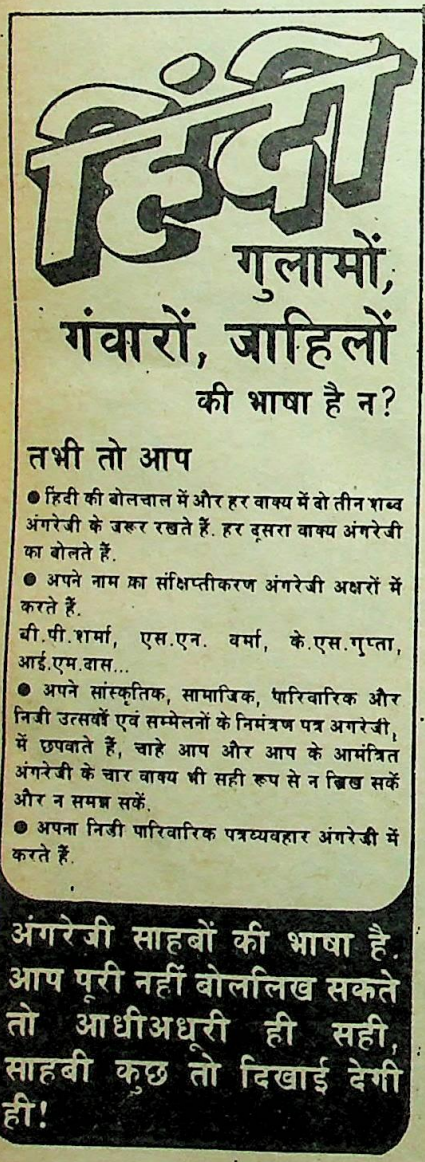

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दाँतों के बारे में एक खरा सच

साँस की बदबू का संबंध
दाँतों से ज़्यादा मसूड़ों से है.

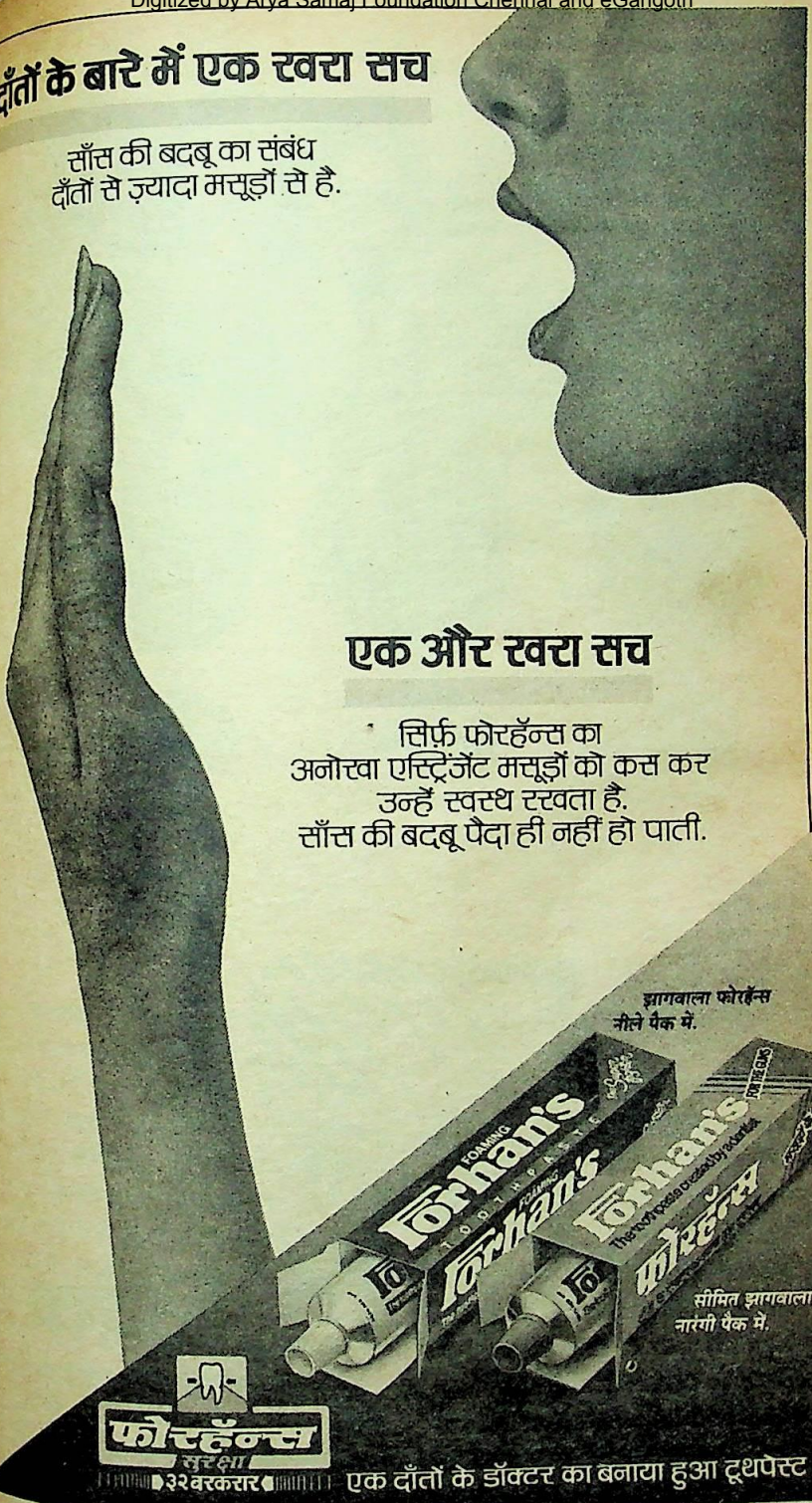

एक और खरा सच

सिर्फ़ फोरहॅन्स का
अनोखा एस्ट्रिंजेंट मसूड़ों को कस कर
उन्हें स्वस्थ रखता है.
साँस की बदबू पैदा ही नहीं हो पाती.

झागवाला फोरहॅन्स
नीले पैक में.

सीमित झागवाला
नारंगी पैक में.

फोरहॅन्स सुरक्षा
३२ वरकरार

एक दाँतों के डॉक्टर का बनाया हुआ टूथपेस्ट

GM.27/88.Hn

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हर कोई...

..हर कोई...

..हर कोई...

हर कोई चाहे न्यूट्रिन ट्विंक

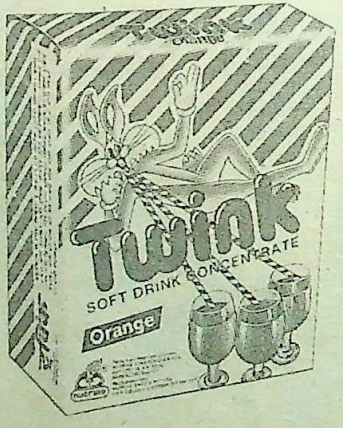

- ऑरेंज
- लेमन
- मैन्गो
- पाइनेपल
- ग्रेप

ट्विंक

सॉफ्ट ड्रिंक कॉन्सन्ट्रेट

नयी मजेदार "स्वाद बहार"

nutrine

ACIL/056/88-Hin

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection,-Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

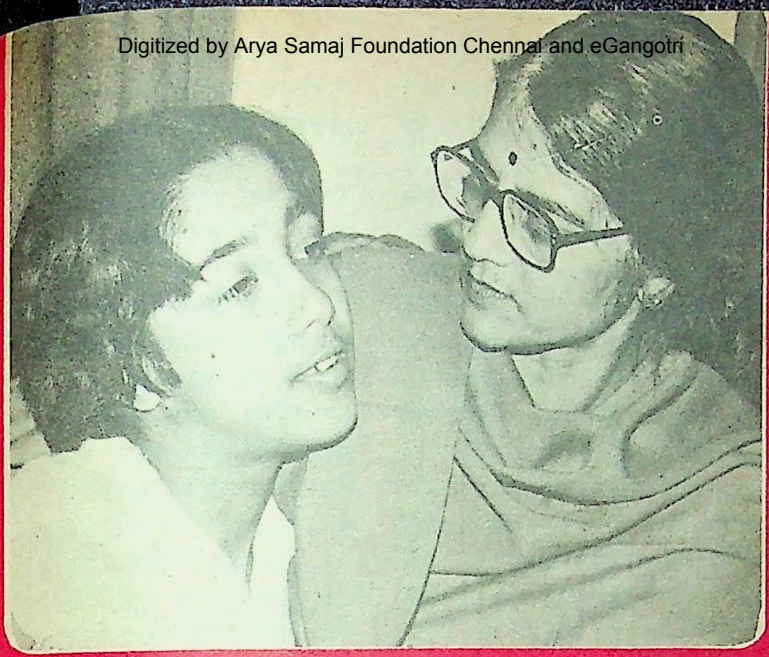

अपनी बेटी को भविष्य के लिए कैसे तैयार करें?

लेख • रागिनी मालवीय

इलाहाबाद स्टेशन पर उतरी तो सब से पहले ध्यान आया कि सिविल लाइंस में दीदी के यहां होती हुई घर जाऊं. कालिज में काम की अधिकता के कारण, दीदी के पुत्र दीपक की शादी में नहीं जा पाई थी. अतः पहले बहू देखती चलूं. इसी विचार से रिकशा कर के सीधे दीदी के घर पहुंची.

शादी को अभी एक-हफ्ता भी नहीं बीत पाया था, लेकिन दीदी के घर का ढांचा ही बदल गया था. जीजाजी एक कोने में गुमसुम बैठे पता नहीं क्या सोच रहे थे. दीदी रसोईघर में बरतनों की उठापटक कर रही थीं. उन के चेहरे से परेशानी साफ नजर आ रही थी. पूरे घर में जैसे मातम सा छाया था.

मुझे अचानक आती हुई देख कर दीदी बिना किसी उत्साह के, थकी हुई आवाज में बोलीं, "अरे रागिनी, तू कब आई?"

मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ. आखिर मैं पूछ ही बैठी, "क्या बात है दीदी, घर में इतना सन्नाटा कैसे है? और आप लोग भी इतने गुमसुम क्यों हैं? दीपक की बहू कहां है?"

बस फिर क्या था, जैसे दीदी की दुखती रग पर मैं ने हाथ रख दिया हो. वह फफक पड़ीं, "क्या बताऊं रागिनी, दीपक की शादी में हम लोग बहुत धोखा खा गए.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहू तो ऐसी अति आधुनिका निकली कि कुछ पूछो मत. जिस दिन से ब्याह कर आई है, घर में एक घड़ी उस के पैर रुकते ही नहीं. सुबह होते ही सहेलियों के घर, बाजार, संगीत समिति और न जाने कहांकहां दिन भर घूमती रहती है. रात को घर लौटती है. और तो और, कभीकभी रात को भी बिना बताए अपने मायके चली जाती है. मना करने पर खूब जवाब देती है.

"कहती है, मैं क्या पालतू औरतों की तरह घर में सड़ने के लिए आई हूं? मेरे मांबाप ने मुझे बेटे की तरह पालापोसा है. ऊंची शिक्षा दी है. क्या मैं अपनी जिंदगी घर के कैदखाने में बिता दूं? मैं तो उच्च अध्ययन के लिए अमरीका जाने वाली थी, पर मम्मीडैडी ने वादा किया था कि शादी के बाद वे मुझे अमरीका अवश्य भेज देंगे और फिर उन्होंने तो कभी मेरे आनेजाने पर कोई पाबंदी नहीं लगाई. मेरा जहां मन आएगा, मैं जाऊंगी.

मैं ने एकदम बेटे की तरह इसे पाला है. थोड़ा घूमफिर लेती है तो क्या हुआ? अभी लड़कपन है. धीरेधीरे समझ जाएगी."

और वह कभी नहीं समझी. उस का वही रवैया रहा. जब पानी सिर से ऊपर निकल गया, तब तलाक हो कर किसी तरह जान छूटी.

आज दीपक की बहू का मामला कोई नया नहीं है. तलाक, पतिपत्नी में आए दिन झगड़े, घर छोड़ कर भाग जाना और आत्महत्या जैसे बढ़ते हुए मामलों ने मांबाप को सोचने के लिए मजबूर कर दिया है कि वे अपनी बेटी को उस के भावी जीवन के लिए कैसे तैयार करें?

किशोर अवस्था जीवन का ऐसा नाजुक दौर है जब अच्छी और बुरी आदतों का प्रभाव बहुत गहरा पड़ता है और वह सदा के लिए अपनी एक अमिट छाप छोड़ जाता है. अतः मांबाप को अपनी बेटी के मनोविज्ञान को, उस की मानसिकता को

किशोरावस्था ऐसा नाजुक दौर है जिस में मातापिता की जरा सी लापरवाही या नासमझी लड़की का जीवन बर्बाद कर सकती है. जरूरत इस बात की है कि इस दौर में लड़की की मानसिकता को समझ कर उस में अच्छे गुणों का विकास किया जाए.

"अब बताओ, मेरी समझ में तो कुछ नहीं आता, मैं क्या करूं?" कह कर दीदी फिर रोने लगीं.

"इस में इतना अधीर होने की क्या बात है? उस के मांबाप को बुला कर, साफसाफ सब हाल बता दो." मैं ने सांत्वना देनी चाही.

"उन से क्या कह दूं? सब उन्हीं लोगों का तो बोया हुआ है. उन्होंने ही तो लड़की की आदतें बिगाड़ रखी हैं. कहते हैं, घबराने की क्या बात है बहनजी, अकेली बेटी है जरा लाड़प्यार से पली है. इसलिए थोड़ी जिद्दी हो गई है. आप तो जानती ही हैं, मेरे कोई बेटावेटा है नहीं. ले दे कर बस यही बेटी है.

समझ कर बड़ी सूझबूझ के साथ अपनी भूमिका अदा करनी चाहिए.

पहली बात ध्यान देने योग्य यह है कि ऊंची शिक्षा का अर्थ आधुनिका बनाना नहीं है. अकसर मांबाप सोचते हैं कि जब तक उन की बेटी आधुनिका नहीं बनेगी तब तक उस का पढ़नालिखना बेकार है. समाज पर अपना रोब डालने के लिए वह अपनी बेटी को एकदम आधुनिका बनाना चाहते हैं. इसी चक्कर में वे अपनी बेटी को ऊटपटांग फैशन तथा घूमनेफिरने की खुली छूट दे देते हैं. किशोरियों का अपरिपक्व मस्तिष्क उसे गलत ढंग से ग्रहण कर लेता है. जिस के कारण उन्हें अनेक मुसीबतों और समस्याओं

अरिता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

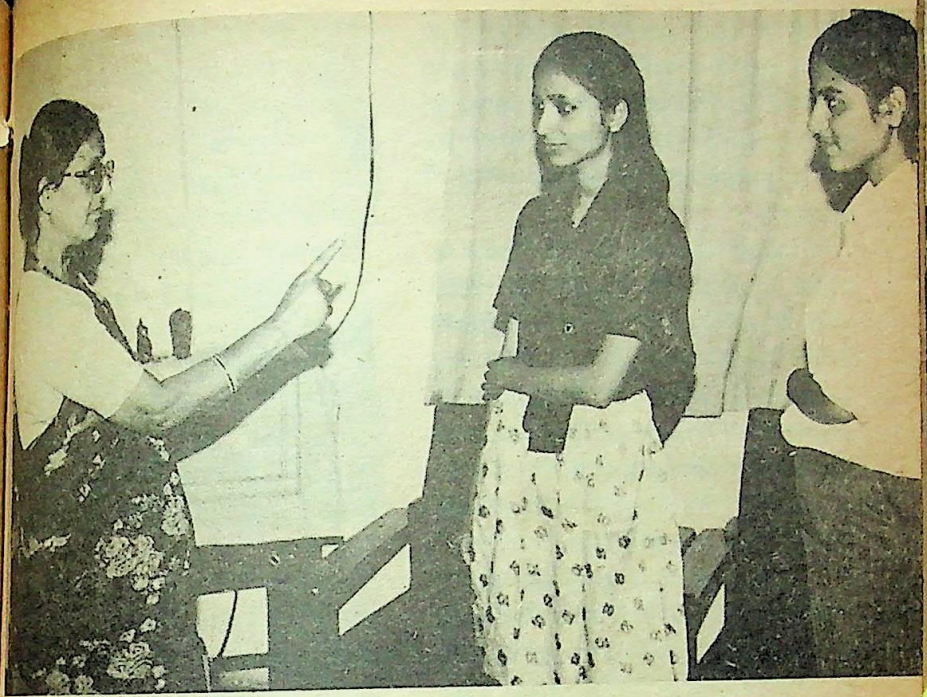

मां का कर्तव्य है कि वह बेटियों को समयानुसार सादे लिबास पहनने की सलाह दें.

का सामना करना पड़ता है.

आज बलात्कार जैसे घृणित मामले अधिकतर पारदर्शक परिधान, फूहड़ फैशन तथा लड़कियों की घूमनेफिरने की खुली छूट के कारण ही होते हैं. अतः मांबाप को शुरू से इस ओर सचेत रहना चाहिए. उन्हें चाहिए कि स्वयं वे भी सादगी से रहें और अपनी बेटी को भी सादे लिबास पहनने की सलाह दें. उस के चालचलन, घूमनेफिरने पर नजर रखें. बेटी उन की जानकारी में ही घूमेफिरे तो अधिक अच्छा होगा.

बेटी को बेटा न बनाएं

आधुनिकता की होड़ में आजकल कुछ फैशन चल पड़ा है कि मांबाप अपनी बेटी को लड़कों की सी आदतें डाल देते हैं. वे अपनी बेटी को लड़कों के साथ पढ़ाने, उन्हीं के से विषय लेने तथा लड़कों की तरह पोशाकें पहनाने में अपना गौरव समझते हैं. इस का परिणाम यह होता है कि उन की बेटी को लड़की के सुलभ गुणों और कार्यों से घृणा होने लगती है और भविष्य में गृहिणी बनने पर वे आदतें ही उस की गृहस्थी को बरबाद कर डालती हैं.

इतना ही नहीं, लड़कों की तरह व्यवहार करते रहने के कारण उन के चेहरे की नारीसुलभ कोमलता भी गायब हो जाती है. किशोर अवस्था से ही उन के चेहरे पर कठोरता आ जाती है, जिस के कारण सुंदर से सुंदर लड़की कुरूप दिखाई देने लगती है. कोई भी मां अपनी बेटी को इस तरह कुरूप और उच्छृंखल कभी नहीं बनाना चाहेगी.

अकसर देखा जाता है कि बेटे के समान शिक्षा देने की होड़ में मांबाप अपनी बेटी के अंदर छिपे हुए मौलिक गुणों को विकसित होने का अवसर नहीं देते. उदाहरण के लिए, अपने बेटे के साथ अपनी बेटी को भी डाक्टर या इंजीनियर बनाने पर बल देते हैं. उसे विज्ञान विषय पढ़ाते हैं, चाहे उन की बेटी का रुझान संगीत, कला या अन्य विषयों की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओर कितना ही हो, उस की उन्हें परवाह नहीं होती. बस दिनरात वे अपनी बेटी को कोंचते रहते हैं, "तुम्हें विज्ञान विषय ले कर ही पढ़ना है. तुम्हें कुछ बनना है. कला के विषय ले कर जिंदगी खराब नहीं करनी है. इस में उन्नति करने के अवसर नहीं हैं," आदिआदि.

नतीजा यह होता है कि रुझान के अभाव में उन की बेटी लगातार फेल होती जाती है और उस के जीवन का कीमती समय निकल जाता है. जब कि वह उच्चकोटि की संगीतकार, साहित्यकार या कलाकार बन सकती थी. ऐसे मामलों में आप की बेटी आत्महीनता का शिकार भी हो सकती है. मेरे पड़ोस के रवींद्रनाथ की बेटी नीता का यही हाल हुआ.

नीता बहुत सुंदर गाती थी. उस में उच्च कोटि की संगीतकार बनने की प्रतिभा थी. कई जलसों में वह पुरस्कार भी पा चुकी थी. रेडियो में गाने के लिए भी उस का चयन हो गया था. परंतु उस के मातापिता अपनी बेटी को एक सफल डाक्टर बनाना चाहते थे. अतः उसे रेडियो पर गाने नहीं दिया. उसे जबरदस्ती विज्ञान विषय दिलवा कर पढ़ाया. नीता के रोनेधोने का उन पर कोई असर नहीं हुआ. नतीजतन वह लगातार फेल होती गई. आखिर, निराश हो कर उसे पढ़ाई छोड़नी पड़ी. आगे पढ़ने से उसे विरक्ति हो गई. अंत में उस की शादी एक साधारण परिवार में कर दी गई और इस प्रकार एक भावी संगीतज्ञा का गला घोंट दिया गया.

कहीं आप भी तो नीता के मांबाप की तरह अपनी बेटी के अंदर पनप रहे सुंदर मौलिक गुणों का गला नहीं घोंट रही हैं. कृपया आप अपनी बेटी के रुझान को देख कर उस के मौलिक गुणों को विकसित होने का पूर्ण अवसर और वातावरण प्रदान करें.

स्त्रियोचित शिक्षा अवश्य दें

यह बात ध्यान देने योग्य है कि लड़की कितनी ही पढ़लिख क्यों न जाए अंततः उसे

अपनी बेटी के अंदर छिपी प्रतिभा को विकसित होने का पूरा अवसर दें.

एक परिवार का भार अवश्य संभालना है. एक मां का कर्तव्य अवश्य निभाना है. अतः गृहस्थी से संबंधित कार्यों का ज्ञान उसे अवश्य कराना चाहिए. सिलाई, कढ़ाई, बुनाई, खाना बनाना, घर सजाना आदि कार्यों में प्रवीण बेटी ही एक अच्छी गृहिणी बन सकती है, जो सफल जीवन की सब से महत्त्वपूर्ण कुंजी है.

ऊंची शिक्षा के साथसाथ अपनी बेटी को व्यावहारिक ज्ञान की शिक्षा देना बहुत आवश्यक है. सहनशीलता, एकदूसरे के सुखदुख में सहायता करना, एकदूसरे की समस्याओं को सुलझाना, मीठा बोलना आदि आदतों का विकास कुटुंब में ही हो सकता है. अतः आप अपने घर का वातावरण ऐसा बनाइए, जिस में आप की बेटी स्वयं कुटुंब के सदस्यों के परस्पर व्यवहार से इन गुणों का विकास कर सके. उपर्युक्त गुणों के विकास के लिए आप को अपनी बेटी को हर समय टोकने या उकसाने की आवश्यकता नहीं है. वह स्वयं देख कर उन गुणों को आत्मसात कर लेगी.

परंतु आप की बेटी पर आप दोनों पतिपत्नी के आपसी व्यवहार का प्रभाव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गहरा पड़ता है. अकसर पतिपत्नी के अपनी दुर्व्यवहार, लड़ाईझगड़े का प्रभाव उन के बेटेबेटियों पर इतना अधिक पड़ता है कि वे जीवन भर के लिए कुंठाग्रस्त व निराशावादी बन जाते हैं. मांबाप की जरा सी असावधानी या उदासीनता उन की बेटी के जीवन के लिए एक बड़ा अभिशाप सिद्ध हो सकती है. उदाहरण के लिए, नशाखोरी, घर छोड़ कर भागना, बेमेल प्रेमविवाह और आत्महत्या जैसी घटनाएं मांबाप की असावधानी के कारण अधिक होती हैं.

सहनशीलता का अर्थ यह नहीं कि आप टोकटोक कर अपनी बेटी को दब्बू बना दें. वरन अन्याय का सही प्रकार से विरोध करना भी उसे सिखाएं, ताकि भविष्य में कोई उस का शोषण न कर सके. इस के लिए उन में आत्मशील और आत्मविश्वास जागृत करना बहुत आवश्यक है. आज सती और नारीदहन जैसे कांडों से समाज विकृत हो गया है. अतः ऐसी सामाजिक कुप्रथाओं से लड़ने के लिए अपनी बेटी में आत्मशक्ति और आत्मविश्वास का विकास करना बहुत आवश्यक हो गया है.

भावी जीवन में आकस्मिक विपत्तियां और संघर्षों से जूझने के लिए आप अपनी बेटी को आत्मनिर्भर अवश्य बनाइए. इस के लिए केवल ऊंची शिक्षा दे देना ही पर्याप्त नहीं होगा. प्रतिद्वंद्विता के इस युग में ऊंची शिक्षा के बावजूद, नौकरी मिलना मुशकिल है.

अतः अपनी बेटी को ऐसी कलाएं अवश्य सीखने का मौका दें, जिन से वह अपनी रोजीरोटी स्वयं कमाने के योग्य बन सके. कुछ घरेलू कलाएं, जैसे बुनाई, सिलाई, पेंटिंग, गृहसज्जा के अलावा आज बहुत से ऐसे कोर्स लड़कियों को सिखाए जा रहे हैं, जिन से लड़कियों का आर्थिक विकास हो सकता है. बहुत सी सरकारी और गैरसरकारी संस्थाएं हैं जहां रोजीरोटी से संबंधित विभिन्न कामधंधों की शिक्षा दी जाती है. साजसज्जा, फोटोग्राफी, पत्रकारिता, होटल प्रबंध, फल संरक्षण तथा अन्य छोटेबड़े अनेक ऐसे कार्य हैं जिन्हें सीख कर आप की बेटी आत्मनिर्भर बन सकती है. यह भावी जीवन की सफलता के लिए सब से आवश्यक और महत्त्वपूर्ण है. ●

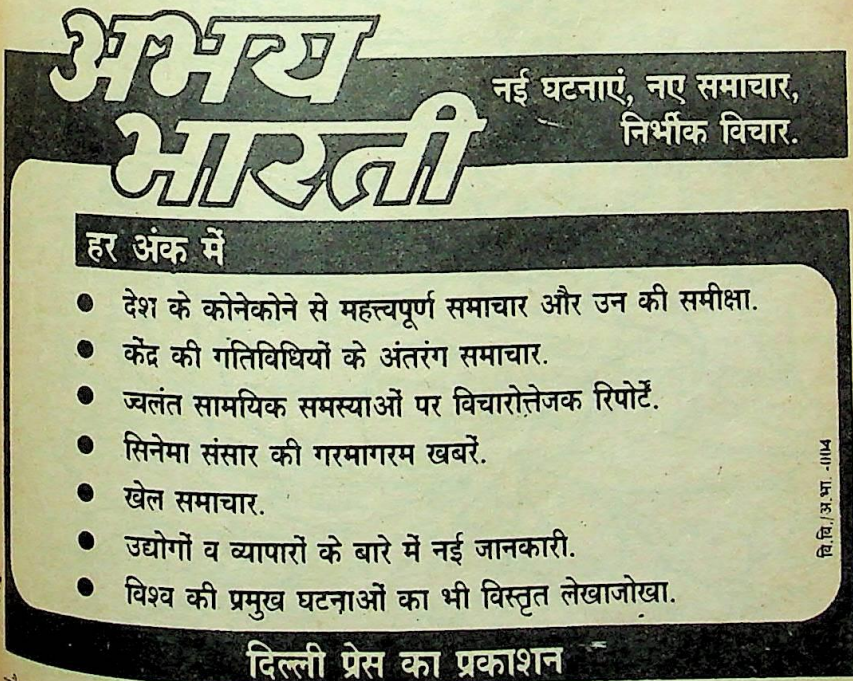

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुलदस्ते

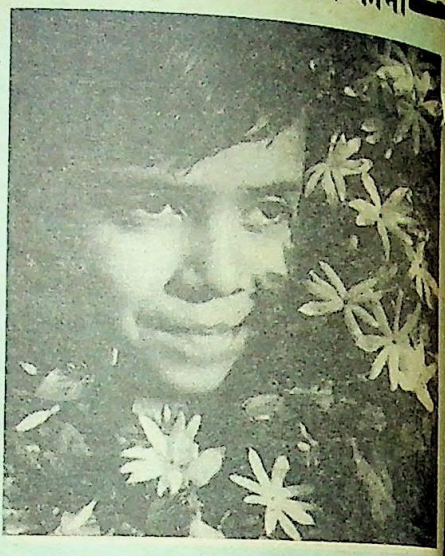

फूलों के
सुंदर गुलदस्ते,
मिले हमेशा
हंसतेहंसते.
रंगरंग के
फूल अनेक.
अलगअलग
पर दिल से एक.
जूही, चमेली
और गुलाब
एक साथ
कहते आदाब.

इन की मीठी सी
खुशबू से,
महक गए
जीवन के रास्ते !
तुम भी जग
महका सकते हो,
अच्छा रंग
जमा सकते हो,
आंगन, गलियों
चौरस्तों पर
खुशबू खूब
लुटा सकते हो.

अगर करो तुम
प्यार सभी से,
हंस कर सब से
करो नमस्ते.

—सुनीता मनु

सुंदर रंग भरो

बिंदुओं वाले खाने में कोई सा एक रंग भर कर देखो फूलपत्तियों में कौन छिपा है?

अरिता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केंद्रीय बजट

(पृष्ठ 27 का शेषांश)

यह बात जहां एक बड़ी टी.वी. निर्माता कंपनी ने बताई, वहीं पर टी. वी. के कुछ दुकानदारों ने बताया कि 36 सेंटीमीटर से छोटी स्क्रीन का कोई रंगीन टीवी सेट बना ही नहीं है. ऐसा नहीं कि बन नहीं पाए, लेकिन सरकार इस की इजाजत ही नहीं देती. इस हालत में यह कहना झांसेबाजी नहीं तो और क्या है कि सिर्फ 36 सेंटी मीटर से बड़ी स्क्रीन वाले रंगीन सेटों के दाम बढ़े हैं.

महंगाई का डंक

सरकार भले ही लोगों को यह कह कर बहला ले कि बजट में उस ने सभी वर्गों का ध्यान रखा है, पर सचाई यह है कि जब टैक्स बढ़ते हैं तो बड़े लोगों पर ज्यादा असर पड़ता है और छोटे लोगों पर कम, लेकिन बजट घाटे से फैलने वाली महंगाई तो सब को एक ही जैसा डंक मारती है. हमारा बजट हर साल हमें यही बता जाता है कि सरकार अपने लिए ही जी रही है, हालांकि प्रचारित यही किया जाता है कि इसी में जनता का कल्याण है.

सब से दिलचस्प बात यह है कि मंदी से निपटने के लिए जहां सरकार ने खुद कोई कुरबानी नहीं दी, वहीं सरकार के गैरयोजना व्यय में 16% की वृद्धि कर दी गई है. और योजना व्यय में 28% की. जिस रफ्तार से सरकार की फुजूलखर्ची बढ़ती जा रही है, उसी गति से जनता पर टैक्सों का बोझ लदता चला जा रहा है.

हर साल बढ़ते हुए टैक्सों का रोना तो हम रोते हैं, मगर यह नहीं देखते कि टैक्सों के रूप में सरकार जो पैसा हम से वसूलती है, उस का सही उपयोग हो भी रहा है या नहीं. सामाजिक न्याय के नाम पर जो कर्ज मेले आयोजित होते हैं, उन मेलों का कितना पैसा सत्तारूढ़ पार्टी के कार्यकर्ताओं की जेब में जाता है, यह कोई कहने की बात नहीं रही. अति विशिष्ट लोगों की सुरक्षा पर जो खर्च हो रहा है, वह भी तो जनता का ही पैसा है. जरूरी लोगों के अलावा यदि हर ऐरेगैरे को अति विशिष्ट सुरक्षा प्रदान की जाएगी तो बजट में बचत होना संभव ही नहीं होगा और यदि सरकार अपनी फुजूलखर्ची पर अकुंश नहीं लगाएगी तो देश निरंतर घाटे की वित्त व्यवस्था की मार सहने को अभिशप्त रहेगा.

रक्षा बजट

सरकार ने 1988-89 के रक्षा बजट में भी 1,000 करोड़ रुपए की अच्छीखासी वृद्धि की है, हालांकि वित्त मंत्री ने इसे 'सामान्य वृद्धि' बताया है. रक्षा के लिए किए गए प्रावधानों से स्पष्ट है कि सशस्त्र सेना के तीनों अंगों—स्थल, वायु और नौ सैना—के बजट में वृद्धि की गई है. रक्षा मद में जो आवंटन किए गए हैं, उन में आयुध कारखानों के लिए 44 करोड़ रुपए रखे गए हैं, जबकि 1987-88 के बजट में इस मद के लिए केवल एक करोड़ रुपया ही रखा गया था.

यह ठीक है कि देश की सुरक्षा को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता और आज अगर कोई प्रतिरक्षा के बजट में कटौती की बात कहे तो उसे भी शायद संदेह की दृष्टि से देखा जाएगा. मगर जनता को अपने एकएक पैसे का हिसाब जानने का पूरापूरा अधिकार है. सरकार यदि रक्षा बजट में बरबादी वाले तत्त्वों की खोजबीन और किफायत नहीं कर सकती तो इतना तो बता ही सकती है कि सेना पर यह अंधाधुंध खर्च क्यों और किस के डर से बढ़ाया जा रहा है? कौन सा पड़ोसी देश हम पर हमला करने की तैयारी कर रहा है, जिस के लिए रक्षा बजट में करोड़ों रुपए की वृद्धि जरूरी हो गई है.

सरकार की पोलपट्टी खोलने के लिए पिछले साल रक्षा सामग्री की खरीद में एजेंटों की नियुक्ति और बीच में खाए गए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कमीशन पर काफी हौहल्ला मच चुका है. अब भी कई लोग यह मानते हैं कि रक्षा पर किए जाने वाले खर्च केवल अतिरिक्त कमीशन पाने के लिए ही बढ़ाए गए हैं.

गत वर्ष राजीव गांधी ने वित्त मंत्री के रूप में बजट प्रस्तुत किया था तो लोकसभा में मधु दंडवते ने विदेशों में रक्षा सामग्री की ख़रीद का प्रश्न उठाया था, तब राजीव गांधी ने झपट कर उत्तर दिया था कि 'देश की रक्षा में व्यवधान न डालो.'

यह कहना कि रक्षा सामग्री की खरीद पर आम चर्चा होना देश के लिए हानिकारक है, कोरी बहानेबाजी है. हां, इस चर्चा से शासकों की गद्दी यदि हिल रही हो तो उसे देश की रक्षा के लिए 'अहितकर' जरूर माना जा सकता है. देश युद्ध के कगार पर खड़ा हो या न खड़ा हो, मगर सरकार द्वारा खर्चों का बढ़ाया जाना अंततः अपनी जेब से पैसा दे रहे नागरिकों को चौंकाता जरूर है.

ढूंढ़ें तो अनेक उदाहरण मिल जाएंगे, जहां गैरजरूरी सरकारी खर्चों में कटौती की जगह अनापशनाप खर्चे होते रहते हैं और वे अब कम होते भी नहीं दीखते. अर्थव्यवस्था में सुधार लाने के लिए सरकारी खर्च को कम करने की मांग यदि प्रधान मंत्री करते हैं तो उस का असर यह होता है कि बजट में सभी मंत्रालयों को कर्मचारियों के वेतनों व सुविधाओं में वृद्धि करने के लिए भरपूर रकम दे दी जाती है.

वित्त मंत्री नारायणदत्त तिवारी के नए बजट में भी हर व्यक्ति पर आर्थिक बोझ बढ़ाने वाले अनेक उपाय मौजूद हैं, जिन के रहते नए बजट को 'गरीबों का बजट' नहीं कहा जा सकता. हां, यह गरीबों को मिटाने का बजट जरूर है. इस वार्षिक बजट ने जनता की इस गलतफहमी को भी दूर कर दिया है कि डीलक्स बोइंग विमानों में विदेश यात्राएं करने वाले प्रधान मंत्री को देश के आम आदमी से ज्यादा हमदर्दी है. और उन के वित्त मंत्री द्वारा प्रस्तुत किया गया बजट पुराने बजटों की तरह आम जनता को करों और महंगाई के बोझ तले नहीं दबाएगा ●

फूल जैसा चेहरा, मोहक, मासूम, आपको भी चाहिये.
पर फोडे - फुन्सीयोंको फोडिये नहीं.
सिर्फ गरम पानीसे चेहरा धोइये, पोछिये. हररोज़
कैलास जीवन का चिकना लेप बनाइए, फिर देखिये.
आपका वही चेहरा फूल जैसा निखरा, तरोताजा बनेगा.
क्यों कि कैलास जीवन का मतलब है,
खुशबूदार चंदन, शीतल कपूर तथा
आयुर्वेदीय औषधीयोंका समतुल्य मिलाप.
वह देह मे भिद जाएगा और अनचाही गर्मी का मुकाबला करेगा.

कैलास जीवन
मल्टिपर्पज आयुर्वेदिक क्रीम

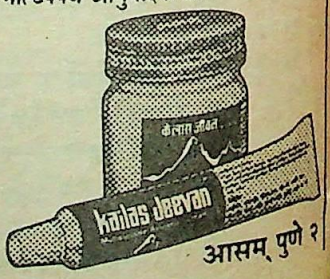

आसम् पुणे २

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

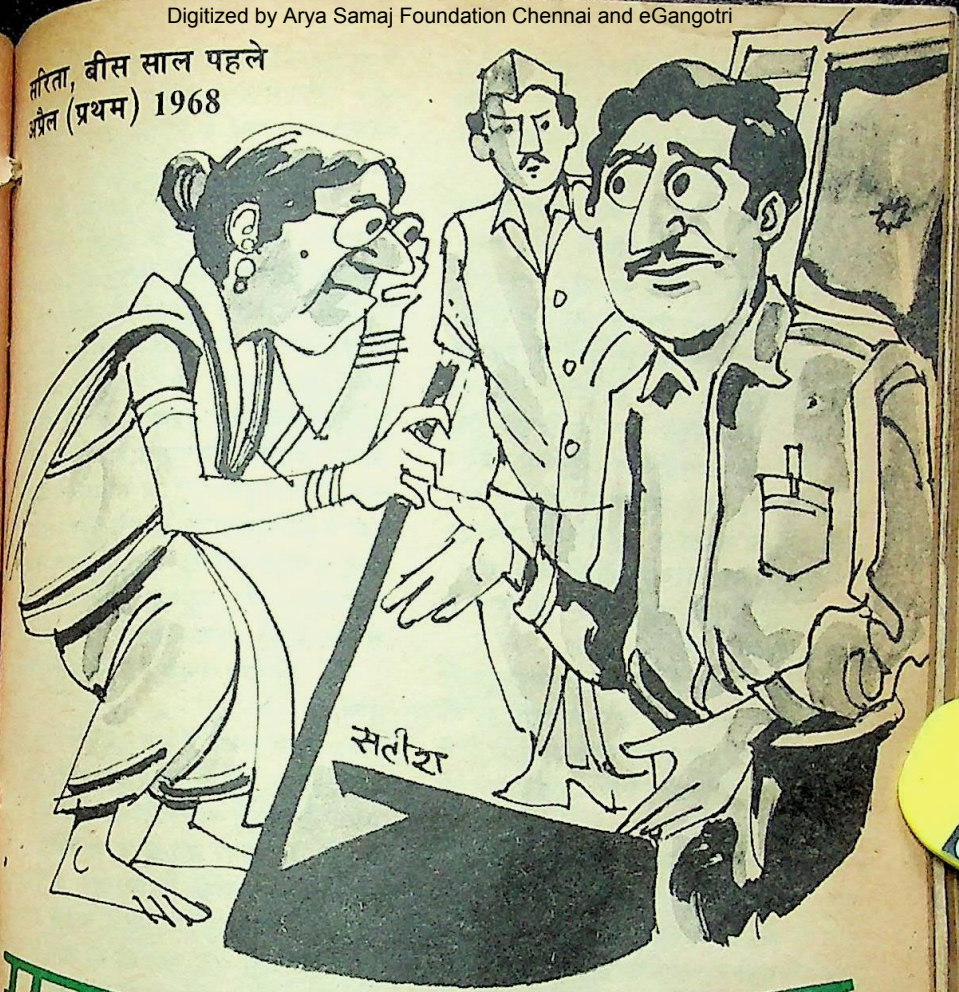

मकान का चक्कर

व्यंग्य • राजेंद्र अंजुम

जब आधा घंटा मुंह लटकाए रहने के बाद भी पांडेजी के होंठों में हरकत नहीं हुई तो हम ने घबरा कर कहा, "पांडेजी, कुछ बोलोगे भी या पहेलियां ही बुझाते रहोगे?"

उत्तर में पांडेजी के नथुनों से ठंडी सांस का फव्वारा सा छूट पड़ा और वह बेचैनी से करवट लेते हुए बोले, "बस, और नहीं सहा जाता. अब तो जी चाहता है कि आत्महत्या कर लूं."

हम ने चौंक कर पांडेजी के थुलथुल शरीर पर एक नजर डाली और उन के करीब खिसकते हुए कहा, "पांडेजी, हम तुम्हारे लंगोटिया यार हैं. ऐसे मित्रों से कुछ छिपाया नहीं करते. सचमुच बताओ, कहीं किसी लड़की के चक्कर में तो नहीं पड़ गए?"

"नहीं," पांडेजी ने बेचैनी से करवट बदली.

"अच्छा, समझा, होटल वाला एडवांस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के लिए तंग कर रहा होगा. क्यों?" मैं ने अंधेरे में दूसरा तीर मारा.

"नहीं," पांडेजी ने जोर से सिर झटका और तीर खाली चला गया.

"तो फिर आप को जरूर कब्ज हो गई है," हम ने फैसला सुनाते हुए कहा. "दरअसल इस में आप का कोई दोष नहीं, दिल्ली का पानी ही ऐसा है. कब्ज से शरीर की व्यवस्था असंतुलित हो जाती है, दिमाग में तनाव पैदा हो जाता है, खट्टेमीठे डकार आते हैं, उलटेसीधे विचार दिमाग को परेशान किए रहते हैं और दोस्त भी दुश्मन नजर आने लगते हैं. हर समय आंखों के आगे अंधेरा छाया रहता है. कहने का तात्पर्य यह कि कब्ज 80% बीमारियों की जड़..."

"नहीं, नहीं, नहीं," पांडेजी पीड़ा से छटपटाते हुए बोले.

"देखो, पांडेजी, अगर तुम सचमुच ही मुझे अपना लंगोटिया यार समझते हो तो सीधी तरह अपना दुख बताओ. दुख मित्रों में ही बांटे जाते हैं और इन के बांटने से मन को शांति मिलती है."

पांडेजी कुछ देर बेबसी से सिर खुजाते रहे, फिर एकदम फट पड़े, "हरीश बाबू, अब मैं होटल की उस कालकोठरी में एक क्षण भी नहीं रह सकता. मुझे एक अच्छा सा बड़ा मकान दिलाओ."

"लेकिन पांडेजी, तुम्हारे होटल के कमरे में तो हम कई बार हो आए हैं. काफी हवादार और साफसुथरा कमरा है. वह तुम्हें कालकोठरी कब से लगने लगा?" हम ने आश्चर्य से पूछा.

"मुझे होटल के कमरे से कोई शिकायत नहीं," पांडेजी सफाई पेश करते हुए बोले, "लेकिन उस में रहने वाले लोगों के हाथों मैं बहुत तंग आ चुका हूं. तुम तो जानते ही हो कि उस कमरे में मेरे सिवा दो और साथी सुरजीतसिंह और रंगाचारी भी रहते हैं. तीनों की चारपाइयां साथसाथ होने के कारण प्राइवेसी बिलकुल खत्म हो गई है. साथ ही वहां इस तरह का वातावरण पैदा हो गया है कि मुझे लगने लगा है, अगर इस पर काबू न पाया गया तो कुछ दिनों बाद सब के व्यक्तित्व भी गड्डमड्ड हो जाएंगे और अपनेआप को पहचानना कठिन हो जाएगा."

"यह कैसे संभव है?" मैं ने हंसते हुए पूछा.

"उस कमरे में सब संभव है," पांडेजी बोले, "हम लोगों में बेतकल्लुफी हद से ज्यादा बढ़ने के कारण हौसले भी बहुत बढ़ गए हैं. एकदूसरे की चीज का प्रयोग करने की अनुमति लेना शिष्टाचार के विरुद्ध समझा जाता है. जूते, मोजे, कपड़े वगैरह पहन लेना तो एक मामूली सी बात है. मेरे यार मेरा टूथब्रश, नकली दांत और ऐनक तक का प्रयोग करने से नहीं झिझकते. और तो और, पिछले दिनों शादी का निमंत्रणपत्र आया. भाई लोग मुझे बताए बिना वहां दावत खा आए."

"समस्या गंभीर है," हम ने कहा.

"सिर खुजलाने से काम नहीं चलेगा, हरीश बाबू," पांडेजी आंखें तरेरते हुए बोले, "मुझे मकान दिलवाए बिना तुम्हारा छुटकारा संभव नहीं. मत भूलो कि खुर्जा से दिल्ली मुझे लाने का दोष तुम्हारा है. मैं वहां अच्छाभला जीवन व्यतीत कर रहा था. तुम ने दिल्ली के ऐश्वर्यपूर्ण जीवन के नक्शे खींचखींच कर मेरी रात की नींद और दिन का चैन हराम कर दिया. और जब मैं इस नतीजे पर पहुंचा कि मैं खुर्जा में बैठबैठ

मकान की समस्या के कारण पांडेजी को विवाहित होते हुए भी कुंआरे की जिंदगी बितानी पड़ रही थीं, दरदर की ठोकरें खानी पड़ रही थीं. लेकिन इतनी मुसीबतों के बाद भी क्या वह मकान हासिल करने में सफल हो सके?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

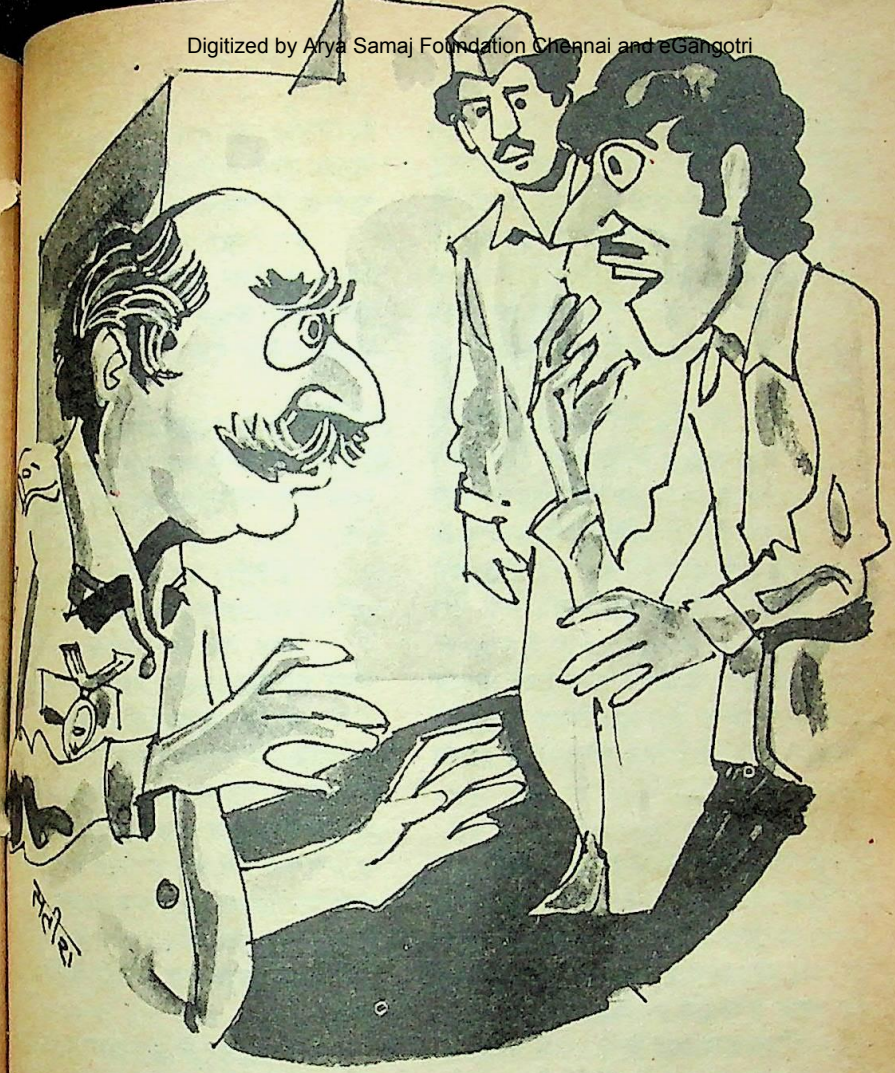

घर से दफ्तर जाने और लौटने का टाइम हम से फ़िक्स कराना होगा. बीबीबच्चों से मनहरी, रेडियो तेज बजाने पर पाबंदी होगी." फौजी का हुक्मनामा सुन कर पांडेजी सकपकके रह गए.

हम गंवा रहा हूं तो दिल्ली आ गया. पर सुख तो दूर रहा. यहां जीवन की बुनियादी सुविधाओं से भी वंचित हो गया. बालबच्चे दूर में हैं. मैं यहां धक्के खा रहा हूं. आह, मैं दूर में कितना सुखी था."

पांडेजी कुछ देर के लिए आंखें बंद कर और हथेलियों में मुंह छिपा कर खुर्जा की गलियों में भटक गए, फिर अचानक उछल कर बोले, "याद रखो, हरीश बाबू, अगर मेरे वे सपने पूरे नहीं हुए जिन में एक सुंदर सा मकान है, जिस के लान में रंगबिरंगे फूल लहलहा रहे हैं तो मैं तुम्हारी चौखट पर सिर फोड़ कर मर जाऊंगा और एक ब्राह्मण की हत्या का दोष तुम्हारे मत्थे आएगा."

"नहीं, नहीं", इस की नौबत नहीं आएगी," हम ने पांडेजी को तसल्ली दी. "तुम ऐसा करो कि जब तक अच्छे मकान का प्रबंध न हो जाए, हमारे पास आ जाओ."

"तुम्हारे पास?" पांडेजी हंसे, "यानी आसमान से गिर कर खजूर में अटक जाऊं. अभी तो मैं ही आत्महत्या करने के बारे में सोच रहा हूं, फिर तुम भी सोचने लगोगे.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम्हारा मकान है ही कितना बड़ा. मकान के नाम पर एक छोटा सा कमरा है. उस में तुम्हारे और तुम्हारे सामान के अलावा तीन प्राणी और रहते हैं. कमरे में किसी भी तरह सोओ तो टांगें दरवाजे से बाहर रहती हैं. बैठे तो ऐसा लगता है जैसे कोई गाड़ी के तीसरी श्रेणी के डब्बे में बैठा हो. ऐसी हालत में तुम मुझे कहां रखोगे? वहां तो इस समय मिल रही सुविधाओं में भी कटौती हो जाएगी."

"ठीक है, ठीक है." हम ने झेंपते हुए कहा, "मेरा खयाल है, पांडेजी, कि अगले इतवार हम केवल मकान ढूंढ़ने का ही काम करें. मैं उस दिन के अखबार में मकानों के विज्ञापनों में से कुछ पते नोट कर लूंगा. मुझे पूर्ण आशा है कि तुम्हारी मनोकामना पूरी होगी."

"ठीक है, मैं अगले इतवार को तुम्हारे घर आ जाऊंगा. तुम मुझे तैयार मिलना," पांडेजी शांत होते हुए बोले और वापस होटल चले गए.

अगले इतवार सुबह पांच बजे ही पांडेजी आ धमके. हम ने आंखें मलते हुए दरवाजा खोला तो बोले, "यार, अजीब गधे हो! यह कोई सोने का समय है. क्या भूल गए कि आज मकान देखने जाना है?"

"बिलकुल याद है," हम ने कहा.

"खाक याद है," पांडेजी बिगड़ उठे. "अच्छी तरह जानते हो कि दिल्ली में मकानों की कितनी तंगी है. फिर भी अब तक चादर तान कर सो रहे हो. मिस्टर, पता नहीं अब तक कितने मकान लग भी चुके होंगे, तीनचार मकानों के हाथ से निकल जाने की मुझे पूरीपूरी उम्मीद है."

पांडेजी की बात से हमें झुंझलाहट तो हुई और जी में आया कि उन्हें करारा सा उत्तर दे दें, लेकिन उन की आत्महत्या वाली बात सोच कर हम ने नम्रता से कहा, "पांडेजी, तुम बैठो, बस, अखबार आने वाला ही है. इस बीच मैं तैयार हो जाता हूं. आधे घंटे बाद हम लोग बस स्टैंड पर खड़े होंगे."

"भई, अखबार मैं बाजार से खरीद लाया हूं," पांडेजी ने बगल में दबा अखबार निकाला, "मैं तुम्हें दस मिनट का समय तैयार होने के लिए देता हूं. इस बीच मैं मकानों के पते नोट कर लेता हूं."

दस मिनट बाद हम बिना ब्रश किए, बिना खाएपिए, बिना नहाएधोए उलटेसीधे कपड़े पहने बस में बैठे पांडेजी के लिए मकान ढूंढ़ने जा रहे थे.

पहला मकान राजेंद्रनगर में था. पांडेजी बस से उतर कर मुझे घसीटते हुए एक ओर भागे जहां लोगों की भीड़ नजर आ रही थी.

"पांडेजी, इस तरह भागने से क्या लाभ? पहले मकान का पता तो पूछ लो."

"यार, तुम दो बच्चों के बाप बन गए मगर रहे बुद्धू के बुद्धू. जरूर यही वह मकान होगा. यह किराएदारों की भीड़ है. मैं ने कहा था न कि हमें घर से निकलने में देर हो गई है. हे भगवान, यह मकान मुझे ही मिले. मैं सवा रुपए का प्रसाद चढ़ाऊंगा," और पांडेजी उसी रफ्तार से मुझे घसीटते और मंत्रों का जाप करते उस भीड़ तक ले आए.

"धत तेरे की! यह तो दूध का डिपो है," पास पहुंच कर पांडेजी खिसिया कर बोले.

"चलो, इन से ही मकान का पता पूछ लो," हम ने धौंकनी की तरह चल रही सांस पर काबू पाते हुए कहा.

"नहीं, हम खुद ही ढूंढ़ेंगे, वरना इन में से कुछ लोग भी हमारे साथ हो लेंगे," पांडेजी मेरे कान में फुसफुसाए.

किसी तरह गिरतेपड़ते, पता सूंघते हम उस मकान तक पहुंचे.

"ऐसा लगता है, यहां सब से पहले पहुंचने वालों में हम ही हैं," पांडेजी प्रसन्न हो कर बोले, "आशा है, यह मकान हमारे ही हाथ लगेगा."

हम ने दरवाजा खटखटाया. अंदर से कोई उत्तर नहीं मिला. हम ने इस बार जोर से दरवाजा खटखटाया. थोड़ी देर बाद लाठी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

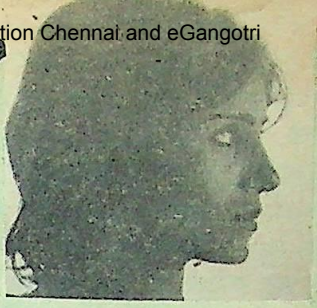

तबस्सुम

आंसुओं से सींचे हैं
तबस्सुम मैं ने,
मुझे न हंसा,
ये बिखर जाएंगे.
–'अदा' देहलवी

दरवाजे की आहट सुनाई दी. फिर कुंडी खुलने की आवाज आई.

"राधेश्याम!" दरवाजा खुलते ही एक कंपती सी आवाज सुनाई दी. हमारे दिल तेजी से धड़कने लगे जैसे किसी परीक्षा का नतीजा निकलने वाला हो.

"माताजी, मेरा नाम राधेश्याम नहीं, ब्रजनंदन है," पांडेजी हाथ जोड़ कर नमस्कार करते हुए बोले, "हम आप का मकान देखने आए हैं."

"राधेश्याम!" बुढ़िया ने फिर नारा लगाया. आंखों से चश्मा उतार कर धोती के पल्लू से साफ किया, फिर आंखों पर लगाया, हमें घूर कर देखा. हाथ से चश्मे का फोकस ठीक किया, फिर बोली, "राधेश्याम!...तो आप मकान देखने आए हैं...आओ, अंदर आ जाओ."

"माताजी, मेरा नाम ब्रजनंदन...."

"राधेश्याम, जात के कौन हो?"

"ब्राह्मण हूं, माताजी," पांडेजी बोले.

"कुंआरे हो या विवाहित?"

"इस समय कुंआरा हूं. वैसे विवाहित हूं."

"राधेश्याम, क्या मतलब?"

"मतलब यह कि वैसे विवाहित हूं, दो बच्चे भी हैं, लेकिन दिल्ली में मकानों की तंगी के कारण यहां पत्नी और बच्चों के बिना कुंआरों की जिंदगी गुजार रहा हूं."

"दफ्तर में नौकरी करते हो या अपना धंधा है?"

"दफ्तर में नौकर हूं. सुबह नौ बजे दफ्तर जाता हूं. रात आठ बजे लौटता हूं."

"ज्यादा मेहमान तो नहीं आएंगे?"

"नहीं."

"ठीक है. मुझे ऐसा ही किराएदार चाहिए. चलो, मकान देख लो." बुढ़िया उठती हुई बोली.

हम और पांडेजी दूसरे कमरों में होते हुए उन कमरों में पहुंचे जिन के लिए बुढ़िया मकान शब्द प्रयोग कर रही थी. कमरे में घुसते ही पांडेजी का सिर चौखट से टकराया. ऐसा लगता था कि दरवाजे की जगह बड़ी सी खिड़की लगा दी गई है. कमरे काफी खस्ताहाल थे. दीवारों पर जगहजगह पलस्तर उखड़ा हुआ था. फर्श इतने ढलवा थे कि खड़े होने पर शरीर का संतुलन बिगड़ जाता और एक कंधा ऊपर को उठा रहता और दूसरा नीचे झुका रहता. इधरउधर चूहे बेफिक्री से घूम रहे थे. अचानक एक बदतमीज चूहा हमारी ओर लपका और पैंट की खुली मोहरी का फायदा उठा कर ऊपर चढ़ने लगा. हम घबरा कर जोर से उछले तो हमारा सिर छत से टकरा गया और तब अचानक ही हमारी समझ में आ गया कि ड्रेनपाइप पैंटों का रिवाज क्यों चला! हम व्यर्थ ही उन का विरोध करते आए थे.

हमें उछलता देख कर बुढ़िया हंसी, "राधेश्याम, चूहा था क्या? घबराओ नहीं, कुछ दिनों में ये तुम से घुलमिल जाएंगे, फिर परेशानी नहीं होगी."

"क्या मतलब?" पांडेजी बोले, "चूहों को तो फौरन मरवा देना चाहिए. इन से बहुत सी बीमारियां फैलती हैं."

"अच्छे ब्राह्मण हो," बुढ़िया तुनक कर बोली, "यह भी नहीं पता कि चूहे गणेशजी की सवारी हैं. इन्हें मैं कैसे मरवा सकती हूं! देखो, बेटा, मकान लेना हो तो लो, ये चूहे तो ऐसे ही रहेंगे."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Harjdwar

Digitized By Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पांडेजी कुछ न बोले, उन्हें सोच में डूबा देख कर बुढ़िया बोली, "इस से अच्छा मकान तुम्हें कहीं नहीं मिलेगा. खूब अच्छी तरह सोच लो."

बाहर आ कर पांडेजी बोले, "यह बुढ़िया तो मुझे किसी इनकम टैक्स अफसर की मां मालूम होती है. देखा नहीं, कैसे सवाल पर सवाल करती चली गई. चलो, अब अगले मकान का पता बताओ. यहां हमारी दाल नहीं गलेगी. यह बुढ़िया हमेशा यह न करो, वह न करो से हमारी नाक में दम किए रखेगी."

अगला मकान पटेल नगर में था. हम ने काल बेल का बटन दबाया. थोड़ी देर बाद एक भारी भरकम देह वाला बूढ़ा हांफते हुए बाहर आए.

"कहिए," उन्होंने तिरछी नजरों से हमें सिर से पांव तक घूरा.

"आप के मकान का विज्ञापन अखबार में पढ़ा था," पांडेजी बोले.

"लेकिन उस में हम ने मिलने का समय भी तो दे रखा है," वह साहब दहाड़े.

"जी, वह तो मुझे पता है. दरअसल हम लोग सुबह ही घर से निकल पड़े. अगर आप को कष्ट न हो..."

"ठीक है, ठीक है. आप लोग ड्राइंगरूम में बैठिए. मैं अभी पूजा से निवृत्त हो कर आता हूं."

"यह तो नौ सौ चूहे खाई हुई बिल्ली दिखाई देती है, जरा होशियारी से बात करना," मैं ने पांडेजी को सचेत किया.

कोई आध घंटे बाद वह पधारे.

"हां, तो आप मकान देखने आए हैं," उन्होंने गरदन को झटका देते हुए कहा.

"जी."

फिर उन्होंने बुढ़िया से मिलतेजुलते प्रश्नों की झड़ी लगा कर पांडेजी की स्क्रीनिंग की और आखिर में बोले, "एक बात और साफ कर दूं. इस मकान में आप अंडामांस कुछ नहीं खा सकेंगे. रिटायरमेंट के बाद मैं शाकाहारी हो गया हूं."

मकान पांडेजी को पसंद आ गया था. गुजारे लायक अच्छी जगह थी. वापस ड्राइंगरूम में लौट कर वह बोले, "मकान हमें पसंद है."

"ठीक है," उन्होंने सिर को झटका दिया और उठ कर एक अलमारी में से कपड़े में लिपटी एक किताब ला कर पांडेजी के हाथ में देते हुए बोले, "कहिए, मैं ईश्वर को साक्षी मान कर कहता हूं कि मुझे मकान किराए पर चाहिए. केवल मकान चाहिए और मकान के सिवा कुछ नहीं चाहिए."

पांडेजी ने सटपटा कर हमारी ओर देखा. इस बीच हम बात की तह में पहुंच चुके थे. हम ने पांडेजी के कान में कहा, "यह महाशय रिटायर्ड जज लगते हैं. इस में इन का कोई दोष नहीं. उमर भर यही करते रहने से आदत सी पड़ गई है. तुम जल्दी से शपथ पढ़ डालो."

"अदालत इस तरह की कानाफूसी की आज्ञा नहीं दे सकती. यहां कानून का पालन बड़ी सख्ती से होता है," जज साहब ने हमें टोका.

पांडेजी ने हड़बड़ा कर शपथ दोहराई.

"ठीक है. आप कल मकान का कब्जा ले लें. मैं आज शर्तों का स्टांपपेपर तैयार कर लूंगा. कल उस पर हस्ताक्षर हो जाएंगे."

"मकान का किराया क्या होगा?" पांडेजी धीरे से बोले.

"ओह, यह तो मैं बताना ही भूल गया. 200 रुपए."

"किराया तो बहुत ज्यादा है," पांडेजी घिघिया कर बोले, "कुछ कम नहीं हो सकता?"

"अदालत अपना फैसला नहीं बदल सकती. इस के लिए आप को अलग से अपील दाखिल करनी होगी. उस पर ज्यूरी अपनी सलाह देगी, फिर हम विचार करेंगे."

बाहर आ कर पांडेजी बोले, "यह बूढ़ा खूसट तो अवकाश प्राप्त करने के बाद भी हर बात में कानूनी कारर्वाई करता है. इस से अपनी पटेगी नहीं. यह तो रोज अदालतें लगाएगा और हमारा हुलिया बिगाड़ देगा.

अरिता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नगर की जगह रोज मुझे अंदर में रेशमी
ही पड़ेगी. चलो, अब अगले मकान में
हीं आजमाएं."

दूसरा मकान रमेश नगर में था. मकान
के बाहर किसी डाक्टर का बोर्ड लगा
था.

"आशा है, यहां काम बन जाएगा." पांडेजी बोले. "डाक्टर लोग तो दुखतकलीफों से भलीभांति परिचित होते हैं. इसलिए हमारे दुख को भी वह समझ लेंगे."

हम ने घंटी बजाई. कुछ देर बाद एक वृद्ध बाहर आए और बोलने के बजाए हमें सिर से पांव तक घूरघूर कर देखने लगे, जैसे पहचानने की कोशिश कर रहे हों. फिर बोले, "तो आखिर तुम आ ही गए. आओ, अंदर आओ, अंदर आओ. सेठी साहब ठीक ही कह रहे थे. तुम्हारा स्वास्थ्य दिनबदिन गिरता जा रहा है."

"जी," पांडेजी ने फटीफटी आंखों से उन की ओर देखा, "जी, आप गलत समझे. दरअसल हम...."

"बस, चुपचाप बैठे रहो. मैं स्वयं ही तुम्हारी बीमारी ढूंढ़ निकालूंगा," और वह दूसरे कमरे में चले गए. दूसरे ही क्षण वह स्टेथैस्कोप लिए लौटे और बोले, "चलो, उस सोफे पर लेट आओ."

"डाक्टर साहब, आप को गलतफहमी हुई है. हम लोग तो आप का मकान देखने आए हैं. आज सुबह अखबार में विज्ञापन देखा था," पांडेजी रोंआसे हो कर बोले.

"ओह, तो तुम सेठी साहब के लड़के ओमप्रकाश नहीं हो," डाक्टर साहब सिटपिटा कर बोले, "क्या करूं, नजर बहुत कमजोर हो गई है." फिर जैसे उन्हें कुछ खयाल आ गया, "उफ! मैं न कहूं, यह गलती क्यों हो रही है. दरअसल मैं ने नजदीक का चश्मा लगा रखा है. इसलिए दूर की चीज धुंधली दिखाई दे रही है. माफ कीजिए, जरा चश्मा बदल आऊं."

वह फिर चप्पलें फटफटाते अंदर चले गए और दूसरा चश्मा लगा कर लौटते हुए बोले, "अच्छा, तो आप मकान देखने आए हैं?"

"जी," पांडेजी बोले.

"तो फिर सोफे पर लेट जाइए."

पार्किंसन रोगियों के लिए आशा की किरण

पार्किंसन रोग (कंपाने वाला लकवा) से ग्रस्त लोगों के लिए आशाजनक समाचार है. यह बीमारी मस्तिष्क में डोपामीन नामक रसायन की कमी से होती है, जिस के फलस्वरूप मस्तिष्क तक संदेश लाने ले जाने का कार्य रुक जाता है.

वैज्ञानिकों ने देखा कि ऐडरिनलीन बनाने वाली ग्रंथियों में कुछ कोशिकाएं डोपामीन भी बनाती हैं. इन कोशिकाओं को मस्तिष्क में प्रत्यारोपित कर के पार्किंसन रोगियों का सफलतापूर्वक इलाज किया गया है.

इस सफल प्रत्यारोपण से, जहां एक तरफ नए रोगियों को ठीक करने में सफलता मिली है, वहीं यह भी प्रश्न उठता है कि क्या कृत्रिम प्रत्यारोपण कंपाने वाले लकवे के पुराने मरीज भी ठीक किए जा सकते हैं? नौ वर्ष पुराने एक रोगी को प्रत्यारोपण के कुछ समय बाद फिर से पार्किंसन रोग ने जकड़ लिया है.

फिर भी पार्किंसन रोग से पीड़ित रोगियों के लिए आशा की एक किरण तो दिखाई दी है. शायद उन के लिए नया सवेरा दूर नहीं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं समझा नहीं," पांडेजी घबरा कर बोले.

"मकान किराए पर देने से पहले मैं किराएदारों का मेडिकल चेकअप जरूर करता हूं. बात दरअसल यह है कि यह बीमारियों का युग है. पता नहीं कब किसे बीमारी आ घेरे. मैं नहीं चाहता कि बीमार किराएदार को मकान दिया जाए."

पांडेजी आज्ञाकारी बच्चे की तरह सोफे पर लेट गए. डाक्टर साहब ने पहले स्टेथेस्कोप से उन के पेट में गुदगुदी की, फिर दोचार जगह उंगलियां चुभाईं, फिर बगल में दोचार घूंसे रसीद किए, पेट पर एक मिनट तक तबला बजाया, जीभ देखी, आंखों का निरीक्षण किया, फिर बोले, "सब ठीक है. अलबत्ता कुछ एनिमिक जरूर लगते हो, लिवर एक्स्ट्रेक्ट इंजेक्शन का एक कोर्स ले लो."

पांडेजी ने चुपचाप गरदन हिला दी.

"बेबी!" डाक्टर साहब ने जोर से आवाज दी.

थोड़ी देर बाद एक मोटे आदमी ने हांफते हुए कमरे में प्रवेश किया.

"डाक्टर साहब ने बेबी को आवाज दी है," मैं ने उस आदमी से कहा.

"मेरा ही नाम बेबी है," वह आदमी शरमा कर बोला.

"यह है स्वास्थ्य की जीतीजागती तसवीर," डाक्टर साहब उस की ओर इशारा करते हुए बोले. फिर उस की ओर मुड़े, "इन को मकान दिखा दो."

कमरे देखने के बाद पांडेजी बोले, "डाक्टर साहब, मकान हमें पसंद है. आप कृपया किराया बता दीजिए."

"150 रुपए." डाक्टर साहब बोले,

"कोई और शर्त?" पांडेजी ने पूछा.

"हां, मकान खाली करने का नोटिस दोनों ओर से एक महीने का होगा. किराया पहली तारीख को मिल जाना चाहिए. स्वास्थ्य की दृष्टि से दो से ज्यादा मेहमान एक समय में आप के पास नहीं ठहर सकते. कंजस्टेड रहने से बहुत सी बीमारियां फैल सकती हैं. साप्ताहिक खाने का एक टाइमटेबल बनेगा जो मुझ से पास करवाया जाएगा. परिवार के सब सदस्यों की मासिक जांचपड़ताल हुआ करेगी. दरअसल मैं स्वास्थ्य के बारे में बहुत सतर्क हूं."

बाहर आ कर पांडेजी बोले, "अजीब आदमी है. यानी एक तो किराया दो और उस पर खाओपिओ भी इस के निर्देशानुसार. मुझे तो लगता है कि अगर किसी दिन गलती से एक दो छींकें आ गईं तो यह आदमी तीन दिन तक बिस्तर से नहीं उठने देगा. फिर नौकरी कौन करेगा, मेरा बाप?"

अगला मकान राजौरी गार्डन में था. जैसे ही मैं ने फाटक खोलने की कोशिश की बरामदे में बैठे अलसेशियन कुत्ते ने कान खड़े कर के भौंकना शुरू कर दिया. कुछ देर बाद एक टुथब्रुश किस्म की मूंछों वाला बूढ़ा बाहर निकला. उस के मुंह में चुरुट दबा हुआ था.

"हुक्मदार?" वह वहीं से रोबदार आवाज में कड़का.

"फ्रेंड," हम ने हाजिरजवाबी से काम लेते हुए जल्दी से कहा.

"यह क्या चक्कर है?"

"यह रिटायर्ड फौजी है," मैं ने पांडेजी को समझाया, "जरा ठीक से बात करना. ये लोग डिसिप्लिन के बहुत पाबंद होते हैं."

"क्या तुम इसे जानते हो? तुम्हें कैसे पता चला कि यह फौजी है?" पांडेजी बोले.

"फौज में रात को हर आने वाले आदमी से पहरेदार बंदूक तान कर हमेशा यह पूछता है, 'हू कम्स देयर.' अनपढ़ फौजियों ने इसे बिगाड़ कर 'हुक्मदार' कर दिया है."

इस बीच वह हम तक आ पहुंचा था. हम और पांडेजी ने उन से हाथ मिलाया और अपने आने का उद्देश्य बताया. हम ने देखा, पांडेजी उस से हाथ मिलाने के बाद हाथ सहला रहे थे. हमारा हाथ भी अभी तक झनझना रहा था.

अरिता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"वैल. तो, जवान, आप का मकान चाहिए. अंदर आओ." उन्होंने मुंह में चुरुट घुमाते हुए कहा.

"जी," पांडेजी ने हाथ मलते हुए कहा.

मकान पसंद आ गया था. बैठक में आ कर पांडेजी बोले, "मकान हमें पसंद है किराया भी वाजिब ही है. आप की कोई शर्त तो नहीं?"

"शर्त, वाट शर्त," उन्होंने चुरुट होंठों में घुमाया, "हम बस डिसिप्लिन मांगता है, और कुछ नहीं."

"मतलब?" पांडेजी चौंक कर बोले,

"घर से दफ्तर जाने और लौटने का टाइम हम से फिक्स करना होगा. लेट जाना या आना हमें एकदम पसंद नहीं. घर में भी इतना ही डिसिप्लिन रखना होगा. बीवी-बच्चों से मसखरी, जोर से रेडियो बजाना, बाथरूम में नहाते समय गाना, सब पर सख्त पाबंदी रहेगी. रात को नौ बजे सोना होगा. सुबह पांच बजे के बाद हर हालत में बिस्तर से बाहर तुम को आना होगा."

बाहर जा कर पांडेजी बोले, "आया बड़ा अनुशासन की दुम. किराया भी दो और कैदियों की तरह भी रहो. इस से अच्छा तो तिहाड़ जेल नहीं चले जाएंगे."

"अगला मकान पंजाबी बाग में था. कुछ देर तक दरवाजा पीटने के बाद खद्दर का कुरतापाजामा पहने, आंखों पर मोटा चश्मा लगाए एक महाशय निकले.

"नमस्ते!" हम ने हाथ जोड़ कर उन से नमस्ते की.

"तो आप लोग आ गए?" उन के होंठों पर मुसकान फैल गई. "घर ढूंढने में परेशानी तो नहीं हुई? परसों आप का पत्र मिल गया था. मैं ने सोचा जब आप यहां पधार ही रहे हैं तो आप को पुरानी चीजें क्यों सुनाई जाएं. अभीअभी एक नई कविता खत्म की है."

"हम तो मकान देखने आए हैं," पांडेजी बोले.

"कोई बात नहीं. मकान भी देख लीजिएगा और कविता भी सुन लीजिएगा." देखने से तो आप भी साहित्यिक लगते हैं?" वह अपना चश्मा ठीक करते हुए बोले.

"बस, ऐसे ही थोड़ाबहुत शौक है," पांडेजी शिष्टाचार के नाते बोले.

"तो ठीक है, पहले साहित्य चर्चा होगी, फिर मकान चर्चा."

कोई एक घंटे तक बेतुकी कविताएं सुनाने के बाद वह हमें मकान दिखाने लगे, "देखिए, कितनी अच्छी जगह मकान है. आबादी के एक कोने पर, भीड़भाड़ से दूर, चारों और शांति ही शांति. सामने गंदा नाला है. घंटों खड़े इसे ताकते रहिए. समय गुजरने का पता ही नहीं चलेगा."

"कमरे अंदर से बाद में देखेंगे. पहले आप यह बताइए कि कोई शर्त तो नहीं?" पांडेजी उकता कर बोले.

अपने छोटे बच्चों को

चंपक

दीजिए

और बड़े बच्चों को

सुमन सौरभ

चंपक व सुमन सौरभ में भूतप्रेतों, राक्षसों, देवी-देवताओं, चमत्कारों और श्रापों के कारनामे, जादूटोने, अंधविश्वास की कहानियां प्रकाशित नहीं की जातीं.

दोनों पत्रिकाओं में रचनात्मक चरित्र निर्माण करने वाली, ज्ञान बढ़ाने वाली मनोरंजक कहानियां व लेख प्रकाशित किए जाते हैं. जिस से कल व आज के बच्चे जागरूक, स्वाभिमानी, देशप्रेमी नागरिक बन सकें.

नमूने की प्रति के लिए लिखें : दिल्ली प्रेस, नई दिल्ली-110055.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्व सुलभ साहित्य

वैवाहिक जीवन में प्रवेश कर रहे युवकयुवतियों के लिए अनुपम पुस्तकें

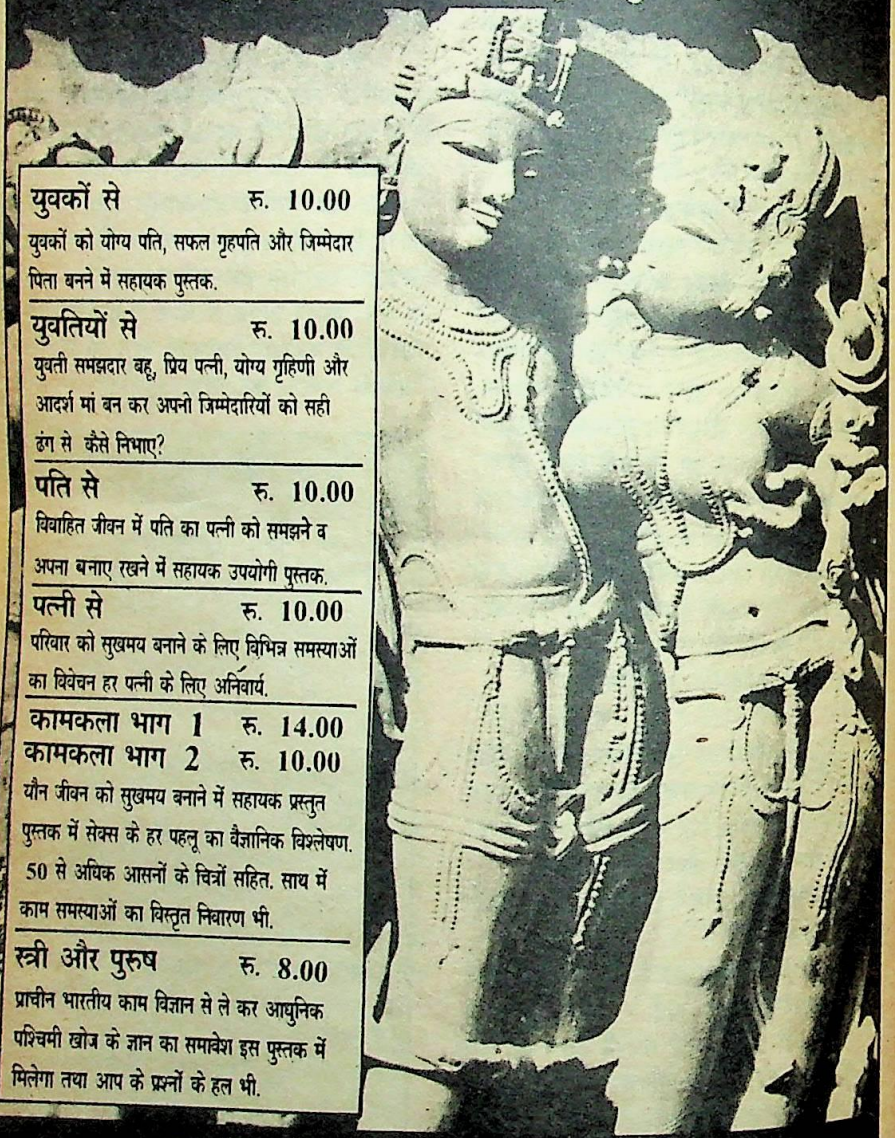

युवकों से रू. 10.00

युवकों को योग्य पति, सफल गृहपति और जिम्मेदार पिता बनने में सहायक पुस्तक.

युवतियों से रू. 10.00

युवती समझदार बहू, प्रिय पत्नी, योग्य गृहिणी और आदर्श मां बन कर अपनी जिम्मेदारियों को सही ढंग से कैसे निभाए?

पति से रू. 10.00

विवाहित जीवन में पति का पत्नी को समझने व अपना बनाए रखने में सहायक उपयोगी पुस्तक.

पत्नी से रू. 10.00

परिवार को सुखमय बनाने के लिए विभिन्न समस्याओं का विवेचन हर पत्नी के लिए अनिवार्य.

कामकला भाग 1 रू. 14.00
कामकला भाग 2 रू. 10.00

यौन जीवन को सुखमय बनाने में सहायक प्रस्तुत पुस्तक में सेक्स के हर पहलू का वैज्ञानिक विश्लेषण. 50 से अधिक आसनों के चित्रों सहित. साथ में काम समस्याओं का विस्तृत निवारण भी.

स्त्री और पुरुष रू. 8.00

प्राचीन भारतीय काम विज्ञान से ले कर आधुनिक पश्चिमी खोज के ज्ञान का समावेश इस पुस्तक में मिलेगा तथा आप के प्रश्नों के हल भी.

आज ही अपने पुस्तक विक्रेता से लें या आदेश भेजें:

दिल्ली बुक कंपनी

एम- 12, कनाट सरकस, नई दिल्ली- 110001.

मूल्य अग्रिम भेजने पर पूरा सेट 63 रुपए में, डाक खर्च 2.00 रुपए वी.पी.पी. द्वारा, अग्रिम मूल्य न भेजने पर डाक खर्च 10 रुपए अतिरिक्त तथा 5 रुपए अग्रिम भेजें.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"शर्त?" वह महाशय बोले, "मैं धंधेबाज हूं. रुपएपैसे के मामले से जरा दूर ही रहता हूं. मकान आप को पसंद हो तो ठीक से आ जाइए. खूब गुजरेगी जो मिल बैठे दीवाने दो! किराया जो दे देंगे, ठीक है. वैसे मेरी जेब में जाना है. उधार वालों की बड़ी लंबी सूची है. रहे अपने दैनिक खर्च के लिए पैसे, तो मैं आप को कभीकभी तकलीफ दे ही सकता हूं. आजकल किसी भी नई रचना को सुनाने के लिए कनाट प्लेस जाना पड़ता है. आप आ जाएंगे तो यह समस्या भी हल हो जाएगी. फिर आप तो देखने में भी बड़े रोबदार लगते हैं. उधार वाले भी आप के रोब में आ जाएंगे. यह भी मुझे सुख मिल जाएगा."

पांडेजी उठने लगे तो वह महाशय बोले, "हां, एक बात तो भूल ही गया. आप तैरना जानते हैं या नहीं?"

"क्या मतलब?" पांडेजी बोले.

"अब आप से क्या छिपाना," कवि महोदय बोले. "बरसात के दिनों में गंदे नाले का पानी यहां भर जाता है. कुछ दिनों के लिए बाहर जाना कठिन हो जाता है. मैं तो स्वतंत्र लेखन करता हूं. उन दिनों छत की मुंडेर पर बैठ कर इस मनोरम दृश्य पर कविताएं लिखा करता हूं. आप ठहरे नौकरीपेशा लोग. इसलिए दफ्तर पहुंचना जरूरी है. वैसे मैं इस सिलसिले में कारपोरेशन से पत्रव्यवहार कर रहा हूं."

बाहर आ कर हम ने पांडेजी से पूछा, "अब क्या हुक्म है?"

"सीधे घर चलो," पांडेजी झल्ला कर बोले. "मैं उस होटल में ही अच्छा हूं. कम से कम वहां मुझे आनेजाने, खानेपीने की, हंसने या गाने की स्वतंत्रता तो है. कोई इस तरह के नादिरशाही हुक्म तो नहीं सुनाता. यहां किसी को मेरे स्वास्थ्य की चिंता है, कोई मुझे अनुशासन सिखाना चाहता है. मेरे लिए वही दुनिया अच्छी है. यहां तो मेरे व्यक्तित्व का संहार हो जाएगा. चलो, हरीश बाबू, वापस चलो. ऐसे सपनों का क्या लाभ जो मनुष्य के अस्तित्व के लिए जोखिम बन जाएं." ●

आप माने या न माने
जापान में भी मच्छर होते हैं।

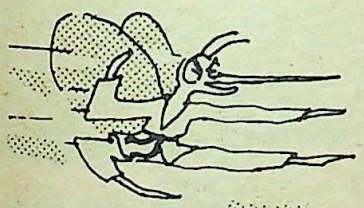

आज यह मच्छर हर एक समय हर एक जगह पर हैं। और पुराने मच्छर दूर करने वाले यंत्र असर भी नहीं करते। पर अब एक जापानी उपाय है, स्लीपवेल इलोक्ट्रानिक मच्छर प्रतिकारक। इससे मच्छर केवल दूर ही नहीं रहते बल्कि इनका डंक भी निष्फल हो जाता है। इसका अदृश्य धुआँ शिशुओं के लिए भी सुरक्षित है केवल मच्छरों के लिए प्राणनाशक है।

स्लीपवेल प्रयोग करके देखिए। आप आश्चर्य करेंगे कि इसके बिना आप कैसे रहें।

स्लीप-वेल
मच्छर प्रतिकारक
आज के मच्छरों के लिए
नया उपचार।
विशेषी रसायनियकों से निर्मित
किया गया। तकनीकी सहायता-
पूर्णतेमो कॉमकस जापान।

हर स्लीपवेल हीटर के साथ
९ मैट्स मुफ्त

निर्माता:
सिलवर स्पार्क प्रयवेट लिमिटेड
१०८ कंचन हाऊस, करमपुरा (मिलन सिनेमा के सामने) नई दिल्ली ११००१५.
दूरभाष: ५४३६५८३.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धर्म की आड़ में उन्मुक्तता

लेख • मनमोहन बागड़ी

भारत में ही नहीं सारी दुनिया में धर्म की आड़ में हर कोई अपनीअपनी स्वार्थसिद्धि में जीजान से लगा हुआ है. इसी तरह पंडेपुजारी, मुल्लामौलवी, पादरी, ग्रंथी और साधुसाध्वी आदि अपनी-अपनी दुकानदारी जमाए धर्म की आड़ में लोगों का मूर्ख बनाने में दिनरात लगे हुए हैं. धर्म की आड़ में खुलेआम गुंडागर्दी, आवारागर्दी, असामाजिक तत्त्वों के अपराध पनप रहे हैं, फलफूल रहे हैं. एक तरफ राजनीतिबाजों ने धर्म को अखाड़ा बना लिया है तो दूसरी तरफ विज्ञान ने भी धर्म के आगे

घुटने टेक दिए हैं. धर्म की जड़ें हमारे समाज में बहुत गहरी बैठी हुई हैं. इस का कारण यही है कि यहां धर्म को आधार बना कर बहुत ही सरलता से अपनाअपना मतलब निकाला जा सकता है.

महाराष्ट्र में गणेशोत्सव के नाम पर 10-12 दिनों तक बेहूदा हरकतों के साथ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...कों को उछलनेकूदने, ...नी करने का मौका ...हिए जो उन्हें धार्मिक ...लों, जलूसों में मिल ...ता है (नीचे). दुर्गा की ...जा करता युवक : बगैर ...म किए क्या मिल ...ाएगा ऐसी पूजा से— ...कार, बंगला, कारखाना, ...ौकरी? (दाएं).

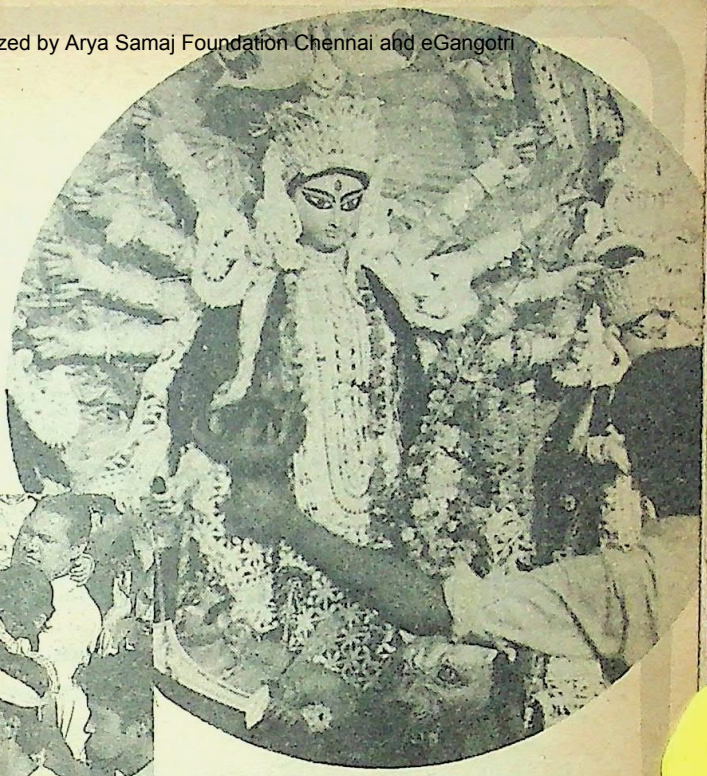

ऐसा कोई भी काम जो समाज की दृष्टि से अनैतिक, मानवता के विरुद्ध है, धर्म की आड़ में खुलेआम किया जाता है. धर्म के नाम पर ऐसे ऐसे प्रपंच, कुकर्म किए जाते हैं जिन्हें सुन कर सिर शर्म से झुक जाता है. और विडंबना यह है कि सत्ता के लोलुप बजाए इसे रोकने के और बढ़ावा देते हैं.

खुलेआम शोरशराबे (शराब पी कर सड़कों पर भोंडे व अश्लील नाच) किए जाते हैं. सरकारी मशीनरी भी इन में पूरा सहयोग देती है. गुंडे, बदमाश लोग निर्दोष व्यक्तियों से चंदा वसूल करते हैं और जुए और शराब में खर्च कर देते हैं.

गुजरात में नवरात्रि के दिनों में डिस्को डांस, रासगरबों के नाम पर खर्चीले आयोजन किए जाते हैं. स्त्रियां आकर्षक आधुनिक वस्त्र पहन कर अंग प्रदर्शन करती हुई खुलेआम नाचती हैं. लड़केलड़कियां रातरात भर रासगरबों के नाम पर घरों से बाहर रह कर अपनी मनोकामनाएं पूरी करते हैं. कहींकहीं तो विवाहित पतिपत्नियां आपसी अदलाबदली द्वारा उन्मुक्ततापूर्वक शारीरिक भूख मिटाते हैं.

बंगाल में दुर्गापूजा के पूरे 10 दिनों तक हंगामे और गुंडागर्दी होती रहती है. साथ ही दुर्गापूजा के नाम पर जोरजबरदस्ती से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धमकियां देदे कर मनचाहा चंदा वसूल किया जाता है. वहां का भी वही हाल है, जो महाराष्ट्र में गणेशोत्सव के दिनों में होता है. बंबई में दीवाली के दिनों में अकसर व्यापारिक घरानों में जुआ खेलने की खुली छूट रहती है. बापबेटा साथसाथ जुआ खेलते पाए जाते हैं. एक बार जुआ खेलने की शुरुआत हो जाने पर बाद में जुआ खेलना आदत बन जाती है.

आजकल तथाकथित देवी लक्ष्मी की पूजा लोग इस मनोकामना से करते हैं कि 'काली लक्ष्मी' उन्हें प्राप्त हो और बही चोपड़ों का पूजन इस भावना से करते हैं कि उन में गलत हिसाब लिख कर काले धन को सरकार की नजरों से बचाया जा सके. लक्ष्मी की मूर्तियां चोरी, बेईमानी करने वालों और तस्करी करने वालों के यहां बड़ी चमकदमक के साथ रखी जाती हैं.

महावीर की पूजा के नाम पर चातुर्मास के दिनों में हजारों लाखों रुपए का खर्च 'तपस्या' के नाम पर किया जाता है. जो व्यक्ति दुनियादारी, मोहमाया छोड़ कर दीक्षा लेता है, उस के समारोह में जुलूस, बैंडबाजा, बरघोड़ी आदि के आडंबर से क्या यह सिद्ध नहीं होता कि अपने मन की भड़ास निकालने तथा ऐश्वर्य प्रदर्शन का काम धर्म की आड़ में कितने सुगम तरीकों से हो जाता है.

आजकल मंदिरों के निर्माण में आयातित संगमरमर लगवा कर करोड़ों रुपए खर्च किए जा रहे हैं. मूर्तियों की प्रतिष्ठा के नाम पर पुष्पवृष्टि के स्थान पर रुपयों की वृष्टि की जाने लगी है.

लक्ष्मी के आगे हाथ जोड़े युवक : रातोरात लखपति बनने की चाह (बाएं). दीवाली की रात में जुआ खेलते लोग : बुराई पर धर्म की मुहर (नीचे).

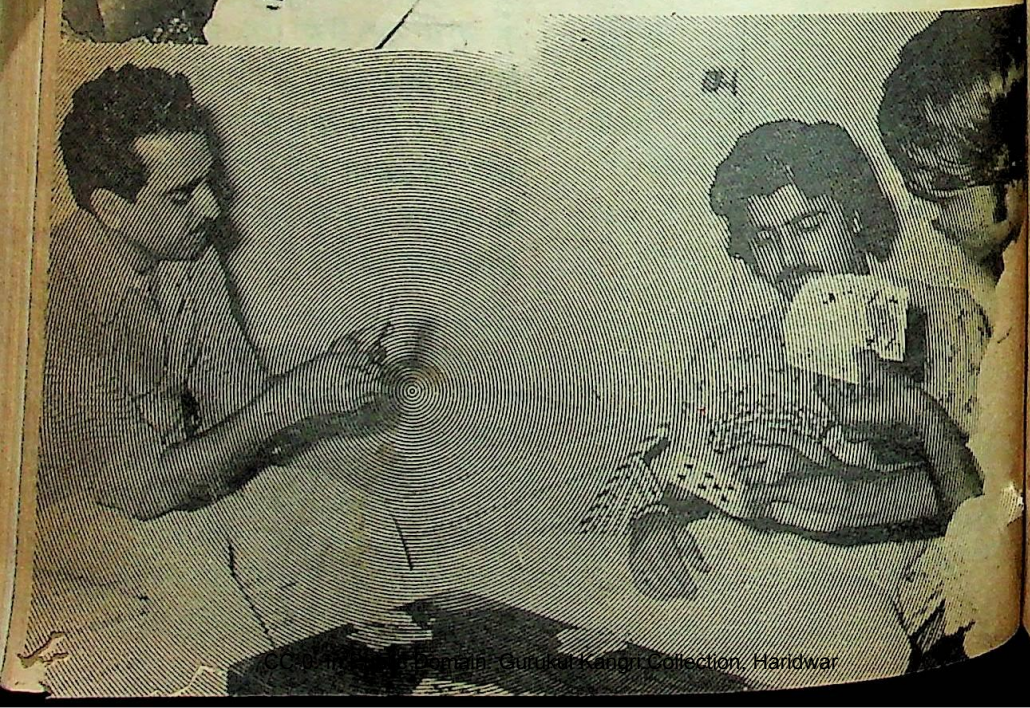

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानव रक्त के प्यासा ये आग्नेयास्त्र धर्मस्थल में ही मिले थे.

बुद्ध के अनुयायियों ने धर्म को राजनीति से जोड़ दिया है. श्रीलंका में बौद्ध धर्म के अनुयायियों ने हिंसा को खुले रूप में अपना कर सिद्ध कर दिया है कि जब धर्म के विपरीत काम करने के लिए भी धर्म की आड़ ली जा सकती है तो धर्म को खिलौना क्यों न बनाएं.

ईसाई धर्म की आड़ में धर्म परिवर्तन करा के आपसी विवाद को बढ़ावा दिया जाता है. स्कूलों में दूसरे धर्म के विद्यार्थियों को भी जबरन ईसाई धर्म सिखायापढ़ाया जाता है. धर्म की आड़ में इंगलैंड व अमरीका जैसे देश दो कौमों को इसलिए भी लड़ाने की फिक्र में रहते हैं, ताकि उन के हथियार बिक सकें.

इसलाम धर्म की आड़ में मुसलमान दूसरों के धार्मिक जलूसों पर मसजिदों के अंदर से सोडा बोतलें, पत्थर आदि फेंकने से नहीं चूकते. मुसलमानों में अलगअलग संप्रदाय के लोग जैसे सुन्नी, शिया, अहमदिया आदि आपस में खूनी लड़ाइयां लड़ते रहते हैं.

धर्म की आड़ में गुरुद्वारों में अस्त्रशस्त्र एकत्र किए जाते हैं और आतंकवादी सेना का गठन कर के कुछ उग्रवादी सिखों ने देश को विभाजित करने का जैसे फैसला ही कर लिया है.

मंदिरों में पूंजीपतियों ने ट्रस्ट बना कर बेहिसाब करोड़ोंअरबों रुपयों का सोना एकत्र कर लिया और देश की अर्थव्यवस्था को डगमगा कर रख दिया है.

इस तरह धर्म की आड़ में अलगअलग धर्मों के अनुयायियों ने खुलेआम उत्पात मचा रखा है. राजनीतिबाजों ने भी धर्म के आधार पर वोट पाने के विविध हथकंडे अपनाए हुए हैं. इसी तरह विविध धर्मों का संरक्षण प्राप्त कर के अनेक राजनीतिक पार्टियां अपना अस्तित्व बनाए रखने में लगी हैं.

धर्म के नाम पर इस तरह के प्रपंच भारत के प्रत्येक कोने में देखे जा सकते हैं. किसी न किसी कथित देवी या देवता को अदृष्ट नेता बना कर असामाजिक तत्त्व (जिन में राजनीतिक पार्टियां भी शामिल हैं) मौजमस्ती और लूटखसोट में लगी हैं.

जरूरत इस बात की है कि सरकार को ऐसी गतिविधियों पर कठोरतापूर्वक प्रतिबंध लगाना चाहिए और धार्मिक अंधानुकरण रोकने के लिए जनजागरण का बीड़ा देश के बुद्धिजीवियों को अविलंब उठाना चाहिए. इसी में सब का भला है. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारी बेड़ियां

हमारे यहां स्त्री को प्रसव के बाद 4-5 दिनों तक भूखा ही रखने का रिवाज है. इस दौरान उस के नवजात शिशु के पेट में लोहे की सलाख को गरम कर के दाग दिया जाता है. ऐसा करने के पीछे यह मान्यता है कि भविष्य में उसे कोई पेट संबंधी रोग नहीं होगा.

पिछले दिनों मेरे मामाजी के गांव में एक स्त्री जब प्रसूता हुई तो उस के परिवार वालों ने उसे भी यह प्रथा मानने के लिए विवश किया. कमजोर होते हुए भी उसे 4-5 दिनों तक भूखीप्यासी रहना पड़ा. उस की दशा इतनी बिगड़ गई कि आखिरकार उस की मृत्यु हो गई.

इतना ही नहीं, उस के शिशु को भी गरम छड़ से दागा गया तो उस के पेट में फोड़ा हो गया. आपरेशन के दौरान वह भी चल बसा.

—शेषनाथ प्रसाद

*

हमारे इलाके में लड़की की शादी के बाद आने वाली हर शिवरात्रि पर लड़के वालों के घर प्रचुर मात्रा में अखरोट भेजा जाता है.

पिछले दिनों जब मेरे एक पड़ोसी की लड़की की शादी हुई तो प्रथा के अनुसार लड़की का भाई उस की ससुराल अखरोट ले कर गया. आर्थिक स्थिति ठीक न होने के कारण वह कम अखरोट ले कर गया था. इस पर लड़की की सास ने गुस्सा हो कर कहा, "अखरोट कम हैं. इन्हें वापस लेते जाइए. मैं अखरोट खरीद कर अपने रिश्तेदारों को दे दूंगी."

लड़की का भाई इस अपमान को नहीं सह सका. उस ने अपना खून बेचा और अखरोट खरीद कर दे दिए. लेकिन घर वापस लौटते समय कमजोरी के कारण वह बेहोश हो कर गिर पड़ा. काफी उपचार के बाद वह स्वस्थ हो पाया.

—निरमल भारती

*

हमारे यहां यह प्रथा है कि परिवार के किसी सदस्य की मृत्यु हो जाने के बाद उस की अस्थियों को नदी में विसर्जित किया जाता है.

पिछले दिनों मेरे एक मित्र के मामाजी का देहांत हो गया. नियमानुसार उन की अस्थियों को नदी में प्रवाहित करने के लिए ले जाया गया. वहां पुरोहित के यह कहने पर कि अगर भानजे के हाथों मामा की अस्थियां बीच नदी में ले जा कर प्रवाहित की जाएं तो मामा को स्वर्ग की प्राप्ति होती है. मेरा मित्र अस्थियां ले कर नदी में बीच धारा की तरफ बढ़ने लगा, लेकिन बाढ़ के कारण नदी का बहाव बहुत तेज था जिस से वह अपना संतुलन नहीं रख पाया और आखिरकार लहरों में बह गया. काफी ढूंढ़ने के बाद हमें उस की लाश ही प्राप्त हो सकी.

- राजेश नेमा

इस स्तंभ के लिए अपने तथा अपने संबंधियों के अनुभव भेजिए. प्रत्येक प्रकाशित अनुभव पर 30 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. अपने अनुभव इस पते पर भेजें: संपादकीय विभाग, सरिता, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

अरिता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खत कोरे आते रहे

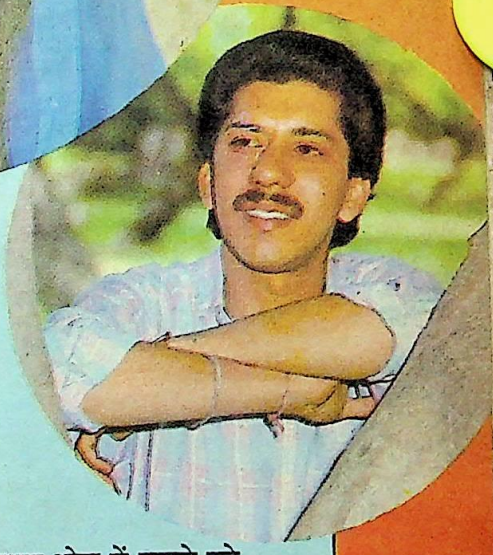

हम ने उन्हें
चांद क्या कह दिया,
वह रातभर आईने को
सताते रहे.
अनजाने ही
कर बैठे कुछ ऐसी गुफ्तगूं
अकेले में
वह घंटों मुसकराते रहे.
आंखों में
उन की निरख मौन आमंत्रण
स्वीकारने को
हम कसमसाते रहे.
सिर गोद में
सांझ की रख रवि सो गया,
रातभर
चांद ही के ख्वाब आते रहे.
इंतजार में
तितली अभिसारिका की,
फूल
रातभर ओस में नहाते रहे.
उन के प्यार की
है यह कैसी अदा,
हमें
उन के खत कोरे आते रहे.
विवश हो
और देख अपनी लाचारगी
हम चुपचाप
कविता बनाते रहे.

-वीरेंद्र कल्याण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भरोसा बेटी का

कहानी • कुसुम गुप्ता

रीमा ने मुझ से आज्ञा मांगी थी. मैं जानती थी कि वह केवल औपचारिकता मात्र है. वह बड़ी जिद्दी थी, जो मन में ठान लेती थी वही करती थी. उस के कार्यक्रम के बारे में सुन कर मेरा मन आशंकाओं से तो भरा ही, मैं बेहद आतंकित भी हो गई, "यह क्या कर रही है, रीमा? दो

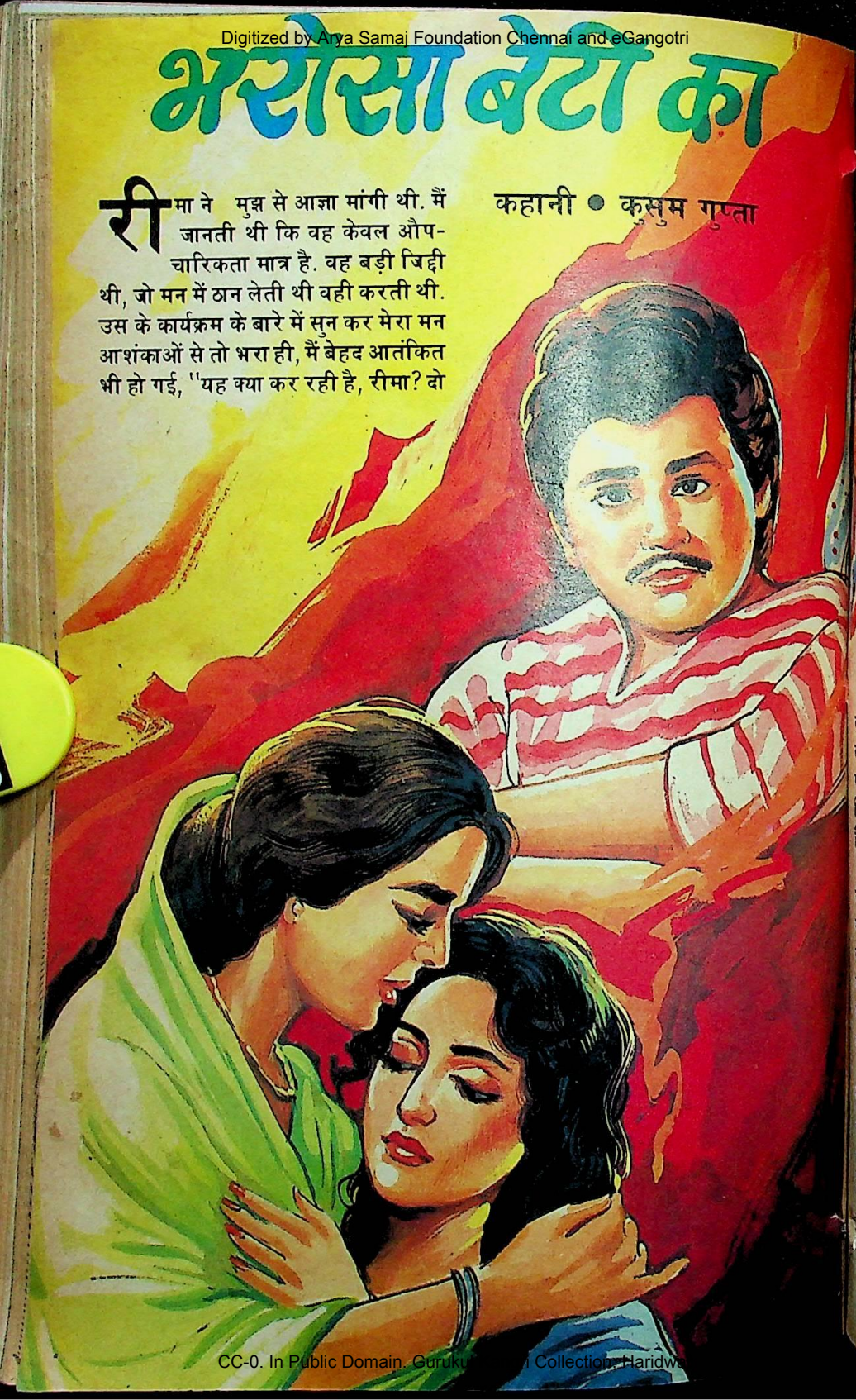

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

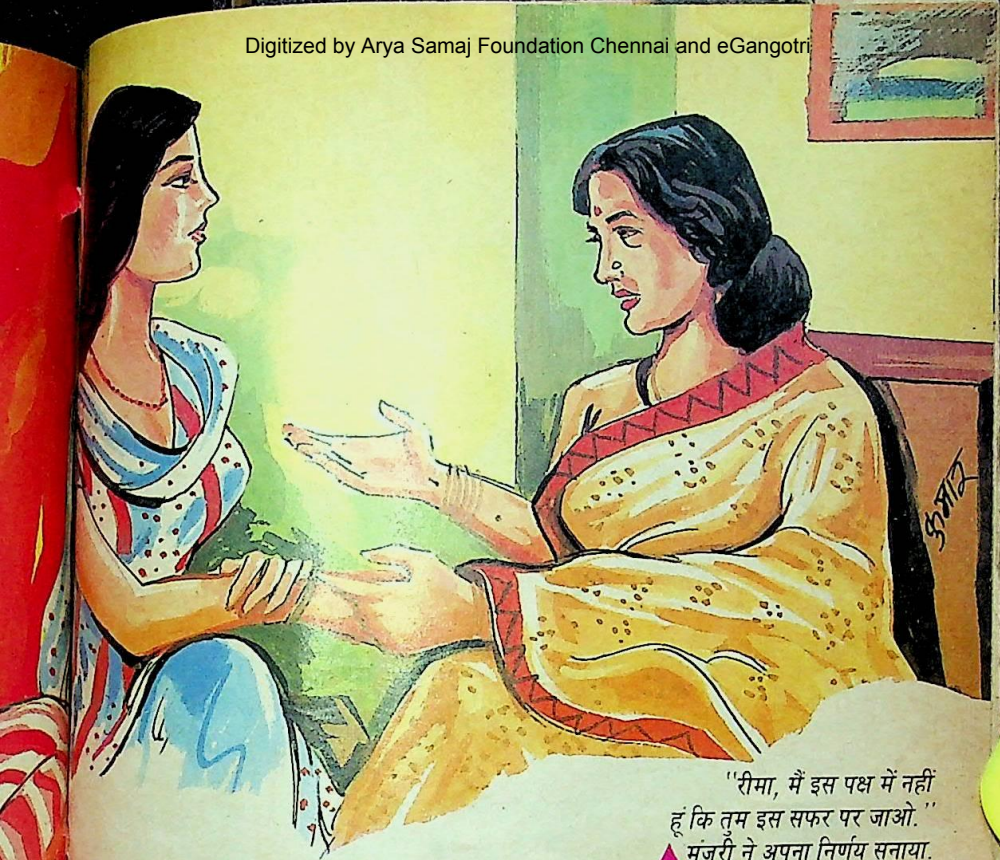

"रीमा, मैं इस पक्ष में नहीं हूं कि तुम इस सफर पर जाओ."
▲ मंजरी ने अपना निर्णय सुनाया.

लड़के, तीन लड़कियां—सारे के सारे सहपाठी. हिमपात देखने के लिए कार से मसूरी जाना चाहते हैं. एकदो दिन वहां किसी होटल में ठहरने की योजना भी बनी है."

कालिज से उमंगती हुई आई थी, रीमा. अपने कार्यक्रम पर मेरी स्वीकृति की मुहर लगवाना चाहती थी. मैं ने जब सुना कि वह क्या चाहती है, मैं कांप गई. मैं ने उसे यह कह कर टाल दिया कि मैं सोच कर और उस के पिता से विचारविमर्श करने के बाद बताऊंगी.

संयोगवश रीमा के पिता श्याम तीन दिन के लिए दिल्ली से बाहर गए हुए थे. मुझे सांस लेने और रीमा को हतोत्साहित करने की योजना बनाने के लिए पर्याप्त समय मिल गया था.

वैसे तो मुझे कोई विशेष आपत्ति नहीं थी. परंतु पिछले कुछ दिनों से मैं देख रही थी कि रीमा और पराग में खूब घुटने लगी है. दोनों घंटों फोन पर बातें करते रहते थे. क्या दोनों का एकसाथ मसूरी जाना एकदम ऐसा नहीं था, जैसे पेट्रोल तथा जलती तीली का मिलन.

तीसरे दिन शाम को रीमा ने मुझे घेर

अपनी बेटी रीमा का अपने प्रेमी के साथ विवाह पूर्व ही शिमला जाना मंजरी को खटक रहा था. उस ने एक कहानी सुना कर रीमा को सचेत करने की कोशिश की, लेकिन रीमा की प्रतिक्रिया जान कर तो उस के पैरों तले की जमीन ही खिसक गई.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिया. चाय पी कर हम दोनों ड्राइंगरूम में बैठी हुई श्याम के आगमन की प्रतीक्षा कर रही थीं. बंबई की उड़ान आ गई होगी और अगले एक आधे घंटे में वह घर पहुंच जाएंगे.

"हां, मां, तुम ने क्या सोचा?" रीमा ने पूछा.

"मैं ने कहा था न कि अपने पिताजी को आ लेने दो."

"मां, इस में पिताजी क्या करेंगे? फैसला तो आप को करना है. आप बताइए?"

"रीमा, ईमानदारी की बात तो यह है कि मैं इस पक्ष में नहीं हूं कि तुम इस सफर पर जाओ." मैं ने गंभीर स्वर में अपना निर्णय दे दिया.

रीमा के चेहरे पर उभरी उत्तेजना की धूप ढल गई. उस ने बुझे स्वर में पूछा, "पर क्यों? आप की अस्वीकृति के पीछे कोई आधार या कारण तो होगा?"

"हां, रीमा. सिर्फ कारण ही नहीं, मेरी सहेली की करुण कथा भी है इस के पीछे. सुनोगी तो खुद महसूस करोगी कि स्वच्छंद, स्वतंत्र तथा मूल्यहीन संस्कृति में पले नवयुवकों के साथ नवयुवतियां कभी भी सुरक्षित नहीं रह सकतीं. यानी तुम्हारा पराग के साथ मसूरी जाना कोई बुद्धिमत्तापूर्ण कदम नहीं होगा," मैं ने कहा और मेरा अंतर अतीत की गलियों में भटकने लगा.

"आप की सहेली की करुण कथा? मैं जरूर सुनना चाहूंगी, ताकि आप के निर्णय की पृष्ठभूमि को भलीभांति समझ सकूं." रीमा ने उत्सुकता दिखाई.

"उस का नाम रीता था. तुम्हारी ही उम्र की थी—सुंदर, सरल हृदया, संसार के छलकपटों से अनभिज्ञ. मेरी पक्की दोस्त थी. अंतरंग बातें तक मुझे बता देती थी. उस का एक लड़के से प्यार हो गया. यह उम्र ही ऐसी होती है, जब लड़केलड़कियां मिलते हैं तो दिल के तार झंकृत हो उठते हैं. और प्रेमोन्माद के कारण विवेक अपनी आंखें बंद कर लेता है. रास्ते गड्डमड्ड हो जाते हैं."

"क्या हुआ उन दोनों का?"

"दोनों का प्रेम व्यापार चलता रहा. लड़के ने रीता को आश्वासन दिया कि वह शिक्षा समाप्त होते ही उस से विवाह कर लेगा. वे दोनों मिलते रहे. लड़का रीता से शारीरिक स्वतंत्रता लेना चाहता था, पर लड़की भावनात्मक दृष्टि से परिपक्व थी. उस ने दृढ़तापूर्वक लड़के से कह दिया कि विवाहपूर्व यौन संबंध अनैतिक ही नहीं, नारी जीवन के लिए एक बड़ी जोखिम भरी अनुभूति भी है."

"लड़का मान गया?" रीमा ने उत्सुकतापूर्वक पूछा.

"हां, अकसर वह मान जाता था. पर एक शाम उस ने रीता को अपने घर बुलाया—अपने मांबाप से मिलवाने के लिए. वह गई. लड़के के मांबाप ने लड़की को देखा. वे खुश हुए. अगले दिन कालिज में लड़के ने रीता को चिरप्रतीक्षित खुशखबरी दे दी."

"लड़के के मांबाप को लड़की पसंद आ गई होगी और वे उस विवाह के लिए राजी हो गए होंगे?" रीमा ने अनुमान लगाया.

"हां, रीमा. रीता बहुत खुश हुई. उसे विश्वास हो गया अपने प्रेमी की भावनात्मक ईमानदारी में. दोनों के बीच प्रणय संबंध और प्रगाढ़ हो गए."

और फिर एक दिन रीता अपने अभिभावकों की अनुमति से अपने प्रेमी के साथ शिमला चली गई तीन दिन के लिए. वे दोनों अकेले नहीं थे. उन जैसे चार जोड़े थे—सारे के सारे सहपाठी. बस, वहीं गड़बड़ हो गई. दिल्ली से चलते समय लड़कियों से यह कहा गया था कि लड़कियां और लड़के अलगअलग कमरों में ठहरेंगे. पर शिमला पहुंच कर उन का सारा कार्यक्रम बदल गया."

"तुम्हारा मतलब है कि वे अलगअलग नहीं, एकसाथ ठहरे—एकदम नवविवाहितों की तरह, हनीमून मनाते हुए. ओह, कितना उत्तेजक..."

"रीमा, यही उत्तेजना, नवयुवकीय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

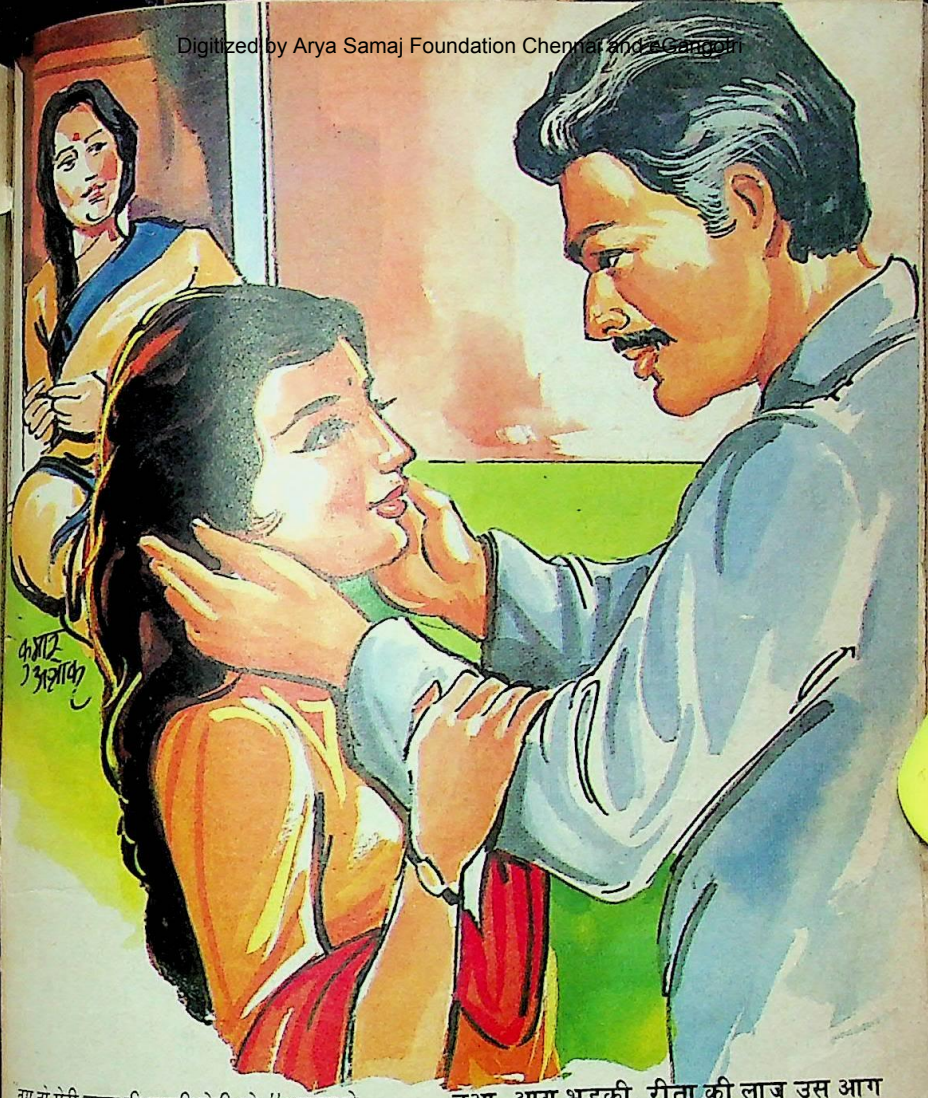

तुम तो मेरी बहुत ही प्यारी बेटी हो." श्याम ने रीमा का गाल थपथपाते हुए कहा.

उन्माद जीवन की भयावह गलती बन कर उन्हें जिंदगी भर के लिए पछताने को छोड़ देती है. मेरी सहेली भी इस उत्तेजना के वशीभूत अपने प्रेमी के साथ कमरे में ठहर गई. आग और घी एकसाथ हों तो क्या होगा?"

"आग भड़केगी," रीमा खुश हो कर बोली.

मैं बुझ गई. मैं समझ गई कि रीमा सचमुच अभी अपरिपक्व है. मैं ने अपनी सहेली की कहानी जारी रखी. "बस, यही हुआ. आग भड़की. रीता की लाज उस आग में जल कर भस्म हो गई. उसे विवाहपूर्व मधुमास मनाने के लिए प्रेमी ने बाध्य कर दिया."

"मां, माफ कीजिए. आप की सहेली बेवकूफ ही नहीं, कमजोर भी थी," अनायास रीमा गंभीर हो कर बोली.

"तुम ऐसा क्यों सोचती हो?"

"अगर लड़की न चाहे तो किसी लड़के की मजाल है कि वह उस के शरीर का स्पर्श भी कर ले."

"बेटी, शायद तुम नहीं जानतीं कि जब भी नारी किसी पुरुष से प्रेम करती है तो उस में पूर्णता और आत्मसमर्पण का भाव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निहित होता है. यही उस की कमजोरी है, साथ ही शक्ति भी. इसी का लाभ उठाया लड़के ने."

"कैसे?"

"रीता को डराया. कहा, अब तो उन की शादी होने ही वाली है. अगर उस ने उस का कहा नहीं माना तो, वह प्यार का संबंध खत्म कर देगा. रीता भयभीत हो गई."

"और उस ने आत्मसमर्पण कर दिया. मूर्ख," रीमा ने उपहास उड़ाते हुए कहा.

मैं विस्मित सी उसे बस देखती रह गई.

"मां, तुम्हें अपनी सहेली की कहानी के बारे में बड़े विस्तार से पता है?" रीमा मुसकराई.

"रीता मेरी गहरी सहेली थी. उसे मुझ पर अटूट विश्वास था. इसी लिए वह मुझे सब कुछ बता देती थी," मैं ने स्पष्टीकरण दिया.

"ठीक है, फिर क्या हुआ? कहीं आम बंबइया फिल्मों की तरह वह रीता नाम की लड़की मां तो नहीं बन गई?" रीमा ने बेहद मजाकिया लहजे में पूछा.

"यही हुआ, रीमा."

"मां, तो तुम्हारे जमाने में भी वही हुआ करता था जो अब हो रहा है. पर यह बताओ, लड़के ने रीता से शादी की? मेरे खयाल से तो नहीं की होगी."

"नहीं की."

"चच चच...मां. यह तो किसी बंबइया फिल्म की घिसीपिटी कहानी है. इस में कोई नवीनता नहीं है. क्या यही बताना चाहती थीं आप?"

"यह कहानी नहीं, रीता के जीवन की वास्तविकता है, रीमा. मैं इस की प्रत्यक्षदर्शी रही हूं. जरा सी असावधानी और विवेकहीनता ने रीता के जीवन में जो समस्याएं उत्पन्न कीं, तुम उस का अनुमान नहीं लगा सकतीं."

"कुंआरी मां ने आत्महत्या तो नहीं की?"

"नहीं, वह इतनी कमजोर भी नहीं

बच्चोंके मुखसे

एक बार जब मैं अपनी बहन के यहां छुट्टियां बिता कर चलने लगा तो बहन का छः वर्षीय बेटा भी मेरे साथ आने की जिद करने लगा.

जब यह बात मेरे जीजाजी को मालूम हुई तो उन्होंने कहा, "ठीक है, मैं दफ्तर से चपरासी भेज कर इस का भी आधा टिकट मंगा दूंगा."

आधा टिकट की बात सुन कर भानजे ने रोना शुरू कर दिया. पूछने पर बोला, "मैं तो पूरा टिकट ही लूंगा. आधे टिकट से तो मुझे आधे रास्ते में ही उतार देंगे."

—प्रमोद कुमार लोढ़ा

*

मेरा आठ वर्षीय भाई पढ़ाईलिखाई की अपेक्षा खेलकूद की तरफ अधिक ध्यान देता है.

एक दिन जब वह खेल कर लौटा तो मां गुस्से से बोलीं, "कमबख्त हमेशा खेलता ही रहता है. कभी किताब भी उठा लिया कर."

यह सुन कर उस ने अपना बस्ता उठाया और बोला, "आप किताब उठाने के लिए कहती हैं, मैं सारा बस्ता ही उठा लाया. बताइए क्या करूं?" उस के इतना कहते ही हम सब गुस्सा भूल कर खिलखिला कर हंस पड़े.

— अरुण अरोड़ा

*

मेरी एक सहेली की सगाई की बात चल रही थी. एक दिन वह हमारे घर आई. बातोंबातों में वह अपनी परेशानी बताती हुई बोली, "वैसे तो मैं काली हूं, लेकिन जब नहाती हूं, उस वक्त गोरी लगती हूं."

इतना सुनते ही मेरा 5 वर्षीय भाई तपाक से बोला, "फिर आप को नहाते समय क्यों न दिखाया जाए?"

इतना सुनते ही हम लोग जोर से हंस पड़े, लेकिन सहेली की शक्ल देखने लायक हो गई.

— प्रीति श्रीवास्तव, कीर्ति श्रीवास्तव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थी. वह मूर्ख अवश्य थी, पर कायर नहीं.
उस ने अपने प्रेमी से मां बनने की चर्चा की तो उस ने खलनायकी अंदाज में कह दिया, 'तुम ऐसी लड़की से कौन शादी करेगा. विवाह से पूर्व जो लड़की मां बन जाए, क्या उस पर भरोसा किया जा सकता है?'''

"मां, यह तो होना ही था. लड़के ने ठीक ही किया."

"यह तुम क्या कह रही हो, रीमा?" मैं स्तब्ध रह गई.

"मां, मैं ठीक कह रही हूं. इस में गलती सिर्फ लड़कों की नहीं, लड़कियों की भी है. वे क्यों ढह जाती हैं लड़कों के सामने? खैर, फिर क्या हुआ? आप की सहेली ने उस अनचाहे अभिशाप से मुक्ति पाई या नहीं?"

यह सुन मुझे पसीना आ गया, "उस जमाने में गर्भपात अवैध था. संभव नहीं हुआ मुक्ति पाना."

"फिर क्या हुआ? उस के मांबाप को पता चला?"

"हां, उन पर तो जैसे वज्रपात हो गया. वे गूंगे हो गए अपनी एकमात्र बेटी पर आई उस विपदा को देख कर. बाप ने तो उस की खूब पिटाई की. मां को ऐसा घुन लगा कि वह छः महीने में ही इस दुनिया को छोड़ गई."

"लड़कियों के मूर्खतापूर्ण कार्यकलापों से सब से ज्यादा तकलीफ तो मांबाप को ही होती है. वैसे, रीता के बाप ने उस बदमाश लड़के की गरदन नहीं पकड़ी?" रीमा ने सहानुभूति नहीं, आक्रोश का प्रदर्शन किया.

"रीमा के बाप उस लड़के से ही नहीं, उस के मांबाप से भी मिले. अनुनयविनय, धमकी, कानूनी काररवाई आदि सारे पैंतरे बदले. साम, दाम, दंड, भेद कोई हथियार सफल नहीं हुआ. उन लोगों ने तो रीता के ऊपर चरित्रहीनता का लेबल चिपका दिया. उन्होंने तो यहां तक कह दिया कि आप की बेटी किसी और का गुनाह हमारे बेटे के सिर मढ़ना चाहती है."

एक दीर्घ मौन छा गया मेरे रीमा के बीच. वह गहरे सोच में डूब गई. फिर उस ने

छवि

लालसा कहूं या लोभ कहूं,
आकर्षण तुम्हारा क्या है!
छवि तुम्हारी प्रिय है मुझे,
कटाक्ष तुम्हारा क्या है!

—देवदत्त शर्मा

गंभीर स्वर में पूछा, "मां, आप की सहेली ने मातृत्व स्वीकारा?"

"हां, बेटी. समाज की समस्त प्रताड़नाओं और आरोपों में उठी जलती सलाखों सी उंगलियों के बावजूद उस ने एक बच्ची को जन्म दिया."

"बेचारी," रीमा किसी सोच में खो गई थी. मैं कांपकांप गई रीमा की प्रतिक्रिया देख कर. वह धीरेधीरे बोली, "मां, तुम्हारी सहेली ने बड़ी हिम्मत का काम किया. एक अवैध शिशु को जन्म देना और फिर उसे इस क्रूर संसार में पालपोस कर बड़ा करना, सचमुच बड़े जीवट का काम है." रीमा ने सहानुभूति प्रकट की.

"रीमा, सच तो यह है कि जहां एक पुरुष ने उस के जीवन में अमावस की कालिमा भर दी थी, वहीं एक अन्य पुरुष ने उसे पूर्णिमा की चांदनी सा जगमगा दिया."

"सच? क्या सचमुच किसी बहादुर मर्द ने आप की सहेली की मझदार में हिचकोले खाती, जर्जर नौका को खेवैया बन कर किनारे लगा दिया?"

"हां, बेटी. उस के बाप का एक दूर का रिश्तेदार अपने व्यापार के सिलसिले में उस

(शेष पृष्ठ 183 पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

★★★★अति उत्तम ★★★ उत्तम ★★ मध्यम ★ साधारण ○ बेकार

○ खून बहा गंगा में

निर्मात्री: मीना जैन
कथा, फोटोग्राफी व निर्देशन: प्रवीण भट्ट
संगीत: आनंद मिलिंद
मुख्य कलाकार: अमृता सिंह, आदित्य पंचोली, भरत कपूर, अनु कपूर, सुरेश ओबराय.

महिला डाकुओं पर बरसों से हिंदी में फिल्में बन रही हैं और शायद ही कोई उल्लेखनीय रही हो. फिर भी इस विषय पर कम से कम आधा दर्जन फिल्मों के निर्माण की घोषणा कर दी गई. यह फिल्म भी उसी शृंखला की एक कड़ी है.

भरत कपूर का बेटा एवं उस के सईस की लड़की एकदूसरे से प्यार करते हैं. वह सईस व उस की पत्नी की हत्या कर देता है (आजकल सिर्फ हत्या से तो काम चलता नहीं है इसी लिए पत्नी के साथ बलात्कार भी दिखाया जाता है). भरत कपूर का बेटा बड़ा हो कर इंस्पेक्टर बनता है तथा सईस की बेटी समाज के जुल्मों के कारण डाकू बनती है. डाकू अमृतासिंह एक के बाद एक अपने दुश्मनों को खत्म करना शुरू कर देती है तथा इंस्पेक्टर आदित्य पंचोली उसे ऐसा करने से रोकता है. अंत में बहुत ही उलझाव भरी परिस्थितियों में दोनों मारे जाते हैं.

आज का दर्शक फिल्म देखने से पहले यह अच्छी तरह जानता है कि कहानी में तो कोई नयापन नहीं होगा. परंतु सिनेमा हाल में यह सोच कर घुस जाता है कि शायद घटनाओं में कोई नयापन हो. परंतु यह फिल्म हर तरह से निराश करती है.

फिल्म की कथा, निर्देशन तथा सिनेमाटोग्राफी प्रवीण भट्ट की है तथा इन तीनों ही विभागों में फिल्म एकदम साधारण है. कम से कम सिनेमाटोग्राफी तो और अच्छी हो सकती थी क्योंकि प्रवीण भट्ट फिल्म उद्योग के एक जानेमाने सिनेमाटोग्राफर हैं. (फिल्म 'सल्तनत' की खूबसूरत फोटोग्राफी प्रवीण भट्ट का ही कमाल थी).

दस्यु सुंदरी के रोल में अमृता सिंह

फिल्म 'खून बहा गंगा में' अमृता सिंह दस्यु सुंदरी की भूमिका में. ▼

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

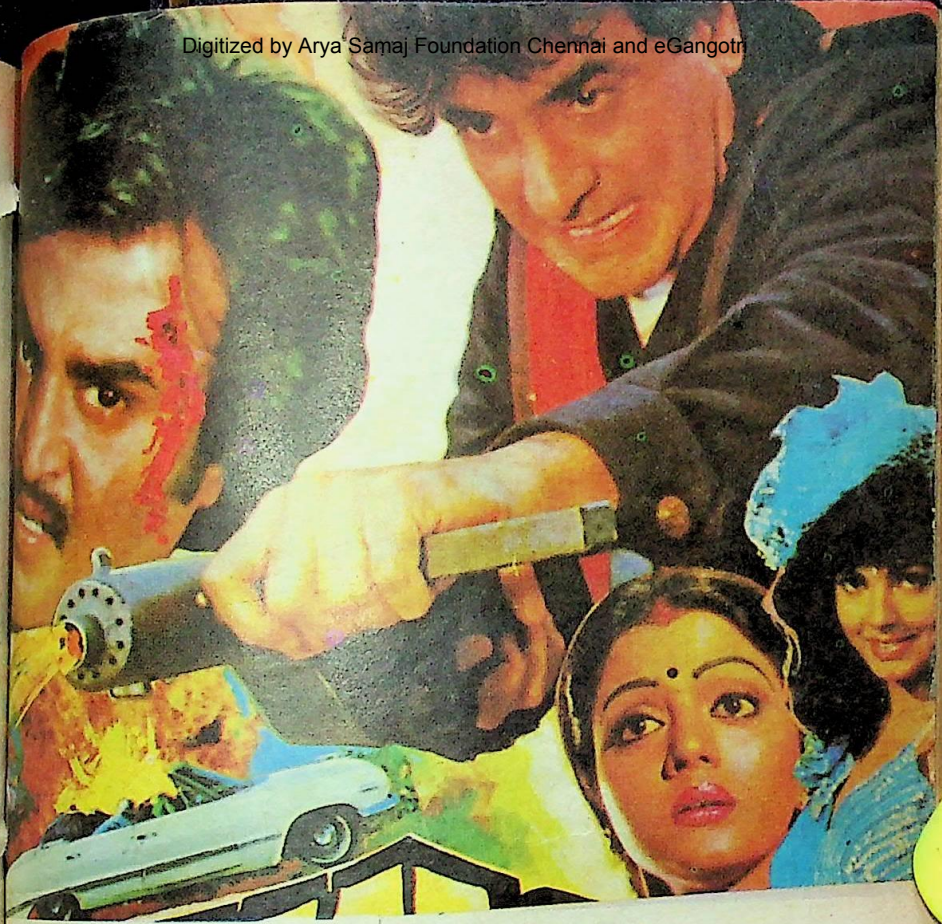

फिल्म 'तमाचा' में जितेंद्र, रजनीकांत, भानुप्रिया व किमी काटकर : अपराध और कानून की मुठभेड़. ▲

अपने गठे बदन व मर्दाना चेहरे के कारण काफी जंची है. आदित्य पंचोली 'खूबसूरती की हदों को तोड़ कर' खूबसूरत दिखता है और शायद यही कारण है कि वह हिंदी फिल्मों में नायक के रूप में सफल हो सकता.

संगीतकार आनंद व मिलिंद ने नए होने तथा प्रसिद्ध संगीतकार चित्रगुप्त के बेटे होने के बावजूद उन से की गई उम्मीदों को पूरा नहीं किया. हां, एक धुन 'खेल गया मेरा जीवन...' कुछ अच्छी बन पड़ी है.

कुल मिला कर फिल्म उन्हीं सड़ेगले फार्मूलों में सराबोर है. अतः इस फिल्म का भविष्य अंधकारमय दिखता है.

○ तमाचा

निर्माता : प्रसन्न कपूर
निर्देशक : रमेश आहूजा
संगीत : भप्पी लाहिड़ी
मुख्य कलाकार : जितेंद्र, रजनीकांत, भानुप्रिया, अमृता सिंह, किमी काटकर, सुमित सहगल, अनुपम खेर, असरानी और अरुणा ईरानी.

सभी जानेमाने फार्मूलों पर बनी फिल्म 'तमाचा' में जुर्म और कानून की ऐसी मुठभेड़ है, जिस में बारबार अपराधी कानून की गिरफ्त में आ जाता है, पर दूसरे ही पल उस गिरफ्त से निकल भी जाता है. यह आंखमिचौनी फिल्म में शुरू से ले कर अंत तक चलती रहती है. ऐसी फिल्मों का जो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंजाम होता है यही इस फिल्म का भी हुआ है यानी कि कानून जिंदाबाद और जुर्म मुर्दाबाद.

विकी (रजनीकांत) और राजू (जितेंद्र) बचपन के गहरे दोस्त हैं. वे नहीं जानते कि दोनों चचेरे भाई भी हैं. विकी स्मगलर बन जाता है तथा राजू सी.आई.डी. इंस्पेक्टर. विकी अब विक्रमप्रताप है तो राजू राजीव. राजीव को जब पता चलता है कि विक्रमप्रताप स्मगलर है तो वह उस के पीछे लग जाता है. विक्रमप्रताप राजीव का दुश्मन बन जाता है. अंततः काफी कोशिशों के बाद राजीव विक्रमप्रताप को गिरफ्तार कर लेता है. फर्ज और कानून की इस कहानी में साथसाथ नायक (जितेंद्र) और नायिका (भानुप्रिया) की प्रेम कहानी भी चलती है.

फिल्म की कहानी के.बी. पाठक ने लिखी है, जो बड़ी लचर है. मध्यांतर तक तो दोनों नायकों को बारबार आमनेसामने होते दिखाया गया है. ये दोनों नायक जिस तरह संवाद बोलते हैं, लगता है किसी नौटंकी में अभिनय कर रहे हों. मध्यांतर के बाद फिल्म में खूब मारपीट व गोलाबारी भर दी गई है.

इस फिल्म का निर्माण जितेंद्र के भाई प्रसन्न कपूर ने किया है. अपनी पूर्व प्रदर्शित कई फिल्मों की तरह वह इस फिल्म में कोई खास करिश्मा नहीं दिखा पाया है. वही ढर्रा, वही घटनाएं, वही एकएक फ्रेम. फिल्म का निर्देशन कमजोर है. फिल्म के गीत आनंद बख्शी ने लिखे हैं. इन गीतों के लोकप्रिय होने की संभावना कम ही है. फिल्म का छायांकन भी साधारण है.

अभिनय की दृष्टि से जितेंद्र प्रभावित नहीं कर पाया. रजनीकांत सर्कस में काम करने वालों की तरह हाथपैर हिलाता है. अमृता सिंह अपने चेहरे पर भाव लाने में सफल रही है, पर भानुप्रिया और किमी काटकर सजीसंवरी गुड़ियाएं लगती हैं. अन्य कलाकार साधारण हैं. हास्य कलाकार के नाम पर फिल्म में असरानी को रखा गया है, जो दर्शकों को हंसाने में नाकामयाब रहा है.

○ बिजली और तूफान

निर्माता: मोहन टी. गोहानी
निर्देशक: स.र. प्रताप
संगीत: अनवर उस्मान
मुख्य कलाकार: हेमंत बिरजे, श्रीप्रदा, सोनिका गिल, सदाशिव अमरापुरकर, रजा मुराद, टीना घई, सतीश कौल, कादर खान.

जिन निर्माताओं को कोई विषय नहीं मिलता या जो विषय तलाशने में अपना दिमाग खराब करना नहीं चाहते उन के लिए एक 'डाकू' विषय ही सरल होता है क्योंकि ऐसे विषय पर ज्यादा मेहनत करने की जरूरत नहीं पड़ती. जो उलटासीधा फिल्माना हो, बस फिल्माते जाइए.

फिल्म 'बिजली और तूफान' भी एक ऐसी बेसिरपैर की फिल्म है, जो न सिर्फ दर्शकों का वक्त बरबाद करती है बल्कि उन की रुचि को भी बिगाड़ती है.

मंगला (सोनिका गिल) और बिजली (श्रीप्रदा) दो बहनें हैं, जिन के पिता को लाला मौजीराम (सदाशिव अमरापुरकर) ने मरवा दिया था. मौजीराम अपने तीन साथियों के साथ मंगला से बलात्कार करता है. मंगला को मूर्च्छित अवस्था में डाकू उठा ले जाते हैं. मंगला तूफान डाकू बन कर चारों बलात्कारियों को खत्म कर देती है. उस की राह में बाधा बनती है उस की बहन बिजली, जो पुलिस इंस्पेक्टर है. अंत में मंगला आत्महत्या कर लेती है और अपने प्रेमी बादल (हेमंत बिरजे) का हाथ अपनी बहन के हाथ में दे देती है.

फिल्म की उपरोक्त कहानी खालिद ने लिखी है, जो पहले भी कई बार दोहराई जा चुकी है. फिल्म का निर्देशन बेकार, संपादन कमजोर, संवाद हलके स्तर के तथा छायांकन खराब है.

अभिनय की दृष्टि से सोनिका गिल के अभिनय में पहले से कुछ सुधार हुआ है. अन्य कलाकार बेकार हैं. फिल्म का गीतसंगीत पक्ष भी बेकार है.

अरिता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनी बिटिया को आलसी मत बनाइए

बेटे की अपेक्षा बेटी की मां बनना बहुत बड़ी जिम्मेदारी है क्योंकि बेटी को एक निश्चित समय बाद एक सर्वथा वातावरण में जाना पड़ता है. लेकिन बेटे साथ ऐसी कोई स्थिति नहीं होती है.

स्वभावतः मां का लगाव बेटी से होता है और बेटी भी बेटे की अपेक्षा मां से कुछ ज्यादा ही जुड़ी होती है. परिणामतः शुरू से ही कुछ परिस्थितियों में मां बेटी की कमियों की ओर चाह कर भी नहीं देख पाती है. इस तरह अनजाने में ही बेटी में कुछ ऐसी आदतें पड़ जाती हैं, जिन के परिणाम स्कूल न सही, किंतु बाद के जीवन में उन के लिए अवश्य ही कष्टदायी होते हैं.

अत्यधिक लाड़प्यार के कारण कई बार ऐसा भी होता है कि मां बेटी में ढेरों अच्छी आदतें तो डाल देती है, किंतु उस के आलसीपन को न तो देखसमझ ही पाती है और न ही इस दिशा में प्रयास करती है. जब तक बेटी अनब्याही रहती है, तब तक तो उस के इस आलसीपन के कारण कोई खास परेशानी पैदा नहीं होती है, किंतु विवाह होते ही यही कमी सब से भारी समस्या बन जाती है.

पूर्णिमा ने अपनी इकलौती बेटी कोमल

लेख • सुरभि पांडेय

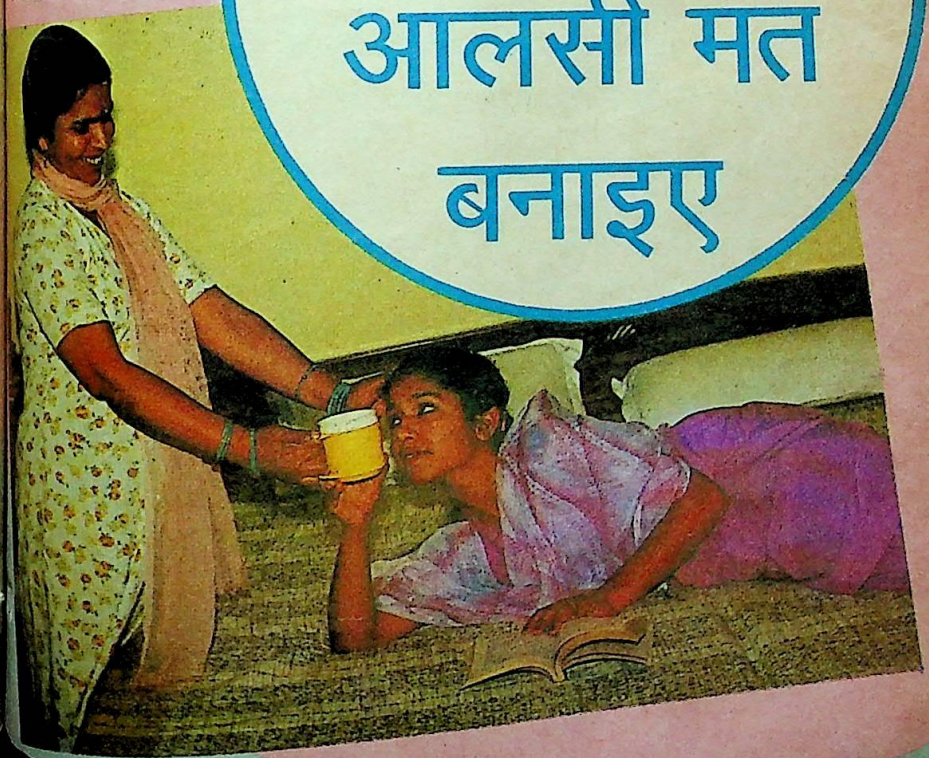

अपनी लाड़ली बेटी को बिस्तर पर ही चाय दे कर आप अनजाने ही उस का भावी जीवन कष्टमय बना रही हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को बातचीत का सलीका ही नहीं सिखाया, वरन जीवन की और भी व्यावहारिक बातें सिखाई हैं. इतनी सारी शिक्षा के बाद भी कोमल के साथ एक नकारात्मक पहलू जुड़ा हुआ है आलस्य का. लाड़ ही लाड़ में पूर्णिमा समझ ही नहीं सकी कि बेटी के व्यक्तित्व में कौन सी कमी रह गई है और इस कमी की जिम्मेदार वह स्वयं ही है.

कोमल के सारे छोटेबड़े काम उस के स्कूली जीवन से ही उस की मां पूर्णिमा स्वयं करती रही है. परिणामतः आज स्थिति यह है कि जराजरा से काम के लिए वह टालमटोल ही नहीं करती है, बल्कि दूसरों का मुंह भी जोहती है.

अभी चूंकि कोमल मां के घर में है, इसलिए उस के आलसीपन को ले कर बखेड़ा नहीं खड़ा होता है. परंतु यह स्थिति उस के विवाह के बाद एकदम बदल जाएगी और फिर शुरू होगा पारिवारिक टूटफूट का सिलसिला.

और स्मिता की मां भी हैं. उन्होंने भी अपनी बेटियों को अतिरिक्त लाड़दुलार के कारण बेहद सिर पर चढ़ा रखा है. माला तो काम की बिलकुल आदी न होने के कारण आलसी होने के साथसाथ स्वार्थी भी हो गई है. उसे यह भी समझ नहीं है कि यों सामान्यतः तो मां बेचारी सारे काम करती है, कम से कम बीमारी में तो उसे बख्श दिया जाए. अगर माला की मां कहीं दोएक दिनों के लिए बाहर चली जाए या बीमार पड़ जाए तो पूरी व्यवस्था ही बिगड़ जाती है घर की. घर या तो नौकरानी के भरोसे चलता है या माला की वृद्धा दादी की सहायता से. परंतु मजाल है, जो माला ऐसी स्थिति में घर का कामकाज तो दूर, घर की देखभाल ही कर ले.

जरा कल्पना कर के देखिए. माला का यही रंगढंग रहा तो आगे क्या हश्र होगा? बाद में जब ऐसे ही व्यवहार से तनाव पैदा होगा तो सारा दोष पति और ससुराल वालों पर मढ़ दिया जाएगा.

आलस्य दुनिया की सब से बड़ी बुराई है. आलसी व्यक्ति खुद अपना ही काम नहीं कर सकता तो दूसरों का काम क्या खाक करेगा, इसलिए अपनी बेटी को चाहे जितना लाड़दुलार कर लीजिए, लेकिन आलसी न बनने दीजिए.

22 वर्षीया मीता यों तो एम.ए. के बाद पीएच.डी. कर रही है पर आज भी अपनी मां पर उतनी ही निर्भर है जितनी 10 वर्ष पहले थी. मीता की मां शकुन अब भी उसे स्कूली बच्ची ही समझती है और उसी ढंग से उस की देखभाल करती हैं.

वैसे तो मीता सारे ही काम कर लेती है, परंतु उस में काम करने के प्रति वह स्वाभाविक ललक नहीं है. अतः अनजाने में टालने जैसी प्रवृत्ति बन गई है उस की. इधर उस की मां शकुन घरेलू काम ही नहीं निबटातीं, वरन मीता के व्यक्तिगत काम भी समेट देती हैं. इसलिए मीता इस दिशा में स्वयं कभी सोचती ही नहीं है.

पूर्णिमा और शकुन की ही तरह माला

स्मिता के साथ तो यही हुआ भी है. घर में संयुक्त परिवार होने के बावजूद मां, चाची ने उसे कभी कोई काम नहीं करने दिया. अतः अब विवाह के बाद दो लोगों का खाना बनाना भी उसे भारी पड़ जाता है. आलसी होने के कारण वह ज्यादातर काम टालने की कोशिश करती है. एक से दो बार चाय बनाना भी उस के लिए बड़ा कष्टदायी हो जाता है. इस से घर में आएदिन तनाव बना रहता है और दोनों ही पक्ष असंतुष्ट रहते हैं.

अजीब बात तो यह है कि अब भी स्मिता को समझानेबुझाने के बजाए उस की मां बेटी के ससुराल वालों को ही कोसती रहती है. अपनी बेटी के आलस्य को उस ने

अरिता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

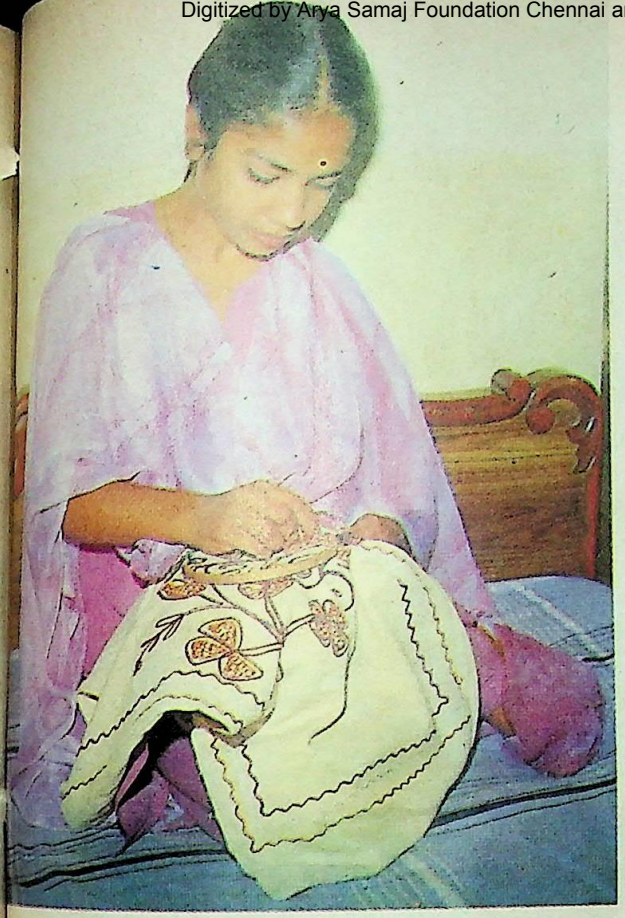

खाली समय में बेटी से कढ़ाईबुनाई अवश्य करवाएं जो आड़े वक्त काम आ सकती है.

प्यार मत करिए जो उस के भावी जीवन के लिए कष्टदायी बन जाए. दुनिया भर की सीख देने के साथसाथ बेटी को मेहनती भी बनाइए. आलसी लड़की आप के पास तो प्यारप्यार में आराम से जी लेगी, किंतु जैसे ही कोई बड़ी जिम्मेदारी उस के कंधों पर पड़ेगी तो वह घबरा जाएगी और बहुत संभव है कि वह गिरतेपड़ते भी अपना कर्तव्य पूरा न कर सके. तब तो आप की शिक्षा अधूरी रह जाएगी न.

अपने घर में तो खैर बढ़ावा दिया ही था, अब भी उसी गलती को दोहराए जा रही है यह कहकह कर कि "अरे, हमारी लड़की को तो अच्छा घर नहीं मिला है. बड़े ही नकचढ़े लोग हैं. इतना काम करती है बेचारी, लेकिन उन लोगों के मिजाज ही नहीं मिलते हैं. हमारे यहां तो उस बेचारी ने कभी हाथ से उठ कर पानी भी नहीं पिया था, अब देखो..."

अब अपने ही रोने में स्मिता की मां स्वयं ही अपनी लाड़ली बिटिया के दोष गिना जाती है. किंतु न तो सचाई स्वयं ही स्वीकारती है और न ही इस दिशा में बेटी को सचेत करती है ताकि वह एक व्यवस्थित व संतुष्ट जीवन जी सके.

एक हद तक तो बेटी का लाड़दुलार उचित भी है और आवश्यक भी. किंतु ऐसा

बेटी को जिम्मेदारी उठानेनिभाने में बड़ी ही मदद मिलेगी, अगर आप उसे मेहनती बनाएंगी, नहीं तो फिर रोतेझींकते तो सभी जी लेते हैं. हालांकि आज पढ़ाईलिखाई का अपना अलग ही महत्त्व है और उस के लिए पर्याप्त ध्यान देने के बाद छात्राओं को अन्य काम करने या सीखने के लिए कम ही समय मिलता है, पर मां होने के नाते आप बिटिया को इसी खाली समय में ऐसी उपयुक्त शिक्षा दीजिए ताकि आगे के जीवन को वह सुविधापूर्वक जी सके.

आप की मेहनती और सलीकेदार बेटी जब अपनी कार्यकुशलता से जीवन जिएगी तो विश्वास कीजिए, आप को मन ही मन धन्यवाद ही नहीं देगी बल्कि आप की दूरदर्शिता की आजीवन ऋणी भी रहेगी.●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

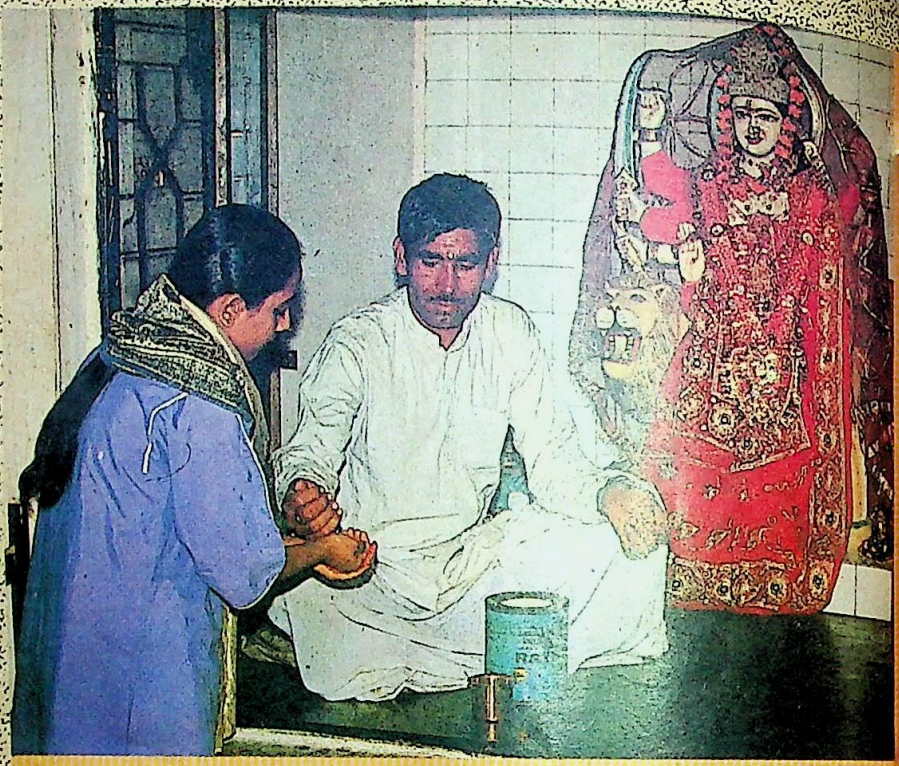

बेटी को अंधविश्वासों के जाल से मुक्त रखें

लेख • सुधा गोयल

पता नहीं, कब और कैसे दादीनानी की ढेरों वर्जनाओं के बीच जाने कितने अंधविश्वास पैर फैलाए मेरे मानस में विराज गए और मैं वही करती रही जो मेरी मां व दादीनानी करती थीं. मैं इन्हें संस्कार मानने लगी क्योंकि ऐसी ही शिक्षा मुझे दी गई थी. लेकिन जब घर की चारदीवारी से बाहर मैं ने झांक कर देखा तो मुझे लगा कि मैं इक्कीसवीं सदी की आहटें सुनती हुई भी चौदहवीं सदी की दहलीज पर ही खड़ी हूं.

शहरी भागमभाग और नौकरी के बीच मेरे ये अंधविश्वासपूर्ण संस्कार आड़े आने लगे. बृहस्पतिवार अथवा शनिवार की कभी आकस्मिक छुट्टी हो जाती और मैं चाहती कि सिर धो डालूं. लेकिन तभी मुझे याद आता आज सिर नहीं धोना चाहिए और मैं खुले बालों को फिर लपेट लेती.

मेरे पति का मन चावल खाने का होता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिनों का हिसाब लगाने बैठ जाती. एकादशी निकलती और कभी गी. विरासत में मिले मेरे तथाकथित र आड़े आ जाते और मैं पुलाव न ी. पति मन मार कर चुप रह जाते. न दफ्तर में अपने सहयोगियों के न में पुलाव देख कर मैं सोचा करती कि एकादशी की वर्जना इन के लिए नहीं

पितृपक्ष आने पर मैं नई सई भी न ती और न कोई नया काम ही करती. ार पितृपक्ष के दौरान मेरा हाथ दीवार ुकरा गया और सारी चूड़ियां टूट गईं ी हाथ रहना भी उचित नहीं, लेकिन ड़ियां भी नहीं पहन सकती थी.

किसी बुजुर्ग महिला ने समाधान ाया कि हाथ में लाल डोरा बांध लूं. मैं ने

करी से प्रसाद ग्रहण करती महिला : अबोध स्था में बेटियों को विवेकहीन पूजापाठ में न ें (बाएं). रात में झाड़ू लगाने से कोई कसान नहीं होता. बल्कि सफाई आवश्यक ै (नीचे).

जब शिक्षा का अभाव था तो लोग प्रकृति प्रकोप को दैवी प्रकोप मान कर डरा करते थे, और महिलाएं इस में सब से आगे थीं. आज भी उन ऊलजलूल अंधविश्वासों में स्वयं फंसे रहना व लड़की को भी इस तरह की सीख देना कतई उचित नहीं है, वरन भावी पीढ़ी के साथ अन्याय है.

यही किया. शाम को पतिदेव घर लौटे और हाथ में बंधा लाल डोरा देख कर बेहद नाराज ही न हुए बल्कि तभी बाजार से मेरे लिए नई चूड़ियां लाए और पहनने को मजबूर कर दिया. वह समझाने लगे कि यदि इन 15 दिनों तक तुम्हारी बात मान कर कोई काम न किया जाए तो लोग भूखों मर जाएं. उत्पादन रुक जाए.

किस दिन यात्रा करनी है और किस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिन नहीं, मैं पचास देख कर तय करती और अपनी इस नासमझी के कारण एक बार मुझे स्वयं साक्षात्कार के लिए देर होने पर नौकरी से हाथ धोना पड़ा. ऐसी एक नहीं, ढेरों बातें हैं जिन के कारण मुझे खासी परेशानी उठानी पड़ीं.

इस वैज्ञानिक युग में मैं ने पीछे झांक कर देखा तो लगा मैं एक ऐसे दोराहे पर खड़ी हूं, जहां से आगे बढ़ने के लिए एक नई दिशा तलाशनी होगी और मैं ने निश्चय कर लिया कि अपनी बेटी को वह रोशनी दूंगी, जिस के लिए मैं अभाव में एवं अंधकार में भटकती रही थी.

एक घटना मुझे याद आ रही है. एक बार मैं मायके गई थी. उस दिन सावन का सोमवार था. मैं ने पास बैठी पांच वर्षीया भतीजी की ओर अपने लिए रखी नाश्ते की प्लेट बढ़ा दी. वह बच्ची कभी ललचाई नजर से प्लेट को देखती और कभी याचनापूर्ण आंखों से भाभी की ओर देखने लगती.

"क्या बात है, पिंकी, ऐसे देख रही है? ले, यह इमरती खा ले," मैं प्लेट से इमरती उठा कर उसे देने लगी.

"न न बीबीजी, पिंकी को इमरती मत देना. इस का व्रत खंडित हो जाएगा. सुबह से व्रत रखा है."

"इतनी छोटी बच्ची और व्रत? भाभी, क्यों इसे इतना कष्ट दे रही हो?"

"लेकिन व्रत करने की आदत बचपन से न पड़ेगी तो तुम्हारी तरह हरदम भुक्खड़ ही रहेगी."

भाभी ने व्रत के महत्त्व के साथसाथ मुझ पर व्यंग्य भी कस दिया था.

"इस व्रत का कुछ अर्थ भी होगा?"

"अर्थ समझने लायक तो नहीं पढ़ी, पर अपनी अम्मां से पूछ लो, वह समझा देंगी."

न उन्होंने कभी अर्थ समझाया और न मुझे समझ आया. लेकिन साल में कम से कम 30-40 उपवास हो जाते. पूर्णमासी, एकादशी, गणेशचतुर्थी आदि.

ऐसे एक नहीं, अनेक अंधविश्वास व कुरीतियां हमारे यहां प्रचलित हैं. विशेषकर रजस्वला होने पर घर की स्त्री से अछूत की तरह व्यवहार किया जाता है. बेटियों को समझना चाहिए कि यह एक नैसर्गिक शारीरिक क्रिया है. इस में डरने या घबराने जैसी कोई बात नहीं है.

अकसर पढ़ेलिखे व्यक्ति भी भूतप्रेत जैसी बाधाओं में विश्वास कर गंडेतावीज पहनते हैं. माथे पर तिलकछापा लगाते हैं. रामनामी पहनते हैं. असाध्य बीमारी होने पर अच्छे डाक्टरों को दिखाने की जगह पंडितों व ओझाओं का सहारा लेते हैं, जिस से मरीज की स्थिति और भी गंभीर हो जाती है. मिर्च की धूनी देने से आंखनाक में जलन होने लगती है.

अंध भक्ति ठीक नहीं

अब प्रसाद को ही लीजिए. अकसर लड़कियां मंदिरों में बहुत ही श्रद्धापूर्वक प्रसाद ग्रहण करती हैं. एक बार ऐसे ही प्रसाद ग्रहण करने के बाद एक लड़की को खांसी रहने लगी. एक दूसरी को प्रसाद का हलवा खाने से उलटियां होने लगीं. बाद में पता चला कि प्रसाद में कुछ विषैली चीजें मिल गई थीं. यही बात चरणामृत के साथ भी है. लापरवाही के कारण मां का पल्लू पकड़ कर अंधभक्ति करना उचित नहीं है.

हमारे यहां शादी, मुंडन आदि अवसरों पर बहुत ही अंधविश्वासपूर्ण रीतिरिवाज किए जाते हैं. लड़के की शादी में मां का कुएं में पैर लटकाना, नजर उतारना, जलते दीपक पर हाथ रखना और सब से बड़ा अंधविश्वास है कन्यादान. बेटियों को समझना चाहिए कि वे मानव हैं. दासों का जमाना लद चुका है. जब पुत्रदान नहीं हो सकता तो कन्यादान क्यों?

ये भी अंधविश्वास बातें हैं कि लड़की तो पराया धन है, बेचारी गाय है किसी के खूंटे से बांध दो, इस प्रकार की उक्तियां हमारी बेटियों में हीनता की भावना भरती हैं. पुत्र होने से स्वर्ग और पुत्री से नरक मिलता है, यह महज नारी शोषण का

अमिता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

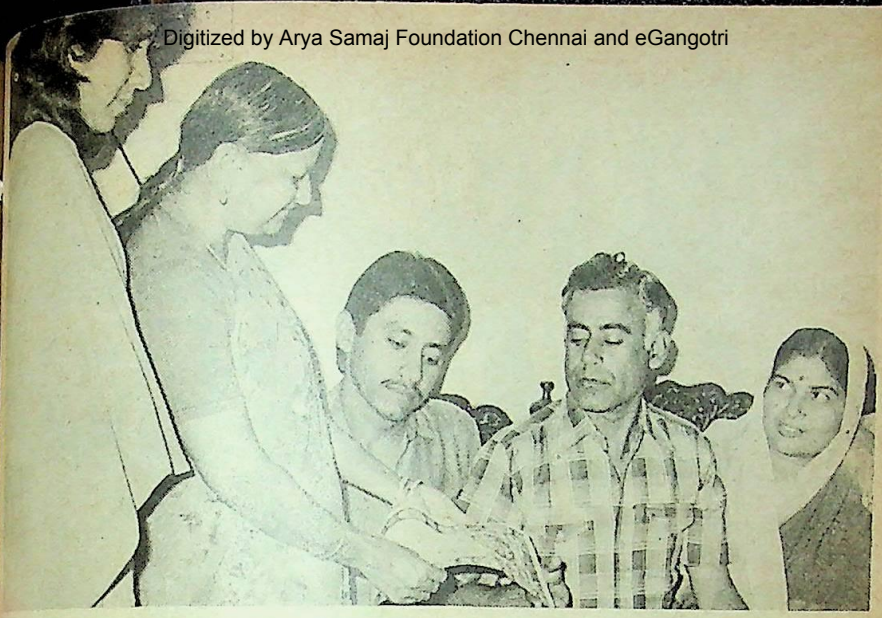

तरीका है. बेटियों को दुर्गा का रूप भी स्मरण होना चाहिए. दुर्गा की तथाकथित अष्ट भुजाएं नारी की आठगुणा शक्ति की परिचायक हैं.

हमारे परंपरागत त्योहार भी कम अंधविश्वासपूर्ण नहीं हैं. नागपंचमी के नाम पर नागों को दूध पिलाना, दशहरे पर नीलकंठ के दर्शन करना, घर की मुंडेर पर चील, गिद्ध अथवा उल्लू के बैठे जाने को अपशकुन मानना भी अंधविश्वास ही है.

इसी प्रकार, बिल्ली द्वारा रास्ता काटना, बाहर जाते समय अथवा किसी शुभ काम के समय छींक आना, आंख का फड़कना, चूड़ियां टूट जाना, कुत्ते और बिल्ली का रोना, उल्लू को देखना, शुभ कार्य के लिए जाते समय अर्थी देखना अपशकुन समझा जाता है. इसलिए गर्भवती महिलाओं पर ग्रहण की छाया पड़ना, छिपकली का गिरना अशुभ समझा जाता है.

रात्रि में खाट की रस्सी कसना लड़कियों के लिए बड़ा ही अशुभ है. कहा जाता है कि जो व्यक्ति रात को खाट की रस्सी कसता है, वह पुत्री का पिता बनता है. भाद्रपद की चतुर्थी का चांद देखना भी दोष माना जाता है. ऐसी बहुत सी बेबुनियाद बातें हैं, जिन का कोई अर्थ नहीं है. रात्रि के समय

95% शादी जन्म पत्रियां मिला कर ही की जाती हैं. फिर तलाक और बहू के जलनेजलाने की घटनाएं क्यों बढ़ रही हैं?

झाड़ू लगाना, शायद इस कारण मना किया गया है कि पहले तेज बिजली की रोशनी नहीं थी. इसलिए रात को सफाई ठीक प्रकार नहीं हो सकती थी. अतः ऐसे वर्जनापूर्ण अंधविश्वास आज कोई अर्थ नहीं रखते.

ये अंधविश्वास मन में शक और वहम पैदा कर मन की शक्ति का ह्रास करते हैं. हमारी बेटियों को समय के साथ आगे बढ़ना है तो इन कुरीतियों को छोड़ना ही पड़ेगा. समय की पहचान के लिए दिनों के नाम रखे गए. घंटे, मिनट व सेकंड बने. महीने और साल हुए. गणना करने के लिए गिनतियां. बनीं न कोई अंक बुरा है और न दिन व समय. केवल विचारशक्ति और आत्मविश्वास अपने पास होना चाहिए, तभी हमारी बेटियां एक सशक्त और परिपक्व समाज की संरचना कर सकेंगी. किसी भी घटना को सहज भाव से स्वीकारने की आदत डालनी चाहिए. इच्छाशक्ति और विचारशक्ति मिल कर आत्मविश्वास को बढ़ाती हैं. हमारी बेटियों में यह आत्मविश्वास ही मजबूत होना चाहिए, अंधविश्वास नहीं.●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किशोर उम्र की बेटी और मां का व्यवहार

लेख • मृदुला हालन

किशोर बेटी की परेशानियों को समझ कर, उसे सहजता से दूर करने की दिशा दिखाएं (ऊपर). अपनी बेटी के सहपाठियों को सहज रूप से घर आने दें (दाएं).

उर्मिला की किशोरी बेटी रेखा ने स्कूल से निकल कर अभी कालिज जाना प्रारंभ किया है. समस्या उसी की है. वह बहुत अंतर्मुखी है. गुमसुम रहती है. हर बात का जवाब सिर हिला कर देने, बहुत हुआ तो 'हां' और 'नहीं' में सीमित रहता है. घर में कोई आ जाए तो अपने कमरे के कोने में किताब में मुंह गड़ा कर बैठी रहेगी. समाज या परिवार में किसी समारोह का बुलावा हो तो जाने से कतराएगी. जिस उम्र में लड़कियां झरने के पानी सी भावनाओं में कलकल बहती हैं, चिड़ियों सी उड़तीफिरती हैं, सजनेसंवरने के शौक पर मां से तौबा कराती हैं, और तो और लड़कों के सामीप्य की दीवानी रहती हैं, उसी उमंग भरी उम्र में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...न की फूल सी बच्ची निष्प्राण मशीन सी ...ती डोलती है.

"बाजार नएनए डिजाइन की पोशाकों से अटे पड़े हैं. और लड़कियों को पहने देखती हूं तो मन करता है मेरी रेखा भी पहने, संवरे, हंसे, खिलखिलाए. अब मैं क्या करूं कि मेरी बेटी एक सामान्य लड़की की तरह जिए?"

उर्मिला की समस्या सिर्फ उस की ही समस्या नहीं है. आज के तेजी से बदलते समाज में अनेक माताओं की यही समस्या है. बचपन छोड़ कर किशोरावस्था में पांव रखती बेटी के प्रति मां अत्यधिक सतर्क हो जाती है. प्रायः उस के व्यवहार में संतुलन नहीं रहता. फलतः या तो बेटी पर पाबंदियां बहुत सख्त हो जाती हैं, जैसा उर्मिला ने किया था. इसी ऊहापोह में मां के लाड़प्यार की आड़ में लड़की बहुत स्वच्छंद हो जाती है, जिसे कहते हैं 'हाथ से निकल जाना.' व्यक्तित्व के स्वस्थ व स्वाभाविक विकास के लिए ये दोनों स्थितियां हानिकारक हैं.

इन परिस्थितियों से कैसे बचें या अपना व्यवहार संतुलित कैसे रखें? इस पर चर्चा करने से पहले 'उर्मिला' से कुछ प्रश्न करने बहुत जरूरी हैं.

"क्या यह आप की इकलौती बेटी है?"

"जी नहीं. इस से बड़ा एक बेटा है."

"दोनों की उम्र में कितना अंतर है?"

"चार साल."

"आप का बेटा भी अंतर्मुखी है?"

"एकदम उलटा है वह तो. उसे अच्छे से अच्छा खानापीना चाहिए. आए दिन नए कपड़ों की उस की मांग का अंत ही नहीं होता. और मिलनसार तो इतना है कि

किशोर बेटी के प्रति अपने व्यवहार में रूखापन लाने और पाबंदियां लगाने की बजाएं मैत्रीभाव से उस की समस्याएं सुलझा कर उस के विकास में सहायक बनें और आपसी विश्वास की कड़ी को मजबूत बनाएं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूछिए मत. घर में तो टिकता ही नहीं है. रात के बारहबारह बजे तक दोस्तों के साथ डोलता रहता है.''

''आप की बेटी रेखा बचपन से ही ऐसी अंतर्मुखी थी?''

''यही तो रोना है. बहुत ही मिलनसार लड़की थी यह तो. हर किसी से बात करने को तत्पर, नाचनेगाने को हर वक्त तैयार और मुसकराहट तो चौबीसों घंटे इस के होंठों पर खेलती थी.''

उर्मिला की समस्या की जड़ सामने थी, पर शायद वह देख नहीं पा रही थी.

जरूरत से ज्यादा पाबंदी

हुआ यह कि जब रेखा 'बड़ी' होने लगी तो मां ने उस पर अपनी निगरानी बहुत कड़ी कर दी. रेखा सहेलियों के घर, सहेलियों के साथ जाने की जिद करती थी तो उस पर पूरी तरह पाबंदी लगा दी गई. सजनेसंवरने का शौक अंगड़ाई लेने लगा तो अंगड़ाई को वहीं का वहीं जड़ कर दिया गया. 'इस से बात मत करो, यह मत करो. यहां मत जाओ. वहां मत जाओ. यह क्या, जो भी घर आता है, तुम मां के साथ सिर जोड़ कर बैठ जाती हो. इन्हीं बातों में तुम्हारा मन लगता है. पढ़ाई की तरफ तो ध्यान ही नहीं रहता.'

सहेली का जन्म दिन हो या सहेली के भाईबहन की शादी, रेखा को या तो जाने की इजाजत ही नहीं या डंके की चोट, बस एक घंटे तक लौट आना है, भले ही जन्मदिन का केक भी न कटा हो. कह दिया सो कह दिया.

विपरीत इस के, रेखा के भाई अनिल को पूरी तरह छूट थी. ''देखिए, वह तो लड़का है... अब, उसे तो घर में बांध कर नहीं रखा जा सकता.''

अनिल देरसवेर घर आए तो भी ठीक, लड़कियों से हंसेबोले, उन के साथ सैरसपाटा करे, फिल्म जाए तो भी कोई बात नहीं. वह तो लड़का है.

रेखा की समस्या को इन दो व्यवहारों ने बहुत गहरा और गंभीर बना दिया. एक तो मां की अवांछित कड़ाई, दूसरे भाई को खुली छूट. प्रारंभ में वह जिद करती थी, ''मां, तुम भाई को तो कुछ नहीं कहतीं. वह भी तो आधीआधी रात को आता है. मुझे आठ बजे तक भी कहीं नहीं ठहरने देती हो.''

''बहुत जबान चलने लगी है तेरी. अब तू भाई से बराबरी करने लगी है. वह तो लड़का है, उस का क्या?''

मानव जीवन और जीवन से जुड़ी भावनात्मक व मनोवैज्ञानिक उठापटक बहुत हैरतअंगेज है. जीवन का प्रत्येक पल एक चुनौती है क्योंकि हम नहीं जानते अगले पल क्या होने वाला है. प्रत्येक पल किसी न किसी समस्या या प्रश्न को ले कर उपस्थित होता है. प्रत्येक क्षण कुछ सीखने का दुर्लभ अवसर सामने रखता है. अर्थात यह जीवन एक ऐसी रहस्यमयी पुस्तक है जो हमारे सामने खुली पड़ी है. जरा सी कोशिश करते ही, इसी पुस्तक में से, दूसरों के अनुभवों के आधार पर अनेक रहस्यों को हम जान सकते हैं. पर इनसान की त्रासदी यही है कि सामने पड़ी खुली पुस्तक को नकार कर वह अज्ञान के अंधेरे में भटकता रहता है.

जिंदगी उम्र के विभिन्न मोड़ों से गुजरती है. इनसान उन्हीं मोड़ों को बहुत कठिन और दुर्गम बना लेता है, अपनी ही नासमझी से. मांबेटी की उम्र के मोड़ों का चक्कर भी ऐसा ही घुमावदार है. हर मां बचपन और किशोरावस्था को पार कर के ही यौवन के इस गरिमामय पद 'मां' तक पहुंचती है. पर ज्यादातर माताएं अपनी ही बेटियों को उस भोगी हुई उम्र की बारीकियों को नहीं समझा पातीं या खुद नहीं समझ पातीं. किशोर होती बेटी और मां का रिश्ता सासबहू के उस रिश्ते की तरह है जहां हर बहू यह सोचती है कि मेरी सास भी तो एक दिन बहू थी, फिर वह मेरी पीड़ाओं, आकांक्षाओं और उमंगों को क्यों नहीं समझ पाती?

यों तो हर समाज में, हर युग में बीते 'कल', 'आज' और आने वाले 'कल' में फासला रहा है, पर आज के समाज में यह फासला कुछ ज्यादा ही बढ़ गया है. कारण

सरिता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह है कि आधुनिकीकरण की प्रक्रिया में परिवर्तनों एवं उतार-चढ़ावों की रिपोर्ट देती रहती है. फिर भला यह कैसे हो जाता है कि मां और उस की कोखजाई बेटी के बीच मीलों लंबे फासले फैल जाते हैं? इन फासलों का अत्यधिक दुर्गम गढ़ है बेटी की किशोरावस्था.

होता यह है कि लड़की के बचपन से इस उम्र पर पहुंचने तक मां लड़की से सिर्फ एक बच्चे की तरह व्यवहार करती है. बच्चों की आजादी, बच्चों का सा खिलवाड़, वही सजधज, वही फरमाइशें, सब कुछ एक ढर्रे पर चलता रहता है. लड़की को उस के 'लड़की' होने का एहसास अलग से नहीं कराया जाता. (यह बात और है कि उठतेबैठते उसे सास के घर जाना होगा, दहेज देना होगा जैसी बातें सुनने को मिलती रहती हैं) पर उम्र के हिसाब से लड़की के शरीर में होने वाले परिवर्तनों की भनक पाते ही मां हड़बड़ा जाती है. अधिकांश माताएं

इस आपसी समझ के वातावरण में, किशोर बेटी को दुनिया की ऊंचनीय मित्रवत समझाना आसान हो जाएगा.

तेजी से 'आज' बहुत तेज चाल से चल रहा है. बीता कल उतनी तेजी से चल नहीं रहा है. और शायद इसी लिए वह उस आने वाले 'कल' को पूरी तरह समझ नहीं पाता.

'आज' के समाज में लड़की को पुरानी सदियों से उठा कर एकबारगी ही नईनई संभावनाओं की ऊंचाई पर बिठा दिया है. इन संभावनाओं की प्राप्ति के लिए कतई जरूरी नहीं कि लड़की अपने संस्कार व संस्कृति और समाज से बगावत करे. 'आज' की जरूरत के लायक उन संस्कारों को अपने में समेट कर पूर्ण आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ा जा सकता है. और ठीक इसी बिंदु से जुड़ी हुई है उर्मिला की समस्या, आज की किशोर होती बेटी की मां की समस्या.

मां और बेटी का रिश्ता जितना आत्मीय और स्नेहपूर्ण हो सकता है, उतना कोई और रिश्ता नहीं. बेटी मां के व्यक्तित्व, इच्छाओं, आकांक्षाओं का सजीव रूप है. उस की एकएक धड़कन, उस की हर सांस मां को बेटी के व्यक्तित्व में होने वाले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

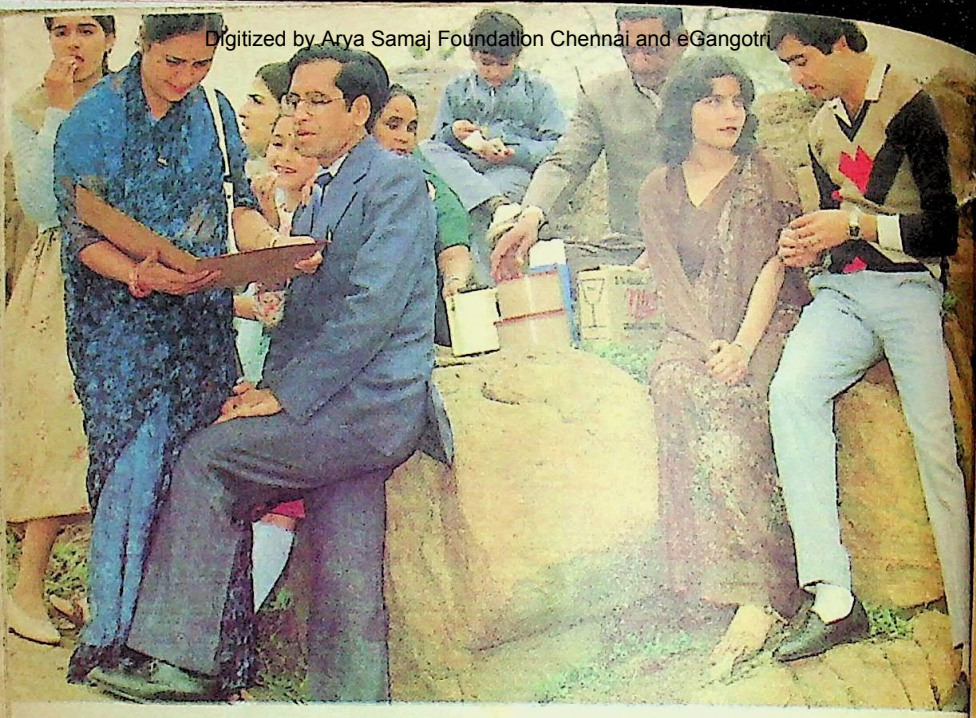

परिवार के सदस्यों के साथ मनाई गई पिकनिक, सैरसपाटा आप की बेटी के आत्मविश्वास को बढ़ाता ही है.▲

इसी अवधारणा को पाल लेती हैं कि इस कच्ची उम्र में लड़की पर बंधन लगाया जाना जरूरी है. और देखते ही देखते अत्यंत स्नेहमयी मां से वह एक 'तानाशाह' में बदल जाती है.

बेटी इस अचानक आए परिवर्तन से, मां के नए व्यवहार से बौखला जाती है, "मैं ने ऐसा क्या कर दिया जो मां इतनी कठोर हो गई?"

सब से पहली जरूरत है कि मां अपनी बेटी के साथ मित्रता का भाव बचपन से ही रखे.ये रिश्ते अचानक नहीं बनाए जाते. आज का बच्चा (लड़का हो या लड़की) एक भयानक मानसिक व्याधि से ग्रस्त है, मातापिता के सामीप्य की कमी.

आज के मातापिता हर बात को धन से तोल रहे हैं. बच्चा चाहता है, मां उस के साथ खेले. उसे गोद में ले कर कहानी सुनाए. लाड़ कर के खिलाएपिलाए. उस के स्कूल की नन्हीनन्हीं उपलब्धियों को उस के साथ जिए. पर उतना समय कहां है? "लो ये पैसे, खिलौने खरीद लेना, किताबें, कापियां ले लेना. चाकलेट, आइसक्रीम खा लेना." आदि आपसी समझ का रिश्ता बनने ही नहीं पाता. सब से जरूरी है कि बच्चे की उम्र के अनुसार उस की जिज्ञासाओं और जरूरतों को समझें.

इस आपसी समझ के वातावरण में किशोर होती बेटी को, दुनिया की ऊंचनीच मित्रवत समझाना सहज हो जाएगा. मां को चाहिए कि बेटी को एक मार्गनिर्देश दे कर एक तरफ हट जाए. हर समय कोंचते रहने से विपरीत प्रभाव पड़ता है. मां अनुभवी है. बेटी की हिचकिचाहट, परेशानी बखूबी समझ सकती है. ठीक वक्त पर आ कर उसे सही दिशा दिखा दे. देखिए, मांबेटी के बीच एक विश्वास भरा रिश्ता कितनी आसानी से बन जाता है.

इस के साथ ही आत्मविश्वास का होना भी बहुत जरूरी है. लड़की के मन में आत्मविश्वास जगाएं. आज के युग में लड़की घर में कैद हो कर जीवन नहीं

(शेष पृष्ठ 179 पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अध्ययनरत बेटियों को घरेलू कार्यों की ओर प्रेरित करें

लेख • डा. अरुणा शास्त्री

एक जमाना था जब लड़कियों को होश संभालते ही घर के कामों की शिक्षा दी जाने लगती थी, ताकि भविष्य में उन्हें अपनी घरगृहस्थी की बागडोर संभालने में किसी तरह की कठिनाई का सामना न करना पड़े. मुझे अच्छी तरह याद है कि जब मैं बहुत छोटी थी, तभी मेरी दादी ने मुझे रोटी बेलना सिखा दिया था. वह रोज घर की रोटियां बना लेने के बाद चारपांच रोटियों का आटा परात में बचा लेती थीं और बड़े प्यार से मुझे बेलन थमा कर रोटी गोल बेलना, उसे सेंकना और उस पर घी लगाना सिखाती थीं. जब शुरूशुरू में रोटियां बनतीं या जल जातीं तो वह बहुत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्नेहपूर्वक कहतीं, "कोई बात नहीं, तेरे हाथ की ये रोटियां भी मुझे बड़ी मीठी लगेंगी." जब कुछ ही दिनों में मुझे अच्छी तरह रोटियां बनानी आ गईं तो मुझ में इतना उत्साह आ गया कि मन करता था कि सारे घर की रोटियां मैं ही बनाऊं और सब को गरमगरम खिलाती जाऊं.

उस समय संयुक्त परिवारों का जमाना था. मां के बजाए दादी ही मुझे सब घरेलू काम सिखाने में रुचि लेती थीं. बहुत कम उम्र में ही उन्होंने धीरेधीरे मुझे घर का सारा काम सिखा दिया—सब्जी काटना, छौंकना, सीनापिरोना आदि. यहां तक कि जब घर में गेहूं, चावल के बोरे आते तो वह हम सभी लड़कियों को साथ में बिनने के लिए बिठा लेतीं और छानना, फटकना सभी सिखाती जातीं. जब गरमियों में आम का अचार या मुरब्बा डाला जाता तब भी वह हमें सामने बैठा कर मसाले का अनुपात और अचार डालने की सारी विधि बाकायदा समझाती जाती थीं.

जब घर में पापड़ बनते थे, तब भी हमें उन के साथ बैठ कर पापड़ बनाना जरूरी था. भले ही हम पूरा पापड़ नहीं बेल सकते थे तो भी अपनी सामर्थ्य के अनुसार छोटेछोटे पापड़ बेल कर उन्हें दे देते थे जिसे वह बाद में पूरी गोलाई में बेल लेती थीं. जब वह चक्की पीसने बैठती थीं तो भी हमें पुकार कर कहतीं, "जरा चक्की को हाथ तो लगा दे. अभी दोनों मिल कर पीसेंगी तो झट पिस जाएगी."

पानी भरने के लिए भी हमें छोटीछोटी बालटियां ला कर दे दी गई थीं. वह कुएं से पानी खींच कर देती जाती थीं, जिसे हम घर में ले जा कर बड़े मटकों में उड़ेल देती थीं. कहने का मतलब यही है कि इतने हलकेफुलके ढंग से हमें हर घरेलू काम करने की आदत डाली गई कि वह काम हमें बोझ भी नहीं लगा और बड़े मजे से हम घर का सारा काम सीखती चली गईं. पढ़ाई से हट कर यह काम करना खेल सा ही तो लगता था.

पहले के जमाने में प्रायः घरों में लड़कियों को मांओं और दादियों द्वारा बचपन से ही घरेलू कामों की शिक्षा दी जाती थी, ताकि बड़े होने पर ससुराल जा कर काम करना उन्हें नहीं अखरे. जो लड़कियां स्वभाव से कुछ कामचोर होती थीं, उन्हें मांदादी के द्वारा बातबात पर उलाहने भी सुनने पड़ते थे— "क्या ससुराल जा कर हमारी नाक कटाएगी कि मां ने यही सिखाया है?" ससुराल जा कर बेटी नाक न कटा दे, यही उस समय उन की प्रतिष्ठा का अहम मुद्दा रहता था. आज स्थिति व परिवेश बदल गए हैं. संयुक्त परिवार बिखरते जा रहे हैं. जिन घरों में दादादादी हैं वे लड़कियों को कुछ सिखाने की कोशिश अवश्य करते हैं किंतु पीढ़ियों के अंतर के कारण आज की पीढ़ी इसे सहज रूप में नहीं लेती. वह यही सोचती है कि दादी हमें यह सब करने के लिए क्यों कहती है, जब कि अभी तो हमारी खेलनेखाने, पढ़नेलिखने की उम्र है.

आधुनिक मांएं भी अपेक्षाकृत उदार दृष्टिकोण की हैं. वैसे भी अब परिवार सिमटते जा रहे हैं. अपने छोटे परिवार को ले कर वे यही सोचती हैं कि 'हमारी ये एकदो बेटियां ही तो हैं. हम ने तो अपनी पूरी जिंदगी चूल्हेचक्की में झोंक दी, पर इन

माना महिलाएं हर क्षेत्र में पुरुषों का मुकाबिला कर रही हैं, लेकिन प्रकृति प्रदत्त गुणों के कारण घर संभालने की जिम्मेवारी से वे मुक्त नहीं हो सकतीं. इसलिए पढ़ाई के साथसाथ बेटियों को, स्वावलंबन के खयाल से ही सही, घरेलू कामकाज सिखाना निहायत ही आवश्यक है.

अमिता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किशोर बेटी को सलाद या सब्जी काटने के लिए अवश्य प्रोत्साहित करें. ▲

लड़कियों पर अभी से यह बोझ क्यों डाला जाए. शादी होने के बाद जिंदगी भर इन्हें यही सब करना है. अभी हमारे राज में बेतलेखाते बचपना गुजार दे यही अच्छा है.' यही सोच कर माएं उन्हें घर के कामों की ओर प्रेरित नहीं करती हैं. सुबह उन के स्कूल कालिज के लिए टिफिन व नाश्ता बनाने से ले कर स्कूलकालिज से आने के बाद उन के चायदूध, नाश्ते की व्यवस्था, रात के भोजन आदि का काम मांएं या भाभियां ही संभाल लेती हैं और स्कूलकालिज की पढ़ाई, ढेर सारे गृहकार्य के बोझ तले थक कर चकराई हुई लड़कियां स्वयं भी न घर के कामों में हाथ बंटाने का उत्साह दिखलाती हैं और न मांएं उन्हें स्वयं प्रेरित करती हैं.

और आज जिस तरह लड़कियां डाक्टरी, इंजीनियरिंग, तकनीकी, वाणिज्य, कला, अभिनय, खेलकूद जैसे सभी क्षेत्रों में लड़कों से टक्कर ले रही हैं, बल्कि उन से आगे ही हैं. उसे देखते हुए, उन की मांएं उन्हें पढ़ाई में व्यवधान न हो, यह सोच कर उन्हें किसी काम के लिए नहीं कहती हैं. यह भी सच है कि आजकल घरेलू कामों के लिए नौकरों का सहयोग, तथा गैस सिलेंडर, मिक्सर, ग्राइंडर, फ्रिज, कपड़ा धुलाई मशीन जैसे विद्युत उपकरणों ने जो मध्यमवर्गीय परिवारों की पहुंच के भीतर भी हैं, आज की गृहिणी के काम के बोझ को काफी हद तक हलका कर दिया है. ऐसे में वे अपने छोटे से परिवार के कामों को निबटाने के लिए बेटी के सहयोग की अपेक्षा कम ही करती हैं.

यदि मां स्वयं कामकाजी है तो उस की रुचि घर के कामों में कम होगी, फिर वह अपनी बेटी को सिखाएगी क्या? आज जमाना बदल गया है. पापड़, बड़ी, अचार, मसाले, शरबत सभी चीजें बाजार में बनीबनाई मिल जाती हैं. 'इंस्टेंट फूड' के रूप में कई तरह के पैकेट बंद खाद्य पदार्थ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपलब्ध हैं. इस के अतिरिक्त, जो इच्छा हुई होटल में जा कर खा लिया जाता है. मतलब यही कि रहनसहन के बदलते तौरतरीकों, घरेलू कामों में वैज्ञानिक उपकरणों का सहयोग, बाहरी जीवन में महिलाओं की व्यस्तता आदि कारणों से आज की माताओं का झुकाव अपनी बेटियों को घरेलू कामों के लिए प्रेरित करने की ओर नहीं है और यही उन की सब से बड़ी गलती है.

फलस्वरूप आज स्थिति यह है कि स्कूलकालिज की लड़कियों को बड़े गर्व से यह कहते हुए हम सुन सकते हैं कि "मैं तो सिर्फ चाय का पानी ही उबाल सकती हूं."

"जानती हो, मुझे तो आलू उबालना आता है."

"मुझे तो आटा गूंधना जरा भी अच्छा नहीं लगता. छिः आटे में हाथ कैसे सन जाते हैं."

"मैं तो अपना खाना भी अपने आप नहीं परोस सकती. मां ही उठ कर खाना परोस कर खिलाती है.

ऐसी लड़कियां जब शादी के बाद ससुराल जाती हैं और जब उन के सिर पर घरगृहस्थी और खाना बनाने का बोझ पड़ता है तो उन की क्या हालत होती होगी, इस की कल्पना आप आसानी से कर सकते हैं. ससुराल वाले आशा तो यही करते हैं कि भले ही वह कुशल गृहिणी न हो तो भी घर का कामकाज तो अच्छी तरह संभाल ले और घर के कामों से जी न चुराए. यदि ससुराल वाले समझदार हुए तो वे बड़े धैयपूर्वक उस की गलतियों को नजरअंदाज करते हुए घरेलू कामों के प्रति उस का उत्साह बढ़ाते रहते हैं. अन्यथा लड़की को अपने मायके वालों को ले कर अनेक उलाहने सुनने पड़ते हैं, "क्या यही सिखाया है तुम्हें तुम्हारी अपनी मां ने."

ऐसी लड़कियों पर निकम्मी, कामचोर और अकुशल होने का ठप्पा भी लग जाता है. इस तरह आए दिन होने वाली ये छोटीछोटी बातें सासबहू, ननदभाभी, देवरानीजेठानी आदि के मधुर संबंधों में जहर घोल देती हैं.

घरेलू कामकाज को ले कर हुए ये आपसी मनमुटाव धीरेधीरे गंभीर रूप भी धारण कर लेते हैं. यदि मां ने अपनी बेटी को प्यार से ये घरेलू कामकाज इन की उपयोगिता बतलाते हुए सिखाए होते तो क्या बेटी को यह दिन देखना पड़ता?

लड़कियों का शिक्षा प्राप्त करना और पढ़ाईलिखाई के लिए उन्हें पर्याप्त समय मिलना जितना महत्त्वपूर्ण है, उतना ही महत्त्वपूर्ण है उन का घर के कामकाज में रुचि लेना. इस के लिए मां को चाहिए कि वह अपनी बेटी की रुचि उस की उम्र के अनुरूप ही, घर के छोटेबड़े कामों में अवश्य जागृत कराए और जो कुछ उसे सिखाए, बड़े धैर्यपूर्वक व प्रेम से सिखाए. यदि पहली बार उस से कोई चीज बिगड़ भी जाए तो नाराज हो कर उसे हतोत्साहित न करे. उस गलती को कैसे सुधारा जाए, यह उसे प्यार से बताए. घरेलू कामों के प्रति उस की रुचि देखते हुए उस की प्रशंसा करे. प्रशंसा से उस का उत्साह बढ़ेगा और नएनए काम सीखने में उस की ललक बढ़ती जाएगी.

स्वावलंबी होना आवश्यक

घरेलू काम सीखना कठिन नहीं है. लड़कियों में वैसे भी स्वभावतः इन कामों को करने की प्रवृत्ति होती है. बस, उन्हें इस ओर प्रेरित करने वाला कोई चाहिए. और यह काम मां ही कर सकती है. 10-11 साल की बेटी पर घर के कामों का बोझ न डालना चाहे, तब भी मां को चाहिए कि उस में स्वावलंबी बनने की आदत तो डाले ही ताकि वह अपने काम खुद कर सके, जैसे कि अपने कपड़े स्वयं तैयार करना, अपने जूतों पर पालिश करना, अपनी पढ़ने की मेज, किताबें व कपड़ों की अलमारी सहेज कर रखना, मां नाश्ता तैयार कर दे तो अपना टिफिन बाक्स स्वयं तैयार कर लेना, अपना खाना स्वयं परोस लेना आदि. ऐसे कई काम हैं जो छोटी उम्र से ही लड़कियां सीख सकती हैं. घर पर जब सब मिल कर खाना खाएं उस समय थालियां लगाने, पानी के गिलास व जग भर

शरिता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रखने, मेहमानों के आने पर उन्हें नाश्ता देने या खाना परोसने में मां की मदद करने में भी इस उम्र की बेटियों को दिलचस्पी जागृत की जा सकती है. सलाद काट कर उसे बड़े करीने से सजाने के काम को भी इस उम्र की लड़कियां बड़े शौक से करती हैं.

कुछ बड़ी उम्र की लड़कियों को कॉफी बनाने, नाश्ता बनाने, सब्जी काटने, आटा गूंधने, उन की रुचि के व्यंजन, जैसे आइसक्रीम, मिल्क शेक, जूस, कॉफी आदि बनाने, मिक्सी में कुछ पीसने आदि के हलकेफुलके काम सौंपे जा सकते हैं. जिस तरह के कामों को आप की बेटी रुचि से व कुशलतापूर्वक करती है वे काम उस से जरूर कराने चाहिए. प्रेस किया, धुले कपड़े समेट कर तह कर के रखना, बिस्तर बिछाना व समेटना, कमरों की झाड़पोंछ करना, उन्हें व्यवस्थित करना, गमले भरना जैसे छोटेमोटे काम बेटियों को स्वयं करने की आदत डालनी चाहिए. यदि सिलाईकढ़ाई, बुनाई, आइसक्रीम, या अन्य व्यंजन बनाने में आप की बेटी की रुचि हो तो इस के लिए उपयुक्त सामग्री उन्हें उपलब्ध करा कर उन का उत्साह बढ़ाना चाहिए.

कई बार बेटियां तो घर के कामों में रुचि लेना चाहती हैं, पर उन की मांएं स्वयं ही उन्हें ये काम नहीं करने देतीं—"तुम तो अपनी पढ़ाई करो..." पर यह न भूलिए कि नीरस से दिखने वाले ये घरेलू कामकाज पढ़ाई की एकरसता में बोझिल आप की बेटी के मन को हलका करने में बहुत मदद करते हैं. उस के बाद वह दोगुने उत्साह से पढ़ाई में लग सकती है और पढ़ाई की तरफ ज्यादा ध्यान दे सकती है.

आप अपनी बिटिया को घर के काम सौंप कर देखिए तो सही कि वह कितने शौक से कितनी जल्दी हर काम सीखती है. बचपन से ही हर कदम पर अपनी मां से धीरेधीरे सीखी हुई ये सारी बातें आप की बिटिया के भावी जीवन को संवारने में उस की बहुत मदद करेंगी. ●

ये पत्नियां

एक बार मेरी भाभीजी बस से घर लौट रही थीं. एक अजनबी उन के साथ बैठ गया और स्वयं को उन का परिचित बता कर बातचीत करने लगा. मेरी भाभी के डाक्टर होने के बारे में जब वह बोलने लगा तो भाभी ने पूछा, "लगता है, आप ने उन से कई बार इलाज कराया है?"

अजनबी के "हां" कहने पर वह बोलीं, "लेकिन वह तो जानवरों के डाक्टर हैं."

अब उस की सूरत देखने लायक थी.

—हेमेंद्र कुमार चंचल

*

मेरे एक मित्र की जल्दबाजी की आदत से उस की पत्नी बेहद परेशान रहती थी.

एक दिन दोनों को कहीं बाहर जाना था. आदत के अनुसार मित्र झटपट तैयार हो कर स्कूटर पर जा बैठा और पत्नी को बुलाने के लिए लगातार हार्न बजाने लगा.

पत्नी अभी स्नानघर में ही थी. मेरे मित्र को सबक सिखाने के लिए वह भीगे कपड़ों में ही स्कूटर पर जा बैठी और बोली, "चलिए."

मित्र ने जब पीछे पलट कर देखा तो वह झेंप कर रह गया. उस के बाद उस की जल्दबाजी की आदत हमेशा के लिए छूट गई.

—रजनीश त्रिवेदी

*

एक बार मैं अपने एक रिश्तेदार के यहां शादी में गई थी. वहां दूल्हा सांवले रंग का था लेकिन दुलहन खूब गोरीचिट्टी थी.

दूल्हे के साथ आए उस के मित्र आसपास की लड़कियों पर छींटाकशी कर रहे थे. दुलहन की एक विवाहिता सहेली काफी देर से यह तमाशा देख रही थी. विदा के समय जब सब रोने लगे तो वह जोरजोर से रोते हुए गाने लगी, "मोरी मैदा सी लोई को कागा उड़ा के ले गया रे..."

ये बोल सुन कर आसपास के लोग जोरजोर से हंस पड़े.

—शुभ्रा गर्ग ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सच्ची मित्रता

कहानी • सुषमा माथुर

"मां, आज सुकांत मुझे सिनेमा ले जाने के लिए कह रहा है, चली जाऊं?"

"कौनकौन जा रहा है?" दिव्या ने मां दीप्ति से पूछा तो दीप्ति ने जानना चाहा.

दिव्या कुछ झेंप सी गई और बोली, "और तो कोई नहीं है."

"दिव्या, तुम जानती हो कि तुम्हारी स्वतंत्रता में मैं कभी बाधा नहीं बनना चाहती. अगर हमेशा की तरह तुम कई लड़केलड़कियों के साथ जा रही होतीं तो मैं कभी आपत्ति नहीं करती, पर तुम अकेली सुकांत के साथ जाओ, यह मैं पसंद नहीं करूंगी. जबकि मैं सुकांत से कभी मिली तक नहीं हूं. न ही जानती कि वह किस स्वभाव का लड़का है."

"मां, सुकांत बहुत अच्छा लड़का है. चौथे वर्ष का विद्यार्थी है. कक्षा में हमेशा प्रथम रहता है. खेलों और वादविवाद प्रतियोगिताओं में भी सदा पुरस्कार प्राप्त करता है. सारे कालिज का हीरो माना जाता है.

"उस से मेरा परिचय वादविवाद प्रतियोगिता के माध्यम से ही हुआ था. तब मुझे दूसरा पुरस्कार मिला था."

"यह तो तू कई बार बता चुकी है, पर तू उसे कभी घर क्यों नहीं लाई? अलंकार, अभिषेक, मेघना आदि जितने भी तेरे मित्र हैं, मैं सब से मिल चुकी हूं. उन के परिवारों को भी भलीभांति जान पाई हूं. सुकांत ही यहां कभी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिव्या के साथ सुकांत मित्रता से अधिक कुछ और की आशा रखने लगा तो दिव्या कोई भी निर्णय न कर पाने से दुविधा में पड़ गई. ऐसे में दीप्ति ने दिव्या की सच्ची. मित्र बन कर उस की उलझन को दूर कर दिया कि वह हैरान रह गई.

नहीं आया. क्यों न आज शाम तू उसे यहीं बुला ले. हम लोगों के साथ चाय पिएगा, गपशप करेगा. हमें भी अच्छा लगेगा.''

''ठीक है. मैं भी चाहती हूं कि आप और पिताजी उस से मिलें.''

''मेरी समझ में नहीं आता कि तुम दोनों दिव्या के मित्र सुकांत को ले कर उत्तेजित क्यों हो रहे हो,'' पति और पुत्र को समझाते हुए दीप्ति ने कहा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तुम्हें नहीं जाना था तो मुझे पहले ही क्यों नहीं बता दिया. मेरा भी इतना समय खराब किया," सुकांत दिव्या से गुस्से से बोला.

और दिव्या गुनगुनाती हुई कालिज चली गई. दीप्ति ने उसे सुकांत के साथ नहीं जाने दिया. इस का उसे जरा भी दुख या शिकायत नहीं थी. वह जानती थी कि अगर मां ने उसे मना किया है तो उस का कोई कारण भी होगा.

जब से उसे ने किशोरावस्था में कदम रखा था, दीप्ति मां से अधिक उस की सखी बन गई थी. अब तक मां के समक्ष अपनी कोई भी समस्या रखने में उसे कभी संकोच का अनुभव नहीं हुआ था.

दीप्ति भी पूरी सहानुभूति से उस की समस्याएं और दृष्टिकोण समझने का प्रयत्न करती थी. दीप्ति का यह आग्रह भी था कि वह अपने सब मित्रों से उसे मिलाए, दिव्या को ऐसा करना नहीं खलता था क्योंकि उस से चार वर्ष बड़े भाई अभिनव से भी यही आशा रखी जाती थी.

दिव्या को मालूम था कि मातापिता उस के विवेक पर पूर्ण विश्वास रखते हैं. वह कहीं भी आएजाए वे कभी उस से ऐसे प्रश्न नहीं पूछते थे, जिन में उसे अपने प्रति संदेह की गंध आए. यही कारण था, वह भी अपना दायित्व समझती थी कि वह उन के विश्वास को बनाए रखे.

दिव्या कालिज से आई तो दीप्ति ने दरवाजा खोला. व्यंजनों की सुगंध ने उस का स्वागत किया. हंस कर बोली, "क्या बात है, घर के बाहर तक पकवानों की महक आ रही है, मां?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुमन सौरभ

मई-
1988

क्या आप को अपना कैरियर संवारना है?

लड़कपन की उम्र अभिलाषाओं को सजा कर
की होती है. आप अपनी आशाओं, अभिलाषाओं'
को महसूस कीजिए, किशोर सपने देखते है और पालक उनके
भविष्य के लिए उत्सुक होते हैं. इस सुखद चिंता में हम
भी उनके साथ हैं. इसीलिए अब प्रस्तुत है.

कैरियर गाइड विशेषांक

लिए, नीचे दिए गए विषयों में से आप किस में
अपना उज्ज्वल भविष्य सुरक्षित देख रहे है.

- अध्यापन
- चिकित्सा
- खेल
- इंजीनियरिंग
- पत्रकारिता/लेखन
- प्रशासन नौकरियां
- कम्प्यूटर सर्विसेज
- कला व मासमीडिया क्षेत्र
- व्यापार
- उद्योग
- चार्टर्ड अकाउंटेंसी
- वकालत
- ठेकेदारी
- विमान चालक
- सिनेमा कलाकार
- फोटोग्राफर
- होटल प्रबंधक
- सैनिक व असैनिक राज सेवाएं.

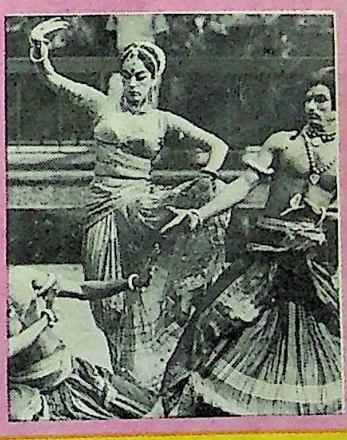

उपरोक्त व्यवसायों के संबंध में कहां, क्या, कैसे इत्यादि मुद्दों पर तथ्यप्रद जानकारी व देश विदेश के ट्रेनिंग, शिक्षा एवं भर्ती संस्थाओं का ब्योरा. साथ ही अनेक प्रेरक मार्गबोधक कहानियां, कविताएं व सभी स्तंभ.

अंक अतिशीघ्र आपके हाथों में होगा. ● अपनी प्रति के लिए आज ही विक्रेता से कह दें.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

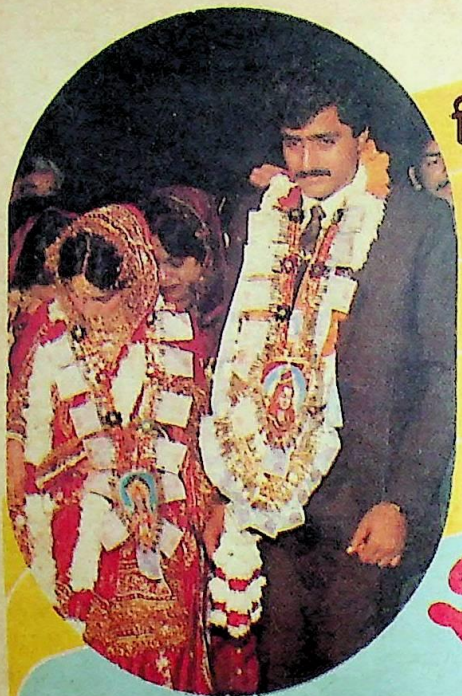

विवाह: खुशियों, नई अनुभूतियों, नई उमंग ही नहीं, सामंजस्यों के नए प्रश्न भी... और इन प्रश्नों के उत्तरों के लिए प्रस्तुत है

सरिता

अप्रैल (द्वितीय) 1988

विवाह और परिवार विशेषांक

विवाह से पहले और विवाह के बाद वर व वधू के परिवारों में होने वाले परिवर्तनों से उत्पन्न नई समस्याओं के समाधान तथा विवाह के बंधन मजबूत करने के सुझाव सरिता की चिरपरिचित व्यवहारिकता और सहज स्पष्टवादिता के साथ

सरिता का एक और अनूठा विशेषांक

प्रमुख आकर्षण:

- विवाह का बंधन मजबूत करने का नुसखा.
- विवाह में एकत्र हुए मेहमानों की देखभाल.
- विवाहशादी में क्या दें, क्या लें.
- ससुरालों की तुलना : झगड़े की जड़.
- लड़की की ससुराल में मायके वालों का हस्तक्षेप.
- लड़की की शादी करने के बाद ध्यान दें.
- लड़के का विवाह आसान नहीं.
- टूटते सपनों का जिम्मेदार कौन?

यही नहीं, पूरे परिवार को एकसूत्र में पिराने वाली 9 कहानियां, कई अन्य लेख, कविताएं, फिल्म समीक्षाएं, स्तंभ आदि.

अपने परिवार के सुख के लिए अपनी प्रति खरीदना न भूलें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"सुकांत आ रहा है न. सोचा, कुछ बना दूं."

दिव्या का रंग फीका पड़ गया.

"मां, वह नहीं आ पाएगा. उसे पढ़ाई करनी है. अगले सप्ताह ही उस की परीक्षा है."

दीप्ति चुप हो रही. उस ने यह नहीं कहा कि सिनेमा जाने से तो और भी अधिक समय नष्ट होता. वह अपनी बेटी दिव्या को और अधिक शर्मिंदा कर के लाजवाब नहीं करना चाहती थी.

दिव्या ने जब सुकांत को बताया था कि वह उस के साथ सिनेमा देखने नहीं जा सकेगी तो वह एकदम उत्तेजित हो उठा था. उस ने दिव्या के इनकार को अपनी अवहेलना समझा था.

बड़ी कठिनाई से दिव्या उसे शांत कर पाई थी. घर आने के लिए उस ने साफ इनकार कर दिया था. उस का कहना था कि सिनेमा वह मन बहलाने और पढ़ाई का तनाव दूर करने जा रहा था. दिव्या के घर जाने पर औपचारिकता की बनावटी बातें करने से तो उस का मानसिक तनाव बढ़ेगा ही.

कई दिनों तक दिव्या समझाती रही. आखिर उस ने सुकांत से कहा, "मेरे मातापिता बड़े खुले विचारों वाले हैं. मेरे सब मित्र घर निस्संकोच आतेजाते हैं. तुम्हें भी किसी प्रकार की औपचारिकता निभाने की आवश्यकता नहीं है."

सुकांत कुछ सोच कर दिव्या के घर आने को सहमत हो गया था.

सुकांत के घर आने पर दिव्या की मां दीप्ति, पिता पुनीत और भाई अभिनव सब ही प्रसन्न हुए थे. पर उन के काफी प्रयत्नों के बाद भी सुकांत खुल नहीं सका था.

दिव्या को लग रहा था कि कहीं कुछ कमी है. अपने घरेलू वातावरण की पृष्ठभूमि में वह सुकांत को जिस रूप में देखना चाहती थी, उसे नहीं देख पा रही थी.

उस दिन के बाद कई बार सुकांत दिव्या के घर आया था. हर बार दिव्या के मन की अव्यक्त बेचैनी कुछ अधिक ही बढ़ जाती थी.

लहरें

तेरे नयनों की चंचलता
याद दिलाती है लहरें,
मेरी उदासी और
बढ़ाती हैं लहरें,
लगता है रुक जाती है
दिल की धड़कन,
मेरे मायूसी पर
मुसकराती हैं लहरें.

—अनुपमा साहनी

कालिज में जब लड़केलड़कियां सुकांत की प्रशंसा करते थे और वह अपनी महत्ता के एहसास से गर्व से मुसकराता रहता था तो दिव्या को बड़ा अच्छा लगता था. पर उस के घर में सुकांत का हर क्षण अपनी प्रशंसा सुनने के लिए लालायित रहना, दिव्या को कुछ अटपटा सा लगता था.

सुकांत स्वयं अपनी प्रशंसा करता रहे, इस में उसे आपत्ति नहीं थी. किंतु वह इस में कई बार अतिशयोक्ति से काम लेता था. तब दिव्या को बड़ी ही लज्जा का सामना करना पड़ता था. जब सुकांत अभिनव को यह एहसास दिलाने का प्रयत्न करता कि वह उस से अधिक योग्य और तीव्र बुद्धि है तो दिव्या का किशोर हृदय यह नहीं मानना चाहता था कि सुकांत दंभी और छिछोरा है.

दिव्या से कभी किसी ने कोई शिकायत नहीं की थी. फिर भी जब सुकांत का घर में आएदिन आगमन होने लगा और उस की आत्मप्रशंसा बुरी तरह अखरने लगी तो पुनीत और अभिनव अपना धैर्य खो बैठे. एक दिन सुकांत के बाहर जाते ही अभिनव भड़क उठा, "मां, आप सुकांत को इतना प्रोत्साहन क्यों देती हैं? क्या आप को वह दिव्या के लिए पसंद आ गया है?"

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तू भूल कर रहा है, अभि. सुकांत मेरी नहीं दिव्या की पसंद है. और मैं उसे प्रोत्साहन नहीं देती, केवल शिष्टाचार निभाती हूं."

"अगर दिव्या को कोई गलत लड़का पसंद आ गया है तो मां होने के नाते क्या तुम्हारा यह कर्तव्य नहीं है कि तुम उसे सही दिशा दिखाओ." पुनीत ने उलाहना दिया.

"मेरी समझ में नहीं आ रहा है कि तुम दोनों सुकांत को ले कर इतने उत्तेजित क्यों हो रहे हो. अलंकार और अभिषेक भी इस घर में आतेजाते हैं. अभिनव के मित्र भी हर समय आतेजाते रहते हैं. मैं सब का स्वागतसत्कार करती हूं. दिव्या भी सब से हंसतीबोलती है. तब तो तुम दोनों बापबेटे कोई आपत्ति नहीं करते."

"सुकांत और इन सब में अंतर है, यह तो तुम भी मानोगी," पुनीत ने अपना मंतव्य समझाने का प्रयत्न करते हुए कहा, "सोचो, दीप्ति, हमारी दिव्या अभी पूरे सत्रह वर्ष की भी नहीं हुई है. अभी पढ़ाई करने में उसे चारपांच वर्ष लगेंगे. तुम हो कि अभी से उस के मित्र को इस प्रकार महत्त्व देने लगी हो."

"कैसी बातें करते हैं आप? यह क्यों नहीं समझने का प्रयत्न करते कि इस समय दिव्या सुकांत की योग्यता से बहुत अधिक प्रभावित है. उस के व्यक्तित्व के कारण उस की ओर आकृष्ट भी है, यदि हम ने संयम से काम लिया तो वह खुद धीरेधीरे इस आकर्षण के मोहजाल से निकल आएगी.

"यदि हम ने कोई भी गलत कदम उठाया तो बात बिगड़ भी सकती है. अगर दिव्या को लगा कि सुकांत को इस घर में उचित मान नहीं मिल रहा है तो वह उस से घर से बाहर मिलेगी. अभी कम से कम हमारी आंखों के सामने रहती है और बहुत सी गलत बातों से बची रहती है.

"मैं नहीं चाहती कि आप या अभिनव अपने व्यवहार से दिव्या को यह एहसास कराएं कि आप सुकांत को उस के अन्य मित्रों से कुछ अलग समझते हैं. याद रखिए जिद में दिव्या कुछ भी कर सकती है."

दिव्या को भी अनुमान था कि उस के परिवार वाले सुकांत को इतना पसंद नहीं करते, जितना वह उन से अपेक्षा रखती थी. इस के लिए वह उन्हें दोष भी नहीं देती थी क्योंकि वह खुद अपनी भावनाओं को नहीं समझ पाती थी.

सुकांत अब बातोंबातों में कभीकभार संकेत भी देने लगा था कि वह उस से मित्रता से अधिक कुछ और आशा रखता है. उस का वह पूर्वाग्रह समझ कर दिव्या अकसर घबरा उठती थी. उस की द्विविधा और अधिक बढ़ जाती थी.

उस दिन दिव्या के कालिज में पार्टी थी. सुकांत उस पार्टी को बहुत महत्त्व दे रहा था क्योंकि इस में उस के सब प्राध्यापकों को भी आना था. दोतीन प्राध्यापकों को वह विशेष रूप से प्रभावित करना चाहता था क्योंकि वही उसे स्वर्ण पदक दिए जाने की सिफारिश करने वाले थे. उस ने दिव्या को ताकीद कर दी थी कि वह उसे लेने आएगा, वह उसे तैयार मिले.

जाने क्यों दिव्या को लग रहा था कि पार्टी उस के जीवन में अवश्य महत्त्वपूर्ण सिद्ध होगी. इसी लिए वह बहुत यत्न से तैयार हुई थी. समय से पूर्व ही वह सुकांत की प्रतीक्षा में ड्राइंगरूम में आ बैठी थी.

तभी पड़ोस की तरंगिनी बदहवास सी दौड़ी आई, "दीदी, दीदी, चाची कहां हैं? मां को न जाने क्या हो गया है? वह बेहोश हो गई हैं. आप चलिए न मेरे साथ."

दिव्या पार्टी को भूल कर तरंगिनी के साथ हो ली. दीप्ति ने भी सुन लिया था. वह भी जाने को उतारू हो गई. अभी वह घर का दरवाजा बंद कर ही रही थी कि सुकांत आ गया. उसे देखते ही दीप्ति बोली, "अच्छा हुआ सुकांत तुम आ गए. हमारी पड़ोसिन रमाजी अचानक बेहोश हो गई हैं. चलो, तुम भी वहां चलो, तुम्हारी बड़ी सहायता रहेगी."

सुकांत का मुख रोष से लाल हो गया. वह रूखे स्वर में कहने लगा, "दिव्या, कहां है? आप जानती तो हैं कि हमारा ठीक समय पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डॉक्टर में पहुंचना कितना आवश्यक है."

दीप्ति उस के स्वर की कड़वाहट से जरा भी विचलित न हुई. बोली, "दिव्या वहीं है. वह बिलकुल तैयार है. अगर रमाजी की तबीयत अधिक खराब नहीं हुई तो तुम उसे वहीं से ले जाना."

सुकांत के लिए अब जाने के अलावा कोई चारा नहीं था.

वहां पहुंच कर सुकांत और अधिक नाराज हो गया था. रमाजी को संभालने में दिव्या की साड़ी सिलवटों से भरती जा रही थी. बारबार होंठ चबाने के कारण लिपस्टिक फैल गई थी. दिव्या इस ओर से बेखबर थी. सुकांत को देख कर उस ने चैन की सांस ली.

"सुकांत, जरा रमा चाची का ध्यान रखो. मैं दौड़ कर अपना बैग ले आती हूं. लगता है, चाचीजी का रक्तचाप एकाएक बढ़ गया है. घर से मैं डाक्टर बसंत को टेलीफोन भी कर दूंगी. वही चाचीजी का इलाज करते हैं."

दिव्या यह सब जल्दीजल्दी बोल कर अपने घर की ओर लपक गई.

सुकांत कुछ कह नहीं पाया. उस का मन आक्रोश से भर उठा. उसे अपनी सारी योजना बिखरती हुई नजर आने लगी. वह चिढ़ कर दीप्ति से बोला, "चाचीजी, मैं अभी डाक्टर बना नहीं हूं. आप यहां रमाजी की देखरेख कर सकती हैं. मुझे और दिव्या को भीड़ बढ़ाने के लिए क्यों रोक रही हैं."

"सुकांत, तुम योग्य हो, फिर तुम से हम इलाज करने के लिए नहीं कह रहे हैं, केवल प्राथमिक चिकित्सा करनी है."

20-25 मिनट में डाक्टर आ गया. दिव्या के निदान और उपचार पर उस ने संतोष व्यक्त किया. रमा की हालत में भी सुधार हुआ.

लेकिन इतनी देर सुकांत सह नहीं सका. वह नाराज स्वर में दिव्या से बोला, "अब तो तुम्हारे सब कर्तव्य पूरे हो गए. चलो, इतनी देर पहले ही हो चुकी है."

जैसे ही दिव्या ने चलना चाहा, तरंगिनी रो उठी. वह दिव्या से लिपट कर याचना करने लगी, "नहीं दीदी, आप नहीं जाइए. मां को फिर कुछ हो गया तो."

"नहीं, तरंगिनी, अब तुम्हारी मां ठीक हैं. फिर मेरी मां तो यहां बैठी हैं. थोड़ी देर में तुम्हारे पिताजी आ जाएंगे." दिव्या ने प्यार से तरंगिनी को समझाना चाहा.

"नहीं, दीदी, आप भी मत जाइए. मुझे डर लग रहा है."

दिव्या ने कातर दृष्टि से सुकांत की ओर देखा. बोली, "सुकांत, तुम चले जाओ. ऐसी दशा में मैं नहीं जा पाऊंगी."

"तुम्हें नहीं जाना था तो मुझे पहले ही क्यों नहीं बता दिया. मेरा भी इतना समय खराब किया. लगता है इस परिवार की सारी जिम्मेदारी तुम्हारे ऊपर है. शायद और कोई पड़ोसी तो है नहीं. मैं ने बड़ी मूर्खता की जो तुम्हें साथ चलने के लिए कहा."

और पैर पटकता हुआ सुकांत चला गया. दिव्या की आंखों में आंसू छलछला आए. तरंगिनी को अपना मुंह ताकते देखा तो आंसू आंखों में ही रोक लिए. उस बच्ची की मासूम आंखों में अपराधबोध की कातरता थी.

भूलना

जिस के लिए, जिस के साथ
तुम हंसे हो, उसे भूल सकते हो,
लेकिन जिस के लिए जिस के साथ
तुम रोए हो उसे नहीं भूल सकते.

—जिब्रान

दीप्ति ने चाय बना कर मेज पर लगाई और आवाज लगा कर सब को इस की सूचना दी. पनीत और अभिनव तुरंत चले आए. रमा की तबीयत खराब होने के कारण दीप्ति का कार्यक्रम गड़बड़ा गया था. चाय लगने में भी बहुत देर हो गई थी. पितापुत्र दोनों को ही बहुत जोर से भूख लग आई थी.

दिव्या मेज पर नहीं आई. दीप्ति उस के मन की व्यथा को समझ रही थी. इसलिए दो कपों में चाय ले कर वह दिव्या के कमरे में आ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गई. दिव्या पलंग पर लेटी थी. मां को देख कर बोली, "मां, मेरी चाय पीने की इच्छा नहीं है. आप पीजिए."

दीप्ति ने उस की बात अनसुनी करते हुए बल्ब जला कर कमरे में प्रकाश कर दिया. वह दिव्या के चेहरे पर रोने के आसार देख कर आतुरता से बोली, "क्या बात है, दिव्या? क्या पार्टी में न जा पाने का बहुत बुरा लग रहा है? तरंगिनी के पिता के साथ क्यों नहीं चली गई. वह तो तुझे कार में ले जाने को तैयार थे. थोड़ी देर ही तो हो जाती, क्या फर्क पड़ता?"

दिव्या चुप ही रही तो दीप्ति उस के पास आ कर बैठ गई. सिर पर हाथ फेरते हुए बोली, "क्या बात है, बेटी? क्या अपनी मां को भी नहीं बताओगी?"

मां का स्नेहसिक्त और सहानुभूति से भरा स्पर्श पा कर दिव्या सुबक उठी, "क्या मैं ने सुकांत के साथ उस समय न जा कर भूल की, मां?"

"तुम्हारा दिल क्या कहता है? उस समय तुम चली जातीं तो सुकांत तो नाराज न होता. पर तरंगिनी के बाल हृदय पर क्या बीतती?"

"उस का अनुमान मैं लगा सकती हूं. इसी लिए मैं नहीं गई. तरंगिनी इतनी डरी हुई थी कि मैं उसे उस अवस्था में छोड़ कर नहीं जा सकी. शायद वह मेरी आवश्यकता से अधिक भावुकता थी. मां, मैं सुकांत को भी नाराज नहीं करना चाहती थी."

"क्या सुकांत में तेरी मित्रता से अधिक कुछ दिलचस्पी है?"

दिव्या कुछ देर संकुचित सी मौन रही. फिर उस ने स्वीकृति में सिर हिला दिया. दीप्ति ने दूसरा प्रश्न किया, "और सुकांत के क्या मनोभाव हैं?"

"वह भी मुझे और लड़कियों से अधिक महत्त्व देता है. आज मुझे साथ ले जाने का उस ने इसी लिए कार्यक्रम बनाया था. वह सब को संकेत दे देना चाहता था कि हमारी मित्रता केवल मित्रता नहीं, बल्कि उस से ऊपर कुछ है. अब सब गड़बड़ हो गया."

और दिव्या की आंखों में तेजी से आंसू टपकने लगे.

"कुछ गड़बड़ नहीं हुआ है. अगर सुकांत को तुझ से लगाव है तो वह तेरी मजबूरी समझ लेगा. परस्पर संबंध तब ही मजबूत हो सकते हैं, जब दोनों एकदूसरे के मनोभाव जानने की क्षमता रखते हों. दोनों एकदूसरे की भावनाओं का आदर कर सकते हों."

दिव्या चुप रही. लगता था कि वह किसी सोच में डूबी है. दीप्ति उस के मनोभावों को समझते हुए बोली, "दिव्या, अभी तुम दोनों के लिए एकदूसरे को समझने का बहुत समय है. तू तो अभी प्रथम वर्ष में ही है. इस प्रतियोगिता के युग में सुकांत को भी अपने को स्थापित करने में कम से कम चारपांच वर्ष और लगेंगे. उस से पहले तुम दोनों का कोई निर्णय लेना क्या उचित होगा?"

"मैं समझती हूं, मां. पर जब सुकांत इस प्रकार की बातें करता है तो मैं घबरा जाती हूं. लगता है कि मैं अपनी द्विविधा और उलझन के कारण कुछ खो न बैठूं."

"तेरे मन में द्विविधा ठीक ही है क्योंकि तू मानसिक रूप से कोई निर्णय लेने के लिए तैयार नहीं है. संभव है, कुछ समय बाद तुझे अनुभव हो कि सुकांत की ओर तेरा झुकाव एक आकर्षण मात्र है.

"वह कालिज का एक जानामाना लड़का है. उस का व्यक्तित्व प्रभावशाली है. तेरा उस की ओर खिंचना स्वाभाविक है. वह तुझे अन्य लड़कियों की अपेक्षा अधिक महत्त्व देता है, इसी लिए तू गौरव का अनुभव करे, यह भी स्वाभाविक ही है.

"परंतु किशोरावस्था में विचार बदलने में समय नहीं लगता. मुझे तो लगता है कि अभी भी तेरे विचारों में बहुत परिवर्तन आ रहा है. पहले जिस प्रकार तू सुकांत की प्रशंसक थी, अब नहीं रही."

दिव्या झेंप गई. चेहरा लाल हो उठा, "सच, मां, मैं अपने भाव स्वयं नहीं समझ पाती."

"जब तू अपने भाव समझ जाएगी तो तू सुकांत से इस प्रकार डरडर कर नहीं रहेगी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हर समय यही चिंता सताएगी कि तेरी किसी बात से, किसी आचरण से वह नाराज न हो जाए."

"मैं ने कभी इस प्रकार नहीं सोचा. सुकांत का विचार है कि अभी मुझ में बचपना है तभी तो इतनी भावुक हूं. क्या मैं कभी बदल सकूंगी, मां?"

दीप्ति के मुंह से एक ठंडी सास निकल गई, "नहीं, दिव्या, मैं सोचती हूं कि तू कभी नहीं बदल सकेगी."

वातावरण भारी हो चला था. दीप्ति ने बात का रुख बदलने के विचार से कहा, "बहुत दिनों से तेरे पुराने मित्र प्रणीत, मेघना, अलंकार आदि नहीं दिखाई दिए?"

"आजकल कालिज में उन से बात ही नहीं हो पाती."

"तो अब किसी छुट्टी के दिन अपनी समस्त मित्रमंडली के साथ पिकनिक का कार्यक्रम बना डालो. सुकांत को भी उस मंडली में शामिल कर लो."

दिव्या के चेहरे से विषाद के बादल छंटने लगे. बोली, "हां, मां, विचार तो आप का अच्छा है. जाने कब से हम ने ऐसा कोई कार्यक्रम नहीं बनाया."

"इस प्रकार तुम्हारा पुराने मित्रों से भी संपर्क बना रहेगा. वे सब तुम्हारे बहुत अच्छे मित्र हैं."

"मां, मेरा सब से अच्छी मित्र तो आप हैं. आप से बातें कर के आज मेरे मन का बोझ बहुत हलका हो गया. आप के साथ अपनी भावनाओं का विश्लेषण कर के समस्या का हल तो नहीं निकाल पाई, पर उसे समझ जरूर गई हूं."

"क्यों न मां आप और पिताजी भी साथ चलें."

दीप्ति हंस पड़ी. "बच्चों के साथ हम क्या अच्छे लगेंगे?"

"फिर तो मां, यह सिर्फ पारिवारिक पिकनिक ही रहेगी. कितने दिन हो गए हम सब एकसाथ घर से नहीं निकले हैं."

"ठीक है. तू सुकांत से कह देना. आशा है कि उस का गुस्सा भी एकदो दिन में उतर जाएगा."

"मां, मैं कह रही हूं न, केवल हम परिवार के लोग होंगे. बाहर का कोई नहीं होगा."

दीप्ति ने दिव्या की ओर देखा, वह मुसकरा रही थी. दीप्ति भी मुसकरा दी, "अब चाय पीने चल. यह चाय तो बिलकुल ठंडी हो गई."

"मां, मुझे तो भूख भी बहुत जोर से लग रही है. आप ने खाने के लिए क्या बनाया है?" दिव्या ने दीप्ति के गले में बांहें डाल कर ठुनकते हुए कहा. और दीप्ति को ऐसा लगा जैसे दिव्या अभी तक नन्ही बच्ची ही हो. उस ने झुक कर बारबार दिव्या का माथा चूम लिया. ●

मस्तिष्क की संवेदनाओं का पता लगाने वाला यंत्र

फ्रांस की एक कंपनी 'अल्वर इलेक्ट्रानिक्स' ने मानव मस्तिष्क की विभिन्न गतिविधियों का पता लगाने के लिए एक ऐसा लघु कंप्यूटर तैयार किया है, जो मस्तिष्क का नक़शा तैयार कर के घड़ी की तरह उस की गतिविधियों की खबर देता रहा है.

'रीगा–2000' नामक इस यंत्र की सहायता से चिकित्सक अब यह देख सकते हैं कि मस्तिष्क विभिन्न संवेदनाओं के प्रति कैसे प्रतिक्रिया करता है. इस यंत्र के द्वारा मस्तिष्क पर दवाओं की प्रभावशीलता के बारे में भी पता चल सकता है. इस की मदद से मिरगी जैसे मानसिक रोगों के उपचार के लिए सहायता मिल सकती है. इस लघु यंत्र का मूल्य भी बहुत कम है और शीघ्र ही यह बड़े पैमाने पर उपलब्ध होने लगेगा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मांबेटी और यौन समस्याएं

लेख • आशा अय्यर

गीता दक्षिण भारत में अपने मूल निवासस्थान की यात्रा पर गई थी. वहीं एक दिन वह रजस्वला हो गई. तीन दिन व तीन रातें उस ने उस घर के पिछवाड़े बनी एक छोटी सी सीलनभरी कोठरी में बिताए. खाने को सिर्फ एक थाली में खिचड़ी और गुड़ की कुछ डलियां. पीने का पानी मांगने पर मिलता था.

चौथे दिन ठंडे पानी से सूर्योदय से पूर्व ही उस की मां ने उसे नहला दिया. साड़ी पहननी पड़ी. फिर सुबह ढेरों लड़कियां व महिलाएं आती गईं. उस की मां और बूआ को बधाइयां देती गईं. खूब हंसीठिठोली होती रही और कोई रुपए तो कोई ब्लाउज का कपड़ा देता रहा. सब ने 'पुट्टू' खाया. बाद में बड़े जलूस में उसे नादसुर बजाते हुए मंदिर तक ले गए. गीता की समझ में कुछ नहीं आया. आज 20 साल बाद भी उसे वह गीलीकाली कोठरी याद आ जाती है. जीवन का एक सुखद क्षण एक विचित्र कुंठा का कारण बन गया.

शमा अपने चाचा को छुटपन से ही बहुत प्यार करती थी. वह उस की मां का भी लाड़ला था. जब वह बड़ी हो गई तो उस के इस प्यार में कोई अंतर न आया. मां ने देखा कि देवर अब शमा में ज्यादा ही रुचि लेने लगा है. कभी उसे अपने साथ सटा लेता है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...ती उस की उंगलियां सहलाता है.

...मां ने दोनों के इस खतरना क आकर्षण ...समझ कर शमा को डांटनाफटकारना ...कर दिया, "अब बड़ी हो गई हो. कुछ ...शर्म करो. हट कर बैठो."

शमा कुछ समझ न पाती. उसे लगता ...मां उस से ईर्ष्या करती हैं, क्योंकि ...बाजी उसे मां से भी अधिक प्यार जो ...करने लगे हैं.

शैलजा बी.ए. में पढ़ती थी. बड़ा ...दियादी परिवार था उन का. उस ने हिजड़ों ...के बारे में अपरोक्ष उक्तियों से कुछ ...अधीअधूरी जानकारियां एकत्र कर लीं. ...एक दिन उस की कक्षा में किसी लड़की को ...उस ने कहते सुना, "किरण की छोटी बहन ...हिजड़ा है. हिजड़े उसे मांगने आए थे. उन के ...पिताजी ने नहीं दिया."

थी. उसे लगता था कि उस का भाई अकसर उस के कपड़े बदलते समय जानबूझ कर उस के कमरे में आ जाता था. उस के नहाते समय स्नानघर के पास से अकसर गुजरता था. उसे लगता था कि वह रात को भी कभीकभी उसे छू कर देखता था.

मां से कहा तो उस ने डांट दिया, "और सड़ीगली किताबें पढ़ो, फूहड़ फिल्में देखो. अपने ही सगे भाई पर इस तरह शक करती हो."

मां ने यह नहीं सोचा कि नीरा अपने भाई पर बेवजह इलजाम क्यों लगाएगी? विक्रम उस की सहेलियों को भी अजीब नजरों से देखता था. नीरा रात को जागने लगी.

विक्रम कभी उस के माथे पर, पेट पर हाथ फेर कर देखता. वह एकदो बार

बेटी में बड़ी होने की अति महत्त्वपूर्ण प्रक्रिया से होने वाले परिवर्तनों के प्रति अनावश्यक भय या शंका पैदा न करें अपितु उस की संरक्षक या अंतरंग सखी बन विश्वास से उस का मार्गदर्शन करें.

शैलजा ने घर आ कर अपनी मां को बताया तो वह पहले तो हंसी, "ले हिजड़े भी कहीं बहनभाई होते हैं?"

उस ने पूछा, "तो क्या होते हैं?"

मां ने डपट दिया, "चुप रह. कहीं से भी उलटीसीधी बातें सुन कर, कुछ भी बकती है. जा कर अपनी पढ़ाई कर."

शैलजा की जिज्ञासा शांत नहीं हुई. वह चिंता में पड़ गई. वह अकसर सपना देखने लगी कि उस की आवाज व चेहरा हिजड़ों जैसे हो गए हैं. अंततः पड़ोस की जाचीजी ने उस की जिज्ञासा शांत की कि हिजड़ा कोई बाद में नहीं बनता, वे जन्म से ही न तो पुरुष योनि में पैदा होते हैं, न स्त्री योनि में.

नीरा की समस्या इन सब से निराली चिल्लाई भी. उसे यह बात समझ में नहीं आती थी. और किस से कहे वह? बहुत साल बाद भी यह बात उसे परेशान करती रही कि वह अपने पति से यह बात बताए या नहीं. यह व्यभिचार तो न था?

ये सब घटनाएं उन परिस्थितियों का नमूना मात्र हैं जो अनेक बेटियों को अपनी जिंदगी में देखनी पड़ जाती हैं. इन स्थितियों का सामना करने का एक ही उपाय है कि किशोर अवस्था में लड़कियों का एक संरक्षक, एक मार्गदर्शक, एक अंतरंग सखी अवश्य हो. और इस समय उन की अपनी मां से बढ़ कर यह भूमिका और कोई दूसरा नहीं अदा कर सकता.

संभावित की पूर्व सूचना होने से किशोरियां मानसिक रूप से सजग व तैयार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहती हैं. अनावश्यक तनाव या कुंठा जन्म नहीं ले पाती.

भारत में प्रायः सभी माताएं जाने-अनजाने इस मामले में अपने दायित्व को नहीं निभातीं. वे समयअसमय बेटी को 'यों करो,' 'यों न करो' के उपदेश अवश्य देती हैं, किंतु सही मार्गदर्शन नहीं देतीं. बहुत से भ्रामक विश्वास, पूर्वाग्रह, अपनी ही बेटी से अनावश्यक संकोच, इन मामलों में स्वयं उन की अल्पज्ञता या नितांत अनभिज्ञता ऐसे कारण हैं कि बेटियां इस अल्हड़ अवस्था में अपने छात्रावासीय जीवन में या बाद में विवाहित जीवन में भीषण द्विविधाओं में फंस जाती हैं.

मां को अपनी बेटी से बड़ा सहज व विश्वासपूर्ण संबंध बनाए रखना चाहिए. छुटपन से ही बेटी के प्रति विश्वास के बीज बोने चाहिए. अन्यथा बड़े होने पर भी उन के मध्य अजनबीपन बना रहेगा. बेटी के साथ मानसिक व शारीरिक तादात्म्य बनाए रखिए. उसे 'दूरे हिता–दुहिता' कह कर अपने स्पर्श से वंचित मत कीजिए. सातआठ बरस से 20 साल तक के बेटे को जैसे माताएं गोद में सुला लेती हैं, उस के बाल पीछे हटा कर उस का माथा चूम लेती हैं, उसे गले में बांहें डालने देती हैं, ऐसे ही कितनी माताएं बेटियों को करने देती हैं? यह अंतर, यह भेदभाव मांबेटी के रिश्तों के लिए घातक है. उसे भी मां कभी अपने से चिपका ले, उत्तीर्ण होने पर या जन्मदिन पर चूम ले तो इस में क्या बुराई है?

मांबेटी के बीच इतना सहज व मधुर संबंध हो कि वयःसंधि की नईनई बातें मां बेटी को उस की चोटी गूंथते हुए भी समझा सके. बेटी को अंधेरे में न रख कर, वह उसे हर आवश्यक बात समझाए.

प्रदूषित वातावरण, असंतुलित आहार, अत्यधिक तीखा या मीठा भोजन, गर्भावस्था में मां की लापरवाही या गरम दवाओं का सेवन आदि सैकड़ों ऐसे कारण हैं, जिन की वजह से 10-11 साल की अल्पायु में ही लड़कियां आजकल रजस्वला हो जाती हैं. यह बड़ी कच्ची उम्र है, परंतु है तो एक सचाई.

एक बालिका कक्षा में बैठेबैठे जब ऐसी स्थिति की शिकार हुई तो कुछ समझ में न आने के कारण अचानक रोने लगी. पढ़ाने वाले अध्यापक ने पहले प्यार से फिर धमका कर पूछने की कोशिश की, पर उस ने कुछ नहीं बताया. अंततः प्रधानाचार्य ने सारी कक्षा खाली करवाई, क्योंकि वह अपनी जगह से हिलने को भी तैयार नहीं थी. आज 11 बरस बाद भी वह इन तीनचार दिनों में सहमीसहमी रहती है. अगर उस की मां उसे इस स्थिति से पहले ही अवगत करा देती, तो अच्छा था.

'समय आने पर सब पता चल जाएगा' या 'हमें भी किसी ने नहीं बताया था. सब अपनेआप पता चल जाता है,' ऐसे तर्क दे कर मां को अपने दायित्व से नहीं बचना चाहिए. पहले लड़कियां घर में बिठा ली जाती थीं, आठवीं तक पढ़ा कर. आजकल लड़कियां पढ़ने भी जाती हैं, खेलने भी जाती हैं और मिलनेमिलाने भी. अतः उन्हें इस स्थिति व परिवर्तन से अवगत कराना ही चाहिए.

बेटी के विश्वास को न तोड़ें

बेटी के बड़े होने की अति महत्त्वपूर्ण प्रक्रिया के प्रति उस के मन में शर्म या जुगुप्सा की भावना न भरें. इस बारे में प्रत्येक मां को सावधान रहना चाहिए. इस के लिए अगर पति अथवा अन्य रिश्तेदारों से थोड़ा विरोध भी सहना पड़े तो सहने को तैयार रहें, परंतु बेटी के विश्वास को न तोड़ें. इस समय बेटी को मां से सद्भाव व सहायता मिलनी चाहिए. अगर मां उस की मदद करने की स्थिति में न हो, तब भी उसे इस बात का विश्वास दिलाया जाना जरूरी है कि वह पूर्णतया बेटी के साथ है.

आज भी भारतीय घरों में मासिक धर्म के तीनचार दिनों में स्त्रियों के साथ अमानवीय व मध्ययुगीन बरताव होता है. यही बरताव जब मांबेटी के साथ करती है तो वह 'बड़े होने' को एक अभिशाप समझने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किशोरावस्था की समस्त जानकारियां व निर्देश ममतामयी मां से सहज रूप से मिलना मांबेटी दोनों के लिए श्रेयस्कर है.

लगती है. बेटी को 'बड़े होने' पर अलग कर देना, कुछ भी छूने न देना, घर में आनेजाने वालों को उस की इस स्थिति से अवगत कराना, उस से अस्पृश्यों जैसा व्यवहार करना, इन सब से अपरिपक्व किशोरियों के मन में इस सारी प्रक्रिया के साथसाथ मासिक धर्म के प्रति भी एक घृणा की भावना जागती है. उस में हीनता व अन्य कुंठाएं जागती हैं, जो उस के वैवाहिक जीवन में भी विष घोलती हैं. कई स्त्रियां इस कारण मातृत्व तक की महत्ता को कम कर के आंकती हैं.

इधर भाइयों के साथ गुत्थमगुत्था होती हुई, पिता को गलबांही दे कर झूलने वाली बेटी को जब एकाएक, एक विशिष्ट पल से 'अब तुम बड़ी हो गई हो' का प्रमाणपत्र मिल जाता है तो उसे वह हाथ में तो ले लेती है, किंतु सहसा समझ नहीं पाती. अब उसे यदाकदा सुनने को मिलता है, 'भाइयों के साथ मत खेलो,' 'पिताजी पर हाथ मत रखो.' 'इस के सामने मत जाओ' 'उस के सामने मत बोलो. क्यों? क्यों? क्यों? सब का जवाब एक है कि 'अब तुम बड़ी हो गई हो.' अजीब मुसीबत है.

बेटी तो स्वयं ही अपने शरीर व मन में होने वाले परिवर्तनों से उलझन में पड़ी है.

इधर मां प्रायः बेटों से कहती है कि "अब उसे छुआ न करो. अब वह बड़ी हो गई है." इस से वह भाइयों से सकुचाने लगती है. अनावश्यक रूप से भाई उस के बारे में जिज्ञासु होने लगता है. वह जानना चाहता है कि बहन में ऐसा क्या परिवर्तन हुआ है. वह अनावश्यक रूप से ताकाझांकी करता है. वह अपनी बहन के हमउम्र या स्वयं अपनी हमउम्र लड़कियों में निकटता चाहता है. बहन अजीब लज्जा या अन्य भावों से ग्रसित हो जाती है.

इस से अच्छा है कि मां बेटी को समझाए कि उसे निकट भविष्य में अपने अंदर किन परिवर्तनों के लिए तैयार रहना है. उस में अनावश्यक भय या शंका पैदा न करें.

मासिक धर्म के दिनों में उठनाबैठना साफसुथरा रहना, अपनी हिफाजत रखना आदि मां को ही सिखाना चाहिए. विद्यालय या कालिज में बालिकाएं किसी अप्रत्याशित स्थिति का सामना कर के अपमानित न हों, इस का ध्यान उन की मां को ही रखना

(शेष पृष्ठ 182 पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

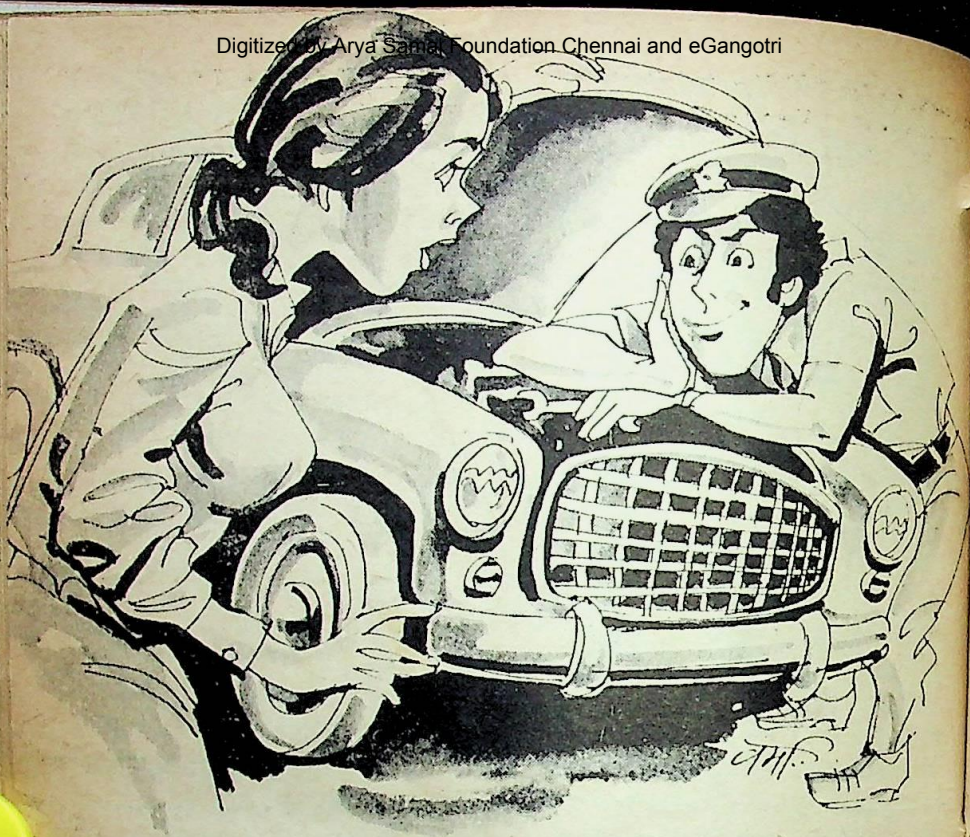

इश्क का भूत

कहानी • आशा दीप

डौली को इश्क हो गया. वही फिल्मों वाला, रोमांचकारी, सारी दुनिया से टकरा जाने को तत्पर इश्क. वही इश्क, जिस की कोई सीमा, कोई मर्यादा नहीं होती. जो राजकुमार को भिखारिन से, राजकुमारी को साईस से, अरबों की दौलत के इकलौते वारिस को मजदूरन से, बड़े नाजों से आक्सफोर्ड यूनीवर्सिटी से पीएच.डी. ली हुई बेटी को घसियारे से हो जाता है. और भी अनगिनत अवसर होते हैं जैसे लीडर को चीटर से (वैसे आजकल लीडर भी कुछ कम नहीं होते), गंगा को जमना से, चंदा को सूरज से, जंगली को मासूमीयत से वगैरहवगैरह. वह हिंदी फिल्म ही क्या जिस में इश्क न हो.

डौली को मंगतराम उर्फ मंगत से इश्क हो गया. आइए, दोनों का परिचय करा दें, 'महिला पहले' पर अमल करते हुए डौली से.

डौली 'हौजरी किंग' सुदर्शन लाल और एक कपड़ा मिल की अकेली वारिस रंजना की इकलौती बेटी है. गोल्फ लिंक की शान 'डौली निवास' में वह ढाई सदस्यों का परिवार (अगर आप तीन सदस्य कहना चाहें तो भी

शरिता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किशोर डौली मातापिता की अवहेलना के बदले ड्राइवर मंगत के व्यवहार को ही इश्क समझने लगी और वह 'पिया के घर' जाने को उतावली हो उठी. लेकिन वहां पहुंचते ही उसे पता चला कि प्यार के धूएं के पीछे कितनी कालिख होती है.

चलेगा) रहता आया है. अधिकांश रात को रहता आया है, कहें तो अधिक उपयुक्त होगा. सुदर्शन लाल उर्फ लाल साहब तो अकसर देशीविदेशी कारोबारी दौरों पर रहते हैं. दिल्ली प्रवास में भी वह सुबह से निकलते हैं तो देर शाम तक केवल नहाने, कपड़े बदलने आदि के लिए आते हैं. फिर अगर रंजना घर पर हुई तो साथ ले जाते हैं, वरना अकेले क्लब चले जाते हैं. कभी आतीजाती डौली दिखाई दे गई तो उस के 'हाय' कहने से खिल जाते. जवाब में वह भी 'हाय' कहते, पर रुकते नहीं चलते रहते.

सुबह का नाश्ता लाल साहब और डौली इकट्ठा करते. तब रंजना सोई रहती.

स्कूल से लौटी डौली सीधी मां के कमरे में जाती जहां सामाजिक कार्यों और लंच के बाद की सौंदर्य झपकी (ब्यूटी नेप) से रंजना उठ रही होती. "मां," कहती डौली रंजना से लिपट जाती. रंजना उसे बांहों में भर लेती. मांबेटी चाय पीतीं. छुट्टियों के दिन इकट्ठा भोजन करतीं.

"देख लो, मंगत, मैं यह तेजाब ले आई हूं. अगर तुम ने मुझे नहीं अपनाया तो मैं यहीं तेजाब पी कर जान दे दूंगी." डौली ने मंदिर के सामने खड़े हो कर मंगत से कहा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कल्पनाशील डौली पुलिस अधीक्षक के कार्यालय में आराम से बैठी एक फिल्म पर आधारित अपने साथ बीती वारदात लिखवा रही थी और मंगत हवालात में बंद था.

रंजना को कोई न कोई सामाजिक संस्था लेने आई होती और वह चली जाती.

चाय से ले कर रात को सोने तक का समय डौली को अकेले काटना होता. उस की आया होती, नौकरानी चंपा होती, रसोइया हमीद होता, नौकर शंकर होता, पर डौली खुद को नितांत अकेला अनुभव करती.

लाल साहब और रंजना ने उस के मनोरंजन के लिए सारे साधन जुटा रखे थे. स्वीमिंग पूल, बैडमिंटन कोर्ट, टेबिल टेनिस क्या नहीं था. अपने टी.वी., वी.सी.आर., विडियो गेम्स, रिकार्ड प्लेयर और टेप रिकार्डर थे. सड़क पार वीडियो लाइब्रेरी से जो चाहे फिल्म मंगा कर अकेली देखती रहती थी.

नौकरों के लिए रसोई में टी.वी. और भोजन कक्ष में टी.वी., वी.सी.आर. लगे थे.

अब इस से ज्यादा स्नेहिल मातापिता संतान के लिए क्या कर सकते हैं. बच्चे को किशोरावस्था में मातापिता से निरंतर मार्गदर्शन, सहयोग आदि की अपेक्षा होती है. वह चाहता है कि वह मातापिता की पूरी तवज्जह का केंद्र हो. उसे सहेजा संवारा जाए. उस की चिंता की जाए. फिर जैसे वह खुद ही अपनी सोचों पर खीज उठती, 'वाहियात और बकवास.' जीवन में सब कुछ तो नहीं मिल जाता. 'आखिर मातापिता का भी तो सामाजिक जीवन होता है. मिलनामिलाना होता है.'

मंगत रंजना का ड्राइवर था. उस का बाप तीरथराम 40 साल से परिवार की सेवा में था. जब आंखों की कमजोरी ड्राइविंग में बाधा बनने लगी तो उस ने लाल साहब के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अफसाना

ये वो दुनिया है जहां
चुप रहे तो बेहतर है,
लोग नुक्ते का भी
अफसाना बना लेते हैं.
—विक्की नागर

अपने घुटने टेक दिए, "मालिक 12 साल का इस ने तड़का आयातित कारों के गैराज में काम करता है. अब तो बड़ी से बड़ी कारें ऐसे चलाता है, जैसे हवा से बातें करता हो, मगर मजाल कि कार किसी गड्ढे या 'स्पीड ब्रेकर' पर उछल जाए."

"कहां है वह?"

"साथ ही लाया हूं, मालिक. पांच मिनट कार में उस के साथ जाइए."

बचपन से देखे ड्राइवर का लिहाज कर लाल साहब बाहर आए. दुबलापतला, गेंहुआ, गोरा, 20-22 साल का हलकी दाढ़ीमूंछ वाला युवक देख कर लाल साहब के मन में आया, कह दें, "यह छोकरा, यह क्या गाड़ी चलाएगा."

फिर भी वह अपनी इंपाला कार के तीरथ द्वारा खोले द्वार से पिछली सीट पर बैठ गए.

"चल, मंगते," कहता तीरथ आगे बैठा और मंगत ड्राइविंग सीट पर. उस ने इंजन स्टार्ट किया. मखमली सहजता से, बिना आवाज गियर बदला. साउथ एक्सटेंशन के भीड़भाड़ वाले रास्तों को पार करता, कब मंगत गाड़ी वापस ले आया, पता ही नहीं चला. कार तो जैसे हवा में तैरती रही हो. धरती पर चलने का एहसास हुआ ही नहीं. अनगिनत देशीविदेशी ड्राइवरों को जानेसमझे लाल साहब मंगत की दक्षता पर मुग्ध हो गए. उसे रख लिया.

मोरपंखी रंग की चमचमाती वर्दी और पी कैप में जब मंगत पहली बार रंजना के लिए कार का दरवाजा खोल कर खड़ा हुआ तो रंजना भी उसे भरपूर निगाहों से देखने पर मजबूर हो गई थी. विशाल हौजरी की फैक्टरी और 'डौली निवास' की छत्रछाया में मंगत के शरीर पर मांस चढ़ते भी देर नहीं लगी. अब वह पहले से भी अधिक आकर्षक और मोहक हो गया था.

स्कूल लाते ले जाते समय अदब से पिछला दरवाजा खोलते, बंद करते वक्त मंगत डौली को देखता. स्कूल की वर्दी में सजी षोडसी डौली उसे आकाश से उतरी अप्सरा सी लगती. उसे देखा जा सकता था. सराहा जा सकता था, पर छूने की गुस्ताखी नहीं की जा सकती थी.

"मंगत, हमें कार चलाना सिखा दो," कहती डौली कार के बोनट खोल कर झुके मंगत के निकट आई.

मंगत ने नजर उठा कर देखा तो कार के बाहर बदबूदार तेलों के ऊपर तैरता सुगंध का एक झोंका उस की नाक में भर गया. लंबा गाउन पहने हुए डौली स्कूल की वर्दी वाली बच्ची से नितांत भिन्न पूर्ण तरुणी लग रही थी.

'यह आकाश की अप्सरा, कल्पना की हीरोइन मंगत से कार चलाना सिखाने को कह रही है,' उस ने सोचा.

उस के भीतर छिपा हीरो जाग उठा. वह डौली के लिए आकाश के तारे तोड़ कर ला सकता है. कार चलाना सिखाना तो बाएं हाथ का खेल है. "जो हुक्म, बैठिए," वह बोला.

धुंधलाती मादक शामों की छांव में, तुगलकाबाद को जाती, महरौली से आगे निकलती सुनसान सड़कों पर ड्राइविंग सिखाने वाले की निकटता, छूतेरगड़ते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परख

बूढ़े हर चीज पर विश्वास करते हैं, प्रौढ हर चीज पर संदेह करते हैं, युवा हर चीज को जानते हैं.

—आस्कर वाइल्ड

शरीर की ऊष्मा और नित्य देखी हिंदी फिल्मों के प्रभाव ने कब इश्क का रूप ले लिया, डौली समझ न पाई. फिल्मों की तरह डौली को आगोश में समेट लेने को मंगत का जी करता था पर वह कभी साहस नहीं बटोर पाता.

एक शाम ड्राइविंग के बाद कलम खोजती डौली रंजना के शयनकक्ष में गई. सिरहाने की छोटी सी दराज में 'लवर्स' बीडियो कैसेट रखा था. कलम भूल कर कैसेट ले आई और कमरा बंद कर के उसे चलाया तो हक्कीबक्की रह गई.

यौन संबंधों के बारे में पढ़ना, सहेलियों से बतियाना अलग बात है, प्रत्यक्ष परदे पर देखना अलग बात है, दुनिया भर की नग्नता और यौन संबंध उस के सामने थे. उस के शरीर का रोमरोम झनझना गया. वह पसीनापसीना हो गई. गला सूख गया. उस ब्लू फिल्म का विष उस की रगरग में आग बन कर उतर गया.

पूरी फिल्म देखने के बाद जब वह कैसेट रखने वापस गई तो उस के पांव कांप रहे थे. शरीर पर चींटियां सी रेंग रही थीं.

अगले दिन मंगत डौली को और भी आकर्षक लगा. दो दिन बाद वह ड्राइविंग से लौटी तो कार से उतरती हुई फुसफुसाई, "मंगत, तुम मुझे बहुत अच्छे लगते हो."

आग बढ़ती गई. डौली की उच्छृंखलता भी बढ़ती गई. अब वह मंगत का शरीर छूनेरगड़ने का प्रयत्न करने लगी. जानबूझ कर गलतियां करती, जिस से मंगत को समीप आ कर कार संभालनी पड़े.

मंगत सब समझता था, पर बारबार निश्चय करने पर भी वह फिल्मी हीरो जैसा साहस न बटोर पाता. उस के नौकर हाथ मालकिन डौली की तरफ न उठ पाते.

"तुम मेरे सपनों में आते हो, मंगत."

"मैं तुम्हें चाहती हूं, मंगत."

पता नहीं डौली क्याक्या बोलती रहती थी, पर मंगत चुप रहता था.

एक शाम डौली ने कार सड़क के किनारे एक छोटे से मंदिर के सामने रोक दी. उतर कर मंदिर में जाने लगी तो मंगत ने पूछ लिया, "कहां जा रही हैं?"

"मंदिर में, मंगत. मैं तुम से शादी करूंगी."

"कहीं धरती और आकाश की शादी होती है, हम झोंपड़ी के वासी और आप महलों में पली..."

"मैं झोंपड़ी और महल के सारे बंधन तोड़ डालूंगी. मैं तुम्हारे प्यार के लिए सब छोड़ दूंगी. नीले आकाश की छांव होगी और हम दोनों होंगे. पेड़ के तले हमारा घरसंसार होगा. मुझे अपना लो, मंगत, मैं तुम्हारी हूं, केवल तुम्हारी."

"बचपना मत कीजिए, डौली, देर हो रही है, चलिए घर चलें."

निराश डौली लौट आई थी.

लाड़प्यार में पली डौली जिद्दी थी. जो खिलौना चाहती उसे लेने पर अड़ जाती और ले कर मानती. उस की हर इच्छा, हर जिद पूरी हो जाती थी. मंगत के इनकार से वह झुंझला उठी.

तीसरे ही दिन कार फिर उस मंदिर के सामने थी.

"देख लो, मंगत, मैं यह तेजाब ले आई हूं. अगर तुम ने मुझे नहीं अपनाया तो मैं यहीं तेजाब पी कर जान दे दूंगी."

आखिर मंगत भी इनसान था. ऐसी आकाश की अप्सरा को कैसे मर जाने देता.

"ठीक है, डौली. हम शादी करेंगे. मैं तुम्हारे एक इशारे पर चांदसितारे तोड़ कर तुम्हारे कदमों में डाल दूंगा." पहली बार मंगत ने उसे 'तुम' कह कर पुकारा था. डौली खुशी के मारे उस से लिपट गई. पर तुरंत ही

अरिता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गई. सामने छोटी सी ही सही पर
ी सड़क थी. उस पर से साइकिलें, पैदल
ी, वाहन गुजर ही रहे थे.
तीसरे दिन, एक बिलकुल छोटी सी
ची ले कर डौली ने घर छोड़ दिया. कुछ
दल चल कर दिल्ली परिवहन निगम की
में चढ़ गई.
ताजपतनगर से दो मोटेमोटे फूलों के
ने कर दूसरी बस से दोनों मंदिर गए. बस
दिर के सामने से गुजर गई तो डौली
लाई, "अरे, रोको."
पर बस स्टाप 400-500 मीटर आगे
ल के पास था. बस वहां जा कर रुकी.
ची और हार मंगत ने उठा रखे थे. फिर
डौली को पैदल चलना अखरा.
मंदिर में सलवारकुरते के ऊपर ही
ारी साड़ी पहन कर डौली झटपट फिल्मी
लहन बन गई. कथित भगवान के समक्ष
या जला, धूप महका कर दोनों ने एकदूसरे
सुवासित बेला के हार पहनाए. पतिपत्नी
रूप में जीवन भर साथ निभाने की कसमें
ाईं.
'पिया का घर' डौली ने सोचा और
गत का हाथ पकड़ कर उस के घर चलने का
ाग्रह किया. वहां से अंतर्राज्यीय बस अड्डे
र बस से 40 किलोमीटर आगे सड़क पर
तर कर पगडंडी से दो किलोमीटर दूर गांव
हुंचतेपहुंचते रात के 12 बज गए.

सी राहों से अनजान डौली बारबार
गिरने को हुई. मंगत संभालता रहा.
र एक पतली गली के अंत में था. कच्चे
स्ते के बीच नाली थी. डौली का आधा पांव
ीचड़ में धंस गया. उसे बड़ी घिन आई.
ड़ी ऊपर उठा कर, मंगत के पीछेपीछे
दीवार के पासपास चलती रही और जैसेतैसे
र के सामने पहुंची. मंगत ने सांकल
ड़काई, "अम्मां, खोलो."
"आती हूं."
बूढ़ी मां ने दरवाजा खोला. हाथ में
ड़ी के तेल की ढिबरी थी.
"तेरी बहू, अम्मां." झुक कर दोनों ने

सरिता व मुक्ता में प्रकाशित
लेखों के महत्वपूर्ण रिप्रिंट

सेट नं.- 35

- प्राचीनकाल में बच्चों की शिक्षादीक्षा
- वेदों में विज्ञान
- राम कथा व सीता चरित्र
- सरिता और हिंदू समाज
- तुलसी साहित्य
- तुलसी साहित्य: आ.व.आ. के उत्तर
- हिंदुओं के मंदिर कैसे हों?
- रावण
- रामचरितमानस के अविश्वसनीय प्रसंग
- रामचरितमानस के असंगत स्थल
- हिंदी साहित्य का गलत इतिहास
- श्रीकृष्ण
- गीता: कर्मवाद की व्याख्या या कृष्ण का आत्मप्रचार
- क्या कौमार्य रक्षा दकियानूसी है?
- कृष्ण और राधा
- श्रीमद्भागवत
- भागवत और भूगोल
- समाजवाद बनाम स्वतंत्रता
- कामायनी
- हिंदू विवाह पद्धति
- पुत्रेष्टि यज्ञ
- प्राचीन भारत में गौ हत्या
- धनुष यज्ञ
- कृष्ण और गोपियां
- हमारे देवमंदिर
- क्या समाजवाद अनिवार्य है?
- विवाह पूर्व यौन संबंध
- श्रीकृष्ण: अपने जीवन की संध्या में
- सताई गई नारी
- कृष्ण और कुब्जा

मूल्य 5 रुपए

50 प्रतिशत की पुस्तकालयों, विद्यार्थियों व अध्यापकों के लिए विशेष छूट रूपए अग्रिम भेजें. वी.पी.पी. नहीं भेजी जाएगी. सेट का परिवर्तन कभी भी हो सकता है.

दिल्ली बुक कंपनी
एम-12 कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बुढ़िया के पांव छुए. बड़ा छोटा सा घर था. एक दालान में छोटीछोटी खाटों पर कई बच्चे सो रहे थे. साथ की कोठरी में थोड़ी बड़ी खाट पर दो लड़के सो रहे थे. छः बच्चे डौली ने गिने. सब से छोटी लड़की भी 13-14 साल की होगी. उसे मिला कर सात बच्चे हुए.

बाहर आंगन में एक ओर गाय बैठी थी. गंदे बरतन पड़े थे.

"राजू, भोलू, उठो. देखो, भाभी आई है." अम्मां ने दोनों लड़कों को जगा कर बाहर किया. साथ ही एक गंदा सा कुत्ता भी चारपाई के नीचे से उठ कर बाहर भागा.

अस्तव्यस्त पड़ी कोठरी बेहद गंदी थी. पसीने, चूहों, कुत्ते और तरहतरह की दुर्गंधों से भरी थी. मच्छर भिनभिना रहे थे और काट रहे थे. घुटन, पसीने से चिपक रहे कपड़े, कीचड़ सने पांव—डौली घबरा गई.

अटैची रख कर हार खूंटी पर टांग कर मंगत बोला, "बैठो, डौली."

"मुझे पांव धोने हैं."

डौली ने साड़ी उतार दी. फूलों भरी सेज पर पति से लाल साड़ी का घूंघट उठवाने का सारा उत्साह गायब हो गया था.

हैंडपंप चला कर मंगत ने पांव धुलाए. दालान के बाहर चूल्हा जल चुका था और भुनते आलूओं की महक आ रही थी. सूखे आलू और पूरियां बड़ी शीघ्रता से खाने को मिले. स्वाद था, पर वातावरण न था. डौली भूखी थी, पर खा नहीं पाई.

कोठरी और दालान के बीच बिना किवाड़ की चौखट पर अम्मां ने पुरानी धोती का परदा डाल दिया. घुटन और बढ़ गई. फटे से परदे के पार, दो कदम दूर सात जोड़ी आंखें थीं. पूरे कपड़े पहने भी डोली अपनेआप को नंगा महसूस कर रही थी.

उस कोठरी का आदी मंगत भी वहां डौली की उपस्थिति में सहज नहीं हो पा रहा था. उस ने अभी तक अपने कपड़े भी नहीं उतारे थे.

"बैठो, डौली." उस ने दोहराया.

डौली खाट की पट्टी पर सुकचाती हुई बैठ गई. सामने पड़े लोहे के बक्स पर मंगत बैठ गया. दोनों अपने खयालों में खोए थे.

वे अभी उसी प्रकार बैठे थे कि अचानक लाल साहब और पुलिस अधीक्षक सुंदर सिंह पुलिस बल के साथ तीन पुलिस जीपों में वहां पहुंच गए.

कार चलाना सीख कर डौली 9 बजे तक तो घर आ ही जाती थी. जब साढ़े दस बजे तक नहीं आई और कार भी बंगले में ही खड़ी दिखाई दी तो आया मंजु घबरा गई. उस ने क्लब फोन किया.

लाल साहब भागे आए. दरबार मंगत का दोस्त था. एक बार उस के गांव हो आया था. पुलिस अधीक्षक सुंदर सिंह लाल साहब के दोस्त थे. उन्हें सिनेमा के दूसरे शो से पकड़ा और तीन पुलिस जीपों में धावा बोल कर गांव का घर घेर लिया.

रंजना घर पर रोरो कर बेहाल पड़ी थी.

लाल साहब को देखते ही डौली खिल उठी और उन से लिपट कर सुबकसुबक कर रोने लगी. शाम 7 बजे लाल साहब से उस की संक्षिप्त सी 'हाय' हुई थी. पर उसे लग रहा था कि वह उन से युगों के बाद मिल रही हो. पता नहीं, कितने तूफान थे जो आंखों की राह बह जाना चाहते थे.

मंगत को हथकड़ियां डाल कर तीनों जीपें पुलिस स्टेशन वापस आईं. पुलिस अधीक्षक के वातानुकूलित कार्यालय में आराम से बैठी थी डौली और मंगत हवालात में बंद था. "अब चिंता की कोई बात नहीं है, बेटी. मुझे यह बताओ कि कैसे मंगत गुंडा तुम्हें भगा कर ले गया?" पुलिस अधीक्षक ने डौली से पूछा.

कल्पनाशील डौली उन्हें एक फिल्म पर आधारित अपने साथ बीती वारदात लिखवा रही थी. उस फिल्म में एक गुंडा बहलाफुसला कर एक निरीह बालिका का अपहरण करता है और उस के साथ बलात्कार की असफल कोशिश करता है.

इश्क का भूत, पता नहीं, कब का और कहां विलीन हो चुका था

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किशोर उम्र की बेटी और मां का व्यवहार

(पृष्ठ 152 का शेषांश)

...ारेगी. उसे घर से बाहर निकलना हैं. ...र बाहर की दुनिया में हर तरह के लोग है, ...ने भी, बुरे भी. वहां आसानी भी हैं, ...ठिनाई भी. मां कब तक कवच बन कर ...ेटी के साथ जुड़ी रहेगी? यह संभव ही नहीं

याद रखने की बात यह है कि सिर्फ ...देश ही काफी नहीं हैं. उन के व्यवहार, ...लन और परीक्षण का अवसर मिलना ही ...हिए. तभी पता लगेगा कि लड़की किसी ...टिल परिस्थिति से कैसे जूझती है.

जिंदगी सिर्फ सफलता ही नहीं है. ...फलताअसफलता, अच्छेबुरे, स्याहसफेद, ...ो सभी रंग जीवन के तानेबाने में होते हैं. ...ोई गलती हो जाना जीवन का अंत नहीं है. ऐसे समय में बेटी को पूरा सहारा मिलना चाहिए. फलस्वरूप उस में आत्मविश्वास ...ो आएगा ही, मां को वह अपना विश्वासपात्र बना लेगी.

लड़कालड़की का अंतर घर के ...तावरण में न घुसने पाए. प्रायः मां बेटे व ...ेटी को अपने ही घर में अलगअलग कटघरे ...ें खड़ा कर देती है. क्या बेटी अपनी इच्छा से ...ड़की बनी है? यह जीवन तो मां ने उसे ...या है. जो अपराध उस का नहीं है उस का ...लाहना उसे क्यों? इसी अलगाववादी नीति ...े बेटी मानसिक ग्रंथियों में उलझ जाती है. ...िखा इसी ग्रंथि से पीड़ित है.) अनुशासन ...ा अंकुश बेटाबेटी दोनों के लिए होना चाहिए. बेटी देखती है कि भाई तो और ...ड़कियों के साथ घूमताफिरता है. ये ...ड़कियां भी तो किसी की बहन, किसी की ...ेटी हैं. भाई को मां यह हक क्यों दे रही है? ...हुत युक्ति संगत तर्क है और इसी बिंदु पर ...ी प्रायः चूक जाया करती है. यह चूक मत ...ीजिए. अपनी बेटी का विश्वास मत ...ोड़िए.

एक दिन कालिज की एक लड़की ने अपनी समस्या बताते हुए मेरे सामने एक सवाल रखा था, "शादी से पहले मातापिता हम पर खूब पहरा रखते हैं. लड़कों से मत मिलो. बात मत करो आदि. विवाह के बाद एक लड़के की मानसिकता, उस की अपेक्षाओं या जरूरतों को हम कैसे समझ पाएंगी? तब परेशानी तो हमें उठानी पड़ेगी न?"

स्कूल के बाद कालिज में प्रवेश का समय लड़की के लिए एक नया कदम होता है. स्कूली जीवन काफी हद तक सुरक्षित होता है. कालिज में आते ही एक अनंत आकाश उस की सीमा बन जाता है. बहुत स्वाभाविक है कि इस दौरान लड़की अनेक अनुभवों से गुजरेगी. कभी चिड़चिड़ाएगी, कभी गंभीर होगी. कभी मां की तरफ सहारे की नजर से देखेगी. उस समय उसे समझना बहुत ज़रूरी है. कालिज जीवन के पहले दोतीन साल लड़की के व्यक्तित्व को एक ठोस आधार देते हैं. घर में उस पर पाबंदियां हैं तो वह बाहर के खुले वातावरण में 'बहुत कुछ' करना चाहेगी.

एक बात याद रखें लड़केलड़की का पारस्परिक आकर्षण एक नितांत स्वाभाविक भाव है. एकदूसरे से बात करना, मिलबैठना कोई पाप नहीं है. लड़का हो या लड़की दोनों से अपनी बेटी को समान मैत्री भाव से मिलने दें. बेटी के सहपाठियों को चाहे (लड़के हों या लड़कियां) सहज रूप से घर आने दें. तभी मां समझ पाएगी कि उस की बेटी किस तरह के दोस्तों के साथ उठतीबैठती है. उन में कुछ 'खोट' दिखाई दे तो बेटी के साथ खुल कर बात करें. वह अवश्य समझ जाएगी.

कालिज के साथ ही पिकनिक पर जाना, भ्रमण स्थलों पर घूमना, फिल्म देखना, यह सब भी प्रारंभ हो जाता है. लड़केलड़कियां मिल कर जा रहे हैं तो क्या हर्ज है. सुसंस्कृत लड़की किसी भी अवांछनीय व्यवहार को सहेगी नहीं. अगर उस के किसी सहपाठी के व्यवहार में उसे 'खोट' नजर आ गई तो मां के कहने से पहले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह स्वयं ही उस से किनारा कर लेगी.

अपनी बेटी पर विश्वास रखें. एक घटना याद आ रही है. एक दिन कालिज के दूसरे या तीसरे वर्ष की एक छात्रा की मां का फोन आया. उन्होंने बताया कि उन की बेटी के कालिज के कुछ छात्र, जिन्हें वह भी जानती है, बिना किसी प्राध्यापक को साथ लिए, 'ट्रैकिंग' के लिए जाना चाहते हैं. लड़केलड़कियां एक साथ रहेंगे भला कैसे जाने दूं? आप क्या सलाह देती हैं?''

मांबेटी के विश्वास की परीक्षा

मां और बेटी के विश्वास की कड़ी परीक्षा थी. मैं ने उन से पूछा कि क्या वह अपनी बेटी पर विश्वास रखती हैं. अगर नहीं तो ऐसा कुछ नहीं है जो वह ट्रैकिंग पर जा कर करेगी और अब तक नहीं कर चुकी होगी. और क्या वह अपनी बेटी के साथ उस की पढ़ाई के लिए, उस के दफ्तर सब जगह साथ जाएंगी, क्या उसे घर में बिठा कर रखेंगी? अगर नहीं तो किसी दिन तो बेटी अकेली अपनी मरजी से बाहर की दुनिया में निकलेगी ही. तब अच्छीबुरी समझ उसे कहां से होगी? अब अगर वह उसे जाने देंगी तो बेटी कृतज्ञ होगी कि सहपाठियों के बीच उस की रूढिवादिता का मजाक नहीं बनेगा आप को अपना विश्वासपात्र मित्र समझेगी और घूमने के दौरान आप के विश्वास की अमानत की तरह रक्षा करेगी.

उन्होंने तर्कसंगत मान कर यह फैसला स्वीकारा और परिणामस्वरूप अपनी बेटी को अपने बहुत करीब पाया.

ऐसा ही संतुलित व्यवहार वांछनीय है. पर कम ही देखने में आता है. प्रायः हर इनसान पूर्वाग्रहों से बंधा रहता है. किसी भी प्रतिक्रिया के पीछे ये पूर्वाग्रह, ये मानसिक कुंठाएं जुड़ी रहती हैं. बेटी के प्रति असंतुलित व्यवहार का एक मनोवैज्ञानिक और महत्त्वपूर्ण कारण ये पूर्वाग्रह भी होते हैं. ये सामने आ कर क्रियाशील नहीं होते, बल्कि हमारे चिंतन के नीचे छिप कर बैठे रहते हैं.

एक मां भी इन्हीं पूर्वाग्रहों से ग्रसित हो सकती है. उस के अपने बचपन और किशोरावस्था के अनुभव संभवतः उस की सोचने की प्रक्रिया को प्रभावित करते हों. अपनी उस उम्र के अधूरे सपने, अस्वस्थ वातावरण, कड़वी यादें, घुटती इच्छाएं–इन में से कुछ भी क्रियाशील हो तो व्यवहार में व्यक्त होगा ही. अब यह वहां का न्याय है कि मां के अभावों की सजा बेटी को मिले?

'मां' शब्द अपनेआप में अनेक उत्तरदायित्वों की गरिमा से भरा हुआ है. इसी नाते प्रत्येक मां के लिए अनिवार्य है कि वह बेटी को एक उज्ज्वल जीवन की राह दिखाए.

पर जीवन तो जीवन ही है न. प्रयोगों और परीक्षणों का एक पुलिंदा. प्रयोग कभी गलत भी तो हो सकते हैं. भलाई इसी में है कि जब भी गलती का एहसास हो जाए, अपना रुख मोड़ दें. बेटी को बहुत ही आजादी दे रखी हो और मां उस के बुरे परिणाम को नजदीक पा कर चेत जाए तो भलाई उसे वहीं संभाल लेने में है. ऐसे में डांटडपट काम नहीं आती. परिचित वातावरण में से ऐसे उदाहरण बेटी के सामने रखें, उस की मित्र बन कर उस की बुद्धि के कपाट पर दस्तक दें. अपने परिवार के परिवेश के अनुकूल कोई ऐसी कड़ी पकड़ें जो बेटी को सहज ही समझ आ सके. इस में समय तो अधिक लगेगा, पर बड़े नुकसान से बच जाएंगे. बरसों की कमी को दूर करने में वक्त तो लगता ही है.

इस के विपरीत है रेखा की समस्या. इस में सब से महत्त्वपूर्ण बिंदु था भाई की आजादी. उस को सीमा में खींच कर लाना रेखा को स्वाभाविक रूप में लाने की पहली कड़ी बनी. रेखा को सुना कर रेखा के भाई को समझाना कि ''जो तुम कर रहे हो वैसे ही इस लड़की को भी छूट मिलनी चाहिए. तुम लड़कियों के साथ कहीं भी जा सकते हो तो रेखा भी जाएगी. तुम देर से आओगे तो रेखा भी देर तक बाहर रह सकेगी.''

इस तरह संवाद का दोहरा प्रभाव

अंकिता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...ग. एक ओर यह सुन कर रेखा की ...ओं में हलचल मचेगी. वहां लगा हुआ ...दूर होना शुरू होगा. दूसरी तरफ, भाई, ...अभी तक सिर्फ अपने लिए जी रहा था, ...नी ज्यादतियों को कुछ समझने लगेगा. ...न की घुटन को कुछ महसूस करेगा और ...ी तथ्य रेखा की बंद अर्गलाओं को खोलने ...सहायक सिद्ध होगा.

उर्मिला ने बताया था कि पूरे परिवार ...साथ वे शायद ही कहीं घूमनेफिरने गए ...ंगे. दूसरा महत्त्वपूर्ण बिंदु यह है. वह ...ड़की, जो बरसों से दूसरों के समक्ष दबी ...ी है, अचानक बाहर वालों के साथ सहज ...ी हो सकेगी. परिवार के साथ की गई ...कनिक या देखी गई फिल्म या कोई ...रसपाटा उस को सहज करने में योगदान ...गा.

बाहर जा कर उस की गतिविधियों की सहज प्रशंसा भी उस में आत्मविश्वास जगा सकती है. धीरेधीरे ये सब बातें अपना असर दिखाना शुरू करेंगी ही.

एक बात जरूर याद रखने की है कि इस मानसिकता से गुज़र रही लड़की को, खासकर किसी और के सामने, डांटेंडपटें नहीं. वह भी एक इनसान है. और आप इस बात को समझती भी हैं उस को यह एहसास कराएं.

हां, एक बात और. यह एक इत्तिफाक ही है कि उर्मिला की समस्या के समाधान का पता भी ठीक उसी तरह मुझे लगा जैसे उस का प्रारंभ हुआ था.

जी, हां. एक दिन कहीं जाने को तैयार थी कि फोन की घंटी बजी. "आप के सुझावों के लिए धन्यवाद. आज मेरी बेटी अपने सहपाठियों के साथ फिल्म देखने जा रही है. और हां, मैं उर्मिला बोल रही हूं." ●

अब आफसेट की छपाई के लिए आधुनिकतम लेज़र स्केनर द्वारा कंप्यूटर नियंत्रित पाजिटिव बनाने की सुविधा उपलब्ध.

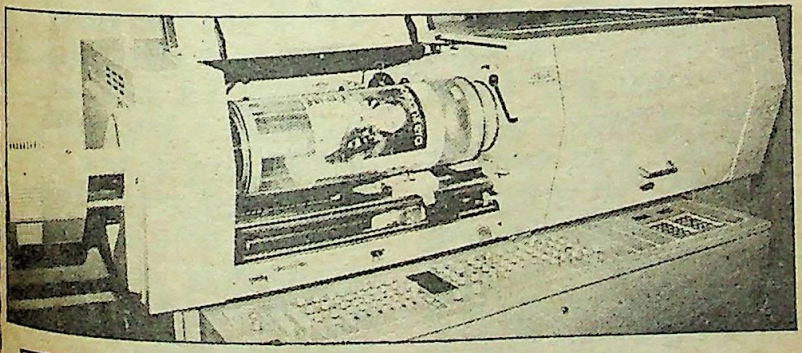

प्रकाशक व मुद्रक संपर्क करें :

प्रतिछाया प्रा.लि. दिल्ली प्रेस भवन, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली. टेली फोन : 526097

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मांबेटी और यौन समस्याएं

(पृष्ठ 171 का शेषांश)

चाहिए. इस से यह उम्र परेशानी का कारण न बन कर आनंददायक बन जाएगी.

यह उम्र विपरीत सेक्स (यौन) के प्रति एक सहज आकर्षण से भरी होती है, अतः इस के लिए बेटी को डांटनाडपटना उचित नहीं, बल्कि कक्षा के छात्रों व पड़ोस के हमउम्र किशोरों से अपनी देखरेख में मेलमिलाप होने देना चाहिए. इस से मां भी आश्वस्त होगी, बेटी भी निश्चित.

इन सब से बढ़ कर एक बात है, मांबेटी को सदा यह जताती रहे कि 'बड़े होने' के लिए वह दोषी नहीं है. ऐसा उसी के साथ नहीं होता, बल्कि ऐसा होना प्राकृतिक रूप से अनिवार्य है. यह उन के जीवन का एक सुखद चरण है, इस में कुछ भी अनैतिक, अप्राकृतिक या अधार्मिक नहीं है.

यह देखा गया है कि विवाह के बाद भी कुछ युवतियां पति के साथ अपने संबंधों को स्वीकार नहीं कर पातीं. वे वैवाहिक जीवन के सुख का उपभोग करने के साथसाथ एक अपराध बोध से भी ग्रसित रहती हैं. इस प्रकार की धारणाएं मां ही बेटी के साथ चर्चा कर के दूर कर सकती है. मां से निराश बेटियां फूहड़ साहित्य, गलत सहेलियों या पड़ोसिनों से जानकारी हासिल करने का प्रयत्न करती हैं जो निहायत गलत है.

माताएं प्रायः अपनी व्यस्तता के कारण किशोरियों की समस्याओं या उलझनों पर ध्यान नहीं देतीं. लेकिन अपनी किशोरावस्था, युवावस्था की समस्त जानकारियां व निर्देश ममतामयी मां से मिलना मांबेटी दोनों के ही लिए श्रेयस्कर है. इस से बेटी को यह विश्वास रहेगा कि वह कोई गलत जानकरी नहीं पा रही है, दूसरी ओर मां को यह मालूम रहेगा कि उस की बेटी किसी भी अनुचित स्रोत से मार्गदर्शन नहीं पा रही है.

अच्छा हो यदि माताएं अनभिज्ञता का बहाना न बना कर बेटी को इस क्षेत्र में शिक्षित करने के महत्त्व को समझें. यह उन का दायित्व है. यदि आवश्यक हो तो किसी महिला चिकित्सक या विशेषज्ञा से स्वयं सब जानें व अपनी बेटी को भी बताएं. अपनी बेटियों को स्वास्थ्य व स्वच्छता संबंधी बातें अवश्य बताएं. "फुरसत नहीं है" या "मेरा दिमाग मत चाटो" आदि कह कर बेटी को अपने से विमुख न करें. उन की जिज्ञासाओं व रुचियों के प्रति उदासीन न रहें.

प्रायः मातापिता बेटी की अभिरुचियों के विकास में विशेष रुचि नहीं लेते. वे सोचते हैं कि जाने भविष्य में अपनी ससुराल में वे अपनी रुचियों की तुष्टि कर सकेंगी या नहीं. यह एक कुतर्क ही है. बेचारी बेटियां न बाद में अपनी इच्छाएं पूरी कर पाएंगी, न अभी. उचित मांगों, इच्छाओं व अभिरुचियों पर तुषारपात न करें. खास तौर से सिनेमाघर, बाजार या होटलों में यदि मां बेटी को सहेलियों या भाइयों के साथ न भेजना चाहे तो स्वयं उसे इन स्थानों पर ले जाए.

नारी जन्म लेना अभिशाप है, बेटी को यह अनुभूति न होने दें. जिस दुरवस्था में मां जीती है, वही हालत बेटी को न सहनी पड़े. इस के लिए मां को ही ध्यान रखना है. स्वयं अपनी मां, सास, ननदों, जेठानियों या समाज के अन्य वर्गों की महिलाओं से प्रताड़ित मां प्रायः अपनी बेटी को इन सब के लिए मानसिक रूप से तैयार करती रहती है. अगर बेटी भाइयों की तुलना में अपने प्रति होने वाले किसी अन्याय का या भाइयों के अत्याचार का विरोध करती है तो मां उसे यह न समझाए कि "क्या करेगी री? यह तो कुछ नहीं, अभी तो ससुराल में न जाने क्याक्या सहना पड़ेगा."

बेटी के व्यक्तित्व का, उस की अस्मिता का निर्माण करें. उसे आत्मनिर्भर व आत्मविश्वासी बनाएं. उसे जीवन को 'भुगतने' के लिए तैयार न करें. अपितु जीवन जीने के लिए, जीवन का आनंद उठाने के लिए तैयार करें.

—अनिता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भरोसा बेटी का

(पृष्ठ 137 का शेषांश)

के घर आता था. उसे रीता या उस के बाप ने कभी कुछ नहीं बताया था. परंतु उस घर में घटी त्रासदी उस से छिपी न रह सकी.

"एक बार वह दो दिन के लिए ठहरा. उस ने रीता के बाप को छिप कर रोते देखा. रीता की डबडबाई आंखें भी उस से छिपी न रह सकीं. फिर घर में एक शिशु की उपस्थिति—सारे तथ्य उस घर की विभीषिका की कहानी कह रहे थे," रुकते कहते मैं ठिठक गई. मैं ने रीमा के चेहरे पर उभरते भावों को पढ़ा. उस की आंखों में प्रशंसा थी. मैं ने आगे कहना शुरू किया, "शायद वह कानपुर से आने वाला लड़का भी एकाकी और व्यथित था. बाद में रीता ने बताया था कि उस की शादी हो गई थी. किंतु लड़के की पत्नी विवाहपूर्व किसी अन्य लड़के से प्रेम करती थी. विवाह के छः सात मास बाद ही वह उसे छोड़ कर चली गई थी."

"देखा, मां. हमेशा पुरुष ही गलती नहीं करता..."

"उस कानपुर वाले लड़के ने रीता के घर में कैंसरवार्ड जैसी परेशानी देखी. उस की तुलना अपने अंतर में फैले एकाकी बीहड़ रेगिस्तान से की और बिना किसी झिझक या लागलपेट के रीता से विवाह का प्रस्ताव रख दिया."

"कितना बड़प्पन था उस का, कितना महान पुरुष था वह !"

"हां, रीमा. वह पुरुष सचमुच महान था. उस का प्रस्ताव सुन कर रीता तो बस जड़ सी हो गई थी. उस के बाप खुशी से बेहाल होतेहोते बचे. कृतज्ञता ज्ञापन के लिए वह अपने भावी दामाद के पांव छूने के लिए नीचे झुके और बस झुके ही रह गए."

"मतलब?" रीमा उलझ गई.

"खुशी इतनी अचानक और ज्यादा मिली थी कि उन का कमजोर, आहत हृदय उसे संभाल नहीं पाया. वह रुक गया अचानक."

"ओह, बेचारा. कहीं कानपुर वाला लड़का अपनी बात से मुकर तो नहीं गया?"

"नहीं बेटी. उस ने तो रीता को वह सुरक्षा, सहानुभूति, सहृदयता तथा सुख दिया जो पहला पति भी क्या देता?"

"क्या उन की शादी सफल रही? क्या आप की सहेली खुश थी?"

"बहुत."

"उन के और कोई बच्चा नहीं हुआ?"

"नहीं. दोनों ने फैसला कर लिया था कि वे और बच्चा पैदा कर के घर में समस्या उत्पन्न नहीं करेंगे."

"मां, एक बात बताइए. क्या आप की सहेली के पति ने उस लड़की को पिता जैसा प्यार दिया?"

"रीमा, उस ने किसी अन्य की संतान को अपनी संतान से भी ज्यादा लाड़प्यार से पालापोसा और प्यार दिया."

"सच, मां. इस पूरी कहानी में सब से उत्कृष्ट, आदर्श चरित्र इस पुरुष का है. वह सचमुच महान रहा होगा."

कुछ पल के विश्राम के बाद रीमा ने पूछा, "मां, उस लड़के का क्या नाम था?"

मैं अचकचा गई. तत्काल लड़के का नाम नहीं बता पाई. केवल इतना ही कह सकी, "नाम? वह तो याद नहीं."

रीमा की एक्सरे सी तीक्ष्ण दृष्टि मेरे चेहरे पर टिकी थी. उस के चेहरे पर सूर्योदय की सी आभा उभरने लगी थी. मैं थोड़ी हड़बड़ा सी गई थी. धोती के पल्लू को लगातार उंगली में लपेटे जा रही थी. लग रहा था जैसे रीमा ने मेरी चोरी पकड़ ली हो, या उस ने कहानी के नायक की तलाश में सफलता पा ली हो.

तभी घंटी बजी. उस संगीतमय स्वर ने मुझे उस भावनात्मक संकट से उबार लिया. मैं उठी, दरवाजा खोला. सामने श्याम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खड़े थे—हाथ में ब्रीफकेस थामे, होंठों पर रुपहली मुसकान सजाए.

"आ गए. कैसा रहा दौरा?" मैं ने औपचारिकता निभाई.

श्याम अंदर आए. उन्होंने मेरी बात का तो कोई जवाब नहीं दिया. हां, रीमा को बड़ी स्नेह भरी दृष्टि से देखते हुए बोले, "लगता है, तुम दोनों महिलाएं मेरे विरुद्ध कोई भयंकर षड्यंत्र रचने में व्यस्त थीं?"

रीमा उठी. वह हंस नहीं पाई. बाप के पास आई. उन्हें ऊपर से नीचे तक घूर कर वह मेघ गर्जन जैसे धीरगंभीर स्वर में बोली, "पिताजी, आप सचमुच महान पुरुष हैं."

"अरे भई, इस बात में तो कभी कोई शकशुबहा नहीं रहा. पर आज बाप को इतना ढेरों मक्खन क्यों लगाया जा रहा है, क्या चाहिए?"

बाप का विनोद मिश्रित स्वर रीमा को सहज नहीं कर पाया. वह बोली, "पिताजी, आप महामानव हैं."

"अरे भई, यह क्या हो रहा है? लड़की सामान्य नहीं लग रही है. यहां मानव बने रहना मुशकिल हो रहा है, और यह 'महा' लगा कर हमारी तो लुटिया ही डुबोना चाहती है."

"पिताजी, सचमुच आज आप मेरी नजरों में कुतुबमीनार से भी ऊंचे हो गए हैं."

"अरे श्रीमतीजी, इस लड़की को क्या हुआ है? आजकल मक्खन की इतनी किल्लत है बाजार में और यह है कि..."

"पराग के साथ हिमपात देखने मसूरी जाना चाहती है. इसी लिए मक्खन लगा रही है." मैं ने श्याम को सूचना दी.

अनायास रीमा मेरे सामने तन कर खड़ी हो गई. फिर बेहद तल्ख स्वर में बोली, "मां, मैं सब कुछ समझ गई हूं. कहानी के लिए धन्यवाद. कहानी रोचक थी. पर उस में अनाम, अनचाहे लड़के की भूमिका को आप ने एकदम अनदेखा कर दिया. काश, आप समझ सकतीं. यह पता लगने पर कि तुम अवैध, अवांछित और किसी की दया और भिक्षा में मिली सहानुभूति पर पल कर बड़ी हुई हो, कैसी घोर निराशा होती है."

और रीमा रोती हुई अपने कमरे में दौड़ गई. फिर उस ने अंदर से दरवाजा बंद कर लिया.

मैं घबरा गई. यह कैसी अनहोनी हुई. कहीं लड़की कुछ कर न बैठे? मैं बंद दरवाजे को पीटने लगी.

श्याम पीछे से आए. मेरे कंधे पर हाथ रख कर बोले, "यह तुम ने क्या किया? मैं ने वर्षों पहले तुम से कहा था कि अपनी जीवन की व्यथाकथा रीमा को कभी मत सुनाना. पर तुम नहीं मानी."

"मैं ने नहीं सुनाई. मैं ने तो इस कहानी को अपनी एक सहेली रीता के साथ जोड़ दिया था."

"तुम्हारी बेटी भावुक हो सकती है, पर मूर्ख नहीं."

"मुझे डर लग रहा है. कहीं वह कुछ कर न बैठे?"

"नहीं, वह कुछ नहीं करेगी. रहस्योद्घाटन के इस अप्रत्याशित धक्के से उबरने की कोशिश कर रही है. कुछ देर में वह स्वस्थ और सहज हो जाएगी." कहते हुए श्याम ने मेरी बांह पकड़ी और मुझे साथ ले कर सोफे पर बैठ गए.

मैं उठी. श्याम के लिए चाय बना लाई. वह थकेहारे दौरे से लौटे थे और घर में यह नाटक हो गया था.

"आखिर, तुम ने उसे यह कहानी क्यों सुनाई?" काफी पीते हुए श्याम ने पूछा.

"वह अपने कुछ दोस्तों के साथ मसूरी जाना चाहती है. मैं ने मना किया तो वह जिद करने लगी. हार कर मुझे अपनी जिंदगी से अभिशप्त छाया सी लिपटी व्यथाकथा को घुमाफिरा कर उसे सुनाना पड़ा."

"मंजरी, आखिर तुम अपनी कटु अनुभूति का साधारणीकरण क्यों करती रहती हो? जो कुछ तुम्हारे साथ बीता, वह हर लड़की के साथ हो, यह जरूरी तो नहीं. तुम्हारे अपने कटु, जहरीले अतीत से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुरुष होने के नाते मैं चाहता हूं कि वह पुरुषों के संसार में रह कर जीना सीखे. हां, हमें इस संसार के खतरों से उसे जरूर आगाह कर देना चाहिए."

और उस के बाद एक अर्थपूर्ण चुप्पी की लकीर खिंच गई हम दोनों के बीच.

मैं उत्सुकतापूर्वक घर के तनावपूर्ण माहौल के सहज होने की प्रतीक्षा करती रही. रीमा के कमरे से कुछ अस्पष्ट सी आवाजें आ रही थीं—रहस्यपूर्ण और आतंकभरी.

हम दोनों उठे—चिंतित और परेशान से. अचानक रीमा के कमरे का दरवाजा खुला. वह चौखट पर खड़ी थी—उदास. पर सहज एवं स्वस्थ होने की चेष्टा करती हुई. उस की आंखें लाल थीं.

रीमा ने मेरी ओर देखा. उस के चेहरे पर प्रताड़ना और अस्वीकृति के मिलेजुले भाव थे.

फिर रीमा ने श्याम की ओर नजरें घुमाईं—प्रशंसा और कृतज्ञता से लबालब.

हिंदू समाज के पथभ्रष्टक तुलसीदास

संत कवियों की प्रशंसा की परंपरा चली तो आलोचकों ने तुलसी को हिंदी साहित्य का सूर्य और हिंदू समाज को स्थायी संबल देने वाला घोषित कर दिया. प्रशंसा की इस चकाचौंध में किसी ने यह सोचने की चेष्टा नहीं की कि तुलसी वास्तव में क्या थे? यह हिंदू समाज के पथ प्रदर्शक थे या पथभ्रष्टक?

हिंदू समाज को पथभ्रष्ट करने वाले इस संत कवि के साहित्यिक आडंबरों की पोल खोल कर उस की वास्तविकता पाठकों के सामने रखना ही इस पुस्तक का उद्देश्य है. आशा है इस से पाठकों को तुलसी साहित्य के बारे में एक नई दृष्टि से सोचने की प्रेरणा मिलेगी.

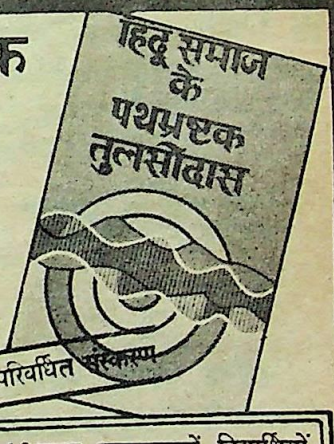

मूल्य 10 रुपए. पुस्तकालयों, विद्यार्थियों तथा अध्यापकों के लिए विशेष छूट केवल 5 रुपए. डाक खर्च 3 रुपए- वी.पी.पी. भेज कर लिए जाएंगें. रजिस्टर्ड डाक से डाक व्यय 5 रुपए. आदेश के साथ 5 रुपए अग्रिम भेजें.

दिल्ली बुक कंपनी एम - 12, कनाट सरकस, नई दिल्ली - 110001

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अचानक वह आगे बढ़ी और उस की गरदन में बांहें डाल कर झूल गई. लाड़ भरे स्वर में बोली, "पिताजी, आप सचमुच महान हैं. यदि आप जैसा अभिभावक मुझे नहीं मिलता तो क्या आज मैं जीवित होती या वह होती जो मैं हूं?"

श्याम के चेहरे पर आत्मसंतुष्टि का इंद्रधनुष सज गया. उस की बांहों को पकड़ कर उन्होंने उसे सीधा खड़ा किया और फिर उस के दोनों गाल थपथपा कर बोले, "तुम मेरी बहुत ही प्यारी बेटी हो. तुम तो मेरी लाड़ली बेटी हो."

पाठकों की सेवा में:

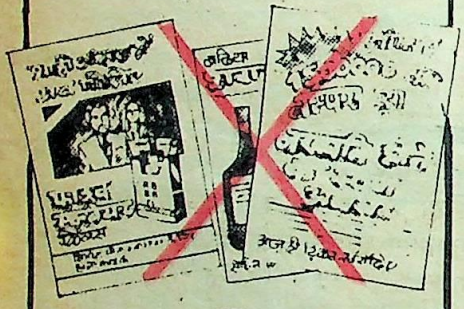

सरिता

में
सिगरेट, शराब, लाटरी
(सरकारी जुआ/धोखाधड़ी)
बोगस पत्राचार शिक्षण संस्थाओं
के विज्ञापन प्रकाशित नहीं किए
जाते और न ही जनभ्रामक
ज्योतिष की साप्ताहिक या
- पाक्षिक तथाकथित
भविष्यवाणियां.

"अगर ऐसा है तो आप फैसला कीजिए. मैं आप के निर्णय का विरोध नहीं करूंगी."

"तुम मसूरी जा रही हो?" श्याम ने शांत स्वर में पूछा.

"धन्यवाद. पिताजी," कह कर वह मेरी तरफ पलटी और व्यंग्य भरे स्वर में बोली, "मां, आज की पीढ़ी पहले से कहीं ज्यादा प्रबुद्ध हो गई है. यह मत सोचना कि मैं इतनी मूर्ख हूं कि पराग के साथ मसूरी सैर करने जाऊं और जब लौटूं तो साथ में उपहारस्वरूप छोटी रीमा मेरे पास हो."

मेरा चेहरा लिली की भांति सफेद पड़ गया.

"मां, मैं तुम्हारी दुश्चिंताओं का कारण समझती हूं. साथ ही मैं तुम्हें आश्वस्त करना चाहती हूं कि तुम्हारी बेटी अब बच्ची नहीं रही है. वह जानती है कि सच्चा सुख वासना में नहीं, प्रेम में है. हर नारी के लिए पुरुष के प्रति समर्पण एक यज्ञ है. पर वह यह यज्ञ जीवन में केवल एक बार करती है."

"वह केवल उसी के समक्ष समर्पित होती है जो उस का जीवनसाथी बन चुका हो. क्षणिक भावावेश तथा उत्तेजना की बाढ़ में बह कर किसी ऐरेगेरे नवयुवक के साथ शय्याशायी होना आत्मघाती कदम है, मां," रीमा अपनी रौ में कहती चली गई.

श्याम ने उस के बालों पर हाथ फेरा तो वह मुझ से लिपट गई और मेरे कान में फुसफुसाई, "मां, अपनी रीमा पर विश्वास करो. जो गलती तुम ने की, उसे मैं कभी भी नहीं दोहराऊंगी. मेरी दोस्ती कई लड़कों से हो सकती है, पर प्रेम केवल एक से ही करूंगी मैं. फिर भी अगर तुम्हें मेरे मसूरी जाने पर एतराज है तो मैं नहीं जाऊंगी. मैं नहीं चाहती कि तुम तीनचार दिनों तक चिंता की आग में जलती रहो."

मैं ने रीमा को कस कर अपने वक्ष से लगा लिया. मेरे मुंह से बरबस निकल गया, "बेटी, मुझे तुम पर भरोसा है."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या आप को भी वरवधू की तलाश है?

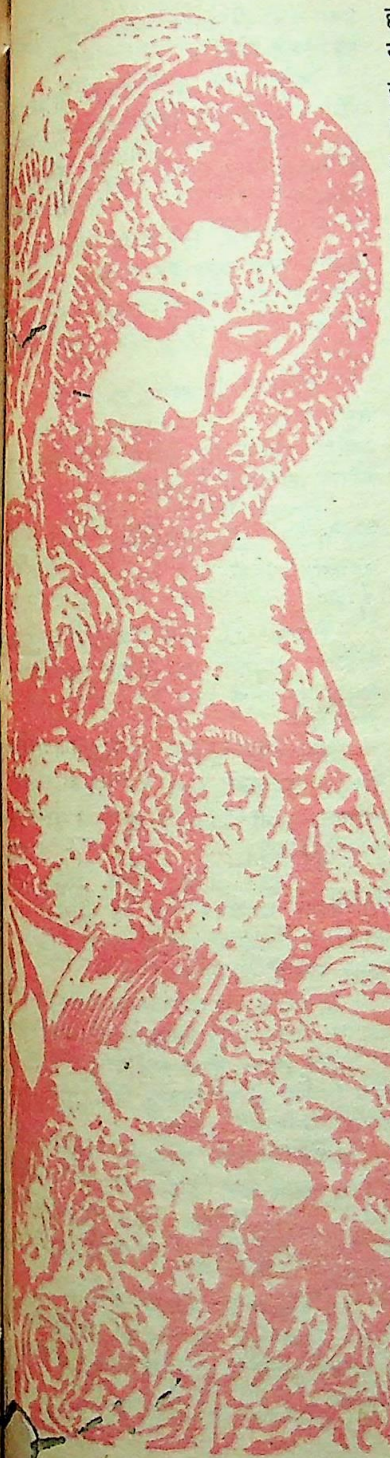

हम ने हजारों दंपत्तियों के
सुखी घर बसाए हैं.
हम ने हजारो आदर्श वरवधुओं को
एक हो जाने में
सहायता की है.

कैसे?

उन्होंने स्वयं
या उन के मातापिता ने
विज्ञापन दिया.
उन का विज्ञापन
सरिता के वैवाहिक विज्ञापनों में 15 दिन
तक आदर्श वरवधू तलाश करने वालों को
आकर्षित करता रहा.

सरिता

आज 75 लाख से अधिक स्त्रीपुरुषों द्वारा
महीने में दो बार पढ़ी जाती है.
सरिता की विशिष्ट व मनोरंजक
कहानियां 15 दिन तक पाठकों के
आकर्षण का केंद्र बनी रहती हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यक्तिगत विज्ञापन

वैवाहिक विज्ञापन

वर चाहिए

बुलंदशहर निवासी, हिंदू जाटव, 147 सें.मी., 27 वर्षीया, एम.ए., एलएल.बी., म.प्र. शासकीय सेवारत, आय चार अंकीय, सुंदर, सुशील, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु म.प्र. शासकीय सेवारत, सजातीय वर चाहिए. पिता म.प्र. शासकीय सेवक. विज्ञापन उत्तम चयन हेतु. शीघ्र विवाह. लिखें: वि.नं. 9335, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23 वर्षीया, 160 सें.मी., गोरी, एम.ए., गृहकार्यदक्ष, कुर्मि क्षत्रिय कन्या हेतु सेवारत या व्यवसायरत वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9336, सरिता, नई दिल्ली-110055.

हिमाचली राजपूत कन्या, 26, 157 सें.मी., एम.ए., बी.एड., सुंदर, गोरी कन्या हेतु सजातीय, व्यवसायरत या सेवारत वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9337, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कश्यप राजपूत (मेहरा कहर धीवर), 23/21/19, बी.ए. पास कन्याओं हेतु सुशिक्षित, कार्यरत वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9338, सरिता, नई दिल्ली-110055.

प्रतिष्ठित माहेश्वरी, दिल्ली निवासी परिवार, 25 वर्षीया, 157 सें.मी., एम.कॉम., संतानोत्पत्ति असमर्थ कन्या हेतु ससंतान विधुर, समकक्ष आयु, सुशिक्षित, आधुनिक विचारों, माहेश्वरी, अग्रवाल वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9339, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कान्यकुब्ज कश्यप ब्राह्मण, 25, 153 सें.मी., पीएच.डी. केमेस्ट्री, गोरी, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु केवल कान्यकुब्ज, इंजीनियर/डाक्टर/प्रशासक/समकक्ष वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9340, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सुंदर, स्लिम, 23, 148 सें.मी., एम.एससी., पंजाबी अरोड़ा कन्या हेतु डाक्टर, इंजीनियर, सी.ए. या आर्मी आफिसर वर चाहिए. शीघ्र उत्तम विवाहे. लिखें: वि.नं. 9357, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माथुर कायस्थ, 23 वर्षीया, 154 सें.मी., गोरी, सुंदर, एम.ए. (प्रथम श्रेणी), पीएच.डी. अध्ययनरत, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु सुस्थापित, सजातीय वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9358, सरिता, नई दिल्ली-110055.

उत्तरप्रदेशीय ब्राह्मण कन्या, एम.ए. अंगरेजी (द्वितीय), बी.एड., 21, 158 सें.मी., हेतु सुस्थापित, सजातीय वर. मातापिता प्रोफेसर. लिखें: वि.नं. 9359, सरिता, नई दिल्ली-110055.

22, 164 सें.मी., कुर्मि क्षत्रिय, सुशील, अति सुंदर, कुलीन, आकर्षक व्यक्तित्व वाली, मेधावी, एम.ए., बी.एड. प्रथम श्रेणी, शोध कार्य कर रही कन्या हेतु सजातीय, आई.ए.एस., आई.एफ.एस., आई.पी.एस., पी.सी.एस. (उ.प्र.), डाक्टर, इंजीनियर, प्रथम श्रेणी वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9360, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मि क्षत्रिय, 21, 162 सें.मी., बी.काम., संभ्रांत परिवार की सुशील, गृहकार्यदक्ष, सुंदर, स्लिम, कन्या हेतु शासकीय सेवारत, इंजीनियर, सजातीय, सुयोग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9361, सरिता, नई दिल्ली-110055.

31 वर्षीया, 155 सें.मी., एम.एससी., सुंदर, कायस्थ राष्ट्रीयकृत बैंक में सेवारत, तलाकशुदा, निस्संतान लड़की हेतु वर. कोई बंधन नहीं. प्रथम व पूर्ण विवरण लिखें: वि.नं. 9362, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुशवाहा, 25 वर्षीया, 160 सें.मी., रंग गोरा, सरकारी सेवारत, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु अच्छे पद पर कार्यरत, सुयोग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9363, सरिता, नई दिल्ली-110055.

उत्तरप्रदेश निवासी, 25, 150 सें.मी., साहू (तेली), एम. एससी. (फाइनल), गोरा रंग, कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9364, सरिता, नई दिल्ली-110055.

राजपूत 23, 160 सें.मी., बी.पी.एड., हेतु कार्यरत, सजातीय वर चाहिए. राजस्थानी को प्राथमिकता. लिखें: वि.नं. 9365, सरिता, नई दिल्ली-110055.

बिहारवासी, पंजाबी, 35 वर्षीया, 163 सें.मी., ग्रेजुएट, तलाकशुदा कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 9366, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24, 152 सें.मी., गोरी, स्लिम, बी.ई. इलेक्ट्रिकल, भटनागर कन्या हेतु व्यवसायरत वर. दहेज विरोधी इंजीनियर को प्राथमिकता. लिखें: वि.नं. 9367, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28 वर्षीया, नाई जाति, कोटा निवासी, सरकारी सेवारत, विधवा (1½ वर्षीया लड़की) हेतु सजातीय वर चाहिए. विधुर, तलाकशुदा विचारणीय. सेवारत, कोटा निवासी को प्राथमिकता. लिखें: वि.नं. 9368, सरिता, नई दिल्ली-110055.

दिल्ली निवासी, विश्वकर्मा, सुंदर, सांवली, सुशील, गृहकार्यदक्ष, 158 सें.मी., 23, कन्या हेतु कार्यरत, दहेज विरोधी. जाति बंधनरहित वर निमंत्रित हैं. लिखें: वि.नं. 9369, सरिता, नई दिल्ली-110055.

35, 150 सें.मी., रामगड़िया सिख, एम.ए., बी.एड., अध्यापिका कन्या हेतु सजातीय, सुशिक्षित वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9370, सरिता, नई दिल्ली-110055.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

28, 167 सें.मी., एम.ए., अग्रवाल बंसल, गोरी, कन्या हेतु शिक्षित, कार्यरत वर वांछनीय. सामान्य विवाह. जातिबंधन नहीं. अग्रवाल को वरीयता. लिखें: वि.नं. 9371, सरिता, नई दिल्ली-110055.

मध्य प्रदेश के शासकीय कालिज में सहायक अध्यापिका, गोरी आकर्षक, 29, 155 सें.मी., वास्तव कन्या हेतु उपयुक्त वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9372, सरिता, नई दिल्ली-110055.

चौरसिया, 23, 151 सें.मी., बी.एससी., सुंदर, गृहकार्यदक्ष, कार्यरत कन्या हेतु शिक्षित, कार्यरत वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9373, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24, 155 सें.मी., ग्रेजुएट, इकहरा बदन, गेहुआं आकर्षक, गर्ग बीसा अग्रवाल, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु योग्य, कार्यरत वर चाहिए. शीघ्र, साधारण विवाह. लिखें: वि.नं. 9374, सरिता, नई दिल्ली-110055.

22, 20 वर्षीया, बी.काम., बी.ए., 150 सें.मी., 158 सें.मी., माहेश्वरी, गृहकार्यदक्ष कन्याओं हेतु माहेश्वरी, सुशिक्षित, सामाजिक प्रतिष्ठित वर चाहिए. दहेज नहीं. लिखें: वि.नं. 9375, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26 वर्षीया, एम.ए. समाजशास्त्र, 160 सें.मी., गेहुआं रंग, माहेश्वरी कन्या हेतु माहेश्वरी या अग्रवाल वर. लिखें: वि.नं. 9376, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23 वर्षीया, 155 सें.मी., ग्रेजुएट, हिंदू अरोड़ा, शाकाहारी, उच्च घराना हेतु शाकाहारी, ग्रेजुएट वर. विवाह उत्तम, राधास्वामी को प्राथमिकता. लिखें: वि.नं. 9377, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गोयल, अग्रवाल, अंडरमैट्रिक, 22 वर्षीया, 168 सें.मी. लंबी कन्या हेतु दिल्ली या आसपास में वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9378, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कश्यप कहार, बी.एससी., बी.एड., 27, 155 सें.मी., 1,800/-, गेहुआं रंग, सरकारी अध्यापिका, पिता केंद्रीय अधिकारी, दिल्लीवासियों को प्राथमिकता. लिखें: वि.नं. 9379, सरिता, नई दिल्ली-110055.

20½ वर्षीया, 157 सें.मी., कानवेंट शिक्षित, बी.ए., सुंदर, गृहकार्यदक्ष, प्रतिष्ठित माहेश्वरी परिवारीय कन्या हेतु उच्चस्तरीय, व्यावसायिक वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9380, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28 वर्षीया, 157 सें.मी., जुझौतिया ब्राह्मण, रंग गेहुआं, डबल एम.ए., आकर्षक नाकनक्श, गृहकार्यदक्ष हेतु उच्च अधिकारी. शीघ्र, उत्तम विवाह. लिखें: वि.नं. 9381, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28 एवं 26, 160 सें.मी., 162 सें.मी., पंजाबी, इंदौर के प्रतिष्ठित परिवारीय, हायरसेकेंडरी, मोंटेसरी ट्रेंड, सेवारत प्राइवेट स्कूल एवं आफिस, स्मार्ट, अच्छे नैननक्श, उत्तम स्वभावी, गृहकार्यदक्ष कन्याओं हेतु सुयोग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9382, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कश्यप (मल्लाह), 22 एवं 20 वर्षीया, स्नातक, मैट्रिक, सुंदर, गृहकार्यदक्ष कन्याओं हेतु वर. सरकारी सेवारत को वरीयता. जन्मपत्रिका सहित लिखें: वि.नं. 9383, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मी, 23 वर्षीया, एम.ए., बी.एससी., केंद्रीय सेवारत, 2,000/- मासिक, प्रतिष्ठित संपन्न परिवारीय कन्या हेतु सुयोग्य, सजातीय वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9384, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27, 150 सें.मी., एम.एससी., बी.एड., अध्यापिका, घरेलू, पंजाबी खत्री लड़की हेतु सजातीय वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9385, सरिता, नई दिल्ली-110055.

पोस्ट ग्रेजुएट, 26 वर्षीया, 46, 165 सें.मी., हिंदू कन्या हेतु योग्य, कार्यरत, उदार, शाकाहारी, हिंदू, लंबा वर चाहिए. जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 9386, सरिता, नई दिल्ली-110055.

संभ्रांत उत्तर प्रदेशीय अग्रवाल (मित्तल) परिवारीय, 24, 157 सें.मी., बी.एससी.(गृह विज्ञान), प्रथम श्रेणी, रंग गेहुआं कन्या हेतु सजातीय, सुयोग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9387, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24, 155 सें.मी., राजपूत (राजावत), एम.ए., बी.एड., स्मार्ट, स्लिम, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु सजातीय, इंजीनियर अथवा योग्यतानुसार वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9388, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23 वर्षीया, 160 सें.मी., एम.बी.बी.एस. हाऊस सर्जन (अ.जा.), जाटव, गेहुआं रंग, कन्या हेतु एम.डी., एम.बी.बी.एस., इंजीनियर या आई.ए.एस., 23-27 वर्षीय वर चाहिए. दिल्लीवासी को प्राथमिकता. लिखें: वि.नं. 9389, सरिता, नई दिल्ली-110055.

पाल क्षत्रिय, 30, 157 सें.मी., गेहुआं रंग, पीएच.डी. (हिंदी), कन्या हेतु उपयुक्त वर चाहिए. जातिबंधन नहीं. साधारण विवाह. लिखें: वि.नं. 9390, सरिता, नई दिल्ली-110055.

उच्च अधिकारी, सजातीय, कार्यरत, ग्रेजुएट, इंजीनियर वर चाहिए. कन्या एम.एससी., 22, 158 सें.मी., गौरवर्ण, स्मार्ट, सूर्यवंशी क्षत्रिय (राजपूत). पिता उच्च अधिकारी. लिखें: वि.नं. 9391, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुशवाहा राजपूत, 23, 163 सें.मी., पोस्ट ग्रेजुएट, होमसाइंस, व्याख्याता, मांगलिक कन्या हेतु सजातीय, मांगलिक वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9392, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28, 156 सें.मी., 1,900/-, गुप्ता (वैश्य), गोरी, सुंदर, स्टेट बैंक में कार्यरत हेतु सुयोग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9393, सरिता, नई दिल्ली-110055.

19, 153 सें.मी., सिख कन्या, स्मार्ट, सुंदर,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गौरवर्ण, सुशील, स्लिम, स्नातक, संभ्रांत, सुस्थापित दिल्ली के व्यवसायी परिवारीय हेतु संभ्रांत प्रतिष्ठित गुरसिख परिवारीय व्यवसायी से प्रस्ताव आमंत्रित हैं. लिखें: वि.नं. 9394, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सरकारी कार्यरत, 24, 152 सें.मी., 1,500/-, स्नातक, कनोजिया कन्या हेतु दिल्लीवासी वर. लिखें: वि.नं. 9395, सरिता, नई दिल्ली-110055.

160 सें.मी., 31, पतली, आकर्षक, संवेदनशील, बी.एससी., कार्यरत कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9396, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी, वरिष्ठ अधिकारी की सुंदर, मांगलिक पुत्री 22, 165 सें.मी., एम.ए., के विवाह हेतु यथेष्ट परिवार को अति योग्य लड़का चाहिए. लिखें: वि.नं. 9397, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25 वर्षीया, अग्रवाल गोयल, एम.ए. हिंदी, शोध छात्रा, सुंदर, गेहुआं रंग, इकहरा बदन, 154 सें.मी., गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु सजातीय वर चाहिए. विवाह शीघ्र. लिखें: वि.नं. 9451, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23 वर्षीया, 154 सें.मी., हायर सेकेंडरी, श्रीवास्तव कायस्थ (दूसरे), गौरवर्ण, सुंदर, आकर्षक कन्या हेतु कार्यरत वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9452, सरिता, नई दिल्ली-110055.

21 वर्षीया, मैथिल ब्राह्मण, कद 152 सें.मी., रंग गेहुआं, कानवेंट शिक्षित, ग्रेजुएट कन्या के लिए डाक्टर, इंजीनियर, आई.ए.एस. आई.पी.एस., अधिकारी वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9453, सरिता, नई दिल्ली-110055.

21 वर्षीया, 154 सें.मी., भदौरिया, राजपूत, हायर सैकेंडरी, गेहुआं रंग, गृहकार्य में निपुण कन्या हेतु सजातीय वर चाहिए. विवाह उत्तम व शीघ्र. लिखें: वि.नं. 9454, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गुप्ता, 24, 155 सें.मी., एम.एससी. (गणित), गृहकार्यदक्ष, मधुर स्वभाव, गेहुआं रंग, कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. उत्तम विवाह. लिखें: वि.नं. 9455, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27, 160 सें.मी., एम.ए., सरयूपारीण ब्राह्मण, गृहकार्यदक्ष, सुंदर, गौरांग, जिला न्यायाधीश की पुत्री हेतु सजातीय वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9456, सरिता, नई दिल्ली-110055.

31 वर्षीया, 162 सें.मी., राजपूत कन्या हेतु सुयोग्य, सुशिक्षित वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9457, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23 वर्षीया, कुर्मि क्षत्रिय, एम.ए., बी.एड., कन्या हेतु वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9458, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जुझौतिया ब्राह्मण, 24 व 19 वर्षीया, 150 सें.मी., क्रमशः इंटर, बी.ए., सुंदर, गृहकार्यदक्ष कन्याओं हेतु जुझौतिया ब्राह्मण, सुयोग्य, शासकीय अथवा बैंक सेवारत, मध्य प्रदेश निवासी, दहेज विरोधी वर चाहिए. जन्मकुंडली सहित शीघ्र लिखें: वि.नं. 9459, सरिता, नई दिल्ली-110055.

नेपाली सारूमगर, 23 वर्षीया, बी.ए., 160 सें.मी., स्लिम, गृहकार्यनिपुण कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. जातिबंधन नहीं. विज्ञापन उत्तम चयन हेतु. लिखें: वि.नं. 9460, सरिता, नई दिल्ली-110055.

20 वर्षीया, बीसा अग्रवाल, मंगल गोत्र कन्या हेतु सजातीय, चार्टर्ड एकाउंटेंट वर चाहिए. विवाह अति उत्तम. लिखें: वि.नं. 9461, सरिता, नई दिल्ली-110055.

वधू चाहिए

उच्च जाति के स्मार्ट और उच्च शिक्षित बी.काम., एम.बी.ए. (आई. आई. एम.) व्यवसाय, वार्षिक आय छः अंकों में 24, 173 सें.मी., गुजराती युवक हेतु सुसंस्कृत, स्लिम एवं अति सुंदर कन्या चाहिए. जातीय, प्रांतीय बंधन नहीं. विवरण सहित लिखें: वि.नं. 9310, सरिता, नई दिल्ली-110055.

40 वर्षीय, ग्रेजुएट, गोयल, तलाकशुदा, दो लाख सालाना आमदनी, हेतु अविवाहित, गोरी कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 9311, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल, 29, 170 सें.मी., 3,570/-, एम.ए., कानूनन तलाकशुदा, बैंक सेवारत, मेरठ, हेतु सुंदर, कुंआरी कन्या चाहिए. दहेज नहीं. साधारण शादी. लिखें: वि.नं. 9319, सरिता, नई दिल्ली-110055.

बीसा अग्रवाल जैन, उम्र 31, कद 160 सें.मी., आटोमोबाइल इंजीनियर लड़के के लिए सुंदर, सुशील, गोरी लड़की चाहिए. लिखें: वि.नं. 9320, सरिता, नई दिल्ली-110055.

60 वर्षीय, प.उ.प्रदेशीय, पंजाबी, स्मार्ट, विधुर, साधन संपन्न, शाकाहारी, केमिकल मैन्युफेक्चरर्स हेतु चरित्रवान, शांत स्वभाव, उत्साही जीवन जीने तथा पर्यटन की इच्छुक 45 तक की निस्संतान, स्वस्थ जीवनसाथी चाहिए. भविष्य जीवन की गारंटी. शीघ्र लिखें: वि.नं. 9398, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी, 24, 170 सें.मी., बी.ए., जीवन बीमा एजेंट, 3,800/-, मांगलिक हेतु मांगलिक ग्रेजुएट कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 9399, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27½ वर्षीय, 170 सें.मी., स्मार्ट, एम.बी.बी.एस., पंजाबी ब्राह्मण, डाक्टर, निजी अच्छी प्रैक्टिस, प्रतिष्ठित परिवार, भाई डाक्टर एवं आर्मी अफसर युवक हेतु वधू लिखें: वि.नं. 9400, सरिता, नई दिल्ली-110055.

यादव, 28, 170 सें.मी., बी.ए., 1,500/-, केंद्रीय कर्मचारी, कृषि एवं निजी मकान, हेतु उच्च शिक्षित, सुंदर, कन्या चाहिए. [illegible] पजातिबंधन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...ी. लिखें: वि.नं. 9401, सरिता, नई दिल्ली-...10055.

...वर्षीय (वैश्य), 22 वर्षीय, 168 सें.मी., ...क्रम., राष्ट्रीयकृत बैंक सेवारत हेतु सुंदर, लंबी, ...पुण्ड कन्या चाहिए. संपूर्ण विवरण सहित लिखें: ...नं. 9402, सरिता, नई दिल्ली-110055.

...अग्रवाल, 30,175 सें.मी., 2,500/-, व्यवसायी ...सजातीय कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 9403, ...रिता, नई दिल्ली-110055.

...प्रतिष्ठित जाटव परिवार (दिल्ली, आगरा), ...क, 23, टी.वी. मैकेनिक, 1,500/- आय, हेतु ...क्षित वधू चाहिए. विवरण भेजें. लिखें: वि.नं. ...404, सरिता, नई दिल्ली-110055.

...167 सें.मी., कुर्मि क्षत्रिय, राष्ट्रीयकृत बैंक ...युवक हेतु वधू चाहिए. कार्यरत को ...प्राथमिकता. जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 9405, ...रिता, नई दिल्ली-110055.

25 वर्षीय, 178 सें.मी., बी.एससी., एम.बी.ए., ...री व्यापार, शहरी संपत्ति, अति संपन्न, बिहार ...वासी, वैश्य, पिता सरकारी अधिवक्ता, युवक हेतु ...नातक, स्मार्ट, स्लिम, सुंदर, गृहकार्यदक्ष, सुसंपन्न ...रिवारीय कन्या चाहिए. उपजातिबंधन नहीं. प्रथम ...ार में ही पूर्ण विवरण सहित लिखें: वि.नं. 9406, ...रिता, नई दिल्ली-110055.

35 वर्षीय, मैट्रिक, उच्च साहित्य प्रेमी, व्यवसायी, आकर्षक नवयुवक हेतु शिक्षित, मधुर स्वभाव की अति सुंदर, प्रगतिशील विचारों की जीवनसंगिनी चाहिए. जाति व दहेज नहीं. केवल शादी की अत्यंत इच्छुक ही लिखें. गरीब, बेसहारा को प्राथमिकता. लिखें: वि.नं. 9407, सरिता, नई दिल्ली-110055.

मजहब, जाति, दहेज, पारिवारिक बंधनहीन, साहसीप्रिय, प्रकृतिप्रेमी, 28, 168 सें.मी., गौरवर्ण, स्वस्थ, सरकारी सेवारत युवक हेतु खूबसूरत, गोरी, लंबी, छरहरी, स्वस्थ, जिंदादिल, निर्भीक जीवनसाथी चाहिए. लिखें: वि.नं. 9408, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25 वर्षीय, 172 सें.मी., बी.ई., एम.बी.ए., हेतु सुंदर, सुशील एवं शिक्षित वधू चाहिए. दहेज एवं जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 9409, सरिता, नई दिल्ली-110055.

राजपूत क्रमशः 29, 27, 175 सें.मी., बी.ए., एम.कॉम., व्यवसायी, वायुसेना में कार्यरत, प्रतिष्ठित भाइयों हेतु सजातीय कन्याएं चाहिए. लिखें: वि.नं. 9410, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28, 175 सें.मी., पंजाबी भाटिया, इंजीनियर, सेवारत, 5,000/- मासिक, गाजियाबाद निवासी हेतु सुंदर, सुशिक्षित कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 9411, सरिता, नई दिल्ली-110055.

29, [illegible] सें.मी., सिख, इंटरमीडिएट, सरकारी सेवारत, 2,000/- मासिक, विकलांग (पांव से) चलनेफिरने में समर्थ युवक हेतु सुयोग्य, सहचारिणी जीवनसंगिनी चाहिए. दहेज नहीं. लिखें: वि.नं. 9412, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26 वर्षीय, 185 सें.मी., गौड़ ब्राह्मण, प्राइवेट कंपनी में सेल्स इंजीनियर हेतु उच्च शिक्षित, अति सुंदर, लंबी, घरेलू कार्यों में निपुण वधू. दहेज बंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 9413, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जिला सहारनपुर (उत्तर प्रदेश), बीसा अग्रवाल, 34 वर्षीय, 168 सें.मी., ग्रेजुएट, सरकारी सेवारत क्लर्क, 2,200/- मासिक वेतन, तलाकशुदा, निस्संतान युवक हेतु कुंआरी, शिक्षित कन्या चाहिए. दहेज नहीं. लिखें: वि.नं. 9414, सरिता, नई दिल्ली-110055.

35 वर्षीय, मराठी (महार), रेल सेवा में कार्यरत, मासिक आय 2,000/- से अधिक, हेतु स्लिम, गोरी, गृहकार्यदक्ष कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 9415, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26 वर्षीय, 165 सें.मी., लंबे, उत्तर प्रदेश शासन में कार्यरत, गुप्ता, इलेक्ट्रीकल इंजीनियर हेतु संभ्रांत वैश्य परिवारीय, गौरवर्णीय, सुंदर, प्रतिभाशाली कन्या चाहिए, जो मांगलिक न हो. परिवार सीमित, सम्मानित और सुस्थापित. जन्मपत्रिका सहित पत्र व्यवहार करें. लिखें: वि.नं. 9416, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25 वर्षीय, शिक्षित, खत्री युवक, डायबेटिक किंतु हर प्रकार से स्वस्थ एवं योग्य, स्वतंत्र व्यवसाय, आय चार अंकों में, हेतु सुयोग्य कन्या चाहिए. जाति व दहेज बंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 9417, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गर्ग, 26, 180 सें.मी., निजी व्यवसायी युवक हेतु सुंदर, गृहकार्यदक्ष कन्या चाहिए. दहेज बंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 9418, सरिता, नई दिल्ली-110055.

धोबी (व्यवसाय नहीं), 25 वर्ष, 165 सें.मी., एम.ए. अंगरेजी, मासिक आय 3,000/-, आकर्षक, संभ्रांत परिवार, इकलौते पुत्र हेतु समकक्ष वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 9419, सरिता, नई दिल्ली-110055.

निर्व्यसनी, नशेरहित, शाकाहारी, 52 वर्षीय, विधुर, निस्संतान, लुधियानवी, प्रतिष्ठित एजूकेटेड, टोटली एकाकी, आत्मनिर्भर, खूबसूरत नैननक्श, राइटर, शायर, संगीतकार, अच्छे गुजारे वास्ते धार्मिक, गृहकार्यनिपुण जीवनसंगिनी चाहिए. स्थानीय सर्विस, विधवा, परित्यक्ता, संतानोत्पत्ति दोषयुक्त, शीघ्र पुष्पमाला, मंदिर, साक्षी ईश्वर भगवान उपजाति बंधन नहीं. गरीब, बेसहारा महिलाएं विवरण सहित लिखें: वि.नं. 9420, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सैनी, बी.ए., एम.एस. डाक्टर, 25, 170 सें.मी. निजी क्लीनिक, युवक हेतु सुयो[illegible] वधू चाहिए. कोई बंधन नहीं. मेडिको को प्राथमिकता. लिखें: वि.नं. 9421, सरिता, नई दिल्ली-110055.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

22 वर्षीय, 168 सें.मी., केशरवानी वैश्य, आई.काम., परीक्षार्थी, स्वावलंबी, मध्यमवर्गीय युवक हेतु सजातीय कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 9422, सरिता, नई दिल्ली-110055.

47, 167 सें.मी., 3,700/-, विधुर, गोरा रंग, दिल्ली निवासी, सरकारी कर्मचारी, निजी मकान, दो संतान, हेतु शिक्षित, विधवा, तलाकशुदा, संतानहीन, रंग गोरा स्वीकार्य, लिखें: वि.नं. 9423, सरिता, नई दिल्ली-110055.

22 वर्षीय, 170 सें.मी., स्नातक, सुंदर, जैन, व्यवसायी गाजियाबाद में निजी मकान, युवक हेतु सुंदर, शिक्षित, वैश्य कन्या चाहिए. पिता इंजीनियर राजपत्रित अधिकारी, स्थानीय को प्राथमिकता. लिखें: वि.नं. 9424, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26, 162 सें.मी., लोधी राजपूत, स्मार्ट, इंजीनियरिंग, पोस्ट ग्रेजुएट, आई.आई.टी. कार्यरत ओ.एन.जी.सी., बंबई, हेतु सुशिक्षित, सुंदर, स्लिम, प्रतिष्ठित परिवारीय कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 9425, सरिता, नई दिल्ली-110055.

साव (तैलिक वैश्य), जमशेदपुर प्रतिष्ठित परिवार, 26½ वर्षीय, 167 सें.मी., 56 कि.ग्रा., साफ रंग, बी.काम., निर्व्यसनी, शाकाहारी, सहृदय, व्यापारदक्ष, स्मार्ट युवक हेतु शिक्षित, गोरी, वास्तविक सुंदर, संपन्न वधू पक्ष सविवरण (शीघ्र विवाह) लिखें: वि.नं. 9426, सरिता, नई दिल्ली-110055.

45 वर्षीय, संपन्न, संभ्रांत परित्यक्त डाक्टर हेतु शिक्षित गृहिणी की तलाश. कोई बंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 9427, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल जैन, 29½, 167 सें.मी., एवं 24, 163 सें.मी., स्मार्ट, शिक्षित, प्रतिष्ठित, आयकरदाता, व्यवसायी भाइयों हेतु सुंदर, सुसंस्कृत, गृहकार्यदक्ष, पारिवारिक वधुएं चाहिए. शीघ्र विवाह. लिखें: वि.नं. 9428, सरिता, नई दिल्ली-110055.

34 वर्षीय, विधुर, अग्रवाल, तीन बच्चे, कलकत्ता निवासी, निजी मकान, व्यवसाय, वार्षिक आय छः अंकों में, हेतु सुशील, सुयोग्य वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 9429, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुशवाहा क्षत्रिय (मेहता), 25, 172 सें.मी., इंजीनियर (आई.आई.टी. से एम.टेक.), दिल्ली में सरकारी सेवारत, 3,600/-, हेतु डाक्टर, इंजीनियर, राजपत्रित अधिकारी, कार्यरत, एम.एससी., स्वस्थ, सुंदर, सुशिक्षित परिवारीय कन्या चाहिए. उपजाति बंधन नहीं. सविवरण लिखें: वि.नं. 9430, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मी क्षत्रिय, 25, 168 सें.मी., इलेक्ट्रानिक्स इंजीनियर, सरकारी सेवारत, वे योग्य, सजातीय वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 9431, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25, 160 सें.मी., पंजाबी बंसल, व्यवसायी, बी.काम. (प्रथम), युवक हेतु सुंदर, सुशील वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 9432, सरिता, नई दिल्ली-110055.

नाई, 25 वर्षीय, 178 सें.मी., स्मार्ट, सुंदर, पोस्ट ग्रेजुएट, लेबर इंस्पेक्टर, सरकारी सेवारत, इकलौता पुत्र, प्रतिष्ठित एवं शिक्षित परिवार तथा काफी जायदाद के मालिक युवक हेतु सजातीय, सुशिक्षित अति सुंदर, सुशील, गोरी तथा लंबी कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 9433, सरिता, नई दिल्ली-110055.

राजपूत, 30, 170 सें.मी., एम.बी.बी.एस. डाक्टर, बिहार सरकार सेवारत, संपन्न परिवार, हेतु सजातीय, सुंदर, शिक्षित, गृहकार्यदक्ष वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 9434, सरिता, नई दिल्ली-110055.

दायित्वरहित अग्रवाल, विधुर, 48, 5,600/-, राजपत्रित इंजीनियर, उ.प्र. शासन, हेतु लगभग [illegible] वर्षीया, घरेलू जीवनसंगिनी चाहिए. निस्संतान विधवा, तलाकशुदा स्वीकार्य. जातिबंधन नहीं. लेकिन अग्रवाल को प्राथमिकता. लिखें: वि.नं. 9435, सरिता, नई दिल्ली-110055.

30 वर्षीय, 164 सें.मी., एम.डी., काय चिकित्सा लेक्चरर, अनु. जाति (चमार), हेतु मेडिको सुयोग्य वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 9436, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गोयल, 28 वर्षीय, बी.ए.एम.एस., हेतु मेडिको वधू चाहिए. जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 9437, सरिता, नई दिल्ली-110055.

संभ्रांत कुशवाहा, सैनी, मौर्य, कोइरी परिवार, 27½ वर्षीय, मर्चेंट नेवी के विदेशी जहाज पर कार्यरत, प्रथम श्रेणी के नेवल अफसर, आय 20,000/- प्रतिमाह, हेतु सुयोग्य, स्नातक, गोरी, सुंदर, आकर्षक, प्रतिष्ठित एवं सुशिक्षित परिवारी 20-25 वर्ष की कन्या चाहिए. कद 166 सें.मी., सभी भाई प्रथम श्रेणी के पदाधिकारी. जातिबंधन नहीं. प्रथम बार पूर्ण विवरण लिखें: वि.नं. 9438, सरिता, नई दिल्ली-110055.

मध्यप्रदेश के शिक्षित एवं सुस्थापित, पंजाबी खत्री परिवार के सरकारी सेवारत, क्लास वन आफिसर, 4,800/- मासिक, विनम्र, निर्व्यसनी, प्रगतिशील, अविवाहित, इंजीनियर युवक 36 वर्षीय, 170 सें.मी., हेतु सुशील, गोरी, सुंदर, घरेलू वधू चाहिए. दहेज एवं जातिबंधन नहीं. पूर्ण विवरण लिखें: वि.नं. 9439, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सुशिक्षित, स्वस्थ एवं शाकाहारी, अग्रवाल, विधुर, सरकारी संस्थान में कार्यरत, 45, 163 सें.मी., 3,000/-, चार सुंदर बच्चे (14, 12, 10,8) दहेज की आवश्यकता नहीं. साधारण विवाह. लिखें: वि.नं. 9440, सरिता, नई दिल्ली-110055.

राजपूत (मीना), 34 वर्षीय, 165 सें.मी., विधुर (3 बच्चे), केंद्र सरकार सेवारत, 2,000/-, 40-45 बीघा जमीन, बाग आदि, [illegible] पढ़ीलिखी,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...र्यदक्ष, चरित्रवान ऐसी वधू चाहिए जो सीमित ...वार के साथ समझदारी से चले. दहेज नहीं. ...त्पत्ति असमर्थ को वरीयता. जातिबंधन नहीं. ...विवाह. लिखें: वि.नं. 9441, सरिता, नई दिल्ली-110055.

स्वर्णकार, 25, 160 सें.मी., जूनियर इंजीनियर, ...ली विकास प्राधिकरण, आय 2,100/-, हेतु ...पिका, बी.एड., सुंदर कन्या चाहिए. लिखें: ...नं. 9442, सरिता, नई दिल्ली-110055.

दिल्लीवासी आफिसर, 35 वर्षीय, तलाकशुदा, ...की, आय 6,000/- मासिक, स्वयं की कार, ...वाद हेतु सुयोग्य, गरीब लेकिन सुंदर, स्वस्थ ...वनसंगिनी चाहिए. लड़की स्वयं भी पत्रव्यवहार ...लिखें: वि.नं. 9443, सरिता, नई दिल्ली-110055.

...देश्वरी, 27, 180 सें.मी., स्मार्ट एडवोकेट, ...री के इकलौते पुत्र हेतु यथेष्ठ ...रिवारीय अति सुंदर, लंबी लड़की चाहिए. सविवरण ...लिखें: वि.नं. 9444, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जायसवाल, उच्चशिक्षित, सुसंस्कृत, शाकाहारी, ...हाबाद परिवारीय, अति सुंदर, सुव्यवस्थित, 28, 175 सें.मी., ग्रेजुएट युवक हेतु गोरी, अति सुंदर, लंबी, शिक्षित कन्या चाहिए. उपजातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 9462, सरिता, नई दिल्ली-110055.

पंजाबी ग्रेजुएट, व्यवसायी, 28, 175 सें.मी., 4,000/-, इनकम टैक्स असैसी, निजी निवास, निजी टैक्सी, युवक हेतु पतली, गोरी, सुंदर, घरेलू कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 9463, सरिता, नई दिल्ली-110055.

42, 3,000/-, केंद्रीय कार्यरत, विधि स्नातक, तलाकशुदा (एक 15 वर्षीय पुत्र के साथ), शाकाहारी, व्यसन मुक्त, हेतु वधू चाहिए. सीधीसादी, मृदुभाषी, शाकाहारी, आत्मविश्वासी, विधवा, तलाकशुदा, शिक्षित, बेसहारा, स्वयं निर्णायिका को प्राथमिकता, जाति, प्रांत, दहेजबंधन नहीं. बिना खर्चे की शादी. लिखें: वि.नं. 9464, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अरोड़ा, 30, 176 सें.मी., निजी व्यवसाय, 4,000/- मासिक, संतानोत्पत्ति में असमर्थ युवक हेतु संतानोत्पत्ति में असमर्थ, शिक्षित, घरेलू जीवनसंगिनी चाहिए. दहेज एवं जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 9465, सरिता, नई दिल्ली-110055.

प्रतिष्ठित बीसा अग्रवाल परिवारीय, 27 वर्षीय, 171 सें.मी., सिविल इंजीनियर, 3,000/- रुपए मासिक, स्मार्ट युवक हेतु सुशिक्षित, वास्तविक सुंदर, प्रतिष्ठित परिवारीय, सजातीय वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 9466, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कान्यकुब्ज ब्राह्मण, कश्यप गोत्र, 28 वर्षीय, 176 सें.मी., सिविल इंजीनियर, 3,000/- रुपए मासिक, आकर्षक व्यक्तित्व के युवक हेतु सुशिक्षित, वास्तविक सुंदर, सजातीय वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 9467, सरिता, नई दिल्ली-110055.

हिंदू पंजाबी, हैंडसम, स्मार्ट, विधुर, 28, 165 सें.मी., बिजनेसमैन, अच्छी आमदनी, प्रतिष्ठित घराने से संबंधित 3 बच्चियां, हेतु प्रतिष्ठित घराने से संबंधित, गृहकार्यदक्ष, 25 वर्षीया, सुंदर, गोरी वधू चाहिए. तलाकशुदा, विधवा निस्संतान विचारणीय. मूल निवास स्थान पंजाब निवासी, पूर्ण विवरण सहित लिखें: वि.नं. 9468, सरिता, नई दिल्ली-110055.

35 वर्षीय, गौरवर्ण, क्रिश्चियन, विधुर युवक (एक लड़का, एक लड़की), शासकीय सेवारत हेतु शिक्षिका जीवनसंगिनी चाहिए. साधारण, अति शीघ्र विवाह. लिखें: वि.नं. 9469, सरिता, नई दिल्ली-110055.

नाई जाति, 26 वर्षीय, मैकेनिकल इंजीनियर, 3,000/- आय, आकर्षक, 172 सें.मी., नवयुवक हेतु डाक्टर, लेक्चरर, अधिकारी, सुंदर वधू चाहिए. भाई डाक्टर (आर्मी), पिता अवकाश प्राप्त सेना अधिकारी. जाति, दहेजबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 9470, सरिता, नई दिल्ली-110055.

बिहारवासी, 29, कुर्मि, बी.ए., सीनियर क्लर्क रेलवे, 1,500/-, प... में केवल मांबेटा, हेतु सुंदर शिक्षित वधू. शीघ्र विवाह. द... नहीं. लिखें: वि.नं. 9471, सरिता, नई दिल्ली-110055.

दिल्ली प्रेस पत्रिकाओं के वितरण/बिक्री केंद्र

अहमदाबाद

दिल्ली प्रकाशन, 503, नारायण चैंबर्स, आश्रम रोड, फोन: 77845

बंगलौर

दिल्ली प्रकाशन, 302–बी, क्वींस कार्नर अपार्टमैंट्स, 3 क्वींस रोड, फोन: 258091

कलकत्ता

दिल्ली प्रकाशन 113, पार्क स्ट्रीट, फोन: 298981

मद्रास

दिल्ली प्रकाशन 14, पहली मंजिल, सीसंस कंप्लैक्स, 150-82. मांटीअथ रोड फोन: 88138

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

26½ वर्षीय, 178 सें.मी., कुर्मी क्षत्रिय, एम.फिल., एलएल.बी., पी.एस.सी. सेलेक्टेड, एक्साइज इंस्पेक्टर परिवार सुशिक्षित एवं साधन संपन्न हेतु वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 9472, सरिता, नई दिल्ली-110055.

49½ वर्षीय, अवधिका कुर्मी, विधुर (दो पुत्र, एक पुत्री) डिप्टी मजिस्ट्रेट हेतु 30-42 वर्षीया, संतानअनिच्छुक/संतानोत्पत्ति में असमर्थ जीवनसंगिनी चाहिए. जातिबंधन नहीं. निर्धन, विकलांग, बिहारी को प्राथमिकता. लिखें: वि.नं. 9473, सरिता, नई दिल्ली-110055.

38, 180 सें.मी., 2,000/-, एम.ए., नेत्रहीन, राजकीय अध्यापक, संपन्न परिवार, युवक हेतु सुशिक्षित, गृहकार्यदक्ष, नेत्रवान युवती चाहिए. विधवा, परित्यक्ता स्वीकार्य. लिखें: वि.नं. 9474, सरिता, नई दिल्ली-110055.

49, 165 सें.मी., सिंधी व्यवसायी, निजी दो मकान, उत्तरदायित्व मुक्त, स्वस्थ, विधुर हेतु सिंधी या पंजाबी, सुंदर, सुशील जीवनसाथी. निस्संतान विधवा, तलाकशुदा स्वीकार्य. लिखें: वि.नं. 9475, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सुंदर, समझदार, गृहकार्यदक्ष कन्या चाहिए. कोई बंधन नहीं. कम पढ़ी स्वीकार्य. साधारण विवाह 30, 178 सें.मी., आकर्षक, संपन्न, सुशिक्षित, मातापिता सहित अमरीका बसा पंजाबी युवक. निस्संकोच लिखें. पत्रोत्तर अवश्य मिलेगा अगर जन्मतिथि, ताजा फोटो सविवरण भेजेंगे. Box 550145, AL 35255, USA.

व्यक्तिगत विज्ञापनों की दरें

सरिता: 3.50 रु. प्रति शब्द

वूमंस ईरा:1. 50 रु. प्रति शब्द

सरिता व वूमंस ईरा: 4.00 रु. प्रति शब्द.

मूल विज्ञापन के साथ लिखें: 'वि. नं.– सरिता, नई दिल्ली-110055' इन 6 शब्दों का मूल्य देना आवश्यक है. विज्ञापनदाता के 'निजी पते वाली'(विदेशों को छोड़ कर) व 'फोटो सहित' शब्द वाले विज्ञापन स्वीकार नहीं किए जाते. डाक व्यय 15 रुपए अतिरिक्त है.

गोद विज्ञापन की दर सरिता में 3.50 रुपए प्रति शब्द और वूमंस ईरा में 1.50 रुपया प्रति शब्द है. दोनों में एक साथ प्रकाशित करवाने पर 4.00 रु. प्रति शब्द.

इस प्रकार के विज्ञापन लगातार दो बार प्रकाशित करवाने पर उन्हें एक बार और मुफ्त में प्रकाशित करने की सुविधा है. किंतु डाक व्यय तीनों बार का अर्थात 30 रुपए लिए जाएंगे.

विधवाओं, परित्यक्ताओं और जातिबंधन छोड़ कर विवाह करने वालों के विज्ञापन आधे शुल्क पर प्रकाशित किए जाते हैं. ऐसे विज्ञापनों में विज्ञापनदाता की निजी जाति का उल्लेख नहीं होना चाहिए.

पूर्ण विवरण के लिए लिखें :

मुख्य विज्ञापन कार्यालय :

दिल्ली प्रेस पत्रिका विभाग,
एम-12, कनाट सरकस, व
नई दिल्ली-11[illegible]001.
[illegible]1313

वरवधू चाहिए

धोबी (दिल्लीवासी), 22 वर्षीय, 152 सें.मी., बी.ए. (फाइनल), सुंदर, गोरी, सुशील, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु सुंदर, राजकीय अधिकारी, सजातीय, सुयोग्य वर एवं 26 वर्षीय, 170 सें.मी., सुंदर, ग्रेजुएट, सरकारी आफिसर (शिक्षित परिवार) हेतु सुंदर, शिक्षित, सजातीय वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 9445, सरिता, नई दिल्ली-110055.

यादव भाईबहन हेतु लंबे वरवधू चाहिए. मातापिता पोस्टग्रेजुएट, आधुनिक परिवार, पुत्र 27, परमानेंट सरकारी सर्विस, पुत्री 25 वर्षीया, एम.ए. अध्ययनरत, 165 सें.मी. ऊंचाई. शीघ्र शालीन विवाह हेतु सविवरण पत्राचार करें. लिखें: वि.नं. 9446, सरिता, नई दिल्ली-110055.

ईसाई रोमन कैथोलिक, भाईबहन कार्यरत क्रमशः 35-28 वर्ष, सुंदर, सुशिक्षित हेतु सजातीय वरवधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 9447, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कहार, 26½, 152 सें.मी., एम.एससी., एलएल.बी., बैंक सेवारत एवं 25 वर्षीया, एम.ए. समाजशास्त्र, सुंदर, सुशील, गृहकार्यदक्ष कन्याओं हेतु सुयोग्य वर एवं 27½, 173 सें.मी., तृतीय श्रेणी कर्मचारी, मासिक 1,400/- व अन्य भत्ते, आकर्षक व्यक्तित्व युवक हेतु सुशील वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 9448, सरिता, नई दिल्ली-110055.

रिक्त स्थान

दिल्लीवासी, 43 वर्षीय, अग्रवाल, विधुर (चार बच्चे) एवं घर संभालने हेतु 35 वर्ष से कम, निस्संतान, बेसहारा परिचायिका चाहिए. आजीवन कार्य सहारा. लिखें: वि.नं. 9449, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गृहकार्य हेतु 25-30 वर्षीया, स्मार्ट, स्वस्थ, शिक्षित, सुशील युवती चाहिए. समस्त सुविधा. लिखें: वि.नं. 9450, सरिता, नई दिल्ली-110055.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सहन शक्ति हो तो ऐसी

बल्ब की जान होती है उसका फिलामेंट-तार
इसीलिए हर बजाज बल्ब में मजबूत फिलामेंट लगा होता है ताकि उसमें वोल्टेज के उतार-चढ़ाव सहनेकी शक्ति कायम रहे. साथ ही हर बजाज बल्ब को क्वालिटी की सौ कसौटियों पर खरा उतरना पड़ता है–ठेठ कच्चे माल से लेकर बल्ब तैयार होने तक

जब भी बल्बों की बात चलती है, उनकी क्वालिटी, मजबूती और विश्वसनीयता की एक ही गारंटी काफ़ी है-बजाज का नाम.

बजाज बल्ब bajaj

कम खर्च में चलते ज़्यादा

Hero's BE 870 HN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्लासों में रसना रहे

पार्टी में रंग जमा रहे!

अच्छी पार्टी में जोश-खरोश चलता रहे... सभी को रसना बराबर मिलता रहे. मज़ेदार! प्यास बुझानेवाला रसना! हर रसना पैक से पाइए ढेर सारे ग्लास! किसी का ग्लास खाली न होने पाए, रसना सबकी प्यास बुझाए, पार्टी में रंग जमाए... रसना.

पार्टी के लिए खूब मज़ेदार ग्यारह स्वादों में उपलब्ध

☐ ऑरेंज ☐ पाइनेपल ☐ लाइम ☐ शाही गुलाब
☐ काला खट्टा ☐ कूल खस ☐ केशर इलायची
☐ मसाला सोडा (जलजिरा) ☐ टूटी फ्रूटी
☐ ग्रेप ग्लोरी ☐ मैंगो राइप

आइ लव यू रसना

रसना

का · स र्वा धि क · वि क
सी फ़्ट · ड्रि ट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

119 **ससुरालों की तुलना**
झगड़े की जड़

125 **विवाह में क्या ले क्या दें?**
उपहारों की उपयोगिता

151 **मायका ससुराल, पति का घर**
सब से बड़ा अपना घर

155 **विवाह में मेहमानों की देखरेख**
मेजबान के लिए जरूरी

167 **नारियल**
रूढ़िवादिता का स्थूल प्रतीक

183 **सिरका**
कितना उपयोगी?

स्तंभ

84 नए फैशन
114 जीवन की मुसकान
128 बात ऐसे बनी
129 शून्यकाल का शून्यालाप
148 नए व्यंजन
158 चंचल छाया
185 वेदों में क्या है?

8 आप के पत्र
14 हमारी बेड़ियां
18 सरित प्रवाह
34 यह भी खूब रही
50 दिनदहाड़े
67 समस्याएं

कविताएं

51 लय बांसुरी की
83 उम्र का मधुमास
131 तेरी आहट पर
147 रूप के द्वार पर

संपादकीय, विज्ञापन व प्रकाशन कार्यालय :
दिल्ली प्रेस भवन, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.
दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन प्रा. लि. के लिए विश्वनाथ द्वारा प्रकाशित तथा दिल्ली प्रेस समाचार पत्र प्रा.लि. साहिबाबाद/गाजियाबाद में मुद्रित.
अन्य कार्यालय : अहमदाबाद : 503, नारायण चैंबर्स, आश्रम रोड, अहमदाबाद-380009.
बंगलौर : 302-बी. 'ए' क्वींस कारनर एपार्टमेंट्स, 3, क्वींस रोड, बंगलौर-560001. बंबई : 79-ए मित्तल चैंबर्स, नरीमन पाइंट, बंबई-400021.कलकत्ता : तीसरी मंजिल, पोद्दार पाइंट, 113, पार्क स्ट्रीट, कलकत्ता-700016, मद्रास : 14, पहली मंजिल, सीसंस कांप्लेक्स, 150/82, मांटीअथ रोड, मद्रास-600008., लखनऊ : 9, दुर्गा भवन, कपूर लेन, महात्मा गांधी रोड, लखनऊ-226001. सिकंदराबाद : 122, पहली मंजिल, चिनाय ट्रेड सेंटर लेन, 116, पार्क लेन, सिकंदराबाद-500003.

® दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन प्रा. लि. बिना आज्ञा कोई रचना किसी प्रकार उद्धृत नहीं की जानी चाहिए.
सरिता में प्रकाशित कथा साहित्य में नाम, स्थान, घटनाएं व संस्थाएं काल्पनिक हैं और वास्तविक व्यक्तियों, स्थानों, घटनाओं या संस्थाओं से उन की किसी भी प्रकार की समानता संयोग मात्र है.

वैवाहिक विज्ञापन विभाग : एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001.
वार्षिक मूल्य केवल ड्राफ्ट/मनी आर्डर द्वारा 'सरिता' के नाम से ई-3, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-110055 को ही भेजें. चैक व वी.पी.पी. स्वीकार नहीं किए जाते.
मूल्य विदेशों में (समुद्री डाक से) 240 रु., (हवाई डाक से) 636 रु.

मूल्य : एक प्रति 5.00 रुपए, वार्षिक : 120 रुपए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुमीत SP-16: पहली किचन मशीन, जिसके बारे में आप दोनों की अपनी अपनी राय है

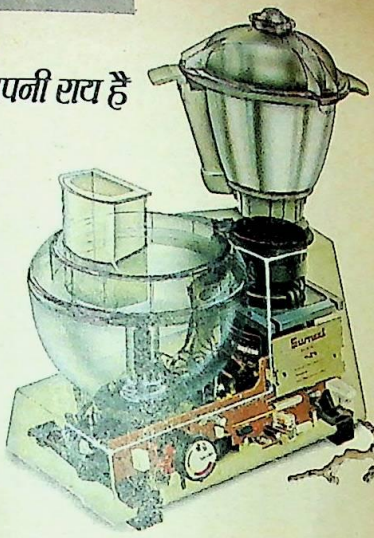

श्रीमान की

"इसकी इंजीनियरिंग बहुत बढ़िया है"

कारीगरी साफ़ दिखाई पड़ती है.

इसका हर हिस्सा दूसरे हिस्सों से पूरी तरह मेल खाने के लिए डिज़ाइन किया गया है. ४२६ हिस्से, बड़ी सावधानी से काटछांटकर बनाए गए हैं, ताकि बिल्कुल सही ढंग से एक दूसरे को सहें और साथ मिल कर मज़बूती से काम करें.

इलेक्ट्रानिक्स का यहां नाज़ुक खिलवाड़ के तौर पर नहीं, बल्कि इस मशीन के दिल की तरह काम करने के लिए इस्तेमाल किया गया है. इससे एस पी –१६ वज़न की परवा किए बिना एक जैसा बढ़िया काम करता है. यह सिस्टम पूरी तरह से बेहिसाब बदलने वाली रफ़्तारों के योग्य है.

मज़बूत चैसिस बनावट, रबर शाक डैम्पनर्स और प्रोसेसर बोल के लिए निचले गियर का ड्राइव शोर इतना नीचे रखते हैं कि सिर्फ़ मशीन का गुनगुनाना भर सुनाई पड़े.

और सुमीत के साथ तो यह हमेशा सच रहा है कि इसकी मोटर लगातार आधा घंटे से ज़्यादा देर तक चलती रह सकती है–पूरे वज़न के होते हुए.

सुमीत एसपी–१६. ४२६ साज़, लेकिन सुर एक–ऐसा है इसका काम.

UBM/2019/HN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्राइन्डर कप अटैचमेंट

आपकी

"इतना ज़्यादा काम, इतनी आसानी से"

इसकी खूबी इस बात में इतनी नहीं है कि ये कितने काम करता है बल्कि इसमें है कि इसकी रफ़्तार कितनी अच्छी है और इसे इस्तेमाल करना कितना आसान है.

फूड प्रोसेसर वर्क बोल, स्टेनलेस स्टील जार और एक सामान्य कण्ट्रोल. इन सबके तालमेल से मिनटों में इससे और भी ज़्यादा काम ले लेना कितना आसान है.

आप इससे सूखी पिसाई, गीली पिसाई कर सकती हैं, आटा गूंध सकती हैं, मिला सकती हैं, स्लाइस, लरछे या चिप्स बना सकती हैं.

और तो और: गोश्त का कीमा बनाइए, काटिए, मिलाइए, फेंटिए, घिसिए या और भी कुछ कीजिए. कुल मिलाकर १६ काम. और इन सबके साथ कम मात्रा वाला छोटा ग्राइन्डर और नीबू, मोसम्मी, संतरे वगैरह का रस निकालने के लिए सिट्रस प्रेस जूसर.

अब हर तरह का भोजन बनाना आपकी आसान पहुंच के अंदर.

सुमीत एसपी–१६ लोड या वज़न के साथ अपने आप ही खुद को ठीक कर लेता है और अगर कहीं भूल से इस पर वज़न ज़्यादा हो जाय तो भी इसकी रफ़्तार में फ़र्क नहीं पड़ता. सुमीत एसपी–१६ पूरी तरह सुरक्षित भी है, क्योंकि अगर चालू रहते इसे कोई खोल दे तो यह अपने आप एकदम बंद हो जाता है.

वास्तव में यह हमेशा ही एक जैसा बढ़िया बारीक काम करता है. और यहीं ये बाज़ी मार ले जाता है. अधिक फुलफुली इडलियां और आपलेट, वेफर जितनी बारीक ककड़ी की स्लाइसें, खूब अच्छी तरह पिसे मसाले.

बस आप काम सोचिए, सुमीत तैय्यार है आपको खुश करने के लिए. सुमीत एसपी–१६. तरह तरह के साज़, लेकिन सभी अच्छी ही धुन बजाएं.

सुमीत एसपी–१६ के अलावा सुमीत डोमेस्टिक भी उपलब्ध है, जो वैसी ही सावधानी से बना है और कुल मिलाकर ८ काम कर सकता है. अगर आपकी ज़रूरतें कम हों तो इसे लीजिए.

सुमीत SP-16 इलेक्ट्रानिक

काम में कमाल, मज़बूती बेमिसाल.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आप के पत्र

सरित प्रवाह/मार्च/द्वितीय

कृषिप्रधान भारत में किसान और उस की खेती की दशा बिगड़ती जा रही है. उन्हें अपनी उपज का उचित मूल्य नहीं मिलेगा तो उन में असंतोष फैलना स्वाभाविक है. विगत 'किसान आंदोलन' इसी असंतोष का परिणाम था.

'शहरी तथा अन्य कर्मचारी वर्ग तो हड़ताल, बंद, प्रदर्शन आदि के सहारे अपना वेतन, सुविधाएं बढ़वा लेते हैं, लेकिन जब किसानों ने अपनी मांगों को ले कर यह आंदोलन छेड़ा तो केंद्र तथा राज्य सरकारों की नजरों में यह 'खेलतमाशा' बन गया.

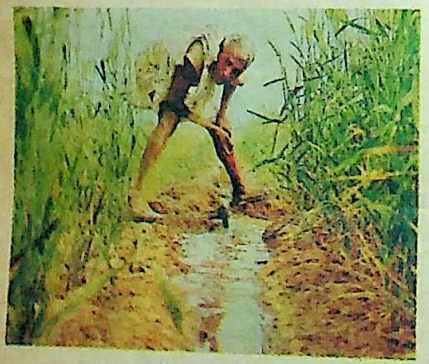

कच्चा घर, फटे वस्त्र, शिक्षा, रोटी आदि से वंचित परिवार, वही पुराने ढंग से खेतीबाड़ी, यही खाका है आज के आम भारतीय किसान का. दिखाने तथा वोट के चक्कर में प्रधान मंत्री राजीव गांधी का गांवों में जा कर किसानों की खेतीबाड़ी का हालचाल पूछना और दिल्ली पहुंच कर सब भूल जाना किसान मजदूरों का मजाक नहीं तो और क्या है?

—ललित सागर

*

सरित प्रवाह/मार्च/प्रथम

राजीव गांधी द्वारा अपने मंत्रिमंडल में फेरबदल पर आप की टिप्पणी सटीक है.

यह धारणा कि 'इस फेरबदल से सरकार के काम में तेजी और पैनापन आएगा' मिथ्या और निराधार है. अगर इस से काम में तेजी और पैनापन आता तो निश्चय ही हम उन्नति के शिखर पर होते.

—रत्नेश

मंत्रिमंडल में फेरबदल और गलत तरीकों से मुख्य मंत्रियों तथा राज्यपालों की नियुक्ति कर के बीमार मानसिकता का ही परिचय दिया गया है.

—कुसुम

*

सरित प्रवाह/फरवरी/द्वितीय

वनों की अंधाधुंध कटाई और वनों के महत्त्व पर आप के विचार सोचने को बाध्य करते हैं कि हम वन विनाश के भावी खतरे को जानते हुए भी लापरवाह बने हुए हैं. शासन भी इस दस्तक को सुन कर अनसुना कर रहा है.

कागज और दियासलाई उद्योग तो वनों के दुश्मन हैं ही. सेब का अत्यधिक उत्पादन भी वन विनाश की दिशा में एक कदम है. हिमाचल प्रदेश में 1969-70 में सेबों का उत्पादन 72.3 हजार टन था, जो 1983-84 में बढ़ कर 257.9 हजार टन हो गया. इतने अधिक सेबों की पैकिंग में 1.95 लाख पेड़ों की लकड़ी की जरूरत होती है. यह निश्चित ही अधिक है क्योंकि एक हेक्टेयर क्षेत्र की सेब बागान के लिए 10 हेक्टेयर क्षेत्र की वन भूमि से लकड़ी चाहिए.

दूसरी ओर, शासन खुद भी वन विनाश की अगुआई कर रहा है, जिस का प्रत्यक्ष प्रमाण है 'नर्मदा घाटी परियोजना'. इस परियोजना से जितना विकास नहीं होगा, उस से कहीं अधिक विनाश होगा.

इस परियोजना से मध्य प्रदेश के खंडवा, देवास व होशंगाबाद जिलों में ऊंचेऊंचे सागौन, अंजान, साजा सरगन, सलाई, छावड़ा व बांस के 42 हजार हेक्टेयर क्षेत्र में फैले वन नष्ट हो जाएंगे, जबकि इस क्षेत्र में राजस्व विभाग के पास मात्र 17 हजार हेक्टेयर भूमि है. इस के परिणामस्वरूप यहां के दो लाख से भी अधिक मवेशी जंगलों के अभाव में कसाईखाने की भेंट हो जाएंगे.

—केवलराम मालवीय 'अकेला'

*

ऋषियों का चरित्र?

लेख 'टेस्टट्यूब बेबी और हिंदू धर्म ग्रंथ' (मार्च/प्रथम) धर्म के उन धंधेबाजों के ढोल की पोल खोलता है, जो प्राचीन हिंदू धर्मग्रंथों से उदाहरण दे कर लोगों को बेवकूफ बनाते हैं.

—सविता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चॉकलेट अब एक नए रंग-रूप, नए स्वाद में!

दूधिया सफ़ेद चॉकलेट आज़माइए! स्वादभरा मज़ेदार फ़र्क पाइए. ऐसा लाजवाब स्वाद आपको और कहीं नहीं मिल सकता. कैम्पको व्हाइट क्रीमी चॉकलेट... चखकर देखिए, मान जाएंगे!!

भारत के सबसे बड़े सबसे आधुनिक प्लांट में निर्मित.

Campco

कैम्पको लिमिटेड
बैंगलोर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरकंडा, दोना, घड़ा, आग, खेत, खीर, जौ, भुजा आदि से मनुष्यों के जन्म की बेतुकी, अवैज्ञानिक एवं तर्कहीन कथाओं को वर्तमान परखनली शिशु के प्रमाणस्वरूप पेश करना बेहूदापन और मूर्खता ही नहीं, बल्कि अपने तथाकथित ज्ञान पर झूठा अभिमान करने की गलत प्रवृत्ति भी है. इस से किस धर्म ग्रंथ का गौरव बढ़ता है? उलटे, इस से प्रतीत होता है प्राचीन हिंदू धर्मग्रंथों में सिर्फ कचरा भरा है. —सूर्यकांत शर्मा

*

ऋग्वेद के मित्र व वरुण का उर्वशी को देख कर, शिवपुराण के अनुसार शिव व पार्वती के विवाह के समय ब्रह्मा का पार्वती के अंगूठे को देख कर, वेदव्यास और भारद्वाज का घृताची को देख कर, महाभारत के अनुसार शरद्वान ऋषि का जानपदी नामक अप्सरा को देख कर कामोन्मत्त हो कर वीर्य स्खलित होना ऐसे उदाहरण हैं, जो इन ऋषियों के चरित्र पर प्रश्नचिह्न लगाते हैं. समग्र विश्व को चरित्रनिर्माण और ब्रह्मचर्य का उपदेश देने वाले ऋषि क्या स्वयं ब्रह्मचारी एवं चरित्रवान थे? —डा. योगेंद्राचार्य

"

इन तथाकथित ऋषिमुनियों के काले कारनामों को धर्म की आड़ में छिपाने का प्रयास प्राचीन हिंदू धर्मग्रंथों में किया गया है, जैसे कोई चोर चोरी छिपाने का प्रयास करता है.

सब कुछ जानतेसमझते हुए भी धर्मभीरु लोग न जाने क्यों इस तथ्य को स्वीकार करते हुए डरते हैं कि दशरथ के चारों पुत्र नियोग की संतानें थीं. सीता भी किसी की अवांछित संतान थी, वरना कोई अपनी बच्ची को ऐसे क्यों फेंक देता. अगर खीर या जमीन से बच्चे उत्पन्न होने लगें तो स्त्रीपुरुष की क्या जरूरत रह जाएगी. —रत्नकुमार सीरिया

अगर प्राचीन हिंदू धर्मग्रंथों में वर्णित सभी बातें सही होतीं तो आज हम रूस, अमरीका, जापान आदि से आगे होते. फिर भी धर्म के धंधेबाज धर्म की अनावश्यक बेड़ियों को तोड़ना नहीं चाहते क्योंकि इस से उन की कमाई और समृद्ध व्यापार पर असर पड़ता है. —राजेश्वर सिंह 'राज'

*

लेखक का यह कथन गलत है कि नाइट्रोजन 270 डिग्री सेंटीग्रेड पर तरल होती है. वस्तुस्थिति यह है कि नाइट्रोजन 196 डिग्री सेंटीग्रेड पर तरल होती है.

—डा. प्रदीपकुमार तोमर

*

होली विशेषांक

होली विशेषांक (मार्च/प्रथम) ने मन को इंद्रधनुषी रंगों से रंग दिया. सभी कविताएं होली के रंगों में सराबोर लगीं. विशेषतः 'कहां रंग लगाएं', 'बच के कहां जाओगी?' और 'रंग प्रीत का' कविताओं ने रंग जमा दिया. —सोमदत्त पाठक

"

इस विशेषांक ने बेहद निराश किया. इस अंक की अधिकतर रचनाएं बेकार और बकवास लगीं. 'सरिता' से ऐसी रचनाओं की तो आशा नहीं थी.

—प्रणयकुमार मिश्र

*

खोजपूर्ण लेख

लेख 'रजस्वला से जुड़ी धार्मिक कुरीतियां' (मार्च/प्रथम) खोजपूर्ण लगा.

मुझे प्रसन्नता है कि 'सरिता' के ऐसे प्रयासों से एक ऐसा वर्ग बन रहा है, जो अपने सोच को एक नई दिशा दे रहा है तथा रूढ़ियों से निकल कर ज्ञान के प्रकाश में अपना रास्ता खोज रहा है.

—मुकेशचंद्र पंड्या

*

परपुरुष चिंता चिंतनीय

कहानी 'चिंता' (मार्च/प्रथम) में भारतीय स्त्री के रूप में नायिका की चिंता उचित ही है, पर उस का पर पुरुष के बारे में सोचना भी मुमकिन था, पढ़ कर ठीक नहीं लगा. —नीलम अरोड़ा

"

निरीक्षकों की हठधर्मिता

कहानी 'आशीर्वाद' (मार्च/प्रथम) का कथ्य तो काफी अच्छा लगा, लेकिन अंत वास्तविकता से दूर ही है.

कुछ ऐसी ही घटना मेरे साथ भी घटित हुई थी. उस समय मैं बी.काम. अंतिम वर्ष का परीक्षार्थी था. मैं 'प्लानिंग' का प्रश्नपत्र हल करने में मशगूल था. परीक्षा का समय समाप्त होने में अभी आधा घंटा शेष था, उसी समय कक्षा में अफरातफरी मच गई. नकलची परीक्षार्थी नकल की सामग्री इधरउधर फेंकने लगे.

मैं दरवाजे के पास बैठा था. एक परची मेरी मेज के नीचे आ कर गिरी, जिस पर मैं ने कोई ध्यान नहीं दिया. जब वह परची उठा कर एक निरीक्षक ने टोका कि मैं नकल कर रहा हूं, तब मेरा ध्यान उधर गया.

मैं ने निरीक्षक को काफी सफाई दी कि मैं नकल नहीं कर रहा था. मुख्य निरीक्षक तथा प्रधानाध्यापक से भी मैं ने निवेदन किया कि मुझे इस विषय का दूसरा प्रश्नपत्र दे दिया जाए, मैं उसे हल कर दूंगा. मगर किसी ने नहीं सुना.

अंततः उन की हठधर्मिता के कारण विश्वविद्यालय ने दो वर्ष तक कोई भी परीक्षा देने से मुझे वंचित कर दिया. —पवन सिंघल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ताज़गी
तो दिनभर
साथ निभाए

POISE

FAMILY DEODORANT TALC

पॉइज़ दिनभर ताज़गी का अहसास करानेवाले एक असरदार डिओडरेंट के साथ. बन-फूलों की भीनी-भीनी, मदमाती खुशबू समेटे. घंटों आपके पूरे परिवार का तन तरो-ताज़ा, मन प्रसन्न रखनेवाला टाल्कम पाउडर.

पॉइज़–फैमिली डिओडरेंट टाल्क
१००, २०० और ४०० ग्राम के पैक में उपलब्ध

बिक्री व्यवस्थाः रैलीज़ इंडिया लिमिटेड, २१, डी. एस. मार्ग, बम्बई ४०० ००१

R K SWAMY/RI/3495/HN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

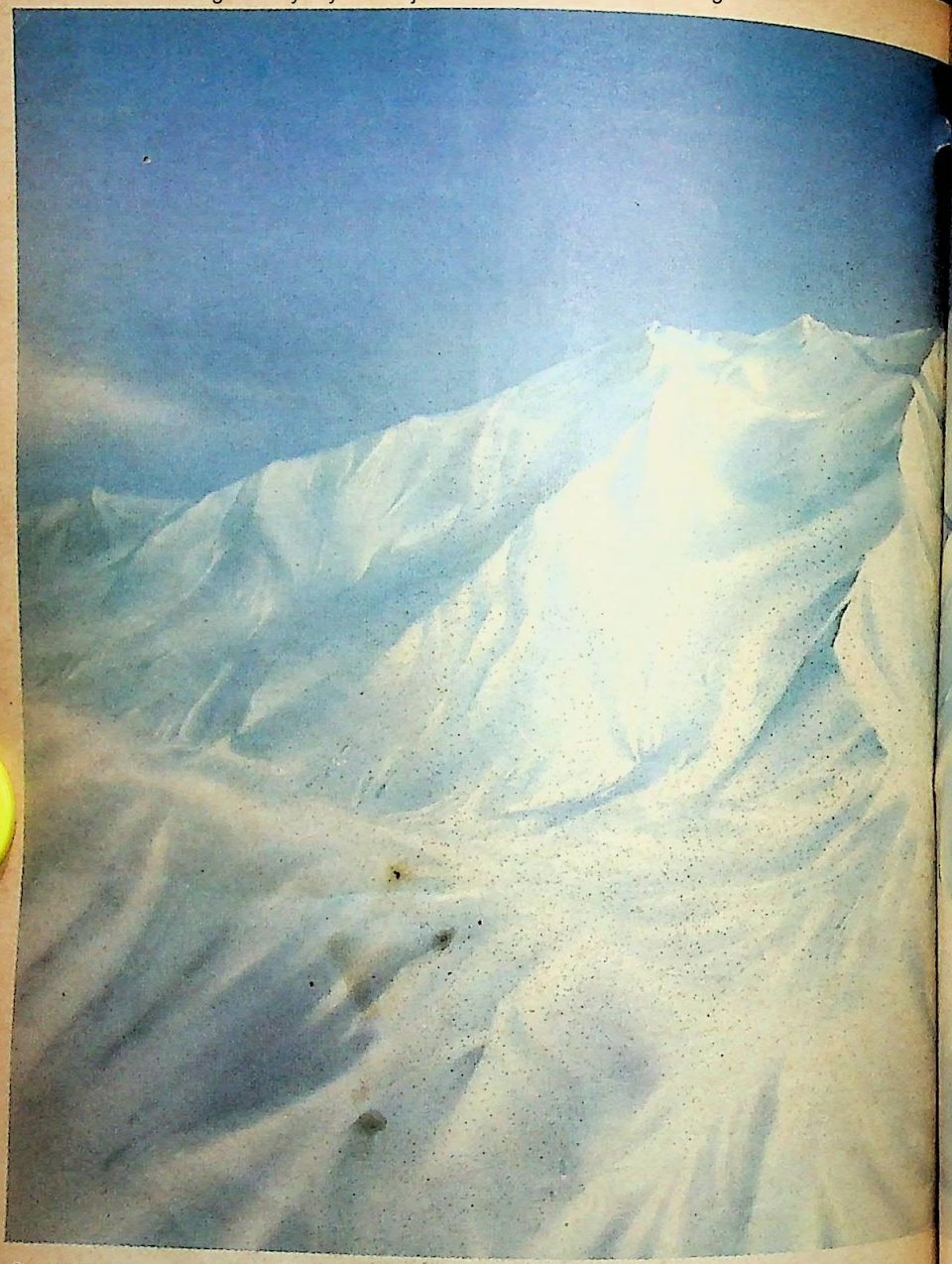

पंखों पे चली आएं...ताज़ी ठंडी हवाएं!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओरिएन्ट फैन्स
ये ताजी हवाएं जीवनभर आपकी हो जाएं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारी बेड़ियां

हमारे सिंधी समाज में एक मान्यता है कि 3 भाइयों के बाद पैदा हुई लड़की या 3 बहनों के बाद हुआ लड़का मनहूस होता है. ऐसी संतान को 'ट्रिखड़' कहते हैं.

इसी कारण हमारे पड़ोस में एक 22 वर्षीया 10वीं पास सुंदर एवं सुशील कन्या ने आत्महत्या का असफल प्रयास किया, क्योंकि एक तो वह ट्रिखड़ थी और दूसरे गरीब परिवार की. इन्हीं कारणों से उस की शादी नहीं हो पा रही थी. यह प्रथा गरीब परिवार की लड़कियों के लिए अभिशाप है.

—अशोक कुमार

*

हमारे शहर के एक बुजुर्ग सज्जन ने मनौती मानी थी कि अगर उन के यहां पोता जन्म लेगा तो वह 15 किलो का त्रिशूल हाथ में ले कर महादेव पहाड़ पर चढ़ेंगे. प्रथा के अनुसार त्रिशूल को बिना कंधे पर से उतारे और बिना रुके सीधे मंदिर में ले जाना पड़ता है.

संयोगवश जिस दिन उन सज्जन को पहाड़ पर चढ़ना था, उस दिन बारिश हो रही थी. एक ढलान पर थकान, फिसलन तथा कंधे पर भारी बोझ की वजह से उन का संतुलन बिगड़ गया. वह खाई में गिर पड़े और उन की तत्काल मृत्यु हो गई.

-दुर्गाप्रसाद शुक्ला

*

हमारे यहां देवी की पूजा में बकरे की बलि चढ़ाए जाने के बाद जिस व्यक्ति पर भी देवी की सवारी आती है, वह सब को जोरजोर से हाथ मार कर आशीर्वाद देता है.

एक बार देवी की सवारी हमारे चाचाजी पर आई.वह सभी प्रणाम करने वालों की पीठ पर जोरजोर से हाथ मार रहे थे. हमारे भाभीजी ने भी (जो 5 माह से गर्भवती थीं) उन्हें प्रणाम किया तो चाचाजी ने जोर से उन की कमर पर थाप मारी.

शाम होते ही उनकी हालत गंभीर होने लगी. हस्पताल ले जाने पर डाक्टर ने बताया कि झटके से उन के गर्भ को नुकसान पहुंचा है. इसलिए उन का गर्भ गिरवाना पड़ेगा. अब तक भाभीजी का इलाज चल रहा है.

—महिपाल वाल्मीकि

*

मेरे मित्र के यहां फेरों के बाद दूल्हादुलहन को 'अग्नि परीक्षा' देने के लिए हवन कुंड के ऊपर से छलांग लगानी पड़ती है. ऐसा समझा जाता है कि 'अग्नि परीक्षा' सफल होने पर दोनों जीवन पर्यंत एकदसरे का साथ देते हैं.

मेरे मित्र के विवाह के अवसर पर वह स्वयं तो हवनकुंड के ऊपर से छलांग लगा गया. परंतु दुलहन का पैर फिसल गया. वह हवनकुंड में गिर गई. उस के कपड़ों ने आग पकड़ ली और उस का सारा शरीर जल गया. हालांकि उसे बचा लिया गया, लेकिन जलने के निशान आज भी उस के शरीर पर मौजूद हैं.

—विजयकुमार विजय

इस स्तंभ के लिए अपने तथा अपने संबंधियों के अनुभव भेजिए. प्रत्येक प्रकाशित अनुभव पर 30 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. अपने अनुभव इस पते पर भेजें: संपादकीय विभाग, सरिता, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

सरिता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर्यटन के रंग सरिता के संग

सरिता

मई (प्रथम) व मई (द्वितीय)

पर्यटन विशेषांक

इन छुट्टियों को सुखद और मनोरंजक बनाइए. देश भर के विभिन्न पर्यटन स्थलों की संपूर्ण जानकारी.

पर्यटन विशेषांकों में आप को पर्यटन स्थलों पर पहुंचने, रहने, घूमनेफिरने की जानकारी तो होगी ही, रंगीन लुभावने चित्रों सहित उन के सौंदर्य का वर्णन भी होगा. यदि आप कहीं नहीं भी जा रहे तो घर बैठे ही पूरे देश का भ्रमण कर सकेंगे.

मई (प्रथम) अंक में पूर्व अर्ध भारत के पर्यटन स्थलों पर लेख होंगे, इन में मुख्य हैं : हरिद्वार, देहरादून, ऋषिकेश, मसूरी, केदारनाथ, नैनीताल, आगरा, बनारस, लखनऊ, गंगटोक, खजुराहो, पुरी, कोणार्क, मद्रास, महाबलीपुरम, आदि.

मई(द्वितीय) अंक में पश्चिम अर्ध भारत के पर्यटन स्थलों पर लेख होंगे, जम्मू, कश्मीर, लेह, डलहौजी, कुल्लूमनाली, शिमला, आबू, उदयपुर, जयपुर, अहमदाबाद, बंबई, खंडाला, लोनावला, अजंता, एलोरा, मैसूर, ऊटी, कोडाइकैनाल, गोवा, त्रिवेंद्रम, कन्याकुमारी, रामेश्वरम आदि.

इस के अतिरिक्त यात्रा को सफल बनाने के लिए बहुत सी जानकारी भी होगी. साथ ही हर अंक की तरह कहानियां, लेख, कविताएं, स्तंभ, फिल्म समीक्षाएं आदि.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्र की सुखसमृद्धि के लिए तालाबंदियों

निस्संदेह, हर कर्मचारी का यह मूलभूत अधिकार है कि यदि वह कहीं काम करना पसंद नहीं करता तो न करे. इसी प्रकार किसी भी कारखाने के मालिक का यह अधिकार है कि वह अपना कारखाना चालू रखना नहीं चाहता तो न रखे, किंतु आधुनिक समाज का मिश्रित और जटिल ढांचा इस प्रकार के मनमाने व्यवहार की अनुमति नहीं देता.

अतीत काल में किसी एक कारखाने में मुट्ठी भर लोग काम किया करते थे. तब उस कारखाने के चालू रहने अथवा बंद हो जाने से उस कारखाने के कर्मचारियों अथवा मालिक के अतिरिक्त अन्य किसी पर प्रभाव नहीं पड़ता था. आज उत्पादन का हर भाग एक व्यापक जालसूत्र में एकदूसरे से इतना अधिक संबद्ध है कि चाहे किसी कारखाने में कुछ सौ कर्मचारी ही काम करते हों, किंतु यदि वह कारखाना बंद हो जाता है तो उस से बहुत से अन्य प्रतिष्ठान और व्यापारगृह भी बंद हो जाते हैं. इस प्रकार न केवल हजारों कर्मचारी बेकार हो जाते हैं, अपितु बहुत से लोगों को उपभोग्य वस्तुओं से भी वंचित होना पड़ता है.

उदाहरण के लिए, यदि कोई कपड़ा मिल बंद हो जाए तो कपास ओटने और धुनने वाले कारखानों, मिल तक माल लाने ले जाने वाले लोगों, रंग आदि कच्चे माल की आपूर्ति करने वालों, छपाई और पैकिंग का काम करने वालों एवं बिजली तथा पानी के सप्लायरों के पास काम नहीं रहेगा. इस का बैंकों, डाकघरों तथा देश भर में कपड़ों के वितरकों तथा दुकानदारों पर भी बुरा प्रभाव पड़ेगा. कपड़े की कमी से बाजार में इस के मूल्य बढ़ जाएंगे और उस का सब से बुरा असर पड़ेगा खरीदार पर.

यही नहीं, सरकार को भी उत्पादन शुल्क, बिक्री कर और आय कर में हानि होगी. और यह कोई छोटीमोटी राशि नहीं होगी, बल्कि कुल लाभ के लगभग 80 से 90 प्रतिशत के बराबर होगी. सरकार इस हानि को या तो और अधिक टैक्स लगा कर पूरा कर सकती है अथवा किन्हीं सेवाओं में कमी कर के. श्रमिकों के वेतन में जो हानि होगी, उस से माल की मांग अथवा बिक्री में कमी हो जाएगी. कारखाने के मालिक को होने वाली क्षति से उद्योग को धन मिलने में रुकावट पड़ेगी.

रेलों, बंदरगाहों, जहाजों, डाकघरों, विद्युत तथा जल प्रदाय संस्थानों, हवाई कंपनियों, बस सेवाओं और तेलशोधक कारखानों आदि किसी भी सार्वजनिक उपयोग के क्षेत्र में हड़ताल होने से और भी अधिक हानि होती है, इस से राष्ट्र के जीवन में गतिरोध आ जाता है. श्रमिकों, श्रमदाताओं, उपभोक्ताओं, प्रशासन और किसकिस को नुकसान नहीं उठना पड़ता?

भारत में आज श्रमिकों और श्रमदाताओं के आपसी झगड़ों को न्यायालय द्वारा निपटाने की एक सुगठित और निष्पक्ष व्यवस्था मौजूद है. फिर व्यर्थ में हड़तालों और तालाबंदियों की क्या आवश्यकता?

आखिर, श्रमिकों के झगड़े किस लिए होते हैं? अधिक लाभ तथा सुविधाएं प्राप्त करने के लिए ही तो. उचित (अन्य लोगों को मिलने वाले वेतनों की दृष्टि से), वेतनों और स्वास्थ्य बीमा, भविष्य निधि तथा सेवा पुरस्कार आदि आधारभूत सुरक्षाओं समेत आवश्यक सुविधा की फैक्टरी कानूनों में पहले से ही व्यवस्था है. लड़ाई तो और अधिक लाभ, और अधिक सुविधाएं, और वास्तव में और अधिक पैसा हासिल करने के लिए है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और हड़तालों पर रोक लगाओ

अधिकतर हड़तालें मजदूर नेताओं के आपसी विरोध के कारण होती हैं. ये प्रायः बाहर के राजनीतिक व्यक्ति होते हैं और यह सिद्ध करने के प्रयत्न में रहते हैं कि किस का अधिक बड़ा साम्राज्य, अधिक बड़े समूह पर नियंत्रण है और कौन उन्हें अपने इशारे पर नचा सकता है. अपने इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए वे श्रमिकों एवं समाज को होने वाले भारी नुकसानों तथा कष्टों की भी परवा नहीं करते.

किसी भी आधुनिक समाज में आर्थिक विवादों को हल करने के लिए बलप्रयोग, हिंसा अथवा जोरजबरदस्ती का सहारा नहीं लिया जा सकता. न्याय पाने के लिए कानूनी व्यवस्था का ही सहारा लिया जाना चाहिए. इसी प्रकार श्रमिकों और श्रमदाताओं के आपसी झगड़ों को हड़तालों, मोर्चों, धरनों, घेरावों, प्रबंधकों पर हमलों अथवा जवाबी कार्यवाही के रूप में तालाबंदियों के जरिए नहीं, बल्कि अदालती अथवा पंच फैसले द्वारा ही निपटाया जाना चाहिए.

निस्संदेह, श्रमिकों को अपना श्रम न बेचने का मूलभूत अधिकार है, किंतु क्या इस अधिकार से उसे कारखाने के मालिक को केवल श्रमिकों द्वारा निश्चित की गई शर्तों पर ही अपना कारखाना चलाने के लिए बाध्य करने का अधिकार भी प्राप्त हो जाता है?

यह सही है कि पश्चिम के किसी भी लोकतंत्री देश में अभी तक इस विषय में न्यायालय अथवा पंच द्वारा फैसला कराने की व्यवस्था को लाजिमी नहीं ठहराया गया और न समाजवादी देशों की तरह हड़तालों और तालाबंदियों पर रोक लगाई गई है, किंतु स्थिति तेजी से बदल रही है. औपनिवेशिक साम्राज्यों में आवश्यकताओं से अधिक उत्पादन होने और सस्ता तेल मिलने की वजह से ही वहां हड़तालों और तालाबंदियों की छूट दी जाती है मानो ये बातें कारखानों में रोजरोज की ऊबाऊ मेहनतमजदूरी और काम से हट कर मनबहलाव का कोई स्वस्थ साधन हों.

किंतु आज आसमान को छूने वाली कीमतों पर निरंतर बढ़ती हुई बेरोजगारी ने पश्चिमी देशों को राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में सामूहिक सौदेबाजी, हड़तालों और तालाबंदियों की भूमिका और औचित्य पर फिर से विचार करने के लिए बाध्य कर दिया है. वह दिन दूर नहीं जब उन्हें उत्पादन और रहनसहन के स्तर को बनाए रखने के लिए हड़तालों और तालाबंदियों का खात्मा करना होगा.

न्यायालय का कार्य साधारणतः मंद गति से चलता है, किंतु जल्दी ही फैसले करवाने के लिए काफी संख्या में नई अदालतें और नए जज भी तो नियुक्त किए जा सकते हैं. इस देश में कानूनी प्रतिभाओं की कोई कमी नहीं है. हड़तालों और तालाबंदियों से होने वाली हानियों के मुकाबले इन नई अदालतों पर बैठने वाला खर्च बहुत कम होगा.

किसी भी कारखाना मालिक को तालाबंदी कर के अपने माल का उत्पादन और सेवाएं रोकने की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए.

किसी भी श्रमिक को अपने श्रम से इनकार कर के उत्पादन को भंग करने की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए.

• न हड़तालें, न तालाबंदी • अदालती फैसला लाजिमी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत प्रवाह

राजीव सरकार ने संसद में अपने विशाल बहुमत के जोर से 59वां संविधान संशोधन कानून पास करा लिया. विपक्ष के घोर विरोध को जबरदस्ती अनदेखा कर दिया गया. राष्ट्रपति, जो एक कांग्रेसी ही हैं, और कल तक स्वयं ऐसे प्रावधान के विरुद्ध थे जिस में नागरिक की मूलभूत स्वतंत्रताओं का सरकार की मनमरजी पर, जब चाहे, हनन किया जा सके, अब उन्होंने भी इस विधेयक पर अपनी मुहर लगा दी है. अब देश में कभी भी प्रधान मंत्री की मरजी पर आपातकालीन स्थिति लगाई जा सकती है और पुलिस/फौजी राज स्थापित किया जा सकता है, जिस में कानून या अदालतों का कोई दखल नहीं हो सकता.

इंदिरा गांधी द्वारा संविधान में संशोधन कर के जब आपातकाल लगाया गया था तो 1977 में इंदिरा गांधी के बुरी तरह हार जाने पर जनता सरकार सत्ता में आई थी. तब उस ने संविधान में संशोधन कर के दावा किया था कि अब आगे से कोई आपातकाल नहीं लगाया जा सकेगा.

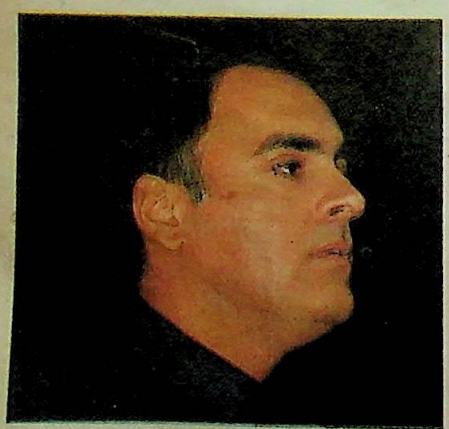

पर संविधान और कानून तो संसदीय बहुमत के हाथ के खिलौने होते हैं. बहुमत चाहे जो कर सकता है, अच्छा या बुरा. वह कानून के अनुसार जनता को घोड़े को गधा, हाथी को जिराफ, स्त्री को पुरुष मानने पर मजबूर कर सकता है क्योंकि फौज की बंदूक और तोप उस के हाथ में होती है. गनीमत यही है कि यह बहुमत साधारणतः 5 वर्ष के लिए ही होता है. पर इस मामले में भी संविधान को बदला जा सकता है और संसद को अनिश्चित काल के लिए कायम, जीवित रखा जा सकता है और तानाशाही चलाई जा सकती है.

इसी लिए अकसर कहा जाता है कि कानून और नैतिकता का कोई संबंध नहीं है. हर कानून की अवज्ञा नैतिकता की अवहेलना नहीं है, जब तक कि कानून स्वयं नैतिकता पर आधारित न हो. अनैतिक कानून का तोड़ना अनैतिक नहीं हो सकता. कभीकभी तो नागरिक का कर्तव्य हो जाता है कि वह अनैतिक कानून की जानबूझ कर अवज्ञा करे. गांधीजी के असहयोग व सत्याग्रह आंदोलनों का तो आधार यही था, और आज भी सारे राजनीतिबाज रोज कानून तोड़ कर गिरफ्तारियां देने का नाटक करते हैं.

फिलहाल अब जनता के पास इस काले

भारिता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...नून को निरस्त करने के लिए एक ही रास्ता ...उच्चतम न्यायालय में चुनौती देने का, जो ...श्रय दी जानी चाहिए. उच्चतम न्यायालय ...का एक निर्णय अभी तक कायम है कि ...विधान के मौलिक जनाधिकार किसी भी ...नून से हटाए या कम नहीं किए जा सकते. ...ब उच्चतम न्यायालय अपनी उच्चतम ...वपरख को कितना कायम रखता है.

*

विधान संशोधन विधेयक पर अपनी मंजूरी देने के संबंध में राष्ट्रपति के फैसले ...एक दूसरे दृष्टिकोण से भी देखा जा सकता ...जब विपक्ष के 100 से अधिक सांसदों ने ...ष्ट्रपति वेंकटरमन से भेंट कर के उन से कहा ...कि आप इसे या तो उच्चतम न्यायालय को ...उस की राय के लिए भेज दें या संसद को लौटा ...दें तो राष्ट्रपति वेंकटरमन यह सोच सकते हैं ...कि संसद को लौटाना तो बेकार की फजीहत

...होगी. कांग्रेस का बहुमत उसे तत्काल ...दोबारा पारित कर देगा. इस प्रकार, प्रधान ...मंत्री से बेकार में मनमुटाव क्यों किया जाए, ...क्यों अपनी बेइज्जती की जाए. जहां तक ...उच्चतम न्यायालय को राय के लिए भेजने ...का प्रश्न है, कोई न कोई तो इसे वहां ले ही ...जाएगा—मैं ही क्यों यह फजीहत उठाऊं. इन ...दोनों बातों में वजन है. एक राजनीतिबाज ...की सहज बुद्धि भी यही गवाही देगी.

*

कर्नाटक में रामकृष्ण हेगड़े के मंत्रिमंडल में भी उथलपुथल शुरू हो गई है. वहां की जनता पार्टी में लगभग 60 असंतुष्ट विधायक रामकृष्ण के विरुद्ध खड़े हो गए हैं. एक मंत्री ने तो इस्तीफा तक दे दिया है. इन लोगों का आरोप है कि हेगड़े अपनी हेकड़ी चलाते हैं और भ्रष्टाचार के भी दोषी हैं. उन के बेटे पर गैरकानूनी ढंग से धन जमा करने के आरोप भी लगाए गए हैं.

पिछले महीने हुए राज्य सभा के चुनावों में हेगड़े द्वारा सुप्रसिद्ध वकील रामजेठमलानी को कर्नाटक से चुने जाने के लिए जो काररवाई की गई है उस की भी आलोचना की गई—एक महाराष्ट्री मतदाता को कर्नाटक से क्यों खड़ा किया गया इत्यादि.

रामकृष्ण हेगड़े बहुत दिनों से कर्नाटक की सीमाबंदी तोड़ कर केंद्र में आना चाहते हैं. पिछले दिनों उन के प्रधान मंत्री बनने की संभावना पर भी काफी चर्चा हुई. पर अभी तो वह जनता पार्टी के अध्यक्ष भी नहीं बन पाए हैं. चंद्रशेखर लोकदल के अजीत सिंह को संयुक्त जनता पार्टी के कार्यकारी अध्यक्ष बना कर अपनी गोट खेल गए और हेगड़े ताकते रह गए.

कर्नाटक के दो कांग्रेसी विधायकों ने यह आरोप भी लगाया है कि जनता पार्टी ने उन्हें 1½ लाख से अधिक रुपए राज्य सभा चुनावों में जनता पार्टी के उम्मीदवार को वोट देने के लिए दिए और उन्होंने यह रुपया विधान सभा अध्यक्ष के समक्ष रख भी दिया. अब इस की जांचपड़ताल होगी. इस पर हेगड़े ने यह भी कहा कि यह सब नाटकबाजी है और रुपया कांग्रेस का है क्योंकि कांग्रेस के ही पास इतना रुपया है कि वह बांटती फिरे. यह सच भी है क्योंकि कांग्रेस के रुपया बटोरने के साधन, सत्ता में होने के कारण बहुत अधिक हैं. केंद्र का खर्च 70,000 करोड़ रुपए का है, और लाइसेंस, परमिट, कंट्रोल अंतहीन हैं, जिन के द्वारा रुपया जमा किया जाता है.

ऐसी स्थिति में विपक्ष की पार्टियों को बहुत सतर्क रहने की आवश्यकता है. जो हाल सत्तारूढ कांग्रेस का है वही हाल उन के यहां भी हो सकता है, यदि वे सत्ता में आए तो. विपक्ष से निकाले जाने पर कांग्रेस हर व्यक्ति का ठौर हो सकता है, पर कांग्रेस से निष्कासित व्यक्ति का ठिकाना कहीं नहीं होता. इसलिए इस पैसे और सत्ता के खेल में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कांग्रेस को हराना आसान नहीं है, जब तक विपक्ष के दल केवल सत्ता ही की फिकर करने के बजाए कुछ नैतिकता, आदर्शवाद भी अपने कार्यक्रमों, उद्देश्यों में सम्मिलित करें और उन पर अमल भी करें.

*

लोकसभा को बताया गया कि बंबई में आयकर विभाग ने 1 अप्रैल, 1987 से 29 फरवरी, 1988 तक 1,273 छापे, यानी कानूनी डकैतियां डालीं और अनुमानतः 37.34 करोड़ का सामान पकड़ा. इन 37 करोड़ रुपए के अनुमान से सरकार को मुशकिल से तीन या चार करोड़ रुपए मिलेंगे. लगभग इतना ही अधिकारियों की जेबों में जाएगा. काफी रकम वकील और चार्टर्ड एकाउंटेंट की जेबों में जा कर बाकी का सामान छूट जाएगा क्योंकि अनुमान बढ़ाचढ़ा कर लगाए जाते हैं, और डकैतियों से पीड़ित, सामान के मालिक बाकी को गलत काबिज किया गया साबित कर देंगे.

जब बंबई में ही, जो देश का सब से अधिक विकसित औद्योगिक व व्यापारिक शहर है, एक वर्ष में इतना जरा सा धन सरकार के हाथ लगा तो सारे देश में ही ऐसी डकैतियां डालने से क्या लंबाचौड़ा धन मिलेगा?

अलबत्ता सत्तारूढ दल के लिए इन डकैतियों का डर पैसा वसूल करने का अच्छा साधन है. कानूनी डकैती की धमकी दी और थैली हाथ में आ गई. थैली नहीं मिली तो छापा डाल दिया. अब वह व्यक्ति बरसों तक मारामारा फिरे. अपने को बेगुनाह साबित करने में लगा रहे.

आजकल 1 लाख से अधिक की आदमनी पर आय कर की दर लगभग 60% है. यदि आयकर की अधिकतम दर को 25% कर दिया जाए तो आज जो टैक्स मिलता है, उस से दोगुना स्वयं मिल जाएगा, टैक्स की अवहेलना काफी बंद हो जाएगी और स्विटजरलैंड के बैंकों में खाते रखने की जरूरत नहीं रहेगी.

आज तो थोड़ी सी भी अच्छी आय वाले को कर की अवहेलना करनी पड़ती है, जिस से देश की औद्योगिक व आर्थिक प्रगति में बाधा पड़ती है. आय को छिपा कर रखा जाता है, या बाहर भेज दिया जाता है, जिस के कारण पूंजी के अभाव में नए छोटेबड़े उद्योग स्थापित नहीं किए जा सकते. यदि टैक्स कम हो तो यह सारा रुपया बैंकों में, सरकारी ऋणपत्रों में, मकानों में, फैक्टरियों में, व्यापार में लग जाए और लोगों में अधिक धंधा बढ़ाने और धन कमाने का प्रलोभन हो जाएगा.

आज तो उद्यमी, मेहनती, कुशाग्रबुद्धि व्यक्ति सोचता है मुझे मिलना ही क्या है, सारा धन तो सरकार ले जाएगी.

*

सरकार ने कहा है कि भारतीय वैज्ञानिकों ने जमीन से जमीन पर मार करने वाली मिसाइल 'पृथ्वी' का सफल परीक्षण कर लिया है. पर न जाने क्यों सरकार ने यह विवरण नहीं दिया कि यह मिसाइल कहां से छोड़ी गई, कहां तक पहुंची. इस के पहले के परीक्षणों का कोई ब्योरा नहीं दिया गया है. आखिर ऐसी मिसाइल, जिस के लिए यह दावा किया जाए कि यह 100% स्वदेशी टेकनीक व जानकारी से बनी है, यह बताना जरूरी है कि इस दिशा में क्याक्या प्रयास व परीक्षण किए गए, उन में से कितने सफल हुए, कितने असफल.

इस विषय में यह भी कहना जरूरी है कि भारतीय वैज्ञानिक व इंजीनियर अब तक न तो कोई तोप बना सके हैं, न कोई टैंक. जो टैंक बना भी है, उस में इंजन विदेशी हैं, अन्य महत्त्वपूर्ण कलपुर्जे भी विलायती हैं.

अरिंदा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कनीक भी सारी किराए या उधार की.

यही हाल हवाई जहाजों का है. दुस्तान एअरोनोटिक्स आज तक लड़ाई के युक्त कोई हवाई जहाज ही नहीं बना या, नागरिक उड्डयन के लिए भी नहीं. लघु प्रशिक्षक हवाई जहाज बनाए, पर न के इंजन भी विदेशी थे और वे भी धिकतर असफल ही रहे.

हाथ की बंदूकों के बारे में भी आप रोज ढ़ते होंगे कि पंजाब के आतंकवादियों के स चीन और अमरीका की आधुनिक तेज तार की गोलियां छोड़ने वाली गनें हैं, र इस कारण पंजाब की पुलिस उन से ुकाबला नहीं कर सकती.

जब हम न आधुनिक बंदूक बना सकते, तोपें, न टैंक, न हवाई जहाज, तो हम किस बूते पर कह सकते हैं कि हम अपनी आत्मरक्षा कर सकते हैं?

जहां तक 'पृथ्वी' नामक मिसाइल का संबंध है, उस से कुछ बनेबिगड़ने वाला नहीं. यदि पाकिस्तान से लड़ाई हुई तो पाकिस्तान चाहे मिसाइलें न बना सके, वह खरीद तो सकता है या अपने मित्र अमरीका से ले सकता है. आखिर पश्चिम एशिया के ये अविकसित देश, इराक व ईरान इन आधुनिक मिसाइलों से लड़ ही रहे हैं. उन्हें भी ये मिल ही रही हैं.

कांग्रेस सरकार पर यह सब से बड़ा कलंक है कि उस ने पिछले 40 वर्ष में आत्मरक्षा के मामले में कुछ नहीं किया. अन्य देश 40 वर्षों में आधुनिकतम हथियार बना कर बचे रहे हैं. हम अभी .303 की बंदूकों के ढेरे में पड़े हैं और जो भी सामान चाहिए, बाहर से आयात कर रहे हैं.

हां, यह बात तो है ही कि देश में सामान बने तो रिश्वत का पैसा बनने की संभावना नहीं रहेगी. आयुध बाहर से आयात करने में मोटी रकम स्विस बैंकों में जमा होने की पूरी पेशकश रहती है.

*

पिछले महीने रूस के राकेट द्वारा भारत ने अपना पहला सुदूर संवेदी (रिमोट सेंसिंग) 980 किलोग्राम भारी उपग्रह छोड़ा और कक्षा में बैठा दिया. यह काम सराहनीय है. कहा जा रहा है कि भारत उन 6 देशों में है जिन्होंने ऐसे उपग्रह अंतरिक्ष में छोड़ रखे हैं और इन से काम ले रहे हैं.

पर इस पर हर्ष करना सीमित ही होगा क्योंकि यद्यपि यह उपग्रह बनाया तो भारत में ही गया, पर विशेष कलपुरजे तो सब बाहर से ही मंगाने पड़े और इसे अंतरिक्ष में भेजा गया भी विदेशी राकेट की सहायता से. इस उपग्रह के बारे में यह भी, दिल्ली के दैनिक हिंदुस्तान टाइम्स में प्रकाशित एक समाचार में कहा गया है कि इस उपग्रह को कक्षा में बैठाने का काम एक जरमन कंपनी को दिया गया, और उस ने अलास्का स्थित अमरीकन उपग्रह व्यवस्था से सहायता ली, तब यह उपग्रह कक्षा में बैठा. जब तक इन उपग्रहों का सारा सामान हमारे यहां ही नहीं बनने लगता, और इन्हें ऊपर भेजने का प्रबंध भी भारतीय राकेटों द्वारा नहीं हो जाता, हमारा अपनी उपलब्धि पर गर्व करना गलत होगा.

अभी तो भारत में जितने कंप्यूटर व अन्य आधुनिक यंत्र चल रहे हैं, छोटे या बड़े, उन का असली सामान तो सारा विदेशों से ही आता है. यहां तो केवल ढांचा और ऊपरी सामान बना कर लगा दिया जाता है.

जहां तक उपग्रहों का संबंध है. हम से तो चीन ही बहुत आगे है. 1947 में भारत को आजादी मिली. लगभग इसी समय चीन को भी लंबे गृहयुद्ध व जापानी कब्जे से स्वतंत्रता मिली. आज चीन के पास अपने राकेट हैं जिन के द्वारा वह 3,000 किलोग्राम वजन के दो उपग्रह छोड़ चुका है. चीन के पास हाइड्रोजन बम हैं, 3,000 मील दूर मार करने वाले राकेट मिसाइलें हैं, वह अपने हवाई जहाज और शस्त्र स्वयं बनाता है. भारत में सारा 'इंपोरटेड' या 'फारेन' है. केवल एक चीज में हम सब आगे हैं और वह है लफ्फाजी, बातें, अपनेआप मियांमिट्ठू बनने की कला, अपने को जगतगुरु कहने की आदत. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

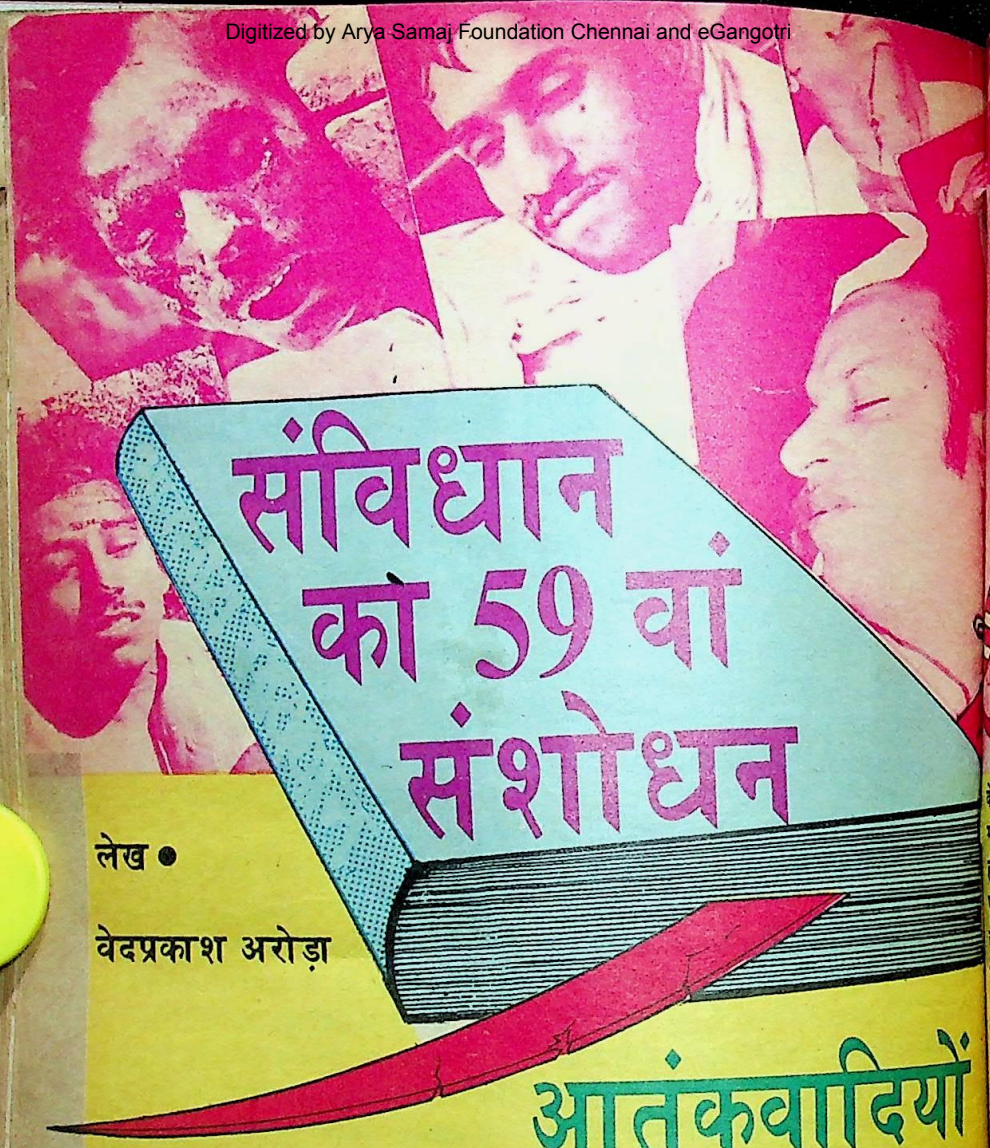

संविधान का 59 वां संशोधन

लेख ●

वेदप्रकाश अरोड़ा

आतंकवादियों से निबटने के लिए कागजी

पंजाब में आंतरिक गड़बड़ के भयंकर रूप धारण करने की स्थिति में आपात-स्थिति लागू करने से संबंधित 59 वां संविधान संशोधन विधेयक राष्ट्रपति की मंजूरी मिलते ही 30 मार्च, 1988 को कानून बन गया. राष्ट्रपति के सामने इसे स्वीकृति देने के सिवा कोई अन्य चारा भी नहीं था. अगर इस समय ज्ञानी जैलसिंह राष्ट्रपति होते और वह इसे पसंद न करते तो भी उन्हें अनुच्छेद 368 के अंतर्गत विधेयक को तो मंजूरी देनी ही पड़ती.

इस अनुच्छेद के अनुसार जब संसद के दोनों सदनों द्वारा पारित कोई संविधान संशोधन विधेयक मंजूरी के लिए राष्ट्रपति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

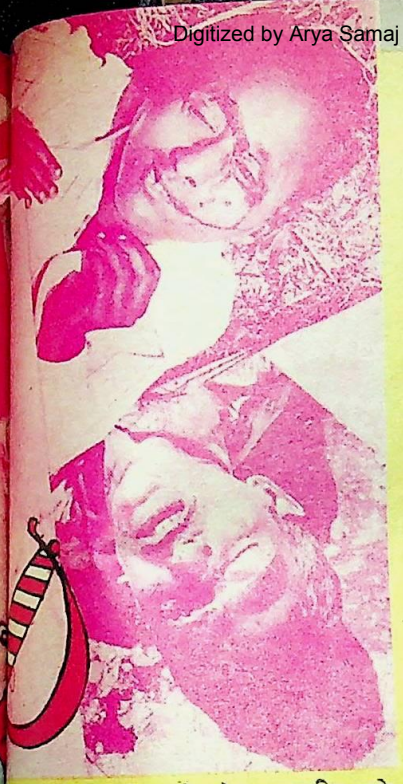

पंजाब में अंधाधुंध निर्दोषों की हत्याओं को रोक पाने में असफल केंद्र सरकार ने लोगों का ध्यान बंटाने के लिए एक शगूफा छोड़ा है और बहुमत के जोर पर आपात-स्थिति लागू करने का अधिकार प्राप्त कर लिया है. इस से जनसाधारण और अखबारों का गला तो घोंटा जा सकता है, परंतु आतंकवादियों के रवैए में कोई फर्क आ पाएगा, ऐसा नहीं लगता.

के सामने पेश होता है तो राष्ट्रपति उसे मंजूरी देने से इनकार नहीं कर सकता. इतना ही नहीं, इस स्थिति में राष्ट्रपति को पुनर्विचार के लिए यह विधेयक संसद को लौटाने की भी छूट नहीं होती. इसलिए 100 से अधिक विरोधी सांसदों का राष्ट्रपति से मिलना और उन से इस विधेयक को उच्चतम न्यायालय के पास राय जानने के लिए भेजने का अनुरोध करना बेकार रहा.

राष्ट्रपति वेंकटरमन : इच्छा अनिच्छा या उचित अनुचित का प्रश्न नहीं बल्कि स्वीकृति देना एक मजबूरी है.

तलवार

अब जब भी सरकार समझेगी, पंजाब में आतंकवाद बहुत ही व्यापक और उग्र हो गया है तथा उस से निबटने के लिए कहीं उसे अधिक अधिकारों की जरूरत है तो वह इस कानून के अंतर्गत आपातस्थिति लागू कर सकती है. इस तरह, संविधान लागू होने के बाद पंजाब पहला राज्य होगा, जहां केंद्र जरूरी समझने पर आपातस्थिति घोषित कर सकेगा.

जोधपुर से 40 नजरबंद सिखों, मुख्य ग्रंथियों और पंथक समिति के सदस्यों को रिहा करने, जसबीरसिंह रोड़े द्वारा अकाल तख्त के मुख्य जत्थेदार का विधिवत कार्यभार संभाल लेने तथा केंद्र द्वारा उग्रपंथियों से परदे के पीछे संपर्क सूत्रों के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जरिए बातचीत का संकेत देने के बावजूद, उग्रपंथियों ने अपना खूंखार खेल बंद नहीं किया है. उलटे, प्रतिदिन 12-13 और कभीकभी तो 30-35 तक निर्दोष स्त्रीपुरुषों, मासूम दूध पीते बच्चों, नईनवेली दुलहनों और गर्भवती महिलाओं को अपनी गोलियों से ढेर किया जा रहा है. गुडफ्राइडे को तो 37 व्यक्तियों को नाजी अंदाज में मौत के घाट उतार दिया गया.

अखिल भारतीय सिख विद्यार्थी फेडरेशन का मंजीत गुट 'खालसा राज' का खुले आम नारा लगाता है. यह गुट भिंडरांवाले के पिता बाबा जोगिंदरसिंह के मार्गनिर्देश से काम करता है. उन के इस प्रस्तावित खालसा राज में केवल सिख प्रथम श्रेणी के तथा हिंदू और दूसरे अल्पसंख्यक दूसरे दर्जे के शहरी होंगे तथा उन्हें मतदान का अधिकार नहीं होगा.

अखिल भारतीय सिख विद्यार्थी फेडरेशन का गुरजीत गुट भी, जो अब तक नरमपंथी समझा जाता था, खालिस्तान का ध्वजारोही बन बैठा है और अब पंथक समिति के निर्देश पर काम करने लगा है.

विभिन्न उग्रवादी संगठन तो खालिस्तान को एक व्यावहारिक सत्य मान कर अपने विरोधियों को गाजरमूली की तरह काट कर फेंक देने और उन के घरों को जला कर भस्म कर देने में विश्वास करते हैं. इन में खालिस्तान कमांडो फोर्स, खालिस्तान लिबरेशन फोर्स और भिंडरांवाला टाइगर फोर्स आदि सब मौत का खेल खेलने में एकदूसरे से होड़ ले रहे हैं.

इन सब से ऊपर जत्थेदार जसबीरसिंह रोड़े ने विभिन्न खाड़कू संगठनों तथा सिख विद्यार्थी फेडरेशन के दोनों घड़ों को एकसूत्र में पिरोने का प्रयास करते हुए 'पूरन आजादी' का नारा लगाया है. लेकिन उन्होंने दो टूक शब्दों में यह स्पष्ट नहीं किया कि यह पूरन आजादी संविधान की चौखट में रहते हुए प्राप्त करने की कोशिश की जाएगी या उसे तोड़ कर.

खालिस्तान लिबरेशन फोर्स के जनरल अवतारसिंह ब्रह्मा ने तो राज्यपाल सिद्धार्थशंकर राय और पुलिस के महानिदेशक जूलियस फ्रांसिस रिबेरो को खुली चुनौती दी है कि वे जब चाहें अपनी फोर्स ले कर मंड इलाके में जुझारू सिंहों से जोर आजमा कर अपनी ताकत को तोल सकते हैं.

सिद्धार्थ शंकर रे : जिस उत्साह और आशा से राज्यपाल बनाया गया था, कुछ खास करिश्मा नहीं दिखा पाए.

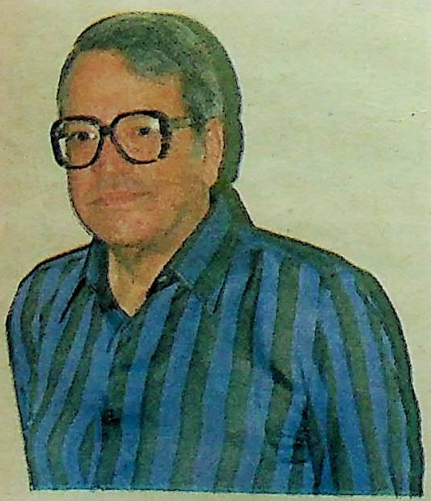

जूलियस फ्रांसिस रिबेरो : दावे तो बहुत हो चुके. अब चुनौतियों का मुकाबला कर के दिखाएं तो जानें.

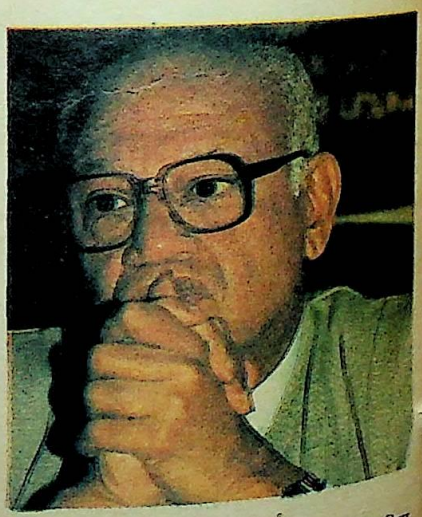

भारिता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

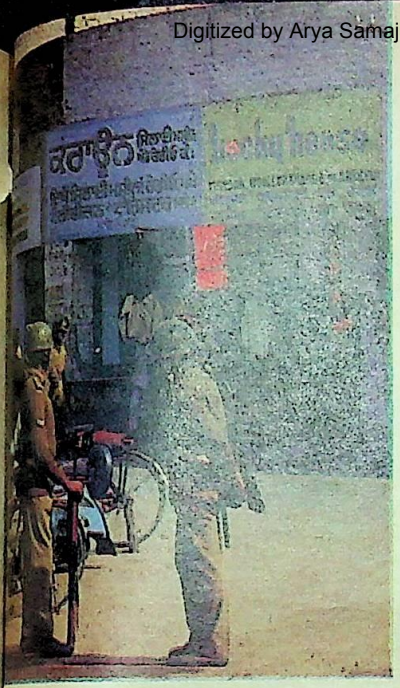

सरकार के अनुसार, आपातस्थिति लागू करने का यह कानून इन्हीं आतंकवादियों, पाक एजेंटों और भेष बदल कर आए स्वयं पाकिस्तानियों से निबटने के लिए बनाया गया है. इस समय राज्य में कानून और व्यवस्था लागू करने वाली मशीनरी बिलकुल असफल हो गई है. पुलिस कर्मचारियों का मनोबल टूटा हुआ है. वे अपना और अपने परिवारजनों का जीवन खतरे में नहीं डालना चाहते. वे या तो वित्तीय व धार्मिक प्रलोभनों के आगे बिक जाते हैं या फिर बुरी तरह भयभीत रहते हैं.

सरकार का दावा है कि आपात प्रावधान इस स्थिति से उबार कर अधिकारियों के हाथ मजबूत करेंगे. सरकार का यह भी कहना है कि पंजाब में न्यायिक प्रणाली लगभग भंग हो चुकी है. मजिस्ट्रेट अदालतों में आतंकवादियों पर मुकदमे चलाने में इतने भयभीत रहते हैं कि वे या तो अवकाश पर चले जाते हैं या फिर खौफनाक हत्यारों के फौजदारी मुकदमों की तारीख पर तारीख आगे डाल कर अपनी जान बचाते हैं. मजिस्ट्रेट या जज जमानत की अर्जियां तुरंत स्वीकार कर लेते हैं. इस राज्यव्यापी प्रशासनिक बेबसी को दूर किया जाए तो कैसे? कत्लेआम के उफान को रोका जाए तो कैसे? और पाक तत्त्वों का सफाया किया जाए तो कैसे? इन सभी प्रश्नों का उत्तर खोजने के बहाने सरकार आपातस्थिति संबंधी कानून का सहारा ले रही है.

फिलहाल सरकार दोतरफा नीति का अनुसरण कर रही है. एक तरफ, वह सरगना आतंकवादियों को रिहा कर उन्हें राज्य में शांति सद्भाव फिर स्थापित करने, आतंकवाद की राह छोड़ने तथा रचनात्मक भूमिका का मौका देने की बात कर रही है. वह चाहती है कि अकाल तख्त के मुख्य जत्थेदार जसबीरसिंह रोड़े के माध्यम से आतंकवादियों के साथ बातचीत की जाए. दूसरी तरफ, अगर बातचीत का रुख अनुकूल न हो तो आपातस्थिति का लाभ उठा कर आतंकवादियों के खिलाफ पहले से भी कहीं अधिक सख्ती से पेश आया जाए. उस का यह नरमगरम रवैया, लचीलेपन के साथ सुदृढ़ता का दृष्टिकोण एक सुविचारित नीति का परिणाम है या यह उद्देश्यहीन व दूरदर्शितारहित नीति का?

पंजाब की जनता मोटे तौर पर दो हिस्सों में बंटी है. आतंकवादी और गैरआतंकवादी. आतंकवादियों के मामले में समस्या पूरी तरह कानून और व्यवस्था की है. इन पृथकतावादियों से वैसे ही पेश आना होगा, जैसे किसी जहरीले सांप से पेश आया जाता है. पंजाब की शेष जनता के मामले में आर्थिक और राजनीतिक समाधान निकालना होगा. आपातस्थिति मूलतः आतंकवादियों से निबटने के लिए ही लागू की जाएगी.

संविधान का 59वां संशोधन लाख विरोधों के बावजूद पक्का कानून बन चुका है. इस अधिनियम के अंतर्गत पंजाब में राष्ट्रपति शासन एकसाथ तीन वर्ष के लिए लागू किया जा सकेगा. साथ ही, देश की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एकता और अखंडता को खतरे में डालने वाली आंतरिक गड़बड़ व सशस्त्र विद्रोह की रोकथाम के लिए आपातस्थिति सारे राज्य में या कुछ जिलों में लागू की जा सकेगी. इस के तहत अनुच्छेद 19 और अनुच्छेद 21 के उपबंधों को ताक पर रख देना होगा. ये दो अनुच्छेद संविधान के मूलभूत अधिकारों वाले भाग तीन का अंग हैं. अनुच्छेद 19 में नागरिक को भाषण देने, विचार अभिव्यक्त करने, एकत्र होने, संगठन बनाने, देश में कहीं भी बेरोकटोक आनेजाने और बसने का मूलभूत अधिकार प्राप्त है, तो अनुच्छेद 21 में जीवन और व्यक्तिगत स्वतंत्रता की रक्षा का बुनियादी अधिकार है.

लेकिन आपातस्थिति लागू रखने में मनमानी न हो, इस के लिए हर छः महीने में उस का संसद से अनुमोदन प्राप्त करते रहना होगा. इतना ही नहीं, आपातस्थिति की घोषणा को अदालत में चुनौती दी जा सकती है. यहां तक कि अगर अनुच्छेद 21 स्थगित कर दिया गया तो भी जमानत पर रिहा होने का अधिकार, पैरवी के लिए वकील की नियुक्ति और न्यायसंगत मुकदमे के कानूनी अधिकार बने रहेंगे. अभी आपातस्थिति की घोषणा करने का अधिकार ही सरकार को मिला है, जब वास्तव में घोषणा की जाएगी तो उस के लिए सरकार को फिर संसद के दोनों सदनों की मंजूरी लेनी होगी.

लेकिन विपक्ष इन आश्वासनों से आश्वस्त नहीं है. विपक्ष में कई नेता ऐसे हैं जिन्होंने इंदिरा गांधी के शासनकाल में आपातस्थिति के दौरान अनेक अत्याचार सहे या उस के अभिशप्त साए में चैन से सो नहीं पाए. 'इमरजेंसी' का नाम सुनते ही वे चौंक उठते हैं.

1978 में जब संविधान में 44 वें संशोधन का विधेयक संसद ने पास किया था तब कांग्रेस सहित सभी दलों में सर्वसम्मति सहमति हुई थी कि भविष्य में आपातस्थिति लगाने पर अन्य मूलभूत अधिकार भले ही स्थगित कर दिए जाएं, जीवन और व्यक्तिगत स्वाधीनता के अधिकारों को सुरक्षित रखने वाले अनुच्छेद 21 को अक्षुण्ण बनाए रखा जाएगा. अब उस वादे का क्या हुआ?

ज्यादतियां तो होती रहेंगी

आपातकाल में हमेशा ज्यादतियां होती हैं और दमन बढ़ जाता है. इस नए कानून का अनुचित लाभ उठा कर न केवल पंजाब में बल्कि उस के बाहर भी पंजाब की घटनाओं के समाचारों और टिप्पणियों के प्रकाशन को ले कर अनुच्छेद 353 के अंतर्गत अखबारों का गला घोटा जा सकेगा. इतना ही नहीं, जोधपुर नजरबंदों और मुख्य ग्रंथियों की रिहाई से जो सद्भावपूर्ण वातावरण बना था, वह इस कानून से फिर दूषित हो गया है.

इधर पंजाब में अगर स्थिति बद से बदतर हुई है तो इसलिए नहीं कि राज्यपाल या पुलिस प्रमुख के पास अधिकारों या हथियारों की कमी रही है बल्कि इसलिए कि सरकार में संकल्प और दूरदर्शिता की कमी है. अब तक जितने भी कानून बनाए गए हैं, उन पर या तो अमल हुआ ही नहीं, और अगर हुआ है तो बेमन और बुजदिली से. इसी लिए वह जनता के विभिन्न वर्गों का विश्वास खोती जा रही है. सरकार को व्यापक अधिकार प्रदान करने के लिए संसद पंजाब के संबंध में अब तक कोई 22 कानून पास कर चुकी है.

पंजाब में मार्शल ला जैसा तो पहले ही लगा है, जो आपातकालीन उपबंधों से कम नहीं. राष्ट्रीय सुरक्षा अधिनियम के अंतर्गत किसी भी व्यक्ति को, बिना किसी मुकदमे के, दो वर्ष के लिए नजरबंद किया जा सकता है.

इस के अलावा, आतंकवादी और विध्वंसात्मक गतिविधि निरोध अधिनियम, पंजाब उपद्रवग्रस्त अधिनियम और पंजाब सशस्त्र बल (विशेष अधिकार) अधिनियम के अंतर्गत भी व्यापक अधिकार दिए गए हैं. लेकिन इन में से किसी से भी सरकार को मनोवांछित फल नहीं मिल सका है. परिणाम

सरिता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

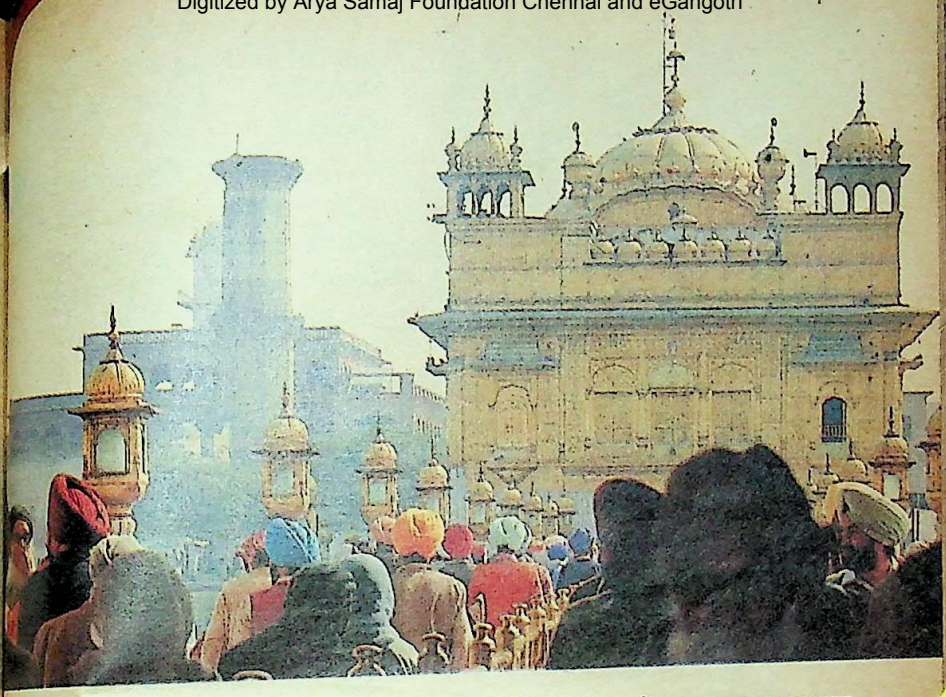

स्वर्ण मंदिर परिसर में जमाव : क्या सरकार गुरुद्वारों के अंदर की गतिविधियों पर अंकुश लगा पाएगी?

की दृष्टि से वे ही ढाक के तीन पात नजर आते हैं.

असल में, कानूनव्यवस्था लागू करने वाले अधिकारी और तंत्र हिंसा की बढ़ती हुई पैशाचिक घटनाओं के आगे जड़ अथवा सन्न रह गए हैं. 18 महीने पहले इन सब कानूनों को अपर्याप्त बता कर यह कहा गया था कि जब तक सरकार को पश्चिमी सीमा के साथसाथ सुरक्षा पट्टी बनाने का अधिकार नहीं मिल जाता, तब तक पंजाब की समस्या का समाधान नहीं हो सकता. इसलिए अनुच्छेद 249 का सहारा लेना आवश्यक था. यह तभी हो सकता था जब उसे यह अधिकार राज्य सभा दोतिहाई बहुमत से प्रदान कर दे. ऐसा कर दिए जाने तथा सुरक्षा पट्टी के निर्माण का अधिकार मिल जाने के बावजूद आज तक सुरक्षा पट्टी नहीं बनाई गई. इसी लिए यह कहा जाने लगा है कि सरकार के अधिकतर कदम अस्थायी मूल्यांकन के आधार पर उठाए जाते हैं, या इन की प्रेरणा विशुद्ध रूप से राजनीतिक स्वार्थपरता या अवसरवादिता पर आधारित होती है.

अब फिर इसी की पुनरावृत्ति हो रही है और फिर वही पहले जैसा शून्य परिणाम हाथ लगेगा. इसी लिए कहा गया है कि अशक्त सरकार को अधिक अधिकार देना वैसा ही निरर्थक है जैसे कि शून्य को किसी भी अंक से गुणा करने कर परिणाम शून्य ही रहता है. नहीं तो क्या कारण था कि 6 मार्च को जब ए.के. 47 चीनी राइफलों से लैस कोई 40 उग्रवादी सरोपा ग्रहण करने के लिए दरबार साहब परिसर में जत्थेदार भाई जसबीरसिंह रोड़े के निवास पर जा रहे थे तो सुरक्षा बल तमाशबीनों की तरह उन्हें देखते रहे. आतंकवादियों की टुकड़ी सामने हो और सुरक्षा बल का उन से दोदो हाथ न हो, यह जड़ता, अशक्तता अथवा कर्तव्य-विमखुता नहीं तो और क्या है?

स्वर्ण मंदिर परिसर में जानलेवा घातक हथियारों का प्रदर्शन बंद न कर सकने का सिलसिला अगर राष्ट्रपति के एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

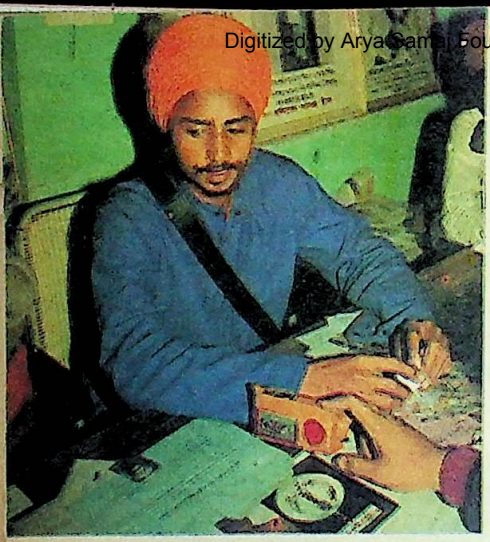

अखिल भारतीय सिख छात्र संघ का अध्यक्ष गुरमीत : मौत का खेल खेलने की होड़ में.

वर्ष के शासनकाल में नहीं रुका तो दो वर्ष में कैसे रुक सकेगा?

आपातस्थिति को भी लागू तो राष्ट्रपति शासन का वर्तमान तंत्र ही करेगा जो अब तक आतंकवादियों के बढ़ते पैशाचिक कृत्यों को बंद करवाने में असफल रहा है. आपातस्थिति लागू होने से स्थिति में लेशमात्र बदलाव नहीं आने वाला है. उलटे, तब आपातस्थिति की जगहंसाई होगी. अगर पंजाब में आपातस्थिति लागू की गई तो राज्य में कभी जलसेजलूसों, सभाओं, जनसंपर्क अभियानों और प्रदर्शनों पर भी प्रतिबंध लग जाएगा. इस का नजला आतंकवादियों को छोड़ कर अन्य सभी राजनीतिक दलों पर पड़ेगा. जो राजनीतिक दल उग्रवाद, आतंकवाद और पृथकतावाद का डट कर मुकाबला कर रहे हैं, उन के द्वारा आतंकवादियों के विरुद्ध चलाए जा रहे विभिन्न जन संपर्क अभियान एकदम बंद हो जाएंगे. उग्रवादी अपना प्रचार गुरुद्वारों में बेरोकटोक करते रहेंगे. सड़कों, गलीकूचों और बाजारों में तो वे अचानक मारकाट के लिए आते हैं. प्रश्न यह है कि क्या जलसेजलूसों पर प्रतिबंध गुरुद्वारों के अंदर भी लगेगा? अगर नहीं तो आपातस्थिति लागू करना बेकार है, और इसी तरह राष्ट्रपति शासन दो वर्षों के लिए बढ़ा कर आतंकवाद पर काबू पाने का सपना लेना निरर्थक है.

संभव है, आपातकाल की मार पड़ने पर एकीकृत अकाली दल और लोंगोवाल अकाली दल मजबूत जनाधार बनाने के लिए परस्पर मिलने के उपाय कर, नई आपातस्थिति की घोषणा का वैसे ही विरोध करें जैसे उन्होंने 1975 में किया था. इस के विरुद्ध सभी विचारधाराओं वाले अकाली संयुक्त मोरचा कायम कर, सरकार के लिए एक नया सिरदर्द उत्पन्न कर सकते हैं. पंजाब के बाहर भी विपक्षी दल जयप्रकाश नारायण जैसा जन आंदोलन छेड़ने की सोच रहे हैं. गैरकांग्रेसी सरकारों द्वारा शासित राज्यों के मुख्य मंत्रियों ने खुल कर इस कानून का विरोध किया है. पिछले आपातकाल से स्पष्ट है कि जितना दमन बढ़ता जाएगा, उतेना ही विरोध प्रचंड होता जाएगा. साथ ही जनतंत्र में जिस भी पार्टी का जनाधार धसक जाएगा, उसे जनता दूर कूड़ेदान में फेंक देगी.

आतंकवादी हिंसा को रोकने के लिए सरकार को सब से पहले यह उपाय करना होगा कि इन धर्मांध उग्रपंथियों को हथियार न मिलें और न हथियार खरीदने के लिए उन के पास रुपएपैसे हों. इन दिनों रुपएपैसे का मुख्य स्रोत गुरुद्वारों का चढ़ावा है. लाखोंकरोड़ों का चढ़ावा पंथक कमेटी और खालिस्तान परिषद के हाथों में सीधा चला जाता है. ऐसी स्थिति में आतंकवादियों की फसल घटने की बजाए बढ़ती ही जाएगी. जब चाणक्य ने चूहे को बहुत उत्पात मचाते देखा था तो उस ने उस के बिल और उस में पड़े खाने को नष्ट कर दिया था. देखते ही देखते चूहा मुरझा गया. आतंकवादियों के होश ठिकाने लगाने के लिए भी सरकार को वैसे ही जड़ पर प्रहार करना होगा. ऊपर से आपातस्थिति लादने से समस्या मुंह बाए खड़ी ही नहीं रहेगी, उलटे और भी विकट हो जाएगी.

सरिता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इंद्रधनुष

कहानी • शकुंतला शर्मा

"वाह, आज तो आप सचमुच बिजली गिरा रही हैं. नई साड़ी है क्या?" ऋचा को आते ही गिरीश मुसकराया.

"न तो यह नई साड़ी है और न ही मेरा इरादा है किसी पर बिजली गिराने का," ऋचा रूखेपन से बोली, जबकि उस ने वाकई नई साड़ी पहनी थी.

"आप को बुरा लगा हो तो माफी चाहता हूं. पर यह रंग आप पर बहुत फबता है. फिर आप की सादगी में जो आकर्षण है, वह सौंदर्य प्रसाधनों से लिपेपुते चेहरों में कहां. मैं तो मां से हमेशा आप की प्रशंसा करता रहता हूं. वह तो मेरी बातें सुन कर ही आप की इतनी बड़ी प्रशंसक हो गई हैं कि आप के मातापिता से बातें करने, आप के यहां आना चाहती थीं, पर मैं ने ही मना कर दिया. सोचा, जब तक आप राजी न हो जाएं,

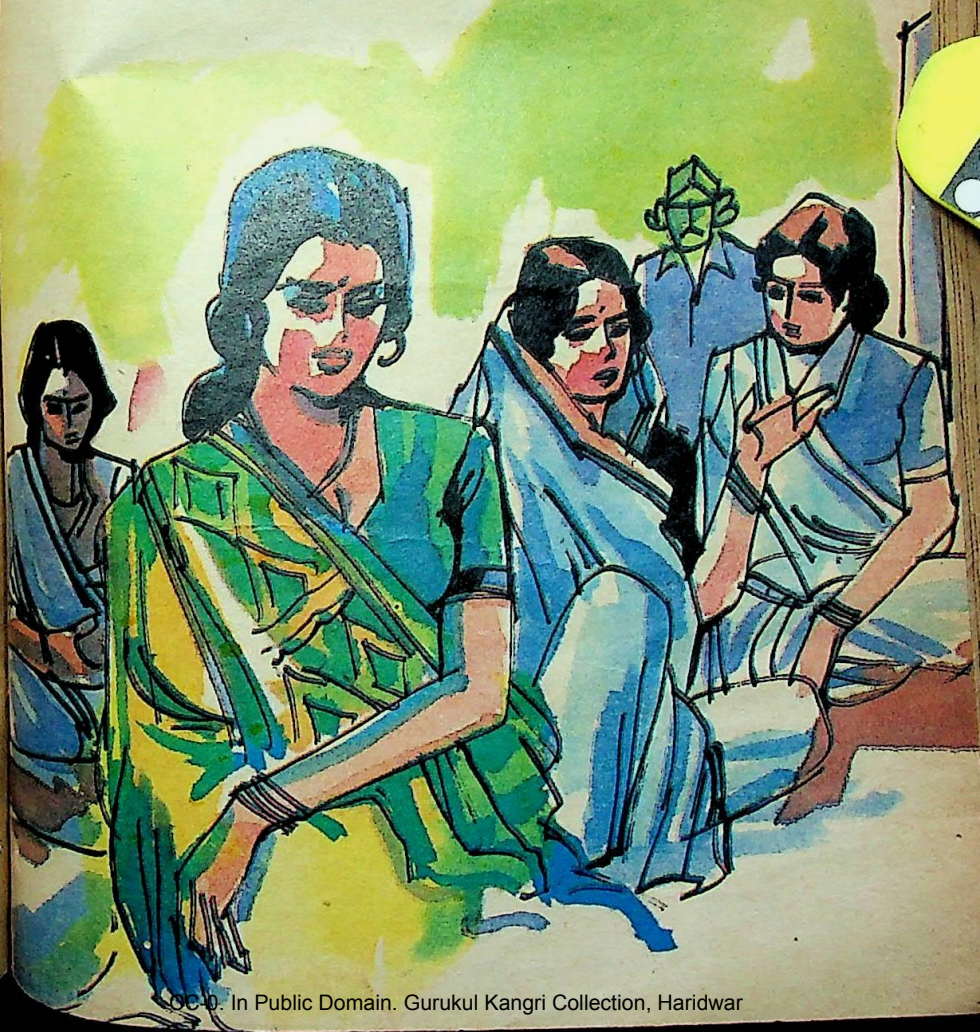

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आप के मातापिता से बात करने का क्या लाभ है."

गिरीश यह सब एक सांस में बोलता ही चला गया था और ऋचा समझ न सकी थी कि उस की बातों का क्या अर्थ ले, 'अजीब व्यक्ति है यह. कितनी बार मैं इसे जता चुकी हूं कि मेरी इस में कोई रुचि नहीं है.' सच पूछे तो ऋचा को पुरुषों से घृणा थी, 'वे जो भी करेंगे, अपने स्वार्थ के लिए. पहले तो मीठीमीठी बातें करेंगे, पर बाद में यदि एक भी बात मनोनुकूल न हुई तो खुद ही सारे संबंध तोड़ लेंगे.' ऋचा इसी सोच के साथ अतीत की गलियों में खो गई.

तब वह केवल 17 वर्षीया किशोरी थी और अनुपम किसी भौंरे की तरह उस के इर्दगिर्द मंडराया करता था.

खुद उस की सपनीली आंखों ने भी तो तब जीवन की कैसी इंद्रधनुषी छवि बना रखी थी. जागते हुए भी वह स्वप्नलोक में खोई रहती थी.

उस दिन अनुपम का जन्मदिन था और उस ने बड़े आग्रह से उसे आमंत्रित किया था. पर घर में कुछ मेहमान आने के कारण उसे घर से रवाना होने में ही कुछ देर हो गई थी. वह जल्दी से तैयार हुई थी. फिर उपहार ले कर अनुपम के घर पहुंच गई थी. पर वह दरवाजे पर ही अपना नाम सुन कर ठिठक गई थी.

"क्या बात है, अब तक तुम्हारी ऋचा नहीं आई?" भीतर से अनुपम की दीदी का स्वर उभरा था.

"मेरी ऋचा? आप भी क्या बात करती हैं, दीदी. बड़ी ही मूर्ख लड़की है. बेकार ही मेरे पीछे पड़ी रहती है. इस में मेरा क्या दोष?"

"बनो मत, उस के सामने तो उस की प्रशंसा के पुल बांधते रहते हो," अब उस की सहेली का उलाहना भरा स्वर सुनाई दिया.

"वह तो मैं ने विवेक और विशाल से शर्त लगाई थी कि झूठी प्रशंसा से भी लड़कियां कितनी जल्दी झूम उठती हैं," अनुपम ने बात समाप्त करतेकरते जोर का ठहाका लगाया था.

वहां मौजूद लोगों ने हंसी में उस का साथ दिया था.

पर ऋचा के कदम वहीं जम कर रह गए थे.

'आगे बढ़ूं या लौट जाऊं?' बस, एकदो क्षण की द्विविधा के बाद वह लौट आई थी. वह अपने कमरे में बंद हो कर फूटफूट कर रो पड़ी थी.

कुछ दिनों के लिए तो उसे सारी दुनिया ही से घृणा हो गई थी. 'यह मतलबी दुनिया क्या सचमुच रहने योग्य है?' ऋचा खुद से ही प्रश्न करती.

पर धीरेधीरे उस ने अपनेआप को संयत कर लिया था. फिर अनुपम प्रकरण को वह दुःस्वप्न समझ कर भूल ही गई थी. उस घटना को एक वर्ष भी नहीं बीता था कि घर में उस के विवाह की चर्चा होने लगी. उस ने विरोध किया और कहा, "मैं अभी पढ़ना चाहती हूं."

"एकदो नहीं पूरी चार बहनें हो. फिर तुम्हीं सब से बड़ी हो. हम कब तक तुम्हारी पढ़ाई समाप्त करने की प्रतीक्षा करते रहेंगे?" मां ने परेशान हो कर प्रश्न किया था.

"क्या कह रही हो, मां? अभी तो मैं बी.ए. में हूं."

"हमें कौन सी तुम से नौकरी करवानी है. अब जो कुछ पढ़ना है, ससुराल जा कर

ऋचा अनुपम को दिलोजान से चाहती थी. मगर अनुपम ने उस के प्रेम का ऐसा उपहास उड़ाया कि वह पुरुषों से घृणा सी करने लगी, यहां तक कि वह विवाह के प्रति ही उदासीन और तटस्थ सी हो गई.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

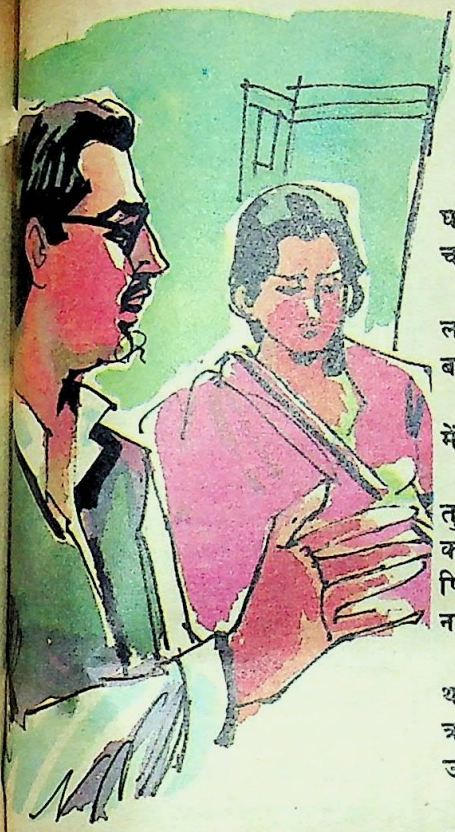

"क्या बात है ऋचा? हम तो तुम्हारी भलाई करते हैं, लेकिन तुम खुद अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारने पर तुली रहती हो." ऋचा के पिता ने करुण स्वर से कहा.

घरगृहस्थी की हो जाओ, और हमें क्या चाहिए."

"पर मां, 'अपने घर' की दहलीज लांघने का मूल्य चुकाना क्या हमारे बस की बात है?" मां से पूछा था ऋचा ने.

"अभी बहुत भले लोग हैं इस संसार में, बेटी."

"ऋचा, क्यों अपनी मां को सताती हो तुम? कोशिश करना हमारा फर्ज है. फिर कभी न कभी तो सफलता मिलेगी ही." पिताजी मां से उस की बातचीत सुन कर नाराज हो उठे तो वह चुप रह गई थी.

पर एक दिन चमत्कार ही तो हो गया था. पिताजी समाचार लाए थे कि जो लोग ऋचा को आखिरी बार देखने आए थे, उन्होंने ऋचा को पसंद कर लिया था.

एक क्षण को तो ऋचा भी खुशी के मारे जड़ रह गई. पर वह प्रसन्नता उस वक्त गायब हो गई, जब पिताजी ने दहेजटीका की रकम व सामान की सूची दिखाई. ऋचा निराश हो कर शून्य में ताकती बैठी रह गई थी.

"25 हजार रुपए नकद और उतनी ही रकम का सामान. कैसे होगा यह सब. तीन और छोटी बहनें भी तो हैं." उस के मुंह से अनायास ही निकल गया था.

"जब उन का समय आएगा, देखा जाएगा," मां उस का विवाह संबंध पक्का हो जाने से इतनी प्रसन्न थीं कि उस के आगे कुछ भी सुनने को तैयार नहीं थीं.

जब मां ने अजित को देखा तो वह निहाल ही हो गईं, "कैसा सुंदरसजीला दूल्हा मिला है तुझे." वह ऋचा से बोलीं.

पर वर पक्ष की भारी मांग को देखते हुए ऋचा चाह कर भी खुश नहीं हो पा रही थी.

पड़ना," मां ने ऐसे कहा, मानो एकदो दिन में ही उस का विवाह हो जाएगा.

ऋचा ने अब चुप व तटस्थ रह कर पढ़ाई में मन लगाने का निर्णय किया. पर जब हर तीसरेचौथे दिन वर पक्ष के सम्मुख उस की नुमाइश होती, ढेरों मिठाई व नमकीन खरीदे जाते, सब कुछ अच्छे से अच्छा दिखाने का प्रयत्न होता, तब भी बात न बनती तो लाख तटस्थ बने रहने का प्रयत्न करने पर भी उस का मन विचलित हो उठता. दोतीन दिनों तक तो मां दुखी रहतीं लेकिन फिर स्वयं को संभाल कर नए सिरे से प्रयत्न करने में जुट जातीं.

इस दौरान ऋचा एम.ए. प्रथम वर्ष में पहुंच गई थी. उस ने कई बार मना भी किया कि वरों की उस नीलामी में बोली लगाने की उस की हैसियत नहीं है. पर हर बार मां का रूक्ष ही उत्तर होता, "तुम सब अपनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरिता व मुक्ता में प्रकाशित लेखों के महत्वपूर्ण रिप्रिंट

सेट नं.- 36

- सिपाही क्यों लड़ता है
- इस्लाम और स्त्री
- डायरी न लिखिए
- प्रेम पत्र न लिखिए
- योगी अरविंद
- गीता में अंतर्विरोध
- गायत्री मंत्र
- गायत्री मंत्र: आ.व.आ. के उत्तर
- ट्रेड यूनियन
- त्रासदी मुसलिम समाज की
- भगवान की दुकानें
- वेदों में नारी
- स्वर्ग कहां है
- आखिरत की अटकलें
- हिन्दी साहित्य की बपौती
- घाटे वाले बालाजी
- भीष्म
- संत कवियों के चमत्कार
- उलाहने
- वैदिक युग में मांस भक्षण
- देवताओं के वैद्य-अश्विनी कुमार
- महाभारत की ऐतिहासिकता
- महाभारत की ऐतिहासिकता: आ.व.आ.के उत्तर
- दहेज और हिंदू धर्म
- आप की लड़की प्रेम करती है
- यूनियन
- सौंदर्य प्रतियोगिता
- वैज्ञानिक ज्ञान बनाम अध्यात्म ज्ञान
- पूंजीपति
- नियोग

मूल्य 5 रुपए

50% की पुस्तकालयों, विद्यार्थियों व अध्यापकों के लिए विशेष छूट. रुपए अग्रिम भेजें.

वी.पी.पी. नहीं भेजी जाएगी.

सेट में लेखों का परिवर्तन कभी भी हो सकता है.

दिल्ली बुक कंपनी,

एम-12 कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001

धीरेधीरे अजित घर के सदस्य जैसा ही होता जा रहा था. लगभग तीसरेचौथे दिन बैंक से लौटते समय वह आ जाता. तब अतिविशिष्ट व्यक्ति की भांति उस का स्वागत होता या फिर कभीकभी वे दोनों कहीं घूमने के लिए निकल जाते.

"मुझे तो अपनेआप पर गर्व हो रहा है," उस दिन रेस्तरां में बैठते ही अजित ऋचा से बोला.

"रहने दीजिए, क्यों मुझे बना रहे हैं?" ऋचा मुसकराई.

"क्यों, तुम्हें विश्वास नहीं होता क्या? ऐसी रूपवती और गुणवती पत्नी बिरलों को ही मिलती है. मैं ने तो जब पहली बार तुम्हें देखा था, तभी समझ गया था कि तुम मेरे लिए ही बनी हो," अजित अपनी ही रौ में बोलता गया.

ऋचा बहुत कुछ कहना चाह रही थी, पर उस ने चुप रहना ही बेहतर समझा था. जब अजित ने पहली ही नजर में समझ लिया था कि वह उस के लिए ही बनी है तो फिर वह मोलभाव किस लिए. कैसे दहेज की एकएक वस्तु की सूची बनाई गई थी. घर के छोटे से छोटे सदस्य के लिए कपड़ों की मांग की गई थी.

ऋचा के मस्तिष्क में विचारों का तूफान सा उठ रहा था. पर वह इधरउधर देखे बिना यंत्रवत काफी पिए जा रही थी.

तभी दो लड़कियों ने रेस्तरां में प्रवेश किया. अजित को देखते ही दोनों ने मुसकरा कर अभिवादन किया और उस की मेज के पास आ कर खड़ी हो गईं.

"यह ऋचा है, मेरी मंगेतर. और ऋचा, यह है उमा और यह राधिका हमारी कालोनी में रहती हैं," अजित ने ऋचा से उन का परिचय कराया.

"चलो, तुम ने तो मिलाया नहीं, आज हम ने खुद ही देख लिया अपनी होने वाली भाभी को," उमा बोली.

"बैठो न, तुम दोनों खड़ी क्यों हो?" अजित ने औपचारिकतावश आग्रह किया.

"नहीं, हम तो उधर बैठेंगे दूसरी मेज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हम भला कबाब में हड्डी क्यों बनें?" राधिका हंसी. फिर वे दोनों दूसरी मेज की ओर बढ़ गईं.

"राधिका की मां, मेरी मां की बड़ी पुरानी सहेली हैं. वह उस का विवाह मुझ से करना चाहती थीं. यों उस में कोई बुराई नहीं है. स्वस्थ, सुंदर और पढ़ीलिखी है. अब तो किसी बैंक में काम भी करती है. पर मैं ने तो साफ कह दिया था कि मुझे चश्मे वाली पत्नी नहीं चाहिए," अजित बोला.

"क्या कह रहे हैं आप? सिर्फ इतनी सी बात के लिए आप ने उस का प्रस्ताव ठुकरा दिया? यदि आप को चश्मा पसंद नहीं था तो वह कांटैक्ट लैंस लगवा सकती थी," ऋचा गंभीर स्वर में बोली.

"बात तो एक ही है. चेहरे की तमाम खूबसूरती आंखों पर ही तो निर्भर करती है, फिर तुम क्यों भावुक होती हो. मुझे तो तुम जितनी थीं, फिर किसी और से मेरा विवाह कैसे होता?" अजित ने ऋचा को आश्वस्त करना चाहा.

कुछ देर तो ऋचा स्तब्ध बैठी रही. फिर वह ऐसे बोली, मानो कोई निर्णय ले लिया हो, "आप से एक बात कहनी थी."

"कहो, तुम्हें सुनने के लिए तो मैं तरस रहा हूं. पर तुम तो कुछ बोलती ही नहीं. मैं ही बोलता रहता हूं."

"पता नहीं, मांपिताजी ने आप को बताया है या नहीं, पर मैं आप को अंधेरे में नहीं रख सकती. मैं भी कांटैक्ट लैंसों का प्रयोग करती हूं," ऋचा बोली.

"क्या?"

पर तभी बैरा बिल ले आया. अजित ने बिल चुकाया और दोनों रेस्तरां से बाहर निकल आए. कुछ देर दोनों इस तरह चुपचाप साथसाथ चलते रहे, मानो कहने को उन के पास कुछ बचा ही न हो.

"मैं अब चलूंगी. घर से निकले बहुत देर हो चुकी है. मां इंतजार करती होंगी." आखिर में ऋचा बोली तो अजित ने एक तिपहिया आटोरिकशा रोका और ऋचा उस में बैठ कर घर की ओर रवाना हो गई.

"क्या बात है, ऋचा? अजित कहीं बाहर गया है क्या? तीनचार दिनों से आया ही नहीं," मां ने पूछा.

"पता नहीं, मां. मुझ से तो कुछ कह नहीं रहे थे." ऋचा ने जवाब दिया.

"बात क्या है, ऋचा? परसों तेरे पिताजी विवाह की तिथि पक्की करने गए थे तो वे लोग कहने लगे कि ऐसी जल्दी क्या है. आज फिर गए हैं."

"इस में मैं क्या कर सकती हूं, मां. वह लड़के वाले हैं. आप लोग उन के नखरे उठाते हैं तो वे और भी ज्यादा नखरे दिखाएंगे ही," ऋचा बोली.

"क्या? हम नखरे उठाते हैं लड़के वालों के? शर्म नहीं आती तुझे ऐसी बात कहते हुए? हमें तो यही चिंता है कि किसी प्रकार तुम चारों बहनों को ठिकाने लगाएं और सुख की सांस लें. पर तुम्हारे मामले में जाने क्यों देर हो रही है. छलनी ले कर छना है पूरी बिरादरी को. कौन सा विवाह योग्य घरवर होगा, जहां हम ने बात न चलाई हो. तब कहीं जा कर यहां बात बनी है. तुम टलो तो छोटी बहनों का नंबर आए. ऊपर से तुम हमें ही दोष देती हो." मां की वर्षों से संचित कड़वाहट बहाना पाते ही बह निकली.

ऋचा स्तब्ध बैठी रह गई. अपने ही घर में क्या स्थिति थी उस की? मां के लिए वह एक ऐसा बोझ थी, जिसे वह टालना चाहती थी. अपना घर? सोचते हुए उस के होठों पर कड़वाहट रेंग आई, 'अपना घर तो विवाह के बाद बनेगा, जिस की दहलीज पार करने का मूल्य ही एकडेढ़ लाख रुपए है. कैसी विडंबना है, जहां जन्म लिया, पलीबढ़ी न तो यह घर अपना है, न ही जहां गृहस्थी बसेगी वह घर अपना है.'

जाने और कितनी देर ऋचा अपने ही

क्षमा

क्षमा कर देना दुश्मन पर विजय प्राप्त कर लेना है.

—हजरत अली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खयालों में उलझी रहती यदि पिताजी का करुण चेहरा और उस से भी अधिक करुण स्वर उसे चौंका न देता, "क्या बात है, ऋचा? हम तुम्हारी भलाई के लिए कितने प्रयत्न करते हैं, पर पता नहीं क्यों तुम अपने पैरों पर खुद कुल्हाड़ी मारने पर तुली रहती हो."

"क्या हुआ, पिताजी?" ऋचा हैरान स्वर में पूछने लगी.

"तुम्हें अजित से यह कहने की क्या जरूरत थी कि तुम कांटैक्ट लैंसों का प्रयोग करती हो?"

"मैं ने जानबूझ कर नहीं कहा था, पिताजी. ऐसे ही बात से बात निकल आई थी. फिर मैं ने छिपाना ठीक नहीं समझा."

"तुम नहीं जानती, तुम ने क्या कह दिया. अब वे लोग कह रहे हैं कि हम ने यह बात छिपा कर उन्हें अंधेरे में रखा," पिताजी दुखी स्वर में बोले.

"पर विवाह तो निश्चित हो चुका है, सगाई हो चुकी है. अब उन का इरादा क्या है?" मां ने परेशान हो कर पूछा था, जो जाने कब वहां आ कर खड़ी हो गई थीं.

"कहते हैं कि वे हमारी छोटी बेटी पूर्णिमा को अपने घर की बहू बनाने को तैयार हैं. पर मैं ने कहा कि बड़ी से पहले छोटी का विवाह हो ऐसी हमारे घर की रीत नहीं है. फिर भी घर में सलाह कर के बताऊंगा. लेकिन बताना क्या है, हमारी बेटियों को क्या उन्होंने पैर की जूतियां समझ रखा है कि अगर बड़ी ठीक न आई तो छोटी पहन ली," वह क्रोधित स्वर में बोले.

"इस में इतना नाराज होने की बात नहीं है, पिताजी. यदि उन्हें पूर्णिमा पसंद है तो आप उस का विवाह कर दीजिए. मैं तो वैसे भी पढ़लिख कर अपने पैरों पर खड़ी होना चाहती हूं." ऋचा ने क्षणांश में ही मानो निर्णय ले लिया.

कुछ देर सब चुप खड़े रहे, मानो कहने को कुछ बचा ही न हो.

"ऋचा ठीक कहती है. अधिक भावुक होने में कुछ नहीं रखा है. इतनी ऊंची नाक

यह भी खूब रही

पिछले दिनों हमारी गली में एक मदारी खेल दिखा रहा था. खेल खत्म होने पर जब वह पैसे मांगने लगा तो वहां खड़े कई लोगों ने उसे एकएक रुपया दिया.

हमारी पड़ोसिन भी उसे 25 पैसे का एक सिक्का देने लगी. यह देख कर मदारी बोला, "बहनजी, पच्चीस पैसे तो बच्चा भी दे देता."

तब पड़ोसिन ने अपने छोटे बेटे को 25 पैसे दिए और बोली, "ले बेटा, ये पैसे फिर तू ही मदारी को दे दे." इतना सुनते ही सभी खिलखिला कर हंस पड़े. लेकिन मदारी का चेहरा देखने लायक हो गया.

—रावेंद्रसिंह ठाकुर

*

बचपन की घटना है. माताजी के मना करने के बावजूद मैं और मेरे छोटे भाई ने स्कूल की तरफ से सभी छात्रों के साथ पिकनिक पर जाने की ठान ली.

जिस दिन पिकनिक पर जाना था हम तड़के ही उठ कर रसोई में पिकनिक पर ले जाने के लिए खाना तैयार करने लगे. हमारी कोशिश यह थी कि घर में किसी के जगने के पहले ही हम दोनों निकल पड़ें.

जल्दीजल्दी और अंधेरे में परांठा बनाते वक्त मेरे भाई का हाथ गरम तवे पर पड़ गया और वह जलन के मारे चीख पड़ा.

उस की चीख सुनते ही घर के सब लोग जाग गए. फिर बाद में वह पिटाई हुई कि मेरा तथा मेरे भाई का पिकनिक पर जाने का नशा देखते ही देखते हिरन हो गया.

कोशिश यह थी कि घर में किसी के जागने के पहले ही हम दोनों निकल पड़ें. —हरीश शर्मा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाएंगे तो ये सब यहीं बैठी रह जाएंगी." मां ने अपना निर्णय सुनाया.

फिर तो एकएक कर के आठ वर्ष बीत गए थे. उस से छोटी तीनों बहनों के विवाह हो गए थे. ऋचा भी पढ़ाई समाप्त कर के कालिज में व्याख्याता हो गई थी. पिताजी भी अवकाश ग्रहण कर चुके थे. अब तो वह विवाह के संबंध में सोचती तक नहीं थी. पर, गिरीश ने अपने व्यवहार से मानो शांत जल में कंकड़ फेंक दिया था. वह अतीत को याद कर के वह बहुत अशांत हो उठी थी.

"अरे दीदी, यहां अंधेरे में क्यों बैठी है? बत्ती भी नहीं जलाई. नीचे मां तुम्हें बुला रही हैं. तुम्हारे कालिज के कोई गिरीश बाबू अपनी मां के साथ आए हैं. अरे, तुम तो रो रही हो. तबीयत ठीक नहीं है क्या?" ऋचा की छोटी बहन सुरभि ने आ कर कहा.

"नहीं, रो नहीं रही हूं. ऐसे ही कुछ सोच रही थी. तू चल, मैं आ रही हूं," ऋचा अपने आंसू पोंछते हुए बोली.

ड्राइंगरूम में पहुंची तो एकाएक सब की निगाहें उस की ओर ही उठ गईं.

"आप की बेटी ही पहली लड़की है, जिसे देख कर गिरीश ने विवाह के लिए हां की है. नहीं तो यह तो विवाह के लिए हां ही नहीं करता था." ऋचा को देखते ही गिरीश की मां बोलीं.

"आप ने तो हमारा बोझ हलका कर दिया, बहनजी. इस से छोटी तीनों बहनों का विवाह हो चुका है. मुझे तो दिनरात इसी की चिंता लगी रहती है."

ऋचा के मां और पिताजी अत्यंत प्रसन्न दिखाई दे रहे थे.

'तो मुझ से पहले ही निर्णय लिया जा चुका है?' ऋचा ने बैठते हुए सोचा. वह कुछ कहती उस से पहले ही गिरीश की मां और उस के मातापिता उठ कर बाहर जा चुके थे. बस, वह और गिरीश ड्राइंगरूम में रह गए थे.

"एक बात पूछूं, आप कभी हंसती-मुसकराती भी हैं या यों ही मुंह फुलाए रहती हैं?" गिरीश ने नाटकीय अंदाज में पूछा.

"मैं भी आप से एक बात पूछूं?" ऋचा ने प्रश्न के उत्तर में प्रश्न ही कर दिया. "आप कभी गंभीर भी रहते हैं या यों ही बोलते रहते हैं?"

"चलिए, आज पता चल गया कि आप बोलती भी हैं. मैं तो समझा था कि आप गूंगी हैं. पता नहीं, कैसे पढ़ाती होंगी. मैं सचमुच बहुत बोलता हूं. अब क्या करूं, बोलने का ही तो खाता हूं. पर मैं इतना बुरा नहीं हूं, जितना आप समझती हैं." गिरीश अचानक गंभीर हो गया.

"देखिए, आप अच्छे हों या बुरे, मुझे कोई अंतर नहीं पड़ता. पुरुषों में तो मुझे विशेष रूप से कोई रुचि नहीं है."

"आप के अनुभव निश्चय ही कटु रहे होंगे. पर जीवन में किसी न किसी पर विश्वास तो करना ही पड़ता है. आप एक बार मुझ पर विश्वास तो कर के देखिए." गिरीश मुसकराया.

"ठीक है, पर मैं आप को सब कुछ साफसाफ बता देना चाहती हूं. मैं कांटैक्ट लैंसों का प्रयोग करती हूं. दहेज में देने के लिए मेरे पिताजी के पास कुछ नहीं है," ऋचा कटु स्वर में बोली.

"हम एकदूसरे को समस्त गुणों व अवगुणों के साथ स्वीकार करेंगे, ऋचा. फिर इन बातों का तो कोई अर्थ ही नहीं है. मैं तुम्हें तीन वर्षों से देखपरख रहा हूं. मैं ने यह निर्णय एक दिन में नहीं लिया है. आशा है कि तुम मुझे निराश नहीं करोगी."

गिरीश की बातों को समझ कर ऋचा खामोश रह गई. इतनी समझदारी की बातें तो आज तक उस से किसी ने नहीं कही थीं. फिर उस के नेत्र भर आए.

"क्या हुआ?" गिरीश ने हैरान हो कर पूछा.

"कुछ नहीं, ये तो प्रसन्नता के आंसू हैं." ऋचा ने मुसकराने की कोशिश की. उसे लगा कि आंसुओं के बीच से ही दूर क्षितिज पर इंद्रधनुष उग आया है. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी • जितेंद्र भटनागर

कांटे महकने लगे

उस दिन कृष्णा कुटीर से किसी भी तरह की आवाज नहीं आ रही थी. एकदम सन्नाटा था उस घर में. शायद सभी के दिलों में सवेरे का वह दृश्य था, जब विक्रम सिंह के मृत शरीर को कंधों पर उठा कर श्मशानघाट ले जाया गया था. महल्ले में ऐसा कोई भी नहीं था जो बूढ़े विक्रम सिंह को न जानता हो.

विक्रम सिंह ने जमींदारी उन्मूलन के बाद अपना गांव छोड़ दिया था और शहर आ कर बस गए थे अपने तीनों लड़कों के साथ.

जिस महल्ले में उन्होंने घर बनवाया था, वह महल्ला पहले ही से आबाद था और उस महल्ले में बचीखुची एकमात्र जमीन, जो उन्होंने उस समय खरीदी थी, वह खासी बड़ी थी. उस पर निम्न वर्ग के लोग अनधिकृत रूप से कब्जा किए हुए थे.

उस जमीन को खरीदने के बाद महल्ले भर के लोगों के लिए यह एक उत्सुकता का विषय बन गया था कि देखें अब विक्रम उसे खाली कैसे कराता है. क्योंकि उस छोटे वर्ग के लोगों से मोरचा लेना कोई आसान काम न था.

लेकिन विक्रम सिंह ने जब अपने तीनों जवान बेटों को साथ ले कर बंदूक तानते हुए उन सब को चेतावनी दी तो किसी की भी हिम्मत नहीं हुई उन का सामना करने की. हफ्ता सा क्या दो ही दिन में सब भाग खड़े हुए.

जमीन चार हजार वर्ग फुट थी. विक्रम ने महल्ले का सब से शानदार घर उस पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाग खड़े
थी. विक्रम
र उस पर
नागर

नाया. एकएक ईंट को उन्होंने अपनी
ों से चिनते हुए देखा.

घर में आलीशान ड्राइंगरूम बनवाया
ाने, ड्राइंगरूम से सटा हुआ उन का अपना
रा. बीच में आंगन और तीन कमरे अपने
ने बेटों के लिए. अपनी मृत पत्नी के नाम
उन्होंने घर को नाम दिया 'कृष्णा
ीर.'

गृह प्रवेश के समय उन्होंने महल्ले के
ेबड़े हरएक व्यक्ति को न्योता दिया. बड़े
के सुरेंद्र, उन की पत्नी मालती और
ली गुंजन तथा बच्चे राहुल के साथसाथ
ने अविनाश तथा छोटे विलास भी सब

हां, हां, इसी दिन के लिए मैं ने यह बड़ा मकान बनवाया था कि बेटेबेटे को एकदूसरे से लड़ कर दूं.'' बाबूजी बिफरते हुए बोले.

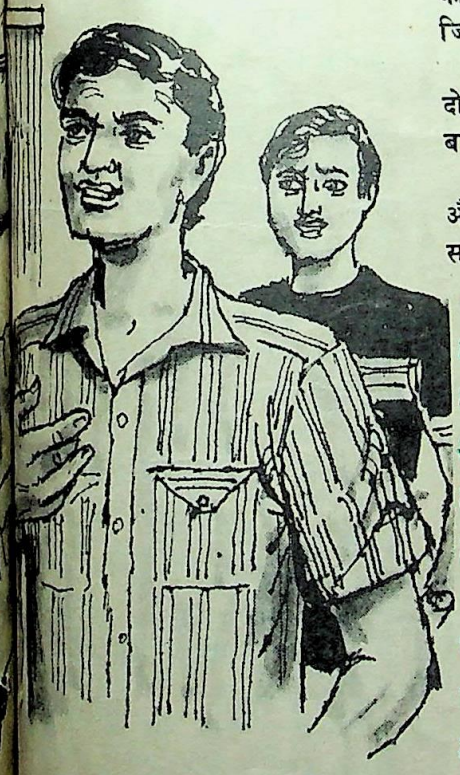

की आवभगत में पूरे दिन जुटे रहे.

फिर सब थक कर अपनेअपने कमरों में आ कर लेट गए. उस दिन वीरेंद्र को अपनी पत्नी की बेइंतहा याद आई. वह रात में बड़ी देर तक सो नहीं पाए. जा कर दीवार पर टंगी अपनी पत्नी कृष्णा की तसवीर के सामने खड़े हो गए और बुदबुदाए, ''काश, आज तुम जिंदा होतीं तो देखतीं कि अब हम वह पहले वाले जमींदार नहीं रह गए हैं. अब हम एक शहरी हैं. एक सामान्य से व्यक्ति. हम ने तुम्हारे तीनों बेटों के सुख के लिए घर बनवा दिया है. इस घर में सब मिलजुल कर सुखशांति से रहेंगे. अब बच्चों की खुशी ही हमारी खुशी रह गई है. हम उन के लिए इसी शहर में एक कांच की फैक्टरी भी लगवा देंगे. वे सुखचैन से रहें, बस, यही कामना है. हमारा तो शरीर धीरेधीरे बूढ़ा होता जा रहा है. हमारा बुढ़ापा ठीक से कट जाए, यही इच्छा है अब तो.''

लेकिन विक्रम को क्या पता था कि उन का बुढ़ापा उतने आराम से नहीं कट पाएगा, जितनी उन्होंने कल्पना की थी.

'कृष्णा कुटीर' में आने के बाद सुरेंद्र के दो लड़कियां और हुईं. कुल मिला कर चार बच्चे हो गए थे उन के.

इसी बीच अविनाश की शादी हुई और उसे बेहद ही खूबसूरत पत्नी मिली, सविता.

वीरेंद्र ने अपने बेटों के सुख के लिए एक शानदार कृष्णा कुटीर बनवाया. लेकिन सविता के आते ही घर का सुख दीमक लगे वृक्ष की तरह खोखला होने लगा. भाई भाई का दुश्मन हो गया. क्या सविता को अपनी गलती का एहसास हो सका?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शुरूशुरू में जैसा कि उस खानदान का रिवाज था, सुरेंद्र की पत्नी मालती ने सविता को हाथोंहाथ लिया. कोई काम नहीं करने दिया. बड़ा ही स्नेह दिया. मालती के बच्चे भी चाची, चाची कह कर उस के कमरे में घुसे रहते थे.

लेकिन सविता दूसरे ही स्वभाव की औरत थी. उसे ज्यादा धमाचौकड़ी पसंद नहीं थी. वह अपने कमरे को जिस ढंग से सजाती तो चाहती कि वह कमरा अविनाश के फैक्टरी से लौटने तक वैसा ही सजा रहे. लेकिन मालती के बच्चे उसे अपना ही कमरा समझ कर खराब कर देते. नंगे पैर उस के पलंग पर बिछी चादर पर चढ़ जाते.

रोज ही ऐसा होने लगा तो एक दिन उस ने मालती की बड़ी लड़की गुंजन को डांट दिया, "मेरे कमरे में आने की जरूरत नहीं है. जब देखो तब नंगे पैर आई और चढ़ गई साफ चादर पर. उतरो नीचे. और अब कल से ध्यान रखना, समझीं?"

गुंजन ने जा कर मां को बताया तो मालती उसे समझाने लगी, "ठीक ही तो कह रही है, चाची. तुम क्यों गंदे पैर ले कर उन की चादर पर चढ़ जाती हो. कल से साफ पैर ले कर जाना, अच्छा."

और गुंजन स्वीकृति से सिर हिलाने लगी.

बात यहीं पर खत्म नहीं हो गई. सविता तो चौके में जाने से भी कतराती थी. इसी कोशिश में रहती थी कि कम से कम काम करना पड़े. सवेरे चाय की ट्रे भी मालती ही ले कर सारे घर में फिरती.

एक दिन अविनाश ने सविता को टोका भी, "सवि, यह बात तो गलत है कि रोज बड़ी भाभी ही चाय बनाने को उठती हैं. कभीकभी तो तुम भी उठ कर पिला दिया करो."

"देखो, अविनाश, मैं इतने सवेरे नहीं उठ सकती," सवि ने तपाक से जवाब दिया.

अविनाश चुप रह गया. फिर कुछ सोच कर बोला, "तुम सवेरे उठ कर बाबूजी के पैर भी नहीं छूती हो, जबकि बड़ी भाभी इतनी बड़ी हो कर भी रोज उन के पैर छूती हैं. पता है, बाबूजी इस बात का बुरा मान रहे थे."

"अविनाश, अब तुम लोग शहर में रहते हो. यह पैर छूने के चोंचले मुझे अच्छे नहीं लगते हैं. अगर कोई त्योहार या कोई विशेष अवसर वगैरह हो तो चलो छू लो."

"सविता, तुम बहुत बढ़चढ़ कर बोलती हो. यह अच्छी बात नहीं है. बाबूजी नाराज हो गए तो गजब हो जाएगा."

"क्या गजब हो जाएगा? ठाकुरों के गुस्से से मैं अच्छी तरह वाकिफ हूं. मैं भी एक बड़े ठाकुर खानदान में पली हूं. मैं ऐसे गुस्से से नहीं डरती. मैं ने कोई गलती नहीं की."

"उन के पैर न छूना, यह गलती नहीं है?"

"अपने पति के अलावा बेवजह किसी के भी पैर छूना मेरी नजरों में गलती है."

"तो तुम इस घर में यही सब कराना चाहती हो."

"क्या कराना चाहती हूं?" सविता ने बड़े भोलेपन से अविनाश के हाथ से खाली चाय का मग ले कर एक तरफ रखते हुए कहा, "शायद तुम यह कहना चाहते हो कि मैं लड़ाईझगड़ा कराना चाहती हूं. मैं भला ऐसा क्यों कराने लगी? तुम मुझे गलत समझ रहे हो," कहतेकहते सविता ने उस के गले में बांहें डाल दीं फिर प्यार से उस के वक्ष में मुंह छिपाती हुई बोली, "मैं तो बस तुम्हारे प्यार में खो जाना चाहती हूं."

"यह सब तो ठीक है, लेकिन तुम्हें थोड़ा घर और बाबूजी की भी देखभाल करनी चाहिए."

"अच्छा बाबा, मैं कोशिश करूंगी," कहते हुए सविता ने बड़ी अदा से अविनाश को अपनी बांहों में कस लिया.

दिन यों ही बीतते रहे. सविता के स्वभाव में जरा भी परिवर्तन नहीं आया. अविनाश को अपने मदमाते प्यार में उस ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम जानते हो कि औरतों को ज्यादा सिर चढ़ाने का क्या नतीजा होता है," गुस्से से कांपते हुए सुरेंद्र ने अविनाश से कहा.

नुसा बांधा कि उसे सही और गलत की पहचान नहीं रही. सविता जो कहती, वही उसे सही लगता.

एक सवेरे सुरेंद्र अपने कमरे में अखबार पर नजरें गड़ाए, पास बैठ कर शांत बीनती मालती से बोले, "मैं देख रहा हूं यह अविनाश की बहू कुछ कामधाम नहीं करती है. कमरे में ही घुसी रहती है."

"अभी नईनई है, धीरेधीरे सब सीख जाएगी."

"नई है? अरे, तीन महीने हो गए हैं. नई ही बनी रहेगी क्या? तुम ज्यादा ढील देगी तो यों ही अकेली पिसती रहोगी."

"हां, पिताजी, मां दिन भर यों ही पिसती रहती हैं और चाची को तो बस अपने कमरे से मतलब. न कभी घर में झाड़ू लगाएंगी, न ही कोई और काम करेंगी. बस, दिन भर बनाव शृंगार करती रहती हैं," अचानक पास ही पढ़ती गुंजन बोल पड़ी.

उस की बात खत्म होते ही राहुल बोला, "और पिताजी, यह जो चाची हैं ना, यह बस हमें डांटती ही रहती हैं, प्यार कभी नहीं करतीं."

सुरेंद्र से और ज्यादा नहीं सुना गया. वह अखबार एक तरफ फेंकते हुए उठ खड़े हुए. फिर आंगन में आ कर अविनाश के कमरे की तरफ मुंह कर के उन्होंने नाराज स्वर में आवाज लगाई, "अविनाश."

उन की क्रुद्ध आवाज सुन कर बाबूजी के पास बैठा विलास बोला, "जाने क्या बात है? भैया गुस्से में लगते हैं. मैं देखता हूं जा कर."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विलास आंगन में आया तो देखा कि सुरेंद्र गुस्से में कांप रहे हैं और अविनाश के कमरे का दरवाजा बंद है. कुछ ही देर में अविनाश दरवाजा खोल कर आंगन में निकल आया. सविता भी दरवाजे पर आ कर खड़ी हो गई थी. अविनाश बोला, "क्या बात है, भैया? बड़े गुस्से में दिखाई दे रहे हो."

"अविनाश, मुझे सीधी बात कहनी अच्छी लगती है. तुम जानते हो कि औरतों को ज्यादा सिर पर चढ़ा लेने का क्या नतीजा होता है?"

"मैं समझा नहीं आप का मतलब?"

"तुम्हें अच्छा लगता है कि तुम्हारी भाभी दिन भर अकेली घर के कामों में जुटी रहें और तुम्हारी बीवी कमरे में बैठी हवा खाती रहे. तुम्हें उसे समझाना चाहिए."

अविनाश ने पलट कर अपने कमरे के दरवाजे पर खड़ी सविता को देखा, फिर बोला, "मैं इसे यही तो समझाता रहता हूं. करने लगेगी धीरेधीरे."

"कब करने लगेगी? काम करने वालों के रंगढंग अलग ही होते हैं. फिर यह क्या बात है कि बच्चे तुम्हारे कमरे में नहीं जा सकते. सुना है, यह बच्चों को जबतब डांटती रहती है."

इस बात की अविनाश को जानकारी नहीं थी. बोला, "ऐसी बात तो नहीं है."

"ऐसी ही बात है," गुंजन कमरे में से निकलती हुई बोली, "चाची तो यहां तक कहती है कि उन की बात नहीं मानेंगे तो वह हमारी पिटाई कर देंगी."

गुंजन की बात खत्म होते ही सुरेंद्र बोले, "तुम समझ रहे हो न अविनाश. यह कोई अच्छे लक्षण नहीं हैं तुम्हारी बीवी के. आते ही कांटे बोने वाली बातें."

अविनाश और बरदाश्त नहीं कर सका. वह तेजी से सविता की तरफ पलटा. सविता के चेहरे पर उस समय अजीब सा सम्मोहन दिखाई दिया अविनाश को. वह जितने रोब से पूछना चाहता था, उतने रोब से नहीं पूछ सका. बस, इतना ही बोल सका, "क्यों इन बच्चों को तुम ने डांटा? क्यों रोका कमरे में आने से?"

"मैं ने तो कभी नहीं रोका. हां, बच्चे गलती करेंगे तो समझाना तो मेरा फर्ज है."

"समझाने और डांटने में फर्क होता है, चाची," गुंजन बोली.

इस पर मालती ने कमरे से बाहर आते हुए उसे डांटा, "तू चुप रह. बहुत बोलने लगी है."

"करा लो मुझे चुप. लेकिन मैं तो सौ बार कहूंगी कि चाची अच्छी नहीं है... नहीं है... नहीं है," कहती हुई कमरे के अंदर चली गई गुंजन.

बात खत्म करने के उद्देश्य से सुरेंद्र बोले, "अविनाश, इस से पहले कि इस घर में हम भाइयों के बीच फूट पड़ जाए, अच्छा यह होगा कि तुम अपनी बीवी को समझा लो." वह भी पलटे और कमरे में आ कर फिर से अखबार पढ़ने लगे.

दिन फिर यों बीतने लगे. अविनाश सविता को नहीं समझा पाया. सविता ने और भी अपने रंगढंग दिखाने शुरू कर दिए. वह दिनरात अविनाश के कान भरती रहती. कहती, "तुम अभी नहीं समझोगे. अब तुम्हारे बड़े भैया के बच्चे बड़े हो रहे हैं और उन्हें वह कमरा छोटा पड़ता है. घर के दूसरे कमरों पर खासतौर से तुम्हारे कमरे पर कब्जा करने के लिए ही वह लड़ाईझगड़े का नाटक करते हैं और दोष धरते हैं हम पर."

कभी कहती, "चौके में तुम्हारी भाभी बस अपना अधिकार रखना चाहती हैं. यह कम खर्च करो. वह इतना डालो. चाय ज्यादा न बनाओ वगैरहवगैरह. मुझ से तो यह सब होता नहीं. रोकटोक मुझे अच्छी लगती नहीं. इसी लिए मैं चौके में कम जाती हूं. करें जो जी में आए. मैं तो कहती हूं कि बाबूजी से कह कर दूसरा चौका बनवा लो."

अविनाश भी हां में हां मिलाने लगता. ये सब सुन कर उस की मुट्ठियां भिंच जातीं. उसे यह भी लगता कि अब बातबात में उसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्लूकॉन-डी सुपरहीरो.

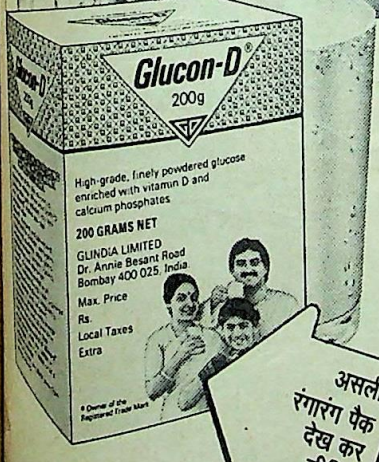

थका देनेवाली गर्मी के दिन में आपके बच्चे को चाहिए ग्लूकॉन-डी: ग्लूकोज़, विटामिन-डी और कैल्शियम फ़ॉस्फ़ेट से भरपूर तुरंत शक्ति देनेवाला पेय.

फलों के रस, दूध, चाय, कॉफ़ी या पानी में मिला कर पीजिए-पिलाइए ग्लूकॉन-डी. पूरे परिवार के लिए ताज़गीदायक पेय. 100, 200, 500 ग्राम पैक में उपलब्ध.

असली, रंगारंग पैक देख कर लीजिए.

ग्लूकॉन-डी

शक्ति देनेवाला पेय... सुपरहीरो की खास पसंद.

HTA 1649

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं विश्वव्यापी हूँ।

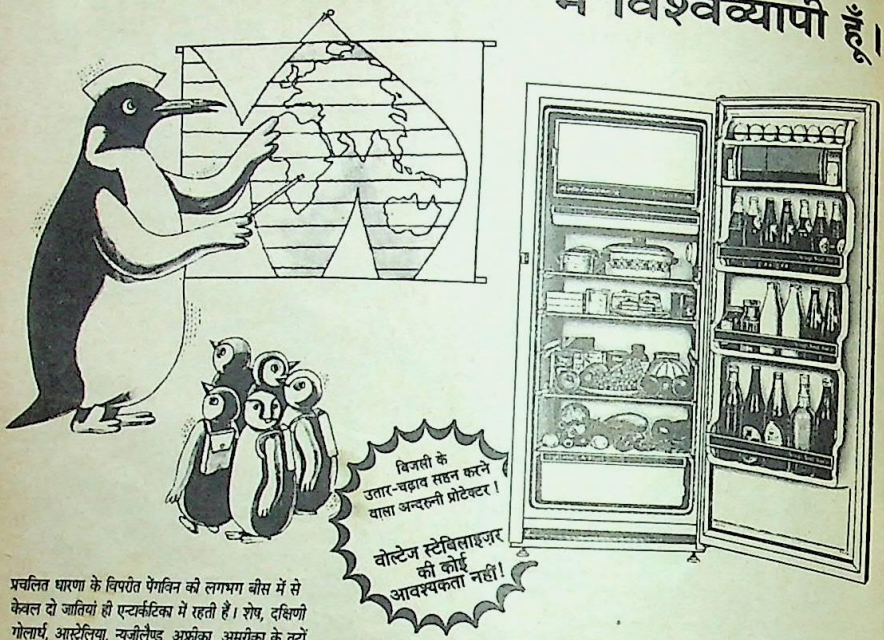

प्रचलित धारणा के विपरीत पेंगविन की लगभग बीस में से केवल दो जातियां ही एन्टार्कटिका में रहती हैं। शेष, दक्षिणी गोलार्ध, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड, अफ्रीका, अमरीका के तटों तथा विभिन्न दक्षिणी ध्रुव क्षेत्रों में रहती है।

संदर्भ : बर्ड्स ऑफ़ दि वर्ल्ड
लेखक : ऑलिवर एल. ऑस्टिन जूनियर
प्रकाशक : ऑप्टिमम

Mutual-4510 DAN

केल्विनेटर रेफ़्रिजरेटर। विश्व भर में जाना माना ठंडा करने का साधन। 140 से अधिक देशों में बिक्री एवं सर्विस सुविधाएं इसकी अनूठी क्वालिटी का प्रमाण।

इसकी सफलता का रहस्य है केल्विनेटर की अत्याधुनिक टेक्नॉलोजी, नवीनतम डिज़ाइनिंग, शानदार रचना तथा विश्वविख्यात 'पावर-सेवर' कम्प्रैसर किफ़ायती, विश्वसनीय तथा दोष-रहित। यह वही कम्प्रैसर है जो विश्वविख्यात रेफ़्रिजरेटरों व्हाइट वैस्टिंग हाऊस, फ़्रिजिडेयर, गिब्सन आदि में उपलब्ध है।

विशेष खूबियां :

* पूर्ण इन्सूलेशन जो कैबिनेट तापमान को बेहतर बनाती है।
* विश्व विख्यात 'पावर-सेवर' कम्प्रैसर उच्च व्यापक तापमान में भी तेजी से ठंडा करता है। कम बिजली की खपत करता है तथा विस्तृत वोल्टेज के उतार चढ़ाव सहन करता है।
* मज़बूत ए बी एस लाईनर।
* सर्विस में विश्वसनीय।
* बिजली की खपत में अत्यंत किफ़ायती।
* विशाल स्टोरेज क्षमता।
* टिकाऊ। * सुन्दर एवं सुदृढ़।
* विभिन्न बाहरी फ़िनिश तथा मनभावन अन्दरूनी रंगों में उपलब्ध।
* अनेक मॉडल।

केल्विनेटर
रेफ़्रिजरेटर
"इसकी ठण्डक...बेमिसाल!"

बिक्री एवं सर्विस के लिए :
एक्सपो मशीनरी लिमिटेड
प्रगति टावर, 26 राजिन्द्र प्लेस
नई दिल्ली-110 008.

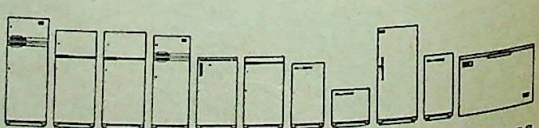

DEEP FREEZERS

केल्विनेटर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बूजी और बड़े भैया द्वारा ज्यादा ही टोका लने लगा है. बड़े भैया हरदम बाबूजी के न भरा करते हैं और भाभी भी अब पहले ली नहीं रह गई हैं.

यही सब सोचतेसोचते अविनाश उन से भिड़ पड़ता. घंटों बहस करता और त में यह बहस कड़वी हो कर घुटन में दल जाती.

एक भाई को अब दूसरे भाई की सूरत नी अच्छी नहीं लगती. मालती भरसक ल करती कि सब सामान्य रहें, लेकिन विता के स्वभाव के कारण मात खा जाती. र धीरेधीरे मालती के स्वभाव में भी रिवर्तन आने लगा. वह भी अब सविता की ादा परवाह नहीं करती थी. देखते ही खते घर में दो चूल्हे हो गए.

अब विलास भी शादी लायक हो गया ा. लेकिन उन तमाम पचड़ों की वजह से ड़े वीरेंद्र के सोचने का ढंग बदल गया था. जस घर को उन्होंने इतनी लगन, इतने प्यार से बनवाया था, वो भीतर ही भीतर किसी दीमक लगे दरख्त की तरह खोखला होता जा रहा था.

अपने कमरे में पलंग पर लेटेलेटे या आराम-कुरसी पर बैठेबैठे वह कभी बहुओं, कभी बेटों की लड़ाईझगड़े के कारण उठी तेज आवाजें सुनते तो बेचैन हो जाते. उन के दिल के आसपास एक तीव्र वेदना सी उठती और फिर उन की आंखें नम होती चली जातीं. वह कृष्णा की तसवीर के सामने जा कर खड़े हो जाते और कहते, "देख रही हो तुम, मेरा बुढ़ापा कितने चैन से कट रहा है? कितना सुख दे रहे हैं तुम्हारे बच्चे?"

तभी विलास उन के करीब आ कर कहता, "बाबूजी, आप एक ठाकुर हो कर अपना दिल छोटा कर रहे हैं. यह ठीक नहीं है. मैं जो हूं आप की सेवा के लिए."

"क्या पता, बेटे? जब तेरी बहू आ जाएगी तो तू भी इसी तरह..."

"नहीं, बाबूजी," विलास उन्हें दिलासा देना चाहता.

रूबरू

यूं खुद पे फिदा हो कर
उस ने जाने क्या कहा,
आईना जो रूबरू था
दिल थाम के रह गया.

—संजयकुमार वर्मा

तभी सुरेंद्र पैर पटकते कमरे में आते. कहते, "बाबूजी, आप को फैसला करना ही होगा. इस घर में या तो मैं रहूंगा या अविनाश."

इतना सुनते ही बाबूजी बिफर पड़ते, "हां, हां, इसी दिन के लिए मैं ने यह इतना बड़ा मकान बनवाया था कि एक बेटे को दूसरे बेटे से जुदा कर दूं. तुम्हें तिलतिल बड़ा किया था शायद यही देखने के लिए. मैं ने अपना सब कुछ तुम सब की खुशी के लिए लगा दिया और उस का इनाम यह दे रहे हो तुम. याद रखो, मेरे जीते जी कोई नहीं जाएगा इस घर से. सब यहीं रहेंगे इसी घर में, समझे." कहतेकहते वीरेंद्र हांफने लगते.

घर की वह घुटन धीरेधीरे पूरे महल्ले में फैलने लगी. वीरेंद्र भीतर से टूटते चले गए. उधर सविता की कोख भी भारी हो गई थी. विलास अधिकतर घर से बाहर रहता. घर आता तो बाबूजी के पास ही बैठा रहता.

एक दिन जब विलास उन के पास आ कर बैठा तो बाबूजी पलंग पर लेटेलेटे अपने सीने के दर्द को हाथों से दबाते हुए बोले, "बेटे, मैं सोच रहा हूं कि अपनी सारी संपत्ति तेरे नाम कर दूं. अब मुझ से बरदाश्त नहीं होता यह लड़ाईझगड़ा. इन सब चक्करों में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कांच फैक्टरी की भी सही देखभाल नहीं कर रहे हैं ये दोनों."

"कांच फैक्टरी की आप फिक्र मत कीजिए. मैं उसे संभाले रहता हूं. रही वसीयत की बात तो सिर्फ मेरे ही नाम सब कुछ कर देना उचित नहीं है. तीनों में बराबर का ही हिस्सा रहने दीजिए. मैं तो कहता हूं कि आज ही सब को बुला कर सीधा फैसला कर दीजिए."

विलास की बात सुन कर वीरेंद्र अपने पलंग पर पड़ेपड़े कुछ देर ऊपर छत ताकते रहे. फिर बोले, "तू ठीक कहता है. जा बुला ला उन दोनों को. मैं आज फैसला किए देता हूं."

विलास दोनों भाइयों को बुला लाया. अपने कमरे से निकल कर पहले सुरेंद्र आए. उन के पीछे अविनाश. सविता भी अपना बढ़ा हुआ पेट ले कर दरवाजे के बाहर ही आ कर खड़ी हो गई. सुरेंद्र बाबूजी वाली आरामदेह कुरसी पर बैठ गए और अविनाश पलंग पर बाबूजी के पैताने.

वीरेंद्र पलंग पर ही पैर नीचे जमीन पर लटका कर बैठते हुए बोले, "भई, अब मुझ से तुम सब का लड़ाईझगड़ा बरदाश्त नहीं होता. तुम लोग आखिर चाहते क्या हो? क्या तुम्हें अच्छा लगता है कि घर में रोज लड़ाई होती रहे और महल्ले भर में मेरी बदनामी हो, क्यों?"

उन्होंने बारीबारी से दोनों लड़कों को देखा. अविनाश बोला, "आप की बदनामी कोई नहीं चाहता. लेकिन बाबूजी अब यह जरूरी हो गया है कि हम दोनों में से कोई एक घर छोड़ दे."

"मैं तो कतई नहीं निकलने वाला इस घर से. इसी को निकलना होगा. सारी लड़ाई की जड़ यह है और इस की बीवी है," सुरेंद्र तैश में आ कर बोले. उन की उंगली अविनाश की तरफ दो बार उठी. आंखें आग सी उगल रही थीं, मानो कच्चा खा ही जाएंगे वह अविनाश को.

अविनाश के भीतर भी ठाकुरों वाला खून था, तुरंत उबाल खा गया. बोला, "ऐसी बात है तो मैं भी नहीं निकलने वाला. जब तक सांस है, मैं यहीं रहूंगा. देखता हूं, कौन निकाल लेता है. यह तुम्हारा घर नहीं है, समझे. बाबूजी का घर है."

वीरेंद्र ने बीच में हस्तक्षेप किया. बोले, "तुम दोनों शांत हो कर कायदे से सुनते हो मेरी बात या..."

"कायदा इसे सिखाओ, बाबूजी. जितनी बदतमीजी से यह जवाब देता है, कोई दूसरा दे तो उस की जबान खींच लूं."

"तुम मेरी जबान क्या खींचोगे, बड़े," भइया के बजाए अविनाश ने जीवन में पहली बार सुरेंद्र के लिए 'बड़े' शब्द का प्रयोग किया था.

सुरेंद्र ऐसा संबोधन सुन कर आपे से बाहर हो गए और कुरसी छोड़ कर उठ खड़े हुए. अविनाश भी उठ पड़ा और बहुत ही निकट था कि सुरेंद्र का हाथ उठ जाता. बाबूजी पूरी ताकत से चीखे, "बंद करो यह सब. मैं तुम दोनों की खाल खींच लूंगा. अपनी पूरी जिंदगी मैं ने तुम सब के भले के लिए कुरबान कर दी और तुम दोनों का यह हाल है," कहतेकहते वीरेंद्र हांफने लगे.

विलास ने उन्हें संभालते हुए किसी तरह फिर बैठाया. तभी मालती अंदर आती हुई बोली, "बाबूजी, अब तो यह रोज की ही बात हो गई है. आप के भले के लिए ही मैं कहती हूं कि आप निर्णय कर दीजिए. आप कहेंगे तो हम ही चले जाएंगे यहां से."

दरवाजे पर खड़ी सविता भी चुप नहीं रह सकी. वह झट थोड़ा आगे बढ़ आई और बोली, "बाबूजी खुद समझदार हैं. तुम्हारी राय की जरूरत नहीं है."

"देखो, सविता मैं तुम से बात नहीं कर रही हूं. छोटी हो, अपना मुंह बंद ही रखो तो अच्छा है."

"मैं छोटी हो कर मुंह बंद रखूं और तुम बड़ी हो कर मुंह खोले रहो. वाह, यह भी अच्छी रही."

"अच्छा, अच्छा, ज्यादा बोलने की जरूरत नहीं है," मालती ने कहा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यही घड़ी है उसे सिखाने की ...
मुट्ठी भर रेत और समय में
फर्क बताने की.

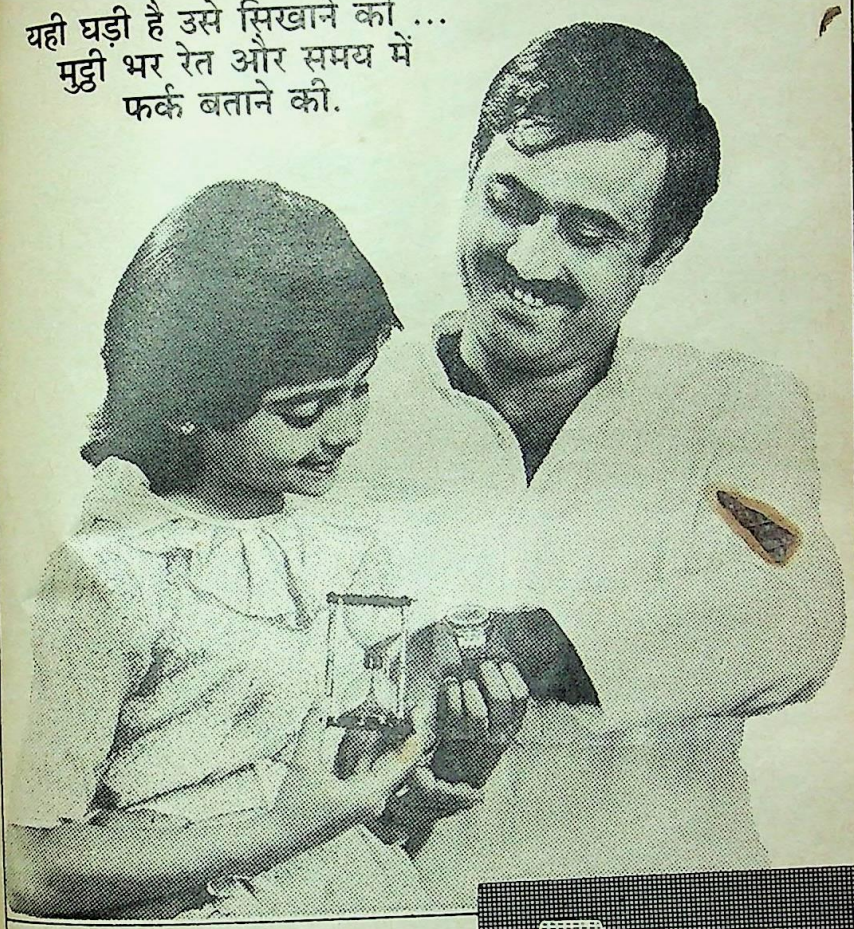

समय के अथाह सागर में, ये घड़ियाँ हैं उसके खेलने की.
बेफिक्री के ज़माने की. पर ज़िंदगी में तो ज़रूरत पड़ेगी समय
की पाबंदी उठाने की.

४५० लाख लोगों ने समय की पाबंदी की निराली राह अपनायी है.
ये घड़ी है उसके खेलने की. सीखने और समझने की...
मुट्ठी भर रेत और समय में फर्क जानने की.

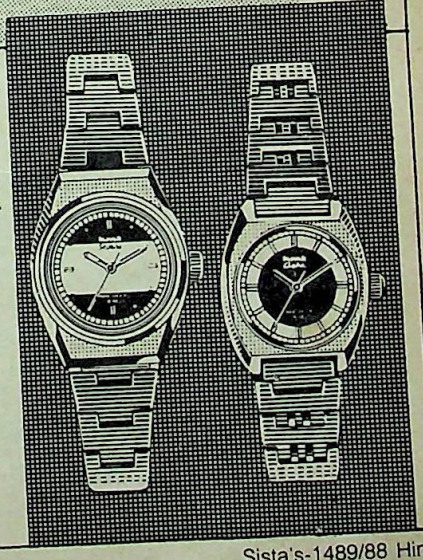

HMT
घड़ियां
राष्ट्र के समय प्रहरी

Sista's-1489/88 Hin

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपना सौन्दर्य निखारिए एस्कमेल अपनाइए

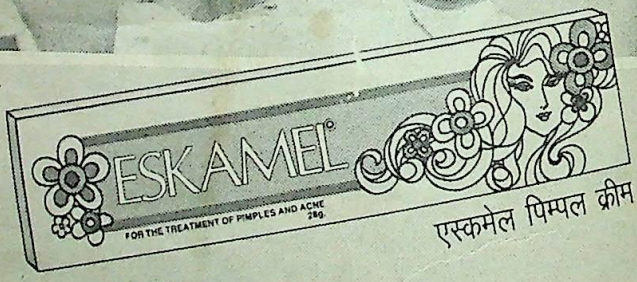

एस्कमेल पिम्पल क्रीम

कील मुंहासों की परेशानी अब क्यों
सताए जब आप सही क्रीम अपनाएं. जी हां,
एस्कमेल – एक ख़ास फ़ार्मूलेवाली क्रीम,
जो मुंहासे होने न दे, भद्दे दाग़ पड़ने न दे.
एस्कमेल आपका सौन्दर्य निखारे. हरदम.

एस्कमेल सुन्दरी बनिए

© Eskayef Limited, Licensed user of Regd. Trade Mark ®

HTA 1897

SKF – एक एसकेएफ उत्पादन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्या कर लोगी तुम मेरा?" सविता भी हाथ नचाती हुई बोली.

तभी सुरेंद्र फिर तैश में आ कर अविनाश से बोले, "क्यों? तू अपनी बहू को चुप कराता है या मैं..."

"तुम अपनी धौंस अपने पास रखो, बड़े. आज यह जो कुछ हो रहा है तुम्हारी वजह से ही हो रहा है."

"मेरी वजह से नहीं, तेरी वजह से हो रहा है यह सब. तू शुरू से ही जोरू का गुलाम रहा है."

"बड़े...," अविनाश ने फिर बाँहें चढ़ाते हुए बोला, "अब बहुत हो गया. मैं तुम्हारी योजना कभी सफल नहीं होने दूंगा. तुम चाहते हो कि अविनाश निकल जाए और पूरे घर में तुम मौज करो."

अविनाश की बात पूरी भी नहीं हो पाई थी कि बूढ़े वीरेंद्र का धैर्य जाता रहा. उन का बूढ़ा खून एक बार फिर से उबल पड़ा. उन के सामने बहू और बेटों की इतनी मजाल हो गई थी कि उन के अस्तित्व तक का बोध जाता रहा था. देखते ही देखते उन के चेहरे पर ठाकुरों वाला खूंखारपन उतर आया. वह एक बार फिर पलंग छोड़ कर उठ खड़े हुए. विलास उन्हें फिर संभालने को लपका. उस का हाथ भी उन्होंने झटक दिया और अगले ही पल अविनाश और सुरेंद्र दोनों पर घूसों और थप्पड़ों की बारिश शुरू कर दी.

सभी स्तब्ध रह गए. उन का वह रूप तो किसी ने देखा ही नहीं था और ज्यादा देर वह रूप देख भी नहीं पाए थे. उसी आवेश की स्थिति में उन के दिल के आसपास एक तीखा दर्द उठा और वह किसी खोखले दरख्त की भांति फर्श पर लुढ़क पड़े.

उन के दिल ने धड़कना ही बंद कर दिया था. विलास दौड़ कर डाक्टर को भी बुला लाया. लेकिन वीरेंद्र का सिर्फ पार्थिव शरीर ही वहां रह गया था.

देखते ही देखते सारा दृश्य बदल गया. सभी का उबलता खून ठंडा हो गया और सभी के चेहरों पर एक प्रश्नचिह्न सा उभर आया—इस स्थिति का जिम्मेदार कौन है?

पर्यटकों का स्वर्ग छोटानागपुर

जहां प्रकृति के अपूर्व सौन्दर्य में आप खो जाते हैं

राजरप्पा, जोन्हा, हुण्डू, दर्शीम, लोध, जलप्रपात, हजारीबाग और रॉची की झीलें

बेतला और हजारीबाग का वन्य प्राणी अभ्यारण

और

नेतरहाट के पठार पर अनोखा सूर्योदय-सूर्यास्त

देखने अवश्य आइए

अपने परिदर्शन का कार्यक्रम बनाइए।

बिहार पर्यटन की सूचना, परिवहन एवं आवासीय सेवा उपलब्ध सम्पर्क करें।

पर्यटक सूचना केन्द्र मजहरूलहक पथ, पटना, दूरभाष-25295
पर्यटक सूचना केन्द्र, कचहरी परिसर, राँची दूरभाष-20426
पर्यटन निदेशक, बिहार।

396 स. (पर्यटन-16) 87-88

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोनापीटना तो अब औपचारिकता सी भी बौना महसूस हो रहा था. बाबूजी के शव को श्मशानघाट ले जाया गया.

वहां से लौटे तो तीनों भाइयों के मन भारी थे. रहरह कर बचपन से अब तक का बाबूजी के साथ बिताया हुआ समय उन के दिल को कुरेद रहा था.

और उस रात 'कृष्णा कुटीर' में न तो कोई शोर था, न ही टकराव. बस, नीरव सन्नाटा था. वह सन्नाटा तेरहवीं तक बना रहा. ऐन तेरहवीं वाले दिन सविता को लगा कि उस के गर्भ में असहनीय सी पीड़ा उठनी शुरू हो गई है. कोख से कुछ नीचे गिरने को आतुर था. वह दर्द की अधिकता में वहीं आंगन के फर्श पर बैठ गई. मालती से रहा नहीं गया. उस ने पास आ कर सविता की पीठ पर हाथ फेरते हुए कहा, "क्या बात है, सविता?"

सविता से कुछ बोला नहीं गया. दर्द की अधिकता में उस ने दांतों से होंठ काटने शुरू कर दिए थे. मालती ने उसे सहारा दे कर उठाया. अपने कमरे में ले जा कर पलंग पर लिटाया. गुंजन से बोली, "बेटे, जा कर चाचा से कहो कि डाक्टरनी को घर पर ही बुला लाएं. हस्पताल ले जाने का समय नहीं है."

गुंजन दौड़ीदौड़ी बाहर गई. अविनाश को उस ने अपने ढंग से सब बताया और अविनाश दौड़ पड़ा डाक्टरनी को बुलाने.

डाक्टरनी आई. उस कमरे को ही प्रसूतिगृह बना दिया गया. बच्चे सभी आश्चर्यचकित थे कि आखिर उन्हें अपने कमरे में क्यों नहीं जाने दिया जा रहा है. और अंदर से चाची इतनी बुरी तरह चीख क्यों रही है. मां भी बारबार चौके में जा कर कभी गरम पानी, कभी सीरिंज उबाल कर क्यों कमरे में ले जा रही है?

लेकिन थोड़ी देर बाद अंदर से नवजात शिशु के रोने की आवाजों के आने के साथ बाहर आंगन में निकलते हुए मालती ने सब को बताया, "लड़का हुआ है."

अविनाश को लगा कि पूरा आंगन एक भीनीभीनी खुशबू से महकने लगा है. वह खुशबू सारे घर में फैलती जा रही है.

अविनाश लपक कर अंदर कमरे में पहुंचा, जहां सविता उस नवजात के पास लेटी हुई रोए जा रही थी. अविनाश बोला, "अरे, तुम्हें तो खुश होना चाहिए और तुम रो रही हो."

"हां, मुझे जी भर कर रो लेने दो, अविनाश. आज आभी न होतीं तो मुझे दूसरा जीवन न मिलता. औरत ही मौके पर औरत का सहारा बनती है. मैं ने तो इन सहारों के बारे में कभी सोचा भी न था. सोच लेती तो आज शायद बाबूजी..." कहतेकहते सविता फिर से रो पड़ी.

अविनाश सोचने लगा, वास्तविक अपराधी तो वह खुद ही है.

तभी बाहर आंगन से सुरेंद्र की खुशी भरी आवाज उसे सुनाई दी, "भई, अविनाश, मुबारक हो."

उस आवाज को सुनते ही अविनाश आंगन की तरफ सुरेंद्र भैया के पैर छूने दौड़ पड़ा. उसे ऐसा लग रहा था जैसे रास्ते का हर कांटा फूल बन कर उस के पांवों तले महकता जा रहा था.

वरवधू ढूंढ़ने की समस्या सरिता में वैवाहिक विज्ञापन दे कर हल कीजिए

सरिता सारे भारत में समृद्ध, सजग व सुशिक्षित परिवारों में पढ़ी जाती है. इस प्रकार सरिता में वैवाहिक विज्ञापन आप को वरवधू ढूंढ़ने में बहुत सहायक सिद्ध होगा. दैनिक पत्र तो केवल अपने शहर या इलाके में पढ़े जाते हैं, लेकिन सरिता का क्षेत्र सारा भारत है. इन विज्ञापनों का शुल्क भी सरिता के पाठकों के लिए नाम मात्र रखा गया है.

विस्तृत जानकारी के लिए निम्नलिखित पते पर पत्रव्यवहार करिए:

विज्ञापन व्यवस्थापक, सरिता, नई दिल्ली - 110055.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हर मिठाई आपके लिए ख़ास तौर से बनाई!

आकार में बड़ी स्वाद में खरी

न्यूट्रीन SuperStar

सर्वश्रेष्ठ टॉफ़ियों की बहार

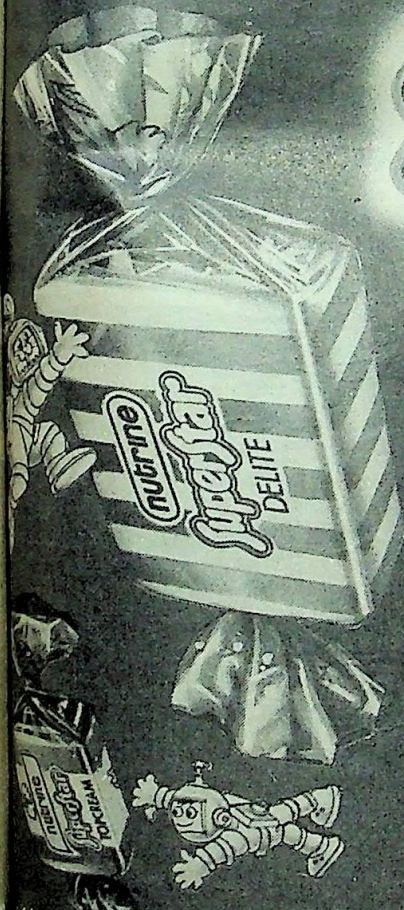

ट्विन ट्रीट टॉप क्रीम डिलाइट

अलौकिक आनंद

nutrine भारत की सबसे ज्यादा बिकनेवाली स्वीट्स

...शनरी कं. प्रा. लि., चित्तूर, आं. प्र.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिनदहाड़े

हमारे गांव का एक युवक थल सेना में काम करता है. पिछले दिनों अपनी बहन की शादी पर जब वह गांव आया तो उस के साथ एक अन्य सिपाही भी था. जिस ने अपना परिचय एक कर्नल के रूप में दिया. उस ने गांव में यह प्रचार किया कि वह जिसे चाहे सेना में भरती करवा सकता है.

गांव के सभी शिक्षित बेरोजगार उन की खुशामद करने लगे. उन लोगों ने कई लोगों से करीब 2 लाख रुपए रिश्वत के नाम पर इकट्ठे कर लिए. फिर वे उन युवकों को जबलपुर ले गए. वहां उन्हें एक धर्मशाला में ठहरा कर खुद रात में खिसक गए. पैसे के अभाव में उन युवकों को वहां भीख तक मांगनी पड़ी.

—उमेशप्रसाद सिंह

*

मेरे मामाजी दिल्ली से हरिद्वार जा रहे थे. रास्ते में एक व्यक्ति उन की सीट के पास आ कर बैठ गया और मायूसी से बोला, "मुझे भी हरिद्वार जा कर वापस लौटना है, लेकिन रास्ते में ही मेरी जेब कट गई है. मेरा टिकट भी उसी में था." फिर उस ने अपने गले से एक सोने की चेन उतार कर कहा, "कोई सज्जन मुझे इस के बदले केवल 200 रुपए दे दें."

चेन करीब 2 ग्राम की थी. मामाजी ने उसे देखते हुए 100 रुपए देने चाहे लेकिन वह नहीं माना और 150 रुपए में चेन दे कर बोला, "साहब, बहुत मजबूरी में इसे दे रहा हूं.' लेकिन जब वह अगले स्टेशन पर उतर कर काफी देर तक गाड़ी में नहीं आया तो सब को शक हुआ. घर आ कर सुनार को दिखाने पर उस ने बताया, "यह तो नकली है. इस पर केवल सोने का पानी चढ़ा हुआ है."

—छगनलाल व्यास

कुछ दिन पहले मैं ने एक रेडियो कंपनी की पुरस्कार प्रतियोगिता का विज्ञापन पढ़ा था. प्रतियोगिता में कुछ गणितीय पहेलियां थीं, जिन्हें मैं ने हल कर के भेज दिया.

कुछ दिनों बाद एक मनीआर्डर फार्म के साथ एक चिट्ठी आई, जिस में मुझे दूसरा इनाम देने के लिए 35 रुपए मांगे गए थे. मैं ने 35 रुपए मनीआर्डर से भेज दिए. कुछ दिनों बाद वी. पी. पी. से एक पार्सल आया, जिसे 180 रुपए दे कर मुझे छुड़वाना पड़ा. पार्सल खोलने पर एक ट्रांजिस्टर का खोल निकला. उस में भूसा भरा हुआ था.

—मोहम्मद आजाद

*

एक बार ट्रेन में हमारे साथ यात्रा कर रही एक अधेड़ महिला अचानक रोने लगी. पूछने पर उस ने बताया कि दहेज के कारण उस के ससुराल वालों ने मारपीट कर उसे घर से निकाल दिया है तथा उस के बेटे को भी उस से छीन लिया है. हम सब लोगों ने उस के मायके तक पहुंच जाने के लिए 30 रुपए दिए तथा अपने साथ ही बैठ कर कुछ खाने के लिए भी खरीद कर दिया.

उसे जिस स्टेशन पर उतरना था उस के आने पर हम सभी उसे प्लेटफार्म तक छोड़ने गए. लौट कर आने पर हमें पता चला कि हमारा कपड़ों का थैला तथा पर्स गायब था. बाद में पता चला उस ने दूसरे डब्बों में भी इसी तरह लोगों को ठगा था.

—योगराज मुंदल

इस स्तंभ के लिए अपने तथा अपने संबंधियों के अनुभव भेजिए. प्रत्येक प्रकाशित अनुभव पर 30 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. अपने अनुभव इस पते पर भेजें. संपादकीय विभाग, सरिता, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

सरिता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लय बांसुरी की

र गई चांदनी
ुराग आंखों में.

तियों में
गया
ंद का सागर,
ले जितने
प भीतर
उतनी झरी बाहर.

त मेहंदी से धुले
ुरक्त बांहों में.

ू गई लय
ांसुरी की
ख्वा का आंचल,
लगा जैसे
पास गुजरी
रूप की छागल.

रख गया कोई निमंत्रण
आम्र शाखों में.
खुले पांलों
सी थिरकती
बह रही है रात,
शुभ सपन
ले भोर के
उजली नदी है साथ.
संदली क्षण रच गए
सुरमई राहों में.
—सावित्री परमार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुसीबत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ये ताज़गी, ये मोहकता...कुदरत के सिवा कहीं और कहां!

लैवेन्डर मिस्ट

एक लाजवाब टैल्क.
झलके इसमें आपका अंदाज़.

Orbit/MP:LM/169:87 HN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक दिन हक्काबक्का करने वाली खबर सुनी. हमारे एक परिचित की पत्नी अपने चार पुत्रपुत्रियों और पति को छोड़ कर चली गई.

हम ने सोचा कि वह जल्दी ही लौट आएगी. मगर जल्दी ही पता चल गया कि वह किसी अन्य पुरुष की पत्नी बन कर रहने लगी है. उस ने अपने बच्चों की खबर आज तक नहीं ली.

हमारे एक मित्र ने टिप्पणी की, "औरत का कोई भरोसा नहीं!"

"और मर्द का?' मैं ने पूछा, "मर्द तो बगैर घर छोड़े नई बीवी ले आता है. यह औरत जिस मर्द के यहां गई है, उसे क्या कहें? मर्द के लिए तो घर बैठे 'सुविधा' है, औरत को घर ढूंढ़ना पड़ता है. अकसर मायके या ससुराल में उसे 'घर' मिलता नहीं है."

बाद में असलियत सामने आ गई. पति महोदय पत्नी की रोज पिटाई करते थे. दोएक बार उस की बांह तोड़ चुके थे. वह बेचारी पहले भी कई बार 'भागी' थी, मगर मायके या निकट संबंधियों में कोई बचाने वाला नहीं मिला तो उस ने वही किया जो

लेख • सैन्नी अशेष

विवाह का बंधन मजबूत करने का अचूक नुसखा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोई भी गुलाम व्यक्ति अंततः करता है, कुछ भी न मिलने पर 'कुछ' पा लेने का निश्चय. किसी पुरुष से उसे थोड़ी हमदर्दी मिली तो वह उसी की हो गई. पुरुष की स्थिति भी ऐसी थी कि वह इस स्थिति की स्त्री को 'अपना' ले.

"ऐसी औरतें गरीब या पिछड़े घरों की होती हैं," अकसर बहुत से लोग अपने घरों का बचाव करने के चक्कर में पूरी दुनिया का बचाव करने लगते हैं.

वास्तविकता भिन्न है. स्त्री का अपने परिवार को छोड़ कर चले जाना आज के सभ्य समाज, धनाढ्यवर्ग और चकाचौंध वाले समाज के लिए आम बात है. बंबई में ही पूरी दुनिया की झलक मिल जाएगी. झुग्गीझोंपड़ी से ले कर फिल्मी दुनिया के परिवारों की यही कथा है. कारण एक ही है, अपनी तरह की जकड़न, अपनेअपने बंधन और अपेक्षाएं.

यह भी मानना है कि उन्हें ससुराल के किसी व्यक्ति से सुखद संबंध बनाने की कोई जरूरत नहीं है और न ही वह अपने पति के साथ किसी मौके पर आनाजाना चाहती हैं. किसी को बुलाने की बात तो दूर है. हां, उन के पर्स में एक पत्र सदा तैयार रहता है, जिस में उन के मायके जाने या न जा पाने का जिक्र अथवा वहां से किसी को बुलाने का कार्यक्रम रहता है.

उन के इस रवैए के कारण उन के पति को कई बार घर से दूर कहीं जाने की जरूरत पड़ती है. कोई गैरजिम्मेदार व्यक्ति होता तो सदा के लिए भी संबंध को तोड़ सकता था. लेकिन वह व्यक्ति पत्नी के अन्य गुणों के कारण यह सब सहन कर लेता है और उचित सीमा तक पत्नी के मायके वालों से निभाता है.

संभव है, पति का यह व्यवहार पत्नी को देरसवेर राह पर ले आए. इतना तो अब

वैवाहिक बंधन का एक सिरा पति के हाथ में होता है तो दूसरा सिरा पत्नी के हाथ में. इस बंधन को इतना न कसा जाए कि टूटने का खतरा हो, न ही इतना ढीला छोड़ा जाए कि आसानी से अलग हो जाए. अर्थात बीच का रास्ता ही इस बंधन को मजबूत बनाए रख सकता है.

जब भी कोई जोड़ा बिखरता है, कारण यही होता है कि दो में से एक की उम्मीदें दूसरे की स्वतंत्रता का हनन कर रही होती हैं. कभी ऐसा भी होता है कि दोनों ही एकदूसरे पर अपनेअपने संस्कारों की जंजीरें लपेटना चाहते हैं.

मैं एक समझदार महिला को आठ वर्ष से देखता आ रहा हूं. बहुत अच्छे स्वभाव की लोकप्रिय महिला हैं. अच्छा साहित्य और अच्छी संगति उन्हें पसंद है. लेकिन अपने एक पूर्वाग्रह के कारण उन्होंने पति से मिलने वाले आधे से ज्यादा प्रेम को स्वयं नष्ट कर डाला है. वह सदा अपने मायके की तरफ के लोगों से मिलने को व्याकुल रहती हैं, जबकि उस तरफ के सभी लोग गैरजिम्मेदार हैं.

यहां तक भी ठीक था, मगर उन का

भी है कि वह पति के बगैर जीने की कल्पना भी नहीं करतीं. पति उदार जो है !

लेकिन यह मुमकिन है कि अनेक पति इस मायकापरस्ती को अपनी स्वतंत्रता का हनन मान कर बगावत करें. उन्हें रोकना भी कठिन है.

उधर ढेरों उदाहरण ऐसे पतियों के हैं जो अपने मांबाप के पूछे बगैर पत्नी के साथ एक कदम भी नहीं चलना चाहते. ऐसे लोगों के साथ स्वाभिमानी महिला पत्नी या बहू बन कर न रहना चाहे तो क्या आश्चर्य? यों पत्नियां कई विवशताओं के कारण मिट्टी के माधो किस्म के पतियों के साथ रह लेती हैं (आखिर गलती उन की भी है कि उन्होंने चुपचाप इन्हें योग्य वर मान लिया). मगर वे भीतर ही भीतर घुटती रहती हैं. उन के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

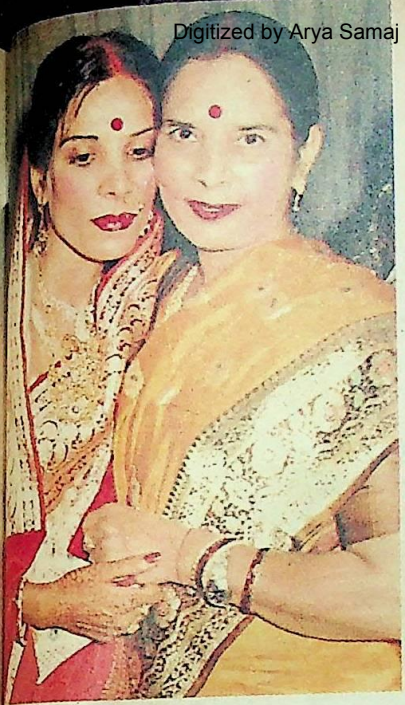

मायके से आई भाभी से मिलती हुई ननद : इतनी ही प्रसन्नता ससुराल वालों के रिश्तेदारों के आने पर व्यक्त करें तो संबंध और भी मधुर बने रहेंगे.

हृदय में पति के लिए न प्रेम होता है, न सम्मान. केवल वितृष्णा होती है.

लेकिन उन लोगों को यंत्रणा अधिक गहरी होती है, जिन्होंने देखपरख कर पति या पत्नी को चुना होता है. वे जब देखते हैं कि उन का तथाकथित जीवनसाथी गंभीर मामलों में उन की अनदेखी कर रहा है या अपनी ही मरजी उन पर लाद रहा है तो वे चुप रह कर भी एक तनाव की घोषणा कर देते हैं. "नहीं, कुछ भी नहीं है," कह कर भी वे जता देते हैं कि हमें आप का रवैया स्वीकार या पसंद नहीं है, मजबूरी की बात अलग है.

जीवनसंगी दास नहीं, मित्र होना चाहिए. अंततः वही हमारे सुखदुख का साथी होता है, बाकी सभी धीरेधीरे अपनेअपने जीवन में गुम हो जाते हैं. केवल कुछ मौकों की शिष्टता या दस्तूर उन से हमें जोड़े रहते हैं. केवल एक व्यक्ति साथ रहता है–पति या पत्नी.

इसलिए जीवनसाथी को साथी ही समझना ठीक है. साथी या मित्र, प्रेयसी या पत्नी या पति वही अच्छा होता है जो जोरजबरदस्ती न करे, सहयोग करे. वह अपनी इच्छा पीछे कर के साथी की इच्छा को पहले पूरा करना चाहता है.

अपने पूर्व प्रियजनों से मिलना किसे पसंद नहीं. पति या पत्नी यदि एकदूसरे के प्रियजनों का सम्मान नहीं करेंगे तो और कौन करेगा? हर मायका या हर ससुराल बुरा नहीं होता. अधिकांश में कुछ अच्छे व प्यारे लोग निकल ही आते हैं. हम आज उन से अच्छा बरताव करेंगे तो कल वे भी हमारे काम आएंगे. अपवाद को ही, किसी पति या पत्नी के ससुराल के सभी लोग गैरजिम्मेदार होते हैं. एकाध वहां भी भला निकल आता है.

पति या पत्नी को न केवल अवसर देना चाहिए, बल्कि यह भी पूछना चाहिए, "तुम कहो तो मैं भी तुम्हारे साथ चलूं?" विवाह के बाद पति या पत्नी अपनी तरफ के लोगों से बारबार अकेले ही जा कर मिलेंगे तो इस का एक ही अर्थ होगा, "गाड़ी जैसेतैसे खींची जा रही है. जरूर कोई बात है."

स्वतंत्रता का सम्मान करने से ही स्वतंत्रता व सम्मान मिलता है. क्या आप ने कोई ऐसा पति या पत्नी देखी, जो इसलिए किसी और के साथ घर बसाना चाहे कि उस के पति या पत्नी ने उसे स्वतंत्रता दे रखी है अच्छे लोगों से मिलने की, अच्छा खानेपहनने की... ?

लगाम ढीली रखने वाले पतिपत्नी एकदूसरे को छोड़ने की बात तक नहीं सोचते. वे केवल सोचते हैं, "दुनिया में कई पतिपत्नी एकदूसरे पर कब्जा जमाने की कोशिश में मूर्ख क्यों बनते हैं? क्या वे मनुष्य रह कर पतिपत्नी नहीं हो सकते?"

अब मैं अपनी बात भी कर लूं. मैं और मेरी संगिनी दोनों में से एक जब भी कहता है, "चलो, कहीं चलते हैं," हमारे साथ ही हमारा बेटा और बेटी भी चिल्लाते हैं, "चलो जी, चलो!"

यह उत्साह अगली पीढ़ियों को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गर्भावस्था के दौरान बवासीर

ठीक उसी वक्त, जब आपको अपनी सेहत की ख़ास देखभाल करनी चाहिये, आपको बवासीर की शिकायत हो सकती है, जोकि गर्भावस्था में आमतौर से हो जाती है.

बवासीर के पहले लक्षण हैं जलन, खुजली, शौच के समय दर्द, और कभी-कभी खून आना.

इन सभी लक्षणों को बिना दर्द के, जल्द और असरदार ढंग से दूर करता है प्रिपरेशन एच.

प्रिपरेशन एच के अनोखे फ़ॉर्म्युला में सिर्फ़ प्राकृतिक तत्व हैं, जिनसे किसी भी साइड इफ़ेक्ट या नुक्सान की आशंका नहीं होती. ख़ास तौर से इस नाज़ुक समय में, जब आप किसी प्रकार का ख़तरा नहीं चाहतीं.

माँ बनने के सुख में कोई भी बाधा न आने दीजिये.

GM-132/87 HIN

मिलेगा तो कौन किसे बोझिल बंधनों में बांधना पसंद करेगा? हम जिसे आजादी देते हैं, वह कृतज्ञ होता है. उसे हम से लगाव हो जाता है. हमारे बिना वह कहीं ज्यादा देर नहीं टिकता. पड़ोस से ले कर मायके, दफ्तर से ले कर 'टूर' तक से खूंटा तोड़ कर आता है. न आ सके तो याद करता है.

जो मियांबीवी खुश रहते हैं, उन के बच्चे भी उन के संगसंग रहना चाहते हैं. आजादी दे कर उन्हें हम प्रभावित करते हैं, अतः वे कहीं जाने से पहले चाहते हैं कि हम भी उन के साथ चलें तो अच्छा रहे.

लगाम ढीली रखने का एक और अभिप्राय है. मनुष्य पशु नहीं है कि हमें उसे बांध कर कुछ सिखानापढ़ाना है. मनुष्य जंजीरें उतनी ही पसंद करता है, जितनी उस पर आभूषणों की तरह फबती हों, बाकी को उतारने में वह अवसर पाते ही देर नहीं करता. और जब उतार नहीं पाता, तब तक दुखी रहता है. दुखी व्यक्ति कभी प्रेम नहीं कर सकता. प्रेम का न मिलना ही तो दुख है.

शादी बंधन तो है किंतु स्वेच्छा का बंधन है. इसी कारण इस बंधन को बेड़ियों में जकड़ा जाते देख कर मनुष्य इस से मुक्त होने को भी स्वतंत्र है. 'लगाम' वहीं तक ठीक है, जहां तक वह प्रेमपूर्ण हो, रक्षात्मक हो और अच्छी आकांक्षा से जुड़ी हो.

पति और पत्नी दोनों के हाथ में एकदूसरे की लगाम होती है. लगाम उसी के हाथ में दी जाती है, जिस पर विश्वास हो, और यह पता हो कि यह लगाम समयसमय पर ढीली पड़ती रहेगी, और जब कसेगी तो केवल शुभचिंतक बन कर ही, तानाशाह बन कर नहीं. (इसी के बूते पर पति या पत्नी की किसी व्यर्थ की खुदगर्जी को निर्ममता से ललकारा जा सकता है.)

जो लोग यह सोचते हैं कि लगाम ढीली छोड़ने से उन का पति या उन की पत्नी सरपट दौड़ जाएगी और पीछे मुड़ कर भी नहीं देखेगी, उन से मेरा यह विनम्र प्रश्न है कि आप को शादी करने का अधिकार कहां से मिल गया?

सरिता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कॉफ़ी का शान...

सर्वोत्तम 100% शुद्ध इन्स्टैंट कॉफ़ी का शानदार स्वाद। ख़ास चुने हुये कॉफ़ी बीन्स से तैयार और भरपूर फ़्लेवर युक्त यह लाजवाब कॉफ़ी आप सब का दिल जीत लेगी।

आज ही गोल्ड कैफ़े लाइये और अपने परिवार के साथ आनन्द लीजिए। आप स्वयं कहेंगे "वाह! कॉफ़ी का बेमिसाल अन्दाज!"

GOLD CAFE

सर्वोत्तम 100% शुद्ध कॉफ़ी

इन्सटेंट कॉफी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या दांत निकलने के पूरे ५००० घंटों के दौरान आप अपने बच्चे पर नज़र रख सकती हैं?

दांत निकलना शुरू होते ही आपका हंसता-खेलता लाडला अचानक रोने और चिड़चिड़ाने लगता है.

बस ज़रा नज़र चूकी नहीं कि सामने पड़ी हर चीज़ मुंह में डालकर चबाना-चूसना शुरू कर देता है.

चाहे फिर किताब हो, जूते, चादर या फिर टेलिफोन वायर... जो भी उसे मसूढ़ों के दर्द या खुजली से राहत दिलाए.

और हर ऐसी-वैसी चीज़ मुंह में डालने पर उसके कोमल मसूढ़ों में कीटाणु लगना स्वाभाविक है. जिससे उसको अक्सर दस्त या बुखार भी हो जाता है.

दुनिया भर की माताएँ अपने बच्चों को हँसता-मुस्कुराता देखने के लिए टीथिंग जैल पर भरोसा करती है।

बरसों से माताएँ दांत निकलने की इस समस्या को बच्चों के लालन-पालन का ही हिस्सा मानकर, इससे परेशान होती आ रही हैं.

पर आज दुनिया भर की माताएँ दांत निकलते समय अपने बच्चे को देती हैं - टीथिंग जैल.

आप भी लीजिए अब राहत की सांस. क्योंकि सबसे पहली बार हम आपके लिए लाए है दुनिया के जानेमाने फ़ार्मूले पर आधारित दांत निकलने की ख़ास दवा - यानी बच्चे को दांत निकलते समय होनेवाली परेशानी का अंत.

रेप्टाकोज़ ब्रैट का नया टीजैल. अलग-अलग दवाएं और शिशु देखभाल संबंधी उत्पादन तैयार करनेवाली ऐसी कंपनी जिस पर डॉक्टरों को पूरा-पूरा भरोसा है. बच्चों के मनभाते स्वाद वाला टीजैल. अपने मुन्ने के मसूढ़ों पर मलिए.

आपका मुन्ना हर परेशानी भूलकर हंसता-खेलता रहेगा. टीजैल बच्चे के मसूढ़ों को आराम पहुंचाता है, और ही बच्चे की हर ऐसी-वैसी चीज़ मुंह डालकर चबाने-चूसने की इच्छा को करता है.

अपनी नज़दीकी दवा की दुकान से टीजैल की ट्यूब लाइए. और फिर अपने बच्चे को सबसे पीड़ा-भरे दिनों में भी पाइए हसंता-मुस्कुराता, स्वस्थ तंदुरूस्त.

'एन्जॉय योअर बेबी' शिशु देखभाल संबंधी मुफ़्त पुस्तिका लाइए और अपने मुन्ने को देखिए अधिक करीब से... और पहचानिए.

यहां लिखिए : बेबीकेयर डीवीज़न, रेप्टाकोज़ ब्रैट एंड कं. लि. डॉ. एनी बेसेंट रोड, वर्ली, बम्बई ४०० ०२५.

टीजैल

लौंग तेलयुक्त टीथिंग जैल

मुन्ने को रखता, सदा हंसता-मुस्कुराता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

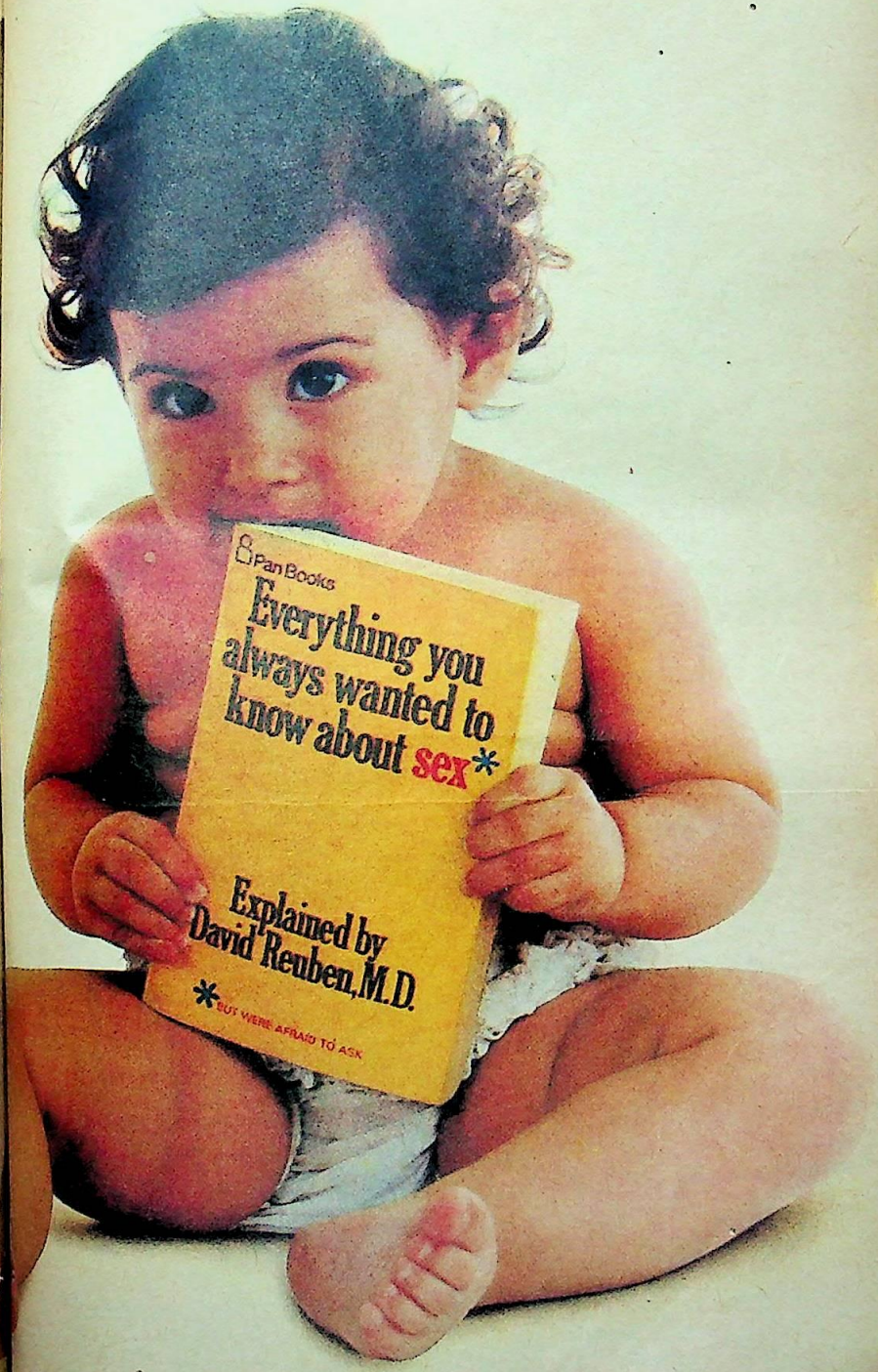

Trikaya RB (T) 1.88 HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्यासे लेन-देन

कोई मांगे टैक्स कोई टैक्स भरे
लिम्का बुझाये प्यास मूड ठीक करे

जब आप इनकम टैक्स के लिए अपनी आमदनी का हिसाब लगाते-लगाते या किसी और की आमदनी का हिसाब करते-करते थक कर प्यास से बेहाल हो जायें तब आयसोटॉनिक सॉल्ट वाले किटाणुरहित लिम्का की बोतल उठायें और अपनी प्यास बुझायें

Limca®
नींबू जल-सा मज़ेदार पेय
ठण्डा बर्फीला पिए-पिलाए

CC-0. In Public Domain.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बड़े परिवार की लड़की को बहू बनाते समय

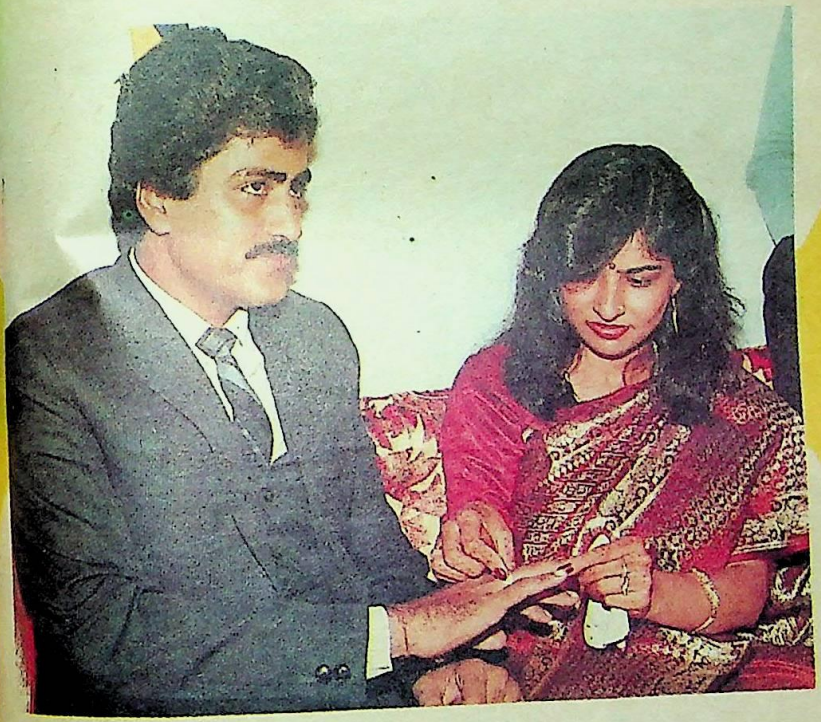

लेख • अनिता कुकरेजा

हमारे पड़ोस में एक मध्यवर्गीय साधारण परिवार रहता था. परिवार के मुखिया बाबूलाल एक स्कूल मास्टर थे और उन का बड़ा बेटा सुनील बी.ए. पास था, लेकिन था बेरोजगार. इसलिए वह अपनी जरूरतें पूरी करने के लिए ट्यूशन करता था.

सुनील के यहां एक लड़की श्वेता अंगरेजी पढ़ने आया करती थी, पढ़तेपढ़ाते दोनों में प्यार हो गया और दोनों ने विवाह करने का निश्चय किया. लेकिन दोनों के बीच अमीरीगरीबी की दीवार आ खड़ी हुई. श्वेता धनी पिता की इकलौती संतान थी. इस कारण उस के मातापिता को उस की जिद के आगे झुकना ही पड़ा और सुनील के मातापिता की ओर से मनाही होने का तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोई सवाल ही नहीं था.

श्वेता और सुनील का धूमधाम से ब्याह हुआ और श्वेता सुसराल आ गई. लेकिन वह वहां की हर बात में मीनमेख निकालती और हमेशा अपने मायके का रोब दिखाती. अपनी सास, देवर, ननदों को तो जैसे अपना नौकर समझती. सुनील उसे समझाने का प्रयत्न करता तो वह उसे भी डांट कर चुप करा देती.

उधर उस के पिता सुनील को घरजंवाई बनाने की कोशिश करने लगे. श्वेता भी यही चाहती थी. लेकिन सुनील अपने मातापिता को छोड़ना नहीं चाहता था और श्वेता उन्हें अपनाना नहीं चाहती थी. इस से आए दिन श्वेता और सुनील में लड़ाईझगड़े होने लगे. अंत में सुनील के मातापिता ने सुनील को श्वेता की बात मानने के लिए मजबूर कर दिया. और एक दिन सुनील अपने परिवार को छोड़ कर श्वेता की खुशी के लिए हमेशा के लिए ससुराल चला गया.

आए दिन इस तरह के विवाहों और उन के परिणामों के समाचार देखनेसुनने को मिलते हैं, जिन में किसी अमीर घर की लड़की गरीब घर में ब्याही जाती है और वहां के वातावरण में अपने को ढाल नहीं पाती और जिस के परिणामस्वरूप इस प्रकार की समस्याएं खड़ी हो जाती हैं.

इस प्रकार की समस्याएं अधिकतर प्रेमविवाह के फलस्वरूप ही सामने आती हैं. प्यार, जिस के आगे ऊंचनीच की दीवार कोई मायने नहीं रखतीं.

आर्थिक रूप में संपन्न घर की लड़की को बहू बनाते समय यह ध्यान रखें कि आप का लड़का क्या उस की जरूरतों को पूरा कर सकेगा. अन्यथा आप के बेटे का दांपत्य जीवन तो कटु होगा ही उस के घरजंवाई बनने की नौबत आने पर आप अपने बेटे से भी हाथ धो बैठेंगे.

जब लड़का लड़का एकदूसरे को पसंद करने लगते हैं तो विवाह करने का फैसला ही करते हैं, लेकिन उस समय वे जिंदगी की यथार्थता से काफी दूर होते हैं.

उस समय तो लड़की के मातापिता भी चुप रहते हैं. लेकिन बाद में बेटी की गृहस्थी अलग करने की पूरी कोशिश करते हैं. उस समय तक उन की बेटी के सिर पर से भी प्यार का भूत उतर चुका होता है और जिंदगी की कठोर यथार्थता उस के सामने खड़ी होती है. परिणामस्वरूप वह अपने मातापिता की सलाह के अनुसार चलने में ही अपनी भलाई समझती है और ससुराल में अपने व्यवहार से ऐसा वातावरण तैयार करती है कि उस के सासससुर को मजबूर हो कर स्वयं ही अपने बेटेबहू को अलग करना पड़ता है. इस प्रकार लड़की अपनी लड़ाई जीत कर ही चैन की सांस लेती है.

अभय अपने मातापिता का इकलौता बेटा है और उस से छोटी दो बहनें हैं इसलिए परिवार की भी पूरी जिम्मेदारी अभय के कंधों पर है.

अभय जिस मिल में काम करता था उस मिल मालिक की बेटी नीता अभय को पसंद करने लगी. केवल अभय के आकर्षण के कारण वह रोज दफ्तर जाती. अभय उस से जितना दूर रहने की कोशिश करता वह उस के और नजदीक आने का प्रयास करती.

और एक दिन मिल मालिक ने अभय को अपना दामाद बनाने का प्रस्ताव अभय के मातापिता के सामने रखा, जिसे उन्होंने सहर्ष स्वीकार कर लिया. इस प्रकार नीता और अभय का विवाह धूमधाम से हो गया.

विवाह के एक महीने बाद नीता के पिता ने अभय को अपना साझेदार बनाना चाहा, लेकिन इस शर्त के साथ कि वह हमेशा के लिए अपने मातापिता को छोड़ कर उन के यहां आ कर रहे. अभय जैसे स्वाभिमानी लड़के ने इस शर्त को नामंजूर कर दिया.

परिणामस्वरूप, नीता रोज अभय और उस की मां से लड़तीझगड़ती रहती

सरिता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

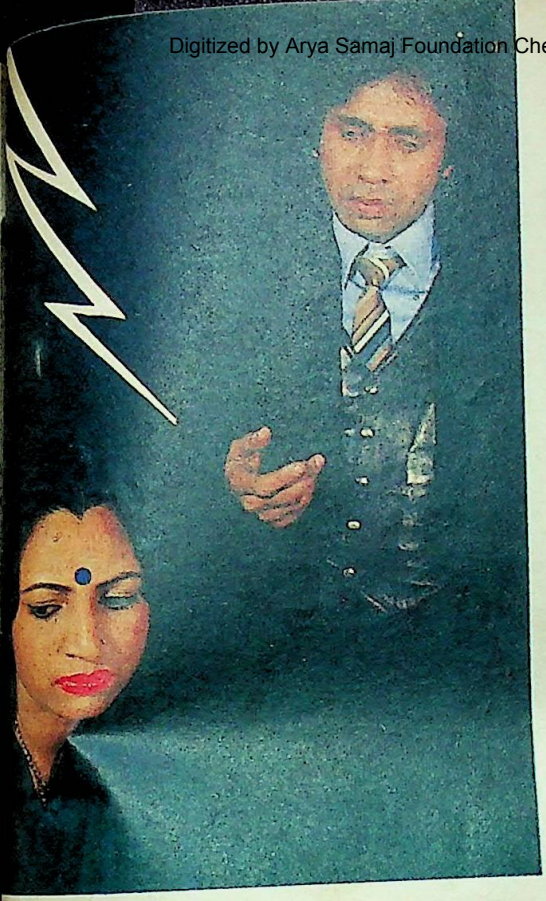

पतिपत्नी का आपसी प्यार ही नहीं, सुखद जीवन के लिए व्यवहार और खर्च में भी सामंजस्य चाहिए.

परिणाम भी होते हैं. लड़का अपनी ससुराल वालों के हर इशारे पर नाचना नहीं चाहता.

कभीकभी तो इस से तलाक तक की नौबत आ जाती है, जिस से लड़के व लड़की दोनों का ही भविष्य बरबाद होता है.

अगर आप अपनी बेटी का हाथ किसी गरीब घर के लड़के के हाथ में थमा ही देते हैं तो उन्हें अपनी योग्यता व मेहनत से आगे बढ़ने का मौका दीजिए. अगर उन्हें बनाबनाया सब कुछ दे दिया तो वे किसलिए आगे बढ़ने की कोशिश करेंगे. वे हमेशा के लिए आप पर व आप के पैसों पर आश्रित हो जाएंगे. यदि आप ऐसा नहीं चाहते तो ऐसे घर में अपनी बेटी का विवाह न करें.

कभीकभी यह भी देखने में आता है कि लड़का धनी ससुराल पा कर उन के पैसे का अपव्यय शराब, जुए जैसे व्यसनों में करने लगता है, तब भी आप की बेटी का जीवन बरबाद ही होता है.

लड़की को भी चाहिए कि वह अपने होने वाले पति की आर्थिक स्थिति से समझौता करने के बाद ही विवाह का निर्णय ले और शादी के बादअपनीससुराल वालों के साथ सामंजस्य स्थापित करने की कोशिश करे. ऐसी कोई बात न कहे जिस से उन के अहं को किसी प्रकार की चोट पहुंचे. इस तरह के कुछ समझौतों से ही ऐसे प्रेम विवाह सफल हो सकते हैं, अन्यथा अधिकतर ऐसे विवाह असफल ही होते हैं.

र एक दिन वह गुस्से में आ कर मायके ली गई. उस दिन के बाद से आज तक अपनी सुराल नहीं आई. इधर अभय भी ऐसा ई समझौता नहीं करना चाहता जिस से ला की गरीबी का मजाक उड़े.

इस प्रकार के किस्से रोज ही खनेसुनने को मिलते हैं. फिर भी लोग इस से सबक लेने के बजाए उसी गलती को बारबार दोहराते चले जाते हैं.

इस में लड़के व लड़की दोनों के ही मातापिता का दोष है. लेकिन अधिक दोषी लड़की के मातापिता हैं, जो पहले तो अपनी बेटी की जिद के आगे झुक कर उसे ऐसा कदम उठाने देते हैं, लेकिन बाद में वे दामाद को खरीदने की कोशिश करते हैं. वे यह नहीं चाहते कि सुखसुविधाओं में उन की बेटी को किसी प्रकार के अभावों का सामना करना पड़े.

लेकिन कभीकभी इस के भयंकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टचवुड आपके लकड़ी के सुन्दर फ़र्नीचर का इस ख़ूबी से बचाव करे जो पालिश के बस में नहीं.

पेश है टचवुड पॉलीयूरेथेन क्लियर वुड फ़िनिश. इससे लकड़ी के फ़र्नीचर पर एक मज़बूत परत सी जम जाती है–एक ऐसी परत जो पॉलिश के मुक़ाबले कई गुना बेहतर भी है और जिस पर न खरोंचें लगें, न दाग़–धब्बे पड़ें

पॉलिश में ये मज़बूती नहीं

माना, पॉलिश लगाते ही लकड़ी का फ़र्नीचर सुन्दर दिखने लगता है, लेकिन चाय, सब्ज़ी का शोरबा जैसा कुछ गिरते ही उस पर धब्बा सा पड़ जाता है, जो दुबारा पॉलिश लगाने तक बना रहता है.

क्योंकि पॉलिश सिर्फ़ एक पतली कमज़ोर सी तह ही जमा सकती है: ऐसी तह जो दाग़-धब्बों और खरोंचों से बचाव नहीं कर पाती.

इसलिए आपका फ़र्नीचर कुछ ही महीनों में धब्बों और खरोंचों की नुमाइश बन जाता है.

और फिर वो भद्दा सा दिखने लगता है.

टचवुड–पॉलीयूरेथेन की मज़बूती

टचवुड में है पॉलीयूरेथेन–बहुत ही मज़बूत प्लास्टिक. इसकी एक गाढ़ी पारदर्शी परत बन जाती है, जो लकड़ी पर मज़बूती से जमी रहती है.

ये परत गर्म और ठंडी चीज़ों और खरोंचों का एक लम्बे अर्से तक मुक़ाबला कर सकती है. इतना ही नहीं, इस परत के ज़रिये लकड़ी की स्वाभाविक चमक बरसों एक सी बनी रहती है, जबकि इतने वक़्त में मामूली पॉलिश का नामोनिशान तक नहीं रह पाता.

ब्रश से लगाइए–ये सूखकर एक मज़बूत परत बन जाता है.

टचवुड लिक्विड है, इसलिए ब्रश से इसे लगाया जा सकता है. और ये काम कोई भी पेन्टर आसानी से कर सकता है. याद रखिए, दुबारा जब भी आप अपने घर में रंग कराएँ, फ़र्नीचर पर टचवुड ज़रूर आज़माएँ.

चूँकि ये मज़बूत गाढ़ी परत में बदल जाता है, इसलिए मामूली पॉलिश के मुक़ाबले कुछ देरी से सूखता है, फिर भी इसके सूखने में, खिड़की और दरवाज़ों पर किए पेन्ट से ज़्यादा वक़्त नहीं लगता.

और फिर टचवुड की सुरक्षा बारीक से बारीक नक्काशी में फैल जाती है–हर छुपे कोने तक पहुँच जाती है.

वैसे टचवुड की क़ीमत मामूली पॉलिश से कुछ ज़्यादा जरूर है, लेकिन आपके लकड़ी के सुन्दर फ़र्नीचर को ये जितना सुरक्षित रखता है उससे क़ीमत वसूल हो जाती है. पॉलिश इतने लम्बे अर्से तक बचाव नहीं कर सकती.

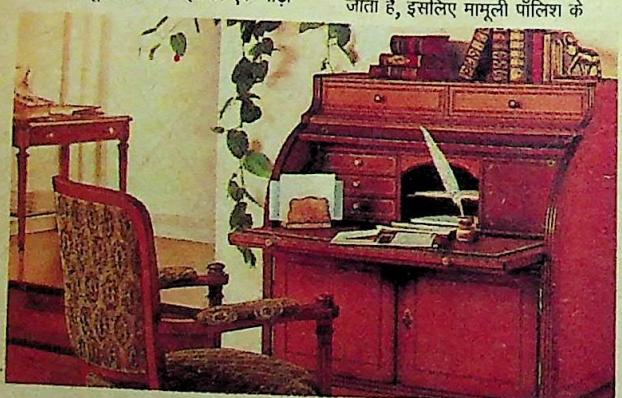

ग्लॉसी (चमकीली) या मैट (बिना चमकवाली) फ़िनिश

टचवुड दो तरह के फ़िनिश में मिलता है ग्लॉसी और मैट, जो मामूली पॉलिश में नहीं मिलता और फिर आप उसमें अपनी पसंद के रंग मिलाकर लकड़ी को तीन तरह के विशेष रूप दे सकते हैं.

जितना चाहें–आसानी से ले आइए

एशियन पेन्ट्स–विक्रेता की किसी भी दूकान से आप टचवुड ले सकते हैं: बस दूकान में आइए और ले जाइए.

टचवुड–बस एक बार के इस्तेमाल से ही आप जान जाएंगे कि ये आपके फ़र्नीचर की सुन्दरता किस ख़ूबी से बचाए रखता है.

TOUCH WOOD

एक बार लगे–फ़र्नीचर बरसों नया रहे.

एशियन पेन्ट्स

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठकों की समस्याएं

मैं एक 24 वर्षीया विवाहिता हूं. मेरे एक लड़का है. समस्या यह है कि मेरी जेठानी के कोई बच्चा नहीं है. वह मुझ से चिढ़ने के कारण मुझे नीचा दिखाने की कोशिश करती हैं. हम पतिपत्नी के बीच दरार पैदा करना चाहती हैं. सास भी हमारे विरुद्ध हैं, वह मेरी गोद मेरी जेठानी को मेरे पति के करीब लाना चाहती हैं. क्या करूं?

कई बार कुछ स्त्रियां बच्चा न पैदा होने की स्थिति में कुछ गलत हरकत कर जाती हैं. आप जेठानी को यही समझाएं कि वह भी आप के लड़के की मां के समान हैं. कहीं ऐसा तो नहीं कि अनजाने में आप अपने लड़के से जेठानी का मेलजोल न पसंद करती हों, तब जेठानी चिढ़ जाती हों. आप स्वयं को टटोलकर, धैर्य से सब स्थिति को प्यार, दुलार से सुलझा सकती हैं. बात तब भी न बने तो अलग होने के विषय में सोच सकती हैं.

मैं एम.ए. प्रथम वर्ष की छात्रा हूं. मेरी सगाई हो चुकी है. 15 वर्ष की अवस्था में एक डाक्टर ने मेरे साथ बलात्कार किया था. क्या शादी के बाद मेरे पति को इस का पता चल जाएगा, क्या करूं?

आप के पति को कुछ पता नहीं चलेगा. कभी गलती से बताने की कोशिश भी न करिए, वरना जिंदगी कड़वाहट से भर जाएगी. आप के साथ जो हादसा हुआ, उसे भूल जाइए और आगे वाले भविष्य को संजो कर रखिए.

मैं मांबाप का इकलौता विवाहित पुत्र हूं. समस्या यह है कि मां हर समय पैसा जोड़ने के चक्कर में मेरी जरूरतों को भी भुला देती है. घर के खर्च को मेरे ऊपर डाल दिया है जबकि पिताजी की पेंशन भी अच्छी है. मैं होनेवाले बच्चों की जरूरतें भी पूरी नहीं कर पाता. पिताजी ने समझाया, पर मां के आगे वह भी लाचार हैं. दिल करता है, अलग हो जाऊं, पर नहीं हो पाता. क्या करूं?

आप की मां के मन में कहीं भविष्य को ले कर चिंता है और निश्चित रूप से वह जोड़ भी आप के लिए रही है. पर यह सब कुछ ज्यादा करने से कंजूस बन कर रह गई है. आप प्यारमनुहार से समझाएं. न मानें तो अलग रहने की धमकी ही दें, धमकी मात्र से ही वह ठीक हो जाएगी क्योंकि अकेले पुत्र के अलग होने की यह कल्पना भी नहीं कर सकतीं.

मैं किसी कारणवश बी.ए. प्रथम वर्ष में फेल हो गई. 19 वर्षीया हूं और अभी पढ़ना चाहती हूं. घर वाले शादी की बात कर रहे हैं, पर मैं जीजाजी के दोस्त से शादी करना चाहती हूं. हालांकि मैं यह भी नहीं जानती कि वह मुझे चाहते हैं या नहीं, पर लगता है कि हां कर देंगे. क्या करूं?

आप अपने मांबाप की पसंद से विवाह कर लीजिए. जिस के बारे में आप को कुछ पता नहीं, उस के साथ अपना भविष्य क्यों बांधना चाहती हैं. मांबाप ही आप के लिए ठीक राय देंगे. पढ़ाई आप विवाह के बाद भी जारी रख सकती हैं.

मैं काठमांडू में रहने वाला एक विकलांग व्यक्ति हूं पोलियो के कारण पैरों से लाचार हूं. 'सरिता' के एक लेख में पढ़ा था कि विकलांगों को तिपहिया साइकिल मिल सकती है. मैं ने काठमांडू में कभी ऐसी साइकिल नहीं देखी. क्या करूं, कहां से इसे प्राप्त करूं?

निस्संदेह तिपहिया साइकिल से आप को बहुत लाभ पहुंच सकता है. इसे प्राप्त करने के लिए आप भारत सरकार को पत्र लिख सकते हैं. दिल्ली के एक विकलांग केंद्र में इस पते पर भी आप पत्रव्यवहार कर सकते हैं.—विकलांग केंद्र तानसेन मार्ग, बंगाली मार्किट, नई दिल्ली. वैसे साइकिल बनाने वाले इसे आसानी से बना सकते हैं. नेपाल की तराई में इन को बनाने वाले अवश्य होंगे.

मैं 14 वर्षीया किशोरी हूं. मुझे अभी तक मासिक धर्म नहीं हुआ, जबकि सफेद पानी आता है, 11-12 वर्ष की आयु में बलात्कार का शिकार हुई थी. क्या इसी कारण तो यह सब नहीं है?

बलात्कार की बात भूल जाइए, उस से कुछ नहीं होता है. कभीकभी मासिक धर्म कुछ देर से, 15-16 वर्ष की आयु में भी होता है. सफेद स्राव के लिए किसी डाक्टर की राय ले लीजिए. स्थानीय सफाई की ओर ध्यान देना जरूरी है.

24 वर्षीया सुखी विवाहिता हूं, शादी से पूर्व एक लड़के को दोस्त मान कर उस के पत्र का जवाब दिया था. अब वह लड़का उन पत्रों का दुरुपयोग कर रहा है. मैं अपने सज्जन पति के पास ही रहना चाहती हूं.

लगता है वह लड़का आप को धमका रहा है. आप ने यह नहीं लिखा कि वह आप से मिलता कैसे है. उस से मिलने की भूल कदापि न कीजिए. वह लड़का कुछ नहीं करेगा. पर फिर भी कोई डर हो तो किसी अभिभावक को मध्यस्थ बना कर पति के समक्ष सब बयान करना होगा. यद्यपि यह रास्ता टेढ़ा है, पर आप अपने सद्व्यवहार से पति का हृदय जीत सकती हैं. अभी आप चुप रहिए और लड़के से तनिक भी न मिलें. वह स्वयं ठीक हो जाएगा.

—कंचन ●

पाठकों की व्यक्तिगत, मनोवैज्ञानिक, पारिवारिक, कानूनी आदि समस्याओं के उत्तर इस स्तंभ में दिए जाते हैं. स्वास्थ्य संबंधी उत्तर देना संभव नहीं है. पत्र द्वारा उत्तर नहीं दिए जा सकते. अपनी समस्याएं इस पते पर भेजें : कंचन, सरिता, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-55.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भावना

लेख • अश्विनीकुमार भटनागर

अंशुमन और मयंक-दोनों भाइयों की आयु में केवल एक वर्ष का अंतर था. उन के पिता व्यवसाय करते थे और दोनों भाई पढ़नेलिखने के बाद उन के व्यवसाय में अच्छा हाथ बटाते थे. घर में मां की हुकूमत चलती थी. उस की मरजी के बिना एक पत्ता भी नहीं हिलता था.

जब अंशुमन के विवाह की बात चली तो लड़की के चुनाव का काम पूरी तरह से मां को सौंप दिया गया. उस में किसी को हस्तक्षेप करने का अधिकार नहीं था. मां ने वाराणसी जा कर एक लड़की को पसंद भी कर लिया. शुभा बी.काम.पास थी. पिता बहुत ऊंचे सरकारी पद से सेवानिवृत्त हुए थे. मां की मृत्यु एक वर्ष पहले ही हुई थी. मां को जो गुण लड़की व उस के परिवार में चाहिए थे, वे सब मिल जाने से उस ने विवाह की बात पक्की कर ली.

मां जब लौट कर आ रही थी तो रास्ते में कानपुर में भाई ने रोक लिया. भाई के यहां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की भेंट रत्ना से हुई. वह उस की जी शीला की सहेली थी और उस दिन ही मिलने आ गई थी. वह इतनी सुंदर, ष्ट और सुशील थी कि मां के दिल में घर गई. शुभा के मुकाबले में इतना धनाढ्य वार तो न था.

परंतु उस की शालीनता में इतना र्षण था कि मां एकदम मोहित हो गई. में संघर्ष होने लगा कि क्यों न शुभा के न पर रत्ना को ही ले आए, परंतु शुभा के ने गुण थे, जिन्हें नजरअंदाज करना ठिन था. सब से बड़ी बात यह थी कि वह भा के पिता को वचन दे आई थी.

आखिर में उस ने निश्चय किया कि त्ना को मयंक के लिए मांग लेगी. रत्ना की ड़ी बहन का विवाह हो चुका था. बूढ़े तापिता और भाईभाभी का सीमित रिवार था. उन्हें वह प्रस्ताव पा कर बहुत सन्नता हुई. मां ने उन्हें घर आ कर मयंक र परिवार से मिलने का निमंत्रण दिया, ो सहर्ष स्वीकार कर लिया गया.

इस तरह दोनों भाइयों की शादी एक दिन के अंतर से हो गई. पहले बरात वाराणसी गई और दूसरे दिन कानपुर. दोनों बहुएं ले कर जब दिल्ली लौटे तो हर्ष और उल्लास की कोई सीमा नहीं थी.

जैसा कि आशा थी, शादी में बहुत सारे रिश्तेदार आए थे. रिश्तेदारों का काम ऐसे अवसरों पर केवल मौजमस्ती और टीकाटिप्पणी का ही होता है. घर वालों को उन के हर तरह के नखरे उठाने पड़ते हैं. वे रिश्तेदार भी कोई अपवाद न थे. बड़ी बहू यानी शुभा के यहां उन का स्वागत बहुत

संपन्न घर की बेटी शुभा के सामने अपने मायके की कमजोर स्थिति के कारण रत्ना हीनभावना से ग्रस्त हो गई. लेकिन एकदूसरे के घर जाने पर जहां रत्ना गर्व का एहसास करने लगी वहीं शुभा को अपने अहंकार पर ग्लानि क्यों होने लगी?

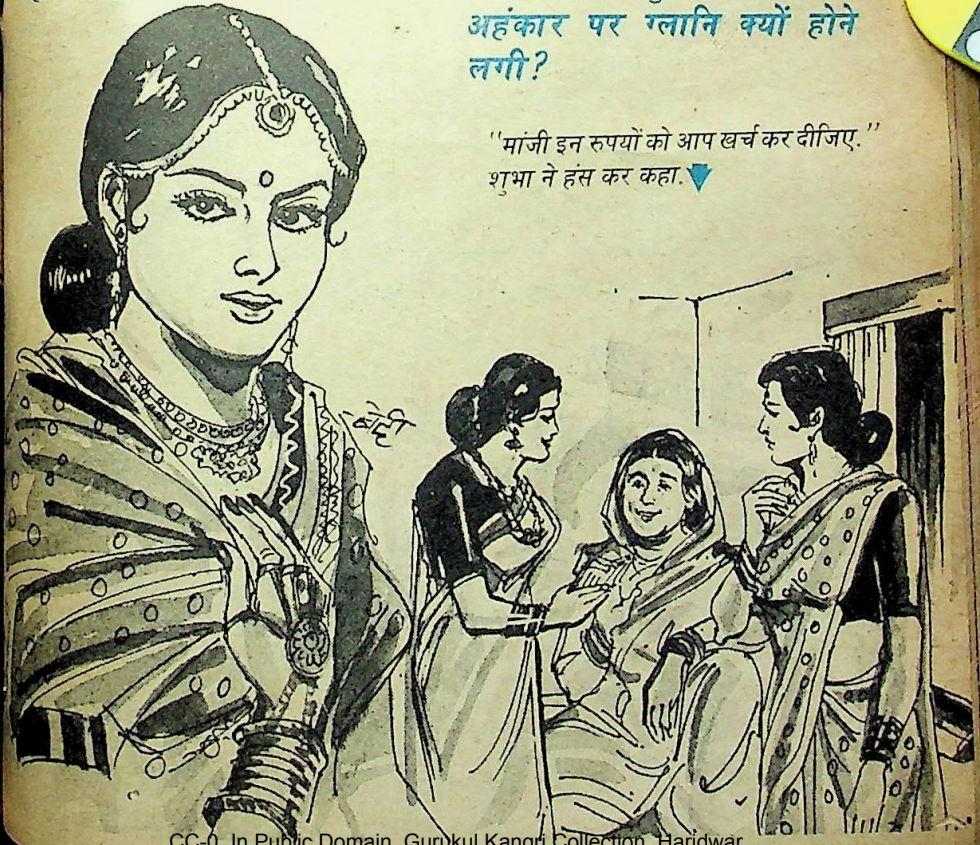

"मांजी इन रुपयों को आप खर्च कर दीजिए." शुभा ने हंस कर कहा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उच्च कोटि का हुआ था. खानेपीने की कोई कमी न थी. खाना भी बड़ा स्वादिष्ट था और भिन्नभिन्न व्यंजनों से भरपूर. सेवाटहल के लिए अनेक लोग हर वक्त उपस्थित रहते थे. पंडाल की सजावट तो बस देखते ही बनती थी. विवाह मंडप तो ऐसा बना था, मानो किसी फिल्म का नकशा ही उतार लिया हो.

दूसरी बहू यानी रत्ना के यहां इतनी दिखावट नहीं थी. खानेपीने के प्रबंध में तो कोई कमी नहीं थी, परंतु पंडाल व मंडप उतना सुंदर न था. फोटोग्राफर भी धड़ाधड़ तसवीरें नहीं ले रहा था. इस तरह अधिकतर रिश्तेदारों की तुलना करकर के अनावश्यक टीकाटिप्पणी का अवसर हाथ आ गया था. बढ़ाचढ़ा कर, मिर्चमिसाले लगा कर, रत्ना के घर वालों पर छींटे कस रहे थे. अवसर मिलने पर अपमान करने से भी नहीं चूकते थे.

बात तो कभी न कभी उड़ कर दूर तक पहुंच ही जाती है. फिर शुभा जो एक दिन की वधू थी, बराती भी थी. चापलूसी करने वाले भी कम न थे. बारबार आ कर उस के यहां के स्वागत की प्रशंसा करते थे और रत्ना के यहां के सत्कार की कमी की आलोचना व बुराई करते थे. सुनसुन कर शुभा को न केवल गर्व का अनुभव होता था, बल्कि उस के मन में एक अहंकार की भावना भी पनपने लगी थी.

रत्ना के मातापिता और भाईभाभी तो उन अलोचनाओं को लड़की वाले होने के नाते सहन कर गए, पर रत्ना की आंखों में आंसू आ गए. वह यह सोचने पर विवश हो गई कि कहीं वह शादी जीवन की सब से बड़ी गलती तो नहीं है? घर वालों का अपमान उसे खलने लगा. पर वह कर भी क्या सकती थी? भविष्य में उस के लिए क्या है, यह तो आने वाला समय ही बताएगा.

घर पहुंच कर दोनों बहुओं का एक सा स्वागत व सम्मान हुआ. इस पर भी रिश्तेदार कहीं न कहीं छींटे कस ही देते थे.

पांव पड़ाई की रस्म में जब शुभा ने अपना बटुआ खोला तो वह रुपयों से लबालब भरा हुआ था. उधर रत्ना का बटुआ कुछ हलका साबित हुआ. जैसे ही हंसी के फौहारे छूटे, रत्ना को अपने ऊपर नियंत्रण रखना बड़ा कठिन हो गया.

इस समय मां ने आगे आ कर अपने सब संबंधियों को डांटना शुरू कर दिया.

"अरे, शर्म नहीं आती इस तरह कीचड़ उछालते हुए. मेहमानों की तरह आए हो तो उसी तरह रहो. मैं अपनी बहुओं को चुनचुन कर लाई हूं. मैं किसी को हंसी नहीं उड़ाने दूंगी. मेरे बेटों की शादियां इन लड़कियों से हुई हैं, न कि इन के परिवार या इज्जतओहदे से. इन बेटियों का अपमान मेरा अपमान है. और जो मेरा अपमान करना चाहता है, बेहतर होगा कि वह इस घर से तुरंत अपना बोरियाबिस्तर बांध ले."

यह फटकार सुन कर एकदम सन्नाटा छा गया. सब के मुंह पर ताले लग गए. धीरेधीरे एकएक कर के सारे मेहमान खिसकने लगे और शाम तक सारा घर खाली हो गया. केवल नजदीक के रिश्तेदार रह गए. वे भी दूसरे दिन चले गए.

मां ने रत्ना को छाती से लगाते हुए कहा, "मेरे रहते तेरी तरफ कोई टेढ़ी आंख भी नहीं उठा सकता. एकदम चिंता मत कर. इतना याद रखना, मुझे केवल हंसते चेहरे ही अच्छे लगते हैं."

रत्ना के मुख पर मुसकान खेल गई. उस ने समझ लिया कि वह सही घर में आई है. धीरेधीरे घर में सब कुछ सामान्य हो गया.

भैया दूज का त्योहार आने से बहुत पहले मां ने बहुओं को हिदायत दी कि समय से अपने भाइयों को टीका भेज दो. बाद में पहुंचने से उस का कोई महत्त्व नहीं होता. शुभा और रत्ना के चेहरे खिल गए. असल में उन्हें उस बात का ध्यान भी न था.

भैया दूज के बाद शुभा के भाई ने 101 रुपए का मनीआर्डर भेज दिया. मनीआर्डर पा कर शुभा की प्रसन्नता की सीमा न रही.

सरिता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

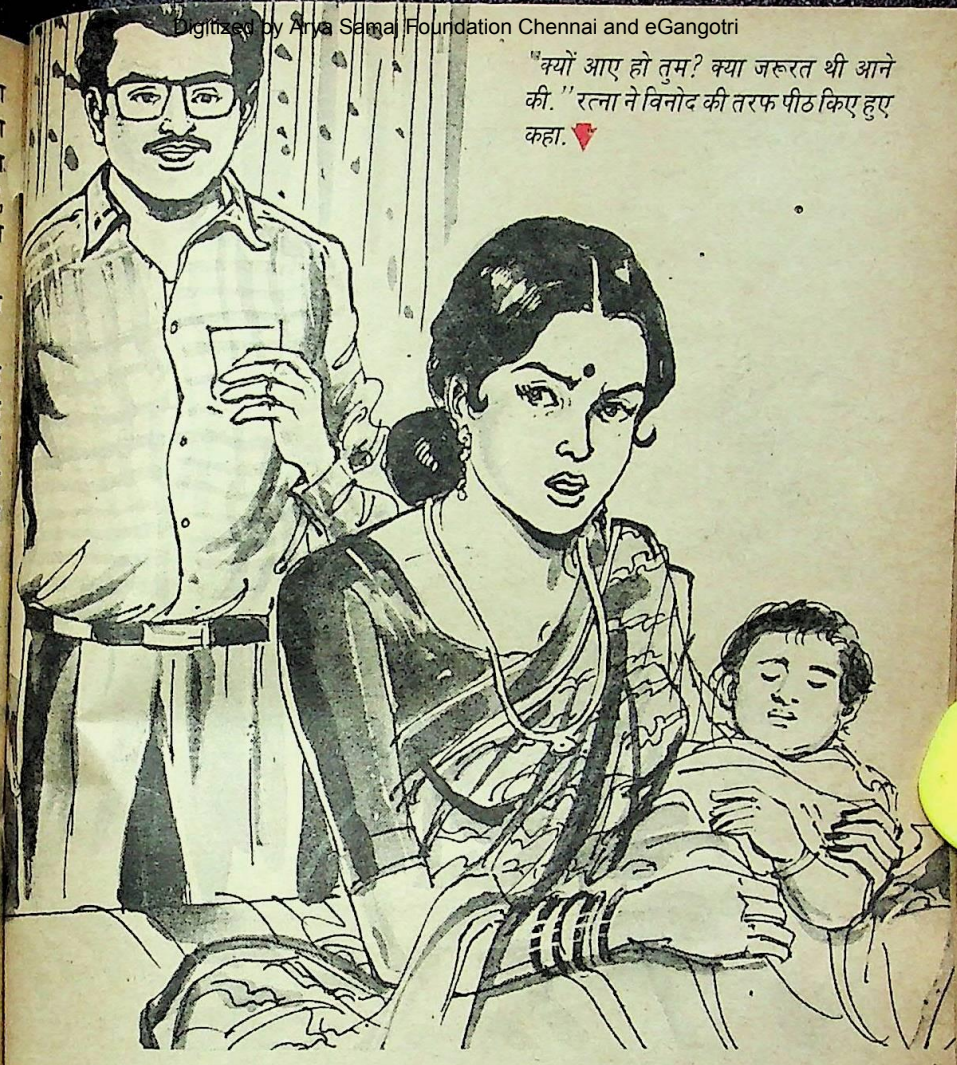

"क्यों आए हो तुम? क्या जरूरत थी आने की." रत्ना ने विनोद की तरफ पीठ किए हुए कहा.

रत्ना बहुत दिनों तक प्रतीक्षा करती रही, पर उस के पास भाई का स्नेहपत्र ही आया. वह उदास हो गई. शुभा के गर्व में रत्ना के प्रति एक व्यंग्य की झलक थी.

मां ने फिर याद दिलाया कि रक्षाबंधन का त्योहार सिर पर है. शुभा और रत्ना ने बड़े चाव से सुंदरसुंदर राखियां खरीदीं और पत्र लिखने बैठ गईं.

मां ने बताया था कि एक बार उस की राखी मामा को देर से मिली थी तो उस ने वापस कर दी थी. उस राखी का क्या मूल्य, जो समय पर न मिले? शुभा के भाई ने तुरंत फिर 101 रुपए का मनीआर्डर भेज दिया. शुभा की छाती गर्व से फूल गई.

शुभा ने रुपए सास के हाथों में रखते हुए कहा, "मांजी, इन रुपयों की मिठाई मंगवा दीजिए."

मां ने उत्तर दिया, "मिठाई मंगाना मेरा काम है. ये रुपए तू अपने पास रख. तेरे भाई ने तुझे भेजे हैं."

"फिर भी," शुभा ने हसंते हुए कहा, "मांजी, इन रुपयों की मिठाई आनी ही चाहिए."

"हां, हां, आ जाएगी, रत्ना के रुपए भी आ जाने दे. तब साथ ही मंगा दूंगी, आज तो तुम मेरे भाई की तरफ से मिठाई खाओ."

शुभा हंस पड़ी.

रत्ना चुप थी. एक सप्ताह से ऊपर हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चुका था. न तो भाई का पत्र था न मनीआर्डर. हीन भावना उसे डसने लगी. जब व्यस्त भाई का पत्र आया तो उस की पढ़ने तक की इच्छा नहीं हुई. वह हकारत सी महसूस करने लगी.

'क्या उस का भाई इतना निर्धन हो गया है कि बहन को 5 रुपए भी नहीं भेज सकता?' उस ने मन ही मन जैसे खुद को धिक्कारा, 'क्या उसे चिट्ठी लिख कर अपनी व्यथा बता दे? नहीं, यह तो और भी अपमान की बात होगी,' वह भाई के साथ भाभी को भी कोसने लगी, 'अवश्य भाभी ने मना किया होगा, मेरा भाई तो ऐसा नहीं है.'

हालांकि सास ने कभी इस बारे में कुछ नहीं कहा था, पर रत्ना मन ही में अपनी हीनभावना को अपराध भावना में बदलने लगी. शुभा ने कभी खुल्लमखुल्ला अपने गर्व व अहंकार का प्रदर्शन नहीं किया था, पर उस के हर हावभाव से वे टपकते थे. आने वाले हर तीजत्योहार पर शुभा के भाई का नियमित रूप से मनीआर्डर पहुंच जाता था.

पिता की तबीयत कुछ समय से अच्छी नहीं रहती थी. इस कारण शुभा ने उन्हें देखने जाने की इच्छा प्रकट की. उस समय अंशुमन व्यवसाय के सिलसिले में बंबई गया हुआ था. मां ने जाने की अनुमति तो दे दी, पर वह उसे अकेला भेजने में हिचकिचा रही थीं.

जाने क्या सूझी, शुभा ने कह दिया, "मैं रत्ना को साथ ले जाती हूं."

"अरे, रत्ना क्या करेगी?"

"क्यों? जैसे वह मेरा घर है, वैसे ही रत्ना का भी. हम दोनों साथ जाएंगी और साथ ही आ जाएंगी."

"ठीक है, ले जा. इस का भी मन बहल जाएगा. पर पहले रत्ना से पूछ तो ले."

"आप हां कह दीजिए, रत्ना को तो मैं मना लूंगी," शुभा ने उत्साह से कहा.

शुभा, रत्ना को अपने घर का वैभव दिखाना चाहती थी. उस से अच्छा और कौन सा अवसर हो सकता था.

रत्ना यह सोच कर जाने को तैयार हो गई कि रास्ते में कानपुर का स्टेशन पड़ेगा. तार डाल देने से कोई न कोई तो स्टेशन पर मिलने आएगा ही. जब कोई भी स्टेशन पर नहीं आया तो रत्ना का दिल टूट गया. आंखों में आंसू आ गए. क्या उस का मायके से एकदम रिश्ता टूट गया? यह तो बाद में पता लगा कि तार गाड़ी के चले जाने के बाद मिला था. पर रत्ना के मन में संदेह पैदा हो गया था. यह भी तो हो सकता था कि तार मिल गया हो, पर...

रत्ना और शुभा जब वाराणसी पहुंचे तो स्टेशन पर कोई लेने नहीं आया था. पिता तो रोगी थे और भाभी व भाई दोनों नौकरी पर जाते थे. शुभा का मुंह लटक गया.

"कोई न कोई अवश्य आता. लगता है, भैया को छुट्टी नहीं मिली. भाभी को भी शायद छुट्टी मिलने में कठिनाई हुई होगी." शुभा ने रत्ना से अधिक अपनेआप को समझाते हुए कहा, "कामकाजी हैं न, कोई हमारी तरह निठल्ले थोड़ा ही हैं. कोई बात नहीं, रास्ता तो मुझे मालूम है, पहुंच जाएंगे."

रत्ना हंस न सकी. वह अजीब सी राहत महसूस कर रही थी. अभी तक तो अपने भाई को ही कोस रही थी. शुभा भी उसी नाव में सवार हो गई थी.

घर पर शुभा के पिता के सिवा कोई न था. उठने का प्रयत्न किया, पर शुभा ने उन्हें उठने से मना कर दिया. उन्होंने रत्ना को देख कर कहा, "अच्छा, रत्ना भी आई है. चलो अच्छा हुआ."

रत्ना प्रणाम कर के चुपचाप पास में एक कुरसी पर बैठ गई. शुभा की आंखें उस सूने घर में कुछ तलाश कर रही थीं. कुछ समय पहले ही तो उसे वह सब अपना लगता था, पर अब जाने क्यों अजनबी सा लग रहा था. इस घर में उस में और रत्ना में क्या अंतर था? कुछ भी तो नहीं. पिता ने कहा, "तेरी भाभी कह गई है कि नाश्ता अलमारी में रखा है, चाय बना लेना. दूध फ्रिज में है. सब्जी और दाल बनी है. गरमगरम रोटियां सेंक लेना. शाम को तो वह आ ही जाएगी."

सरिता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने लाडलों दुलारों के लिए ही तो है

अत्यंत कोमल, मुलायम टाइनीकेयर नैपीज़ !

Tinycare® NAPPIES

- सोखने की ज़्यादा क्षमता
- आरोग्यप्रद
- आरामदायक

आपकी सन्तान. आपकी आखों का तारा,
खुशियों का संसार है. दिनरात उसकी देखभाल,
उस पर प्यार की बौछार ही तो आप करती है.

टाइनीकेयर, क्योंकि आपको है उनसे बेहद प्यार,
क्योंकि आपका बच्चा है आपका संसार.
उसे आप हमेशा सर्वोत्तम ही देना चाहेंगे.

टाइनीकेयर...कितना मुलायम है इसका स्पर्श,
आपका प्यार सा कोमल, आपके लाडले की
नर्म त्वचा के लिए उत्तम. टाइनीकेयर... बच्चे को खुश
और आराम से रखे. दोहरी परत और ठीक फिटिंगवाले
नैपीज़ के आकार. १००% सूती. टाइनीकेयर अनेक
डिज़ाइनों और आकारों में उपलब्ध. नवजात शिशु से
घुटनों के बल चलनेवाले बच्चों के लिए अलग अलग
साइज़ों में इन्हें बदलना भी आसान.

टाइनीकेयर डिसपोज़ेबल भी उपलब्ध है.

सुचिता इंडस्ट्रीज़ का उत्कृष्ट उत्पादन
बंगलोर - ५६० ००२.

टाइनीकेयर नैपीज़– माँ-बच्चों दोनों की खुशी.

Dattaram Sl·Hin·1/88

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरे सारे डाई एक तरफ़
गोदरेज ख़ुद-ब-ख़ुद फ़ैलने वाला हेयर डाई
दूसरी तरफ़ फिर भी गोदरेज हेयर डाई
इस्तेमाल करनेवाले ज़्यादा ही होंगे !

३ ख़ास कारणों से :

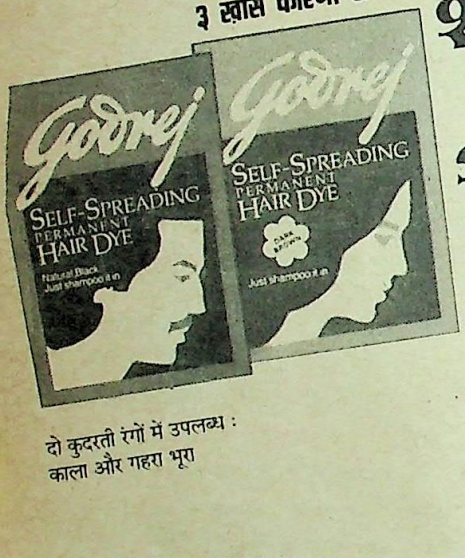

दो कुदरती रंगों में उपलब्ध :
काला और गहरा भूरा

१ गोदरेज ख़ुद-ब-ख़ुद फैलने वाला हेयर डाई बालों को कुदरती रंग और छवि देता है. इसमें कन्डीशनर भी है जो बालों को नर्म-मुलायम बनाए रखता है. **बाल इतने स्वाभाविक काले हो जाते हैं कि कोई जान ही न सके, जब तक आप ख़ुद न बताएँ.**

२ गोदरेज ख़ुद-ब-ख़ुद फैलने वाला हेयर डाई इस्तेमाल में आसान और सुविधाजनक है जबकि अन्य हेयर डाई में यह विशेषता नहीं **जी हां, आसान इतना बालों में शैम्पू करने जितनी.**

३ आप गोदरेज ख़ुद-ब-ख़ुद फैलने वाले हेयर डाई की क्वालिटी पर भरोसा कर सकते हैं. क्योंकि यह ख़ास तौर से आपके बालों और त्वचा की हिफाजत के लिए बनाया गया है. **पूर्ण-सुरक्षा – यही गोदरेज का वादा है.**

गोदरेज® ख़ुद-ब-ख़ुद फैलने वाला परमानेंट हेयर डाई

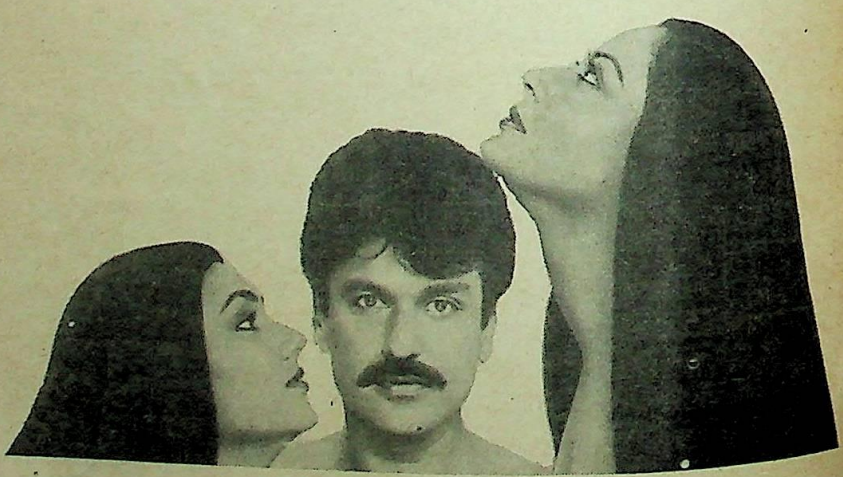

CLARION/B/GS/50/173 HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शुभा ने रत्ना के आगे अपने मायके की जो तसवीर खींची थी, वह उस का कुछ भी मेल नहीं पा रही थी. शायद उस का घमंड और गर्व बेमानी था.

"रत्ना, तुम बैठो. मैं चाय बना कर लाती हूं."

"नहीं, नहीं, मैं भी चलती हूं." रत्ना को अकेले बैठने में जाने क्यों डर लगा था.

शाम को शुभा की भाभी आई और आधे घंटे बाद भाई आया. शुभा को प्रेम से गले लगाया. औपचारिक बातें कीं. रत्ना को देख कर दोनों चौंके, पर आत्मीयता का कोई शब्द नहीं निकला मुंह से. शुभा को महसूस हुआ कि शायद रत्ना को साथ ला कर उस ने भूल कर दी. उस की मौजूदगी में घर में कोई सहज नहीं हो पा रहा था. स्थिति काफी कठिन थी.

उन हालात में शुभा दो दिन ही रही. खाली घर में उस का मन उखड़ रहा था. भाईभाभी ने न तो छुट्टी ली और न ही कोई रुकने का संकेत ही दिया. जब उस ने वापस जाने को कहा तो किसी ने रोकने का प्रयत्न भी नहीं किया.

जब दोनों वापस ससुराल लौटीं तो शुभा का अहंकार चूरचूर हो चुका था. वह रत्ना से आंखें नहीं मिला पा रही थी. चलते समय भाभी ने शुभा को 21 रुपए पकड़ा दिए थे. भाई के इशारा करने पर वह अंदर गई और 11 रुपए ला कर रत्ना को भी दिए. रत्ना ने बहुत इनकार किया, पर बहुत जोर देने पर उस ने 5 रुपए रख लिए.

वह औपचारिकता जिस में प्रेम नाममात्र को भी न था, उसे कांटे की तरह चुभ रही थी.

इस घटना को कई महीने हो चुके थे.

अचानक एक संध्या को दरवाजे पर घंटी बजी. मां ने जा कर दरवाजा खोला. दोनों बहुएं अपनेअपने कमरों में थी.

"आओ, आओ, अचानक कैसे? कोई खबर भी नहीं?" मां ने कितने ही प्रश्न एकसाथ कर डाले. फिर पुकारा, "अरे रत्ना, देख तो कौन आया है?"

बहाना

कितने जुल्मों ने सींचा होगा
ये आंसुओं का चमन,
तेरा जाना तो इन के बहने का
एक बहाना बन गया.

—पद्मनाभ पांडेय

रत्ना और शुभा दोनों एकसाथ ड्राइंगरूप में आ गईं. रत्ना एकदम भौचक्की सी खड़ी रह गई थी. सामने उस का भाई विनोद खड़ा था. शिकायतों का अंबार दिल में उमड़ पड़ा, पर होंठों पर नहीं आया. आगे बढ़ कर विनोद ने रत्ना को गले लगा लिया और तब वह रो पड़ी.

"ले, कैसी पगली है? भाई आया है तो खुश होना चाहिए. तू तो रोने लगी," मां ने स्नेह की झिड़की दी.

रत्ना ने आंसू पोंछते हुए पूछा, "भाभी कहां है? सामान कहां है?"

विनोद ने हंस कर कहा, "दफ्तर के काम से आया हूं. खबर करने का समय नहीं मिला. होटल में ठहरा हूं."

"कितने दिन रहोगे?"

"बस, कल ही चला जाऊंगा."

"तो यहां खाना खा कर जाना," मां ने बीच में ही कहा, "शुभा बेटी, जाओ, भाई के लिए चायनाश्ता लाओ."

"नहीं, मांजी, मैं नाश्ता कर के चला हूं."

"अब यह तो बहन के पास आने की सजा है. भुगतनी ही पड़ेगी."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विनोद हंस कर चुप हो गया. कुछ देर बाद उन्हें एकांत में बातें करने का अवसर देने के लिए मां उठ कर अंदर चली गईं.

"भाई, मैं बहुत नाराज हूं," रत्ना ने रूठे स्वर में कहा.

विनोद ने हंस कर कहा, "गुस्से में तो सब फूल कर कुप्पा हो जाते हैं. चल, इस तरह तेरी सेहत तो बनेगी. हां, इतनी जल्दी में चला कि कुछ ला नहीं सका. बता तेरी सास को क्या पसंद है. अभी बाजार से ले आऊंगा."

"अब बाजार जाने की जरूरत नहीं है," रत्ना ने तुनक कर कहा, "यह सब पहले सोचना चाहिए. जाते हुए मांजी को रुपए पकड़ा देना."

"कितने दूं?"

रत्ना का क्रोध उबल पड़ा, "जितनी अपनी हैसियत समझते हो इतने त्योहार आए, कभी तो याद किया होता."

"क्यों?" भाई ने भोलेपन से कहा, "क्या मैं चिट्ठी नहीं लिखता था?"

"चिट्ठी!" रत्ना चिढ़ गई.

भाई ने अचानक चर्चा बदलते हुए कहा, "तेरी भाभी ने कहा है कि रत्ना को साथ ले आना. चलेगी न?"

इतने प्यार से कही गई बात से रत्ना की आंखों में फिर आंसू आ गए.

शुभा ने चायनाश्ता सामने रखते हुए शरारत से कहा, "यह क्या, फिर रोने लगी? अरे, झगड़ा बाद में कर लेना. अभी तो प्यार से भाई को नाश्ता खिला. देख, पकौड़ियां ठंडी न हो जाएं."

शुभा जाने लगी तो रत्ना ने हाथ पकड़ कर बैठा लिया.

"भैया घर चलने को कह रहे हैं," रत्ना ने शुभा से कहा.

"जाओ, मांजी मना नहीं करेंगी."

"तुम भी चलो न साथ में. अच्छा लगेगा," रत्ना ने प्रसन्न हो कर कहा.

शुभा ने हलके व्यंग्य से उत्तर दिया, "पहले भैया से पूछ तो लो?"

रत्ना के भाई ने कहा, "जिस भाई के घर जाने में पहले पूछना पड़ता हो, वह क्या बहन का घर होता है?"

सुन कर शुभा स्तब्ध रह गई. एक त्योहार पर भी पैसा न भेजने से उस ने रत्ना के भाई की कल्पना कुछ और ही की थी. वह तो पूरा दार्शनिक निकला.

रत्ना का मस्तक गर्व से ऊंचा हो गया.

मां ने इस बार भी दोनों को साथ जाने की आज्ञा दे दी.

घर की देहरी पर देखते ही रत्ना की भाभी गायत्री ने दोनों लड़कियों को एकसाथ बाहों में भर कर चिपटा लिया. चेहरे पर न शिकन थी, न आश्चर्य कि साथ में शुभा कहां से आ टपकी? जितने दिन रहे गायत्री ने रत्ना से शुभा का अधिक ध्यान रखा. एक पल भी उसे अकेलापन या अजनबीपन महसूस नहीं होने दिया. शुभा को लगा, मानो वह रत्ना के नहीं, अपने ही मायके आई हो.

जब ससुराल जाने को कहा तो एक दिन विनोद के कहने से रुकना पड़ा तो दूसरे दिन गायत्री के कहने से. जाते समय गायत्री ने दोनों को एक ही तरह की दो साड़ियां दीं.

"देखो, अच्छी है न? तुम्हारे भाई दफ्तर के काम से हैदराबाद गए थे. वहां पर पोचमपल्ली की साड़ियां बहुत मशहूर हैं. दो ले आए थे."

हर्ष से साड़ी का निरीक्षण करते हुए अचानक शुभा ठहर गई. बोली, "दो साड़ियां लाए थे? तब तो भाभी एक आप की है और एक रत्ना की. आप अपनी साड़ी रख लीजिए, मुझे क्यों दे रही हैं."

प्यार से कंधा थपथपाते हुए गायत्री ने कहा, "मेरा क्या है, फिर आ जाएगी. यह तो हैदराबाद जाते ही रहते हैं. फिर बेटी का अधिकार तो पहले होता है. मैं क्या तुम से बढ़ कर हूं?"

शुभा की हिचकिचाहट देख कर रत्ना हंस रही थी. बोली, "बात यह है भाभी, शुभा यह सोच रही है कि एक ही घर में दोनों एक तरह की साड़ियां पहनेंगी तो क्या अच्छा लगेगा?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

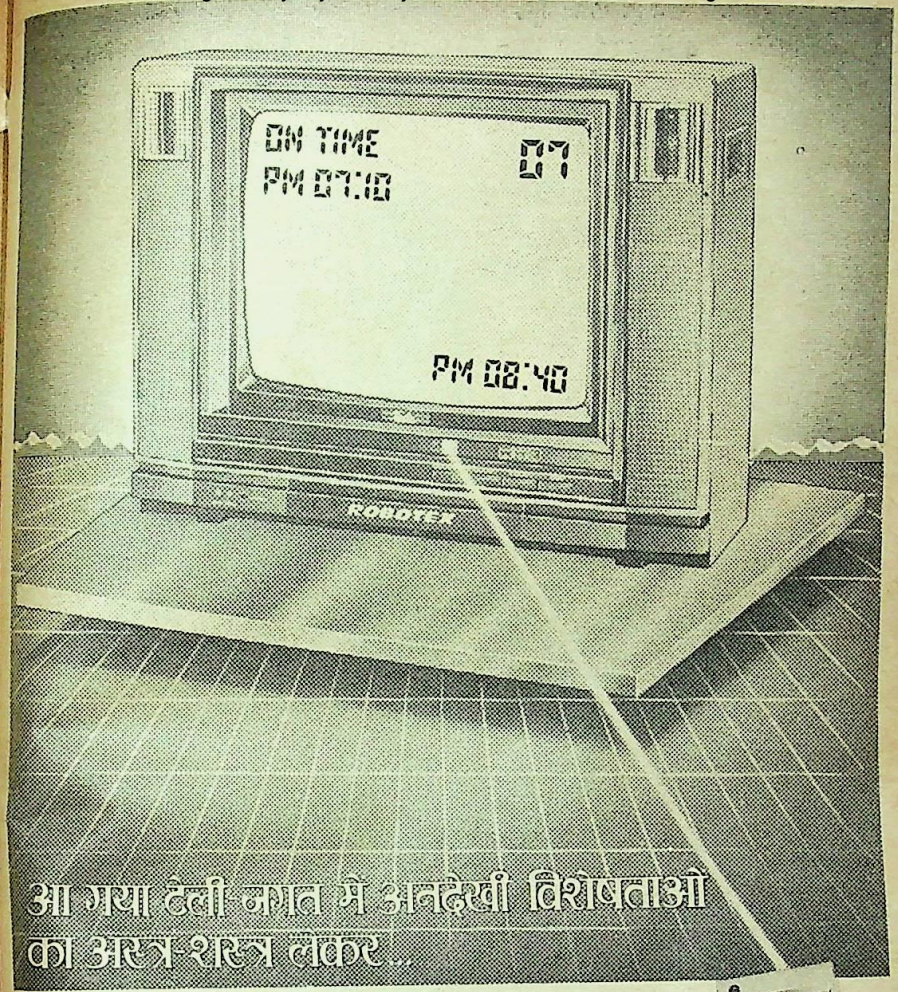

आ गया टेली-जगत में अनदेखी विशेषताओं का अस्त्र-शस्त्र लेकर...

टेली-तकनीक की नयी सीमाओं को लांघता, आ पहुंचा है रोबोटेक्स – एक ऐसा कलर टीवी जो उन्नत विशिष्टताओं के शस्त्रागार की ताकत पर टेली-जगत में अपना विजय-पताका फहरा रहा है।

रोबोटेक्स... तकनीकी जादूगरी और नये रूप-ओ-अंदाज़ का बेजोड़ समन्वय जिसे आप, एक 28 बटन वाले रिमोट कंट्रोल यंत्र के ज़रिये, दूर बैठे, उंगली मात्र के स्पर्श से जागृत कर सकते हैं.

- अपने आप चालू व बंद होने की सुविधा ताकि आप अपने पसंदीदा कार्यक्रम देखना न भूलें.
- स्क्रीन पर सुबह-शाम का वक्त दर्शाने वाला विशेष डिजिटल घड़ी.
- स्क्रीन पर 6 रंगों में 11 टीवी कार्यों का डिसप्ले – जैसे ट्यूनिंग की बारीकी, चालू व बंद होने का समय, तथा आवाज़, चमक, रंग-संतुलन व कॉन्ट्रास्ट लैवल आदि.
- स्लीप-टाइमर सुविधा, जिस से, अगर आप चाहें तो टीवी खुद-ब-खुद 90, 80, 70, 60, 50, 40, 30, 20, या 10 मिनट के बाद बंद हो सकता है।
- अती-आधुनिक, 28 निर्देशों वाला रिमोट-नियंत्रण यंत्र जिस से टीवी आपके इशारों पर चले.
- दो-तर्फ़ा डबल स्पीकर.
- पैनल-लॉक, जिसके प्रयोग से आप पूर्व-व्यवस्थित कंट्रोल्स को अनचाहे छेड़-छाड़ से सुरक्षित कर सकते हैं.

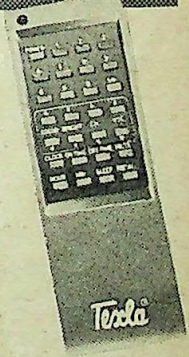

रोबोटेक्स
...कुछ ख़ास, कुछ अलग!

Texla®
सही पसंद

naa/ND/TX-88

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहला हफ्ता

चौथा हफ्ता

देखिए!
सिर्फ़ ६ हफ़्तों में अनोखा गोरापन

छटा हफ्ता

क्लियर•टोन गोरेपन प्लान का कमाल

आप अक्सर अपने सजीले सलोने प्राकृतिक रंग रूप की कल्पना करते हैं. क्लियर•टोन गोरेपन की क्रीम आपकी त्वचा में नैसर्गिक निखार लाकर आपकी कल्पना को साकार करती है.

दिन मे दो बार हल्के-हल्के क्लियर•टोन लगाइये. इसकी नर्म क्रीम आपकी त्वचा में जल्द ही समा जाएगी. रह जाएगी सिर्फ़ इसकी भीनी भीनी फ्रेंच सुगन्ध. बस इसी समय इसका चौतरफा असर भी शुरु हो जाएगा.

एक अनोखा गोरेपन का तत्व (जो सिर्फ़ इसी क्रीम में है) आपके रोम-रोम में जादू उभारकर आपकी त्वचा को नैसर्गिक सुन्दरता प्रदान करेगा.

एक विशेष सन-स्क्रीन जो दिन भर न सिर्फ़ आपकी त्वचा को सूरज की तपती किरणों से बचायेगी वरन् आपकी त्वचा को काली पड़ने से भी रोकेगी.

भरपूर माइश्चराइज़र जो आपकी त्वचा को तरोताजा बनाकर आप में यौवन की मादकता छलकाएगा.

दाग धब्बे सब खत्म इन चन्द हफ्तो के बाद छः हफ़्ते बाद आप ख़ुद क्लियर•टोन का कमाल महसूस करेंगी... ठीक उसी तरह जैसे भारत की और बहुत सी नारियां पहले से ही महसूस कर रही हैं.

अब तो आपको भी चाहिए न क्लियर•टोन का गोरापन?

daCunha/NICL/93/87 HN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शुभा शरमा गई, नहीं, यह नहीं कहेगी
त हुई?"

इस के बाद शुभा ने चुपचाप साड़ी रख
ी.

जब दोनों गाड़ी में काफी दूर निकल
ई तो शुभा ने स्टेशन से खरीदी चाकलेट
त्ना को पकड़ाते हुए कहा, "सच, आज मुझे
पने ऊपर बड़ी लज्जा आ रही है. हर
ौहार पर औपचारिकता निबाहने के लिए
पए पा कर मुझे कितना अभिमान हो गया
ा. रिश्ता रुपयों से नहीं, भावना से बनता
."

रत्ना ने मुसकरा कर सांत्वना के स्वर
उत्तर दिया, "ऐसा नहीं, शुभा. जीवन में
पए और भावना दोनों का अपनाअपना
थान है. आवश्यकता है दोनों में संतुलन
खने की."

अगले वर्ष शुभा गर्भवती हुई तो दो महीने बाद रत्ना ने भी खुशखबरी दे दी. कुछ ऐसी परंपरा चली आई है कि लड़की पहले बच्चे के लिए अपने मायके चली जाती है. शुभा भी कुछ ऐसा ही सोच रही थी. परंतु अपने मुंह से कैसे कहती? उस के पिता की मृत्यु हो चुकी थी और भाईभाभी से निमंत्रण की आशा नहीं रखती थी.

उधर सास ने अच्छा प्रबंध कर रखा था. दोनों बहुओं की अच्छी तरह देखभाल हो रही थी.

जब शुभा ने पुत्र को जन्म दिया तो घर में प्रसन्नता का माहौल छा गया. भाई को तार द्वारा सूचना दे दी गई. उस ने अपनी और अपनी पत्नी की ओर से बधाई का तार भेज दिया.

कुछ समय बाद शुभा के भाई ने 2,500 रुपए का ड्राफ्ट भेज दिया. स्वयं न आ सकने का खेद प्रकट करते हुए भाई ने लिखा:

"यह उपहार स्वीकार करें. हमारी ओर से बच्चे के कपड़े इत्यादि बनवा दें."

शुभा को रुपए पा कर जहां खुशी हुई, इस बात का दुख भी हुआ कि भाई उस का बच्चा देखने भी नहीं आया. बच्चा इतना सुंदर था कि उस का जी, सब को दिखाने का कर रहा था. विशेषकर भाईभाभी को. उस ने यह सोच कर मन को तसल्ली दी कि शायद छः महीने बाद बुलाएंगे. जो भी हो उस ने यह नहीं सोचा था कि भाई इतने सारे रुपए भेज देगा. यह एक सुखद आश्चर्य था.

सास ने शुभा को ड्राफ्ट पकड़ा कर कहा, "ले, इस रुपए से नन्हेमुन्ने का खाता खोल दे. जब तक मामा बोलना सीखेगा, रुपया दोगुना हो जाएगा."

शुभा ने हंस कर कहा, "नहीं, मांजी. इन रुपयों को आप खर्च कर दीजिए. फिर आप के लिए साड़ी भी खरीदनी है."

सास ने प्यार से कहा, "साड़ी अपने बेटों से लूंगी, तेरे भाई से क्यों लूंगी? रहा मुन्ने का, इस के लिए इस के पास क्या कमी है? साल भर तो इसे कपड़ेबिछौने की जरूरत नहीं, खिलौनों के वैसे ही ढेर लग रहे हैं."

"वह तो ठीक है, मांजी," शुभा ने झिझकते हुए कहा, "पर सुनेंगे तो भाई बुरा मानेंगे. आप ये रुपए रख ही लीजिए."

"तेरे भाई को मैं समझा लूंगी. तू चिंता मत कर."

शुभा को खामोश हो जाना पड़ा.

रत्ना के भाई विनोद और भाभी गायत्री ने कई पत्र डाले थे सास व ससुर को कि रत्ना को जापे के लिए भेज दें. इस विषय में तीव्र इच्छा भी प्रकट की थी. सास ने उत्तर दिया था कि जब शुभा के बच्चा ससुराल में हुआ है तो रत्ना के भी ससुराल में ही होगा. सास के स्पष्ट मना कर देने से उन्हें चुप हो जाना पड़ा. वैसे वे जानते थे कि जितना उत्तम प्रबंध रत्ना के प्रसव के लिए उस के ससुराल में हुआ होगा, वैसा उन के बस का नहीं था. इस बात का संतोष भी था.

रत्ना ने पुत्री को जन्म दिया. वैसे तो क्या अंतर पड़ता है, लड़का हो या लड़की. पर रत्ना को इस बात का मलाल सा हुआ. शुभा के लड़के के बारे में सोच कर उसे लगा कि उसे भी बेटा होता तो कितना अच्छा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

RADEUS/AMP/2-86

मेहमान आते हैं जाते हैं...

लेकिन हमारा दूधवाला हर समय हमारे साथ रहता है.

बीस से अधिक वर्षों से हमारा भरोसेमंद दोस्त.

जी हां, अमूल मिल्क पावडर हमेशा भरोसेमंद दोस्त साबित हुआ है, घर में अमूल हो तो दूध के कम पड़ने का सवाल ही नहीं उठता... फिर चाहे दूध की ज़रूरत दही जमाने, खीर, हलवा, केक, मिल्क शेक, रसगुल्ले, गुलाब जामुन बनाने के लिये हो या फिर एक कप मज़ेदार चाय के लिये.

आपको तो पता है कि दही सही न जमे, पुडिंग ठीक न बने तो घर में छोटे-बड़े सभी नाक-भौं चढाना शुरू कर देते हैं. अमूल मिल्क पावडर हो तो इस चिंता से जान छूट जाती है क्योंकि दूध की क्वालिटी सदा एक जैसी बढ़िया होती है, क्यों न हो अमूल की क्वालिटी पिछले बीस से अधिक वर्षों से एक जैसी बढ़िया रही है.

अमूल
मिल्क पावडर
जैसे घर में ही डेरी

OPERATION FLOOD

वितरक : गुजरात को-ऑपरेटिव मिल्क मार्केटिंग फेडरेशन लिमिटेड, आणंद.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

RADEUS/AMP/2-86

ता. जाने क्यों उस की मुस्कराहट कम हो

शुभा को अच्छा लगा. यह बात तो भाविक थी ही. वह बड़े गर्व व अभिमान अपने बच्चे को देखती थी, पर रत्ना को तन सी होती थी.

अगर कोई सही अर्थों में प्रसन्न था तो सास थी, "इस घर में बस लक्ष्मी की ही मी थी, मेरे भी बेटे हुए और तुम्हारे पिता के भी चार भाई थे. बहन उन्हें भी नहीं . यहां तो जैसे लड़कियों का अकाल ही पड़ गया था."

सास रत्ना को अकसर झिड़क भी देती . वह उस की भावनाओं को समझ रही . रत्ना को सामान्य होने में काफी समय गा था. सास की समझदारी से ही ऐसा संभव हुआ था.

शुभा के बेटा जब छः महीने का हुआ तो फिर से उत्सव मनाया गया. मामामामी को भी निमंत्रण गया. छुट्टी न मिल सकने का रोना रोते हुए भाई ने 1,001 रुपए भेज दिए.

शुभा के मन ने कहा, "भाई तुम स्वयं एक बार आ जाते तो मुझे कितना अच्छा लगता, 'रुपए न भी भेजते तो क्या था?'

उसे लगा कि मायके से संबंध अब केवल रुपए की डोर से बंधा था. उत्सव में सब सब आनंद और उल्लास से झूम रहे थे, शुभा का मन खोयाखोया सा हो रहा था.

सास ने शुभा को रुपए पकड़ाते हुए कहा, "लो, जमा कर मुन्ने के खाते में. मैं ने कहा था न कि जब तक मामा बोलना सीखेगा, रुपया दोगुना हो जाएगा."

उधर जहां रत्ना को पुत्री होने का रंज था, वहां एक और दुख भी सता रहा था. यह कि उस के भाईभाभी को क्या हो गया? कहां तो सूति के लिए आने को बारबार लिख रहे थे और कहां बच्ची होने के बाद केवल बधाई का तार दे कर चुप हो गए. नहीं आ सकते थे तो कम से कम औपचारिकता के लिए कुछ रुपए भेज देते. कौन हजार दो हजार भेजने को

मित्र

मित्र, ऐसा व्यक्ति जो आप के बारे में सब जानता है फिर भी आप को प्यार करता है.

—एल्बर्ट हयूबर्ड

कहता था. सौ पचास ही भेज देते. विनोद व गायत्री के प्रति उस के मन में फिर से क्रोध उमड़ने लगा. उस ने निश्चय कर लिया कि अब वह उन से कभी नहीं बोलेगी.

जब मुन्नी छः महीने की हुई तो फिर से उत्सव मनाया गया. निमंत्रण जाने लगे तो रत्ना ने सास से भाई को निमंत्रण भेजने से रोक दिया.

"पागल हुई है क्या? भामा तो मामा ही है. जाने उन की क्या समस्या है?"

रत्ना चुप हो गई, पर उस का क्रोध बढ़ गया था.

उत्सव का खानापीना हो चुका था, जब दरवाजे पर घंटी बजी. सास ने दरवाजा खोला और देखते ही हर्ष से ऐसे चिल्लाई मानो खोया हुआ बेटा मिल गया हो, "लो, अब आए, रत्ना का तो बुरा हाल हो रहा है. इतनी नाराज है. इतनी नाराज है कि क्या कहूं."

रत्ना के कानों में भी पड़ा, परंतु वह कमरे से बाहर नहीं आई. अब वह विनोद से खूब लड़ेगी. बिलकुल नहीं बोलेगी. साथ ही उस की आंखें गीली होने लगीं. उस ने मुन्नी को उठा कर छाती से चिपका लिया.

"अरे रत्ना, बाहर आओ. देखो तो, कौन आया है?" सास ने पुकारा.

रत्ना ने सुना, पर बाहर नहीं आई.

सास ने विनोद से कहा, "जाओ न, बेटे. तुम ही कमरे में चले जाओ. मुन्नी को सुला रही होगी."

भाई ने कमरे के दरवाजे पर दस्तक दी. रत्ना पर कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई.

विनोद ने प्रवेश किया. रत्ना पीठ किए बैठी थी. विनोद हंस कर बोला, "बहुत नाराज है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रत्ना ने पलट कर देखा. आंसू रुक नहीं पाए.

"देखूं तो मुन्नी को...".

"नहीं दिखाती. क्यों आए हो तुम? क्या जरूरत थी आने की.?" रत्ना का क्रोध फूट पड़ा.

"अरे, अपनी भानजी को देखने के लिए तो सात समुंदर पार कर के भी आना पड़ता तो जरूर आता," विनोद ने मुन्नी के मुंह पर से रत्ना का आंचल हटाते हुए कहा, "चल हट, मामाभानजी के बीच में पड़ने वाली तू कौन होती है?"

"कब जाओगे वापस?" रत्ना ने पूंछा. स्वर में कटुता थी.

"लो, अभी तो आया ही हूं और जाने को पूछने लगी. वैसे हो सकता है 15-20 दिन लग जाएं."

"15-20 दिन, वह क्यों?" रत्ना ने आश्चर्य से पूछा.

"अब तुझे लेने आया हूं. तेरी भाभी ने कहा है कि रत्ना को लाए बिना घर मत आना. अकेले आए तो घर में नहीं घुसने दूंगी." विनोद ने मुन्नी को गोद में लेते हुए कहा, "एकदम बंदरिया जैसी है."

"मामा पर जो गई है," रत्ना ने चिढ़ कर कहा, "क्या 15-20 दिन यहां रहोगे?"

मुसकरा कर भाई ने कहा, "क्यों नहीं, अब बहन का घर होते हुए क्या होटल में ठहरूंगा? और अगर मांजी को समझ आ गई तो हो सकता है जल्दी ही छुटकारा पा लूं."

"और मैं ही नहीं जाऊं तो?"

"अरे, कैसे नहीं जाएगी? कान पकड़ कर ले जाऊंगा," विनोद ने हंसते हुए कहा, "अब अगर तेरी भाभी बिस्तर पर नहीं पड़ी होती तो वह खुद आ कर ले जाती."

"क्या हुआ भाभी को?" रत्ना ने आश्चर्य से पूछा.

"कुछ नहीं, ऐसे ही चोट आ गई."

"बताओ न, क्या हुआ?"

"कुछ विशेष नहीं. पर क्या यहां भाई को खाना खिलाने का रिवाज नहीं है क्या?"

शुभा ने थाली में खाना ले कर आते हुए कहा, "जहां दीदी बहनें हों, वहां तो खुल कर खाने वाला भाई चाहिए."

विनोद हंस पड़ा.

"मांजी तो कह रही थीं कि वहीं पर खाना लगा दूं. पर मैं ने कहा कि नहीं, कमरे में ही ले जाती हूं." शुभा हंस रही थी.

विनोद ने रत्ना को खुश करने के लिए शुभा से कहा, "चलने की तैयारी कर लो. ले जाने के लिए आया हूं."

शुभा ने आश्चर्य से पूछा, "ले जाने के लिए? पहले एक बच्चे को तो संभालो."

विनोद ने हंसते हुए उत्तर दिया, "अरे, बाग में जितने फूल हों, उतना ही अच्छा. तुम्हारी भाभी ने कहा है कि अगर दोनों बहनों को ले कर नहीं आए तो घर से बाहर ही रहना."

शुभा और रत्ना दोनों की आखें नम हो गई थीं. परंतु कारण अलग अलग थे.

रत्ना की जगह शुभा ने ही पूछा, "पर इतने दिन हो गए, कोई खैरखबर क्यों नहीं ली?"

विनोद ने हलकेपन से कहा, "अरे भई, क्या बताऊं, एक स्कूटर दुर्घटना में हम दोनों को चोटें लग गई थीं. मैं तो लगभग ठीक हो गया, पर तुम्हारी भाभी का प्लास्टर उतरने में अभी 10-15 दिन बाकी हैं."

रत्ना ने भाई का कंधा जोर से हिलाते हुए कहा, "और हमें खबर तक नहीं? क्या हम इतने गैर हो गए?"

"अब तुम्हें परेशान करने से कोई फायदा था क्या?"

"भाई, तुम बहुत खराब हो," रत्ना ने आंसू पोंछते हुए कहा, "मैं तो जाने क्याक्या सोच रही थी."

विनोद ने हंसते हुए कहा, "और बहनों का काम ही क्या है. हां, जरा दुर्घटना के कारण हमारा खर्च अधिक..."

इस से पहले कि विनोद कुछ और कहता रत्ना ने अपना हाथ उस के मुंह पर रख दिया. उसे भाई पर जहां गर्व था, अपने ऊपर उतनी ही ग्लानि.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उम्र का मधुमास

थरथराते अधर
कुछ कह न सके
नयनों ने सारा
अनुवाद कर दिया.

उम्र का मधुमास और
वयः संधि का पर्व
क्यों न इठलाता फिर
रूप रस गंधर्व.
शत दल समूह ने
शोखियां सब सह लीं
बौराए भौंरों को
आजाद कर दिया.

पुलकित स्पर्शों से
हृदय बंध खुल गए
बस एक स्मित और
कई आकाश धुल गए.
दुनिया ने निभाई
हमेशा की रीत
छोटी सी बात का
अपवाद कर दिया.

—प्रियदर्शन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सब के मन भाएं पटोला प्रिंट के सलवारकमीज

सलवारकमीज युवतियों की पसंदीदा पोशाक है. फिर पटोला के मनभावन रंगों और डिजाइन के सूती सलवार कमीज हों तो कहना ही क्या. पटोला के सलवारकमीज में सजी आप जिधर से गुजरेंगी लोग आप की पसंद की दाद दिए बिना नहीं रहेंगे.

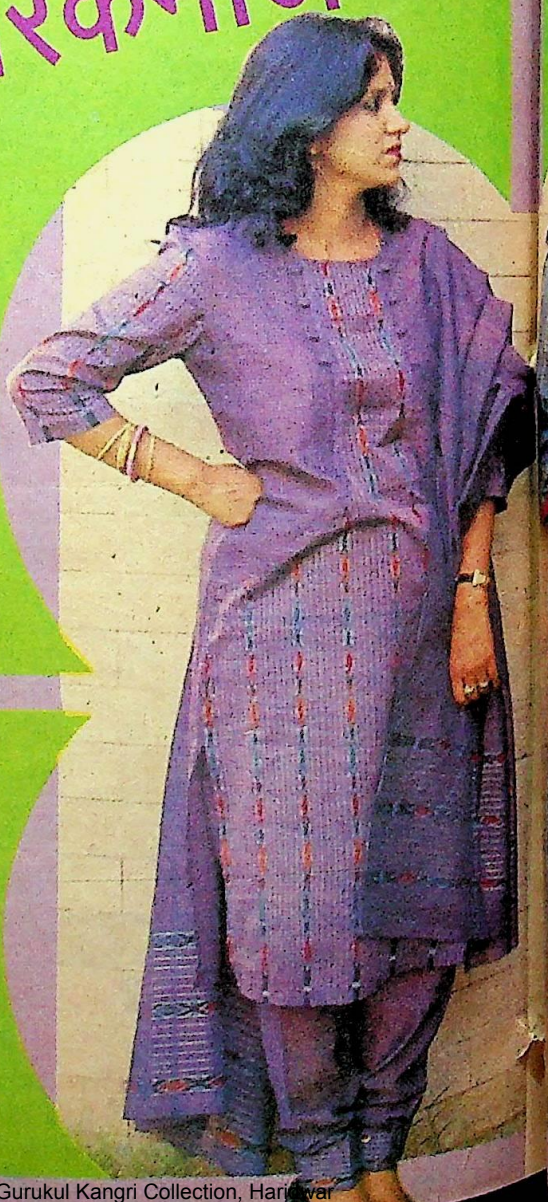

जामनी प्लेन सलवार और कुरते पर पटोला प्रिंट की पतली लाइनें और दोनों ओर का बार्डर वाला दुपट्टा सादगी में भी चारों ओर मदमस्त अदांएं बिखेर रहा है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नीले, लाल, हरे और हलके जामनी रंग की लाइनों वाली कमीज की प्लेन बांहें. लाल और नीली सलवार के साथ बार्डर वाला मैरून दुपट्टा पहन कर आप भी इस नवयुवती की तरह अपने आकर्षक व्यक्तित्व पर इतरा सकती हैं.

पटोला की हलका जामनी और मूंगिया रंग की प्रिंटेड कमीज और मैरून सलवार के साथ ही मैरून दुपट्टे पर दोनों ओर चौड़ा बार्डर आप के गोरे रंग पर फबने के साथ आप के सौंदर्य को भी महका देगा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुमन सौरभ

मई-
1988

क्या आप को अपना कैरियर संवारना है?

लड़कपन की उम्र अभिलाषाओं को सजा कर रखने की होती है. आप अपनी आशाओं, अभिलाषाओं को सहेजिए, किशोर सपने देखते हैं और पालक उनके भविष्य के लिए उत्सुक होते है. इस सुखद चिंता में हम भी उनके साथ है. इसीलिए अब प्रस्तुत है.

देखिए, नीचे दिए गए विषयों में से आप किस में अपना उज्ज्वल भविष्य सुरक्षित देख रहे है.

- अध्यापन
- चिकित्सा
- खेत
- इंजीनियरिंग
- पत्रकारिता/लेखन
- प्रशासन नौकरियां
- कंप्यूटर सर्विसेज
- कला व मासमीडिया क्षेत्र
- व्यापार
- उद्योग
- चार्टर्ड अकाउंटेंसी
- वकालत
- ठेकेदारी
- विमान चालक
- सिनेमा कलाकार
- फोटोग्राफर
- होटल प्रबंधक
- सैनिक व असैनिक राज सेवाएं.

कैरियर गाइड विशेषांक

उपरोक्त व्यवसायों के संबंध में कहां, क्या, कैसे इत्यादि मुद्दों पर तथ्यप्रद जानकारी व देश विदेश. के ट्रेनिंग, शिक्षा एवं भर्ती संस्थाओं का ब्योरा. साथ ही अनेक प्रेरक, मार्गबोधक कहानियां, कविताएं व सभी स्तंभ.

अंक अतिशीघ्र आपके हाथों में होगा. ● अपनी प्रति के लिए आज ही विक्रेता से कह दें.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लड़के का विवाह आसान नहीं

लेख • राजीव शर्मा

मेरे मित्र के पड़ोस में एक परिवार रहता है. उस परिवार से भी मेरे संबंध ऐसे ही थे जैसे मेरे मित्र से थे. अतः अकसर उस परिवार के मुखिया से मुलाकात होती रहती थी. उस परिवार में तीन लड़कियां व दो लड़के थे. दोनों लड़कियां बड़ी थीं और उन में से एक की शादी तय हो चुकी थी जबकि दूसरी अभी पढ़ रही थी.

मैं उन सज्जन से जब भी मिलता था तो वह हमेशा लड़कियों की शादी के बारे में चिंतित मिलते. वह ऐसे अनेक व्यक्तियों के बारे में बताते जिन के लड़कियां नहीं थीं और वे बहुत ही सुखी थे. मैं जब उन्हें याद दिलाता कि उन के दो लड़के भी हैं तो वह यही कहते कि लड़के होने का फायदा तो इन लड़कियों ने खत्म कर दिया. उन की नजर में लड़के पैसे की उस हुंडी के समान होते हैं, जिस का भुगतान उन की शादी के समय होता है.

उन की बड़ी लड़की की शादी से पहले ही मेरा तबादला हो गया और फिर मेरा उस परिवार से संपर्क ही टूट गया. करीब छः वर्ष पश्चात मैं दोबारा उसी शहर में आ गया. मेरा मन अब भी उस परिवार से जुड़ा था. अतः एक दिन मैं उन से मिलने पहुंचा.

आज भी उन महाशय की कहानी कुछ

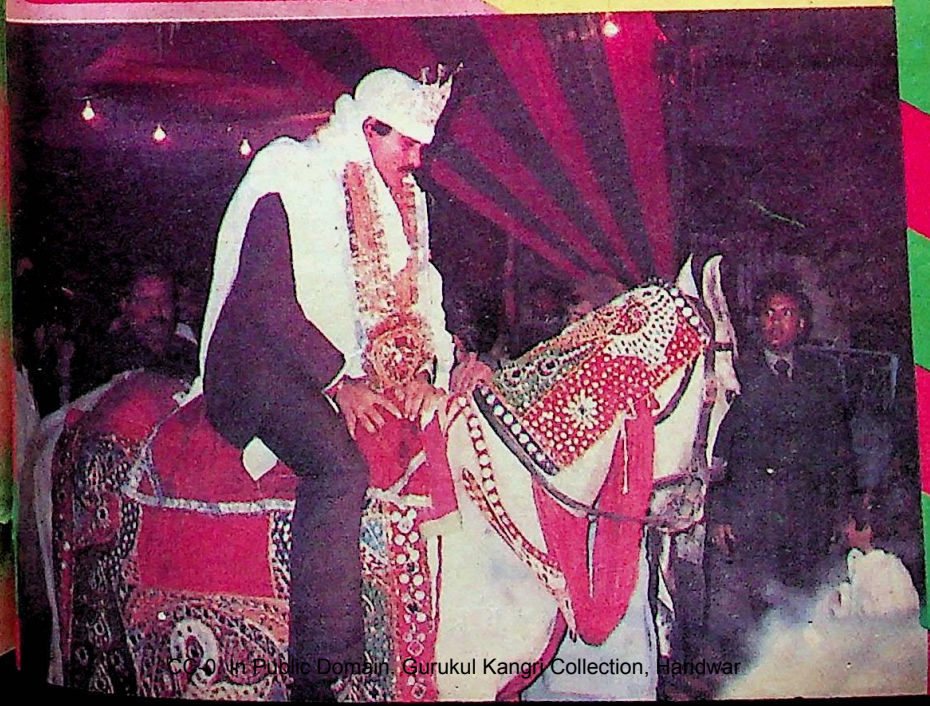

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अलग नहीं थी. जब मैं ने उन से पूछा कि अब तो उन की दोनों लड़कियों की शादी भी हो गई है और एक हुंडी का भुगतान (मेरा मतलब उन के लड़के के विवाह से था) भी हो गया है, फिर उन को क्या परेशानी है? तो वह बोले, "क्या बताऊं, भाई साहब, मैं ने अपने लड़के की शादी क्या की बस घर की सारी शांति खत्म हो गई. बहू हम लोगों को तो अपना दुश्मन समझती है. पता नहीं कैसी पढ़ीलिखी है. मेरा बेटा भी परेशान रहता है. मैं ने तो अब सोच लिया है कि छोटे लड़के के लिए सुशील लड़की ही देखूंगा, भले ही वह गरीब क्यों न हो."

यह केवल एक ही परिवार की कहानी नहीं है. यह उन सभी के लिए एक सबक है जो लड़के की शादी या तो दहेज के लिए करते हैं या फिर किसी बड़े परिवार से अपनेआप को जोड़ने के लिए करते हैं. ऐसे में बलि का बकरा बनता है बेचारा लड़का. उस के भविष्य की चिंता किसी को नहीं रहती. न ही लड़के और लड़की से शादी के लिए उन की रजामंदी ली जाती है.

दिल्ली की एक घटना याद आ रही है. हमारे एक दूर के रिश्तेदार के लड़के की शादी थी. मैं उस समय दिल्ली में ही था. लड़की वाले अच्छीखासी संपत्ति के मालिक थे, जबकि लड़का एक छोटी सी नौकरी करता था. लड़के की सगाई की मिठाई मैं ने बड़े चाव से खाई. परंतु शादी से तीन दिन पूर्व पता चला कि लड़की घर से गायब है. बाद में पता लगा कि लड़की इस शादी से नाखुश थी, इसलिए उस ने अपनी पसंद के लड़के से शादी कर ली.

लड़के को इस से गहरा धक्का लगा और वह बीमार सा रहने लगा. पता नहीं, अब वह कैसा है. पर मुझे आश्चर्य उस समय हुआ जब मुझे मालूम हुआ कि दोनों समधियों को लड़की के बारे में सब कुछ मालूम था और उन का खयाल था कि शादी के बाद सब कुछ ठीक हो जाएगा. पर लड़के को असलियत नहीं बता कर उस के साथ यह क्रूर मजाक किया गया.

यदि यह शादी हो भी जाती तो यह जरूरी नहीं था कि लड़की अपनी शादी से पूर्व का समय भूल जाती और तब हो सकता था कि वह परेशान रहती, उस का पति परेशान रहता और इस तरह घरगृहस्थी अशांत हो जाती.

अतः यह स्पष्ट है कि लड़के और लड़की की शादी में बहुत अंतर है और लड़के की शादी उतनी आसान नहीं जितनी लड़की की. ऐसा इसलिए क्योंकि लड़की की शादी में हमारे परिवार का एक सदस्य जाता है, जबकि लड़के की शादी में हमारे परिवार में एक सदस्य आता है. यदि दूसरे परिवार से आने वाला यह सदस्य हमारे परिवार में घुलमिल नहीं पाता तो न केवल वह असंतुष्ट रहेगा, बल्कि उस के असंतुष्ट रहने से परिवार की शांति पर भी असर पड़ेगा. इस तरह जिस मकसद से शादी की जाती है वह पूरा नहीं हो पाता और जो उम्मीद लड़का व उस के मातापिता उस नए सदस्य से रखते हैं, वह अकसर पूरी नहीं हो पाती.

मेरे एक परिचित उद्योगपति हैं. दो भाई हैं और उन के पास अच्छा पैसा भी है. परंतु दोनों भाइयों ने गरीब घर की लड़कियों से विवाह किया. एक दिन जब बातों ही बातों में मैं ने इस का कारण पूछा तो वह बोले कि

दहेज के लालच में या अपने से संपन्न परिवार से रिश्ता जोड़ने के चक्कर में लड़की के गुणों व लड़का के विचारों को अनदेखा कर दिया जाता है. इस का परिणाम बड़ा भयंकर होता है. पूरे परिवार की तो शांति भंग होती ही है, दो युवकों का जीवन भी कष्टमय हो जाता है. अतः लड़के की शादी करते समय इन पर गौर करना बहुत जरूरी है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नया ओनिडा.
इसे छू पाये तो बस एक ईर्षा भरी नज़र!

ईप्सा में जब भी ईर्षा के रंग घुल जाये, और हाथ अनजाने में ही पत्थर उठा ले, तब जानिये, एक नया ओनिडा तशरीफ़ लाया होगा! बेशक़! नया ओनिडा हाज़िर है अपने अछूते 'क्युब लुक' के । अत्याधुनिक कारीगरी का जादू एक पूरी तरह से 'मोल्डेड' कैबिनेट और अनोखे काले ट्यूब में समाये - मनमोहक रूप-रंग और आने वाले कल की अदा लिये - आ बसा है नया ओनिडा आप के इशारों इन्तज़ार में! लेकिन, पहले इसके कि आप इसमें बेखबर खो जायें, भूलिये मत कि ईर्षा मंडराती है पास। याद रखिये वो सावधान-वाणीः अपने पड़ोसियोंसे नाता ज़रूर जोड़िये, पर अपने ओनिडा को ला मत छोड़िये।

ओनिडा. पड़ोसियों की जले जान, आपकी बढ़े शान.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Avenues 0 250 8

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहू को बेटी समझ कर अपनाएं तो क्या मजाल कि परिवार की सुखशांति भंग हो.

गरीब परिवार में लड़कियां घर चलाने के कार्य में बहुत कुशल होती हैं. हो सकता है, इस का कारण उन की आर्थिक तंगी हो और इसलिए वे अपने से अधिक संपन्न घर में आराम से निभ सकती हैं.

इस का मतलब यह नहीं है कि संपन्न परिवारों में अच्छी लड़कियां नहीं होतीं. बस जरूरत है उन्हें ढूंढ़ने की. और फिर हर पढ़ीलिखी लड़की समझदार होती है. पर लड़के वाले को यह देख लेना चाहिए कि वह लड़की उन के परिवार में खप सकती है या नहीं. इस के लिए उस परिवार की आर्थिक संपन्नता, रहनसहन और वहां के वातावरण को देखना बहुत आवश्यक है. यदि लड़की का स्वभाव मधुर है तो वह किसी भी घर को शांति दे सकती है. नहीं तो और बातें देखना जरूरी हो जाता है.

अकसर जो लड़ाई सासबहू या ननदभाभी के बीच होती है उस का मुख्य कारण बहू और सास या ननद के बीच आपसी सामंजस्य न होना है. यह तकरार तभी शुरू होती है जब बहू को लगता है कि उसने जो सपने शादी से पहले संजोए थे वे पूरे नहीं हो रहे हैं या जैसी ससुराल की उस ने आशा की थी वह उसे नहीं मिली. इसी तकरार से घर में अशांति पैदा हो जाती है जिस का सर्वाधिक प्रभाव परिवार के पुरुष वर्ग, विशेष कर पति पर पड़ता है.

हमारे पड़ोस के परिवार की ही बात लीजिए, जब तक उन के घर बहू नहीं आई थी, तब तक वह परिवार बहुत ही शांत व सुखी था. किंतु जैसे ही बड़े लड़के की शादी हुई बस घर का माहौल ही बदल गया.

हमारे घर बहू व सासननद अकसर आती थीं. उन से पता चला कि बहू चाहती थी कि उस की शादी नौकरीपेशा लड़के से हो जो कि अपने मांबाप से दूर रहता हो. जबकि जिस लड़के से उस का विवाह हुआ वह पुश्तैनी व्यापार करता था. अतः पूरा परिवार साथ रहता था. अब लड़की की जिद है कि उस के पति दूसरे शहर में अपना व्यापार करें. किंतु उस परिवार की हालत ऐसी नहीं है कि वे उसे स्वतंत्र व्यापार में आर्थिक मदद दे सकें.

अतः यह भी जरूरी है कि शादी से पूर्व ही लड़का लड़की के विचार जान ले और यह स्पष्ट कर दे कि वह कितना सक्षम है. आज जितने भी घरों में तनाव है उस का मुख्य कारण बहू को ससुराल में कुछ अभाव का एहसास होना है.

इसलिए आज के युग में यह जरूरी है कि प्रत्येक व्यक्ति अपने घर में होने वाली लड़के की शादी में दहेज की बजाए इस बात पर ध्यान दे कि क्या लड़की उन के परिवार की शांति बनाए रख सकेगी या क्या वे शादी के बाद जैसा माहौल लड़की चाहती है वह दे पाएंगे. यदि शादी से पूर्व ही सारी बातें जांचपरख ली जाएं तो कोई कारण नहीं कि घर में अशांति रहे.

जो अन्य बात शादी के समय ध्यान रखे जाने योग्य है, वह यह कि शादी कभी बिना मरजी के नहीं की जानी चाहिए. यदि लड़का और लड़की दोनों शादी के लिए तैयार हैं तो शादी अवश्य ही सफल रहेगी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पल पल कोमल एहसास, पल पल महकती खुशबू।
रहे संग संग, बरसों से बनी रही है
आपके परिवार की पहली पसंद...

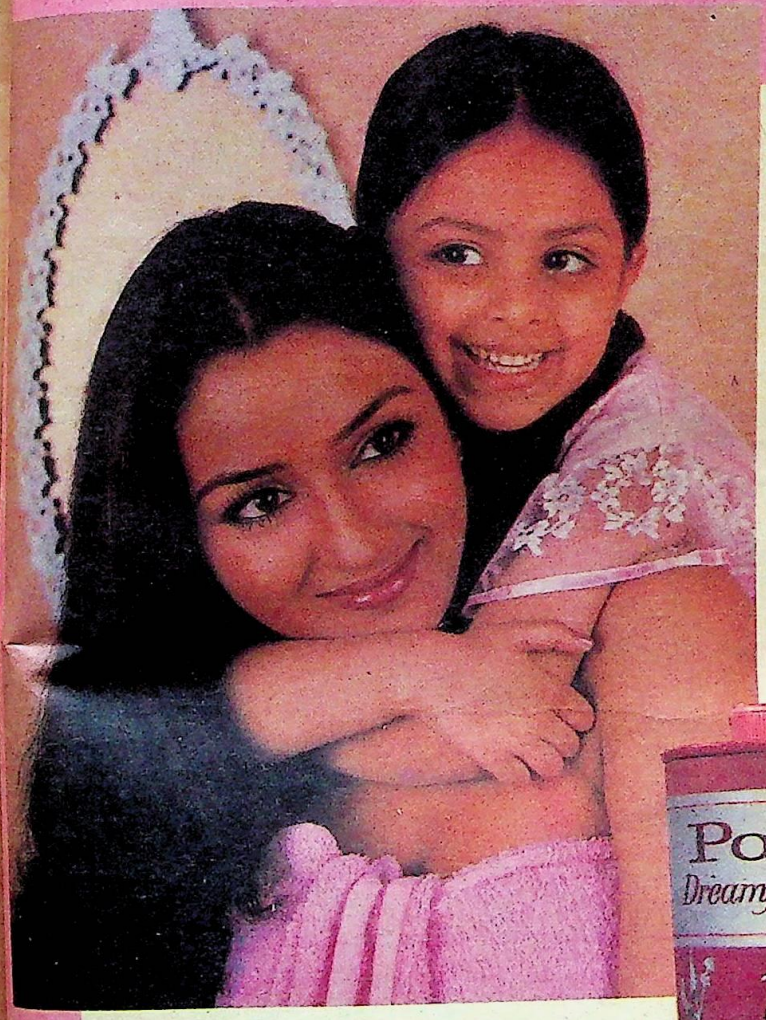

पॉण्ड्स
ड्रीमफ्लॉवर
टैल्क

ऐसी महकी महकी ताज़गी पहले कभी कहीं!

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नई-नई पेन्ट की गई दीवारों की अपनी ही शान होती है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

र अब जानिए इस शान को
सों बनाए रखने का तरीका:

नये – नये पेन्ट किए गए घर में रहने का
ना ही मज़ा है. आप उसे पूरे मन से सजाते
सवारते हैं और जब भी आपकी नज़र दीवारों
जाती है, आप खुशी का अनुभव करते हैं.

पर अगर नए पेन्ट का रंग फीका पड़ जाए
आपका मज़ा भी फीका पड़ जाए और आपके
ाग में एक ही सवाल आए 'क्या इतनी मेहनत
पैसा बिलकुल बेकार गया?

इसीलिए ये बहुत ज़रूरी है कि आपकी पेन्ट की
न्द एकदम सही हो. और एशियन पेन्ट्स के
य आपके गलत होने का सवाल ही नहीं उठता.

क्यूँकि एशियन पेन्ट्स आपके लिए बनाते
तरह-तरह के शेड जो बरसों खिले रहते हैं.

हर शेड का मेल कम्प्यूटर से किया जाता
ताकि आप जो शेड पसन्द करें, आपको
ुल्कुल वही शेड मिले.

र ज़रूरत, हर बजट के लिए पेन्ट

दीवारों के लिए एप्कोलाइट १००% शुद्ध
क्रिलिक इमल्शन या ट्रैक्टर डिस्टेम्पर.

खिड़की-दरवाजों और लोहे आदि के लिए एप्कोलाइट सिन्थैटिक इनैमल.फर्नीचर के लिए टचवुड क्लीयर वुड फिनिश.

एशियन पेन्ट्स से आपको मिलेगा लाजवाब क्वालिटी का पेन्ट चाहे आपका बजट ज़्यादा हो या कम.

इसीलिए ये आश्चर्य की बात नहीं कि एशियन पेन्ट्स पिछले बीस वर्षों से पेन्ट के क्षेत्र में पहले स्थान पर है. १९६७ से आज तक, सबसे ज़्यादा घरों ने चुना है एशियन पेन्ट्स. क्योंकि सभी को मिली है पैसों की पूरी कीमत.

asian paints

पैसों की पूरी कीमत.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टूटते सपनों का जिम्मेदार कौन?

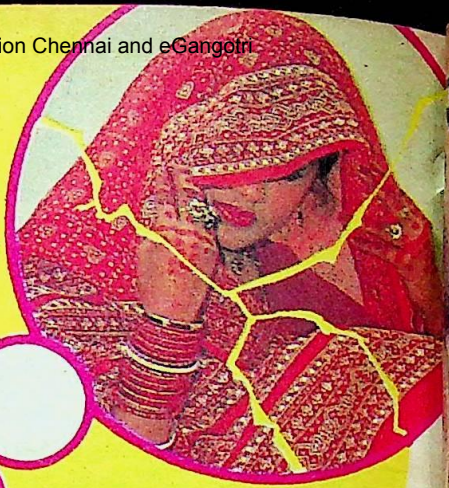

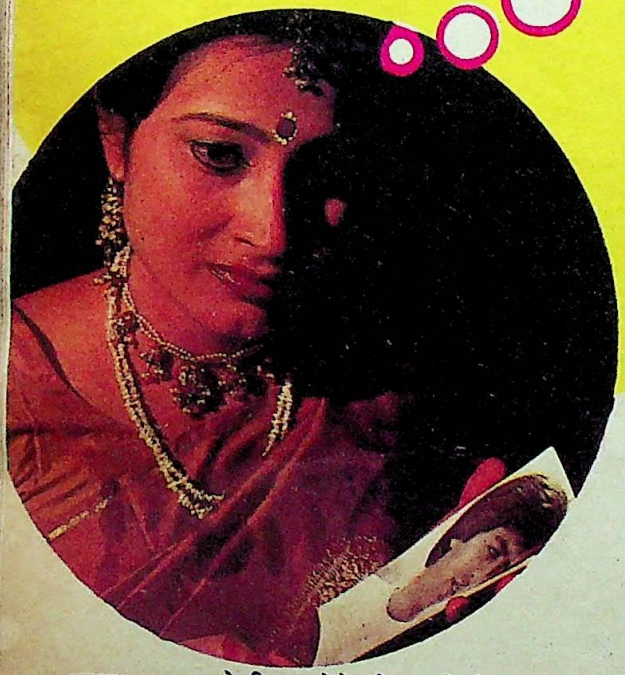

लेख • पूनम चतुर्वेदी

लड़कपन के विदा होते ही चुपके से आए यौवन की आहट उस ने सुन ली. शून्य में व्यर्थ ही भटकने वाली आंखें अब कल्पना में नित नए सपनों के जाल बुनने लगी थीं. एकांत के क्षणों की मादक अनुभूतियों में डूबताउतराता मन मानो सतरंगे सागर की लहरों से स्पर्धा करने लगा था. इन्हीं दिनों घर में खुद से संबंधित होने वाली बातें सुनने की इच्छा तेज होने लगी थी. लेकिन शर्म रास्ता रोक लेती थी. ऐसा करने में फिर भी कुछ न कुछ तो सुनाई पड़ ही जाता था. "अब तो इस के हाथ पीले हो जाने चाहिए. बात चल तो रही है एक जगह."

जैसेजैसे शादी की बातें आगे बढ़ती जाती थीं उस के स्वप्निल संसार का भी विस्तार होता जाता था.

एक दिन पता लगा कि कुछ लोग मुझे देखने आ रहे हैं. कैसीकैसी तैयारियां चल रही थीं. घर में मिठाई के डब्बे आ रहे थे. नाश्ते के सामान का ढेर लग रहा था. अंत में वह दिन भी आ गया जब मैं चाय की ट्रे ले कर कमरे में पहुंची. मैं ने बिजली की सी तेजी से एक बार सब को देखा और सिर झुका कर बैठ गई. औपचारिक पूछताछ के बाद मां का संकेत पा कर मैं उठ आई. लेकिन कान बैठक में होने वाली बातों पर ही लगे रहे.

सोचा दोबारा बुलाया जाएगा या होने वाला 'कोई' आ कर मेरी गोद भर जाएगा. लेकिन जलपान के बाद गपशप कर के सब उठ गए.

"कल बताएंगे."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रन्त! प्रकृति का प्यार-भरा उपचार दें

ब्रूज़+एड —बंद चोट के लिये

उंगली कहीं दरवाज़े में फंस जाये या क्रिकेट की गेंद अचानक बदन को आ लगे तो ख़ासी दर्दनाक बंद चोट पड़ जाती है.

अब पहली बार आप इसका सहज उपचार कर सकेंगे. उस जगह पर ब्रूज़ एड स्प्रे कीजिये. इसमें मिली जड़ी-बूटियां फ़ौरन काम करने लगती हैं. और जानलेवा दर्द बंद करके उस जगह को सूजने व नीला पड़ने से रोकती हैं.

बर्न+एड —जलन के लिये

बर्न एड में ऐसी औषधियां हैं जो पानी से भी कई गुना अधिक ठंडक पहुंचाती है.

इसकी ज़ड़ी-बूटियों से न केवल जली त्वचा को ठंडक पहुंचती है, बल्कि त्वचा के अंदर तक जलन को राहत मिलती है जिससे फ़ायदा देर तक बना रहता है.

और जली त्वचा भी बहुत जल्द अच्छी हो जाती है. बिना एक छाला तक पड़े अगर जलने के बाद तुरन्त बर्न एड लगा दें.

घर में या सफ़र पर, आप जहां कहीं भी हों, राहत के इन तीन उपचारों वाला क्विक-एड-किट अपने पास रखें. ताकि इस बात का इत्मीनान रहे कि कहीं कोई हादसा हो भी जाये तो उससे निबटने के लिये आप तैयार हैं.

क्विक एड किट **RKB HERBALS** प्रकृति का प्यार-भरा उपचार

TSA/RKB/42/HIN

CC-0.In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुन कर मन में कुछ टूटता सा लगा. दूसरे दिन नकारात्मक उत्तर पा कर कल्पनाओं के इंद्रधनुष छिन्नभिन्न हो कर बिखर गए.

यह यंत्रणादायक पहली अनुभूति धीरेधीरे आदत बन जाती है. इसी घटना की बारबार पुनरावृत्ति से लगने लगता है जैसे रंगीन सपनों का संसार बिखर गया हो, शेष रह गया हो कुंठित व्यक्तित्व. हताश मांबाप को देख कर उत्पन्न हुई मेरी छटपटाहट को कौन समझ सकेगा.

मुझे लगता है कभी जिन उंगलियों को पकड़ कर ऊंचेनीचे रास्तों पर चलना सीखा था और जिन उंगलियों ने बचपन में मुझे बागबगीचों की सैर कराई थी, अब मैं उन का सहारा छोड़ कर किसी नदीनाले में कूद कर अपना अस्तित्व समाप्त कर दूं. जब मैं खुद ही नहीं रहूंगी तो मेरे प्यारे मांबाप को किसी के सामने न निगाहें झुकानी पड़ेंगी, न हमारे घर के किसी व्यक्ति को वर पक्ष के घर से लौट कर 'मना कर दिया' की गाली झेलनी पड़ेगी.

यह स्थिति केवल मेरी नहीं, बल्कि हमारे समाज की हर दूसरी लड़की की है. इन में आप की अपनी बेटी भी हो सकती है.

'देखने' का यह सिलसिला 16-17 वर्ष की उम्र से आरंभ हो जाता है. शुरूशुरू में मांबाप सही चुनाव के चक्कर में 'यह लड़का हमारी बेटी के योग्य नहीं है' सोच कर कई रिश्ते स्वयं ही अस्वीकार कर देते हैं. उम्र बढ़ जाने पर, 'कैसा भी हो नौकरी करता हो' सोच कर जैसेतैसे विवाह कर देना चाहते हैं.

देखने आने वालों में लड़के के मातापिता भाईबहन तथा कुछ अन्य रिश्तेदार होते हैं. कभीकभी यह आनाजाना टुकड़ों में होता है. जैसे कभी मांबाप आ रहे हैं तो कभी बहनभाई, कभी लड़का स्वयं तो कभी कोई मामाफूफा. सब की पसंद के मापदंड अलगअलग होते हैं.

उन में से प्रत्येक अपनी पसंद के अनुसार निर्णय लेना चाहता है. उन की अपेक्षाएं होती हैं कि लड़की सौंदर्य में बेजोड़ हो, समझदारी में अनुभवी बुजुर्गों को और कार्यकुशलता की दृष्टि से मशीनों को भी पीछे छोड़ दे.

वर के पिता को शंका होती है कि लड़की परिवार के साथ मिल कर चलेगी कि नहीं तो मां का आग्रह होता है कि उस को गृहकार्य में दक्ष होना आवश्यक है. भाईबहन के अनुसार उसे नाचनागाना और गानाबजाना आना चाहिए तो लड़का स्वयं उस के अंकपाश देखना चाहता है. मामाफूफा अपनी पसंद के अनुसार राय देते हैं.

कन्यापक्ष यदि उन के परिचितों में है तो लड़की अच्छी है अन्यथा उस की आंखें एकाएक छोटी लगने लगती हैं या हाथों में रोएं ज्यादा लगने लगते हैं.

कुछ परिवार कानवेंट में शिक्षित बहू चाहते हैं तो कुछ नितांत घरेलू. ऐसा भी होता है कि घर वालों को घरेलू बहू चाहिए और लड़के को अत्याधुनिका. कई बार तो लड़के वाले सभी अपेक्षाएं पूरी होने के बावजूद इनकार कर के चले जाते हैं. बाद में मध्यस्थ द्वारा कहलवा दिया जाता है, "एक तो लड़की सांवली है, उस पर पैसा भी कम दे रहे हैं. हमारा लड़का फालतू है क्या?"

कोई उन से पूछे कि यह बात तो बिना उन के घर जाए भी पता लगाई जा सकती थी. क्या सिर्फ बढ़िया नाश्ता उड़ाने गए थे कन्या पक्ष के यहां?

लड़की के युवा होते ही घर में शादी के चर्चे शुरू हो जाते हैं. जैसेजैसे यह बातचीत आगे बढ़ती है लड़की की कल्पनाओं का इंद्रधनुष बनने लगता है. लेकिन बारबार लड़की को बिना किसी खास वजह के नापसंद कर दिया जाता है और उस के सपने बिखरने लगते हैं. उस के टूटते सपनों का जिम्मेदार कौन है—कम दहेज, सांवलापन या कुछ और?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्वचा को दीजिए नये पामोलिव का स्पर्श.

इसका भरपूर मुलायम झाग आपकी
को बनाए निखरी-निखरी, कोमल-कोमल,
की मनमोहक भीनी-भीनी खुशबू...

गुलाबी, सफ़ेद और हरे रंगों में उपलब्ध.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Rediffusion/CB/5532 b HN

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लड़के वालों के लिए चाय लाती लड़की. सिर्फ देखने का बहाना या बढ़िया नाश्ता उड़ाने की इच्छा.

लड़की देखने की इस अंधी दौड़ में लोग यह भी नहीं सोचते कि पसंद न आने की दशा में लड़की के मन पर क्या बीतेगी. एकाध बार नापसंद होने पर लड़की स्वयं को यह कह कर समझा लेती है कि वरपक्ष की अपेक्षाओं पर वह खरी नहीं उतर सकी है. लेकिन आए दिन इन्हीं स्थितियों का सामना करतेकरते उस का अपनेआप पर से विश्वास उठ जाता है.

लड़की को पसंद करने से इनकार किए जाने के प्रमुख कारणों में दहेज और सौंदर्य का अभाव तथा कुंडली न मिलना होते हैं. इन कारणों को साधनसंपन्न लड़कियां विभिन्न सौंदर्य प्रसाधनों द्वारा तथा अभिभावक किसी भी प्रकार दहेज जुटा कर, चाहे घर ही क्यों न बेचना पड़े, दूर करना चाहते हैं. साधनहीन लड़कियां केवल मन मसोस कर रह जाती हैं.

यद्यपि वे पहले दोनों अभाव गुणों द्वारा पूरे कर लेती हैं, पर विवाह के बाजार में उस के गुणों का मूल्य आंकने वाले नगण्य होते हैं. कुंडली का सहारा अकसर दहेज की कमी को देखते हुए इनकार का बहाना बनाने के लिए लिया जाता है. जब यह पता लगता है लड़की वाले वांछित दहेज नहीं दे सकते पंडित से सांठगांठ कर के लड़की को मंगत अथवा अशुभ ग्रहों वाली बता कर मना क दिया जाता है. यह भी कहा जाता है कि ग्र शांत कराने में भी तो हमें धन व्यय कर पड़ेगा. अतः यदि रकम बढ़ा दें तो बात ब सकती है.

सर्वाधिक यंत्रणादायक स्थिति त होती है जब अभिभावक एक तरफ लड़ वालों से परेशान होते हैं तो दूसरी तर तथाकथित शुभचिंतकों से, जो जब भी मिलते हैं, पूछते रहते हैं, "कहीं बात चल रही है कि नहीं?"

"अब तो शादी हो जानी चाहिए, हम ने तो अपनी बेटी की शादी 20 वर्ष में ही कर दी थी."

उन के पास बात करने के लिए कोई और विषय रह ही नहीं जाता. अंत में "भाई पैसा तो ख़र्च करना ही पड़ेगा, ऐसे भी कहीं विवाह होते हैं" जैसी नेक सलाह देते हुए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने कर्तव्य का पालन करते रहते हैं. जो भूमिचितक कोई सहायता नहीं कर सकते, उन्हें इस तरह की सलाहें दे कर अधिक परेशान करने का क्या अधिकार है?

स्थितियों का दोहराव

इस संदर्भ में कुछ लड़कियों से साक्षात्कार करने पर पता लगा है कि वे उच्च शिक्षित, सौम्य और सुसंस्कृत लड़कियां वर्तमान परिस्थितियों से क्षुब्ध हो कर एक तरह से कुंठित जीवन व्यतीत कर रही हैं.

30 वर्षीया सुजाता कहती है, "इतनी उम्र तक अविवाहित रहने के कारण जब तरहतरह की बातें सुनती हूं तो तिलमिला कर रह जाती हूं. ये बातें वही लोग बनाते हैं, जो कभी पिताजी के पास सिर्फ 50 हजार में शादी करा देने का प्रस्ताव लाए थे. ये लोग हमारे सगे, हमारे अपने हैं?"

33 वर्षीया ममता एक बैंक में कार्य करती है, "अब शादी के प्रति मेरी क्या भाविक उमंग तो समाप्त हो चुकी है. इस पुरुषप्रधान समाज में जीने के लिए एक आश्रय चाहिए. उस की भी कोई उम्मीद नजर नहीं आती."

35 वर्षीया रेणु एक विद्यालय में अध्यापिका है. उस ने उलटे मुझ से ही प्रश्न किया, "हमारी वे अनुभूतियां, वे सपने जो हम ने यौवन की दहलीज पर खड़े हो कर देखे थे, क्या हमें कभी वापस मिल सकेंगे? क्या हम इसी लिए लड़के वालों की ज्यादती सहन करते रहेंगे कि उन्हें देने के लिए हमारे अभिभावकों के पास 1-2 लाख रुपए नहीं हैं या हमारा रंग सांवला है?"

28 वर्षीया रचना दहेजविरोधी महिलाओं के एक संगठन की सदस्या है. ये लोग युवकयुवतियों से स्वयं संपर्क कर के उन्हें अपने विवाह में दहेज न लेने के लिए प्रेरित करते हैं.

रचना ने उन लड़कियों के प्रति क्षोभ प्रकट किया, जो अपनी भाभी के साथ दुर्व्यवहार करती हैं. लेकिन खुद ससुराल में अपने साथ बुरा व्यवहार किए जाने पर रोती हैं. उस के शब्दों में, "विश्वास कीजिए, वह दिन भी जरूर आएगा जब हम अपने अरमान पूरे कर सकेंगी. दहेज के लालची सिर नहीं उठा सकेंगे. किसी लड़की को देख कर नाक भौं नहीं सिकोड़ सकेंगे. क्या आप जानती हैं कि जो लड़कियां दहेज का शिकार होती हैं, उन में वे लड़कियां भी हैं जो अपने भाई के लिए लड़की देखने गई थीं और आंखें छोटी हैं, दांत बड़े हैं या रंग तो साफ है मगर शक्ल अच्छी नहीं है जैसी हास्यास्पद बातें दहेज में कमी देख कर कह आई थीं? इन में वे लड़कियां भी शामिल हैं जिन्होंने भाभी के मायके से आई साड़ी फेंकते हुए कहा था कि ऐसी साड़ी तो हमारे यहां की महरी भी नहीं पहनती."

क्या कभी आप ने यह सोचने का प्रयास किया कि ये स्थितियां उत्पन्न करने वाला है कौन? इस की जिम्मेदार वे लड़कियां हैं जो किसी लड़की की कोमल भावनाओं को रौंद कर अपनी कामनाएं पूरी करना चाहती हैं. यही कारण है कि कन्या के पिता की निरीहता समाप्त होते ही मानसिकता बदल जाती है. जो कभी 'कहीं वे हमारी बेटी को मार न डालें' सोच कर घबराते रहते थे. पुत्र के लिए रिश्ता आने पर वह भी वही स्थितियां दोहराने लगते हैं.

उन्होंने बेटी की ससुराल में जितने ताने, जितनी बातें खुद सुनी थीं, उस से कहीं ज्यादा आने वाले को सुनाने लगते हैं.

फिर शुरू हो जाता है किसी को मध्यस्थ बना कर राशि तय करना. वही देखनादिखाना, कुंडली मिलाना. जरा भी तो परिवर्तन नहीं होता है. तर्क यह होता है कि हम ने भी तो ठोकरें खाई हैं.

यदि हमारे पास बेटी को देने के लिए दहेज नहीं है तो हम बेटे की शादी में ले कर उसे बेटी को दहेज में देना चाहते हैं. क्यों न हम इधर से ले कर उधर देने वाली इस कुप्रथा को ही खत्म कर दें और लड़की के गुणों का आदर करें. अन्यथा आने वाले कल में भी बदले की भावना के वशीभूत हो कर यही ज्यादतियां दोहराई जाती रहेंगी. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

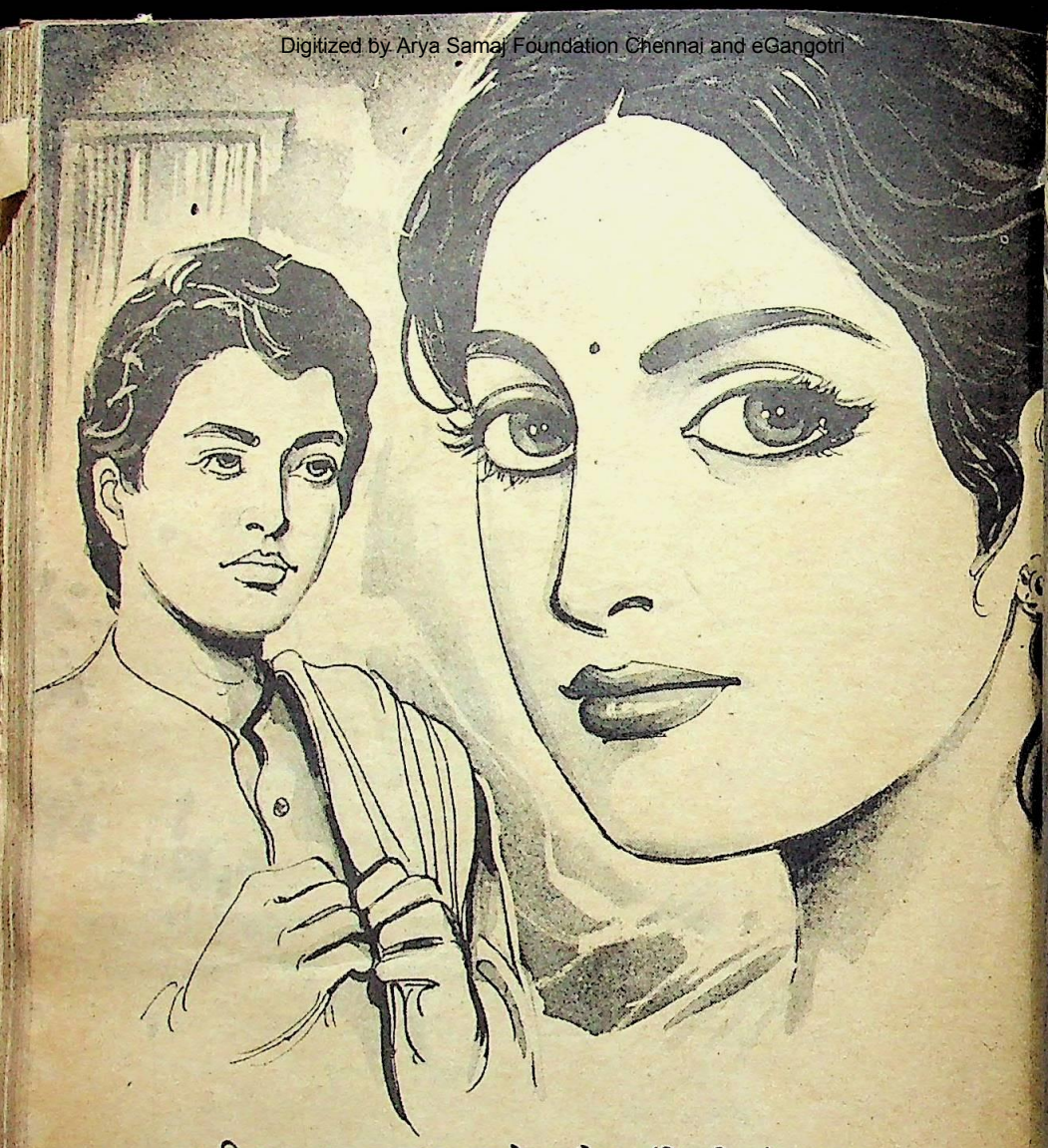

सरिता, 20 साल पहले अप्रैल (द्वितीय) 1968

लालसा

चंदन की बात अनसुनी कर के मीनाक्षी ड्राइंगरूम में चली गई. उसे अब अंदर ही अंदर हंसी भी आ रही थी. चंदन की बात तो वैसी ही है जैसे एक बौने की खजूर के वृक्ष के फल हाथ बढ़ा कर तोड़ लेने की इच्छा हो या एक लंगड़े को नदी का अथाह पाट तैर कर पार करने की लालसा हो.

कहानी • मायाप्रधान 'चंचल'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

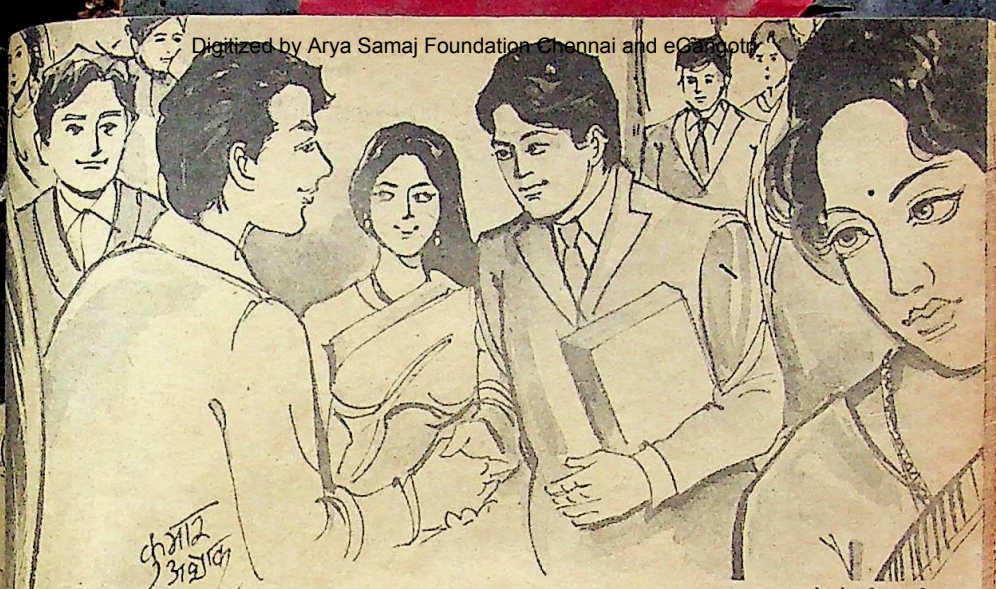

नमिता के डाक्टर बन कर वापस लौटने की खुशी में शरत ने एक पार्टी का आयोजन किया.

इतर जाति के चंदन ने जब नमिता को बहन बनाने की इच्छा जाहिर की तो मीनाक्षी ने चंदन की इस बात पर व्यंग्य कस दिया. बाद में चंदन की एक लालसा पूरी होने पर आखिर मीनाक्षी को ही झुकना पड़ा.

सामने की सड़क पर बच्चों ने एक मदारी को रोका था. उस की डुगडुगी की आवाज सुनते ही नन्ही नमिता दरवाजे की ओर भागी. मीनाक्षी भी अनमनी सी नमिता के पास जा कर खड़ी हो गई. नमिता उछलउछल कर नाचने वाले बंदर का तमाशा देखती रही. फिर वह मीनाक्षी की ओर घूम कर बोली, "मां, ये मदारी कहां रहते हैं?"

"घर होते हैं इन के भी," मीनाक्षी ने उखड़ेपन से कह दिया.

"हमारे जैसे ही?" नमिता फिर अबोध सी प्रश्न कर बैठी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"नहीं, हमारे जैसे कैसे हो सकते हैं."

"क्यों, मां?" नमिता ने पूछा.

नमिता के बेतुके प्रश्नों से मीनाक्षी खीझ सी उठी थी. झुंझला कर बोली, "यदि हमारे जैसे मकान होते तो बंदर का नाच क्यों दिखाते!"

मीनाक्षी की बात नमिता की समझ में नहीं आई. वह सवाल पूछना छोड़ डुगडुगी ले कर मदारी के साथ जाते बंदर को देखने लगी. मीनाक्षी अचानक पीछे मड़ी. चंदन पीछे खड़ा ध्यान से उन की यह सब बातें सुन रहा था.

"क्यों, चंदन, बरतन मल गए?"

"जी, हां, बीबीजी," चंदन ने धीरे से कहा और तमाशे की ओर दृष्टि गड़ा दी. मीनाक्षी को जाने क्यों चंदन के अचानक आ जाने और अपनी बात उस के द्वारा सुने जाने से कुछ घुटन सी होने लगी थी.

"तू देख, निमू, मैं पापा को चाय देने चलती हूं," मीनाक्षी ने नमिता से कहा और जातजाते कुछ उपेक्षा और क्रोध से चंदन की ओर देखा. चंदन अत्यंत लापरवाही से तमाशा देख रहा था.

"सुनो!" मीनाक्षी ने शरत की प्याली में चाय डालते हुए कहा.

"क्या बात है?" शरत ने आराम कुरसी पर थोड़ा फैलते हुए पूछा.

"यह चंदन..."

"क्या हो गया चंदन को?" शरत ने वैसे ही फैले हुए मीनाक्षी के हाथ से चाय की प्याली थाम ली.

"हुआ तो कुछ भी नहीं. बस इस का दिमाग कुछ खराब हो रहा है."

"सो कैसे?" आश्चर्य के भाव चेहरे पर लाते हुए शरत ने चाय की एक घूंट सिप की.

मीनाक्षी अपनी प्याली में चाय डालती हुई धीरेधीरे मुसकराते हुए बोली, "आप को इस तरह सूटेडबूटेड देखता है तो उस के मन में भी हुड़क उठती है!"

"तम तो पहेलियां बुझा रही हो, मीनू! साफसाफ बताओ न, क्या बात है?"

"अरे बात क्या है! कहता था, बड़ा हो कर मैं भी साहब की तरह बनूंगा, अफसर बनूंगा."

"हा...हा...हा..." दोनों एक साथ हंस दिए.

"उस को कहना, साहब बनने के चक्कर में कहीं घर का काम ही न भूल जाए." शरत ने सीधे होते हुए दांतों से सैंडविच कुतर लिया.

"दरअसल बात यह है कि सरकार ने इन छोटे लोगों को पढ़ने की खुली छूट क्या दे दी है, ये लोग अपने को नवाब समझने लगे हैं, कुछ भी हो, रहेगा तो कुरमी जाति का ही, ठकुर तो बन नहीं जाएगा."

शरत ने मीनाक्षी की बात का कोई जवाब नहीं दिया.

बाहर बंदर का खेल समाप्त हो चुका था और नमिता व चंदन उसी की बातें करते हुए वापस लौट आए थे.

चंदन कुल सात वर्ष का था जब अपनी मां के साथ मीनाक्षी के घर आ कर जूठे बरतनों को धुलवाने में मां की मदद करता था. विधवा मां तब नईनई ही शहर में नौकरी ढूंढ़ने आई थी. चंदन का बड़ा भाई गांव में रह कर ही खेतीबाड़ी करता था. इतने से बच्चे का इतने करीने से काम करने का ढंग मीनाक्षी को इतना भाया कि चंदन को तभी से घर के हलकेफुलके कामों के लिए नौकर रख लिया और उस की मां को अपने बंगले के पीछे बने हुए सर्वेंट क्वाटर में जगह दे दी.

नमिता चंदन से केवल दो वर्ष बड़ी थी पर दोनों अकसर किसी न किसी बात को ले कर उलझ जाते. जब नमिता प्रसन्न होती, अपने कितने ही पुराने खिलौने उठा कर चंदन को दे देती और चंदन उन्हें अपनी मां के पास ले जा कर कमरे में जगहजगह सजा देता. मां हंस कर कहती, "अरे, बिटिया, इतने महंगे खिलौनों से तो इसे खेलना भी नहीं आएगा. फिर बीबीजी कहीं तुम पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"चंदन, तू तो बड़ा होशियार हो गया है. पढ़ाई में कुछ मुझ से पूछना हो तो पूछ लिया करना." नमिता ने प्लेट में से पकौड़ी उठाते हुए कहा.

ुसा करेंगी तब?"

नमिता चंदन को ताक और अलमारी र खिलौने सजाते देखती और गर्व से हती, "मां कुछ नहीं कहेंगी. मेरे तो कितने ए खिलौने और आ गए हैं!"

बचपन का वह समय तेजी से बीत ला. शरत ने सदा नमिता के लिए बड़े ऊंचे पने देखे थे. अपना शहर उसे भाता न था सलिए नमिता को कम उमर में ही शिक्षा ाप्त करने दिल्ली भेज दिया गया, बड़ी ताई के पास. गरमी की छुट्टियां होते ही नमिता ले साथ ले कर मीनाक्षी और शरत पहाड़ र चले जाते और चंदन व उस की मां के म्मे पूरा घर सौंप जाते. चंदन के सपने ीवित थे या बुझ चुके थे, यह सोचने का किसी को समय ही न था.

नमिता कई वर्ष बाद उस वर्ष दशहरा और दीवाली मनाने घर आई थी. घर में घुसते ही चंदन सामने दिख गया तो आश्चर्य से नमिता ने आंखें फैला कर कहा, "अरे, चंदन, तू तो इतना बड़ा हो गया! एक बार आई थी, तब तू गांव गया हुआ था, मिला ही नहीं."

चंदन मुसकरा कर सामान उठाने लगा.

.. चाय पर नमिता ने मीनाक्षी के सामने ही चंदन से पूछ लिया, "चंदन, अभी क्या तेरी पढ़ाई जारी है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिंकारा – गर्भवती महिलाओं के लिए अलक्रोहल-मुक्त, हानिरहित टॉनिक : फार्माकोलॉजीकल अनुसंधान के परिणाम

यह चिकित्सीय तौर पर सिद्ध हो चुका है कि लगभग 40 से 80% भारतीय स्त्रियां गर्भावस्था के समय 'एनीमिया' – अर्थात रक्त की कमी – की शिकार होती हैं।

इस शिकायत पर काबू पाने, और आयरन (लौह), विटामिन बी-12, रक्त के लाल सेलों तथा हेमोग्लोबिन की कमी को दूर करने में सिंकारा वैज्ञानिक तौर पर प्रभावशाली सिद्ध हो चुका है।

सिंकारा में लौह अत्यंत प्राकृतिक और आसानी से उपलब्ध होने वाली अवस्था में होता है – जड़ी-बूटियों से प्राप्त।

घर-भर के लिए, प्रत्येक ऋतु में उत्तम

सिंकारा से परिवार को और भी लाभ हैं। विशेषतया, इसे इन अवस्थाओं में लेने की सलाह दी जाती है: • साधारण कमज़ोरी व दुर्बलता • थका देने वाले व्यायाम के बाद • रोग से स्वस्थ होने के समय • भूख की कमी • शिशुओं की बढ़ोत्तरी • स्तन-पान कराने वाली माताओं के लिए • स्नायु थकावट तथा रोग की अधिकता • विद्यार्थियों का मानसिक व बौद्धिक विकास, आदि।

अनिवार्य तत्त्वों,
जड़ी-बूटियों तथा
विटामिनों का
अनोखा मिश्रण

हमदर्द

सिंकारा

विश्व-प्रसिद्ध फ़ैमिली टॉनिक,
प्रत्येक ऋतु में उपयोगी

HTA-5238 HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अरे हां," मीनाक्षी चंदन के बोलने से पहले ही बोल पड़ी. "अब तो दसवीं में है, तुझे बताने का ध्यान ही नहीं रहा था."

"अच्छा!" नमिता की आंखें आश्चर्य से फैल गईं. चंदन चाय रख कर रसोई में चला गया तो नमिता ने धीरे से पूछा, "मां, चंदन से अभी तक बरतन साफ करवाती हो क्या?"

"और क्या करेगा!" मीनाक्षी ने उपेक्षा के स्वर में कहा.

"पर यह ठीक नहीं, मां! उस की पढ़ाई में हरजा होता होगा. अब तुम्हें कोई और प्रबंध कर लेना चाहिए." नमिता ने अनायास ही सहानुभूति से भर कर कहा.

"पर मेरे चाहने न चाहने से भला क्या होगा. इस की मां तो सदा कर्ज में डूबी रहती है. जो कुछ वह चार घरों के बरतन मल कर कमाती है वह सब, और चंदन की कमाई भी, गांव पहुंचते ही रस्मोरिवाजों में उठ जाती है. जाती है तो कितनी सौगात वहां सब के लिए ले जाती है! इन सब बातों के लिए दोनों की कमाई पूरी नहीं पड़ती, इसी लिए कर्ज का बोझ सिर पर लाद लेती है. वह तो चंदन को इतना शौक है जो सारे काम भी निपटा लेता है और स्कूल भी चला जाता है. समचोर तो बिलकुल ही नहीं है!"

मीनाक्षी ने चंदन का पक्ष लेते हुए पूरा ब्योरा दिया और फिर रसगुल्लों की प्लेट नमिता की ओर बढ़ा कर बोली, "ये लो, एकदम ताजे लाया है चंदन. कह रहा था कि छोटी बीबीजी इतने दिनों बाद घर आ रही हैं. यह बनाऊंगा, वह बनाऊंगा."

"ओह!" नमिता हंसी तो सामने ही चंदन गरम पकौड़ियों की प्लेट लिए खड़ा मुसकरा रहा था.

"चंदन, तू तो बड़ा होशियार हो गया है! पढ़ाई में कुछ मुझ से पूछना हो तो पूछ लिया करना," नमिता ने पकौड़ी चटनी में सानते हुए बड़प्पन के भाव से कहा.

दीवाली की धूमधाम थी. हर तरफ दिन में ही बच्चे पटाखे छोड़ रहे थे. मिठाइयों और फलों का ढेर था. नमिता लक्ष्मीपूजन के लिए हार बना रही थी. तभी चंदन एक पुस्तक ले कर आ गया.

"क्या बात है, चंदन?" नमिता ने हाथ रोक कर पूछा.

"कुछ पूछना है. रास्त में आप को समय नहीं होगा," नमिता ने हार रख दिया.

"अच्छा ला, देखूं क्या है?" उस के हाथ से पुस्तक ले कर नमिता पलटने लगी. चंदन ने जिस पृष्ठ का आशय जानना चाहा, नमिता उसे बताने लगी. पर नमिता को लगा चंदन सुन नहीं रहा है, वह कुछ और ही सोच रहा है. किताब बंद कर के नमिता ने कहा, "क्या बात है, चंदन, तुम सुन तो रहे हो न?"

"जी!" चंदन अचकचा गया. ऊनी कालीन को उंगली से कुरेदते हुए बोला, "परसों भैयादूज है!"

"अरे, हां. पर तुझे क्यों याद आ रहा है?"

"मां ने मुझे बहन नहीं दी..."

"अरे, तू तो बड़ा भावुक हो रहा है!" नमिता हंस दी.

चंदन वैसे ही कालीन के मुलायम धागों से उलझता रहा, फिर धीरे से बोला, "मैं आप को दीदी कहूं?"

अचानक मीनाक्षी उधर आ गई और हंस कर बोली, "दीदी कहने से क्या होगा, चंदन, क्या नमिता तुझे टीका लगाने लगेगी?"

मीनाक्षी के व्यंग्य पर चंदन तुरंत उठ कर बाहर चला गया.

"देख लिया न, निमू, इन छोटे लोगों का कितना दिमाग खराब हो गया है!" मीनाक्षी ने नमिता के हाथ की माला उठा ली तो नमिता भी बिना कुछ बोले चुपचाप पलंग पर जा कर लेट गई.

शरत ने अपनी इकलौती बेटी को डाक्टरी पढ़ने के लिए प्रयत्न कर के अमरीका भेज दिया था. अब कई वर्ष वहां व्यतीत कर नमिता पूरी डाक्टर बन कर वापस लौटी थी. इसी खुशी में शरत ने एक शानदार पार्टी का आयोजन किया था.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुफ़्त !

एक अनोखा रोल करने वाला झुनझुना

जल्दी कीजिये ! स्टाक सीमित है.

सेरेलॅक के हर प्रमोशनल डिब्बे के साथ

इस सुंदर, रंग-बिरंगे, झुनझुने को ज़मीन पर रखकर हल्का सा सरकाते ही वह रोल करने लगता है. इसे अपने मुन्ने के हाथ में दीजिए और देखिए मुन्ने को कितना मज़ा आता है उसके साथ खेलने में. सेरेलॅक के हर प्रमोशनल डिब्बे के साथ आपको यह अनोखा झुनझुना मुफ़्त मिलेगा.

४ महीने की उम्र से आपके शिशु को दूध के साथ-साथ ठोस आहार की भी ज़रूरत होती है. यही समय है उसे सेरेलॅक का अनूठा लाभ देने का.

पौष्टिकता का लाभ : सेरेलॅक का प्रत्येक आहार आपके शिशु को सारे पौष्टिक तत्व प्रदान करता है – प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, फ़ैट, विटामिन तथा मिनरल. सेरेलॅक में शिशु की विशेष आवश्यकताओं के अनुसार सब कुछ संतुलित और सही रूप में है – यानि संपूर्ण पोषाहार!

स्वाद का लाभ : सेरेलॅक पौष्टिक होने के साथ-साथ स्वादिष्ट भी है. इसका निराला स्वाद शिशुओं को बहुत भाता है.

समय का लाभ : सेरेलॅक पहले से ही पकाया हुआ है और इसमें दूध और चीनी मौजूद है. इसे उबाले हुए गुनगुने पानी में मिलाइए और बस शिशु को खिलाइए.

पसंद का लाभ : आहार में शिशु को और आनंद आए, इसके लिए सेरेलॅक के दो-दो स्वाद–शिशु को चौथे महीने से दीजिए सेरेलॅक व्हीट, छठे महीने से दीजिए सेरेलॅक एपॅल.

कृपया डिब्बे पर दिए गए निर्देशों का सावधानी से पालन कीजिए ताकि इसके बनाने में स्वच्छता रहे और आपके शिशु को मिले स्वस्थ और संतुलित पोषाहार.

R K SWAMY/FSL/5015-HI

अपने शिशु को दीजिए सेरेलॅक का अनूठा लाभ !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मीनाक्षी अत्यंत व्यस्त थी. तभी आने वाले मेहमानों की सूची देखतेदेखते नमिता एकाएक चौंक उठी, "अरे, मां!"

"क्या है, निमू?" मीनाक्षी हलवाई को आसन दे रही थी, वैसे ही हाथों को झाड़ते हुए आ गई.

"ये आने वाले मेहमानों में चंदन का नाम भी लिखा है, देखो न!"

"हां, तेरे पापा ने उसे भी पत्र डाला था, शायद आ जाएगा."

"पर चंदन है कहां? मैं ने तो समझा था, गांव चला गया होगा, पर..."

"तुझे इतने दिनों का कुछ हाल मालूम है नहीं! है तो इसी शहर में, पर यहां से काफी दूर है. इसी वर्ष इंजीनियर बन गया है."

"क्या?" नमिता ने चौंक कर मां की ओर देखा.

"हां, निमू, लड़का था अच्छी जेहन का. सदा प्रथम आता था क्लास में. तेरे पापा ने खुशामद कर के इंजीनियरिंग में दाखिला दिलवा लिया था. पहले मां कर्ज लेती रही, फिर उस का वजीफा बंध गया. कुरमी होने से कितनी ही सहूलतें वैसे ही मिल गईं!"

नमिता विचारों में डूब गई. फिर एक लंबी सांस भर कर बोली, "मां, तुम्हें याद है, उस ने एक दिन मुझे दीदी कहने की इच्छा प्रकट की थी! उस ने देखा था कि मेरा कोई भाई नहीं है. शायद उसे विश्वास रहा होगा कि मैं उस को अवश्य भाई मान कर टीका करूंगी, पर..."

"पर क्या! तुझे इतना ही शौक है तो अब की रक्षाबंधन पर राखी बांध देना उसे."

"नहीं मां! जब उस के मन में यह कोमल भावना जागी थी तब तुम ने उस की उपेक्षा की, उसे छोटी जाति वाला कह कर. अब वह एक प्रतिष्ठित व्यक्ति है. उस की जाति की मुहर उस के नाम के आगे से उठ गई है. ऐसी दशा में यदि हम कुछ भी अन्यता उसे देने का प्रयत्न करेंगे तो सब से

जर्फ

कभी नजर पे बिठाओ,
कभी गिराओ तुम,
हमारा जर्फ न इस तरह
आजमाओ तुम.

—प्रदीप वर्मा 'सोना'

पहले वह यही सोचेगा कि यह सब मेरे पद को मिलने वाला प्यार है. वह इसे दिखावा मान कर उस कोमल भावना से अब न स्वीकार सकेगा."

पार्टी का शोर कम हो चुका था. सहेलियों से घिरी नमिता मीनाक्षी के निकट पहुंच कर चारों ओर देखती हुई कहती, "क्यों, मां, चंदन पांच मिनट भी नहीं ठहरा, भला क्यों? मैं ने तो दूर से ही देखा, वहीं से उस ने हाथ जोड़ लिए और जब तक मैं इधर का साथ छोड़ कर उधर पहुंची, वह जा चुका था."

"अफसर जो बन गया है, निमू, दिमाग तो इन्हीं लोगों के आसमान पर चढ़ते हैं," कह कर मीनाक्षी अपनी हमजोलियों में बढ़ गई.

सहेलियां मेज पर फैले उपहार पलट रही थीं. यह ताऊजी की ओर से, यह मामाजी की ओर से...यह...यह किस का है भला? नमिता गुलाबी कागज में लिपटा पैकेट संभाल कर खोलती है. यह तो उस के हाथ में किसी ने नहीं रखा था. नाइलोन जार्जेट की कढ़ी हुई एक साड़ी उस के हाथों में चमक उठती है.

"आहा! कितनी सुंदर!" सभी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सहेलियां एक साथ बोल उठती हैं. नमिता एक छोटा सा कार्ड उठा लेती है जो साड़ी के कोने में सजा है. गौर से देखती है, कार्ड पर लिखा है, "प्यारी दीदी को मेरी तुच्छ भेंट. चंदन."

नमिता बारंबार कार्ड को पढ़ती है. अचानक भाग कर मीनाक्षी के पास पहुंचती है, "देखा, मां! चंदन केवल मनुष्य है-एक प्यार भरे मन वाला प्राणी. न वह छोटा है, न तुच्छ है, और न गरबीला ही है."

नमिता की आंखें भर आईं तो मीनाक्षी धीरे से बोली, "सच तो है. दोनों इसी आंगन में पले, बड़े हुए, फिर यदि वह तुझे दीदी मान कर पाना चाहता है तो उस का क्या दोष!"

"तो चलो न, मां, गाड़ी निकलवा लो. हम अभी उसे बुला कर लाएंगे और कहेंगे कि बहन को उपहार यों छिप कर नहीं दिया जाता, सब के सामने दिया जाता है."

"मैं तेरे पापा को कहती हूं. तुम दोनों ही जा कर उसे बुला लाओ और कहना, मैं ने कहा है कि वह दोचार दिन यहीं रहे."

मीनाक्षी ने सब की दृष्टि से छिपा कर अपनी गीली आंखें पोंछ ली थीं. ●

राष्ट्रीय पुनरुत्थान के लिए सरिता का रचनात्मक आंदोलन

शैक्षिक सुधारों की आवश्यकता

शैक्षिक संस्थानों में अनुशासन की भावना उत्पन्न करने के लिए और जनता के धन की बरबादी को रोकने के लिए:

● छात्र संघों की सदस्यता अनिवार्य नहीं होनी चाहिए. छात्र यदि चाहें तो स्वेच्छा से इस के सदस्य बनें.

● छात्र संघों के लिए चंदा स्वयं छात्रों द्वारा इकट्ठा किया जाना चाहिए. छात्र संघों के चुनावों की व्यवस्था भी विश्वविद्यालय अथवा कालिज के अधिकारियों की सहायता अथवा हस्तक्षेप के बिना स्वयं छात्रों द्वारा की जानी चाहिए.

● छात्रों/अध्यापकों के प्रदर्शनों या हड़तालों के कारण जितने दिन कालिज/विश्वविद्यालय बंद रहें. उतने दिनों का वेतन अध्यापकों को नहीं दिया जाना चाहिए.

अध्यापक कारखानों के प्रबंधक नहीं हैं जो मजदूरों की हड़ताल रोक नहीं सकते या रोकने की उन की कोई जिम्मेदारी नहीं होती, और इसलिए हड़ताल के दिनों का भी उन्हें पूरा वेतन मिलता है.

अध्यापकों का कर्तव्य है कि वह छात्रों को शिक्षा दें, उन की सहायता करें और उन के चरित्र का निर्माण करें तथा उन के आचरण को सुधारें. यदि छात्र दुर्व्यवहार करते हैं तो इस का मुख्य कारण यह है कि अध्यापक उन को शिक्षा देने और उन का मार्गदर्शन करने में असफल रहे हैं. वैसे भी छात्रों की अधिकतर हड़तालें और प्रदर्शन स्वयं अध्यापकों द्वारा अपने गुप्त उद्देश्यों की पूर्ति के लिए कराए जाते हैं.

● शिक्षा पर जो खर्च आता है, वह सारा खर्च अथवा उस का अधिकांश स्वयं छात्रों को उठाना चाहिए. अभी वे कुल खर्च का केवल 5% ही वहन करते हैं. प्राथमिक कक्षाओं से ऊपर की कक्षाओं की शिक्षा वित्तीय दृष्टि से आत्मनिर्भर होनी चाहिए. दुनिया के सब से अधिक गरीब देशों में जिस देश का नंबर तीसरा है, उस के भूखे और गरीब लोग उन छात्रों की ऐयाशी के लिए धन क्यों दें जो कक्षाओं में बैठते नहीं और जो उन सुविधाओं का दुरुपयोग कर रहे हैं जिन पर भारी खर्च किया जाता है.

जो छात्र वास्तव में गरीब हैं और शिक्षा को गंभीरतापूर्वक लेते हैं, उन को छात्रवृत्ति दी जा सकती है या उन्हें ऋण दिया जा सकता है जिसे वे बाद में चुका दें.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काश मैं भी छोटी बहू होती

लेख • नरेंद्र कौर छाबड़ा

एक तो इतनी समझदार, शिक्षित, आकर्षक पति मिलेगा, उस पर छोटी बहू का दर्जा. उसे महसूस हुआ जैसे उस का आंचल खुशियों से भर गया है.

सुप्रिया पाठक को जब ज्ञात हुआ कि उसे पसंद कर लिया गया है तो उस का मन मयूर नाच उठा. और जब उसे मालूम हुआ कि ससुराल में वह छोटी बहू बनेगी तो ऐसा लगा मानो सोने में सुहागा मिल गया.

छोटा शब्द 'छोटे' का आभास मात्र है. असल में तो छोटे के फायदे ही फायदे हैं. सभी बड़े भाईबहनों, मातापिता का दुलार, गलती पर तत्काल क्षमादान (छोटा है जाने दो) दायित्वों के बोझ से मुक्ति और... सोचतेसोचते सुप्रिया कल्पना की दुनिया में खो गई.

आखिर ऐसा क्या कारण है कि अधिकांश लड़कियों के मन में यह आकांक्षा रहती है कि ससुराल में छोटी बहू बनें? इस के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जवाब में कुछ अनुभवों पर गौर कीजिए.

एक परिचिता ने बताया कि वह ससुराल में सब से बड़ी बहू है. अपने अनुभव सुनाते हुए वह बोली, "मेरे पति के तीन भाई हैं. जब मेरी शादी हुई तो पहली बहू होने के नाते मुझे अच्छी इज्जत मिली. सासससुर, ननदों का व्यवहार भी अच्छा रहा. लेकिन तीन वर्ष बाद जब दूसरी बहू आई तो धीरेधीरे सब नई बहू को अधिक महत्त्व देने लगे. उन के व्यवहार में भी फर्क आने लगा. मुझे कोई वजह समझ में नहीं आई. पर फिर भी मैं अपनेआप को परिस्थितियों के अनुकूल ढालने लगी. नई बहू अपनी मरजी से काम करती. मैं ने उसे कभी कोई काम करने के लिए नहीं कहा. कई लोग सोचते हैं बड़ी बहू का दबदबा होता है. जेठानी होने के नाते वह देवरानी को कुछ भी कह सकती है पर आज के समाज में यह धारणा शतप्रतिशत निर्मूल है.

"कुछ समय पश्चात तीसरे भाई की शादी हुई तो दूसरी बहू का हाल मेरे जैसा हो गया और जब चौथे यानी सब से छोटे की शादी हुई तो जैसे घर का वातावरण ही बदल गया. ननदें, सास सभी छोटी बहू को खुश करने के प्रयास में लग गईं. जो सास कभी हमारी तारीफें करते नहीं थकती थीं, आज सिर्फ छोटी बहू पर ही जान छिड़कती हैं. बाकी तीनों की तो जबरदस्ती संबंध ढोए जाने जैसी हालत है. न जाने छोटी बहू ने क्या रोब डाला है कि उन्हें उस के सिवा कोई शुभचिंतक नजर ही नहीं आता. वैसे, छोटी बहू में ऐसी कोई असाधारण योग्यता भी नहीं है."

हमारे समाज में आम तौर पर मांबाप अपने छोटे बेटेबहू के साथ रहते हैं. इसलिए शायद उन्हें यह आशंका रहती है कि अगर छोटी बहू को खुश नहीं रखा तो कहीं बेटा साथ रखने में आनाकानी न करने लगे. बुढ़ापे में फिर कहां ठौरठिकाना ढूंढ़ते फिरेंगे? शायद इन्हीं विचारों के वशीभूत हो कर वे छोटे बेटेबहू को जरूरत से ज्यादा प्यार व महत्त्व देने लगते हैं. लेकिन इस के बावजूद, सुखी भविष्य की क्या गारंटी है?

संध्या की सास ने उस के बड़ी बहू के रूप में आने के बाद रसोई को एक तरह से तिलांजलि दे दी थी. वह अपना सारा समय सहेलियों के घर आनेजाने या बच्चों को खिलाने में ही व्यतीत करने लगी थी. संध्या को जब कभी बहुत थकान हो जाती तो सोचती काश, मांजी कुछ मदद कर दें. लेकिन मांजी तो रसोई में फटकती ही नहीं थीं.

समय अपनी गति से बढ़ता चला गया. संध्या के दोनों देवरों की शादी हो गई. समय के साथ दोनों भाइयों ने अपनीअपनी गृहस्थी अलग बसा ली. सासससुर सब से छोटे बेटेबहू के साथ रहने लगे.

कुछ समय पश्चात संध्या को पता लगा कि छोटी बहू तो बड़े रोब से रहती है. एक समय खाना बनाती है और दूसरे समय मांजी को बनाना पड़ता है. यही नहीं, मांजी घर के दूसरे कार्यों में भी पूरा हाथ बंटाती हैं. और तो और जब महरी नहीं आती तो सफाई तक करती हैं. इस के बावजूद उन के चेहरे पर कोई शिकन नहीं, बल्कि वह छोटी बहू की तारीफें ही करती हैं.

संध्या को बड़ा आश्चर्य हुआ. मांजी में यह अचानक बदलाव कैसे आ गया? उसे बुरा भी लगा कि उस ने तो अपने समय में मांजी से न कोई काम कराया, न कोई तकलीफ दी और

वैसे तो सभी बेटे बहुओं के प्रति मां के दिल में समान स्नेह होना चाहिए. पर यदि आप के दिल में छोटे बेटे बहू के लिए अधिक प्यार उमड़ता है तो बेशक उसे भरपूर स्नेह दीजिए. लेकिन अपने व बड़े बेटे बहुओं के सम्मान कीबिना पर नहीं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

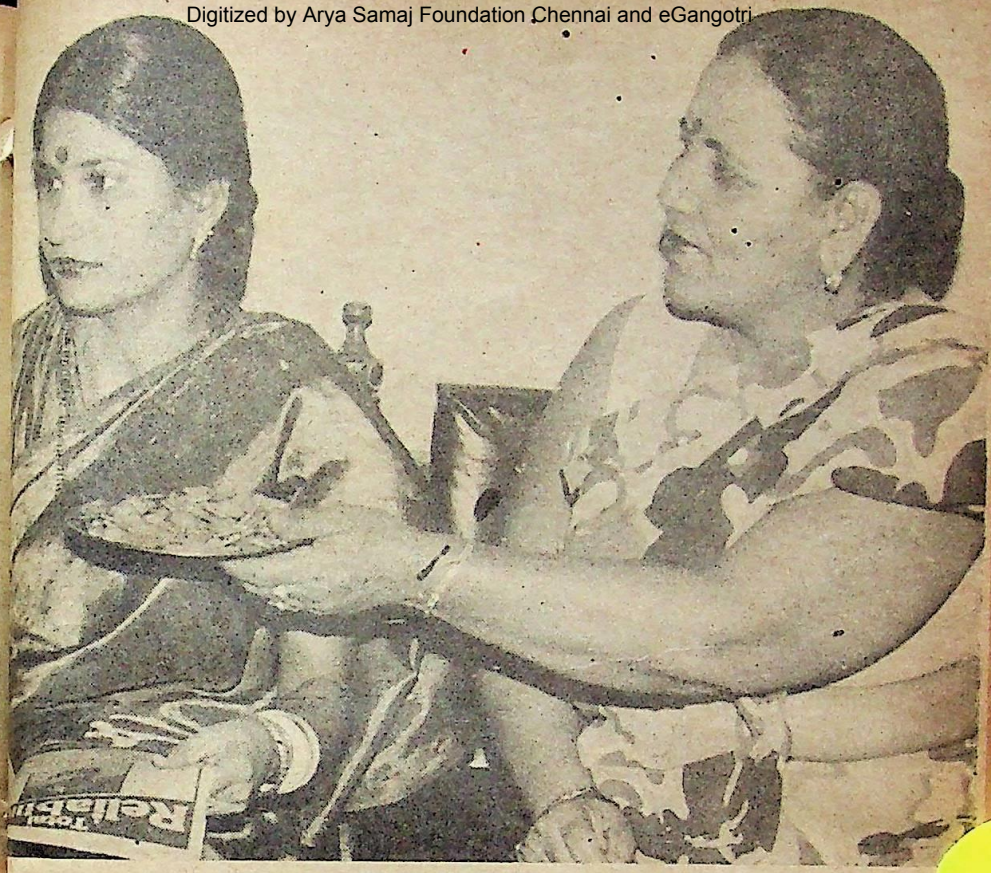

छोटी बहू को मनाती हुई सास : उस की गलती पर उसे डांटना, समझाना भी सास का फर्ज है.

भी शिकायत का मौका दिया. फिर भी ोंने उस की तो कभी प्रशंसा नहीं की और छोटी बहू की तारीफ में कसीदे पढ़ रही क्यों? काश, वह भी बड़ी बहू के बजाए ी बहू होती !

दोतीन बार उस ने मांजी से कुछ दिन े घर रहने के लिए आग्रह किया ताकि ें आराम मिल सके. लेकिन मांजी को तो ी बहू की इतनी फिक्र थी (या शायद डर कि वह एक दिन में ही वापस छोटे बेटे के आ गईं.

यह स्वाभाविक है कि मां को अपने सब ोटे बेटे के साथ सब से अधिक स्नेह होता शायद इसी स्नेह के वशीभूत हो कर वह ी उम्र छोटे बेटे के साथ ही रहना चाहती एक तरह से यह बात भी ठीक है. लेकिन े के सामने बड़ों को कम सम्मान या स्नेह भी तो पक्षपात है. क्या मां के लिए ऐसा ना उचित है? अगर मां ही बड़े बेटेबहुओं की अवहेलना करने लगेगी तो छोटे बेटेबहू को अपने भाईभाभियों का तिरस्कार करने में कितना समय लगेगा? अगर छोटी बहू बड़ी बहुओं की तुलना में अधिक गुणवान व योग्य है तो वह बेकार में रोब नहीं गांठ रही, लेकिन अगर वह रूपवान है या अधिक दहेज लाई है तो उस का रोब अधिक बढ़ जाता है. वह अपनेआप को अधिक बुद्धिमान व कुशल समझती है.

यह जरूरी नहीं कि मांबाप छोटे बेटेबहू के ही साथ रहें. अगर उन के बड़े बेटों में से कोई उन्हें अधिक सम्मान, स्नेह, आदर देता हो और अपने साथ रखने का आग्रह करता हो तो उस के साथ रहने में क्या बुराई है? कुछ पुराने रीतिरिवाजों के अनुसार छोटे बेटेबहू के साथ रह कर छोटी बहू के दबदबे में रहने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्लिनिक स्पेशल शैम्पू आपको डैण्ड्रफ़ से छुटकारा दिलाता है. फिर तो आप महफ़िल पर छा जाते हैं.

जब डैण्ड्रफ़ के कारण महफ़िल में आपकी शान घटती नज़र आये तो स्पेशलिस्ट से शैम्पू कीजिए. इसका मृदु-मुलायम झाग बालों को साफ़ करता है जबकि इसमें मिले विशेष तत्त्व डैण्ड्रफ़ की रोकथाम करते हैं. तभी तो आपके बाल बेहद दिलकश होकर निखर आते हैं—साफ़ और स्वस्थ बाल तथा खुजली का नामोनिशान नहीं.

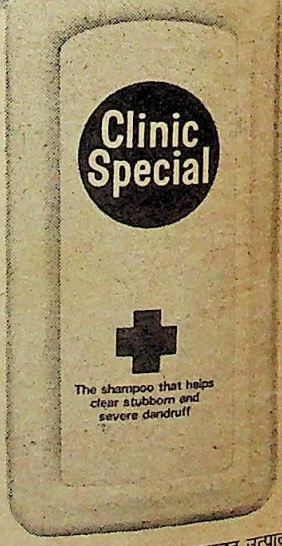

क्लिनिक स्पेशल

शैम्पू

साफ़, स्वस्थ और डैण्ड्रफ़ रहित बालों के लिए.

हिन्दुस्तान लीवर लिमिटेड का उत्कृष्ट उत्पाद

HTA 1802

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बेहतर है सम्मान, स्नेह देने वाले बड़े बहू के साथ रहा जाए. अपना आत्मसम्मान ना क्या कम दुखदायी है? और जो व्यक्ति ने जीवन में सदा रोब से रहा हो, बुढ़ापे में त्मसम्मान खोना या उस पर दूसरों का रोब ना उसे अंदर तक विचलित कर जाता है.

भले ही संध्या की सास छोटी बहू की ीफें करती थीं, पर बाद में पता चला कि एक तरह की मजबूरी की जिंदगी जी रही

दरअसल अपनी जायदाद उन्होंने लाड़ में कर जीते जी छोटे बेटे के नाम कर दी थी. अगर वह छोटी बहू पर रोब डालें तो उन पत्ता ही कटने का डर था. बहू भी उन की मजबूरी समझती थी. अतः चुपचाप बहू सहयोग दे कर समय बिताने में ही उन्होंने समझी.

कहने का तात्पर्य यह नहीं कि हर छोटी इसी प्रकार की होती है. हर नियम के ाद होते हैं. इसी तरह, कई बहुएं तो ाव में काबिले तारीफ होती हैं. बड़ों का आदर करना, समझदारी से काम करना, जिम्मेदार स्वभाव, शालीनता आदि गुणों से वे सचमुच घर को सुखमय बना देती हैं.

सास का फर्ज बनता है कि सभी बेटेबहुओं को समान स्नेह, प्यार दें. छोटी के साथ बेशक अधिक स्नेह उमड़ता है तो दें पर उस के रोब से दब कर न रहें. जब आप ने किसी बड़ी बहू को रोब नहीं डालने दिया, सदा नियंत्रण में रखा, चाहे वह कितनी ही योग्य, कुशल, विनम्र रही हो तो फिर छोटी के साथ ऐसा क्यों नहीं? गलती करने पर उसे समझाएं, न कि सब्र का घूंट पी कर रह जाएं. चुप रहने से तो उसे अपनी गलती का एहसास ही नहीं होगा.

सास सही नियंत्रण व पक्षपात रहित व्यवहार से सभी बहुओं की चहेती बन सकती है. उस के सही व्यवहार व उचित मार्गदर्शन से छोटी बहू में रोब गांठने की लालसा पनप नहीं पाएगी और किसी बड़ी बहू को यह न कहना पड़ेगा, "काश, मैं भी छोटी बहू होती!" ●

नन्हें मुन्नों की रंगीन पाक्षिक पत्रिका

चंपक के हर अंक में सुंदर मनमोहक सचित्र कहानियां, शिक्षाप्रद लेख, व्यंग्य चित्र और चित्र पहेलियां प्रकाशित होती हैं जो आकर्षक रंगों में छपी होती हैं.

हर महीने में दो बार बच्चे चीकू चंचू और पप्पू के साहसिक कारनामों का आनंद उठाते हैं.

चंपक की सामग्री आपके बच्चों के लिए ज्ञान के नए मार्ग खोलती है, बच्चों का चरित्र बनाती है, उनका स्वस्थ मनोरंजन करती है.

वि वि 190

चंपक

अपने बच्चों को आज ही एक प्रति लेकर दें.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवन की मुसकान

चार बरस पहले जब मैं अकेला रह कर नौकरी करता था तो एक बार मैं ताजमहल घूमने गया. वहां बस के इंतजार में मैं खड़ा था कि इतने में एक पुलिस की जीप वहां आ कर रुकी. उस में से एक इंस्पेक्टर निकला. उस ने मुझे डांटते हुए मेरी तलाशी ली और बोला, "बता जेब काटने वाला औजार कहां रख आया है."

वह मुझे जेबकतरा समझ कर दुर्व्यवहार कर रहा था और मैं बड़ी लज्जाजनक स्थिति में फंसा हुआ था. इतने में वहां उपस्थित दंपती ने हमारे पास आ कर इंस्पेक्टर से कहा, "इसे छोड़ दीजिए. यह हमारे घर के पास रहता है."

उन के कहने पर इंस्पेक्टर ने मुझे छोड़ा.

—राकेशकुमार 'शरद'

*

उस दिन मैं कालिज में प्रवेश लेने जा रही थी. बस में भीड़ अधिक होने के कारण मैं ने अपनी अंक तालिका और अन्य प्रमाण पत्रों का लिफाफा सीट पर बैठे एक व्यक्ति को थमा दिया. विद्यालय आने पर मैं उतर गई. जल्दबाजी में उस सज्जन से प्रमाणपत्रों का लिफाफा लेना भूल गई.

दूसरे दिन निराशा से भरी जब मैं दूसरी अंक तालिका और प्रमाणपत्र लेने सेंट्रल बोर्ड के दफ्तर गई तो वहां संबंधित अधिकारी ने मुझे एक लिफाफा देते हुए बताया कि एक व्यक्ति कल ही इसे यहां दे गया था. मैं आश्चर्य और खुशी से भर उठी क्योंकि उस में प्रमाणपत्र सुरक्षित थे.

—वंदना वाग्मी

*

मैं अपने परिवार और सास के साथ रेलगाड़ी से यात्रा कर रहा था. एक स्टेशन पर एक महिला 2-3 माह के बच्चे को गोद में ले कर हमारे डब्बे में चढ़ी और हम से बैठने के लिए थोड़ी सी जगह मांगने लगी. लेकिन मेरी सास तुरंत बोल पड़ी, "यहां कोई जगहवगह नहीं है."

वह महिला वहीं एक तरफ खड़ी हो गई. कुछ देर बाद हमारा 6 महीने का बच्चा जोरजोर से रोने लगा. मेरी पत्नी ने थैले में से दूध की बोतल निकाली, लेकिन दूध फट गया था.

तभी वह महिला मेरी पत्नी से बोली, "बहनजी, लगता है आप का बच्चा बहुत भूखा है, मेरे पास दूध की एक बोतल है. आप इसे पिला दीजिए. मेरा बच्चा तो सो रहा है और मेरा स्टेशन भी अब आने वाला है."

—हनुमान प्रसाद दुबे

*

मेरे एक मित्र सरकारी कर्मचारी हैं. एक बार उन के ही कार्यालय के एक कर्मचारी की मक्कारी और धोखेबाजी के कारण उन्हें निलंबित होना पड़ा. अचानक उन के सामने अपने परिवार के भरणपोषण की विकट समस्या आ खड़ी हुई.

लेकिन उस समय उन के आश्चर्य और खुशी का ठिकाना न रहा जब उन के कार्यालय के कुछ कर्मचारी आपस में कुछ धन एकत्र कर के उन्हें जबरदस्ती दे गए. पूरे निलंबन काल में वे लोग किसी न किसी रूप में उन को मदद पहुंचाते रहे. फलस्वरूप उन के निलंबन का उन के परिवार पर कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ा.

—डा. झूलन सिंह

इस स्तंभ के लिए अपने तथा अपने संबंधियों के अनुभव भेजिए. प्रत्येक प्रकाशित अनुभव पर 30 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. अपने अनुभव इस पते पर भेजें. संपादकीय विभाग, सरिता, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लड़की की ससुराल में मायके वालों का हस्तक्षेप

लेख • कुमुद सिंह

लड़की के युवा होते ही उस के विवाह की चिंता हर मांबाप को सताने लगती है. कारण यह नहीं है कि मांबाप अपनी लड़की से ऊबने लगते हैं या फिर उस का भरणपोषण नहीं कर सकते हैं. कारण यह है कि हमारे समाज में विवाह एक अनिवार्य संस्कार माना जाता है. बेटी के लिए जो घर एकदम अपरिचित, अजनबी सा होता है, कुछ समय बाद वह उस का अपना हो जाता है और वह वहां पर पूरी तरह से रचबस जाती है. अपने मांबाप के घर से उस का लगाव, अपनत्व वहीं बना रहता है, लेकिन फिर भी कुछ ठंडापन आ जाता है.

शादी के बाद मातापिता का दायित्व उतना नहीं रह जाता जितना कि शादी के पूर्व था. पर उन के प्राकृतिक संबंध तो कभी भी समाप्त नहीं हो सकते हैं और वे संबंध ऐसे ही बने रहते हैं. यानी कि उन का समय असमय पर आनाजाना और वहां पर रहना. मांबाप को लड़की की शादी के बाद अपना प्यारदुलार दरशाने में कुछ संयम, सावधानी अवश्य बरतनी चाहिए. अन्यथा इस के परिणाम कभीकभी बड़े ही दुखद और अप्रिय होते हैं और फिर दोनों घरों के संबंधों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में एक दरार सी आ जाती है, जो कभी भी भरने वाली नहीं होती है.

कहीं दूर जाने की आवश्यकता नहीं है. मेरी बड़ी बहन के देवर की शादी हुए अभी अधिक समय नहीं हुआ है, पर उस के बावजूद दोनों परिवार के आत्मीयतापूर्ण संबंधों में दरार पड़ ही गई है. कारण, जब उन का विवाह हुआ था तो रोज ही उस के मायके वाले आ कर खड़े होने लगे. मामला नयानया था, इसलिए ससुराल वाले भी उन लोगों को हाथोहाथ रखते थे. कुछ समय बीतने के बाद वे लोग उन के घरेलू मामलों में भी हस्तक्षेप करने लगे. काम के बोझ को ले कर अपनी लड़की को भड़काने लगे. उन के भड़काने का प्रभाव यह हुआ कि देवरानी व जेठानी के मधुर संबंधों में तनाव उत्पन्न हो गया और स्थिति यहां तक आ गई कि ससुर को विवश हो कर दोनों को अलग करना पड़ा.

अब उन लोगों ने अपने दामाद की आदतों को ले कर लड़की को भरना प्रारंभ किया. चाय बहुत पीते हैं. इतनी चाय नहीं पीनी चाहिए. इस का स्वास्थ्य पर प्रभाव पड़ताहै आदि. रोजराज पत्नी से यह सुन कर पति महोदय का मूड आफ हो गया. और उन्होंने अपनी पत्नी को खूब कहासुना. उस के बाद उन्होंने सासससुर को भी अनावश्यक हस्तक्षेप करने के लिए टोक दिया कि छोटीछोटी बातों में सलाह मत दीजिए. केवल चाय ही पीता हूं, अगर शराब पीता होता तो फिर आप का कहना उचित भी था. सासससुर अपना सा मुंह ले कर रह गए. जब यह बात लड़की को पता चली तो फिर काफी दिनों तक दोनों की बोलचाल बंद रही. और अब सासससुर का आनाजाना तो लगभग बंद ही हो चुका है.

देखा आप ने लड़की की ससुराल में आवश्यकता से अधिक हस्तक्षेप करने का परिणाम. मामला कहां तक पहुंच सकता है, कुछ कहा नहीं जा सकता. इसलिए शादी के बाद लड़की से उतने ही संबंध रखिए जिस से लड़की को यह कभी महसूस न होने पाए कि वह आप लोगों पर एक भार थी, एक बोझ थी. संबंध बनाए रखने से लड़की को मानसिक शांति, सांत्वना मिलती है मातापिता, भाईबहन तो सब अपने ही होते हैं. नए घर में जा कर उसे एडजस्ट करना पड़ता है जिस में बड़ी मेहनत करनी पड़ती है. पतिपत्नी के संबंध मधुर आत्मीयतापूर्ण बने रहें, इस के लिए लड़की की ससुराल वालों से संबंध बनाए रखने में काफी सतर्कता व बुद्धिमानी की आवश्यकता होती है क्योंकि ये रिश्ते तो कांच की तरह नाजुक और कोमल होते हैं. इसलिए कुछ बातों पर ध्यान देना आवश्यक है जिन्हें अपना कर आप अपनी लड़की से संबंध भी बनाए रख सकते हैं और उस की ससुराल वालों से भी मधुर संबंध बने रह सकते हैं.

अगर लड़की की ससुराल शहर के अंदर ही है तो फिर इस का यह मतलब तो नहीं होता कि आप रोजरोज ही उस के घर जाएं. जो लोग रोजरोज लड़की की ससुराल में जा कर खड़े होते हैं या फिर जा कर कुछ दिन रहते हैं. उन्हें धीरेधीरे वह आदर सत्कार मिलना समाप्त हो जाता है, जिस की वह हर समय कामना करते हैं. अतः अच्छा यही होगा कि आप अपनी लड़की की ससुराल केवल गिनेचुने अवसरों पर ही

लड़की की ससुराल से उस के मायके वालों का संबंध कांच की तरह नाजुक होता है. इसलिए बेटी की शादी के बाद उस की गृहस्थी में दखलअंदाजी कर के कड़वाहट घोलने के बजाए एक दूरी रखते हुए अपनी प्रतिष्ठा बनाए रख कर इस रिश्ते को मधुर बनाएं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लड़की की ससुराल जा कर छोटीछोटी बातों में हस्तक्षेप करना कहां तक उचित है?

शर्म, झिझक स्वयं ही खत्म हो जाएगी और आप वहां पर हर विषय में अपनी दखलअंदाजी करने लगेंगे. क्या अच्छा है, क्या बुरा? किस तरह से यह काम करना चाहिए और यह नहीं करना चाहिए?

यह अनावश्यक हस्तक्षेप करना ही बुराई को जन्म देता है. हर घर के अपने तौरतरीके अलगअलग होते हैं. आप की लड़की को अपने पति के यहां के तौरतरीकों से अपनेआप को एडजस्ट करना पड़ेगा और इस में आप की दखलंदाजी खलने वाली होती है. अधिक दिन तक रहने से आप उस के घर की हर प्रकार की छोटी से छोटी बातों से परिचित हो जाते हैं.

हो सकता है, आप को उस के घर की कोई बात पसंद नहीं आए और अपनी लड़की के प्यार के कारण भावावेश में आ कर आप अपनी दखलंदाजी प्रारंभ कर दें. किंतु याद रखिए, अपने परिवार में, अपने घर में कोई भी किसी बाहरी व्यक्ति की दखलंदाजी पसंद नहीं करता है. वह अपने ही तरीके से काम करना चाहता है. कारण, उस में उसे आराम मिलता है और फिर उस की आदत पड़ी हुई है.

बारबार जाने से या अधिक दिनों तक रहने से भी आप को ऐसा आभास हो सकता है कि आप की लड़की को यह परेशानी है, वह परेशानी है, आदि. जैसा कि उपर्युक्त उदाहरण में हुआ था. यों तो कोई भी समझदार लड़की इन सब परेशानियों को अपने घर वालों को नहीं बताती है, पर रोजरोज आनेजाने से आप को उस की एकएक बात का पता चल जाता है और फिर आप एक न एक दिन उस कमी की ओर संकेत कर बैठते हैं, जिस से वह परेशानी दूर

...एं. जिस से आप की मर्यादा, सम्मान ...वत बना रहे. साथ ही ऐसे अवसरों पर ...ी जाने से कदापि नहीं चूकें, जब आप की ...स्थिति वहां पर अनिवार्य हो. जैसे, किसी ...बीमार होने पर या शादी ब्याह का समय.

यहां एक बात ध्यान देने योग्य है. प्रायः ...ह भी देखा जाता है कि अगर ससुराल ...हर में होती है तो लड़की के मायके वाले ...र मौके पर आ कर खड़े हो जाते हैं. अगर ...र होती है तो फिर किराए के चक्कर में ...ने से कतराते हैं. मात्र किराए के चक्कर ...आ कर जाने से कतराना अनुचित है. दूर ...ने का मतलब यह तो नहीं है कि आप ...पनी लड़की से संबंध समाप्त कर लेंगे? ...प वर्ष में एकाध बार ही उस के यहां जाएं, ...र जाएं अवश्य. और जाते समय तीन चार ...न का कार्यक्रम बना कर जाएं, जिस से पूरे ...ों की कमी आप पूरी कर सकें. आप की ...ड़की को भी यह महसूस न होने पाए कि ...प उसे अब उतना प्यार नहीं करते हैं ...तना पहले करते थे.

लड़की की ससुराल चाहे दूर हो या ...स, लड़की के घर अधिक दिनों तक नहीं ...हना चाहिए. अधिक दिनों तक उस के यहां ...हने से मधुर और आत्मीयता पूर्ण संबंधों में ...रार पड़ती है. कारण, जब आप उस के यहां ...धिक दिनों तक रहेंगे तो फिर आप की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो सके और लड़की आराम से रह सके. किंतु आप के द्वारा किया गया यह हस्तक्षेप कहां तक उचित है, यह तो आप नहीं समझ सकते हैं और फिर वे लोग किस रूप में उसे लेते हैं, यह भी आप नहीं समझ सकते हैं. हो सकता है, आप के द्वारा किया गया हस्तक्षेप आप के मधुर संबंधों में हमेशा हमेशा के लिए दरार पैदा कर दे.

लड़की को तो पति और ससुराल वालों के साथ सदैव रहना है. इसलिए वे लोग तो कुछ दिनों बाद फिर एक हो जाएंगे. पर आप ही सदैव के लिए कट जाएंगे. इसलिए इन सब बातों से दूर रहना ही आप के लिए उचित है जिस से संबंध बराबर बने रहे. फिर शादी के बाद हर लड़की को ससुराल में अपने पति और सासससुर के निदेशानुसार ही चलना पड़ता है. यह हमारे यहां का सामाजिक परिवेश का ढांचा है. इसे क्यों भूलते हैं? इसे भी तो आप याद रखिए.

कुछ ध्यान देने योग्य बातें

एक बात और ध्यान देने योग्य है, वह यह कि लड़की के घर पहुंचने पर खानेपीने का चक्कर न ही पालें तो अच्छा रहता है. आप जहां पर बिठाए जाएं वहीं बैठें. बिना मतलब हरेक से बात करने का भी प्रयास न करें. मकान में कितनी जगह है, कौन सा सामान कहां रखा है. लड़की को कौन सा कमरा दिया गया है. उस में कितनी जगह है. दहेज में दिया गया सामान कहां पर रखा हुआ है. इन सब बातों में आप अपनी दिलचस्पी न लें. इन सब से आप को कोई प्रयोजन नहीं है. दहेज में आप ने सामान दे दिया है, अब वह कहां है, इस से आप को कोई सरोकार नहीं रह गया है.

अपनी लड़की की सास से, अगर वह पसंद न करें तो आप हंसी मजाक न करें. लड़की की ननद, देवर से भी आप औपचारिक-बातें ही करें और उन्हें किसी भी मामले में अपनी ओर से सलाह, सुझाव न दें. अगर आप उस के यहां कुछ दिन रहते हैं तो फिर अपने सारे काम उन के अनुसार ही करने का प्रयास करें, जिस से उन लोगों को परेशानी न होने पाए.

समय के बदलाव के साथसाथ अपने व्यवहार में भी बदलाव लाना आवश्यक होता जा रहा है. अब वह समय नहीं रह गया है कि लड़की जिस गांव में ब्याही हो, उस गांव का पानी न पिया जाए? विवाह के बाद भी उस से संबंध बनाए रखना आवश्यक है. अब लड़की लड़के में कोई अंतर नहीं समझा जाता है. किंतु शादी के बाद अपनी लड़की से संबंध बनाने में उपर्युक्त कुछ बातों का ध्यान रखना आवश्यक है जिस से आप की प्रतिष्ठा, सम्मान पर जरा सी भी आंच न आने पाए, जिस से लड़की के मन पर ठेस पहुंचे और वह आप के लिए अपने पति और ससुराल वालों से झगड़ा करे.

आप जब भी वहां जाएं, यही कहें, "मेरी बेटी को तो आप के घर में बड़ा आराम है. कोई परेशानी ही नहीं है. यह सब तो इसे करना ही चाहिए. इस का कर्तव्य है." जिस से ससुराल वाले आप की लड़की से प्रसन्न रहें और उस की प्रशंसा करें. अपनी लड़की से अलग बैठ कर घंटों बातें न करें. और न ही उस से अंदरूनी बातें ही पूछें. आप के ऐसा करने से उस के घरपरिवार वालों को शक हो सकता है कि आप अपनी लड़की को उन के विरुद्ध भड़का रहे हैं. इसलिए उचित यही होगा कि आप कम बातें करें.

अनुभवी होने के कारण आप ये सब बातें स्वयं समझिए, महसूस करिए. यहां पर आप यह भी ध्यान रखिए कि आप के घर में भी किसी दूसरे घर की लड़की बहू बन कर आएगी. उस के घर वाले आप के घर में इस प्रकार से हस्तक्षेप करने लगें तो फिर क्या आप उन का हस्तक्षेप पसंद करेंगे? तब आप को भी बुरा लग सकता है, इसलिए यह बात ठीक है कि लड़की आप को प्यारी है पर उस की शादी के बाद आप को उस से एक दूरी अवश्य बनानी होगी. उस के घर में अपनी ओर से दखलंदाजी नहीं करनी होगी जिस से संबंधों में मधुरता और प्रगाढ़ता पहले की तरह बनी रहे.

अरिता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

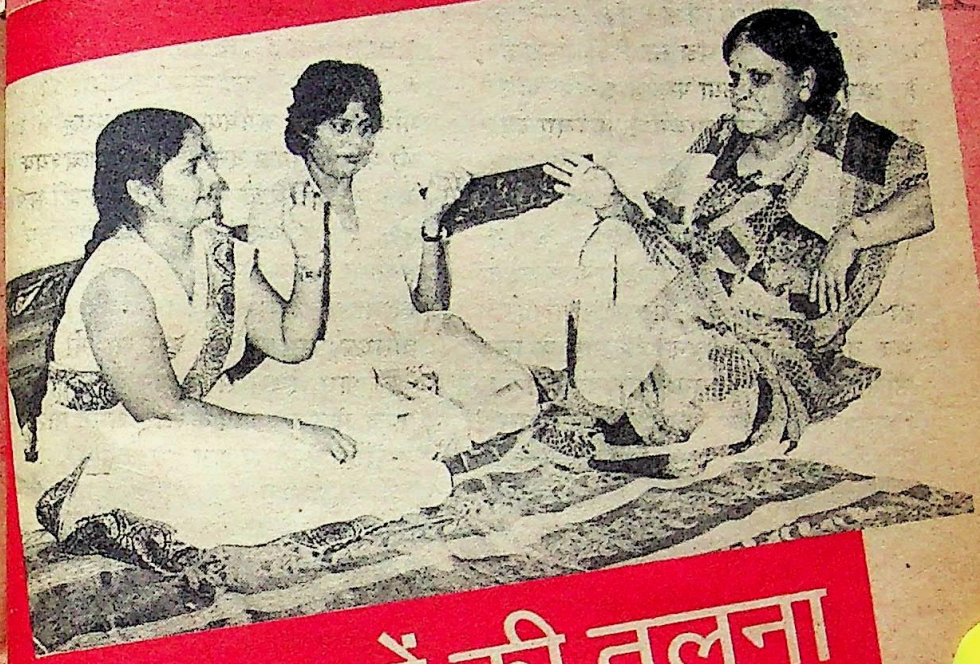

ससुरालों की तुलना झगड़े की जड़

लेख • जगदीश चावला

उस दिन सुधा की मंगनी पर जब बसंती मौसी ने सुधा की मां को बधाई देते हुए पूछा कि सुधा का होने वाला पति कैसा है तो सुधा की मां ने इतराते हुए कहा, "लाखों में एक है मेरी सुधा का यह बन्ना. उसे देखोगी तो बस देखती ही रह जाओगी. इकलौता घर का बेटा है. इकलौती संतान है. मेरी बेटी तो राज करेगी, राज. वैसे, सुधा के ससुर की दिल्ली में जेवरों की तीन बड़ी दुकानें हैं. जमीन और फार्म हाउस तक भी हैं. सारी दिल्ली में बोलबाला है उन का."

सुधा की मां जिस ढंग से अपनी अन्य दो बड़ी बेटियों की उपस्थिति में अपनी छोटी बेटी की ससुराल की प्रशंसा कर रही थी, उस से यह भी लगता था कि प्रशंसा की इस रौ में वह अप्रत्यक्ष रूप से अपनी अन्य दो बेटियों की ससुराल की निंदा भी कर रही थी.

मां की ये क्षोभ पैदा करने वाली बातें सुनसुन कर जब मझली बेटी बिन्नी से नहीं रहा गया तो उस ने बसंती मौसी के चले जाने पर अपनी मां से कहा, "मां, तुम्हें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरों के सामने इस तरह अभी से सुधा की ससुराल की इतनी प्रशंसा नहीं करनी चाहिए."

"क्यों?" मां ने पूछा तो बड़ी बेटी चंद्रा ने कहा, "इसलिए कि अभी सिर्फ रिश्ता ही तय हुआ है और शादी के बाद वे लोग सुधा के साथ कैसा व्यवहार करेंगे, यह बात भी संदिग्ध है. और फिर केवल पैसे के आधार पर यह सोचना कि इस से सुधा जीवनपर्यंत खुश रहेगी, कहां की समझदारी है? वैसे तो हमारी यह हार्दिक इच्छा है कि हमारी बहन अपनी ससुराल में सदा खुश रहे."

चंद्रा की बात सुन कर मां को तनिक गुस्सा आ गया और वह बोली, "मेरी समझ में यह नहीं आता कि तुम्हें सुधा की ससुराल से इतनी जलन क्यों हो रही है? और फिर मैं ने जो कुछ बसंती को बताया है, उस में झूठ भी क्या है? क्या सुधा की ससुराल वाले कम हैसियत के लोग हैं?"

"मां, अब तुम किसी से ज्यादा उम्मीदें ही मत रखो, ताकि तुम्हें निराश होना पड़े. और फिर यदि तुम ने कभी सुधा की ससुराल वालों को बुराभला कह दिया न, तो वहां सुधा की जान पर बन आएगी." बिन्नी ने पूरी संजीदगी से मां को समझाया तो मां भी समझ गई.

मगर हमारे समाज में कई ऐसे लोग हैं जो अपने बेटेबेटियों की ससुराल की निंदा व स्तुति तो करते ही हैं, पर कभीकभी ससुरालों की तुलना भी करने लगते हैं, जो बाद में झगड़े की जड़ बनती है.

एक दिन कौमुदी ने अपने छोटे बेटे विकास की ससुराल से आई कीमती साड़ी पहन रखी थी. कौमदी की एक पड़ोसिन ने उस साड़ी की तारीफ की तो अपनी बड़ी बहू की उपस्थिति में ही कौमुदी कहने लगी, "यह साड़ी तो मुझे विकास की ससुराल से मिली है. मेरे समधी ही इसे बंगलौर से लाए थे, नहीं तो इतनी बढ़िया साड़ी पहनने की हमारी हैसियत ही कहां है? वैसे भी विकास की ससुराल वाले बड़े दरियादिल हैं. वारत्योहार अपनी बेटी को उपहार भेजते समय वे मुझे नहीं भूलते. अभी पिछले ही दिनों जब विकास अपने साले के बेटे के जन्मदिन पर अपनी ससुराल गया था तो वहां से उन लोगों ने मेरे लिए भी यह सोने की अंगूठी भिजवाई थी."

अपने हाथ की उंगली में पहनी हुई नई अंगूठी दिखला कर कौमुदी फिर चहकी, "ऐसी चीजें तो मुझे विकास की ससुराल से ही मिली हैं और बहना, सच कहूं तो मेरे बड़े बेटे सौरभ की ससुराल से मुझे आज तक चांदी का छल्ला भी नसीब नहीं हुआ."

अब इस तरह की बातों से बड़ी बहू का मन दुखी होना, उस के मन में हीन भावना पैदा होना या उसे गुस्सा आना स्वाभाविक ही है.

विवाह के बाद तो सभी बहुओं को अपनेआप को ससुराल के परिवेश में ढालना होता ही है. बहुओं के मायके वालों के लिए अलगअलग दृष्टिकोण रखना गलत होता है. ससुराल चाहे बेटे की हो या बेटी की, उस की कमियों या कमजोरियों का मजाक उड़ाना घर में फूट, झगड़े के बीज बोना है.

आमतौर पर भारतीय संस्कारों के कारण अधिकतर मातापिता अपनी ब्याही बेटी के घर खाना व रहना तो दूर, ज्यादा जाना भी पसंद नहीं करते. किंतु आजकल

अपने बेटेबेटियों के ससुरालों की तुलना की प्रवृत्ति अपना कर आप कहीं उन के घर में झगड़े के बीज तो नहीं बो रहीं? यदि ऐसा है तो इस रिश्ते की नजाकत और संभावित नतीजों को जानते हुए और व्यावहारिक दृष्टिकोण अपनाते हुए तुलना की नीति से दूर ही रहें.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

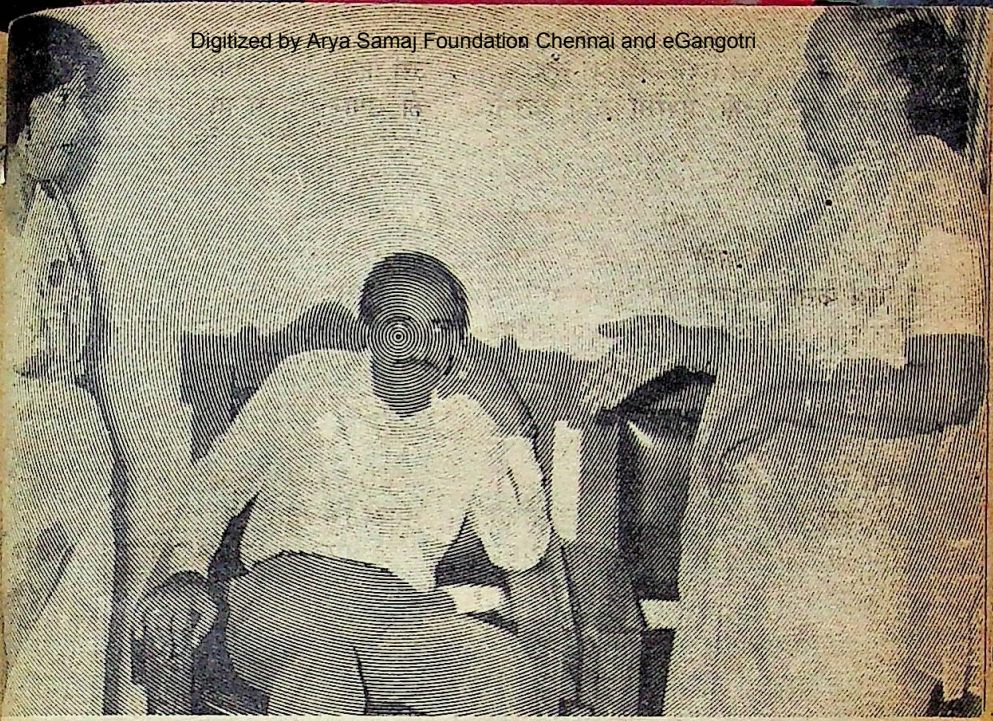

बेटेबहू के सामने बहू के मायके वालों की निंदा कर उन के बीच फूट डलवाना कहां तक उचित है?

कुछ लोग अपनी बेटियों के घर खाने भी लगे हैं. उन का तर्क है कि खून का रिश्ता दान देने मात्र से टूटता थोड़े ही है. इस तर्क के अनुसार बेटी की ससुराल में जाना और वहां बेटी को समझाना तो किसी हद तक ठीक हो सकता है, मगर वहां जा कर बेटी को बरगलाना बिलकुल गलत है.

जानकी जब भी अपनी बेटी रचना की ससुराल जाती है, वहां पर हंगामा ही बरपा कर आती है. उस दिन बेटी की ससुराल में जा कर जब जानकी ने रचना से कहा कि बेटी, तेरे ससुर तो बहुत कंजूस हैं. मैं ने आज बातोंबातों में जब उन से कहा कि तुझे कार में घूमने का बहुत शौक है, हो सके तो अपनी बहू और बेटे को एक नई मारूति कार ही खरीद कर ले दो तो जानती हो वह क्या बोले?" रचना ने बात में उत्सुकता नहीं दिखाई तो उन्हें थोड़ा अफसोस हुआ, पर थोड़ी देर बाद जानकी अपनेआप ही कहने लगी, "तेरे ससुर ने कहा कि जब इस घर में पोता होगा, तभी कार भी आ जाएगी. हुंह.. कैसा दिल पाया है तेरे ससुर ने? इस से अच्छा दिल तो उस दीनू जाट का ही है, जिस ने अपनी बहू के कहने भर से घर में रंगीन टेलीविजन मंगा लिया था."

"पर मां, बाबूजी ने जो भी कहा है वह सब सोचसमझ कर ही कहा होगा. आदमी की कभीकभी कुछ मजबूरियां भी तो हो सकती हैं."

रचना की यह बात सुन कर जानकी और भी भभक पड़ी, "मैं ने अपने ये बाल धूप में थोड़े ही सफेद किए हैं? बहाने और मजबूरियों का अंतर मैं खूब समझती हूं. पर तेरे ससुर तो निरे चिकने घड़े हैं. कई दफा तो मतलब की बात को भी सुनीअनसुनी कर जाते हैं. पर अपने मनोज की ससुराल वाले ऐसे नहीं हैं. उस दिन मैं ने जरा यों ही मनोज के ससुर से कहलवा भेजा था कि मेरा बेटा और बहू कशमीर जाने की तैयारी में हैं तो जानती हो, मनोज के ससुर इसी बात पर उन्हें दो कंबल और 501 रुपए भेंट में दे गए थे.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जानकी की ये बातें रचना की ननद ने कमरे में आते समय दरवाजे की ओट में खड़ी हो कर सुन ली थीं और जब ये बातें उस ने अपने पिता से बताईं तो वह भी आपे से बाहर हो गए, "जानकी होती कौन है मेरे फैसले पर टीकाटिप्पणी करने वाली, और उस की बेटी को यदि कारं पर चढ़ने का इतना ही शौक है तो वह अपने मायके से कार क्यों नहीं मंगा लेती? वहां भी तो कारें खैरात में ही दी जाती होंगी."

तुलनात्मक बातों का संबंधों पर असर

गुस्से में रचना के ससुर की यह अभिव्यक्ति अस्वाभाविक नहीं कही जा सकती. बल्कि यदि कहीं बात बढ़ जाती तो वह संभाले भी नहीं संभलती. गृहस्थजीवन में रिश्तों की नजाकत को समझने वाले लोग बड़ी समझबूझ से काम लेते हैं. वे अच्छी तरह से जानते हैं कि हर ससुराल की सामर्थ्य एक जैसी नहीं होती. भिन्नता होते हुए भी जो माताएं अपनी पुत्री या पुत्र की संपन्न ससुराल की तुलना दूसरे की कमजोर ससुराल से करने बैठ जाती हैं, वे कालांतर में अपना मान भी घटा लेती हैं. इस प्रकार तुलनात्मक बातें कहने से संबंधों में कशीदगी भी पैदा हो जाती है. इस से ससुराल वाले या तो जलीकटी सुनाने पर उतर आते हैं या फिर खिंचेखिंचे रहते हैं. हां, यदि यह तुलना स्वाभाविक तौर पर की गई हो और उस में भी कही गई बातें संतुलित, मर्यादित और आक्षेपरहित हों तो ऐसी तुलना का कोई बुरा भी नहीं मानता.

यह भी देखा गया है कि कुछ माताएं अपने बेटेबेटियों की कमियों तथा कमजोरियों पर परदा डालने के इरादे से उन की ससुरालों की आलोचक बन बैठती हैं. यह प्रवृत्ति पारिवारिक संबंधों के लिए बहुत हानिकारक है. मगर मातापिता को चाहिए कि संतान को तो चाहे बुरा भला कह लें परंतु उन की ससुराल पर दोषारोपण न करें और यदि कहीं उन की संतान ससुराल में जा कर कोई अच्छी बात सीखे तो वे इस का श्रेय भी उस की ससुराल को ही दें.

शशि की मां अकसर यही कहा करती थी कि उस की बेटी ससुराल में जा कर अपने खाने से सब का मन जीत लेगी. क्योंकि वह बढ़िया खाना बनाने में बहुत निपुण है. पर शशि को यह ज्ञान ससुराल में ही जा कर हुआ कि बढ़िया खाना बनाना एक बात है और सब की पसंद का खाना बनाना दूसरी बात है.

अब कोई शशि की मां से यह कहता भी है कि शशि तो खाना बहुत स्वादिष्ट बनाती है तो शशि की मां भी गौरवान्वित हो कर यही कहती है कि "हां, मेरी बेटी को हर तरह का खाना बनाना आता है, मगर उस ने यह सारी कला अपनी ससुराल से ही सीखी है."

कहना गलत न होगा कि जो लोग अपने बेटेबेटियों की ससुरालों को हमेशा अपने से ज्यादा अच्छा व ऊंचा मान कर व्यावहारिक दृष्टिकोण अपनाते हैं उन की संतानें भी अपनी ससुराल में यथेष्ट आदर पाती हैं और जो महिलाएं नाहक अपने बेटेबेटियों की ससुरालों की बदनामी करती हैं, वे अंततः अपनी संतान के जीवन में बबूल ही बोती हैं.

वैसे देखा जाए तो लड़के या लड़की को ब्याह कर ससुराल के जो संबंध बनते हैं, वे बराबरी के ही संबंध होते हैं. मगर हमारे समाज में चूंकि लड़की वाले हमेशा लड़के वालों के सामने नतमस्तक रहे हैं, इसलिए वे लड़के की ससुराल वालों की हर उचित–अनुचित बात को भी सिर आंखों पर उठाए रहते हैं, जो बुनियादी तौर पर गलत है.

विनयमोहन अभिषेक विहार में रहते हैं. इन के दो पुत्र हैं. बड़े बेटे की शादी पर इन्हें बहू तो सुशील मिली, पर दहेज ज्यादा नहीं मिला. इसी तरह, छोटे बेटे की शादी में दहेज तो भरपूर मिला, पर बहू एकदम बिगड़े हुए मिजाज की मिली, जो बातबात पर घर में तूतड़ाक से पेश आती है. ससुराल के आचारव्यवहार, शर्म और हया की उसे तनिक भी चिंता नहीं. फिर भी विनयमोहन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या आप अपनी बीवी को प्यार करते हैं ?

ठहरिए ठहरिए, बुरा मत मानिए। मैं समझाता हूँ। मामला प्रेशर कुकर का है और आपकी बीवी की सुरक्षा का। मान लीजिए आप अपनी बीवी को थोड़ा चाहते हैं तो कोई भी प्रेशर कुकर खरीद देंगे। उनसे ज़रा ज़्यादा लगाव है जनाब तो थोड़ा अच्छा कुकर लेकर देंगे आप। लेकिन अगर आप से भी प्यारी है उनकी जान तो फिर नया प्रेस्टीज ही लेकर देंगे श्रीमान!

100% SAFE

अब पूछिए प्रेस्टीज ही क्यों ?

इसलिए कि सिर्फ नया प्रेस्टीज ही १००% सुरक्षित है — गास्केट रिलीस सिस्टेम (GRS) की वजह से। यह अनोखा गास्केट रिलीस सिस्टेम (GRS) इस तरह काम करता है। जब कोई दाने वेट वेट में फंस जाते हैं तो साधारण प्रेशर कुकर में प्रेशर ज़रूरत से ज़्यादा हो जाने से खतरा पैदा हो सकता है। पर नये प्रेस्टीज में गास्केट रिलीस सिस्टेम (GRS) की वजह से, सेफ्टी प्लग चाहे जैसा भी लगा हो, भाप सुरक्षित रूप से बाहर की ओर छूट जाती है। इसलिए नए प्रेस्टीज में कभी कोई खतरा नहीं रहता।

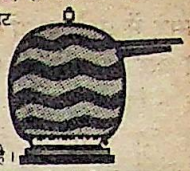

जो बीवी से सचमुच करते प्यार वह प्रेस्टीज से कैसे करे इन्कार

प्रेस्टीज

Prestige 25 SILVER JUBILEE 1984-85

टी टी के उत्पादन

सिर्फ़ प्रेस्टीज ही १००% सुरक्षित है, सिर्फ़ प्रेस्टीज ही में जी. आर. एस. है

MAA (S) TTP 3P HIN 85

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मूर्ख

मूर्ख अपनी ही तारीफ करता है,
बुद्धिमान भी उस की. —बुलबर

की पत्नी छोटी बहू का पक्ष ज्यादा लेती हैं.

उस दिन वह अपनी सहेलियों में बैठी यह डींग हांक रही थीं कि, "मेरी छोटी बहू को खाना बनाना नहीं आता, मगर जब हम ने यह बात अपनी समधिन से बताई तो उन्होंने तुरंत एक स्थायी, 'रसोइया' हमारे यहां भेज दिया और कहा कि चूंकि हमारे यहां कभी नौकरचाकरों की कमी नहीं रही, इसलिए हमारी बेटी अभी तक रसोई के कामकाज से अनभिज्ञ है. धीरेधीरे सीख लेगी." वैसे मेरे समधी तो और भी अच्छे हैं. अभी पिछले ही दिनों वह मेरे बेटे से कह रहे थे कि "इस बार मैं तुम्हारी शादी की सालगिरह पर एक नई कार देने का इरादा रखता हूं."

इस पर विनयमोहन की पत्नी की बात बीच में ही काट कर उस की एक सहेली बोली, "बुरा न मानो बहन, तो मैं तुम से साफसाफ कहती हूं कि तुम्हारे घर में इस बड़बोली छोटी बहू का निबाह सिर्फ उस के बाप के दिए पैसों के कारण ही हो रहा है, वरना जो गुण और सलीका तुम्हारी बड़ी बहू में है, वह इस छोटी में नहीं है."

चुभती हुई यह बात भी समझनें वालों के लिए बहुत अर्थ रखती है और व्यक्ति को नजरोंनजरों में ही तोल लेने वाले लोग भी ऐसा कह कर कुछ गलत नहीं कहते कि बिगड़ी बहू पैसे के बल पर ससुराल में अपना औचित्य सिद्ध नहीं कर सकती.

प्रायः यह भी देखा गया है कि ससुरालों की तुलना या नुक्ताचीनी करने में कुछ पतिपत्नी भी सोचविचार से काम नहीं लेते. इस से दोनों के अंतरंग संबंध तो खराब होते ही हैं, पर दूसरों को भी हंसने का मौका मिल जाता है.

उस दिन सतीश ने मजाक ही मजाक में अपनी पत्नी से कहा, "अरे, खुशनसीब तो नरेश ही निकला, जिस की ससुराल में सालियां आगेपीछे घूमती रहती हैं, और एक अपनी ससुराल है कि हमें वहां कोई पानी तक भी नहीं पूछता." सहजता से कहे गए इन शब्दों का सतीश की पत्नी ने उलटा अर्थ लिया और तुनक कर बोली, "तो यहां मेरी ससुराल में कौन सी बांदियां मेरा पानी भरने आती हैं. अभी हाथों की मेंहदी फीकी भी नहीं पड़ी थी कि तुम्हारी मां ने मुझे चूल्हेचौके में झोंक दिया था."

"तो क्या तुम यहां मुफ्त की रोटियां तोड़ने आई हो?"

"मुफ्त के टुकड़े तो तुम्हारे यहां खाए जाते होंगे. मैं तो यहां दिन भर अपना हाड़मांस गलाती हूं. तभी दो रोटियां खाती हूं. तुम्हारी तरह नहीं कि ससुराल में नवाब बन कर पहुंचूं और वहां अकड़ कर बैठ जाऊं."

"देखो वंदना, तुम इस समय हद से ज्यादा आगे बढ़ रही हो."

"तो अब सच्ची बात पर मिर्चें क्यों लग रही हैं? क्या मेरे सासससुर ने कभी मुझे अपनी बेटी की तरह जाना है? मेरे मांबाप तो फिर भी आप को दामाद समझ कर सिर आंखों पर बैठाते हैं, पर इस निकम्मी ससुराल में तो मुझे किसी ने पांव की जूती भी नहीं समझा."

खैर, वह तो अच्छा ही हुआ कि पतिपत्नी के इस वाक्युद्ध के दौरान जब पत्नी को यह खबर मिली कि उस की माताजी सीढ़ियों से फिसल कर गिर गई हैं तो वह तत्काल अपने पति के साथ अपनी मां को देखने हस्पताल पहुंच गई, वरना इस वाक्युद्ध का नतीजा क्या होता, इस ही सहज की कल्पना की जा सकती है.

ससुरालों की तुलना करने से पहले यदि उस के संभावित नतीजों को जान लिया जाए तो हो सकता है कि ऐसी तुलनाएं करने की नौबत ही न आए. वैसे, इस प्रकार की तुलना के मामले में यदि तटस्थ रहा जाए और अनावश्यक हस्तक्षेप से बचा जाए तो इस से संबंधों की सुगंध ज्यों की त्यों मधुर बनी रहती है. ●

सरिता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

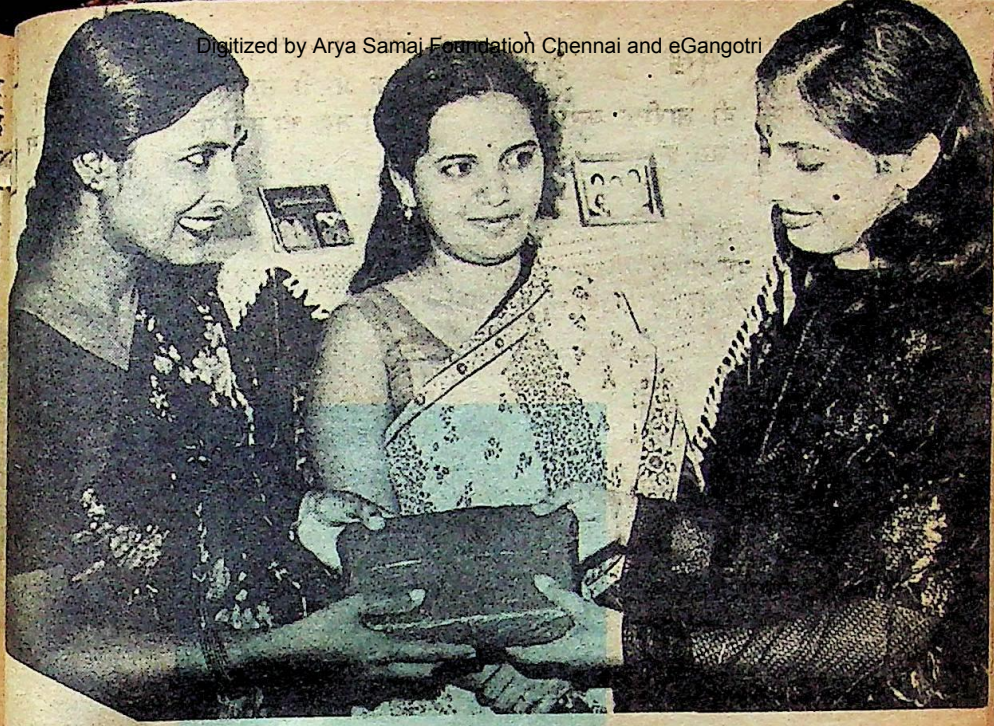

विवाह में क्या लें क्या दें?

लेख • प्रेम लता

शीला मौसी कल ही अपने देवर के बेटे की शादी से लौटी थीं. शाम को उन के घर के आगे से निकलते हुए मैं ने सोचा कुशलक्षेम पूछती चलूं. जाते ही मैं ने विवाह की बधाई दी. कुछ देर इधरउधर की बातें होती रहीं और उस के बाद मैं ने पूछा, "मौसी, तुम्हें भी खूब बढ़िया साड़ी मिली होगी नेग में."

मौसी तो जैसे भरी बैठी थीं. बोलीं, "खाक बढ़िया साड़ी मिली है. एक से बढ़ कर एक चीज दी है लड़की वालों ने लड़की को. सारी कंजूसी तो उन्होंने नेग की साड़ियों पर आ कर दिखाई. अरे, इस से अच्छा तो था कि न ही देते. हम कौन सा मांगने गए थे. ऐसी धोती हम अपनी महरी को भी नहीं देते. लड़की को तो सारी उमर देना होता है. रिश्तेदारों को तो एक ही दफा देना होता है."

प्रसंग कड़वा हो चला था. मैं सकपका गई. विषय बदलने की गरज से मैं ने पूछा, "मौसी, बहू कैसी है?"

"देखने में तो सुंदर है. खूब तीखे नैननक्श हैं, गोरा रंग है. गुण और व्यवहार तो बाद में ही पता चलेंगे." तभी मौसी को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एकाएक याद आया और बोली, "अरे, तब से बातें ही किए जा रहे हैं. मैं भी कैसी बावरी हूं. जरा बैठो, अभी चाय बना कर लाती हूं," मना करतेकरते भी मौसी चाय बनाने रसोईघर में चली गईं.

मौसी के जाने के बाद मैं उन की बातों पर गौर करने लगी, मौसी का गिला कोई नया नहीं था. शायद ही कोई विवाह ऐसा हुआ हो जिस में लेनदेन को ले कर कोई न कोई विवाद न उठा हो. भैया की शादी में हमारी दीदी नाराज हो गई थीं. पूरे विवाह में जो खुशी और उत्साह उन्होंने दिखाया था, वह विदा होते हुए न जाने कहां लुप्त हो गया. हम ने भरसक प्रयत्न किया था कि दीदी खुशीखुशी जाएं. दो साड़ियां मां ने दी थीं और एक भाभी के मायके से आई थी, जीजाजी और बच्चों को कपड़े दिए सो अलग.

दरअसल, दीदी बधाई में कोई जेवर चाहती थीं. पता नहीं शादी के बाद लड़कियां इतनी लालची क्यों हो जाती हैं, शादी में पिताजी अपनी पुत्रवधू के चढ़ावे के लिए ही बड़ी मुशकिल से छोटा सा सेट बनवा पाए थे. सोने का भाव सुन कर तो दोबारा सुनार की दुकान पर जाने का साहस ही नहीं होता था. सो मां ने अपने झुमके, जो उन्होंने पता नहीं किस अवसर के लिए बचाकर रख छोड़े थे, दीदी को दे दिए.

विवाह के अवसर पर वर और वधू को उपहार देने का भी रिवाज है. मित्र और सगे संबंधी कभी अपनी खुशी से और कभी दुनियादारी की खातिर जबरन भी अपनी हैसियत से बढ़चढ़ कर उपहार देते हैं. उपहार चाहे रिश्तेदारों की ओर से दिया जाए या मित्रों की ओर से, एक बात अवश्य ध्यान में रखी जाती है कि जिस दंपती के पुत्र या पुत्री का विवाह है उनका आप के साथ लेनदेन कैसा है. जिस तरह वह आप के घर होने वाले विवाह आदि के अवसर पर भेंटतोहफा देता रहा है, उतना ही और वैसा ही या थोड़ा बहुत इधरउधर आप उस के यहां उपहार आदि देना चाहेंगे.

ऐसा नहीं है कि शादीब्याह पर आई हुई लड़कियां या रिश्तेदार (विशेषकर महिलाएं) ही रूठते या नाराज होते हैं, बल्कि बहुत बार जिन के परिवार में विवाह होता है वे भी इस बात से नाराज होते देखे जाते हैं कि उन के फलां रिश्तेदार या मित्र ने उन के बेटे या बेटी को उतना महंगा उपहार नहीं दिया जितना कि उन्होंने अमुक रिश्तेदार या मित्र के बच्चों के विवाह पर दिया था.

रूपा जब बेटी के विवाह पर आए रिश्तेदारों को विदा कर के फारिग हुई तो औरतों की मंडली में किस्सा सुनाने बैठ गई कि विवाह पर कौन क्या दे गया. जैसा कि औरतों का स्वभाव होता है, भाइयों के तो एक को इक्कीस बताएंगी, पर सुसराल वाले रिश्तेदारों से वह अधिक खुश नहीं थी. खास गिला तो उन्हें अपनी जेठानी से था, "अरे, हम ने उन की बेटी की शादी पर सारा फरनीचर दिया था और वह केवल अलमारी और फिज दे कर टाल गईं. ले कर लोगों की आखें एकदम से क्यों बदल जाती हैं."

जेठानी को कोसते हुए रूपा शायद यह भूल गई कि उस के जेठ अब सेवानिवृत्त हैं. भविष्य निधि से जो थोड़ाबहुत पैसा मिला उस से उन्होंने एक छोटा सा मकान खरीद लिया अब पेंशन से ही गुजरबसर करते हैं, कोई लड़का भी नहीं है हाथ बंटाने को और फिर पिता के न रहने पर अपने भाई राकेश

अरिता

विवाहशादी में उपचार देते समय ऐसी वस्तु दें जो साधारण हो, परंतु उपयोगी हो, और अगर औपचारिकता छोड़ कर उपहार लेने वालों से सलाह-मशवरा कर लिया जाए तो यह एक बहुत ही अच्छी बात होगी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

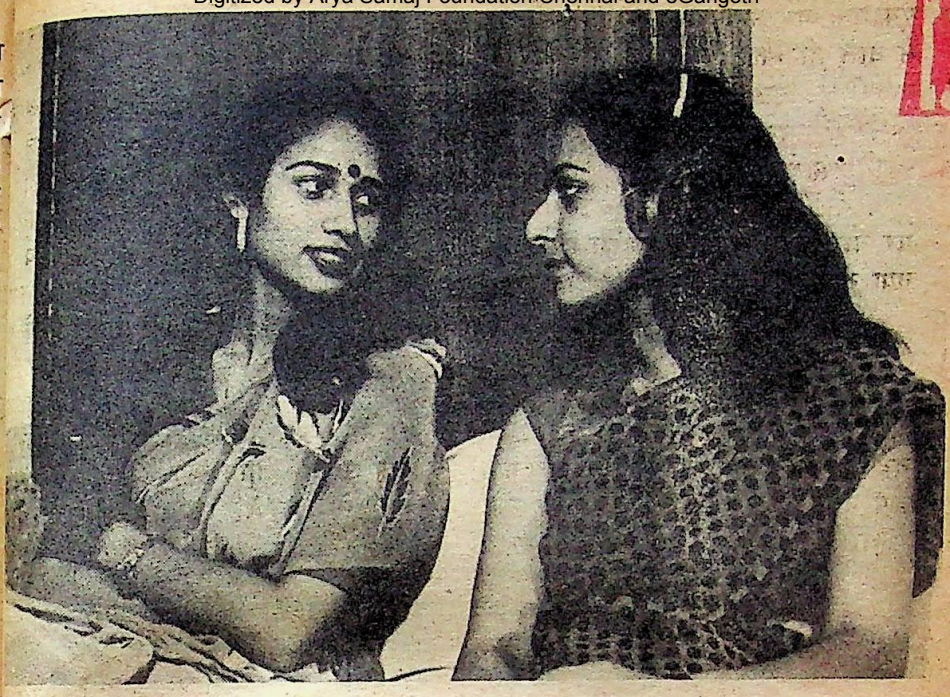

विवाह के अवसर पर उपहार देते व लेते समय उदास रहना या दिल छोटा करना ठीक नहीं, बल्कि मुसकराते हुए उपहार ग्रहण करें.

को उन्होंने अपनी संतान से बढ़ कर प्यार दिया. पालापोसा और पढ़ायालिखाया. आज राकेश जो कुछ है, अपने बड़े भाई की बदौलत ही है. शायद इसी से राकेश ने भाई की बेटी के विवाह पर अधिक से अधिक मदद करने का प्रयास किया था.

जहां तक विवाहशादी में उपहार आदि देने का रिवाज है उस का निर्वाह स्वेच्छा से करें, बंधन समझ कर नहीं. ये उपहार जहां लेने वाले को हर्षित करें, वहीं देने वाले को एक मजबूरी या फालतू का बोझ प्रतीत न हों. ये हमारे संबंधों को मधुर बनाएं. प्रेम को और अधिक बढ़ाएं, न कि कड़वाहट पैदा करें. उपहार अपनी सामर्थ्य को ध्यान में रख कर दें और एक बात यह भी ध्यान में रखें कि आप बदले की भावना से न दें और न ही झूठी मानमर्यादा के दबाव में आ कर.

आडंबरों को उतार फेंकें. बेकार का दिखावा आप को महंगा पड़ सकता है. इसलिए झूठी शान और दिखावे से परहेज करें. इन से न केवल धन का अपव्यय होता है, अपितु ये मानसिक तनाव पैदा करते हैं. यदि एक बार कोई व्यक्ति आप को पांचसौ रुपए का उपहार देता है तो भविष्य में वह छः या सात सौ रुपयों के उपहार की अपेक्षा भी रखता है. यदि समय और परिस्थिति अनुकूल रही और आप ऐसा करने में समर्थ रहे तब तो ठीक है, अन्यथा व्यर्थ ही संबंधों में कड़वाहट पैदा हो जाएगी. अपनी असमर्थता के कारण आप अपनेआप को लज्जित और अपमानित महसूस करेंगे और इस से आप नाहक मानसिक परेशानी मोल ले लेंगे.

यही स्थिति दूसरे पक्ष के साथ भी आ सकती है. अतः बेहतर तो यही है कि हम समय की मांग को समझते हुए सादगी को अपनाएं. स्थिति को सहज रूप में स्वीकार करते हुए अधिक से अधिक उल्लास का आनंद उठाएं. यह तभी संभव है जब हम झूठी शान के साथ चिपके न रह कर व्यावहारिक बनने का प्रयत्न करें.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विवाह शादी पर उपहार न, उपहार दें, पर यह आप को हौवा न जान पड़े. विवाह का निमंत्रणपत्र देखते ही आप को चिंता न होने लगे कि एक अतिरिक्त खर्च आ गया. न ही आप के मुंह से बरबस निकले कि "इन विवाहों के मारे तो नाक में दम है" या "इस महीने की तनख्वाह तो विवाह निबटाने में ही निकल जाएगी."

किसी को उपहार देते समय न केवल अपनी जेब का खयाल रखना जरूरी है, अपितु यह भी जरूरी है कि आप जो भी वस्तु दें, वह भले ही बहुत अधिक कीमती न हो, पर उपयोगी अवश्य हो और उसे पा कर व्यक्तिविशेष को प्रसन्नता हो. बहुत बार संबंधी या मित्र जब कोई वस्तु उपहारस्वरूप ले जाते हैं तो देने पर पता चलता है कि वह वस्तु या तो वे लोग स्वयं खरीद चुके हैं या कोई अन्य रिश्तेदार या मित्र पहले ही दे चुका है. इस प्रकार का आप का उपहार उतना उपयोगी सिद्ध नहीं होगा.

इस्तरी, मिक्सी या प्रेशर कुकर आदि ऐसी चीजें हैं जो अकसर दो दो हो जाती हैं. इस का क्या फायदा. अतः बेहतर है, नजदीकी रिश्तेदार, लड़की की सहेलियां आपस में विचार कर के या लड़की से पूछ कर उस की जरूरत और पसंद की वस्तु ही उपहार में दें. इस से यह होगा कि आप जो वस्तु दे रहे हैं वह यदि वे लोग पहले से खरीद चुके होंगे तो आप को पता चल जाएगा और आप उस के स्थान पर कोई अन्य वस्तु उपहार में दे सकेंगी. इस से वस्तु का उपयोग भी होगा और आप को सुन कर दुख भी नहीं होगा कि वह वस्तु तो वे लोग पहले ही ले चुके थे.

अतः जहां तक संभव हो परस्पर सलाह कर के जो भी वस्तु उपहार में देनी हो, वह पहले से बता दें, जिस से वस्तु दो बार न खरीदी जाए और धन का अपव्यय न हो. बेहतर तो यही है कि औपचारिकता छोड़ कर जिसे उपहार देना चाहते हैं उसे अपना बजट बताते हुए पूछ लें कि उसे किस वस्तु की आवश्यकता है. ●

बात ऐसे बनी

मेरा एक मित्र रेलवे स्टेशन पर कार्य करता था. उस की यह आदत थी कि वह स्टेशन पर आई सब्जियों की बोरियों को खोल कर उन में से सब्जी निकाल कर ले जाता था.

एक दिन उस ने एक बोरी को खोल कर जैसे ही सब्जी निकालने के लिए हाथ डाला तो उस बोरी का मालिक आ गया. घबरा कर उस ने हाथ बाहर निकाल लिया. घर आने पर उसे पता चला कि हाथ की घड़ी सब्जी की बोरी में ही गिर गई है. वह जल्दी से स्टेशन पहुंचा, लेकिन तब तक सब्जियां जा चुकी थीं.

—ईश कुमार मदान

*

मैं अपने कालिज से बस द्वारा अपने घर रायपुर जा रहा था. परिचालक से टिकट मांगने पर उस ने कहा, "तुम्हें रायपुर तक ही तो जाना है, ऐसे ही चला लो."

इस पर मैं ने कहा, "ठीक है, रायपुर तक ही तो जाना है, तुम भी पैसे ले कर क्या करोगे, ऐसे ही चला लो."

यह सुन कर बस में बैठे सब लोग हंस पड़े. परिचालक को मजबूरन टिकट काटना पड़ा.

—अनिलकुमार साहू

*

हमारे एक साथी की एक बुरी आदत थी. कक्षा में वह हर लड़के की जेब से कलम या ऐसी ही कोई चीज निकाल लेता था और चाय वगैरह पीने के बाद ही वापस करता था. उस की इस आदत से सभी परेशान थे.

एक दिन वह अपनी आदत के अनुसार बस में अपने साथी की जेब से कलम निकालने लगा.

उस की इस हरकत पर बस में सफर कर रहे कुछ लोगों की नजर पड़ी तो वे उसे जेबकतरा समझ कर पीटने लगे. जब तक हम बीचबचाव कर के असलीयत बताते, तब तक उस की काफी पिटाई हो चुकी थी.

उस दिन से उस की यह आदत छूट गई.

—ज.र. जवाहरानी ●

सरिता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शून्यकाल का शून्यालाप

इस स्तंभ में कुछ ऐसे प्रश्न पूछे जाते हैं जो संसद में पूछे नहीं जाते, पर पूछे जाने चाहिए. यहां प्रस्तुत हैं इस प्रकार के कुछ महत्त्वपूर्ण प्रश्न और उन के संभावित उत्तर.

अचानक इतने मुख्य मंत्रियों को क्या बदल दिया गया? हथियारों के सौदों में कमीशन खाने की चर्चा जोरों से उठी, पर शांत हो गई, क्यों?

तथा अन्य प्रश्न....

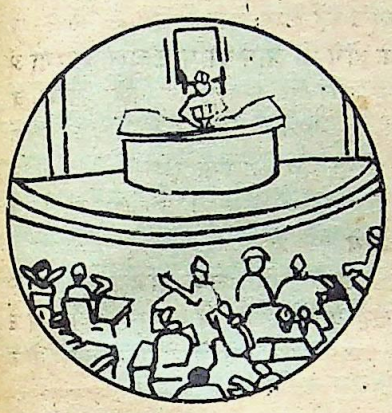

सदस्य: आप ने अचानक इतने मुख्य मंत्रियों को क्यों बदल दिया?

मंत्री: कुछ मुख्य मंत्रियों को यह वहम हो गया था कि वे विधायकों के समर्थन के बल पर कुरसी पर जमे हैं. असल में हमारी पार्टी में हमारे नेता का आशीर्वाद ही सत्तासुख भोगने का लायसेंस होता है. उन्हें इस का ज्ञान कराने के लिए यह अनावश्यक परिवर्तन किए गए हैं. पहले हम ने राजस्थान के मुख्य मंत्री को हटाया और देखा कि बिना किसी हीलहुज्जत के विधायकों ने हमारी पसंद के पक्ष में हाथ खड़े कर दिए हैं तो हम ने अपने हाथों को मजबूत समझ लिया और इन्हें पटना और भोपाल में भी आजमा लिया.

हमें खुशी है कि हमारी राजनीति अभी चरणस्पर्श की सदी में ही है.

सदस्य: केंद्रीय मंत्रिमंडल में यह कैसा अजीब परिवर्तन किया है आप ने?

मंत्री: अजीब तो इसे आप ही कहते हैं. हमारे प्रचार साधनों के अनुसार तो अब देश दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति करेगा. देखा नहीं आप ने, नए मंत्रिमंडल के सत्ता संचालन करते ही भारत ने कैसेकैसे जबरदस्त प्रक्षेपास्त्र—पृथ्वी, आकाश, नाग, त्रिशूल बनाने शुरू कर दिए हैं. आप कहते रहे हैं कि देश की सरकार दिशाहीन है, जबकि सरकार ने चारों दिशाओं पर कब्जा कर लिया है. दिल्ली में प्रशिक्षित नेतागण अब मुख्य मंत्री या राज्यपाल के रूप में पटना, भोपाल, त्रिवेंद्रम, मद्रास, चंडीगढ, मेघालय में जमे हुए हैं. आज सारे भारत पर हमारा कब्जा है.

सदस्य: मगर आप आज इस व्यक्ति को मुख्य मंत्री बनाते हैं, कल उसे केंद्रीय मंत्रिमंडल में शामिल करते हैं, परसों फिर उसे मुख्य मंत्री बना देते हैं. यह कैसी उठापटक हो रही है?

मंत्री: आप ने दोधारी तलवार के बारे में सुना होगा. दोधारी ब्लेडों से चेहरे की हजामत तो की ही होगी. हम भी इन्हें ऐसा ही समझते हैं. ग्रामोफोन के रिकार्ड की तरह कभी इधर से तो कभी उधर से बजाते हैं. कुछ ऐसे होते हैं, जिन्हें हमें हर हाल में खपाना ही होता है. मुख्य मंत्री बदलने से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोगों की गरीबी हटती है.

सदस्य: आज सारा देश सूखे से पीड़ित है और आप हैं कि 'शतरंज' खेल रहे हैं, कुरसी, पद और आदमियों के साथ?

मंत्री: यह भी सूखा राहत अभियान का एक अंग है. मुख्य मंत्री बदलने पर एक प्रदेश में फिर से बने एक मंत्री का बयान यह था कि गत तीन वर्षों में मैं मंत्रिमंडल से बाहर रहा. इस अवधि में मैं सूखा पीड़ित सा रहा. लोगों ने मुझे पंचायतों, स्कूलों और समारोहों में तथा ठेकेदारों ने अपनी दावतों में बुलाना छोड़ दिया था. कम से कम मेरे मामले में तो सरकार का सूखा राहत कार्यक्रम सफल रहा.

सदस्य: किसी को अस्तबल में तो किसी को घनबल में, किसी को कमरे में तो किसी को कोठरी में, आप ने हरिदेव जोशी और गुरदयालसिंह ढिल्लों के सिवा सब को जगह दे दी. इन्हें क्यों छोड़ा?

मंत्री: हमारे कान में यह फूंक मारी गई है कि इन में से एक अब भी उसे आका मानता है, जो अब जनमोरचे में है. फिर देश के नाम पर किसी न किसी को तो कुरबानी देनी ही चाहिए.

सदस्य: हथियारों के कुछ सौदों में कमीशन खाने की चर्चा बड़े जोरों से उठी थी, अब वह शांत हो गई लगती है. आप को बधाई दें या आश्चर्य व्यक्त करें?

मंत्री: कमीशन खाने के मामले हथियारों की बजाए यारों के बन कर रह गए. इसलिए हम उस पर भ्रष्टाचार का लेबल नहीं लगा सकते. हां, भ्रष्टाचार का एक बहुत बड़ा मामला अब सामने आया है. ज्ञानी जैलसिंह को दोबारा राष्ट्रपति का चुनाव लड़वाने के लिए कुछ लोग 30-40 करोड़ रुपया खर्च करने के लिए तैयार थे. हम जांच करेंगे कि यह रुपया कहां से आने वाला था.

सदस्य: क्या आप वास्तव में जांच करेंगे?

मंत्री: अगर यह मामला विशुद्ध विपक्षी दलों का हुआ तो जरूर करेंगे. अगर भ्रष्टाचार की गंगा हमारे दल के नेताओं की ओर बहती दिखाई दी तो जांच कतई नहीं करेंगे. वैसे, हमें तो उम्मीद यही है कि इस सदी के अंत तक यह जांच पूरी नहीं होगी.

सदस्य: बजट में जनता को इस बार यह मीठी गोली क्यों दी गई है? क्या मध्यावधि चुनाव होंगे?

मंत्री: मीठी गोली? आप जा कर जनता का मुंह देखिए. उस का मुंह कड़वा हो रहा है. गत वर्षों में बजट से अगले दिन बहुत सी चीजों के दाम बढ़ जाते थे. क्या इस बार किसी वस्तु के दाम गिरे हैं? कर लगाने और भाव बढ़ाने का काम अब सरकार ने सीधा संभाल लिया है. बजट तो औपचारिक बन कर रह गया है.

सदस्य: सुना है बंगलादेश इसलाम राजधर्म बनने जा रहा है?

मंत्री: बहुत पहले ही वहां का राजधर्म सत्ताअपहरण बन गया था. इसलाम का नाम इरशाद सत्ता के लिए ही ले रहे हैं. इसे आप धार्मिक चेतना कह सकते हैं. किसी दिन राजनीतिक चेतना के नाम पर बंगलादेश को पूर्वी पाकिस्तान भी बनाया जा सकता है.

सदस्य: जनता पार्टी में लोकदल (अ) का मिलन?

मंत्री: जनता पार्टी की यही स्थिति रही है. टूटेफूटे और घिसट कर चलने वाले दलों से ही इस का निर्माण होता रहा है. ऐसे गुट इस से अलग भी होते रहे हैं. कभी चौधरी चरणसिंह जनता पार्टी में से लोक दल निकाल कर ले गए थे. अब उन के सुपुत्र वह कर्ज उतार रहे हैं. उन्हें मिलन मुबारक.

सदस्य: क्या मैं पंजाब समस्या का जिक्र कर सकता हूं?

मंत्री: क्यों नहीं? पर आज तो रंगारंग उत्सव मनाने का मूड है. फिर किसी दिन इस का जिक्र कर लेंगे. आप ने देखा नहीं, अभी पंजाब में होशियारपुर में हुए हत्याकांड के विरोध में बंद आयोजित किया गया था. बंद के आयोजन से पहले लोगों ने हर्षोल्लास के साथ होली के रंग उछाले और फिर अगले दिन दुख मनाया.

—गोविंद शर्मा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तेरी आहट पर

तेरी आहट पर
महमहाई हवाएं गुनगुनाने लगीं,
धुलीधुली घटाओं पर
इंद्रधनुषी रंग बिखरने लगे.
मदिर गंध फिजाओं में लगी घुलने
तेरी आहट पर.

देह में थरथराहट सी रचने लगी.
सांसों की सरगम पर
धड़कनों के घुंघरू बजने लगे.
अनगिनत गुलमोहर नैनों में लगे खिलने
तेरी आहट पर.

घूंघट में लाज कसमसाने लगी.
गीतों के हार में
शब्दों के फूल सजने लगे.
शरमाया सा रूप दर्पण में लगा संवरने
तेरी आहट पर.

कामनाओं की कलियां चटकने लगीं.
प्रीत भरे, होंठों पर
संबोधन कई मचलने लगे.
मनपारखी खुशियों के गगन लगा चहचहाने
तेरी आहट पर.

—कुसुम जैन

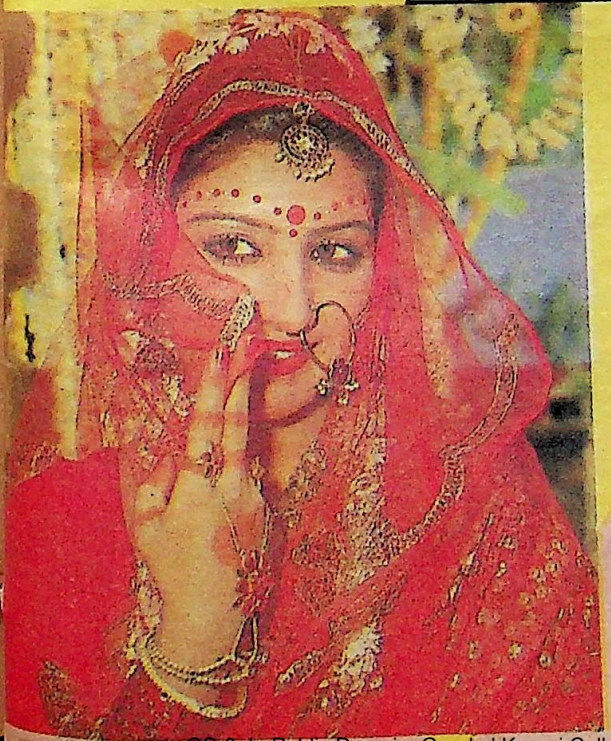

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बदलती निगाहें

कहानी • प्रमिला नानिवडेकर

अनुजा 33 वर्ष की होते होते कुछ फीकी सी पड़ गई थी. उम्र की पच्चीसी तक जो एक आभा सी नवयुवतियों के चेहरों पर झलकती रहती है, उस के सर्वथा अभाव के आसार उस के मुख पर नजर आने लगे थे.

उसे जबजब देखती, मुझे उस का पहले का खिला हुआ चुलबुला रूप याद आ जाता. एक बार टी.वी. पर मैं ने दुर्गम पहाड़ों की चट्टानों पर से हिरणी की तरह चंचल गति से उछलतीकूदती, नीचे उतरती गंगा का रूप देखा था. ठीक वैसी ही थी अनुजा कुछ साल पहले. पर शायद भाईसाहब और भाभीजी की कुछ विचित्र शर्तों के परिणामस्वरूप ही अनुजा अकेलेपन की आग में झुलस कर असमय सूखती चली जा रही थी.

वैसे उस के मातापिता यानी मेरे जेठजेठानी उस का बहुत खयाल रखते थे. घर में ही उस के मनोरंजन का काफी सामान जुटा कर रखा गया था. उसे पढ़ने में रुचि थी. उस के अलग से सजेसंवरे कमरे में ढेर

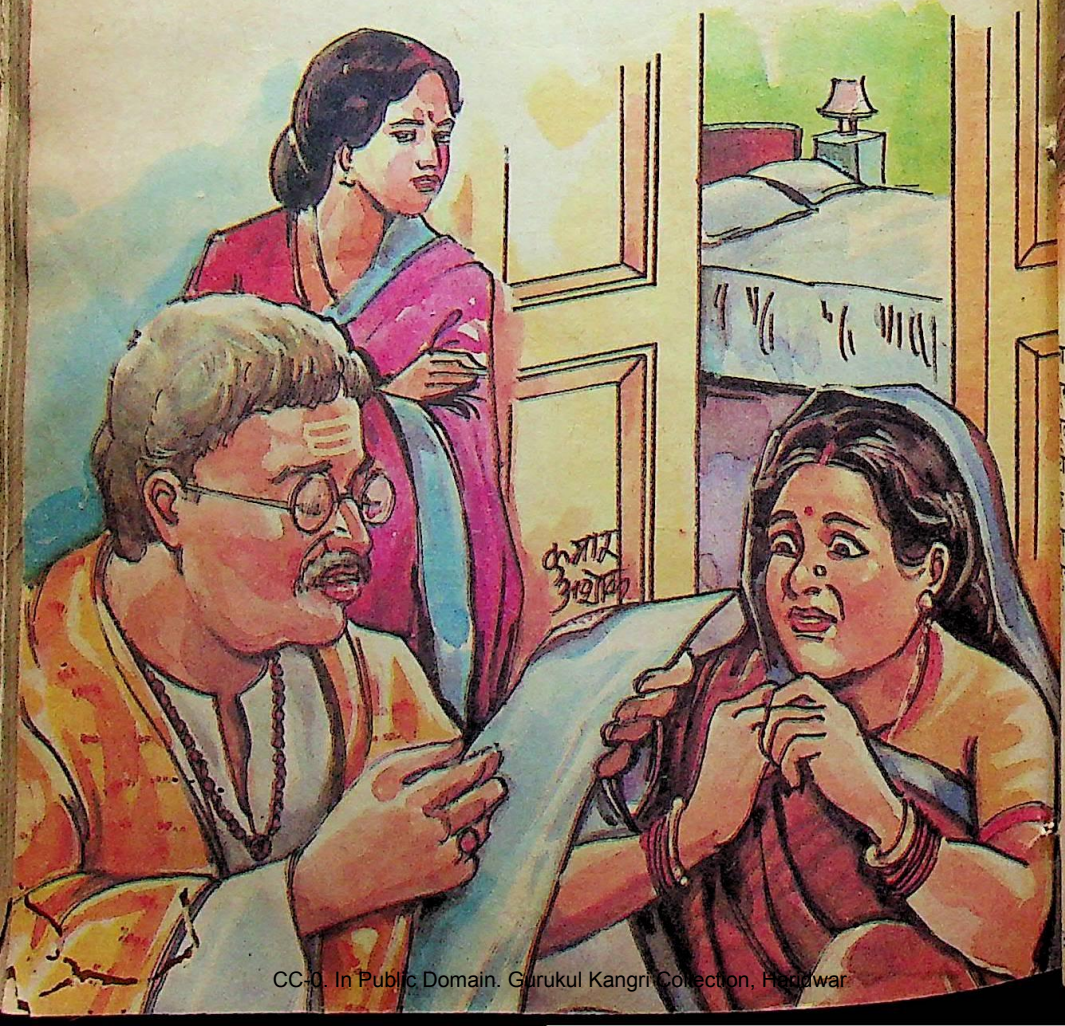

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

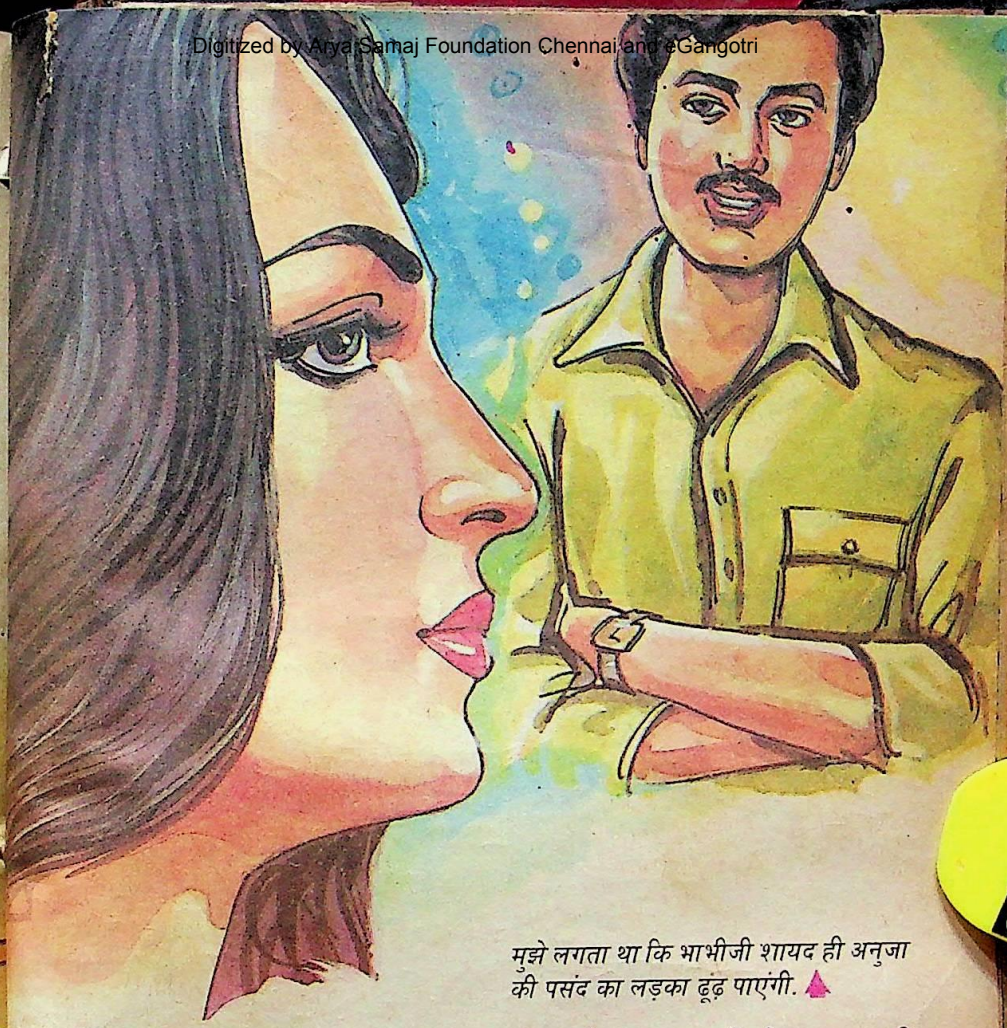

मुझे लगता था कि भाभीजी शायद ही अनुजा की पसंद का लड़का ढूंढ़ पाएंगी.

ारी किताबें थीं. उस के सितार के शौक को ा करने के लिए अच्छा सा सितार और ड़ा सा सितार मास्टर भी उपलब्ध थे. .वी. अपने इंद्रधनुषी रंगों से उसे बहलाने लिए एक कोने में तत्पर खड़ा था. रेडियो ाथ जोड़ कर सजीधजी मेज पर फूलों के च्छों के पास पड़ा था.

घर के अन्य सदस्यों को उन सब की जरूरत नहीं थी. भाईसाहब डाक्टर थे. अब भी सुबहशाम घर में ही बने अपने कार्यालय में सलाहमशवरे का काम करते हैं. बेटा भी डाक्टर है.

अपनी डाक्टर पत्नी के साथ घर से थोड़ी दूरी पर एक क्लिनिक खोल रखा है

अपनी भतीजी अनुजा की बढ़ती उम्र से चिंतित हो कर मैं उस के लिए रिश्ते का प्रस्ताव ले कर जा पहुंचती, लेकिन हर बार भाभीजी मीनमेख निकाल कर प्रस्ताव ठुकरा देतीं. अमोल का रिश्ता ले कर जब मैं उन के पास गई तो उन्होंने लड़के को देखना तक गंवारा नहीं किया. लेकिन वही अमोल अब उन्हें हीरा क्यों नजर आने लगा?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उस ने. दिन दोगुनी रात चौगुनी बढ़ रही थी उन की कीर्ति और आय भी.

भाभीजी उन सब कार्यरत लोगों की सुखसुविधाओं का ध्यान रखती थीं. एक कुशल गृहिणी के नाते घर चमकतामहकता रखती थीं. जाने कैसे इन झंझटों से समय निकाल कर कुछ समाजसेवा, कुछ बुनाई वगैरह भी कर लेती थीं.

नवीन, अनुजा के भाई के बच्चे विद्यालय, गृहकार्य, खेल और टी.वी. में डूबे रहते थे.

वैसे तो अनुजा भी व्यस्त दिखाई देती थी. पर जाने क्यों मुझे उस की आंखों में तनहाइयों के साए से होने का आभास होता रहता था.

इसी लिए तो कोई अच्छा सा लड़का देखते ही मैं बावली सी भाभीजी के पास दौड़ी जाती थी.

उस दिन किसी के घर शादी में सुनील को देखा था. गोरा, लंबा, अच्छे खानदान का हंसमुख. सुना कि बैंक में अफसर था. लड़का बहुत जंचा मुझे. दौड़ कर भाभीजी के पास पहुंची. तब अनुजा केवल 23 वर्ष की थी. स्नातकोत्तर परीक्षा की तैयारी कर रही थी.

लड़के के बारे में सुनते ही भाभीजी नाक सिकोड़ कर बोलीं, "मेरी अनु स्नातकोत्तर होने जा रही है और लड़का सिर्फ वाणिज्य शाखा का स्नातक, कैसे जोड़ी जमेगी?"

"क्यों नहीं जमेगी. उस ने बैंक की परीक्षाएं भी तो दी हैं," मैं ने कहा. "गाड़ी अच्छी चला लेता है. व्यक्तित्व भी बड़ा शानदार है. अब हर चीज तो मिलने से रही. भाभीजी, कम से कम देख तो लें."

"जहां जाना ही नहीं, उस गांव का रास्ता कौन पूछे?" उन्होंने लापरवाही से कंधे उचकाए. फिर नौकर से बोलीं, "रामदास चाय लाओ. अनु की चाचीजी आई हैं. उपमा भी बनाओ, काजू वाला."

खापी कर और अपना सा मुंह ले के मैं लौट आई. घर पर बताने पर उन्होंने खूब डांटा, "क्यों गई थीं टांग अड़ाने पराए झमेलों में?"

"पराए? क्या अनु तुम्हारी भतीजी नहीं है? उसे अच्छा वर..."

"हां, भई हां. लेकिन उन तीनों की आंखों को एकसाथ सुहाने वाला लड़का भारत में तो क्या, दुनिया में भी मिलना मुशकिल है."

मैं हंस पड़ी थी. भूल गई थी बाद में उस घटना को.

फिर एक बार मैं ने इन के किसी सहकर्मचारी के घर पर ऐसा ही लड़का देखा था. गंभीर, आत्मविश्वास से भरपूर, सांवला पर सलोना. अपना व्यवसाय जमाने के लिए परिश्रमशील और हां, दर्शनशास्त्र में स्नातकोत्तर परीक्षा में अच्छे अंकों से उत्तीर्ण. तब तक अनु 27 की हो गई थी.

इस बार मैं ने भाई साहब को फोन किया था. कहा था, "देर करना उचित नहीं, लड़का अच्छा है. अनु के हठीलेपन, लाड़प्यार में पलने के कारण उस में पनपी हुई कुछ गलत आदतों को अपनी गंभीरता से बरदाश्त कर लेगा वह. जोड़ी अच्छी रहेगी."

"ऐसा करो, शाम को घर पर आ जाओ, शुभा. अपनी भाभी जी से बात करो. अनु को बताओ. आखिर उसी का विचार सब से पहले जानना चाहिए. मेरी तरफ से तो हरी झंडी है. पर..."

मजबूर हो कर शाम को मैं घर गई. भाभीजी ने मुझ से लड़के की जन्मकुंडली मंगवाई. फिर अनु की जन्मकुंडली मेरे हाथों लड़के वालों को भिजवाई. मैं यहां से वहां, फिर वहां से यहां... लैंड्ल और बेकर की गेंद की तरह चकराती रही. लड़के के घरवालों ने भाईसाहब का नाम सुना था, इसलिए उन की ओर से सिर्फ दोनों की पसंद को छोड़ कर और किसी बात के लिए आग्रह नहीं था. पर भाभीजी ने पंडित को बुलवाया. वह ही दोनों की जन्मकुंडलियां मिलाने वाले थे. पंडितजी लड़के की जन्मकुंडली देखते ही बोले, "अरे,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

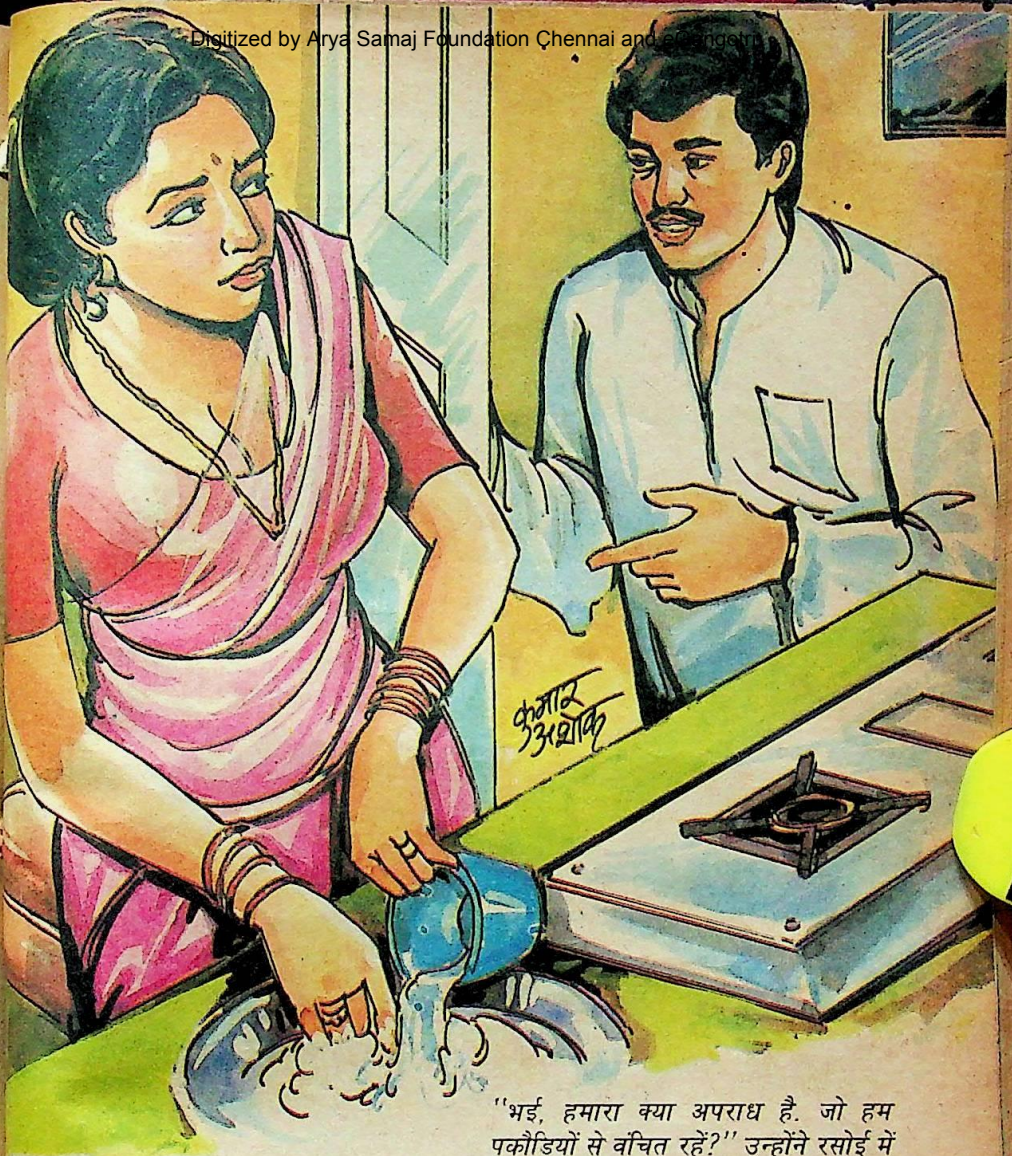

"भई, हमारा क्या अपराध है. जो हम पकौड़ियों से वंचित रहें?" उन्होंने रसोई में झांक कर पूछा.

तो राक्षसगण है. अपनी बेटी देवगण की सत्वगुणों से युक्त. इस तमोगुणी लड़के साथ कैसे निबाहेगी? रोज का झगड़ा, द मारपीट तक भी नौबत पहुंच सकती

मैं उस के पांडित्य से चकित, कुछ ाज भी, दांत पीस कर बोली, "गण के या राक्षस होने से क्या फर्क पड़ता है, तजी? लड़का मैं ने देखा है. मुझे तो उस त्वगुण की मात्रा ही अधिक दिखाई "

"शुभा, बड़ों के और ज्ञानियों के आगे दुस्साहस ठीक नहीं. जाओ, रसोई में जा कर चायनाश्ते की व्यवस्था देखो. तब तक मैं पंडितजी से जन्मकुंडली समझ लूं."

रसोई से मेरे कान बाहर तक लंबे हो सकते तो कितना अच्छा होता. पर ऐसा हुआ नहीं. फिर भी कुछ न कुछ बहाना बना कर मैं वहीं उन के आसपास चक्कर लगाती रही. अब पंडितजी अच्छीखासी दानदक्षिणा पाने के बाद खुश हो कर राक्षसगण का दोष कम करने के उपाय बता रहे थे. पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

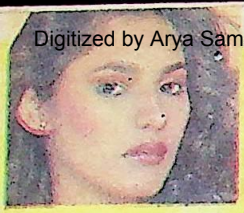

भूल

तुम ने तो कह डाला था
जो कुछ तुम को कहना था,
पर हम कैसे भूल गए कि
हम को तो शरमाना था.
न गिराया पलकों का चिलमन
न रंगा गालों को लाली से,
सुन कर तेरी प्यारी बातें
तकते थे तुम को पागल से.

—निर्मला सुरेंद्रन

भाभीजी को कुछ ठीक नहीं लगा. बोलीं, "विष की परीक्षा न ही लें तो अच्छा है. क्या पता, मारपीट ही होती रहे. हम एक दो साल और रुक सकते हैं."

पंडितजी की आंखों से झांकती निराशा केवल मैं ही देख पाई थी. लेकिन उस बूढ़ेखूसट ने अपनी दक्षिणा के चक्कर में अच्छेखासे शादी के प्रस्ताव को चौपट कर दिया था. खापी कर झल्लाती हुई मैं घर पहुंची.

"हो गया भतीजी का कल्याण?" उन्होंने व्यंग्य से पूछा, "कई बार ठेकरें खा कर भी तुम समझोगी नहीं, शुभा. शायद भाभीजी से कर्णफूलों की जोड़ी या कांजीवरम रेशम की साड़ी की आशा..."

"क्या बात करते हो?" मैं चिढ़ कर बीच में बात काटती हुई बोली, "अनुजा की बढ़ती उम्र का विचार तुम लोगों को कभी नहीं आएगा क्या? याद रखना, अगर लड़की ऐसी ही कुंआरी रहे तो धीरेधीरे तेजहीन हो जाती है. फिर वह लड़के वालों को लुभा नहीं सकती."

"जैसे लड़की का काम उन्हें लुभाना ही हो," वह हंसे थे. "तुम ने तो कभी जरा भी कोशिश नहीं की उस के लिए."

फिर कड़वाहट घुल गई थी. मैं ने प्रेम की मधुरता में अपनी असफलता को डुबो दिया था.

ऐसा कई बार हुआ था. अनुजा 33 वर्ष की हो गई थी. मेरे मन को पता नहीं क्यों उस के अनुरूप लड़का देखते ही चैन नहीं आता था.

उस दिन पड़ोस की चाचीजी के घर स्वेटर का नया डिजाइन सीखने गई तो अमोल से मुलाकात हो गई. अमोल चाचीजी की चचेरी बहन का बेटा था. वनस्पति शास्त्र की किसी शाखा में डाक्टरेट की डिगरी पाई थी. उस्मानाबाद का काम छोड़ कर हैदराबाद के विश्वविद्यालय में अच्छे पद पर अभीअभी आया था. मांबाप का इकलौता पुत्र है. घर की समस्या का समाधान होते ही मातापिता को हैदराबाद ही लाने का विचार था. उस के बाद शादी के बारे में सोचना चाहता था.

शादी? मेरे कान खड़े हो गए. अब तक क्यों कुंआरा था वह लड़का? पता चला कि छोटी तीन बहनों को ससुराल भेजा था उस ने. अब मुक्त हुआ था, जिम्मेदारियों से. 35 का हो गया था पिछले वर्ष.

जैसेतैसे डिजाइन से निबट कर मैं भागी भाभीजी के पास. अनुजा को भी बुलाया गया. हजारों प्रश्न पूछे गए. जितना जानती थी मैं ने उतना बताया.

"देखने में कैसा है लड़का?" भाभीजी का सवाल था.

"ठीक ही है, बुरा तो नहीं," मैं ने कहा, "फिर भी आप लोग देख लें तो पता चले. शाम को भाईसाहब के साथ आइएगा तो बाकी बातें पड़ोस वाली चाचीजी से पूछेंगे."

उस शाम गाजर का हलवा और पकौड़ियों की तैयारी किए मैं बैठी रही, राह देखती रही. न अनु आई, न उस के मांबाप. मैं गुस्से से निराशा में रोई भी थी.

"भई, हमारा क्या अपराध है, जो हम पकौड़ियों से वंचित रहें?" उन्होंने रसोई में झांक कर पूछा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मन ही नहीं बनाया था," मैं ने सही सुना कर कहा.

वह बोले, "छोड़ो भी, शादियां तो ही ही रहती हैं. अनु की डोर जहां बंधी ी, वहीं जाएगी वह. अब तो अपनी शुचि डोर बांधने का समय आ रहा है."

मैं कुछ न बोली. शुचि को 19वां बरस रहा था. अभी से मैं आंखें खोल कर ती थी. अच्छा लड़का देख कर दोचार में ही उस की शादी करा देने का विचार उस की पसंद से, इच्छा से.

"शुचि बेटे, आज मां का बनाने का खाने का मन है. अगर आप बना कर ओ तो इकट्ठे बैठ कर टी.वी. को ठेंगा ाते हुए खाएंगे." उन्होंने सुझाया. फिर र से मुझ से कहा, "उस लड़के को भी कुछ ड़े वगैरह ढंग के दिलवाओ, शुभा. ारा, कुछ चमकने तो लगे और तुम्हारी नत सफल हो."

मैं अचकचा ही मुसकरा दी. मन संभलने लगा. रात को उन की चुटकी याद आई तो लगा कि मुझे लड़की वालों यानी भाभीजी से 'बुरा तो नहीं' वाक्य नहीं कहना चाहिए था. अमोल परेशान था और सफर का थकाहारा था. इसी लिए अनाकर्षक लगा होगा मुझे.

धीरेधीरे हमारी अमोल से दोस्ती हो गई. वे लोग अकसर चाचीजी के घर आते रहते थे. अच्छा, सुलझे हुए विचारों का सादगीपसंद परिवार था. मेरे बच्चे भी अमोल से हिलमिल गए थे.

किसी खुशनुमा बसंती झोंके सा स्वभाव था अमोल का. उस के व्यक्तित्व के नएनए पहलुओं को पहचान कर वह हमें और भी भला लगने लगा था. दिनोंदिन और सुंदर दिखाई देने लगा था.

सुंदर? आखिर, सुंदरता क्या है? शायद उम्र की नादानी के पहले ज्वार के चले जाने पर लोग बाहरी सुंदरता की झिल्ली को

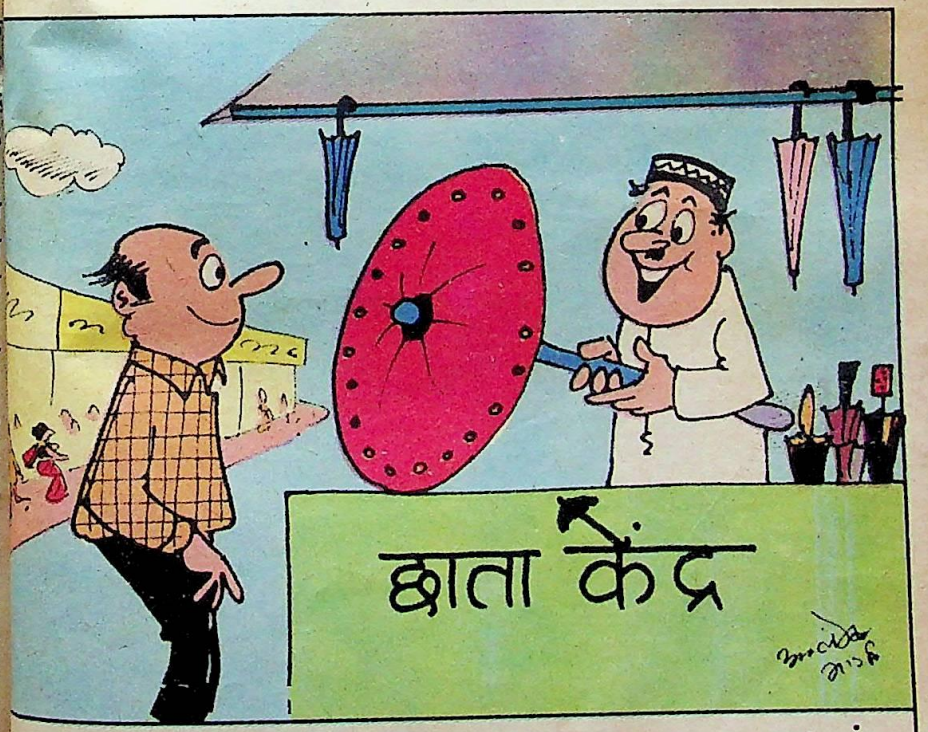

"यह छाता पुरुषों के लिए विशेष उपयोगी है. घर के बाहर धूप और वर्षा से बचाव करता है और घर के अंदर बेलन आदि से."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हटा कर मनुष्य के आंतरिक सौंदर्य का दर्शन करना चाहते हैं. इसी कारण ऊपर से अनमेल लगने वाले कई विवाह बहुत सफल रहते हैं. पतिपत्नी में नोकझोंक तो चलती ही रहती है, पर परस्पर विश्वास, आदर, स्नेह, एकदूसरे के लिए कुछ करते या देते रहने की भावनां ही तो ऐसे विवाहों की जड़ों को समय के साथ और मजबूत बनाते रहते हैं.

प्रौढ़त्व की ओर झुकने वाले दंपती अगर इसी विश्वास को खोजें और पनपाएं तो छोटीमोटी चीजों के पिछले आकर्षण का परदा उन की आंखों से हट जाता है और अपने जीवनसाथी की आंतरिक सुंदरता उन्हें बांधे रखती है.

वैसे देखा जाए तो अनुजा भी 33 की थी. फिर? इसी बीच मेरे बेटे शरद ने इंजीनियरिंग की परीक्षा उत्तीर्ण की और उसे बधाई देने वालों का तांता सा लग गया. भाईसाहब, भाभीजी और अनुजा भी आ पहुंचे. दोपहर का खाना सब ने साथ ही खाया. हां, अमोल भी आ गया था उस दिन.

उस दिन पूरियां तलती हुई शुचि के हाथों गरम तेल की कड़ाही नीचे गिर गई. गरम तेल के बहुत से छींटे अनुजा के दोनों पैरों पर जा पड़े. उस ने घर भर में हायतोबा मचा दी.

डाक्टर पिता एकएक को "पानी लाओ," "बरनाल लाओ" के आदेश देने लगे. मां रोने लगी. उस समय, सहमी हुई अनुजा को कुरसी पर बैठा कर, अपने मीठे बोलों से उसे शांत करते हुए अमोल ही पानी की बालटी लाया था. अनुजा के दोनों पैरों को पानी में डुबोया, शुचि से गरम काफी बनवा कर उसे पिलवाई और कोशिश कर के प्रसन्नता का माहौल बनाए रखा उस ने. फिर अनुजा को जल्दी ठीक हो जाने की आशा बंधवाई. खाने की प्रशंसा की. शरद को गले लगा कर छोटा सा उपहार थमाया. शुचि को चाय के लिए धन्यवाद दे कर वह विदा हो गया.

"अच्छा है यह लड़का," भाभीजी ने दाद दी, "पत्नी क्यों नहीं आई इस की?"

"शादी ही कहां हुई है इस की," उन्होंने हंस कर जवाब दिया.

भाभीजी की आंखें कड़ाही जितनी बड़ी हो गईं. बोलीं, "शुभा, इतना अच्छा लड़का तुम्हारे सामने है और तुम ने हमें बताया तक नहीं? पागल तो नहीं हो? बोलो, कितना पढ़ालिखा है? कहां नौकरी करता है? कहां घर है?"

मैं हंस पड़ी. पति महोदय की आंखों का इशारा समझ कर गाजर के हलवे और पकौड़ियों वाली शाम का जिक्र किया ही नहीं.

अनुजा की ओर कनखियों से देखते हुए मैं ने अमोल के बारे में जानकारी दी. अनुजा का चेहरा धीरेधीरे खिलता जा रहा था.

"कल ही उन से मिलते हैं," भाईसाहब ने तुरंत निर्णय लिया, "प्रदीप और शुभा भी साथ चलेंगे."

"लेकिन पहले अनुजा से तो पूछ लें," उन्होंने सुझाया.

"धत, चाचाजी. आप की पसंद में भला मैं ने कभी मीनमेख निकाली है?" अनुजा झेंप गई.

"और क्या, लड़का तो हीरा है. पसंद न आने वाली कोई बात नहीं है." भाभीजी ने प्रमाणपत्र दे दिया.

अनुजा की शादी अमोल से हो गई थी. मैं सोचती हूं कि वातावरण और दृष्टिकोण पर कितना कुछ निर्भर करता है. अलगअलग कोणों से मनुष्य के अलगअलग रूप दिखाई देते हैं.

अनुजा और अमोल की इकट्ठी होली थी इस बार. उस दिन मेरे घर पर सब का खाना था. सभी की आंखों में प्रसन्नता के रंग थे, चेहरों पर खुशियों के इन्द्रधनुष थे. बरामदे में कल के रंगों के बारे में योजनाएं बनाती हुई चहकती शुचि को देख कर मैं सोच रही हूं, 'शायद अगली होली पर मेरा दामाद भी इन खुशियों में शरीक होगा.'

शरिता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुपमा

हंसतेखेलते और संपन्न सुधीर के परिवार पर मानो वज्रपात हो गया. उद्योगपति सुधीर का इकलौता बेटा सौरभ ब्याह कर के घर में ले आया गरीब बस्ती में रहने वाली निर्धन परिवार की मास्टरनी अनुपमा को. वह इंगलैंड से एम.बी.ए. कर के लौटा था. सुधीर की दो फैक्टरियों में से एक बड़ी वाली को बड़ी दक्षता से संभाले हुए था. सुंदर व सुदर्शन सौरभ धनाढ्य परिवारों की बेटियों की आंखों का तारा था. पर उस ने न तो अपना स्तर देखा, न ही जातिकुल. बस, अनुपमा के सुरीले कंठ पर मर मिटा. पहली बार उस ने अपने मित्र सूरज के विवाह में अनुपमा को सुना था और मोहित हो गया था. और ब्याह कर एकदम घर उठा लाया था. इस तरह यह

कहानी • बेला मुखर्जी

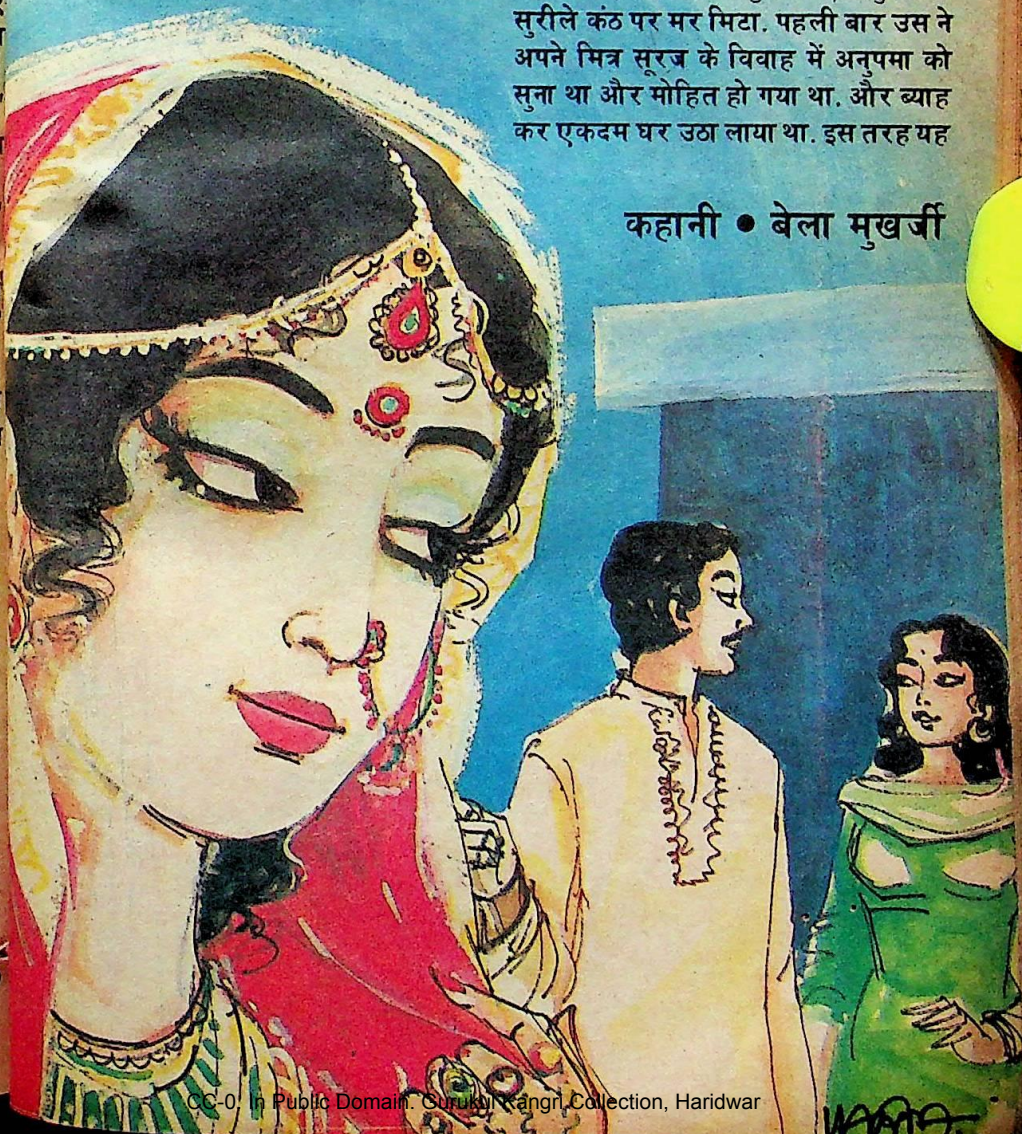

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहुत बड़े उद्योगपति का बेटा सौरभ जब एक निर्धन परिवार की रूपवती लड़की अनुपमा को ब्याह कर घर ले आया तो पूरे परिवार पर वज्रपात सा हो गया. उधर अनुपमा भी इतने बड़े घर में आ कर कम अचंभित नहीं थी.

उस परिवार पर वज्रपात नहीं तो और क्या था?

मां आरती ने बहू के सामने से पैर हटा लिए, "बस करो, पैर छूने का नाटक मत करो. फंसा तो लिया बड़े घर के बेटे को. अब और क्या चाहिए?"

भयभीत अनुपमा सहम कर रह गई. नई साड़ी में कुछ और सिमट गई. उस ने चमचमाते संगमरमर के फर्श पर अपना अक्स देखा. उसे अपनेआप पर ही तरस आ गया. पर सौरभ हंसा, "नाटक तो तुम कर रही हो, मां. यह बेचारी तो आशीर्वाद ही लेने झुकी थी और कुछ नहीं. फिर फंसाया तो मैं ने है इसे."

"हां, हमें समाज में जलील करने के लिए ले आए इस कंगली को."

"अरे मां, यह तो तुम्हारे घर की लक्ष्मी है."

सौरभ की बहन प्रीति खिलखिला उठी, "यह एकदम फक्कड़ लक्ष्मी है, भैया. मति मारी गई है जो खाली बहू ले कर घर में घुस आए. अब अपने समाज में क्या मुंह दिखाओगे? बड़ेबड़े घरानों की बेटियों को ठुकराते आए हो."

आरती ने तरहतरह के मुंह बनाए और वहां से चली गई पैर पटकती हुई. सौरभ ने प्रीति की ओर देखा. फिर झट अनुपमा का घूंघट उलट दिया, "देख कर कहो. फक्कड़ है या रंगरूप की दौलत से मालामाल?"

प्रीति की आंखें चुंधिया गईं. जैसे अनुपमा का चेहरा पूनम का चांद था जो घूंघट की बदली से बाहर आ गया था. घुंघराले काले बालों की कुछ लटें उजले माथे पर लहरा रही थीं. बड़ीबड़ी कजरारी आंखों में शंका थी जैसे कोई हिरनी डरीसहमी हो. सुडौल ठोड़ी पर भय का हलका सा पसीना मोतियों की तरह जगमगाता हुआ, गुलाबी होंठ कुछ कहने के अंदाज में थरथराते हुए, ऊपर से नीचे तक चांदनी जैसी उजली. परख लिया प्रीति ने एक ही नजर में, "सौदा घाटे का नहीं है.जीवन में पहली बार फायदे का सामान घर में लाए हो. पर देखें, यह तुम्हारे लिए लक्ष्मी साबित होती है या नहीं. अभी तो बस खाली हाथपैर ले कर आई है. आगेपीछे भी कोई नहीं."

"ये बाद की बातें है. पहले पिताजी से मिला लाऊं."

"जाओ, पर पड़ेंगे जूते."

जैसा प्रीति ने कहा था और सौरभ ने सोचा था वैसा कुछ भी नहीं हुआ. सुधीर ने मुंह से कुछ नहीं कहा. बस, आरती की तरह पैर हटा लिए.

घबरा कर अनुपमा भी पीछे हट गई. उस का व्यथित हृदय भय से कांपने लगा. सौरभ ने एक पल सुधीर को देखा. अच्छे व्यवहार की आशा तो ले कर नहीं आया था. पर इतना रूखापन मिलेगा, यह भी नहीं सोचा था. सुधीर ने भी उस की ओर देखा, बहुत गंभीर स्वर में बोले, "अपनी पत्नी को कमरे में छोड़ कर मेरे पास आओ."

सौरभ को धक्का सा लगा, 'बहू नहीं मेरी पत्नी. क्या मेरी पत्नी इस घर की बहू नहीं कहलाएगी कभी?'

आरती के कठोर व्यवहार ने उस को विचलित नहीं किया था, पर सुधीर की बात ने गहरी चोट दी. वह घायल सा अनुपमा को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने कमरे में ले आया.

"यह मेरा कमरा है अनु, आज से तुम्हारा भी."

कांपती पलकें उठीं अनुपमा की. सौरभ मुसकराया, "थोड़ा तूफान तो उठेगा ही, घबराने से काम नहीं चलेगा. तुम बैठो, मैं अभी आता हूं. देखें, पिताजी क्या कह रहे हैं."

सौरभ चला गया. अनुपमा हैरान-परेशान सी सौरभ का शानदार कमरा देखती रही, 'शयनकक्ष ही इतना लंबाचौड़ा कि मेरे मायके का पूरा घर इस में आ जाएगा' सामने का परदा हटाया, 'यह अध्ययनकक्ष लगता है. बीच में बड़ी दराज लगी मेज, दीवारों में शीशे जड़ी अलमारियां किताबों से ठसी हैं. मेज पर सजा लिखनेपढ़ने का सामान, कुछ फाइलें और सामने घूमने वाली कुरसी?'

लौट कर अनुपमा ने शयनकक्ष के पास वाले कमरे का भारी परदा उठाया, 'यह ड्रेसिंग रूम है. पूरे में गलीचा बिछा है. एक बड़ी शृंगार मेज, दो बड़ीबड़ी कपड़ों की अलमारियां. इन के पल्ले भी शीशों से जड़े हैं. कपड़ों के स्टैंड और एक बड़ा सोफा.'

वह कमरा पार कर के साथ लगे स्नानघर में आई. वह भी हलके नीली टाइलों से छत तक ढका था. वाशबेसिन, शावर, नल, टाइलों से मेल खाते नीले रंग के ही टब, बालटी, मग और हैंडशावर, गीजर और भी जाने क्याक्या सुखसुविधाओं का सामान. अनुपमा उन का प्रयोग तो क्या नाम भी नहीं जानती थी.

वहां से अनुपमा दोबारा शयनकक्ष में आई. बीच में डबलबेड, मखमल के गिलाफ वाले फोम के गद्दे, कोने में टी.वी., उस के ठीक सामने दूसरी दीवार से टिका टी.वी. की ओर रुख कर के नर्म सोफा, फर्श पर नर्म कालीन. सामने दोनों कमरों की सीमा को ले कर चौड़ी खुली बालकनी, जिस के जंगले पर मनीप्लांट छाई थी और बेंत की मेजकुरसी रखी थी.

अनुपमा खयालों में खोई थी. 'बहूरानी' की आवाज पर सामने देखा तो बूढ़ा नौकर रामू चाय की ट्रे लिए खड़ा था.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हवा से परदे उड़ रहे थे. एक कुंआरे लड़के के पास इतनी जगह? वह तो पूरी अलग कोठी के समान था. अनुपमा को अब अपनी भूल का एहसास होने लगा था. दरिद्र परिवार में जन्म ले कर मां को सदा अभाव के साथ कमर कस कर लड़ते ही देखा था उस ने.

निर्धन परिवारों की मित्रता निर्धनों से ही होती है. उस में दोएक जो संपन्न घर थे उन के साथ ही जोड़ पाई थी अनुपमा सौरभ को. बहुत हुआ तो थोड़ा और संपन्न होगा, यही धारणा थी उस की.

उस से पहले कई बार सौरभ मिला था, अनुपमा से. एकदो बार उसे चाय भी पिलाई थी. पर शादी वाले दिन ही पहली बार उसे सफेद मारुति चला कर आते देखा था. मां इस प्रकार छिप कर विवाह के पक्ष में नहीं थी. जब लड़का लड़की को पसंद करता था तो घरवाले क्यों आपत्ति करेंगे, यही बात उन की समझ में नहीं आ रही थी.

पीतल के फूलदान में ताजे गुलाब महक रहे थे, उन की खुशबू से अनुपमा का मन और उदास हो गया था. ससुराल का घरद्वार देख कर उस का दिल कांप रहा था. कौन जानता था कि वे इतने बड़े लोग हैं. अनुपमा रास्ते में आतेजाते ऐसे विशाल और धनवान घरों को उत्सुक दृष्टि से देखा अवश्य करती थी. इन में रहने वालों से ईर्ष्या भी करती थी. अब उन में से ही एक घर की बहू बनने का अवसर प्राप्त कर के आतंक और शंका से भरी बैठी थी अनुपमा. उसे डर सौरभ से भी लगने लगा था. उस घर में पले सौरभ के साथ कैसे निभा पाएगी, अभावों से युद्ध करते परिवार में पलीबढ़ी अनुपमा. वह तो एक सीधीसादी हिंदी माध्यम से बी.ए. पास लड़की थी.

सुधीर फाइल में डूबे थे. सौरभ के आने का उन को पता भी न चला. सौरभ ने ही उन को संबोधित किया, "पिताजी, आप ने बुलाया था."

सुधीर चौंके, "ओह, तुम, बैठो."

सौरभ बैठ गया. सुधीर ने फाइल बंद करते हुए प्यार से पूछा, "क्या तुम को हमारे ऊपर विश्वास और भरोसा नहीं है?"

सौरभ सकपका गया. वह तो डांट सुनने आया था, "यह क्या कह रहे हैं आप?"

"मुझ को ऐसा ही लगा. शायद तुम्हारा हमारे ऊपर से विश्वास उठ गया. इसलिए तुम ने अपनी पत्नी चुनने में हमारी सहायता लेने की आवश्यकता नहीं समझी."

सौरभ ने चैन की सांस ली. बातचीत ढर्रे पर आ रही थी. वह बोला, "पिताजी, अनुपमा बहुत ही गरीब लड़की है."

"गरीब लड़की की सहायता करने के कई उपाय थे, विवाह की क्या आवश्यकता थी? मुझ से कहते 20-30 हजार रुपए दे देता."

"पिताजी, मैं ने उस से विवाह किया है, सहायता की बात आप के दिल में क्यों आई?"

"क्योंकि उस ने बड़े घर में सेंध लगाई है. जानते हो, तुम किस खानदान के बेटे हो? इस खानदान को सब सम्मान और आदर की दृष्टि से देखते हैं तो हमारे धनवैभव के कारण."

"पर..."

"हमारे खानदान के विवाह संबंध भी बराबरी वालों यानी धनाढ्य परिवारों में ही होते हैं. मेरी दादी, दहेज में चीनी मिल ले कर आई थीं. तुम्हारी मां भी इस शहर के एक बड़े उद्योगपति की इकलौती बेटी हैं."

"और... आप की मां?" सौरभ ने साहस कर के पूछा.

सुधीर ने चकित दृष्टि से बेटे के चेहरे को देखा. पर वह शांत था. उन्होंने उलझ कर पूछा, "क्या यह व्यंग्य कर रहे हो?"

"नहींनहीं, प्रश्न कर रहा हूं."

"तो सुनो, मेरी मां का इस परिवार में बहू बन कर आना बस एक दुर्घटना ही था. वह एक गरीब घर की बेटी थीं. गांव में हमारी जमींदारी थी. उस गांव में विष्णु मंदिर था. उसी के पुजारी की बेटी थीं वह.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तूफान

यों राह में तुम
आंख बिछाया न करो,
हर बात में सौगंध
दिलाया न करो.
ये जिंदगी तुम्हारी
ही है, लेकिन
उठता है जब तूफान
दबाया न करो.

—नरेश गुप्त नीरस

हमारा परिवार धनवान तो था, पर उस में शारीरिक रूप से कोई सुंदर नहीं था. दादीजी के सिर में अपने वंश के रूपरंग को निखारने की धुन समा गई थी. मां अपूर्व सुंदरी थीं. मानव शरीर में इतना रूप कम ही पाया जाता है. उन के सौंदर्य को देख कर दादाजी उन को अपने बेटे की बहू बना कर ले आए."

"जीवन भर अपमान और जिल्लत सहने के लिए?"

"सौरभ!"

"अभी सात वर्ष ही हुए हैं दादीजी के देहांत को. मुझे अच्छी तरह याद है कि इस घर में उन का क्या स्थान था और कैसी दयनीय दशा में रहती थीं वह?"

"सौरभ, तुम हद से बढ़ रहे हो."

"आप और आप की पत्नी दादीजी का कितना अनादर करते थे, यह भी मुझ को याद है."

मुंह तमतमा उठा सुधीर का, "मेरी पत्नी तुम्हारी मां है."

"और वह आप की मां थीं. डरीसहमी दादीमां कभी खुल कर मुझे प्यार भी नहीं कर पाती थीं. नौकरों से भी कम दरजा दिया जाता था उन को. कभी अपनी पत्नी से उन की सेवा कराई?"

पत्थर हो गए सुधीर. कठोर सत्य का उद्घाटन कर के उन का बेटा ही उन से जवाब मांगेगा, कभी यह नहीं सोचा था. सौरभ खड़ा हो गया, "मैं ने कोई भूल या अन्याय नहीं किया. गरीब की बेटी को विधिवत विवाह कर के इस घर में लाया हूं. उस के जीवन के सारे सुखदुख, मानअपमान का दायित्व मेरा है. अगर मैं ने किसी भी दिन इस घर में उस का थोड़ा भी अनादर होते देखा तो मैं उसे ले कर आप का यह घर और धनवैभव छोड़ जाऊंगा. मैं दादाजी नहीं हूं."

सौरभ कमरा छोड़ कर चला गया और सुधीर स्तब्ध से बैठे रह गए.

अनुपमा चौंकी. वह चुपचाप बैठी सौरभ के लौटने की प्रतीक्षा कर रही थी. उस ने देखा कि सामने धोती और बनियान पहने बूढ़ा नौकर रामू ट्रे में चायनाश्ते का सामान ले कर खड़ा था. उम्र के भार से कमर झुकी थी. बाल सफेद. उस की आंखों में बुढ़ापे का धुंधलापन नहीं, बल्कि स्नेह की चमक थी. बोला, "चाय पी लो, बहूरानी. मुंह में कुछ तो डालो."

उस की पलकें भीग उठीं. उस घर की बहू होने की पहली स्वीकृति मिली उसे बूढ़े नौकर से. उस ने विनम्रता से जवाब दिया, "मुझ को कुछ खानेपीने की इच्छा नहीं है, बाबा."

ट्रे मेज पर रख कर रामू ने सतर्क दृष्टि से बाहर की ओर देखा, फिर प्याले में चाय डालता हुआ फुसफुसाया, "बहुत बड़ी लड़ाई लड़नी है, बहूरानी. खापी कर थोड़ा बल बटोर लो. बड़ेबड़े तूफानों से निबटना है अभी तो."

अनुपमा के हाथपैर फूलने लगे, "यह लोग लड़ेंगे? तंग करेंगे?"

"नहीं नहीं. यह लोग तो सभ्य हैं, ऊंचे खानदान के हैं. भला, यह जाहिलों की तरह ऊंचे आवाज में क्यों लड़ेंगे. ऐसे चुपचाप यातना देते हैं कि कानोकान खबर न हो. पर तुम डरना नहीं. कुमुद दीदी, असहाय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संपूर्ण भोजन... इतने से पैकेट में?

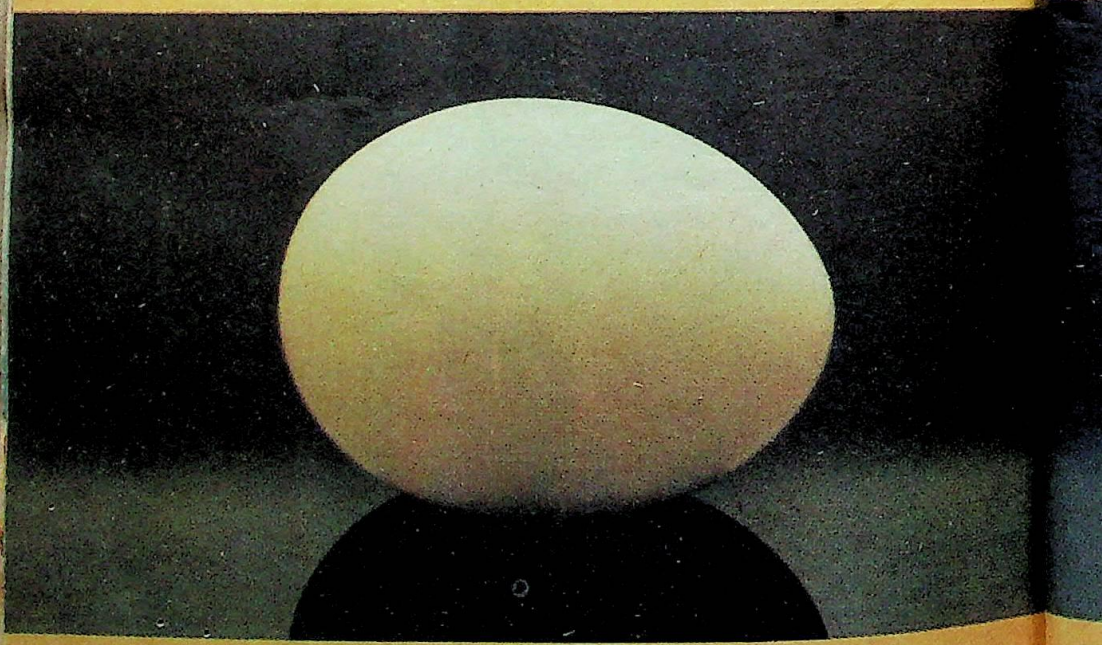

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज़रा सोचिए. केवल एक अण्डे में कितने गुण हैं.

उदाहरण, एक अण्डे में है ७ ग्राम प्रोटीन, जो बच्चों के विकास और बड़ों के स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है.

और अण्डे में प्रोटीन की संपूर्ण मात्रा होती है: इसमें आपके लिये आवश्यक सारे प्रकार के प्रोटीन शामिल हैं.

इतना ही नहीं.

अण्डों में विटामिन 'ए' होता है जो त्वचा को स्वस्थ रखने के साथ साथ रात्रि के दृष्टि दोष (रतौंधी) से भी मुक्त रखता है. और विटामिन 'बी.' जो स्वच्छ दृष्टि के लिए ज़रूरी है. अण्डों में मौज़ूद लोहा खून को स्वस्थ रखता है और फास्फोरस दांत और हड्डियों को मज़बूत बनाता है.

इसके अलावा, कीमत भी बहुत कम.

एक अण्डा रोज़ खाएं, भोजन को संपूर्ण बनाएं.

संडे हो या मंडे, रोज़ खाएं अण्डे.

NECC

नेशनल एग कोऑर्डीनेशन कमेटी.

Enterprise/NECC/8 hn

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विधवा थीं, डरपोक और अनपढ़ थीं, इसलिए सब सह गईं. पर तुम तो पढ़ीलिखी हो, मुकाबला करना डट कर."

"वह कौन थीं, बाबा?" अनुपमा ने कौतूहल से पूछा.

"हमारे पंडितजी की बेटी. तुम्हारी ददिया सास. मैं भी उन के साथ छोटा सा नौकर बन कर इस घर में आया था."

"क्या वह भी गरीब घर से थीं?"

"बहुत गरीब घर से. पर हूरपरी जैसी सुंदर थीं. नजर पड़ने से मैला हो ऐसा उजला रंग, नैननक्श ऐसे तीखे कि जिंदगी भर न भूलें. घुटने चूमते बाल. सुंदर तो तुम भी हो, बहूरानी. पर उन की छाया भी नहीं हो."

"बाबा, अगर मुझे पहले मालूम होता कि यह इतने पैसे वाले हैं तो मैं कभी ब्याह न करती."

रामू अवाक रह गया, "भैया ने बताया नहीं था?"

"बताया तो था. कहा था कि खातापीता घर है. मैं ने सोचा हम से थोड़े से अमीर होंगे. पर...यह...तो..."

"तुम्हारे पिताजी क्या करते हैं?"

"पिताजी नहीं हैं. वैसे वह स्कूल मास्टर थे. मां हैं. मैं और मेरे बड़े भाई को छोड़ कर तीन छोटे भाई और भी हैं. मैं और भैया ट्यूशन कर के घर का खर्च चलाते हैं."

"अब उन का क्या होगा, तुम तो चली आईं?"

"भैया ने मेरी ट्यूशनें भी ले लीं."

"रामू, मेज पर नाश्ता कब लगेगा?"

आरती के क्रोधित स्वर से रामू हड़बड़ा कर उठा, "तुम खापी लो, बहूरानी. मैं जाता हूं."

अनुपमा ने अनमने भाव से प्याला उठा लिया, "कैसे सभ्य लोग हैं ये, जो इतने बूढ़ों का नाम लेते हैं. नौकर ही क्यों न हों, पर बड़े तो हैं."

खाने की मेज पर बैठ कर सुधीर ने सब पर एक उड़ती नजर डाली. सहसा उन को भाभी की याद हो आई. उन्होंने सौरभ से पूछा, "तुम्हारी पत्नी कहां है?"

सौरभ चुप रहा. आरती ने घृणा से होंठ सिकोड़े. प्रीति ने कहा, "मेज पर खाना शायद उस के आदर्शों के विपरीत है."

सौरभ हंसा, "इतनी आदर्शवादी नहीं है. असल में खाने की मेज उस ने कभी देखी ही नहीं होगी."

सुधीर बहुत गंभीर हो गए, "अब जब ब्याह कर लाए हो तो इस घर के अदबकायदे भी सिखाओ उसे."

आरती खीज उठी, "बस, बस, जीवन भर का झंझट तो पैदा कर ही लिया तुम्हारे सपूत ने. कम से कम खाना तो चैन से खा लेने दो. उस बला को सामने बैठा कर मैं एक कौर भी नहीं खा सकूंगी."

प्रीति ने चुटकी ली, "अब तो चैन से खाओ. तुम्हारी बला यहां से दूसरे कमरे में है और कोफ्ते बड़े स्वादिष्ट बने हैं."

आरती ने बेटी की ओर जलती निगाहों से देख कर एकसाथ चार कोफ्ते अपनी प्लेट में डाल लिए, "जूली के मांबाप को क्या मुंह दिखाऊंगी? कब से बहू मान रखा है मैं ने उस को. तुम लोग नहीं समझोगे कि मेरा मन कितना तड़प रहा है उस के लिए."

"वैसे मां, जूली के लिए नहीं, पर हर त्योहार पर उस के घर से जो फलमिठाई और मेवे की टोकरियां, साड़ी और सूट आते हैं, उस के लिए मेरा मन भी तड़प रहा है."

"प्रीति, बहुत बोलने लगी है."

"बस, एक बात और कह कर चुप करती हूं. जूली के दोस्त अनगिनत हैं. उन के साथ कार ले कर लंबेलंबे सैरसपाटों पर चली जाती है. घंटों फोन पर बातें भी करती है. पैट्रोल का खर्च और टेलीफोन का बिल ही हजारों रुपए आ जाता है."

"प्रीति ऐसे बोलने से तुम्हारा खामोश रहना बेहतर है."

सुधीर की डांट खा कर चुप हुई प्रीति. सौरभ हंसने लगा.

—क्रमशः

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूप के द्वार पर

तुम जो मिलने लगे
फूल खिलने लगे
प्यार का चंद्रमा खिलखिलाने लगा.

बात चलती रही
रात ढलती रही
गंध सांसों में आ के
मचलती रही.
चल पड़ी जब पवन
बज उठा बांसवन
गीत मौसम कोई गुनगुनाने लगा.

रूप के द्वार पर
नेह से बांध कर
हंस पड़े जब तुम्हारे
नयन ये सुघर.
उठ गई फिर पलक
मिल गई कुछ झलक
आईना झील बन झिलमिलाने लगा.

—शिवप्रसाद 'कमल'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

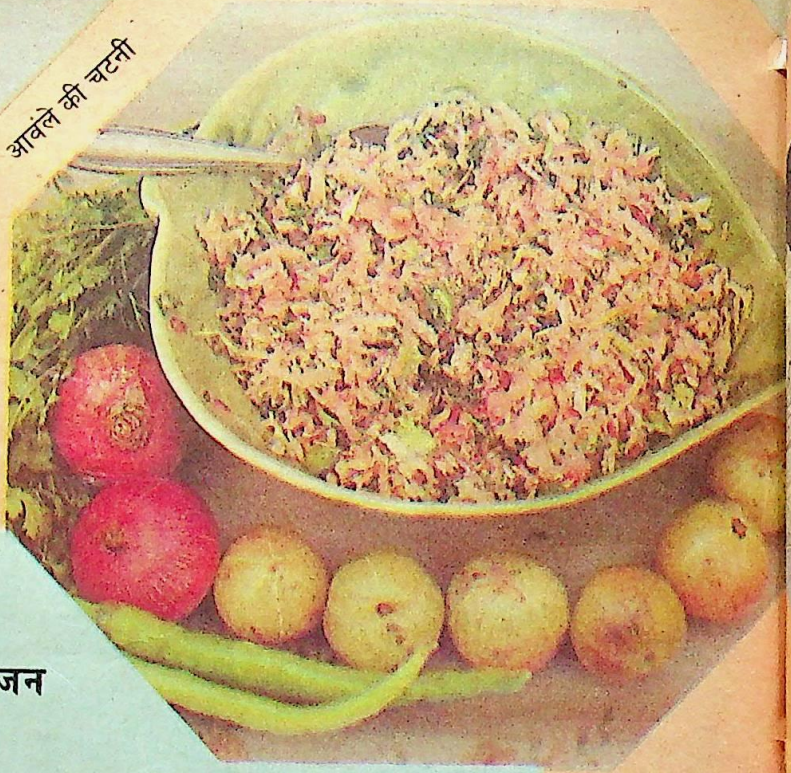

आंवले की चटनी

नए व्यंजन

चटपटी चटनियां

आंवले की चटनी

सामग्री : 250 ग्राम आंवले, 2 गुच्छी हरी धनियां, 4 हरी मिर्च, 2 बड़े प्याज, 1 चम्मच नमक.

विधि : आंवलों को धो कर कद्दूकस करें. प्याज को भी साथ ही कद्दूकस कर लें. इस में धनिया व हरी मिर्च को एकदम बारीक काट कर मिला दें और ऊपर से नमक छिड़क कर अच्छी तरह से मिला दें. यह खाने में स्वादिष्ट होने के साथसाथ बहुत पौष्टिक भी है क्योंकि आंवला लौह और विटामिन सी से भरपूर है. इस चटनी को मिक्सी में नहीं पीसें वरना स्वाद खराब हो जाएगा.

मूली की खट्टीमीठी चटनी

सामग्री : 1 मूली, 100 ग्राम इमली ½ प्याला-चीनी, 1 चम्मच नमक, 1 छोटा चम्मच लाल मिर्च (पिसी), 1 छोटा चम्मच भुना जीरा, काली मिर्च पिसी हुई.

विधि : मूली को कद्दूकस कर के निचोड़ लें. इमली को पानी में घोल कर थोड़ा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

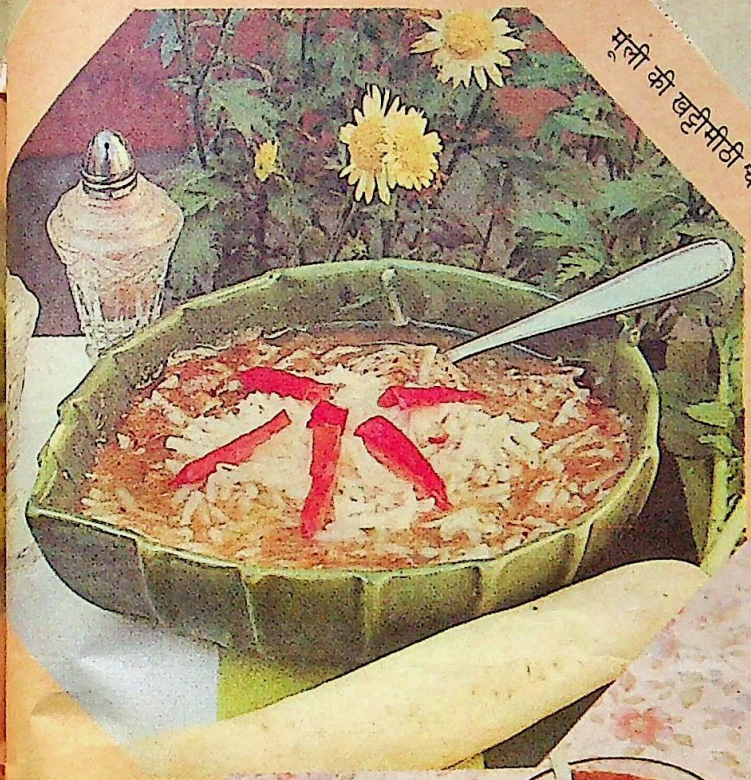

मूली की खट्टीमीठी चटनी

प्याज की चटनी

लला रस बना लें. इस
चीनी नमक, लाल
र्च, भुना जीरा,
ली मिर्च का पाउडर
ला दें, इस के बाद
स में कसी हुई मूली
ला दें. भुजिया
कौड़े के साथ तो इस
टनी का आनंद ही
छ और है.

प्याज की चटनी

सामग्री : 200 ग्राम प्याज, 100 ग्राम इमली, 7 लाल मिर्च सूखी साबूत, 1 बड़ा चम्मच जीरा, 1½ बड़ा चम्मच नमक.

विधि : इमली को पानी में गाढ़ा घोल लें. इस में जीरा, नमक, साबूत लाल मिर्च मिला लें. प्याज को बारीक काट कर इस में मिला कर मिक्सी से थोड़ा दरदरा पीस लें. इस चटनी का स्वाद अलग ही है. चाहें तो पकौड़े, समोसे के साथ परोसें अथवा खाने के साथ. (इस चटनी को बोतल में भर कर फ्रिज में हफ्ता भर रखा जा सकता है)

—विजया वासुदेव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चंपक

चार

छुट्टी विशेषांक

मई (प्रथम), मई (द्वितीय),
जून (प्रथम), जून (द्वितीय),

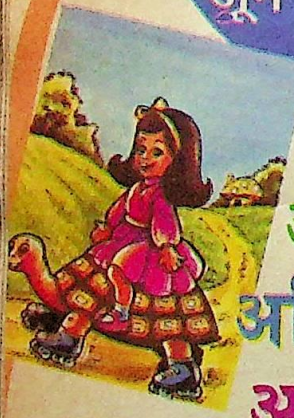

अधिक पृष्ठ

अधिक कहानियां

अधिक चित्रकथाएं

अधिक मनोरंजन

छुट्टियों की लंबी दोपहरी
का पूरा आनंद उठाइए

चंपक

के छुट्टी विशेषांकों

को आज ही सुरक्षित कराइए.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

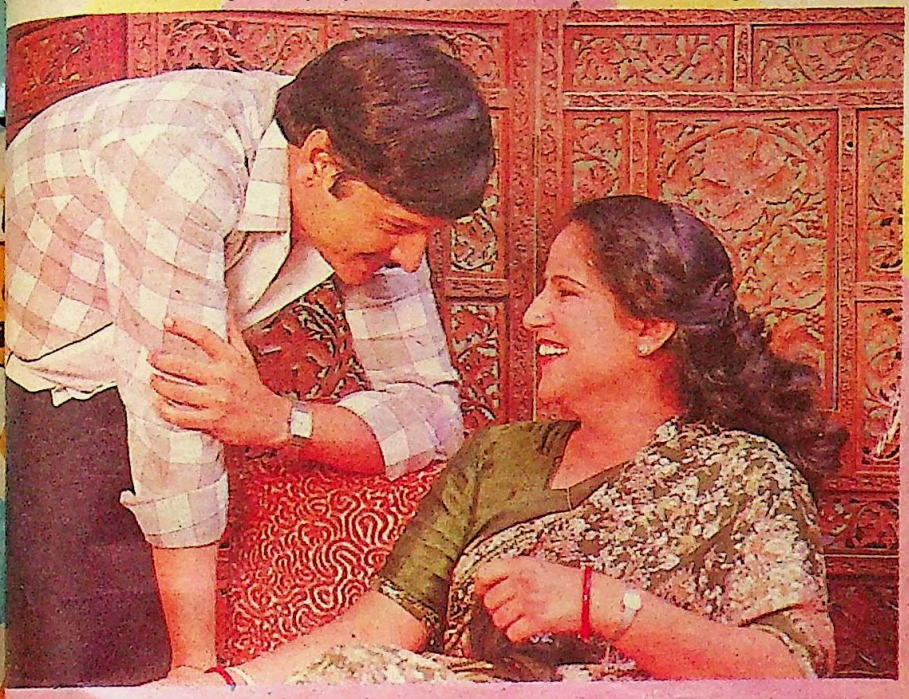

मायका, ससुराल, पति का घर

तीनों में बड़ा है अपना घर

लेख • हिमांशु राज

कभीकभी कुछ महिलाओं से मिल कर तबीयत खुश हो जाती है. ऐसी ही एक महिला से जब हम ने पूछा कि कहां की रहने वाली है तो उस ने मुसकरा कर कहा, "अब तो अपने घर की हूं. यदि आप का मतलब मेरे मांबाप के घर या ससुराल वालों से है तो वह भी बतला देती हूं."

"यहां आप के पति भी रहते होंगे?" राज खुल जाने पर हम ने हंसते हुए पूछा.

"हां, उन का भी घर है. इस वक्त तो मेरा अकेली का है. वह बाहर के काम में ज्यादा व्यस्त रहते हैं."

हम पतिपत्नी वहां किराए का मकान देखने गए थे, मगर बहुत कुछ सोचने लायक बातें ले कर लौटे.

पहली बात तो यह है कि मायके, ससुराल या पति से स्त्री तभी बेहतर ढंग से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निभा सकती है, जब वह अपना मौलिक यानी निजी घर भी बनाना सीख ले.

"मैं पति की मित्र और सहयोगी तो हूं, मगर उन के आसरे नहीं बैठती," उस महिला ने बताया था, "क्योंकि मैं ने देखा है कि पति के भरोसे जीने वाली कई स्त्रियों को जरा सी मुसीबत पड़ने पर मायके या ससुराल की शरण में जीवन काटना पड़ता है."

पति के आसरे बैठने वाली स्त्री के साथ कभी भी ऐसा हो सकता है कि पति की नौकरी चली जाने पर या कोई दुर्घटना हो जाने पर वह मायके या ससुराल पर आश्रित हो जाए या कहीं काम करने लगे.

जरूरत पड़ने पर काम या नौकरी कर लेना आत्मनिर्भरता नहीं है. आत्मनिर्भरता की शुरुआत मांबाप के यहां से होनी अनिवार्य है.

बहुत कम लोग इस सचाई को मानते हैं कि विवाहपूर्व आत्मनिर्भर बन चुकी लड़की गलत जगह विवाह करने को राजी नहीं होती और न ही विवाह के बाद उस का जीना हराम किया जा सकता है. आत्मनिर्भरता का अर्थ यहां सुविधा से नौकरी पा जाना नहीं है. आत्मनिर्भरता का अर्थ है स्वयं निर्णय लेने में समर्थ होना. आत्मनिर्भरता का यह अर्थ नहीं है कि लड़की मांबाप या ससुराल की इच्छा पर आत्मनिर्भरता का त्याग कर दे, केवल 'इज्जत' के सवाल पर.

आत्मनिर्भरता का मतलब यह भी नहीं है कि एक जगह से दूसरी जगह जाते ही (विवाह होते ही) नौकरी छूटे और दूसरी जगह वैसी ही नौकरी तलाश की जाए. (और नौकरी मिलने से पहले ससुराल या पति नौकरी तो क्या, घर से बाहर निकलने को भी गलत बताने लगें.)

आत्मनिर्भरता का अर्थ है अपनी योग्यता व रुचि के अनुकूल कहीं भी आर्थिक रूप में समर्थ रहने की आदत और अपने जीवन से संबंधित निर्णय करने की समझ. जब तक ऐसा न हो, तब तक विवाह विश्वस्त व्यक्ति से ही करने में भलाई है, वह भी इस निश्चय के साथ कि विवाह होते ही किसी के आसरे या रहम पर नहीं रहना है.

किसी के आसरे या रहम पर रहने वाली स्त्री को अंततः भाईबहन और मांबाप भी सम्मान नहीं देते.

अपना घर स्वयं बनाना पड़ता है. घर ईंट की दीवारें नहीं है. आजीवन किराएदार बने रहने वाले लोग भी घर में रहते हैं. घर वह जगह है, जिस में आप ने अपनी प्रतिभा और श्रम लगाया हो. वहां से आप जा ही नहीं सकतीं. हां, जो स्त्री पति के भरोसे बैठी रहती है, वह जराजरा सी बात पर अपना सूटकेस तैयार करने लगती है. उस में आत्मविश्वास नहीं होता.

संभव है, उस के पीछे पति की गैरजिम्मेदारी हो. किंतु सवाल यह है कि आप ने एक गैरजिम्मेदार व्यक्ति से विवाह किया ही क्यों? आप क्यों समय रहते समर्थ नहीं बनीं? इस स्थिति में आधी जिम्मेदारी आप पर है और आप की दुर्दशा की पूरी जिम्मेदारी आप पर है.

मायका छोड़ा ही जाए, यह कतई जरूरी नहीं है. लड़की की शादी जबरदस्ती नहीं की जा सकती. मांबाप की इज्जत या दिल की हसरत की रक्षा के लिए शादी करना तब तो बहुत घातक हो जाता है जब ससुराल में खप जाने वाली लड़की की शक्ल

विवाहित स्त्री के तीन घर होते हैं—मायका, ससुराल और पति का घर. इन तीनों से बढ़ कर एक और घर है अपना घर जिस में गृहिणी को वास्तव में सुख मिलता है. लेकिन यह अपना घर ईंट पत्थर का नहीं, मन का बना होता है, क्या आप का भी ऐसा कोई घर है?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

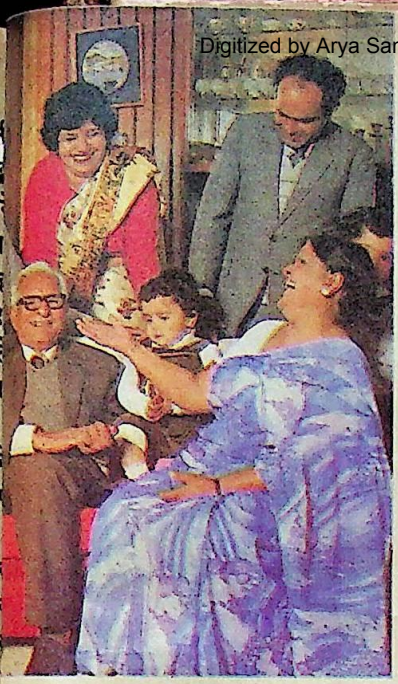

आत्मनिर्भर नारी ही मायके और ससुराल के बीच संतुलित जीवन जी सकती है.

मांबाप नहीं देख पाते. इस दुर्दशा से कहीं तर है अविवाहित रहना.

अविवाहित रहना गुलामी करने से ब बेहतर है. हां, अपनी लड़ाई लड़ने के ए आत्मनिर्भर बनते जाना इसी युग में , हर युग में जरूरी है. ऐसे ही व्यक्ति को र व प्रतिभावान साथी देरसवेर मिल ते हैं, जबकि जल्दबाजी में कई जीवन क हो जाते हैं.

एक स्वयंसमर्थ महिला कहा करती है, हां भी कोई स्त्री या कोई पुरुष अपने पांव खड़ा होता है वहीं होता है उस का घर. र उसे यह चिंता नहीं सताती कि मांबाप, सुर या पति ने दीवारों से बाहर कर ा तो कहां मिलेगा ठौर? कमाऊ और संसमर्थ को कोई भी संबंध परेशान नहीं सकता. वह परिपक्व होता जाता है.''

कई कारणों से स्त्री की आत्मनिर्भरता र निर्णय के मार्ग में आज भी जबरदस्त हैं. किंतु शिक्षित लड़कियों को प्रचार व र के माध्यमों से रोज स्वयंसमर्थ होने की णाएं कदमकदम पर मिलने लगी हैं. ाप व भाईबहनों के साथ ही, निकट के र्कों व संबंधों में भी अब साथ देने वाले क्ति निकल आते हैं.

रुकावटें फिर भी रह जाती हैं. लेकिन इन्हीं को चुनौती मान कर साहस व सीख मिलती है. इन्हीं से जूझ कर जीने का आनंद मिलता है.

हर लड़की का मायका उस की किसी भाभी का ससुराल है. यदि उस की भाभी के साथ ससुराल में ठीक बरताव नहीं होता तो उसे भाभी के हक में वहीं से लड़ाई शुरू करनी होगी. वह अपनी मां के साथ होने वाले अन्याय के विरुद्ध भी लड़ सकती है और मां की खुदगर्जी के विरुद्ध भी. उसे भाई या पिता के किसी अनुचित निर्णय का बहिष्कार भी करना पड़ सकता है. उसे भाई का साथ देना पड़ सकता है.

लेकिन इस अन्याय का विरोध कोरे शब्दों से नहीं स्वयंसमर्थ व्यवहार से किया जाता है. उसी के बाद शब्द कारगर बनते हैं.

उसी सूझबूझ के रहते आप को ठीकठाक ससुराल और सही जीवनसाथी मिलेगा, अन्यथा आप का महत्त्व दहेज की किसी वस्तु जितना ही होगा. बाद में आने वाली मुसीबतों का पहला जिम्मा आप पर होगा.

ससुराल कोई जेल नहीं है. वह भी किसी का मायका है. आप ने सोचसमझ कर विवाह किया है तो निश्चित हो कर यहां भी संबंध संवारिए. आप पहले ही डरी होंगी तो संभव है, जराजरा सी बात का बतंगड़ बनना शुरू हो जाए. बातों को उसी तरह टालना होगा, जिस तरह अपने पिछले घर में टालती थीं. रूठनेमनाने के पीछे भी संदेह नहीं होना चाहिए.

यही नहीं, आप कल को कोई स्वतंत्र फैसला करना चाहती हों तो भयभीत होने की जरूरत नहीं. आप का फैसला सही होना चाहिए और आप के संग एक आत्मनिर्भर व्यक्तित्व रहना चाहिए. आप को कोई गलत बंधन में नहीं बांध सकता. जरूरत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पड़ते ही आप को ससुराल पक्ष के लोगों का ऐसा सहायक बने रहना चाहिए, जिसे बदले में न तो कुछ चाहिए और न ही किसी के अनुचित दबाव में रहने की विवशता हो. मायके वालों से आप के संबंध सुखद होने जरूरी हैं.

अब जो समझबूझ वाले होंगे, उन से आप के संबंध निरंतर स्नेहमय होते जाएंगे, भले ही आप कल को कहीं भी रहें पति के काम के कारण या अपने काम के कारण.

आप के ससुराल के लोग भले ही पिछड़े हुए हों, उन्हें आप के बच्चों से समयसमय पर मिलने की उत्कंठा रहती है. खास कर वृद्ध लोगों के निकट अपने बच्चों को समयसमय पर जाने का मौका दें. आखिर आप का पति उन का पुत्र है. उन्होंने उसे सदा के लिए आप के साथ कर दिया है तो आप का भी कुछ दायित्व है.

अपने छोटे बच्चों को

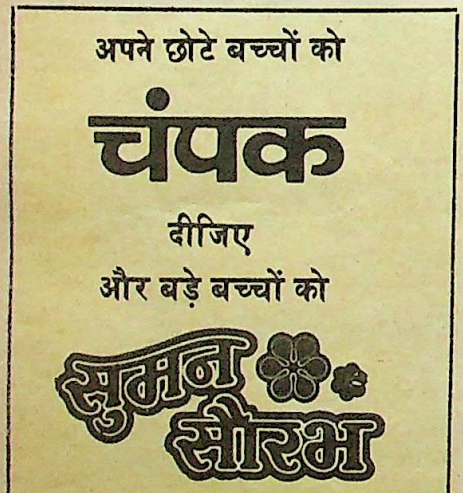

दीजिए

और बड़े बच्चों को

चंपक व सुमन सौरभ में भूतप्रेतों, राक्षसों, देवी-देवताओं, चमत्कारों और श्रापों के कारनामे, जादूटोने, अंधविश्वास की कहानियां प्रकाशित नहीं की जातीं.

दोनों पत्रिकाओं में रचनात्मक चरित्र निर्माण करने वाली, ज्ञान बढ़ाने वाली मनोरंजक कहानियां व लेख प्रकाशित किए जाते हैं. जिस से कल व आज के बच्चे जागरूक, स्वाभिमानी, देशप्रेमी नागरिक बन सकें.

नमूने की प्रति के लिए लिखें : दिल्ली प्रेस, नई दिल्ली-110055.

और यदि आप ऐसा करने में अपमान मानती हैं तो यह सिद्ध हो जाएगा कि आप मायकापरस्त हैं. मायके के खूंटे से मन ही मन बंधी रहने वाली स्त्री आत्मनिर्भर नहीं होती. मायकापरस्ती में अपनापन नहीं, भय निहित है. ऐसी ही स्त्री ससुराल या पति के खूंटे से बंध जाती है.

भयमुक्त नारी ही मायके या ससुराल के बीच संतुलित जीवन जीती है. भयभीत नारी सुशिक्षित कहला कर भी पिछड़ी हुई है. वह ससुराल या मायके से नएनए तकाजे करती रही है, कभी गहने, कभी कपड़े तो कभी सामान के लिए.

सामान स्वयं जुटाना पड़ता है. वही अपना होता है.

दहेज लेने व देने वाले कितने भी बहाने लगाएं, उन की परख तब होती है जब आकस्मिक संकट पर वे दूसरे पक्ष के काम नहीं आते या 'काम' आ कर मजबूरी का रोना रोते हैं. कर्मठ दामाद को तो लोग पूछते भी नहीं, और लालची दामाद की धौंस सहते रहते हैं. दोनों ही स्थितियों में लड़की की दुर्दशा होती है. यदि लड़की आत्मनिर्भर नहीं है तो उसे घुटना ही पड़ता है.

कुछ स्त्रियों की स्थिति देख कर लगता है कि उन्होंने गुलामी को गहनों की तरह पहन लिया है, वे केवल रिश्तों के लिए जीवित हैं. मायके, ससुराल या पति के घर के आसरे बैठी हैं.

एक नवविवाहिता ने इस विषय पर बात चलने पर कहा, "इस जमाने में कौन कह सकता है कि किसे कब कहां रहना पड़े? हम लोगों को विवाह से पूर्व ही व्यर्थ के रिवाजों को तिलांजलि दे कर केवल सुखद संबंधों पर ध्यान देना चाहिए, ताकि हम अपने बूते पर अपने घर की नींव रख सकें."

सचमुच, अब हर समाज में लड़कियां विवाह से पहले ही अपने स्वतंत्र घर की नींव स्वयं बनाने लगी हैं आत्मनिर्भर हो कर.

आत्मनिर्भर महिला कल को मायके, ससुराल या पति की सहयोगिनी होगी, दया या दुत्कार की पात्र नहीं.

शरिता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विवाह में आने वाले मेहमानों की देखभाल

लेख • पुष्पा श्रीवास्तव

"है खबर गरम उन के आने की
आज ही घर में बोरिया न हुआ."

मिर्जा गालिब का यह शेर गुनगुनाते हुए पड़ोस में रहने वाले लाजपत राय से जब सुधीर ने मुसकराते हुए उन से पूछा, "राय साहब, कहीं इस शेर के पीछे कल रमेश की शादी में हुए आप के अनुभव तो नहीं छिपे हैं? मैं तो आज ही बाहर से आया हूं इसलिए उस की शादी में शरीक नहीं हो सका. कुछ आप ही सुनाइए."

सादे रहनसहन के आदी लाजपत राय ने मुसकराते हुए कहा, "भाई, रमेश की शादी में अनुभव तो बड़े रोचक हुए लोग जगह की कमी के कारण मेजों पर रखे भोजन पर ऐसे झपट रहे थे जैसे रेलगाड़ी के स्टेशन पहुंचने पर यात्री डब्बों में चढ़ने उतरने के लिए अफरातफरी मचाते हैं

"खुद परोस कर खाने वाले इस 'बूफे' सिस्टम के भोज में न तो कोई ढंग से भोजन ही निकाल पा रहा था और न ही बड़ेबूढ़ों के लिए बैठ कर खाने का इंतजाम किया गया था

"इतना ही नहीं, मेजबानों को देखने की फुरसत भी नहीं थी कि कौन मेहमान भोजन कर के लौट रहा है और कौन भोजन किए बिना ही वापस जा रहा है. वर और वधू पक्ष के मेहमानों की संख्या बहुत अधिक थी. ऐसे में हम जैसे बूढ़ों का खयाल करने वाला वहां कोई नहीं था. दालान में इतनी कुरसियां

मेजबान को विवाह में आने वाले मेहमानों का एकदूसरे से परिचय करवाना और उन के खानपान का पूरा ध्यान रखना चाहिए.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विवाह समारोह में पूरी व्यवस्था के बावजूद आने वाले मेहमानों के आदरसत्कार में कोई भूलचूक हो जाने पर अकसर वे अपने को अपमानित महसूस करते हैं. ऐसे में अपने मेजबान बनने के दायित्व को इस कुशलता से निभाएं कि मेहमान के मन में आप की मेहमाननवाजी की याद बनी रहे.

भी नहीं थीं कि सभी मेहमान बैठ सकें. लोग इधरउधर खड़े रहे.''

यों तो विवाह समारोह की व्यवस्था में थोड़ीबहुत कमीबेशी प्रायः रह जाती है लेकिन मेजबानों द्वारा मेहमानों के आदर सत्कार में अगर कोई भूलचूक हो जाती है तो वह मेहमान की असुविधा और अपमान का कारण बन जाती है. इसलिए एक जिम्मेदार मेजबान की भूमिका सफलतापूर्वक निभाने के लिए उस में व्यवहारकुशलता आवश्यक होनी चाहिए. इस से मेहमान तो संतुष्ट होंगे ही, मेजबान को भी आत्मसंतोष का अनुभव होगा.

तो आइए, जरा विवाह के अवसर पर मेहमानों की देखरेख के संबंध में कुछ विचार करें.

मेहमानों का स्वागत करने के लिए मेजबान परिवार के किसी जिम्मेदार सदस्य का प्रवेश द्वार के आसपास खड़ा रहना जरूरी है, जिस से विवाह समारोह में आने वाले हर मेहमान की ठीक से आवभगत हो और उसे उचित सम्मान व स्थान दिया जा सके.

इस का एक बड़ा फायदा दोनों पक्षों को होता है. मेजबान यदि उस समय चल रहे कार्यक्रम की जानकारी देते हुए मेहमान को वहां पहले से उपस्थित कुछ अन्य मेहमानों से या अपने परिवार के किसी व्यक्ति से (जिस से मेहमान मिलना चाहे) मिलवा दे तो मेहमान नए स्थान, कार्यक्रम और नए लोगों के बीच अनेक प्रकार की असुविधाओं से बच जाता है. वह आसानी से विवाह समारोह के माहौल में घुलमिल जाता है. इधर मेजबान भी इस मेहमान की ओर से कुछ समय के लिए निश्चिंत हो कर आने वाले अन्य मेहमानों की ओर ध्यान दे सकता है.

भोजन के वक्त मेहमानों पर ध्यान दें

भोजन के लिए स्थान का चुनाव मेहमानों की संख्या तथा भोजनशैली के अनुसार ही करना चाहिए. यदि भोजन की व्यवस्था 'बुफे' प्रणाली में की गई है तो भोजन कक्ष में तथा उस के बाहर भी कुछ कुरसियां तथा छोटी मेजें आदि रखवा देनी चाहिए. जिस से वृद्ध स्त्रीपुरुषों और बच्चों को भोजन करने में असुविधा न हो, और वे अपनी सुविधानुसार बैठ कर या मेज पर अपनी प्लेट रख कर भोजन कर सकें. इस से भोजन कक्ष में मेजों पर रखे भोजन के इर्दगिर्द मेहमानों की भीड़ बेतरतीब ढंग से इकट्ठी नहीं होगी.

भोजन की व्यवस्था यदि कुरसी मेज लगा कर अथवा परिवार के सहयोगियों द्वारा भोजन परोसे जाने वाले पारंपरिक तरीके से की गई हो तो मेजबान को इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए कि भोजन ठीक ढंग से परोसा जा रहा है या नहीं. भोजन की व्यवस्था इस प्रकार हो कि भोजन करने वाले प्रत्येक व्यक्ति को हर व्यंजन समय पर उचित मात्रा में मिले. और भोजन का अपव्यय न हो.

आजकल परेशानी से बचने के लिए लोग ठेके पर किसी होटल के जरिए दावत का पूरा इंतजाम करते हैं. होटल के बैरे आदि ही मेहमानों के लिए चायकाफी तथा खानपान की पूरी व्यवस्था करते हैं. इस से मेजबान तो होटल के कार्यकर्ताओं पर भोज की सारी जिम्मेदारी छोड़ कर मेहमाननवाजी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से संबधित अनेक प्रकार की परेशानियों से बच जाते हैं. परंतु मेहमानों को प्रायः अनेक प्रकार की असुविधाओं का सामना करना पड़ता है. खास तौर से पारंपरिक रीति से भोजन करने के अभ्यस्त मेहमान संकोच के कारण मनमरजी का खाना भरपेट नहीं खा सकते. कभीकभी बैरे भी मेहमानों का पूरा खयाल नहीं रखते और चीजों के लिए बारबार कहना पड़ता है.

इसलिए बेहतर यही है कि बैरों द्वारा की जा रही पूर्ण व्यवस्था पर शुरू से ही नजर रखी जाए. भोजन के बीच में भी मेजबान को मेहमानों की सुविधा का खयाल रखना चाहिए. और जहां भी सेवा में कमी दिखाई दे, उसे ठीक करवाना चाहिए.

एक कुशल मेजबान भोजन कक्ष में अचानक होने वाली दुर्घटना के लिए भी पहले से ही तैयार रहता है. उदाररण के लिए, यदि किसी से खानेपीने की कोई चीज गिर जाए या प्लेट आदि टूट जाए तो तुरंत उस स्थान की सफाई आदि का प्रबंध किया जाना चाहिए. इस के लिए पुराने अखबार व तौलिए आदि भोजन कक्ष में पहले से ही तैयार रहने चाहिए.

मेहमानों की विदाई

यह सामान्य शिष्टाचार में शामिल है कि मेजबान अपने मेहमानों को विदा करने के लिए घर के बाहर तक जाएं और शालीनता के साथ तथाकथित असुविधाओं के लिए क्षमा मांगते हुए धन्यवाद के साथ विदा करें. कई बार,विवाह में आने वाले अनेक मेहमान, विशेष कर स्त्रियां अपना कुछ जरूरी मामान जैसे जेवर, कपड़े, नकदी आदि मेजबान को सौंप देते हैं अथवा मेजबान द्वारा बताए गए स्थानों पर रख देते हैं. अतः मेहमानों की विदाई के वक्त मेजबान को मेहमानों का सामान पुनः उन तक पहुंचाने में सहयोग देना चाहिए. यदि मेजबान को मंहमान की किसी वस्तु का प्रयोग करना पड़े तो मेहमान को विदा करते वक्त मेहमान की वह वस्तु वापस करना न भूलें. यदि

सेक्स

सेक्स जीवन में गरम मसाले का काम करता है—अनुपात में हो तो जीवन चुस्त रहता है. बेहिसाब हो तो स्वास्थ्य नष्ट कर देता है.

—रमेश श्रीवास्तव

मेहमान के साथ बच्चे हों और उसे कहीं दूर जाना हो तो रास्ते में खानेपीने के लिए भी कुछ सामगी अवश्य दें.

रात में ठहरने वाले मेहमानों का उचित प्रबंध

भोजन के बाद रात में ठहरने वाले मेहमानों के लिए सुविधाजनक व्यवस्था की जानी चाहिए. उन के शयन के लिए समय पर उचित प्रबंध करवाना तथा उन की व्यक्तिगत आवश्यकताओं का ध्यान रखना मेजबान का दायित्व है.

विशेषकर सर्दियों में होने वाले विवाह समारोह में मेहमानों के लिए बिस्तर आदि का प्रबंध पहले ही कर लें.

जिस प्रकार सर्दी के मौसम में चायकाफी, गरम खाने तथा गरम पानी से स्नान आदि का प्रबंध रात में ठहरने वाले मेहमानों के लिए करना जरूरी है, उसी प्रकार गरमी के मौसम में खानपान में सफाई तथा ताजगी का होना आवश्यक है. अधिक मेहमानों वाले घर में सफाई की कमी के कारण प्रायः मेहमानों को स्वास्थ्य संबंधी अनेक परेशानियों का सामना करना पड़ जाता है. अतः विवाह स्थल को हर संभव प्रयास से साफसुथरा बनाए रखना बहुत ही जरूरी है.

यदि इस प्रकार की छोटीछोटी बातों का शुरू से ही ध्यान रखा जाए तो विवाह जैसे समारोहों में मेजबान अनेक प्रकार की अड़चनों से मुक्त रह सकते हैं. मेहमानों के मन में भी कुशल मेहमाननवाजी की याद हमेशा बनी रहेगी. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चंचल चित्रा

★★★★अति उत्तम ★★★ उत्तम ★★ मध्यम ★ साधारण ○ बेकार

○ मुलजिम

निर्माता: जी. हनुमंत राव
निर्देशक: के.एस.आर. दोस
संगीत: भप्पी लाहिड़ी
मुख्य कलाकार: जितेंद्र, अमृता सिंह, हेमा मालिनी, शत्रुघ्न सिन्हा, सुरेश ओबराय, किमी काटकर, किरण जुनेजा, कादर खान और असरानी.

अदालत, इनसाफ और कानून हमारी फिल्मों में बारबार दोहराए गए हैं. और उन का दोहराव अब भी बदस्तूर जारी है. इस का शायद यही कारण है कि हिंदी फिल्मों के कम पढ़ेलिखे व अनपढ़ दर्शक ऐसे विषय पसंद करने लगे हैं. फिल्म 'मुलजिम' में भी यह विषय दोहराया गया है. इस फिल्म में वैसे तो कोई खास विशेषता नहीं है, एक आम मसाला प्रधान फिल्म है, फिर भी दो कैबरेनुमा सैक्सी नृत्य दर्शकों को कुछ हद तक बांधे रखते हैं.

विजय (जितेंद्र) एक शरीफ आदमी है. वह अपनी बहन के और साली रेखा (किमी काटकर) के साथ रहता है. रेखा डाक्टर है और गरीबों के लिए गांव में हस्पताल बनाना चाहती है. रंजीत (सुरेश ओबराय) रेखा का कत्ल करा देता है और विजय को जेल पहुंचा देता है. उधर वकील माला (अमृता सिंह) और इंस्पेक्टर नीरजकुमार (शत्रुघ्न सिन्हा) रिश्तेदार हैं. दोनों में लगी एक शर्त के मुताबिक माला

फिल्म 'मुलजिम' के एक दृश्य में जितेंद्र और किमी काटकर : आम विषय पर बनी एक कमजोर फिल्म.

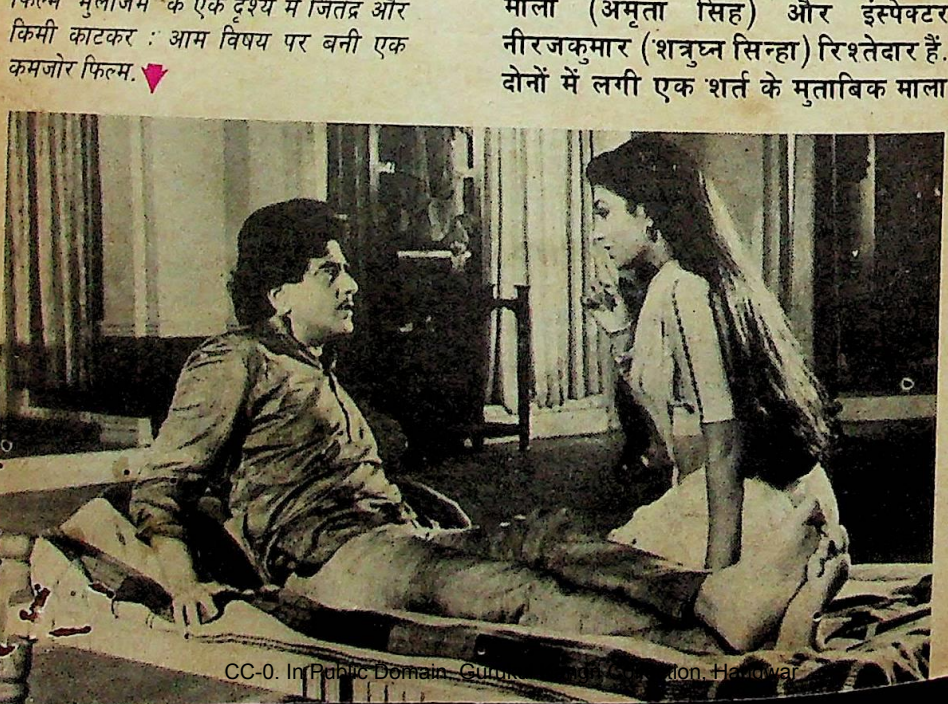

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जेल जा कर विजय जैसे मुलजिम को सही इनसान बनाने का काम अपने हाथ में लेती है. इस काम में उस की मदद करती है जेलर शारदा देवी (हेमा मालिनी). वह विजय को जमानत पर रिहा करा के घर लाती है. कुछ दिन बाद नीरजकुमार का भी खून हो जाता है तो उस का खूनी भी विजय माना जाता है परंतु शारदा देवी असली खूनी रंजीत को खत्म कर देती है और अपनी बेटी पिंकी को विजय और माला को सौंप कर जेल चली जाती है.

फिल्म की उपरोक्त कहानी किस ने लिखी है, फिल्म के शुरू में इस का कोई जिक्र ही नहीं है. दरअसल कहानी नाम की कोई चीज ही नहीं है. मध्यांतर तक तो कहानी आगे बढ़ती ही नहीं, सारे पात्र चीखचीख कर बोलते हैं, मानो दर्शक बहरे हों. मध्यांतर से पहले ही निर्माता ने खयालोंखयालों में दो सैक्सी नृत्य डाल कर बोरियत से बचाने का असफल प्रयास किया है. दक्षिण के निर्माता जितना ध्यान नृत्यों पर केंद्रित करते हैं उतना ध्यान वे फिल्म के अन्य पक्षों पर भी दें तो फिल्में अच्छी बन सकती हैं. मध्यांतर के बाद भी फिल्म में पकड़ नहीं बन पाई है.

फिल्म का निर्देशन सामान्य है तथा संपादन कमजोर. फिल्म के संवाद कादर खान ने लिखे हैं जो हलके स्तर के हैं. आउटडोर शूटिंग में कहींकहीं फोटोग्राफी अच्छी बन पड़ी है.

अभिनय की दृष्टि से जितेंद्र सामान्य रहा है. ऐसी भूमिकाएं वह न जाने कितनी बार पहले भी कर चुका है. अमृता सिंह ने इस साल एक तरह की भूमिकाएं न कर विभिन्न भूमिकाओं में आने का संकल्प किया है. इस फिल्म में वह वकील की भूमिका में जंची है. हेमा मालिनी व सुरेश ओबराय की भूमिकाएं कमजोर कर दी गई हैं. किमी काटकर सिर्फ शरीर प्रदर्शन तक ही सीमित है. फिल्म के गीत इंदीवर ने लिखे हैं पहले दो गीतों के तो बोल ही समझ नहीं आते. भप्पी लाहिड़ी के संगीत में शोर ज्यादा है. ●

पिछले बारह महीनों में

★★★ मिर्च मसाला, पुष्पक,

★★ प्रतिघात, संसार, सत्यमेव जयते, काश, कुदरत का कानून.

★ वहम, इतिहास, हुकुमत, मजाल, डकैत, औलाद, मिस्टर इंडिया, परिवार, खुदगर्ज, सिंदूर, प्यार की जीत, जान हथेली पे, ठिकाना, उत्तर दक्षिण, इनसाफ की पुकार, दरियादिल, भवानी जंक्शन, कालचक्र, शहंशाह.

○ ईमानदार, कलयुग और ???, कामअग्नि, आग ही आग, यादों की जंजीर, मनु द ग्रेट, नामोनिशान, सीतापुर की गीता, प्यार के दोचार दिन, मेरा यार मेरा दुश्मन, डांसडांस, मुकद्दर का फैसला, इनसाफ, हवालात, इनसाफ कौन करेगा, खूनी महल, मरते दम तक, दिलरुबा तांगेवाली, सड़क छाप, हिरासत, दिलजला, कच्ची कली, दिल तुझ को दिया, मर्द की जबान, वतन के रखवाले, गोरा, दीवाना तेरे नाम का, मैं और तुम, प्यार के काबिल, हिफाजत, घर का सुख, औरत का इंतकाम, परम धरम, हिम्मत और मेहनत, जागो हुआ सवेरा, रात के अंधेरे में, धर्म शत्रु, मर्दों वाली बात, अपनेअपने, हम फरिश्ते नहीं, आखिरी निश्चय, खून बहा गंगा में, तमाचा, बिजली और तूफान.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहू भी कभी सास बनेगी

कहानी • कमला सपोलिया

आज से लगभग 40 साल पहले नीरजा की शादी हरीश से हुई थी. बड़े चाव से उसे बहू बना कर घर लाया गया था. हरीश का परिवार अच्छाभला था. बंटवारे से पहले तो बहुत खुशहाली थी. बंगला, मोटर गाड़ियां और नौकरचाकर सभी कुछ तो था उन के पास. ऐसे ही भरेपूरे घर में नीरजा आई थी.

नीरजा का परिवार गुजरांवाला में उन्हीं के पड़ोस में रहता था. उस वक्त

अरिता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बदले हुए तेवरों ने अपना

बड़े घर की बेटी को छोड़ कर जब हरीश की शा.. नहीं लगाई. हर हो गई तो उसे अपने आप पर नाज होने लगा. और उस ने अपने रंगढंग दिखाने शुरू कर दिए. लेकिन जब नीरजा की बहू निशा उस के नक्शेकदम पर चलने लगी तो क्या नीरजा उसे ऐसा करने से रोक पाई?

हरीश लाहौर के प्रसिद्ध बालकराम मेडिकल कालिज में डाक्टरी पढ़ रहा था. छात्रावास में रहता था. इसलिए जब भी वह छुट्टियों में लाहौर से घर आता था, तभी उस की भेंट नीरजा से हुआ करती थी.

नीरजा बड़ी प्यारी लड़की थी. वह अकसर हरीश के घर आया करती थी और वहां सब के साथ बड़े सलीके का व्यवहार करती थी. इसी लिए सब उसे बहुत चाहते थे. पिता के देहांत के बाद नीरजा के परिवार की आर्थिक स्थिति कुछ अच्छी न थी. फिर भी उस की मां ने उस की पढ़ाई को जारी रखा था.

नीरजा की छोटी दो बहनों को भी अच्छी शिक्षा दी गई थी. लड़कियां सुंदर भी थीं. उन दिनों में लेनेदेन की कोई परेशानी नहीं थी. दहेज की बात तक करना गुनाह समझा जाता था. नीरजा की मां से कुछ उम्मीद करना तो वैसे भी गलत होता.

इन्हीं सब बातों का खयाल कर के हरीश के पिता ने उस का रिश्ता नीरजा से तय कर दिया था. एक छोटी सी रस्म करने के बाद हरीश की मां ने नीरजा के हाथ में पड़ी कांच की चूड़ियों के बदले उसे सोने की चूड़ियां पहना दीं. नीरजा ने झुक कर अपनी होने वाली सास के पांव छू लिए. उस वक्त तो ऐसा लगा था कि एक बहुत ही सुखद और गहरा रिश्ता कायम हुआ है.

जिंदगी बड़े मजे में गुजर रही थी कि अचानक एक दिन तूफान आ गया और बना-बनाया घरसंसार तितरबितर हो गया. देश का बंटवारा हुआ और नफरत की आग में

शादी के बाद नीरजा के बदले रंगढंग देख कर सब हैरान हो गए.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

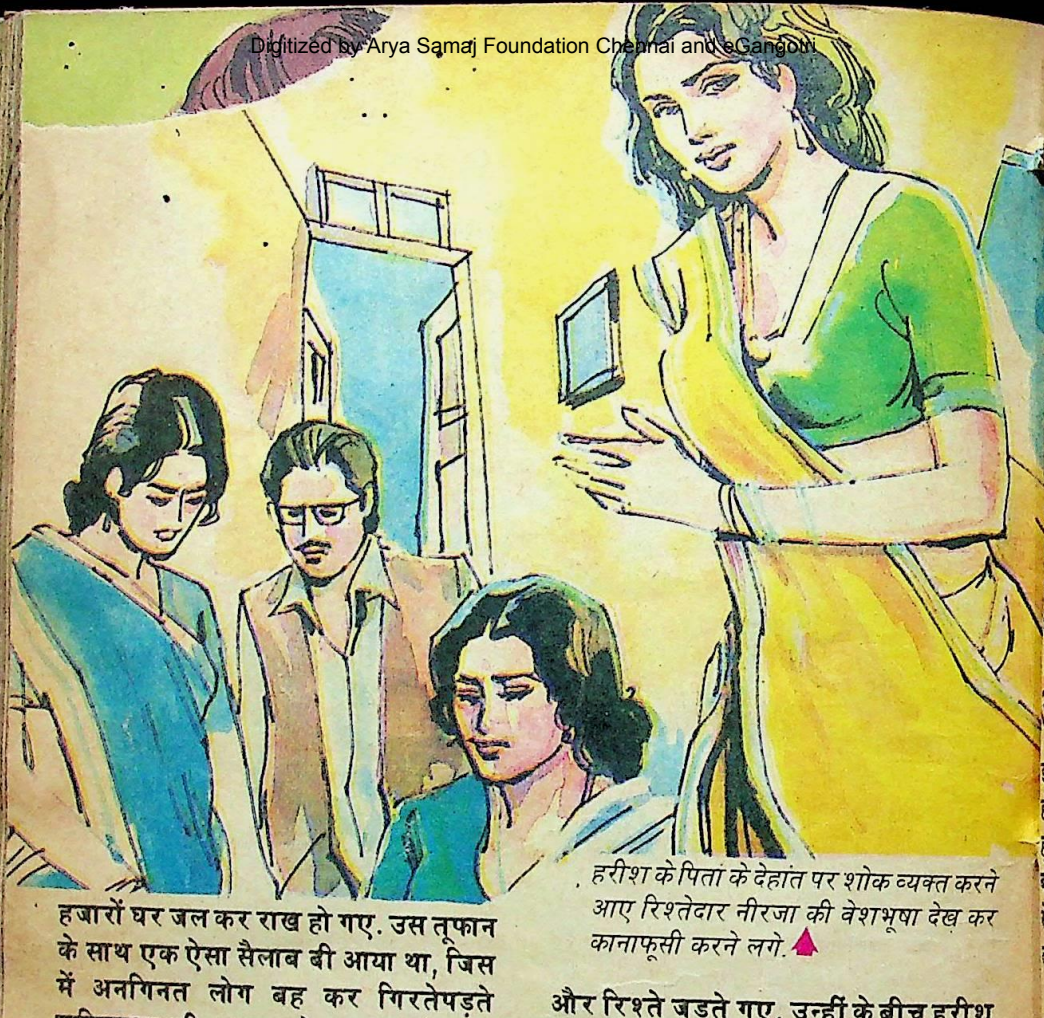

हरीश के पिता के देहांत पर शोक व्यक्त करने आए रिश्तेदार नीरजा की वेशभूषा देख कर कानाफूसी करने लगे.

हजारों घर जल कर राख हो गए. उस तूफान के साथ एक ऐसा सैलाब भी आया था, जिस में अनगिनत लोग बह कर गिरतेपड़ते पाकिस्तान की सरहद को पार कर के सारे हिंदुस्तान में इधरउधर बिखर गए. कोई कहीं जा गिरा, कोई कहीं. एकाएक लोगों ने अपना सब कुछ गंवा दिया. यहां तक कि अपना वतन भी.

हरीश का परिवार भी उस तूफान की चपेट में आ गया. इस से पहले कि वह होश संभालते, उन की जड़ें गुजरांवाला से उखड़ कर दिल्ली में आ गिरीं. लेकिन यह अच्छा हुआ कि हरीश बतौर डाक्टर सेना में भरती हो चुका था. इसलिए मातापिता के बुरे दिनों में वह उन का सहारा बन गया और मदद के तौर पर उस ने हर महीने एक बंधी रकम घर भेजनी शुरू कर दी.

उसी उतारचढ़ाव में वक्त गुजरता गया. लोगों से मुलाकातें होती गईं और और रिश्ते जुड़ते गए. उन्हीं के बीच हरीश के पिता महेश की भेंट एक सज्जन पुरुष वीरेंद्र से हुई. कुछ मुलाकातों के बाद दोनों के बीच एक गहरा दोस्ताना संबंध जुड़ गया.

एक दिन वीरेंद्र अपनी बेटी रमा का रिश्ता ले कर महेश के पास आए. महेश ठहरे आदर्श और सिद्धांतों के पक्के. नीरजा की मां को दिया हुआ अपना वचन उन्हें उस वक्त भी याद था. इसलिए तुरंत कोई जवाब देना उन्होंने मुनासिब नहीं समझा. लेकिन वीरेंद्र ने महेश के घर के इतने चक्कर लगाए कि आखिर मजबूर हो कर उन्हें रिश्ता स्वीकार करना पड़ा.

फिर भी उन्होंने नीरजा के बारे में रमा के पिता को सब कुछ बता दिया. उन्होंने स्थिति को समझने के बाद भी मंगनी की रस्म अदा करने की इच्छा प्रकट की तो कुछ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ी कहने को नहीं रह गया था. हरीश और
मा की मंगनी हो गई.

लेकिन वक्त ने एक बार फिर करवट
दली. उस मंगनी को एक महीना भी न
आ था कि एक दिन अचानक नीरजा को ले
र उस की मां आ गई. पति के देहांत से वह
हले ही दुखी थीं. बंटवारे ने उन पर और
बजली गिरा दी. उन्हीं बातों का वास्ता दे
र नीरजा की मां जारजार आंसू बहाती
ही.

यह कैसी विडंबना थी कि इतने दिनों
क तो नीरजा के परिवार की कोई खबर
हीं थी. लेकिन जैसे ही दूसरी जगह हरीश
ा रिश्ता तय हुआ, वैसे ही नीरजा दोबारा
उस की जिंदगी में लौट आई. अजीब उलझन
में पड़ गए थे महेश.

अगले दिन नीरजा और उस की मां के चले जाने के बाद हरीश के घर वालों के बीच इस विषय को ले कर गंभीरतापूर्वक बातें होनी लाजिमी थीं. आखिर में यही फैसला हुआ कि फिर से एक बार वीरेंद्र को सब कुछ बता दिया जाए. वह माफ कर दें तो नीरजा से ही हरीश की शादी करना इनसानियत का तकाजा होगा.

उसी शाम महेश रमा के घर गए. उन की सारी बातें सुन कर उस के पिता वीरेंद्र ने पूरी सहृदयता दिखाई और हरीश को रिश्ते के बंधन से मुक्त कर दिया.

कुछ दिनों के बाद हरीश और नीरजा की शादी हो गई. उसे बहू बना कर घर में सब बहुत खुश थे. लेकिन जल्दी ही नीरजा के तेवर कुछ बदले हुए नजर आने लगे. उसे शायद कुछ गलतफहमी हो गई थी कि उस की खातिर इतने बड़े घर की लड़की को छोड़ दिया है तो जरूर उस में कोई खासियत होगी.

नीरजा ने शायद यह कभी नहीं सोचा था कि हरीश के पिता ने उस की मां को जुबान दी थी और उन्होंने अपनी बात को निभाना चाहा होगा. इसी लिए उस की शादी हरीश से हो पाई थी.

नीरजा के बदले हुए तेवरों ने अपना रंग दिखाने में ज्यादा देर नहीं लगाई. हर महीने आने वाली रकम एकदम ही बंद हो गई. जब नीरजा हरीश के पास होती थी तो रुपयों के आने का कोई सवाल ही नहीं उठता था. अपने मायके जाती थी तो वहां उस का खर्चा वैसे ही दोगुना हो जाता था. ससुराल में होती थी तो उस के कारण वहां भी खर्च बढ़ जाता था. लेकिन नीरजा हरीश के पिता को 100-50 रुपए दे कर अपनी जिम्मेदारी से मुक्त हो जाती थी.

पहलेपहल तो घर में पैसों की कमी बहुत महसूस हुई. लेकिन जरूरत इनसान को सब कुछ सिखा देती है. मुशकिलों का सामना करने की शक्ति भी देती है. शुरू में रंजीत और दिलीप की फीसें तक देने की बड़ी परेशानी हुई. लेकिन समय के साथ एकएक कर के सारी समस्याएं हल होती गईं और अच्छे दिन फिर लौट आए.

रंजीत एम.एससी. करने के बाद बंबई की एक फर्म में नियुक्त हो गया. दिलीप सेना में भरती हो कर अपना प्रशिक्षण पूरा करने के लिए देहरादून राष्ट्रीय रक्षा अकादमी में चला गया. दोनों बहनों की शादियां सैनिक अफसरों से हो गईं और वे अपने घरों में खुश और सुखी थीं.

लेकिन उन गुजरे वर्षों में नीरजा ने हरीश को अपने परिवार से बिलकुल अलग कर दिया. वह अपनों से एक बार ऐसा बिछुड़ा कि फिर कभी उन से न मिल सका.

मातापिता के होते हुए हरीश की फिर भी कुछ खबर रहती थी. लेकिन उन के बाद नीरजा ने हरीश के भाईबहनों से बिलकुल नाता तोड़ लिया. पिता का देहांत हुआ तो वह बंगलौर में थे. तार भेजने के बाद भी वह 10 दिन तक घर नहीं आए. आए तो नीरजा की वेशभूषा देख कर रिश्तेनाते वाले हैरत में पड़ गए. आपस में कानाफूसी करने लगे कि नीरजा क्या मातमपुर्सी के लिए आई थी या किसी खुशी के मौके पर. इस बात की चर्चा सारी बिरादरी में हुई. वैसे भी जो नई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिन नीरजा ने घर में कैद, छोटी छोटी बातों को ले कर तनाव बना रहा. उस के व्यवहार से जो हरीश की मां को दुख हुआ, उस से नीरजा को कोई सरोकार न था. वह तो रिश्तेदारों के बीच आ कर बैठती भी न थी. देख कर ऐसा लगता था कि उसे जबरदस्ती वहां लाया गया था.

अगले साल मां चल बसी. हरीश को तार तो भेज दिया गया था लेकिन वह आया नहीं. न ही नीरजा ने कोई खत भेजा. ऐसा लगा कि उस का तो अपनी सास के साथ कभी कोई संबंध ही न था. बड़े बेटे के होते हुए रंजीत ने मां को अग्नि दी. चौथे की रस्म पूरी करने के बाद जो सब अपने घरों को लौटे तो छोटी बहन के सिवा किसी ने हरीश की तरफ मुड़ कर नहीं देखा. नीरजा ने किसी को इस लायक छेड़ा ही न था. लेकिन नीरजा तो नीरजा थी. ताज्जुब तो हरीश पर होता था, जिसे कभी भी अपनों की खबर लेने की जरूरत महसूस नहीं हुई.

इस बीच कई वर्ष गुजर गए. हरीश ने सेना से सेवानिवृत्त हो कर अपनी प्रैक्टिस शुरू कर दी थी. डिफेंस कालोनी में उस का बहुत बड़ा दो मंजिला मकान था. नीचे की मंजिल में क्लिनिक खोलने की देर थी कि बेतहाशा पैसा आने लगा.

हरीश की तो दिल्ली में पहले ही बड़ी शोहरत थी. एक बार तीन साल के लिए मिलटरी हस्पताल में और चार साल के लिए विलिंगडन (राम मनोहर लोहिया) हस्पताल में नियुक्त होने के कारण हरीश की डाक्टरी की धूम दिल्ली और दिल्ली के बाहर मच चुकी थी. उस के हाथ में इतनी शफा थी कि वह मौत के मुंह से मरीज को खींच लाता था. शायद उसी शोहरत और दौलत ने नीरजा को इतना घमंडी बना दिया था.

अब उन का बेटा विराट बड़ा हो चुका था. अमरीका से इंजीनियरिंग की डिगरी हासिल कर के लौटा तो उसे दिल्ली में ही बहुत अच्छी नौकरी मिल गई थी. सफलता उस के पांव चूमने लगी.

और आठ साल पहले एक और शादी हुई. विराट और निशा की. निशा ने तो ससुराल आने के कुछ ही दिनों बाद स्पष्ट और सटीक कह दिया था कि किसी को उस से कोई उम्मीद नहीं रखनी चाहिए. उस ने विराट से शादी की है, उस के परिवार से नहीं.

जब तक हरीश जिंदा था, उस ने बेटे के साथ रिश्ते में दरार नहीं आने दी, लेकिन निशा का व्यवहार हमेशा ही खिंचाखिंचा रहा. उस ने जल्दी ही नीरजा को परख लिया था. जब उस ने यह देखा कि शादी में हरीश की तरफ से कोई नहीं आया तो उसे यह समझने में जरा भी देर नहीं लगी कि नीरजा का अपनी ससुराल वालों के साथ कोई संबंध नहीं था. रिश्ता था तो केवल अपने लोगों के साथ. नीरजा की इस बात ने निशा का रास्ता साफ कर दिया. वह भी नीरजा के नक्शेकदम पर चलने लगी.

निशा के मातापिता भी दिल्ली में रहते थे. बड़े घर की इकलौती बेटी होने के कारण उस के तौरतरीके कुछ पहले ही से बिगड़े हुए थे. शादी के बाद जो आजादी मिली तो निशा ने उस का पूरा फायदा उठाया. हफ्ते में पांच दिन वह विराट के साथ अपने मांबाप के घर ही रहती थी. विराट का दफ्तर उसी क्षेत्र में था. इसलिए निशा को कोई बहाना बनाने की जरूरत भी नहीं पड़ती थी.

सप्ताहांत दोनों अपने घर आ जाते थे, लेकिन जितनी देर वहां रहते निशा का व्यवहार नीरजा को परेशान किए रहता.

उधर जब भी नीरजा अपनी जायदाद और धनदौलत का जिक्र करती तो निशा उसे यह कह कर बहुत बौना बनाने की कोशिश करती कि उसे नीरजा की किसी चीज की जरूरत नहीं है. निशा तो नीरजा का दिया हुआ कोई उपहार तक आसानी से कुबूल नहीं करती थी. अपनी मर्जी से आती जाती थी. अपनी मर्जी से रहती थी. जो चाहती थी, वही करती थी. नीरजा उसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब पेश है लिंक तालों के निर्माता की ओर से !

लिंक प्रेशर कुकर

भारत में पहली बार...
स्लाइडिंग फोर्क के साथ
भाप को तुरन्त निकालने
की नई तकनीक

Link

Adfield

3, 4, 5, 6.5 लीटर में उपलब्ध

निर्माता :- लिंक लॉक्स प्रा० लि० (प्रेशर कुकर डिविज़न)
बदर बाग़ अलीगढ़-202001 (इंडिया)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ नहीं कह सकती थी. बस, चुपचाप और बेबस निशा का तमाशा देखती रहती थी.

ऐक दिन अचानक हरीश की हृदयगति रुक गई. उस वक्त उस के पास कोई नहीं था. नीरजा बाजार से लौटी तो उस ने अपने पति को शांत मुद्रा में पड़े हुए पाया. नीरजा ने छोटी ननद को फोन किया तो उस दिन अंजली बहुत रोई. जी भर के रोई. कोई उसे चुप न करा सका क्योंकि वह सचमुच बहुत रोना चाहती थी.

लगता था कि 40 साल से रुका हुआ अंजली के आंसुओं का बांध टूट गया था. उस लंबी अवधि में नीरजा की हर कोशिश के बावजूद एक अंजली ही तो थी जो अपने भाई से रिश्ता न तोड़ सकी थी.

उस दिन आंसुओं के सैलाब के बीच उसे रहरह कर एक ही एहसास सता रहा था, उन के घर ऐसी बहुएं आईं, जो परिवार में अपनों की तरह रहने में असमर्थ थीं. उन की हठ के आगे किसी की एक न चली.

अंजली भी मजबूरन चुपचाप अपने पिता और भाई के घर टूटतेबिखरते देखती रही थी. उसे यह समझ में नहीं आता था कि वे लड़कियां चाहती क्या थीं. क्यों ऐसा करती थीं? क्या वे यह नहीं जानती थीं कि अब अगर कोई नीरजा आई है तो कल कोई उस से बढ़ कर निशा आएगी और उसे आईना दिखाएगी. आईने में उसे अपना प्रतिबिंब नजर आएगा, जो कुछ उस ने खुद अपने वक्त में किया था उस की याद दिलाएगा.

यही कारण था कि चार वर्षों से नीरजा बिलकुल अकेली पड़ गई थी. एक दिन अचानक ही उस का निशा से झगड़ा हो गया था. बात कुछ खास नहीं थी. लेकिन निशा तो ऐसे मौकों की तलाश में रहती थी. नीरजा से कुछ भी सुनना उसे गवारा न था.

जब झगड़े के बीच नीरजा ने निशा को अपनी जायदाद से बेदखल करने की धमकी दी तो वह तुनक कर बोली, "नहीं चाहिए मुझे आप की जायदाद. दान कर दीजिए किसी यतीमखाने को."

और वह उसी दिन विराट के साथ अपने मांबाप के घर चली गई थी. वहीं से कुछ अरसे के बाद दोनों अमरीका को रवाना हो गए थे.

फिर वक्त का पहिया घूमा. दिन, महीने और महीने, वर्ष बनते गए. अंजली अकसर सोचा करती थी कि क्या नहीं था उन के घर में और क्या नहीं हो सकता था. लेकिन वह तो तब होता जब सब प्यार की डोर में बंधे रहते. नफरत और ईर्ष्या ने तो हमेशा ही घरों को तबाह किया है.

एक दिन अंजली इन्हीं खयालों में खोई हुई थी कि विराट का खत आ गया. खत देख कर वह बहुत खुश हुई. लेकिन पढ़ने के बाद उस की आंखें भर आईं. विराट ने लिखा था कि उसे अमरीका की नागरिकता मिल गई थी, उस की नौकरी भी बहुत अच्छी थी और निशा को भी मनपसंद काम मिल गया था. वहां उन के पांव अच्छी तरह जम गए थे. अब पता नहीं हिंदुस्तान कब आना होगा?

पत्र पढ़ने के बाद अंजली को ऐसा लगा कि उस का अपना कुछ खो गया है. नीरजा को कोई पत्र आया या नहीं, इस बारे में कुछ कहना संभव नहीं था. लेकिन अंजली को यह उम्मीद नहीं थी कि निशा ने विराट को अपनी मां के नाम खत भेजने दिया होगा.

अब अंजली को नीरजा के पास जाना पड़ेगा. जाएगी तो उसे अकेले और उदास पाएगी. अंजली को देख कर नीरजा धीरे से मुसकराएगी. अपना हाथ बढ़ा कर उस का हाथ थाम लेगी. उसे अपने पास बैठा कर बातें करने लगेगी और उन की बातों का विषय होगा—विराट.

अंजली जानती थी कि नीरजा को अपना बेटा बहुत याद आता है. लेकिन अंजली यह भी जानती थी कि उस की मां को भी अपना बेटा बहुत याद आता था. इसी लिए रहरह कर उसे यही खयाल आता था, 'काश, उस वक्त नीरजा ने वह प्यार और आदर बांटा होता, जिस की कमी आज उसे खुद इस कदर महसूस होती है.' ●

सरिता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

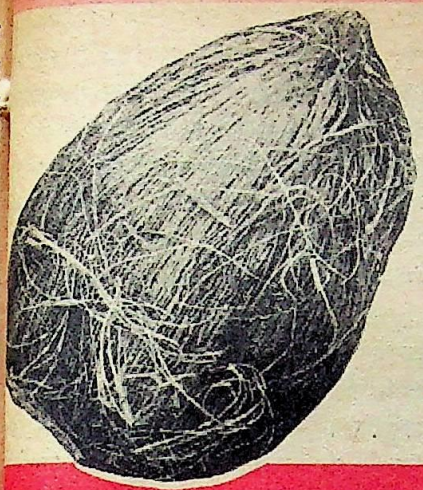

रूढ़िवादिता का स्थूल प्रतीक

नारियल

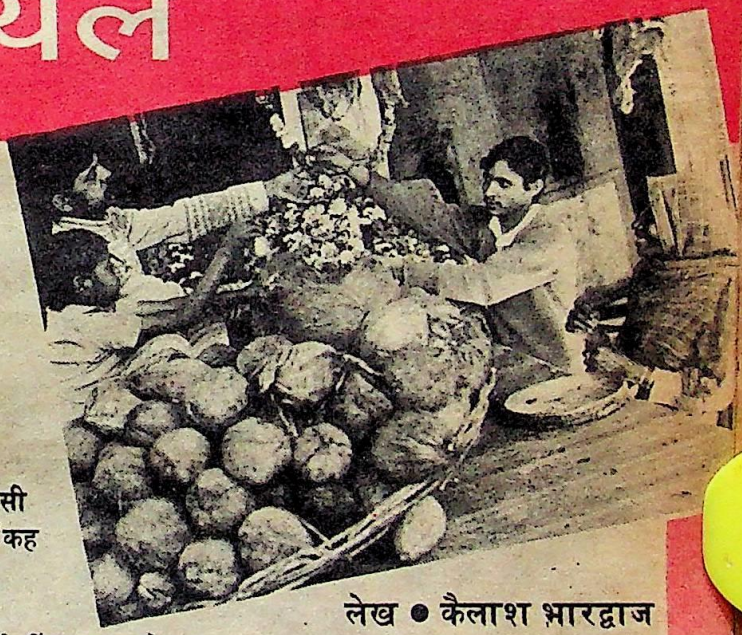

लेख • कैलाश भारद्वाज

उस दिन रामप्रसाद की दुकान पर गया तो पुस्तकों वाली अलमारी में एक नारियल रखा देख कर यह पूछे बिना न रह सका कि वह नारियल कहां से आ गया.

"सुबह सिद्धार्थ रख गया था." उन्होंने एक पड़ोसी दुकानदार का नाम लिया. "कह गया था कि बाद में ले जाएगा."

बात आईगई हो गई, किंतु रात के भोजन के बाद मैं बिस्तर में लेटा तो मेरा ध्यान फिर नारियल की ओर चला गया और अंततः मैं यह सोच कर परेशान हो उठा कि हमारे तथाकथित हर शुभ कार्य में नारियल का प्रयोग क्यों किया जाता है. वास्तव में मैं ने बराबर देखा था कि सगाईब्याह, मुंडननामकरण, कथावार्त्ता, यज्ञहवन आदि में नारियल की उपस्थिति अनिवार्य समझी जाती है. उद्घाटन आदि के अवसर पर भी नारियल तोड़ कर उस कार्य को शुभ बनाने की परंपरा हमारे यहां है.

मैं ने यह भी देखा था कि मंदिर आदि में नारियल चढ़ाए जाते हैं तथा वहां से कुछ 'विशिष्ट' भक्तों को प्रसाद के रूप में नारियल प्राप्त होते हैं. कहने का मतलब यह कि हमारे समाज में ऐसा शुभ कार्य अथवा अवसर ढूढ़ पाना कठिन ही है, जहां नारियल की उपस्थिति के बिना उस की निष्पत्ति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूर्णता की कल्पना की जा सके.

आखिर हुआ यह कि मेरी नींद गायब हो गई और मैं बैठेबिठाए नारियल के झमेले में फंस गया. असल में मुझे यह समझ पाने में मुशर्किल पड़ रही थी कि नारियल में ऐसा 'शुभ' क्या है?

मुझे इस बात से इनकार नहीं है कि नारियल बड़ा अच्छा फल है, स्वादिष्ट, पौष्टिक और उपयोगी. यह कई प्रकार से काम में आता है. जिन प्रदेशों में नारियल लगते हैं, वहां लोग उस के अंदर के दूध जैसे तरल पदार्थ को पीते हैं. सूख जाने पर उस की गिरी को खाने के काम में लाया जाता है. नारियल का तेल बालों के लिए बड़ा उपयोगी माना जाता है. यहां तक कि उस की सूखी जटाएं भी आग जलाने के काम आती हैं. और आजकल तो नारियल के रेशे से रस्से, चटाइयां, गद्दे तथा अन्य कई प्रकार की लाभप्रद वस्तुएं भी तैयार की जाती हैं.किंतु शुभ कार्यों में उस की अनिवार्यता का कारण क्या है?

सोचतेसोचते मुझे खयाल आया कि किसी जमाने में हमारे यहां नरमेध यज्ञ होते थे. जीतेजागते मनुष्य को यज्ञ की अग्नि में झोंक दिया जाता था. बाद में जब यह समझ में आया कि यह एक निर्दोष व्यक्ति की हत्या ही है तो उस का स्थान नारियल को दे दिया गया. यज्ञ की पूर्णाहुति के समय पुरुष के स्थान पर नारियल चढ़ाया जाने लगा.

नारियल को बलि की वस्तु का औचित्य प्रदान करने के लिए विश्वामित्र और त्रिशंकु की कथा गढ़ ली गई, (कथाएं गढ़ने में यों भी हमारा कोई जवाब नहीं है) जिस के अनुसार एक बार देवताओं के मुकाबले में विश्वामित्र ने अपनी ही सृष्टि खड़ी कर ली. यहां तक कि उस ने मनुष्यदेह भी बना ली. वह उस में प्राण फूंकने की तैयारी कर ही रहा था कि दैविक विधान भंग होता देख कर देवताओं ने विश्वामित्र के साथ समझौता कर लिया. विश्वामित्र ने तब मानव शरीर के अंगप्रत्यंगों को विभिन्न प्रकार की सब्जियों, फलों आदि में बदल दिया. सिर को उस ने नारियल बना दिया.

इस कथा ने नरमेध को 'नारियलमेध' का रूप दे दिया. आरंभ में केवल यज्ञ में ही नारियल चढ़ाया जाता था. बाद में जब यज्ञ कर्म क्रमशः पूजा, अर्चना आदि का रूप लेने लगा तो यज्ञ की मूल भावना को कायम रखने के लिए नारियल को वहां भी स्थान मिल गया. और क्योंकि हमारे यहां सामाजिक कार्यकलापों को भी धार्मिक अनुष्ठानों के ही अंतर्गत माना जाता है, अतः विवाहशादी तथा दूसरे उत्सवों में भी नारियल की उपस्थिति आवश्यक बन गई.

हमारे विभिन्न कार्यव्यवहारों में नारियल की उपस्थिति की शुरुआत के दो कारण प्रतीत होते हैं. एक तो नारियल का तत्कालीन जीवन में उपयोगी पहलू और दूसरा, उस के साथ जोड़ी गई सर्वसमर्पण की भावना.

ऐसा लगता है कि किसी समय में हमारे रोजमर्रा के जीवन में नारियल का बहुत उपयोग व महत्त्व था. सुस्वादु व पौष्टिक तो वह था ही, सस्ता भी था. हो सकता है, जिन गिनीचुनी चीजों के सहारे हमारे आर्थिक जीवन का रथ चलता हो, उन में एक नारियल भी रहा हो. पूज्यता की भावना मूलतः वस्तु की उपयोगिता से ही संबद्ध होती है. नारियल शायद उस युग में इसी लिए पूज्य (व शुभ) मान लिया गया था,

पौष्टिक और उपयोगी फल नारियल तमाम शुभ कार्यों, धार्मिक कार्यों में प्रयोग किया जाता है. बगैर इस के कोई भी शुभ कार्य हो ही नहीं पाता. लेकिन यह बात समझ से परे है कि आखिर नारियल में ऐसा 'शुभ' क्या है?

शरिता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किशोरों की सचेतक पत्रिका

सुमन सौरभ

अप्रैल 1988

इस अंक की एक झलक :

मनोज डर के मारे अधमरा सा हो गया. वह डाली से चिपक कर सांसें रोके बैठा रहा. बहुत रोकने पर भी कंपकंपाने के कारण उस के दांत बज रहे थे, क्योंकि नीचे शेर था और ऊपर रीछ. एक मिनट बाद रीछ ने उस के कंधे पर हाथ रख दिया...और...फिर क्या हुआ? (कहानी : ऊपर रीछ, नीचे शेर).

धीरेधीरे गोंडू ने कारी से सारी बातें जान लीं. उसे मालूम हो गया था कि उस की बहन की दुर्दशा करने वाली वह लंगड़ी शेरनी ही है. बस, उस दिन से उस पर शेरनी से बदला लेने की धुन सवार हो गई...क्या गोंडू बदला ले सका? (कहानी : जंगल का बहादुर).

रणभूमि में पशुपक्षियों की सूझबूझ, साहस और शक्ति युद्ध जीतने में अहम भूमिका निभाती थी. पशुपक्षी आज भी सेना के लिए बड़े मददगार साबित हो रहे हैं. (सचित्र लेख : सेना के मददगार पशुपक्षी).

करीबकरीब कुत्ते की तरह कोई गुर्राया था. "नीचे उतर..." पोस्टकार्ड चिपकाते, सीढ़ी पर खड़े श्याम ने पीछे मुड़ कर देखा. एकाएक यकीन नहीं हुआ. नीचे इश्तहार का वही राक्षस खड़ा था, जिस पर 25 हजार रुपए का इनाम रखा हुआ था. क्या हुआ श्याम का...? (कहानी : इश्तहार)

अन्य रोचक स्तंभ, कविताएं, हंसोड़ पात्रों की चित्रकथाएं और आठ कहानियां.

नाम .....

पता .....

..... पिन ☐☐☐☐☐☐

मुफ्त नमूने की प्रति के लिए कूपन काट कर भेजें.

सुमन सौरभ,

ई-3, झंडेवाला एस्टेट,
नई दिल्ली- 110 055.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूजा करतीं महिलाएं : मात्र रूढ़िवादिता का अनुसरण.

क्योंकि वह अत्यधिक उपयोगी था.

संभवतः इतना अधिक महत्त्वपूर्ण रहा होगा नारियल कि उस का चढ़ावा, दान अथवा उपहार अपनेआप को ही समर्पित कर देने के बराबर समझा जाता होगा. दूसरे शब्दों में कहूं तो आत्मोत्सर्ग की भावना का प्रतीक बन गया होगा नारियल. यदि किसी को नारियल दे दिया तो फिर और देने को बचा ही क्या?

परंतु स्पष्ट है कि अब ऐसा कुछ नहीं है. नारियलबहुल क्षेत्रों को फिलहाल छोड़ भी दें तो देश के अधिकांश भागों में नारियल की वह उपयोगिता आज नहीं है. वह न तो हमारे आए दिन के जीवन का अंग ही रह गया है और न हमारे आर्थिक जीवन की धुरी ही है बल्कि आर्थिक दृष्टि से तो अब नारियल काफी महंगा है.

चढ़ावा चढ़ाने तथा सामाजिक आदान-प्रदान में अलबत्ता अब भी काम आता है नारियल. और क्योंकि उस का खरीदना अब आम आदमी के बस की बात नहीं रह गई है, इसलिए प्रायः पुराने पड़े नारियल से ही काम चला लिया जाता है.

बात यहां तक बिगड़ गई है कि लोग सस्ते से सस्ता नारियल या उस का गोला ढूंढ़ते फिरते हैं. बल्कि अब तो नारियल के गोले की जगह सेब, संतरे आदि का प्रयोग भी होने लगा है. कहने का मतलब यह कि नारियल अपना वह महत्त्व कब का खो चुका है, जिस के कारण वह पूज्य अथवा शुभ था.

फिर आत्मसमर्पण अथवा बलिदान की जिस भावना को व्यक्त करने के लिए नारियल चढ़ाया या दिया जाता था, वह भी अब समाप्त ही है. अब यह कहने के लिए कोई नारियल भेंट नहीं करता कि समय पड़ने पर मैं तन, मन, धन से आप के लिए तैयार हूं.

नारियल का आदानप्रदान तो अब निश्चित रूप से एक रूढि मात्र है या कहिए कि एक औपचारिकता भर है.

शुभअशुभ के मामले में नारियल की निरर्थकता की एक घटना मेरी याददाश्त में आज भी वैसी ही ताजा है.

हमारे मित्र विजयसिंह की उम्र काफी हो गई थी, परंतु विवाह का जुगाड़ नहीं बैठ रहा था. आखिर किसी ने सुझाव दिया कि देवी बालासुंदरी के मंदिर से यदि विजयसिंह को नारियल प्रसादरूप में प्राप्त हो जाए तो उन का शर्तिया विवाह हो जाएगा.

अब मरता क्या न करता? सो हम आठदस मित्र विजयसिंह को साथ ले कर एक सुबह भगवती बालासुंदरी के दरबार में हाजिर हो गए. विजयसिंह ने श्रद्धापूर्वक देवी की पूजाआराधना की. और संयोग देखिए कि प्रसाद रूप में विजयसिंह को मिल भी गया गोटाकिनारी लगे लाल वस्त्र में लिपटा नारियल ही, जिसे उन्होंने ला कर खुशीखुशी अपने कमरे में स्थापित कर लिया.

इस घटना को कम से कम दस वर्ष बीत चुके हैं. नारियल विजयसिंह की पूजा का पात्र बना उन के कमरे में ही सजा है और वह स्वयं आज भी पूर्ववत अकेले ही दंड पेल रहे हैं.

सरिता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

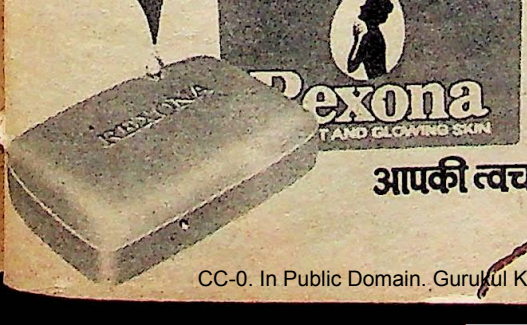

ज्योतिर्मय त्वचा... जिसकी चाहत रही है आपको सदा. आपकी चाहतों का साबुन–रेक्सोना.

रेक्सोना में है चार कुदरती तेलों का मिश्रण–हापुशा, दालचीनी, लौंग, टेरिबिथ–आपकी त्वचा की कुदरती देखभाल के लिए.

रेक्सोना

आपकी त्वचा को कोमल और उज्ज्वल रखता है.

हिन्दुस्तान लीवर का एक उत्कृष्ट उत्पाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सच्चा सुख

कहानी • विनोदिनी

सभी परेशान थे, सदा चहकने वाली वंदना को क्या हो गया था कि एकदम गुमसुम रहने लगी है. वह इतनी प्रसन्नचित्त महिला थी कि घरबाहर सभी को हंसाती और स्वयं हंसती रहती थी. सब से अधिक दुखी तो उस का पति आनंद था. चार वर्ष ही उन की शादी को हुए थे. उन्होंने प्रेम विवाह किया था. आनंद की समझ में नहीं आ रहा था कि अचानक ही उसे क्या हो गया था. सारा घर ही अस्तव्यस्त हो गया था.

आनंद उस समय भारतीय तकनीकी संस्थान (आई.टी.आई.) दिल्ली में प्रशिक्षण ले रहा था. रविवार व अन्य छुट्टियों के दिन अपने पिता के मित्र केशवलाल के यहां चला जाता था. उन की दो लड़कियां थीं. बड़ी लड़की वंदना पढ़ने में बहुत कुशाग्र थी और बी.ए. की छात्रा थी, गानेनाचने तथा अन्य गृहकार्यों में दक्ष थी. वह सांवलीसलोनी थी, पर छोटी बहन रंजना गोरीचिट्टी व सुंदर थी. वह लाड़प्यार में बिगड़ी हुई, पढ़ने में साधारण थी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आनंद जब भी जाते तो वंदना ही उन की खातिर करती थी. फिर घंटों दोनों में गपशप होती रहती और कभीकभी घूमनेफिरने और सिनेमा देखने भी चले जाते थे. ऐसा लगता जैसे मातापिता भी उस मित्रता को बढ़ावा दे रहे हों. वे जानबूझ कर उन्हें अकेले घर में छोड़ कर बाहर चले जाते थे. धीरेधीरे वह मित्रता प्यार में बदल गई. आनंद को चतुर्थ वर्ष में पढ़तेपढ़ते ही नौकरी मिल गई.

जब उस ने केशवलाल के सामने वंदना से विवाह का प्रस्ताव रखा तो मानो वे लोग प्रतीक्षा में ही बैठे थे.

आनंद दूसरे प्रांत आंध्र प्रदेश का रहने वाला मध्यवर्गीय परिवार का था. पिता एक विद्यालय में अध्यापक थे. मामूली घर था, पर लड़का होनहार था.

केशवलाल जानते थे कि अब सांवली लड़की को ब्याहना कितना कठिन है. और फिर इतना दानदहेज कहां से लाएंगे. नौकरीपेशा आदमी जो ठहरे.

शादी सादगी से संपन्न हो गई. दोनों पक्षों का बहुत मामूली खर्च हुआ. परंतु पतिपत्नी बहुत ही प्रेममग्न थे. दोनों की जोड़ी खूब फब रही थी. वंदना ने ससुराल जा कर बहुत अच्छी तरह घरगृहस्थी संभाल ली थी.

आनंद की नौकरी भी अपने ही शहर हैदराबाद में लग गई थी. परिवार के सुखचैन के साथ जीवन आगे बढ़ रहा था. एक नन्हे से बेटे राजीव ने तो आ कर और भी पूर्णता दे दी थी.

उसी वर्ष जाड़ों में वंदना की छोटी बहन रंजना की भी शादी थी. सुना था कि किसी बहुत बड़े जमींदार घराने ने खुद आगे हो कर उस का रिश्ता मांग लिया था.

उन की बरेली के आसपास बहुत जमीनजायदाद थी. एक लकड़ी काटने की

रंजना को शादी के बाद मिलने वाले सुख की कल्पना कर के वंदना भी अपने परिवार से वैसे ही सुख की अपेक्षा करने लगी. लेकिन एक मुलाकात में रंजना की वास्तविकता जान कर उसे एहसास हुआ कि सच्चा सुख क्या है.

"देखो, मुझ से गृहस्थी का इतना ढेर सारा काम नहीं होता. कोई नौकर रख लो," वंदना आनंद से बोली.

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिल भी थी. किसी रिश्तेदार के यहां शादी में उन्होंने रंजना को देखा और बस लट्टू हो गए उस के रूपरंग पर.

केशवलाल ने कहा भी था, "हम तो नौकरीपेशा लोग हैं, आप की इज्जत के अनुसार विवाह करने की हमारी सामर्थ्य कहां है?"

पर वे नहीं माने. कहने लगे, "अरे, हम तो केवल लड़की मांग रहे हैं. हम ने धन तो नहीं मांगा. आप के दरवाजे बरात ले कर आएंगे. एक समय खाना खिला दीजिएगा, बस."

हालांकि लड़का बी.ए. पास भी नहीं था, पर इतने बड़े घर का इकलौता लड़का था. कौन सी उसे नौकरी करनी थी. सुंदर तो वह लाखों में एक था. बात पक्की हो गई. जल्दी ही शादी का दिन भी आ गया.

दिल्ली से वंदना के मांबाप का बुलावा आया था. उन्होंने लिखा था:

"तुम्हीं लोग तो बड़े हो, अपने हो, इसलिए शादी से कम से कम महीने भर पहले आ कर शादी की तैयारी में मदद करो."

आनंद को तो दफ्तर से छुट्टी नहीं मिल सकी. पर वंदना, राजीव को ले महीने भर पहले ही दिल्ली आ गई, क्योंकि गोद भराई और टीके की रस्म भी तो होने वाली थी.

जिस दिन वंदना मायके पहुंची, जुट गई कामकाज में. दिन भर बाजारों में घूमती, रात में बैठ कर सिलाईबुनाई करती. घर की जिम्मेदारी भी धीरेधीरे उसी पर पड़ गई. सांस लेने की भी फुरसत नहीं थी. यहां तक कि अपने बेटे राजीव पर भी पूरा ध्यान नहीं दे पा रही थी और रंजना तो दुलहन बनने वाली थी, इसलिए किसी काम में हाथ नहीं लगाती थी.

खूब शान से शादी हुई. केशवलाल ने भी दिल खोल कर अपनी औकात से बढ़ कर खर्च किया क्योंकि रंजना इतने बड़े घर जा रही थी. उन की इज्जत लायक विवाह तो होना ही चाहिए था.

रंजना की ससुराल से भी तो थाल भर कर जेवर, कपड़ा सोहगी में आया था. जिस ने देखा वही दंग रह गया. क्याक्या पुराने जमाने के भारीभारी जड़ाऊ जेवर आए थे, उन का अब तो दर्शन ही दुर्लभ था. साथ में दो बंदूक धारी पहरेदार भी आए थे. केशवलाल तो इतना जेवर देख कर ही घबरा गए थे, बोले, "समधीजी, आप इन जेवरात को अपने साथ ही ले जाएं. मैं तो अपने घर एक घंटे भी नहीं रख सकता. दिल्ली का हाल तो आप जानते ही हैं."

सभी लोग रंजना से ईर्ष्या कर रहे थे और रंजना इठलाती खुशी से फूली नहीं समा रही थी. उसे तो बचपन से ही बननेसंवरने और जेवरकपड़े का बहुत शौक था.

शादी के बाद ससुराल से रंजना दो दिन में लौट आई थी. खूब जेवरकपड़ों से लदीफदी. साथ में एक वर्दीधारी नौकर और दाई भी थी. वह ससुराल की तारीफ करते हुए नहीं थकती थी. मांबाप भी उस की खातिरदारी में आगेपीछे घूमा करते थे. और बड़ी बेटी वंदना को किसी ने पूछा भी नहीं था कि कहां है, क्या कर रही है.

वंदना की विदाई का समय भी आ गया था. मां एक मामूली साड़ी ले कर आई और कहने लगी, "बेटी, तुम ने तो आ कर बेटे की तरह सब काम संभाला. नहीं तो हम कैसे इतना बड़ा बोझ उठाते. पर हमारी स्थिति समझ कर हमें क्षमा करना."

वंदना के दिल में कांटा सा चुभ गया था, यह वही मांबाप हैं, जिन्होंने अभी रंजना की शादी में दोनों हाथों से रुपयों को उलीचा है. पर मेरे लिए अब कुछ भी नहीं है इन के पास देने को.

बचपन से वंदना यह समझती थी कि रंजना व उस में पक्षपात होता था. रंजना को ही वे अपने साथ सभी जगहों पर ले जाते थे और गर्व से सभी से मिलाते थे. उस के लिए अधिक कपड़े बनते, लाड़प्यार होता. वंदना चुपचाप देखती रहती, पर अब तो यह सब असह्य हो गया था.

हैदराबाद जा कर क्या मुंह दिखाएगी

शरिता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"दीदी, मुझे सोने के इस पिंजरे से स्वतंत्र करा दो. यहां मेरा दम घुटता है." रंजना ने वंदना से कहा.

अपने घर में? बहन की शादी में मायके वालों ने इतना खर्च किया, पर किसी के लिए कुछ भी नहीं दिया है उन्होंने?

फिर उसे याद आया अपना विवाह, 'सादगी के नाम पर मुझे कुछ भी तो नहीं मिला था. आनंद भी नौकरीपेशा है, घर की जिम्मेदारियां हैं. इसलिए कोई भी तो ढंग के जेवरकपड़े नहीं हैं मेरे तन पर.'

वह अपने को कितना छोटा महसूस कर रही थी. मुख मलिन पड़ गया था. उसे अब एकएक क्षण भारी पड़ रहा था मायके में रहना.

जब से वंदना मायके से लौटी थी, उसे जीवन नीरस लगता था. हंसना तो मानो भूल ही गई थी, खानेपहनने में भी कोई रुचि नहीं रही थी. घर के कामकाज भी उसे बोझ लगने लगे थे. हमेशा गुमसुम रहती थी.

एक दिन वंदना ने आनंद से कहा, "देखो, मुझ से अब इतना ढेर सारा घरगृहस्थी का काम नहीं होगा. नौकर रखो. रंजना के साथ दोदो नौकर चलते हैं. कम से कम एक तो हमारे यहां भी रहना ही चाहिए."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रीत

प्रीत तो आप से ही लगाई,
पीर भी हम ने ही पाई,
विश्वास हो तो देख लो
इन आंखों में बेचैनी व तनहाई.
—केशव यादव

आनंद ने उत्तर दिया, "मैं अपनी सारी तनख्वाह तो तुम्हें ला कर सौंप देता हूं. तुम यदि उस में से बचा सको तो अवश्य एक नहीं, चारचार नौकर रखो. मैं ने तो तुम्हें कभी किसी बात के लिए मना नहीं किया."

अभी कुछ ही दिनों पहले रिश्तेदारी में एक शादी थी. वंदना जिद कर बैठी कि पहले कुछ तो जेवरकपड़े बनवाओ, तब कहीं शादीब्याह में जाऊंगी. नहीं तो नौकरानी जैसी लग कर अपनी बेइज्जती कराने कहीं नहीं जाऊंगी.

आनंद तथा उस के मातापिता सभी अत्यंत परेशान तथा चिंतित थे कि इतनी समझदार तथा शांत लड़की को क्या हो गया है. ऐसे कैसे जीवन कटेगा हम सब का?

आनंद उसे बैठा कर बहुत समझाता, "देखो, हम लोग मध्यवर्गीय लोग हैं, नौकरीपेशा हैं. तुम ने तो सब जानने के बाद अपनी इच्छा से शादी की थी और इतने दिनों खूब प्रसन्न रही थीं. अब क्या हो गया है. कभी भी दूसरों से बराबरी नहीं करनी चाहिए. इस से सदा दुख ही मिलता है. दुख तथा सुख की अनुभूति तो मानसिक होती है. धन से बड़ा धन तो मनुष्य का गुण होता है. इसी से मनुष्य को सम्मान मिलता है. प्यार ही सब से बड़ा धन है. वह तुम्हारे पास है ही.

"देखो, इतने बड़ेबड़े धनसंपन्न लोग पड़े हैं, कौन पूछता है उन्हें? परंतु जो लोग दूसरों के लिए कुछ करते हैं, उन्हीं को सब मानते हैं. जैसे गांधीजी, गौतम बुद्ध, स्वामी विवेकानंद इत्यादि."

वंदना पर तो मानो ईर्ष्या की धुन सवार थी. कुछ भी समझ में नहीं आता था. और उसे कुछ भी अच्छा नहीं लगता था. सब बेकार था समझानाबुझाना.

लाचार हो कर आनंद उसे मनोविज्ञान विशेषज्ञ के पास ले गए. उन्होंने 15 दिन के लिए दवाइयां दीं और बोले, "इन की असली चिकित्सा तो प्यार तथा सहानुभूति है. आप इन्हें कुछ दिन बाहर घूमनेफिरने ले जाएं, व्यस्त रखें. स्थान तथा हवापानी बदलने से बहुत अंतर आएगा."

आनंद ने दफ्तर से 15 दिन की छुट्टियां तथा अग्रिम ऋण लिया और नैनीताल के लिए रवाना हो गया, क्योंकि वंदना की वहीं घूमनेफिरने की इच्छा थी.

वे रास्ते में दो दिन दिल्ली में मांबाप के पास रहे. वे लोग भी वंदना की दशा से बहुत चिंतित थे. बड़े प्यार व सहानुभूति से मिले. उन्होंने बताया, "रंजना भी अस्वस्थ है. बरेली रास्ते में ही पड़ता है. आप लोग उस से भी जरूर मिलते जाएं."

पहले तो वंदना ने साफ इनकार कर दिया. पर फिर आनंद ने उसे समझाया, "यह अच्छा नहीं लगेगा. हम लोग वहां ठहरेंगे थोड़े ही. बस, कुछ घंटे मिल कर ही नैनीताल चले जाएंगे."

वह मान गई.

केशवलाल ने उन्हें फोन से सूचना दे दी. दूसरे दिन जब वे 11 बजे के करीब बरेली पहुंचे तो रंजना व उस के पति ने उन का स्वागत किया. बहुत ही विशाल घर था, जो बहुमूल्य फरनीचर तथा अन्य सामान से सजा हुआ था. एक से एक नायाब पेंटिंग और नक्काशी वाले सामान तथा तरहतरह की मूर्तियों से घर का कोनाकोना सुशोभित था. वंदना अपने को और भी छोटा अनुभव करने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

MAKE YOUR HAPPY HOME HAPPIER!

With the MMI range of products.

The MMI modern range of appliances is something we guarantee you'll be very happy with. Ceiling Fans, Fresh Air Fans, Mini-Fans, Exhaust Fans, Cooler Fans and Pumps, Washing Machines and Geysers. Products that meet the highest standards of quality. With smooth, trouble-free performance. For years together. At very affordable prices.

L.R. Electricals Pvt. Ltd.
1882 A/4, Bhagirath Palace
Delhi-110006 Phone: 234282.

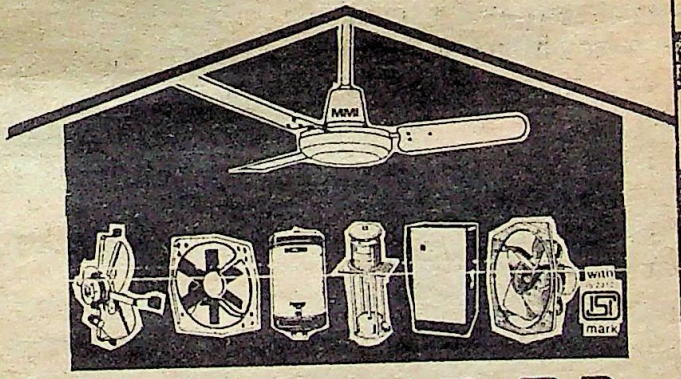

MMI

For happier homes!

जहां हमारे डीलर नहीं हैं उन क्षेत्रों से डीलरशिप के आवेदन आमंत्रित हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोवियत संघ के उत्सव भारत 1987-88

सोवियत नारी

सचित्र पारिवारिक मासिक

एक वर्ष - रु. २३.००
तीन वर्ष - रु. ४५.००

जहां महिलाएं अद्भुत कुशलता प्राप्त करती हैं

यही सही मायने में पूरे परिवार की पत्रिका है। इसमें बच्चों के पालन-पोषण, घर- गृहस्थी, परिवार के स्वास्थ्य, नवीनतम फैशन, बुनाई, सिलाई, कढ़ाई, कसीदाकारी, पाक-विद्या और सारे संसार की नारियों की दिलचस्पी के अनेकानेक विषयों पर रोचक सामग्री व लेख छापे जाते हैं। 'सोवियत नारी' पत्रिका अंग्रेजी, हिंदी, बंगला समेत आठ भाषाओं में प्रकाशित होती है।

सोवियत नारी

साथ में २३/४५ रुपये डिमांड ड्राफ्ट/मनी आर्डर रसिद संलग्न है

नाम _____

पता _____

_____

यह विज्ञापन और भगतान निम्न पते पर भेजिये

नवचेतन बुक्स (प्रा.) लि.
५-ई रानी झांसी रोड
नई दिल्ली-११००५५

मनीषा ग्रन्थालय (प्रा.) लि.
४/३, बी, बंकिम चटर्जी स्ट्रीट,
कलकत्ता-७०००७३

मिनजीन सेन्टर
एम.सी.डी. बिल्डिंग
नं. २, दूसरी मंजिल
देशबन्धु गुप्ता रोड, पहाड़गंज
नई दिल्ली-११००५५

राजस्थान पीपुल्स पब्लिशिंग हाऊस (प्रा.) लि.
चमेलीवाला मार्किट, एम.आई.रोड
जयपुर-३०२००१

05

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गी. वह अपने अंदर सिमट सी गई.

जेवरकपड़ों से सजी हुई रंजना खूब ब रही थी. चांदी के गिलास में ठंडाई तथा सी ही प्लेट में नाश्ता आया.

वंदना को याद आया कि रंजना की नंद की खस्ता कचौरी तथा इमरती ल्ली से लाए हैं. उस ने धीरे से आनंद से हा तो वह सामान निकाल कर ले आए. उस ी सास भी अब तक खबर सुन कर वहां आ ई थीं.

सासजी ने मिठाई देखी तक नहीं और सी को बुला कर कहा, "ये सामान ले जा र सब नौकरदाइयों में बांट देना. बहू की हन लाई हैं," फिर धीरे से बोलीं, "हम ोग बाजार या डालडा घी का सामान नहीं ाते हैं."

वंदना का तो मन ही उखड़ गया. आंखों आंसू आ गए. उस ने पति से चलने का शारा किया तो वह कहने लगे, "माताजी, ब हम लोगों को आज्ञा दें. पहाड़ी रास्ता है, दन रहते ही नैनीताल पहुंच जाएं तो ठीक हेगा."

सासजी को भी शायद गलती का ाभास हुआ. कहने लगीं, "आप लोग तो हली बार आए हैं. बिना खाए नहीं जा कते. अभी तो 12 ही बजे हैं. दो बजे तक ले जाइएगा. हां, अभी तो सूरज के पिताजी ठे भी नहीं हैं. उन से मिले बिना कैसे ाएंगे?"

रंजना ने भी आनंद का हाथ जोरों से कड़ लिया. उस के हाथ कांप रहे थे.

वंदना के बहनोई सूर्यप्रताप आनंद व ाजीव को अपनी फैक्टरी दिखाने ले गए ौर रंजना वंदना को अपने कमरे में. कमरे में ुसते ही उस ने अंदर से कुंडा बंद कर लिया ाथा वंदना से चिपट कर फफकफफक कर ोने लगी. मानो युगों की बिछड़ी हुई बहनें मल रही हों. वंदना ने प्यार से बहन की पीठ र हाथ फेरा, पुचकारा, तब वह चुप हुई ौर रुंधे गले से कहने लगी, "दीदी, समय हीं है, इसलिए जल्दी से कहे देती हूं. मुझे यतंत्र करा दो इस सोने के पिंजरे से. मेरा दम घुट रहा है यहां. इस घर में सब सजावट के सामान के साथ मैं भी एक सजावट की वस्तु ही बन कर रह गई हूं. यहां मेरा कोई अस्तित्व नहीं है. यहां कोई मेरा नहीं है. न यह घर मेरा है, न पति ही मेरा है. ये जो जेवरकपड़े देख रही हैं, सब सासजी के हैं. वह रोज सुबह दाई के हाथ भेज देती हैं. गुड़िया की तरह पहन कर बैठना पड़ता है. किसी को मेरी भावना, इच्छाअनिच्छा की जरा भी परवाह नहीं है.

"ससुर तथा पति दोनों बड़े ऐयाश हैं. शाम से ही सुरासुंदरी, यारदोस्त सब आ जाते हैं. जुआ खेलते हैं. बहुत रात गए नशे में धुत कभी मेरे कमरे में आ कर पड़ जाते हैं, कभी वह भी नहीं. जब होश में होते हैं, तब मां के पास ही रहते हैं. कईकई दिन हो जाते हैं आपस में बोले हुए.

"दीदी, मेरे पास तो कहने को अपने पांच रुपए भी नहीं हैं. शादी में जो मिले थे, वे सब उन्होंने ले कर उड़ा दिए. अब मांगने पर कहते हैं कि क्या करोगी रुपए ले कर. घर में खानाकपड़ा एवं दवाइयां सब कुछ तो मिलता है. घर से बाहर खुली हवा में निकले हुए भी एक युग बीत गया है. पिताजी को चिट्ठी लिखती हूं तो अपने जासूसों द्वारा उड़वा लेते हैं. और उन का फोन आने पर भी

50 औलादों की ख्वाहिश

निगोहा (लखनऊ) के टायर मिस्त्री अब्दुल गफूर ने इन दिनों बच्चे पैदा करने का एक सूत्रीय कार्यक्रम चला रखा है. 50 बच्चों का बाप बनने की ख्वाहिश रखने वाला 45 वर्षीय अब्दुल गफूर इस समय 24 बच्चों का बाप है. तथा 25 वां बच्चा मां के गर्भ में है. उस ने तीन शादियां की हैं. पहली पत्नी से उस के 19 बच्चे हुए हैं. तथा तीसरी पत्नी से 5, जबकि दूसरी पत्नी से कोई भी संतान नहीं हुई है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सब मुझे घेर कर खड़े हो जाते हैं. कैसे कहूं दिल का हाल उन से.

"और यह सब साजसज्जा भी केवल दिखावा ही है. एकदम खोखले हो चुके हैं कर्जदारों के हाथों ये लोग. कब यह ताश का महल ढह जाएगा, पता नहीं. दोनों बापबेटे कोई काम नहीं करते. मिल भी दूसरों के पास गिरवी रखी है. सास तो जल्लाद है. उन्हीं का घर में शासन चलता है.

मैं गर्भवती हूं, नहीं तो जहर खा कर ही सो जाती. तुम्हारे पांव पड़ती हूं, दीदी. तुम पिताजी को जा कर सब बता देना. मुझे जल्दी से आ कर उबार लें, नहीं तो बहुत देर हो जाएगी."

इतने में बाहर से जोरजोर से दरवाजा खटखटाने की आवाज आने लगी. रंजना तो दौड़ कर स्नानघर में घुस गई. वंदना ने जब दरवाजा खोला तो देखा दासी खड़ी है. वह कहने लगी, "माताजी, आप लोगों को जल्दी नीचे बुला रही हैं. खाना तैयार है."

चांदी के बरतनों में विविध प्रकार के व्यंजन खाने की मेज पर सजे थे, पर वंदना को सब जहर समान लग रहे थे. किसी प्रकार जबरदस्ती मन मार कर भोजन समाप्त किया और वहां से विदा ली.

रास्ते भर वंदना की आंखों में बहन का आंसुओं भरा मलिन चेहरा घूमता रहा और उसे जीवन में पहली बार आभास हुआ, 'मैं कितनी सुखी हूं. आनंद कितने अच्छे हैं. कितना अटूट प्यार करते हैं मुझे. मांबाप सासससुर व चांद सा पुत्ररत्न मिला है. अपना छोटा सा सुखी परिवार है. सच्चा सुख तो सच्चे प्यार में, मन की शांति तथा स्वतंत्रता में है. धनदौलत में नहीं.'

वंदना के मन पर से दिखावेपन का बोझ उतर गया. वह अपने में पूर्ण स्फूर्ति, शक्ति तथा आनंद का अनुभव कर रही थी. स्टेशन पर पहुंचते ही उस ने आनंद की भुजा थाम कर कहा, "सुनिए, घर वापस चलिए. मुझे दिखावे की जिंदगी नहीं चाहिए. मुझे सच्चा सुख चाहिए. वह सुख, जो अपने घर के अलावा कहीं नहीं मिलता."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

BPL · SANYO

संगीत स्वामिनी

बीपीएल क्वालिटी • सॅनियो टेक्नॉलॉजी • व्यापक श्रेणी

अब आकर्षक दामों में उपलब्ध.

क्यूबिक्स

M7740K

मिनि एवं स्लिम

M7010K

M1760H

स्टीरियो रेडियो/कैसेट रिकार्डर्स

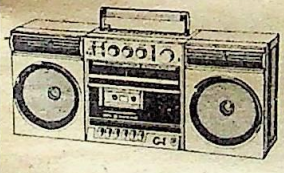

C1K

M9903-2H

स्टीरियो डबल कैसेट रिकार्डर

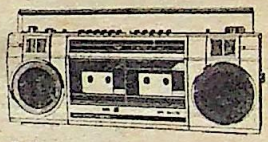

MW200K

मोनो रेडियो/कैसेट रिकार्डर्स

M2429-2H

M8300-2H

M2800-2H

कैसेट रिकार्डर्स

C1004

C1002

BPL/3229 HIN

BPL-AUDIO

Always the best!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करे स्मृति का यह संचार
स्मरण शक्ति बढ़े अपार

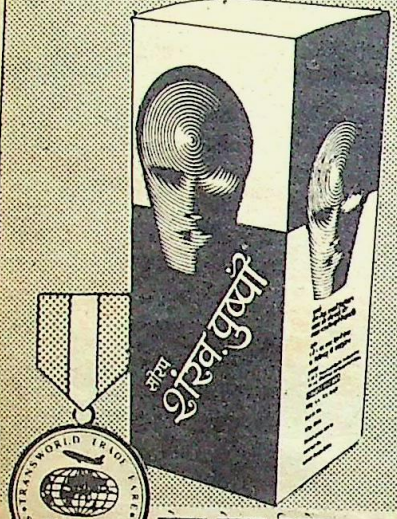

गोल्ड मेडल विजेता

सीरप शंखपुष्पी®

(मौलिक-मधुर-शर्बती-औषध)

ऊंझा आयुर्वेदिक फार्मेसी की
विश्वसनीय औषधी
* स्वादिष्ट पेय * शीतल उपचार
* सुंदर परिणाम

स्थापना : १८९४

ऊंझा आयुर्वेदिक फार्मेसी

ऊंझा (उ. गुजरात) ३८४१७०

दवाइयों की हरेक दुकान पर मीलती है ।

शाखाएँ : ८/६, जमुना भैरो, बेलन गंज,
आगरा २८२ ००४ (U.P.)
F/७५, रीको अंबाजी इन्डस्ट्रीयल एरीया,
आबूरोड - ३०७ ०२६ (Raj)

Navnit/155/88

विश्व बाल साहित्य

विश्व बाल पुस्तकें

जो आप के बच्चों के लिए निहायत जरूरी हैं.

जीवन के हर पहलू को बड़ी सादगी के साथ सामने लाने वाली इन पुस्तकों में न केवल मनोरंजक और ज्ञानवर्द्धक कहानियां है बल्कि सही दिशा देने वाली सामग्री भी है.

आकर्षक व लुभावने रंगीन चित्रों में चुंचू, चीकू, पिंटू और मोती के कारनामों का रोचक वर्णन, जो देर तक गुदगुदाता है.

300 से अधिक उपन्यास, कविताएं कहानी संग्रह तथा जानकारी की पुस्तकें हिंदी व अंग्रेजी में जिन्हें आपके बच्चे बारबार पढ़ना पसंद करेंगे

V.V.DBC-188

अपने पुस्तक विक्रेता से आज ही खरीदें
पूरे सूची पत्र के लिए लिखें.

दिल्ली बुक कम्पनी
एम-12, कनाट सर्कस, नई दिल्ली.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

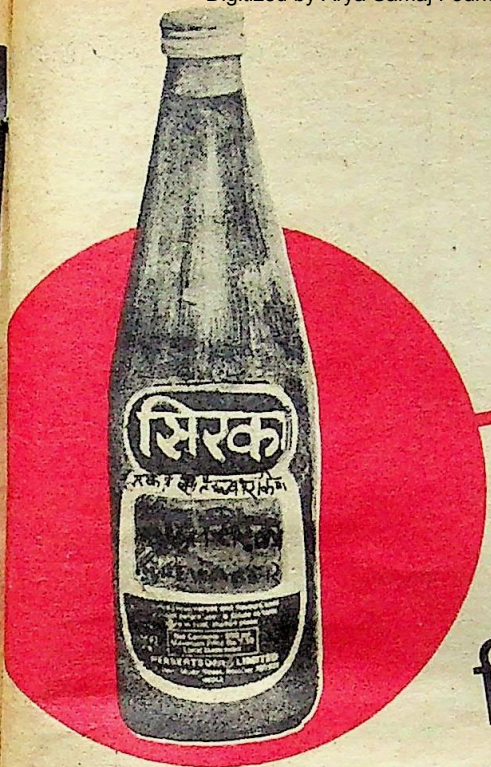

सिरके का प्रयोग केवल सलाद तक ही सीमित रखने वाली गृहिणियां क्या जानती हैं. कि यह वास्तव में उपयोगिता के कितने अर्थ अपने में समेटे हुए है?

सिरका: कितना उपयोगी

लेख • तजीन खान

आम तौर पर सिरका अधिकांश घरों में प्रयोग होता है. अधिकतर लोग सिरके का प्रयोग सलाद के ऊपर छिड़क कर खाने में करते हैं. लेकिन सिरका एक बहूपयोगी पदार्थ है. सिरके का उपयोग खाने के अलावा और भी कई तरह से किया जा सकता है. सिरके के क्याक्या प्रयोग हैं? आइए देखें:

सिरके में नमक मिला कर पीतल के बरतन साफ किए जा सकते हैं.

हाथ में स्याही लग जाने पर हाथ धोने से पहले स्याही छुड़ाने के लिए सिरके से रगड़ लिया जाए, तब निशान छूट जाते हैं.

गरम पानी में साबुन और सिरका मिला कर जस्ता या कोई भी धातु का सामान जो गंदा हो गया हो, धुलने से चमक उठता है.

कच्चे गोश्त को वैसा ही बनाए रखने के लिए उस में सिरका मिला कर रखिए.

जब आप अंडा गरम पानी में उबालें, तब उस में सिरका डाल दें. सिरका अंडे का सही आकार बनाए रखता है.

जब आप मछली उबालें, तब पानी में थोड़ा सा सिरका डाल दें. सिरका डालने से मछली सफेद रहेगी और टूटेगी भी नहीं.

चिटका हुआ अंडा उबालने पर बह जाता है. यदि पानी में सिरका मिला कर उबाला जाए, तो बिना किसी कठिनाई के अंडा उबल जाएगा.

पनीर को सूखने से बचाने के लिए एक कपड़ा सिरके में निचोड़ कर पनीर के चारों तरफ लपेट दीजिए. पनीर वैसा ही बना रहेगा जैसा आप ने लपेटा था.

हाथों से प्याज और मछली आदि की गंध हटाने के लिए जिस पानी से हाथ धोना हो, उस में सिरके की कुछ बूंदें मिला दीजिए. हाथों से गंध गायब हो जाएगी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फेसपैक में भी सिरके का प्रयोग काफी फायदेमंद रहता है.

कमरे में सिगरेट का धुआं भर गया हो तो एक गरम प्लेट में सिरके की कुछ बूंदें जला दीजिए, धुएं की महक खत्म हो जाएगी.

रेशमी कपड़ों को धोने के बाद एक बालटी पानी में सिरका मिला कर उस से कपड़ों को दोबारा धोइए, कपड़ों में चमक आ जाएगी.

कास्मेटिक सिरके को सौंदर्य प्रसाधन के रूप में भी प्रयोग किया जाता है. सिरके से झाइयों के लिए एक अच्छा घरेलू 'फेस पैक' तैयार होता है. एक चाय का चम्मच सिरका ले कर उस में एक अंडे की सफेदी और पक्का केला मसल कर लगाने से झाइयों को दूर करने में सहायता मिलती है. एक बड़ा चम्मच ग्लिसरीन में एक चम्मच मक्के का आटा, एक क्रप गुलाब जल, छः बूंदें शहद के साथ आधा चम्मच सिरका मिला कर सब सामग्री खूब अच्छी तरह फेंट लें. फिर उसे गरम कर के शीशी में भरकर रख लें. इस मिश्रण से हाथों की मालिश करने से हाथ सुडौल और मुलायम बनते हैं.

आधा पानी और आधा सिरका मिला कर लगाने से बाल स्वस्थ होते हैं. बालों की रूसी दूर होती है और बालों का झड़ना बंद हो जाता है.

सिरके का प्रयोग खाद्य पदार्थ के रूप में इस प्रकार कर सकते हैं. दही वाले पुलाव में थोड़ा सा सिरका डाल देने से पुलाव स्वादिष्ट बनता है.

सिरके में हरी मिर्च, सोया सास, नमक, चीनी और अजीनोमोटो मिला कर किसी व्यंजन के साथ खाने में खाने का मजा ही कुछ और हो जाता है.

प्याज को बारीक कतर कर धो लें. फिर हरी मिर्च, पुदीना काट कर मिला लें. इस में नमक के साथ सिरका मिला कर खाने से खाने का स्वाद तो बढ़ता ही है, साथ में हाजमे को भी फायदा करता है.

बरसात और लू के दिनों में सिरका बहुत लाभकारी होता है. सिरका पेट दर्द और गैस की शिकायत को दूर करता है. और खाना भी हजम करता है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वेदों में क्या है?

सूक्त—१७२ प्रथम मंडल देवता—मरुद्गण

हे मरुतो! हमारे यज्ञ में तुम्हारा आगमन आश्चर्यजनक हो. हे शोभन दान एवं उत्तम प्रकाश वाले मरुतो! आप का शुभ आगमन हमारी रक्षा करे. (१)

हे शोभनदानशील मरुतो! तुम्हारे चमकते हुए एवं हिंसक आयुध हमसे दूर रहें. तुम्हारे द्वारा फेंका गया पाषाणमय आयुध हमसे दूर रहे. (२)

हे शोभन दान वाले मरुतो! यद्यपि मेरी प्रजाएं तिनकों के समान तुच्छ हैं तथापि उनकी रक्षा करो तथा हमें चिरकाल तक जीवित रहने केलिए उन्नत करो. (३)

हे इंद्र! उद्गाता सामवेद को इस प्रकार गाता है कि वह आकाश में गूंज जाए और आप उसे समझ लें. हम उस बढ़ते हुए सामगान की पूजा स्वर्ग के समान करते हैं. जिस प्रकार दुधारू और हिंसारहित गाएं अपने स्थान पर बैठती हैं, उसी प्रकार मैं तुम्हारी सेवा करता हूं. (१)

यजमान हव्य देने वाले अध्वर्यु को साथ लेकर इंद्र की पूजा करते हैं. वे सोचते हैं कि इंद्र प्यासे मृग के समान हव्य के प्रति शीघ्र आ जाएंगे. हे बलशाली इंद्र! स्तोत्र की इच्छा करने वाले देवों की स्तुति करता हुआ होता, यजमान एवं उस की पत्नी भली प्रकार यज्ञ पूरा करते हैं. (२)

हवन पूर्ण करने वाले अग्नि, गार्हपत्य आदि स्थानों के चारों ओर फैले हैं एवं वर्ष भर में धरती से उत्पन्न होने वाले अन्न को धारण करते हैं. अग्नि घोड़े और बैल की तरह शब्द करते हुए हवि का अन्न लेकर धरती और आकाश के मध्य में दूत के समान बातें करते हैं. (३)

हम इंद्र को लक्ष्य करके अत्यंत व्यापक हवि प्रदान करेंगे. देवों को अपने अनुकूल बनाने केलिए यजमान उत्तम स्तोत्र पढ़ते हैं. अश्विनीकुमारो के समान तेजस्वी, सुंदर एवं सुख से प्राप्त करने योग्य इंद्र रथ पर बैठकर हमारी स्तुतियों को सुनें. (४)

हे होता! इंद्र की स्तुति करो. वे अनंत शक्ति वाले, शूर, धनवान, रथ पर स्थित, सामने लड़ने वाले योद्धाओं में उत्तम, वज्रधारणकर्ता एवं मेघ के विनाशक हैं. (५)

इंद्र अपने महत्त्व के कारण यज्ञकर्ता यजमानों को स्वर्ग प्रदान करने में समर्थ हैं. धरती और आकाश उन के संचरण के लिए पर्याप्त नहीं है. जैसे बैल सींगों को धारण करता है, उसी प्रकार अन्न के स्वामी इंद्र स्वर्ग को धारण करते हैं. जैसे आकाश धरती को घेरे हुए है, उसी प्रकार इंद्र तीनों लोकों को व्याप्त करते हैं. (६)

हे शूर इंद्र! तुम युद्धों में उन लोगों को बल प्रदान करते हो एवं उत्तम मार्ग दिखाते हो, जो तुम्हारा ही आश्रय लेकर युद्ध में प्रवृत्त होते हैं. तुम्हारी सेवा कर के प्रसन्न होने वाले मरुद्गण युद्ध में प्रयत्न करते हैं. (७)

हे इंद्र! तुम्हारे उद्देश्य से किए गए सोम याग इस प्रकार सुखकर हों कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
आकाश में स्थित दिव्य जल प्रजाओं के कल्याण के लिए तुम्हें प्रसन्न करें. स्तोत्र रूपी समस्त वाणी तुम्हें प्रसन्न करे और तुम वर्षा करके स्तुतिकर्ता भक्तों की इच्छा पूरी करो. (८)

हे स्वामी इंद्र! ऐसी कृपा करो कि हम तुम्हारे सखा बनकर अपनी स्तुतियों द्वारा उसी प्रकार अपनी अभिलाषाएं पूर्ण कर सकें, जिस प्रकार राजा की स्तुति से करते हैं. हे इंद्र! हम जिस समय स्तुति करें, उस समय तुम उपस्थित होकर हमारी स्तुतियों के साथ ही हमारे यज्ञ को भी शीघ्र स्वीकार करो. (९)

मनुष्य जिस प्रकार स्तुति द्वारा विरोधियों को मित्र बना लेते हैं. उसी प्रकार हम भी इंद्र को सखा बनावेंगे. वज्रधारी इंद्र की शक्ति हमारी बनेगी. जिस प्रकार मित्र बनने के इच्छुक लोग नगर के योग्य शासक स्वामी की पूजा करते हैं, उसी प्रकार हम श्री और यश प्राप्त करने की इच्छा वाले अध्वर्यु इंद्र की पूजा करते हैं. (१०)

यज्ञ का अनुष्ठान करने वाला यज्ञ द्वारा इंद्र की ओर बढ़ता है एवं कुटिल गति व्यक्ति सदा मन में दुखी रहता है, जैसे मार्ग में स्वच्छ जल सामने पाकर प्यासा व्यक्ति प्रसन्न होता है एवं जल तक देर में पहुंचने वाला टेढ़ा मार्ग प्यासे को दुखी करता है. (११)

हे इंद्र! संग्राम उपस्थित होने पर मरुद्गणों के साथ हमें छोड़ मत देना. हे शक्तिशाली! तुम्हारा यज्ञभाग मरुतों से अलग है. हमारी फलों से मिली हुई स्तुति हवियुक्त एवं दानशील मरुतों की वंदना करती है. (१२)

हे इंद्र! यह स्तुतिसमूह तुम्हारे लिए है. हे अश्वस्वामी इंद्र! इस स्तोत्र रूपी मार्ग से हमारे यज्ञ को जानो और सहज ही हमारे समीप आओ. हम अन्न, बल और दीर्घ आयु प्राप्त करें. (१३)

अब आफसेट की छपाई के लिए आधुनिकतम लेज़र स्केनर द्वारा कंप्यूटर नियंत्रित पाजिटिव बनाने की सुविधा उपलब्ध.

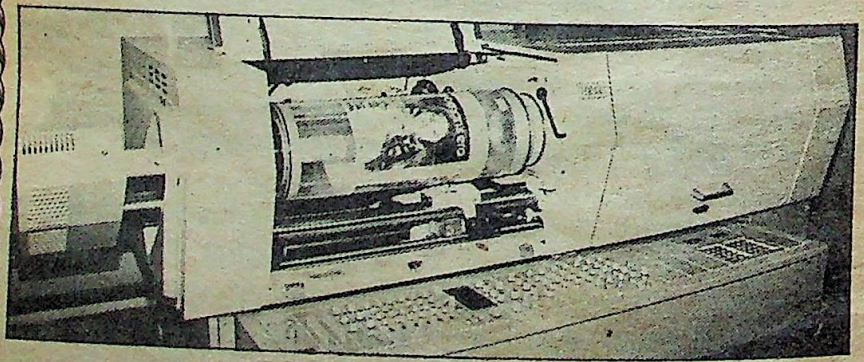

प्रकाशक व मुद्रक संपर्क करें :

प्रतिछाया प्रा.लि. दिल्ली प्रेस भवन, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली. टेली फोन : 526097

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या आप को भी वरवधू की तलाश है?

हम ने हजारों दंपतियों के
सुखी घर बसाए हैं.
हम ने हजारा आदर्श वरवधुओं को
एक हो जाने में
सहायता की है.

कैसे?

उन्होंने स्वयं
या उन के मातापिता ने
विज्ञापन दिया.
उन का विज्ञापन
सरिता के वैवाहिक विज्ञापनों में 15 दिन
तक आदर्श वरवधू तलाश करने वालों को
आकर्षित करता रहा.

सरिता

आज 75 लाख से अधिक स्त्रीपुरुषों द्वारा
महीने में दो बार पढ़ी जाती है.
सरिता की विशिष्ट व मनोरंजक
कहानियां 15 दिन तक पाठकों के
आकर्षण का केंद्र बनी रहती हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यक्तिगत विज्ञापन

वैवाहिक विज्ञापन

वर चाहिए

उच्च अधिकारी, सजातीय, कार्यरत, ग्रेजुएट, इंजीनियर वर चाहिए. कन्या एम.एससी., 22, 158 सें.मी., गौरवर्ण, स्मार्ट, सूर्यवंशी क्षत्रिय (राजपूत), पिता उच्च अधिकारी. लिखें: वि.नं. 9391, सरिता, नई दिल्ली-110055.

160 सें.मी., 31, पतली, आकर्षक, संवेदनशील, बी.एससी., कार्यरत कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9396, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27, 160 सें.मी., एम.ए., सरयूपारीण ब्राह्मण, गृहकार्यदक्ष, सुंदर, गौरांग, जिला न्यायाधीश की पुत्री हेतु सजातीय वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9456, सरिता, नई दिल्ली-110055.

31 वर्षीया, 162 सें.मी., राजपूत कन्या हेतु सुयोग्य, सुशिक्षित वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9457, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23 वर्षीया, कुर्मि क्षत्रिय, एम.ए., बी.एड., कन्या हेतु वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9458, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जुझौतिया ब्राह्मण, 24 व 19 वर्षीया, 150 सें.मी., क्रमशः इंटर, बी.ए., सुंदर, गृहकार्यदक्ष कन्याओं हेतु जुझौतिया ब्राह्मण, सुयोग्य, शासकीय अथवा बैंक सेवारत, मध्यप्रदेश निवासी, दहेजविरोधी वर चाहिए. जन्मकुंडली सहित शीघ्र लिखें: वि.नं. 9459, सरिता, नई दिल्ली-110055.

बुलंदशहर निवासी, हिंदू जाटव, 147 सें.मी., 27 वर्षीया, एम.ए., एलएल.बी., म.प्र. शासकीय सेवारत, आय चार अंकीय, सुंदर, सुशील, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु म.प्र. शासकीय सेवारत, सजातीय वर चाहिए. पिता म.प्र. शासकीय सेवक. विज्ञापन उत्तम चयन हेतु. शीघ्र विवाह. लिखें: वि.नं. 9489, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23 वर्षीया, 160 सें.मी., गोरी, एम.ए., गृहकार्यदक्ष, कुर्मि क्षत्रिय, कन्या हेतु सेवारत या व्यवसायरत वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9490, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सक्सेना कायस्थ, 26 वर्षीया, 157 सें.मी., गेहुआं रंग, सुंदर, एम.एससी., बी.एड., गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु कार्यरत, सुयोग्य, कायस्थ वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9491, सरिता, नई दिल्ली-110055.

हिमाचली राजपूत, 26, 157 सें.मी., एम.ए., बी.एड., सुंदर, गोरी कन्या हेतु सजातीय, व्यवसायरत या सेवारत वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9492 सरिता, नई दिल्ली-110055.

वर्मा, 18, 161 सें.मी., बी.ए., सुंदर, स्मार्ट, गौरवर्ण, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु शिक्षित, सजातीय, कार्यरत, योग्य, दहेजविरोधी वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9493, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27, 153 सें.मी., पीएच.डी. (संस्कृत), त्यागी ब्राह्मण कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. उपजाति बंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 9494, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कश्यप राजपूत, (मेहरा, काहर, धीवर) 23,21, 19, बी.ए.पास कन्याओं हेतु सुशिक्षित, कार्यरत वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9495, सरिता, नई दिल्ली-110055.

प्रतिष्ठित माहेश्वरी, दिल्ली निवासी परिवार, 25 वर्षीया, 157 सें.मी., एम.काम., संतानोत्पत्ति असमर्थ कन्या हेतु ससंतान विधुर, समकक्ष आयु, सुशिक्षित, आधुनिक विचारों, माहेश्वरी, अग्रवाल वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9496, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24, 153 सें.मी., बी.ए. पार्ट द्वितीय, सुंदर, गोयल कन्या हेतु सरकारी कार्यरत, सजातीय वर चाहिए. प्रथम बार संपूर्ण विवरण. शीघ्र विवाह. लिखें: वि.नं. 9497, सरिता, नई दिल्ली-110055.

18 वर्षीया, राजपूत कन्या हेतु प्रतिष्ठित, सजातीय, कार्यरत, चार्टर्ड एकाउंटेंट, जूनियर इंजीनियर अथवा व्यापारी वर्गीय वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9498, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28 वर्षीया, 152 सें.मी., हिंदू कुम्हार, बैंक कर्मचारी कन्या हेतु उचित वर चाहिए. शादी शीघ्र. लिखें: वि.नं. 9499, सरिता, नई दिल्ली-110055.

क्रिश्चियन, मध्यप्रदेशीय, 27½, 160 सें.मी., एम.ए., बी.एड., गेहुआं रंग, सुशील कन्या हेतु बैंक कर्मी, शिक्षक, इंजीनियर वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9500, सरिता, नई दिल्ली-110055.

प्रतिष्ठत जैन परिवार, 29 वर्षीया, 150 सें.मी., एम.ए. गोल्डमेडलिस्ट, सुशील, सुंदर, स्लिम, मृदुभाषी, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु सुयोग्य, जैन, शासकीय/अशासकीय सेवारत या व्यवसायी वर चाहिए. विज्ञापन उत्तम चयन हेतु. उत्तम विवाह. लिखें: वि.नं. 9501, सरिता, नई दिल्ली-110055.

पंजाबी खत्री, 30, 156 सें.मी., बी.ए., म.प्र. स्वास्थ्य विभाग में कार्यरत, मासिक आय, 1,500/-, गृहकार्यदक्ष, शाकाहारी कन्या हेतु शासकीय सेवारत वर चाहिए. शीघ्र विवाह. लिखें: वि. नं. 9502, सरिता, नई दिल्ली-110055.

साहू, 19,18, बी. ए., इंटर अध्ययनरत, गौरवर्ण कन्याओं हेतु कार्यरत वर. लिखें: वि.नं. 9503, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सैनी, 22, 157 सें.मी., सुंदर, गौरवर्ण, गृहकार्यों में दक्ष, एम. ए. अध्ययनरत, इंजीनियर की कन्या हेतु सजातीय, स्वावलंबी वर चाहिए. इंजीनियर, सी. ए.,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गवर्नमेंट सेवारत को प्राथमिकता. दहेज के इच्छुक संपर्क न करें.लिखें: वि. नं. 9504, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28 वर्षीया,160 सें. मी., मैढ़ क्षत्रिय, स्वर्णकार, आर्कीटेक्ट डिप्लोमा उत्तीर्ण, सेवारत, वेतन 2,000/- मासिक, सुंदर, सुशील, गौरवर्ण, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए.लिखें: वि. नं. 9505, सरिता, नई दिल्ली-110055.

22 वर्षीया, स्लिम, 157 सें. मी.,लंबी, गोरी, बीसा अग्रवाल सिंघल, एम. बी. बी. एस. फाइनल, कन्या हेतु मेडिको वर चाहिए. पिता रेलवे चिकित्सा अधीक्षक. सविवरण लिखें: वि. नं. 9506, सरिता, नई दिल्ली-110055.

राजपूत, सुंदर कन्या, 26, 150 सें. मी., एम. ए., बी. एड., हेतु सुयोग्य वर चाहिए. लिखें: वि. नं. 9507, सरिता, नई दिल्ली-110055.

चौहान राजपूत मांगलिक, 22, 154 सें. मी., एम.ए. (अंगरेजी अध्ययनरत), सुंदर, सुशील, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु सजातीय, इंजीनियर, डाक्टर, बैंक अधिकारी, व्यवसायी वर चाहिए. उत्तम विवाह. लिखें: वि. नं. 9508, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28, 157 सें. मी., 27, 157 सें. मी., अग्रवाल परिवार की दो शासकीय सेवारत, एम. ए. कन्याओं हेतु योग्य, सर्विसरत, सजातीय वर चाहिए. लिखें: वि. नं. 9509, सरिता, नई दिल्ली-110055.

पाल क्षत्रिय, स्वस्थ सुंदर, 28, 165 सें.मी., एल-एल. बी., अंगरेजी, कन्या हेतु आई. ए. एस., सिविल इंजीनियर वर चाहिए. कोई बंधन नहीं. लिखें: वि. नं. 9510, सरिता, नई दिल्ली-110055.

राठौर (क्षत्रिय राजपूत), 21, 158 सें. मी., इकहरी, स्मार्ट, एम. ए. अध्ययनरत, सुंदर कन्या हेतु उच्चस्तरीय प्रस्ताव आमंत्रित. उत्तम विवाह. विज्ञापन केवल उत्तम चयन हेतु. लिखें: वि. नं. 9511, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल, 27, 160 सें.मी., एम. एससी., चलनेफिरने में मामूली सा नुक्स, कन्या हेतु वर. कोई बंधन नहीं.लिखें: वि. नं. 9512, सरिता, नई दिल्ली-110055.

बिहारी गुप्ता (तेली), 22 वर्षीया, 153 सें. मी., बी. ए., साफ रंग, उत्तम नाकनक्श, गृहकार्यदक्ष, सुशील कन्या हेतु योग्य, कार्यरत वर. पिता पश्चिमी उत्तर प्रदेश में वरिष्ठ वैज्ञानिक. लिखें: वि. नं. 9513, सरिता, नई दिल्ली-110055.

20 वर्षीया, 164 सें. मी., मांगलिक, बी. ए. आनर्स व टेक्सटाइल डिजाइनिंग कोर्स उत्तीर्ण, इकहरा बदन, गौरवर्ण, सुशील, गृहकार्यदक्ष, माहेश्वरी कन्या हेतु माहेश्वरी अथवा अग्रवाल, कार्यरत, शिक्षित वर. साधारण दहेजरहित, शीघ्र विवाह. लिखें: वि. नं. 9514, सरिता, नई दिल्ली-110055.

यादव, 29 वर्षीया, एम.ए., 20 वर्षीया, एम.ए., गौरवर्ण, सुंदर, गृहकार्य में दक्ष कन्याओं हेतु सजातीय, कार्यरत, दहेजविरोधी वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9515, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कान्यकुब्ज कश्यप ब्राह्मण, 25, 153 सें.मी., पीएच. डी. केमेस्ट्री, गोरी, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु केवल कान्यकुब्ज इंजीनियर/डाक्टर/प्रशासक/समकक्ष वर चाहिए.लिखें: वि. नं. 9516, सरिता, नई दिल्ली-110055.

30 वर्षीया, 159 सें.मी., डोगरा ब्राह्मण, दिल्लीवासी, गौरवर्ण, उत्तम नयननक्श, इकहरी, ग्रेजुएट, कार्यरत 1,000/-, कन्या हेतु शिक्षित सरकारी /बैंक व्यावसायिक, कार्यरत, सुयोग्य वर चाहिए. जातिबंधन नहीं. सादा विवाह. शीघ्र लिखें: वि. नं. 9517, सरिता, नई दिल्ली-110055.

नेपाली पंडित क्षेत्री, 27, 166 सें.मी., कानूनन तलाकशुदा, पढ़ीलिखी, सुंदर, गृहकार्यदक्ष युवती हेतु सुयोग्य, नेपाली वर. जातिबंधन नहीं. लिखें: वि. नं. 9518, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सुंदर, खूबसूरत, घरेलू, हिंदू नाई (पेशा नहीं), एम. ए., बी. एड., शिक्षिका, 25, 150 सें. मी., सुसंस्कृत, उच्चशिक्षित, परिवारीय कन्या हेतु वर. पिता अधिकारी, भाई मैनेजर. लिखें: वि. नं. 9519, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गौड़ ब्राह्मण (उ.प्र.), 23, 157 सें.मी., बी.एससी. (टेक.) इलेक्ट्रानिक्स, गौरवर्ण, सुंदर, आकर्षक, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु सुंदर, सजातीय, कार्यरत, ग्रेजुएट, इंजीनियर, वैज्ञानिक, आई.ए.एस., सुयोग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9520, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27, 162 सें. मी., गेहुआं रंग, रेखीव, आकर्षक व्यक्तित्व, गृहकार्यदक्ष, एम. ए., बी. एड., केंद्रीय विद्यालय कार्यरत, प्रतिष्ठित, सुशिक्षित, सनाढ्य ब्राह्मण परिवारीय, जबलपुर निवासी कन्या हेतु इंजीनियर, राजपत्रित अधिकारी, चार्टर्ड एकाउंटेंट, अच्छा व्यवसायरत, लेक्चरर वर चाहिए. (हिंदी, गुजराती, महाराष्ट्रीयन, ब्राह्मण विचारणीय) लिखें: वि. नं. 9521, सरिता, नई दिल्ली-110055.

विश्वकर्मा, 27 वर्ष, 155 सें. मी., एम. ए., बी. एड., रंग गेहुआं, सुंदर, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु सजातीय, सुयोग्य वर चाहिए. लिखें: वि. नं. 9522, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गौड़ ब्राह्मण, 29, 163 सें. मी., गौरवर्ण, इकहरी, गृहकार्यदक्ष एम.एससी., बी.एड., कन्या हेतु सुयोग्य, सेवारत, सजातीय वर चाहिए. लिखें: वि. नं. 9523, सरिता, नई दिल्ली-110055.

प्रतिष्ठित जैन, परिवारीय, 24,155 सें. मी., एम. ए. (हिंदी) तथा 20,157 सें. मी.; एम. ए. (इंगलिश), सुंदर, आकर्षक, गृहकार्यदक्ष कन्याओं हेतु सुयोग्य, स्वावलंबी वर चाहिए. लिखें: वि. नं. 9524, सरिता, नई दिल्ली-110055.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

160 सें. मी., कानवेंट शिक्षित, बी. काम. प्रथम श्रेणी, अत्यंत सुंदर, गौरवर्ण कन्या हेतु प्रोफेशनल/आई. ए. एस./डाक्टर/इंजीनियर/सुस्थापित वर चाहिए.लिखें: वि. नं. 9525, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26, 155 सें. मी., कान्यकुब्ज ब्राह्मण, एम. ए., मंथली, गौरवर्ण, शाकाहारी, गृहकार्यदक्ष, मध्य-प्रदेशीय कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. लिखें: वि. नं. 9526, सरिता, नई दिल्ली-110055.

मार्केटिंग एक्जीक्यूटिव, 165 सें. मी., सुंदर, चुस्त, गंभीर कन्या हेतु सुयोग्य, ऊंची शिक्षा प्राप्त, दहेजविरोधी, सुप्रतिष्ठित, 26-30 वर्षीय वर चाहिए. लिखें: वि. नं. 9527, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कान्यकुब्ज ब्राह्मण, 21, 162 सें. मी., बी. ए., एम. एड., उच्च प्रथम श्रेणी, एम. ए. (अध्ययनरत), सुंदर, इकहरी कन्या हेतु उच्चशिक्षित, सुस्थापित वर चाहिए. लिखें: वि. नं. 9528, सरिता, नई दिल्ली-110055.

32, 150 सें.मी., स्मार्ट, बी.ए., रंग गेहुआं, परित्यक्ता महिला हेतु जीवनसाथी चाहिए. निस्संतान विधुर भी स्वीकार्य. लिखें: वि.नं. 9597, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23, 161 सें.मी., एम.एससी., पीएच.डी. अध्ययनरत, राजपूत (ठाकुर), सुंदर, गोरी, स्लिम, राष्ट्रीयकृत बैंक कार्यरत कन्या हेतु लेक्चरर, बैंक आफिसर, इंजीनियर, सुयोग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9598, सरिता, नई दिल्ली-110055.

32 वर्षीया, हृदय शल्य चिकित्सा के बाद पूर्ण स्वस्थ, राजपूत, राजपत्रित अधिकारी हेतु योग्य वर तथा 28 वर्षीया, कुमाऊंनी राजपूत, सुंदर, गौरवर्ण कन्या हेतु सजातीय वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9599, सरिता, नई दिल्ली-110055.

162 सें.मी., 19 वर्षीया, दिगंबर जैन, गेहुआं रंग कन्या हेतु व्यवसायी या सेवारत, स्वजातीय वर. लिखें: वि.नं. 9600, सरिता, नई दिल्ली-110055.

22½ वर्षीया, अग्रवाल, 157.5 सें.मी., गौरवर्ण, सुंदर, गृहकार्यदक्ष, एम.एससी.,पीएच.डी. अध्ययनरत कन्या हेतु इंजीनियर या उच्च शासकीय सेवारत वर चाहिए. जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 9601, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कायस्थ अस्थाना, स्नातक, गवर्नमेंट सर्विस, 26,151 सें.मी., 1,700/-, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9602, सरिता, नई दिल्ली-110055.

महाराष्ट्रीयन उच्च जाति की, 24 वर्षीया, 154 सें.मी., सुंदर, कुलीन, आकर्षक, पोस्टग्रेजुएट, मैनेजमेंट स्टडीज में अध्ययनरत, गृहकार्यदक्ष, शास्त्रीय संगीत की परीक्षाओं में उत्तीर्ण, सेंमीगवर्नमेंट सेवारत, सुशील कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. इंजीनियर्स और श्रेष्ठ अधिकारी वर्ग को प्राथमिकता. वि.नं. 9603, सरिता, नई दिल्ली-110055.

वधू चाहिए

मजहब, जाति, दहेज, पारिवारिक बंधनहीन, साहसप्रिय, प्रकृतिप्रेमी, 28, 168 सें.मी., गौरवर्ण, स्वस्थ, सरकारी सेवारत युवक हेतु खूबसूरत, गोरी, लंबी छरहरी, स्वस्थ, जिंदादिल, निर्भीक जीवनसाथी चाहिए. लिखें: वि.नं. 9408, सरिता, नई दिल्ली-110055.

दिल्लीवासी आफिसर, 35 वर्षीय, तलाकशुदा, एकाकी, आय 6,000/-, मासिक, स्वयं की कार, जायदाद, हेतु सुयोग्य, गरीब लेकिन सुंदर, स्वस्थ, जीवनसंगिनी चाहिए. लड़की स्वयं भी पत्रव्यवहार करे. लिखें: वि.नं. 9443, सरिता, नई दिल्ली-110055.

बिहारवासी, 29, कुर्मि, बी.ए., सीनियर क्लर्क, रेलवे, 1,500/-, परिवार में केवल मांबेटा, हेतु सुंदर, शिक्षित वधू. शीघ्र विवाह. दहेज नहीं. लिखें: वि.नं. 9471, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26½ वर्षीय, 178 सें.मी. कुर्मी क्षत्रिय, एम.फिल., एलएल. बी., पी.एस.सी. सेलेक्टेड, एक्साइज इंस्पेक्टर, परिवार सुशिक्षित एवं साधन-संपन्न, हेतु वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 9472, सरिता, नई दिल्ली-110055.

49½ वर्षीय, अवधिया कुर्मी, विधुर (दो पुत्र, एक पुत्री) डिप्टी मजिस्ट्रेट हेतु 30-42 वर्षीया, संतान अनिच्छुक/संतानोत्पत्ति में असमर्थ जीवनसंगिनी चाहिए. जातिबंधन नहीं. निर्धन, विकलांग, बिहारी को प्राथमिकता. लिखें: वि.नं. 9473, सरिता, नई दिल्ली-110055.

38, 180 सें.मी. 2,000/-, एम.ए., नेत्रहीन, राजकीय अध्यापक, संपन्न परिवार, युवक हेतु सुशिक्षित, गृहकार्यदक्ष, नेत्रवान युवती चाहिए. विधवा, परित्यक्ता स्वीकार्य. लिखें: वि.नं. 9474, सरिता, नई दिल्ली-110055.

49, 165 सें.मी., सिंधी, व्यवसायी, निजी दो मकान, उत्तरदायित्व मुक्त, स्वस्थ, विधुर हेतु सिंधी या पंजाबी, सुंदर, सुशील जीवनसाथी. निस्संतान विधवा, तलाकशुदा स्वीकार्य. लिखें: वि.नं. 9475, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सुंदर, समझदार, गृहकार्यदक्ष कन्या चाहिए. कोई बंधन नहीं. कम पढ़ी स्वीकार्य. साधारण विवाह. 30, 178 सें.मी., आकर्षक, संपन्न, सुशिक्षित, मातापिता सहित अमरीका बसा पंजाबी युवक. निस्संकोच लिखें. पत्रोत्तर अवश्य मिलेगा अगर जन्मतिथि, ताजा फोटो सविवरण भेजेंगे. लिखें: Box 550145, AL 35255, U.S.A.

अग्रवाल, 29, 170 सें.मी., 3,570/-, एम.ए.,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कानूनन तलाकशुदा, बैंक सेवारत हेतु सुंदर, कुआरी कन्या चाहिए. दहेज नहीं. साधारण शादी. लिखें: वि.नं. 9529, सरिता, नई दिल्ली-110055.

बंगाली ब्राह्मण, कश्यप गोत्र, 32, 167 सें.मी., 2,000/-,बी.एससी., सरकारी सेवारत युवक हेतु घरेलू, सुंदर, सजातीय वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 9530, सरिता, नई दिल्ली-110055.

चुस्त, स्मार्ट, बंसल, बी.काम., 26, 68, 4,000/-, निजी व्यापार, वर के हेतु सुंदर, पढ़ीलिखी, गृहकार्य में निपुण वधू चाहिए. जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 9531, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28, 174 सें.मी., गोविल, टी.वी. इंजीनियर, कांट्रेक्टर, स्मार्ट युवक हेतु सुंदर, सुशील, गृहकार्यदक्ष, स्वजातीय, लंबी कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 9532, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24 वर्षीय, 165 सें.मी., ब्राह्मण, सुंदर, निजी व्यवसायरत, आठवीं पास, संपन्न व शिक्षित परिवार, हेतु सजातीय, गृहकार्यदक्ष वधू चाहिए. दहेज नहीं. शीघ्र विवाह. लिखें: वि.नं. 9533, सरिता, नई दिल्ली-110055.

47 वर्षीय, विधुर, सक्सेना, वेतन 3,200/-, राजस्थान में बड़ी कंपनी में इंजीनियर हेतु 35 साल से ऊपर जीवनसंगिनी चाहिए. लिखें: वि.नं. 9534, सरिता, नई दिल्ली-110055.

रामगढ़िया सिख, 34 वर्षीय, 174 सें.मी., आई. एससी. पास, निस्संतान तलाकशुदा, स्वयं का मकान (बिहार) एवं व्यवसाय 3,000/-, मासिक हेतु वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 9535, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गुप्ता, 31, 170 सें.मी., 1,300/-, राजकीय सेवारत हेतु सेवारत, सुंदर, सुशील, लंबी वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 9536, सरिता, नई दिल्ली-110055.

37 वर्षीय, महाजन, वैश्य, तलाकशुदा, मासिक आय चार अंकों में, समाज में सम्माननीय, निजी व्यवसाय, युवक हेतु वधू. खंडेलवाल, जैन, माहेश्वरी, अग्रवाल को प्राथमिकता. तलाकशुदा भी मान्य. लिखें: वि.नं. 9537, सरिता, नई दिल्ली-110055.

22, 170 सें.मी., 2,500/-, व्यवसायरत, राठौर (तेली), एम.काम., हेतु सुयोग्य, शिक्षित एवं सजातीय कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 9538, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जाटव, 26 वर्षीय, 162 सें.मी., बैंक आफिसर हेतु सुशिक्षित, सुंदर कन्या चाहिए. जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 9539, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल कंसल, 26½, 170 सें.मी., बी काम., एलएल.बी., जूनियर एकाउंटेंट नोएडा, मासिक आय 1,400/-, हेतु सुंदर, सुशील, सुशिक्षित कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 9540, सरिता, नई दिल्ली-110055.

38 वर्षीय, तलाकशुदा, अग्रवाल, पीएच.डी. डाक्टर के लिए सजातीय वधू चाहिए. पूर्ण विवरण सहित लिखें: वि.नं. 9541, सरिता, नई दिल्ली-110055.

37, एम.ए., 2,400/-, सरकारी नौकरी, तलाकशुदा वर हेतु उच्च शिक्षित, सुयोग्य, खत्री/अरोड़ा वधू चाहिए. निस्संतान विधवा स्वीकार्य. लिखें: वि.नं. 9542, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26, 165 सें.मी., 1,400/-, एम.ए., राजकीय संस्थान में अनुदेशक, मैथिल ब्राह्मण युवक हेतु सुंदर, ब्राह्मण कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 9543, सरिता, नई दिल्ली110055.

मध्य प्रदेश निवासी, 29 वर्षीय, 175 सें.मी., शासकीय महाविद्यालय में सहा. प्राध्यापक हेतु सजातीय (जाति कहार) योग्य, सुंदर एवं प्रतिष्ठित परिवारीय वधू चाहिए.लिखें: वि.नं. 9544, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सुप्रतिष्ठित, संपन्न, श्रीवास्तव, परिवारीय, अकेले इंजीनियर पुत्र, 30, 170 सें.मी., 2,500/-, हेतु स्वजातीय, गौरवर्णीय, सुंदर, सुशिक्षित वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 9545, सरिता, नई दिल्ली-110055.

धोबी,26, 165 सें.मी. मध्यप्रदेशीय, मध्यम परिवार, शासकीय सेवारत, असिस्टेंट इंजीनियर हेतु वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 9546, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27 वर्षीय, 173 सें.मी., श्रीवास्तव, व्याख्याता, म.प्र. निवासी, पिता डिप्टीकलक्टर हेतु वधू चाहिए. कार्यरत को वरीयता. लिखें: वि.नं. 9547, सरिता, नई दिल्ली-110055.

36 वर्षीय, युवक, तलाकशुदा, ईसाई, निजी मकान, नौकरी, मासिक आय 1,600/-, चयन हेतु टीचर, नर्स विधवा (बिना बच्चे वाली) या अविवाहित वधू. जातिबंधन नहीं. शीघ्र विवाह. लिखें: वि.नं. 9548, सरिता, नई दिल्ली-110055.

32 वर्षीय, विचारवान, संवेदनशील, निजी मकान, वाहन, व्यवसायी, जयपुरवासी युवक (एक पैर में आंशिक पोलियो) हेतु वधू. शिक्षित, कार्यरत, विकलांग को वरीयता, जाति बंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 9549, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26, 157 सें.मी., बी.काम., कश्यप कहार, रेलवे में बुकिंग क्लर्क पद पर कार्यरत युवक हेतु सुंदर, सुशील, सजातीय वधू. लिखें: वि.नं. 9550, सरिता, नई दिल्ली-110055.

बीसा अग्रवाल, 172 सें.मी., स्मार्ट युवक, उ.प्र. निवासी, स्वयं व्यवसायरत, कार, कोठी, वार्षिक आय छः अंकों में, स्नातक विधि (द्वितीय वर्ष) हेतु अति सुंदर, सुशिक्षित, गृहकार्यदक्ष, तीखे नयनवक्श, गोरी, सजातीय कन्या चाहिए. जैन, ओसवाल स्वीकृत. विज्ञापन उत्तम चयन हेतु. लिखें: वि.नं. 9551, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी, मनमोहक, मिलनसार, स्मार्ट, मद्रास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में स्वव्यवसाय में व्यस्त, आकर्षक व्यक्तित्व) 24 वर्षीय, 168 सें.मी., बी.एससी. युवक हेतु स्वजातीय, आकर्षक, व्यक्तित्वयुक्त कन्या पक्ष से प्रस्ताव आमंत्रित. लिखें: वि.नं. 9552, सरिता, नई दिल्ली-110055.

डा., अग्रवाल, 28 वर्षीय, बी.एससी., बी.ए. एम.एस., डी.पी.एल.टी. पैथालाजी एंड जनरल प्राइवेट प्रैक्टिशनर हेतु डा. कन्या. सजातीय, मध्य प्रदेश निवासी को प्राथमिकता. लिखें: वि.नं. 9553, सरिता, नई दिल्ली110055.

25 वर्षीय, भारद्वाज, मांगलिक, पोस्टग्रेजुएट युवक, आटोमोबाईल पार्ट्स व्यवसाय, हेतु सुंदर, सुशिक्षित वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 9554, सरिता, नई दिल्ली-110055.

पश्चिमी उत्तरप्रदेशीय, 55, अग्रवाल, तलाकशुदा, संपत्तिवान, शाकाहारी, शांतस्वभाव, हेतु सुशील, निस्संतान जीवनसाथी चाहिए. लिखें: वि.नं. 9555, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26, 160 सें.मी., 1,100/-, हायर सेकंडरी, दिल्ली में सरकारी सेवारत, चौधरी, ज्वालामुखी निवासी युवक हेतु सरकारी सेवारत, स्लिम, सजातीय वधू चाहिए. दहेज नहीं. लिखें: वि.नं. 9556, सरिता, नई दिल्ली-110055.

तायल, 25, 165 सें.मी., इंटरमीडिएट, 1,400/-, दिल्ली प्रशासन, हेतु सेवारत वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 9557, सरिता, नई दिल्ली-110055.

30, बी.काम., नाई युवक जो दौरे से पीड़ित, हेतु विधवा, तलाकशुदा वधू चाहिए. जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 9558, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26, 171 सें.मी., बी.ए., कोरी (माहौर), गोरा, आकर्षक व्यक्तित्व, संपन्न परिवार, भारतीय स्टेट बैंक में लिपिक पद पर कार्यरत, सुंदर युवक हेतु सुशील, सुंदर, शिक्षित, गोरी, आकर्षक व्यक्तित्व वाली कन्या चाहिए. पूर्ण विवरण सहित लिखें: वि.नं. 9559, सरिता, नई दिल्ली-110055.

39 वर्षीय, विधुर (तीन छोटे बच्चे), सनाढ्य ब्राह्मण, बैंक अधिकारी, हेतु सुशिक्षित एवं उपयुक्त पत्नी चाहिए. लिखें: वि.नं. 9560, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गुर्जर, 29, 171 सें.मी., एम.ए., 1,800/-, आर्यसमाजी, शाकाहारी युवक हेतु सुशिक्षित वधू चाहिए. (प्राथमिकता सजातीय). लिखें: वि.नं. 9561, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी, 25, 178 सें.मी., कलकत्ता निवासी, स्वव्यवसायी, दहेजविरोधी युवक हेतु मैट्रिक, इंटरमीडिएट, सजातीय, सुंदर, घरेलू कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 9562, सरिता, नई दिल्ली-110055.

30 वर्षीय, 174 सें.मी., संपन्न, प्रतिष्ठित, मारवाड़ी, माहेश्वरी, कलकत्ता निवासी, व्यवसायरत युवक हेतु जीवनसंगिनी चाहिए. लिखें: वि.नं. 9563, सरिता, नई दिल्ली-110055.

महाराष्ट्रीयन ब्राह्मण युवक, 38 वर्षीय, 157 सें.मी., तलाकशुदा, निस्संतान, सेक्सुअल कमजोर, केंद्रीय सरकारी कर्मचारी, मासिक आय रु.1,700/-, हेतु कार्यरत वधू. जाति एवं दहेजबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 9564, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल (गर्ग), 30, 160 सें.मी., कलकत्ता के औद्योगिक प्रतिष्ठान में सेवारत, मासिक आय 1,500/-, हेतु सुशील, गृहकार्यदक्ष वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 9565, सरिता, नई दिल्ली-110055.

उच्च जाति के स्मार्ट और उच्च शिक्षित, बी.काम., एम.बी.ए. (आई.आई.एम.) निजी व्यवसाय, वार्षिक आय छः अंकों में, 31, 173 सें.मी., गुजराती युवक हेतु सुसस्कृत, स्लिम एवं अति सुंदर कन्या चाहिए., जातीय, प्रांतीय बंधन नहीं. विवरण सहित लिखें: वि.नं. 9566, सरिता, नई दिल्ली-110055.

बीसा ओसवाल जैन, उम्र 31, कद 160 सें.मी., आटोमोबाइल इंजीनियर लड़के के लिए सुंदर, सुशील, गोरी लड़की चाहिए. लिखें: वि.नं. 9567, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल, गोयल, 26 वर्षीय, बी.काम., खुद की फैक्टरी, हेतु सुंदर, सुशील, गृहकार्यदक्ष, सजातीय वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 9568, सरिता, नई दिल्ली-110055.

प्रतिष्ठित जैन परिवारीय, 28, 168 सें.मी., बी.काम., अच्छे व्यवसाय, आकर्षक युवक हेतु सुयोग्य, अति सुंदर वधू चाहिए. दहेजबंधन नहीं. विज्ञापन उत्तम चयन हेतु. लिखें: वि.नं. 9569, सरिता, नई दिल्ली-110055.

31 वर्षीय, 165 सें.मी., गोयल, जूनियर इंजीनियर सिविल, दिल्ली, सरकारी कार्यरत, 2,500/-, प्रतिष्ठित परिवार, कोई जिम्मेदारी नहीं. हेतु सुंदर, सुशील कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 9570, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23, 190 सें.मी., माहेश्वरी युवक, द्वितीय वर्ष कामर्स, स्वयं व्यापाररत, सुसंपन्न, प्रतिष्ठित, शिक्षित, व्यापारिक परिवार, हेतु आकर्षक, गौरवर्ण, सुशिक्षित, प्रतिष्ठित परिवारीय वधू चाहिए. पूर्ण विवरण सहित लिखें. विज्ञापन उत्तम चयन हेतु. लिखें: वि.नं. 9571, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल (मित्तल), 23 वर्षीय, हायर सेकंडरी, व्यवसायरत एवं कृषि फार्म, रंग साफ, प्रतिष्ठित परिवारीय हेतु सुंदर, गृहकार्यदक्ष कन्या चाहिए. पूर्ण विवरण लिखें: वि.नं. 9572, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26 वर्षीय, 160 सें.मी., माहौर कोरी, बैंक सेवारत, 1,800/-, हेतु सुंदर, सुशील, ग्रेजुएट कोरीयता, वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 9573, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25 वर्षीय, कान्यकुब्ज, स्वस्थ, गौरवर्ण, डाक्टर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हेतु सुंदर, सजातीय, सुशील व्यक्तित्व. लिखें वि.नं. 9574, सरिता, नई दिल्ली-110055.

46 वर्षीय, 165 सें.मी., 60 कि.ग्रा., स्वस्थ, कर्षक, देखने में जवान, लेखक, समाजसेवक तथा उच्च स्तर का आध्यात्मिक एवं बौद्धिक जीवनशैली वाला रीडर (अंगरेजी), मासिक वेतन करीब पांच हजार रुपए, हेतु जीवनसाथी चाहिए. वास्तविक सुसभ्य, अति सुंदर, विधवा जिन में दांपत्य प्रेम तथा सुख के प्रति पूर्ण समर्पण हो. शीघ्र लिखें. पूरी जानकारी प्रथम बार लिखें: वि.नं. 9575, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी, चार्टर्ड एकाउंटेंट, सुस्थापित प्रैक्टिस, 25, 180 सें.मी., सुंदर युवक हेतु आकर्षक, शिक्षित, सुशील, स्वजातीय वधू चाहिए. शीघ्र विवाह. विज्ञापन उत्तम चयन हेतु. कृपया लिखें: वि.नं. 9576, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23 वर्षीय, सक्सेना कायस्थ, एडवोकेट, पुत्र वरिष्ठ एडवोकेट देहरादून, गोरा, स्वस्थ, 173 सें.मी., साधन संपन्न हेतु सुयोग्य, सुंदर कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 9577, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल, 26, 170 सें.मी., 2,200/-, ग्रेजुएट, शाकाहारी, डायरेक्टर पार्टनर, संपन्न हेतु प्रोफेशनली क्वालीफाइड वधू. जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 9578, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26 वर्षीय, 176 सें.मी., कर्मि क्षत्रिय, स्नातक, स्वतंत्र व्यवसायी, रु. 5,000/-, संपन्न, प्रतिष्ठित परिवारीय युवक हेतु सजातीय, सुशील, आकर्षक, ग्रेजुएट, लंबी, साफ रंग, गृहकार्यनिपुण कन्या चाहिए. उत्तर प्रदेश निवासी को प्राथमिकता. लिखें: वि.नं. 9579, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27 वर्षीय, 170 सें.मी., कर्मि क्षत्रिय, मध्य प्रदेश निवासी, एम.डी., नई दिल्ली में कार्यरत, सुंदर, डाक्टर हेतु अति सुंदर वधू चाहिए. मेडिको को प्राथमिकता. लिखें: वि.नं. 9580, सरिता, नई दिल्ली-110055.

22 वर्षीय, 165 सें.मी., बीकानेरवासी, मांगलिक खत्री, निजी व्यावसायिक आय, मकान, हेतु योग्यानुसार वधू चाहिए. दहेजबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 9587, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25½ वर्षीय, कुर्मी, इंजीनियर हेतु मेडिको या इंजीनियर वधू तुरंत चाहिए. लिखें: वि.नं. 9588, सरिता, नई दिल्ली-110055.

श्वेतांबर जैन, 26, 168 सें.मी., सी.ए., प्राइवेट प्रैक्टिस, आय चार अंकों में, सुंदर युवक हेतु सुंदर, शिक्षित, सजातीय वधू चाहिए. कानवेंट शिक्षित, सी.ए. को प्राथमिकता. लिखें: वि.नं. 9589, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कश्यप राजपूत (महरा, कहर, धींवर) मैकेनिकल इंजीनियर (डिप्लोमा), 26, 165 सें.मी., दिल्लीवासी, मोटरपार्ट्स फैक्टरी मालिक, आयकरदाता हेतु सुंदर, सुशिक्षित, स्लिम कन्या चाहिए.

दिल्ली प्रेस पत्रिकाओं के वितरण/बिक्री केंद्र

अहमदाबाद

दिल्ली प्रकाशन, 503, नारायण चैंबर्स, आश्रम रोड, फोन: 77845

बंगलौर

दिल्ली प्रकाशन, 302–बी, क्वींस कार्नर अपार्टमैंट्स, 3 क्वींस रोड, फोन: 258091

कलकत्ता

दिल्ली प्रकाशन 113, पार्क स्ट्रीट, फोन: 298981

मद्रास

दिल्ली प्रकाशन 14, पहली मंजिल, सीसंस कंप्लैक्स, 150-82, मांटीअथ रोड फोन: 88138

बंधनरहित लिखें: वि.नं. 9590, सरिता, नई दिल्ली-110055.

36 वर्षीय, माहेश्वरी, 175 सें.मी., बी.काम., गौरवर्ण, मासिक आमदनी पांच अंकीय, प्रतिष्ठित परिवार, संबंधित वर हेतु माहेश्वरी, अग्रवाल, सुंदर, सुशिक्षित कन्या चाहिए. दहेज नहीं. लिखें: वि.नं. 9591, सरिता, नई दिल्ली-110055.

30, 160 सें.मी., जैन अग्रवाल, सुंदर, व्यवसायी, शाकाहारी, संतानोत्पत्ति असमर्थ, स्लिम हेतु कन्या चाहिए. छोटे बच्चे वाली विधवा विचारणीय. लिखें: वि.नं. 9592, सरिता, नई दिल्ली-110055.

राजपूत, प्रतिष्ठित, सुसंपन्न, राजस्थानवासी, बंगलौर में स्थाई इंडस्ट्री, उत्तम व्यवसाय. शाकाहारी, ग्रेजुएट, प्रभावशाली व्यक्तित्व, भाई 27, 161 सें.मी., एवं 23, 165 सें.मी. हेतु समवर्ग सुसंपन्न, शिक्षित्त, अति सुंदर, सुशील, स्लिम, स्मार्ट, आकर्षक, गौरवर्ण वधू चाहिए. शीघ्र विवाह. प्रथम बार विवरण लिखें: वि.नं. 9593, सरिता, नई दिल्ली-110055.

45 वर्षीय, 172 सें.मी., ला ग्रेजुएट, शासकीय सेवारत, वेतन 2,250/-, कुमाउंनी, उच्च ब्राह्मण, स्लिम, सुंदर, अनाथालय पला, बचपन से निजी संबंधी रहित हेतु सेवारत, 45 व अधिक वर्षीया, दोहरे बदन, संबंधी रहित, एकाकी मां, बहन, मित्र, प्रेमिका, पत्नी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समस्त असीमित स्नेह, सम्मान, सेवा समर्पण तथा मंदिर विवाह इच्छुक जीवनसंगिनी चाहिए. कोई बंधन नहीं. स्वयं पूर्ण जीवनी सहित लिखें: वि.नं. 9594, सरिता, नई दिल्ली-110055.

वैश्य विधुर, 50, 175 सें.मी. 2,000/- मासिक आय, पारिवारिक दायित्व मुक्त हेतु सुंदर, शिक्षित, निस्संतान जीवनसाथी चाहिए. जातिबंधन नहीं. विधवा, तलाकशुदा स्वीकार्य. लिखें: वि.नं. 9595, सरिता, नई दिल्ली-110055.

42 वर्षीय, 155 सें.मी., बी.काम., केंद्रीय सेवारत, आय 2,350/-, तलाकशुदा (एक पुत्र 16 एवं एक पुत्री 17 वर्ष) हेतु वधू चाहिए. निस्संतान विधवा., तलाकशुदा, बेसहारा को प्राथमिकता. लिखें: वि.नं. 9596, सरिता, नई दिल्ली-110055.

बिहारवासी, 25, 175 सें.मी., 3,400/-, नौ सैनिक इंजीनियर, मंगला श्रीवास्तव युवक हेतु घरेलू, चुस्त, मेधावी, पारिवारिक कन्या आमंत्रित, लिखें: वि.नं. 9604, सरिता, नई दिल्ली-110055.

वरवधू चाहिए

यादव (अहीर), 29 वर्षीय, 167 सें.मी., गौरवर्ण, सुंदर, एम.एससी., सेवारत युवक, मासिक 1,500/- हेतु सुंदर, सुशिक्षित, गृहकार्यदक्ष वधू एवं 24 वर्षीया, 155 सें.मी., गौरवर्ण, आकर्षक, गृहकार्यदक्ष, एम.ए. कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9581, सरिता, नई दिल्ली-110055.

नाई, 25,155 सें.मी., एम.ए.,बी.एड., कन्या एवं 30, 172 सें.मी., यांत्रिक अभियंता रक्षा मंत्रालय, कार्यरत, आय 3,500/-, युवक हेतु सुयोग्य वरवधू चाहिए. शीघ्र विवाह. लिखें: वि.नं. 9582, सरिता, नई दिल्ली-110055.

व्यक्तिगत विज्ञापनों की दरें

सरिता: 3.50 रु. प्रति शब्द
वुमंस ईरा: 1.50 रु. प्रति शब्द
सरिता व वुमंस ईरा: 4.00 रु. प्रति शब्द.

गोद विज्ञापन की दर सरिता में 3.50 रुपए प्रति शब्द और वुमंस ईरा में 1.50 रुपया प्रति शब्द है. दोनों में एक साथ प्रकाशित करवाने पर 4.00 रु. प्रति शब्द.

पूर्ण विवरण के लिए लिखें:

मुख्य विज्ञापन कार्यालय:
दिल्ली प्रेस पत्रिका विभाग,
एम-12, कनाट सरकस,
नई दिल्ली-110001.
फोन नं.-351313

जुझौतिया ब्राह्मण, 24, 156 सें.मी., ए संभ्रांत परिवारीय, सुंदर, सुशील, गृहकार्यदक्ष हेतु ब्राह्मण वर एवं 22, 175 सें.मी. व्यवसायी हेतु वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 9583, सरिता, दिल्ली-110055.

धोबी, 30 वर्षीया, एम.ए., बी.एड., ले 2,500/-, एवं 21 वर्षीया, एम.ए. पार्ट-1 क पश्चात बी.एड. परीक्षारत कन्याओं हेतु स सेवारत अधिकारी वर एवं 28 वर्षीय, एम.ए मेडिकल रिप्रेजेंटेटिव, 4,000/-, एवं 26 वर्षीय, एम.ए., जूनियर एक्जीक्यूटिव, 3,000/-, हेतु शिक्षा प्राप्त केंद्रीय सेवारत वधू. सजातीय वरीयता, जाति, दहेजबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 9 सरिता, नई दिल्ली-110055.

गोद विज्ञापन

उच्चस्तरीय अग्रवाल दंपती छः माह से एक की आय वाला बच्चा (पुत्र) को गोद चाहते जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 9585, सरिता दिल्ली-110055.

रिक्त स्थान

दिल्लीवासी, 43 वर्षीय, अग्रवाल, विधुर (बच्चे) एवं घर संभालने हेतु 35 वर्ष से कम, निस्संत बेसहारा परिचारिका चाहिए. आजीवन कार्य सह लिखें: वि.नं. 9449, सरिता, नई दिल्ली-11005

35-40 वर्षीय, बेसहारा, तलाकशुदा, ब विधवा, निस्संतान, सुशिक्षित, पारिवारिक संस्क वाली, जातिबंधन रहित महिला जो स्वस्थ व उ वातावरण में रह सकें. लिखें: पोस्ट बाक्स नं. इंदौर-452004.

राजस्थान में चैरिटेबल हस्पताल के मु चिकित्सा अधिकारी को ग्रेजुएट मेडिकल लाइन की सीखने में रुचि, बेसहारा, विधवा, परित्यक्ता महि की. स्थाई सहारा, सर्वसुविधा उपलब्ध, अच्छा वेत सुंदर भविष्य. शीघ्र लिखें: वि.नं. 9586, सरिता, दिल्ली-110055.

आवश्यकता है बेसहारा, निस्संतान, गरी महिला की जो घर के कामों में सहायक हो. वे भोजन, निवास लिखें: C/142, प्रीत विहार, दिल 92.

व्यापार

शोभिका क्रीमों, कोल्ड वैक्स, टेलकम पाउ व दीप्त तरल डिटरजैंट के लिए विक्रेताओं कमीशन एजेंटों की आवश्यकता है. लिखें शोभिका, बी-23, मेरठ रोड, इंडस्ट्रियल एस्टे गाजियाबाद.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

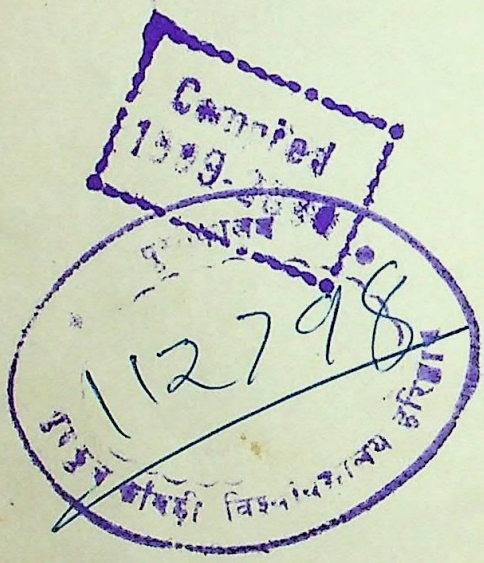

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar